NEW HINAD

1958 G. K. U.

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 15 अगस्त, सन '53 नम्बर 1

جلد 15 اگست' سن 53' نمبر 2

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

इस नम्बर के ख़ास लेख

اس نمبر کے خاص لیکھ

हमारी राय

ہماری رائے

...स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

...ستانی کلچر سوسائٹی' الہ آباد

अगस्त 1953 اگست

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

[illegible]ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 15 अगस्त, सन '53 नम्बर 1

جلد 15 اگست، سن '53 نمبر 2

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

क्या हाथ आया ?

निर्बल को बल न मिला मुझ से
डरपोक निडर नहीं बन पाया
हाथों [illegible] मेरे, सोचो तो,
[illegible] र स्वतंत्र फिर क्या आया !
भूके को कन न मिला मुझ से
बन्दी न प्रिया से मिल पाया
हो कर स्वतंत्र, सोचो, सोचो,
मेरे हाथों में क्या आया !
निधड़क न निकल पाईं बहिनें
मुन्ना न कुदकता मिल पाया
आई स्वतंत्रता ख़ाक आई
आया स्वराज क्या ख़ाक आया !
रातें न कटीं जब बिन जागे
दिन में घर घर पहरा पाया
हो कर स्वतंत्र, खोया रुपया
पर हाथ न एक धेला आया !
रिशवत न मिटी मेरे बूते,
अटकाव न रत्ती हट पाया,
करके स्वतंत्र ले भागे धन
कर मेरे रीता घट आया !

—भगवानदीन

کیا ہاتھ آیا ؟

نربل کو بل نہ ملا مجھ سے
ڈرپوک نڈر نہیں بن پایا
ہاتھوں میں میرے، سوچو تو،
ہو کر سوتنتر پھر کیا آیا !
بھوکے کو کن نہ ملا مجھ سے
بندی نہ پریا سے مل پایا
ہوکر سوتنتر، سوچو، سوچو،
میرے ہاتھوں میں کیا آیا !
ندھڑک نہ نکل پائیں بہنیں
منا نہ کدکتا مل پایا
آئی سوتنترتا خاک آئی
آیا سوراج کیا خاک آیا !
راتیں نہ کٹیں جب بن جاگے
دن میں گھر گھر پہرا پایا
ہو کر سوتنتر، کھویا روپیہ
پر ہاتھ نہ ایک دھیلا آیا !
رشوت نہ مٹی میرے بوتے،
اٹکاو نہ رتی ہٹ پایا،
کر کے سوتنتر لے بھاگے دھن
کر میرے ریتا گھٹ آیا .

— بھگوان دین

मां बाप और घर

(डाक्टर भगवानदास)

बाप, गुरू और इनसे बढ़ कर मां का आदर मान करने की आज्ञा सब धर्मों की पुस्तकों में मिलती है. मां बाप को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि वह अपने बच्चों से प्रेम करें. क़ुदरत अपने आप मां बाप को मजबूर करती है कि वह अपने बच्चों से प्रेम करें और उन्हें पालें. इसी से बच्चे सब देशों में बढ़ते और फलते फूलते रहते हैं.

मां बाप का प्रेम उसी तरह सन्तानों की तरफ़ जाता है जिस तरह नदी का जल बहता रहता है. दुनिया में ऐसे जानवर भी हैं जो अपने बच्चों को खा जाते हैं पर वे ऐसे ही हैं जैसे हर नियम का कोई न कोई अपवाद या काट भी होता ही है. शेर, भेड़िया और नागन माएं तक अपने बच्चों को प्रेम से पालती हैं यह क़ुदरती है. दूसरी तरफ़ बच्चे मां बाप से प्यार अपनी ज़रूरत और ग़रज़ से करते हैं. इसीलिये बच्चों के दिलों में मां बाप के लिये प्रेम बनाए रखने के लिये उन्हें समझाने बुझाने की आवश्यकता होती है. इसी लिये सब धर्मों ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि बच्चे मां बाप का आदर करें. वैदिक धर्म में यह भी हिदायत है कि मां बाप को चाहिये कि अपने बच्चों को इस तरह पालें और उन्हें इस तरह रखें कि बच्चे बड़े होकर नेक और धर्मात्मा बनें.

मां के अन्दर बच्चेप्रे का म इतना अधिक होता है कि मादा जानवर अकसर अपने बच्चों को बचाने के लिये अपनी जान पर खेल जाते हैं. हज़रत ईसा जैसे नरम दिल इनसान ने जब किसी को बच्चों को तकलीफ़ देते हुए देखा तो वह चिल्ला पड़े :—"जो कोई इन छोटे बच्चों में से एक को भी कष्ट पहुंचाएगा उसके लिये अच्छा है कि चक्की का पाट उसकी गरदन में बांध कर उसे समन्दर में ढकेल दिया जावे. यह बच्चे मेरी बात सुनते हैं." (इनजील)

शंकराचार्य ने कहा है :—"पुत्र कुपुत्र हो सकता है लेकिन माता कभी कुमाता नहीं होती."

मनुस्मृति में लिखा है :—"बच्चे के पैदा करने और पालने में मां बाप जो कष्ट उठाते हैं बच्चा सौ बरस तक मां बाप की सेवा कर के भी उसका बदला नहीं दे सकता."

चीनी महात्मा कनफ़ूशियस ने कहा है :—"मां बाप से प्रेम करना और बड़ों की इज़्ज़त करना यही निस्वार्थ जीवन की नींव होती है."

मूसा और ईसा दोनों की आज्ञा है :—"अपने बाप

ماں باپ اور گھر

(ڈاکٹر بھگوان‌داس)

باپ، گرو اور اِن سے بڑھکر ماں کا آدرمان کرنے کی آگیا سب دھرموں کی پستکوں میں ملتی ہے۔ ماں باپ کو یہ بتانے کی آوشیکتا نہیں ہے کہ وہ اپنے بچوں سے پریم کریں۔ قدرت اپنے آپ ماں باپ کو مجبور کرتی ہے کہ وہ اپنے بچوں سے پریم کریں اور اُنہیں پالیں۔ اِسی سے بچے سب دیشوں میں بڑھتے اور پھلتے پھولتے رہتے ہیں۔

ماں باپ کا پریم اُسی طرح سنتانوں کی طرف جاتا ہے جس طرح ندی کا جل بہتا رہتا ہے۔ دنیا میں ایسے جانور بھی ہیں جو اپنے بچوں کو کھا جاتے ہیں پر وہ ایسے ہی ہیں جیسے ہر نیم کا کوئی نہ کوئی اپواد یا کاٹ بھی ہوتا ہی ہے۔ شیر بھیڑیا اور ناگن مائیں تک اپنے بچوں کو پریم سے پالتی ہیں یہ قدرتی ہے۔ دوسری طرف بچے ماں باپ سے پیار اپنی ضرورت اور غرض سے کرتے ہیں۔ اِسی لئے بچوں کے دلوں میں ماں باپ کے لئے پریم بنائے رکھنے کے لئے اُنہیں سمجھانے بجھانے کی آوشیکتا ہوتی ہے۔ اِسی لئے سب دھرموں نے اِس بات پر زور دیا ہے کہ بچے ماں باپ کا آدر کریں۔ ویدک دھرم میں یہ بھی ہدایت ہے کہ ماں باپ کو چاہئے کہ اپنے بچوں کو اس طرح پالیں اور انہیں اس طرح رکھیں کہ بچے بڑے ہوکر نیک اور دھرماتما بنیں۔

ماں کے اندر بچے کا پریم اتنا ادھک ہوتا ہے کہ مادہ جانور اکثر اپنے بچوں کو بچانے کے لئے اپنی جان پر کھیل جاتے ہیں۔ حضرت عیسیٰ جیسے نرم دل اِنسان نے جب کسی کو بچوں کو تکلیف دیتے ہوئے دیکھا تو وہ چلا پڑے :—"جو کوئی اِن چھوٹے بچوں میں سے ایک کو بھی کشٹ پہنچائے گا اُس کے لئے اچھا ہے کہ چکی کا پاٹ اُسکی گردن میں باندھکر اُسے سمندر میں ڈھکیل دیا جاوے۔ یہ بچے میری بات سنتے ہیں" (اِنجیل)

شنکراچاریہ نے کہا ہے :—"پتر کوپتر ہوسکتا ہے لیکن ماتا کبھی کوماتا نہیں ہوتی۔"

منو سمرتی میں لکھا ہے :—"بچے کے پیدا کرنے اور پالنے میں ماں باپ جو کشٹ اُٹھاتے ہیں بچہ سو برس تک ماں باپ کی سیوا کرکے بھی اُس کا بدلہ نہیں دے سکتا ہے۔"

چینی مہاتما کنفیوشس نے کہا ہے :—"ماں باپ سے پریم کرنا اور بڑوں کی عزت کرنا یہی نسوارتھ جیون کی نیو ہوتی۔"

موسیٰ اور عیسیٰ دونوں کی آگیا ہے :—"اپنے باپ

और अपनी मां दोनों का आदर करो."

मोहम्मद साहब ने कहा है :—"अपने मां बाप की इज़्ज़त करो और उनकी सेवा करो. जन्नत हमेशा मांओं के पैरों के नीचे रहती है. अल्लाह कहता है कि जिस तरह तुम मेरे शुक्र गुज़ार हो उसी तरह अपने मां बाप के शुक्र गुज़ार बनो. याद करो कि तुम्हारी मां ने कितने दरदों के साथ और ग़श खा खा कर तुम्हें नौ महीने अपने पेट में रखा था और फिर कितनी तकलीफ़ से तुम्हें पैदा किया, तुम्हें पाला और बरसों अपना दूध पिला पिला कर तुम्हें बड़ा किया." (हदीस)

अल्लाह के नामों में अल रहमान, अल रज़्ज़ाक़ और अल ग़फ़्फ़ार उसके सब से प्यारे नाम हैं यानी दया करने वाला, रोज़ी देने वाला और माफ़ करने वाला. बच्चे के लिये मां से बढ़ कर रहमान, रज़्ज़ाक़ और ग़फ़्फ़ार और कौन है ? इसीलिये जहां मां का दिल है वहीं भगवान हैं. वहीं जन्नत है.

वेद में लिखा है :—

"आचार्य देवो भव पित्री देवो भव मात्री देवो भव,
प्रजा तंतम मा विवेच्छत्सयः"

यानी—अपने उस्ताद को देवता की तरह समझो, अपने बाप को देवता की तरह समझो और सब से बढ़ कर अपनी मां को देवता की तरह समझो, इस तरह एक नसल से दूसरी नसल तक इस लगातार सिलसिले को टूटने न दो.

जिस लड़के या लड़की के दिल के अन्दर मां की तसवीर बैठी हुई है उस दिल को वह तसवीर बुराई और गुनाह की तरफ़ जाने से रोकती रहेगी और उसे सैकड़ों ख़तरों से बचा लेगी. जिस नसल के लोग अपने दिलों में अपने से पहले की नसल की इज़्ज़त नहीं करते और उनके शुक्र-गुज़ार नहीं होते वह कभी इस क़ाबिल भी न हो सकेंगे कि उनके बाद की नसल वाले ख़ुद उनकी इज़्ज़त कर सकें. इस तरह उस क़ौम में पिछले ज़माने, हाल के ज़माने और आगे के ज़माने में रिशता टूट जायगा और सारी क़ौम गिरावट की तरफ़ बढ़ने लगेगी. बहुत सी किताबों के पढ़ने से इतना लाभ नहीं होता और इतनी समझ नहीं आती जितनी सतसंग यानी नेक लोगों के पास बैठने से, उनकी बातें सुनने से और तजुरबेकार बुज़ुरगों की सेवा करने और उनके पास बैठने से आती है.

एक सूफ़ी ने कहा है—

"जवांरा सोहबते पीरां हिसारे आफ़ियत बाशद"

यानी जवान लोगों के लिये बुज़ुर्गों की सोहबत में बैठना हिफ़ाज़त के क़िले में बैठना है,

اور اپنی ماں دونوں کا آدر کرو۔"

محمد صاحب نے کہا ہے :—"اپنے ماں باپ کی عزت کرو اور ان کی سیوا کرو۔ جنت ہمیشہ ماؤں کے پیروں کے نیچے رہتی ہے۔ اللہ کہتا ہے کہ جس طرح تم میرے شکرگزار ہو اسی طرح اپنے ماں باپ کے شکرگزار بنو۔ یاد کرو کہ تمہاری ماں نے کتنے دردوں کے ساتھ اور غش کھا کھا کر تمہیں نو مہینے اپنے پیٹ میں رکھا تھا اور پھر کتنی تکلیف سے تمہیں پیدا کیا۔ تمہیں پالا اور برسوں اپنا دودھ پلا پلا کر تمہیں بڑا کیا۔" (حدیث)

اللہ کے ناموں میں الرحمان، الرزاق اور الغفار اس کے سب سے پیارے نام ہیں یعنی دیا کرنے والا، روزی دینے والا اور معاف کرنے والا۔ بچے کے لئے ماں سے بڑھکر رحمان، رزاق اور غفار اور کون ہے؟ اسی لئے جہاں ماں کا دل ہے وہیں بھگوان ہیں۔ وہیں جنت ہے۔

وید میں لکھا ہے :—

"آچاریہ دیوو بھو پتری دیوو بھو ماتری دیوو بھو،
پرجا تنتم ماویو چھیت سیہ۔"

یعنی—اپنے استاد کو دیوتا کی طرح سمجھو، اپنے باپ کو دیوتا کی طرح سمجھو اور سب سے بڑھکر اپنی ماں کو دیوتا کی طرح سمجھو، اس طرح ایک نسل سے دوسری نسل تک اس لگاتار سلسلہ کو ٹوٹنے نہ دو۔

جس لڑکے یا لڑکی کے دل کے اندر ماں کی تصویر بیٹھی ہوئی ہے اس دل کو وہ تصویر برائی اور گناہ کی طرف جانے سے روکتی رہے گی اور اسے سیکڑوں خطروں سے بچا لے گی۔ جس نسل کے لوگ اپنے دلوں میں اپنے سے پہلے کی نسل کی عزت نہیں کرتے اور ان کے شکرگزار نہیں ہوتے وہ کبھی اس قابل بھی نہ ہوسکیں گے کہ ان کے بعد کی نسل والے خود ان کی عزت کرسکیں۔ اسی طرح اس قوم میں پچھلے زمانے، حال کے زمانے اور آگے کے زمانے میں رشتہ ٹوٹ جائے گا اور ساری قوم گراوٹ کی طرف بڑھنے لگے گی۔ بہت سی کتابوں کے پڑھنے سے اتنا لابھ نہیں ہوتا اور اتنی سمجھ نہیں آتی جتنی ست سنگ یعنی نیک لوگوں کے پاس بیٹھنے سے، ان کی باتیں سننے سے اور تجربہ کار بزرگوں کی سیوا کرنے اور ان کے پاس بیٹھنے سے آتی ہے۔

ایک صوفی نے کہا ہے—

"جواں را صحبت پیراں حصار عافیت باشد" یعنی جوان لوگوں کے لئے بزرگوں کی صحبت میں بیٹھنا حفاظت کے قلعہ میں بیٹھنا ہے۔

मौलाना रूम ने कहा है :—

"सोहबत सालेह तुरा सालेह कुनद"

यानी—नेकों की सोहबत आदमी को नेक बनाती है.

महाभारत में, मनुस्मृति में और वेदों में गुरु, बाप और इन दोनों से कहीं जियादा मां के बड़प्पन की जगह जगह चरचा की गई है.

ईश्वर के प्यारे नामों में अंगरेज़ी में 'फ़ादर इन हैवन' अरबी में बादी, ख़ालिक़, ईरानी में अब्बा, अम्मा, इसी तरह संस्कृत में लोक माता वग़ैरा नाम हैं. इस तरह के नाम पुराने मिसरी धर्म और दुनिया के सब धरमों में मिलते हैं.

बुध का सब से सुन्दर और सबसे ऊंचा उपदेश महा मंगल सुत्त कहलाता है जिसके मानी हैं सबसे अधिक मंगल यानी फ़िलाह का गीत. इस गीत में लिखा है:—

'गुमराही में पड़े हुए बुरे लोगों से बचना, विद्वानों की सेवा करना, जो इज़्ज़त के क़ाबिल हैं उनकी इज़्ज़त करना, नेक काम करना, मां बाप का आदर करना, अपनी स्त्री और बाल बच्चों की प्रेम के साथ देख रेख करना, अपनी आत्मा पर क़ाबू रखना, अपनी इच्छाओं को कम करना, ब्रह्मचर्य रखना, चार बड़ी सचाइयों यानी दुख, दुख का कारन, दुख को जीतना और दुख को जीतने का रास्ता, इन्हें निगाह में रख कर अपने रोज़ का जीवन बिताना और इस सीधे रास्ते पर चल कर अन्त में निरवान यानी निजात हासिल करना यही सब से बड़ी बहबूदी यानी कलयान का रास्ता है."

गीता में भगवान ने कहा है:—

"इस जगत का मैं ही पिता हूं, मैं ही माता हूं, मैं ही दादा हूं, मैं ही मालिक हूं, मैं ही संभालने वाला हूं, मैं ही पालने वाला हूं, मुझ से ही यह दुनिया चल रही है, मैं ही इसे चलते देख रहा हूं, मैं ही इसका सहारा हूं. मेरे अन्दर ही यह ठहरी हुई है, मैं ही इसका पैदा करने वाला और मैं ही ख़तम करने वाला हूं, मैं ही इसका भला चाहने वाला हूं, मैं ही इसका शुरू और मैं ही इसका अख़ीर हूं, मैं ही इसका वह बीज हूं जो कभी नष्ट नहीं होता."

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है :—

"वह ईश्वर ही सबका पिता, सबका पति, सबका सेवक, सबका मालिक और वही सबका सखा है, वही सब कुछ है."

मुहम्मद साहब का मशहूर उपदेश है:—

"यह सारी ख़िलक़त अल्लाह का कुनबा है और इन सब में अल्लाह को सब से प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे के साथ सब से जियादा नेकी करता है."

مولانا روم نے کہا ہے :—

"صحبت صالح ترا صالح کند"

یعنی—نیکوں کی صحبت آدمی کو نیک بناتی ہے۔

مہابھارت میں، منوسمرتی میں اور ویدوں میں گرو، باپ اور ان دونوں سے کہیں زیادہ ماں کے بڑپن کی جگہ جگہ چرچا کی گئی ہے۔

ایشور کے پیارے ناموں میں انگریزی میں فادر ان ہیون، عربی میں بادی، خالق، ایرانی میں ابا، اما، اسی طرح سنسکرت میں لوک ماتا وغیرہ نام ہیں۔ اس طرح کے نام پرانے مصری دھرم اور دنیا کے سب دھرموں میں ملتے ہیں۔

بدھ کا سب سے سندر اور سب سے اونچا اپدیش مہا منگل ست کہلاتا ہے جس کے معنی ہیں سب سے ادھک منگل یعنی فلاح کا گیت۔ اس گیت میں لکھا ہے:—

"گمراہی میں پڑے ہوئے برے لوگوں سے بچنا، ودوانوں کی سیوا کرنا، جو عزت کے قابل ہیں ان کی عزت کرنا، نیک کام کرنا، ماں باپ کا آدر کرنا، اپنی استری اور بال بچوں کی پریم کے ساتھ دیکھ ریکھ کرنا، اپنی آتما پر قابو رکھنا، اپنی اچھاؤں کو کم کرنا، برہمچریہ رکھنا، چار بڑی سچائیوں یعنی دکھ، دکھ کا کارن، دکھ کو جیتنا اور دکھ کو جیتنے کا راستہ، انہیں نگاہ میں رکھ کر اپنا روز کا جیون بتانا اور اس سیدھے راستے پر چل کر انت میں نروان یعنی نجات حاصل کرنا یہی سب سے بڑی بہبودی یعنی کلیان کا راستہ ہے۔"

گیتا میں بھگوان نے کہا ہے :—

"اس جگت کا میں ہی پتا ہوں میں ہی ماتا ہوں، میں ہی دادا ہوں میں ہی مالک ہوں، میں ہی سنبھالنے والا ہوں، میں ہی پالنے والا ہوں، مجھ سے ہی یہ دنیا چل رہی ہے، میں ہی اسے چلتے دیکھ رہا ہوں، میں ہی اس کا سہارا ہوں، میرے اندر ہی یہ ٹھہری ہوئی ہے، میں ہی اس کا پیدا کرنے والا اور میں ہی ختم کرنے والا ہوں۔ میں ہی اس کا بھلا چاہنے والا ہوں، میں ہی اس کا شروع اور میں ہی اسکا آخیر ہوں، میں ہی اسکا وہ بیج ہوں جو کبھی نشٹ نہیں ہوتا۔"

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ہے :—

"وہ ایشور ہی سب کا پتا، سب کا پتی، سب کا سیوک، سب کا مالک اور وہی سب کا سکھا ہے، وہی سب کچھ ہے۔"

محمد صاحب کا مشہور اپدیش ہے :—

"یہ ساری خلقت اللہ کا کنبہ ہے اور ان سب میں اللہ کو سب سے پیارا وہ ہے جو اللہ کے اس کنبے کے ساتھ سب سے زیادہ نیکی کرتا ہے۔"

हर धर्म के अन्दर इस पर भी ज़ोर दिया गया है कि पति और पत्नी को एक दूसरे के साथ प्रेम का बरताव करना चाहिये और एक दूसरे से सच्चा रहना चाहिये. किसी दूसरी स्त्री या किसी दूसरे पुरुष की तरफ़ अपनी जिसमानी इच्छा पूरी करने की निगाह से नहीं देखना चाहिये. तभी लोग अपनी औलाद के लिये सच्चे मां बाप बन सकते हैं.

इनजील में लिखा है:—"पति और पत्नी शादी के बाद दो नहीं रह जाते बल्कि एक जिस्म हो जाते हैं. इसलिये जिन्हें अल्लाह ने मिला कर एक किया है उन्हें कोई आदमी एक दूसरे से अलग न करे."

मनु ने लिखा है कि:—"पति और पत्नी सह धर्मचारी हों यानी ज़िन्दगी के सारे काम मिल कर करें और मरते वक़्त तक और मरने के बाद भी एक दूसरे के साथ सच्चे और वफ़ादार रहें."

क़ुरान ख़ास सूरतों में एक आदमी को ज़ियादा से ज़ियादा चार शादी तक की इजाज़त देता है. लेकिन क़ुरान का साफ़ हुक्म है कि:—

"अगर तुम्हें यह डर है कि तुम अपनी सब बीवियों के साथ एक सा इनसाफ़ का बरताव नहीं कर सकोगे, और एक से ज़ियादा बीवियों के भी साथ ठीक ठीक इनसाफ़ कर सकना तुम्हारी अपनी ताक़त से बाहर है, चाहे तुम कितनी भी चाहो, तो सिर्फ़ एक ही के साथ शादी करो, यही तुम्हारे लिये ज़ियादा ठीक है ताकि तुम नेकी से डिगने न पाओ." (3-4, 139)

वेदान्त में और सांख्य शास्त्र में बताया गया है कि दुनिया की सारी रिश्तेदारियां ब्रह्म और माया यानी पुरुष और प्रकृति के शुरू के गठबंधन से शुरू होती हैं. इसलाम में इसी शुरू के गठ बंधन को 'ज़ात और सिफ़ात' या 'आबाए उलूमी और उमहात सिफ़ली' का गठबंधन कहा गया है. दुनिया के सब जिसमानी और रूहानी रिश्ते इन्हीं शुरू के रिश्तों से निकले हैं.

पुरुष और स्त्री या पति और पत्नी का नाता इस तरह का है जिस तरह नदियां समन्दर में जा कर गिरती हैं, उन सबका पानी खारा हो जाता है. फिर समन्दर का पानी ऊपर उठता है. आसमान की धूप से नाता जोड़ता है, उसका खारीपन जाता रहता है और वह फिर मीठा हो कर ज़मीन पर बरसने लगता है और उन्हीं नदियों को फिर भर देता है. एक नेक और सच्ची पत्नी अपने प्रेम से अपने गिरे हुए पति को नरक या दोज़ख़ में से भी खींच कर उसी तरह बाहर निकाल लेती है जिस तरह सपेरा सांप को बिल में से ज़बरदस्ती खींच कर बाहर निकाल लेता है.

ہر دھرم کے اندر اس پر بھی زور دیا گیا ہے کہ پتی اور پتنی کو ایک دوسرے کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرنا چاہئیے اور ایک دوسرے سے سچا رہنا چاہئیے. کسی دوسری استری یا کسی دوسرے پرش کی طرف اپنی جسمانی اچھا پوری کرنے کی نگاہ سے نہیں دیکھنا چاہئیے. تبھی لوگ اپنی اولاد کے لئے سچے ماں باپ بن سکتے ہیں:

انجیل میں لکھا ہے:—" پتی اور پتنی شادی کے بعد دو نہیں رہ جاتے بلکہ ایک جسم ہو جاتے ہیں. اس لئے جنہیں اللہ نے ملا کر ایک کیا ہے انہیں کوئی آدمی ایک دوسرے سے الگ نہ کرے."

منو نے لکھا ہے کہ:—" پتی اور پتنی سہہ دھرم چاری ہوں یعنی زندگی کے سارے کام مل کر کریں اور مرتے وقت تک اور مرنے کے بعد بھی ایک دوسرے کے ساتھ سچے اور وفادار رہیں."

قرآن خاص صورتوں میں ایک آدمی کو زیادہ سے زیادہ چار شادی تک کی اجازت دیتا ہے. لیکن قرآن کا صاف حکم ہے کہ:—

" اگر تمہیں یہ ڈر ہے کہ تم اپنی سب بیویوں کے ساتھ ایک سا اور انصاف کا برتاؤ نہیں کر سکو گے، اور ایک سے زیادہ بیویوں کے ساتھ ٹھیک ٹھیک انصاف کر سکنا تمہاری اپنی طاقت سے باہر ہے، چاہے تم کتنا بھی چاہو، تو صرف ایک ہی کے ساتھ شادی کرو، یہی تمہارے لئے زیادہ ٹھیک ہے تاکہ تم نیکی سے ڈگنے نہ پاؤ." (3-4, 139).

ویدانت میں اور سانکھیہ شاستر میں بتایا گیا ہے کہ دنیا کی ساری رشتہ داریاں برہمہ اور مایا یعنی پرش اور پرکرتی کے شروع کے گٹھ بندھن سے شروع ہوتی ہیں. اسلام میں اسی شروع گٹھ بندھن کو 'ذات اور صفات' یا 'آبائے علوی اور امہات سفلی' کا گٹھ بندھن کہا گیا ہے. دنیا کے سب جسمانی اور روحانی رشتے انہیں شروع کے رشتوں سے نکلے ہیں.

پرش اور استری یا پتی اور پتنی کا ناتا اس طرح کا ہے جس طرح ندیاں سمندر میں جا کر گرتی ہیں، ان سب کا پانی کھارا ہو جاتا ہے. پھر سمندر کا پانی اوپر اٹھتا ہے. آسمان کی دھوپ سے ناتا جوڑتا ہے، اس کا کھاری پن جاتا رہتا ہے اور وہ پھر میٹھا ہو کر زمین پر برسنے لگتا ہے اور انہیں ندیوں کو پھر بھر دیتا ہے. ایک نیک اور سچی پتنی اپنے پریم سے اپنے گرے ہوئے پتی کو نرک یا دوزخ میں سے بھی کھینچ کر اسی طرح باہر نکال لیتی ہے جس طرح سپیرا سانپ کو بل میں سے زبردستی کھینچ کر باہر نکال لیتا ہے.

इसमें शक नहीं कि शादी की एक ग़रज़ यह भी है कि दोनों एक दूसरे से सुख भोगें. लेकिन इससे कहीं बढ़ कर ग़रज़ शादी की यह है कि दोनों मिल कर अपने अन्दर के ख़ालिक़ या ईश्वर को पहचानें और आगे की नसलों के लिये दोनों सच्चे बाप और सच्ची मां बनें. इसी ग़रज के लिये आदमी को आदमी और औरत को औरत बनाया गया है.

मोहम्मद साहब की एक हदीस है:—

"शादी का हुक्म इसलिये दिया गया है ताकि दोनों बुराई से बचे रहें. दोनों में से किसी की ताक़त ज़ाया न जाय और दोनों का किरदार पाक रहे."

चीनी महात्मा कनफ़ूशियस ने कहा है कि:—

"जहां कहीं पति और पत्नी में सच्चा मेल होता है वहां मां बाप और बच्चों सब में प्रेम रहता है. वहां भाइयों और बहनों में मिठास और मुहब्बत रहती है. सारा घर ख़ुश रहता है. इस तरह के एक घर की मिसाल से सारे पास पड़ोस में प्रेम बढ़ता है. इसका असर सारे देश पर पड़ता है."

कलचर और मज़हब दोनों के लिये चीनी शब्द चियाओ (Chiao) है. यह चियाओ जिस शब्द से निकला है उसके माने हैं 'माता पिता से प्रेम और उनकी सेवा'. कनफ़ूशियस ने इस बारे में लिखा है :—

"हर शरीफ़ आदमी मां बाप की सेवा की इसलिये सलाह देता है ताकि आदमी उन सब लोगों की इज़्ज़त करें जो दुनिया में किसी के बाप हैं. छोटे भाइयों को बड़े भाई का मान रखने की इसीलिये आज्ञा दी जाती है ताकि दुनिया के सब भाइयों का मान हो. उनमें प्रेम हो. जो लोग अपने मां बाप से प्रेम करते हैं और उनकी इज़्ज़त करते हैं वह दूसरों के साथ नफ़रत या गुसताख़ी नहीं कर सकते. मां बाप के साथ अच्छा बरताव सारी नेकी कि जड़ है यही कलचर की बुनियाद है. मां बाप के साथ अच्छे बरताव का ही आख़री नतीजा यह है कि आदमी ठीक काम करे और ठीक सदाचार से रहे जिससे आगे आने वाली नसलों के लिये एक मिसाल क़ायम रहे और दुनिया के बुज़ुरगों का सच्चा मक़सद पूरा हो."

सन 1914-18 की बड़ी जंग के बाद दुनिया में बेशरमी का एक ख़ौफ़नाक तूफ़ान आया. जिन्सी ख़ाहिशें यानी कामवासनायें नंगा नाच नाचने लगीं, लोग शादी की असल ज़िम्मेदारी से बचने और साथ ही अपनी काम वासनाओं को पूरा करने के लिये दवाओं और बनावटी तरीक़ों का खुले इस्तेमाल करने लगे. यह तूफ़ान एक नापाक और ज़हरीला तूफ़ान है. लेकिन पच्छिम के अच्छे विचारकों और नेक अदीबों ने भी इस बात को अच्छी तरह समझा है कि शादी का सबसे मीठा और रुहानी

اِس میں شک نہیں شادی کی ایک فرض یہ بھی ہے کہ دونوں ایک دوسرے سے سکھ بھوگیں۔ لیکن اِس سے کہیں بڑھ کر غرض شادی کی ہے کہ دونوں مل کر اپنے اندر کے خالق یا ایشور کو پہچانیں اور آگے کی نسلوں کے لئے دونوں سچے باپ اور سچی ماں بنیں۔ اِسی فرض کے لئے آدمی کو آدمی اور عورت کو عورت بنایا گیا ہے۔

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے:—

"شادی کا حکم اِس لئے دیا گیا ہے تاکہ دونوں برائی سے بچے رہیں۔ دونوں میں سے کسی کی طاقت ضائع نہ جائے اور دونوں کا کردار پاک رہے۔"

چینی مہاتما کنفوشیس نے کہا ہے کہ:—

"جہاں کہیں پتی اور پتنی میں سچا میل ہوتا ہے وہاں ماں باپ اور بچوں سب میں پریم رہتا ہے۔ وہاں بھائیوں اور بہنوں میں مٹھاس اور محبت رہتی ہے، سارا گھر خوش رہتا ہے۔ اِس طرح کے ایک گھر کی مثال سے سارے پاس پڑوس میں پریم بڑھتا ہے۔ اس کا اثر سارے دیش پر پڑتا ہے۔"

کلچر اور مذہب دونوں کے لئے چینی شبد چیاؤ (Chiao) ہے۔ یہ چیاؤ جس شبد سے نکلا ہے اُس کے معنی ہیں 'ماتا پتا سے پریم اور ان کی سیوا'۔ کنفوشیس نے اِس بارے میں لکھا ہے:—

"ہر شریف آدمی ماں باپ کی سیوا کی اس لئے صلاح دیتا ہے تاکہ آدمی اُن سب لوگوں کی عزت کریں جو دنیا میں کسی کے باپ ہیں۔ چھوٹے بھائیوں کو بڑے بھائی کا مان رکھنے کی اسی لئے آگیا دی جاتی ہے تاکہ دنیا کے سب بھائیوں کا مان ہو۔ اُن میں پریم ہو۔ جو لوگ اپنے ماں باپ سے پریم کرتے ہیں اور ان کی عزت کرتے ہیں وہ دوسروں کے ساتھ نفرت یا گستاخی نہیں کر سکتے۔ ماں باپ کے ساتھ اچھا برتاو ساری نیکی کی جڑ ہے۔ یہی کلچر کی بنیاد ہے۔ ماں باپ کے ساتھ اچھے برتاؤ کا ہی آخری نتیجہ یہ ہے کہ آدمی ٹھیک کام کرے اور ٹھیک سداچار سے رہے جس سے آگے آنے والی نسلوں کے لئے ایک مثال قائم رہے اور دنیا کے بزرگوں کا سچا مقصد پورا ہو۔"

سن 1914-18 کی بڑی جنگ کے بعد دنیا میں بےشرمی کا ایک خوفناک طوفان آیا۔ جنسی خواہش یعنی کام واسنائیں ننگا ناچ ناچنے لگیں۔ لوگ شادی کی اصل ذمہ داری سے بچنے اور ساتھ ہی اپنی کام واسناؤں کو پورا کرنے کے لئے دواؤں اور بناوٹی طریقوں کا کھلے استعمال کرنے لگے۔ یہ طوفان ایک ناپاک اور زہریلا طوفان ہے۔ لیکن پچھم کے اچھے وچارکوں اور نیک ادیبوں نے بھی اس بات کو اچھی طرح سمجھا ہے کہ شادی کا سب سے میٹھا اور روحانی

फल यही है कि आदमी अपने ऊपर आगे की नसलों की ज़िम्मेदारी को समझे और उसे पूरा करे. अंगरेज़ कवि ब्राउनिंग ने कहा है:—"स्त्री होने के मानी ही मां होना है. दुनिया का सारा प्रेम मां के साथ ही शुरू होता है और आख़ीर में चारों तरफ़ घूम कर यहीं ख़तम होता है. इनसानी प्रेम दुनिया भर का चक्कर काट कर आख़िर घर के अन्दर आ कर आराम लेता है."

پھل یہی ھے کہ آدمی اپنے اوپر آگے کی نسلوں کی ذمہ‌داری کو سمجھے اور اُسے پورا کرے . انگریز کوی براوننگ نے کہا ھے :—'' استری ھونے کے معنی ھی ماں ھونا ھے . دنیا کا سارا پریم ماں کے ساتھ ھی شروع ھوتا ھے اور آخیر میں چاروں طرف گھوم کر یہیں ختم ھوتا ھے . انسانی پریم دنیا بھر کا چکر کاٹ کر آخر گھر کے اندر آ کر آرام لیتا ھے ."

हिन्दुस्तानी शब्दयात का नवां असूल : नये नये लफ़्ज़

(डाक्टर ज़ाफ़र हसन)

अकबर इलाहाबादी पिछली पीढ़ी के बड़े शायरों में से थे. उन्होंने सूदी की अंगरेज़ी कविता "The Waters of Loder" का तरजुमा किया है. इस तरजुमे में तमहीद (भूमिका) के तौर पर उन्होंने लिखा है कि अंगरेज़ी शायर को—

मुनासिब जो इंगलिश मसादर (क्रियाएं) मिले
मुक़फ़्फ़ा (तुकदार) किये उनके सब सिलसिले
यह इसरार करते हैं भाई हसन
कि मैं भी हूं इस बहर में ग़ोता जन
अजब है नहीं इनकी उस पर नज़र
कुजा मैं कुजा सूदी नामवर
सिवा इसके हैं और भी मुशकिलें
नहीं सहल इस राह की मंज़िलें
मेरे पास सरमाया काफ़ी नहीं
वह मसदर नहीं, वह क़वाफ़ी (जानकारी) नहीं

इस लाजवाब तमहीद में (जिस से बेहतर तमहीद मुझे हिन्दी, अंगरेज़ी और जरमन कविता में नहीं मिली) अकबर ने बड़ी सच्ची बात कही है और शायराना अन्दाज़ में सिर्फ़ इस बात को ज़ाहिर किया है कि हमारी भाशा कंगाल है. इसमें दुनिया की चीज़ों और दिल की बातों को ज़ाहिर करने की शक्ति नहीं.

ज़बान की मुफ़लिसी (ग़रीबी) का सबूत इन लफ़्ज़ों से भी मिलता है जो सचमुच एक ही चीज़ के मुख़तलिफ़

ھندستانی شبدیات کا نواں اسول : نئے نئے لفز

(ڈاکٹر جافر ھسن)

اکبر الہ‌آبادی پچھلی پیڑھی کے بڑے شایروں میں سے تھے . اُنہوں نے سودی کی انگریزی کویتا 'The Waters of Loder' کا ترجمہ کیا ھے . اِس ترجمے میں تمہید (بھومیکا) کے تور پر اُنہوں نے لکھا ھے کہ انگریزی شایر کو—
مناسب جو اِنگلش مصادر (کریائیں) ملے

مقفا (تک‌دار) کئے اُن کے سب سلسلے
یہ اصرار کرتے ھیں بھائی حسن
کہ میں بھی ھوں اس بحر میں غوطہ زن
عجب ھے نہیں اُن کی اس پر نظر
کجا میں کجا سودی نامور
سوا اِس کے ھیں اور بھی مشکلیں
نہیں سہل اس راہ کی منزلیں
میرے پاس سرمایہ کافی نہیں
وہ مصدر نہیں، وہ قوافی (جانکاری) نہیں

اس لاجواب تمہید میں (جس سے بہتر تمہید مجھے ھندی، انگریزی اور جرمن کویتا میں نہیں ملی) اکبر نے بڑی سچی بات کہی ھے اور شایرانہ انداز میں سرف اِس بات کو زاھر کیا ھے کہ ھماری بھاشا کنگال ھے . اس میں دنیا جہان کی چیزوں اور دل کی باتوں کو زاھر کرنے کی شکتی نہیں .

زبان کی مفلسی (غریبی) کا ثبوت ان لفزوں سے بھی ملتا ھے جو سچ مچ ایک ھی چیز کے مختلف

पहलुओं को या एक ही रंग की मुख़्तलिफ़ गहराइयों को ज़ाहिर करते हैं. मिसाल के तौर पर Liberty, Freedom, Independece के लिये उरदू में सिर्फ़ आज़ादी और हिन्दी स्वतंत्रता इस्तेमाल होता है. जब कभी कोई ऐसा जुमला आता है.

"Freedom does not exist even in all independent countries" तो बड़ी दिक़्क़त आ पड़ती है और अनुवादक को अपनी भाशा में ठीक शब्दों की कमी का अहसास होता है.

मरने से ज़ियादा आम और क्या हक़ीक़त है ? सदियों से नहीं हज़ारों बरस से हमारे मुल्क में मुरदों के जलाने की रसम चली आ रही है फिर भी Cremation के लिये कोई आम समझ लफ़्ज़ हमारी ज़बानों में नहीं है.

दूध की तमाम शकलों को ज़ाहिर करने के लिये हमारे पास लफ़्ज़ हैं–Frost पाला, Fog कोहरा, Mist धुन्ध, मगर Beef, Mutton, Ham के लिये हमारी ज़बान में मुरादने न होने के कारन हमें मजबूर हो कर गाय का गोश्त, बकरे का गोश्त, सूअर का गोश्त कहना पड़ता है.

यहां तक भी ग़नीमत है क्योंकि बुरे भले बहरहाल किसी न किसी तरह मतलब ज़ाहिर हो ही जाता है मगर दिल दिमाग़ की कैफ़ियतों को ज़ाहिर करने के लिये और इनसानी सीरत की विशताएं बताने के लिये हमारे पास लफ़्ज़ ही नहीं हैं.

वह कौन है जिस में अपनी तारीफ़ सुनने की ख़्वाहिश नहीं ? अपने वजूद को ज़ाहिर करने की तड़प नहीं ? 'ख़ुदनुमाई', 'बनाव' सिंघार', 'शेख़ी' 'फ़ख़्र' वग़ैरा सब इसी एक दिली लगन से संबन्ध रखते हैं. फिर भी हमारी भाशा में कोई ऐसा शब्द नहीं जैसे अंगरेज़ी में Vanity या जरमन में Eilelkeiet है. आख़िर में इन बराबरयों पर ध्यान दीजिये और इनके लिये आम समझ या मशहूर उरदू हिन्दी शब्द बताइये :

Analogy, Example, Command, Order, Derision, Banter, Raillery, Burlesque, Mockery, Irony, Satire, Tribe, Clan, Jens, Retaliation, Retribution, Vendetta, Trend, Tendency, Inclivation, Trait, Vitality, Energy, Vocation, Profession.

इन लफ़्ज़ों को भी जाने दीजिये. हमारे देस के कितने दरख़्त (पेड़) हैं जो हम हज़ारों बरस से देखते चले आए हैं मगर इनके कोई नाम ही नहीं ! हैदराबाद के चारों तरफ़ जहां कहीं ठीक जगह मिल जाती है बारिश में बिलकुल छोटे छोटे फूलों वाली घास निकल आती है जो

پہلوؤں کو یا ایک ہی رنگ کی مختلف گہرائیوں کو ظاہر کرتے ہیں. مثال کے طور پر Liberty, Freedom, Independence کے لئے اردو میں صرف آزادی اور ہندی میں سوتنترتا استعمال ہوتا ہے ۔ جب کبھی کوئی ایسا جملہ آتا ہے—

"Freedom does not exist even in all independent countries" تو بڑی دقت آ پڑتی ہے اور انوادک کو اپنی بھاشا میں ٹھیک شبدوں کی کمی کا احساس ہوتا ہے ۔

مرنے سے زیادہ عام اور کیا حقیقت ہے؟ صدیوں سے نہیں ہزاروں برس سے ہمارے ملک میں مردوں کے جلانے کی رسم چلی آ رہی ہے. پھر بھی Cremation کے لئے کوئی عام سمجھ لفظ ہماری زبان میں نہیں ہے ۔

دودھ کی تمام شکلوں کو ظاہر کرنے کے لئے ہمارے پاس لفظ ہیں—Frost 'پالا' Fog 'کہرا' Mist 'دھندھ' مگر Beef, Mutton, Ham کے لئے ہماری زبان میں مرادفے نہ ہونے کے کارن ہمیں مجبور ہو کر گائے کا گوشت' بکرے کا گوشت' سور کا گوشت کہنا پڑتا ہے ۔

یہاں تک بھی غنیمت ہے کیوں کہ برے بھلے بہر حال کسی نہ کسی طرح مطلب ظاہر ہو ہی جاتا ہے مگر دل دماغ کی کیفیتوں کو ظاہر کرنے کے لئے اور انسانی صورت کی وشیشتائیں بتانے کے لئے ہمارے پاس لفظ ہی نہیں ہیں ۔

وہ کون ہے جس میں اپنی تعریف سننے کی خواہش نہیں ؟ اپنے وجود کو ظاہر کرنے کی تڑپ نہیں ؟ 'خودنمائی' 'بناؤ سنگھار' 'شیخی' 'فخر' وغیرہ سب اسی ایک دلی لگن سے سمبندھ رکھتے ہیں. پھر بھی ہماری بھاشا میں کوئی ایسا شبد نہیں جیسے انگریزی میں Vanity یا جرمن میں Eilelkeiet ہے. آخر میں ان برابریوں پر دھیان دیجئے اور ان کے لئے عام سمجھ یا مشہور اردو ہندی شبد بتائیے:

Analogy, Example, Command, Order Derision, Banter, Raillery, Burlesque, Mockery, Irony, Satire, Tribe, Clan, Jens, Retaliation, Retribution, Vendetta, Trend, Tendency, Inclivation, Trait, Vitality, Energy, Vocation, Profession.

ان لفظوں کو بھی جانے دیجئے. ہمارے دیس کے کتنے درخت (پیڑ) ہیں جو ہم ہزاروں برس سے دیکھتے چلے آے ہیں مگر ان کے کوئی نام ہی نہیں ! حیدرآباد کے چاروں طرف جہاں کہیں ٹھیک جگہ مل جاتی ہے بارش میں بلکل چھوٹے چھوٹے پھولوں والی گھاس نکل آتی ہے جو

आम तौर पर बड़ी खूबसूरत और बाज़ मरतबा दिलफ़रेब लगती है. इस फूलों वाली घास का कोई नाम नहीं. इसके अलावा दो तीन सख्त जान खुद उगाऊ दरख्त हैं. इन्हें इनसानी ग़ारतगरी से बचाया जाय तो हैदराबद के अतराफ़ की लाखों एकड़ पथरीली ज़मीन पर जंगल के जंगल बसाए जा सकते हैं. इत्तफ़ाक़ से कहीं कहीं यह दरख्त बच जाते हैं जिन से उनके वजूद और फ़ायदे पन का सबूत मिलता है. इन दरख्तों के भी कोई नाम नहीं.

हिन्दुस्तान के लिये जो Draft Constitution बना था उसके हिन्दी अनुवाद की तमहीद में लिखा थाः—

"Uptil now Hindi infact every other language of India has been the vehicle of thoughts on subjects such as theologoy, poetry, history and the like...Hindi has never been used for making laws and drafting constitutions."

इन सब मिसालों से एक ही बात बार बार साबित होती है. वह यह कि हमारी भाशा को अनगिनत नये नये लफ़्ज़ों की ज़रूरत है. जहां कहीं जुड़वां और मिलवां लफ़्ज़ बनाने के बाद या हिन्दयावे से भी या किसी और असूल को इख्तियार करने के बाद भी काम नहीं चलता वहां मौज़ूं और अच्छे लफ़्ज़ों को गढ़ना ही पड़ेगा. इसके बिना कोई चारा नहीं. बिलकुल मजबूरी की सूरत में नई नई आवाज़ों के इज़हार से नये नाम सुझाने पड़ेंगे या नये लफ़्ज़ तजवीज़ करने पड़ेंगे.

पंडित ब्रजमोहन दत्ता तरया 'कैफ़ी' ने अपनी बढ़िया किताब "कैफ़िया" में यह नये लफ़्ज़ तजवीज़ किये हैं:—

1. अदबी नादारी : बे ज़रूरत दूसरी ज़बान के अदब से मदद लेने की रग़बत
2. अधूरा हाफ़ज़ा : पूरी बात याद न रखना
3. उड़नाऊ : हवाई जहाज़
4. भकड़ौल : भक से उड़ने वाली चीज़. ठिठोल के जोड़ पर
5. जान अनजानपन : तजाहिल आरफ़ाना
6. तिलंजन : तेल से चलने वाला इंजन
7. ज़िन्दगी का ढलवां हिस्सा : जवानी के खतम के क़रीब की उमर
8. गंगा जमनी सलूक : वह सलूक जो एकसा या यकसां न हो.
9. गुलाबी जज़्बात : अध गरम या कमज़ोर जज़्बे जैसे गुलाबी जाड़ा.
10. लाम बन्दी : जंग में जाने की तैयारियां

آم طور پر بڑی خوبصورت اور باز مرتبہ دلفریب لگتی ھے . اس پھولوں والی گھاس کا کوی نام نہیں. اس کے الاوا دو تین سخت جان خد اگاؤ درخت ھیں . انھیں انسانی غارت گری سے بچایا جاے تو حیدرآباد کے اتراف کی لاکھوں ایکڑ پتھریلی زمین پر جنگل کے جنگل بسائے جاسکتے ھیں. اتفاق سے کہیں کہیں یہ درخت بچ جاتے ھیں جن سے ان کے وجود اور فایدے پن کا ثبوت ملتا ھے. ان درختوں کے بھی کوی نام نہیں .

ھندستان کے لئے جو Draft Constitution بنا تھا اس کے ھندی انوواد کی تمہید میں لکھا تھا :—

"Uptil now Hindi infact every other language of India has been the vehicle of thoughts on subjects such as theologoy, poetry, history and the like......Hindi has never been used for making laws and drafting constitutions."

ان سب مثالوں سے ایک ھی بات بار بار ثابت ھوتی ھے. وہ یہ کہ ھماری بھاشا کو ان گنت نئے نئے لفظوں کی ضرورت ھے. جہاں کہیں جڑواں اور ملواں لفظ بنانے کے بعد یا ھندیاوے سے بھی یا کسی اور اصول کو اختیار کرنے کے بعد بھی کام نہیں چلتا وھاں موزوں اور اچھے لفظوں کو گھڑنا ھی پڑیگا. اس کے بنا کوی چارا نہیں . بالکل مجبوری کی صورت میں نئی نئی آوازوں کے اظہار سے نئے نام سجھانے پڑینگے یا نئے لفظ تجویز کرنے پڑینگے .

پنڈت برجموھن دتتا ریہ 'کیفی' نے اپنی بڑھیا کتاب "کیفیہ" میں یہ نئے لفظ تجویز کئے ھیں:—

1. ادبی ناگری : بے ضرورت دوسری زبان کے ادب سے مدد لینے کی رغبت .
2. ادھورا حافظہ : پوری بات یاد نہ رکھنا .
3. اڑناؤ : ھوائی جہاز
4. بھکڑول : بھک سے اڑنے والی چیز . ٹھٹول کے جوڑ پر .
5. جان انجان پن : تجاھل عارفانہ
6. تللجن : تیل سے چلنے والا انجن
7. زندگی کا ڈھلواں حصہ : جوانی کے ختم کے قریب کی عمر .
8. گنگا جمنی سلوک : وہ سلوک جو ایک سا یا یکساں نہ ھو .
9. گلابی جذبات : ادھ گرم یا کمزور جذبے جیسے گلابی جاڑا .
10. لام بندی : جنگ میں جانے کی تیاریاں

11. मान जोखम : इज़्ज़त के लिये ख़तरा

अगरचे यह सब लफ़्ज़ अच्छे और बाज़ बहुत अच्छे हैं मगर यह सब इन ही असूलों पर बनाए गए हैं जिनकी टीका पिछले सफ़ों में हो चुकी है. यानी चालू लफ़्ज़ों से नया लफ़्ज़ बनाना, जुड़वां लफ़्ज़ बनाना या दूसरे लफ़्ज़ बनाना. इनकी और भी मिसालें हैं जो मेरी नज़र से गुज़री हैं या मैंने कहीं सुनी थीं या ख़ुद मुझे सूझी थीं :

धन काज = वह अमल या कोशिश जो हम दौलत हासिल करने के लिये करते हैं.

धर्म काज = वह अमल या कोशिश जो हम ख़ुदा या मज़हब की ख़ातिर करते हैं.

राज काज = वह काम काज जो हकूमत को बदलते या बेहतर बनाने की ख़्वाहिश से या हकूमत हासिल करने या बरक़रार रखने के लिये किया जाता है.

मन काज = वह काम जो हम दिल की ख़ातिर करते हैं.

शुदबुदया वह शख़्स जिसका काम काज या वाक़फ़ियत बिलकुल मामूली बल्कि घटिया हो.

अबपतिया = अलिफ़ (الف) बे (ب) पे (پ) ते (ت) पढ़ने वाला. नौसिख.

आसेबिन = वह औरत जिस पर भूत का असर हो.

सुलक्कड़ = बहुत जल्द जल्द सोने वाला. भुलक्कड़ के आधार पर.

मनदुरुस्ती = मन + दुरुस्ती = तन्दुरुस्ती के वज़न पर; इस लफ़्ज़ के माने ख़ुद ज़ाहिर हैं.

नये नये लफ़्ज़ों की इतनी मिसालें देने के बाद भी सौ फ़ी सैकड़ा नये नये लफ़्ज़ों की ज़रूरत इसलिये होती है कि बाज़ चीज़ें जो हमारे अतराफ़ हम देख सकते हैं, या हम ख़ुद अपने में महसूस करते हैं या क़ुदरत की पैदावार हैं, इनके लिये अब तक कोई नाम या लफ़्ज़ हमारी ग़फ़लत, कम ज़ौक़ी या कम समझी के कारन नहीं रखे गए थे.

हैदराबाद के अतराफ़ में पाए जाने वाले बाज़ ख़ुद उगाऊ दरख़्तों के लिये मैंने यह नाम दिये हैं : अंभल (अनभल), सिम्सर (सिमसर), दंदूर (बवज़न अंगूर) दिनेनी (दिनएनी); और इन फूलों को जिनसे जाबजा तख़्ते के तख़्ते भरे रहते हैं और बहार में कसरत से दिखाई देते हैं, मैंने चिन्तारे का नाम दिया है.

बाज़ लोग लफ़्ज़ गढ़ने के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं. वह कहते हैं कि यह तो कोई बात न हुई कि हर नई चीज़ या विशेषता के लिये हम एक लफ़्ज़ गढ़ लें ? मैं कहता हूं कि आख़िर इसमें हरज ही क्या है. हर लफ़्ज़ आख़िर कहीं

.11 مان جوکھم : عزت کے لئے خطرہ

اگرچہ یہ سب لفز اچھے اور باز بہت اچھے ھیں مگر یہ سب ان ھی اسولوں پر بنائے گئے ھیں جن کی ٹیکا پچھلے سفھوں میں ھو چکی ھے . یانے چالو لفزوں سے نیا لفز بنانا، جڑواں لفز بنانا یا دوسرے لفز بنانا . ان کی اور بھی مسالیں ھیں جو میری نزر سے گزری ھیں یا میں نے کہیں سنی تھیں یا خد مجھے سوجھی تھیں:

دھن کاج = وہ عمل یا کوشش جو ھم دولت ھاسل کرنے کے لئے کرتے ھیں ۔

دھرم کاج = وہ عمل یا کوشش جو ھم خدا یا مذھب کی خاتر کرتے ھیں ۔

راج کاج = وہ کام کاج جو ھکومت کو بدلنے یا بہتر بنانے کی خاھش سے یا ھکومت ھاسل کرنے یا قرار رکھنے کے لئے کیا جاتا ھے ۔

من کاج = وہ کام جو ھم دل کی خاتر کرتے ھیں ۔

شدبدیا = وہ شخص جس کا کام کاج یا وقفیت بلکل ماملی بلکہ گھٹیا ھو ۔

ابپتیا = ا ب پ ت پڑھنے والا. نو سکھ .

آسیبن = وہ اورت جس پر بھوت کا اثر ھو ۔

سلکڑ = بہت جلد جلد سونے والا- بھلکڑ کے آدھار پر

مندرستی = من + درستی؛ تندرستی کے وزن پر؛ اس لفز کے مانے خد ظاھر ھیں ۔

نئے نئے لفزوں کی اتنی مسالیں دینے کے باد بھی سو فی سیکڑہ نئے نئے لفزوں کی زرورت اس لئے ھوتی ھے کہ باز چیزیں جو ھمارے اتراف ھم دیکھ سکتے ھیں، یا ھم خد اپنے میں محسوس کرتے ھیں یا قدرت کی پیداوار ھیں، ان کے لئے اب تک کوئی نام یا لفز ھماری غفلت، کم ذوقی یا کم سمجھی کے کارن نہیں رکھے گئے تھے ۔

ھیدرآباد کے اتراف میں پائے جانے والے باز خد اگاؤ درختوں کے لئے میں نے یہ نام دے ھیں : انبھل (ان بھل)، سمسر (سم سر)، دندور (بروزن انگور)، دنینی (دن اے نی)؛ اور ان پھولوں کو جن سے جا بجا تختے کے تختے بھرے رھتے ھیں اور بہار میں کسرت سے دکھائی دیتے ھیں، میں نے چنتارے کا نام دیا ھے ۔

باز لوگ لفز گڑھنے کے بلکل خلاف ھیں . وہ کہتے ھیں کہ یہ تو کوئی بات نہ ھوئی کہ ھر نئی چیز یا ویشیشتا کے لئے ھم ایک لفز گڑھ لیں ؟ میں کہتا ھوں کہ آخر اس میں ھرج ھی کیا ھے . ھر لفز آخر کہیں

न कहीं, कभी न कभी, किसी न किसी ने गढ़ा ही था तब ही तो वह किसी न किसी ज़बान में मशहूर हो कर उसका जुज़ बन गया ? आख़िर लफ़्ज़ है क्या ? एक आवाज़ है जिसके माने ख़ुद इस लफ़्ज़ में नहीं होते. अगर सभी पानी को टानी कहें और दूध को धनजा तो टानी के माने इस चीज़ के होंगे जिससे हम अपनी प्यास बुझाते हैं, और धनजा से मुराद वह चीज़ होगी जिससे घी, मक्खन वग़ैरा बनता है.

लफ़्ज़ों के गढ़ने में कोई बुराई नहीं. अलबत्ता इनकी आवाज़ें ऐसी होनी चाहिये जो हमारी भाशा के सुभाव से मेल पैदा कर सकें; जिनमें हर दिल प्रेम पन हो याने जनता में मक़्बूलियत का माद्दा. नये लफ़्ज़ों की तैदाद में धीरे धीरे ही इज़ाफ़ा करना चाहिये ताकि वह हमारी भाशा में कसरते इस्तेमाल से घुल मिल सकें और उनके समझने में दुशवारी न हो.

बिलकुल नये लफ़्ज़ों के बनाने की यह तरकीब हो सकती है कि जो लफ़्ज़ और नाम ग़ैर इरादी तौर पर हमारी भाशा में बनाए गए थे और अब हमारी ज़बान का जुज़ बन गए हैं उन्हीं के नमूने या आधार पर नये नये मसदर, नाम वग़ैरा गढ़े जायं. मसलन मैंने एक दरख़्त को जो पीपल से मिलता जुलता है एपल नाम दिया है. नीम हमारे देस का मशहूर दरख़्त है. जमधर एक हथियार का नाम है. भाशाई ज़ौक़ और एहतियात से काम लेते हुए हम इन लफ़्ज़ों के आधार पर बीसियों नये नये लफ़्ज़ बना सकते हैं जो हमारी ज़बान में खप सकते हैं.

हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाशा हिन्दुस्तानी को बनाना चाहिये जो न संस्कृत के सांचे में ढाली हुई हिन्दी हो और न फ़ारसी के सांचे में ढाली हुई उरदू, बल्कि दोनों का एक ख़ुबसूरत संगम हो जिस में मुल्क की अलग अलग ज़बानों से बल्कि ग़ैर मुलकी ज़बानों से शब्द बे झिझक लिये जायं. अपने को सिर्फ़ हिन्दी या उरदू तक संकुचित रखना अक़्ल और देश भक्ति के ख़िलाफ़ एक जुर्म होगा.

—महात्मा गांधी

('हरिजन' 5 अक्तूबर सन 47)

نہ کہیں، کبھی نہ کبھی، کسی نہ کسی نے گڑھا ہی تھا، تب ہی تو وہ کسی نہ کسی زبان میں مشہور ہو کر اس کا جز بن گیا ؟ آخر لفظ ہے کیا ؟ ایک آواز ہے جس کے معنی خود اس لفظ میں نہیں ہوتے . اگر سبھی پانی کو ٹانی کہیں اور دودھ کو دھنجا تو ٹانی کے مانے اس چیز کے ہونگے جس سے ہم اپنی پیاس بجھاتے ہیں، اور دھنجا سے مراد وہ چیز ہوگی جس سے گھی، مکھن وغیرہ بنتا ہے .

لفظوں کے گڑھنے میں کوئی برائی نہیں البتہ ان کی آوازیں ایسی ہونی چاہئیں جو ہماری بھاشا کے سبھاؤ سے میل پیدا کر سکیں؛ جن میں ہر دل پریم پن ہو یانے جنتا میں مقبولیت کا مادا . نئے لفظوں کی تعداد میں دھیرے دھیرے ہی اضافہ کرنا چاہئے تاکہ وہ ہماری بھاشا میں کثرت استعمال سے گھل مل سکیں اور ان کے سمجھنے میں دشواری نہ ہو .

بالکل نئے لفظوں کے بنانے کی یہ ترکیب ہو سکتی ہے کہ جو لفظ اور نام غیر ارادی طور پر ہماری بھاشا میں بنائے گئے تھے اور اب ہماری زبان کا جز بن گئے ہیں انہیں کے نمونے یا آدھار پر نئے مصدر، نام وغیرہ گڑھے جائیں . مثلاً میں نے ایک درخت کو جو پیپل سے ملتا جلتا ہے اپل نام دیا ہے . نیم ہمارے دیش کا مشہور درخت ہے . جمدھر ایک ہتھیار کا نام ہے . بھاشائی ذوق اور احتیاط سے کام لیتے ہوئے ہم ان لفظوں کے آدھار پر بیسیوں نئے نئے لفظ بنا سکتے ہیں جو ہماری زبان میں کھپ سکتے ہیں .

ہندستان کی راشٹر بھاشا ہندستانی کو بنانا چاہئے جو نہ سنسکرت کے سانچے میں ڈھالی ہوئی ہندی ہو اور نہ فارسی کے سانچے میں ڈھلی ہوئی اردو، بلکہ دونوں کا ایک خوبصورت سنگم ہو جس میں ملک کی الگ الگ زبانوں سے بلکہ غیر ملکی زبانوں سے شبد بے جھجھک لئے جائیں . اپنے کو صرف ہندی یا اردو تک سنکچت رکھنا عقل اور دیش بھکتی کے خلاف ایک جرم ہوگا .

—مہاتما گاندھی

('ہریجن' 5 اکتوبر سن 47)

कहानी

दौलत

(चक्रवर्ती राजगोपालाचारी)

प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेट का इजलास हो रहा था. मंच पर दो जज विराजमान थे. एक सरकारी मुलाजिम और दूसरे बे तनख्वा पाने वाले सलाहकार. नीचे की कुरसियों पर कुछ वकील और पुलीस के हाकिम बैठे थे. मुजरिम के कटघरे में एक लड़का खड़ा था.

"तेरे बाप का क्या नाम है ?"

"मेरे बाप नहीं हैं" लड़के ने जवाब दिया.

"कब मरे थे ?" मजिस्ट्रेट ने सहानुभूति प्रकट करते हुए पूछा.

"मरे नहीं ! मेरे पिता थे ही नहीं !" लड़के ने कहा.

दोनों हाकिम हंस पड़े.

"तेरी उम्र क्या है ?" पेशकार ने पूछा और लिखना शुरू किया.

"दस साल"

"नाम !"

"ओवर्स कृष्णन्"

"ओवर्स का क्या माने होता है ?"

"मुझे लोग उसी नाम से पुकारते हैं."

"ऐसा नाम क्यों रखा गया ? यह मालूम है ?" आनरेरी मजिस्ट्रेट ने बीच में पूछा.

"मेरी मां को—नहीं जी, मुझे पालने वाली मां के एक अपना बेटा था और दूसरा पालतू. दोनों मुझसे उम्र में बड़े थे. उनके नाम भी कृष्णन् थे—बड़ा कृष्णन् और छोटा कृष्णन्. मैं उनकी देख रेख करता था इसलिये मां ने मुझे मिस्त्री कृष्णन के नाम से पुकारा. बड़े कृष्णन् को यह बात पसन्द नहीं आई; वह रो उठा. वह तो सगा बेटा था न !"

"यह तुझे कैसे मालूम हुआ कि वह सगा बेटा है ?" आनरेरी मजिस्ट्रेट ने पूछा.

"वह जो कुछ कहना चाहता है उसे कहने दीजिये. बीच में दखल न दीजिये." मजिस्ट्रेट ने धीरे से कहा पर उनकी आवाज़ में ज़ोर था.

کہانی

دولت

(چکرورتی راج گوپالاچاری)

پریسیڈینسی مجسٹریٹ کا اجلاس ہو رہا تھا. منچ پر دو جج وراجمان تھے. ایک سرکاری ملازم اور دوسرے بے تنخواہ پانے والے صلاح کار. نیچے کی کرسیوں پر کچھ وکیل اور پولیس کے حاکم بیٹھے تھے. مجرم کے کٹگھرے میں ایک لڑکا کھڑا تھا.

" تیرے باپ کا کیا نام ہے؟"

" میرے باپ نہیں ہیں" لڑکے نے جواب دیا.

" کب مرے تھے؟" مجسٹریٹ نے سہانوبھوتی پرکٹ کرتے ہوئے پوچھا.

" مرے نہیں! میرے پتا تھے ہی نہیں!" لڑکے نے کہا.

دونوں حاکم ہنس پڑے.

" تیری عمر کیا ہے؟" پیشکار نے پوچھا اور لکھنا شروع کیا.

" دس سال "

" نام! "

" اوورس کرشنن "

" اوورس کا کیا معنی ہوتا ہے؟"

" مجھے لوگ اسی نام سے پکارتے ہیں."

" ایسا نام کیوں رکھا گیا. یہ معلوم ہے؟" آنریری مجسٹریٹ نے بیچ میں پوچھا.

" میری ماں کو—نہیں جی، مجھے پالنے والی ماں کے ایک اپنا بیٹا تھا اور دوسرا پالتو. دونوں مجھ سے عمر میں بڑے تھے. ان کے نام بھی کرشنن تھے—بڑا کرشنن اور چھوٹا کرشنن. میں ان کی دیکھ ریکھ کرتا تھا اس لئے ماں نے مجھے مستری کرشنن کے نام سے پکارا. بڑے کرشنن کو یہ بات پسند نہیں آئی؛ وہ رو اٹھا. وہ تو سگا بیٹا تھا نہ!"

" یہ تجھے کیسے معلوم ہوا کہ وہ سگا بیٹا ہے؟" آنریری مجسٹریٹ نے پوچھا.

" وہ جو کچھ کہنا چاہتا ہے اسے کہنے دیجئے. بیچ میں دخل نہ دیجئے." مجسٹریٹ نے دھیرے سے کہا پر ان کی آواز میں زور تھا.

'माफ़ फ़र्माइयेगा!" आनरेरी मजिस्ट्रेट ने कहा और कुरसी को पीछे की तरफ़ खिसका कर बैठ गए.

"बड़ा कृष्नन झगड़ने लगा और अपने को मिस्त्री कहना शुरू किया. इसलिये मां उसको मिस्त्री कृष्नन् कहने पर राज़ी हो गई. और उसी दिन से मुझे ओवर्स कृष्नन् के नाम से पुकारने लगी." लड़के ने जवाब दिया.

"अरे तू ओवरसीयर है?" मजिस्ट्रेट ने हंसते हुए पूछा और पास बैठे हुए आनरेरी मजिस्ट्रेट को भी जो ज़रा गुस्से में मालूम पड़ते थे, हंसाने की कोशिश की.

"और दूसरे का क्या नाम था?" हाकिम ने पूछा.

"उसका कोई नाम नहीं रखा. वह रोता नहीं था. बड़ा सीधा सादा लड़का था."

"तो क्या तू शरीर लड़का है?"

"नहीं साहब, मैं भी सीधा सादा हूं."

"सो तो ठीक है. तूने मैलापूर के मेले में क्यों चोरी की थी?"

"मैंने चोरी नहीं की. मैं ने सिर्फ़ भीक मांगी थी."

"मौक़ा पड़ने पर कभी कभी चुराते भी हो न!" दारोग़ा जी ने पूछा.

आनरेरी मजिस्ट्रेट को हंसी आ गई—लड़का भी हंस दिया और अदालत में जितने लोग थे सब के सब हंस पड़े. हर एक को लड़के के साथ हमदर्दी थी. जब लड़का हंस रहा था, तब उसके मुख पर एक तरह का प्रकाश दिखाई दे रहा था जो सबों अपनी तरफ़ खींचने लगा.

"देखो तो सही, उसका मुखड़ा कितना सुन्दर है वह तो किसी अच्छे कुल का पुत्र सा मालूम होता है." एक वकील साहब ने अपनी राय ज़ाहिर की.

"किसी कुलीन स्त्री ने बदचलन बन कर इसको जन्म दिया होगा. नयना पुरम के कुछ लोग ऐसे बच्चों को ख़रीद कर गुज़र करते हैं. वह सब बच्चे तो बड़े सुन्दर होते हैं." दूसरे वकील ने कहा.

"हां हां, वैसे ही चोर लड़के मद्रास में बढ़ते जा रहे हैं." एक सज्जन ने कहा.

× × ×

"कृष्ना! हमारी बात मान ले. आगे से न चुराने का वादा करेगा तो इस बार तुझे माफ़ कर देंगे." मजिस्ट्रेट ने कहा.

"हां, आप जैसा कहते हैं वैसा ही करूंगा." लड़के ने कहा.

" معاف فرمائیگا." آنریری مجسٹریٹ نے کہا اور کرسی کو پیچھے کی طرف کھسکا کر بیٹھ گئے.

" بڑا کرشنن جھگڑنے لگا اور اپنے کو مستری کہنا شروع کیا. اِس لئے ماں اُس کو مستری کرشنن کہنے پر راضی ہو گئی. اور اُسی دن سے مجھے اوورس کرشنن کے نام سے پکارنے لگی. لڑکے نے جواب دیا.

" ارے تو اوورسیر ہے؟" مجسٹریٹ نے ہنستے ہوئے آنریری مجسٹریٹ کو بھی جو ذرا غصہ میں معلوم پڑتے تھے، ہنسانے کی کوشش کی.

" اور دوسرے کا کیا نام تھا؟" حاکم نے پوچھا.

" اُس کا کوئی نام نہیں رکھا. وہ روتا نہیں تھا. بڑا سیدھا سادہ لڑکا تھا."

" تو کیا تو شریر لڑکا ہے؟"

" نہیں صاحب میں بھی سیدھا سادہ ہوں."

" سو تو ٹھیک ہے. تو نے میلاپور کے میلے میں کیوں چوری کی تھی؟"

" میں نے چوری نہیں کی. میں نے صرف بھیک مانگی تھی."

موقعہ پڑنے پر کبھی کبھی چرانے بھی ہو نہ!" داروغہ جی نے پوچھا.

آنریری مجسٹریٹ کو ہنسی آ گئی—لڑکا بھی ہنس دیا اور عدالت میں جتنے لوگ تھے سب کے سب ہنس پڑے. ہر ایک کو لڑکے کے ساتھ ہمدردی تھی. جب لڑکا ہنس رہا تھا، تب اُس کے مکھ پر ایک طرح کا پرکاش دکھائی دے رہا تھا جو سبوں کو اپنی طرف کھینچنے لگا.

" دیکھو تو سہی اُس کا مکھڑا کتنا سندر ہے وہ تو کسی اچھے کل کا پترسا معلوم ہوتا ہے." ایک وکیل صاحب نے اپنی رائے ظاہر کی.

" کسی کلین استری نے بد چلن بن کر اس کو جنم دیا ہوگا. نینا پرم کے کچھ لوگ ایسے بچوں کو خرید کر گذر کرتے ہیں. وہ سب بچے تو بڑے سندر ہوتے ہیں." دوسرے وکیل نے کہا.

" ہاں ہاں، ویسے ہی چور لڑکے مدراس میں بڑھتے جا رہے ہیں." ایک سجن نے کہا.

× × × ×

" کرشنا! ہماری بات مان لے. آگے سے نہ چرانے کا وعدہ کریگا تو اِس بار تجھے معاف کر دینگے." مجسٹریٹ نے کہا.

ہاں، آپ جیسا کہتے ہیں ویسا ہی کروں گا" لڑکے نے کہا.

"भीड़ में किसी की जेब में हाथ न डालेगा ना." आनरेरी मजिस्ट्रेट ने सलाह दी.

"हरगिज़ नहीं साहब ! मैं भीक ही मागूंगा." ओवर्स कृष्नन ने कटाक्ष किया.

"दारोग़ा जी ! आपकी क्या मर्ज़ी है ?"

"जैसी अदालत की मर्ज़ी. यह बदमाश है. यह ख़ुद कहता है कि मैं ओवरसीयर हूँ." दारोग़ा जी ने कहा.

"जी साहब ! मैं चोर नहीं हूं. ओवर्स मां का दिया हुआ नाम है." लड़के ने जवाब दिया.

मजिस्ट्रेट ने काग़ज़ात को उलट पुलट कर देखा और दारोग़ा जी की तरफ़ मुड़कर पूछा "कोई गवाह है ?"

दारोग़ा जी और उनके नायब मुलाज़िमों में कानाफूसी हुई. थोड़ी देर के बाद दारोग़ा जी ने कहा—"अदालत की सलाह के मुताबिक़ लड़के को छोड़ दिया जाय."

(2)

जिस औरत ने इन लड़कों को पाला था उसको हैज़े में मरे आठ साल बीत चुके. उसके मरने पर बच्चे बिलकुल अनाथ हो गये. गलियों में भीक मांगना, आवारा लड़कों के साथ गलियों में सोना उन अनाथों की दिनचर्या थी.

यह लड़के दिन भर इधर उधर घूमते भटकते और रात होने पर नयनापुरम के शीशे के कारख़ाने के पास के राख के टीले पर सो जाते थे. कचहरी की कारवाई के बाद दो तीन दिन तक ओवर्स कृष्नन ने चोरी के कामों में हिस्सा नहीं लिया था. तब कुप्पाडी जो इस से चार साल बड़ा था, कहा—"अरे ओवर्स, इतना क्यों डर रहे हो ?"

"मैं डरता नहीं हूं. डरपोक तो तुम हो." ओवर्स ने जवाब दिया.

चाइना बाज़ार, मूर मार्केट और कोत्तवाल चावड़ी की तरफ़ दो तीन दिन तक वह दोनों मौक़े की ताक में बैठे रहे पर हत्थे कुछ नहीं लगा.

"रास्ता चलने वाले सबके सब चोरों से परेशान मालूम होते हैं. अपनी जेबों पर हाथ रख कर सावधानी से चले जा रहे हैं. इस के पहले तो ऐसा नहीं होता था." कुप्पाडी ने कहा.

लोगों के शास्त्र के अनुसार कुप्पाडी चोर है और चोरों के शास्त्र में लोग चोर हैं.

ओवर्स कृष्नन आठ साल तक इसी तरह के काम करता रहा. बाद में किसी ने उसे फुसला कर पेनांग के रबड़ के बाग़ीचे में भेज दिया. वह मेहनत से काम करने लगा. होशियारी और ईमानदारी से काम करके उसने

" بھیڑ میں کسی کی جیب میں هاتھ ڈالیگا نہ ."
آنریری مجسٹریٹ نے صلاح دی .

" هرگز نہیں صاحب ! میں بھیک هی مانگونگا "
اوورس کرشنن نے کٹاکش کہا .

" داروغہ جی ! آپ کی کیا مرضی هے ؟ "

" جیسی عدالت کی مرضی . یہ بدمعاش هے . یہ
خود کہتا هے کہ میں اوورسیر هوں . " داروغہ جی نے کہا .

" جی صاحب ! میں چور نہیں هوں . اوورس ماں
کا دیا هوا نام هے . " لڑکے نے جواب دیا .

مجسٹریٹ نے کاغذات کو اُلٹ پلٹ کر دیکھا اور
داروغہ جی کی طرف مڑ کر پوچھا " کوئی گواہ هے ؟ "

داروغہ جی اور اُن کے نائب ملازموں میں کانا پھوسی
هوئی . تھوڑی دیر کے بعد داروغہ جی نے کہا —" عدالت
کی صلاح کے مطابق لڑکے کو چھوڑ دیا جائے . "

(2)

جس عورت نے اِن لڑکوں کو پالا تھا اُس کو هیضہ
میں مرے آٹھ سال بیت چکے . اُس کے مرنے پر بچے
بالکل اناتھ هوگئے . گلیوں میں بھیک مانگنا' آوارہ لڑکوں
کے ساتھ گلیوں میں سونا اُن اناتھوں کی دن چریا تھی .

یہ لڑکے دن بھر اِدھر اُدھر گھومتے بھٹکتے اور رات هونے
پر نینا پرم کے شیشے کے کارخانے کے پاس کے راکھ کے ٹیلے پر
سو جاتے تھے . کچہری کی کاروائی کے بعد دو تین دن تک
اوورس کرشنن نے چوری کے کاموں میں حصہ نہیں لیا
تھا . تب کپاڈی نے جو اِس سے چار سال بڑا تھا' کہا —
" ارے اوورس اتنا کیوں ڈر رهے هو ؟ "

" میں ڈرتا نہیں هوں . ڈرپوک تو تم هو . " اوورس
نے جواب دیا .

چائنا بازار' مور مارکیٹ اور کوتوال چاوڑی کی طرف
دو تین تک وہ دونوں موقع کی تاک میں بیٹھے رهے
پر هتھے کچھ نہیں لگا .

" راستہ چلنے والے سب کے سب چوروں سے پریشان
معلوم هوتے هیں . اپنی جیبوں پر هاتھ رکھکر ساودھانی
سے چلے جارهے هیں . اِس کے پہلے تو ایسا نہیں هوتا تھا "
کپاڈی نے کہا .

لوگوں کے شاستر کے انوسار کپاڈی چور هے اور چوروں
کے شاستر میں لوگ چور هیں .

اوورس کرشنن آٹھ سال تک اِسی طرح کے کام کرتا رها .
بعد میں کسی نے اُسے پھسلا کر پینانگ کے ربر
کے باغیچہ میں بھیج دیا . وہ محنت سے کام
کرنے لگا . هوشیاری اور ایمانداری سے کام کرکے اُس نے

कुछ रुपया जमा कर लिया. जब वह हिन्दुस्तान लौटा तब उसकी उम्र चालीस साल की थी. वह तीन पत्नियों के साथ आया था. अब वह तम्बाकू का बड़ा व्योपारी है. मौज की जिन्दगी बसर करता है. उसके आठ लड़के और दो लड़कियां हैं. उसके यहां झगड़ा फ़साद का नाम व निशान तक नहीं. अब वह गौरव पूर्न जीवन बिता रहा है. सब से छोटी और आख़री लड़की के सिवा बाक़ी सब तम्बाकू मंडी में दूसरे मजदूरों के साथ मजदूर बन कर काम कर रहे हैं. ओवर्स कृष्नन का नाम पेराक्कु रामास्वामी मुदालियर हो गया है. अब वह तमिल भाषा के अच्छे लेखक बन चुके हैं. उन्होंने पेनांग में लिखना पढ़ना सीखा और चौबीस साल की उम्र के बाद उन्होंने 'मेरी कहानी' नामक अपनी जीवनी लिखी है. अब वह ख़ुद अपनी जीवन कहानी सुनाते हैं. कहानी यूं है—

कुप्पाडी ने एक बूढ़े की जेब से बटुआ चुरा लिया था. वह ट्राम के पीछे से निकला और चुपके से बटुए को नीचे डाल दिया. पक्किरी दौड़ने लगा. शोर मचा कि बटुआ किसी ने मार दिया! चोर को पकड़ो. फ़ौरन ही लोगों ने भागते हुए पक्किरी को पकड़ लिया और ख़ूब पीटा. सड़क के सामने मैं खड़ा था, पर किसी ने मेरी तरफ़ देखा भी नहीं. लोगों ने मार खाने वाले लड़के को घेर लिया. नीचे पड़े बटुए को चुपके से उठा कर मैंने अपनी लंगोटी के अन्दर रख लिया. लड़का जो पकड़ा गया था रो उठा. ज़ियादा थप्पड़ खाने की वजह से वह ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था. लोगों ने उसके कपड़ों को देखा पर उसके पास कुछ नहीं था.

"छोड़ दीजिये इस बेचारे को. चुराने वाला यह नहीं था. चोर आप की पकड़ में कैसे आ सकता है?" एक टोकरी वाली ने कहा.

मैंने भी उन लोगों की बात चीत में भाग लिया. "यह तो बदमाश चोर है. चुरा कर अपने साथी के हाथ में दे दिया होगा" मैंने कहा.

भीड़ बिखर गई. बटुआ खोने वाला आदमी परेशान हो कर अपने मित्र के साथ बात करते हुए चल दिया.

अपने पहले से बने प्रोग्राम के अनुसार एक बाग़ के कोने में कुप्पाडी, पक्किरी और मैं तीनों मिले. बटुए में अट्ठारह चांदी के रुपये और कुछ रेज़गारी भी थी. कुप्पाडी ने बड़ी शराफ़त दिखाई. उसने रुपयों को तीन हिस्सों में बांटा. छै चांदी के रुपये उसने अपने हिस्से में लिये और पक्किरी को छै रुपये दिये. मेरे हिस्से के छै रुपये रखे और बचे हुए पैसों में दस आने पक्किरी के हाथ में रख कर कहा—"यह लो दस आने, मार खाने की मज़दूरी."

کچھ روپیہ جمع کر لیا ۔ جب وہ ھندستان لوٹا تب اُس کی عمر چالیس سال کی تھی ۔ وہ تین پتنیوں کے ساتھ آیا تھا ۔ اب وہ تمباکو کا بڑا بیوپاری ھے ۔ موج کی زندگی بسر کرتا ھے ۔ اُس کے آٹھ لڑکے اور دو لڑکیاں ھیں ۔ اُس کے یہاں جھگڑا فساد کا نام و نشان تک نہیں ۔ اب وہ گورو پورن جیون بتا رھا ھے ۔ سب سے چھوٹی اور آخری لڑکی کے سوا باقی سب تمباکو منڈی میں دوسرے مزدوروں کے ساتھ مزدور بن کر کام کر رھے ھیں ۔ اوورس کرشنن کا نام پیراکو راما سوامی مدالیر ھو گیا ھے ۔ اب وہ تمل بھاشا کے اچھے لیکھک بن چکے ھیں ۔ اُنھوں نے پینانگ میں لکھنا پڑھنا سیکھا اور چوبیس سال کی عمر کے بعد اُنھوں نے 'میری کہانی' نامک اپنی جیونی لکھی ھے ۔ اب وہ خود اپنی جیون کہانی سناتے ھیں ۔ کہانی یوں ھے—

کپاڈی نے ایک بوڑھے کی جیب سے بٹوا چرا لیا تھا ۔ وہ ٹرام کے پیچھے سے نکلا اور چپکے سے بٹوے کو نیچے ڈال دیا ۔ پکری دوڑنے لگا ۔ شور مچا کہ بٹوا کسی نے مار دیا ۔ چور کو پکڑو ۔ فوراً ھی لوگوں نے بھاگتے ھوئے پکری کو پکڑ لیا اور خوب پیٹا ۔ سڑک کے سامنے میں کھڑا تھا' پر کسی نے میری طرف دیکھا بھی نہیں ۔ لوگوں نے مار کھانے والے لڑکے کو گھیر لیا ۔ نیچے پڑے بٹوے کو چپکے سے اُٹھا کر میں نے اپنی لنگوٹی کے اندر رکھ لیا ۔ لڑکا جو پکڑا گیا تھا رو اُٹھا ۔ زیادہ تھپڑ کھانے کی وجہ سے وہ زور سے چلا چلا کر رو رھا تھا ۔ لوگوں نے اُس کے کپڑوں کو دیکھا پر اُس کے پاس کچھ نہیں تھا ۔

"چھوڑ دیجئے اِس بیچارے کو ۔ چرانے والا یہ نہیں تھا. چور آپکی پکڑ میں کیسے آ سکتا ھے؟" ایک ٹوکری والی نے کہا ۔

میں نے بھی اُن لوگوں کی بات چیت میں بھاگ لیا. "یہ تو بدمعاش چور ھے ۔ چرا کر اپنے ساتھی کے ھاتھ میں دے دیا ھوگا" میں نے کہا ۔

بھیڑ بکھر گئی ۔ بٹوا کھونے والا آدمی پریشان ھوکر اپنے متر کے ساتھ بات کرتے ھوئے چل دیا ۔

اپنے پہلے سے بنے پروگرام کے انوسار ایک باغ کے کونے میں کپاڈی' پکری اور میں تینوں ملے ۔ بٹوئے میں اٹھارہ چاندی کے روپئے اور کچھ ریزگاری بھی تھی ۔ کپاڈی نے بڑی شرافت دکھائی. اس نے اپنے روپیوں کو تین حصوں میں بانٹا. چھ چاندی کے روپئے اُس نے اپنے حصہ میں لئے اور پکری کو چھ روپیہ دیئے. میرے حصہ کے چھ روپیہ رکھے اور بچے ھوئے پیسوں میں دس آنے پکری کے ھاتھ میں رکھکر کہا—"یہ لو دس آنے مار کھانے کی مزدوری."

इसके बाद कुप्पाडी ने मेरे हिस्से के रुपयों में से दो रुपये ले लिये और कहा—"देखो असल मालिक तो इन रुपयों का मैं ही हूं क्योंकि जेब मारने वाला मैं था. पहले पहल तुमने बड़े काम में हिस्सा लिया है इसलिये गुरु-दछिना में दो रुपये मुझे दो."

"ठीक है, ख़ुशी से ले लो" मैंने कहा.

उस दिन मैं बहुत ख़ुश था. उस रात को मुझे नींद नहीं आई. मैं राख के टीले पर लेटा था पर रुपये की बात खटक रही थी. अगर मेरे पास रुपये होने की बात किसी को मालूम हो गई तो मुझे मार मार कर कचूमर निकाल देगा. मैं घबराहट और चिन्ता में डूबा हुआ था इसलिये रात भर नींद नहीं आई. भूख लगने पर मूंछ वाले मारिया पिल्ले अपनी फल की दूकान से पके हुए फल दिया करते थे. फल हाथ में दे देते थे. उनकी दूकान का केला ख़ूब पका हुआ और ज़ायक़ेदार होता था. पेनांग में भी ऐसा बढ़िया केला नहीं मिलता. गली के होटल वाले बाबू 'ओवर्स' कह कर बुलाते और बचा खुचा सालन और भात थाली भर दिया करते. पास की लोहे के दूकान वाले सामी चेट्टी दोपहर को जब खाना खाने जाते तो 'अरे कृष्ना ज़रा दूकान देखते रहना' कह कर पूरी दुकान को मेरी निगरानी में छोड़ कर चले जाते थे. उनके वापस आने तक मैं चोरों से दूकान की रखवाली करता रहता था. वापस आते ही चेट्टी कहते—"यह लो अधन्नी, 'दोसा' ख़रीद कर खा लेना.

वहीं एक कोने में एक बुढ़िया बैठी 'दोसा' बेचती थी. वैसा बढ़िया दोसा कहीं भी नहीं मिलता था.

चोरी का यह पैसा मुझे अनचाहा और बड़ा बोझ सा लगा. दुनिया तो पैसे की रट लगा कर बैठी है पर मुझे तो उस से चिढ़ सी लगी. अब वह बात याद आते ही मैं हंस उठता हूं. पहले जो डर था वह मुझ से सहा नहीं जाता था. रुपये रखने के लिये बटुआ या पेटी नहीं थी. जेब वाला कुर्ता भी नहीं था. यह बात किसी से कह भी नहीं सकता था. पैसे फेंक देने को भी मन नहीं चाहता था. अगर किसी दुकानदार के पास सौंपना चाहूं तो वह चोर बदमाश कह कर रुपये छीन कर पुलिस के हवाले कर देता इसका डर लगा रहता था.

जब अनजाने में आंख लगी भी तो सपने देख कर कांप उठता था. सपने में कोई मुझे दबा कर ज़बरदस्ती से रुपये छीन लेता था! सपने को सिर्फ़ सपना समझ कर थोड़ी सी शांति पाता.

पहले तो ऐसा नहीं हुआ था. किसी भी खुरदरी ज़मीन पर लेट कर आराम की नींद सो जाता; पर रुपया हाथ लगते ही आराम की नींद उचट गई. मुझे हर समय डर सताने लगा.

اس کے بعد کپاڈی نے میرے حصے کے روپیوں میں سے دو روپیہ لے لئے اور کہا—"دیکھو اصل مالک تو ان روپیوں کا میں ہی ہوں کیونکہ جیب مارنے والا میں تھا۔ پہلے پہل تم نے بڑے کام میں حصہ لیا ہے اس لئے گرو دکچھنا میں دو روپیہ مجھے دو۔"

"ٹھیک ہے، خوشی سے لے لو" میں نے کہا۔

اس دن میں بہت خوش تھا۔ اس رات کو مجھے نیند نہیں آئی۔ میں راکھ کے ٹیلے پر لیٹا تھا پر روپئے کی بات کھٹک رہی تھی۔ اگر میرے پاس روپئے ہونے کی بات کسی کو معلوم ہوگئی تو مجھے مار مار کر کچومر نکال دے گا۔ میں گھبراہٹ اور چنتا میں ڈوبا ہوا تھا۔ اس لئے رات بھر نیند نہیں آئی۔ بھوک لگنے پر مونچھ والے ماریا پلے اپنی پھل کی دوکان سے پکے ہوئے پھل دیا کرتے تھے۔ پھل ہاتھ میں دے دیتے تھے۔ انکی دوکان کا کیلا خوب پکا ہوا اور ذائقہ دار ہوتا تھا۔ پینانگ میں بھی ایسا بڑھیا کیلا نہیں ملتا۔ گلی کے ہوٹل والے بابو 'اوورس' کہکر بلاتے اور بچا کھچا سالن اور بھات تھالی بھر دیا کرتے۔ پاس کی لوہے کی دوکان والے سامی چیٹی دوپہر کو جب کھانا کھانے جاتے تو 'ارے کرشنا ذرا دکان دیکھتے رہنا' کہکر پوری دوکان کو میری نگرانی میں چھوڑ کر چلے جاتے تھے۔ ان کے واپس آنے تک میں چوروں سے دوکان کی رکھوالی کرتا رہتا تھا۔ واپس آتے ہی چیٹی کہتے—"یہ لو ادھنی 'دوسا' خرید کر کھا لینا۔"

وہیں ایک کونے میں ایک بڑھیا بیٹھی 'دوسا' بیچتی تھی۔ ویسا بڑھیا دوسا کہیں بھی نہیں ملتا تھا۔

چوری کا یہ پیسہ مجھے ان چاہا اور بڑا بوجھ سا لگا۔ دنیا تو پیسے کی رٹ لگا کر بیٹھی ہے پر مجھے تو اس سے چڑھ سی لگی۔ اب وہ بات یاد آتے ہی میں ہنس اٹھتا ہوں۔ پہلے جو ڈر تھا وہ مجھ سے سہا نہیں جاتا تھا۔ روپیہ رکھنے کے لئے بٹوا یا پیٹی نہیں تھی۔ جیب والا کرتہ بھی نہیں تھا۔ یہ بات کسی سے کہہ بھی نہیں سکتا تھا۔ پیسے پھینک دینے کو بھی من نہیں چاہتا تھا۔ اگر کسی دوکاندار کے پاس سونپنا چاہوں تو وہ چور بدمعاش کہکر روپئے چھین کر پولیس کے حوالے کردیتا اس کا ڈر لگا رہتا تھا۔

جب انجانے میں آنکھ لگی بھی تو سپنے دیکھکر کانپ اٹھتا تھا۔ سپنے میں کوئی مجھے دبا کر زبردستی سے روپئے چھین لیتا تھا! سپنے کو صرف سپنا سمجھکر تھوڑی سی شانتی پاتا۔

پہلے تو ایسا نہیں ہوا تھا۔ کسی بھی کھردری زمین پر لیٹ کر آرام کی نیند سو جاتا؛ پر روپیہ ہاتھ لگتے ہی آرام کی نیند اچٹ گئی۔ مجھے ہر سمے ڈر ستانے لگا۔

इसी तरह दूसरी रात भी कटी. पौ फटने के पहले उठ कर दक्खिन कीतरफ़ चला.

नुंगम बाक्कम के एक अंधेरे कोने में जा बैठा. कभी सिसकियां भरता, कभी मां की याद करके रो उठता, रोने के थोड़ी देर बाद कुछ तसल्ली हो जाती.

एक दिन एक खोखले पेड़ की खोज में फिर रहा था. पुराने माम्बलम के एक कोने में ऐसा पेड़ मिला. शाम का समय था. वहां कोई भी नहीं था. पेड़ पर चढ़ गया. खोखले के अंदर हाथ डाला. उसके अंदर चिकनाहट थी. मुझे बड़ी खुशी हुई. रुपये की गठरी रख कर नीचे उत्तर आया. फिर वहां पड़े हुए ईंट के टुकड़े को हाथ में लिये ऊपर चढ़ा. नेवला या और कोई जानवर उसे कुरेदने न पावे इसलिये मैंने ईंट का टुकड़ा रुपयों की गठरी पर रख दिया. वह हाथ से खिसक कर अंदर गिर पड़ा. दुबारा हाथ डाल कर देखा तो वहां रुपये न थे और ईंट का टुकड़ा भी न था.

कंधे की गहराई तक हाथ अन्दर चला गया वह तो निरा खोखला ही था. आखिर रुपयों से हाथ धोना पड़ा. उस वक़्त मुझे जो दुख हुआ वह लिखा नहीं जा सकता. पागल की तरह हाथ से खोखले को नोच नोच कर देखने लगा. वह खोखला खाली था. आंखों से आंसू की बूंदें टपटप गिरने लगीं. मुझे चक्कर आने लगा और मैं नीचे गिर पड़ा. थोड़ी देर वहीं बैठा रहा. उस पेड़ को जिसने मेरे धन को निगल लिया था, ऊपर से नीचे तक निहारता रहा. पहले सामने की तरफ़ बैठा था. पेड़ में कुछ और खोखले नज़र आये. शायद रुपये की गठरी नीचे वाले खोखलों में कहीं गिर पड़ी हो इस विचार और आशा के साथ फिर से पेड़ पर चढ़ा. जहां मैंने गठरी रखी थी उसी के नीचे एक और खोखला था. ईंट का टुकड़ा दिखाई पड़ा. मेरी आखों में चमक आ गई. टटोलने पर गठरी भी नज़र आई. उस वक़्त जो आनंद मिला था शब्दों में उसे बयान नहीं कर सकता. मैं खुशी के मारे उछलने कूदने लगा. दो दिन तक जितना दुख और चिन्ता से बेचैन रहा था उतना ही अब आनंद प्राप्त हुआ था.

गठरी खोल कर उस में से एक आना लिया. बचे पैसों को लंगोटी में बांधा और शहर की तरफ़ चल पड़ा. एक आने का *'इडियाप्पम' खरीदा और फिर नल का पानी पी कर मूर मार्केट की तरफ़ तेज़ी से बढ़ा यहां पुराने कुर्ते और कई चीज़ों की दुकानें थीं.

"चोर बदमाशों का यहां क्या काम, मार खाओगे" दुकानदार ने कहा.

* चावल के साथ जो नारियल छील कर बनाया जाता है.

اِسی طرح دوسری رات بھی کٹی . پو پھٹنے کے پہلے اُٹھکر دکھن کی طرف چلا .

نُنگم باکم کے ایک اندھیرے کونے میں جا بیٹھا. کبھی سسکیاں بھرتا' کبھی ماں کی یاد کرکے رو اُٹھتا . رونے کے تھوڑی دیر بعد کچھ تسلی ہو جاتی .

ایک دن ایک کھوکھلے پیڑ کی کھوج میں پھر رہا تھا . پرانے مامبلم کے ایک کونے میں ایسا پیڑ ملا . شام کا سمے تھا . وہاں کوئی بھی نہیں تھا. پیڑ پر چڑھ گیا' کھوکھلے کے اندر ہاتھ ڈالا. اُس کے اندر چکناہٹ تھی . مجھےبڑی خوشی ہوئی. میں اُس کے اندر روپئے کی گٹھری رکھکر نیچے اُتر آیا. پھر وہاں پڑے ہوئے اینٹ کے ٹکڑے کو ہاتھ میں لئے اُوپر چڑھا . نیولا یا اور کوئی جانور اُسے کریدنے نہ پاوے اِس لئے میں نے اینٹ کا ٹکڑا روپیوں کی گٹھری پر رکھ دیا. وہ ہاتھ سے کھسک کر اندر گر پڑا . دوبارہ ہاتھ ڈال کر دیکھا تو وہاں روپئے نہ تھے اور اینٹ کا ٹکڑا بھی نہ تھا !

کندھے کی گہرائی تک ہاتھ اندر چلا گیا وہ تو نرا کھوکھلا ہی تھا . آخر روپیوں سے ہاتھ دھونا پڑا . اُس وقت مجھے جو دکھ ہوا وہ لکھا نہیں جاسکتا . پاگل کی طرح ہاتھ سے کھوکھلے کو نوچ نوچ کر دیکھنے لگا . وہ کھوکھلا خالی تھا. آنکھوں سے آنسو کی بوندیں ٹپ ٹپ گرنے لگیں. مجھے چکر آنے لگا اور میں نیچے گر پڑا. تھوڑی دیر وہیں بیٹھا رہا. اُس پیڑ کو جس نے میرے دھن کو نگل لیا تھا اُوپر سے نیچے تک نہارتا رہا. پہلے سامنے کی طرف بیٹھا تھا. پیڑ میں کچھ اور کھوکھلے نظر آئے . شاید روپئے کی گٹھری نیچے والے کھوکھلوں میں کہیں گر پڑی ہو اِس وچار اور آشا کے ساتھ پھر سے پیڑ پر چڑھا. جہاں میں نے گٹھری رکھی تھی اُس کے نیچے ایک اور کھوکھلا تھا . اینٹ کا ٹکڑا دکھائی پڑا . میری آنکھوں میں چمک آ گئی . ٹٹولنے پر گٹھری بھی نظر آئی . اُس وقت جو آنند ملا تھا شبدوں میں اُسے بیان نہیں کرسکتا . میں خوشی کے مارے اُچھلنے کودنے لگا . دو دن تک جتنا دکھ اور چنتا سے بےچین رہا تھا اُتنا ہی اب آنند پراپت ہوا تھا .

گٹھری کھولکر اُس میں سے ایک آنہ لیا . بچے پیسوں کو لنگوٹی میں باندھا اور شہر کی طرف چل پڑا . ایک آنے کا *'اِڈیاپم' خریدا اور پھر نل کا پانی پی کر مور مارکیٹ کی طرف تیزی سے بڑھا . یہاں پرانے کرتے اور کئی چیزوں کی دوکانیں تھیں .

"چور بدمعاشوں کا یہاں کیا کام' مار کھاؤگے" دوکاندار نے کہا .

* چاول کے ساتھ جو ناریل چھیل کر بنایا جاتا ہے .

उसने दुकान से उतर कर मेरे गाल पर ज़ोर से एक थप्पड़ जमा दी.

"अजी अनाथ बच्चे को क्यों मारते हो" दुकानदार की पत्नी ने कहा.

"अनाथ है यह बच्चा! पाकेट मार है यह पाकेट मार. दुकान संभाल लो." अपनी पत्नि से कहता हुए दुकानदार घर को चल दिया.

मैं वहीं खड़ा रहा.

"क्या चाहता है बच्चा! क्यों दुकान के पास खड़ा है. तेरी उम्र बड़ी हो गई है. पाजामा ले ले." दुकानदार की पत्नी ने कहा.

मैं बिना जवाब दिये ज़रा अन्धेरे की तरफ़ चला गया. गठरी से एक रुपया निकाल कर दुकानदार की पत्नी की तरफ़ बढ़ाया और कहा—माई!......

'क्यों मेरे लाल!" दुकानवाली ने कहा

"मुझे एक छोटी सी चड्डी चाहिये. जेबदार होना चाहिये. रुपया दूंगा."

"ओह हो! रुपया भी है तेरे पास? कहां से चुराया?" उसने कहा.

'नहीं माई चुराया नहीं एक सेठ ने एक रुपया दिया था." यह कहते हुए मैंने रुपया उसके हाथ पर रख दिया. उसने रुपये को बजाया और एक चड्डी निकाल कर कहा—

"यह लो, यह डेढ़ रुपये का है. तीन साल तक नहीं फटेगा. लेकर जल्दी भाग जा नहीं तो मालिक आ जायंगे."

मैंने चड्डी लेकर वहीं पहन ली. घुटने के ऊपर तक थी. दुकान वाली ने नीचे उतर कर उसे कमर तक खींच कर बकलस लगा दिया. मैं दौड़ने लगा. लंगोटी को दूर फेंक दिया और रुपये की गठरी को जेब में रख लिया मेरी चिन्ताएं हवा हो गईं. नल के पास गया और हाथ मुंह धोया. फिर से दुकान की तरफ़ जा कर मैंने कहा—"माई नमस्कार!"

"देखो न कैसा सुन्दर दिखाई देता है. यह लो एक छोटी कमीज़! रुपया नहीं चाहिये. आठ दिन में एक बार नल के पानी में भिगो कर धूप में डाल देना." मैंने कमीज़ को पहन लिया और कहा—"माई, तुम जो कहोगी वही करूंगा"

यह कह कर साहब की चाल से मैं वहां से चल दिया.

अनुवादक—टी. राजन

اُس نے دوکان سے اُتر کر میرے گال پر زور سے ایک تھپڑ جمادی۔

"اجی اناتھ بچے کو کیوں مارتے ہو" دوکاندار کی پتنی نے کہا۔

"اناتھ ہے یہ بچہ! پاکٹ مار ہے یہ پاکٹ مار۔ دوکان سنبھال لو۔" اپنی پتنی سے کہتے ہوئے دوکاندار گھر کو چل دیا۔

میں وہیں کھڑا رہا۔

"کیا چاہتا ہے بچہ! کیوں دوکان کے پاس کھڑا ہے۔ تیری عمر بڑی ہوگئی ہے۔ پاجامہ لے لے۔" دوکاندار کی پتنی نے کہا۔

میں بنا جواب دیئے ذرا اندھیرے کی طرف چلا گیا۔ گٹھڑی سے ایک روپیہ نکال کر دوکاندار کی پتنی کی طرف بڑھایا اور کہا—مائی!.........

"کیوں میرے لال!" دوکان والی نے کہا۔

"مجھے ایک چھوٹی سی چڈی چاہئے۔ جیب دار ہونا چاہئے۔ روپیہ دونگا۔"

"اوہو! روپیہ بھی ہے تیرے پاس؟ کہاں سے چرایا" اس نے کہا۔

"نہیں مائی' چرایا نہیں ایک سیٹھ نے ایک روپیہ دیا تھا۔" یہ کہتے ہوئے میں نے روپیہ اُس کے ہاتھ پر رکھ دیا۔ اُس نے روپئے کو بجایا اور ایک چڈی نکال کر کہا—

"یہ لو' یہ ڈیڑھ روپیہ کا ہے۔ تین سال تک نہیں پھٹیگا۔ لیکر جلدی بھاگ جا نہیں تو مالک آجائینگے۔"

میں نے چڈی لیکر وہیں پہن لی۔ گھٹنے کے اُوپر تک تھی۔ دوکان والی نے نیچے اُتر کر اُسے کمر تک کھینچ کر بکلس لگا دیا۔ میں دوڑنے لگا۔ لنگوٹی کو دور پھینک دیا اور روپئے کی گٹھری کو جیب میں رکھ لیا۔ میری چنتائیں ہوا ہوگئیں۔ نل کے پاس گیا اور ہاتھ منہ دھویا۔ پھر سے دوکان کی طرف جاکر میں نے کہا—"مائی نمسکار!"

"دیکھو نہ کیسا سندر دکھائی دیتا ہے۔ یہ لو ایک چھوٹی قمیض! روپیہ نہیں چاہئے۔ آٹھ دن میں ایک بار نل کے پانی میں بھگو کر دھوپ میں ڈال دینا۔"

میں نے قمیض کو پہن لیا اور کہا—"مائی' تم جو کہوگی وہی کرونگا۔"

یہ کہکر صاحب کی چال سے میں وہاں سے چلدیا۔

انووادک—ٹی۔ راجن

देवनागरी और तालीम

(मदन गोपाल)

अकसर आदमियों का तजरबा तो यह ही कहता है कि देवनागरी लिखने में जियादा वक़्त लगता है. अंगरेज़ी या उरदू लिखाई में कम. मुझे कुछ आदमी ऐसे ज़रूर मिले हैं जो दावे से कहते हैं कि जितना वक़्त मुझे अंगरेज़ी या उरदू लिखने में लगता है उस से भी कम वक़्त में वह देवनागरी लिख सकते हैं. मेरी कभी हिम्मत नहीं पड़ी कि मैं इनका मुक़ाबला करूं क्योंकि मैं जानता हूं कि जितना वक़्त मुझे एक मील चलने में लगता है उससे भी कम वक़्त में कुछ लोग दो मील आसानी से तय कर लेते हैं. उनके दो मील तय कर लेने से मुझे कभी यह शक नहीं हुआ कि उनके दो मील मेरे एक मील के दुगने से कम हैं.

यह साबित करना कि देवनागरी ही नहीं जितनी हिन्दू लिपियां हैं वह अंगरेज़ी यानी रोमन लिपि और उरदू लिपि से लगभग दुगनी जियादा लम्बी हैं कोई मुशकिल काम नहीं. एक आसान तरीक़ा तो यह है कि लफ़्ज़ों की गिनती की जाय. ऐसी छपाइयों में जहां छापने वाले की कोशिश होती है कि छपाई जगह भी कम ले और साथ ही इतनी रौशन हो कि आसानी से पढ़ी जाय जैसा कि अख़बारों, डिक्शनरियों और इनसाइक्लोपीडियों के छापने वालों की काग़ज़ बचाने के लिये हमेशा यह कोशिश होती है कि जहां तक हो सके टाइप छोटा हो और लिखाई गुनजान हो लेकिन इतनी छोटी और गुनजान भी न हो कि पढ़ने में जियादा तकलीफ़ हो. साथ ही इनकी यह भी कोशिश होती है कि यह काग़ज़ भी कुछ बहुत क़ीमती न लगाया जाय.

इस नक़शे की दुरुस्ती हर शख़्स आसानी से जांच सकता है.

	चार इंच कालम में सतरों की गिनती	एक सतर में कितने लफ़्ज़	चार इंच कालम में लफ़्ज़ों की गिनती
हिन्दी-हिन्दुस्तान-दिल्ली	22	6	132
हिन्दी-अमर भारत-दिल्ली	18	6	108
हिन्दी-विश्वामित्र-दिल्ली	18	5	90
गुजराती-हिन्दुस्तान-बम्बई	24	5 1/2	132

دیوناگری اور تعلیم

(مدن گوپال)

اکثر آدمیوں کا تجربہ تو یہ ہی کہتا ہے کہ دیوناگری لکھنے میں زیادہ وقت لگتا ہے ۔ انگریزی یا اردو لکھائی میں کم ۔ مجھے کچھ آدمی ایسے ضرور ملے ہیں جو دعوے سے کہتے ہیں کہ جتنا وقت مجھے انگریزی یا اردو لکھنے میں لگتا ہے اس سے بھی کم وقت میں وہ دیوناگری لکھ سکتے ہیں ۔ میری کبھی ہمت نہیں پڑی کہ میں ان کا مقابلہ کروں کیونکہ میں جانتا ہوں کہ جتنا وقت مجھے ایک میل چلنے میں لگتا ہے اس سے بھی کم وقت میں کچھ لوگ دو میل آسانی سے طے کر لیتے ہیں ۔ ان کے دو میل طے کر لینے سے مجھے کبھی یہ شک نہیں ہوا کہ ان کے دو میل میرے ایک میل کے دوگنے سے کم ہیں ۔

یہ ثابت کرنا کہ دیوناگری ہی نہیں جتنی ہندو لپیاں ہیں وہ انگریزی یعنے رومن لپی اور اردو لپی سے لگ بھگ دوگنی زیادہ لمبی ہیں کوئی مشکل کام نہیں ۔ ایک آسان طریقہ تو یہ ہے کہ لفظوں کی گنتی کی جائے ۔ ایسی چھپائیوں میں جہاں چھاپنے والے کی کوشش ہوتی ہے کہ چھپائی جگہ بھی کم لے اور ساتھ ہی اتنی روشن ہو کہ آسانی سے پڑھی جائے جیسا کہ اخباروں، ڈکشنریوں اور انسائکلوپیڈیوں کے چھاپنے والوں کی کاغذ بچانے کے لئے ہمیشہ یہ کوشش ہوتی ہے کہ جہاں تک ہو سکے ٹائپ چھوٹا ہو اور لکھائی گنجان ہو لیکن اتنی چھوٹی اور گنجان بھی نہ ہو کہ پڑھنے میں زیادہ تکلیف ہو ۔ ساتھ ہی انکی یہ بھی کوشش ہوتی ہے کہ کاغذ بھی کچھ بہت قیمتی نہ لگایا جائے ۔

اس نقشہ کی درستی ہر ایک شخص آسانی سے جانچ سکتا ہے ۔

	چار انچ کالم میں سطروں کی گنتی	ایک سطر میں کتنے لفظ	چار انچ کالم میں لفظوں کی گنتی
ہندی-ہندوستان-دلی	22	6	132
ہندی-امر بھارت-دلی	18	6	108
ہندی-وشوامتر-دلی	18	5	90
گجراتی-ہندوستان بمبئی	24	5 1/2	132

	चार इंच कालम में सतरों की गिनती	एक सतर में कितने लफ़्ज़	चार इंच कालम में लफ़्ज़ों की गिनती
गुजराती-जन्म भूमि-बम्बई	24	5 1/2	132
बंगाली-जुगन्तर-कलकत्ता	26	5	130
बंगाली-आनन्द बाज़ार पत्रिका-कलकत्ता	26	5	130
महरटी-नव शक्ति-बम्बई	20	4 1/2	90
गुरमुखी-पंथ सेवक-जालन्धर	16	4 1/2	72
गुरमुख.-अकाली पत्रिका-अमृतसर	16	4 1/2	72
उड़िया-प्रजातंत्र	20	4	80
तामिल-दुनियामनी	35	4	140
मलयालम-मातृभूमि	29	4	126
मलयालम-गोमती	20	4	80
उरदू-मिलाप-दिल्ली	21	11	231
उरदू-वीर भारत-दिल्ली	21	10	210
उरदू-तेज-दिल्ली	18	10	180
अंगरेज़ी-स्टेट्समैन-दिल्ली	38	6	228
32 से 40 सतरें औसत	-		
अंगरेज़ी-हिन्दुस्तान-दिल्ली	38	6	228
30 से 40 सतरें औसत			

इन एनसाइकिलोपीडियों के कालमों की लम्बाई चौड़ाई बराबर है

	कालम में सतरें	सतर में लफ़्ज़	कालम में लफ़्ज़
हिन्दी-विश्वभारती	40	10	400
चेमबर एनसाइकिलोपीडिया	78	10	780
अमरीकन एनसाइकिलोपीडिया	74	10	740
एनसाइकिलोपीडिया ब्रिटानिका	83	10	830

यहां यह जता देना ज़रूरी है कि उरदू अखबारों के काग़ज़ और ज़बानों के अखबारों के काग़ज़ों से कम क़ीमत और घटिया क़िसम का होता है. मुमकिन ही नहीं निश्चित है कि अगर वह भी वैसा ही काग़ज़ इस्तेमाल करते तो उनके

	چار انچ کالم میں سطروں کی گنتی	ایک سطر میں کتنے لفظ	چار انچ کالم میں لفظوں کی گنتی
گجراتی - جنم بھومی - بمبئی	24	5 1/2	132
بنگالی - جگنتر - کلکتہ	26	5	130
بنگالی - آنند بازار پترکا - کلکتہ	26	5	130
مرھٹی - نوشکتی - بمبئی	20	4 1/2	90
گرمکھی - پنتھ سیوک - جالندھر	16	4 1/2	72
گرمکھی - اکالی پترکا - امرتسر	16	4 1/2	72
اڑیا - پرجاتنتر	20	4	80
تامل - دنیامنی	35	4	140
ملیالم - ماتری بھومی	29	4	126
ملیالم - گومتی	20	4	80
اردو - ملاپ - دلی	21	11	231
اردو - ویر بھارت - دلی	21	10	210
اردو - تیج - دلی	18	10	180
انگریزی - اسٹیٹسمین - دلی	38	6	228
32 سے 40 سطریں اوسط			
انگریزی - ھندستان - دلی			
30 سے 40 سطریں اوسط	38	6	228

اِن انسائکلوپیڈیوں کے کالموں کی لمبائی چوڑائی برابر ھے .

	کالم میں سطریں	سطر میں لفظ	کالم میں لفظ
ھندی - وشوبھارتی	40	10	400
چیمبر انسائکلوپیڈیا	78	10	780
امریکن انسائکلوپیڈیا	74	10	740
انسائکلوپیڈیا برٹانیکا	83	10	830

یہاں یہ جتا دینا ضروری ھے کہ اردو اخباروں کے کاغذ اور زبانوں کے اخباروں کے کاغذوں سے کم قیمت اور گھٹیا قسم کا ھوتا ھے . ممکن ھی نہیں نشچت ھے کہ اگر وہ بھی ویسا ھی کاغذ استعمال کرتے تو ان کے

लफ़्ज़ों की गिनती और ज़ियादा हो सकती थी. यह भी ज़ाहिर है कि अंगरेज़ी के हिज्जे फ़िज़ूल लम्बे हैं. मसलन are, were की आख़री e फ़ज़ूल. Bought के छै हरफ़ों की जगह bot तीन हरफ़ काफ़ी थे हिसाब लगाने वालों ने हिसाब लगाया है कि अंगरेज़ी की इबारत में 1/7 हरफ़ फ़ज़ूल दिखावे के हैं. यानी 13 फ़ी सदी आसानी से कम किये जा सकते हैं. अगर चाहो तो तुम भी इस हिसाब को परख सकते हो. अंगरेज़ी की कोई इबारत ले लो, इसके हरफ़ गिन लो और उसमें फ़ज़ूल हरफ़ों को भी गिन लो. यह 13 फ़ी सदी का तख़मीना बहुत कुछ दुरुस्त ही पाओगे.

हिन्दी 'हिन्दुस्तान' और अंगरेज़ी 'हिन्दुस्तान टाइम्स' दोनों दिल्ली की एक ही कम्पनी के अख़बार हैं और एक ही छापाख़ाने में छपते हैं. हिन्दी के 132 लफ़्ज़ों की जगह अंगरेज़ी हिन्दुस्तान में 228 लफ़्ज़ छपते हैं. अगर इन 228 में 228 का 1/7 और जोड़ा जाय तो 260 हो जाते हैं और यह 260 हिन्दी 132 के दुगने से ज़रा ही कम होते हैं. सोचो तो सही कि अगर हम देवनागरी की जगह किसी तरह रोमन लिपि या इस जैसी कोई और छोटी लिपि तजवीज़ कर लें तो आसानी से हिन्दी किताबों और अख़बारों की क़ीमत आधी रह जाय. यहां यह जता देना ज़रूरी है कि रोमन लिपि को और भी छटयाया और हिन्दी के मुनासिब बनाया जा सकता है. अगर कोई ज़रा भी इस तरफ़ ध्यान दे.

स्कूल की फ़ीसों के अलावा आज कल पढ़ाई में किताबों और कापियों का ख़र्च ही मान नहीं. आज कल तो ख़ैर पढ़ाई कुछ अंगरेज़ी, कुछ हिन्दी और कुछ उरदू में होती है. अब हमारी सरकार के ख़ैरख़्वाह चाहते हैं कि आइन्दा सारी पढ़ाई लिखाई देवनागरी में हो. इसका नतीजा साफ़ है. जो किताबें आज कल अंगरेज़ी या उरदू में पढ़ाई जाती हैं वह भी देवनागरी में छपेंगी और इसलिये उनकी क़ीमत दुगनी हो जायगी और कापियां भी दुगनी बरती जायंगी. अब रहा यह सवाल कि हिन्दुस्तान जैसे ग़रीब मुल्क में पढ़ाई लिखाई का ख़र्च बढ़ाना कहां तक मुनासिब है उन ग़रीबों से पूछो जिनके बच्चे पढ़ने जाते हैं.

यह तो मुझे बहुत दिनों से मालूम था कि देव नागरी लिखने में वक़्त बहुत ज़ियादा लगता है. इसकी वजह न मैंने सोची और न सोचने की कोशिश की. वजह यह कि लिखाई का काम स्कूलों में कम ही करना पड़ता है. इस लिये लिखाई में कुछ देर लगने से तालीम में कुछ बहुत फ़र्क़ नहीं लगता. एक दिन बैठे बैठे ख़याल आया कि जो लिखाई ज़ियादा जगह घेरती है और जिसे लिखने में देर लगती है उसे पढ़ने में भी मुमकिन है ज़ियादा वक़्त लगता हो. ख़याल आना था कि पड़ी ढूंढ. अपना इम्तहान लिया,

لفظوں کی گنتی اور زیادہ ہو سکتی تھی. یہ بھی ظاہر ہے کہ انگریزی کے ہجے فضول لمبے ہیں مثلاً were, are, کی آخری e فضول. Bought کے چھ حرفوں کی جگہ bot تین حرف کافی تھے. حساب لگانے والوں نے حساب لگایا ہے کہ انگریزی کی عبارت میں 1/7 حرف فضول دکھاوے کے ہیں. یعنی 13 فیصدی آسانی سے کم کئے جاسکتے ہیں. اگر چاہو تو تم بھی اِس حساب کو پرکھ سکتے ہو. انگریزی کی کوئی عبارت لے لو، اُس کے حرف گن لو اور اُسمیں فضول حرفوں کو بھی گن لو یہ 13 فیصدی کا تخمینہ بہت کچھ درست ہی پاؤگے.

ہندی 'ہندستان' اور انگریزی 'ہندستان ٹائمس' دونوں دلی کی ایک ہی کمپنی کے اخبار ہیں اور ایک ہی چھاپہ خانہ میں چھپتے ہیں. ہندی کے 132 لفظوں کی جگہ انگریزی ہندستان میں 228 لفظ چھپتے ہیں. اگر اِن 228 میں 228 کا 1/7 اور جوڑا جائے تو 260 ہو جاتے ہیں اور یہ 260 ہندی 132 کے دوگنے سے ذرا ہی کم ہوتے ہیں. سوچو تو سہی کہ اگر ہم دیوناگری کی جگہ کسی طرح رومن لپی یا اس جیسی کوئی اور چھوٹی لپی تجویز کرلیں تو آسانی سے ہندی کتابوں اور اخباروں کی قیمت آدھی رہ جائے. یہاں یہ جتا دینا ضروری ہے کہ رومن لپی کو اور بھی چھٹھایا اور ہندی کے مناسب بنایا جاسکتا ہے اگر کوئی ذرا بھی اس طرف دھیان دے.

اسکول کی فیسوں کے علاوہ آجکل پڑھائی میں کتابوں اور کاپیوں کا خرچ ہی مان نہیں. آجکل تو خیر پڑھائی کچھ انگریزی، کچھ ہندی، کچھ اُردو میں ہوتی ہے. اب ہماری سرکار کے خیر خواہ چاہتے ہیں کہ آئندہ ساری پڑھائی لکھائی دیوناگری میں ہو. اِس کا نتیجہ صاف ہے. جو کتابیں آجکل انگریزی یا اُردو میں پڑھائی جاتی ہیں وہ بھی دیوناگری میں چھپینگی اور اِس لئے انکی قیمت دوگنی ہو جائیگی اور کاپیاں بھی دوگنی برتی جائینگی. اب رہا یہ سوال کہ ہندستان جیسے غریب ملک میں پڑھائی لکھائی کا خرچ بڑھانا کہاں تک مناسب ہے اُن غریبوں سے پوچھو جن کے بچے پڑھنے جاتے ہیں.

یہ تو مجھے بہت دنوں سے معلوم تھا کہ دیوناگری لکھنے میں وقت بہت زیادہ لگتا ہے. اس کی وجہ نہ میں نے سوچی اور نہ سوچنے کی کوشش کی. وجہ یہ کہ لکھائی کا کام اسکولوں میں کم ہی کرنا ہوتا ہے اِس لئے لکھائی میں کچھ دیر لگنے سے تعلیم میں کچھ بہت فرق نہیں لگتا. ایک دن بیٹھے بیٹھے خیال آیا کہ جو لکھائی زیادہ جگہ گھیرتی ہے اور جسے لکھنے میں دیر لگتی ہے اور اُسے پڑھنے میں بھی ممکن ہے زیادہ وقت لگتا ہو. خیال آنا تھا کہ پڑی ڈھونڈ. اپنا امتحان لیا،

अपने दोस्तों का इम्तहान लिया और यह बात सोलह आने पूरी सच्ची मालूम दी. लेकिन इसकी वजह न सूझी. अंगरेज़ी में लिपियों पर और छापे पर कुछ किताबें मिलीं. उनके पढ़ने से वजह तो कुछ मालूम हुई लेकिन दिल को तसल्ली न हुई. मुमकिन है कि मेरी और मेरे दोस्तों की तालीम में ही कुछ नुक़्स हो या हमारी आंखों में ही नुक़्स हो. यह तो साफ़ है कि जिस लिपि के पढ़ने की जियादा मश्क़ हो वह जलदी पढ़ी जाती है. ऐसे आदमी कहां से ढूढ़ें जायं जिन्हें दो तीन लिपियों के पढ़ने की बराबर मश्क़ हो. और फिर मैं बूढ़ा आदमी किस किस के घर जाऊं. किस किस की मिन्नत करूं. सोच सोच के यह फ़ैसला किया कि यह काम असल में तालीम के महकमे का है. उनका यह फ़र्ज़ है कि वह इस बात का पूरा पता लगायें. उनके पास इसकी पूरी जांच परताल करने के लिये हज़ार आसानियां हैं जो किसी निजी आदमी को मैस्सर नहीं हो सकतीं. लिहाज़ा मैंने एक लम्बी चिट्ठी लिखी जिस में जहां तक मुझ से हो सकता था मैंने अपनी तकलीफ़ और ख़याल को ज़ाहिर किया और प्रार्थना कि वह इस बात की पूरी पूरी जांच करें क्योंकि जहां तक मेरी समझ थी देव नागरी से पेचीदा और जियादा वक़्त लेने वाली और कोई लिपि नहीं और इसलिये इसके अपनाने से देस की आने वाली सभ्यता और ख़ुशहाली पर बहुत बुरा असर पड़ेगा. डेढ़ सौ कापी इस चिट्ठी की देस के हर सूबे के गवरनर, बड़े वज़ीर, शिक्षा वज़ीर, डायरेक्टर, हर यूनिवरसिटी के चांसलर और वाइस चांसलर और कुछ कालिज के प्रिंसपलों और प्रोफ़ेसरों को भेजी गईं. लेकिन बाहरी हमारे देस की सभ्यता और हकूमत का नशा कि बावजूद मेरी अज़हद ख़ुशामत और लजाहत के इन डेढ़ सौ ऊंचे अफ़सरों में सिर्फ़ दो ने चिट्ठी की रसीद दी और वह भी कोरी रसीद. किसी न मेरी प्रार्थना सुनी और न देस की सभ्यता और ख़ुशहाली का ख़याल किया.

चूंकि उत्तर प्रदेश देव नागरी पर बहुत ज़ोर देता है इस लिये मैंने कम से कम पचास चिट्ठियां यू. पी. के तालीमी अफ़सरों जिनमें हिन्दी अंगरेज़ी संस्कृत के प्रोफ़ेसर ख़ास शामिल थे भेजीं. ताकि अगर मेरा ख़याल ग़लत है तो वह आसानी से मेरे ख़याल को दुरुस्त कर सकें. लेकिन यू. पी. का बाबा आदम ही निराला मालूम होता है. मजाल है कि किसी के कान पर जूं तक रेंगी हो. ख़ैर यह चिट्ठी तो भेजी गई थी अगस्त सन 1952 में. इस के बाद मैंने ख़ुद बहुत कुछ देख भाल की और अब मैं डंके की चोट कह सकता हूं कि जितने देव नागरी के बड़े बड़े ढंढोर जी यानी यू. पी. के वज़ीर, कांगरेस प्रधान, गवरनर, जज, यूनिवरसिटियों के चांसलर, वाइस चांसलर, प्रोफ़ेसर, तालीम के डायरेक्टर, स्कूलों के इंसपेक्टर हैं यह सब देव नागरी से

اپنے دوستوں کا امتحان لیا اور یہ بات سولہ آنے پوری سچی معلوم دی۔ لیکن اسکی وجہ نہ سوجھی۔ انگریزی میں لپیوں پر اور چھاپے پر کچھ کتابیں ملیں۔ ان کے پڑھنے سے وجہ تو کچھ معلوم ہوئی لیکن دل کی تسلی نہ ہوئی۔ ممکن ہے کہ میری اور میرے دوستوں کی تعلیم میں ہی کچھ نقص ہو یا ہماری آنکھ میں ہی نقص ہو۔ یہ تو صاف ہے کہ جس لپی کے پڑھنے کی زیادہ مشق ہو وہ جلدی پڑھی جاتی ہے۔ ایسے آدمی کہاں سے ڈھونڈے جائیں جنہیں دو تین لپیوں کے پڑھنے کی برابر مشق ہو۔ اور پھر میں بوڑھا آدمی کس کس کے گھر جاؤں۔ کس کس کی منت کروں۔ سوچ سوچ کے یہ فیصلہ کیا کہ یہ کام اصل میں تعلیم کے محکمہ کا ہے۔ اُن کا یہ فرض ہے کہ وہ اِس بات کا پورا پتہ لگائیں۔ اُن کے پاس اِسکی پوری جانچ پرتال کرنے کے لئے ہزار آسانیاں ہیں جو کسی نجی آدمی کو میسر نہیں ہو سکتیں۔ لہذا میں نے ایک لمبی چٹھی لکھی جس میں جہاں تک مجھ سے ہو سکتا تھا میں نے اپنی تکلیف اور خیال کو ظاہر کیا اور پرارتھنا کی کہ وہ اِس بات کی پوری پوری جانچ کریں کیونکہ جہاں تک میری سمجھ تھی دیوناگری سے پیچیدہ اور زیادہ وقت لینے والی اور کوئی لپی نہیں اور اِس لئے اس کے اپنانے سے دیس کی آنے والی سبھیتا اور خوشحالی پر بہت برا اثر پڑے گا۔ ڈیڑھ سو کاپی اس چٹھی کی دیس کے ہر صوبے کے گورنر، بڑے وزیر، شکشا وزیر، ڈائرکٹر، ہر یونیورسٹی کے چانسلر اور وائس چانسلر اور کچھ کالجوں کے پرنسپلوں اور پروفیسروں کو بھیجی گئیں لیکن واہ رے ہماری دیس کی سبھیتا اور حکومت کا نشہ کہ باوجود میری از حد خوشامد اور لجاجت کے ان ڈیڑھ سو اونچے افسروں میں صرف دو نے چٹھی کی رسید دی اور وہ بھی کوری رسید۔ کسی نے نہ میری پرارتھنا سنی اور نہ دیس کی سبھیتا اور خوشحالی کا خیال کیا۔

چونکہ اُتر پردیش دیوناگری پر بہت زور دیتا ہے اس لئے میں نے کم سے کم پچاس چٹھیاں یو۔ پی۔ کے تعلیمی افسروں جن میں ہندی انگریزی سنسکرت کے پروفیسر خاص شامل تھے بھیجیں۔ تاکہ اگر میرا خیال غلط ہے تو وہ آسانی سے میرے خیال کو درست کر سکیں۔ لیکن یو۔ پی۔ کا باوا آدم ہی نرالا معلوم ہوتا ہے۔ مجال ہے کہ کسی کے کان پر جوں تک رینگی ہو۔ خیر یہ چٹھی تو بھیجی گئی تھی اگست سن 1952 میں۔ اس کے بعد میں نے خود بہت کچھ دیکھ بھال کی اور اب میں ڈنکے کی چوٹ کہہ سکتا ہوں کہ جتنے دیوناگری کے بڑے بڑے ڈھنڈورچی یعنی یو۔ پی۔ وزیر کے کانگریس پردھان، گورنر، جج، یونیورسٹیوں کے چانسلر، وائس چانسلر، پروفیسر، تعلیم کے ڈائرکٹر، سکولوں کے انسپکٹر ہیں یہ سب دیوناگری سے

अंगरेज़ी लिपि बीस फ़ी सदी जल्द पढ़ सकते हैं और उन्हें जिन्होंने कभी उरदू लिपि सीखी थी वह भी आज फ़ी सदी नहीं तो कम से कम तीस फ़ी सदी उरदू लिपि देव नागरी से जल्द पढ़ सकते है. इनमें से जिसे मेरी बात में शक हो, चाहिये कि आप अपना इम्तहान ले ले.

इस में तो शक की गुंजायश नहीं कि जो लिपि जल्दी पढ़ी जा सकती है उस में पढ़ाई ज़ियादा हो सकती है. अगर पच्चीस फ़ी सदी का फ़रक़ हो तो जो तालीम स्कूल में देव नागरी में चार बरस में दी जाती है वह दूसरी लिपि में तीन बरस में बच्चा हासिल कर लेगा. अगर बीस फ़ी सदी का फ़रक़ हो तो देवनागरी के पांच बरस बराबर होते हैं दूसरी लिपि के चार बरस के. स्कूल में ही नहीं सारी उम्र भर यह फ़र्क़ रहेगा. पचास बरस की उमर तक जो एक देव नागरी में पढ़ेगा दूसरा चालीस बरस की उमर में इतना इल्म हासिल कर लेगा. वह ज़माना लद गया जब हिन्दुस्तान एक अलग थलग मुल्क था जिसे दुनिया के और मुलकों से कुछ वास्ता न था. आज कल हमारा दुनिया की सब क़ौमों से मुक़ाबला है. इस देवनागरी के बिरते पर हम कैसे मुक़ाबला कर सकते हैं जब तक हमें देवनागरी के मंहगे पड़ने का इल्म न था तब तक अपनी पुरानी लिपि समझ कर उसको सराहना बुरा न था. अब जब कि यह बात साफ़ दिखाई देती है कि देवनागरी हर तरह से मंहगा और घाटे का सौदा है उसको वही सराह सकता है जो देस का दुशमन हो चाहे वह अपने आपको कांगरेसी ही नहीं देस भक्त कहता हो.

देवनागरी से तो गुजराती और बंगाली लिपि सस्ती हैं और इनसे भी ज़ियादा तामिल लिपि. लेकिन उरदू और रोमन के मुक़ाबले में वह भी बहुत मंहगी पड़ती हैं. इस से यह न समझना चाहिये कि मैं उरदू लिपि या आजकल की अंगरेज़ी रोमन के हक़ में हूं. मेरी राय में उरदू का बड़ा भारी नुक़्स यह है कि इसके हिज्जे बे असूल होने की वजह से उरदू अच्छी तरह सीखने में देवनागरी या रोमन के मुक़ाबले में शुरू में दो बरस ज़ियादा लगते हैं. किसी क़ौम के लिये बचपन के दो बरस जाया करने एक बहुत भारी क़ुरबानी है लेकिन फिर भी क़ौम की सारी उमर का चौथाई या पांचवा हिस्सा क़ुरबान करने से बहुत कम. रोमन लिपि जो अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानी के लिये बनाई है वह कुछ ठीक नहीं जंचती. लेकिन इसे ठीक करना कुछ मुशकिल काम नहीं मालूम होता.

अंगरेज़ी में कुछ ऐसी किताबें हैं जिनमें किसी लिपि की अच्छाई या बुराई जांचने के असूल दर्ज हैं. इन असूलों के मुताबिक़ अगर कोई लिपि बनाई जाय जो हमारी बोली के माफ़िक़ हो तो बहुत अच्छा हो. मेरे ख़याल में रोमन ही एक ऐसी लिपि है जिस को हम इतना आसान बना

انگریزی لپی بیس فیصدی جلد پڑھ سکتے ہیں اور انہیں جنہوں نے کبھی اردو لپی سیکھی تھی وہ بھی آج پچاس فیصدی نہیں تو کم سے کم تیس فیصدی اردو لپی دیوناگری سے جلد پڑھ سکتے ہیں۔ ان میں سے جسے میری بات میں شک ہو، چاہئے کہ آپ اپنا امتحان لے لے۔

اس میں تو شک کی گنجائش نہیں کہ جو لپی جلدی پڑھی جا سکتی ہے اس میں پڑھائی زیادہ ہو سکتی ہے۔ اگر پچیس فیصدی کا فرق ہو تو جو تعلیم اسکول میں دیوناگری میں چار برس میں دی جاتی ہے وہ دوسری لپی میں تین برس میں بچہ حاصل کر لے گا۔ اگر بیس فیصدی کا فرق ہو تو دیوناگری کے پانچ برس برابر ہوتے ہیں دوسری لپی کے چار برس کے۔ اسکول میں ہی نہیں ساری عمر بھر یہ فرق رہے گا۔ پچاس برس کی عمر تک جو ایک دیوناگری میں پڑھے گا دوسرا چالیس برس کی عمر میں اتنا علم حاصل کر لے گا۔ وہ زمانہ لد گیا جب ہندستان ایک الگ تھلگ ملک تھا۔ جسے دنیا کے اور ملکوں سے کچھ واسطا نہ تھا۔ آج کل ہمارا دنیا کی سب قوموں سے مقابلہ ہے۔ اس دیوناگری کے برتے پر ہم کیسے مقابلہ کر سکتے ہیں جب تک ہمیں دیوناگری کے مہنگے پڑنے کا علم نہ تھا تب تک اپنی پرانی لپی سمجھ کر اس کا سراہنا برا نہ تھا۔ اب جب کہ یہ بات صاف دکھائی دیتی ہے کہ دیوناگری ہر طرح سے مہنگا اور گھاٹے کا سودا ہے اس کو وہی سراہا سکتا ہے جو دیس کا دشمن ہو چاہے وہ اپنے آپ کو کانگریسی ہی نہیں دیس بھگت کہتا ہو۔

دیوناگری سے تو گجراتی اور بنگالی لپی سستی ہیں اور ان سے بھی زیادہ تامل لپی۔ لیکن اردو اور رومن کے مقابلہ میں وہ بھی بہت مہنگی پڑتی ہیں۔ اس سے یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ میں اردو لپی یا آجکل کی انگریزی رومن کے حق میں ہوں۔ میری رائے میں اردو کا بڑا بھاری نقص یہ ہے کہ اس کے ہجے بے اصول ہونے کی وجہ سے اردو اچھی طرح سیکھنے میں دیوناگری یا رومن کے مقابلہ میں شروع میں دو برس زیادہ لگتے ہیں۔ کسی قوم کے لئے بچپن کے دو برس ضائع کرنے ایک بہت بھاری قربانی ہے لیکن پھر بھی قوم کی ساری عمر کا چوتھائی یا پانچواں حصہ قربانی کرنے سے بہت کم۔ رومن لپی جو انگریزوں نے ہندستانی کے لئے بنائی ہے وہ کچھ ٹھیک نہیں جچتی لیکن اسے ٹھیک کرنا کچھ مشکل کام نہیں معلوم ہوتا۔

انگریزی میں کچھ ایسی کتابیں ہیں جن میں کسی لپی کی اچھائی یا برائی جانچنے کے اصول درج ہیں۔ ان اصولوں کے مطابق اگر کوئی لپی بنائی جائے جو ہماری بولی کے موافق ہو تو بہت اچھا ہو۔ میرے خیال میں رومن ہی ایک ایسی لپی ہے جس کو ہم اتنا آسان بنا

सकते हैं कि उसके पढ़ने में देवनागरी के मुक़ाबले में आधा वक़्त खर्च हो. जिसके मानी यह हुए कि हम आसानी से अपने देस की इलमी उमर को दुगना कर सकते हैं या यूं कहो कि जिससे हमारे देस में इल्म दुगना फैले. पर ऐसी लिपि बनाने के लिये ज़रूरत है जांच, परताल, खोज की हमारी सरकार ने और साइन्सोंकी खोज के लिये हाल ही में दस ग्यारह कमेटियां बनाई हैं. काश हमारी सरकार इस लिपि की साइन्स की तरफ़ भी ध्यान दे और एक ऐसी साइन्सदानों की कमेटी मुक़र्रर करे जो हमारे लिये ऐसी लिपि बनाए जिससे हमारी इलमी उमर दुगनी नहीं तो कम से कम ड्योढ़ी हो जाय. शायद यह मेरा ख़याल ग़लत न हो कि जितना फ़ायदा हमारे देस को ऐसी लिपि कमेटी से हो सकता है और किसी मौजूदा साइन्स कमेटी से उम्मीद नहीं किया जा सकता.

बे रोज़गारी और स्वदेशी

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

अभी हाल में आल इंडिया कांगरेस कमेटी की जो बैठक आगरे में हुई थी उसमें बे रोज़गारी और स्वदेशी पर एक ठहराव पास किया गया है. इसके लिये आल इंडिया कमेटी को बधाई मिलनी चाहिये. हम आशा करते हैं कि इस ठहराव पर गंभीरता से विचार किया जायगा और सरकार जिसके सर्वेसर्वा कांगरेस के ही सदर हैं इसको अमल में लाएगी. जलसे के बाहर और उसके अन्दर जो तक़रीरें हुई हैं उनमें पिटे पिटाए वाक्यों का इस्तेमाल हुआ है. वह यह हैं : "रहने सहने के स्तर को ऊंचा उठाना," "ग़रीबी को ख़तम करना," "राष्ट्री पूंजी को बढ़ाना" और "पूंजी का बराबर बंटवारा" वग़ैरा वग़ैरा. इस तरह की पवित्र बातें सुनते सुनते हम उकता गए हैं. आज जो कुछ हमें चाहिये वह यह है कि इन विचारों का कुछ अमली नतीजा निकले.

जवाहरलाल जी इस बात को बुरा समझते हैं कि लोग सरकारी नौकरियों की इच्छा करें. उनका सुझाव है कि रोज़गार के दूसरे साधन पैदा किये जायं. यह बहुत ही अच्छा सुझाव है पर न यह कोई अछूता विचार है और न

سکتے ہیں کہ اس کے پڑھنے میں دیوناگری کے مقابلہ میں آدھا وقت خرچ ہو . جس کے معنی یہ ہوئے کہ ہم آسانی سے اپنے دیس کی علمی عمر کو دوگنا کر سکتے ہیں یا یوں کہو کہ جس سے ہمارے دیس میں علم دوگنا پھیلے. پر ایسی لپی بنانے کے لئے ضرورت ہے جانچ' پڑتال' کھوج کی . ہماری سرکار نے اور سائنسوں کی کھوج کے لئے حال ہی میں دس گیارہ کمیٹیاں بنائی ہیں . کاش ہماری سرکار اس لپی کی سائنس کی طرف بھی دھیان دے اور ایک ایسی سائنس دانوں کی کمیٹی مقرر کرے جو ہمارے لئے ایسی لپی بنائے جس سے ہماری علمی عمر دگنی نہیں تو کم سے کم ڈیوڑھی ہو جائے . شاید یہ میرا خیال غلط نہ ہو کہ جتنا فائدہ ہمارے دیس کو ایسی لپی کمیٹی سے ہو سکتا ہے اور کسی موجودہ سائنس کمیٹی سے امید نہیں کیا جا سکتا .

بیروزگاری اور سودیشی

(ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا)

ابھی حال میں آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی جو بیٹھک آگرہ میں ہوئی تھی اُس میں بیروزگاری اور سودیشی پر ایک ٹھہراؤ پاس کیا گیا ہے . اِس کے لئے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کو بدھائی ملنی چاہئے . ہم آشا کرتے ہیں کہ اِس ٹھہراؤ پر گمبھیرتا سے وچار کیا جائے گا اور سرکار جس کے سروے سروا کانگریس کے ہی صدر ہیں اِس کو عمل میں لائےگی . جلسے کے باہر اور اُس کے اندر جو تقریریں ہوئی ہیں اُن میں پٹے پٹائے واکیوں کا استعمال ہوا ہے . وہ یہ ہیں : "رہنے سہنے کے استر کو اونچا اُٹھانا" "غریبی کو ختم کرنا." "راشٹری پونجی کو بڑھانا" اور "پونجی کا برابر بٹوارہ" وغیرہ وغیرہ. اِس طرح کی پوتر باتیں سنتے سنتے ہم اُکتا گئے ہیں . آج جو کچھ ہمیں چاہئے وہ یہ ہے کہ اِن وچاروں کا کچھ عملی نتیجہ نکلے .

جواہر لال جی اِس بات کو برا سمجھتے ہیں کہ لوگ سرکاری نوکریوں کی اِچھا کریں. اُن کا سجھاؤ ہے کہ روزگار کے دوسرے سادھن پیدا کئے جائیں . یہ بہت ہی اچھا سجھاؤ ہے پر نہ یہ کوئی اچھوتا وچار ہے اور نہ

इनक़लाबी. अगर वह सरकार जिसके जवाहरलाल जी नेता हैं ऐसी परिस्थिति पैदा नहीं करती जिसमें कि रोज़गार के दूसरे साधन पैदा हो सकें तो इस सुझाव का कोई नतीजा निकलने वाला नहीं.

प्लानिंग वज़ीर श्री गुलज़ारीलाल नन्दा ने बेरोज़गारी के कारनों पर जो विचार ज़ाहिर किये हैं वह बिलकुल ऊपरी हैं. आबादी की बढ़ौती से वह नालां हैं. उनका कहना है कि विकास योजनाओं के लिये जो सरकारी फंड है वह धड़ल्ले से ख़र्च नहीं किया गया. उनका ख़याल है कि जनता की ख़रीदने की ताक़त छिदरी हुई है. वह सोचते हैं कि रक़म बचाने की आदत लोगों में नहीं है. वह कहते हैं कि आज कल का तालीमी ढांचा किसी के पेशे से मेल नहीं खाता. उसी तरह की और बातें वह कहते हैं. ऐसे विचार ज़ाहिर कर के इस बात की कोशिश की जाती है कि छोटे मोटे कारनों पर जनता का ध्यान जम जाय और उन बड़े बड़े कारनों की तरफ़ उसका ध्यान न जा पाए जिसमें सरकार फंसी हुई है.

इसी तरह दूसरों ने लड़ाई के वातावरन के ख़ातमे पर बे रोज़गारी की ज़िम्मेदारी डाली है और कहा है कि शान्ति के आने से बे रोज़गारी फैलेगी. बे रोज़गारी की मुसीबत से छुटकारा पाने के लिये बहुत ही सत ही सुझाव रखे गए हैं. "आम आदमी को सुखी और ख़ुशहाल बनाने के लिये" जवाहरलाल जी ने एक सुन्दर विचार ज़ाहिर किया है और उनकी इच्छा है इस तरह योजना बनाई जाय कि सब को रोज़गार मिल सके. दूसरों का ख़याल है कि मनुश्य शक्ति को काम में लाया जाय. घरेलू उद्योग और छोटे छोटे कारख़ानों के उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाय. हमारी ख़्वाहिश है कि यह विचार क़ायम रहें और अमल में लाए जायं. कभी कभी यह जो तितर बितर विचार उठ खड़े होते हैं उनसे यह पता तो ज़रूर चलता है कि सब कुछ हज़्म कर जाने वाली राजकाजी गुटबन्दी से फ़ुरसत पा कर हमारे नेता आम जनता की समस्याओं पर भी सोच विचार कर लेते हैं. लेकिन अफ़सोस है कि आज की परिस्थिति को सुधारने के लिये इनके इरादों में कोई मज़बूती दिखाई नहीं पड़ती. ऐसे ऊंचे भाव दादाभाई नौरोजी के समय से पहले से ज़ाहिर किये जाते रहे हैं. सवाल उठता है कि हम क्या करें? हमें बातें करना बन्द कर देना चाहिये और काम में जुट जाना चाहिये.

अगर लोग सरकारी नौकरी पाने के इच्छुक हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि इस राष्ट्रीय सेवा से उन्हें कोई ख़ास लगाव है. इसका कारन यह है सरकारी नौकरी में तनख़ा ज़ियादा मिलती है, नौकरी सुरक्षित रहती है और कम से कम सख़्ती भुगतनी पड़ती है. यह ऐसा कड़वा सच है कि इसका वज़ीरों को भी सामना करना पड़ता है.

اِنقلابی ۔ اگر وہ سرکار جس کے جواہرلال جی نیتا ہیں ایسی پرستھتی پیدا نہیں کرتی جس میں کہ روزگار کے دوسرے سادھن پیدا ہوسکیں تو اِس سجھاؤ کا کوئی نتیجہ نکلنے والا نہیں ہے ۔

پلاننگ وزیر شری گلزاری لال نندا نے بےروزگاری کے کارنوں پر جو وچار ظاہر کئے ہیں وہ بالکل اوپری ہیں ۔ آبادی کی بڑھوتی سے وہ نالاں ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ وکاس یوجناؤں کے لئے جو سرکاری فنڈ ہے وہ دھڑلے سے خرچ نہیں کیا گیا ۔ اُن کا خیال ہے کہ جنتا کی خریدنے کی طاقت چھدری ہوئی ہے ۔ وہ سوچتے ہیں کہ رقم بچانے کی عادت لوگوں میں نہیں ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ آجکل کا تعلیمی ڈھانچہ کسی کے پیشے سے میل نہیں کھاتا ۔ اسی طرح کی اور باتیں وہ کہتے ہیں ۔ ایسے وچار ظاہر کرکے اِس بات کی کوشش کی جاتی ہے کہ چھوٹے موٹے کارنوں پر جنتا کا دھیان جم جائے اور اُن بڑے بڑے کارنوں کی طرف اُس کا دھیان نہ جا پائے جس میں سرکار پھنسی ہوئی ہے ۔

اِسی طرح دوسروں نے لڑائی کے واتاورن کے خاتمے پر بےروزگاری کی ذمےداری ڈالی ہے اور کہا ہے کہ شانتی کے آنے سے بےروزگاری پھیلے گی۔ بےروزگاری کی مصیبت سے چھٹکارا پانے کے لئے بہت ہی سطحی سجھاؤ رکھے گئے ہیں۔ "عام آدمی کو سکھی اور خوشحال بنانے کے لئے" جواہرلال جی نے ایک سندر وچار ظاہر کیا ہے اور اُنکی اچھا ہے کہ اِس طرح یوجنا بنائی جائے کہ سب کو روزگار مل سکے۔ دوسروں کا خیال ہے کہ منش شکتی کو کام میں لایا جائے' گھریلو اُدیوگ اور چھوٹے چھوٹے کارخانوں کے اُدیوگوں کو پروتساہن دیا جائے۔ ہماری خواہش ہے کہ یہ وچار قائم رہیں اور عمل میں لائے جائیں۔ کبھی کبھی یہ جو تتر بتر وچار اُٹھ کھڑے ہوتے ہیں اُن سے یہ پتہ تو ضرور چلتا ہے کہ سب کچھ ہضم کر جانے والی راج کاجی گٹ بندی سے فرصت پاکر ہمارے نیتا عام جنتا کی سمسیاؤں پر بھی سوچ وچار کرلیتے ہیں ۔ لیکن افسوس ہے کہ آجکی پرستھتی کو سدھارنے کے لئے اِن کے اِرادوں میں کوئی مضبوطی دکھائی نہیں پڑتی ۔ ایسے اُونچے بھاؤ دادا بھائی نوروجی کے سمے سے پہلے سے ظاہر کئے جاتے رہے ہیں۔ سوال اُٹھتا ہے کہ ہم کیا کریں ؟ ہمیں باتیں کرنا بند کردینا چاہئے اور کام میں جٹ جانا چاہئے ۔

اگر لوگ سرکاری نوکری پانے کے اچھک ہیں ،تو اِس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ اس راشٹری سیوا سے اُنہیں کوئی خاص لگاؤ ہے ۔ اِس کا کارن یہ ہے کہ سرکاری نوکری میں تنخواہ زیادہ ملتی ہے' نوکری سرکشت رہتی ہے' اور کم سے کم سختی بھگتنی پڑتی ہے ۔ یہ ایسا کڑوا سچ ہے کہ اِسکا وزیروں کو بھی سامنا کرنا پڑتا ہے ۔

क्या वह देश की सेवा कर रहे हैं या उन्हें मुनाफ़ादार नौकरी मिल गई है ? इस नौकरी का आधार उनकी अपनी सेवाओं पर नहीं है बल्कि उन सेवाओं पर है जो आज़ादी की लड़ाई के समय गांधी जी की अगवाई में समूची कांगरेस पार्टी ने की थीं ? अगर वज़ीर अपनी गद्दियों को सेवा के रूप में मानते हैं तो उन्हें शाहाना शान शौक़त को छोड़ कर इसे सिद्ध करना होगा.

अगर ऊपर वाले वज़ारत को देश सेवा का साधन समझते हैं तो नीचे वालों का सरकारी नौकरियों की तरफ़ खिंचना क़ुदरती है. क्या वह इनसान नहीं हैं ? जिस तरह ऊपर वाले किसी तरफ़ खिंच सकते हैं, किसी चीज़ की तरफ़ उनका झुकाव हो सकता है उसी तरह नीचे वाले भी किसी तरफ़ खिंच सकते हैं या किसी चीज़ की तरफ़ उनका झुकाव हो सकता है.

जो लोग पिसे हुए हैं उन्हें "मेहनत करने के आदर भाव" का वाज़ देने से कुछ हासिल नहीं हो सकता. मोची को पन्द्रह सौ रुपया महीना देना शुरू कर दीजिये और आप देखेंगे कि ऊंची ज़ात वाले उस जगह को अपनाने की कोशिश में एक दूसरे को पीछे छोड़ देंगे. दामों को मुक़र्रर करने का जो ढांचा आज हमारे देश में है उसका यही क़माल है. पढ़े लिखे नौजवान गांवों में जायं, इस बात की चर्चा ही बेकार है. उस वक़्त तक यह बेकार है जब तक हम नौजवानों को इसके सिवा कुछ नहीं दे सकते कि वह गांवों में जा कर आधे पेट रहें, मेहनत करें पर उनका अपना खेत कोई न हो. इसका हल यह है कि खेती की पैदावार का दाम बढ़ाया जाय और बिचौलिये ख़तम कर दिये जायं ताकि किसान को अपने माल की अच्छी क़ीमत मिल सके.

इन समस्याओं पर ध्यान दिये बग़ैर 'पूंजी के बराबर बंटवारे" का उपदेश देना बिलकुल बेवक़ूफ़ी है. जब तक हम हज़ारों की तनख़ाहें मार रहे हैं उस वक़्त तक इस बात का कोई असर नहीं होने का. क्या यह उपदेशक अपने उपदेशों पर ख़ुद अमल करने को तैयार हैं ?

ऐसी परिस्थिति में टैक्स बढ़ाना, लेवी लगाना और करनसी नोट छाप कर सरकारी आमदनी बढ़ाना वग़ैरा ज़ख़्म पर नमक छिड़कना है. आख़री सुझाव यह ज़ाहिर करते हैं कि हाल में नोट बढ़ौती का जो कड़वा तजरबा हमें हुआ है उसकी याद कितनी जल्दी हमारे दिमाग़ से मिट गई.

एक बार मैं शान्ति की आवश्यकता पर जबलपुर में बोल रहा था. हथियार के कारख़ाने के एक मज़दूर ने मुझसे पूछा : "जनाब जब लड़ाई हो रही थी तब हमको अच्छी मज़दूरी मिलती थी लेकिन जब से शान्ति हो

کیا وہ دیش کی سیوا کر رہے ہیں یا انہیں منافع دار نوکری مل گئی ہے؟ اس نوکری کا آدھار ان کی اپنی سیواؤں پر نہیں بلکہ ان سیواؤں پر ہے جو آزادی کی لڑائی کے سمے گاندھی جی کی اگوائی میں کانگریس پارٹی نے کی تھیں؟ اگر وزیر اپنی گدیوں کو سیوا کی روپ میں مانتے ہیں تو انہیں شاہانہ شان شوکت کو چھوڑ کر اسے سدھ کرنا ہوگا۔

اگر اوپر والے وزارت کو دیش سیوا کا سادھن سمجھتے ہیں تو نیچے والوں کا سرکاری نوکریوں کی طرف کھنچنا قدرتی ہے۔ کیا وہ انسان نہیں ہیں؟ جس طرح اوپر والے کسی طرف کھنچ سکتے ہیں، کسی چیز کی طرف ان کا جھکاؤ ہو سکتا ہے اسی طرح نیچے والے بھی کسی طرف کھنچ سکتے ہیں یا کسی چیز کی طرف ان کا جھکاؤ ہو سکتا ہے۔

جو لوگ پسے ہوئے ہیں انہیں "محنت کرنے کے آدر بھاؤ" کا وعظ دینے سے کچھ حاصل نہیں ہو سکتا۔ موچی کو پندرہ سو روپیہ مہینہ دینا شروع کر دیجئے اور آپ دیکھیں گے کہ اونچی ذات والے اس جگہ کو اپنانے کی کوشش میں ایک دوسرے کو پیچھے چھوڑ دیں گے۔ داموں کو مقرر کرنے کا جو ڈھانچہ آج ہمارے دیش میں ہے اس کا یہی کمال ہے۔ پڑھے لکھے نوجوان گاؤں میں جائیں، اس بات کی چرچا ہی بیکار ہے۔ اس وقت تک یہ بیکار ہے جب تک ہم نوجوانوں کو اس کے سوا کچھ نہیں دے سکتے کہ وہ گاؤں میں جا کر آدھے پیٹ رہیں، محنت کریں پر ان کا اپنا کھیت کوئی نہ ہو۔ اس کا حل یہ ہے کہ کھیتی کی پیداوار کا دام بڑھا دیا جائے اور بچولئے ختم کر دیئے جائیں تاکہ کسان کو اپنے مال کی اچھی قیمت مل سکے۔

ان سمسیاؤں پر دھیان دیئے بغیر "پونجی کے برابر بٹوارے" کا اپدیش دینا بالکل بیوقوفی ہے۔ جب تک ہم ہزاروں کی تنخواہیں مار رہے ہیں اس وقت تک اس بات کا کوئی اثر نہیں ہونے کا۔ کیا یہ اپدیشک اپنے اپدیشوں پر خود عمل کرنے کو تیار ہیں؟

ایسی پرستھتی میں ٹیکس بڑھانا، لیوی لگانا اور کرنسی نوٹ چھاپ کر سرکاری آمدنی بڑھانا وغیرہ زخم پر نمک چھڑکنا ہے۔ آخری سجھاؤ یہ ظاہر کرتے ہیں کہ حال میں نوٹ بڑھوتی کا جو کڑوا تجربہ ہمیں ہوا ہے اس کی یاد کتنی جلدی ہمارے دماغ سے مٹ گئی۔

ایک بار میں شانتی کی آوشکتا پر جبل پور میں بول رہا تھا۔ ہتھیار کے کارخانے کے ایک مزدور نے مجھ سے پوچھا: "جناب جب لڑائی ہو رہی تھی تب ہم کو اچھی مزدوری ملتی تھی لیکن جب سے شانتی ہو

गई है तब से हम दो वक़्त की रोटी भी नहीं कमा पाते. ऐसी शान्ति से क्या फ़ायदा ?" क्या यही दर्शन है जिसके दिखाए पथ पर हमारा देश चलेगा ? हम जानते हैं कि दुनिया के दूसरे कुछ हिस्से इस दर्शन को अपना चुके हैं. इस बात का दिमाग़ में आना ही कि लड़ाई से रोज़गार मिलता है, इस बात को ज़ाहिर करता है कि हमारा माली ढांचा हिंसा पर टिका हुआ है. शान्ति के ज़माने में जो भी पेशा हम करते हैं उनको फ़ायदेमन्द बनाने के लिये अधिक मज़दूरी मिलनी चाहिये. इस हल से फिर यह बात उठ खड़ी होती है कि चीज़ों के दाम बढ़ाए जायं.

मनुश्य शक्ति को इस्तेमाल में लाने की सारी बातें सिर्फ़ बकवास हैं जब तक वह परिस्थिति पैदा नहीं की जा सकती जिस की तरफ़ मनुश्य शक्ति खिंचती है. अगर आप चींटियों का जमघट करना चाहते हैं तो शहद बिखेरना पड़ेगा. अगर आप आदमियों में यह उत्साह पैदा करना चाहते हैं कि वह काम करें तो आपको ऐसी परिस्थिति पैदा करनी पड़ेगी कि वह काम कर सकें और उस काम के लिये उन्हें अच्छी उजरत देनी पड़ेगी. मशीन और उद्योगी केन्द्रीकरन के फैलाव के पीछे जब तक भी यह विचार काम करता है कि बाज़ार भाव सस्ता हो तब तक मनुश्य शक्ति काम से जी चुराएगी या बेकार रहेगी—लोग अपना जीवन तक बेचने को तैयार हैं बशरते कि आप उचित मावज़ा दें. भरती करने वाला हर सारजन्ट इस बात को स्वीकार करेगा ! उसी कारन से हमारा फ़ौजी बजट जो बहुत ही भारी है हंसी ख़ुशी पास हो जाता है, पर हमारे उद्योगों के मज़दूरों की मज़दूरी बेहद कम है.

आजकल "घरेलू उद्योग को प्रोत्साहन" देने का शोर लगातार उठ रहा है. घरेलू उद्योग के सामानों की क्या जरूरत है जब कोई उन्हें ख़रीदता ही नहीं है. आजकल की जो दुर्दशा है उसमें ऐसे सामान पैदा करने वाला हमेशा भुक्कड़ रहेगा, इसकी गारन्टी है. मशीनी कारख़ानों में पैदावार अधिक मात्रा में की जाती है और माल सस्ता और स्टैंडर्ड होता है. यह माल घरेलू उद्योग के सामान को मैदान में टिकने नहीं देता. सरकार ने घरेलू उद्योग के सामान की एक नुमायश अभी मदरास में की थी. यह नुमायशें ख़ास कर इस लिये की जाती हैं कि घरेलू धन्दों को बढ़ाया जाय और जनता में उनके लिये प्रेम पैदा किया जाय. पर इन नुमायशों में भी घरेलू धन्दों से होड़ करने वाले सामान जैसे लक्स सोप, फ़्लेक्स शू, मिल के सूत का कपड़ा और सिलोलाइड और प्लास्टिक के सामान मौजूद रहते हैं. यह जय शरमाना बगला भक्ति है. इसका और कोई मतलब नहीं सिवाय इसके कि भोली भाली जनता को धोका दिया जाय.

گئی ہے تب سے ہم دو وقت کی روٹی بھی نہیں کما پاتے۔ ایسی شانتی سے کیا فائدہ؟" کیا یہی درشن ہے جس کے دکھائے پتھ پر ہمارا دیش چلے گا؟ ہم جانتے ہیں کہ دنیا کے دوسرے کچھ حصے اس درشن کو اپنا چکے ہیں۔ اس بات کا دماغ میں آنا ہی کہ لڑائی سے روزگار ملتا ہے، اس بات کو ظاہر کرتا ہے کہ ہمارا مالی ڈھانچہ ہنسا پر ٹکا ہوا ہے۔ شانتی کے زمانے میں جو بھی پیشہ ہم کرتے ہیں ان کو فائدےمند بنانے کے لئے ادھک مزدوری ملنی چاہئے۔ اس حل سے پھر یہ بات اٹھ کھڑی ہوتی ہے کہ چیزوں کے دام بڑھائے جائیں۔

منش شکتی کو استعمال میں لانے کی ساری باتیں صرف بکواس ہیں جب تک وہ پرستھتی پیدا نہیں کی جا سکتی جس کی طرف منش شکتی کھنچتی ہے۔ اگر آپ چیونٹیوں کا جمگھٹ کرنا چاہتے ہیں تو شہد بکھیرنا پڑے گا۔ اگر آپ آدمیوں میں یہ اُتساہ پیدا کرنا چاہتے ہیں کہ وہ کام کریں، تو آپ کو ایسی پرستھتی پیدا کرنی پڑے گی کہ وہ کام کر سکیں اور اس کام کے لئے انہیں اچھی اجرت دینی پڑے گی۔ مشین اور اُدیوگی کیندری کرن کے پھیلاؤ کے پیچھے جب تک یہ وچار بھی کام کرتا ہے کہ بازار بھاؤ سستا ہو تب تک منش شکتی کام سے جی چرائے گی یا بیکار رہے گی۔ لوگ اپنا جیون تک بیچنے کو تیار ہیں بشرطیکہ آپ اُچت معاوضہ دیں۔ بھرتی کرنے والا ہر سارجنٹ اس بات کو سویکار کرے گا! اسی کارن سے ہمارا فوجی بجٹ جو بہت ہی بھاری ہے ہنسی خوشی پاس ہو جاتا ہے، پر ہمارے اُدیوگوں کے مزدوروں کی مزدوری بے حد کم ہے۔

آجکل "گھریلو اُدیوگ کو پروتساہن" دینے کا شور لگاتار اٹھ رہا ہے۔ گھریلو اُدیوگ کے سامانوں کی کیا ضرورت ہے جب کوئی انہیں خریدتا ہی نہیں ہے۔ آج کل کی جو دردشا ہے اس میں ایسے سامان پیدا کرنے والا ہمیشہ بھوکا رہے گا، اسکی گارنٹی ہے۔ مشینی کارخانوں میں پیداوار ادھک ماترا میں کی جاتی ہے اور مال سستا اور اسٹینڈرڈ ہوتا ہے۔ یہ مال گھریلو اُدیوگ کے سامان کو میدان میں ٹکنے نہیں دیتا۔ سرکار نے گھریلو اُدیوگ کے سامان کی ایک نمائش ابھی مدراس میں کی تھی۔ یہ نمائشیں خاص کر اس لئے کی جاتی ہیں کہ گھریلو دھندوں کو بڑھایا جائے اور جنتا میں ان کے لئے پریم پیدا کیا جائے۔ پر ان نمائشوں میں بھی گھریلو دھندوں سے ہوڑ کرنے والے سامان جیسے لکس سوپ، فلیکس شو، مل کے سوت کا کپڑا اور سلولائیڈ اور پلاسٹک کے سامان موجود رہتے ہیں۔ یہ بے شرمانہ بگلا بھگتی ہے۔ اس کا اور کوئی مطلب نہیں سوائے اس کے کہ بھولی بھالی جنتا کو دھوکا دیا جائے۔

हल

अगर हम वाक़ई चाहते हैं कि देश ख़ुशहाल हो और सब को रोजगार मिल जाय तो हमें सारे देश के लिये एक ऐसा प्रोग्राम बनाना पड़ेगा जिसके अधीन पूंजी की पैदावार उसका बंटवारा और सामान की खपत सभी आजाएं. इस तरह हमें अपने उद्योगी प्लान, व्योपारी पालिसी और दामों के आधार सब पर फिर से सोच विचार करना पड़ेगा. अगर हम इन में नई जान नहीं फूंक सकते तो हमें बातों में अपनी ताक़त न गंवाना चाहिये.

उद्योगी प्लान

पैदावार के ढांचे को ऐसा बनाना पड़ेगा कि उसमें ज़ियादा से ज़ियादा लोग काम कर सकें और पढ़े लिखों को भी काम मिल सके. यह ढांचा इस आधार पर खड़ा किया जाय कि पूंजी कहीं से नहीं मिल सकती. इस तरह किसान खेती से पैदावार करेगा और घरेलू धन्दे उद्योगी सामान पैदा करेंगे.

पैदावार

जब से हमारे किसानों ने ग़ल्ला पैदा करना त्याग कर कारख़ानों के लिये कच्चा माल पैदा करना शुरू दिया है तब से हमारे देश में खाने की बेहद कमी हो गई है. उद्योगी सामानों की ज़रूरत को पूरा करने के बजाय कारख़ानेदार इश्तहार दे दे कर ग़ैर ज़रूरी आवश्यकतायें पैदा करते हैं और इस तरह ग़ैर ज़रूरी सामानों की मांग को बढ़ाते हैं. पैदावार करने का सारा आधार रुपया कमाना है देश की सेवा करना नहीं है. जब यह भावना उभरती है तो समाज में बराबरी पैदा करने की सारी कोशिशें बेकार हो जाती हैं. हर चीज़ की क़दरें गिर जाती है. इसके साथ ही साथ गांव और घरेलू धन्दे भी ख़तम होते हैं और इस तरह के अवसर बहुत कम हो जाते हैं कि आम लोग कोई काम कर सकें और फ़ायदा कमा सकें. शुरू में पढ़े लिखे लोग कुछ तकनीकी उद्योगों में काम करते थे. वह उद्योग यह थेः दियासलाई, साबुन, तेल और मिट्टी के तेल और पेट्रोल वग़ैरा के धन्दे. इनकी जगह 'विमका', 'लीवर ब्रादर्स' और दूसरी बड़ी कम्पनियों ने ले ली है.

कुछ कारीगरों ने स्याही बनाना, फ़ाउनटिन पैन की मरम्मत और रंग और वारनिश बनाना शुरू किया. बाहरी माल की होड़ यह नहीं कर पाए और मैदान से इन्हें हट जाना पड़ा. इसी तरह सीने की मशीन, बिजली के पंखे, बिजली के सामान, रेडियो, बरतन वग़ैरा बनाने के कुछ छोटे छोटे कारख़ाने देश में बढ़ने लगे थे. बाहरी माल के होड़ से यह बन्द हो गए या बुरी तरह से तबाह हैं. इसका

حل

اگر ہم واقعی چاہتے ہیں کہ دیش خوش حال ہو اور سب کو روزگار مل جائے تو ہمیں سارے دیش کے لئے ایک ایسا پروگرام بنانا پڑے گا جس کے ادھین پونجی کی پیداوار اس کا بٹوارا اور سامان کی کھپت سبھی آ جائیں۔ اس طرح ہمیں اپنے ادیوگی پلان، بیوپاری پالیسی اور داموں کا آدھار سب پر پھر سے سوچ وچار کرنا پڑے گا۔ اگر ہم ان میں نئی جان نہیں پھونک سکتے تو ہمیں باتوں میں اپنی طاقت نہ گنوانا چاہئے۔

ادیوگی پلان

پیداوار کے ڈھانچے کو ایسا بنانا پڑے گا کہ اسمیں زیادہ سے زیادہ لوگ کام کر سکیں، اور پڑھے لکھوں کو بھی کام مل سکے۔ یہ ڈھانچہ اس آدھار پر کھڑا کیا جائے کہ پونجی کہیں سے نہیں مل سکتی۔ اسطرح کسان کھیتی سے پیداوار کرے گا اور گھریلو دھندے ادیوگی سامان پیدا کریں گے۔

پیداوار

جب سے ہمارے کسانوں نے غلہ پیدا کرنا تیاگ کر کارخانوں کے لئے کچا مال پیدا کرنا شروع کر دیا ہے تب سے ہمارے دیش میں کھانے کی بے حد کمی ہوگئی ہے۔ ادیوگی سامانوں کی ضرورت کو پورا کرنے کے بجائے کارخانے دار اشتہار دے کر غیر ضروری آوشیکتائیں پیدا کرتے ہیں اور اسطرح غیر ضروری سامانوں کی مانگ کو بڑھاتے ہیں، پیداوار کرنے کا سارا آدھار روپیہ کمانا ہے دیش کی سیوا کرنا نہیں ہے۔ جب یہ بھاونا ابھرتی ہے تو سماج میں برابری پیدا کرنے کی ساری کوششیں بیکار ہو جاتی ہیں۔ ہر چیز کی قدریں گر جاتی ہیں۔ اس کے ساتھ ہی ساتھ گاؤں اور گھریلو دھندے بھی ختم ہوتے ہیں اور اسطرح کے اوسر بہت کم ہو جاتے ہیں کہ عام لوگ کوئی کام کر سکیں اور فائدہ کما سکیں۔ شروع میں پڑھے لکھے لوگ کچھ تکنیکی ادیوگوں میں کام کرتے تھے۔ وہ ادیوگ یہ تھے: دیاسلائی صابن، تیل اور مٹی کے تیل اور پٹرول وغیرہ کے دھندے پر ان کی جگہ 'ومکو' لیور براس' اور دوسری بڑی کمپنیوں نے لے لی ہے۔

کچھ کاریگروں نے سیاہی بنانا، فاونٹین پن کی مرمت اور رنگ اور وارنش بنانا شروع کیا۔ باہری مال کی ہوڑ یہ نہیں کر پائے اور میدان سے انہیں ہٹ جانا پڑا۔ اسی طرح سینے کی مشین، بجلی کے پنکھے، بجلی کے سامان، ریڈیو، برتن وغیرہ بنانے کے کچھ چھوٹے چھوٹے کارخانے دیش میں بڑھنے لگے تھے۔ باہری مال کی ہوڑ سے یہ بند ہو گئے ہیں یا بری طرح سے تباہ ہیں۔ اسکا

मुक़ाबला करने के लिये सरकार के पास कोई अमली प्रोग्राम नहीं है. अगर कुछ किया जाता है तो वह यह कि बेचारे ग़रीबों को गाली दी जाती है और कहा जाता है कि उन में काम करने का उत्साह नहीं है. अगर सरकार ईमानदार है तो उसे एक साफ़ प्लान बनाना चाहिये ताकि सब को रोज़गार मिल सके. सरकार को चाहिये कि वह ऐसे कारख़ानों को माली सहायता दे और घरेलू और विदेशी उद्योग के दबों से इन नये उद्योगों की हिफ़ाज़त करे.

बंटवारा

हम पहले कह चुके हैं कि सस्ते और नक़ली विदेशी सामान से हमारा बाज़ार पटा पड़ा है. माल के अन्दर आने और देश से बाहर जाने के संबन्ध में सरकार की कोई सोची विचारी पालिसी नहीं है. बने बनाए सामान के देश में आने से और कच्चे माल के देश से जाने से हमारे मुल्क में बेरोज़गारी फैलती है. इसलिये यह ज़रूरी है कि इन पर रोक लगाई जाय. अगर सरकार सिर्फ़ बनावटी टिसुए नहीं बहाती और ईमानदार है तो ऐसा करना बेहद ज़रूरी है क्योंकि बिना इसके जनता को रोज़गार नहीं मिल सकता.

माल की खपत

पैदा करने वाला उस वक़्त तक खुशहाल नहीं हो सकता जब तक उचित दाम पर उसका माल जल्द ही न बिक जाय. सरकार सब से ज़ियादा माल ख़रीदती है. सरकार को बहुत बेदरदी के साथ स्वदेशी माल ख़रीदने की पालिसी पर अमल करना चाहिये और दूसरों के सामने मिसाल रखना चाहिये. आज कल ख़रीद करने वाले सरकारी विभाग सस्ता माल ख़रीदने की कोशिश करते हैं; यह माल ज़ियादातर विदेशों से आते हैं और वहां की बड़ी बड़ी मिलों में पैदा किये जाते हैं. इस पालिसी से देशी माल का बाज़ार सुकड़ता है और जो लोग माल पैदा करते हैं बरबाद होते हैं. जहां तक हिन्दुस्तानी माल मिल सके वहां ख़रीद करने वाले सरकारी विभाग किसी भी बहाने से विदेशी सामान न ख़रीदने पायें. सस्ती का ख़याल करके अपने देश के रोज़गार को दूसरों के हाथ में न सौंपना चाहिये. वज़ीरों को इस बात पर ज़ोर देना चाहिये कि हिन्दुस्तानी माल की ही सपलाई की जाय. आज कल ज़ियादातर वज़ीर पारकर फ़ाउनटिन पैन रखते हैं, अमरीकी कार का इस्तेमाल करते हैं, उनके दफ़्तरों की स्टेशनरी और दूसरे सामान विदेशी होते हैं. जब तक ऊंचे लोगों में यह जज़्बा है तब तक क्या उम्मीद की जा सकती है कि आम लोगों को रोज़गार

مقابلہ کرنے کے لئے سرکار کے پاس کوئی عملی پروگرام نہیں ہے۔ اگر کچھ کیا جاتا ہے تو وہ یہ ہے کہ بیچارے غریبوں کو گالی دی جاتی ہے اور کہا جاتا ہے کہ اُن میں کام کرنے کا اُتساہ نہیں ہے۔ اگر سرکار ایماندار ہے تو اُسے ایک صاف پلان بنانا چاہئے تاکہ سب کو روزگار مل سکے۔ سرکار کو چاہئے کہ وہ ایسے کارخانوں کو مالی سہائتا دے اور گھریلو اور ودیشی اُدیوگ کے دبوں سے اِن نئے اُدیوگوں کی حفاظت کرے۔

بٹوارا

ہم پہلے کہہ چکے ہیں کہ سستے اور نقلی ودیشی سامان سے ہمارا بازار پٹا پڑا ہے۔ مال کے اندر آنے اور دیش سے باہر جانے کے سمبندھ میں سرکار کی کوئی سوچی وچاری پالیسی نہیں ہے۔ بنے بنائے سامان کے دیش میں آنے سے اور کچے مال کے دیش سے جانے سے ہمارے ملک میں بےروزگاری پھیلتی ہے۔ اس لئے یہ ضروری ہے کہ اِن پر روک لگائی جائے۔ اگر سرکار صرف بناوٹی تسوے نہیں بہاتی اور ایماندار ہے تو ایسا کرنا بےحد ضروری ہے کیونکہ بنا اِس کے جنتا کو روزگار نہیں مل سکتا۔

مال کی کھپت

پیداوار کرنے والا اُس وقت تک خوشحال نہیں ہو سکتا جب تک کہ اُچت دام پر اُس کا مال جلد ہی نہ بک جائے۔ سرکار سب سے زیادہ مال خریدتی ہے۔ سرکار کو بہت سختی کے ساتھ سودیشی مال خریدنے کی پالیسی پر عمل کرنا چاہئے اور دوسروں کے سامنے مثال رکھنا چاہئے۔ آجکل خرید کرنے والے سرکاری وبھاگ سستا مال خریدنے کی کوشش کرتے ہیں؛ یہ مال زیادہ‌تر ودیشوں سے آتے ہیں اور وہاں کی بڑی بڑی ملوں میں پیدا کئے جاتے ہیں۔ اس پالیسی سے دیشی مال کا بازار سکڑتا ہے اور جو لوگ مال پیدا کرتے ہیں برباد ہوتے ہیں۔ جہاں تک ہندستانی مال مل سکے وہاں تک خرید کرنے والے سرکاری وبھاگ کسی بھی بہانے سے ودیشی سامان نہ خریدنے پائیں۔ سستی کا خیال کرکے اپنے دیش کے روزگار کو دوسروں کے ہاتھ میں نہ سونپنا چاہئے۔ وزیروں کو اِس بات پر زور دینا چاہئے کہ ہندستانی مال کی ہی سپلائی کی جائے۔ آجکل زیادہ‌تر وزیر پارکر فاؤنٹین پن رکھتے ہیں، امریکی کار کا استعمال کرتے ہیں، اُن کے دفتروں کی اسٹیشنری اور دوسرے سامان ودیشی ہوتے ہیں۔ جب تک اُونچے لوگوں میں یہ جذبہ ہے تب تک کیا اُمید کی جاسکتی ہے کہ عام لوگوں کو روزگار

से लगाया जा सकेगा, हमें यह याद रखना चाहिये कि जो खरीदार अक़्लमन्द होता है और प्लान के अनुसार खरीद करता है उस पर भी रोजगार निर्भर करता है. विमको' जैसी विदेशी इजारादारियों पर रोक लगाना चाहिये. मिसालें क़ायम करके और प्रचार करके लोगों में स्वदेशी की भावना जगाना चाहिये.

दाम मुक़र्रर करने के संबन्ध में जो पालिसी सरकार अपनाए उसका ज़ोर सस्ती पर न होना चाहिये. पहला आधार यह होना चाहिये कि माल के पैदा करने वाले को इतना दाम मिल जाए जो उसके गुज़ारे के लिये काफ़ी हो, इस बात की गारन्टी होनी चाहिये.

ऊपर की कही बातों से यह साफ़ नतीजा निकलता है कि बेरोज़गारी और ग़रीबी फैलने के सिलसिले में सब से पहली मुजरिम सरकार है. अगर जनता को खुली छोड़ दिया जाय, अगर उचित वातावरन पैदा कर दिया जाये, अगर दाम इस तरह मुक़र्रर किये जायं कि माल पैदा करने वाले को इतनी आमदनी हो सके जिस से वह अच्छे स्तर का जीवन बिता सके तो अमरीका और बरतानिया की तरह लोग उद्योगी और कारबारी पेशे की तरफ़ क़ुदरतन झुकेंगे और आज़ाद पेशा अपनायेंगे और सरकारी दफ़्तरों में गुलामी करना पसन्द नहीं करेंगे.

स्वदेशी

बचपन से ही लोगों को इस बात की तालीम मिलनी चाहिये कि वह स्वदेशी को अपनायें. उनको तालीम मिलनी चाहिये कि हर चीज़ से बढ़ कर वह इनसानियत के जज़बे का ख़याल रखें. धन के मोल को दूसरे नम्बर पर समझें.

इस सब के लिये एक उचित तालीमी पालिसी की ज़रूरत है. कांगरेस कमेटी की बैठक में एक नये तालीमी ढांचे की चरचा हुई. मदरास सरकार ने उसको ज़ोर शोर से अपनाया है. यह ढांचा इस तरह का है कि जिस में अन्धा अन्धे को रास्ता दिखाता है. जिस विचार धारा को लेकर हम चाहते हैं कि हमारी अगली नसल तरक़्क़ी करे उसकी तालीम हम बच्चों के मां बाप को नहीं देते. हमें जिस चीज़ की ज़रूरत है वह है उचित बेसिक तालीम न कि तालीम का ढकोसला. इस तरह की तालीम का ज़बरदस्त अभाव है. सब से बड़ी बात तो यह है कि इसकी ज़रूरत तक महसूस नहीं की जा रही है.

हम विश्वास करते हैं कि कांगरेस कमेटी ने जो ठहराव पास किया है उस पर अमल किया जायगा और ऊपर के विचारों पर भी गंभीरता से सोच विचार होगा.

سے لگایا جا سکے گا. ہمیں یہ یاد رکھنا چاہئیے کہ جو خریدار عقلمند ہوتا ہے اور پلان کے انوسار خرید کرتا ہے اُس پر بھی روزگار نربھر کرتا ہے. 'ومکو' جیسی ودیشی اجارا داریوں پر روک لگنا چاہئیے. مثالیں قائم کرکے اور پرچار کر کے لوگوں میں سودیشی کی بھاؤنا جگانا چاہئیے.

دام مقرر کرنے کے سمبندھ میں جو پالیسی سرکار اپنائے اُس کا زور سستی پر نہ ہونا چاہئیے. پہلا آدھار یہ ہونا چاہئیے کہ مال کے پیدا کرنے والے کو اتنا دام مل جائے جو اُس کے گزارے کے لئے کافی ہو' اِس بات کی گارنٹی ہونی چاہئیے.

اُوپر کہی باتوں سے یہ صاف نتیجہ نکلتا ہے کہ بیروزگاری اور غریبی پھیلنے کے سلسلے میں سب سے پہلی مجرم سرکار ہے. اگر جنتا کو کھلی چھوٹ دی جائے' اگر اُچت واتاورن پیدا کردیا جائے' اگر دام اِس طرح مقرر کئے جائیں کہ مال پیدا کرنے والے کو اتنی آمدنی ہوسکے جس سے وہ اچھے استر کا جیون بتاسکے تو امریکہ اور برطانیہ کی طرح لوگ اُدیوگی اور کاروباری پیشے کی طرف قدرتاً جھکیں گے اور آزاد پیشہ اپنائیں گے. اور سرکاری دفتروں میں غلامی کرنا پسند نہیں کریں گے.

سودیشی

بچپن سے ہی لوگوں کو اِس بات کی تعلیم ملنی چاہئیے کہ وہ سودیشی کو اپنائیں. اُنکو تعلیم ملنی چاہئیے کہ ہر چیز سے بڑھ کر وہ اِنسانیت کے جذبے کا خیال رکھیں. دھن کے مول کو دوسرے نمبر پر سمجھیں.

اِس سب کے لئے ایک اُچت تعلیمی پالیسی کی ضرورت ہے. کانگریس کمیٹی کی بیٹھک میں ایک نئے تعلیمی ڈھانچے کی چرچا ہوئی ہے. مدراس سرکار نے اُس کو زور شور سے اپنایا ہے. یہ ڈھانچہ اِس طرح کا ہے کہ جس میں اندھا اندھے کو راستہ دکھاتا ہے. جس وچاردھارا کو لےکر ہم چاہتے ہیں کہ ہماری اگلی نسل ترقی کرے اُسکی تعلیم ہم بچوں کے ماں باپ کو نہیں دیتے. ہمیں جس چیز کی ضرورت ہے وہ ہے اُچت بیسک تعلیم نہ کہ تعلیم کا ڈھکوسلہ. اِس طرح کی تعلیم کا زبردست ابھاؤ ہے. سب سے بڑی بات تو یہ ہے کہ اِسکی ضرورت تک محسوس نہیں کی جا رہی ہے.

ہم وشواس کرتے ہیں کہ کانگریس کمیٹی نے جو ٹھہراؤ پاس کیا ہے اُس پر عمل کیا جائے گا اور اُوپر کے وچاروں پر بھی گمبھیرتا سے سوچ بچار ہوگا.

अहिंसा और आदमी

आदमी को मार डालना ऐसी हिंसा है जिसे सब समझते हैं, जिसकी सब धर्मों ने बुराई की है. जान लेने वाले को सब धर्मों ने मौत की व्यवस्था दी है, पर इस तरफ़ लोगों का बहुत कम ध्यान गया है कि मार डालने से तिल तिल कर मारना और भी जियादा बुरा है. इस तरह की दुख देने की प्रथा को रोकने की तरफ़ किसी का ध्यान गया ही नहीं. किसी इक्के दुक्के ने ऐसा किया हो तो अलग बात है.

आज की बनी धर्म सभा को अहिंसा में आदमी को इस तरह सताया जाना भी शामिल करना होगा. आज की सभा यह भी देखेगी कि कहीं कोई आदमी किसी तरह सताया तो नहीं जा रहा. जिस तरह कभी धर्मों ने पशुओं के लिए पशुशालाएं बनाई थीं, वैसे ही आज आदमी के विकास के लिए तरह तरह की शालाएं और आश्रम खोलने पड़ेंगे. हर पेशे पर गहरी नज़र डालनी होगी. जिस तरह अफ़ीम, शराब इस्तेमाल कर और ऐयाशी में फंस कर आदमी सुख मानता है, और अपनी देह घुलाता जाता है, वैसे ही आदमी पेशे करने में भी सुख मानता है और अपनी उम्र कम करता जाता है. उन पेशों से आदमी को निकालना इस नई धर्म सभा का काम होगा. रिक्शे वालों की तरफ़ आज कल सब भले आदमियों का ध्यान दौड़ रहा है. रिक्शे में बाइसिकल जुड़ जाने से धर्म रस में भीगे हुए आदमियों की तसल्ली नहीं हो पाती. पर न जाने क्यों किसी की नज़र रेल के ड्राइवर की तरफ़ नहीं जाती, जिस को इंजन में किसी मौसम का आराम नहीं. गर्मियों में बेहद गर्म, जाड़ों में तीर की तरह चुभने वाली ठंड और बरसात में हर तरह की बौछार का मुकाबला. नाव का मल्लाह बहाव के खिलाफ़ नाव खेकर, और बीसियों आदमियों को नाव में बिठा कर, क्या रिक्शा वाले से कुछ कम तकलीफ़ में रहता है? क्या यही हाल कोयले की खानों में काम करने वालों का नहीं है? जो लोग ऊंट किराये पर उठाते हैं यह लोग तो रिक्शे वालों से कहीं ज़ियादा दुखी हैं. यह तो मीलों सवार के पीछे ऊंट की चाल से दौड़ते हैं. इसी तरह के और भी अनेकों पेशे गिनाये जा सकते हैं. बीड़ियों के लिए जो आग से तपे तनूर में घुसता है, वह तो न जाने एक ही दिन में अपनी उमर के कितने दिन उस भाड़ में झोंक देता है. यह नये ढंग की धर्म सभा जिस का विषय सिर्फ़ आदमी ही होगा, आदमी की इन सब तकलीफ़ों को, बहुत जल्दी ढूंढ निकालेगी और उनको दूर करने का कोई न कोई उपाय ढूंढ निकालेगी. ऐसी धर्म सभा के बनने पर, जिस

اھنسا اور آدمی

آدمی کو مار ڈالنا ایسی ھنسا ھے جسے سب سمجھتے ھیں، جسکی سب دھرموں نے برائی کی ھے. جان لینے والے کو سب دھرموں نے موت کی ویوستھا دی ھے، پر اس طرف لوگوں کا بہت کم دھیان گیا ھے کہ مار ڈالنے سے تل تل کر مارنا اور بھی زیادہ برا ھے. اِس طرح کی دکھ دینے کی پرتھا کو روکنے کی طرف کسی کا دھیان گیا ھی نہیں. کسی اکے دکے نے ایسا کیا ھو تو الگ بات ھے.

آج کی بنی دھرم سبھا کو اھنسا میں آدمی کو اِس طرح ستایا جانا بھی شامل کرنا ھوگا. آج کی سبھا یہ بھی دیکھے گی کہ کہیں کوئی آدمی کسی طرح ستایا تو نہیں جا رھا. جس طرح کبھی دھرموں نے پشوؤں کے لئے پشو شالائیں بنائی تھیں، ویسے ھی آج آدمی کے وکاس کے لئے طرح طرح کے شالائیں اور آشرم کھولنے پڑیں گے. ھر پیشہ پر گہری نظر ڈالنی ھوگی. جس طرح افیم، شراب استعمال کر اور عیاشی میں پھنس کر آدمی سکھ مانتا ھے اور اپنی دیہ گھولتا جاتا ھے ویسے ھی آدمی پیشے کرنے میں بھی سکھ مانتا ھے اپنی عمر کم کرتا جاتا ھے. اُن پیشوں سے آدمی کو نکالنا اِس نئی دھرم سبھا کا کام ھوگا. رکشے والوں کی طرف آج کل سب بھلے آدمیوں کا دھیان دوڑ رھا ھے. رکشے میں بائسکل جڑ جانے سے دھرم رس میں بھیگے ھوئے آدمیوں کی تسلی نہیں ھو پاتی. پر نہ جانے کیوں کسی کی نظر ریل کے ڈرائیور کی طرف نہیں جاتی، جسکو انجن میں کسی موسم کا آرام نہیں. گرمیوں میں بے حد گرم، جاڑوں میں تیر کی طرح چبھنے والی ٹھنڈ اور برسات میں ھر طرح کی بوچھار کا مقابلہ. ناؤ کا ملاح بہاؤ کے خلاف ناؤ کھے کر، اور بیسیوں آدمیوں کو ناؤ میں بٹھا کر، کیا رکشے والے سے کچھ کم تکلیف میں رھتا ھے؟ کیا یہی حال کوئلے کی کھانوں میں کام کرنے والوں کا نہیں ھے؟ جو لوگ اونٹ کرائے پر اُٹھاتے ھیں یہ لوگ تو رکشے والوں سے کہیں زیادہ دکھی ھیں. یہ تو میلوں سوار کے پیچھے اونٹ کی چال سے دوڑتے ھیں. اِسی طرح کے اور بھی انیکوں پیشے گنائے جا سکتے ھیں. بیڑیوں کے لئے جو آگ سے تپے تنور میں گھستا ھے، وہ تو نہ جانے ایک ھی دن میں اپنی عمر کے کتنے دن اِس بھاڑ میں جھونک دیتا ھے. یہ نئے ڈھنگ کی دھرم سبھا جس کا وشے صرف آدمی ھی ھوگا، آدمی کی اِن سب تکلیفوں کو، بہت جلدی ڈھونڈھ نکالے گی. اور اُن کو دور کرنے کا کوئی نا کوئی اوپائے ڈھونڈ نکالے گی. ایسی دھرم سبھا کے بننے پر جس

में सब धर्म के आदमी शामिल होंगे, क्या लड़ाई के बीज जल भुन कर राख न हो जायंगे, क्या फिर मुल्कों का द्वेष क़ायम रह सकेगा ?

पुराने लोगों ने लड़ाई के तीन कारन माने हैं—ज़र, ज़मीन, जन, यानी धन, धरती और नारी.

आज, इन तीन में बाजार शामिल किया जा सकता है. है यह धन का दूसरा नाम. आज भी लड़ाई होती तो इन्हीं तीन कारनों से है, पर हर लड़ाई शुरू की जाती है धर्म के नाम पर. हर मुल्क यह शोर मचाने की कोशिश करता है कि उसके धर्म को ख़तरा है. अगर यह बात सच न होती तो कवियों को अपने छंदों में यह बात न कहनी पड़ती, "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना." ग़लत या सही अलग अलग धर्म दो मुल्कों को लड़ा कर, सीधे नासीधे कारन जरूर होते हैं.

अलग अलग धर्म फूट और बैर की तलवारों की धारों को तेज़ कर देते हैं. यह कैसे मज़े की बात है कि जो धर्म अपने बालपन में इन तलवारों की धारों को गुठल या कुंद करता है, वही धर्म पुराना हो कर उल्टा काम करने लगता है. आदमी जीते जी बच्चों को खुश करता है, डर दूर करता है, पर मरने पर बच्चों को रुलाने और डराने लगता है.

अलग अलग धर्म बड़े भयानक होते हैं, पानी को बनाने वाली हवाएं, आक्सीजन और हाईड्रोजन अलग अलग कौन कम बला हैं ?

अलग अलग धर्म ज़हर बने हुये हैं, मिल कर अमृत का रूप ले लेंगे. चूना और कत्था, अलग अलग आदमी के लिए बुरे होते हैं, आदमियत को कम करते हैं, पर वही दोनों मिल कर पान के साथ आदमी के पेट में पहुंच कर आदमी की आदमियत बढ़ाते हैं.

दुनिया के सब धर्म मिल कर अमृत का रूप ले लेंगे, उनके अमृत का असर हमारी आंखों के सामने न भी हो, तब भी यह बात हमारे सामने है ही कि फिर कोई मुल्क लड़ाई के लिए अपनी पीठ धर्म से न ठुकवा सकेगा. धर्म की हिमायत के बिना लड़ाई के लिए बिल्कुल निर्बल न भी बने, कुछ अंशों में कमज़ोर ज़रूर हो जायगा, क्योंकि सब धर्म मिल कर सब से पहला काम यही तो करेंगे कि वह लड़ाई को धर्म के ख़िलाफ़ ठहरायेंगे.

ठंडी आग की तरह गरम पानी की बात नहीं बनती, पर ठंडी आग भी मिलती है और गरम पानी भी मिलता है, फिर भी आज तक किसी ने यह न कहा, न माना, न अनुभव किया, न इस पर अमल किया कि आग का धर्म ठंडा करना है और पानी का धर्म जलाना. अगर आग ठंडी है तो वह अधर्मी है, विधर्मी है, कुधर्मी

میں سب دھرم کے آدمی شامل ہونگے . کیا لڑائی کے بیج جل بھن کر راکھ نہ ہو جائینگے' کیا پھر ملکوں کا دویش قائم رہ سکے گا ؟

پرانے لوگوں نے لڑائی کے تین کارن مانے ہیں—زر' زمین' زن' یعنی دھن' دھرتی اور ناری .

آج' ان تین میں بازار شامل کیا جا سکتا ہے. ہے یہ دھن کا دوسرا نام. آج بھی ہوتی انہیں تین کارنوں سے ہے' پر ہر لڑائی شروع کی جاتی ہے دھرم کے نام پر . ہر ملک یہ شور مچانے کی کوشش کرتا ہے کہ اُس کے دھرم کو خطرہ ہے . اگر یہ بات سچ نہ ہوتی تو کویوں کو اپنے چھندوں میں یہ بات نہ کہنی پڑتی' "مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا ." غلط یا صحیح الگ الگ دھرم دو ملکوں کو لڑا کر' سیدھے نا سیدھے کارن ضرور ہوتے ہیں .

الگ الگ دھرم پھوٹ اور بیر کی تلواروں کی دھاروں کو تیز کر دیتے ہیں . یہ کیسے مزے کی بات ہے کہ جو دھرم اپنے بالپن میں ان تلواروں کی دھاروں کو کُٹھل یا کند کرتا ہے' وہی دھرم پرانا ہو کر' اُلٹا کام کرنے لگتا ہے . آدمی جیتے جی بچوں کو خوش کرتا ہے' ڈر دور کرتا ہے' پر مرنے پر بچوں کو رلانے اور ڈرانے لگتا ہے .

الگ الگ دھرم بڑے بھیانک ہوتے ہیں' پانی کو بنانے والی ہوائیں' آکسیجن اور ہائیڈروجن الگ الگ کون کم بلا ہیں ؟

الگ الگ دھرم زہر بنے ہوئے ہیں' مل کر امرت کا روپ لے لینگے . چونا اور کتھا' الگ الگ آدمی کے لئے برے ہوتے ہیں' آدمیت کو کم کرتے ہیں' پر وہی دونوں مل کر پان کے ساتھ آدمی کے پیٹ میں پہنچ کر آدمی کی آدمیت بڑھاتے ہیں .

دنیا کے سب دھرم مل کر امرت کا روپ لے لینگے' اُن کے امرت کا اثر ہماری آنکھوں کے سامنے نہ بھی ہو' تب بھی یہ بات ہمارے سامنے ہے ہی کہ پھر کوئی ملک لڑائی کے لئے اپنی پیٹھ دھرم سے نہ ٹھکوا سکے گا . دھرم کی حمایت کے بنا لڑائی کے لئے بالکل نربل نہ بھی بنے' کچھ انشوں میں کمزور ضرور ہو جائے گا' کیونکہ سب دھرم مل کر سب سے پہلا کام یہی تو کرینگے کہ وہ لڑائی کو دھرم کے خلاف ٹھہرائینگے .

ٹھنڈی آگ کی طرح گرم پانی کی بات نہیں بنتی' پر ٹھنڈی آگ بھی ملتی ہے اور گرم پانی بھی ملتا ہے' پھر بھی آج تک کسی نے یہ نہ کہا' نہ مانا' نہ انوبھو کیا' نہ اِس پر عمل کیا کہ آگ کا دھرم ٹھنڈا کرنا ہے اور پانی کا دھرم جلانا. اگر آگ ٹھنڈی ہے تو وہ ادھرمی ہے' ودھرمی ہے کودھرمی

है, अगर पानी गरम है तो वह अधर्मी है, विधर्मी है, कुधर्मी है. यही हाल धर्म युद्ध का है, धर्म युद्ध जैसा समास नहीं बनता, अगर समास बनता है, तो वहां तलवारें नहीं चलेंगी, खून नहीं बहेगा, गला नहीं कटेगा, कड़वे बोल तक नहीं बोले जायगें, किसी आदमी को दुख पहुंचे यह हो ही न सकेगा, इस तरह का धर्म युद्ध समास उस युद्ध का द्योतक हो सकता है जो आए दिन आदमी के अन्दर चलता रहता है, वहां मारा मारी और कटा कटी नहीं होती.

धर्म युद्ध नाम की चीज़ अगर कहीं बाहरी दुनिया में है तो वह उसी धर्म की देन हो सकती है जो बहुत पुराना हो कर बेजान हो चुका हो. उसमें की सचाई ईमानदारी या तो बेदम हो चुकी हो, या दम तोड़ रही हो.

दो धर्मों में जब युद्ध होता है, उसे धर्म युद्ध कहना कोरा रिवाज है असलियत नहीं. धर्म नहीं लड़ते, धर्मों के रिवाज टकराते हैं, जो जो युद्ध धर्म युद्ध के नाम से मशहूर हैं वे या तो रिवाज युद्ध थे, या धन युद्ध थे, या नारी युद्ध या अधिकार युद्ध या और कोई युद्ध. न थे तो धर्म युद्ध न थे, महाभारत हुआ पांच गांव की ख़ातिर, लंका कांड हुआ सीता की ख़ातिर, इन्हें धर्म युद्ध कैसे कहा जा सकता है ? पाकिस्तान के लिये युद्ध हुआ यह था राजकाजी अधिकारों की ख़ातिर; पर उसे हर मुसलमान धर्म युद्ध कहता है.

धर्म नाम से पुकारी जाने वाली सचाई की तलवार पैनी होती है, पर वह तो खून नहीं निकालती, आमने सामने आने वाली अगर सचाई की तलवार लिये हों तो लड़ेंगे नहीं, एक दूसरे के गले मिलेंगे, हां जब वह तलवारें रिवाज में डूबे आदमियों के हाथों में होंगी तो वह गर्म हो जायंगी—एक दूसरे का काट करेंगी, फ़ौलादी तलवारों का भी यही हाल है, दो दुश्मनों की तलवारें एक बक्स में नंगी हो कर गले मिल कर लेट लेती हैं, वही दोनों दुश्मनों के हाथों में पहुंच कर खनाखन और खटाखट करने लगती हैं, दो दोस्तों की तलवारें उसी तरह नंगी हो कर एक बक्स में दूसरे से लिपट कर सो सकती हैं, और दोनों दोस्तों के हाथों में आ कर भी एक दूसरे का चुम्बन कर सकती हैं, खनाखन और खटाखट से दूर रहती हैं. इसी तरह सचाई और ईमानदारी की तलवारें भी दो दुश्मन धर्मों के हाथों में पड़ कर कर झूठ और बेईमानी के काम पर उतर आती हैं. इसी से समझा जा सकता है कि अलग अलग धर्मों का अस्तित्व कितना ख़तरनाक है. धर्मों ने अपना नाम रख कर धर्म को बदनाम कर दिया है. क्या अब्दुल क़ादिर और भगवानदास दोनों आदमी होते हुए एक आदमी में अलग अलग भाव पैदा नहीं करते ? वैसे

ہے، اگر پانی گرم ہے تو وہ ادھرمی ہے، ویدھرمی ہے، کودھرمی ہے. یہی حال دھرم یدھ کا ہے، دھرم یدھ جیسا سماس نہیں بنتا، اگر سماس بنتا ہے، تو وہاں تلواریں نہیں چلینگی، خون نہیں بہیگا، گلا نہیں کٹیگا، کڑوے بول تک نہیں بولے جائینگے، کسی آدمی کو دکھ پہونچے یہ ہو بھی نہ سکیگا، اس طرح کا دھرم یدھ سماس اس یدھ کا دھوتک ہوسکتا ہے جو آئے دن آدمی کے اندر چلتا رہتا ہے، وہاں مارا ماری اور کٹا کٹی نہیں ہوتی .

دھرم یدھ نام کی چیز اگر کہیں باہری دنیا میں ہے تو وہ اسی دھرم کی دین ہوسکتی ہے جو بہت پرانا ہوکر بےجان ہوچکا ہو . اس میں کی سچائی ایمانداری یا تو بےدم ہوچکی ہو یا دم توڑ رہی ہو .

دو دھرموں میں جب یدھ ہوتا ہے، اسے دھرم یدھ کہنا کورا رواج ہے، اصلیت نہیں. دھرم نہیں لڑتے، دھرموں کے رواج ٹکراتے ہیں، جو جو یدھ دھرم یدھ کے نام سے مشہور ہیں وہ یا تو رواج یدھ تھے، یا دھن یدھ یا ناری یدھ یا ادھیکار یدھ یا اور کوئی یدھ. نہ تھے تو دھرم یدھ نہ تھے، مہابھارت ہوا پانچ گاؤں کی خاطر، لنکا کانڈ ہوا سیتا کی خاطر، انہیں دھرم یدھ کیسے کہا جاسکتا ہے ؟ پاکستان کے لئے یدھ ہوا یہ تھا راجکاجی ادھیکاروں کی خاطر، پر اسے ہر مسلمان دھرم یدھ کہتا ہے .

دھرم نام سے پکاری جانے والی سچائی کی تلوار پینی ہوتی ہے، پر وہ تو خون نہیں نکالتی، آمنے سامنے آنے والے اگر سچائی کی تلوار لئے ہوں تو لڑینگے نہیں، ایک دوسرے کے گلے ملینگے، ہاں جب وہ تلواریں رواج میں ڈوبے آدمیوں کے ہاتھوں میں ہونگی تو وہ گرم ہوجائینگی. ایک دوسرے کا کاٹ کرینگی، فولادی تلواروں کا بھی یہی حال ہے، دو دشمنوں کی تلواریں ایک بکس میں ننگی ہوکر گلے مل کر لیٹ لیتی ہیں، وہی دونوں دشمنوں کے ہاتھوں میں پہونچکر کھنا کھن اور کھٹا کھٹ کرنے لگتی ہیں، دو دوستوں کی تلواریں اسی طرح ننگی ہوکر ایک بکس میں ایک دوسرے سے لپٹ کر سو سکتی ہیں، اور دونوں دوستوں کے ہاتھوں میں آکر بھی ایک دوسرے کا چمبن کرسکتی ہیں، کھنا کھن اور کھٹا کھٹ سے دور رہتی ہیں. اسی طرح سچائی اور ایمانداری کی تلواریں بھی دو دشمن دھرموں کے ہاتھوں میں پڑکر جھوٹ اور بےایمانی کے کام پر اتر آتی ہیں . اسی سے سمجھا جاسکتا ہے کہ الگ الگ دھرموں کا استتو کتنا خطرناک ہے . دھرموں نے اپنا نام رکھکر دھرم کو بدنام کردیا ہے . کیا عبدالقادر اور بھگوان داس دونوں آدمی ہوتے ہوئے ایک آدمی میں الگ الگ بھاؤ پیدا نہیں کرتے ؟ ویسے

अब्दुल क़ादिर भगवानदास शब्द का अरबी तरजुमा है. जहां धर्म के पीछे नाम लगा कि दूसरे धर्म वालों को उससे नफ़रत हुई या रग़बत.

अलग अलग धर्मों में पंथ बन बैठे हैं. पंथ शुरू शुरू में ईमानदारी ले कर चले थे, पर कुछ ही दिनों में वह उससे ऊब गये और पंथ के मोह में फंस कर उसी रूप में रंग गये जिस रूप को ख़त्म करने के लिये उन्होंने जन्म लिया था. असल में पंथ उस ईमानदार आदमी की कोशिश का नतीजा होते हैं जो अपने धर्म के रिवाजों से तंग आ चुका होता है और जो अपनी आंखों रिवाजों के हाथ समाज का नाश होता देख रहा होता है. समाज एक संस्था है, अगरचे वह जानदारों की बनी हुई होती है पर ख़ुद बेजान होती है. बेजान होने के नाते भावों से दूर होती है, दया नाम की चीज़ उससे कोसों दूर रहती है. वह मशीन की तरह अपने क़ायदों से ऐसे ही काम लेती है जैसे मशीन अपने पुर्ज़ों से. आलू काटने वाली मशीन जिस तरह अंगुली को भी काट देती है, वैसे ही क़ायदों में जकड़ा हुआ समाज, भले बुरे में तमीज़ करना छोड़ देता है, बेरहम हो कर व्यक्ति के साथ व्यवहार करने लगता है. इसी दुख को दूर करने के लिये समाज में से कोई एक आदमी नया उसूल गढ़ कर नये क़ायदों की बुनियाद डाल देता है. यही उसूल और क़ायदे पंथ का रूप ले लेते हैं और वह आदमी पंथ का गुरु बन बैठता है. जब सब धर्म मिल कर एक हो जायंगे, तब नये नये पंथ खड़ा होने का रिवाज मिट जायगा. "धर्म ख़तरे में है" यह नारा भी संसार से उठ जायगा. दुनिया के पर्दे पर अकेला धर्म ही है जो न कभी ख़तरे में पड़ सकता है, और न जिस का कभी खंडन हो सकता है, न किसी ने खंडन किया है, न आज कोई खंडन कर सकता है, और न कभी कोई खंडन कर सकेगा.

धर्म यानी सचाई, उसे दुनिया में ख़तरा कैसा ? उसका खंडन कैसा ? आर्य समाज हिन्दुओं में पैदा एक पंथ है जिसने सचाई का कभी खंडन नहीं किया. हिन्दुओं के रिवाजों के खिलाफ़ आवाज़ उठाई, मूर्ति पूजा धर्म नहीं था, न वह धर्म है, न कभी होगा. भक्ति भावना को रूप देने के लिये मूर्ति पूजा एक रिवाज है. मूर्ति पूजा मुसलमानों में नहीं है. आर्य समाज ने हिन्दुओं की मूर्ति पूजा के रिवाज को ख़त्म किया और उसकी जगह एकेश्वर निराकार की पूजा को क़ायम किया. ऐसा करके उसने धर्म का खंडन नहीं किया, लेकिन हिन्दुओं ने यही शोर मचाया कि ऐसा करना उनके धर्म पर आघात करना है, इससे उनके धर्म का खंडन होता है, उनका धर्म ख़तरे में पड़ता है. उनकी यह आवाज़ें लोगों को सिर्फ़ भड़काने के लिये थीं. सच्ची बात से लोगों में भड़क पैदा नहीं होती. भड़क के लिये

عبدالقادر بھگوان داس شبد کا عربی ترجمہ ہے۔ جہاں دھرم کے پیچھے نام لگا کہ دوسرے دھرم والوں کو اُس سے نفرت ہوئی یا رغبت۔

الگ الگ دھرموں میں پنتھ بن بیٹھے ہیں۔ پنتھ شروع شروع میں ایمانداری لےکر چلے تھے، پر کچھ ہی دنوں میں وہ اُس سے عرب گئے اور پنتھ کے موہ میں پھنس کر اُسی روپ میں رنگ گئے جس روپ کو ختم کرنے کے لئے اُنہوں نے جنم لیا تھا۔ اصل میں پنتھ اُس ایماندار آدمی کی کوشش کا نتیجہ ہوتے ہیں جو اپنے دھرم کے رواجوں سے تنگ آچکا ہوتا ہے اور جو اپنی آنکھوں رواجوں کے ہاتھ سماج کا ناش ہوتا دیکھ رہا ہوتا ہے۔ سماج ایک سنستھا ہے، اگرچہ وہ جانداروں کی بنی ہوئی ہوتی ہے تو پر خود بےجان ہوتی ہے، بےجان ہونے کے ناتے بھاؤں سے دور رہتی ہے۔ دیا نام کی چیز اُس سے کوسوں دور رہتی ہے۔ وہ مشین کی طرح اپنے قاعدوں سے ایسے ہی کام لیتی ہے جیسے مشین اپنے پرزوں سے۔ آلو کاٹنے والی مشین جس طرح اُنگلی کو بھی کاٹ دیتی ہے، ویسے ہی قاعدوں میں جکڑا ہوا سماج، بھلے برے میں تمیز کرنا چھوڑ دیتا ہے، بےرحم ہوکر ویکتی کے ساتھ ویوہار کرنے لگتا ہے۔ اِسی دکھ کو دور کرنے کے لئے سماج میں سے کوئی ایک آدمی نئے اصول گڑھ کر نئے قاعدوں کی بنیاد ڈالدیتا ہے۔ یہی اصول اور قاعدے پنتھ کا روپ لے لیتے ہیں اور وہ آدمی پنتھ کا گرو بن بیٹھتا ہے۔ جب سب دھرم مل کر ایک ہوجائینگے، تب نئے نئے پنتھ کھڑا ہونے کا رواج مٹ جائیگا۔ "دھرم خطرے میں ہے" یہ نعرہ بھی سنسار سے اُٹھ جائیگا۔ دنیا کے پردے پر اکیلا دھرم ہی ہے جو نہ کبھی خطرے میں پڑسکتا ہے اور نہ جس کا کبھی کھنڈن ہوسکتا ہے، نہ کسی نے کھنڈن کیا ہے، نہ آج کوئی کھنڈن کرسکتا ہے، اور نہ کبھی کھنڈن کرسکیگا۔

دھرم یعنی سچائی، اسے دنیا میں خطرہ کیسا؟ اُسکا کھنڈن کیسا؟ آریہ سماج ہندوؤں میں پیدا ایک پنتھ ہے جس نے سچائی کا کبھی کھنڈن نہیں کیا۔ ہندوؤں کے رواجوں کے خلاف آواز اُٹھائی، مورتی پوجا دھرم نہیں تھا، نہ وہ دھرم ہے، نہ کبھی ہوگا۔ بھکتی بھاؤنا کو روپ دینے کے لئے مورتی پوجا ایک رواج ہے۔ مورتی پوجا مسلمانوں میں نہیں ہے۔ آریہ سماج نے ہندوؤں کی مورتی پوجا کے رواج کو ختم کیا اور اُس کی جگہ ایکیشور نراکار کی پوجا کو قائم کیا۔ ایسا کرکے اُس نے دھرم کا کھنڈن نہیں کیا، لیکن ہندوؤں نے یہی شور مچایا کہ ایسا کرنا اُن کے دھرم پر آگھات کرنا ہے، اِس سے اُن کے دھرم کا کھنڈن ہوتا ہے، اُن کا دھرم خطرے میں پڑتا ہے۔ اُن کی یہ آوازیں لوگوں کو صرف بھڑکانے کے لئے تھیں۔ سچی بات سے لوگوں میں بھڑک پیدا نہیں ہوتی۔ بھڑک کے لئے

झूठ बोलना होता है, बात को बढ़ा चढ़ा कर कहना होता है, यह दोनों काम अधर्म हैं. अधर्म से ही भड़क पैदा होती है. भड़क उठना खुद अधर्म है. भड़क कर अधर्म ही किया जा सकता है, धर्म नहीं किया जा सकता.

सब धर्म एक हो कर, हो सकता है ऐसा विधान तैयार कर दें जिस से नये नये धर्मों का पैदा होना बंद हो जाय. धर्मों की यह मिली जुली संस्था ही शायद समय समय पर वह काम कर लिया करे जो नये नये धर्म पैदा हो कर किया करते हैं. नये धर्म यही तो करते हैं कि सचाई, प्रेम और ईमानदारी में जान डालते हैं. समय के अनुसार एक विधान बनाते हैं और किसी एक नये विचार के साथ समाज से नाता जोड़ देते हैं. यह इतने आसान काम हैं कि इन्हें सब धर्मों की मिली जुली संस्था आसानी से कर लिया करेगी. जब ऐसा हो जायगा तब आदमी दुख में पड़ने से बचेगा तो नहीं, पर जल्दी ही दुख भंवर से खींच निकाला जाया करेगा.

सब धर्मों की मिली जुली यह संस्था अपना नाम धर्म संस्था रख सकती है. यू. एन. ओ. की तरह इस का नाम यू. आर. ओ. भी हो सकता है. ऐसी संस्था बन जाने पर नीचे लिखी बातें न हों यह हो ही नहीं सकता.

(1) धर्म अहिंसा की भावुकता में आकर पशु पक्षियों, कीड़े मकोड़ों से इतना ज़ियादा राग करने लगे हैं, उन्हें अपने स्वार्थ की वजह से इतनी ज़ियादा मोहब्बत हो गई है कि उन जानवरों की ख़ातिर एक धर्म दूसरे धर्म के आदमियों की जान ले सकता है. उन्हीं जानवरों के नाम पर एक धर्म दूसरे धर्म वालों के खिलाफ़ लड़ने को तैयार कर सकते हैं. इन्हीं जानवरों की ख़ातिर एक धर्म अपनों में से ही किसी एक को सज़ा दे सकता है और जात से बाहर कर सकता है. धर्मों की इस बेजा मोहब्बत के कारन धर्म वालों ने आदमी के प्रति बेजा राग द्वेष का रोग बसा लिया है. जिस का सब धर्मों की मिली जुली संस्था आसानी से इलाज कर सकेगी. हमारा ख़याल है कि आदमी नाम का प्रानी जहां तक हो सकेगा दुख न पायेगा.

(2) हर धर्म वाले किसी न किसी जानवर से इतनी मोहब्बत करते ही हैं कि वह उसे नहीं मारते, उनके एक दो ही नहीं कई ख़ून माफ़ हैं. जिस तरह हिन्दुओं के बारे में यह कहा कि गाय का मोर्चा बना कर कई बार ग़ैर हिन्दुओं ने हिन्दुओं को जीता, वैसे ही यह कथा भी मशहूर है कि बिल्लियों का मोर्चा बना कर कई बार ग़ैर मिश्रियों ने मिश्र के लोगों को जीता. अब जब जानवर इस तरह किसी हालत में भी धर्म की रूह से नहीं मारे जा सकते तो क्या सब धर्म मिल कर जल्दी से जल्दी ऐसी व्यवस्था न

جھوٹ بولنا ہوتا ہے، بات کو بڑھا چڑھا کر کہنا ہوتا ہے، یہ دونوں کام ادھرم ہیں۔ ادھرم سے ہی بھڑک پیدا ہوتی ہے۔ بھڑک اُٹھنا خود ادھرم ہے۔ بھڑک کر ادھرم ہی کیا جاسکتا ہے، دھرم نہیں کیا جاسکتا۔

سب دھرم ایک ہو کر، ہو سکتا ہے ایسا ودھان تیار کر دیں جس سے نئے نئے دھرموں کا پیدا ہونا بند ہو جائے۔ دھرموں کی یہ ملی جلی سنستھا ہی شائد سمے سمے پر وہ کام کر لیا کرے جو نئے نئے دھرم پیدا ہو کر کیا کرتے ہیں۔ نئے دھرم یہی تو کرتے ہیں کہ سچائی، پریم اور ایمانداری میں جان ڈالتے ہیں۔ سمے کے انوسار ایک ودھان بناتے ہیں اور کسی ایک نئے وچار کے ساتھ سماج سے ناتا جوڑ دیتے ہیں۔ یہ اتنے آسان کام ہیں کہ انہیں سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا آسانی سے کر لیا کریگی۔ جب ایسا ہو جائے گا تب آدمی دکھ میں پڑنے سے بچے گا تو نہیں، پر جلدی ہی دکھ بھنور سے کھینچ نکالا جایا کرے گا۔

سب دھرموں کی ملی جلی یہ سنستھا اپنا نام دھرم سنستھا رکھ سکتی ہے۔ یو۔ این۔ او۔ کی طرح اس کا نام یو۔ آر۔ او۔ بھی ہو سکتا ہے۔ ایسی سنستھا بن جانے پر نیچے لکھی باتیں نہ ہوں یہ ہو ہی نہیں سکتا۔

(1) دھرم اہنسا کی بھاوکتا میں آ کر پشو پکشیوں، کیڑے مکوڑوں سے اتنا زیادہ راگ کرنے لگے ہیں، اُنہیں اپنے سوارتھ کی وجہ سے اتنی زیادہ محبت ہو گئی ہے کہ اُن جانوروں کی خاطر ایک دھرم دوسرے دھرم کے آدمیوں کی جان لے سکتا ہے۔ اُنہیں جانوروں کے نام پر ایک دھرم دوسرے دھرم والوں کے خلاف لڑنے کو تیار کر سکتے ہیں۔ اِن ہی جانوروں کی خاطر ایک دھرم اپنوں میں سے ہی کسی ایک کو سزا دے سکتا ہے اور جات سے باہر کر سکتا ہے۔ دھرموں کی اِس بیجا محبت کے کارن دھرم والوں نے آدمی کے پرتی بیجا راگ دویش کا روگ بسا لیا ہے۔ جس کا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا آسانی سے علاج کر سکے گی۔ ہمارا خیال ہے کہ آدمی نام کا پرانی جہاں تک ہو سکے گا دکھ نہ پائے گا۔

(2) ہر دھرم والے کسی نہ کسی جانور سے اتنی محبت کرتے ہی ہیں کہ وہ اسے نہیں مارتے، اُن کے ایک دو ہی نہیں کئی خون معاف ہیں۔ جس طرح ہندوں کے بارے میں یہ کہا کہ گائے کا مورچہ بنا کر کئی بار غیر ہندوؤں نے ہندوؤں کو جیتا، ویسے ہی یہ کتھا بھی مشہور ہے کہ بلیوں کا مورچہ بنا کر کئی بار غیر مصریوں نے مصر کے لوگوں کو جیتا۔ اب جب جانور اِس طرح کسی حالت میں بھی دھرم کی روح سے نہیں مارے جاسکتے تو کیا سب دھرم مل کر جلدی سے جلدی ایسی ویوستھا نہ

कर सकेंगे कि किसी भी आदमी को मौत की सजा न दी जाय.

(3) जगह जगह म्युनिस्पैलटी ने यह क़ानून बना रखे हैं, जिस से जानवरों को तकलीफ़ न हो पाये. तब क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था आसानी से यह इन्तज़ाम नहीं कर सकेगी कि आदमी को ऐसे कामों में न लगाया जाय जिन में लगने से उनकी उम्र कम होती हो, उनकी देह का कोई अंग या उपांग बेकार हो जाता हो. अगर वह शुरू शुरू में ऐसा न भी कर सकी तो इतना तो फ़ौरन कर ही सकेगी कि आदमियों को ऐसे कामों में कम से कम वक़्त से लिए लगाया जाय.

(4) युद्ध संस्थाएं, धर्मसंस्थाएं नहीं कही जा सकतीं. पर वह भी इस धर्म का बड़ा ख़्याल रखती हैं कि जहां तक बने सिपाहियों का बेजा संहार न किया जाय. इसी बात को ध्यान में रख कर पहली लड़ाई में गैस से काम लिया गया, पर दूसरी लड़ाई में उसका उपयोग एक दम बन्द रखा गया. तब क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था जल्दी ही सब मुल्कों को इस बात के लिये मजबूर नहीं कर सकती कि इस क़िस्म के हथियार न तैयार किये जायं जो लाखों आदमियों को मिनटों में मार डालते हों. जैसे ऐटम बम, हाई ड्रोजन बम वग़ैरा.

(5) जानवरों की जान लेना धर्म तो नहीं है फिर भी कई धर्मों में जानवरों की क़ुरबानी देने का रिवाज है. क़ुरबानी देते वक़्त धर्म वाले इस बात का ख़्याल रखते हैं कि जिस जानवर की क़ुरबानी दी जाय उसे क़ुरबानी के वक़्त कम से कम तकलीफ़ हो. फिर क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था इतना भी न कर सकेगी कि सब मुल्कों को मजबूर करे कि वे ऐसी चीज़ें तैयार न करें जो आदमियों को तड़पा तड़पा कर मार डाले.

(6) सब नहीं तो कुछ जानवर ऐसे ज़रूर हैं जिन में जिनसी क़ायदों का बड़ा ख़्याल रखा जाता है. मोर के बारे में तो यह बात फैली हुई है कि वह जुफ़ती ही नहीं करता. कौवों को भी बहुत ही कम लोगों ने मैथुन करते देखा है. जब जानवरों में भी थोड़ा बहुत जिनसी ख़्याल मौजूद है तब सब धर्मों की मिली जुली संस्था को इस बात में मुश्किल नहीं होनी चाहिये कि वह सब मुल्कों में ऐसे क़ानून बनवा दे जिस से लोग ऐसे पेशों में न लग सकें जिन की वजह से वह समाज की नज़रों में गिर जाते हैं.

सब धर्मों की मिली जुली संस्था जब अपना रूप ले लेगी तब वह ख़ुद भी यह सोच सकेगी कि उसे आदमी की भलाई के लिये क्या क्या करना चाहिये, ऐसे कौन से तरीक़े हो सकते हैं जिस से आदमी में आत्माभिमान

کر سکینگے کہ کسی بھی آدمی کو موت کی سزا نہ دی جائے ۔

(3) جگہ جگہ میونسپلٹی نے یہ قانون بنا رکھے ہیں، جس سے جانوروں کو تکلیف نہ ہو پائے ۔ تب کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا آسانی سے یہ انتظام نہیں کرسکیگی کہ آدمی کو ایسے کاموں میں نہ لگایا جائے جن میں لگنے سے اُن کی عمر کم ہوتی ہو اُن کی دیہہ کا کوئی انگ یا اُپانگ بیکار ہو جاتا ہو ۔ اگر وہ شروع شروع میں ایسا نہ بھی کرسکی تو اِتنا تو فوراً کر ہی سکیگی کہ آدمیوں کو ایسے کاموں میں کم سے کم وقت کے لئے لگایا جائے ۔

(4) یدھ سنستھائیں، دھرم سنستھائیں نہیں کہی جاسکتیں۔ پر وہ بھی اِس دھرم کا بڑا خیال رکھتی ہیں کہ جہاں تک بنے سپاہیوں کا بیجا سنگھار نہ کیا جائے ۔ اِسی بات کو دھیان میں رکھکر پہلی لڑائی میں گیس سے کام لیا گیا، پر دوسری لڑائی میں اُس کا اُپیوگ ایک دم بند رکھا گیا ۔ تب کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا جلدی ہی سب ملکوں کو اِس بات کے لئے مجبور نہیں کرسکتی کہ اِس قسم کے ہتھیار نہ تیار کئے جائیں جو لاکھوں آدمیوں کو منٹوں میں مار ڈالتے ہوں، جیسے ایٹم بم و ہائیڈروجن بم وغیرہ ۔

(5) جانوروں کی جان لینا دھرم تو نہیں ہے پھر بھی کئی دھرموں میں جانوروں کی قربانی دینے کا رواج ہے۔ قربانی دیتے وقت دھرم والے اِس بات کا خیال رکھتے ہیں کہ جس جانور کی قربانی دی جائے اُسے قربانی کے وقت کم سے کم تکلیف ہو ۔ پھر کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا اِتنا بھی نہ کرسکیگی کہ سب ملکوں کو مجبور کرے کہ وہ ایسی چیزیں تیار نہ کریں جو آدمیوں کو تڑپا تڑپا کر مار ڈالے ۔

(6) سب نہیں تو کچھ جانور ایسے ضرور ہیں جن میں جنسی قاعدوں کا بڑا خیال رکھا جاتا ہے ۔ مور کے بارے میں تو یہ بات پھیلی ہوئی ہے کہ وہ جفتی ہی نہیں کرتا ۔ کوؤں کو بھی بہت ہی کم لوگوں نے میتھن کرتے دیکھا ہے ۔ جب جانوروں میں بھی تھوڑا بہت جنسی خیال موجود ہے تب سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا کو اِس بات میں مشکل نہیں ہونی چاہئے کہ وہ سب ملکوں میں ایسے قانون بنوا دے جس سے لوگ ایسے پیشوں میں نہ لگ سکیں جنکی وجہ سے وہ سماج کی نظروں میں گر جاتے ہیں ۔

سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا جب اپنا روپ لے لیگی تب وہ خود بھی سوچ سکیگی کہ اُسے آدمی کی بھلائی کے لئے کیا کیا کرنا چاہئے، ایسے کون سے طریقے ہو سکتے ہیں جس سے آدمی میں اتم بھمان

जाग जाय और उसकी अन्तरात्मा इतनी पवित्र हो जाय कि वह निडर बन सके. वग़ैरा.

आदमी जिस तरह अलग अलग नाम रख कर भी एक है वैसे ही धर्म अलग अलग नाम रखते हुए क्यों नहीं एक हो सकते ? अलग अलग नाम वाले आदमी क्या आग बुझाने एक साथ नहीं दौड़ते ? लोगों को बाढ़ से बचाने के लिये एक दिल हो काम नहीं करते ? क्या फिर इसी तरह अलग अलग नाम वाले धर्म उस लड़ाई की आग को बुझाने के लिये जो लग कर आधी या तीन चौथाई दुनिया को ख़ाक बना देगी मिल कर नहीं दौड़ सकते ? और क्या उसे बुझाने में समर्थ नहीं हो सकते ? एक आदमी सचाई के साथ भलाई में लग कर दुनिया का नक़्शा बदल देता है तो क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था, इतना मामूली काम भी नहीं कर सकती ? एक बार ऐसी संस्था अस्तित्व में तो आये, रूप तो ले, फिर वह आप देखेगी कि वह कितने बड़े बड़े काम कर सकती है. सबका भला चाहने वाली संस्था बहुत जल्दी जड़ पकड़ सकती है. जल्दी ही एक ऐसे पेड़ का रूप ले सकती है जिस की छाया में सारी दुनिया के आदमी बैठ सकें. जिस के फल खा कर दुनिया के आदमी तसल्ली पा सकें, जिस की खोज में वह फिर रहे हैं.

धर्म की जड़ सचाई, ईमानदारी, प्रेम, शील, संतोष हैं. बाक़ी सब तो धर्म पेड़ की डाली, पत्ते और फल फूल हैं. इन सबमें रस तो वही बह रहा है जिसे जड़ भेज रही है. तो फिर क्या सब धर्म एक नहीं हैं ? धर्म का लक्षन जिस ग्रंथ में ढूंढा जायगा उसी ग्रंथ में वही मिलेगा जो दूसरे और ग्रंथों में है. जिस तरह सब रंगों की गाय का दूध सफ़ेद होता है, स्वाद में भी हर तरह एक होता है, वैसे ही सब धर्मों का रस यानी सार हर तरह एक ही होता है. दो होने की बात न किसी ने कही, न कोई कहता है और न कभी कोई कह सकेगा.

सब धर्म मिल कर एक ऐसी आवाज़ ज़रूर उठा सकते हैं, जैसी अब तक किसी धर्म ने न उठाई और न आज ही कोई अकेला धर्म वैसी आवाज़ उठा सकता है. नाम की क़ाबलियत तो उसी वक़्त आधी रह जाती है जब वह किसी के साथ जोड़ा जाता है. नाम किसी के साथ जुड़ कर अलहदगी ज़ियादा बतलाता है एकमेकता कम. आज ज़रूरत है एकमेकता की. सर्व धर्म सम्मेलनों ने धर्म की एकता को मुमकिन कर दिया है.

सब धर्मों की मिली जुली यह संस्था अपने देश ही नहीं, सारी दुनिया के सब आदमियों को समान रूप से सुख पहुंचा सकेगी और ज़ोर के साथ यह आवाज़ उठा सकेगी कि अब आगे आदमी की हिंसा किसी रूप में भी

جاگ جائے اور اُسکی انترآتما اِتنی پوتر ہوجائے کہ وہ نڈر بن سکے.

آدمی جس طرح الگ الگ نام رکھکر بھی ایک ہے ویسے ہی دھرم الگ الگ نام رکھتے ہوئے کیوں نہیں ایک ہوسکتے ؟ الگ الگ نام والے آدمی کیا آگ بجھانے ایک ساتھ نہیں دوڑتے ؟ لوگوں کو باڑھ سے بچانے کے لئے ایک دل ہو کام نہیں کرتے ؟ کیا پھر اِسی طرح الگ الگ نام والے دھرم اِس لڑائی کی آگ کو بجھانے کے لئے جو لگ کر آدھی یا تین چوتھائی دنیا کو خاک بنادیگی مل کر نہیں دوڑ سکتے ؟ اور کیا اُسے بجھانے میں سمرتھ نہیں ہوسکتے ؟ ایک آدمی سچائی کے ساتھ بھلائی میں لگکر دنیا کا نقشہ بدل دیتا ہے . تو کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا، اِتنا معمولی کام بھی نہیں کرسکتی ؟ ایک بار ایسی سنستھا استتو میں تو آئے، روپ تو لے، پھر وہ آپ دیکھیگی کہ وہ کتنے بڑے بڑے کام کرسکتی ہے . سب کا بھلا چاہنے والی سنستھا بہت جلدی جڑ پکڑ سکتی ہے. جلدی ہی ایک ایسے پیڑ کا روپ لے سکتی ہے جسکی چھایا میں ساری دنیا کے آدمی بیٹھ سکیں . جس کے پھل کھا کر دنیا کے آدمی تسلی پاسکیں، جسکی کھوج میں وہ پھر رہے ہیں .

دھرم کی جڑ سچائی، ایمانداری، پریم شیل، سنتوش ہیں. باقی سب تو دھرم پیڑ کی ڈالی، پتے اور پھل پھول ہیں . اِن سب میں رس تو وہی بہہ رہا ہے جسے جڑ بھیج رہی ہے. تو پھر کیا سب دھرم ایک نہیں ہیں ؟ دھرم کا لکشن جس گرنتھ میں ڈھونڈھا جائیگا اُسی گرنتھ میں وہی ملیگا جو دوسرے اور گرنتھوں میں ہے . جس طرح سب رنگوں کی گائے کا دودھ سفید ہوتا ہے، سواد میں بھی ہر طرح ایک ہوتا ہے، ویسے ہی سب دھرموں کا رس یعنی سار ہر طرح ایک ہی ہوتا ہے . دو ہونے کی بات نہ کسی نے کہی، نہ کوئی کہتا ہے اور نہ کوئی کہہ سکے گا .

سب دھرم مل کر ایک ایسی آواز ضرور اُٹھا سکتے ہیں، جیسی اب تک کسی دھرم نے نہ اُٹھائی اور نہ آج ہی کوئی اکیلا دھرم ویسی آواز اُٹھا سکتا ہے . نام کی قابلیت تو اُسی وقت آدھی رہ جاتی ہے جب وہ کسی کے ساتھ جوڑا جاتا ہے. نام کسی کے ساتھ جڑ کر علیحدگی زیادہ بتلاتا ہے ایک میکتا کم. آج ضرورت ہے ایک میکتا کی . سب دھرم سمیلنوں نے دھرم کی ایکتا کو ممکن کر دیا ہے .

سب دھرموں کی ملی جلی یہ سنستھا اپنے دیش ہی نہیں، ساری دنیا کے سب آدمیوں کو سمان روپ سے سکھ پہونچا سکےگی اور زور کے ساتھ یہ آواز اُٹھا سکے گی کہ اب آگے آدمی کی ہنسا کسی روپ میں بھی

ठीक न समझी जायगी. वही संस्था अधिकार भरी आवाज़ में यह कह सकती है कि वह सरकार सरकार न समझी जाय जिस के राज में एक भी आदमी मजबूर हो कर भूखा सो जाता है. वही संस्था हर मुल्क को मजबूर कर सकेगी कि वह अपने यहां के किसी आदमी को भी न जाड़ों मरने दे, न लू खाने दे, न मजबूर हो कर बरसात में भीगने दे.

ऐसी संस्था के रहते क्या कभी यह हो सकेगा कि कोई एक भी आदमी किराये के मकान में रह रहा हो, या आज की तरह सड़क पर पड़ा पड़ा एड़ी रगड़ रगड़ अपनी जान दे रहा हो.

धर्म एक है. अगर आज दुनियां में ऐसे ज़ियादा धर्म पाये जाते हैं तब हम यह कह कर ही इस लेख को ख़त्म करते हैं कि सब धर्मों की जान "सचाई और प्रेम" है. यही सचाई और प्रेम धर्म की जड़ है. उसी सचाई और प्रेम की जय होती आई है और उसकी जय हो कर रहेगी. उसी की जय में सब की भलाई है और सब का कल्यान है.

—भगवानदीन

एकांकी नाटक

मुआइना

(उदय नारायन त्रिपाठी)

पात्र

पंडित जी—स्कूल के एक मास्टर

डिप्टी साहब—स्कूलों के डिप्टी इन्सपेक्टर

शीतल—स्कूल का मानीटर, और बच्चों से कुछ बड़ी उमर का

मंगरे—एक दूसरा लड़का

सिपाही

(स्थान—गांव के पूरब तरफ़ एक प्राइमरी स्कूल. स्कूल की छत कपड़े की. स्कूल में दो बड़े बड़े कमरे. कमरों में दो दो बड़ी बड़ी खिड़कियां और दो दो दरवाज़े. कमरे और बाहर के बरामदे की फ़र्शों पर पलास्तर नहीं है केवल ईंटों का खुरदरा फ़र्श. स्कूल से सटा हुआ पीछे की तरफ़ एक छोटा सा बग़ीचा—बग़ीचे में छोटी छोटी क्यारियां, क्यारियों में साग, मूली, प्याज़ के हरे हरे पौदे. एक क्यारी में हरी हरी घास से हिन्दुस्तान का नक़्शा बना है. बिलडिंग के आगे एक छोटा सा मैदान जिसके चारों तरफ़ फूल लगे हुए हैं.)

ٹھیک نہ سمجھی جائے گی. وہی سنستھا ادھکار بھری آواز میں یہ کہہ سکتی ہے کہ وہ سرکار سرکار نہ سمجھی جائے جس کے راج میں ایک بھی آدمی مجبور ہو کر بھوکا سو جاتا ہے. وہی سنستھا ہر ملک کو مجبور کر سکے گی کہ وہ اپنے یہاں کے کسی آدمی کو بھی نہ جاڑوں مرنے دے' نہ لو کھانے دے نہ مجبور ہو کر برسات میں بھیگنے دے .

ایسی سنستھا کے رہتے کیا کبھی یہ ہو سکے گا کہ کوئی ایک بھی آدمی کرائے کے مکان میں رہ رہا ہو' یا آج کی طرح سڑک پر پڑا پڑا ایڑی رگڑ رگڑ کر اپنی جان دے رہا ہو .

دھرم ایک ہے. اگر آج دنیا میں ایسے زیادہ دھرم پائے جاتے ہیں تب ہم یہ کہکر ہی اس لیکھ کو ختم کرتے ہیں کہ سب دھرموں کی جان "سچائی اور پریم" ہے . یہی سچائی اور پریم دھرم کی جڑ ہے . اسی سچائی اور پریم کی جے ہوتی آئی ہے اور اس کی جے ہو کر رہے گی . اسی کی جے میں سب کی بھلائی ہے اور سب کا کلیان ہے .

—بھگوان دین

ایکانکی ناٹک

معائنہ

(اُدے نارائن ترپاٹھی)

پاتر—

پنڈت جی—اسکول کے ایک ماسٹر .

ڈپٹی صاحب—اسکولوں کے ڈپٹی انسپکٹر

شیتل—اسکول کا مانیٹر اور بچوں سے کچھ بڑی عمر کا .

منگرے—ایک دوسرا لڑکا

سپاہی

(استھان—گاؤں کے پورب طرف ایک پرائمری اسکول . اسکول کی چھت کپڑے کی . اسکول میں دو بڑے بڑے کمرے . کمروں میں دو دو بڑی بڑی کھڑکیاں اور دو دو دروازے . کمرے اور باہر کے برآمدے کی فرشوں پر پلاسٹر نہیں کیول اینٹوں کا کھردرا فرش . اسکول سے سٹا ہوا پیچھے کی طرف ایک چھوٹا سا بغیچہ . بغیچہ میں چھوٹی چھوٹی کیاریاں . کیاریوں میں ساگ' مولی' پیاز کے ہرے ہرے پودے. ایک کیاری میں ہری ہری گھاس سے ہندستان کا نقشہ بنا ہے . بلڈنگ کے آگے ایک چھوٹا سا میدان جس کے چاروں طرف پھول لگے ہیں .)

(समय साढ़े आठ बजे सुबह. दिसम्बर का महीना)

(स्कूल के कुछ बच्चे झाड़ू लगा रहे हैं, कुछ स्कूल का फालतू सामान कमरों से मैदान के एक कोने में ला कर रख रहे हैं. बाहर दो दो लड़के पुराने टाटों को झाड़ झाड़ कर कमरों में बिछा रहे हैं)

पहला दृश्य

(पंडित जी) जल्दी जल्दी चले आ रहे हैं. साथ में एक लड़का है और उसके हाथ में दही की हंडिया है.

पंडित जी—अबे शीतल ! तेरे पास अक़्ल नहीं है ?

शीतल—क्यों पंडित जी ?

पंडित जी—क्यों पंडित जी ! क्यों पंडित जी ! सर पर ही टाट झाड़ झाड़ कर धूल उड़ा रहा है और फिर पूछता है क्यों पंडित जी ?

शीतल—तब कहां झाड़ूं पंडित जी ?

पंडित जी—सामने परती नहीं दिखाई देती ?

शीतल—पंडित जी परती में झाड़ने पर उसके मालिक मारने दौड़ते हैं.

पंडित जी—उसके मालिक मारने दौड़ते हैं ? उन्हें कुत्ते ने काट खाया है क्या ?

शीतल—हां पंडित जी. वह कहते हैं कि परती में तुम लोग कोई काम न करो नहीं तो सरकार एक दिन इस पर भी कबज़ा जमा लेगी. मैं इसमें जुतवा कर आलू लगवाऊंगा.

पंडित जी—क्या कहा ? आलू लगवायेंगे ?

शीतल—हां पंडित जी. आलू लगवाने को कहते हैं.

पंडित जी—अरे तब तो मुझे मिटा ही देंगे. किसी तरह डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की मेम्बरी का लालच दिला कर तो उन्हें तैयार किया था दान करने के लिये. चेयरमैन साहब ने सामने उन्होंने वचन दिया था. अब अगर इनकार कर देंगे तो मैं कौन सा मुंह ले कर चेयरमैन साहब के पास जाऊंगा. मेरी बड़ी बदनामी हुई और बदनामी क्या अब तो मेरी नौकरी पर ही धब्बा आ जायगा. चेयर मैन साहब कहेंगे कि मैंने झूठ मूठ ज़मींदार को तैयार करके उन्हें ख़ुश करना चाहा था. अब क्या होगा हे भगवान !

शीतल—पंडित जी. अभी तक मंगरे पुआल ले कर नहीं लौटा और अब डिप्टी साहब का डेरा आने ही वाला है. कहिये तो जाऊं देखूं क्या वजह है उसके न आने की.

पंडित जी—हां हां. ठीक याद दिलाया. दौड़ जलदी जा. और देख, अगर पैसे के लिये कुछ कहे तो तुम

(ساڑھے آٹھ بجے صبح . دسمبر کا مہینہ)

(اسکول کے کچھ بچے جھاڑو لگا رہے ہیں، کچھ اسکول کا فالتو سامان کمروں سے میدان کے ایک کونے میں لاکر رکھ رہے ہیں . باہر دو دو لڑکے پرانے ٹاٹوں کو جھاڑ جھاڑ کر کمروں میں بچھا رہے ہیں)

پہلا درشیہ

(پنڈت جی) جلدی جلدی چلے آرہے ہیں. ساتھ میں ایک لڑکا ہے اور اُس کے ہاتھ میں دہی کی ہنڈیا ہے .

پنڈت جی— ابے شیتل ! تیرے پاس عقل نہیں ہے ؟

شیتل—کیوں پنڈت جی .

پنڈت جی—کیوں پنڈت جی . سر پر ہی ٹاٹ جھاڑ جھاڑ کر دھول اُڑا رہا ہے اور پوچھتا ہے کیوں پنڈت جی؟

شیتل—تب کہاں جھاڑیں پنڈت جی ؟

پنڈت جی—سامنے پرتی نہیں دکھائی دیتی ؟

شیتل—پنڈت جی پرتی میں جھاڑنے پر اُس کے مالک مارنے دوڑتے ہیں .

پنڈت جی—اُس کے مالک مارنے دوڑتے ہیں؟ اُنہیں کتے نے کاٹ کھایا ہے کیا ؟

شیتل—ہاں پنڈت جی . وہ کہتے ہیں کہ پرتی میں تم لوگ کوئی کام نا کرو نہیں تو سرکار ایک دن اِس پر بھی قبضہ جما لے گی . میں اِس میں جتوا کر آلو لگواؤں گا .

پنڈت جی—کیا کہا ؟ آلو لگوائیں گے ؟

شیتل—ہاں پنڈت جی آلو لگوانے کو کہتے ہیں .

پنڈت جی—تب تو مجھے مٹا دینگے . کسی طرح ڈسٹرکٹ بورڈ کی ممبری کی لالچ دلا کر تو اِنہیں تیار کیا تھا دان کرنے کے لئے . چیرمین صاحب کے سامنے اُنہوں نے وچن بھی دیا تھا . اب اگر اِنکار کر دینگے تو میں کون سا منھ لیکر چیرمین صاحب کے پاس جاؤں گا . میری بڑی بدنامی ہوئی اور بدنامی کیا . اب تو میری نوکری پر بھی دھبہ آ جائے گا . چیرمین صاحب کہینگے کہ میں جھوٹ موٹ زمیندار کو تیار کر کے اُنہیں خوش کرنا چاہا تھا . اب کیا ہوگا ہے. بھگوان !

شیتل—پنڈت جی ! ابھی تک منگرے پوال لیکر نہیں لوٹا اور اب ڈپٹی صاحب کا ڈیرا آنے ہی والا ہے . کہئے تو جاؤں دیکھوں کیا وجہ ہے اُس کے نا آنے کی .

پنڈت جی—ہاں ہاں. ٹھیک یاد دلایا . دوڑ جلدی جا . اور دیکھ اگر پیسے کے لئے کچھ کہے تو تم

कह देना--पंडित जी की तीन माह की तनखा रुकी हुई है. सुबह शाम लगा हुआ है. मिली नहीं कि उसका पैसा फ़ौरन मिल जायगा.

शीतल—अच्छा पंडित जी. (दौड़ता हुआ जाता है)

पंडित जी—और देख ! शीतल—ओ शीतल--ओ शीतल. क्या ज़रा सी देर में उड़ गया—कोई है जी शीतल को बुलाओ तो.

(एक लड़का दौड़ कर शीतल को बुलाता है)

शीतल--क्या है पंडित जी ?

पंडित जी—अबे पंडित जी के चेले ! चावल आया ?

शीतल—(सर खुजलाते हुए) अभी तो नहीं पंडित जी.

पंडित जी—हां, अभी तो नहीं पंडित जी. कह दिया और छुट्टी मिल गई कहता हूं में जिस बात का ख्याल न करूं वह चौपट ही हो जाय. देख, गुरुदीन के यहां चले जाना और कहना कि स्कूल के डिप्टी साहब का मुआइना है, अपनी दूकान का सब से पुराना और महीन चावल चार सेर देदें. रुपये की फ़िकर न करें. तनखा पाने पर उन्हें फ़ौरन दाम मिल जायगा.

शीतल—बहुत अच्छा (चला जाता है)

पंडित जी—रामू !

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी--कमरा साफ़ हो गया ?

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी—टाट बिछ गया ?

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी—घड़े में पानी रखा गया ?

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी---सब काम ठीक है ?

(रामू चुप है)

पंडित जी—अबे बोलता क्यों नहीं !

रामू—(धीरे से) नहीं पंडित जी.

पंडित जी—(रामू की नक़ल करते हुए) क्या नहीं ठीक है पंडित जी ?

रामू—पंडित जी ! भूगोल का सबक़ नहीं याद है.

पंडित जी—भूगोल का सबक़ नहीं याद है ? अरे, तब तो सारा मुआइना तुम चौपट करा दोगे. क्यों नहीं सबक़ याद हुआ डंडे नहीं पड़े इसलिये,

रामू—नहीं पंडित जी. तीन दिन हुआ शहर गई हुई थी मां, राशन लाने. रात तक नहीं आई थी—तीन दिन से हम लोग उसी का इन्तज़ार कर रहे थे. तीन दिन से बिना खाये रहना पड़ा सबक़ कैसे याद होता. सुबह आई है और हम सभी लोग अनाज को कूटने-पीसने में लगे थे.

पंडित जी—तो क्या किसी को नहीं याद है ? बुलाओ

کہ دینا . پنڈت جی کی تین ماہ کی تنخواہ رکی ہوئی ہے. صبح شام لگا ہوا ہے . ملی نہیں کہ اُس کا پیسہ فوراً مل جائے گا .

شیتل—اچھا پنڈت جی (دوڑتا ہوا جاتا ہے)

پنڈت جی—اور دیکھ ! شیتل' او شیتل' او شیتل . کیا ذرا سی دیر میں اڑ گیا. کوئی ہے جی...شیتل کو بلاؤ تو.

(ایک لڑکا دوڑ کر شیتل کو بلاتا ہے)

شیتل—کیا ہے پنڈت جی ؟

پنڈت جی--ابے پنڈت جی کے چیلے ! چاول آیا ؟

شیتل—(سر کھجلاتے ہوئے) ابھی تو نہیں پنڈت جی.

پنڈت جی—ہاں' ابھی تو نہیں پنڈت جی . کہہ دیا اور چھٹی مل گئی . کہتا ہوں میں جس بات کا خیال نا کروں وہ چوپٹ ہی ہو جائے . دیکھ' گردین کے یہاں چلے جانا اور کہنا کہ اِسکول کے ڈپٹی صاحب کا معائنہ ہے . اپنی دوکان کا سب سے پرانا اور مہین چاول چار سیر دے دیں . روپیہ کی فکر نا کریں' تنخواہ پانے پر فوراً انہیں دام مل جائے گا .

شیتل—بہت اچھا (چلا جاتا ہے)

پنڈت جی—رامو' جی پنڈت جی .

پنڈت جی—کمرہ صاف ہوگیا ؟

رامو—جی پنڈت جی .

پنڈت جی—ٹاٹ بچھ گیا

رامو—جی پنڈت جی

پنڈت جی—گھڑے میں پانی رکھ گیا ؟

رامو—جی پنڈت جی .

پنڈت جی—سب کام ٹھیک ہے ؟

(رامو چپ ہے)

پنڈت جی—ابے بولتا کیوں نہیں !

رامو—(دھیرے سے) نہیں پنڈت جی .

پنڈت جی (رامو کی نقل کرتے ہوئے) کیا نہیں ٹھیک ہے . پنڈت جی ؟

رامو—پنڈت جی بھوگول کا سبق نہیں یاد ہے .

پنڈت جی—بھوگول کا سبق نہیں یاد ہے ؟ ارے تب تو سارا معائنہ تم چوپٹ کرا دوگے . کیوں نہیں سبق یاد ہوا ؟ ڈنڈے نہیں پڑے اس لئے ؟

رامو—نہیں پنڈت جی. تین دن ہوا شہر گئی ہوئی تھی ماں راشن لانے . رات تک نہیں آئی تھی . تین دن سے ہم اُسی کا اِنتظار کر رہے تھے . تین دن سے بنا کھائے رہنا پڑا . سبق کیسے یاد ہوتا. صبح آئی ہے اور ہم سب ہی لوگ اناج کو کوٹنے پیسنے میں لگے تھے .

پنڈت جی—تو کیا کسی کو نہیں یاد ہے ؟ بلاؤ

तो सब लड़कों को.

(रामू सभी लड़कों को बुलाता है. कोई फटी कमीज़, को ईफटी बन्डी, कोई नंगे आकर पंडित जी के पास खड़े हो जाते हैं)

पंडित जी—तुम सभी लोगों को भूगोल का सबक़ नहीं याद है ?

सब मिल कर—नहीं पंडित जी.

पंडित—(सर पीटते हुए) अरे गधे के बच्चो ! तब तो मेरी नौकरी गई. आज मुआइना होगा. साहब के सामने मैं क्या पूछूंगा. तुम सब ने क्यों नहीं याद किया ?

(सब मिल कर) तीन दिन से घर में राशन ही नहीं था पंडित जी.

पंडित जी—तो मर क्यों नहीं गये ? (ग़ुस्से के साथ) सब लोग भूगोल की किताब निकाल कर बैठ जाओ और हिन्दुस्तान की चौहद्दी याद करो. डिप्टी साहब के आने पर यही पूछा जायगा.

(सब लड़के एक साथ ज़ोर ज़ोर से—भारत के उत्तर में हिमालय पहाड़, दक्खिन में हिन्द महा सागर, पूरब में बंगाल की खाड़ी, पच्छिम में बिलोचिस्तान, अरब सागर, स्कूल की बिलडिंग गूंज रही है. डिप्टी साहब के आने का समय निकट आ रहा है. पंडित जी यह सोच कर परेशान हो रहे हैं. इधर उधर चक्कर काट रहे हैं.)

(इतने में एक सिपाही आता है.)

सिपाही—(बुलाते हुए) मास्टर साहब !

पंडित जी—कहिए साहब क्या हुक्म है ?

सिपाही—हुक्म क्या है, लीजिए यह सम्मन. दसखत कीजिये.

(सम्मन निकाल कर देता है) और चलिये दरोग़ा जी ने आप को याद किया है.

पंडित जी—यह सब क्या है, दरोग़ा जी ने क्यों इतनी दया मुझ पर की. मुझ से उन से तो कोई जान पहिचान भी नहीं है.

सिपाही—ऐसे ही तो जान पहिचान हो जाती है—नदी नाव संयोग.

पंडित जी—सिपाही साहब ! मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है.

सिपाही—घबराने की बात नहीं ! ऐसे मामले अगर दिन में तीन बार भी हों तो यहां कोई फ़िकर नहीं और आप ज़रा सी बात में परेशान हो गये.

पंडित जी—भई आखिर बात क्या है पहले यह तो बताओ.

تو سب لڑکوں کو .

(رامو سبھی لڑکوں کو بلاتا ہے . کوئی پھٹی قمیض، کوئی پھٹی بنڈی، کوئی ننگے آکر پنڈت جی کے پاس کھڑے ہوجاتے ہیں .)

پنڈت جی—تم سبھی لوگوں کو بھوگول کا سبق نہیں یاد ہے ؟

سب ملکر—نہیں پنڈت جی .

پنڈت جی—(سر پیٹتے ہوئے) ارے گدھے کے بچو ! تب تو میری نوکری گئی . آج معائنہ ہوگا . صاحب کے سامنے میں کیا پوچھونگا. تم سب نے کیوں نہیں یاد کیا؟

(سب ملکر) تین دن سے گھر میں راشن ہی نہیں تھا پنڈت جی .

پنڈت جی—تو مر کیوں نہیں گئے ؟ (غصہ کے ساتھ) سب لوگ بھوگول کی کتاب نکال کر بیٹھ جاؤ اور ہندستان کی چوحدی یاد کرو. ڈپٹی صاحب کے آنے پر یہی پوچھا جائیگا .

(سب لڑکے ایک ساتھ زور سے—بھارت کے اُتر میں ہمالیہ پہاڑ، دکھن میں ہند مہاساگر، پورب میں بنگال کی کھاڑی، پچھم میں بلوچستان، عرب ساگر، اسکول کی بلڈنگ گونج رہی ہے . ڈپٹی صاحب کے آنے کا سمے نکٹ آ رہا ہے . پنڈت جی یہ سوچکر پریشان ہو رہے ہیں . اِدھر اُدھر چکر کاٹ رہے ہیں.)

(اِتنے میں ایک سپاہی آتا ہے)

سپاہی—(بلاتے ہوئے) ماسٹر صاحب .

پنڈت جی—کہئے صاحب کیا حکم ہے ؟

سپاہی—حکم کیا ہے، لیجئے یہ سمن . دستخط کیجئے . (سمن نکال کر دیتا ہے) اور چلئے داروغہ جی نے آپکو یاد کیا ہے .

پنڈت جی—یہ سب کیا ہے، داروغہ جی نے کیوں اِتنی دیا مجھ پر کی. مجھ سے اُن سے تو کوئی جان پہچان بھی نہیں ہے .

سپاہی—ایسے ہی تو جان پہچان ہو جاتی ہے . ندی ناؤ سنیوگ .

پنڈت جی—سپاہی صاحب ! میری سمجھ میں کچھ نہیں آ رہا ہے .

سپاہی—گھبرانے کی بات نہیں ! ایسے معاملے اگر دن میں تین بار بھی ہوں، تو یہاں کوئی فکر نہیں اور آپ ذراسی بات میں پریشان ہوگئے .

پنڈت جی—بھائی آخر بات کیا ہے پہلے یہ تو بتاؤ.

सिपाही—कुछ नहीं. अरे वही, जो आपने मिट्ठू अहीर वल्द चिरकुट अहीर 12 साल के बच्चे को लकड़ी काटने के लिए पेड़ पर चढ़ाया था. पेड़ से वह गिर पड़ा. उसी की रपट थाने में गई है.

पंडित जी—(घबराहट के साथ) ऐं क्या कहा, थाने में रपट गई है, मिट्ठू के गिरने की ? उसके बाप ने की है रपट ? इस दुनिया में किसी का ठिकाना नहीं कब कौन क्या कर बैठे. मेरे सारे किये कराये पर मिट्ठू के बाप ने पानी फेर दिया. अब तो नौकरी भी गई. बड़ा ग़ज़ब हुआ. हे भगवान ! अब क्या होगा. (पंडित जी के शरीर से पसीना छूटने लगा, पास की कुरसी पर बैठ गये, सर हाथों पर टिका दिया.)

सिपाही—मास्टर साहब ! कोई जवाब दीजिये. आप तो ऐसा घबरा गये जैसे किसी क़त्ल के मुजरिम हों.

पंडित जी—अरे भाई क़त्ल वत्ल का नाम न सुनाइये. नहीं तो मैं बेहोश हो जाऊंगा. आप ही बताइये मैं क्या जवाब दूं.

सिपाही—जवाब क्या दीजियेगा ? मेरे साथ तशरीफ़ ले चालिये.

पंडित जी—सिपाही साहब ! आज तो अगर मुहलत मिल जाय तो बड़ी दया होगी. आज हमारे साहब का मुआइना है. अगर मैं आज नहीं रहूंगा तो मुझे तुरन्त नौकरी से छुट्टी मिल जायगी (पाकेट से एक रुपए का नोट निकालते हुए) लीजिये यह मेरा आशीर्वाद. दरोग़ा जी से मेरा सलाम कह दीजियेगा.

सिपाही—अच्छा आदाब अर्ज़.

(चला जाता है)

दूसरा दृश्य

(समय 10 बजे. स्थान वही)

(शीतल और मंगरे दौड़े दौड़े चले आ रहे हैं)

पंडित जी—क्यों जी तुम लोग खाली हाथ क्यों आ रहे हो ?

मंगरे—पुआल वाले ने कहा कि बिना पैसे के पुआल नहीं देंगे.

शीतल—चावल वाले ने कहा कि अभी पुराने दौरे में चावल मंगाया था, उसका दाम चुकता ही नहीं किया और फिर चले हैं लेने ! पहले वह दाम तो चुकता करो.

पंडित जी—(एक लड़के को ज़ोर से पीटते हुए जो शोर कर रहा था) बदमाश कहीं का, तबियत आजिज़ कर दिये हैं.

سپاهی—کچھ نہیں۔ ارے وهی و جو آپ نے متھو اهیر ولد چرکٹ اهیر بارہ سال کے بچے کو لکڑی کاٹنے کے لئے پیڑ پر چڑهایا تھا۔ پیڑ سے وہ گر پڑا۔ اسی کی رپٹ تھانے میں گئی هے۔

پنڈت جی—(گھبراهٹ کے ساتھ) ایں کیا کہا' تھانے میں رپٹ گئی هے۔ متھو کے گرنے کی ؟ اس کے باپ نے کی هے رپٹ ؟ اس دنیا میں کسی کا ٹھکانہ نہیں۔ کب کون کیا کر بیٹھے۔ میرے سارے کئے کرائے پر متھو کے باپ نے پانی پھیر دیا۔ اب تو نوکری بھی گئی۔ بڑا غضب هوا۔ هے بھگوان ! اب کیا هوگا۔ (پنڈت جی کے شریر سے پسینہ چھوٹنے لگا' پاس کی کرسی پر بیٹھ گئے۔ سر هاتھوں پر ٹکا دیا۔)

سپاهی—ماسٹر صاحب' کوئی جواب دیجئے۔ آپ تو ایسے گھبرا گئے جیسے کسی قتل کے مجرم هوں۔

پنڈت جی—ارے بھائی قتل وتل کا نام نہ سنائیے۔ نہیں تو میں بیهوش هو جاؤنگا۔ آپ هی بتائیے میں کیا جواب دوں۔

سپاهی—جواب کیا دیجئیگا ؟ میرے ساتھ تشریف لے چلئے۔

پنڈت جی—سپاهی صاحب ! آج تو اگر مہلت مل جائے تو بڑی دیا هوگی۔ آج همارے صاحب کا معائنہ هے۔ اگر میں آج نہیں رهونگا تو مجھے تورنت نوکری سے چھٹی مل جائےگی۔ (پاکٹ سے ایک روپئہ کا نوٹ نکالتے هوئے) لیجئے یہ میرا آشیرواد۔ داروغہ جی سے میرا سلام کہدیجئیگا۔

سپاهی—اچھا آداب عرض۔

(چلا جاتا هے)

دوسرا درشیہ

(سمے دس بجے۔ استھان وهی)

(شیتل اور منگرے دوڑے دوڑے چلے آرهے هیں۔)

پنڈت جی—کیوں جی تم لوگ خالی هاتھ کیوں آ رهے هو۔

منگرے—پوال والے نے کہاکہ بنا پیسے پوال کے نہیں دینگے۔

شیتل—چاول والے نے کہا کہ ابھی پرانے دورے میں چاول منگایا تھا اس کا دام چکتا هی نہیں کیا اور پھر چلے هیں لینے ! پہلے وہ دام تو چکتا کرو۔

پنڈت جی—(ایک لڑکے کو زور سے پیٹتے هوئے جو شور کر رها تھا) بدمعاش کہیں کا' طبیعت عاجز کردیئے هیں۔

हां, क्या कहा पुआल और चावल नहीं मिला ? (चिल्लाते हुए) तो डिप्टी साहब को क्या खिलाऊंगा अपना मांस या तुम लोगों का) इतने में एक लड़का दौड़ता हुआ आता है और डिप्टी साहब के आने का पता देता है)

पंडित जी—(घबराये हुए)—क्यों जी आज प्रार्थना नहीं हुई न. सब लड़के नहीं पंडित जी.

पंडित जी—अरे बड़ा गड़बड़ किया तुम बदमाशों ने. चलो प्रार्थना के लिये बगीचे में एक लाइन में खड़े हो जाओ.

(सभी लड़के बगीचे में एक लाइन में खड़े हो जाते हैं उनमें से दो लड़के आगे निकल कर उन्हीं की तरफ़ मुंह करके प्राथना शुरू कर देते हैं—बाक़ी सब लड़के दुहराते हैं.)

पंडित जी—(इतने में बगीचे में आ कर छड़ी को पटकते हुए) बगीचे में क्यों खड़े हो गये ? मैदान में प्रार्थना होती है न.

सब लड़के—आप ही ने तो कहा है बगीचे में चलो.

पंडित जी—मेरा दिमाग़ तो आज उड़ गया है, क्या तुम लोगों का भी दिमाग़ चरने चला गया है. चलो मैदान में.

(सब लड़के बगीचे से मैदान में आने के लिये खिड़कियों से कूदते हैं. और डिप्टी साहब छड़ी हिलाते हुए आ जाते हैं)

पंडित—(झुक कर) हुज़ूर सलाम.

डिप्टी साहब—(तेज़ी से) सलाम. यह सब क्या हो रहा है ?

पंडित जी—हुज़ूर, प्रार्थना के लिये लड़के मैदान में आ रहे हैं.

डिपटी साहब—तो क्यों पीछे से कूद कूद कर आ रहे हैं ?

पंडित जी—आज भूल से वह सब बगीचे में प्रार्थना के लिये चले गये थे.

डिपटी साहब—और आप भूल से घर चले गये थे.

पंडित जी—नहीं हुज़ूर. मैं तो आप के सामने हूं.

डिपटी साहब—हां, अब तो सामने हैं. (घड़ी में देखते हुए) लेकिन दस बजे प्रार्थना जो हो रही है. इसका मतलब है कि आप अभी अभी घर से तशरीफ़ ला रहे हैं. (इतने में कुछ छोटे छोटे लड़के डिपटी साहब को घेर कर खड़े हो जाते हैं)और यही आपने बच्चों को तहज़ीब सिखाई है.

पंडित जी—(कांपते हुए) तुम लोग प्रार्थना के लिये एक लाइन में खड़े हो जाओ.

(लड़के एक लाइन में खड़े हो कर प्रार्थना करने लगते हैं)

ہاں، کیا کہا پوال اور چاول نہیں ملا ؟ (چلاتے ہوئے) تو ڈپٹی صاحب کو کیا کھلاؤنگا، اپنا ماس یا تم لوگوں کا؟

(اتنے میں ایک لڑکا دوڑتا ہوا آتا ہے اور ڈپٹی صاحب کے آنے کا پتہ دیتا ہے)

پنڈت جی—(گھبرائے ہوئے) کیوں جی آج پرارتھنا نہیں ہوئی نا .

سب لڑکے—نہیں پنڈت جی .

پنڈت جی—ارے بڑا گڑبڑ کیا تم بدمعاشوں نے . چلو پرارتھنا کے لئے بغیچہ میں ایک لائن میں کھڑے ہو جاؤ .

(سبھی لڑکے بغیچے میں ایک لائن میں کھڑے ہو جاتے ہیں . ان میں سے دو لڑکے آگے نکل کر انہیں کی اور منھ کرکے پرارتھنا شروع کردیتے ہیں . باقی سب لڑکے دوہراتے ہیں)

پنڈت جی—(بغیچے میں آکر چھڑی کو ٹپکتے ہوئے) بغیچے میں کیوں کھڑے ہوگئے میدان میں پرارتھنا ہوتی ہے نہ .

سب لڑکے—آپ ہی نے تو کہا ہے بغیچے میں چلو ،

پنڈت جی—میرا دماغ تو آج اڑ گیا ہے، کیا تم لوگوں کا بھی دماغ چرنے چلا گیا ہے . چلو میدان میں .

(سب لڑکے بغیچے سے میدان میں آنے کے لئے کھڑکیوں سے کودتے ہیں . اور ڈپٹی صاحب چھڑی ہلاتے ہوئے آجاتے ہیں)

پنڈت جی—(جھک کر) حضور سلام .

ڈپٹی صاحب—(تیزی سے) سلام . یہ سب کیا ہو رہا ہے .

پنڈت جی—حضور، پرارتھنا کے لئے لڑکے میدان میں آرہے ہیں .

ڈپٹی صاحب—تو کیوں پیچھے سے کود کود کر آ رہے ہیں ؟

پنڈت جی—آج بھول سے وہ سب بغیچے میں پرارتھنا کے لئے چلے گئے تھے .

ڈپٹی صاحب—اور آپ بھول سے گھر چلے گئے تھے .

پنڈت جی—نہیں حضور میں تو آپ کے سامنے ہوں .

ڈپٹی صاحب—ہاں، اب تو سامنے ہیں (گھڑی میں دیکھتے ہوئے) لیکن دس بجے پرارتھنا جو ہو رہی ہے . اس کا مطلب ہے کہ آپ ابھی ابھی گھر سے تشریف لا رہے ہیں . (اتنے میں کچھ چھوٹے چھوٹے لڑکے ڈپٹی صاحب کو گھیر کر کھڑے ہوجاتے ہیں) اور یہی آپ نے بچوںکو تہذیب سکھائی ہے .

پنڈت جی—(کانپتے ہوئے) تم لوگ پرارتھنا کے لئے ایک لائن میں کھڑے ہو جاؤ .

(لڑکے ایک لائن میں کھڑے ہوکر پرارتھنا کرنے لگتے ہیں)

डिपटी साहब—आपके यहां लड़कों की कितनी संख्या है ?

(पंडित जी रजिस्टर लाने दौड़ते हैं)

डिपटी साहब—क्या आप ज़बानी नहीं बता सकते ?

पंडित जी—जी ! ज़बानी ! हां क्यों नहीं ? ज़बानी, हमारे स्कूल से आप की दया से कुल साठ लड़के हैं.

डिपटी साहब—प्रार्थना में कितने लड़के हैं ?

पंडित जी—(ज़ोर से गिनते हुए) एक दो तीन.......... पन्द्रह, हुज़ूर की दया से पन्द्रह ही लड़के आये हैं.

डिपटी साहब—हुज़ूर की दया से पन्द्रह ही लड़के आये है, क्या मतलब है ? मेरी वजह से इतनी कम उपस्थिति है.

पंडित जी—नहीं हुज़ूर यह कौन कहता है.

डिपटी साहब—तो क्या आप के स्कूल में लड़कों की उपस्थिति 25 फ़ी सदी ही होती है ? तब तो आप ख़ूब स्कूल चलायेंगे.

पंडिती जी—सरकार ! क्या करूं. घर घर बुलाने जाता हूं. फिर भी सब नहीं आते. किसी का लड़का गायें चराने लगा. किसी का बकरी. कोई मज़दूरी करने लगा. कोई अपने जानवरों के लिये घास करने जाता है. सरकार इधर एक महीने से जब से भुक मरी बढ़ गई है, लड़कों की संख्या और कम हो गई. दिन भर गांव के सभी छोटे बड़े पास के ताल में जा कर जड़ें खोदते हैं और शाम को किसी तरह अपना पेट भरते हैं. छोटे लड़कों को मज़दूरी तो मिलती नहीं. बड़ों को जो मज़दूरी मिलती है उससे पूरे परिवार का पेट नहीं भरता. जाड़ों के दिन हैं किसी के पास कपड़े नहीं है. बच्चे नंगे स्कूल आने से सर्दी में बीमार पड़ जाते हैं.

डिपटी साहब—जी हां, बहानों का तो कोई अकाल ही नहीं पड़ा है. ख़ैर लाइये, देखें हमारे रहने सहने और खाने पीने का क्या बन्दोबस्त कर रखा है ?

पंडित जी—(सन्दूक़ खोलते हुए दांत निकाल निकाल कर) यह नमकीन बाज़ार से मंगावाया हैं. यह दही अहीर के यहां से ताज़ा ही है. यह बताशा गांव के हलवाई के यहां का है.......यह ताज़ा भूना है.

हुज़ूर चावल...अरे हां, चावल के लिये लड़के को बाज़ार भेजा है.

डिपटी साहब—तो आप ने समझा था कि कोई मथुरा का चौबे आपके यहां मेहमान बन कर आ रहा है. आप को कुछ तमीज़ भी है. शरीफ़ लोगों का यह नाश्ता नहीं हुआ करता. न तो आप को चाय के प्रबन्ध की तमीज़ आई, न तो टोस्ट का, न अन्डे का. क्या बताया

ڈپٹی صاحب—آپ کے یہاں لڑکوں کی کتنی سنکھیا ہے ؟

(پنڈت جی رجسٹر لانے دوڑتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—کیا آپ زبانی نہیں بتا سکتے ؟

پنڈت جی—جی ! زبانی ! ہاں کیوں نہیں ؟ زبانی ہمارے اسکول میں آپکی دیا سے کل ساٹھ لڑکے ہیں ۔

ڈپٹی صاحب—پرارتھنا میں کتنے لڑکے ہیں ؟

پنڈت جی—(زور سے گنتے ہوئے) ایک دو تین...... پندرہ ۔ حضور کی دیا سے پندرہ ہی لڑکے آئے ہیں ۔

ڈپٹی صاحب—حضور کی دیا سے پندرہ ہی لڑکے آئے ہیں' کیا مطلب ہے ؟ میری وجہ سے اتنی کم اپستھتی ہے ۔

پنڈت جی—نہیں حضور یہ کون کہتا ہے ۔

ڈپٹی صاحب—تو کیا آپ کے اسکول میں لڑکوں کی اپستھتی پچیس فیصدی ہی ہوتی ہے ؟ تب تو آپ خوب اسکول چلائیں گے ۔

پنڈت جی—سرکار ! کیا کروں ۔ گھر گھر بلانے جاتا ہوں ۔ پھر بھی سب نہیں آتے ۔ کسی کا لڑکا گائے چرانے لگا ۔ کس کا بکری ۔ کوئی مزدوری کرنے لگا ۔ کوئی اپنے جانوروں کے لئے گھاس کرنے جاتا ہے ۔ سرکار ادھر ایک مہینہ سے جب بھکمری بڑھ گئی ہے' لڑکوں کی سنکھیا اور کم ہوگئی ۔ دن بھر گاؤں کے سبھی چھوٹے بڑے پاس کے تال جاکر میں جڑیں کھودتے ہیں اور شام کو کسی طرح اپنا پیٹ بھرتے ہیں ۔ چھوٹے لڑکوں کو مزدوری تو ملتی نہیں ۔ بڑوں کو جو مزدوری ملتی ہے اس سے پورے پریوار کا پیٹ نہیں بھرتا ۔ جاڑوں کے دن ہیں کسی کے پاس کپڑے نہیں ہیں ۔ بچے ننگے اسکول میں آنے سے سردی میں بیمار پڑجاتے ہیں ۔

ڈپٹی صاحب—جی ہاں' بہانوں کا تو کوئی اکال ہی نہیں پڑا ہے ۔ خیر لایئے دیکھیں ہمارے کھانے پینے کا کیا بندوبست کر رکھا ہے ۔

پنڈت جی—(صندوق کھولتے ہوئے دانت نکال نکالکر) یہ نمکین بازار سے منگوایا ہے ۔ یہ دہی اہیر کے یہاں سے تازہ ہی ہے ۔ یہ بتاشہ گاؤں کے حلوائی کے یہاں کا ہے...... یہ تازہ بھنا ہے ۔

حضور چاول......ارے ہاں' چاول کے لئے لڑکے کو بھیجا ہے ۔

ڈپٹی صاحب—تو آپ نے سمجھا تھا کہ کوئی متھرا کا چوبے آپ کے یہاں مہمان بنکر آرہا ہے ۔ آپ کو کچھ تمیز بھی ہے ۔ شریف لوگوں کا یہ ناشتا نہیں ہوا کرتا ۔ نہ تو آپ [illegible] کے پربندھ کی تمیز آئی' نہ [illegible] توسٹ کا' نہ انڈے کا ۔ کیا بتایا

जाय इन देहाती स्कूलों के मुदर्रिसों को ज़रा भी अक़्ल भगवान ने नहीं दी. और उधर देखिये आप के लड़के अभी तक मैदान में प्रार्थना ही कर रहे हैं.

पंडित जी—(दौड़ कर लड़कों के पास) अरे तुम लोग यहीं खड़े हो, कमरे में चलो.

(सब लड़के कमरे में आते हैं)

डिपटी साहब—नहाने का कोई इन्तज़ाम है ?

पंडित जी—जी सरकार ! कुआं बाग़ में है......

डिपटी साहब—क्या कुएं में डूब मरना है. शरीफ़ लोग कहीं कुएं पर नहाते हैं. जब आपके यहां न नहाने का कोई इन्तज़ाम, न रहने का कोई इन्तज़ाम, तो खाने का क्या इन्तज़ाम होगा ?

पंडित जी—हुज़ूर ! कुआं एक बड़े सायेदार आम के पेड़ के नीचे है, कुएं की जगत सौ साल पुरानी होते हुए भी ऐसी चिकनी है कि उस पर सो जाने की तबीयत करती है. उस पर हुज़ूर बड़े मज़े में नहा सकते हैं......!

डिपटी साहब—जी हां ! मैंने कहा—शरीफ़ लोग कुएं पर नहीं नहाया करते पंडित जी महाराज ! और उस पर मज़ा यह कि जनाब उसके ऊपर खड़े सायेदार आम के पेड़ की तारीफ़ करते नहीं थक रहे हैं. आप को पता है आम की पत्तियों ने कुएं के पानी की क्या गत बना डाली होगी ?

पंडित जी—हुज़ूर ! पानी बड़ा ठंडा है. उसे एक बड़े पुन्यात्माने बनवाया था इसीलिए उसका पानी कभी घटता ही नहीं......!

डिपटी साहब—अच्छा, आप अब मुझे राम कथा न सुनायें. मैं यहां एक मिनट रुकने का नहीं. मुआइना रजिस्टर लाइए.

पंडित जी—मुआइना रजिस्टर ! हुज़ूर......!

(पंडित जी खड़े रहते हैं)

डिपटी साहब—हुज़ूर के चचा ! मैं कहता हूं मुआइना रजिस्टर लाते हो या......

पंडित जी—(लाने के लिये दौड़ते हुए) हुज़ूर लाया......!

(पंडित जी रजिस्टर कांपते हाथों ला कर डिपटी साहब की मेज़ पर रखते हैं. डिपटी साहब मुआइना लिखते हैं और पंडित जी कांपते हाथों स्कूल के उन बच्चों को जो डिपटी साहब का यह तमाशा देखने के लिये इकट्ठे हो गए थे, अपनी अपनी जगह पर बैठने का इशारा करते जाते हैं और दांत पीसते जाते हैं)

جائے ان دیہاتی اسکولوں کے مدرسوں کو ذرا بھی عقل بھگوان نے نہیں دی ۔ اور ادھر دیکھئے آپ کے لڑکے ابھی تک میدان میں پراتھنا ہی کر رہے ہیں ۔

پنڈت جی—(دوڑ کر لڑکوں کے پاس) ارے تم لوگ یہیں کھڑے ہو، کمرے میں چلو ۔

(سب لڑکے کمرے میں آتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—نہانے کا کوئی انتظام ہے؟

پنڈت جی—جی سرکار! کنواں باغ میں ہے......

ڈپٹی صاحب—کیا کنوئیں میں ڈوب مرنا ہے ۔ شریف لوگ کہیں کنوئیں پر نہاتے ہیں ۔ جب آپ کے یہاں نہ نہانے کا کوئی انتظام، نہ رہنے کا کوئی انتظام تو کھانے کا کیا انتظام ہوگا ۔

پنڈت جی—حضور! کنواں ایک بڑے سایہ دار آم پیڑ کے نیچے ہے، کنوئیں کی جگت سو سال پرانی ہوتے ہوئے بھی ایسی چکنی ہے کہ اس پر سو جانے کی طبیعت کرتی ہے ۔ اس پر حضور بڑے مزے میں نہا سکتے ہیں......!

ڈپٹی صاحب—جی ہاں! میں نے کہا—شریف لوگ کنوئیں پر نہیں نہایا کرتے پنڈت جی مہاراج! اور اس پر مزا یہ کہ جناب اس کے اوپر کھڑے سایہ دار آم کے پیڑ کی تعریف کرتے نہیں تھک رہے ہیں ۔ آپ کو پتہ ہے آم کی پتیوں نے کنوئیں کے پانی کی کیا گت بنا ڈالی ہوگی؟

پنڈت جی—حضور! پانی بڑا ٹھنڈا ہے، اسے ایک بڑے پنیاتما نے بنوایا تھا اسی لئے اس کا پانی کبھی گھٹتا ہی نہیں......!

ڈپٹی صاحب—اچھا، اب آپ مجھے رام کتھا نہ سنائیں ۔ میں یہاں ایک منٹ رکنے کا نہیں ۔ معائنہ رجسٹر لائیے ۔

پنڈت جی—معائنہ رجسٹر! حضور......!

(پنڈت جی کھڑے رہتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—حضور کے چچا! میں کہتا ہوں معائنہ رجسٹر لاتے ہو یا......

پنڈت جی—(لانے کے لئے دوڑتے ہوئے) حضور لایا......!

(پنڈت جی رجسٹر کانپتے ہاتھوں لا کر ڈپٹی صاحب کی میز پر رکھتے ہیں ۔ ڈپٹی صاحب معائنہ لکھتے ہیں اور پنڈت جی کانپتے ہاتھوں اسکول کے ان بچوں کو جو ڈپٹی صاحب کا یہ تماشہ دیکھنے کے لئے اکٹھے ہو گئے تھے، اپنی اپنی جگہ پر بیٹھنے کا اشارہ کرتے جاتے ہیں اور دانت پیستے جاتے ہیں)

(तीन मिनट में डिपटी साहब मुआइना लिख कर पंडित जी को घूरते हुए रवाना होते हैं और पंडित जी उन्हें पहुँचाने के लिये आगे बढ़ते हैं.)

डिपटी साहब—मेरा पीछा छोड़िये और जाके अपनी क़िसमत का फ़ैसला पढ़ लीजिए.

(पंडित जी को गोली सी लग जाती है. कई मिनट वहीं खड़े रहते हैं उसके बाद धीरे धीरे मेज़ की तरफ़ बढ़ते हैं. मुआइना पढ़ते पढ़ते पंडित जी बड़बड़ाने लगते हैं.)

पंडित जी—अध्यापक बड़ा असभ्य है! लड़कों को कपड़ा पहनने की भी तमीज़ नहीं सिखाता! ख़ुद भी दाढ़ी बढ़ाये नंगे पैर स्कूल आता है! ऐं...दाढ़ी...(और दाढ़ी पर जब हाथ जाता है तब उन्हें पता चलता है कि उनके चेहरे पर बालों की खेती उग आई है) अध्यापक का सलूक ही लड़कों की ग़ैर हाज़िरी का सबब है! (ऐं मेरा सलूक! मैं क्या उन्हें मारता हूं या स्कूल आने से रोकता हूं!) महज़ 25 फ़ी सदी हाज़िरी रहती है! अगर ऐसा आदमी एक दिन भी और इस मदरसे में रहा तो स्कूल की ख़ैरियत नहीं! इसलिये इसका तबादला यहां से चालीस मील दूर खजूरी मदरसे में होना ज़रूरी है...... ऐं खजूरी...... 40 मील दूर......इतवार की छुट्टियों में भी तो अब नहीं आ सकूंगा, क्योंकि बस से आने पर तो महीने भर की तनख़ा चार बार के बस के किराये में ही लग जायगी...! हे भगवान! अब क्या होगा, खेती बारी कैसे होगी, खेती और तनख़ाह से किसी तरह पेट भर जाता था अब ख़ाली तनख़ा से तो अपना ही पेट नहीं भरेगा. तीन लड़के, दो लड़कियों और बीवी का पेट कैसे भरेगा......! लड़के की फ़ीस और पढ़ाई का ख़र्च अब कैसे चलेगा......!

(पंडित जी के सामने सारा मदरसा चर्ख़ी की तरह घूमता हुआ नज़र आने लगा. उसी में उनकी बीवी, बच्चे, पढ़ने वाले लड़के भी नज़र आने लगे......! बीवी की साड़ी फटी है, बच्चों के बदन पर एक सूत नहीं है, पढ़ने वाले लड़के स्कूल से इसलिये लौट आये हैं कि फ़ीस न देने की वजह से मास्टर ने उन्हें क्लास से निकाल दिया है...! पंडित जी की आंख खुली थी लेकिन उन्हें गांव के महाजन का आना तब मालूम हुआ जब उसने पंडित जी की पीठ पर अपना हाथ कुछ ज़ोर से रखते हुए कहा—का हो पंडित सपनात हो आका?

और पंडित जी के हाथ से राजिस्टर छूट कर ज़मीन पर गिर पड़ता है.

(परदा धीरे धीरे गिरता है)

(تین منٹ میں ڈپٹی صاحب معائنہ لکھ کر پنڈت جی کو گھورتے ہوئے روانہ ہوتے ہیں اور پنڈت جی انہیں پہونچانے کے لئے آگے بڑھتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—میرا پیچھا چھوڑیئے اور اپنی جا کے قسمت کا فیصلہ پڑھ لیجئے۔

(پنڈت جی کو گولی سی لگ جاتی ہے۔ کئی منٹ وہیں کھڑے رہتے ہیں۔ اس کے بعد دھیرے دھیرے میز کی طرف بڑھتے ہیں۔ معائنہ پڑھتے پڑھتے پنڈت جی بڑبڑانے لگتے ہیں۔)

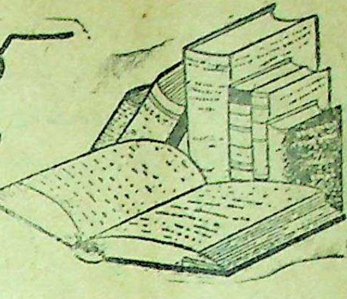
پنڈت جی—ادھیاپک بڑا اسبھیہ ہے! لڑکوں کو کپڑا پہننے کی تمیز نہیں سکھاتا! خود بھی داڑھی بڑھائے ننگے پیر اسکول آتا ہے! ایں......داڑھی.. ...(اور داڑھی پر جب ہاتھ جاتا ہے تب انہیں پتہ چلتا ہے کہ ان کے چہرے پر بالوں کی کھیتی اگ آئی ہے) ادھیاپک کا سلوک ہی لڑکوں کی غیرحاضری کا سبب ہے! (ایں میرا سلوک! میں کیا انہیں مارتا ہوں یا اسکول آنے سے روکتا ہوں!) محض 25 فی صدی حاضری رہتی ہے! اگر ایسا آدمی ایک دن بھی اور اس مدرسہ میں رہا تو اسکول کی خیریت نہیں! اس لئے اس کا تبادلہ یہاں سے چالیس میل دور کھجوری مدرسہ میں ہونا ضروری ہے......ایں کھجوری...... 40 میل دور.....اتوار کی چھٹیوں میں بھی تو اب نہیں آسکوں گا، کیونکہ بس سے آنے پر تو مہینے بھر کی تنخواہ چار بار کے بس کے کرائے میں ہی لگ جائیگی.....! ہے بھگوان! اب کیا ہوگا، کھیتی باری کیسے ہوگی، کھیتی اور تنخواہ سے کسی طرح پیٹ بھر جاتا تھا اب خالی تنخواہ سے تو اپنا ہی پیٹ نہیں بھرے گا۔ تین لڑکے، دو لڑکیوں اور بیوی کا پیٹ کیسے بھرے گا......! لڑکے کی فیس اور پڑھائی کا خرچ اب کیسے چلے گا......!

(پنڈت جی کے سامنے سارا مدرسہ چرخی کی طرح گھومتا ہوا نظر آنے لگا۔ اسی میں ان کی بیوی، بچے، پڑھنے والے لڑکے بھی نظر آنے لگے.........! بیوی کی ساڑی پھٹی ہے، بچوں کے بدن پر ایک سوت نہیں ہے، پڑھنے والے لڑکے اسکول سے اس لئے لوٹ آئے ہیں کہ فیس نہ دینے کی وجہ سے ماسٹر نے انہیں کلاس سے نکال دیا ہے......پنڈت جی کی آنکھ کھلی تھی لیکن انہیں گاؤں کے مہاجن کا آنا تب معلوم ہوا جب اس نے پنڈت جی کی پیٹھ پر اپنا ہاتھ کچھ زور سے رکھتے ہوئے کہا—کا ہو پنڈت سپنات ہو آکا۔

(اور پنڈت جی کے ہاتھ سے رجسٹر چھوٹ کر زمین پر گر پڑتا ہے۔

(پردہ دھیرے دھیرے گرتا ہے)

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

भू दान यज्ञ

यह किताब अंगरेज़ी भाशा में उन लेखों का संग्रह है जो विनोबा जी के नाम से भूदान यज्ञ के बारे में 'हरिजन' में समय समय निकलते रहे हैं. किताब के अंत में सम्पति दान प्रतिज्ञा पत्र भी छाप दिया गया है. जो भूदान यज्ञ के संबन्ध में जानना चाहते हैं उनके लिये यह किताब बड़े काम की साबित हो सकती है. आज की अर्थ कठनाई के दिनों में हिन्दुस्तानी किस तरह अपने ग़रीब भाईयों को मुफ़्त ज़मीन दे डालते हैं इसकी कथा इस किताब में जानने के लिये मिल सकती है.

विनोबा जी के नाम से आज सिर्फ़ हिन्दुस्तान ही नहीं दूसरे मुल्क वाले भी परिचित हैं. और उनमें ऐसी इच्छा होना स्वाभाविक है कि आख़िर विनोबा जी ऐसा क्या जादू करते हैं जो लोग अपनी ज़मीनें ग़रीबों को देने के लिये तैयार हो जाते हैं. ठीक ठीक तो यह काम उसी वक़्त समझ में आ सकता है जब आदमी महीनों विनोबा जी के साथ रहे और उनको अपना काम करते हुए देखे. लेकिन अगर कोई ऐसा न कर सके तो उसके लिये यह किताब उस वक़्त ज़ियादा मददगार साबित हो सकती है जिस वक़्त वह ख़ुद इस तरह का काम शुरू करे.

इस किताब को पढ़ कर जी से ग़रीबों का भला चाहने वालों के दिल में यह भावना जाग सकती है कि अगर वह भी इस तरह का कोई आनदोलन अपने मुल्क में उठाएं तो उसे ज़रूर किसी न किसी हद तक सफलता मिलेगी. और अगर वह विश्वास के साथ उस काम में अपने को लगाये रखेगा तो अजब नहीं कि वह बहुत जल्दी ही विनोबा जी से एक क़दम आगे बढ़ जाय. हम यह बात इस आधार पर कह रहे है कि दूसरे मुल्क जितने ज़ियादा धर्म भावना के भूके हैं उतना हिन्दुस्तान नहीं. हिन्दुस्तान धर्म भावना का भूखा नहीं, उसके अन्दर वह काफ़ी से ज़ियादा है और ज़रा छेड़ने पर उगल पड़ती है. और जल्दी ही इतना रंग ले जाती है कि दूसरे मुल्क दांत तले उंगली

بھو دان یگیہ

یہ کتاب انگریزی بھاشا میں اُن لیکھوں کا سنگرہ ہے جو ونوباجی کے نام سے بھودان یگیہ کے بارے میں 'ہریجن' میں سمے سمے نکلتے رہے ہیں۔ کتاب کے انت میں سمپتی دان پرتگیا پتر بھی چھاپ دیا گیا ہے۔ جو بھودان یگیہ کے سمبندھ میں جاننا چاہتے ہیں اُن کے لئے یہ کتاب بڑے کام کی ثابت ہو سکتی ہے۔ آج کی ارتھ کٹھنائی کے دنوں میں ہندستانی کس طرح اپنے غریب بھائیوں کو مفت زمین دے ڈالتے ہیں اِسکی کتھا اِس کتاب میں جاننے کے لئے مل سکتی ہے۔

ونوبا جی کے نام سے آج صرف ہندستان ہی نہیں دوسرے ملک والے بھی پرچت ہیں۔ اور اُن میں ایسی اچھا ہونا سوابھاوک ہے کہ آخیر ونوبا ایسا کیا جادو کرتے ہیں جو لوگ اپنی زمین غریبوں کو دینے کے لئے تیار ہو جاتے ہیں۔ ٹھیک ٹھیک تو یہ کام اُسی وقت سمجھ میں آ سکتا ہے جب آدمی مہینوں ونوبا جی کے ساتھ رہے اور اُن کو اپنا کام کرتے ہوئے دیکھے۔ لیکن اگر کوئی ایسا نہ کر سکے تو اُس کے لئے یہ کتاب اُس وقت زیادہ مددگار ثابت ہو سکتی ہے جس وقت وہ خود اِسطرح کا کام شروع کرے۔

اِس کتاب کو پڑھکر جی سے غریبوں کا بھلا چاہنے والوں کے دل میں یہ بھاونا جاگ سکتی ہے کہ اگر وہ بھی اِس طرح کا کوئی آندولن اپنے ملک میں اُٹھائیں تو اُسے ضرور کسی نہ کسی حد تک سپھلتا ملے گی۔ اور اگر وہ وشواس کے ساتھ اُس کام میں اپنے کو لگائے رکھے گا تو عجب نہیں کہ وہ بہت جلدی ہی ونوبا جی سے ایک قدم آگے بڑھ جائے۔ ہم یہ بات اِس آدھار پر کہہ رہے ہیں کہ دوسرے ملک جتنے زیادہ دھرم بھاونا کے بھوکے ہیں اُتنا ہندستان نہیں۔ ہندستان دھرم بھاونا کا بھوکا نہیں' اُس کے اندر وہ کافی سے زیادہ ہے اور ذرا چھیڑنے پر اُگل پڑتی ہے۔ اور جلدی ہی اتنا رنگ لے آتی ہے کہ دوسرے ملک دانت تلے اُنگلی

दबा लेते हैं. यहां काम थोड़ा हो पाता है उसकी ख़ुशबू बहुत फैल जाती है. दूसरे मुल्क जब इसका उपयोग करेंगे तो उन्हें बहुत जल्द ही हिन्दुस्तान से कई गुनी सफलता मिलेगी. यह दूसरी बात है कि जो नाम हिन्दुस्तान एक लाख एकड़ भूमि से पा सकता है दूसरे मुल्क उसी को पचास लाख एकड़ भूमिदान से कर सकेंगे. वह हिन्दुस्तान से कई गुना ज़ियादा मालदार भी तो हैं. उन्हें इस किताब को पढ़ना ही चाहिये और इस पर अमल करने के लिये तैयार होना ही चाहिये.

कितब 134 सफ़े की है और इसका दाम है डेढ़ रुपया. इस किताब के मिलने का पता—नवजीवन पबलीशिंग हाउस, अहमदाबाद.

—भ

प्राचीन कविता संग्रह

यह किताब वर्धा से हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने निकाली है, इसके संपादक हैं रसूल अहमद "अबोध"; दाम—डेढ़ रुपया.

नौ संतों की छटी हुई वानी का यह संग्रह है. यह नौ यह हैं—संत कबीर, मलिक मोहम्मद जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, अब्दुल रहीम खानखाना "रहीम" नंददास, रसखान, और बिहारीलाल.

यह संग्रह अपने ढंग का अलग है, ऐसे संग्रह की बड़ी ज़रूरत थी. इसकी भाशा कितनी ही पुरानी क्यों न हो पर दो तीन बार पढ़ने से मामूली पढ़े लिखे की समझ में आसानी से आ सकती है. इस पर भी किताब के आख़िर में शब्दार्थ दे दिये गये हैं.

संपादक ने प्राचीन हिन्दी काव्य का संक्षिप्त परिचय देकर इस किताब को और भी ज़ियादा उपयोगी बना दिया है. काका कालेलकर जी की संत वानी सिरबंध से जो किताब के शुरू में एक भूमिका दी हुई है उसे पढ़कर हर एक का जी मचल उठेगा कि एक बार इस पुस्तक में हो कर निकल जाय, और फिर यह असंभव है कि वह उसे कई बार न पढ़े.

हमारी अपनी राय यह है कि ऐसी किताबें घर घर में ज़रूर रखनी चाहिए. पर उनको रोज़ रोज़ नहीं पढ़ना चाहिये. कभी कभी और बहुत कम ही पढ़ना चाहिये. रोज पढ़ने से बदहज़मी हो जाने का डर है, पर संतों की किताबें इतनी मिठास लिये होती हैं कि आदमी कब्ज़ हो जाने का ख़याल किये बग़ैर उन्हें रोज़ पढ़ता ही है.

دبا لیتے ہیں. یہاں کام تھوڑا ہو پاتا ہے اُس کی خوشبو بہت پھیل جاتی ہے. دوسرے ملک جب اِس کا اُپیوگ کریں گے تو اُنہیں بہت جلد ہی ہندستان سے کئی گنی سپھلتا ملے گی یہ دوسری بات ہے کہ جو نام ہندستان ایک لاکھ ایکڑ بھومی سے پا سکتا ہے دوسرے ملک اُسی کو پچاس لاکھ ایکڑ بھومی‌دان سے کر سکیں گے. وہ ہندستان سے کئی گنا زیادہ مالدار بھی تو ہیں. اُنہیں اِس کتاب کو پڑھنا ہی چاہئے اور اس پر عمل کرنے کے لئے تیار ہونا ہی چاہئے.

کتاب 434 صفحے کی ہے اور اس کا دام ہے ڈیڑھ روپیہ. اِس کتاب کے ملنے کا پتہ—نوجیون پبلشنگ ہاؤس، احمدآباد.

—بھ

پراچین کویتا سنگرہ

یہ کتاب وردھا سے ہندستانی پرچار سبھا نے نکالی ہے. اِس کے سمپادک ہیں رسول احمد "ابودھ"؛ دام— ڈیڑھ روپیہ.

نو سنتوں کی چھٹی ہوئی وانی کا یہ سنگرہ ہے. یہ نو یہ ہیں—سنت کبیر، ملک محمد جائسی، سورداس، تلسی داس، میرا بائی، عبدالرحیم خانخانہ "رحیم" نند داس، رس‌کھان، اور بہاری لال.

یہ سنگرہ اپنے ڈھنگ کا الگ ہے. ایسے سنگرہ کی بڑی ضرورت تھی. اِس کی بھاشا کتنی ہی پرانی کیوں نہ ہو پر دو تین بار پڑھنے سے معمولی پڑھے لکھے کی سمجھ میں آسانی سے آ سکتی ہے. اِس پر بھی کتاب کے آخیر میں شبدارتھ دے دئے گئے ہیں.

سمپادک نے پراچین ہندی کاویہ کا سنکچھپت پریچے دے کر اس کتاب کو اور بھی زیادہ اُپیوگی بنا دیا ہے. کاکا کالیلکر جی کی سنت وانی سر بند سے جو کتاب کے شروع میں ایک بھومکا دی ہوئی ہے اُسے پڑھکر ہر ایک کا جی مچل اُٹھے گا کہ ایک بار اِس پستک میں ہوکر نکل جائے. اور پھر یہ اسمبھو ہے کہ وہ اُسے کئی بار نہ پڑھے.

ہماری اپنی رائے یہ ہے کہ ایسی کتابیں گھر گھر میں ضرور رکھی چاہیے. پر اُن کو روز روز نہیں پڑھنا چاہئے. کبھی کبھی اور بہت کم ہی پڑھنا چاہئے. روز پڑھنے سے بدہضمی ہوجانے کا ڈر ہے، پر سنتوں کی کتابیں اِتنی مٹھاس لئے ہوتی ہیں کہ آدمی قبض ہو جانے کا خیال کئے بغیر اُنہیں روز پڑھتا ہی ہے.

जहां शब्दार्थ दिया हुआ है वहीं कवियों का संक्षिप्त जीवन परिचय भी दे दिया है. संपादक ने यह करके इस किताब को इस योग्य बना दिया है कि यह पाठ्य पुस्तक बन सकती है. काका साहब की इस बात से हम सहमत हैं :—

"प्राचीन कविता संग्रह की कविता आज हमारे लिये कुछ कठिन सी हो गई है. शब्दार्थ कोश के सहारे उसका अर्थ समझना पड़ता है. अंगूर के फल के जैसा जिसका रस सुलभ था वह आज भाषा के कारन नारियल के फल जैसा हो गया है. अगर हम इसका प्रचार घर घर कर सकेंगे और सच्ची हिन्दुस्तानी को लोगों में प्रचलित कर देंगे तो इसका रस फिर से अंगूर के जैसा सुलभ और तृप्ति दायक हो जायगा."

—भ.

अंतहीन कहानी

निकालने वाले—पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, बंबई 4.

भाग पहला, दाम—बारह आने; सफ़े 74.

दूसरा भाग, दाम—एक रुपया; सफ़े 112.

इन किताबों के लेखक हैं देवी प्रसाद चटोपाध्याय और अनुवादक हैं युगजीत नवलपुरी जी. खोज करने पर भी यह पता न चला कि मूल पुस्तक अंगरेज़ी में है या बंगला में और उसका असली नाम क्या है ? अनुमान है बंगला में होगी. यह बात किताब में दे देनी चाहिये थी. हिन्दी को इतना अनुदार नहीं होना चाहिये.

प्रकाशक के शब्दों में, शक नहीं, हिन्दी पढ़ने वालों को इस तरह की किताब की बड़ी भारी ज़रूरत थी. किताब की शैली सचमुच बड़ी आसान है. विज्ञान की पुस्तक कहानी की शक्ल में लिख डालना उसी का काम हो सकता है जो विज्ञान का माहिर हो. जिस ढंग से यह किताब लिखी गई है इसे पढ़ कर कभी कोई बालक यह नहीं कहेगा कि उसने कोई विज्ञान की किताब पढ़ी है. वह यही कहेगा उसने कहानी पढ़ी है. इस किताब को पढ़ कर वह दूसरों को सुनाए बग़ैर न रहेगा. और अगर कहीं अपनी बे पढ़ी लिखी मां को सुनाने बैठ गया तब तो उस बुढ़िया में भी अनजाने ही विज्ञान की चाट पैदा कर देगा. हम इस किताब की यों ही तारीफ़ नहीं कर रहे. हमें यह दावा है हम भी विज्ञान को बहुत आसान बना कर बच्चों के सामने पेश करते हैं. एक किताब हमने लिखी भी थी वह छप नहीं पाई. पर इस किताब को देख कर तो हमें ऐसा

جہاں شبدارتھ دیا ہوا ھے وھیں کویوں کا سنکشپت جیون پریچے بھی دے دیا ھے . سمپادک نے یہ کر کے اِس کتاب کو اِس یوگیہ بنا دیا ھے کہ یہ پاٹھیہ پستک بن سکتی ھے . کاکا صاحب کی اِس بات سے ہم سہمت ھیں :—

"پراچین کویتا سنگرہ کی کویتا آج ھمارے لئے کچھ کٹھن سی ھو گئی ھے . شبدارتھ کوش کے سہارے اُس کا ارتھ سمجھنا پڑتا ھے . انگور کے پھل کے جیسا جس کا رس سلبھ تھا وہ آج بھاشا کے کارن ناریل کے پھل جیسا ھوگیا ھے . اگر ھم اِس کا پرچار گھر گھر کرسکیں گے اور سچی ھندستانی کو لوگوں میں پرچلت کردیں گے تو اِس کا رس پھر سے انگور کے جیسا سلبھ اور ترپتی دائک ھوجائے گا . "

—بھ

اَنت ھین کہانی

نکالنے والے—پیپلس پبلشنگ ھاوس، بمبئی 4 .

بھاگ پہلا، دام—بارہ آنے؛ صفحے 74 .

دوسرا بھاگ، دام—ایک روپیہ؛ صفحے 112.

اِن کتابوں کے لیکھک ھیں دیوی پرساد چٹوپادھیائے اور انوادک ھیں یگ جیت نول پوری جی . کھوج کرنے پر بھی یہ پتہ نہ چلا کہ مول پستک انگریزی میں ھے یا بنگلا میں اور اُس کا اصلی نام کیا ھے ؟ انومان ھے بنگلا میں ھوگی . یہ بات کتاب میں دے دینی چاھئے تھی . ھندی کو اِتنا انودار نہیں ھونا چاھئے .

پرکاشک کے شبدوں میں، شک نہیں، ھندی پڑھنے والوں کو اِس طرح کی کتاب کی بڑی بھاری ضرورت تھی . کتاب کی شیلی سچ مچ بڑی آسان ھے . وگیان کی پستک کہانی کی شکل میں لکھ ڈالنا اُسی کا کام ھو سکتا ھے جو وگیان کا ماھر ھو . جس ڈھنگ سے یہ کتاب لکھی گئی ھے اِسے پڑھکر کبھی کوئی بالک یہ نہیں کہے گا کہ اُس نے کوئی وگیان کی کتاب پڑھی ھے . وہ یہی کہے گا اُس نے کہانی پڑھی ھے . اِس کتاب کو پڑھکر وہ دوسروں کو سنائے بغیر نہ رھے گا . اور اگر کہیں اپنی بے پڑھی لکھی ماں کو سنانے بیٹھ گیا تب تو اُس بڑھیا میں بھی انجانے ھی وگیان کی چاٹ پیدا کر دے گا . ھم اس کتاب کی یوں ھی تعریف نہیں کر رھے . ھمیں یہ دعویٰ ھے ھم بھی وگیان کو بہت آسان بناکر بچوں کے سامنے پیش کرتے ھیں . ایک کتاب ھم نے لکھی بھی تھی وہ چھپ نہیں پائی . پر اِس کتاب کو دیکھکر تو ھمیں ایسا

मालूम हुआ कि यह किताब उससे भी ज़ियादा आसान बोली में और उससे भी ज़ियादा सीधी शैली में लिखी गई है. अंगरेज़ी पारिभाषिक शब्दों को ज्यों का त्यों रहने दिया है पर उनका अर्थ समझ कर पढ़ने वालों को अंधेरे में नहीं छोड़ा गया.

हमें अब तक इसके दो भाग मिले हैं पर आगे कुछ भाग और निकलने वाले हैं. एक का नाम होगा, इस दुनिया के अजायब घर, दूसरी किताब होगी, नख से शिख तक, और तीसरी होगी, यमदूत के ख़िलाफ़ संघर्ष.

अनुवाद में अनुवाद की बुराई बहुत ही कम है. कोई इसे अनुवाद नहीं कह सकता. हर तरह मूल पुस्तक सी जंचती है. मूल पुस्तक हमारे सामने होती तो हम यह भी कह सकते कि अनुवाद ज्यों का त्यों हुआ है या नहीं. जगह जगह चित्रों ने इस किताब की उपयोगिता और बढ़ा दी है.

इस किताब में एक कमी है. टाइप इतना छोटा है मानो वह बच्चों के लिये न लिखी जा कर विद्वानों के लिये लिखी गई है.

हिन्दी जानकार किसी को भी इस किताब के बग़ैर नहीं रहना चाहिये. —भ.

खंडहरों का वैभव

लेखक—मुनी कान्ती सागर; दाम—छै रुपया.

भारतीय ज्ञानपीठ काशी ने 436 सफ़े की यह किताब यह कह कर निकाली है कि उसके छै रुपए दाम ही लागत से दो रुपए कम हैं. न जाने किस किस काम पर इस किताब के तैयार करने पर ख़र्च पड़ा होगा. खंडहरों और खंडित मूरतियों के इसमें चित्र भी काफ़ी हैं. उन लोगों के लिये सचमुच यह बड़े काम की किताब है जिन्हें खंडहरों को देख कर रोना आ जाता है. किसी मूरत को किसी ने अपने औज़ार तेज़ करने के काम में ले रखा है, इसे देख कर मुनी जी को रोना आ गया. इसलिये नहीं कि पत्थर की मूरत में जान थी क्योंकि जान के मामले में तो मूरती बनाने वालों का यह कहना है कि वह न मरती है, न कठती है, न जलती है, न छिदती है, न सूखती है वग़ैरा. और इसी के आधार पर उनका यह भी कहना है कि जिनकी यह मूरतियां हैं वह तपस्या में इतने लीन हुए थे कि किसी पर बेलें चढ़ गईं थीं, किसी को सियार खाने लगे तो वह हिले डुले नहीं. उन्हें दुख इस बात का हुआ कि एक ऐसी मूरत पर औज़ार तेज़ किये जा रहे थे जो इतिहास की चीज़ थी, जो किसी अजायबघर में होनी चाहिये थी.

सचमुच किताब बड़े काम की है. हिन्दी में ऐसी किताब कम ही देखने को मिलती है. इस विषय को हिन्दी वालों ने अभी छेड़ा ही नहीं है. —भ.

معلوم ہوا کہ یہ کتاب اُس سے بھی زیادہ آسان بولی میں اور اُس سے بھی زیادہ سیدھی شیلی میں لکھی گئی ہے۔ انگریزی پاربھاشک شبدوں کو جیوں کا تیوں رہنے دیا ہے پر اُن کا اَرتھ سمجھ کر پڑھنے والوں کو اندھیرے میں نہیں چھوڑا گیا۔

ہمیں اب تک اِس کے دو بھاگ ملے ہیں پر آگے کچھ بھاگ اور نکلنے والے ہیں۔ ایک کا نام ہوگا' اِس دنیا کے عجائب گھر' دوسری کتاب ہوگی' نکھ سے شکھ تک' اور تیسری ہوگی' یم دوت کے خلاف سنگھرش۔

انوواد میں انوواد کی برائی بہت ہی کم ہے۔ کوئی اِسے انوواد نہیں کہہ سکتا۔ ہر طرح مول پستک سی جنچتی ہے۔ مول پستک ہمارے سامنے ہوتی تو ہم یہ بھی کہہ سکتے کہ انوواد جیوں کا تیوں ہوا ہے یا نہیں۔ جگہ جگہ چتروں نے اِس کتاب کی اُپیوگتا اور بڑھا دی ہے۔

اِس کتاب میں ایک کمی ہے۔ ٹائپ اِتنا چھوٹا ہے مانو وہ بچوں کے لئے نہ لکھی جاکر ودوانوں کے لئے لکھی گئی ہے۔

ہندی جانکار کسی کو بھی اِس کتاب کے بغیر نہیں رہنا چاہئے۔ —بھ۔

کھنڈہروں کا ویبھو

لیکھک—منی کانتی ساگر؛ دام—چھ روپیہ۔

بھارتیہ گیان پیٹھ کاشی نے 436 صفحے کی یہ کتاب یہ کہہ کر نکالی ہے کہ اُس کے چھ روپیہ دام ہی لاگت سے دو روپیہ کم ہیں۔ نہ جانے کس کس کام پر اِس کتاب کے تیار کرنے پر خرچ پڑا ہوگا۔ کھنڈہروں اور کھنڈت مورتیوں کے اِس میں چتر بھی کافی ہیں۔ اُن لوگوں کے لئے سچ مچ یہ بڑے کام کی کتاب ہے جنہیں کھنڈہروں کو دیکھ کر رونا آجاتا ہے۔ کسی مورت کو کسی نے اپنے اوزار تیز کرنے کے کام میں لے رکھا ہے' اِسے دیکھ کر منی جی کو رونا آگیا۔ اس لئے نہیں کہ پتھر کی مورت میں جان تھی کیونکہ جان کے معاملے میں تو مورتی بنانے والوں کا یہ کہنا ہے کہ وہ نہ مرتی ہے' نہ کٹتی ہے' نہ جلتی ہے' نہ چھدتی ہے' نہ سوکھتی ہے وغیرہ۔ اور اسی کے آدھار پر اُن کا یہ بھی کہنا ہے کہ جن کی یہ مورتیاں ہیں وہ تپسیا میں اتنے لین ہوئے تھے کہ کسی پر بیلیں چڑھ گئی تھیں' کسی کو سیار کھانے لگے تو وہ ہلے ڈلے نہیں۔ اُنہیں دکھ اِس بات کا ہوا کہ ایک ایسی مورت پر اوزار تیز کئے جا رہے تھے جو اتہاس کی چیز تھی' جو کسی عجائب گھر میں ہونی چاہئے تھی۔

سچ مچ کتاب بڑے کام کی ہے۔ ہندی میں ایسی کتاب کم ہی دیکھنے کو ملتی ہے۔ اس وشے کو ہندی والوں نے ابھی چھیڑا ہی نہیں ہے۔ —بھ۔

हमारी राय / ہماری رائے

स्वामी सत्यानन्द

26 जुलाई सन 1953 को सेवापुरी आश्रम बनारस में स्वामी सत्यानन्द जी का शरीर छूट गया. स्वामी जी देश की आज़ादी के संग्राम के पुराने और तपे हुए सन्यासी थे, विद्वान थे, महात्मा गांधी के सच्चे भक्त थे और उनके सिद्धान्तों पर डट कर अमल करने वाले. किसी ज़माने में जब उनका नाम पंडित बलदेव चोबे था वह लाहौर के नये नेशनल कालेज में प्रोफ़ेसर थे. लाला लाजपत राय की पीपुल्स सोसाइटी के वह एक ख़ास मेम्बर थे. अरसे से उन्होंने अपना जीवन हिन्दू मुसलिम एकता और हरिजन उद्धार के लिये अर्पन कर रखा था. सन '47-'48 में जब मैं दिल्ली में था पंजाब के कुछ शहरों में ख़ास कर अम्बाला के कुछ हिस्सों में हिन्दू, मुसलिम, सिख वैमनस्य पूरे ज़ोरों पर था. किसी एक ऐसे आदमी की ज़रूरत थी जो वहां जा कर उस आग को ठंडा कर सके और इस तरह के रचनात्मक काम वहां जारी कर सके जिनसे आगे को प्रेम बढ़े. पंडित जवाहरलाल नेहरू से सलाह करके मैंने स्वामी जी को तार दिया, वह फ़ौरन दिल्ली पहुंच गए. उस ज़माने में वह आज़मगढ़ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रेसीडेन्ट भी थे और उन्होंने दूर पंजाब के इस काम को अपनी प्रेसीडेन्टी से ज़ियादा ज़रूरी समझा. अम्बाला पहुंच कर उन्होंने वह सुन्दर काम किया जिस की क़ीमत नहीं आंकी जा सकती. अम्बाला में उनका रचनात्मक काम आज उनके बाद भी जारी है और उम्मीद है जारी रहेगा. हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी के वह ख़ास प्रेमी और हमदर्द थे. जिस तरह हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी को उनका प्रेम और उनकी मदद हासिल थी, उसी तरह स्वामी सत्यानन्द जी के क़ायम किये हुए हरिजन गुरुकुल 'दोहरी घाट' ज़िला आज़मगढ़ की स्थापना में मेरा भी तुच्छ हाथ था. हरिजन गुरुकुल उनके जीवन की एक ख़ास चीज़ है. इस प्रान्त, बल्कि भारत की रचनात्मक काम की लगभग सब कोशिशों और संस्थाओं से स्वामी

سوامی ستیا نند

26 جولائی سن '53 کو سیواپری آشرم بنارس میں سوامی ستیا نند جی کا شریر چھوٹ گیا ۔ سوامی جی دیش کی آزادی کے سنگرام کے پرانے اور تپے ہوئے سنیاسی تھے' ودوان تھے' مہاتما گاندھی کے سچے بھکت تھے اور اُن کے سدھانتوں پر ڈٹ کر عمل کرنے والے ۔ کسی زمانے میں جب اُن کا نام پنڈت بلدیو چوبے تھا وہ لاہور کے نئے نیشنل کالج میں پروفیسر تھے ۔ لالہ لاجپت رائے کی پیپلس سوسائٹی کے وہ ایک خاص ممبر تھے ۔ عرصہ سے اُنھوں نے اپنا جیون ہندو مسلم ایکتا اور ہریجن اُدھار کے لئے ارپن کر رکھا تھا ۔ سن '47-'48 میں جب میں دلی میں تھا پنجاب کے کچھ شہروں خاص کر امبالہ کے کچھ حصوں میں ہندو' مسلم' سکھ ویمنسیہ پورے زوروں پر تھا ۔ کسی ایک ایسے آدمی کی ضرورت تھی جو وہاں جا کر اُس آگ کو ٹھنڈا کر سکے اور اس طرح کے رچناتمک کام وہاں جاری کر سکے جن سے آگے کو پریم بڑھے ۔ پنڈت جواہر لال نہرو سے صلاح کر کے میں نے سوامی جی کو تار دیا' وہ فوراً دلی پہونچ گئے ۔ اُس زمانہ میں وہ اعظم گڑھ ڈسٹرکٹ بورڈ کے پریسیڈینٹ بھی تھے پر اُنھوں نے دور پنجاب کے اِس کام کو اپنی پریسیڈنٹی سے زیادہ ضروری سمجھا۔ امبالہ پہونچکر اُنھوں نے وہ سندر کام کیا جس کی قیمت نہیں آنکی جاسکتی۔ امبالہ میں اُن کا رچناتمک کام آج اُن کے بعد بھی جاری ہے اور اُمید ہے جاری رہیگا۔ ہندستانی کلچر سوسائٹی کے وہ خاص پریمی اور ہمدرد تھے ۔ جس طرح ہندستانی کلچر سوسائٹی کو اُن کا پریم اور اُن کی مدد حاصل تھی اُسی طرح سوامی ستیانند جی کے قائم کئے ہوئے ہریجن گروکل 'دوہری گھاٹ' ضلع اعظم گڈھ کی استھاپنا میں میرا بھی تچھ ہاتھ تھا۔ ہریجن گروکل اُن کے جیون کی ایک خاص چیز ہے۔ اِس پرانت' بلکہ بھارت کی رچناتمک کام کی لگ بھگ سب کوششوں اور سنستھاؤں سے سوامی

सत्यानन्द जी का कुछ न कुछ सम्बन्ध था. स्वामी जी के जाने से देश का एक महान, सच्चा, निस्वार्थ और बेलाग सेवक हमारे बीच से उठ गया. मृत्यु के समय उनकी आयु केवल 56 बरस की थी. भगवान उनकी आत्मा का कल्यान करे. उनके सम्बन्धियों और हज़ारों साथियों को शान्ति दे और इस संकट के समय में इस देश की सेवा के मैदान में उनकी कमी को पूरा करें.

15. 8. '53. —सुन्दरलाल

विदेशी मिशनरी

धार्मिक आज़ादी के सिलसिले में हमारे देश के विधान की दफ़ा 25 में कहा गया है कि—"सब लोग अन्तरात्मा (ज़मीर) की आज़ादी के, और आज़ादी के साथ अपने धर्म को मानने, उस पर अमल करने और उसका प्रचार करने के अधिकार के बराबर के हक़दार हैं." साथ ही दफ़ा 26 कहती है :—

"जन व्यवस्था, सदाचार और तन्दरुस्ती का ध्यान रखते हुए, हर मज़हबी फ़िरक़े को और उसकी हर टुकड़ी को अधिकार होगा कि—

(ए) धर्म और ख़ैरात के मतलबों के लिये संस्थाएं क़ायम करे और चलाए;

(बी) धर्म के मामलों में अपने कामों का आप प्रबन्ध करें;

(सी) चल और अचल जायदाद की मालिक हो और इस तरह की जायदाद हासिल करे; और

(डी) क़ानून के अनुसार इस तरह की जायदाद का प्रबन्ध करे."

विधान के ये सब अधिकार भारत के सब शहरियों के लिये हैं चाहे वे हिन्दू, मुसलिम, ईसाई या किसी भी धर्म के मानने वाले हों. विदेशियों के लिये हर देश में कुछ न कुछ रोक थाम और कुछ अलग क़ानून होते हैं. फिर भी भारत के अन्दर विदेशी मिशनरी ईसाई धर्म प्रचार बे रोक टोक करते रहे हैं और कर रहे हैं. वैसे तो अंगरेज़ी राज में उन्होंने अपनी जड़ें गहरी बना ली थीं और धर्म की आड़ में देश के समाजी, तालीमी राज काजी और कलचरी जीवन पर काफ़ी हावी हो गये थे. उन्हें अंगरेज़ी हकूमत का पूरा सहारा था. लेकिन हाल में इन विदेशी मिशनरियों के ग़लत कारनामे और साज़िशें हद के इतना ज़ियादा बाहर हो गये कि पार्लियामेन्ट के पिछले अप्रैल के इजलास में, हमारे होम मिनिस्टर डाक्टर काटजू ने उन्हें आगाह किया कि अगर उन्होंने एहतियात न बरती तो उन्हें इस मुल्क के

ستیانند جی کا کچھ نہ کچھ سمبندھ تھا۔ سوامی جی کے جانے سے دیش کا ایک مہان، سچا، نسوارتھ اور بےلاگ سیوک ہمارے بیچ سے اُٹھ گیا۔ مرتیو کے سمے اُن کی آیو کیول 56 برس کی تھی۔ بھگوان اُن کی آتما کا کلیان کرے۔ اُن کے سمبندھیوں اور ہزاروں ساتھیوں کو شانتی دے اور اِس سنکٹ کے سمے میں اِس دیش کی سیوا کے میدان میں اُن کی کمی کو پورا کریں۔

15 . 8 . '53 —سندرلال

ودیشی مشنری

دھارمک آزادی کے سلسلے میں ہمارے دیش کے ودھان کی دفعہ 25 میں کہا گیا ہے کہ—"سب لوگ انترآتما (ضمیر) کی آزادی کے، اور آزادی کے ساتھ اپنے دھرم کو ماننے، اُس پر عمل کرنے اور اُس کا پرچار کرنے کے ادھیکار کے برابر کے حق دار ہیں۔" ساتھ ہی دفعہ 26 کہتی ہے :—

"جن ویوستھا، سداچار اور تندرستی کا دھیان رکھتے ہوئے ہر مذہبی فرقے کو اور اُسکی ہر ٹکڑی کو ادھیکار ہوگا کہ—

(اے) دھرم اور خیرات کے مطلبوں کے لئے سنستھاؤں قائم کرے اور چلائے؛

(بی) دھرم کے معاملوں میں اپنے کاموں کا آپ پربندھ کریں؛

(سی) چل اور اچل جائداد کی مالک ہو اور اِس طرح کی جائداد حاصل کرے؛ اور

(ڈی) قانون کے انوسار اِس طرح کی جائداد کا پربندھ کرے۔"

ودھان کے یہ سب ادھیکار بھارت کے سب شہریوں کے لئے ہیں چاہے وہ ہندو، مسلم، عیسائی یا کسی بھی دھرم کے ماننے والے ہوں۔ ودیشیوں کے لئے ہر دیش میں کچھ نہ کچھ روک تھام اور کچھ الگ قانون ہوتے ہیں۔ پھر بھی بھارت کے اندر ودیشی مشنری عیسائی دھرم پرچار بے روک ٹوک کرتے رہے ہیں اور کر رہے ہیں۔ ویسے تو انگریزی راج میں اُنہوں نے اپنی جڑیں گہری بنا لی تھیں اور دھرم کی آڑ میں دیش کے سماجی، تعلیمی، راج کاجی اور کلچری جیون پر کافی حاوی ہو گئے تھے۔ اُنہیں انگریزی حکومت کا پورا سہارا تھا۔ لیکن حال میں اِن ودیشی مشنریوں کے غلط کارنامے اور سازشیں حد کے اتنا باہر ہوگئے کہ پارلیامنٹ کے پچھلے اپریل کے اجلاس میں، ہمارے ہوم منسٹر ڈاکٹر کاٹجو نے اُنہیں آگاہ کیا کہ اگر اُنہوں نے احتیاط نہ برتی تو اُنہیں اِس ملک کے

अन्दर अपना काम बन्द कर देना पड़ेगा. इस पर ईसाई धर्म के कई विदेशी ठेकेदार आग बबूला हो गये. उन में से कुछ बड़ों बड़ों ने मिल कर एक बयान दिया कि हम लोगों ने हिन्दुस्तान की जो सेवाएं की हैं उनके लिये हिन्दुस्तान वालों को हमारा अहसान मन्द होना चाहिये, वग़ैरा. इसके बाद भी आये दिन यह विदेशी पादरी अख़बारों में, बयानों या स्पीचों से अपना गुस्सा ज़ाहिर करते रहते हैं. हाल ही में पटना से कार्डिनल गरेसियस का बयान निकला है (जो अभी आस्ट्रेलिया से लौटे हैं) कि "विदेशी ईसाई पादरियों ने जो कुछ किया है उस से आंखें मोड़ना और उनके ख़िलाफ़ भावना पैदा करना ना शुकरापन होगा."

ईसाई पादरियों की नेक और सच्ची सेवाओं की हम क़द्र करते हैं लेकिन उनके ग़लत कामों से और यहां की राजकाजी, समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी पर, सीधे या ना सीधे, असर डालने से भी आंखें नहीं मोड़ी जा सकतीं. हाल की घटनाएं साफ़ बता रही हैं कि धर्म की आड़ लेकर यह विदेशी मिशनरी अपने अपने देशों की सरकारों के साम्राज शाही एजेन्ट बन कर हिन्दुस्तान के सच्चे हित को ज़बरदस्त नुक़सान पहुंचा रहे हैं.

हिन्दुस्तान के अन्दर धार्मिक आज़ादी हमेशा से रही है. हर आदमी को अपने धर्म पर चलने और उसका प्रचार करने की यहां सदा इजाज़त रही. और न बाहर से ही किसी आदमी को धर्म फैलाने से रोका गया. वैदिक धर्म आया और यहां की मिट्टी में घुल मिल गया. उनके कई हज़ार साल बाद इसलाम आया और वह भी ऐसा घुल मिल गया कि स्वामी रामतीर्थ ने कहा है :

चीस्त हिन्दू या मुसलमां, दो कूज़े थक कूज़े गर,

गरचे कूज़ा दो शुमार आयद, व लेकिन गिल चकेस्त.

इसके बाद यूरोप के लोग पहले व्यापारी बन कर आए और अठारवीं सदी के आख़िर तक यहां के हाकिम या राजा बन बैठे. हिन्दुस्तान के ये अंगरेज़ मालिक ईसाई थे जिसकी वजह से उन्होंने अपने धर्म के विदेशी पादरियों को हिन्दुस्तान में ईसाई धर्म की प्रचार की सारी सुविधाएं दीं. लेकिन यह विदेशी मिशनरी आम तौर पर हिन्दुस्तान की मिट्टी में अपने को घुला मिला न सके और आम जनता से अलग अपने ही ढंग की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे. नतीजा यह हुआ कि जिन लोगों को उन्होंने ईसाई बनाया उनमें से ज़ियादातर लोगों ने अपने को देश की जनता से अलग रखा और रहन सहन और ज़बान वग़ैरह में विदेशी चाल को अपनाया. इस देश के ईसाई भाइयों को इस से काफ़ी नुक़सान पहुंचा. हमें ख़ुशी है कि यह हालत बदली अब और भी तेज़ी से बदलती जा रही है. यह देश देश के ईसाई

اندر اپنا کام بند کر دینا پڑیگا . اِس پر عیسائی دھرم کے کئی ودیشی ٹھیکیدار آگ ببولہ ہوگئے . اُن میں سے کچھ بڑوں بڑوں نے ملکر ایک بیان دیا کہ ہم لوگوں نے ہندوستان کی جو سیوائیں کی ہیں اُن کے لئے ہندوستان والوں کو ہمارا احسان مند ہونا چاہئے' وغیرہ . اِس کے بعد بھی آئے دن یہ ودیشی پادری اخباروں میں' بیانوں یا اسپیچوں سے اپنا غصہ ظاہر کرتے رہتے ہیں . حال ہی میں پٹنہ سے کارڈنل گریسیس کا بیان نکلا ہے (جو ابھی آسٹریلیا سے لوٹے ہیں) کہ " ودیشی عیسائی پادریوں نے جو کچھ کیا ہے اُس سے آنکھیں موڑنا اور اُن کے خلاف بھاونا پیدا کرنا ناشکرا پن ہوگا ."

عیسائی پادریوں کی نیک اور سچی سیواؤں کی ہم قدر کرتے ہیں لیکن اُن کے غلط کاموں سے اور یہاں کی راج کاجی' سماجی اور آرتھک زندگی پر' سیدھے یا نہ سیدھے اثر ڈالنے سے بھی آنکھیں نہیں موڑی جاسکتیں . حال کی گھٹنائیں صاف بتا رہی ہیں کہ دھرم کی آڑ لے کر یہ ودیشی مشنری اپنے اپنے دیشوں کی سرکاروں کے سامراج شاہی ایجنٹ بنکر ہندوستان کے سچے ہت کو زبردست نقصان پہنچا رہے ہیں .

ہندوستان کے اندر دھارمک آزادی ہمیشہ سے رہی ہے . ہر آدمی کو اپنے دھرم پر چلنے اور اُس کا پرچار کرنے کی یہاں سدا اِجازت رہی . اور نہ باہر کے ہی کسی آدمی کو دھرم پھیلانے سے روکا گیا . ویدک دھرم آیا اور یہاں کی متی میں گھل مل گیا . اُن کے کئی ہزار سال بعد اسلام آیا اور وہ بھی ایسا گھل مل گیا کہ سوامی رام تیرتھ نے کہا ہے :

چیست ہندو یا مسلماں' دو کوزہ تھک کوزے گر'

گرچے کوزا دو شمار آید' و لیکن گل چیست .

اِس کے بعد یورپ کے لوگ پہلے بیوپاری بنکر آئے اور پھر اٹھارھویں صدی کے آخیر تک یہاں کے حاکم یا راجا بن بیٹھے . ہندوستان کے انگریز مالک عیسائی تھے جس کی وجہ سے اُنھوں نے اپنے دھرم کے ودیشی پادریوں کو ہندوستان میں عیسائی دھرم پرچار کی ساری' سودھائیں دیں . لیکن یہ ودیشی مشنری عام طور پر ہندوستان کی متی میں اپنے کو گھلا ملا نہ سکے . اور جنتا سے الگ اپنے ہی ڈھنگ کی زندگی گذراتے رہے . نتیجہ یہ ہوا کہ جن لوگوں کو اُنھوں نے عیسائی بنایا اُن میں سے زیادہ تر لوگوں نے اپنے کو دیش کی جنتا سے الگ رکھا اور رہن سہن اور زبان وغیرہ میں ودیشی چال کو اپنایا . اِس دیش کے عیسائی بھائیوں کو اس سے کافی نقصان پہونچا . ہمیں خوشی ہے کہ یہ حالت بدلی اور اب اور بھی تیزی سے بدلتی جا رہی ہے . یہ دیش دیش کے عیسائی

भाइयों का उतना ही अपना है जितना किसी भी हिन्दू या मुसलमान का. हमें इस बात की भी बिल्कुल चिन्ता नहीं कि इस देश की अधिकतर या सारी आबादी ,नाम के लिये हिन्दू धर्म की मानने वाली हो या मुसलिम धर्म की या ईसाई धर्म की. हम यहां केवल कुछ विदेशी पादरियों की बात कर रहे हैं.

अंगरेज़ी दौर में विदेशी मिशनरियों को सभी सहूलियतें हासिल थीं. उनके काम का दायरा भी बहुत फैला हुआ था—तालीम, सिहत, दवा दारू, यतीम खाने, खेल कूद, मनोरंजन वग़ैरा. उनमें से कुछ ने ऐसे ऐसे सख्त और ज़रूरी काम भी उठाये जिन से हम हिन्दुस्तानी आम तौर से बचते थे--ख़ास कर कोढ़ियों की और छूत के दूसरे मरीज़ों की सेवा, अन्धों की तीमारदारी वग़ैरा. यह मिशनरी कई देशों के थे जैसे इंगलैंड, इटली, पुर्तगाल, स्पेन, जर्मनी, फ्रांस और अमरीका. इलाहाबाद और लखनऊ के क्रिस्चियन कालिज, नैनी का खेती कालिज, लखनऊ के लड़कियों का इसाबेला थोबर्न कालिज वग़ैरा अमरीकी मिशन के हैं और गोरखपुर का सेन्ट ऐन्डरूज़ कालिज, कानपूर का क्राइस्ट चर्च कालिज या आगरे का सेन्ट जान कालिज अंगरेज़ी मिशन के. क़ुदरती तौर पर, अंगरेज़ी मिशनरियों की तादाद दूसरों के मुक़ाबले ज़ियादा रही.

अंगरेज़ी राज के हट जाने के बाद भी विदेशी मिशनों के अधिकार और आज़ादी पहले जैसे ही बनी रही. उन का काम धाम बदस्तूर चलता रहा, यही नहीं, उस में इतनी तरक्क़ी हुई कि अप्रैल 1950 से दिसम्बर 1952 तक हिन्दुस्तान में 1028 नये अमरीकन पादरी आये, 668 इटली के, 130 स्पेन के और 988 दूसरे 21 देशों के. अंगरेज़ मिशनरियों की तादाद कितने से कितनी इस अरसे में बढ़ी यह सहज मालूम भी नहीं हो सकता क्योंकि हमारे कामनवैल्थ में रहने के कारन अंगरेज़ लोग बिला किसी विसा या इजाज़त के आ जा सकते हैं.

इन विदेशी मिशनरियों को अपनी साज़िशों के लिये उपजाऊ ज़मीन हिन्दुस्तान के ग़ैर—उपजाऊ हिस्सों में--पहाड़ियों और पठारों में--मिली. पंजाब में कांगड़ा से लेकर बंगाल में दार्जीलिंग और आसाम में नागा पहाड़ियों तक, पच्छिमी घाट के ढालों पर; सतपुड़ा और नीलगिरी पहाड़ों पर और छोटा नागपुर के पठार पर यह विदेशी मिशनरी घने आबाद हैं. इसके अलावा उनकी बस्तियां ट्रावनकोर कोचीन में, हिन्दुस्तान की उत्तर पूर्वी सरहद पर और मध्य प्रदेश और पच्छिमी भारत के बनवासियों के बीच हैं. दक्खिन के रामनाद और तंजोर ज़िलों में भी वह कसरत से हैं. यह एक खुली बात है कि हमारे देश के चाय और काफ़ी के ज़ियादातर बग़ीचों के मालिक अभी तक अंगरेज़ हैं.

بھائیوں کا اُتنا ہی اپنا ہے جتنا کسی بھی ہندو یا مسلمان کا. ہمیں اِس بات کی بھی بالکل چنتا نہیں کہ اِس دیش کی ادھک تر یا ساری آبادی نام کے لئیے ہندو دھرم کی ماننے والی ہو یا مسلم دھرم کی یا عیسائی دھرم کی۔ ہم یہاں کیول کچھ ودیشی پادریوں کی بات کر رہے ہیں۔

انگریزی دور میں ودیشی مشنریوں کو سبھی سہولیتیں حاصل تھیں۔ اُن کے کام کا دائرہ بھی بہت پھیلا ہوا تھا— تعلیم، صحت، دوا دارو، یتیم خانے، کھیل کود، منورنجن وغیرہ۔ اِن میں سے کچھ نے ایسے ایسے سخت اور ضروری کام بھی اُٹھائے جن سے ہم ہندستانی عام طور سے بچتے تھے—خاصکر کوڑھیوں کی اور چھوت کے دوسرے مریضوں کی سیوا، اندھوں کی تیمارداری وغیرہ۔ یہ مشنری کئی دیشوں کے تھے جیسے اِنگلینڈ، اٹلی، پرتگال، اسپین، جرمنی، فرانس اور امریکہ۔ الہ آباد اور لکھنؤ کے کرسچین کالج، نینی کا کھیتی کالج، لکھنؤ میں لڑکیوں کا اِسابیلا تھوبرن کالج وغیرہ امریکی مشن کے ہیں اور گورکھپور کا سینٹ اینڈروز کالج، کانپور کا کرائسٹ چرچ کالج یا آگرہ کا سینٹ جان کالج انگریزی مشن کے۔ قدرتی طور پر، انگریزی مشنریوں کی تعداد دوسروں کے مقابلہ زیادہ رہی۔

انگریزی راج کے ہٹ جانے کے بھی بعد ودیشی مشنوں کے ادھیکار اور آزادی پہلے جیسے ہی بنی رہی۔ اُن کا کام دھام بدستور چلتا رہا۔ یہی نہیں، اُس میں اِتنی ترقی ہوئی کہ اپریل 1950 سے دسمبر 1952 تک ہندستان میں 1028 نئے امریکن پادری آئے، 668 اِٹلی کے، 130 اِسپین کے اور 988 دوسرے ودیشوں کے۔ انگریز مشنریوں کی تعداد کتنے سے کتنی اِس عرصہ میں بڑھی یہ سہج معلوم بھی نہیں ہو سکتا کیونکہ ہمارے کامن ویلتھ میں رہنے کے کارن انگریز لوگ ہندستان میں کسی وسا یا اجازت کے آ جا سکتے ہیں۔

اِن ودیشی مشنریوں کو اپنی سازشوں کے لئیے اُپجاؤ زمین ہندستان کے غیر اُپجاؤ حصوں میں—پہاڑیوں اور پٹھاروں میں ملی۔ پنجاب میں کانگڑا سے لے کر بنگال میں دارجلنگ اور آسام میں ناگا پہاڑیوں تک، پچھمی گھاٹ کے ڈھالوں پر ست پڑا اور نیلگری پہاڑوں پر اور چھوٹا ناگپور کے پٹھار پر یہ ودیشی مشنری گھنے آباد ہیں۔ اِس کے علاوہ اُن کی بستیاں تراون کور کوچین میں، ہندستان کی اُتر پوربی سرحد پر اور مدھیہ پردیش اور پچھمی بھارت کے بن واسیوں کے بیچ ہیں۔ دکھن کے رام ناد اور تنجور ضلعوں میں بھی وہ کسرت سے ہیں۔ یہ ایک کھلی بات ہے کہ ہمارے دیش کے چائے اور کافی کے زیادہ تر بغیچوں کے مالک ابھی تک انگریز ہیں۔

यह भी सब को मालूम है कि उन बग़ीचों में और आस पास के इलाक़ों में अंगरेज़ व्योपारी और विदेशी मिशनरी मिल कर मन माना राज करते हैं. इन ही लोगों के और ख़ास कर अमरीकी पादरियों के असर से नागा पहाड़ियों और उत्तर पूर्व की सरहद के दूसरे हिस्सों में रहने वाले नागा क़ौम के लोगों ने भारत से अलग होने की आवाज़ तक उठाई. ख़ुश क़िस्मती से वह ग़लत तहरीक बन्द हो गई. पर इन इलाक़ों में जो लोग गये हैं उनका कहना है कि अमरीकी मिशनरियों ने वहां एक अपना साम्राज हो क़ायम कर रखा है जहां दिल्ली सरकार की बहुत कम पूछ है. कुछ अर्सा पहले जब हमारे प्रधान मंत्री आसाम बरमा की सरहद पर गये तो हिन्द सरकार को महसूस हुआ कि हालत इतनी बिगड़ गई है कि अगर मुनासिब रोक थाम न की गई तो क़ाबू से बाहर हो जायगी. इसी का नतीजा है कि होम मिनिस्टर ने पार्लियामेन्ट में बयान दे कर विदेशी मिशनरियों को ख़बरदार किया जिस पर सारा एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ.

प्रोटेस्टेन्ट इवैनजिलिकल कम्यूनिज़्म (Protestant Evangelical Communism) के विदेशी ईसाई नेताओं ने हिन्द सरकार के विदेशी पादरियों पर कुछ पाबन्दियां लगाने पर तीन एतराज़ किये हैं:

(i) यह पाबन्दियां हिन्दुस्तान के रीतरिवाज के अनुकूल नहीं हैं क्योंकि गौतम बुद्ध ने ख़ुद ही अपने प्रचारक दूसरे देशों को भेजे थे.

(ii) इनके अन्दर "भौतिक वाद" (नास्तिकता) की गन्ध है जो हिन्दुस्तान की आन और शान के ख़िलाफ़ है.

(iii) अगर हिन्द सरकार अमरीकी पादरियों पर पाबन्दियां लगाएगी तो अमरीकी सरकार को भी अमरीका में चलने वाले रामकृष्ण मिशन के बारे में सोचना पड़ेगा.

ज़ाहिर है कि यह तीनों दलीलें कितनी लचर हैं. इन अमरीकी मिशनरियों में से कितनों में वह दिल है या वह भावना है जिसके मातहत बौद्ध भिक्षु दुनिया भर में काम करते थे ? इनके मिशन तो राजकाजी और व्योपारी अड्डियां जैसे हैं. भौतिक वाद के ख़िलाफ़ उनका आवाज़ उठाना उलटे चोर का कोतवाल को डांटना जैसा है ! अगर वह सच्चे हैं तो उनका पहला फ़र्ज़ यह है कि आस्तिकता का सबक़ अपने देशवासियों और अपनी सरकारों को जा कर सिखलायें. इससे कौन इन्कार करेगा कि विदेशी मिशन के बिरले ही भाई बहनों ने हिन्दुस्तान में सच्चे ईसाई की ज़िन्दगी—यानी हिन्दुस्तान के ग़रीब से ग़रीब लोगों के जीवन में घुल मिल कर रहने की ज़िन्दगी बिताई है.

یہ بھی سب کو معلوم ہے کہ اِن بغیچوں میں اور آس پاس کے علاقوں میں انگریز بیوپاری اور ودیشی مشنری مل کر من مانا راج کرتے ہیں. اِن ہی لوگوں کے اور خاص کر امریکی پادریوں کے اثر سے ناگا پہاڑیوں اور اُتر پورب کی سرحد کے دوسرے حصوں میں رہنے والے ناگا قوم کے لوگوں نے بھارت سے الگ ہونے کی آواز تک اُٹھائی . خوش قسمتی سے وہ غلط تحریک بند ہوگئی . پر اِن علاقوں میں جو لوگ گئے ہیں اُن کا کہنا ہے کہ امریکی مشنریوں نے وہاں ایک اپنا سامراج ہی قائم کررکھا ہے جہاں دلی سرکار کی بہت کم پوچھ ہے . کچھ عرصہ پہلے جب ہمارے پردھان منتری آسام برما کی سرحد پر گئے تو ہند سرکار کو محسوس ہوا کہ حالت اِتنی بگڑ گئی ہے کہ اگر مناسب روک تھام نہ کی گئی تو قابو سے باہر ہوجائیگی . اِسی کا نتیجہ ہے کہ ہوم منسٹر نے پارلیمنٹ میں بیان دے کر ودیشی مشنریوں کو خبردار کیا جس پر سارا ایک طوفان اُٹھ کھڑا ہوا .

پروٹسٹنٹ اوینجلیکل کمیونزم (Protestant Evangelical Communism) کے ودیشی عیسائی نیتاؤں نے ہند سرکار کے ودیشی پادریوں پر کچھ پابندیاں لگانے پر تین اعتراض کئے ہیں :

(i) یہ پابندیاں ہندستان کے ریت رواج کے انوکول نہیں ہیں کیونکہ گوتم بدھ نے خود ہی اپنے پرچارک دوسرے دیشوں کو بھیجے تھے .

(ii) اِن کے اندر "بھوتک واد" (ناستکتا) کی گندھ ہے جو ہندستان کی آن اور شان کے خلاف ہے .

(iii) اگر ہند سرکار امریکی پادریوں پر پابندیاں لگائے گی تو امریکی سرکار کو بھی امریکہ میں چلنے والے رام کرشن مشن کے بارے میں سوچنا پڑیگا .

ظاہر ہے کہ یہ تینوں دلیلیں کتنی لچر ہیں . اِن امریکی مشنریوں میں سے کتنوں میں وہ دل ہے یا وہ بھاؤنا جس کے ماتحت بودھ بھکشو دنیا بھر میں کام کرتے تھے ؟ اِن کے مشن تو راج کاجی اور بیوپاری اڈیاں جیسے ہیں. بھوتک واد کے خلاف اُن کا آواز اُٹھانا اُلٹے چور کا کوتوال کو ڈانٹنا جیسا ہے ! اگر وہ سچے ہیں تو اُن کا پہلا فرض یہ ہے کہ آستکتا کا سبق اپنے دیش واسیوں اور اپنی سرکاروں کو جاکر سکھلائیں . اِس سے کون اِنکار کریگا کہ ودیشی مشن کے بِرلے ہی بھائی بہنوں نے ہندستان میں سچے عیسائی کی زندگی— یعنی ہندستان کے غریب سے غریب لوگوں کے جیون میں گھل مل کر رہنے کی زندگی بتائی ہے .

स्वर्गीय दीन बन्धु ऐंडरूज़ जैसे इक्का दुक्का ने ऐसा किया उन्हें हिन्दुस्तान आज भी प्रेम और आदर के साथ याद करता है. वह तो ख़ुद अपना जीवन हज़रत ईसा के आदर्शों के अनुसार ढालने में इतने लगे हुए थे कि उन्हें दूसरों के धर्मों की नाम पट्टी बदलने बदलवाने की फ़ुरसत कहां.

प्रोटेस्टेन्ट कम्यूनिज़्म वालों की तीसरी दलील से असलियत और भी खुल जाती है. राम कृष्न मिशन वालों से अपने काम की मिसाल दे कर धमकी देना भेड़िये का मेमने को दोशी ठहराना है. राम कृष्न वालों ने कभी किसी ईसाई को हिन्दू नहीं बनाया. उनका सारा काम इन्सानी सेवा है. उनका पेशा धर्म बदलवाना नहीं. और कौन कह सकता है कि यह अमरीकी गिरजा वाले किसी आड़े वक़्त पर हिन्दुस्तान में अपने धर्म के भाईयों पर क्या जा बेजा दबाव न डालें? इटली के पिछले चुनाव में ही न्यूयार्क के कार्डिनल स्पेल मैन ने इटली में रहने वाले अपने अमरीकी कैथोलिक भाइयों को साफ़ हिदायत भेजी थी कि वह अपने रिश्तेदारों को मजबूर करें कि वह समाजवादी या कम्यूनिस्ट पार्टियों को वोट न दे कर पूंजीवाद पार्टियों को ही वोट दें.

हमारे अमरीकी मिशनरी भाई दूसरों का इलाज करने चले हैं. अपने अन्दर का रोग नहीं देखते. अमरीका ने 33 महीने के अन्दर जो 1029 मिशनरी हमारे देश में भेजे उन मिशनरियों में और हिन्द अमरीकी समझौते (या ग़ुलामी के पट्टे?) के मातहत हिन्दुस्तान में आने वाले अमरीकनों में क्या फ़रक़ है? यह फ़ोर्ड फ़ाउन्डेशन, राकफ़ैलर फ़ाउन्डेशन और तरह तरह के वज़ीफ़े वग़ैरा क्या हैं? यह सब ऐसे साधन हैं जिनकी बदौलत हिन्दुस्तान के वसीलों और यहां के बाज़ारों को चूसा जाय ताकि अमरीकी माल, अमरीकी साहित्य, अमरीकी कला या, अमरीकी हॉलीवुड की फ़िल्मों और नंगी तसवीरों और अमरीकी रहन सहन के लिये हिन्दुस्तान में खुली छूट मिल जाय? विदेशी मिशनरी हों या ऐक्सपर्ट, हमारे लिये इन में फ़र्क़ नाम का ही है, दोनों अपने अगोचर अमरीकी साम्राज के चहेते हैं. यह अमरीकी मिशनरी सच्चे होते तो इन्हें काफ़ी काम कोरिया और जापान में पड़ा है जहां काम वासना में पागल अमरीकी सिपाही ने अपनी ख़ुराफ़ातों से अपने देश को काफ़ी बदनाम कर रखा है.

यहां हमें उस गश्ती चिट्ठी की याद आती है जो महात्मा गांधी के "यंग इन्डिया" अख़बार के सम्पादक की हैसियत से डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा ने, नमक सत्याग्रह के दौरान में हिन्दुस्तान के बड़े बड़े ईसाई व पादरियों को भेजी थी. कुमारप्पा जी ने वह चिट्ठी कलकत्ते के लार्ड बिशप और हिन्दुस्तान के मेट्रोपालिटन को भी भेजी और यह उम्मीद ज़ाहिर की कि "भारत के अन्दर हर

سورگیہ دین بندھو اینڈروز جیسے اِکا دکا نے ایسا کیا اُنہیں ہندستان آج بھی پریم اور آدر کے ساتھ یاد کرتا ہے. وہ تو خود اپنا جیون حضرت عیسیٰ کے آدرشوں کے انوسار ڈھالنے میں اِتنے لگے ہوئے تھے کہ اُنہیں دوسروں کے دھرموں کی نام پٹی بدلنے بدلوانے کی فرصت کہاں.

پروٹسٹنٹ کمیونزم والوں کی تیسری دلیل سے اصلیت اور بھی کھل جاتی ہے. رام کرشن مشن والوں سے اپنے کام کی مثال دے کر دھمکی دینا بھیڑیئے کا میمنے کو دوشی ٹھہرانا ہے. رام کرشن والوں نے کبھی کسی عیسائی کو ہندو نہیں بنایا. اُن کا سارا کام اِنسانی سیوا ہے. اُن کا پیشہ دھرم بدلوانا نہیں. اور کون کہہ سکتا ہے کہ یہ امریکی گرجا والے کسی آڑے وقت پر ہندستان میں اپنے دھرم کے بھائیوں پر کیا جابیجا دباؤ نہ ڈالیں؟ اِٹلی کے پچھلے چناؤ میں ہی نیویارک کے کارڈنل اسپل من نے اِٹلی میں رہنے والے اپنے امریکی کیتھولک بھائیوں کو صاف ہدایت بھیجی تھی کہ وہ اپنے رشتےداروں کو مجبور کریں کہ وہ سماجوادی یا کمیونسٹ پارٹیوں کو ووٹ نہ دیکر پونجی وادی پارٹیوں کو ہی ووٹ دیں!

ہمارے امریکی مشنری بھائی دوسروں کا علاج کرنے چلے ہیں. اپنے اندر کا روگ نہیں دیکھتے. امریکہ نے 33 مہینے کے اندر جو 1029 مشنری ہمارے دیش میں بھیجے اُن مشنریوں میں اور ہند امریکی سمجھوتے (یا غلامی کے پٹے؟) کے ماتحت ہندستان میں آنے والے امریکنوں میں کیا فرق ہے؟ یہ فورڈ فاونڈیشن، راک فیلر فاونڈیشن اور طرح طرح کے وظیفے وغیرہ کیا ہیں؟ یہ سب ایسے سادھن ہیں جنکی بدولت ہندستان کے وسیلوں اور یہاں کے بازاروں کو چوسا جائے تاکہ امریکی مال، امریکی ساہتیہ، امریکی کلا یا امریکی ہالی وڈ کی فلموں اور ننگی تصویروں اور امریکی رہن سہن کے لئے ہندستان میں کھلی چھوٹ مل جائے؟ ودیشی مشنری ہوں یا ایکسپرٹ ہمارے لئے اِن میں فرق نام کا ہی ہے. دونوں اپنے اگوچر امریکی سامراج کے چہیتے ہیں. یہ امریکی مشنری سچے ہوتے تو اِنہیں کافی کام کوریا اور جاپان میں پڑا ہے جہاں کام واسنا میں پاگل امریکی سپاہی نے اپنی خرافاتوں سے اپنے دیش کو کافی بدنام کر رکھا ہے.

یہاں ہمیں اُس گشتی چٹھی کی یاد آتی ہے جو مہاتما گاندھی کے "ینگ انڈیا" اخبار کے سمپادک کی حیثیت سے ڈاکٹر جے. سی. کماریپا نے نمک ستیہ گرہ کے دوران میں ہندستان کے بڑے بڑے عیسائی و پادریوں کو بھیجی تھی. کماریپا جی نے وہ چٹھی کلکتے کے لارڈ بشپ اور ہندستان کے میٹرو پالیٹن کو بھی بھیجی اور یہ اُمید ظاہر کی کہ "بھارت کے اندر ہر

ईसाई चाहे वह हिन्दुस्तानी हो या विदेशी, वह इस बात की पूरी कोशिश करेगा कि वह ऐसे रास्ते और तरीक़े ढूंढें जिनसे सरकार के ऊपर वह यह असर डाल सके कि "जन व्यवस्था यानी अमन को बनाये रखने के लिये' सरकार इन्सानियत से पेश आये." इस पर हमारे विदेशी लार्ड बिशप ने जवाब दिया कि "मैं आपके (डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा के) इस विचार से सहमत नहीं हूं कि ईसा मसीह के जीवन या उपदेशों से यह कहीं भी सबक़ मिलता है कि सत्याग्रह या सिविल नाफ़रमानी के काम किये जायं." इसलिये लार्ड बिशप के ख़याल से सरकार सत्याग्रह को दबाने, रोकने के लिये जो कुछ भी ज़ियादतियां करे वह ठीक हैं. पूरी कोशिश की गई कि हमारे ज़ियादातर हिन्दुस्तानी ईसाई भाई अंगरेज़ी राज से अपने को आज़ाद करने के क़ौमी आन्दोलन से अलग रखें.

हम अपने देश के ईसाई और ग़ैर ईसाई सब भाइयों का ध्यान राष्ट्र पिता गांधी जी के नीचे दिये हुए शब्दों की तरफ़ दिलाते हैं—

"बहुत नम्रता के साथ खोज, मनन और विचार करने के बाद और जितने आदमियों से मिल सकता था उनसे चर्चा करने के बाद मैं इस नतीजे पर अर्सा हुआ पहुंचा कि दुनिया के सब धर्म सच्चे हैं. और साथ ही सब में कुछ न कुछ कमियां भी हैं. इसलिये जितना प्यार या लगाव मुझे अपने हिन्दू धर्म से हो उतना ही दूसरे धर्मों से भी होना चाहिये. इसका सीधा मतलब यह है कि हम सबके साथ वैसे ही प्रेम करें जैसे अपने नातेदारों, बाल बच्चों से और उनके अन्दर हम कोई भेद भाव न करें. अगर हम हिन्दू हैं तो हम यह प्रार्थना नहीं करेंगे कि कोई ईसाई हिन्दू हो जाय, या अगर मुसलमान हैं तो यह कि कोई हिन्दू या ईसाई मुसलमान हो जाय और न हम मन ही मन यह प्रार्थना करेंगे कि लोग अपना धर्म बदल दें, बल्कि हमारी अन्तरात्मा से यही प्रार्थना निकलनी चाहिये कि अगर कोई हिन्दू है तो बेहतर हिन्दू बने, मुसलमान है तो बेहतर मुसलमान बने और ईसाई है तो बेहतर ईसाई बने."

हमारे देश में रहने और आने वाले विदेशी ईसाई भाई अगर "बेहतर ईसाई" बनने और वैसा व्यवहार करने से इन्कार करते हैं तो बड़ी नम्रता के साथ हमें कहना पड़ेगा कि उनके लिये हिन्दुस्तान में कोई जगह नहीं. अगर वह "बेहतर ईसाई" बनने और वैसा व्यवहार करने से इन्कार करते हैं तो उनको हम अपने अपने मुल्क की सरकारों का जासूस ही समझेंगे. और कौन हकूमत ऐसी है जो अपने मुल्क में परदेसी खुफ़ियों को बिला रोक टोक घूमने फिरने की इजाज़त दे? विदेशी ईसाई पादरियों से विनय के साथ हम कहना चाहते हैं कि

عیسائی' چاہے وہ ہندستانی ہو یا ویدیشی اِس بات کی پوری کوشش کریگا کہ وہ ایسے راستے اور طریقے ڈھونڈے جن سے سرکار کے اوپر وہ یہ اثر ڈال سکے کہ "جن ویوستھا یعنی امن کو بنائے رکھنے کے لئے' سرکار انسانیت سے پیش آئے." اِس پر ہمارے ودیشی لارڈ بشپ نے جواب دیا کہ "میں آپ کے (ڈاکٹر جے. سی. کماریپا کے) اِس وچار سے سہمت نہیں ہوں عیسیٰ مسیح کے جیون یا اُپدیشوں سے یہ کہیں بھی سبق ملتا ہے کہ ستیہ گرہ یا سول نافرمانی کے کام کئے جائیں." اِس لئے لارڈ بشپ کے خیال سے سرکار ستیہ گرہ کو دبانے' روکنے کے لئے جو کچھ بھی زیادتیاں کرے وہ ٹھیک ہیں. پوری کوشش کی گئی کہ ہمارے زیادہ‌تر ہندستان عیسائی بھائی انگریزی راج سے اپنے کو آزاد کرنے کے قومی آندولن سے الگ رکھیں.

ہم اپنے دیش کے عیسائی اور غیر عیسائی سب بھائیوں کا دھیان راشٹر پتا گاندھی جی کے نیچے دیئے ہوئے شبدوں کی طرف دلاتے ہیں.

"بہت نمرتا کے ساتھ کھوج' منن اور وچار کرنے کے بعد اور جتنے آدمیوں سے مل سکتا تھا اُن سے چرچا کرنے کے بعد میں اِس نتیجہ پر عرصہ ہوا پہنچا کہ دنیا کے سب دھرم سچے ہیں. اور ساتھ ہی سب میں کچھ نہ کچھ کمیاں بھی ہیں اِس لئے جتنا پیار یا لگاؤ مجھے اپنے ہندو دھرم سے ہو اُتنا ہی دوسرے دھرموں سے بھی ہونا چاہئے. اِس کا سیدھا مطلب یہ ہے کہ ہم سب کے ساتھ ویسے ہی پریم کریں جیسے اپنے ناتے‌داروں و بال بچوں سے اور ان کے اندر ہم کوئی بھید بھاؤ نہ کریں. اگر ہم ہندو ہیں تو ہم یہ پرارتھنا نہیں کرینگے کہ کوئی عیسائی ہندو ہوجائے' یا اگر مسلمان ہے تو یہ کہ کوئی ہندو یا عیسائی مسلمان ہوجائے اور نہ ہم من ہی من یہ پرارتھنا کرینگے کہ لوگ اپنا دھرم بدل دیں' بلکہ ہماری انتر آتما سے یہی پرارتھنا نکلنی چاہئے کہ اگر کوئی ہندو ہے تو بہتر ہندو بنے' مسلمان ہے تو بہتر مسلمان بنے اور عیسائی ہے تو بہتر عیسائی بنے."

ہمارے دیش میں رہنے اور آنے والے ودیشی عیسائی بھائی اگر "بہتر عیسائی" بنے اور ویسا ویوہار کرنے سے انکار کرتے ہیں تو بڑی نمرتا کے ساتھ ہمیں کہنا پڑیگا کہ اُن کے لئے ہندستان میں کوئی جگہ نہیں. اگر وہ "بہتر عیسائی" بننے اور ویسا ویوہار کرنے سے انکار کرتے ہیں تو اُن کو ہم اپنے اپنے ملک کی سرکاروں کا جاسوس ہی سمجھینگے. اور کون حکومت ایسی ہے جو اپنے ملک میں ودیسی خفیوں کو بلا روک ٹوک گھومنے پھرنے کی اجازت دے؟ ودیشی عیسائی پادریوں سے ونے کے ساتھ ہم کہنا چاہتے ہیں کہ

अपने देश के हितों की रक्षा करने की सच्ची चिन्ता पर वह भारत सरकार पर नाहक़ नाराज़ न हों, बल्कि अपने दिलों को टटोल कर देखें और हज़रत ईसा के इन अमर शब्दों पर विचार करें :

"दुनिया (यानी दुनिया के ऐश आराम) से मुहब्बत मत करो, न उन चीज़ों से जो दुनिया में हैं. अगर कोई आदमी दुनिया से मुहब्बत करता है तो परम पिता की मुहब्बत उसमें नहीं है क्योंकि दुनिया में जो कुछ भी है, चमड़े का मोह, आंखों का मोह और जीवन की झूठी शान, यह सब परम पिता की चीज़ नहीं, दुनिया की चीज़ हैं. और यह दुनिया फ़ानी है और इसका मोह भी फ़ानी है. लेकिन वह जो मालिक की मरज़ी को पूरा करता है हमेशा तक क़ायम रहता है"

31. 7. '53 —सुरेश रामभाई

रोग कुछ इलाज कुछ !

उत्तर प्रदेश के दैनिक अखबारों में, चाहे वह अंगरेज़ी के हों, हिन्दी के या उरदू के, चोरी, डकैती, क़तल और भगाये जाने की ख़बरें बराबर निकलती रहती हैं. कभी कभी तो बड़े संगीन मामले सामने आते हैं. ज़ाहिर है कितने ही मामले, एक से एक ज़ियादा सनसनी भरे, ऐसे होंगे जो अखबारों तक नहीं पहुंच पाते और जब तक वह किसी अदालत में न लाए जाएं किसी को उनकी ख़बर भी नहीं मिलती. क्या शहरों में, क्या देहातों में. चोरी, डकैती, क़तल वग़ैरा ख़ूब बढ़ रहे हैं. कुछ मुक़ामों में तो हफ़ते में नहीं तो पखवाड़े में एक ख़ून हो जाना मामूली बात है. इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि ख़ास कर हमारे देहात के भाई बहनों की जान माल आज जितनी ज़ियादा ख़तरे में हैं उतनी पहले शायद ही कभी रही हो. इसलिये इस तरफ़ सूबे की सरकार का ध्यान जाना क़ुदरती बात थी.

मई के महीने में अखबारों में यह ख़बर छपी कि उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ़ से यह जांच की गई कि यहां जुर्म किस ज़ियादती के साथ हो रहे हैं. पता चला कि हालत काफ़ी ख़राब है, और देहात के अन्दर 'गांव हिफ़ाज़त और बेहतरी सोसाइटियां' (Village Defence and Welfare Socities) रायफ़िल क्लब वग़ैरा खोले जाने चाहियें, और पुलीस गांव वालों को हथियारों का चलाना सीखने में मदद दे. इसके लिये इन्तज़ामी और क़ानूनी क़दम उठाए जाने की भी सिफ़ारिश की गई है.

इसलिये हमें उम्मीद होती है कि हमारे प्रदेश में—और फिर उनकी देखा देखी दूसरे प्रदेशों में—गांव रक्षा

اپنے دیش کے ہتوں کی رکشا کرنے کی سچی چنتا پر وہ بھارت سرکار پر ناحق ناراض نا ہوں، بلکہ اپنے دلوں کو تول کر دیکھیں اور حضرت عیسیٰ کے ان امر شبدوں پر وچار کریں ۔

"دنیا (یعنی دنیا کے عیش آرام) سے محبت مت کرو، نہ اُن چیزوں سے جو دنیا میں ہیں. اگر کوئی آدمی دنیا سے محبت کرتا ہے تو پرم پتا کی محبت اس میں نہیں ہے کیونکہ دنیا میں جو کچھ بھی ہے چمڑے کا موہ، آنکھوں کا موہ اور جیون کی جھوٹی شان، یہ سب پرم پتا کی چیز نہیں، دنیا کی چیز ہیں ۔ اور یہ دنیا فانی ہے اور اس کا موہ بھی فانی ہے ۔ لیکن وہ جو مالک کی مرضی کو پورا کرتا ہے ہمیشہ تک قائم رہتا ہے ۔"

31 . 7 . '53 ——سریش رام بھائی

روگ کچھ علاج کچھ !

اُتر پردیش کے دینک اخباروں میں، چاہے وہ انگریزی کے ہوں، ہندی کے یا اُردو کے، چوری، ڈکیتی، قتل اور بھگائے جانے کی خبریں برابر نکلتی رہتی ہیں ۔ کبھی کبھی تو بڑے سنگین معاملے سامنے آتے ہیں ۔ ظاہر ہے کتنے ہی معاملے، ایک سے ایک زیادہ سنسنی بھرے، ایسے ہونگے جو اخباروں تک نہیں پہنچ پاتے اور جب تک وہ کسی عدالت میں نہ لائے جائیں کسی کو اُن کی خبر بھی نہیں ملتی ۔ کیا شہروں میں، کیا دیہاتوں میں، چوری، ڈکیتی، قتل وغیرہ خوب بڑھ رہے ہیں ۔ کچھ مقاموں میں تو ہفتہ میں نہیں تو پکھواڑے میں ایک خون ہو جانا معمولی بات ہے ۔ اِس سے اِنکار نہیں کیا جا سکتا کہ خاصکر ہمارے دیہات کے بھائی بہنوں کی جان مال آج جتنی زیادہ خطرے میں ہے اتنی پہلے شاید ہی کبھی رہی ہو ۔ اس لئے اِس طرف صوبے کی سرکار کا دھیان جانا قدرتی بات تھی ۔

مئی کے مہینے میں اخباروں میں یہ خبر چھپی کہ اُتر پردیش سرکار کی طرف سے یہ جانچ کی گئی کہ یہاں جرم کس زیادتی کے ساتھ ہو رہے ہیں ۔ پتہ چلا کہ حالت کافی خراب ہے، اور دیہات کے اندر 'گاؤں حفاظت اور بہتری سوسائٹیاں' Village Defence and Welfare Societies) رائفل کلب وغیرہ کھولے جانے چاہئیں، اور پولیس گاؤں والوں کو ہتھیاروں کا چلانا سیکھنے میں مدد دے ۔ اِس کے لئے انتظامی اور قانونی قدم اُٹھائے جانے کی بھی سفارش کی گئی ہے ۔

اِس لئے ہمیں اُمید ہوتی ہے کہ ہمارے پردیش میں—اور پھر اُن کی دیکھا دیکھی دوسرے پردیشوں میں—گاؤں رکشا

सोसाइटियां, राइफ़िल क्लब, चौकीदारी दल, हथियार बिक्री भंडार, फ़ौजी सामान डिपो वग़ैरा हज़ारों की तादाद में खोले जायंगे. साथ ही पुलिस की तादाद बढ़ाई जायगी, हथियार बन्द कान्सटेबिलों में इज़ाफ़ा किया जायगा और फ़ौज में भी ज़ियादा भरती की जायगी. इस में कितना रुपया सरकार पानी की तरह बहा देगी और उस ख़र्च को पूरा करने के लिये उसे आम जनता के ऊपर टैक्सों और दूसरे साधनों से कितना ज़ियादा दबाव डालना पड़ेगा हम नहीं कह सकते.

इस से भी ज़ियादा बड़ा सवाल यह है कि क्या यह सब करने के बाद हमारे गांव आज के मुक़ाबले ज़ियादा महफ़ूज़ हो जायंगे ? सीधा और साफ़ जवाब है कि "नहीं" ठीक उसी तरह जिस तरह भ्रष्टाचार विरोधी महकमा भ्रष्टाचार नहीं रोक सका, अनाज ज़ियादा उपजाओ आन्दोलन अनाज पैदा करने वाले से ज़ियादा नाज पैदा न करा सका. यही नहीं, हमारा ख़याल है कि उत्तर प्रदेश सरकार के इस कारनामे की वजह से देहातों की हालत और भी बिगड़ेगी. क्योंकि यह रक्षा सोसाइटियां या राइफ़िल क्लब उन रोगों का इलाज नहीं कर सकते जिन से आज हमारे देहाती भाई बहन परेशान हैं. हमें यक़ीन नहीं कि सरकार इन रोगों की असली वजहों से वाक़िफ़ न हो. वैसे तो वजहें बहुत सी हैं लेकिन उनमें से ख़ास ख़ास यह है :—

(1) देहात के उद्योग धन्दों का दिन दूना रात चौगुना बरबाद होना इसके कारन हमारे बुनकर, मोची, दलिहा, कुम्हार, बढ़ई, लुहार वग़ैरा लाखों कारीगरों और दस्तकारों का बेकार हो जाना;

(2) देहात के अन्दर खेती के दायरे में मशीनों की सिंचाई खादों और नये सुधरे हुए (?) औज़ारों और नल कुओं को बढ़ावा दिया जाना जिन के कारन वे ज़मीन वाले लाखों मज़दूर और भी बेकार हो जाते हैं;

(3) एक बड़े पैमाने पर किसानों की बे दख़ली होना और ज़मीनदारों का उनकी ज़मीनों को ज़ब्त कर लेना जिन्हें किसान पीढ़ियों से जोत रहा था, और बग़ीचों को ख़ुद काश्त में लिखा लेना;

(4) ज़मींदारी के हामी या ज़मींदारी नहीं जा सकती वाले ज़मींदारों का गुंडों बदमाशों को शै देना; और

(5) जिन लोगों का काम चोरी का पता लगाना और चोरों को पकड़ना था उन्हीं का लूट के माल में हिस्सा बांटा करना. चोरी डकैती क़तल की लहर के कुछ कारन वह नये टैक्स या महसूल भी हो सकते हैं जो सरकार ने या ज़िला बोर्डों ने सिंचाई, चुंगी, ऊंट बैल गाड़ी वग़ैरा के सिलसिले में लगाए हैं. नई गांव सभाओं,

سوسائٹیاں، رائفل کلب، چوکیداری دل، ہتھیار بکری بھنڈار، فوجی سامان ڈپو وغیرہ ہزاروں کی تعداد میں کھولے جائینگے. ساتھ ہی پولیس کی تعداد بڑھائی جائے گی، ہتھیار بند کانسٹبلوں میں اضافہ کیا جائے گا اور فوج میں بھی زیادہ بھرتی کی جائے گی. اِس میں کتنا روپیہ سرکار پانی کی طرح بہا دے گی اور اُس خرچ کو پورا کرنے کے لئے اُس سے عام جنتا کے اوپر ٹیکسوں اور دوسرے سادھنوں سے کتنا زیادہ دباؤ ڈالنا پڑے گا ہم نہیں کہہ سکتے.

اِس سے بھی زیادہ بڑا سوال یہ ہے کی کیا یہ سب کرنے کے بعد ہمارے گاؤں آج کے مقابلے زیادہ محفوظ ہو جائیں گے ؟ سیدھا اور صاف جواب ہے کہ " نہیں " ٹھیک اُسی طرح جس طرح بھرشٹاچار ورودھی محکمہ بھرشٹاچار نہیں روک سکا، اناج زیادہ اُپجاؤ آندولن اناج پیدا کرنے والے سے زیادہ اناج پیدا نہ کرا سکا. یہی نہیں، ہمارا خیال ہے کہ اُتر پردیش سرکار کے اِس کارنامے کی وجہ سے دیہاتوں کی حالت اور بھی بگڑے گی. کیونکہ یہ رکشا سوسائٹیاں یا رائفل کلب اُن روگوں کا علاج نہیں کر سکتے جن سے آج ہمارے دیہاتی بھائی بہن پریشان ہیں. ہمیں یقین نہیں کہ سرکار اِن روگوں کی اصلی وجہوں سے واقف نہ ہو. ویسے تو وجہیں بہت سی ہیں لیکن اُن میں سے خاص خاص یہ ہیں :—

(1) دیہات کے اُدیوگ دھندوں کا دن دونا رات چوگنا برباد ہونا اور اِس کے کارن ہمارے بنکر، موچی، دلیہا، بڑھئی، اور کمہار، وغیرہ لاکھوں کاریگروں اور دستکاروں کا بیکار ہوجانا؛

(2) دیہات کے اندر کھیتی کے دائرے میں مشینوں کی سینچائی کھادوں اور نئے سدھرے ہوئے (؟) اوزاروں اور نل کنوؤں کو بڑھاوا دیا جانا جن کے کارن بے زمین والے لاکھوں مزدور اور بھی بیکار ہو جاتے ہیں؛

(3) ایک بڑے پیمانے پر کسانوں کی بے دخلی ہونا اور زمینداروں کا اُن کی زمینوں کو ضبط کر لینا جنہیں کسان پیڑھیوں سے جوت رہا تھا، اور بغیچوں کو خود کاشت میں لکھا لینا؛

(4) زمینداری کے حامی یا زمینداری نہیں جا سکتی والے زمینداروں کا گنڈوں بدماشوں کو شہہ دینا؛ اور

(5) جن لوگوں کا کام چوری کا پتہ لگانا اور چوروں کا پکڑنا تھا اُنہیں کا لوٹ کے مال میں حصہ بانٹا کرنا. چوری ڈکیتی قتل کی لہر کے کچھ کارن وہ نئے ٹیکس یا محصول بھی ہو سکتے ہیں جو سرکار نے یا ضلع بورڈوں نے سینچائی، چنگی، اونٹ بیل گاڑی وغیرہ کے سلسلے میں لگائے ہیں. نئی گاؤں سبھاؤں،

सभा पतियों या अदालतों के सर पंचों का पक्ष पात और देहात के अन्दर आपसी फूट ख़ास कर कांगरेसियों और प्रजा सोशलिस्टों के बीच भी इसके लिये कुछ हद तक ज़िम्मेदार हैं.

लेकिन गांव रक्षा सोसाइटियों से इनमें से किसी भी एक रोग के रुकने, दबने या दूर होने की गुंजाइश नहीं है. उलटे गांव में एक तरह का आतंक और बढ़ जायगा—ऐसा आतंक जिसके द्वारा गांव में ज़ियादा ख़ुशहाल या मुंह फट लोग या वह लोग जिनका शासन से सम्बन्ध है, ग़रीबों और लाचारों को सताया करते हैं, सीधे सादे या बे ज़रिये वाले या ख़ामोश और मोहताज लोगों को इन सोसाइटियों से कुछ भी हासिल नहीं होगा. शायद उन्हें कुछ खोना ही पड़े क्योंकि गांव की हथियार बन्द नई जमात की ज़ियादतियों के ख़िलाफ़ वह अदालत तक पहुंच भी नहीं सकते !

गांव वालों की जान माल की हिफ़ाज़त का और गांवों की ज़िन्दगी को संभालने के लिये पहली ज़रूरी शत यह है कि विकेन्द्रित स्वावलम्बन की बुनियाद पर यानी हर गांव को अपने पैरों पर खड़ा करके और अपने शासन के अधिक से अधिक अधिकार दे कर गांवों की आर्थिक रचना क़ायम की जाय. उससे बेरोज़गारी मिटेगी, देहात का कच्चा माल शहर या मिलों या विदेश जाने और विदेश का या मिलों का पक्का माल, देहात के अन्दर आने का अंगरेज़ों का बनाया घातक सिलसिला ख़तम होगा और पढ़े लिखे या बेपढ़े गांव वालों का शहरों की तरफ़ भागना भी कम होगा. लेकिन यह तभी मुमकिन है जब हिन्द सरकार अपनी आर्थिक, ब्योपारी उत्पत्ति, शिक्षा और दूसरी नीतियों को बदलने को तैयार हो. यही नहीं, सरकार को अपना नज़रिया और काम करने का ढंग भी बदलना होगा. आज हमारे मुल्क की ही नहीं दुनिया की सब से बड़ी ज़रूरत है कि क़ौमी जीवन के हर पहलू में ज़ियादा से ज़ियादा विकेन्द्री करन किया जाय यानी देश के छोटे से छोटे टुकड़ों को स्वावलम्बी और ख़ुद मुख़्तार बनाया जाय.

अगर हिन्द सरकार या प्रदेश सरकार अपना आर्थिक और इन्तज़ामी ढांचा बदले बिना और देहात के उद्योग धन्धे चौपट करा करा कर गांवों की हिफ़ाज़त डंडे के बल से कराना चाहेंगी तो वह उसी तरह नाकामयाब होंगी जैसे झरिया और रानीगंज के कोयले की खानों में गुलाब के फूल उगाने की कोशिश करना. सरकार को चाहिये कि जो असली रोग है उसका असली इलाज करे, नहीं तो, रोग कुछ है, दवा कुछ और ही.

1. 8. '53. —सुरेश रामभाई

سبھاپتیوں یا عدالتوں کے سرپنچوں کا پکش پات اور دیہات کے اندر آپسی پھوٹ خاص کر کانگریسیوں اور پرجاسوشلسٹوں کے بیچ بھی اِس کے لئے کچھ حد تک ذمہ دار ہیں۔

لیکن گاؤں رکشا سوسائٹیوں سے اِن میں سے کسی بھی ایک روگ کے رکنے، دبنے یا دور ہونے کی گنجائش نہیں ہے۔ اُلٹے گاؤں میں ایک طرح کا آتنک اور بڑھ جائیگا—ایسا آتنک جس کے دوارا گاؤں میں زیادہ خوش حال یا منھ پھٹ لوگ یا وہ لوگ جن کا شاسن سے سمبندھ ہے، غریبوں اور لاچاروں کو ستایا کرتے ہیں، سیدھے سادے یا بےذریعے والے یا خاموش اور محتاج لوگوں کو اِن سوسائٹیوں سے کچھ بھی حاصل نہیں ہوگا۔ شاید اُنہیں کچھ کھونا ہی پڑے کیونکہ گاؤں کی ہتھیار بند نئی جماعت کی زیادتیوں کے خلاف وہ عدالت تک پہونچ بھی نہیں سکتے!

گاؤں والوں کی جان مال کی حفاظت کا اور گاؤں کی زندگی کو سنبھالنے کے لئے پہلی ضروری شرط یہ ہے کہ وکیندرت سواولمبن کی بنیاد پر یعنی ہر گاؤں کو اپنے پیروں پر کھڑا کرکے اور اپنے شاسن کے ادھک سے ادھک ادھیکار دے کر گاؤں کی آرتھک رچنا قائم کی جائے۔ اُس سے بیروزگاری مٹیگی، دیہات کا کچا مال شہر یا ملوں میں یا ودیش جانے اور ودیش کا یا ملوں کا پکا مال دیہات کے اندر آنے کا انگریزوں کا بنایا گھاتک سلسلہ ختم ہوگا اور پڑھے لکھے یا بے پڑھے گاؤں والوں کا شہروں کی طرف بھاگنا بھی کم ہوگا۔ لیکن یہ تبھی ممکن ہے جب ہند سرکار اپنی آرتھک، بیوپاری اُتپتی، شکشا اور دوسری نیتیوں کو بدلنے کو تیار ہو۔ یہی نہیں، سرکار کو اپنا نظریہ اور کام کرنے کا ڈھنگ بھی بدلنا ہوگا۔ آج ہمارے ملک کی ہی نہیں دنیا کی سب سے بڑی ضرورت ہے کہ قومی جیون کے ہر پہلو میں زیادہ سے زیادہ وکیندری کرن کیا جائے یعنی دیش کے چھوٹے سے چھوٹے ٹکڑوں کو سواولمبی اور خود مختار بنایا جائے۔

اگر ہند سرکار یا اُترپردیش سرکار اپنا آرتھک اور اِنتظامی ڈھانچہ بدلے بنا اور دیہات کے اُدیوگ دھندے چوپٹ کرا کرا کر گاؤں کی حفاظت ڈنڈے کے بل سے کرانا چاہینگی تو وہ اُسی طرح ناکامیاب ہونگی جیسے جھریا اور رانی گنج کے کوئلے کی کھانوں میں گلاب کے پھول اُگانے کی کوشش کرنا۔ سرکار کو چاہئے کہ جو اصلی روگ ہے اُس کا اصلی علاج کرے، نہیں تو، روگ کچھ ہے، دوا کچھ اور ہی۔

1. 8. '53 —سریش رام بھائی

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक खर्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आखिर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइ उन का दर्दनाक आंखों देखा वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए खत्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے.

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ.

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے.

سو صفحے کی کتاب. قیمت صرف بارہ آنے.

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپرداییکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا.

قیمت بارہ آنے.

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن. اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں. قیمت چار آنے.

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے. قیمت صرف دو آنے.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، اِلہ آباد.

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें / ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुख़न	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنس مرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا،	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاشتر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانو
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—

ملنے کا پتہ—

मैनेजर 'नया हिन्द'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

مینیجر 'نیا ہند'

145، مٹھی گنج، الٰہ آباد-3

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

"उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

———

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور ان کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور ان کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

"انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. ان کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

———

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'

154 مٹھی گنج، الٰہ آباد.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 45, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے. 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک--شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا جا سکتا ہے۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔ قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر، نیا ہند، '145' متھی گنج، الٰہ آباد۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कतावों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی . کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری، ھندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ‌آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ھے . "نیا ھند" کے جو گاھک ممبر بننا چاھیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुजुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की खास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्बरनाथ। ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है. इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरका परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपी, 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

[…] کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اِس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا . […]س نے اُس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا . […]رے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی . پر وہ […]ہی ممکن ہوسکا ہے .

اِس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے […]تھ دیکھ گئے ہیں . بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی […]یتی رائے اور سجھاوؤں سے اِس میں فائدہ اُٹھایا گیا ہے . […] ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اِس کتاب کے شروع میں […]ڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار […]ٹ یعنی آمکھ لکھا ہے .

اِس کتاب سے اِسلام کی اصلی تعلیم اور اُس کے […]یادی اُصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت […]محمد کی سیدھی سچی اور بےمثال زندگی--ایک […]یسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون […] روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے . اِس سے پتہ چلیگا […] کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے […]یانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ […]ک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو […]نم دیا .

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی […]ی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اِس سے فائدہ اُٹھائینگے .

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 […]صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام […]رف تین روپیہ .

[…]لنے کا پتہ—
[…]منیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الہ آباد .

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

नया हिन्द

نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

इस नम्बर के ख़ास लेख

हमारी राय—

اس نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

सितम्बर 1953 ستمبر

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

"نیا ھند"

ھندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماھواری پرچا

सितम्बर 1953 ستمبر

क्या किससे	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने .

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ھند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 16 सितम्बर, सन '53 नम्बर 3

جلد 15 ستمبر، سن '53 نمبر 3

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

सिपाही की दुलहन

बैरी है सावन का महीना
दूभर है ऐसे में जीना
आंधी, पानी, बादल, बिजली
मौजों पर है अपना सफ़ीना

ऊदे ऊदे बादल छाए
कोयल मीठे बोल सुनाए
मन का पपीहा पीपी बोले
मुझ बिरहन को कुछ न सुहाए

सबज़ा सबज़ा, बूटा बूटा
महका महका, लहका लहका
ताल तलय्या, बन और क्यारी
हरसू जोबन निखरा निखरा

खट्टी मीठी और रसीली
बाग़ की जामुन देख सखी री
देख उधर वह झोंका आया
देख उधर वह सीकर टपकी

ऐसे सखी परदेश गए वह
मन पे लगा के ठेस गये वह
भारू हर सिंगार है तन पर
देकर दुख का भेस गए वह

سپاہی کی دلہن

بیری ہے ساون کا مہینہ
دوبھر ہے ایسے میں جینا
آندھی، پانی، بادل، بجلی
موجوں پر ہے اپنا سفینہ

اودے اودے بادل چھائے
کوئل میٹھے بول سنائے
من کا پپیہا پی پی بولے
مجھ برہن کو کچھ نہ سہائے

سبزا سبزا، بوٹا بوٹا
مہکا مہکا، لہکا لہکا
تال تلیہ، بن اور کیاری
ہر سو جوبن نکھرا نکھرا

کھٹی میٹھی اور رسیلی
باغ کی جامن دیکھ سکھی ری
دیکھ ادھر وہ جھونکا آیا
دیکھ ادھر وہ سیکر ٹپکی

ایسے سکھی پردیس گئے وہ
من پہ لگا کے ٹھیس گئے وہ
بھارو ہر سنگار ہے تن پر
دے کر دکھ کا بھیس گئے وہ

देख सखी हंसती है सुखिया
झूले झूल रही है रधिया
ब्याही बिन ब्याही हर एक की
मसकी मसकी जोड़ पे अंगिया

دیکھ سکھی ہنستی ہے سکھیا
جھولے جھول رہی ہے ردھیا
بیاہی ان بیاہی ہر ایک کی
مسکی مسکی جوڑ پہ انگیا

देख के अपने तन पर चोली
कर न सकी मैं मन से ठिठोली
पी पी कह के पापी पपीहा
बोले निस दिन बोली ठिठोली

دیکھ کے اپنے تن پر چولی
کر نہ سکی میں من سے ٹھٹھولی
پی پی کہہ کے پاپی پپیہا
بولے نس دن بولی ٹھٹھولی

मन में लाख बिरोग लिये हूं
ग़म खाये और नीर पिये हूं
कुछ परदेसी का भी ग़म है
कुछ संकोच से होंट सिये हूं

من میں لاکھ بیروگ لئے ہوں
غم کھائے اور نیر پئے ہوں
کچھ پردیسی کا بھی غم ہے
کچھ سنکوچ سے ہونٹ سئے ہوں

घूर रहा था कल एक राही
कोठे पर बे सुध मैं खड़ी थी
मसकी चोली ढलका आंचल
फिर भी मुझ को लाज न आई

گھور رہا تھا کل ایک راہی
کوٹھے پر بے سدھ میں کھڑی تھی
مسکی چولی ڈھلکا آنچل
پھر بھی مجھ کو لاج نہ آئی

रूप की क़ीमत भूल गई मैं
लाज की अज़मत भूल गई मैं
मादक रूप जवानी की भी
हर एक आदत भूल गई मैं

روپ کی قیمت بھول گئی میں
لاج کی عظمت بھول گئی میں
مادک روپ جوانی کی بھی
ہر ایک عادت بھول گئی میں

दुखती रग छू लेता आकर
मस्त पवन का झोंका अकसर
साजन का सन्देस न सुनकर
कांप उठता मेरा तन थर थर

دکھتی رگ چھو لیتا آ کر
مست پون کا جھونکا اکثر
ساجن کا سندیس نہ سن کر
کانپ اٹھتا میرا تن تھر تھر

सात समन्दर पार से उड़ कर
बादल छाया नील गगन पर
उस से पी का हाल जो पूछा
आंगन में बरसा वह झर झर

سات سمندر پار سے اڑ کر
بادل چھایا نیل گگن پر
اس سے پی کا حال جو پوچھا
آنگن میں برسا وہ جھر جھر

जीवन मेरा उनका है ग़म
जाने हैं किस हाल में प्रीतम
पलकों पर हिलते हैं आंसू
फूलों पर गिरती है शबनम

جیون میرا ان کا ہے غم
جانے ہیں کس حال میں پریتم
پلکوں پر ہلتے ہیں آنسو
پھولوں پر گرتی ہے شبنم

सिपाही की दुल्हन

साजन लाम पे बढ़ते होंगे
तूफ़ानों पर चढ़ते होंगे
गिरते पड़ते, लड़ते भिड़ते
जलते भुनते, कुढ़ते होंगे

दुश्मन सब का प्यार सखी है
यह कैसा संसार सखी है
मिल जुलकर रहने के बदले
खिचती क्यों तलवार सखी है

कैसा रूप, जवानी कैसी
जग की प्रेम कहानी कैसी
कांटों के बिस्तर के ऊपर
कोमल रूप की रानी कैसी

नफ़रत का हंगामा हर सू
ज़ख़्मी फूल और घायल ख़ुशबू
कोमलता सुन्दरता ज़ख़्मी
इश्क़ का जोबन बे रंगो बू

कल की सुहागिन सेंदुर धोये
नल के लिये दमयन्ती रोये
पहली बार सजी जो दुल्हन
सेज पे वह भी तन्हा सोये

मर्द पे ऐ सखि नाज़ न करना
प्रीत के साज़ पे हाथ न धरना
तलवारों से मरने वाले
क्या जानेंगे प्यार से मरना

प्यार का आंसू खेल है इनका
एक छलावा मेल है इनका
माया मोह से यह बचते हैं
नारी का घर जेल है इनका

यह तहज़ीब के हैं निर्माता
सुख के बैरी दुख के दाता
उड़ते हैं आकाश के ऊपर
जोड़ेंगे पर लोक से नाता

سپاہی کی دلہن

ساجن لام پے بڑھتے ہوں گے
طوفانوں پر چڑھتے ہوں گے
گرتے پڑتے، لڑتے بھڑتے
جلتے بھنتے، کڑھتے ہوں گے

دشمن سب کا پیار سکھی ہے
یہ کیسا سنسار سکھی ہے
مل جل کر رہنے کے بدلے
کھنچتی کیوں تلوار سکھی ہے

کیسا روپ، جوانی کیسی
جگ کی پریم کہانی کیسی
کانٹوں کے بستر کے اوپر
کومل روپ کی رانی کیسی

نفرت کا ہنگامہ ہر سو
زخمی پھول اور گھائل خوشبو
کوملتا سندرتا زخمی
عشق کا جوبن بے رنگ و بو

کل کی سہاگن سیندور دھوئے
نل کے لئے دمینتی روئے
پہلی بار جو سجی دلہن
سیج پے وہ بھی تنہا سوئے

مرد پہ اے سکھی ناز نا کرنا
پریت کے ساز پہ ہاتھ نہ دھرنا
تلواروں سے مرنے والے
کیا جانیںگے پیار سے مرنا

پیار کا آنسو کھیل ہے ان کا
ایک چھلاوا میل ہے ان کا
مایا موہ سے یہ بچتے ہیں
ناری کا گھر جیل ہے ان کا

یہ تہذیب کے ہیں نرماتا
سکھ کے بیری دکھ کے داتا
اڑتے ہیں آکاش کے اوپر
جوڑیں گے پرلوک سے ناتا

सूरज चांद पे हमले होंगे
फिर भी न पूरे सपने होंगे
नील गगन की बस्ती में भी
हर क्षण इनके चरचे होंगे

पग पग पर एक लाश बिछा दी
शैतान की तह्ज़ीक※ उड़ा दी
क्या सुन्दर निर्मान है इनका
मरघट की तसवीर बना दी

निर्बल को हर मर्द बली है
छल से अधिक हर मर्द छली है
इनकी समय की हर धारा में
काग़ज़ की भी नाव चली है

हाथ में इन के जामे जम है
हाइड्रोजन औ ऐटम बम है
नब्ज़ हवा की यह पहचानें
तूफ़ां का सर इन पर ख़म है

आओ सखी एक गीत सुना दें
ज़ख़्मी दिलों में प्यार जगा दें
परचम में है ख़ून की बदबू
आओ लाल आंचल लहरा दें

लाल आंचल में प्यार है पहला
दुल्हन का सिंगार है पहला
लाल आंचल के लहराने में
प्यार का ही इज़हार है पहला

पहले प्यार की ज़द पर आकर
जायेगा यह मर्द कहां पर
इसको अमन से रहना होगा
तोड़ूंगी मैं इसका ख़ंजर

आओ सखी ऐसे मुसका दें
अमन की हर सू ज्योति जगा दें
फ़ितरत की आवाज़ बदल कर
इनसां को इनसान बना दें

※ मज़ाक़

سورج چاند پہ حملے ہوں گے
پھر بھی نہ پورے سپنے ہوں گے
نیل گگن کی بستی میں بھی
ہر چھن ان کے چرچے ہوں گے

پگ پگ پر ایک لاش بچھا دی
شیطان کی تضحیک* اڑا دی
کیا سندر نرمان ہے ان کا
مرگھٹ کی تصویر بنا دی

نربل کو ہر مرد بلی ہے
چھل سے ادھک ہر مرد چھلی ہے
ان کی سمے کی ہر دھارا میں
کاغذ کی بھی ناؤ چلی ہے

ہاتھ میں ان کے جام جم ہے
ہائڈروجن اور ایٹم بم ہے
نبض ہوا کی یہ پہچانیں
طوفاں کا سر ان پر خم ہے

آؤ سکھی ایک گیت سنا دیں
زخمی دلوں میں ایک پیار جگا دیں
پرچم میں ہے خون کی بدبو
آؤ لال آنچل لہرا دیں

لال آنچل میں پیار ہے پہلا
دلہن کا سنگار ہے پہلا
لال آنچل کے لہرانے میں
پیار کا ہی اظہار ہے پہلا

پہلے پیار کی ضد پر آکر
جائیگا یہ مرد کہاں پر
اس کو امن سے رہنا ہوگا
توڑوں گی میں اس کا خنجر

آؤ سکھی ایسے مسکا دیں
امن کی ہر سو جیوتی جگا دیں
فطرت کی آواز بدل کر
انساں کو انسان بنا دیں

* مذاق.

हिन्दुस्तानी शब्दयात का दसवां और ग्यारहवां असूल :

तोड़ तर्क और हिन्दुस्तानी भाशा पर व्याकरन का लागूपन

(डाक्टर जाफ़र हसन)

उरदू ज़बान में एक बहुत बड़ा भाशाई झुकाव लफ़्ज़ों को तर्क करना याने छोड़ देना है, हर वह लफ़्ज़ जिसके बारे में मामूली सा भी शुबहा हो कि उसका इस्तेमाल उन दिनों नहीं किया जाता, मतरूक याने छोड़ा हुआ ठहराया जाता है और चन्द बरसों में बिलकुल भुला दिया जाता है. लफ़्ज़ों के छोड़ने का यह झुकाव हमारी भाशा को बहुत नुक़सान पहुंचा चुका है.

एक ज़माना था कि उरदू के बड़े बड़े शायर कसरत से हिन्दी लफ़्ज़ जो आज कल उरदू-दां जानते ही नहीं, बग़ैर तकल्लुफ़ इस्तेमाल करते थे: चुनांचे प्रेम, साजन, नयन, जग, बचन जैसे बीसियों नहीं सैकड़ों बल्कि हज़ारों लफ़्ज़ कम इस्तेमाल होते होते बिलकुल छोड़ दिये गए ! तर्क पसन्दी याने अच्छे ख़ासे लफ़्ज़ों को मतरूक क़रार देने का झुकाव उरदू वालों में तो था ही और अब भी है; हमारे फूटे भागों से यह वबा हिन्दी प्रेमियों को भी मुतासिर (असर) कर गई और ख़ास कर पिछली दो तीन दहाइयों में आम तौर पर समझे और बोले जाने वाले उरदू लफ़्ज़ों के साथ साथ इन ठेट हिन्दी के लफ़्ज़ों को छोड़ना शुरू किया जो उरदू में भी बोले जाते थे, चुनांचे वकील और मुद्दई के अलावा ऐसे लफ़्ज़ भी तर्क किये गए जो ख़ालिस हिन्दी थे : मिसाल के तौर पर दिया-सलाई की बजाय "धूम्रशिला" का लफ़्ज़ सुझाया गया है ! हमारे विधान के हिन्दी तरजुमे में अछूतपन के लिये अस्पर्शयता इस्तेमाल किया गया.

ज़बान को इस तरह मुशकिल बनाने और लफ़्ज़ों को छोड़ छोड़ कर इसका ज़ख़ीरा कम करने से आख़िरकार ख़ुद हमें नुक़सान पहुंचता है. हमारी ज़बान मुशकिल हो जाती है और मुशकिल भाशा के ज़रिये तालीम हासिल करना दूभर हो जाता है.

हिन्दी वालों और उरदू वालों से कोई तवक़्क़ो (उम्मीद) नहीं कि ख़ुद अपनी रविश बदलेंगे. दोनों पाक बाज़ी के ख़ब्त में अपने लफ़्ज़ों के साथ साथ अंगरेज़ी के ज़रिये आए हुए पूरबी भाशाओं के चालू, आम समझ और सुन्दर सुन्दर शब्द छोड़ कर मुशकिल, बोझिल और बिहंगम

ھندستانی شبدیات کا دسواں اور گیارھواں اسول :

توڑ ترک اور ھندستانی بھاشا پر ویاکرن کا لاگوپن

(ڈاکٹر جافر ھسن)

اردو زبان میں ایک بہت بڑا بھاشائی جھکاؤ لفزوں کو ترک کرنا یانے چھوڑ دینا ھے . ھر وہ لفز جس کے بارے میں مامولی سا بھی شبہ ھو کہ اس کا استیمال اندنوں نہیں کیا جاتا، متروک یانے چھوڑا ھوا ٹھہرا جاتا ھے اور چند برسوں میں بلکل بھلا دیا جاتا ھے . لفزوں کے چھوڑنے کا یہ جھکاؤ ھماری بھاشا کو بہت نقسان پہنچا چکا ھے .

ایک زمانا تھا کہ اردو کے بڑے بڑے شاعر کسرت سے ھندی لفز جو آجکل اردو داں جانتے ھی نہیں، بغیر تکلف استعمال کرتے تھے : چنانچہ پریم، ساجن، نین، جگ، بچن جیسے بیسیوں نہیں سیکڑوں بلکہ ھزاروں لفز کم استعمال ھوتے ھوتے بلکل چھوڑ دئے گئے ! ترک پسندی یانے اچھے خاصے لفزوں کو متروک قرار دینے کا جھکاؤ اردو والوں میں تو تھا ھی اور اب بھی ھے ؛ ھمارے پھوٹے بھاگوں سے یہ وبا ھندی پریمیوں کو بھی متاثر اثر کر گئی اور خاس کر پچھلی دو تین دھائیوں میں آم تور پر سمجھے اور بولے جانے والے اردو لفزوں کے ساتھ ساتھ ان ٹھیٹ ھندی کے لفزوں کو چھوڑنا شرو کیا جو اردو میں بھی بولے جاتے تھے، چنانچہ وکیل اور مدعی کے الاوا ایسے لفز بھی ترک کئے گئے جو خالس ھندی تھے : مسال کے طور پر دیاسلائی کی بجائے " دھومر شلا " کا لفز سجھایا گیا ھے ! ھمارے ودھان کے ھندی ترجمے میں اچھوت پن کے لئے اسپرشیتا استعمال کیا گیا .

زبان کو اس طرح مشکل بنانے اور لفزوں کو چھوڑ چھوڑ کر اس کا زخیرا کم کرنے سے آخرکار خد ھمیں نقسان پہنچتا ھے . ھماری زبان مشکل ھو جاتی ھے اور مشکل بھاشا کے ذریے تالیم ھاسل کرنا دوبھر ھو جاتا ھے .

ھندی والوں اور اردو والوں سے کوئی توقو (امید) نہیں کہ خد اپنی روش بدلیں گے دونو پاکبازی کے خبت میں اپنے لفزوں کے ساتھ ساتھ انگریزی کے ذریے آئے ھوئے یوربی بھاشاؤں کے چالو، آم سمجھ اور سندر سندر شبد شبد چھوڑ کر مشکل، بوجھل اور بہنگم

लफ़्ज़ चलाने की कोशिश में अपनी जानदारी ग़ारत कर रहे हैं. इसलिये हिन्दुस्तानी प्रेमियों का यह फ़र्ज़ है कि वह हिन्दी वालों और उरदू वालों के छोड़े हुए लफ़्ज़ों को अपनाएं, भुलाए हुए लफ़्ज़ों को फिर से जारी करें और हिन्दुस्तानी के शब्द सागर को बढ़ाने के लिये मुख़्तलिफ़ प्रान्तों में बोले जाने वाले इलाक़ाई शब्दों और भांत भांत के पेशों में चलन पाई हुई इस्तलाहों को सलीक़े से एक जा करके इनको रिवाज देने की कोशिश करें.

जिस तरह कशिश का उलटा तोड़ कशिश, इलज़ाम का बरअक्स तोड़ इलज़ाम होता है, उसी तरह तर्क का उलटा अमनल तोड़ तर्क होना चाहिये : जिससे मुराद कई कोशिशें है.

तोड़ तर्क का मतलब

(i) तोड़ तर्क से मुराद पहले तो अपनावा है. याने हर वह लफ़्ज़ जो आम हो चुका हो हिन्दुस्तानी का जुज़ है. चाहे वही लफ़्ज़ उरदू वाले मतरूक क़रार दें या हिन्दी प्रेमी छोड़ दें.

(ii) भूले बिसरे और सचमुच छोड़े हुए लफ़्ज़ों को दुबारा चालू किया जाय. इस तरह पराये लफ़्ज़ों की बाज़ जनमा कर (याने Revive कर के) हिन्दुस्तानी लफ़्ज़ों की तैदाद बढ़ाई जाये. इस तरीक़ को बाज़ जनमयावा (Revival) कहा जा सकता है.

आमयावा

(iii) तोड़ तर्क का एक और जुज़ आमयावा याने Popularization है. इससे मुराद उन लफ़्ज़ों को आम करने और देस भर में रिवाज देने से है जो अब ख़ास ख़ास इलाक़ों और प्रान्तों में बोले जाते हैं या इस्तलाहों की तरह ख़ास ख़ास पेशों में समझे और उनहीं हलक़ों में इस्तेमाल किये जाते हैं. गोया आमयावे के दो पहलू हैं. इन दोनों पर अलग अलग टीका की जाती है.

(अ) हिन्दुस्तानी की तरक़्क़ी के लिये यह ज़रूरी है कि पेशावरी लुग़ात जिसमें न सिर्फ़ तमाम लफ़्ज़ और इस्तलाहें बल्कि फ़िक़रे और तरकीबें भी हों मरत्तिब की जाएं और उनको सलीक़े से साफ़, सही, आवाज़याती लिखावट के साथ शाया किया जाए ताकि हर लफ़्ज़ के माने और उच्चारन आसानी से मालूम हो सकें. जहां कहीं ज़रूरत हो तसवीरें भी दी जाएं.

इस सिलसिले में अनजुमन तरक़्क़ी उरदू ने बड़ा अच्छा काम किया है. उसने सात जिलदों में बीसियों पेशों से सम्बन्ध रखने वाले लफ़्ज़ों की डिकशनरियां छाप दीं. आइनदा एडीशन में हर लफ़्ज़ हिन्दी लिखावट और

لفز چلانے کی کوشش میں اپنی جانداری غارت کر رہے ہیں. اس لئے ہندستانی پریمیوں کا یہ فرز ہے کہ وہ ہندی والوں اور اردو والوں کے چھوڑے ہوئے لفزوں کو اپنائیں' بھولے ہوئے لفزوں کو پھر سے جاری کریں اور ہندستانی کے شبد ساگر کو بڑھانے کے لئے مختلف پرانتوں میں بولے جانے والے علاقائی شبدوں اور بھانت بھانت کے پیشوں میں چلن پائی ہوئی اسطلاحوں کو سلیقے سے ایک جا کر کے ان کو رواج دینے کی کوشش کریں۔

جس طرح کشش کا الٹا توڑ کشش' الزام کا برعکس توڑ الزام ہوتا ہے' اسی طرح ترک کا الٹا اصل توڑ ترک ہونا چاہئے : جس سے مراد کئی کوششیں ہیں۔

توڑ ترک کا مطلب

(i) توڑ ترک سے مراد پہلے تو اپناوا ہے یانے ہر وہ لفز جو آم ہو چکا ہو ہندستانی کا جز ہے۔ چاہے وہی لفز اردو والے متروک قرار دیں یا ہندی پریمی چھوڑ دیں۔

(ii) بھولے بسرے اور سچ مچ چھوڑے ہوئے لفزوں کو دوبارا چالو کیا جائے۔ اس طرح پرائے لفزوں کو باز جنما کر (یانے Revive کر کے) ہندستانی لفزوں کی تعداد بڑھائی جائے۔ اس طریق کو باز جنمیاوا (Reival) کہا جا سکتا ہے۔

آمیاوا

(iii) توڑ ترک کا ایک اور جز آمیاوا یانے Popularization ہے۔ اس سے مراد ان لفزوں کو عام کرنے اور دیس بھر میں رواج دینے سے ہے جو اب خاص خاص علاقوں اور پرانتوں میں بولے جاتے ہیں یا اسطلاحوں کی طرح خاص خاص پیشوں میں سمجھے اور انہیں حلقوں میں استعمال کئے جاتے ہیں۔ گویا آمیاوے کے دو پہلو ہیں۔ ان دونو پر الگ الگ ٹیکا کی جاتی ہے۔

(الف) ہندستانی کی ترقی کے لئے یہ ضروری ہے کہ پیشہ وری لغت جس میں نہ صرف تمام لفز اور اسطلاحیں بلکہ فقرے اور ترکیبیں بھی ہوں مرتب کی جائیں اور ان کو سلیقے سے صاف' سہی' آوازیاتی لکھاوٹ کے ساتھ شایا کیا جائے تاکہ ہر لفز کے مانے اور اچارن آسانی سے معلوم ہو سکیں۔ جہاں کہیں ضرورت ہو تصویریں بھی دی جائیں۔

اس سلسلے میں انجمن ترقی اردو نے بڑا اچھا کام کیا ہے۔ اس نے سات جلدوں میں بیسیوں پیشوں سے سمبندھ رکھنے والے لفزوں کی ڈکشنریاں چھاپ دیں۔ آئندہ اڈیشن میں ہر لفز ہندی لکھاوٹ اور

संसारी लिखावट में भी लिख दिया जाए और सब किताबें नागरी में भी छापी जाएं तो अच्छा होगा.

इन किताबों में सिर्फ़ पेशावरी इसतलाहें हैं. मेरी तजवीज़ यह भी है कि पेशावरी इसतलाहों के अलावा आम लफ़्ज़, तरकीबें, फ़िक़रे, कहावतें भी यकजाई जाएं जो इलाक़ाई ऐतबार से मुख़तलिफ़ जिलदों में शाया की जाएं. जैसे हैदराबाद की हिन्दुस्तानी पूंजी, बिहार की हिन्दुस्तानी पूंजी, राजपूताने की हिन्दुस्तानी पूंजी.

(ब) आमयावे का दूसरा पहलू यह है कि उत्तर देश और बीच देस के तमाम प्रान्तों और इलाक़ों में सिर्फ़ मुक़ामी शोहरत रखने वाले लफ़्ज़ों को माने और तलफ़्फ़ुज़ के साथ मुरत्तब और शाया किया जाए ताकि हर लफ़्ज़ जो किसी इलाक़े में बोला या समझा जाता है, कुल देसी अहमियत हासिल कर के टकसाली और आम भाशा में शामिल हो सके.

मुख़तलिफ़ पेशों और इलाक़ों में बाज़ ऐसे अच्छे अच्छे लफ़्ज़ बोले जाते हैं कि मौक़ा मिले तो वह बहुत जल्द सारे देश में चल पड़ें. बहुत से लफ़्ज़ अब भी मौजूद हैं. सिर्फ़ हम उनसे वाक़िफ़ नहीं.

ग़रज़ हिन्दुस्तानी को फैलाने, तरक़्क़ी देने और बलवान बनाने का एक असूल यह है कि उरदू वालों की मतरूकीयत की पालसी और हिन्दी वालों की छुवा छात और छूटम छाट की पालिसी के बिलकुल उलटा अमल करते हुए तमाम पेशों, ज़मानों और इलाक़ों के लफ़्ज़ों को अपनाएं, फैलाएं और उन्हें पनपने का मौक़ा दें.

आख़िर में हिन्दुस्तानी शब्दयात का एक असूल बयान करना ज़रूरी है जिस को दुहराते दुहराते हिन्दुस्तानी के हमदर्द थक गए मगर न तो हिन्दी प्रेमी मानते हैं और न उरदू के हामी! सब से ज़ियादा मज़े की बात तो यह है कि ख़ुद हिन्दुस्तानी के मुआफ़िक़ अपने ही माने हुए असूलों को अकसर भूल जाते हैं और बाज़ मर्तबा अपने ही असूलों का ख़ुद ही विरोध करते हैं! बहरहाल यह असूल जिस से हिन्दुस्तानी की तरक़्क़ी हो सकती है यह है कि हिन्दी भाशा पर हिन्दी ग्रेमर और उरदू भाशा पर उरदू ग्रेमर का असर होना चाहिए न यह कि हिन्दी पर संस्कृत व्याकरन लागू की जाए और उरदू पर फ़ारसी अर्बी क़वायद लादी जाए या दोनों पर अंगरेज़ी ग्रेमर.

इस असूल को हम यूं भी बयान कर सकते हैं कि लफ़्ज़ चाहे किसी ज़बान के हों हिन्दी, उरदू और हिन्दुस्तानी में दाख़िल होने के बाद उनके गुन रूप (सिफ़ती शकलें) उनके कईपन (बहु वचन या जमा) हिन्दी, उरदू और हिन्दुतानी तरीक़े से बनाए जाएं न कि संस्कृत, फ़ारसी और अर्बी तरीक़े से. ख़ास कर हिन्दुस्तानी के लिए तो यह लाज़मी है कि हम

سنساری لکھاوٹ میں بھی لکھ دیا جائے اور سب کتابیں ناگری میں بھی چھاپی جائیں تو اچھا ہوگا ۔

اِن کتابوں میں صرف پیشہ‌وری اسطلاحیں ہیں ۔ میری تجویز یہ بھی ہے کہ پیشہ‌وری اسطلاحوں کے الاوہ آم لفز، ترکیبیں، فقرے، کہاوتیں بھی یکجائی جائیں جو علاقائی اتبار سے مختلف جلدوں میں شایا کی جائیں ۔ جیسے حیدرآباد کی ہندستانی پونجی؛ بہار کی ہندستانی پونجی، راجپتانے کی ہندستانی پونجی ۔

(ب) آمیارے کا دوسرا پہلو یہ ہے کہ اتر دیس اور بیچ دیس کے تمام پرانتوں اور اِلاقوں میں صرف مقامی شہرت رکھنے والے لفزوں کو مانے اور تلفز کے ساتھ مرتب اور شایا کیا جائے تاکہ ہر لفز جو کسی الاقے میں بولا یا سمجھا جاتا ہے، کل دیسی اہمیت ہاسل کر کے ٹکسالی اور آم بھاشا میں شامل ہو سکے ۔

مختلف پیشوں اور الاقوں میں باز ایسے اچھے اچھے لفز بولے جاتے ہیں کہ موقا ملے تو وہ بہت جلد سارے دیس میں چل پڑیں ۔ بہت سے لفز اب بھی موجود ہیں ۔ صرف ہم اِن سے واقف نہیں ۔

فرز ہندستانی کو پھیلانے، ترقی دینے اور بلوان بنانے کا ایک اصول یہ ہے کہ اردو والوں کی متروکیت کی پالسی اور ہندی والوں کی چھوا چھات اور چھوتم چھات کی پالسی کے بلکل الٹا امل کرتے ہوئے تمام پیشوں، زمانوں اور الاقوں کے لفزوں کو اپنائیں، پھیلائیں اور انھیں پنپنے کا موقا دیں ۔

آخر میں ہندستانی شبدیات کا ایک اصول بیان کرنا ضروری ہے جس کو دہراتے دہراتے ہندستانی کے ہمدرد تھک گئے مگر نہ تو ہندی پریمی مانتے ہیں اور نہ اردو کے حامی ! سب سے زیادا مزے کی بات تو یہ ہے کہ خد ہندستانی کے موافق اپنے ہی مانے ہوئے اصولوں کو اکسر بھول جاتے ہیں اور باز مرتبا اپنے ہی اصولوں کا خد ہی وِرودھ کرتے ہیں ! بہر حال یہ اصول جس سے ہندستانی کی ترقی ہوسکتی ہے یہ ہے کہ ہندی بھاشا پر ہندی گریمر اور اردو بھاشا پر اردو گریمر کا اثر ہونا چاہئے نہ یہ کہ ہندی پر سنسکرت ویاکرن لاگو کی جائے اور اردو پر فارسی عربی قواعد لادی جائے یا دونو پر انگریزی گریمر ۔

اس اصول کو ہم یوں بھی بیان کرسکتے ہیں کہ لفز چاہے کسی زبان کے ہوں ہندی، اردو اور ہندستانی میں داخل ہونے کے باد ان کے گن روپ (صفتی شکلیں) ان کے کئی پن (بہو وچن یا جمع) ہندی، اردو اور ہندستانی طریقے سے بنائے جائیں نہ کہ سنسکرت، فارسی اور اربی طریقے سے. خاص کر ہندستانی کے لئے تو یہ لازمی ہے کہ ہم

संस्कृत व्याकरन और फ़ारसी, अर्बी या अंगरेज़ी क़ायदों को छोड़ कर हिन्दुस्तानी भाशा पर सिर्फ़ हिन्दुस्तानी व्याकरन लागू करें!

उरदू के हामी उरदू में दाखिल शुदा लफ़्ज़ों पर अर्बी और फ़ारसी क़वायद लागू करके अदबी जुर्म कर रहे हैं. वह अपनी ज़बान को मुशकिल बना कर खुद उरदू को नुक़सान पहुंचा रहे हैं, क्योंकि मुशकिल उरदू को खुद उरदू के आम पढ़े लिखे नहीं समझते. हिन्दी प्रेमी हिन्दी भाशा पर संस्कृत व्याकरन लागू करके बड़ा भाशाई अपराध कर रहे हैं. इसकी वजह से हिन्दी कठिन होती जा रही है और हिन्दी जनता हिन्दी से फ़ायदा नहीं उठा सक रही है. इसलिए और भी ज़रूरी है कि हिन्दुस्तानी के पक्शपाती हमेशा इस असूल पर अमल करें कि हिन्दुस्तानी पर सिर्फ़ हिन्दुस्तानी व्याकरन का लागूपन होना चाहिए.

मिसाल के तौर पर देखिए, उरदू और हिन्दी में गुन रूप बनाने का आम क़ायदा यह है कि लफ़्ज़ के आख़िर में (ी) लगाई जाए. इस तरीक़े में यह आसानी है कि सिफ़त बनने से लफ़्ज़ में एक हरफ़ का एज़ाफ़ होता है. इस की शकल नहीं बदलती. जैसे बंगाली शेर 'सिन्धी ताजिर' मारवाड़ी पहनावा' समाजी हालत.

इस आम समझ और ठेट हिन्दी तरीक़े के ख़िलाफ़ नाम मात्र हिन्दी प्रेमी

इतिहास	से	इतिहासी	बनाने की बजाए	इतिहासिक
समाज	„	समाजी	„ „	समाजिक
धर्म	„	धर्मी	„ „	धारमिक
बरस	„	हर बरस	कहने „	वारशिक
मास	„	तमासी	„ „	तमासिक
राजनीति	„	राजनीति	बनाने „	राजनीतिक

इस्तेमाल किए जाते हैं. इसी तरह दैनिक, साहित्यिक, सप्ताहिक कहना अहिन्दी तरीक़ा है, जिस को रिवाज देने के लिए हिन्दी के सूरमा बड़ी कोशिश कर रहे हैं.

हिन्दी तरीक़े को छोड़ कर ग़ैरहिन्दी तरीक़े से लफ़्ज़ों का गुन रूप बनाना हिन्दी प्रेमियों का हिन्दी प्रेम नहीं, संस्कृत पूजा और संस्कृती रोब दबाव है जिस के कारन उनमें ख़ुद अपनी भाशा के बारे में छुट वहम (Inferiority Complex) पाया जाता है. हिन्दी प्रेमियों के इस छुट वहम और इसकी वजह से पैदा होने वाली शुद्धी तहरीक से ख़ुद हिन्दी को जितना नुक़सान पहुंचा और अब भी पहुंच रहा है, इस का अन्दाज़ा करना आसान नहीं. हिन्दी वाले और उरदू वाले एक दूसरे से दूर होते जा रहे हैं. अहिन्दी इलाक़ों में रहने वाले लोगों के लिए हिन्दी का सीखना और समझना मुशकिल होता जा रहा है और हिन्दी की तरक़्क़ी में रोड़े अटकाये जा रहे हैं.

سنسکرت ویاکرن اور فارسی، عربی یا انگریزی قایدوں کو چھوڑ کر ہندستانی بھاشا پر سرف ہندستانی ویاکرن لاگو کریں!

اردو کے حامی اردو میں داخل شدا لفزوں پر عربی اور فارسی قواعد لاگو کرکے ادبی جرم کر رہے ہیں. وہ اپنی زبان کو مشکل بناکر خد اردو کو نقسان پہنچا رہے ہیں، کیوں کہ مشکل اردو کو خد اردو کے آم پڑھے لکھے نہیں سمجھتے. ہندی پریمی ہندی بھاشا پر سنسکرت ویاکرن لاگو کرکے بڑا بھاشای اپرادھ کر رہے ہیں. اس کی وجہ سے ہندی کٹھن ہوتی جا رہی ہے اور ہندی جنتا ہندی سے فایدا نہیں اٹھا سک رہی ہے. اس لئے اور بھی زروری ہے کہ ہندستانی کے پکش پاتی ہمیشا اس اسول پر امل کریں کہ ہندستانی پر سرف ہندستانی ویاکرن کا لاگو پن ہونا چاہئے.

مسال کے تور پر دیکھئے، اردو اور ہندی میں گن روپ بنانے کا آم قایدا یہ ہے کہ لفز کے آخر میں (ی) لگائی جاے. اس تریقے میں یہ آسانی ہے کہ سفت بننے سے لفز میں ایک حرف کا ازافا ہوتا ہے. اس کی شکل نہیں بدلتی. جیسے بنگالی شیر، سندھی تاجر، مارواڑی پہناوا، سماجی حالت.

اس آم سمجھ اور ٹھیٹ ہندی تریقے کے خلاف نام ماتر ہندی پریمی

اتہاس	سے	اتہاسی	بنانے کی بجاے	اتہاسک
سماج	„	سماجی	„	ساماجک
دھرم	„	دھرمی	„	دھارمک
برس	„	ہر برس	کہنے „	وارشک
ماس	„	تماسی	„	تماسک
راج نیت	„	راج نیتی	بنائے „	راج نیتک

استعمال کئے جاتے ہیں. اسی ترہ دینک، ساہتیک، ساپتاہک کہنا اہندی تریقا ہے جس کو رواج دینے کے لئے ہندی کے سورما بڑی کوشش کر رہے ہیں.

ہندی تریقے کو چھوڑ کر غیر ہندی تریقے سے لفزوں کا گن روپ بنانا ہندی پریمیوں کا ہندی پریم نہیں، سنسکرت پوجا اور سنسکرتی رعب دباؤ ہے جس کے کارن ان میں خد اپنی بھاشا کے بارے میں چھٹ وہم (Inferiority Complex) پایا جاتا ہے. ہندی پریمیوں کے اس چھٹ وہم اور اس کی وجہ سے پیدا ہونے والی شدھی تہریک سے خد ہندی کو جتنا نقسان پہنچا اور اب بھی پہنچ رہا ہے، اس کا انداز کرنا آسان نہیں. ہندی والے اور اردو والے ایک دوسرے سے دور ہوتے جا رہے ہیں. اہندی الاقوں میں رہنے والے لوگوں کے لئے ہندی کا سیکھنا اور سمجھنا مشکل ہوتا جا رہا ہے اور ہندی کی ترقی میں روڑے اٹکاے جا رہے ہیں.

अगर नाम मात्र हिन्दी प्रेमी जान बूझ कर यह फ़ैसला करते होते कि हिन्दी की तरक़्क़ी में कठिनाइयां होती हैं, तो होने दो मगर हम न तो संस्कृत उच्चारन छोड़ सकते हैं न संस्कृत व्याकरन, तो भी उनकी पालिसी समझ में आ सकती थी. सारा दुख तो यह कि हिन्दी प्रेमी उलटा रास्ता चलते हुए भी, उसी को सीधा रास्ता समझते हैं और अपनी भूल से हिन्दी को कठिन बनाते जा रहे हैं.

अगर हिन्दी प्रेमी प्रजा राज के क़ायल न होते, जनताई भाशा का आदर करने वाले न होते तो भी यह मन बहलावा हो सकता था कि क्या किया जाए, उनके विचार ही प्रजा के विरोध में हैं. हसरत की बात तो यह कि ख़ुद प्रजा पुजारी ही जनताई भाशा का सच्चा आदर न कर के दो ढाई हज़ार बरस पहले की व्याकरन को फिर जनमाना चाहते हैं. वह यह भूल रहे हैं कि इस मक़सद में वह सफल होंगे भी तो कितनी कोशिश और मेहनत के बाद! इतनी ही कोशिश और मेहनत अगर वह आजकल की जनताई भाशा को फैलाने के लिए करें तो उन्हें दस गुनी कामयाबी होगी. वह आज कल के जनताई तरीक़े छोड़ कर डेढ़ दो हज़ार बरस पहले की व्याकरन और उच्चारन को दोबारा ज़िन्दा करने की कोशिश कर रहे हैं और साथ ही हिन्दी को राष्ट्र भाशा सारे देश की हर दिल प्रेमी और प्रचलित भाशा बनाने का सपना देख रहे है.

اگر نام ماتر ھندی پریمی جان بوجھکر یہ فیصلہ کرتے ہوتے کہ ھندی کی ترقی میں کٹھنائیاں ہوتی ھیں' تو ہونے دو مگر ھم نہ تو سنسکرت اُچارن چھوڑ سکتے ھیں نہ سنسکرتی ویاکرن' تو بھی اُن کی پالسی سمجھ میں آسکتی تھی. سارا دکھ تو یہ ھے کہ ھندی پریمی اُلٹا راستا چلتے ہوے بھی' اُسی کو سیدھا راستا سمجھتے ھیں اور اپنی بھول سے ھندی کو کٹھن بناتے جا رھے ھیں.

اگر ھندی پریمی پرجا راج کے قائل نہ ھوتے' جنتای بھاشا کا آدر کرنے والے نہ ھوتے تو بھی یہ من بہلوا ھوسکتا تھا کہ کیا کیا جاے' ان کے وچار ھی پرجا کے وِرودھ میں ھیں. ھسرت کی بات تو یہ ھے کہ خد پرجا پجاری ھی جنتای بھاشا کا سچا آدر نہ کرکے دو ڈھای ھزار برس پہلے کی ویاکرن کو پھر جنمانا چاھتے ھیں. وہ بھول رھے ھیں کہ اِس مقسد میں وہ سپھل ھوں گے بھی تو کتنی کوشش اور مہنت کے باد! اتنی ھی کوشش اور مہنت اگر وہ آجکل کی جنتای بھاشا کو پھیلانے کے لئے کریں تو اُنھیں دس گنی کامیابی ھوگی. وہ آجکل کے جنتای طریقے چھوڑ کر ڈیڑھ ھزار برس پہلے کی ویاکرن اور اچارن کو دوبارہ زندا کرنے کی کوشش کر رھے ھیں اور ساتھ ھی ھندی کو راشٹر بھاشا سارے دیس کی ھر دل پریمی اور پرچلت بھاشا بنانے کا سپنا دیکھ رھے ھیں.

जो लिखने वाला या तक़रीर करने वाला चुन चुन कर संस्कृत या अरबी फ़ारसी के शब्दों का ही इस्तेमाल करता है वह देश का नुक़सान करता है. हमारी राष्ट्र भाशा में वह सब तरह के शब्द आने चाहिये जो जनता में काम आने लगे हैं. फैली हुई भाशा में यह ताक़त रहती ही है इसलिये तो वह सब जगह काम में आती है.

—महात्मा गांधी

جو لکھنے والا یا تقریر کرنے والا چن چن کر سنسکرت یا عربی فارسی کے شبدوں کا ھی اِستعمال کرتا ھے وہ دیش کا نقصان کرتا ھے. ھماری راشٹر بھاشا میں وہ سب طرح کے شبد آنے چاھئیں جو جنتا میں کام آنے لگے ھیں. پھیلی ھوئی بھاشا میں یہ طاقت رھتی ھی ھے اِس لئے تو وہ سب جگہ کام میں آتی ھے.

—مہاتما گاندھی

दाश आकुल

(सादिक़ हिदायत)

[तेहरान से डाक्टर ताराचन्द का एक ख़त आया है जिसमें उन्होंने लिखा है कि :—"जब से मैं यहां आया हूं मैं ईरान की कलचर के अनेक पहलुओं में दिलचस्पी लेने की कोशिश कर रहा हूं. हाल में मैं ईरान का आजकल का कुछ साहित्य पढ़ता रहा हूं. यह नया ईरानी साहित्य पुराने और माने हुए फ़ारसी साहित्य से शैली में और भाव में बहुत अलग हो गया है. एक नई तरह की छोटी कहानियां चल पड़ी हैं. इन कहानियों के प्रसिद्ध लेखकों में एक लेखक का दर्जा बहुत ख़ास है. उसे अभी तक ईरान में बहुत से लोग नहीं जानते. बाहर तो और भी कम जानते हैं. लेकिन साहित्य के आलोचक उसके काम की बड़ी क़द्र करते हैं. छोटी कहानियों के लिखने में उसने बिलकुल एक नई रूह फूंक दी है. उसकी कहानियां आम जनता, उनके दुखों और उनकी मुसीबतों को बयान करती हैं. उसकी भाषा भी उसके दीन-हीन पात्रों की बोल चाल की भाशा है. इस छोटी कहानी लिखने वाले का नाम सादिक़ हिदायत है. उसने बहुत सी कहानियां लिखीं. क़रीब तीन साल हुए उसका देहान्त हो गया. वह ईरान से पेरिस गया हुआ था वहीं अपने हाथों उसने अपनी जान खोदी. अपने फ़ुरसत के वक़्तों में मैंने उसकी एक छोटी कहानी का हिन्दी में तरजुमा किया है जो इस ख़त के साथ मैं तुम्हें भेज रहा हूं. यह उसके अपने ढंग की एक कहानी है. ईरान के शहरों में साधारन ग़रीब लोगों के जीवन के वातावरन का इससे पता चलता है." यही कहानी हम नीचे रहे हैं.

—सुन्दरलाल]

शीराज़ के रहने वाले सभी जानते थे कि दाश आकुल और काका रुस्तम एक दूसरे को एक आंख नहीं भाते. एक की परछाईं पड़ जाए तो दूसरा छुरी भोंकने को तैयार. एक दिन दाश आकुल दुमैल के क़हवा ख़ाने में बेंच पर पलथी मारे बैठा था. यह उस का पुराना अड्डा था. उसके पास एक ऊनी कपड़े से मंढ़ा पिंजरा रखा था. इस पर एक लाल कपड़ा पड़ा था. दाश आकुल नीले रंग के प्याले में उंगली से बरफ़ घोल रहा था. अचानक काका रुस्तम दरवाज़े से घुसा और उस की तरफ़ घृना की निगाह डालते हुए, कमर से बंधी शाल को हाथ से संभालते हुए सामने की बेंच पर बैठ गया. फिर क़हवा ख़ाने के नौकर की तरफ़ मुंह कर के बोला :

داش آکل

(صادق ہدایت)

[طہران سے ڈاکٹر تارا چند کا ایک خط آیا ہے جس میں انہوں نے لکھا ہے کہ :—" جب سے میں یہاں آیا ہوں میں ایران کی کلچر کے انیک پہلوؤں میں دلچسپی لینے کی کوشش کر رہا ہوں . حال میں میں ایران کا آج کل کا کچھ ساہتیہ پڑھتا رہا ہوں . یہ نیا ایرانی ساہتیہ پرانے اور مانے ہوئے فارسی ساہتیہ سے شیلی میں اور بھاؤ میں بہت الگ ہو گیا ہے . ایک نئی طرح کی چھوٹی کہانیاں چل پڑی ہیں . ان کہانیوں کے پرسدھ لیکھکوں میں ایک لیکھک کا درجہ بہت خاص ہے . اسے ابھی تک ایران میں بہت سے لوگ نہیں جانتے . باہر تو اور بھی کم جانتے ہیں . لیکن ساہتیہ کے آلوچک اس کے کام کی بڑی قدر کرتے ہیں . چھوٹی کہانیوں کے لکھنے میں اس نے بالکل ایک نئی روح پھونک دی ہے . اسکی کہانیاں عام جنتا ان کے دکھوں اور ان کی مصیبتوں کو بیان کرتی ہیں . اسکی بھاشا بھی اس کے دین ہین پاتروں کی بول چال کی بھاشا ہے . اس چھوٹی کہانی لکھنے والے کا نام صادق ہدایت ہے . اس نے بہت سی کہانیاں لکھیں . قریب تین سال ہوئے اس کا دیہانت ہو گیا . وہ ایران سے پیرس گیا ہوا تھا وہیں اپنے ہاتھوں اس نے اپنی جان کھو دی . اپنے فرصت کے وقتوں میں میں نے اسکی ایک چھوٹی کہانی کا ہندی میں ترجمہ کیا ہے جو اس خط کے ساتھ میں تمہیں بھیج رہا ہوں . یہ اس کے اپنے ڈھنگ کی ایک کہانی ہے . ایران کے شہروں میں سادھارن غریب لوگوں کے جیون کے واتاورن کا اس سے پتہ چلتا ہے ." یہی کہانی ہم نیچے دے رہے ہیں

—سندرلال]

شیراز کے رہنے والے سبھی جانتے تھے کہ داش آکل اور کاکا رستم ایک دوسرے کو ایک آنکھ نہیں بھاتے . ایک کی پرچھائیں پڑ جائے تو دوسرا چھری بھونکنے کو تیار . ایک دن داش آکل دمیل کے قہوہ خانے میں بینچ پر پلتھی مارے بیٹھا تھا . یہ اس کا پرانا اڈا تھا . اس کے پاس ایک اونی کپڑے سے منڈھا پنجرہ رکھا تھا . اس پر ایک لال کپڑا پڑا تھا . داش آکل نیلے رنگ کے پیالے میں انگلی سے برف گھول رہا تھا . اچانک کاکا رستم دروازہ سے گھسا اور اسکی طرف گھرنا کی نگاہ ڈالتے ہوئے کمر سے بندھی شال کو ہاتھ سے سنبھالتے ہوئے سامنے کی بینچ پر بیٹھ گیا . پھر قہوہ خانہ کے نوکر کی طرف منھ کر کے بولا :

"ब ब बच्चा, ए ए एक चाय ले आ, समझा !" दाश आकुल ने क़हवची के नौकर की तरफ़ घूर कर देखा जैसे उसे आंख के इशारे अपना मतलब बताना चाहता हो. नौकर ने काका का कहना अनसुना कर दिया। दही को पोटली में बांध फिर प्यालों को एक बड़े तांबे के बरतन में भर पानी की बालटी में डुबोया. एक एक को अहिस्ता अहिस्ता निकाल कर सुखाया और झाड़न से शीशे के प्यालों को रगड़ना शुरू किया. रगड़ की गिज़ गिज़ की आवाज़ सुनाई देने लगी.

काका रुस्तम को इस बे परवाही पर गुस्सा आया, दूसरी बार चिल्ला कर बोला "क क क क्या बैहरा है ! तु तुझ से कह रहा हूं."

नौकर ने मुसकराते हुए दाश आकुल की तरफ़ निगाह डाली. काका रुस्तम ने दांतों से होंठ दबाते हुए कहा :

"अरे ! यह दमख़म ! जिन्हें ब बड़ा घ घ घमंड है ब बड़े तीस मार खां बने हैं. आ जाएं. आज रात हो जाए एक दो हाथ हम भी दे...देखें."

दाश आकुल उसी तरह बरफ़ को प्याले में घोलता रहा. फिर उसने कनखियों से हाल चाल को भांपा और शोख़ी से क़हक़हा लगाया, उसके सुफ़ेद पक्के दांतों की पूरी पंगति मेंहदी से रंगी मूंछ के नीचे बिजली सी कौंद गई. वह बोला:

"ढीठ ! यह दल बल ! मालूम होगा कौन रुस्तम पहलवान है, सरदार की दुम !"

सब लोग मुस्करा दिए। हंसे इस लिए नहीं कि काका रुस्तम तुतला कर बोला था। क्यों, यह तो सब जानते ही थे कि उस की ज़बान हकलाती है. बात यह थी दाश आकुल सारे शहर में सफ़ेद सिर वाले बैल की तरह मशहूर था. रात को हर रोज़ मुल्ला इसहाक़ यहूदी की दूकान में जब वह दो बार खिंची शराब की पूरी बोतल चढ़ा सर्दज़क मुहल्ले में खड़ा हो जाता तब काका रुस्तम तो किस गिनती में था उस का बाबा भी होता तो घुटना टेक देता. काका भी समझता था कि दाश आकुल से पाला नहीं ले सकता, न उस का सामना कर सकता था. समझता क्यों नहीं, दो दफ़ा मार खा चुका था, और तीन चार बार वह उस के सीने पर चढ़ बैठा था.

पर भाग्य की गति न्यारी है. एक दिन काका रुस्तम ने मैदान ख़ाली पाकर डींग हांकनी शुरू कर दी. पर वैसे ही दाश आकुल यमदूत की तरह सिर पर आ पहुंचा. बरस पड़ा, व्यंग से लगा कहने :

"काका, बड़ा घर का बीर बना है. मालूम होता है अफ़ीम का अंटा ज़ियादा चढ़ा लिया है, बहुत मस्ती छाई है. जानता नहीं कौन है ? छोड़ इस ढिठाई को, बहुत दून

"ب بچہ' اے...اے ایک چائے لے آ' سمجھا!" داش آکل نے قہوچی کے نوکر کی طرف گھور کر دیکھا جیسے اُسے آنکھ کے اِشارے اپنا مطلب بتانا چاہتا ہو. نوکر نے کاکا کا کہنا ان سنا کر دیا . دھی کو پوٹلی میں باندھ پھر پیالوں کو ایک بڑے تانبے کے برتن میں بھر پانی کی بالٹی میں ڈبویا. ایک ایک کو آہستہ آہستہ نکال کر سکھایا اور جھاڑن سے شیشے کے پیالوں کو رگڑنا شروع کیا . رگڑ کی گز گز کی آواز سنائی دینے لگی .

کاکا رستم کو اِس بے پرواہی پر غصہ آیا' دوسری بار چلا کر بولا "ک ک ک کیا بہرہ ہے ! تو تجھ سے کہہ رہا ہوں ."

نوکر نے مسکراتے ہوئے داش آکل کی طرف نگاہ ڈالی . کاکا رستم نے دانتوں سے ہونٹ دباتے ہوئے کہا : " ارے ! یہ دم خم ! جنھیں ب بڑا گھ گھمنڈ ہے ب بڑے تیس مار خاں بنے ہیں . آ جائیں . آج رات ہو جائے ایک دو ہاتھ ہم بھی دے......دیکھیں ."

داش آکل اُسی طرح برف کو پیالے میں گھولتا رہا . پھر اُس نے کنکھیوں سے حال چال کو بھانپا اور شوخی سے قہقہہ لگایا' اُس کے سفید پکے دانتوں کی پوری پنگتی مہندی سے رنگی مونچھ کے نیچے بجلی سی کوند گئی . وہ بولا :

" ڈھیٹھ ! یہ دل بل ! معلوم ہوگا کون رستم پہلوان ہے' سردار کی دم !"

سب لوگ مسکرا دیئے . ہنسے اِس لئے نہیں کہ کاکا رستم تتلا کر بولا تھا . کیوں' یہ تو سب جانتے ہی تھے کہ اُسکی زبان ہکلاتی ہے . بات یہ تھی داش آکل سارے شہر میں سفید سر والے بیل کی طرح مشہور تھا . رات کو ہر روز ملا اِسحاق یہودی کی دوکان میں جب وہ دوبار کھنچی شراب کی پوری بوتل سردزک محلے میں کھڑا ہو جاتا تب کاکا رستم تو کس گنتی میں تھا اُس کا بابا بھی ہوتا تو گھٹنا ٹیک دیتا . کاکا بھی سمجھتا تھا کہ داش آکل سے پالا نہیں لے سکتا' نہ اُس کا سامنا کر سکتا تھا . سمجھتا کیوں نہیں' دو دفعہ مار کھا چکا تھا' اور تین چار بار وہ اُس کے سینے پر چڑھ بیٹھا تھا .

پر بھاگیہ کی گتی نیاری ہے . ایک دن کاکا رستم نے میدان خالی پا کر ڈینگ ہانکنی شروع کر دی . پر ویسے ہی داش آکل یم دوت کی طرح سر پر آ پہونچا . برس پڑا ویبنگ سے کہنے لگا :

" کاکا' بڑا گھر کا ویر بنا ہے . معلوم ہوتا ہے افیم کا اتنا زیادہ چڑھا لیا ہے' بہت مستی چھائی ہے . جانتا جانتا نہیں کون ہے ؟ چھوڑ اِس ڈھٹھائی کو' بہت دون

की मत ले, नीच ! बना है कहीं का फक्कड़. लज्जा नहीं आती ? यह अच्छा भिखमंगों का पेशा लिया है. रात हुई और आदमियों के रास्ते में आ खड़े हुए. वली के बेटों की क़सम अगर फिर दुबारा बदमस्ती की तो तेरी मूछों को धूआं ही दे दूंगा ! इसी चाक़ू से कहीं दो टुकड़े न कर दिए हों !"

काका रुस्तम झटपट दुम कूलों में दबा चलता बना. पर दिल में कीने की आग भड़क गई. ताक में रहने लगा मौक़ा मिले तो इस से बदला लूं.

किन्तु दाश आकुल के साथ सारे शीराज़ के लोग मित्रता रखते थे. क्यों कि जहां उस ने एक तरफ़ सारे सर्दज़क के मुहल्ले को अपनी मीरास बना लिया था वहां बच्चों और औरतों से कुछ काम नहीं रखा था। बल्कि इस के विरुद्ध आदमियों के साथ भी दया भाव बरतता था अगर कोई मत मारा किसी औरत से हंसी करता या कड़ी बात कहता मिला तो उस के लिए दाश आकुल से जान छुड़ा कर निकल जाना कठिन था. बहुत दफ़ा देखा गया दाश आकुल ने लोगों की रुपये पैसे से सहायता की और मौज आ गई तो दूसरों का बोझा उठा कर उनके घर तक पहुंचा दिया. पर उस से यह नहीं देखा जाता था कि कोई भी अपने को उस से ऊंचा समझे. कहां काका रुस्तम जो प्रति दिन तीन मिसक़ाल अफ़ीम का धूआं कर देता था और सैकड़ों तरह की धोका धड़ी में लगा रहता था.

जब से उसका क़हवा ख़ाने में अपमान हुआ था काका रुस्तम ज़हर का घूंट पिये बैठा था. एक दिन की बात है मूछों को चबा रहा था. छुरी से काटो तो बदन से लहू न निकले. बैठे बैठे कुछ देर पीछे उसने क़हक़हा लगाया. और सब लोग तो चुप रहे पर क़हवची का नौकर जो फ़टक रंग, खुले गले का कुर्ता, रात की टोपी, साटन का पजामा पहने पेट पर हाथ धरे खड़ा था हंसी के मारे उलटा हुआ जा रहा था. और सब भी उसे देख कर हंसी न रोक सके. काका अपनी जगह से उछल पड़ा, शीशे की चीनीदानी को उठा ज़ोर से क़हवची के नौकर के सिर पर दे पटखा. चीनीदानी चायदानी से टकराई और चायदानी गिलाफ़ समेत मेज़ पर उलटती पलटती ज़मीन पर गिरी और कई प्याले टूट गए. काका रुस्तम खड़ा हो गया गुस्से से लाल क़हवा ख़ाने से बाहर निकल गया.

क़हवची ने परेशानी की हालत में चायदानी की तरफ़ देखा और बोलाः—

"एक रुस्तम था और उसका हथियार ! एक मैं हूं और यह टूटी चायदानी !"

इस वाक्य को बड़ी दुख भरी आवाज़ में अदा किया.

مت لے، نیچ ! بنا ہے کہیں کا پھکڑ۔ لجا نہیں آتی؟ اچھا بھکمنگوں کا پیشہ لیا ہے۔ رات ہوئی اور آدمیوں کے راستے میں آ کھڑے ہوئے۔ ولی کے بیٹوں کی قسم اگر پھر دوبارہ بدمستی کی تو تیری مونچھوں کو دھواں ہی دونگا ! اسی چاقو سے کہیں دو ٹکڑے نہ کر دیئے ہوں !"

کاکا رستم جھٹ پٹ دم کولوں میں دبا چلتا بنا۔ پر دل میں کینے کی آگ بھڑک گئی۔ تاک میں رہنے لگا موقعہ ملے تو اس سے بدلہ لوں۔

کنتو داش آکل کے ساتھ سارے شیراز کے لوگ مترتا رکھتے تھے۔ کیونکہ جہاں اس نے ایک طرف سارے سردزک کے محلے کو اپنی میراث بنا لیا تھا وہاں بچوں اور عورتوں سے کچھ کام نہیں رکھا تھا۔ بلکہ اس کے وردھ آدمیوں کے ساتھ بھی دیا بھاؤ برتتا تھا اور اگر کوئی مت مارا کسی عورت سے ہنسی کرتا یا کڑی بات کہتا ملا تو اس کے لئے داش آکل سے جان چھڑا کر نکل جانا کٹھن تھا۔ بہت دفعہ دیکھا گیا داش آکل نے لوگوں کی روپے پیسے سے سہائتا کی اور موج آگئی تو دوسروں کا بوجھا اٹھا کر ان کے گھر تک پہونچا دیا۔ پر اس سے یہ نہیں دیکھا جاتا تھا کہ کوئی بھی اپنے کو اس سے اونچا سمجھے۔ کہاں کاکا رستم جو پرتی دن تین مسقال افیم کا دھواں کر دیتا تھا اور سینکڑوں طرح کی دھوکہ دھڑی میں لگا رہتا تھا۔

جب سے اس کا قہوہ خانہ میں اپمان ہوا تھا کاکا رستم زہر کا گھونٹ پئے بیٹھا تھا۔ ایک دن کی بات ہے مونچھوں کو چبا رہا تھا۔ چھری سے کاٹو تو بدن سے لہو نہ نکلے۔ بیٹھے بیٹھے کچھ دیر پیچھے اس نے قہقہہ لگایا۔ اور سب لوگ تو چپ رہے پر قہوچی کا نوکر جو فٹک رنگ، کھلے گلے کا کرتہ، رات کی ٹوپی، ساٹن کا پاجامہ پہنے پیٹ پر ہاتھ دھرے کھڑا تھا ہنسی کے مارے الٹا ہوا جا رہا تھا۔ اور سب بھی اسے دیکھ کر ہنسی نہ روک سکے۔ کاکا اپنی جگہ سے اچھل پڑا، شیشے کی چینی دانی کو اٹھا زور سے قہوچی کے نوکر کے سر پر دے پٹخا۔ چینی دانی چائے دانی سے ٹکرائی اور چائے دانی غلاف سمیت میز پر سے الٹتی پلٹتی زمین پر آ گری اور کئی پیالے ٹوٹ گئے۔ کاکا رستم کھڑا ہوگیا۔ غصہ سے لال قہوہ خانہ سے باہر نکل گیا۔

قہوچی نے پریشانی کی حالت میں چائے دانی کی طرف دیکھا اور بولا :—

"ایک رستم تھا اور اس کا ہتھیار! ایک میں ہوں اور یہ ٹوٹی چائے دانی !"

اس واکیہ کو بڑی دکھ بھری آواز میں ادا کیا۔

लेकिन इस कारन कि इस में रुस्तम की तरफ़ संकेत था, लोगों को और भी ज़ोर से हंसी आई. क़हवची ने नौकर पर भुंझला कर आघात किया, पर दाश आकुल ने मुसकराते हुए रुपयों का बटवा निकाला और क़हवची के सामने फेंक दिया.

क़हवची ने बटवा उठा लिया. हथेली में लेकर तोला और मुस्कराया.

इसी बीच एक छोटे क़द का आदमी मख़मल की जाकट खुली मोरी का पाजामा, फ़ेल्ट टोपी पहने घबराया हुआ क़हवे खाने के अन्दर आया. उसने चारों तरफ़ देखा, दाश आकुल के सामने आकर सलाम की और बोला :—

"हाजी समद का देहान्त हो गया." दाश आकुल ने सिर ऊंचा किया और कहा :—

"ईश्वर क्षमा करे."

"पर, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि उसने वसीयत की है."

"मैं महा ब्राह्मन तो हूं नहीं, जाओ महा ब्राह्मनों को ख़बर दो."

"आख़िर उसमें तुम्हें ही तो अपनी वसीयत का वकील और मीरास का उत्तरदायी बनाया है."

यह सुनना था कि दाश आकुल चौंक पड़ा. दो बार उसने उसे सिर से पैर तक देखा और माथे पर हाथ फेरा. उसकी अंडे नुमा टोपी पीछे की तरफ़ खिसक गई थी और दुरंगा माथा दिखाई देने लगा था. आधा धूप की ताप से जल कर कत्थई रंग का हो गया था और जो टोपी के नीचे था सफ़ेद था. फिर उसने सिर हिलाया, पाइप को जिस की नै पर पच्चीकारी का काम था जेब से निकाला. धीरे धीरे चिलम में तम्बाकू भरा और अंगूठे से उसे जमाया. फिर उसे सुलगा कर बोला :

"ईश्वर हाजी को क्षमा करें. अब तो बेचारा चल बसा, पर कुछ अच्छा नहीं कर गया, मुझे झगड़े में फंसा गया. ख़ैर, तुम जाओ, मैं पीछे पीछे आता हूं."

यह आदमी जो आया था हाजी समद का पेशकार था. लम्बी डग लगा वह क़हवाख़ाने से बाहर हो गया. दाश आकुल के माथे पर सिकुड़नें पड़ गईं. कुछ देर तो दिल बहलाव के लिये पाइप के पुक लगाए, पर ऐसा लगता था मानों क़हवाख़ाने का हंसमुख आकाश अचानक काले बादलों से ढक गया हो. कुछ देर बाद दाश आकुल ने पाइप की राख झाड़ी, खड़ा हुआ, ऊनी कपड़े से मढ़े पिंजरे को क़हवची के नौकर को सौंपा और क़हवा ख़ाने से बाहर निकला.

जिस समय दाश आकुल हाजी समद के मरदाने में

لیکن اِس کارن کہ اِس میں رستم کی طرف سنکیت تھا، لوگوں کو اور بھی زور سے ہنسی آئی ۔ قہوچی نے نوکر پر جھنجھلا کر آگھات کیا، پر داش آکل نے مسکراتے ہوئے روپیوں کا بٹوا نکالا اور قہوچی کے سامنے پھینک دیا ۔

قہوچی نے بٹوا اُٹھا لیا ۔ ہتھیلی میں لے کر تولا اور مسکرایا ۔

اِسی بیچ ایک چھوٹے قد کا آدمی مخمل کی جاکٹ کھلی موری کا پاجامہ، فیلٹ ٹوپی پہنے گھبرایا ہوا قہوہ خانے کے اندر آیا ۔ اُس نے چاروں طرف دیکھا، داش آکل کے سامنے آ کر سلام کی اور بولا :—

" حاجی صمد کا دیہانت ہوگیا ." داش آکل نے سر اونچا کیا اور کہا :—

" ایشور چھما کرے ."

" پر کیا تمہیں نہیں معلوم کہ اُس نے وصیت کی ہے ."

" میں مہا براہمن تو ہوں نہیں، جاؤ مہابراہمنوں کو خبر دو ."

" آخر اِس نے تمہیں ہی تو اپنی وصیت کا وکیل اور میراث کا اُتر دائی بنایا ہے ."

یہ سننا تھا کہ داش آکل چونک پڑا ۔ دو بار اُس نے اسے سر سے پیر تک دیکھا اور ماتھے پر ہاتھ پھیرا ۔ اُسکی انڈے نما ٹوپی پیچھے کی طرف کھسک گئی تھی اور دورنگا ماتھا دکھائی دینے لگا تھا ۔ آدھا دھوپ کی تاپ سے جل کر کتھئی رنگ کا ہوگیا تھا اور جو ٹوپی کے نیچے تھا سفید تھا ۔ پھر اُس نے سر ہلایا، پائپ کو جس کی نے پر پچیکاری کا کام تھا جیب سے نکال نکالا ۔ دھیرے دھیرے چلم میں تمباکو بھرا اور انگوٹھے سے اُسے جمایا ۔ پھر اُسے سلگا کر بولا :

" ایشور حاجی کو چھما کریں ۔ اب تو بیچارہ چل بسا، پر کچھ اچھا نہیں کر گیا، مجھے جھگڑے میں پھنسا گیا ۔ خیر، تم جاؤ، میں پیچھے پیچھے آتا ہوں ."

یہ آدمی جو آیا تھا حاجی صمد کا پیشکار تھا ۔ لمبی ڈگ لگا وہ قہوہ خانہ سے باہر ہو گیا ۔ داش آکل کے ماتھے پر سکوڑنیں پڑ گئیں ۔ کچھ دیر تو دل بہلاؤ کے لئے پائپ کے پک لگائے، پر ایسا لگتا تھا مانو قہوہ خانہ کا ہنس مکھ آکاش اچانک کالے بادلوں سے ڈھک گیا ہو ۔ کچھ دیر بعد داش آکل نے پائپ کی راکھ جھاڑی، کھڑا ہوا، اونی کپڑے سے منڈھے پنجرے کو قہوچی کے نوکر کو سونپا اور قہوہ خانہ سے باہر نکلا ۔

جس سمے داش آکل حاجی صمد کے مردانے میں

पहुंचा मातम की मजलिस उठ चुकी थी. कुछ क़ुरान पढ़ने वाले और कारबारी रह गए थे जो पैसों के बटवारे पर झगड़ रहे थे. कुछ देर हौज़ के सामने खड़ा रखने के बाद उसे एक बड़े कमरे में ले गए जिस की खिड़कियां मरदाने में खुलतीं थीं. हाजी की बीबी परदे के पीछे आकर खड़ी हुई. मामूली सलाम बंदगी के बाद दाश आकुल फ़र्श पर बैठ गया और बीबी से बोला :

"ख़ानम ! सुखी रहो ! ईश्वर तुम्हारे बच्चों की रक्षा करें !"

बीबी ने मरी आवाज़ में कहा :

"रात को जैसे हाजी का हाल बुरा होने लगा, जा कर इमाम जुमे को उसके सिरहाने ले आए और हाजी ने सब सज्जनों के सामने तुम्हें अपना वकील और उत्तराधिकारी नियत किया. अवश्य ही तुम हाजी को पहले से जानते होगे ?"

"हां पांच साल हुए हम काज़रुन के सफ़र में मिले थे."

"ईश्वर हाजी को बख़्शे, सदा कहा करता था यदि कोई मर्द है तो बस एक ही है."

"ख़ानम ! मैं तो अपने आप को सब बंधनों से मुक्त रखना चाहता था. पर मेरे ऊपर अब तो बेचारे मुए हाजी की थाती का बोझ आ पड़ा है. मुझे सूरज की इन किरनों की शपथ है कि जीते जी इन सब पगड़धारी मुल्लाओं से समझ लूंगा."

यह कह कर उसने जो गरदन मोड़ी तो दूसरे परदे के पीछे से एक लड़की खड़ी दिखाई दी. उसका मुखड़ा दमक रहा था और उसकी काली आंखें मोहने वाली थीं. पलक भर में उन दोनों की आंखें मिलीं. पर ऐसा लगता है कि लड़की लजा गई, उसने परदा गिरा दिया और पीछे हट गई. क्या यह लड़की सचमुच सुन्दर नहीं थी ?

होगी, कुछ भी हो उसकी मन मोहिनी आंखें अपना काम कर गईं. दाश आकुल का दिल लोट पोट हो गया, उसका सिर झुक गया और चेहरा लाल हो गया.

यह लड़की मिरजान, हाजी समद की बेटी थी जो कौतूहल वश शहर के विख्यात सिर धरे और अपने रक्षक के दर्शनों के लिये चली आई थी.

दूसरे दिन से दाश आकुल हाजी के कामों की देख भाल में लग गया. उस ने एक पुरानी चीज़ों के जानकार को, मुहल्ले के दो साथियों को और एक मुन्शी को अपने साथ लिया और सब चीज़ों की बड़ी सावधानी के साथ सूची बनाई और इन्हें सियाहे पर चढ़ाया. जो चीज़ें ज़ियादा थीं उन्हें गोदाम में भर दिया और उस के दरवाज़ों पर मुहर लगा दी. जो बेचने लायक़ थीं उन्हें बेच दिया.

پہونچا ماتم کی مجلس اُٹھ چکی تھی. کچھ قرآن پڑھنے والے اور کاروباری رہ گئے تھے جو پیسوں کے بٹواوے پر جھگڑ رہے تھے. کچھ دیر حوض کے سامنے کھڑا رکھنے کے بعد اُسے ایک بڑے کمرے میں لے گئے جسکی کھڑکیاں مردانے میں کھلتی تھیں. حاجی کی بیوی پردہ کے پیچھے آ کر کھڑی ہوئی. معمولی سلام بندگی کے بعد داش آکل فرش پر بیٹھ گیا اور بیوی سے بولا :

" خانم ! سکھی رہو ! ایشور تمہارے بچوں کی رکشا کریں !"

بیوی نے بھری آواز میں کہا :

" رات کو جیسے حاجی کا حال برا ہونے لگا، جا کر اِمام جمعہ کو اُس کے سرھانے لے آئے اور حاجی نے سب سجنوں کے سامنے تمہیں اپنا وکیل اور اُترادھکاری نیت کیا. اوشیہ ہی تم حاجی کو پہلے سے جانتے ہوگے؟"

" ہاں پانچ سال ہوئے ہم قازرون کے سفر میں ملے تھے."

" ایشور حاجی کو بخشے، سدا کہا کرتا تھا یدی کوئی مرد ہے تو بس ایک ہی ہے."

" خانم ! میں تو اپنے آپ کو سب بندھنوں سے مکت رکھنا چاہتا تھا. پر میرے اوپر اب تو بیچارے موئے حاجی کی تھاتی کا بوجھ آ پڑا ہے. مجھے سورج کی اِن کرنوں کی شپتھ ہے کہ جیتے جی اِن پگڑ دھاری ملاؤں سے سمجھ لوں گا."

یہ کہکر اس نے جو گردن موڑی تو دوسرے پردے کے پیچھے سے ایک لڑکی کھڑی دکھائی دی. اُس کا مکھڑا دمک رہا تھا اور اُسکی کالی آنکھیں موہنے والی تھیں. پلک بھر میں اُن دونوں کی آنکھیں ملیں. پر ایسا لگتا ہے کہ لڑکی لجا گئی، اُس نے پردہ گرا دیا اور پیچھے ہٹ گئی. کیا یہ لڑکی سچ مچ سندر نہیں تھی !

ہوگی، کچھ بھی ہو اُسکی من موہنی آنکھیں اپنا کام کر گئیں. داش آکل کا دل لوٹ پوٹ ہو گیا، اُس کا سر جھک گیا اور چہرہ لال ہو گیا.

یہ لڑکی مرجان، حاجی صمد کی بیٹی تھی جو کوتہول وش شہر کے وکھیات سر دھرے اور اپنے رکشک کے درشنوں کے لئے چلی آئی تھی.

دوسرے دن سے داش آکل حاجی کے کاموں کی دیکھ بھال میں لگ گیا. اُس نے ایک پرانی چیزوں کے جانکار کو، محلے کے دو ساتھیوں کو اور ایک منشی کو اپنے ساتھ لیا اور سب چیزوں کی بڑی ساودھانی کے ساتھ سوچی بنائی اور اِنہیں سیاہے پر چڑھایا. جو چیزیں زیادہ تھیں اُنہیں گودام میں بھر دیا اور اُس کے دروازوں پر مہر لگا دی. جو بیچنے لائق تھیں اُنہیں بیچ دیا.

म कानों के क़बालों को परीक्षा के लिए भेज दिया. जो रुपया लेना था वसूल कर लिया और जो देना था दे दिया.

इन सब कामों को ज्यों त्यों दो दिन रात लगा कर समाप्त किया. तीसरी रात दाश आकुल थका मांदा सैयद हाज ग़रीब के चौराहे के नज़दीक अपने घर की तरफ़ रवाना हुआ. रास्ते में इमाम क़ुली लोहार मिला कहने लगा :

"आज दो दिन से काका रुस्तम तुम्हारी राह देख रहा है. कल रात कहता था उस दिन तो बड़ी डींग हांकता था, बड़ी शेख़ी बघारता था पर जान पड़ता है अब सब कहा सुना भूल गया."

दाश आकुल ने मूछों पर ताव दिया और कहा :

"उसे कहने दो."

दाश आकुल को ख़ूब याद था तीन दिन पहले दोमेल के क़हवा ख़ाने में काका रुस्तम उस से बदला लेने की सोच रहा था. पर दाश आकुल अपने प्रतिस्पर्धी को अच्छी तरह समझता था, जानता था कि काका रुस्तम ने इमाम क़ुली को गांठा है ताकि उसे नीचा दिखाए. इसी कारन उसने इस के कहने को कुछ महत्व नहीं दिया. अपनी राह ली और चलता बना. रास्ते में उस का सारा ध्यान मिरज़ान की तरफ़ लगा था. जितना यत्न करता था कि उस के मुखड़े को अपनी आंखों से दूर करे उतने ही अधिक बल पूर्वक उसकी मूर्ती आंखों के सामने आ खड़ी होती थी.

दाश आकुल पैंतीस बरस का जवान था. मोटा ताज़ा पर कुरूप था. जो उसे पहली दफ़ा देखता था इस के चेहरे से घिन करने लगता था. पर अगर कुछ देर उसके साथ बात चीत को बैठ जाए अथवा उस की जीवन यात्रा के क़िस्सों को जो लोगों की ज़बानों पर चढ़े थे सुने तो उस का जादू आदमी के हृदय को मोह लेता था. उस के चेहरे के आड़े तिरछे घाव जो चाकू से लगे थे अनदेखे से हो जाते थे. और उस के चेहरे से तेज़ टपकता था. उस की नीली आंखें, भारी भरवां भवें, चौड़े चकले गाल, सुतवां नाक और काली काली दाड़ी और मूंछ बड़ा आकर्षन रखते थे. लेकिन घावों से चेहरा भद्दा हो गया था, गाल और माथा तलवार के ज़ख़्मों से घायल थे और खाल पर घाव भरने के दाने पड़ गए थे. चेहरे की लकीरों से नीचे लाल लाल मांस चमकता था. और सब से भद्दा यह था कि बाईं आंख के किनारे का मास नीचे की ओर खिंच आया था.

दाश आकुल का बाप फ़ार्स प्रांत के बड़े ज़मींदारों में से था. उस के मरने पर उस की सारी सम्पत्ति इस इकलौते बेटे को मिली थी. पर दाश आकुल का हाथ खुला था,

مکانوں کے قبالوں کو پریکشا کے لئے بھیج دیا . جو روپیہ لینا تھا وصول کر لیا اور جو دینا تھا دے دیا .

اِن سب کاموں کو جیوں تیوں دو دن رات لگا کر سماپت کیا . تیسرا رات داش آکل تھکا ماندہ سید حاج غریب کے چوراھے کے نزدیک اپنے گھر کی طرف روانہ ھوا . راستہ میں اِمام قلی لوھار ملا اور کہنے لگا :

" آج دو دن سے کاکا رستم تمہاری راہ دیکھ رہا ھے . کل رات کہتا تھا اُس دن تو بڑی ڈینگ ھانکتا تھا' بڑی شیخی بگھارتا تھا' پر جان پڑتا ھے اب سب کہا سنا بھول گیا ."

داش آکل نے مونچھوں پر تاؤ دیا اور کہا :

" اُسے کہنے دو ."

داش آکل کو خوب یاد تھا تین دن پہلے دومیل کے قہوہ خانہ میں کاکا رستم اُس سے بدلہ لینے کی سوچ رہا تھا . پر داش آکل اپنے پرتی اسپردھی کو اچھی طرح سمجھتا تھا' جانتا تھا کہ کاکا رستم نے اِمام قلی کو گانٹھا ھے تاکہ اُسے نیچا دکھائے . اِسی کارن اُس نے اِس کے کہنے کو کچھ مہتو نہیں دیا . اپنی راہ لی اور چلتا بنا . راستے میں اُس کا سارا دھیان مرجان کی طرف لگا تھا . جتنا یتن کرتا تھا کہ اس کے مکھڑے کو اپنی آنکھوں سے دور کرے اُتنے ھی ادھک بل پوروک اُسکی مورتی آنکھوں کے سامنے آ کھڑی ھوتی تھی .

داش آکل پینتیس برس کا جوان تھا . موٹا تازہ پر کروپ تھا . جو اُسے پہلی دفعہ دیکھتا تھا اِس کے چہرے سے گھن کرنے لگتا تھا . پر اگر کچھ دیر اُس کے ساتھ بات چیت کو بیٹھ جائے اتھوا اُسکی جیون یاترا کے قصوں کو جو لوگوں کی زبانوں پر چڑھے تھے سنیں تو اُسکا جادو آدمی کے ھردئے کو موہ لیتا تھا . اُس کے چہرہ کے آڑے ترچھے گھاؤ جو چاقو سے لگے تھے ان دیکھے سے ھو جاتے تھے . اور اِس کے چہرہ سے تیج ٹپکتا تھا . اُسکی نیلی آنکھیں' بھاری بھرواں بھویں' چوڑے چکلے گال' ستواں ناک اور کالی کالی داڑھی اور مونچھ بڑا آکرشن رکھتے تھے . لیکن گھاؤں سے چہرہ بھدا ھوگیا تھا' گال اور ماتھا تلوار کے زخموں سے گھائل تھے اور کھال پر گھاؤ بھرنے کے دانے پڑ گئے تھے . چہرہ کی لکیروں سے نیچے لال لال مانس چمکتا تھا . اور سب سے بھدا یہ تھا کہ بائیں آنکھ کے کنارے کا مانس نیچے کی اور کھنچ آیا تھا .

داش آکل کا باپ فارس پرانت کے بڑے زمیداروں میں سے تھا . اُس کے مرنے پر اُسکی ساری سمپتی اِس اکلوتے بیٹے کو ملی تھی . داش آکل کا ھاتھ کھلا تھا'

वह बेपरवाह और लुटाऊ था. दुनियां के धन दौलत की क़दर नहीं करता था. जीवट, स्वाधीन, उदार और अभिमानी जीवन बिताता था. और किसी बात में रुचि नहीं थी. अपनी थाती को अभागों दरिद्रों को खिलाने बांटने में लगाता था. तेज़ दोहरी खिंची शराब पीता था, चौराहे पर खड़े हो आवाज़े कसता था, या अपने मित्रों के साथ जो उसकी चापलूसी में लगे रहते थे बैठ कर समय बिताता था. उस के गुन औगुनों की यहीं तक सीमा थी. पर अचंभे की बात यह थी कि अभी तक प्रेम ने उसके जीवन को विकल नहीं किया था. कितनी बार ऐसा हुआ उसके चार दोस्तों ने उसे घेरा और मंडली जमाई परन्तु वह सदा इन से अलग अलग रहा. लेकिन जिस दिन से हाजी समद का वकील और उत्तरदायी बना और मिरजान को देखा उस के जीवन में परिवर्तन हो गया. एक ओर तो बैकुंठवासी हाजी का देनदार था और कंधों पर उत्तर-दायित्व का बोझ संभाले था, परन्तु दूसरी ओर मिरजान के हाथों में अपने हृदय की सारी दौलत सौंप चुका था. सब चीज़ों से अधिक उसे उत्तरदायित्व का बोझ दबाए था. वह आदमी जिसे अपने माल की तनिक परवाह न थी और जिसने अपने धन के बड़े भाग की अवहेलना की, आग में आहुति दे दी थी, प्रति दिन तड़के जैसे ही उठता था इस फ़िक्र में पड़ जाता था कि कैसे हाजी की जमींदारी की आमदनी को बढ़ाए. उस ने हाजी के बीवी बच्चों को एक छोटे मकान में भेज दिया और उस के निजी मकान को किराये पर उठा दिया. बच्चों के पढ़ने के लिए अध्यापक रख दिया और रुपये को व्योपार में लगा दिया. सवेरे से शाम तक दौड़ धूप में ज़मीन और इलाक़े की देख भाल में लगा रहता था.

इस समय से दाश आकुल ने रातों का घूमना और चौरस्तों का आखेट छोड़ दिया. यार दोस्तों का आवेश भी कम हो गया और सिर पर जो पागलपन सवार रहता था उतर गया. पर वह सब लुंगे उधाड़े गुंडे जो उस के प्रतिस्पर्धी थे मुल्लाओं के बहकाने से उसके पीछे पड़ गए. मुल्लाओं को यह जलन थी कि दाश आकुल ने हाजी समद की बपौती को उनके हाथ नहीं लगने दिया. इसी से यह सब उसे गालियां देते थे और अपनी बैठकों और क़हवा ख़ानों में उसकी बातों का मज़ाक़ उड़ाते थे. पाचिनार के क़हवा ख़ाने में दाश आकुल की बहुधा मट्टी पलीद करते थे और कहते थे :—

दाश आकुल की बात है न, मुंह क्या है किसी कुत्ते जैसा ! यारो, अब तो अच्छा ख़ासा भिखारी है. हाजी के घर में पड़ा दुम हिलाता रहता है. मालूम होता है किसी चीज़ के फेर में है. अब तो जब सरज़दक मुहल्ले में दाख़िल होता है तो दुम दबा कर निकल जाता है.

وہ بے پرواہ اور لٹاؤ تھا. دنیا کے دھن دولت کی قدر نہیں کرتا تھا ۔ جیوٹ، سوادھین، اُدار اور ابھیمانی جیون بتاتا تھا. اور کسی بات میں رچی نہیں تھی . اپنی تھاتی کو ابھاگوں دردروں کو کھلانے بانٹنے میں لگا تھا . تیز دوھری کھنچی شراب پیتا تھا، چوراھے پر کھڑے ھو کر آوازیں کستا تھا، یا اپنے متروں کے ساتھ جو اسکی چاپلوسی میں لگے رھتے تھے بیٹھکر سمے بتاتا تھا . اس کے گن اوگنوں کی یہیں تک سیما تھی ، پر اچنبھے کی بات یہ تھی کہ ابھی تک پریم نے اس کے جیون کو وکل نہیں کیا تھا ۔ کتنی بار ایسا ھوا اُس کے چار دوستوں نے اُسے گھیرا اور منڈلی جمائی پرنتو وہ سدا ان سے الگ الگ رھا ۔ لیکن جس دن سے حاجی صمد کا وکیل اور اُتر دائی بنا اور مرجان کو دیکھا اُس کے جیون میں پری ورتن ھوگیا ۔ ایک اور تو بیکنٹھ باسی حاجی کا دیندار تھا اور کندھوں پر اُتر دائتو کا بوجھ سنبھالے تھا، پرنتو دوسری اور مرجان کے ھاتھوں میں اپنے هردے کی ساری دولت سونپ چکا تھا ۔ سب چیزوں سے ادھک اُسے اتر دائتو کا بوجھ دبائے تھا ۔ وہ آدمی جسے اپنے مال کی تنک پرواہ نہ تھی اور جس نے اپنے دھن کے بڑے بھاگ کی اوھیلنا کی، آگ میں آھوتی دے دی تھی، پرتی دن تڑکے جیسے ھی اُٹھتا تھا اس فکر میں پڑ جاتا تھا کہ کیسے حاجی کی زمینداری کی آمدنی کو بڑھائے ۔ اُس نے حاجی کے بیوی بچوں کو ایک چھوٹے مکان میں بھیج دیا اور اُس کے نجی مکان کو کرائے پر اُٹھا دیا ۔ بچوں کے پڑھنے کے لئے ادھیاپک رکھ دیا اور روپے کو بیوپار میں لگا دیا. سویرے سے شام تک دوڑ دھوپ میں زمین اور علاقہ کی دیکھ بھال میں لگا رھتا تھا ۔

اِس سمے سے داش آکل نے راتوں کا گھومنا اور چورستوں کا آکھیٹ چھوڑ دیا ۔ یار دوستوں کا آویش بھی کم ھوگیا اور سر پر جو پاگل پن سوار رھتا تھا اُتر گیا ۔ پر وہ سب لنگے اکھاڑے گنڈے جو اُس کے پرتی اِسپردھی تھے ملاؤں کے بہکانے سے اُس کے پیچھے پڑ گئے ۔ ملاؤں کو یہ جلن تھی کہ داش آکل نے حاجی صمد کی بپوتی کو اُن کے ھاتھ نہیں لگنے دیا ۔ اِسی سے یہ سب اُسے گالیاں دیتے تھے اور بیٹھکوں اور قہوہ خانوں میں اُس کی باتوں کا مذاق اُڑاتے تھے ۔ پاچی نار کے قہوہ خانہ میں داش آکل کی بہودھا مٹی پلید کرتے تھے اور کہتے تھے :—

” داش آکل کی بات ھے نہ، منھ کیا ھے کسی کتے جیسا ! یارو، اب تو اچھا خاصہ بھکاری ھے ۔ حاجی کے گھر میں پڑا دم ھلاتا رھتا ھے ۔ معلوم ھوتا ھے کسی چیز کے پھیر میں ھے ۔ اب تو جب سردزک محلے میں داخل ھوتا ھے تو دم دبا کر نکل جاتا ھے ۔“

काका रुस्तम जिसके दिल में गांठ थी हकलाते हकलाते बोलाः

"बासी कढ़ी में उबाल, मियां हाजी समद की बेटी के आशिक़ बने हैं. यह धोका धड़ी, यह लोगों की आंखों में धूल, कैसा झूठ का जाल फैलाया कि हाजी का वकील बन बैठा. उसकी सारी ज़मींदारी हथिया ली. ईश्वर की देन है."

अब दाश आकुल का किसी पर रंग नहीं चढ़ता था. न किसी की उसको परवाह थी. जहां कहीं पहुंचता कोने कोने काना फूसी होने लगती. उसकी हंसी होती. दाश आकुल इधर उधर यह सब कुछ सुनता, लवे न लगाता, न ध्यान देता. कारन यह था कि मिरजान का प्रेम ऐसा रग पट्ठों में बैठ गया था कि सिवाय उसके न कोई और मन में विचार था न हृदय में इच्छा.

रातों को व्याकुलता वश शराब पीता था. मन बहलाने के लिये एक तोता ख़रीद लिया था. पिंजरे के सामने बैठ जाता और तोते के सामने अपने जी का दुखड़ा दोहराता. यह ठीक है यदि मिरजान की मां से मंगनी को कहता तो वह ख़ुशी से राज़ी हो जाती. पर यह भी नहीं चाहता था कि स्त्री बच्चों के बन्धन अपने पैरों में डाल ले. चाहता था आज़ाद रहे. जैसे अब तक उमर काटी थी. दिल में यह भी ख़याल था कि जिस लड़की को बाप ने उसके सुपुर्द किया है उसे अपनी पत्नी बना लेना नमक हरामी है. फिर जब रात को आइने में अपनी सूरत देखता तो चाकू के घावों के उभरे दाने, आंख के नीचे खिंचा मास दिखाई देता था, खिंची आवाज़ में ज़ोर ज़ोर से कहता :

"वह शायद मुझे पसन्द नहीं करती अवश्य किसी सुन्दर युवक की चाह करती है. नहीं, नहीं, यह कहां की मरदानगी है. वह चौदह बरस की है मेरी आयु लगभग चालीस की. पर करूं क्या ? इस प्रेम के मारे मरा जाता हूं. मिरजान ! तू मेरी जान ले लेगी, किस से कहूं, मिरजान ! तेरा प्रेम मुझे मारे डालता है."

उसकी आंखों में आंसू भर जाते. शराब के गिलास पर गिलास पी जाता. कुछ देर में उसी तरह बैठे बैठे सिर का दर्द लिये सो जाता.

पर आधी रात को जिस समय शीराज़ के पेचीले गली कूचे, मनोहर सुहाने बाग़, रंगीली लाल शराबें निद्रा में झुकी होती थीं, जिस समय गहरे नीले आकाश में जड़े शांत झिलमिलाते तारे एक दूसरे को अपनी रहस्य भरी कहानी सुनाते थे, जिस समय मिरजान अपने लाल लाल गालों को बिस्तरे में छिपाए धीरे धीरे सांस ले रही होती थी और उसकी आंखों के सामने दिन भर की कृतियों की

کاکا رستم جس کے دل میں گانٹھ تھی ھکلاتے ھکلاتے بولا :

" باسی کڑھی میں اُبال' میاں حاجی صمد کی بیٹی کے عاشق بنے ھیں . یہ دھوکہ دھڑی' یہ لوگوں کی آنکھوں میں دھول' کیسا جھوٹ کا جال پھیلایا کہ حاجی کا وکیل بن بیٹھا . اُسکی ساری زمینداری ھتھیا لی. ایشور کی دین ھے ."

اب داش آکل کا کسی پر رنگ نہیں چڑھتا تھا . نہ کسی کی اُس کو پرواہ تھی . جہاں کہیں پہونچتا کونے کونے کانا پھوسی ھونے لگتی. اُسکی ھنسی ھوتی. داش آکل اِدھر اُدھر یہ سب کچھ سنتا' لوے نہ لگاتا' نہ دھیان دیتا. کارن یہ تھا کہ مرجان کا پریم ایسا رگ پٹھوں میں بیٹھ گیا تھا کہ سوائے اُس کے نہ کوئی اور من میں وچار تھا نہ ھردے میں اچھا .

راتوں کو ویاکلتاوش شراب پیتا تھا . من بہلانے کے لئے ایک طوطا خرید لیا تھا . پنجرے کے سامنے بیٹھ جاتا اور طوطے کے سامنےاپنے جی کا دکھڑا دوھراتا . یہ ٹھیک ھے یدی مرجان کی ماں سے منگنی کو کہتا تو وہ خوشی سے راضی ھو جاتی . پر یہ بھی نہیں چاھتا تھا کہ اِستری بچوں کے بندھن اپنے پیروں میں ڈال لے . چاھتا تھا آزاد رھے . جیسے اب تک عمر کاٹی تھی . دل میں یہ بھی خیال تھا کہ جس لڑکی کو باپ نے اُس کے سپرد کیا ھے اُسے اپنی پتنی بنا لینا نمک حرامی ھے . پھر جب رات کو آئنے میں اپنی صورت دیکھتا تو چاقو کے گھاؤں کے اُبھرے دانے' آنکھ کے نیچے کھنچا مانس دکھائی دیتا تھا' کھنچی آواز میں زور زور سے کہتا :

" وہ شاید مجھے پسند نہیں کرتی . اوشیہ کسی سندر یوک کی چاہ کرتی ھے . نہیں' نہیں' یہ کہاں کی مردانگی ھے . وہ چودہ برس کی ھے میری آیو لگ بھگ چالیس کی . پر کروں کیا ؟ اِس پریم کے مارے مرا جاتا ھوں . مرجان ! تو میری جان لے لیگی' کس سے کہوں مرجان ! تیرا پریم مجھے مارے ڈالتا ھے ."

اُسکی آنکھوں میں آنسو بھر جاتے . شراب کے گلاس پر گلاس پی جاتا . کچھ دیر میں اُسی طرح بیٹھے بیٹھے سر کا درد لئے سو جاتا .

پر آدھی رات کو جس سمے شیراز کے پیچیلے گلی کوچے' منوھر سہانے باغ' رنگیلی لال شرابیں ندرا میں جھکی ھوتی تھیں' جس سمے گہرے نیلے آکاش میں جڑے شانت جھلملاتے تارے ایک دوسرے کو اپنی رھسیہ بھری کہانی سناتے تھے' جس سمے مرجان اپنے لال لال گالوں کو بستر ے میں چھپائے دھیرے دھیرے سانس لے رھی ھوتی تھی اور اُسی آنکھوں کے سامنے دن بھر کی کرتیوں کی

तसवीरें फिरती रहती थीं, वही समय था जब दाश आकुल अपने सच्चे, असली नैसर्गिक रूप में अपने दिल की भावनाओं, आशाओं, कामनाओं को उन आचार परम्परा के बन्धनों से, उन नैतिक विचारों की अधीनता से जो उसे बचपन से सिखाए गए थे बिना लज्जा मुक्त हो, सब संकोच छोड़, मिरजान को अपनी छाती से लगा लेता था और उसके गालों को चूमता था.

लेकिन जैसे ही आंख खुलती अपने को बुरा भला कहता, अपने जीवन पर फटकार भेजता, पागल की तरह कमरे के अन्दर अपने पीछे घूमता और होठों तले अपने ही से बातें करता. फिर दिन भर प्रेम को अन्दर ही अन्दर घोटने का यतन करता और दौड़ धूप में हाजी के कामों की देख भाल में समय बिताता.

इसी हालत में सात बरस कट जाते हैं. दाश आकुल ने हाजी के बीबी बच्चों के पालन पोसन में तनिक भी कमी नहीं की. यदि कोई बच्चा बीमार पड़ता तो दिन रात करुणा से आतुर मां की न्याईं उसके पास रात रात भर जागता था. इन बच्चों से उसे लगाव हो गया था. पर उसका संबन्ध जो मिरजान के साथ था वह कुछ और ही चीज़ थी. शायद मिरजान के प्रेम ने ही उसे इतना विनीत और शांत बना दिया था. समय बीता और इस ज़माने में हाजी समद के सब बच्चे बड़े हो गए.

परन्तु जो न होनी चाहिये थी आखिर वही हुई. भावी बलवान है, मुहिम घटना सामने आई. मिरजान के लिये बर मिल गया. पर वह भी कैसा. दाश आकुल से कई साल बड़ा और सूरत का उससे कहीं कुरूप. इस घटना से दाश आकुल ने अपने माथे पर बल नहीं पड़ने दिया. बल्कि इसके विरुद्ध ठंडे दिल से उसके जहेज़ की तैयारी में लग गया. ब्याह की रात यथा योग्य उत्सव की रचना की. हाजी के बच्चों को घर में ले आया. बड़े कमरे में जिसमें ज़नाना मरदाना दोनों थे मेहमानों के स्वागत का प्रबंध किया. शीराज़ के जितने मोटे आसामी थे, व्योपारी और बड़े आदमी सभी को न्योता दिया.

उस दिन तीसरे पहर पांच बजे जब मेहमान कमरे के चारों ओर एक सिरे से दूसरे सिरे तक क़ीमती क़ालीनों और ग़ालीचों पर पर बैठे थे और मिठाइयों और मेवों के खोनचे उनके सामने लगे थे दाश आकुल अपने पुराने ढंग से अकड़फूं बना, कंघी तेल बिना सिर के बाल बिखेरे, धारीदार कपड़े का चोग़ा, नीली साटन का पैजामा, कढ़े काम का जूता, नई ऊंची पुछल्लेदार टोपी पहने, शाल बग़ल में गसियाय, दुधारी तलवार कमरबन्द में लगाए दाख़िल हुआ. उसके पीछे पीछे तीन और आदमी हिसाब की बहियें और काग़ज़ लिये अन्दर आए. इनकी धज देखकर

تصویریں پھرتی رہتی تھیں، وہی سمے تھا جب داش آکل اپنے سچے، اصلی نیسرگک روپ میں اپنے دل کی بھاوناؤں آشاؤں، کامناؤں کو اُن آچار پرمپرا کے بندھنوں سے، اُن نیتک وچاروں کی ادھینتا سے جو اسے بچپن سے سکھائے گئے تھے بنا لجا مکت ہو، سب سنکوچ چھوڑ، مرجان کو اپنی چھاتی سے لگا لیتا تھا اور اُس کے گالوں کو چومتا تھا۔

لیکن جیسے ہی آنکھ کھلتی اپنے کو برا بھلا کہتا، اپنے جیون پر پھٹکار بھیجتا، پاگل کی طرح کمرے کے اندر اپنے پیچھے گھومتا اور ہونٹوں تلے اپنے ہی سے باتیں کرتا۔ پھر دن بھر پریم کو اندر ہی اندر گھونٹنے کا یتن کرتا اور دوڑ دھوپ میں حاجی کے کاموں کی دیکھ بھال میں سمے بتاتا۔

اِسی حالت میں سات برس کٹ جاتے ہیں۔ داش آکل نے حاجی کے بیوی بچوں کے پالن پوسن میں تنک بھی کمی نہیں کی۔ یدی کوئی بچہ بیمار پڑتا تو دن رات کرونا سے آتر ماں کی نیائیں اُس کے پاس رات رات بھر جاگتا تھا۔ اِن بچوں سے اُسے لگاؤ ہوگیا تھا۔ پر اُس کا سمبندھ جو مرجان کے ساتھ تھا وہ کچھ اور ہی چیز تھی۔ شاید مرجان کے پریم نے ہی اُسے اِتنا ونیت اور شانت بنا دیا تھا۔ سمے بیتا اور اِس زمانے میں حاجی صمد کے سب بچے بڑے ہوگئے۔

پرنتو جو نہ ہونی چاہئے تھی آخر وہی ہوئی۔ بھاوی بلوان ہے، مہم گھٹنا سامنے آئی۔ مرجان کے لئے بر مل گیا۔ پر وہ بھی کیسا۔ داش آکل سے کئی سال بڑا اور صورت کا اُس سے کہیں کروپ۔ اِس گھٹنا سے داش آکل نے اپنے ماتھے پر بل نہیں پڑنے دیا۔ بلکہ اِس کے ورودھ ٹھنڈے دل سے اُس کے جہیز کی تیاری میں لگ گیا۔ بیاہ کی رات یتھا یوگیہ اتسو کی رچنا کی۔ حاجی کے بچوں کو گھر میں لے آیا۔ بڑے کمرے میں جس میں زنانہ مردانہ دونوں تھے مہمانوں کے سواگت کا پربندھ کیا۔ شیراز کے جتنے موٹے اسامی تھے، بیوپاری اور بڑے آدمی سبھی کو نیوتا دیا۔

اُس دن تیسرے پہر پانچ بجے جب مہمان کمرہ کے چاروں اور ایک سرے سے دوسرے سرے تک قیمتی قالینوں اور قالیچوں پر بیٹھے تھے اور مٹھائیوں اور میووں کے کھونچے اُن کے سامنے لگے تھے داش آکل اپنے پرانے ڈھنگ سے اکڑفوں بنا، کنگھی تیل بنا سر کے بال بکھیرے، دھاری دار کپڑے کا چوغہ، نیلی ساٹن کا پاجامہ، کڑھے کام کا جوتا، نئی اونی پچھلے دار ٹوپی پہنے، شال بغل میں گسیائے دودھاری تلوار کمر بند میں لگائے داخل ہوا۔ اُس کے پیچھے پیچھے تین اور آدمی حساب کی بہیں اور کاغذ لئے اندر آئے۔ اِن کی دھج دیکھ کر

सब महमानों की आंखें चौंध गईं. दाश आकुल लम्बे डग भरता इमाम जुमे के सामने पहुंचा. खड़े हो कर बोला :

"इमाम साहब, ईश्वर हाजी को बख़्शे उसने वसीयत क्या लिखी मुझे पूरे सात बरस के लिये झगड़े में फंसा दिया. अब उसका सबसे छोटा लड़का जो पांच साल का था पूरे बारह साल का हुआ. यह सब उसके माल दौलत का हिसाब किताब है. (तीन आदमियों की ओर जो पीछे खड़े थे संकेत करते हुए) आज तक जो कुछ ख़र्च हुआ है, आज की रात का ख़र्च मिला कर, सब मैंने अपनी जेब से दिया है. अब इनका रास्ता अलग है मेरा रास्ता अलग."

इतना कह पाया था कि उसका गला भर आया. आगे न एक शब्द बोल सका और न जवाब की प्रतीक्षा कर सका. सिर झुकाए आंखों में आंसू भरे दरवाजे से बाहर निकल गया. गली में पहुंच कर ठंडी सांस भरी. अनुभव किया कि आज़ाद हूं और उत्तरदायित्व के बोझ से कंधा हलका हो गया है. पर जी टूट गया था और दिल में गहरा घाव था. लापरवाही के साथ लम्बे लम्बे डग बढ़ाए चलते चलते मुल्ला इसहाक़ यहूदी की शराब की दुकान दिखाई दी. झटपट सीढ़ियों पर जिन की ईंटें भीगी थीं चढ़ा और पुराने धुंए से काले अहाते में दाख़िल हुआ. इस के चारों पहलुओं पर छोटे गंदे कमरे थे जिन में खिड़कियां ऐसी थीं जैसे भिड़ के छत्ते में छेद. हौज के पानी के ऊपर काई जमी थी. खटाई की बू, मीठी मीठी और पुरानी सील की बू हवा में फैली थी. मुल्ला इसहाक़ दुबला पतला आदमी मैली टोपी पहने, बकरे की सी दाड़ी बढ़ाए, लालची आंखें खोले सामने आया. बनावटी हंसी हंसा. दाश आकुल बड़ा निरास हो कर बोला :

"भाई जान! दया कर के एक बढ़िया सी बोतल दिलाओ, ज़रा गला ठंडा करूं." मुल्ला इसहाक़ ने सिर हिलाया, सीढ़ियों से उतर कर तहख़ाने में गया और चन्द मिनट बाद एक बोतल लेकर ऊपर आया. दाश आकुल ने बोतल हाथ में ली, उसकी गरदन को खम्बे से मारा और उस का मुंह उड़ा दिया, एक घूंट में आधी बोतल ख़ाली कर दी. आंखों में आंसू भर आए. मुंह पर हाथ रख कर खांसी को रोका और हाथ की पीठ से मुंह साफ़ किया. मुल्ला इसहाक़ का लड़का जो निहायत दुबला पतला और मैला कुचैला था और जिस का पेट निकला हुआ, मुंह खुला और होंठों से राल टपक रही थी, दाश आकुल को देख रहा था. दाश आकुल ने नमकदानी में जो अहाते की दीवार के ताक़ में रखी थी उंगली डाली और मुंह में रख ली.

मुल्ला इसहाक़ सामने आया, उसने दाश आकुल के कंधे पर हाथ रखा और बिना किसी विशेष प्रयोजन के बोला :

سب مہمانوں کی آنکھوں چوندھ گئیں . داش آکل لمبے ڈگ بھرتا امام جمعہ کے سامنے پہونچا . کھڑے ہو کر بولا :

" امام صاحب، ایشور حاجی کو بخشے اس نے وصیت کیا لکھی مجھے پورے سات برس کے لئے جھگڑے میں پھنسا دیا . اب اسکا سب سے چھوٹا لڑکا جو پانچ سال کا تھا پورے بارہ سال کا ہوا . یہ سب اس کے مال دولت کا حساب کتاب ہے . (تین آدمیوں کی اور جو پیچھے کھڑے تھے سنکیت کرتے ہوئے) آج تک جو کچھ خرچ ہوا ہے، آج کی رات کا خرچ ملا کر، سب میں نے اپنی جیب سے دیا ہے . اب ان کا راستہ الگ ہے میرا راستہ الگ ."

اتنا کہہ پایا تھا کہ اس کا گلا بھر آیا . آگے نہ ایک شبد بول سکا اور نہ جواب کی پرتیکشا کر سکا . سر جھکائے آنکھوں میں آنسو بھرے دروازہ سے باہر نکل گیا . گلی میں پہونچ کر ٹھنڈی سانس بھری . انوبھو کیا کہ آزاد ہوں اور اتردائتو کے بوجھ سے کندھا ہلکا ہوگیا ہے پر جی ٹوٹ گیا تھا اور دل میں گہرا گھاؤ تھا . لاپرواہی کے ساتھ لمبے لمبے ڈگ بڑھائے، چلتے چلتے ملا اسحاق یہودی کی شراب کی دوکان دکھائی دی . جھٹ پٹ سیڑھیوں پر جن کی اینٹیں بھیگی تھیں چڑھا اور پرانے دھوئیں سے کالے احاطے میں داخل ہوا . اس کے چاروں پہلوؤں پر چھوٹے گندے کمرے تھے جن میں کھڑکیاں ایسی تھیں جیسے بھڑ کے چھتے میں چھید . حوض کے پانی کے اوپر کائی جمی تھی . کھٹائی کی بو، میٹھی میٹھی اور پرانی سیل کی بو ہوا میں پھیلی تھی . ملا اسحاق دبلا پتلا آدمی میلی ٹوپی پہنے، بکرے کی سی داڑھی بڑھائے، لالچی آنکھیں کھولے سامنے آیا . بناوٹی ہنسی ہنسا . داش آکل بڑا نراس ہو کر بولا :

" بھائی جان ! دیا کر کے بڑھیا سی بوتل دلاؤ، ذرا گلا ٹھنڈا کروں ." ملا اسحاق نے سر ہلایا، سیڑھیوں سے اتر کر تہہ خانے میں گیا اور چند منٹ بعد ایک بوتل لے کر اوپر آیا . داش آکل نے بوتل ہاتھ میں لی، اسکی گردن کو کھمبے سے مارا اور اس کا منہ اڑا دیا . ایک گھونٹ میں آدھی بوتل خالی کر دی . آنکھوں میں آنسو بھر آئے . منہ پر ہاتھ رکھ کر کھانسی کو روکا اور ہاتھ کی پیٹھ سے منہ صاف کیا . ملا اسحاق کا لڑکا جو نہایت دبلا پتلا اور میلا کچیلا تھا اور جس کا پیٹ نکلا ہوا، منہ کھلا اور ہونٹوں سے رال ٹپک رہی تھی، داش آکل کو دیکھ رہا تھا . داش آکل نے نمک دانی میں جو احاطے کی دیوار کے طاق میں رکھی تھی انگلی ڈالی اور منہ میں رکھ لی .

ملا اسحاق سامنے آیا . اس نے داش آکل کے کندھے پر ہاتھ رکھا اور بنا کسی وشیش پریوجن کے بولا :

"शठाई में क्या मज़ा धरा है ?"

फिर उसके कपड़ों में हाथ देकर कहने लगा :

"यह क्या पहना है ? यह चोग़ा तो फट गया है, चाहो नया ख़रीद कर ला दूं."

दाश आकुल ने ठंडी सांस भरी, जेब से रुपए निकाले और उसकी हथेली पर रखे. घर में से निकला सांझ का समय था. उस का शरीर जल रहा था, मन मलीन था और सिर दर्द कर रहा था. कूचों में तीसरे पहर की बारिश से फिसलन थी. मट्टी की सौंधाहट और नारंगी के फूलों की की ख़ुशबू हवा में महक रही थी. मिरजान की सूरत, लाल गाल, काली आंखें, ऊंची भवें, बालों की लटें जो माथे पर बिखरी थीं धुंधली सी छिपी छिपी उस की आंखों के सामने पुतली के समान खड़ी हो गईं. उस ने सारी आप बीती की याद ज़िंदा करा दी. एक एक कर के स्मृति पट पर तसवीरें गुज़रने लगीं. दोस्तों के साथ सादी की क़बर की यात्रा और बाबा कोही की सभी सैर सपाटों की याद ताज़ा हो गई. कभी चेहरे पर मुस्कराहट आती थी तो कभी झुंझलाहट. पर एक चीज़ जो पूरी तरह दिल में जम गई थी वह थी अपने घर की घृना. उस का विचार ही सहन से बाहर था. ऐसा मालूम होता था जैसे जी बैठा जाता हो. एक ही चाह थी कहीं दूर निकल जाए. फिर सोचा रात को फिर शराब पीए अपने तोते से दिल का दर्द कहे. उसके लिए जीवन व्यर्थ, निस्सार, और क्षुद्र हो गया था. इसी बीच में एक कवित्त ध्यान में आया और वह व्यग्र हो गुन गुनाने लगा :

ब शब नशीनीए ज़िन्दानियां बज़्मे हसरत
कि नुक़्ले मजलिसां दाना हाए ज़ंजीर हस्त

(बन्दियों के रतजगे मुझे आतुर कर देते हैं, उनके पास महफ़िल में खानों को बेड़ियों के दानों के सिवा क्या है.)

एक और गीत याद आया. जिसे मध्यम सुर में गाने लगा :

दिलम दीवाना शुद ऐ आक़िलान आरीद ज़ंजीरी.
कि न बवद चारए दीवाना जुज़ ज़ंजीरे तदबीरी.

(मेरा दिल पागल हो गया है, अरे चतुर पंडितो, ज़ंजीरें ले आओ. दीवाने का इलाज सिवाए ज़ंजीरों की सांसत के और कुछ नहीं !) उस ने उस गीत को निरास दुख दर्द भरे सुरों में गाया. फिर जैसे साहस हीन हो गया हो अथवा ध्यान किसी दूसरी ओर मुड़ गया हो चुप हो गया.

जब दाश आकुल सरज़दक मुहल्ले में पहुंचा तो अंधेरा हो गया था. जगह तो वही थी जहां अगले दिनों में उस का हृदय और माथा बुझा रहता था. और किसी की

"شٹھائی میں کیا مزہ دھرا ہے ." پھر اُس کے
پڑوں میں ہاتھ دے کر کہنے لگا :

"یہ کیا پہنا ہے ؟ یہ چوغہ تو پھٹ گیا ہے، چاہو تو
یا خرید کر لا دوں ."

داش آکل نے ٹھنڈی سانس بھری، جیب سے روپے
کالے اور اُسکی ہتھیلی پر رکھے . گھر میں سے نکلا سانجھ
سمے تھا . اُس کا شریر جل رہا تھا، من ملین تھا اور
سر درد کر رہا تھا . کوچوں میں تیسرے پہر کی بارش
سے پھلسن تھی . مٹی کی سوندھاہٹ اور نارنگی کی خوشبو
ہوا میں مہک رہی تھی . مرجان کی صورت، لال گال،
کالی آنکھیں، اونچی بھویں بالوں کی لٹیں جو ماتھے
پر بکھری تھیں دھندلی سی چھپی چھپی اُسکی آنکھ
کے سامنے پتلی کے سمان کھڑی ہو گئیں . اس نے ساری
آپ بیتی کی یاد زندہ کرا دی . ایک ایک کر کے سمرتی
پٹ پر تصویریں گذرنے لگیں . دوستوں کے ساتھ سعدی کی
قبر کی یاترا اور بابا کوہی کی سبھی سیر سپاٹوں کی
یاد تازہ ہوگئی . کبھی چہرہ پر مسکراہٹ آتی تھی تو
کبھی جھنجھلاہٹ . پر ایک چیز پوری طرح دل میں
جم گئی تھی وہ تھی اپنے گھر کی گھرنا . اُس کا وچار ہی
سہن سے باہر تھا . ایسا معلوم ہوتا تھا جیسے جی
بیٹھا جاتا ہو . ایک ہی چاہ تھی کہیں دور نکل جائے .
پھر سوچا رات کو پھر شراب پئے، اپنے طوطے سے دل کا درد
کہے . اُس کے لئے جیون ویرتھ، نسار، اور شدر ہوگیا تھا .
اِسی بیچ میں ایک کوت دھیان میں آیا اور وہ ویگر ہو
گنگنانے لگا :

بشب نشینیئے زندانیاں بزم حسرت
کہ نقل مجلساں دانا ہائے زنجیر ہست

(بندیوں کے رتجگے مجھے آتر کر دیتے ہیں، اُن کے
پاس محفل میں کھانوں کو بیڑیوں کے دانوں کے سوا
کیا ہے) ایک اور گیت یاد آیا . جسے مدھم سر میں
گانے لگا :

دلم دیوانہ شد اے آقلان آرید زنجیری
کہ نہ بود چارئے دیوانہ جز زنجیر تدبیری

(میرا دل پاگل ہوگیا ہے، ارے چتر پنڈتو، زنجیریں
لے آؤ . دیوانہ کا علاج سوائے زنجیروں کی سانست کے اور کچھ
نہیں !) اُس نے اُس گیت کو نراس دکھ درد بھرے سروں
میں گایا . پھر جیسے ساہس ہین ہوگیا ہو اتھوا دھیان
کسی دوسری اور مڑ گیا ہو چپ ہوگیا .

جب داش آکل سرزدک محلے میں پہونچا تو اندھیرا
ہوگیا تھا . جگہ تو وہی تھی جہاں اگلے دنوں میں اُس
کا ہردے اور ماتھا بجھا رہتا تھا . اور کسی کی

मजाल नहीं थी कि उस के सामने खड़ा रह सके. पर आज इच्छा हीन वह जा कर एक घर के दरवाजे के सामने पत्थर की बैंच पर बैठ गया. जेब से पाइप निकाला, उसमें तम्बाकू भरा और धीरे दम लगाने लगा. उसने देखा कि जगह पहले की निसबत ख़राब हो गई थी. आदमी भी कुछ बदले हुए जंचते थे. ऐसे ही जैसे वह स्वयं टूटा था और बदला हुआ था. आंखों में अंधेरा और सिर में दर्द मालूम होने लगा. एकाएक धुंधला साया दिखाई दिया जो दूर से उसकी ओर बढ़ रहा था, जैसे ही पास पहुंचा उसे सुनाई पड़ा :

"श श शठ को काली रात के राजा ने पहचाना ?"

दाश आकुल ने काका रुस्तम को पहचाना, खड़ा हो गया, हाथों को कमर पर रख ज़मीन पर थूका और बोला :

"अरे निर्लज, अपने को क्या समझता है! बड़ा हेकड़ बना है, बच्चा किसी ऐसे वैसे से पाला नहीं पड़ा है."

काका रुस्तम ने हंसी उड़ाते हुए ठट्ठा लगाया और आगे बढ़ कर कहा :

"ब...ब...बहुत दिन हुए को...को...कोई इधर ऐसा पै...पै...पैदा नहीं हुआ. आ...आ...आज रात हाजी के घ...घ...घर में ब्याह रचा है पर तू...तू...न...न......"

दाश आकुल ने बात काटते हुए कहा :

"ईश्वर तुझे ख़ूब पहचानता है इसी से तो उसने आधी जीभ काट दी है. आज रात जो आधी रह गई उसे मैं काटे देता हूं",

काका रुस्तम ने झटपट अपनी कटार को ग़िलाफ़ से निकाला और फुरती से हाथ में संभाला. दाश आकुल ने कटार का सिरा ज़मीन में घोप दिया और हाथ छाती पर रख खड़ा हो कर बोला :

"देखूं किस में दम है जो इस कटार को ज़मीन से बाहर निकाले."

काका रुस्तम ने अचानक उस पर वार किया पर दाश आकुल ने ऐसा कलाई का हाथ मारा कि कटार काका के हाथ से छूट गई. इन दोनों के झगड़े का रौला सुन कर आने जाने वाले खड़े हो गए और तमाशा देखने लगे. लेकिन किसी की हिम्मत नहीं हुई कि आगे आता और बीच बचाव करता.

दाश आकुल ने मुसकराते हुए कहा :

"चल जा, जा उठा ले पर शर्त यह है इस दफ़ा ख़ूब दृढ़ता से पकड़ना, मैंने तो आज रात ठान ली है कि सब छोटे मोटे पुराने हिसाब चुका दूं."

काका रुस्तम मुट्ठिएं बांधे आगे बढ़ा और दोनों एक

مجال نہیں تھی کہ اُس کے سامنے کھڑا رہ سکے. پر آج اِچھا ھین وہ جا کر ایک گھر کے دروازہ کے سامنے پتھر کی بینچ پر بیٹھ گیا. جیب سے پائپ نکالا' اُس میں تمباکو بھرا اور دھیرے دم لگانے لگا. اس نے دیکھا کہ جگہ پہلے کی نسبت خراب ہو گئی تھی. آدمی بھی کچھ بدل ہوئے جنچتے تھے. ایسے ہی جیسے وہ سوئم ٹوٹا تھا اور بدلا ہوا تھا. آنکھوں میں اندھیرا اور سر میں درد معلوم ہونے لگا. ایکایک دھندلا سایہ دکھائی دیا جو دور سے اسکی اور بڑھ رہا تھا' جیسے ہی پاس پہونچا اسے سنائی پڑا :

"ش...ش...شٹھ کو کالی رات کے راجہ نے پہچانا؟"

داش آکل نے کاکا رستم کو پہچانا' کھڑا ہوگیا' ہاتھوں کو کمر پر رکھ زمین پر تھوکا اور بولا :

"ارے نرلج' اپنے کو کیا سمجھتا ہے! بڑا ھیکڑ بنا ہے' بچہ کسی ایسے ویسے سے پالا نہیں پڑا ہے." کاکا رستم نے ھنسی اڑاتے ہوئے ٹھٹھا لگایا اور آگے بڑھکر کہا :

ب...ب بہت دن ہوئے کو...کو...کوئی ادھر ایسا پ...
...پ پیدا نہیں ہوا. آ...آ...آج رات حاجی کے گھ...گھ...
گھر میں بیاہ رچا ہے پر تو...تو...نہ...نہ..."

داش آکل نے بات کاٹتے ہوئے کہا :

"ایشور تجھے خوب پہچانتا ہے اِسی سے تو اُس نے آدھی جیبھ کاٹ دی ہے. آج رات جو آدھی رہ گئی اُسے میں کاٹے دیتا ہوں."

کاکا رستم نے جھٹ پٹ اپنی کٹار کو غلاف سے نکالا اور پھرتی سے سنبھالا. داش آکل نے کٹار کا سرا زمین میں گھونپ دیا اور ھاتھ چھاتی پر رکھ کھڑا ہو کر بولا :
"دیکھوں کس میں دم ہے جو اِس کٹار کو زمین سے باہر نکالے."

کاکا رستم نے اچانک اس پر وار کیا پر داش آکل نے ایسا کلائی کا ھاتھ مارا کہ کٹار کاکا کے ھاتھ سے چھوٹ گئی. اِن دونوں کے جھگڑے کا رولا سن کر آنے جانے والے کھڑے ہو گئے اور تماشہ دیکھنے لگے. لیکن کسی کی ھمت نہیں ہوئی کہ آگے آتا اور بیچ بچاؤ کرتا.
داش آکل نے مسکراتے ہوئے کہا :

"چل جا' جا اُٹھا لے پر شرط یہ ہے اِس دفعہ خوب دڑھتا سے پکڑنا. میں نے تو آج رات ٹھان لی ہے کہ سب چھوٹے موٹے پرانے حساب چکا دوں."

کاکا رستم مٹھیں باندھے آگے بڑھا اور دونوں ایک

दूसरे से चिपट गए. आधे घंटे जमीन पर लेटते पोटते रहे. सर से पैर तक पसीना बहने लगा पर किसी की जीत न हुई. कुस्तम कुश्ता में दाश आकुल का सिर बड़े ज़ोर से एक पत्थर से टकराया और वह क़रीब क़रीब बेहोश हो गया. काका रुस्तम उस के लहू का प्यासा था पर और लड़ने का दम नहीं रह गया था. उस की आंख हठात कटार पर पड़ी जो उस के निकट ही पड़ी थी. सारा ज़ोर लगा कर उसे ज़मीन से खींच बाहर निकाला और दाश आकुल की बग़ल में घोंप दिया. इस में इतना ज़ोर ख़र्च किया कि दोनों हाथ शल हो गए.

देखने वाले दौड़ पड़े और बड़ी मुशकिल से दाश आकुल को ज़मीन से उठाया. लहू के क़तरे बग़ल से ज़मीन पर गिरने लगे. दाश आकुल ने अपने हाथों से घाव को दबा किसी तरह खींच कर अपने को दीवार के सहारे पहुंचाया. फिर ज़मीन पर गिर पड़ा. लोगों ने फिर उसे उठा कर हाथों हाथ घर तक पहुंचा दिया.

दूसरे दिन सवेरे ही उस के घायल होने की ख़बर हाजी समद के यहां पहुंची. बड़ा लड़का वली ख़ां हाल पूछने आया. ज्यों ही दाश आकुल के तकिए पर पहुंचा देखा कि रंग उड़ा हुआ है और बिस्तर में पड़ा है. मुंह से लहू भरा कफ़ जारी है. आंखों पर अंधेरा है और बड़ी कठिनाई से सांस ले रहा है. दाश आकुल ने बेहोशी जैसी हालत में उसे कुछ कुछ पहचाना, मरी मरी कांपती आवाज़ में कहने लगा :

"इस दुनिया में......बस यही तोता......मेरा था...... मेरी जान...... इस प्यारे तोते को......उस के सुपुर्द कर देना......"

फिर चुप हो गया. वली ख़ां ने रेशमी रुमाल निकाल, आंखों से आंसू पोंछे. दाश आकुल बेहोश हो गया और उसने एक घंटे बाद प्रान छोड़ दिये.

शीराज़ भर उस के लिये रोता था.

वली ख़ां ने तोते का पिंजरा उठाया और घर ले गया. शाम का वक़्त था मिरजान तोते का पिंजरा सामने रखे बैठी थी, उस के रंग बिरंगे पंख, टेढ़ी चोंच, गोल उदासी आंखें देख कर कुछ चकित सी हो रही थी. एकाएक तोते ने दाश आकुल के लहजे में खुरचवां आवाज़ में कहना शुरू किया :—

"मिरजान......मिरजान......तूने मुझे मार डाला...... किस से कहूं......मिरजान......तेरे प्रेम ने......मुझे मार डाला."

मिरजान की आंखों से टप टप आंसू गिरने लगे.

...رے سے چپٹ گئے۔ آدھے گھنٹے زمین پر لوٹتے پوٹتے رہے۔ سر سے پیر تک پسینہ بہنے لگا پر کسی کی جیت نہ ہوئی۔ کشتم کشتہ میں داش آکل کا سر بڑے زور سے پتھر سے ٹکرایا اور وہ قریب قریب بیہوش ہوگیا۔ رستم اس کے لہو کا پیاسا تھا پر اور لڑنے کا دم نہیں رہا تھا۔ اسکی آنکھ ہٹھات کٹار پر پڑی جو اس کے پاس ہی پڑی تھی۔ سارا زور لگا کر اسے زمین سے کھینچ نکالا اور داش آکل کی بغل میں گھونپ دیا۔ اس میں اتنا زور خرچ کیا کہ دونوں ہاتھ شل ہو گئے۔

دیکھنے والے دوڑ پڑے اور بڑی مشکل سے داش آکل کو زمین سے اٹھایا۔ لہو کے قطرے بغل سے زمین پر گرنے لگے۔ داش آکل نے اپنے ہاتھوں سے گھاؤ کو دبا کسی طرح کھینچ کر اپنے کو دیوار سے سہارے پہونچایا۔ پھر زمین پر گر پڑا۔ لوگوں نے پھر اسے اٹھا کر ہاتھوں ہاتھ گھر تک پہونچا دیا۔

دوسرے دن سویرے ہی اس کے گھائل ہونے کی خبر حاجی صمد کے یہاں پہونچی۔ بڑا لڑکا ولی خاں حال پوچھنے آیا۔ جیوں ہی داش آکل کے تکیہ پر پہونچا دیکھا کہ رنگ اڑا ہوا ہے اور بستر میں پڑا ہے۔ منہ سے لہو بھرا کف جاری ہے۔ آنکھوں پر اندھیرا ہے اور بڑی کٹھنائی سے سانس لے رہا ہے۔ داش آکل نے بیہوشی جیسی حالت میں اسے کچھ کچھ پہچانا، مری مری کانپتی آواز میں کہنے لگا :

"اس دنیا میں......بس یہی طوطا......میرا تھا......میری جان......اس پیارے طوطے کو......اس کے سپرد کر دینا......"

پھر چپ ہوگیا۔ ولی خاں نے ریشمی رومال نکالا، آنکھوں سے آنسو پونچھے۔ داش آکل بیہوش ہوگیا اور اس نے ایک گھنٹے بعد پران چھوڑ دئے۔

شیراز بھر اس کے لئے روتا تھا۔

ولی خاں نے طوطے کا پنجرہ اٹھایا اور گھر لے گیا۔ شام کا وقت تھا مرجان طوطے کا پنجرہ سامنے رکھے بیٹھی تھی، اس کے رنگ برنگے پنکھ، ٹیڑھی چونچ، گول اداسی آنکھیں دیکھکر کچھ چکت سی ہو رہی تھی۔ ایکا ایک طوطے نے داش آکل کے لہجے میں کھرچواں آواز میں کہنا شروع کیا :—

"مرجان......مرجان......تونے مجھے مار ڈالا......کس سے کہوں......مرجان......تیرے پریم نے......مجھے مار ڈالا۔"

مرجان کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گرنے لگے۔

आज़ाद भारत—आर्थिक ग़ुलामी की राह पर

रिवाज के अनुसार पिछली पंद्रह अगस्त को नई दिल्ली में और सूबों की राजधानियों में सरकार की छत्र छाया में खूब जश्न मनाए गए. अखबारों ने जो विशेशांक इस मौक़े पर निकाले हैं उनमें भी गवरनरों, मिनिस्ट्रों और सरकारी सूचना महकमों के लेख पर लेख भरे थे. उनकी एक ही रट थी कि मुल्क बड़े ज़ोर शोर साथ तरक़्क़ी कर रहा है और सियासी आज़ादी तो मिल गई और अब आर्थिक आज़ादी की तरफ़ देश तेज़ी से दौड़ रहा है. उससे पहले जुलाई के महीने में कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की एक बैठक आगरे में हुई थी जिसमें आर्थिक मसलों पर तीन ठहराव पास हुए थे. उनमें दो वर्किंग कमेटी की तरफ़ से थे. इनका विषय था "समाजी और आर्थिक प्रोग्राम" और "बेरोज़गारी." तीसरा ठहराव कमेटी के किसी मेम्बर की तरफ़ से निजी था जो स्वदेशी पर था और जिसमें कांगरेस वालों का ध्यान उनके इस फ़र्ज़ की ओर दिलाया गया था कि स्वदेशी की आदत डालें और उसे बढ़ावा दें और जहां तक हो सके हिन्दुस्तान की बनी चीजें और विशेश कर ग्राम उद्योग की चीज़ें बरतें.

इन तीनों ठहरावों पर रोशनी डालते हुए कुल हिन्द कांगरेस कमेटी के पखवारी अख़बार "आर्थिक समीक्षा" के 20 जुलाई वाले नम्बर में प्रधान सम्पादक का, जो कांगरेस के प्रधान मंत्री भी हैं, एक लेख है. इस लेख में यह इतमीनान दिलाया गया है कि आगरे के ठहरावों को "केवल पाक विचार और बेकार की बातें" कहना ग़लत होगा बल्कि उनसे यह पता चलता है कि "देश में समाजी और आर्थिक इन्क़लाब लाने की अपनी प्रतिज्ञा पर कांगरेस पूरी तरह डटी हुई है.'' समाजी और आर्थिक दायरों में आज जो प्रगति है उससे असन्तोश ज़ाहिर करते हुए उस लेखमें उम्मीद दिलाई गई है कि केन्द्र की और सूबों की सरकारें आर्थिक सवालों का हल मुस्तैदी के साथ और धर्म विजय भावना से करेंगी और अगले कुछ बरसों में इस अपने महान देश के लिये आर्थिक आज़ादी हासिल कर लेंगे." बड़ी ख़ुशी की बात है कि इस तरह जोश-ख़रोश के साथ कांगरेस की या सरकार की शक्तियां हमें अपनी मंज़िल पर ले जायंगी. हमने 'राष्ट्र' शब्द का या जन शक्ति शब्द का इस्तेमाल जान कर नहीं किया क्यों कि कांगरेस के तीनों ठहरावों में आम जनता से कोई सहयोग की मांग या अपील नहीं की गई है लेकिन देखना

آزاد بھارت—آرتھک غلامی کی راہ پر

رواج کے انوسار پچھلی پندرہ اگست کو نئی دلی میں اور صوبوں کی راجدھانیوں میں سرکار کی چھتر چھایا میں خوب جشن منائے گئے اخباروں نے جو وشیشانک اِس موقع پر نکالے ہیں اس میں بھی گورنروں، منسٹروں اور سرکاری سوچنا محکموں کے لیکھ پر لیکھ بھرے تھے. اُن کی ایک ہی رٹ تھی کہ ملک بڑے زور شور کے ساتھ ترقی کر رہا ہے اور سیاسی آزادی تو مل گئی اور اب آرتھک آزادی کی طرف دیش تیزی سے دوڑ رہا ہے. اُس سے پہلے جولائی کے مہینے میں کل ہند کانگریس کمیٹی کی ایک بیٹھک آگرہ میں ہوئی تھی جس میں آرتھک مسئلوں پر تین ٹھہراؤ پاس ہوئے تھے. اُن میں دو ورکنگ کمیٹی کی طرف سے تھے. اِن کا وشے تھا "سماجی اور آرتھک پروگرام" اور "بے روزگاری." تیسرا ٹھہراؤ کمیٹی کے کسی ممبر کی طرف سے نجی تھا جو سودیشی پر تھا اور جس میں کانگریس والوں کا دھیان اُن کے اِس فرض کی اور دلایا گیا تھا کہ سودیشی کی عادت ڈالیں اور اُسے بڑھاوا دیں اور جہاں تک ہوسکے ہندستان کی بنی چیزیں اور وشیش کر گرام ادیوگ کی چیزیں برتیں.

اِن تینوں ٹھہراؤں پر روشنی ڈالتے ہوئے کل ہند کانگریس کمیٹی کے پکھواری اخبار "آرتھک سمیکشا" کے 20 جولائی والے نمبر میں پردھان سمپادک کا جو کانگریس کے پردھان منتری بھی ہیں ایک لیکھ ہے. اِس لیکھ میں یہ اطمینان دلایا گیا ہے کہ آگرہ کے ٹھہراؤں کو "کیول پاک وچار اور بیکار کی باتیں" کہنا غلط ہوگا بلکہ اُن سے یہ پتہ چلتا ہے کہ "دیش میں سماجی اور آرتھک اِنقلاب لانے کی اپنی پرتگیا پر کانگریس پوری طرح ڈٹی ہوئی ہے." سماجی اور آرتھک دائروں میں آج جو پرگتی ہے اُس سے اسنتوش ظاہر کرتے ہوئے اِس لیکھ میں اُمید دلائی ہے کہ کیندری اور صوبوں کی سرکاریں آرتھک سوالوں کا حل مستعدی کے ساتھ اور دھرم وجے بھاؤنا سے کریں گی اور اگلے کچھ برسوں میں ہم اپنے مہان دیش کے لئے آرتھک آزادی حاصل کر لینگے. بڑی خوشی کی بات ہے کہ اس طرح جوش خروش کے ساتھ کانگریس کی یا سرکار کی شکتیاں ہمیں اپنی منزل پر لے جائینگی. ہم نے 'راشٹر' شبد کا یا جن شکتی شبد کا استعمال جان کر نہیں کیا کیونکہ کانگریس کے تینوں ٹھہراؤ میں عام جنتا سے کوئی سہیوگ کی مانگ یا اپیل نہیں کی گئی ہے لیکن دیکھنا

यह है कि असलियत क्या है. ऐसा मालूम होता है कि हमारी सियासी आज़ादी का जितना समय गुज़रता जाता है हमारी आर्थिक ग़ुलामी घटने के बजाय उतनी ही बढ़ती जाती है. हम यहां तक कहेंगे कि सरकार जितना 'तरक़्क़ी" की तरफ़ बढ़ती है मामूली आदमी की आर्थिक आज़ादी उतनी ही छीन ली जाती है. यह तरक़्क़ी जितना ज़ियादा "योजना बन्दी" के साथ होती है उतनी ही अपनी आर्थिक आज़ादी से जनता और ज़ियादा मुहाल होती जाती है. चन्द मोटी मोटी चीजें हम यहां पेश करना चाहते हैं.

किसी को एतबार न होगा कि अंगरेज़ी झंडे के हिन्दुस्तान से हटने के बाद यहां पर अंगरेज़ी माल, अंगरेज़ी पूंजी और अंगरेज़ी व्योपारियों की तादाद बढ़ गई. फिर केवल अंगरेज़ी नहीं अमरीकी भी बढ़े, और दूसरे दूसरे देश वाले भी. हमारे मुल्क में आज चौदह सौ के लगभग ऐसे उद्योग धन्दे और कारख़ाने हैं जिन में अधिकतर पूंजी विदेशी है और जो लगभग सोलह आना विदेशियों के हाथों में हैं. इन कारख़ानों में विदेशियों की तादाद 1947 में 7162 थी, 1952 में 7653 हो गई. इनका ब्योरा यह है :

गिनती	कहां से	1947	1952
1.	इंगलैन्ड	6495	6820
2.	बाक़ी योरप	403	535
3.	अमरीका	183	202
4.	कनाडा	28	22
5.	आस्ट्रेलिया	14	14
6.	न्यूज़ीलैन्ड	5	6
7.	इसराईल	1	...
8.	पाकिस्तान	...	6
9.	दूसरे	33	48
	कुल	7162	7653

यह आंकड़े 1066 विदेशी कारख़ानों से जमा की हुई सरकारी सूचना के अनुसार हैं. लेकिन तीन सौ कारख़ानों ने सरकार के पूछने पर भी कोई सूचना नहीं दी. इन विदेशी कारख़ानों की दूसरी ख़ूबी यह है कि इनमें एक हज़ार रुपये या उससे ज़ियादा तनखा पर काम करने वाले लोग ज़ियादातर गोरे हैं. 1952 में विदेशी कारख़ानों में ऊंची तनख़ा पाने वाले हिन्दुस्तानियों और गोरों का हिसाब यह था :

गिनती	व्योपार या काम	हिन्दुस्तानी	विदेशी
1.	साहूकारी	45	277
2.	बीमा	61	161

کہ اصلیت کیا ہے ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہماری سیاسی آزادی کا جتنا سمے گذرتا جاتا ہے ہماری آرتھک غلامی گھٹنے کے بجائے اتنی ہی بڑھتی جاتی ہے ۔ ہم یہاں تک کہیں گے کہ سرکار جتنا "ترقی" کی طرف بڑھتی ہے معمولی آدمی کی آرتھک آزادی اتنی ہی چھین لی جاتی ہے ۔ یہ ترقی جتنا زیادہ "یوجنا بندی" کے ساتھ ہوتی ہے اتنی ہی اپنی آرتھک آزادی سے جنتا اور زیادہ محال ہو جاتی ہے ۔ چند موٹی موٹی چیزیں ہم یہاں پیش کرنا چاہتے ہیں۔

کسی کو اعتبار نہ ہوگا کہ انگریزی جھنڈے کے ہندستان سے ہٹنے کے بعد یہاں پر انگریزی مال، انگریزی پونجی اور انگریزی بیوپاریوں کی تعداد بڑھ گئی ۔ پھر کیول انگریزی نہیں، امریکی بھی بڑھے، اور دوسرے دوسرے دیش والے بھی ۔ ہمارے ملک میں آج چودہ سو کے لگ بھگ ایسے ادیوگ دھندے اور کارخانے ہیں جن میں ادھک تر پونجی ودیشی ہے اور جو لگ بھگ سولہ آنہ ودیشیوں کے ہاتھوں میں ہیں ۔ ان کارخانوں میں ودیشیوں کی تعداد 1947 میں 7162 تھی، 1952 میں 7653 ہو گئی۔ ان کا بیورا یہ ہے :

گنتی	کہاں سے	1947	1952
.1	انگلینڈ	6495	6820
.2	باقی یورپ	403	535
.3	امریکہ	183	202
.4	کناڈا	28	22
.5	آسٹریلیا	14	14
.6	نیوزی لینڈ	5	6
.7	اسرائیل	1	...
.8	پاکستان	...	6
.9	دوسرے	33	48
	کل	7162	7653

یہ آنکڑے 1066 ودیشی کارخانوں سے جمع کی ہوئی سرکاری سوچنا کے انوسار ہیں ۔ لیکن تین سو کارخانوں نے سرکار کے پوچھنے پر بھی کوئی سوچنا نہیں دی ۔ ان ودیشی کارخانوں کی دوسری خوبی یہ ہے کہ ان میں ایک ہزار روپے یا اس سے زیادہ تنخواہ پر کام کرنے والے لوگ زیادہ تر گورے ہیں ۔ 1952 میں ودیشی کارخانوں میں اونچی تنخواہ پانے والے ہندستانیوں اور گوروں کا حساب یہ تھا :

گنتی	بیوپار یا کام	ہندستانی	ودیشی
.1	ساہوکاری	45	277
.2	بیما	61	161

गिनती	व्यापार या काम	हिन्दुस्तानी	विदेशी
3.	ट्रान्सपोर्ट	48	125
4.	मोटर	56	75
5.	छपाई प्रकाशन	53	109
6.	धात (लोहा वगैरा)	50	97
7.	रंग-दवायें	168	363
8.	मशीनरी	352	831
9.	चमड़ा और रबर	115	154
10.	मामूली कम्पनी	69	75
11.	मैनेजिंग एजेन्सी	244	735
12.	एजेन्ट	167	641
13	कपड़ा	45	122
14.	पटसन	46	648
15.	चाय-काफ़ी	75	1067
16.	कोयला	53	91
17.	तेल	258	381
18.	दूसरी धातें	56	193
19.	चीनी	12	65
20.	दूसरे कारख़ाने	164	421

ध्यान देने की बात है कि पटसन, चाय काफ़ी, मैनेजिंग एजेन्सी और ऐजेन्ट के कारोबारों में हिन्दुस्तानी और विदेशी मुलाज़िमों की तादाद में फ़र्क़ बहुत ज़ियादा है और पटसन या काफ़ी ही वह चीज़ें हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि इन से डालर की कमाई होती है जिस के एवज़ में अमरीका से मशीन माल मिलता है. दूसरे शब्दों में हमारे सब ख़ास ख़ास व्योपार विदेशियों के हाथों में हैं. हमारे देश का सारा व्योपार 34 विलायती और 6 हिन्दुस्तानी बड़ी फ़र्मों के हाथ में है. यह हिन्दुस्तानी फ़र्में वही हैं जो अंगरेज़ी राज में क़ायम हुई थीं और जिन का लगाव विदेशी फ़र्मों से है. बहुत से कारख़ाने ऐसे भी हैं जो कहने को हिन्दुस्तानी हैं पर उनका काम धाम विदेशी मैनेजिंग एजेन्सी के हाथ में है जिन कम्पनियों में यह एजेन्सियां काम करती हैं उनमें इनकी 14.6 फ़ी सदी पूंजी रहती है, लेकिन नफ़े का बहुत बड़ा हिस्सा वह ख़ुद साफ़ कर लेती हैं. दूसरी जंग के दौरान में हिन्दुस्तान के पटसन व्योपार में जो फ़ायदे हुए उनका 54 फ़ी सदी मैनेजिंग एजेन्सियों के हत्थे लगा. यह एजेन्सियां ज़ियादातर अंगरेज़ी हैं.

अब ज़रा यह देखें कि विदेशी कारख़ानों के नफ़े का क्या हिसाब है. 1950 में विदेशी चाय कम्पनियों को 124 लाख रुपये का फ़ायदा हुआ. चाय के बग़ीचों में एक पौन्ड पीछे मुश्किल से चार आने मज़दूरी में ख़र्च होते हैं और एक पौन्ड पर कुल ख़र्चों के बाद लगभग बारह आने का

گنتی	ویاپار یا کام	ہندستانی	ودیشی
.3	ٹرانسپورٹ	48	125
.4	موٹر	56	75
.5	چھپائی پرکاشن	53	109
.6	دھات (لوہا وغیرہ)	50	97
.7	رنگ-دوائیں	168	363
.8	مشینری	352	831
.9	چمڑا اور ربڑ	115	154
.10	معمولی کمپنی	69	75
.11	مینیجنگ ایجنسی	244	735
.12	ایجنٹ	167	641
.13	کپڑا	45	122
.14	پٹسن	46	648
.15	چائے کافی	75	1067
.16	کوئلہ	53	91
.17	تیل	258	381
.18	دوسری دھاتیں	56	193
.19	چینی	12	65
.20	دوسرے کارخانے	164	421

دھیان دینے کی بات ہے کہ پٹسن، چائے کافی، مینیجنگ ایجنسی اور ایجنٹ کے کاروباروں میں ہندستانی اور ودیشی ملازموں کی تعداد میں فرق بہت زیادہ ہے اور پٹسن یا کافی ہی وہ چیزیں ہیں جن کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ اِن سے ڈالر کی کمائی ہوتی ہے جس کے عوض میں امریکہ سے مشین مال ملتا ہے۔ دوسرے شبدوں میں ہمارے سب خاص خاص بیوپار ودیشیوں کے ہاتھوں ہے ہمارے دیش کا سارا بیوپار 34 ولایتی اور 6 ہندستانی بڑی فرموں کے ہاتھ میں ہے۔ یہ ہندستانی فرمیں وہی ہیں جو انگریزی راج میں قائم ہوئی تھیں اور جن کا لگاؤ ودیشی فرموں سے ہے۔ بہت سے کارخانے ایسے بھی ہیں جو کہنے کو ہندستانی ہیں پر اُن کا کام دھام ودیشی مینیجنگ ایجنسی کے ہاتھ میں ہے۔ جن کمپنیوں میں یہ ایجنسیاں کام کرتی ہیں ان میں اِن کی 14.6 فی صدی پونجی رہتی ہے، لیکن نفع کا بہت بڑا حصہ وہ خود صاف کر لیتی ہیں۔ دوسری جنگ کے دوران میں ہندستان کے پٹسن بیوپار میں جو فائدے ہوئے ان کا 54 فی صدی مینیجنگ ایجنسیوں کے ہتھے لگا۔ یہ ایجنسیاں زیادہ تر انگریزی ہیں۔

اب ذرا یہ دیکھیں کہ ودیشی کارخانوں کے نفع کا کیا حساب ہے۔ 1950 میں ودیشی چائے کمپنیوں کو 124 لاکھ روپے کا فائدہ ہوا۔ چائے کے باغیچوں میں ایک پونڈ پیچھے مشکل سے چار آنے مزدوری میں خرچ ہوتے ہیں اور ایک پونڈ پر کل خرچوں کے بعد لگ بھگ بارہ آنے کا

मुनाफ़ा होता है. 1952 में चाय बग़ीचों में काम करने वाले 62,000 हिन्दुस्तानी मज़दूर काम से निकाल दिये गये और बेरोज़गार हो गये. इसी तरह लाख का काम करने वाली विदेशी कम्पनियों को लाखों रुपये की बचत होती है. मन माने दाम पर बिहार के गांव वालों से कच्ची लाख ख़रीदी जाती है और फिर जैसे चाहे वेची जाती है. नतीजा यह है कि लाख का काम करने वाले छोटे मोटे 200 हिन्दुस्तानी व्योपारियों का काम 1953 के शुरू में ठप्प हो गया और लगभग बीस हज़ार मज़दूर बेकार हो गये और इस काम में लगे सात लाख से ज़ियादा किसानों की रोज़ी मारी गई.

इस सिलसिले में कुछ आंकड़े रिज़र्व बैंक आफ़ इन्डिया की रिपोर्ट में छपे हैं. उसमें बताया गया है कि 30 जून 1948 को हिन्दुस्तान में 596 करोड़ रुपये बाहर वालों के लगे थे. इसमें 72·4 फ़ी सदी ब्रिटेन का था. रिज़र्व बैंक का यह भी कहना है कि विदेशी फ़र्मों और बैंकों को हर साल लगभग 40 करोड़ रुपये का नफ़ा होता है और 60 करोड़ रुपये सूद में और कमीशन के तौर पर उन्हें हरसाल ग़रीब हिन्दुस्तानियों की जेब से मिलता है. इसके अलावा 10 करोड़ रुपया पुराने अंगरेज़ साहिबों की पेन्शन में चला जाता है. इसमें वह रुपया शामिल नहीं है जो विदेशी फ़र्मों को माल का विदेश से लेन देन करने में मिलता है. मोटे तौर पर लगभग सवा सौ करोड़ रुपये हर साल यानी हर महीने दस करोड़ से ऊपर हमारा धन विदेशों को चला जाता है. फिर भी हमें बताया जाता है कि हिन्दुस्तान आर्थिक आज़ादी की तरफ़ बढ़ रहा है.

पिछले पांच छै बरस में मुल्क की जो आर्थिक "प्रगति" हुई उसके जो नतीजे नुमाया तौर पर सामने आये हैं वह यह हैं :

(1) हिन्दुस्तान में आज पहले के मुक़ाबले अंगरेज़ी पूंजी और अंगरेज़ी व्योपारियों की तादाद कहीं ज़ियादा है.

(2) अंगरेज़ों के अलावा, अमरीकी पूंजी और अमरीकी व्योपारियों की तादाद में तेज़ी से इज़ाफ़ा हुआ है.

(3) उन आर्थिक "विशेशज्ञों" और "सलाहकारों" की तादाद भी, जिन्हें हिन्दुस्तान के ग्राम जीवन का अनुभव उरद के ऊपर सफ़ेदी के बराबर भी नहीं होता, बहुत बढ़ी है.

(4) विकास की आड़ में हमारे गांव के छोटे बड़े धन्दे तबाह हो गये और अब हमारी खेती को भी विदेशों और ख़ास कर अमरीका का मोहताज बनाने की कोशिश है.

منافع ہوتا ہے۔ 1952 میں چائے باغیچوں میں کام کرنے والے 62,000 ہندستانی مزدور کام سے نکال دئے گئے اور بے روزگار ہوگئے۔ اسی طرح لاکھ کا کام کرنے والی ودیشی کمپنیوں کو لاکھوں روپے کی بچت ہوتی ہے۔ من مانے دام پر بہار کے گاؤں والوں سے کچی لاکھ خریدی جاتی ہے اور پھر جیسے چاہے بیچی جاتی ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ لاکھ کا کام کرنے والے چھوٹے موٹے 200 ہندستانی بیوپاریوں کا کام 1953 کے شروع میں ٹھپ ہوگیا اور لگ بھگ بیس ہزار مزدور بیکار ہوگئے اور اس کام میں لگے سات لاکھ سے زیادہ کسانوں کی روزی ماری گئی۔

اس سلسلے میں کچھ آنکڑے رزرو بینک آف انڈیا کی رپورٹ میں چھپے ہیں۔ اس میں بتایا گیا ہے کہ 30 جون 1948 کو ہندستان میں 596 کروڑ روپے باہر والوں کے لگے تھے۔ اس میں 72·4 فیصدی برٹین کا تھا۔ رزرو بینک کا یہ بھی کہنا ہے کہ ودیشی فرموں اور بینکوں کو ہر سال لگ بھگ 40 کروڑ روپے کا نفع ہوتا ہے اور 60 کروڑ روپے سود میں اور کمیشن کے طور پر انہیں ہر سال غریب ہندستانیوں کی جیب سے ملتا ہے۔ اس کے علاوہ 10 کروڑ روپیہ پرانے انگریز صاحبوں کی پینشن میں چلا جاتا ہے۔ اس میں وہ روپیہ شامل نہیں ہے جو ودیشی فرموں کو مال کا ودیش سے لین دین کرنے میں ملتا ہے۔ موٹے طور پر لگ بھگ سوا سو کروڑ روپیہ ہر سال یعنی ہر مہینے دس کروڑ سے اوپر ہمارا دھن ودیشوں کو چلا جاتا ہے۔ پھر بھی ہمیں بتایا جاتا ہے کہ ہندستان آرتھک آزادی کی طرف بڑھ رہا ہے۔

پچھلے پانچ چھ برس میں ملک کی جو آرتھک "پرگتی" ہوئی ہے اس کے جو نتیجے نمایاں طور پر سامنے آئے ہیں وہ یہ ہیں:

(1) ہندستان میں آج پہلے کے مقابلے انگریزی پونجی اور انگریزی بیوپاریوں کی تعداد کہیں زیادہ ہے۔

(2) انگریزوں کے علاوہ، امریکی پونجی اور امریکی بیوپاریوں کی تعداد میں تیزی سے اضافہ ہوا ہے۔

(3) ان آرتھک "وشیشگیوں" اور "صلاح کاروں" کی تعداد بھی، جنہیں ہندستان کے گرام جیون کا انوبھو ارد کے اوپر سفیدی کے برابر بھی نہیں ہوتا بہت بڑھی ہے۔

(4) وکاس کی آڑ میں ہمارے گاؤں کے چھوٹے بڑے دھندے تباہ ہوگئے اور اب ہماری کھیتی کو بھی ودیشوں اور خاص کر امریکہ کا محتاج بنانے کی کوشش ہے۔

(5) देश की बेकार पड़ी जन शक्ति का लिहाज़ न करके विदेशी और इन्सान खाऊ मशीनी शक्ति को दाद दी जा रही है.

(6) हिन्दुस्तान का ज़ियादातर कच्चा माल (जैसे अबरक, मैंगनीज़, लाख, कपास, पटसन, वगैरा) विदेश भेज दिया जाता है और ऐश आराम की, मशीनरी की और दीगर ऐसी चीज़ें मंगाई जाती हैं जिनके बिना देश का अच्छी तरह काम चल सकता है.

(7) हमारे गांवों और गांव वालों की बुनियादी ज़रूरतों के मामलों में (जैसे खाल, कपड़ा, मकान) अपनी खुद मुख्तयारी और अपने पैरों पर खड़े रहने की ताक़त का तेज़ी से मिटते जाना.

(8) फ़ौज खर्च का दिन दिन बढ़ते जाना और हथियारों वगैरा के लिये हमारा विदेशी कम्पनियों के मोहताज बनते जाना.

(9) हमारी रोज़ की ज़िन्दगी में पैसे का हावी होते जाना और आदमी के मोल का घटते जाना.

यह थोड़े से नतीजे हमने मिसाल के तौर पर गिनाए हैं, सौ बातों की एक बात यह कि हिन्दुस्तान की जनता के आर्थिक शोशन के वास्ते जो रास्ते अंगरेज़ों ने बनाये थे वह लगातार क़ायम हैं. दूसरे शब्दों में, अंगरेज़ की जगह हिन्दुस्तानी के गद्दी लेने पर भी लाखों को चूस कर चन्द गिने चुनों की ख़ातिर हिन्दुस्तान के आर्थिक वसीलों को निचोड़ने के लिये जो सांचा अंगरेज़ों ने ढाला था उस पर आंच तक नहीं आई, नहीं तो क्या कारन है कि हिन्दुस्तान का काश्तकार पैसे वाली फ़सलें—जैसे तिलहन, ईख, कपास, पटसन, ज़ियादा पैदा करने पर भी पहले से ज़ियादा ग़रीब हैं. और चाय, काफ़ी के बाग़ों में काम करने वाले मज़दूर पहले से भी ज़ियादा तबाही की सूरत में हैं? क्या कारन है कि चीनी की इतनी अधिक तैयारी के होते हुए उतनी तैयारी जितनी "पंच साला योजना" में तय की गई है—चीनी बाहर से आये और मामूली आदमी को अपनी चीनी के लिये ज़ियादा दाम देना पड़े? यही और केवल यही कि देश के शोशन के वास्ते तैयार की हुई अंगरेज़ी मशीनरी में अब तक कोई ख़ास तबदीली नहीं हुई है. यही नहीं, श्री ए. डी. गोरवाला ने प्लानिंग कमीशन से अपनी रिपोर्ट में कहा है:

"हमारे ब्योपार और रसद महकमे के इन्तज़ाम के कुछ दोश यह हैं—योजना की कमी, हमारी नीति हमेशा बदलते रहना, हमारा आज़ाद तबियत से कुछ सोच न सकना और हमारा बाहरी दबाव और असर में आ जाना."

यह भी ज़ाहिर है कि आर्थिक ढाचे के न बदलने के

(5) دیش کی بیکار پڑی جن شکتی کا لحاظ نہ کرکے ودیشی اور انسان کھاؤ مشینی شکتی کو داد دی جا رہی ہے۔

(6) ہندستان کا زیادہ تر کچا مال (جیسے ابرک، مینگنیز، لاکھ، کپاس، پٹسن وغیرہ) ودیش بھیج دیا جاتا ہے اور عیش آرام کی، مشینری کی اور دیگر ایسی چیزیں منگائی جاتی ہیں جن کے بنا دیش کا اچھی طرح کام چل سکتا ہے۔

(7) ہمارے گاؤں اور گاؤں والوں کی بنیادی ضرورتوں کے معاملوں میں (جیسے کھال، کپڑا، مکان) اپنی خود مختیاری اور اپنے پیروں پر کھڑے رہنے کی طاقت کا تیزی سے مٹتے جانا۔

(8) فوج خرچ دن دن بڑھتے جانا اور ہتھیاروں وغیرہ کے لئے ہمارا ودیشی کمپنیوں کے محتاج بنتے جانا۔

(9) ہماری روز کی زندگی میں پیسے کا حاوی ہوتے جانا اور آدمی کے مول کا گھٹتے جانا۔

یہ تھوڑے سے نتیجے ہم نے مثال کے طور پر گنائے ہیں، سو باتوں کی ایک بات یہ کہ ہندستان کی جنتا کے آرتھک شوشن کے واسطے جو راستے انگریزوں نے بنائے تھے وہ لگاتار قائم ہیں۔ دوسرے شبدوں میں، انگریز کی جگہ ہندستانی کے گدی لینے پر بھی لاکھوں کو چوس کر چند گنے چنوں کی خاطر ہندستان کی آرتھک وسیلوں کو نچوڑنے کے لئے جو سانچہ انگریزوں نے ڈھالا تھا اس پر آنچ تک نہیں آئی، نہیں تو کیا کارن ہے کہ ہندستان کا کاشتکار پیسے والی فصلیں—جیسے تلہن، ایکھ، کپاس، پٹسن زیادہ پیدا کرنے پر بھی پہلے سے زیادہ غریب ہیں۔ اور چائے، کافی کے باغوں میں کام کرنے والے مزدور پہلے سے بھی زیادہ تباہی کی صورت میں ہیں؟ کیا کارن ہے کہ چینی کی اتنی ادھک تیاری کے ہوتے ہوئے اتنی تیاری جتنی "پنچ سالہ یوجنا" میں طے کی گئی ہے—چینی باہر سے آئے اور معمولی آدمی کو اپنی چینی کے لئے زیادہ دام دینا پڑے؟ یہی اور کیول یہی کہ دیش کے شوشن کے واسطے تیار کی ہوئی انگریزی مشینری میں اب تک کوئی خاص تبدیلی نہیں ہوئی ہے۔ یہی نہیں، شری اے. ڈی. گوروالا نے پلاننگ کمیشن سے اپنی رپورٹ میں کہا ہے:

"ہمارے بیوپار اور رسد محکمے کے انتظام کے کچھ دوش یہ ہیں—یوجنا کی کمی، ہماری نیتی ہمیشہ بدلتے رہنا، ہمارا آزاد طبیعت سے کچھ سوچ نہ سکنا اور ہمارا باہری دباؤ اور اثر میں آ جانا۔"

یہ بھی ظاہر ہے کہ آرتھک ڈھانچے کے نہ بدلنے کے

ही कारन नये राज के अन्दर तालीम, अदालत, हकूमत वग़ैरा का ढंग भी वही पुराना चल रहा है जो पहले था. जब तक मौजूदी आर्थिक ढांचे की बुनियादों पर चोट न की जायगी तब तक मुल्क की कोई बेहतरी हो सकना नामुमकिन है. पर हमारे रेलवे मिनिस्टर और योजाना मिनिस्टर और कांगरेस के प्रधान मंत्री सब यही उम्मीद दिलाते हैं कि अंगरेज़ी स्वार्थ के लिये रचे हुए ढांचे की बुनियादों को छुए बिना ही देश में 'आर्थिक इन्क़िलाब" हो जायेगा. यह वैसा ही है जैसे कोई यह उम्मीद करे कि मद्रास जाने वाली गरेंडट्रंक गाड़ी में त्रिवेन्दम का टिकट लेकर बैठने पर वह दिल्ली पहुंच जायेगा.

हमारे कांगरेस मिनिस्टर और हाकिम रात दिन जनता को यह इतमिनान दिलाने के फेर में रहते हैं कि सरकार जो कर रही है, बाहर की और विशेश कर अमरीकी जो मदद ले रही है, वह एकदम सही चीज़ है. पर महात्मा गांधी ने—जिनकी दुहाई देते हुए हमारे शासक, कभी नहीं थकते—1942 में ही साफ़ साफ़ कह दिया था :

"हम जानते हैं कि अमरीकी इमदाद के क्या माने हैं. आख़िर में इसका मतलब यही है कि अंगरेज़ी राज के साथ साथ अमरीकी राज नहीं तो अमरीकी असर ज़रूर देश में क़ायम हो जाय......"

1945 में हिन्दुस्तान के कुछ बड़े बड़े व्योपारियों के अमरीका जाते वक़्त महात्मा गांधी ने एक व्योपारी को ख़बरदार किया था. उन्होंने एक तार दे कर उन से कहा था कि जब तक कांगरेस वर्किंग कमेटी की जानदार हस्तियां खेलों में पड़ी हैं तब तक "मुल्क को बेचने" का सौदा न कर लेना. लेकिन ज़माने की गर्दिश देखिये कि हालात ने ऐसा पलटा खाया कि प्रधान मंत्री की हैसियत से पंडित जवाहर लाल नेहरू ने ही अमरीकी सरकार के साथ एक ऐसे "समझौते" पर दस्तख़त किये जो ग़ुलामी के पट्टे से कम नहीं है और जिसके बारे में स्वर्गीय आचार्य किशोर लाल मशरूवाला के यह शब्द हैं :

"यह (हिन्द अमरीकी 'समझौता') असल में अमरीका के वास्ते एक पट्टा है जिससे वह अपने को हिन्दुस्तान में जमा सके, पहले एक व्योपारी के भेस में और बाद में हिन्दुस्तान के राजनीतिक मालिक के भेस में. हिन्द सरकार ने अपनी सारी इन्तज़ामी मशीनरी अमरीका के सिपुर्द करने और उसकी इश्तेहार बाज़ी या प्रोपेगेन्डा करने के लिये रज़ामंदी दे दी है."

(अंगरेज़ी से अनुवाद)

विनोबा जी ने भी अमरीकी मदद पर दुख ज़ाहिर किया है, डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा ने इसे "गले का फन्दा"

یہی کارن نئے راج کے اندر تعلیم، عدالت، حکومت وغیرہ کا ڈھنگ بھی وھی پرانا چل رہا ہے جو پہلے تھا. جب تک موجودہ آرتھک ڈھانچے کی بنیادوں پر چوٹ نہ کی جائیگی تب تک ملک کی کوئی بہتری ہوسکنا نامکن ہے. پر ہمارے ریلوے منسٹر اور یوجنا منسٹر اور کانگریس کے پردھان منتری سب یہی اُمید دلاتے ہیں کہ انگریزی سوارتھ کے لئے رچے ہوئے ڈھانچے کی بنیادوں کو چھوئے بنا ہی دیش میں "آرتھک انقلاب" ہو جائیگا. یہ ویسا ہی ہے جیسے کوئی یہ اُمید کرے کہ مدراس جانے والی گرینڈٹرنک گاڑی میں تریوندم کا ٹکٹ لےکر بیٹھنے پر وہ دلی پہنچ جائیگا.

ہمارے کانگریس منسٹر اور حاکم رات دن جنتا کو یہ اِطمینان دلانے کے پھیر میں رہتے ہیں کہ سرکار جو کر رہی ہے، باہر کی اور وشیش کر امریکی جو مدد لے رہی ہے، وہ ایک دم سہی چیز ہے. پر مہاتما گاندھی نے-جن کی دھائی دیتے ہوئے ہمارے شاسک کبھی نہیں تھکتے—1942 میں ہی صاف صاف کہہ دیا تھا :

"ہم جانتے ہیں کہ امریکی اِمداد کے کیا معنے ہیں. آخیر میں اِس کا مطلب یہی ہے کہ انگریزی راج کے ساتھ ساتھ امریکی راج نہیں تو امریکی اثر ضرور دیش میں قائم ہوجائے......"

1945 میں ہندستان کے کچھ بڑے بڑے بیوپاریوں کے امریکہ جاتے وقت مہاتما گاندھی نے ایک بیوپاری کو خبردار کیا تھا. اُنہوں نے ایک تار دے کر اُن سے کہا تھا کہ جب تک کانگریس ورکنگ کمیٹی کی جاندار ہستیاں کھیلوں میں پڑی ہیں تب تک "ملک کو بیچنے" کا سودا نہ کرلینا. لیکن زمانے کی گردش دیکھئے کہ حالات نے ایسا پلٹا کھایا کہ پردھان منتری کی حیثیت سے پنڈت جواہر لال نہرو نے ہی امریکی سرکار کے ساتھ ایک ایسے "سمجھوتے" پر دستخط کئے جو غلامی کے پٹے سے کم نہیں ہے اور جس کے بارے میں سورگیہ آچاریہ کشور لال مشروالا کے یہ شبد ہیں.

"یہ (ہند امریکی 'سمجھوتہ') اصل میں امریکہ کے واسطے ایک پٹہ ہے جس سے وہ اپنے کو ہندستان میں جماسکے، پہلے ایک بیوپاری کے بھیس میں اور بعد میں ہندستان کے راجنیتک مالک کے بھیس میں. ہند سرکار نے اپنی ساری انتظامی مشینری امریکہ کے سپرد کرنے اور اس کی اِشتہاربازی یا پروپیگنڈہ کرنے کے لئے رضامندی دے دی ہے."

(انگریزی سے انوواد)

ونوبا جی نے بھی امریکی مدد پر دکھ ظاہر کیا ہے. ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا نے اسے "گلے کا پھندا"

कहा है. मगर तिस पर भी, सरकार ने नवम्बर 1952 में दूसरा "समझौता" और कर लिया और अब तीसरे का नम्बर है! क्या यही तरीक़ा है देश के आर्थिक उद्धार का? अगर यह रफ़्तार चलती रही और मरकज़ियत और मशीनीयत और फ़ौजियाने का दौर इसी तरह बढ़ता रहा तो मुल्क की समाजी और आर्थिक हालत क़ाबू के बाहर, बदतर और ख़तरनाक होती जाएगी. बेरोज़गारी आसमान तक उठती चली जायेगी, अकाल और भुखमरी प्लेग हैज़े की तरह फैलेंगे और चोरी डकैती बदकारियों का ठिकाना नहीं रहेगा. भारत भारत न रह कर एक अंगरेज़ी अमरीकी सरमायेदारों की विरासत बन जायेगा.

अपने नेताओं से और ख़ास कर कांगरेसी नेताओं से हमारी विनती है कि अपने दिल पर हाथ रख कर देखें कि क्या सचमुच देश की आर्थिक आज़ादी का यही रास्ता है अगर नहीं तो क्यों नहीं फेंकते इस अंगरेज़ी अमरीकी माया जाल को और अपनी जनता की भीतरी ताक़त पर विश्वास क्यों नहीं करते? यही उन्हें महात्मा गांधी का बार बार बताया हुआ रास्ता था.

28. 8. '53 —सुरेश रामभाई

کہا ہے مگر تس پر بھی، سرکار نے نومبر 1952 میں دوسرا "سمجھوتہ" اور کرلیا اور اب تیسرے کا نمبر ہے! کیا یہی طریقہ ہے دیش کے آرتھک سدھار کا؟ اگر یہ رفتار چلتی رہی اور مرکزیت اور مشینیت اور فوجیانے کا دور اسی طرح بڑھتا رہا تو ملک کی سماجی اور آرتھک حالت قابو کے باہر، بدتر اور خطرناک ہوتی جائےگی. بےروزگاری آسمان تک اٹھتی چلی جائےگی، اکال اور بھکمری پلیگ ہیضے کی طرح پھیلیں گے اور چوری ڈکیتی بدکاریوں کا ٹھکانہ نہیں رہے گا. بھارت بھارت نہ رہ کر ایک انگریزی امریکی سرمایہداروں کی وراثت بن جائے گا.

اپنے نیتاؤں سے اور خاص کر کانگریسی نیتاؤں سے ہماری بنتی ہے کہ اپنے دل پر ہاتھ رکھ کر دیکھیں کہ کیا سچ مچ دیش کی آرتھک آزادی کا یہی راستہ ہے اگر نہیں تو کیوں نہیں پھینکتے اس انگریزی امریکی مایا جال کو اور اپنی جنتا کی بھیتری طاقت پر وشواس کیوں نہیں کرتے؟ یہی انہیں مہاتما گاندھی کا بار بار بتایا ہوا راستہ تھا.

28. 8. '53 —سریش رام بھائی

नेकी का सुनहरा उसूल

(डाक्टर भगवान दास)

हज़रत ईसा का एक मशहूर उपदेश है—"तुम दूसरे लोगों से ,जो बरताव चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें ठीक उसी तरह का बरताव तुम दूसरों के साथ करो." इसे हज़रत ईसा का सुनहरा उसूल कहा जाता है.

यह सुनहरा उसूल सब धर्मों की किताबों में मिलता है. इसके दो पहलू हैं. एक यह कि दूसरों के साथ कोई ऐसा बरताव न करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ न करें. और दूसरा यह कि दूसरों के साथ वही बरताव करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें. राज या सरकार की तरफ़ से रोक थाम, निग्रह यानी इन्सदाद के जितने हुकुम जारी होते हैं वह सब पहले पहलू से संबन्ध रखते हैं और करने धरने संग्रह यानी इमदाद के जितने हुकुम जारी होते हैं वह सब दूसरे पहलू से संबन्ध रखते हैं.

نیکی کا سنہرا اصول

(ڈاکٹر بھگوان داس)

حضرت عیسیٰ کا ایک مشہور اپدیش ہے—"تم دوسرے لوگوں سے جو برتاؤ چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ کریں ٹھیک اسی طرح کا برتاؤ تم دوسروں کے ساتھ کرو." اسے حضرت عیسیٰ کا سنہرا اصول کہا جاتا ہے.

یہ سنہرا اصول سب دھرموں کی کتابوں میں ملتا ہے. اس کے دو پہلو ہیں. ایک یہ کہ دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا برتاؤ نہ کرو جو تم چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ نہ کریں. اور دوسرا یہ کہ دوسروں کے ساتھ وہی برتاؤ کرو جو تم چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ کریں. راج یا سرکار کی طرف سے روک تھام، نگرہ یعنی انسداد کے جتنے حکم جاری ہوتے ہیں وہ سب پہلے پہلو سے سمبندھ رکھتے ہیں اور کرنے دھرنے سنگرہ یعنی امداد کے جتنے حکم جاری ہوتے ہیں وہ سب دوسرے پہلو سے سمبندھ رکھتے ہیں.

महरिशी व्यास ने महाभारत में कहा है :—

"दूसरों के साथ कोई ऐसा काम न करो जो तुम चाहते हो कि तुम्हारे साथ न किया जाय. किसी दूसरे के साथ कोई ऐसा बरताव नहीं करना चाहिये जो अपने साथ किया जाय तो हमें अच्छा न लगे. जो जो हम अपने लिये चाहें वही दूसरों के लिये चाहें यही धर्म का निचोड़ है. यही पूरा धर्म है. इसे ध्यान से सुनना चाहिये और सुन कर इसे दिल में जगह देनी चाहिये."

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है :—

"सब से बढ़ कर ईमान यही है कि तुम जो चीज़ अपने लिये पसन्द करो वही सब के लिये पसन्द करो और जिससे तुम्हें तकलीफ़ होती हो उसे और सब के लिये भी तकलीफ़ की चीज़ मानो."

महरिशी व्यास ने जिसे "धर्म सर्व सोम" यानी 'पूरा धर्म' कहा है उसी को मुहम्मद साहब ने "अफ़ज़ुलुल ईमान" यानी 'सब से बढ़ कर ईमान' बताया है.

भागवत पुरान में लिखा है :—

"यह धर्म कभी नहीं बदल सकता और अच्छे लोग हमेशा इस पर अमल करते हैं कि हमें दूसरे लोगों के दुख में दुख और उनके सुख में सुख महसूस करना चाहिये."

चीनी महात्मा कनफ़्यूशियश से किसी ने पूछा कि कोई ऐसा एक शब्द बताइये जिस पर आदमी ज़िन्दगी भर अपने सदाचार को ढाल सके. कनफ़्यूशियश ने एक चीनी शब्द में जवाब दिया जिसका मतलब है 'अपनी तरह सबको' और फिर समझाया कि—"दूसरों के साथ कोई ऐसा बरताव न करो जो तुम नहीं चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें. तुम इस पर अमल करोगे तो घर में या बाहर तुम्हारे कामों से कोई तुम्हारा दुश्मन न होगा."

महात्मा बुद्ध ने इसी उसूल को 'समान आत्मता' का नाम दिया है. सब ग्रहस्थों के लिये बुद्ध ने चार बातों को ज़रूरी बताया है. अव्वल 'दान' यानी ख़ैरात. दूसरे 'प्रिय वचन' यानी प्यारा बोलना. तीसरे 'अर्थ चर्या' यानी मेहनत और ईमानदारी से रोज़ी कमाना और चौथे सब भलाइयों की जड़ समान 'आत्मता' यानी सब को अपनी तरह समझना और सबके अन्दर एक ही आत्मा को देखना.

गीता में यही बात तरह तरह से कही गई है. लिखा है कि :—

"ऐ अर्जुन ! जो आदमी अपनी ही तरह सब के दुख और सुख को एक बराबर देखता है वही सब से बड़ा योगी है. जो सब जानदारों के अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब जानदारों को देखता है, जो सबके अन्दर ईश्वर को और ईश्वर के अन्दर सबको देखता है वह कभी ईश्वर

مہرشی ویاس نے مہابھارت میں کہا ہے :—

"دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا کام نہ کرو جو تم چاہتے ہو کہ تمہارے ساتھ نہ کیا جائے. کسی دوسرے کے ساتھ ایسا برتاؤ نہیں کرنا چاہئے جو اپنے ساتھ کیا جائے تو ہمیں اچھا نہ لگے. جو جو ہم اپنے لئے چاہیں وہی ہم دوسروں کے لئے چاہیں. یہی دھرم کا نچوڑ ہے. یہی پورا دھرم ہے. اِسے دھیان سے سننا چاہئے اور سن کر اِسے دل میں جگہ دینی چاہئے."

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—

"سب سے بڑھکر ایمان یہی ہے کہ تم جو چیز اپنے لئے پسند کرو وہی سب کے لئے پسند کرو اور جس سے تمہیں تکلیف ہوتی ہو اُسے اور سب کے لئے بھی تکلیف کی چیز مانو."

مہرشی ویاس نے جسے "دھرم سرو سوم" یعنی 'پورا دھرم' کہا ہے اُسی کو محمد صاحب نے "افضل ایمان" یعنی 'سب سے بڑھکر ایمان' بتایا ہے.

بھاگوت پران میں لکھا ہے :—

"یہ دھرم کبھی نہیں بدل سکتا اور اچھے لوگ ہمیشہ اِس پر عمل کرتے ہیں کہ ہمیں دوسرے لوگوں کے دکھ میں دکھ اور اُن کے سکھ میں سکھ محسوس کرنا چاہئے."

چینی مہاتما کنفیوشیس سے کسی نے پوچھا کہ کوئی ایسا ایک شبد بتائیے جس پر آدمی زندگی بھر اپنے سداچار کو ڈھال سکے. کنفیوشیس نے ایک چینی شبد میں جواب دیا جس کا مطلب ہے 'اپنی طرح سب کو' اور پھر سمجھایا کہ—"دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا برتاؤ نہ کرو جو تم نہیں چاہتے کہ وہ تمہارے ساتھ کریں. تم اِس پر عمل کروگے تو گھر میں یا باہر تمہارے کاموں سے کوئی تمہارا دشمن نہ ہوگا."

مہاتما بدھ نے اِسی اُصول کو 'سمان آتمتا' کا نام دیا ہے. سب گرہستھوں کے لئے بدھ نے چار باتوں کو ضروری بتایا ہے. اول 'دان' یعنی خیرات. دوسرے 'پریہ وچن' یعنی پیارا بولنا. تیسرے 'ارتھ چریا' یعنی محنت اور ایمانداری سے روزی کمانا اور چوتھے سب بھلائیوں کی جڑ 'سمان آتمتا' یعنی سب کو اپنی طرح سمجھنا اور سب کے اندر ایک ہی آتما کو دیکھنا.

گیتا میں یہی بات طرح طرح سے کہی گئی ہے. لکھا ہے کہ :—

"اے ارجن ! جو آدمی اپنی ہی طرح سب کے دکھ اور سکھ کو ایک برابر دیکھتا ہے وہی سب سے بڑا یوگی ہے. جو سب جانداروں کے اندر اپنے کو اور اپنے اندر سب جانداروں کو دیکھتا ہے، جو سب کے اندر ایشور کو اور ایشور کے اندر سب کو دیکھتا ہے وہ کبھی ایشور

से अलग नहीं हो सकता है. और ईश्वर न उससे अलग हो सकता है जो सब के घट घट में बैठे हुए एक ईश्वर की पूजा करता है वह कहीं भी रहे ईश्वर उसके साथ है."

मनुस्मृति में भी यही बात ठीक इन्हीं शब्दों में कही गई है और लिखा है कि—"जिसे यह बात हासिल है उसे ही सच्चा स्वराज हासिल है."

हितोपदेश में लिखा है :—

आत्मवत् सब भूतेषु यः पश्यति स पंडितः

यानी जो सब प्रानियों को अपनी ही तरह देखता है वही पंडित है.

चीन के ताव धर्म की एक किताब में लिखा है :—

"दूसरों को मुसीबतों में उन पर दया करो. दूसरे की ख़ुशहाली से ख़ुश हो. जिन्हें तुम्हारी मदद की ज़रूरत हो उन्हें मदद दो. जो ख़तरे में हों उन्हें ख़तरे से बचाओ दूसरों की कामयाबी में ख़ुश हो और उनकी नाकामी में उन से हमदर्दी करो. यह सब इस तरह समझ कर करो कि मानो उनकी जगह तुम ही हो."

एक मुसलमान सूफ़ी कहता है :—

हरचे बर ख़ुद नपसन्दी बर दीगिरां मपसन्द

यानी जो तू अपने लिये पसन्द नहीं करता वह दूसरों के लिये भी पसन्द न कर.

एक और मशहूर सूफ़ी शायर ने 'मर्दुम अज़ारी' यानी किसी दूसरे का दिल दुखाने को सब से बड़ा गुनाह बताया है.

बुद्ध धर्म की मशहूर किताब 'धम्मपद' में लिखा है कि :—

"तकलीफ़ से सब लोग बचना चाहते हैं, ज़िन्दगी सब को प्यारी है, उन सबकी तरह ही तू भी है. इसलिये अपने से दूसरे का हाल समझ कर न किसी की जान ले और न किसी को नुक़सान पहुंचा."

इंजील में लिखा है :—"अपने पड़ोसी के साथ वैसा ही प्यार करो जैसा अपने साथ करते हो."

यह बात ग़ौर करने की है कि इस सुनहरे उसूल में ख़ुदी को या अपने को मिटाने के लिये नहीं कहा गया. इसमें सिर्फ़ यह कहा गया है कि दूसरों को भी यानी सब को अपनी ही तरह समझो.

पारसी धर्म की किताब 'गाथा' में लिखा है :—"जो बात सब के लिये और हर किसी के लिये अच्छी है वही मेरे लिये अच्छी है. इसलिये जो मैं अपने लिये चाहूं वही सब के लिये चाहूं. यही सच्चा धर्म है."

इसी सुनहरे उसूल से कुछ और छोटे छोटे उसूल भी

سے الگ نہیں ہوسکتا اور نہ ایشور اُس سے الگ ہوسکتا ہے. جو سب کے گھٹ گھٹ میں بیٹھے ہوئے ایک ایشور کی پوجا کرتا ہے وہ کہیں بھی رہے ایشور اُس کے ساتھ ہے."

منو اِسمرتی میں بھی یہی بات ٹھیک اِنہیں شبدوں میں کہی گئی ہے اور لکھا ہے کہ—"جسے یہ بات حاصل ہے اُسے ہی سچا سوراجیہ حاصل ہے."

ہتوپدیش میں لکھا ہے :—

آتم وت سروبھوتیشو یہ پشیتی سہ پنڈتہ

یعنی جو سب پرانیوں کو اپنی ہی طرح دیکھتا ہے وہی پنڈت ہے.

چین کے تاؤ دھرم کی ایک کتاب میں لکھا ہے :—

"دوسروں کی مصیبتوں میں اُن پر دیا کرو. دوسروں کی خوشحالی سے خوش ہو. جنہیں تمہاری مدد کی ضرورت ہو اُنہیں مدد دو. جو خطرے میں ہوں اُنہیں خطرے سے بچاؤ. دوسروں کی کامیابی میں خوش ہو اور اُن کی ناکامی میں اُن سے ہمدردی کرو. یہ سب اِس طرح سمجھکر کرو کہ مانو اُن کی جگہ تم ہی ہو."

ایک مسلمان صوفی کہتا ہے :—

ہرچہ برخود نہ پسندی بر دیگراں مپسند

یعنی جو تو اپنے لئے پسند نہیں کرتا وہ دوسروں کے لئے بھی پسند نہ کر.

ایک اور مشہور صوفی شاعر نے "مردم آزاری" یعنی کسی دوسرے کا دل دکھانے کو سب سے بڑا گناہ بتایا ہے.

بودھ دھرم کی مشہور کتاب 'دھم پد' میں لکھا ہے کہ:—

"تکلیف سے سب لوگ بچنا چاہتے ہیں، زندگی سب کو پیاری ہے، اُن سبکی طرح ہی تو بھی ہے. اِس لئے اپنے سے دوسرے کا حال سمجھکر نہ کسی کی جان لے اور نہ کسی کو نقصان پہنچا."

انجیل میں لکھا ہے :—"اپنے پڑوسی کے ساتھ ویسا ہی پیار کرو جیسا اپنے ساتھ کرتے ہو."

یہ بات غور کرنے کی ہے کہ اِس سنہرے اصول میں خودی کو یا اپنے کو مٹانے کے لئے نہیں کہا گیا. اِس میں صرف یہ کہا گیا ہے کہ دوسروں کو بھی یعنی سب کو اپنی ہی طرح سمجھو.

پارسی دھرم کی کتاب 'گاتھا' میں لکھا ہے :—"جو بات سب کے لئے اور ہر کسی کے لئے اچھی ہے وہی میرے لئے اچھی ہے. اس لئے جو میں اپنے لئے چاہوں وہی سب کے لئے چاہوں. یہی سچا دھرم ہے."

اِسی سنہرے اصول سے کچھ اور چھوٹے چھوٹے اصول بھی

नतीजों के तौर पर निकलते हैं. मिसाल के लिये महाभारत में लिखा है कि :—

"आदमी अपने जिस काम के बारे में यह चाहे कि दूसरे उसे न जाने और जिस काम को करते हुए उसका अपना दिल शरमावे वह काम आदमी को कभी नहीं करना चाहिये."

इसी तरह मनुस्मृति में लिखा है :—

"जिस काम के बारे में आदमी यह चाहता है कि सब उसे जान जावें. जिस के करते हुए उसका दिल बिलकुल शरमाता नहीं. जिससे उसकी अन्तरात्मा को संतोश मिलता है वही काम सच्चा सात्विक यानी अफ़ज़ल काम है. वही धर्म है."

महाभारत के अनुशासन पर्व में एक जगह कहा गया है कि :—

"कोई मुझे ऐसा तरीक़ा बता दे जिससे मैं दुखिया लोगों और दुखिया प्रानियों के अन्दर घुस कर हमेशा उनके दुख को अपने दुख की तरह अनुभव कर सकूं."

इंजील में हज़रत ईसा ने कहा है :—

"मैं भूका था, मैं प्यासा था, मैं नंगा था, मैं बीमार था, मैं जेलख़ानों में क़ैद था. जिस दरजे तक तुमने मेरे किसी छोटे से छोटे भाई किसी भी इनसान के साथ यह सलूक किया है उस दरजे तक तुमने मेरे साथ यही सलूक किया है."

इसी सुनहरे उसूल से दूसरा नतीजा यह निकलता है कि हमें दूसरों की बुराई करना, दूसरों के दोश निकालना, दूसरों पर ताना कसना, किसी की पीठ पीछे बुराई करना, बुरी नियत से टीका टिप्पनी करना, बुरी बातें कहते फिरना, किसी को बदनाम करना जैसे कामों से हमेशा बचना चाहिये. बदक़िस्मती से यह सब आदतें चारों तरफ़ दिखाई देती हैं. आपस की मित्रता के लिये और मानव समाज के सुख के लिये इस तरह की आदतें बहुत ही बुरी हैं.

चीनी महात्मा मनशियश लिखता है कि :—

"लोगों में यह एक बीमारी है कि वह अपने खेत की तो परवाह नहीं करते और दूसरों के खेतों में जा जा कर वहां से ख़राब घास उखाड़ते फिरते हैं. इस तरह के लोग दूसरों से तो बड़ी बड़ी बातें चाहते हैं और ख़ुद अपना फ़र्ज़ बहुत कम समझते हैं."

एक दूसरा चीनी महात्मा क्वांग ज़े लिखता है कि "दूसरों को सुधारने की कोशिश करना जब कि हमारी अपनी नेकी पर बादल छाए हुए हों अपनी नेकी के ऊपर एक ऐसे काम का बार डालना है जो उसके बूते से बाहर है."

کے طور پر نکلتے ہیں۔ مثال کے لئے مہا بھارت میں لکھا ہے کہ :—

"آدمی اپنے جس کام کے بارے میں یہ چاہے کہ دوسرے اسے نہ جانیں اور جس کام کو کرتے ہوئے اس کا اپنا دل شرماوے وہ کام آدمی کو کبھی نہیں کرنا چاہئے."

اسی طرح منو اسمرتی میں لکھا ہے :—

"جس کام کے بارے میں آدمی یہ چاہتا ہے کہ سب اسے جان جاویں. جس کے کرتے ہوئے اس کا دل بالکل شرماتا نہیں. جس سے اس کی انتر آتما کو سنتوش ملتا ہے وہی کام سچا ساتوک یعنی افضل کام ہے. وہی دھرم ہے."

مہا بھارت کے انوشاسن پرو میں ایک جگہ کہا گیا ہے کہ :—

"کوئی مجھے ایسا طریقہ بتا دے جس سے میں دکھیا لوگوں اور دکھیا پرانیوں کے اندر گھس کر ہمیشہ ان کے دکھ کو اپنے دکھ کی طرح انوبھو کر سکوں."

انجیل میں حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—

"میں بھوکا تھا، میں پیاسا تھا، میں ننگا تھا، میں بیمار تھا، میں جیل خانہ میں قید تھا. جس درجہ تک تم نے میرے کسی چھوٹے سے چھوٹے بھائی کسی بھی انسان کے ساتھ یہ سلوک کیا ہے اس درجہ تک تم نے میرے ساتھ بھی سلوک کیا ہے."

اسی سنہرے اصول سے دوسرا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ ہمیں دوسروں کی برائی کرنا، دوسروں کے دوش نکالنا، دوسروں پر طعنہ کسنا، کسی کی پیٹھ پیچھے برائی کرنا، بری نیت سے ٹیکا ٹپنی کرنا، بری باتیں کہتے پھرنا، کسی کو بدنام کرنا جیسے کاموں سے ہمیشہ بچنا چاہئے. بدقسمتی سے یہ سب عادتیں چاروں طرف دکھائی دیتی ہیں. آپس کی مترتا کے لئے اور مانو سماج کے سکھ کے لئے اس طرح کی عادتیں بہت ہی بری ہیں.

چینی مہاتما منشیش لکھتا کہ :—

"لوگوں میں یہ ایک بیماری ہے کہ وہ اپنے کھیت کی تو پرواہ نہیں کرتے اور دوسروں کے کھیتوں میں جا جا کر وہاں سے خراب گھاس اکھاڑتے پھرتے ہیں. اس طرح کے لوگ دوسروں سے تو بڑی بڑی باتیں چاہتے ہیں اور خود اپنا فرض بہت کم سمجھتے ہیں."

ایک دوسرا چینی مہاتما کوانگ زے لکھتا ہے "دوسروں کو سدھارنے کی کوشش کرنا جب کہ ہماری اپنی نیکی پر بادل چھائے ہوئے ہوں اپنی نیکی کے اوپر ایک ایسے کام کا بار ڈالنا ہے جو اس کے بوتے سے باہر ہے."

बुद्ध धर्म की पुस्तक 'धम्म पद' में लिखा है :—

"नफ़रतों से नफ़रतें कभी नहीं बुझ सकती. नफ़रत न करने से ही नफ़रतें बुझ सकती हैं और प्रेम में बदल सकती हैं. यही सनातन धर्म है."

महाभारत में कहा गया है :—

"ए राजा ! दूसरों के सरसों के दाने के बराबर दोशों को भी तुम देख लेते हो और अपने बेल की फल के बराबर दोशों को देखते हुए भी तुम नहीं देखते."

इंजील में लिखा है :—

"तुम अपने भाई की आंख के अन्दर का तिल भी क्यों देख लेते हो और ख़ुद अपनी आंख के अन्दर की शहतीर भी क्यों नहीं देख पाते ?"

धम्म पद में लिखा है :—

"दूसरों के दोश हम आसानी से देख लेते हैं, अपने दोश बहुत मुशकिल से दिखाई देते हैं. अपने पड़ोसी के दोशों को हम बड़े शौक़ से इस तरह फछोड़ते हैं जिस तरह दाने से भूसा पछोड़ा जाता है, और अपने दोशों को इस तरह छिपाते फिरते हैं जिस तरह जुआ चोर लोग अपने उल्टे पासे को छिपाने की कोशिश करते हैं. करना चाहिये हमें यह कि दूसरों के दोशों को खोजने में न पड़ कर अपने दोशों को बड़ी सावधानी से फटक फटक कर अलग करें."

यह 'सुनहरा असूल' एक गहरी रूहानी सच्चाई से पैदा होता है. वह सच्चाई ही सब सचाइयों की एक सचाई है. आदमी दूसरों के साथ वह सलूक क्यों करे जो वह चाहता है कि दूसरे उसके साथ करें ? इसलिये क्योंकि 'वह' और 'दूसरे' हक़ीक़त में एक हैं. सब के अन्दर एक ही आत्मा रमी हुई है. सब एक ही के अनेक रूप हैं. जो कुछ मैं दूसरों के साथ करता हूं वह वास्तव में अपने ही साथ करता हूं. हमारे भले और बुरे काम सब हम पर उसी तरह लौट कर आते हैं जिस तरह चिड़ियां दिन भर हवा में उड़ कर रात को लौट कर सब अपने बसेरे में आ जाती हैं. जल्दी या देर में जो सलूक कोई किसी दूसरे के साथ करता है वही अटल रूप में उसके साथ होता है.

उपनिषद् में लिखा है :—

> यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्ये वानु पश्यति
> सर्व भूतेषु चात्मानम् ततो न विजुगुप्सते

यानी जो आदमी सब प्रानियों को अपने अन्दर ही देखता है और सब प्रानियों के अन्दर अपनी आत्मा को देखता है वह फिर न किसी से नफ़रत करता है, न किसी से डरता है, न किसी का बुरा करता है और न कभी धोका खाता है.

بدھ دھرم کی پستک دھم پد میں لکھا ہے :—

" نفرتوں سے نفرتیں کبھی نہیں بجھ سکتیں. نفرت نہ کرنے سے ہی نفرتیں بجھ سکتی ہیں اور پریم میں بدل سکتی ہیں. یہی سناتن دھرم ہے."

مہا بھارت میں کہا گیا ہے :—

" اے راجا ! دوسروں کے سرسوں کے دانے کے برابر دوشوں کو بھی تم دیکھ لیتے ہو اور اپنے بیل کی پھل کے برابر دوشوں کو دیکھتے ہوئے بھی تم نہیں دیکھتے."

انجیل میں لکھا ہے :—

" تم اپنے بھائی کی آنکھ کے اندر کا تل بھی کیوں دیکھ لیتے ہو اور خود اپنی آنکھ کے اندر کی شہتیر بھی کیوں نہیں دیکھ پاتے ؟"

دھم پد میں لکھا ہے :—

" دوسروں کے دوش ہم آسانی سے دیکھ لیتے ہیں' اپنے دوش بہت مشکل سے دکھائی دیتے ہیں. اپنے پڑوسی کے دوشوں کو ہم بڑے شوق سے اِس طرح پچھوڑتے ہیں جس طرح دانے سے بھوسا پچھوڑا جاتا ہے' اور اپنے دوشوں کو اِس طرح چھپاتے پھرتے ہیں جس طرح جوا چور لوگ اپنے اُلٹے پاسے کو چھپانے کی کوشش کرتے ہیں. کرنا چاہئیے ہمیں یہ کہ دوسروں کے دوشوں کو کھوجنے میں نہ پڑ کر اپنے دوشوں کو بڑی ساودھانی سے پھٹک پھٹک کر الگ کریں."

یہ سنہرا اُصول ایک گہری روحانی سچائی سے پیدا ہوتا ہے. وہ سچائی ہی سب سچائیوں کی ایک سچائی ہے. آدمی دوسروں کے ساتھ وہ سلوک کیوں کرے جو وہ چاہتا ہے کہ دوسرے اُس کے ساتھ کریں ؟ اس لئے کیونکہ 'وہ' اور 'دوسرے' حقیقت میں ایک ہیں. سب کے اندر ایک ہی آتما رمی ہوئی ہے. سب ایک ہی کے انیک روپ ہیں. جو کچھ میں دوسروں کے ساتھ کرتا ہوں وہ واستو میں اپنے ہی ساتھ کرتا ہوں. ہمارے بھلے اور برے کام سب ہم پر اُسی طرح لوٹ کر آتے ہیں جس طرح چڑیاں دن بھر ہوا میں اُڑ کر رات کو لوٹ کر سب اپنے بسیرے میں آ جاتی ہیں. جلدی یا دیر میں جو سلوک کوئی کسی دوسرے کے ساتھ کرتا ہے وہی اٹل روپ میں اُس کے ساتھ ہوتا ہے.

اُپنشد میں لکھا ہے :—

> یستو سروانی بھوتانی آتمنی ایو انوپشیتی
> سرو بھوتیشو چاتمانم تتو نہ وجو گپستے

یعنی جو آدمی سب پرانیوں کو اپنے اندر ہی دیکھتا ہے اور سب پرانیوں کے اندر اپنی آتما کو دیکھتا ہے وہ پھر نہ کسی سے نفرت کرتا ہے' نہ کسی سے ڈرتا ہے' نہ کسی کا برا کرتا ہے اور نہ کبھی دھوکا کھاتا ہے.

भागवत पुरान में और भी साफ़ लिखा है कि :—

किसी तरह किसी एक प्रानी को भी जो समझदार आदमी संतोश या तसल्ली देता है उसका ऐसा करना ही ईश्वर की पूजा करना है. नेक आदमी दूसरों के दुख से दुखी होते हैं. उनका यह दुखी होना ही सब से बड़ी आराधना यानी इबादत है. सब का भला चाहना यही सबका सब से बड़ा धर्म है. जो ज्योति यानी नूर आदमी के अपने अन्दर है वही ज्योति सब के अन्दर है और सब में बराबर है."

आदमी के इस सब से बड़े धर्म या फ़र्ज़ की शकलें देश, काल और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं. इन शकलों को तय करने में आदमी को कभी कभी काफ़ी कठिनाई पड़ती है. अलग अलग हालतों में अपने ठीक फ़र्ज़ को समझने के लिये आवश्यकता केवल यह है कि आदमी का दिल साफ़ और पक्षपात से ख़ाली हो. यानी वह किसी तरह की धर्मान्धता, कट्टरता और केवल ऊपरी रीत रिवाज या दिखावे में फंसा हुआ न हो.

हज़रत ईसा ने कहा है :—

"बुराई से टक्कर न लो, अगर कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर चांटा मारे तो बायां गाल भी उसके सामने कर दो" जो तुम्हें बद्दुआ दे उसे तुम उसे आशीर्वाद दो, अपने दुशमनों से प्रेम करो और जो तुम्हें तकलीफ़ पहुचाएं उनके लिये भलाई की दुआ करो."

बुद्ध भगवान ने कहा है :—

"नफ़रत को मुहब्बत से जीतो."

क़ुरान में लिखा है:–इदफ़ा बिल्लति हियहसन (96-23) यानी बुराई का बदला भलाई से दो.

मनुस्मृति में लिखा है :—

'जो तुम पर क्रोध करे उस पर तुम क्रोध न करो और जो तुम से कड़ाई से बोले उसके साथ तुम मिठाई से बात करो."

महाभारत में लिखा है :—

"क्रोध को ग़ुस्सा न करके यानी मेहरबानी से जीतो, बदी को नेकी से जीतो, ओछेपन को दान से जीतो और झूट को सच से जीतो."

बुद्ध ने अपनी किताब 'धम्म पद' में ठीक महाभारत के ऊपर के शब्दों को दुहराया है.

जैन धर्म की किताब में इसी असूल को ज़रा बदल कर यूं लिखा है :—

"अपने ग़ुस्से को मीठी क्षमा से जीतो, अपने घमन्ड को नम्रता से क़ाबू में करो, हर तरह के छल कपट को सीधी सचाई से जीतो और लोभ को शान्ति और संतोश से क़ाबू में करो."

بھاگوت پران میں اور بھی صاف لکھا ہے کہ :—

"کسی طرح کسی ایک پرانی کو بھی جو سمجھدار آدمی ... یا تسلی دیتا ہے اس کا ایسا کرنا ہی ایشور کی پوجا کرنا ہے۔ نیک آدمی دوسروں کے دکھ سے دکھی ہوتے ہیں۔ اُن کا یہ دکھی ہونا ہی سب سے بڑی آرادھنا یعنی عبادت ہے۔ سب کا بھلا چاہنا یہی سب کا سب سے بڑا دھرم ہے۔ جو جیوتی یعنی نور آدمی کے اپنے اندر ہے وہی جیوتی سب کے اندر ہے اور سب میں برابر ہے۔"

آدمی کے اس سب سے بڑے دھرم یا فرض کی شکلیں دیش، کال اور پرستھتی کے انوسار بدلتی رہتی ہیں۔ ان شکلوں کے طے کرنے میں آدمی کو کبھی کبھی کافی کٹھنائی پڑتی ہے۔ الگ الگ حالتوں میں اپنے ٹھیک فرض کو سمجھنے کے لئے آوشیکتا کیول یہ ہے کہ آدمی کا دل صاف اور پکشپات سے خالی ہو۔ یعنی وہ کسی طرح کی دھرماندھتا، کٹرتا اور کیول اوپری ریت رواج یا دکھاوے میں پھنسا ہوا نہ ہو۔

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—

"برائی سے ٹکر نہ لو، اگر کوئی تمہارے داہنے گال پر چانٹا مارے تو بایاں گال بھی اس کے سامنے کر دو۔" جو تمہیں بددعا دے اسے تم آشیرواد دو، دشمنوں سے پریم کرو اور جو تمہیں تکلیف پہنچائیں ان کے لئے بھلائی کی دعا کرو۔"

بدھ بھگوان نے کہا ہے :—

"نفرت کو محبت سے جیتو۔"

قرآن میں لکھا ہے:—

اِدفع بالتی ہی احسن (96-23)

یعنی برائی کا بدلہ بھلائی سے دو۔

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"جو تم پر کرودھ کرے اس پر تم کرودھ نہ کرو اور جو تم سے کڑائی سے بولے اس کے ساتھ تم مٹھائی سے بات کرو۔"

مہا بھارت میں لکھا ہے :—

"کرودھ کو غصہ نہ کر کے یعنی مہربانی سے جیتو، بدی کو نیکی سے جیتو، اوچھے پن کو دان سے جیتو اور جھوٹ کو سچ سے جیتو۔"

بدھ نے اپنی کتاب 'دھم پد' میں ٹھیک مہا بھارت کے اوپر کے شبدوں کو دہرایا ہے۔

جین دھرم کی کتاب میں اسی اصول کو ذرا بدل کر یوں لکھا ہے :—

"اپنے غصے کو میٹھی کھشما سے جیتو، اپنے گھمنڈ کو نمرتا سے قابو میں کرو، ہر طرح کے چھل کپٹ کو سیدھی سچائی سے جیتو اور لوبھ کو شانتی اور سنتوش سے قابو میں کرو۔"

चीन के महात्मा क्वांगज़े ने लिखा है :—

"अच्छे लोग आदर सत्कार से खुश नहीं होते और कोई उनका निरादर करे तो नाराज़ नहीं होते. यह वही कर सकते हैं जो भगवान की अनन्त एक रूपता को समझ चुके हैं."

गीता में यही बात बार बार आती है.

इंजील में लिखा है :—

"अगर तुम्हारा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना दो, अगर वह प्यासा हो तो उसे पानी दो."

एक दूसरी जगह इंजील में लिखा है :—

"जो आदमी जल्दी से ग़ुस्सा नहीं करता वह बड़े से बड़े बलवान आदमी से ज़ियादा बलवान है, और जो अपनी आत्मा पर क़ाबू रखता है वह उस आदमी से बढ़ कर है जो एक शहर जीत लेता है...नफ़रत से नफ़रत और झगड़ा बढ़ता है लेकिन प्रेम से सब पाप दब जाते हैं... नरम जवाब गुस्से को मोड़ देता है लेकिन कड़वे शब्द गुस्से को और भड़का देते हैं."

एक और जगह इंजील में लिखा है—"पूरा प्रेम डर को निकाल कर बाहर कर देता है.'

यही 'बात धम्म पद' और महाभारत में भी इन्हीं शब्दों में कही गई है. महाभारत में लिखा है कि "जो आदमी अपने उभरते हुए क्रोध को जीत कर शान्त करे वही सच्चा बहादुर है न कि वह जो लड़ाई के मैदान में बहुत से दुश्मनों को पछाड़ ले."

सामवेद में लिखा है कि :—

"दो ऐसे पुल हैं जिन्हें पार करना ज़रा मुशकिल है. उन्हें होशयारी से पार करना चाहिये. एक क्रोध और शान्ति के बीच का पुल और दूसरा झूट और सच के बीच का पुल.

रिगवेद में लिखा है :—

"हिंसा का बदला हिंसा से मत दो और न शाप यानी बददुआ का बदला शाप से दो. दूसरे के छल कपट का बदला चालों से मत दो. इन सब के बदले में लोगों को आशीर्वाद दो." (1-41,9)

गीता में लिखा है कि "जो अपने क्रोध को जीत लेता है वही ईश्वर तक पहुंचता है."

शुक़रात को यूनान का सब से अधिक बुद्धिमान मनुष्य माना जाता है. उसने एक जगह लिखा है कि :—

हमें किसी की बुराई का बदला बुराई से नहीं देना चाहिये और न किसी के साथ बुराई करनी चाहिये चाहे उसने हमारे साथ कितनी भी बुराई क्यों न की हो."

शुक़रात की एक और मशहूर कहावत है :—

چین کے مہاتما کو انگ زے نے لکھا ہے :—

" اچھے لوگ آدر ستکار سے خوش نہیں ہوتے اور کوئی اُن کا نرادر کرے تو ناراض نہیں ہوتے . یہ وہی کر سکتے ہیں جو بھگوان کی اننت ایک روپتا کو سمجھ چکے ہیں ."

گیتا میں یہی بات بار بار آتی ہے .

اِنجیل میں لکھا ہے :—

" اگر تمہارا دشمن بھوکا ہو تو اُسے کھانا دو' اگر وہ پیاسا ہو تو اُسے پانی دو ."

ایک دوسری جگہ اِنجیل میں لکھا ہے :—

" جو آدمی جلدی سے غصہ نہیں کرتا وہ بڑے سے بڑے بلوان آدمی سے زیادہ بلوان ہے' اور جو اپنی آتما پر قابو رکھتا ہے وہ اس آدمی سے بڑھکر ہے جو ایک شہر جیت لیتا ہے......نفرت سے نفرت اور جھگڑا بڑھتا ہے لیکن پریم سے سب پاپ دب جاتے ہیں......نرم جواب غصہ کو موڑ دیتا ہے لیکن کڑوے شبد غصہ کو اور بھڑکا دیتے ہیں ."

ایک اور جگہ اِنجیل میں لکھا ہے—" پورا پریم ڈر کو نکال کر باہر کر دیتا ہے ."

یہی بات دھم پد اور مہا بھارت میں بھی اِنہیں شبدوں میں کہی گئی ہے . مہا بھارت میں لکھا ہے کہ " جو آدمی اپنے اُبھرتے ہوئے کرودھ کو جیت کر شانت کرے وہی سچا بہادر ہے نہ کہ وہ جو لڑائی کے میدان میں بہت سے دشمنوں کو پچھاڑ لے."

سام وید میں لکھا ہے کہ :—

" دو ایسے پل ہیں جنہیں پار کرنا ذرا مشکل ہے . اِنہیں ہوشیاری سے پار کرنا چاہئے . ایک کرودھ اور شانتی کے بیچ کا پل اور دوسرا جھوٹ اور سچ کے بیچ کا پل ."

رگ وید میں لکھا ہے :—

ہنسا کا بدلہ ہنسا سے مت دو اور نہ شاپ یعنی بددعا کا بدلہ شاپ سے دو . دوسرے کے چھل کپٹ کا بدلہ چالوں سے مت دو. اِن سب کے بدلے میں لوگوں کو آشیرواد دو ."
(1-41,9)

گیتا میں لکھا ہے کہ " جو اپنے کرودھ کو جیت لیتا ہے وہی ایشور تک پہنچتا ہے ."

سقراط کو یونان کا سب سے ادھک بدھیمان منشیہ مانا جاتا ہے . اُس نے ایک جگہ لکھا ہے کہ :—

" ہمیں کسی کی برائی کا بدلہ برائی سے نہیں دینا چاہئے اور نہ کسی کے ساتھ برائی کرنی چاہئے چاہے اُس نے ہمارے ساتھ کتنی بھی برائی کیوں نہ کی ہو ."

سقراط کی ایک اور مشہور کہاوت ہے :—

"किसी के साथ बुराई करने से बुराई सह लेना ज़ियादा अच्छा है."

चीनी महात्मा लाओज़े ने कहा है कि "बुराई का बदला मेहरबानी से दो."

लाओज़े के मशहूर चेले महात्मा क्वांगज़े ने कहा है कि :—

"नेकों के साथ मैं नेकी करूंगा और जो नेक नहीं हैं उनके साथ भी नेकी करूंगा ताकि वह नेक बन सकें. जो लोग सच्चे हैं उनके साथ मैं भी सच्चा रहूंगा और जो लोग सच्चे नहीं हैं उनके साथ भी मैं सच्चा रहूंगा ताकि इस तरह सब सच्चे बन सकें."

लगभग इन्हीं सब महा पुरुशों ने और लगभग सब धर्मों के क़ायम करने वालों ने समय समय पर अन्याय या ज़ुल्म के ख़िलाफ़ लड़ने की इजाज़त भी दी है. हर आदमी का धर्म देश, काल और परिस्थिति के अनुसार और उसकी अपनी तबियत, विकास और क़ाबलियत के अनुसार होता और बदलता रहता है. पर सब धर्म ग्रंथों के अनुसार सब से ऊंचा और सब से अधिक काम का धर्म यही है कि आदमी बुराई का बदला नेकी से दे और किसी दूसरे को दुख पहुंचाने के बजाय ख़ुद दुःख सहने को तैयार रहे.

"کسی کے ساتھ برائی کرنے سے برائی سہ لینا زیادہ اچھا ہے."

چینی مہاتما لاؤ زے نے کہا ہے کہ "برائی کا بدلہ مہربانی سے دو."

لاؤ زے کے مشہور چیلے مہاتما کوانگ زے نے کہا ہے کہ :—

"نیکوں کے ساتھ میں نیکی کروں گا اور جو نیک نہیں ہیں اُن کے ساتھ بھی نیکی کروں گا تاکہ وہ نیک بن سکیں. جو لوگ سچے ہیں اُن کے ساتھ میں بھی سچا رہوں گا اور جو لوگ سچے نہیں ہیں اُن کے ساتھ بھی میں سچا رہوں گا تاکہ اِس طرح سب سچے بن سکیں."

لگ بھگ اِنہیں سب مہا پرشوں نے اور لگ بھگ سب دھرموں کے قائم کرنے والوں نے سمے سمے پر انیائے یا ظلم کے خلاف لڑنے کی اجازت بھی دی ہے. ہر آدمی کا دھرم دیش، کال اور پرستھتی کے انوسار اور اُس کی اپنی طبیعت، وکاس اور قابلیت کے انوسار ہوتا اور بدلتا رہتا ہے. پر سب دھرم گرنتھوں کے انوسار سب سے اُونچا اور سب سے ادھک کام کا دھرم یہی ہے کہ آدمی برائی کا بدلہ نیکی سے دے اور کسی دوسرے کو دکھ پہنچانے کے بجائے خود دکھ سہنے کو تیار رہے.

चीन में रूसी माहिर

जिस दिन से चीन में नई सरकार बनी है वहां एक जादू सा हो गया है. हर तरफ़ ख़ुशहाली नज़र आती है. भूक, बेकारी, और रहने सहने के बन्दोबस्त में नया ढंग अपनाया गया है. लोगों का स्तर पहले से ऊंचा उठ गया है. एक सवाल उठता है कि चीनी अपने मुल्क को इतने थोड़े अरसे में कैसे बना सके? इसका जवाब साधारन है—चीनियों में अपने मुल्क को तरक़्क़ी देने का मज़बूत इरादा—साथ ही साथ रूसी माहिरों ने भी चीन को बनाने व लोगों का स्तर ऊंचा करने में जो सहायता दी है वह भी तारीफ़ के क़ाबिल है. लियु शाउ ची ने 13 फ़रवरी 1953 को चीन रूस दोस्ती समझौते के बारे में कहा—"हमारे और महान रूस के बीच जो समझौता हुआ है उसमें कोई धोका धड़ी करने की बात नहीं है, न होड़ की बात है, न एक दूसरे को बाज़ार से निकालने की बात है,

چین میں روسی ماہر

جس دن سے چین میں نئی سرکار بنی ہے وہاں ایک جادو سا ہو گیا ہے. ہر طرف خوش حالی نظر آتی ہے. بھوک، بیکاری اور رہنے سہنے کے بندوبست میں نیا ڈھنگ اپنایا گیا ہے. لوگوں کا استر پہلے سے اُونچا اُٹھ گیا. ایک سوال اُٹھتا ہے کہ چینی اپنے ملک کو اِتنے تھوڑے عرصے میں کیسے بنا سکے؟ اُس کا جواب سادھارن ہے—چینیوں میں اپنے ملک کو ترقی دینے کا مضبوط ارادہ—ساتھ ہی ساتھ روسیوں نے بھی چین کو بنانے و لوگوں کا استر اُونچا کرنے میں جو سہائتا دی ہے وہ بھی تعریف کے قابل ہے. لیو شاؤ چی نے 13 فروری 1953 کو چین روس دوستی سمجھوتے کے بارے میں کہا—"ہمارے اور مہان روس کے بیچ جو سمجھوتا ہوا ہے اُس میں کوئی دھوکا دھڑی کرنے کی بات نہیں ہے، نہ ہوڑ کی بات ہے، نہ ایک دوسرے کو بازار سے نکالنے کی بات ہے،

न एक दूसरे को लूटने और ख़ून चूसने की बात इसमें है. यह सब बातें पूंजीवादी देशों की विरासत हैं."

नये चीन की सरकार के सामने बड़े बड़े मसले पेश थे. इन मसलों में सब से बड़े और ज़रूरी थे यातायात और बाढ़ों का रोकना. चांग काई शेक की हुकूमत के दौरान में इन दोनों की हालत बहुत ख़राब थी. बड़े बड़े पुल टूटे पड़े थे. रेलों को इन पर गुज़रने में बहुत वक़्त लगता था. रूसी सहायता की मदद से इन पुलों को सुधारा गया. पीकिंग हानकाओ कैनटन लाइन को एक सिरे से दुरुस्त किया गया. इस सिलसिले में एक रूसी माहिर श्री स्लिन का ज़िकर ज़रूरी है. चीनियों के साथ इन्होंने चीन की तमाम लाइनों की ख़ुद जांच की. पुलों को नये ढंग से सुधारा. पुरानी चीज़ों के बारे में उन्होंने कहा—"इन पुलों को हम को पुराने ज़माने का नहीं समझना चाहिये. अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ हमको काम में लाने के लिये इनको बना लेना चाहिये."

आगे चल कर हम इस लेख में यह बयान करेंगे कि किस किस दायरे में रूसी माहिरों ने चीनियों की मदद की :

यलो रीवर पुल चेंगचाव में बना हुआ है. होनान सूबे में चेंगचाव एक मशहूर जगह है. यह चीन के बड़े बड़े शहरों में शुमार किया जाता है. इस पुल का काम भी रूसी लोगों की अथक और बेलाग मेहनत से किया गया है. इस पुल के बनाने का जो रास्ता अख़तियार किया गया वह पुराने चीन के मुक़ाबले बिलकुल दूसरा था. चांग काई शेक के इनजीनियरों ने भी इस पुल के बनाने में थोड़ी बहुत कोशिश ज़रूर की थी लेकिन जनवादी चीन ने रूसियों की सहायता से इस पुल को थोड़े अरसे में अपने काम लायक़ पूरी तरह ठीक कर लिया है. यह पुल आज से क़रीब 52 बरस पहले बेलजियम और फ़्रांस के ठेकेदारों की मदद से बनाया गया था. जब यह नया नया बना था तब रेलें इस पुल पर 10 मील फ़ी घंटे के हिसाब से गुज़रती थीं. सन 1929 में एक अमरीका सलाहकार को बुलाया गया. इसने उस पुल को अच्छी तरह देखा भाला लेकिन कोई ख़ास शकल नहीं दे सका. 1946 में चांग काइ शेक के इनजीनियरों ने इस पुल को फिर से ठीक करने की कोशिश की. एक अमरीकन कम्पनी को 100,000 डालर भी इसकी मरम्मत के लिये दिये गए लेकिन कुछ फ़ायदा नहीं हुआ. पुल की हालत क़रीब क़रीब जूं की तूं रही.

नवम्बर 1949 में रूस माहिर ज़िगोरिनकोव और उसके साथी तिख़ोनेव ने इस यलो रीवर पुल को ठीक करने का बीड़ा उठाया. एक साल के अन्दर अन्दर इन रूसी माहिरों ने पुल को इस क़ाबिल बना दिया कि भारी भारी इंजन वग़ैरा काफ़ी तेज़ रफ़तार से इसके ऊपर आने जाने

نہ ایک دوسرے کو لوٹنے اور خون چوسنے کی بات اِس میں ہے ۔ یہ سب باتیں پونجی وادی دیشوں کی وراثت ہیں ۔"

نئے چین کی سرکار کے سامنے بڑے بڑے مسئلے پیش تھے. اِن مسئلوں میں سب سے بڑے اور ضروری تھے یاتایات اور باڑھوں کا روکنا ۔ چانگ کائی شیک کی حکومت کے دوران میں اِن دونوں کی حالت بہت خراب تھی ۔ بڑے بڑے پل ٹوٹے پڑے تھے ۔ ریلوں کو اِن پر گذرنے میں بہت وقت لگتا تھا ۔ روسی سہائتا کی مدد سے اِن پلوں کو سدھارا گیا ۔ پیکنگ هانکاؤ کینٹن لائن کو ایک سرے سے درست کیا گیا ۔ اِس سلسلے میں ایک روسی ماہر شری سلن کا ذکر ضروری ہے ۔ چینیوں کے ساتھ اُنہوں نے چین کی تمام لائینوں کی خود جانچ کی ۔ پلوں کو نئے ڈھنگ سے سدھارا ۔ پرانی چیزوں کے بارے میں اُنہوں نے کہا—"اِن پلوں کو ہمکو پرانے زمانے کا نہیں سمجھنا چاہئیے ۔ اپنی ضرورت کے مطابق ہمکو کام میں لانے کے لئے اِن کو بنالینا چاہئیے ۔"

آگے چل کر ہم اِس لیکھ میں یہ بیان کریں گے کہ کس کس دائرے میں روسی ماہروں نے چینیوں کی مدد کی ۔

یلو ریور پل چینگ چاؤ میں بنا ہوا ہے ۔ ہونان صوبے میں چینگ چاؤ ایک مشہور جگہ ہے. یہ چین کے بڑے بڑے شہروں میں شمار کیا جاتا ہے ۔ اُس پل کام بھی روسی لوگوں کی اتھک اور بےلاگ محنت سے کیا گیا ہے. اِس پل کے بنانے کا جو راستہ اختیار کیا گیا وہ پرانے چین کے مقابلے بالکل دوسرا تھا ۔ چانگ کائی شیک کے انجینیروں نے بھی اِس پل کے بنانے میں تھوڑی بہت کوشش ضرور کی تھی لیکن جن وادی چین نے روسیوں کی سہائتا سے اُس پل کو تھوڑے عرصے میں اپنے کام لائق پوری طرح ٹھیک کرلیا ہے ۔ یہ پل آج سے قریب 52 برس پہلے بلجیم اور فرانس کے ٹھیکیداروں کی مدد سے بنایا گیا تھا. جب یہ نیا نیا بنا تھا تب ریلیں اُس پل پر 10 میل فی گھنٹہ کے حساب سے گذرتی تھیں ۔ سن 1929 میں ایک امریکی صلاحکار کو بلایا گیا ۔ اُس نے اِس پل کو اچھی طرح دیکھا بھالا لیکن کوئی خاص شکل نہیں دے سکا ۔ 1946 میں چانگ کائی شیک کے انجینیروں اِس پل کو پھر سے ٹھیک کرنے کی کوشش کی. ایک امریکن کمپنی کو 100,000 ڈالر بھی اِس کی مرمت کے لئے دیئے گئے لیکن کچھ فائدہ نہیں ہوا ۔ پل کی حالت قریب قریب جوں کی توں رہی ۔

نومبر 1949 میں روسی ماہر زنگورنکوو اور اُس کے ساتھی تخونیو نے اِس یلو ریور پل کو ٹھیک کرنے کا بیڑا اُٹھایا. ایک سال کے اندر اندر اِن روسی ماہروں نے پل کو اِس قابل بنا دیا کہ بھاری بھاری انجن وغیرہ کافی تیز رفتار سے اس کے اوپر آنے جانے

लगे. काम के दौरान में एक ख़ूबी यह रही कि आना जाना बन्द नहीं हुआ. तिखोनेव ने नई नई तरक़ीबें निकालीं और उसको अपने काम में सफलता मिली. आज इस पुल का यह हाल है कि भारी भारी रेलें इस पर आसानी और तेज़ रफ़तार से गुज़र जाती हैं.

हुआई दरिया संसार के बड़े बड़े दरियाओं में गिना जाता है. पहले हर साल इसमें ज़ोर की बाढ़ आती थी. इस बाढ़ के कारन खेत, मवेशी और लोगों की हज़ारों की तादाद में जानें चली जाती थीं. चीन में जब जनता की सरकार बनी तो ग़रीबों के दुखड़ों पर उसका ध्यान ख़ास तौर पर गया. उन्होंने जो सब से पहला काम सोचा वह यह था कि किस तरह बाढ़ को रोका जाय. इस के लिये उन्होंने बड़ी बड़ी तरक़ीबें कीं. एक रूसी माहिर बुखोव से इस काम में काफ़ी मदद मिली. बुख़ोव ने बाढ़ को रोकने के लिये बड़े बड़े डाम बनाने की स्कीम बनाई. इन डामों की मदद से बिजली पैदा की गई. उसी तरह एक और हाइड्रो एलिकट्रिक डाम जेन होचा में बनाया गया. यह डाम जब बन कर तैयार हुआ तो लोगों को बहुत ख़ुशी हुई. उन्होंने अपने रूसी जानकार को तोहफ़े दिये. अगर इस काम को पच्छिमी सलाहकारों की मदद से करवाया जाता तो चीन सरकार का करोड़ों रुपया ख़र्च हो जाता. लेकिन चीन सरकार ने कम पैसे में और कम वक़्त में जनता की शक्ति से इस डाम को जल्द से जल्द पूरा कर लिया.

इन ऊपर लिखे बड़े बड़े कामों में मदद के अलावा रूसी सलाहकारों ने चीन के दूसरे धन्दों में अपनी पूरी पूरी मदद दी. यहां पर एक बात का ज़िकर कर देना बेजा न होगा. रूसी सलाहकार या माहिर जो चीन आते हैं वह उसी तरह रहते सहते, खाते और पीते हैं जिस तरह चीन के लोग. चीनी इनजीनियरों के मुक़ाबले रूसियों को तनख़ा कुछ ज़ियादा मिलती है. इसके अलावा उनको वही चीज़ें मिलती हैं जो चीनियों को प्राप्त हैं. रूसी सलाहकारों की बाबत चार बातें ख़ास हैं : (i) चीन में जो मौजूदा मशीनरी है उसको ही नये तरीक़े और नये तकनीकी ढंग से इस्तेमाल किया जाताहै; (ii) चीन के कच्चे माल से ही नई नई चीज़ें बनाई जाती हैं; (iii) चीनियों को अच्छी तरह तकनीकी ट्रेनिंग देना और (iv) रूस में जो बड़े बड़े औज़ार काम में लाए जाते हैं उसकी ठीक ठीक जानकारी चीनी विद्यार्थियों को देना.

बड़े बड़े धन्दों में चीनियों की सहायता जिस क़दर रूसियों ने की है वह अपनी आप मिसाल है. यह सब रूसियों की अथक मेहनत का नतीजा है. मिसाल के तौर पर इसी 9 मार्च 1953 को एक ब्लास्ट फ़रनेस जो आठ साल से बेकार पड़ा था काम करने लगा है. स्पात कीपैदावार

کام کے دوران میں ایک خوبی یہ رہی کہ آنا جانا بند
ہوا. تخونیو نے نئی نئی ترکیبیں نکالیں اور
کو اپنے کام میں سپھلتا ملی. آج اس پل کا یہ حال
بھاری بھاری ریلیں اس پر آسانی اور تیزی رفتار
جاتی ہیں.

ہوائی دریا سنسار کے بڑے بڑے دریاؤں میں گنا جاتاہے.
ہر سال اس میں زور کی باڑھ آتی تھی. اس باڑھ
کارن کھیت، مویشی اور لوگوں کی ہزاروں کی تعداد
جانیں چلی جاتیں تھیں. چین میں جب جنتا کی
بنی تو غریبوں کے دکھڑوں پر اسکا دھیان خاص طور پر گیا.
نے جو سب سے پہلا کام سوچا وہ یہ تھا کہ کس طرح باڑھ
جائے. اس کے لئے انہوں نے بڑی بڑی ترکیبیں کیں.
بخوو ایک روسی سے اس کام میں کافی مدد ملی.
و نے باڑھ کو روکنے کے لئے بڑے بڑے ڈام بنانے کی اسکیم
ائی. ان ڈاموں کی مدد سے بجلی پیدا کی گئی.
طرح ایک اور ہائیڈرو الیکٹرک ڈام جین ہوچی
بنایا گیا. یہ ڈام جب بن کر تیار ہوا تو لوگوں کو
خوشی ہوئی. انہوں نے اپنے روسی جانکار کو
تحفے دیئے. اگر اس کام کو پچھمی صلاح کاروں کی مدد سے
وایا جاتا تو چین سرکار کا کروڑوں روپیہ خرچ ہو جاتا.
لیکن چین سرکار نے کم پیسے میں اور کم وقت میں جنتا
کی شکتی سے اس ڈام کو جلد سے جلد پورا کرلیا.

ان اوپر لکھے بڑے بڑے کاموں میں مدد کے علاوہ
روسی صلاح کاروں نے چین کے دوسرے دھندوں میں اپنی
پوری مدد دی. یہاں پر ایک بات کا ذکر کردینا
بیجا نہ ہوگا. روسی صلاح کار یا ماہر جو چین آتے ہیں
اسی طرح رہتے سہتے، کھاتے اور پیتے ہیں جس طرح
چین کے لوگ. چینی انجنیروں کے مقابلے روسیوں کو تنخواہ
کچھ زیادہ ملتی ہے. اس کے علاوہ ان کو وہی چیزیں
ملتی ہیں جو چینیوں کو پراپت ہیں. روسی صلاح کاروں
کی بابت چار باتیں خاص ہیں: (i) چین میں
جو موجودہ مشینری ہے اس کو ہی نئے طریقے
اور نئے تکنیکی ڈھنگ سے استعمال کیا جاتا ہے.
(ii) چین کے کچے مال سے ہی نئی نئی چیزیں بنائی
جاتی ہیں؛ (iii) چینیوں کو اچھی طرح تکنیکی
ٹریننگ دینا اور (iv) روس میں جو بڑے بڑے اوزار
کام میں لائےجاتے ہیں اسکی ٹھیک ٹھیک جانکاری چینی
ودیارتھیوں کو دینا.

بڑے بڑے دھندوں میں چینیوں کی سہائتا جس
قدر روسیوں نے کی ہے وہ اپنی آپ مثال ہے. یہ سب
روسیوں کی اتھک محنت کا نتیجہ ہے. مثال کے طور
پر اسی 9 مارچ 1953 کو ایک بلاسٹ فرنیس جو آٹھ
سال سے بیکار پڑا تھا کام کرنے لگا ہے. اسپات کی پیداوار

में काफ़ी बढ़ौती हुई है. बड़ी लड़ाई से पहले चीन में लोहे की कमी थी लेकिन अब चीन में लोहा काफ़ी पाया जाता है. पहले एक फ़रनेस की झाड़ पोंछ करने में कम से कम तीस घंटे खर्च होते थे लेकिन अब वही काम आठ घंटे में आसानी से किया जाता है.

सन 1950 और सन 1951 में हु आई नान कोयले की खानों को रूसी एक्सपर्टों ने तीन बार देखा. पहले 30 से 50 फ़ी सदी कोयला इन खानों से निकाला जाता था लेकिन अब 85 फ़ी सदी निकाला जाता है. पहले के मुक़ाबले कोयले की क़िस्म बहुत अच्छी है.

बिजली के धन्दे में भी रूसी सलाहकारोंने सन 1950 में 188 स्कीमें चीन की सरकार के सामने रखीं. तीन सिन शहर में बिजली के इस्तेमाल के लिये नये तरीक़े अमल में लाए गए.

हरबिन चीन के उत्तर पच्छिम में है. यहां पर कपड़े (मलमल) की एक बहुत बड़ी मिल है. इस मिल में ज़ियादातर रूसी मशीनें लगी हुई हैं. हर तर की रंगाई वग़ैरा का काम बिजली की मदद से दो आदमी आसानी से यहां पर अनजाम देते हैं. फ़ूशिन भी चीन के उत्तर पच्छिम में बसा हुआ है. यहां पर एक थरमल पावर प्लान्ट है जो बिजली की मदद से चलता है.

रूसी माहिरों की मदद से शु आंग या शान कोयले की खान का उत्पादन दुगना कर लिया गया है. इस बारे में एक लड़के ने अपने 60 बरस के बूढ़े बाप से हंसी हंसी में कहा कि यह मशीन कुछ महीने मे ऐसा काम कर सकती है जिसको आप अपनी ज़िन्दगी में अनजाम नहीं दे सकते.

एन ज़ेड वेरा चिटिन ने एक नया रसायन तैयार किया जो एक ख़ास तरह के काग़ज़ बनाने में काफ़ी काम देता है. इस तरह के काग़ज़ की मांग दिन दूनी बढ़ रही है. इसका कारन यह है कि चीन के अन्दर अख़बारों और किताबों की मांग बढ़ती जा रही है. लोगों में एक नया जोश पैदा हो रहा है. वह अपने मुल्क के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा जानने के उत्सुक रहते हैं.

चीन के अन्दर थोड़ा बहुत सीसा भी पैदा किया जाता है. अच्छा और ऊंचे क़िस्म का सीमेंट भी तैयार किया जाता है.

सोवियत माहिरों की मदद से चीनी अपनी तकनीकी शिक्षा को बढ़ाते है. जब शिक्षा अच्छी तरह मिल चुकती है तो वही चीनी इनजीनियर और तकनीकी माहिर बनते बनते हैं. धीरे धीरे वह अपने मुल्क के निर्मान के काम में लग जाते हैं. पिछली 31 दिसम्बर तक बीस हज़ार चीनियों ने रूसियों से तकनीकी शिक्षा हासिल की. सोवियत

میں کافی بڑھوتی ہوئی ہے . بڑی لڑائی سے پہلے چین میں لوہے کی کمی تھی لیکن اب چین میں لوہا کافی پایا جاتا ہے . پہلے ایک فرنیس کی جھاڑ پونچھ کرنے میں کم سے کم تیس گھنٹے خرچ ہوتے تھے لیکن اب وہی کام آٹھ گھنٹے میں آسانی سے کیا جاتا ہے .

سن 1950 اور سن 1951 میں ھو آئی نان کوئلے کی کھانوں کو روسی ایکسپرٹوں نے تین بار دیکھا . پہلے 30 سے 50 فیصدی کوئلہ اِن کھانوں سے نکالا جاتا تھا لیکن اب 85 فیصدی نکالا جاتا ہے . پہلے کے مقابلے کوئلہ کی قسم بہت اچھی ہے .

بجلی کے دھندے میں بھی روسی صلاح کاروں نے سن 1950 میں 188 اِسکیمیں چین کی سرکار کے سامنے رکھیں . تین سن شہر میں بجلی کے اِستعمال کے لئے نئے طریقے عمل میں لائے گئے .

ھر بن چین کے اُتر پچھم میں ہے . یہاں پر کپڑے (ململ) کی ایک بہت بڑی مل ہے . اِس مل میں زیادہ تر روسی مشینیں لگی ہوئی ہیں . ہر طرح کی رنگائی وغیرہ کا کام بجلی کی مدد سے دو آدمی آسانی سے یہاں پر انجام دیتے ہیں . فو شن بھی چین کے اتر پچھم میں بسا ہوا ہے . یہاں پر ایک تھرمل پاور پلانٹ ہے جو بجلی کی مدد سے چلتا ہے .

روسی ماہروں کی مدد سے شو آنگ یا شان کوئلے کی کھان کا اُتپادن دگنا کر لیا گیا ہے . اِس بارے میں ایک لڑکے نے اپنے 60 برس کے بوڑھے باپ سے ہنسی ہنسی میں کہا کہ یہ مشین کچھ مہینے میں ایسا کام کر سکتی ہے جس کو آپ اپنی زندگی میں انجام نہیں دے سکتے .

این زیڈ ویراچٹن نے ایک نیا رسائن تیار کیا جو ایک خاص طرح کے کاغذ بنانے میں کافی کام دیتا ہے . اِس طرح کے کاغذ کی مانگ دن دونی بڑھ رہی ہے . اِسکا کارن یہ ہے کہ چین کے اندر اخباروں اور کتابوں کی مانگ بڑھتی جا رہی ہے . لوگوں میں ایک نیا جوش پیدا ہو رہا ہے . وہ اپنے ملک کے بارے میں زیادہ سے زیادہ جاننے کے اُتسک رہتے ہیں .

چین کے اندر تھوڑا بہت سیسا بھی پیدا کیا جاتا ہے . اچھا اور اُونچے قسم کا سیمنٹ بھی تیار کیا جاتا ہے .

سوویت ماہروں کی مدد سے چینی اپنی تکنیکی شکشا کو بڑھاتے ہیں . جب شکشا اچھی طرح مل چکتی ہے تو وہی چینی اِنجینیر اور تکنیکی ماہر بنتے ہیں . دھیرے دھیرے وہ اپنے ملک کے نرمان کے کام میں لگ جاتے ہیں . پچھلی 31 دسمبر تک بیس ہزار چینیوں نے روسیوں سے تکنیکی شکشا حاصل کی . سوویت

इनजीनियरों ने बिलकुल अपना ही देश समझ कर चीन की जो कुछ भी सहायता की है वह सोने के वरक़ों में लिखे जाने के क़ाबिल है. एक किसान ने कहा—"वह लोग तो एक बड़े भाई की तरह बरताव करते हैं. और हर बात को इस तरह समझाते हैं जिस तरह एक बड़ा भाई छोटे भाई को कोई चीज़ समझाता है."

हमारे देश की तरह चीन में भी सब से बड़ा धन्दा खेती है. ज़ियादातर आबादी इसी धन्दे पर निर्भर है. सोवियत माहिरों की मदद से चीनियों ने अपने इस धन्दे में काफ़ी तरक़्क़ी कर ली. उन्होंने मुल्क की पैदावार को बहुत ज़ियादा तादाद में बढ़ा लिया. इस काम में और ज़ियादा तरक़्क़ी देने के लिये उन्होंने खेती बारी कोआपरेटिव, और पायनियर फ़ार्म बना लिये. चांग काई शेक के ज़माने में कोआपरेटिव और पानियर फ़ार्म वग़ैरा गिनती के थे. लेकिन जनता की सरकार आते ही सोवियत एक्सपर्टों की मदद से ज़मीन को उपजाऊ बनाया गया. इस काम को करने में शुरू शुरू में बड़ी कठिनाइयां सामने आईं लेकिन रूस के नये नये औज़ारों से बनजर ज़मीन को सुधारा गया. ज़मीन उपजाऊ बनाने के अलावा जानवरों की नसल को भी सुधारा गया. घोड़े और बकरियों की नसल सुधारने के लिये स्टेशन खोले गए.

"चीन की ज़रा सी ज़मीन भी अब बनजर नहीं है" यह बात एक खेतीबारी के माहिर लिसेनको ने कही जो वहां सन 1949 से लगातार रहता आ रहा है. चीनी किसान किसान आजकल हल चलाने, फ़सल बार बार पैदा करने और खाद के ठीक ठीक इस्तेमाल पर काफ़ी ज़ोर देते हैं.

चीनी लोग इस बात को ख़ूब अच्छी तरह समझते हैं कि रूसी माहिरों ने उनको सिर्फ़ तकनीकी सहायता ही नहीं पहुंचाई बल्कि उन्होंने मुल्क के रहन सहन के स्तर को ऊंचा उठाने में काफ़ी मदद की है. सोवियत लोगों का चीन में स्वागत अच्छी तरह किया जाता है. वह हर समय चीनियों को बग़ैर किसी शर्त के मदद देने के लिये तैयार रहते हैं. चीन और रूस का मक़सद एक है. दोनों ईमानदारी, लगन और आम जनता के हितों को अच्छी तरह समझते बूझते हुए तेज़ी से अपनी मंज़िल की तरफ़ जा रहे हैं.

—राजेश सरन

———

انجنیروں نے بالکل اپنا دیش سمجھ کر چین کی جو کچھ بھی سہائتا کی ہے وہ سونے کے ورقوں میں لکھے جانے کے قابل ہے۔ ایک کسان نے کہا—" وہ لوگ تو ایک بڑے بھائی کی طرح برتاؤ کرتے ہیں۔ اور ہر بات کو اس طرح سمجھاتے ہیں جسطرح ایک بڑا بھائی چھوٹے بھائی کو کوئی چیز سمجھاتا ہے۔"

ہمارے دیش کی طرح چین میں بھی سب سے بڑا دھندا کھیتی ہے۔ زیادہ تر آبادی اسی دھندے پر نربھر ہے۔ سوویت ماہروں کی مدد سے چینیوں نے اپنے اس دھندے میں کافی ترقی کر لی۔ انہوں نے ملک کی پیداوار کو بہت زیادہ تعداد میں بڑھا لیا۔ اس کام میں اور زیادہ ترقی دینے کے لئے انہوں نے کھیتی باڑی کوآپریٹو اور پائنیر فارم بنا لئے۔ چانگ کائی شیک کے زمانے میں کوآپریٹو اور پائنیر فارم وغیرہ گنتی کے تھے۔ لیکن جنتا کی سرکار آتے ہی سوویت ایکسپرٹوں کی مدد سے زمین کو اپجاؤ بنایا گیا۔ اس کام کو کرنے میں شروع شروع میں بڑی کٹھنائیاں سامنے آئیں لیکن روس کے نئے نئے اوزاروں سے بنجر زمین کو سدھارا گیا۔ زمین کو اپجاؤ بنانے کے علاوہ جانوروں کی نسل کو بھی سدھارا گیا۔ گھوڑے اور بکریوں کی نسل سدھارنے کے لئے اسٹیشن کھولے گئے۔

" چین کی ذرا سی زمین بھی اب بنجر نہیں ہے" یہ بات ایک کھیتی باڑی کے ماہر لیسنکو نے کہی جو وہاں سن 1949 سے لگاتار رہتا آ رہا ہے۔ چینی کسان آجکل ہل چلانے، فصل بار بار پیدا کرنے اور کھاد کے ٹھیک ٹھیک استعمال پر کافی زور دیتے ہیں۔

چینی لوگ اس بات کو خوب اچھی طرح سمجھتے ہیں کہ روسی ماہروں نے ان کو صرف تکنیکی سہائتا ہی نہیں پہونچائی بلکہ انہوں نے ملک کے رہن سہن کے استر کو اونچا اٹھانے میں کافی مدد کی ہے۔ سوویت لوگوں کا چین میں سواگت اچھی طرح کیا جاتا ہے۔ وہ ہر سمے چینیوں کو بغیر کسی شرط کے مدد دینے کے لئے تیار رہتے ہیں۔ چین اور روس کا مقصد ایک ہے۔ دونوں ایمانداری، لگن اور عام جنتا کے ہتوں کو اچھی طرح سمجھتے بوجھتے ہوئے تیزی سے اپنی منزل کی طرف جا رہے ہیں۔

—راجیش سرن

———

चीन में घरेलू धन्दे

आज से कुछ बरस पहले हमारे देश की तरह चीन में भी पैदावार में कमी थी और बेकारी अपना पंजा गाड़े हुए थी. तमाम बाज़ार विदेशी माल से भरे थे. घरेलू उद्योग धन्दे ठप हो चुके थे बल्कि यह कहना चाहिये कि ठप किये गये थे. मज़दूरों, कारीगरों और दस्तकारों के सामने बड़ी भयंकर समस्या थी. उन लोगों के हाथ की बनी चीज़ों का बाज़ार विदेशी माल के मुक़ाबले बन्द हो चुका था.

हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी. चांग काई शेक की सरकार उन लोगों की हालत की तरफ़ से उदासीन थी. सरकार विदेशियों के हाथ कठपुतली बनी हुई थी और वह विदेशी लोग सरकार को किसी ऐसी नीति को अपनाने नहीं देते थे जिस से कि चीनी घरेलू धन्दे उन्नति कर सकें. सरकार घरेलू धन्दों पर उलटा आघात करती रही. चीन के मज़दूरों और कारीगरों की चेतना बढ़ी और उन्होंने हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने के बजाए कुछ करने की ठानी.

पर उनकी शक्ति छितरी हुई थी. इस छितरी हुई ताक़त के एकट्ठा करने की जरूरत थी. एक ऐसे रास्ते की जरूरत थी जिस पर सब चल सकें, सब जिस में हिस्सा ले सकें, और बराबर की तरक़्क़ी कर सकें. ऐसे रास्ता बताने और उस पर ले चलने के लिये अपने अन्दर से उन्होंने एक नेता चुना, जो उन्हीं की तरह था, उनके दुखों और तकलीफ़ों को जानता था, उनकी समस्याओं को अपनी समस्याएं समझता था. कोआपरेटिव आन्दोलन चल पड़ा. कोआपरेटिव सोसाइटियां बनाई गईं, जिन में कुछ मज़दूर मिल कर काम करते, कारख़ाने के मालिक होते और फ़ायदे का आपस में बटवारा करते पहले हर एक को अपने माल को बनाने और बेचने की चिन्ता रहती थी. अब यह चिन्ता एक समूह की चिन्ता बन गई. कोआपरेटिव सोसाइटियां अपना काम कर रही थीं पर अभी इनके अन्दर पूरी तरह खड़ी होने की ताक़त नहीं थी. उनके बने हुए माल के लिये बाज़ार की कमी, पूंजी का अभाव था, कच्चे माल की कठिनाइयां थीं. इस कारन से यह सोसाइटियां बहुत काम नहीं कर सकीं.

1949 में देश आज़ाद हुआ. जनता की अपनी सरकार बनी। विदेशी आदमियों से चीन पाक हो गया. नई सरकार बनते ही सब से पहले इसका ध्यान किसान मज़दूरों के रोज़ी की समस्या पर गया. सरकार देश का निर्मान करना चाहती थी. उसको अपनी जनता पर विश्वास था. इस सरकार ने घरेलू धन्दों को प्रोत्साहन दिया.

देशी घरेलू उद्योग धन्दों को चौपट होने से बचाने का उपाय यह था कि विदेशी माल का आना रोका जाय और

چین میں گھریلو دھندے

آج سے کچھ برس پہلے ہمارے دیش کی طرح چین میں بھی پیداوار میں کمی تھی اور بیکاری اپنا پنجہ گاڑے ہوئے تھی. تمام بازار بدیشی مال سے بھرے تھے. گھریلو ادیوگ دھندے ٹھپ ہوچکے تھے بلکہ یہ کہنا چاہئے کہ ٹھپ کئے گئے تھے. مزدوروں، کاریگروں اور دستکاروں کے سامنے بڑی بھیانک سمسیا تھی. اُن لوگوں کے ہاتھ کی بنی چیزوں کا بازار ودیشی مال کے مقابلے بند ہوچکا تھا.

حالت دن پر دن بگڑتی جا رہی تھی. چانگ کائی شیک کی سرکار اُن لوگوں کی حالت کی طرف سے اُداسین تھی. سرکار ودیشیوں کے ہاتھ کٹھ پتلی بنی ہوئی تھی. اور وہ ودیشی لوگ سرکار کو کسی ایسی نیتی کو اپنانے نہیں دیتے تھے. جس سے کہ چینی گھریلو دھندے اُنتی کرسکیں. سرکار گھریلو دھندوں پر الٹا آگھات کرتی رہی. چین کے مزدوروں اور کاریگروں کی چیتنا بڑھی اور اُنہوں نے ہاتھ پر ہاتھ رکھکر بیٹھنے کے بجائے کچھ کرنے کی ٹھانی.

پر اُن کی شکتی چھتری ہوئی تھی. اِس چھتری ہوئی طاقت کے اِکٹھا کرنے کی ضرورت تھی. ایک ایسے راستے کی ضرورت تھی جس پر سب چل سکیں، سب جس میں حصہ لے سکیں، اور برابر کی ترقی کرسکیں. ایسا راستہ بتانے اور اُس پر لے چلنے کے لئے اپنے ہی اندر سے اُنہوں نے ایک نیتا چنا، جو اُن ہی کی طرح تھا اُن کے دکھوں اور تکلیفوں کو جانتا تھا، اُن کی سمسیاؤں کو اپنی سمسیا سمجھتا تھا. کوآپریٹو آندولن چل پڑا. کوآپریٹو سوسائٹیاں بنائی گئیں، جن میں کچھ مزدور مل کر کام کرتے، کارخانے کے مالک ہوتے. اور فائدے کا آپس میں بٹوارا کرتے. ہر پہلے ایک کو اپنے مال کو بنانے اور بیچنے کی چنتا رہتی تھی. اب یہ چنتا ایک سموہ کی چنتا بن گئی. کوآپریٹو سوسائٹیاں اپنا کام کررہی تھیں. پر ابھی اُن کے اندر پوری طرح کھڑے ہونے کی طاقت نہیں تھی. اُن کے بنے ہوئے مال کے لئے بازار کی کمی، پونجی کا ابھاؤ تھا. کچے مال کی کٹھنائیاں تھیں. اِس کارن سے سوسائٹیاں بہت زیادہ کام نہیں کرسکیں.

1949 میں دیش آزاد ہوا. جنتا کی اپنی سرکار بنی. ودیشی آدمیوں سے چین پاک ہوگیا. نئی سرکار بنتے ہی سب سے پہلے اُس کا دھیان کسان مزدوروں کے روزی کی سمسیا پر گیا. سرکار دیش کا نرمان کرنا چاہتی تھی. اُس کو اپنی جنتا پر وشواس تھا. اُس سرکار نے گھریلو دھندوں کو پروتساہن دیا.

دیشی گھریلو ادیوگ دھندوں کو چوپٹ ہونے سے بچانے کا اپائے یہ تھا کہ ودیشی مال کا آنا روکا جائے اور

उसकी जगह उतने ही दाम में जनता को देश का बना हुआ माल दिया जाय. इसके लिये सरकार ने सब से पहले विदेशी माल का आना बन्द किया. कुछ ख़ास ज़रूरी चीज़ें जिन का उत्पादन ही मुमकिन नहीं था बाक़ी सब विदेशी चीज़ों का आना रोक दिया गया. जो चीज़ें आती भी थीं उन पर टेक्स बढ़ा दिया गया ताकि उनकी क़ीमत बढ़ जाय और देशी चीज़ों का मुक़ाबला उनको न करना पड़े. जनता के बीच राष्ट्र प्रेम व स्वदेशी की भावना का प्रचार किया गया.

दूसरा काम सरकार ने यह किया कि कोआपरेटिव सोसाइटियों के लिये क़ानून बना दिया. उनको क़र्ज़ दिया. सूद की दर बहुत कम रखी. इधर उधर बिखरी हुई कमेटियों का संगठन किया.

कोआपरेटिव सोसाइटियां अब काफ़ी संगठित और ताक़तवर हो गईं थी. इनका उत्पादन बढ़ गया था और देश की ज़रूरत का एक बहुत बड़ा हिस्सा इन्हीं के ज़रिये पूरा किया जाता था। यह बात नीचे के आंकड़ों से साफ़ है :

दियासलाई	70 फ़ी सदी
आटा	84 ,,
चीनी	75 ,,
दवाएँ	80 ,,
काढ़ने बुनने व कसीदाकारी का समान	70 ,,
काग़ज व रबर	50 ,,

इन आंकड़ों से पता चलता है कि चीन के आर्थिक जीवन में घरेलू धन्दों ने पूरा क़बजा कर लिया. यह सब सरकार की नीति के कारन हो सका. इन सामानों के अलावा फ़रनीचर, इमारती सामान, खेती बारी के औज़ार, साइन्स के सामान वग़ैरा भी इन्हीं दस्तकारी सोसाइटियों के ज़रिये बनने लगे.

इन सोसाइटियों को अपने बने हुए माल की खपत और बिक्री के लिये चिन्ता नहीं करनी पड़ती. माल तैयार होते ही 40 फ़ी सदी माल सरकार के स्टेट कमर्शियल स्टोर बेच देते हैं और 40 फ़ी सदी सपलाई ऐन्ड मार्केटिंग कारपोरेशन बेचते हैं बाक़ी कुल 20 फ़ी सदी माल सोसाइटियों को बेचना पड़ता है उनको कोई दिक़्क़त नहीं होती सरकार जो माल ख़रीदती है उस का दाम नक़द देता है. पैदावार करने वाले को कोई कठिनाई नहीं होती. माल बनते ही उसका माल बिक जाता है और उचित मुनाफ़ा मिल जाता है.

कोआपरेटिव सोसाइटियों की ताक़त बढ़ गई है. देश के कोने कोने में इनका जाल बिछा हुआ है. सन 1952 के आख़री तक इसके मेम्बरों की तादाद 147 लाख थी. और सन 1952 में उन्होंने तमाम मुल्क की ज़रूरत को पूरा करने के लिये 22 फ़ीसदी और देहात की ज़रूरत का 70 फ़ी सदी

[...]کی جگہ اُتنے ہی دام میں جنتا کو دیش کا بنا ہوا [...] دیا جائے. اِس کے لئے سرکار نے سب سے پہلے ودیشی [...] کا آنا بند کیا. کچھ خاص ضروری چیزیں جن کا [...]پادن ہی ممکن نہیں تھا باقی سب ودیشی چیزوں کا [...]ک دیا گیا. جو چیزیں آتی بھی تھیں اُن پر [...]س بڑھا دیا گیا تاکہ اُن کی قیمت بڑھ جائے اور [...]ی چیزوں کا مقابلہ اُنکو نہ کرنا پڑے. جنتا کے بیچ [...]ٹر پریم و سودیشی کی بھاؤنا کا پرچار کیا گیا.

دوسرا کام سرکار نے یہ کیا کہ کوآپریٹو سوسائٹیوں کے [...] قانون بنا دیا. اُن کو قرض دیا. سود کی در بہت [...] رکھی. اِدھر اُدھر بکھری ہوئی کمیٹیوں کا سنگٹھن کیا.

کوآپریٹو سوسائٹیاں اب کافی سنگٹھت اور طاقتور [...]گئی تھیں. اِن کا اُتپادن بڑھ گیا تھا اور دیش کی [...]ورت کا ایک بہت بڑا حصہ انہیں کے ذریعے پورا کیا [...]تا تھا. یہ بات نیچے کے آنکڑوں سے صاف ہے :

دیاسلائی	70 فی صدی
[...]	,, 84
[...]	,, 75
[...]ینی	
[...]ائیں	,, 80
[...]ڑھنے' بننے وقسیدہ کاری کا سامان	,, 70
[...]ذ و ربر	,, 50

اِن آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ چین کے آرتھک [...]یون میں گھریلو دھندوں نے پورا قبضہ کرلیا. یہ سب [...]سرکار کی نیتی کے کارن ہو سکا. اِن سامانوں کے علاوہ [...]نیچر' عمارتی سامان' کھیتی باری کے اوزار' سائنس کے [...]سامان وغیرہ بھی اِنہیں دستکاری سوسائٹیوں کے ذریعے [...]بنے لگے.

اِن سوسائٹیوں کو اپنے بنے ہوئے مال کی کھپت اور [...]بکری کے لئے چنتا نہیں کرنی پڑتی. مال تیار ہوتے ہی [...]40 فیصدی مال سرکار کے اسٹیٹ کمرشیل اسٹور بیچ [...]دیتے ہیں اور سپلائی اینڈ مارکیٹنگ کارپوریشن بیچتے [...]ہیں. باقی کل 20 فیصدی مال سوسائٹیوں کو بیچنا [...]پڑتا ہے. اُن کو کوئی دقت نہیں ہوتی. سرکار جو مال [...]خریدتی ہے اُس کا دام نقد دیتی ہے. پیداوار کرنے والے [...]کو کوئی کٹھنائی نہیں ہوتی. مال بنتے ہی اُس کا [...]مال بک جاتا ہے اور اُچت منافع مل جاتا ہے.

کوآپریٹو سوسائٹیوں کی طاقت بڑھ گئی ہے - دیش [...]کے کونے کونے میں جال بچھا ہوا ہے. سن 1952 کے آخر [...]تک اِس کے ممبروں کی تعداد 147 لاکھ تھی. اور سن [...]1952 میں اُنھوں نے تمام ملک کی ضرورت کو پورا کرنے [...]کے لئے 22 فیصدی اور دیہات کی ضرورت کا 70 فیصدی

सामान पैदा किया. इन दस्तकारी कोआपरेटिव स्टोरों में पूंजी 18,90,738 डालर के क़रीब लगी हुई है. सन 1952 में इन्होंने 166,026,462 डालर की क़ीमत का सामान तैयार किया.

सूती कपड़ा	60,00,000 गांठ
मोज़े के जोड़े	27,00,000 दर्जन
लोहा	20,000 टन
लकड़ी व लोहे के खेती के औज़ार	30,000,000 अदद
तोलिया	30,000,000 अदद
काग़ज़	30,000 टन
गंधक	35,000 टन
फुटकर सामान	4,00,000 टन

ऊपर दिये आंकड़ों से पता चलता है कि चीन की ज़रूरत का बहुत बड़ा हिस्सा घरेलू धन्दों से पूरा होता है और यह भी साफ़ हो जाता है कि घरेलू धन्दे इसी तरह फलते फूलते रहेंगे.

दस्तकारों की कोआपरेटिव संस्थाओं को एक और सुविधा सरकार से मिली है वह है कच्चे माल की. उनको अपनी चीज़ों के लिये कच्चे माल की तलाश में इधर उधर नहीं भटकना पड़ता. यह काम सरकार करती है. वह अपनी मांग सरकार के सामने रखते हैं. सरकार उसका इन्तज़ाम करती है. और इस तरह उनका बहुत काफ़ी समय और पैसा बचता है. कभी कभी तो ऐसा होता था कि कच्चे माल की कमी से पूरा का पूरा उद्योग ठप हो जाता था क्योंकि बहुत से कच्चे माल ऐसे हैं जो विदेशों से आते हैं या देश में भी होते हैं तो जल्द उनको हासिल नहीं किया जा सकता. घरेलू धन्दों को कच्चे माल की कमी से नुक़सान होता है. चीन में यह कठिनाई कोआपरेटिव संस्थाओं के सामने नहीं है. हर तरह का कच्चा माल सरकारी विभाग उन्हें मुहैया करता है. मिसाल के लिये सरकार ने बुनकरों की कोआपरेटिव संस्था को 1953 में 68,288,520 डालर का सूत सपलाई किया. लुहारों का कोआपरेटिव को बहुत काफ़ी तादाद में कच्चा लोहा दिया गया. घरेलू धन्दों में जान डालने के लिये यह बहुत ज़रूरी है.

शुरू शुरू में इन कोआपरेटिव संस्थाओं में काफ़ी कमियां थीं. जिसमें एक ख़ास यह था कि सोसाइटी में हर मज़दूर को बराबर बराबर हिस्सा दिया गया था. उसमें मज़दूर की क़ाबलियत, वह कितना काम कर सकता है इस सब का कोई ध्यान नहीं रखा गया था. इसका नतीजा यह हुआ कि मज़दूरों में काम करने की भावना की कमी पाई गई क्योंकि जब एक अधिक काम करने वाला मज़दूर देखता था कि एक कम काम करने वाले को वही वेतन

سامان پیدا کیا ۔ ان دستکاری کوآپریٹو اسٹوروں میں پونجی 18,90,738 ڈالر کے قریب لگی ہوئی ہے ۔ سن 1952 میں انہوں نے 166,026,462 ڈالر کی قیمت کا سامان تیار کیا ۔

سوتی کپڑا	60,00,000 گٹھے
موزے کے جوڑے	2700,000 درجن
لوہا	20,000 ٹن
لکڑی و لوہے کے کھیتی کے اوزار	30,000,000 عدد
تولیہ	30,000,000 عدد
کاغذ	30,000 ٹن
گندھک	35,000 ٹن
پھٹکر سامان	4,00,000 ٹن

اوپر دیئے آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ چین کی ضرورت کا بڑا حصہ گھریلو دھندوں سے پورا ہوتا ہے اور یہ بھی صاف ہو جاتا ہے کہ گھریلو دھندے اسی طرح پھلتے پھولتے رہیں گے ۔

دستکاروں کی کوآپریٹو سنستھاؤں کو ایک اور سودھا سرکار سے ملی ہے وہ ہے کچے مال کی ۔ ان کو اپنی چیزوں کے لئے کچے مال کی تلاش میں ادھر ادھر نہیں بھٹکنا ہوتا ۔ یہ کام سرکار کرتی ہے ۔ وہ اپنی مانگ سرکار کے سامنے رکھتے ہیں ۔ سرکار اس کا انتظام کرتی ہے ۔ اور اسطرح ان کا بہت کافی سمے اور پیسہ بچتا ہے ۔ کبھی کبھی تو ایسا ہوتا تھا کہ کچے مال کی کمی سے پورا کا پورا ادیوگ ٹھپ ہو جاتا تھا کیونکہ بہت سے کچے مال ایسے ہیں جو ودیشوں سے آتے ہیں یا دیش میں بھی ہوتے ہیں تو جلد ان کو حاصل نہیں کیا جا سکتا ۔ گھریلو دھندوں کو کچے مال کی کمی سے نقصان ہوتا ہے ۔ چین میں یہ کٹھنائی کوآپریٹو سنستھاؤں کے سامنے نہیں ہے ۔ ہر طرح کا کچا مال سرکاری وبھاگ انہیں مہیا کرتا ہے ۔ مثال کے لئے سرکار نے بنکروں کی کوآپریٹو سنستھا کو 1953 میں 68,288,520 ڈالر کا سوت سپلائی کیا ۔ لوہاروں کی کوآپریٹو کو بہت کافی تعداد میں کچا لوہا دیا گیا ۔ گھریلو دھندوں میں جان ڈالنے کے لئے یہ بہت ضروری ہے ۔

شروع شروع میں ان کوآپریٹو سنستھاؤں میں کافی کمیاں تھیں ۔ جس میں ایک خاص یہ تھی کہ سوسائٹی میں ہر مزدور کو برابر برابر حصہ دیا گیا تھا ۔ اس میں مزدور کی قابلیت، وہ کتنا کام کر سکتا ہے اس سب کا کوئی دھیان نہیں رکھا گیا تھا ۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ مزدوروں میں کام کرنے کی بھاونا کی کمی پائی گئی کیونکہ جب ایک ادھک کام کرنے والا مزدور دیکھتا تھا کہ ایک کم کام کرنے والوں کو وہی ویتن

और हिस्सा मिलता है जो उसको मिलता है तो उसके मन में यह बात आती थी कि वह ही क्यों अधिक काम करे. इसका असर पूरे उत्पादन पर पड़ा. लेकिन 1951 में यह भूल सुधार ली गई. नये क़ानून बनाए गए जिनके अनुसार इन कोआपरेटिव सोसाइटियों का सीधा संबन्ध कुल चीन कोआपरेटिव संघ से हो गया. मज़दूरों के काम के हिसाब से उनकी मज़दूरी तय की गई और मज़दूरी के हिसाब से कोआपरेटिव में उनका हिस्सा तय हुआ. यहां यह बात ध्यान देने की है कि मज़दूरी में यह फ़र्क़ चीन में इतना अधिक नहीं है जितना हमें अपने यहां देखने को मिलता है. चीन में यह फ़र्क़ कहीं भी एक और आठ की निस्बत से ज़ियादा नहीं है. सिद्धान्त रूप में वहां मज़दूरी उसके पद के लिहाज़ से नहीं बल्कि ज़रूरत के लिहाज़ से तय की जाती है. आम तौर पर एक साधारन मज़दूर की औसत आमदनी 80 रुपया होती है.

समय समय पर दस्तकारों की इलाक़ाई व समूचे देश की कानफ़रेन्सें भी होती रहती हैं. इसी तरह की एक कानफ़रेन्स 'हो पेह' सूबे में हुई थी. सूबे भर की कोआपरेटिव संस्था के कारकर्ताओं ने इसमें भाग लिया. माल की क़िस्म, अधिक पैदावार और अधिक बिक्री के ऊपर लोगों ने अपने अपने विचार ज़ाहिर किये. कोआपरेटिव सोसाइटी के ज़रिये बड़े बड़े उद्योग चालू करने का सुझाव रखा गया और सरकार से अधिक सहयोग व पूंजी की मांग की गई ताकि बड़े पैमाने पर उद्योग चालू किये जा सकें और जनता और देश का अधिक से अधिक लाभ हो. सरकारी नीति समझाने के लिये एक अधिकारी ने भी इस कानफ़रेन्स में भाग लिया और पूछे गए सवालों का जवाब दिया. मज़दूरों व कोआपरेटिव की दिक़्क़तों को सुना जो उनके सामने थीं और उन पर विचार करने व उन्हें दूर करने का आश्वासन दिया. इस तरह सरकार सही दिक़्क़तों का अन्दाज़ा लगा लेती है. हमारी सरकार की तरह थोड़े से ग़ैर जानकार आदमियों की कमेटी बना कर मामला उनके हवाले नहीं कर देती.

हमारे यहां अब घरेलू धन्दों को प्रोत्साहन देने की बात हो रही है. ख़ाली बातों से कुछ नहीं होने का. चीन से हमें इस सम्बन्ध में बहुत सीखना है. कारीगरों को आज एक जून भी खाना नसीब नहीं हो पाता. अपना काम करने के लिये उनके पास पैसा नहीं है. किसी तरह क़र्ज़ ले दे कर माल तैयार करते हैं, उसकी निकासी का कोई प्रबन्ध नहीं. झक मार कर बेचारों को उलटे सीधे दामों पर ही अपनी चीज़ें बेचनी पड़ती हैं. तुरन्त पैसा न मिलने पर घर में फ़ाक़ा हो जाता है, धन्दा ठप हो जाता है.

हमारी सरकार को चाहिये कि पहले वह घरेलू धन्दों

حصہ ملتا ہے جو اسکو ملتا ہے تو اُن کے من میں یہ بات آتی تھی کہ وہ ہی کیوں ادھک کام کرے. اسکا اثر پورے اُتپادن پر پڑا. لیکن 1951 میں یہ بھول سدھار لی گئی. نئے قانون بنائے گئے جن کے انوسار اِن کوآپریٹو سوسائٹیوں کا سیدھا سمبندھ کل چین کوآپریٹو سنگھ سے ہوگیا. مزدوروں کے کام کے حساب سے اُن کی مزدوری طے کی گئی اور مزدوری کے حساب سے کوآپریٹو میں اُن کا حصہ طے ہوا. یہاں یہ بات دھیان دینے کی ہے کہ مزدوری میں یہ فرق چین میں اِتنا ادھک نہیں ہے جتنا ہمیں یہاں دیکھنے کو ملتا ہے. چین میں یہ فرق کہیں بھی ایک اور آٹھ کی نسبت سے زیادہ نہیں ہے. سدھانت روپ میں وہاں مزدوری پد کے لحاظ سے نہیں بلکہ اُسکی ضرورت کے لحاظ سے طے کی جاتی ہے. عام طور پر ایک سادھارن مزدور کی اوسط آمدنی 80 روپیہ ہوتی ہے.

سمے سمے پر دستکاروں کی علاقائی و سموچے دیش کی کانفرنسیں بھی ہوتی رہتی ہیں. اِسی طرح کی ایک کانفرنس 'ہو پیہ' صوبے میں ہوئی تھی. صوبے بھر کی کوآپریٹو سنستھا کے کارکرتاؤں نے اس میں بھاگ لیا. مال کی قسم' ادھک پیداوار اور ادھک بکری کے اُوپر لوگوں نے اپنے اپنے وچار ظاہر کئے. کوآپریٹو سوسائٹی کے ذریعے بڑے بڑے اُدیوگ چالو کرنے کا سجھاؤ رکھا گیا اور سرکار سے اور ادھک سہیوگ و پونجی کی مانگ کی گئی تاکہ بڑے پیمانے پر اُدیوگ' چالو کئے جا سکیں اور جنتا اور دیش کا ادھک سے ادھک لابھ ہو. سرکاری نیتی سمجھانے کے ایک ادھیکاری نے بھی اس کانفرنس میں بھاگ لیا اور پوچھے گئے سوالوں کا جواب دیا. مزدوروں و کوآپریٹو کی دقتوں کو سنا جو ان کے سامنے تھیں اور اُن پر وچار کرنے و انہیں دور کرنے کا اشواسن دیا. اِس طرح سرکار صحیح دقتوں کا اندازہ لگا لیتی ہے. ہماری سرکار کی طرح تھوڑے سے غیر جانکار آدمیوں کی کمیٹی بناکر معاملہ اُن کے حوالے نہیں کر دیتی.

ہمارے یہاں اب گھریلو دھندوں کو پروتساہن دینے کی بات ہو رہی ہے. خالی باتوں سے کچھ نہیں ہونے کا. چین سے ہمیں اِس سمبندھ میں بہت سیکھنا ہے. کاریگروں کو آج ایک جون بھی کھانا نصیب نہیں ہو پاتا. اپنا کام کرنے کے لئے ان کے پاس پیسہ نہیں ہے. کسی طرح قرض لے دے کر مال تیار کرتے ہیں' اُسکی نکاسی کا کوئی پربندھ نہیں. جھک مار کر بیچاروں کو اُلٹے سیدھے داموں پر ہی اپنی چیزیں بیچنی پڑتی ہیں. تُرنت پیسہ نہ ملنے پر گھر میں فاقہ ہو جاتا ہے' دھندا ٹھپ ہو جاتا ہے.

ہماری سرکار کو چاہئے کہ پہلے وہ گھریلوں دھندوں

को विदेशी माल के होड़ से बचाए. फिर माल की बिक्री का इन्तज़ाम करे, अधिकतर सामान खुद ख़रीदे. कच्चा माल सस्ते दामों पर मुहैया करे. कोआपरेटिव सोसाइटियां बना कर घरेलू धन्दों को आगे बढ़ाए. चीन के इस तजुरबे को सीखने के लिये एक मिशन भेजा जाए तभी कुछ ठोस काम हो सकेगा.

—गंगा शरन

کو ودیشی مال کے ہوڑ سے بچائے ۔ پھر مال کی بکری کا انتظام کرے، ادھک تر سامان خود خریدے ۔ کچا مال سستے داموں پر مہیا کرے ۔ کوآپریٹو سوسائٹیاں بنا کر گھریلو دھندوں کو آگے بڑھائے ۔ چین کے اِس تجربہ کو سیکھنے کے لئے ایک مشن بھیجا جائے ۔ تبھی کچھ ٹھوس کام ہو سکے گا ۔

—گنگا شرن

भूदान आन्दोलन और उससे उम्मीदें

कोई भी आन्दोलन या तहरीक़ पांच दौरों में से होकर निकल आये तभी कामयाब होती है. वह पांच यह हैं : एक, उसकी तरफ़ लोगों का ध्यान न देना, उसकी हंसी उड़ाना, तीन, उसकी निन्दा करना, चार उसका विरोध करना और उसे दबाना और आख़ीर में उसका लोहा मानना. विनोबा जी का भू-दान-यज्ञ आन्दोलन भी इन्हीं दर्जों में से हो कर गुज़र रहा है.

आन्दोलन की शुरूआत

18 अप्रैल 1951 को जब हैदराबाद रियासत के नालगुंडा ज़िले में घूमते हुए वह पोंचमपली नाम के गांव पहुंचे तो वहां के दुखी हरिजन किसानों ने 80 एकड़ ज़मीन की मांग की. विनोबा जी ने फ़ौरन पूछा कि क्या कोई दाता है जो इनकी मांग पूरी करेगा. माई का एक लाल खड़ा हो हो गया और बड़ी नम्रता से उसने कहा कि महाराज ! अपने स्वर्गीय पिता के नाम पर मैं अपनी और अपने भाइयों की तरफ़ से 100 एकड़ ज़मीन आपको भेंट करता हूं. विनोबा खुशी से उछल पड़े और उन्हें लगा कि भगवान मुझ से यह काम कराना चाहता है. फिर क्या था. वह गांव गांव घूम कर ज़मीन की भीक मांगने लगे.

लोगों ने जब सुना कि कोई साधु ज़मीन मांग मांग कर बेज़मीन वालों को दे रहा है तो उन्हें यक़ीन न हुआ. उन्होंने कहा कि आज के कलयुग के ज़माने में जब आदमी फूटी कौड़ी भी मुश्किल से देता है तो भला कोई क़ीमती चीज़ क्यों देने वाला है और फिर जब ज़मीन के चप्पे चप्पे के लिये ख़ून ख़राबा और फ़ौजदारी होती है तो किसी का ज़मीन देना एक अनहोनी बात है.

بھودان آندولن اور اُس سے اُمیدیں

کوئی بھی آندولن یا تحریک پانچ دوروں میں سے ہوکر نکل آئے تبھی کامیاب ہوتی ہے ۔ وہ پانچ یہ ہیں : ایک، اُس کی طرف لوگوں کا دھیان نہ دینا، دو اُس کی ہنسی اُڑانا تین اُس کی نندا کرنا چار، اُس کا وِرودھ کرنا اور اُسے دبانا اور آخیر میں اس کا لوہا ماننا ۔ ونوبا جی کا بھودان یگیہ آندولن بھی اِنہیں درجوں میں سے ہوکر گذر رہا ہے ۔

آندولن کی شروعات

18 اپریل 1951 کو جب حیدرآباد ریاست کے نلگنڈہ ضلعے میں گھومتے ہوئے وہ پونچمپلی نام کے گاؤں پہنچے تو وہاں کے دکھی ہریجن کسانوں نے 80 ایکڑ زمین کی مانگ کی ۔ ونوبا جی نے فوراً پوچھا کہ کیا کوئی داتا ہے جو ان کی مانگ پورا کرے گا ۔ مائی کا ایک لال کھڑا ہوگیا اور بڑی نمرتا سے اس نے کہا کہ مہاراج ! اپنے سورگیہ پتا کے نام پر میں اپنی اور اپنے بھائیوں کی طرف سے 100 ایکڑ زمین آپ کو بھینٹ کرتا ہوں ۔ ونوبا خوشی سے اُچھل پڑے اور انہیں لگا کہ بھگوان مجھ سے یہ کام کرانا چاہتا ہے ۔ پھر کیا تھا ۔ وہ گاؤں گاؤں گھوم کر زمین کی بھیک مانگنے لگے ۔

لوگوں نے جب سنا کہ کوئی سادھو زمین مانگ مانگ کر بےزمین والوں کو دے رہا ہے تو انہیں یقین نہ ہوا ۔ انہوں نے کہا کہ آج کے کلجگ کے زمانے میں جب آدمی پھوٹی کوڑی بھی مشکل سے دیتا ہے تو بھلا کوئی قیمتی چیز کیوں دینے والا ہے ۔ اور پھر جب زمین کے چپے چپے کے لئے خون خرابا اور فوجداری ہوتی ہے تو کسی کا زمین دینا انہونی بات ہے ۔

लेकिन विनोबा अपने रास्ते पर डटे रहे. दो महीने के अन्दर उन्हें हैदराबाद के नालगुंडा और वारंगल ज़िलों के इलाक़े में—जो तेलंगाना के नाम से मशहूर है—बारह हज़ार एकड़ से ऊपर ज़मीन मिली और भूदान यज्ञ का ख़याल मुल्क के सामने आया. कहने वालों ने कहा कि जो ज़मीन मिली है इसमें लेने वाले का जादू कुछ नहीं है बल्कि उस इलाक़े का जादू है जहां वह घूम रहा है. विनोबा चुप रहे और मुसकरा दिये क्योंकि उनकी निगाह में तो यह जादू उस सिरजनहार का था जिसकी माया कभी किसी ने नहीं जानी.

पांच करोड़ एकड़ की मांग

1951 की 11 सितम्बर को विनोबा जी अपने परमधाम आश्रम से जो वर्धा शहर से चार मील दूर है, उत्तर की तरफ़ दिल्ली के लिये निकले. उन्हें पंडित जवाहरलाल ने बुलाया था और वह सरकारी प्लानिंग कमीशन की नई सरकारी पंच साला योजना पर विनोबा का समर्थन चाहते थे. लेकिन रेल या हवाई जहाज़ की बजाय विनोबा ने पैदल ही चलना बेहतर समझा. इस सफ़र में उनकी वही धुन रही जो गर्मियों के महीने में तेलंगाना में थी. गांव गांव, डगर डगर जाते और हर जगह एक ही राग रहता :

"बाबा आपके पांच बेटे हैं तो छठा मुझे समझिये और भूमि का मेरा हिस्सा मेरे हवाले कीजिये."

इस तरह दरिद्र नारायन के प्रतिनिधि हो कर विनोबा दिल्ली की तरफ़ बढ़ते चले गए. रास्ते में एक दिन उन्होंने ऐलान किया कि पांच साल के अन्दर, 1957 तक मैं देश भर से पांच करोड़ ज़मीन की मांग करता हूं ताकि हिन्दुस्तान में कोई भी बे ज़मीन वाला किसान न रहे. विनोबा 13 नवम्बर को दिल्ली पहुंचे. इन 62 रोज़ में उन्हें 19,436 एकड़ ज़मीन दान में मिल चुकी थी. दिल्ली में वह ग्यारह रोज़ रहे. सरकार को अपनी पंच साला योजना के लिये विनोबा का समर्थन तो न मिल सका. पर दिल्ली से चल कर विनोबा उत्तर प्रदेश में घुसे. यहां के रचनात्मक काम करने वालों ने 1952 के आख़ीर तक पांच लाख एकड़ ज़मीन जमा कर ने का संकल्प किया.

उत्तर प्रदेश का दौरा

विनोबा ने एक के बाद एक उत्तर प्रदेश के ज़िलों में घूमना शुरू किया. उनके पैर में चोट लग गई. कड़ी सर्दी के दिन थे और आज़ाद भारत के पहले चुनाव का ज़ोर था. विनोबा ने अपनी रोज़ की यात्रा जारी रक्खी और वह अपना संदेश अटूट श्रद्धा के साथ सुनाते चले गए.

अप्रैल 1952 में वह बनारस पहुंचे. उस मौक़े पर सारे देश के सर्वोदय विचार वाले लोग बनारस से चौदह मील दूर

لیکن ونوبا اپنے راستے پر ڈٹے رہے ۔ دو مہینے کے اندر حیدرآباد کے نلگنڈا اور وارنگل ضلعوں کے علاقے میں—جو تلنگانہ کے نام سے مشہور ہے—بارہ ہزار ایکڑ سے اوپر زمین ملی اور بھودان یگیہ کا خیال ملک کے سامنے آیا۔ کہنے والوں نے کہا کہ جو زمین ملی ہے اس میں لینے والے کا جادو کچھ نہیں ہے بلکہ اس علاقے کا جادو ہے جہاں وہ گھوم رہا ہے ۔ ونوبا چپ رہے اور مسکرا دئیے کیونکہ ان کی نگاہ میں تو یہ جادو اس سرجنہار کا تھا جس کی مایا کبھی کسی نے نہیں جانی ۔

پانچ کروڑ ایکڑ کی مانگ

1951 کی 11 ستمبر کو ونوبا جی اپنے پرم دھام آشرم سے جو وردھا شہر سے چار میل دور ہے' اتر کی طرف دلی کے لئے نکلے ۔ انہیں پنڈت جواہر لال نے بلایا تھا اور وہ سرکاری پلاننگ کمیشن نئی سرکاری پانچ سالہ یوجنا پر ونوبا کا سمرتھن چاہتے تھے ۔ لیکن ریل یا ہوائی جہاز کی بجائے ونوبا نے پیدل ہی چلنا بہتر سمجھا اس سفر میں ان کی وہی دھن رہی جو گرمیوں کے مہینے میں تلنگانہ میں تھی ۔ گاؤں گاؤں' ڈگر ڈگر جاتے اور ہر جگہ ایک ہی راگ رہتا :

"بابا آپ کے پانچ بیٹے ہیں تو چھٹا مجھے سمجھئے اور بھومی کا میرا حصہ میرے حوالے کیجئے ۔"

اس طرح دردر نارائن کے پرتی ندھی ہوکر ونوبا دلی کی طرف بڑھتے چلے گئے ۔ راستے میں ایک دن انہوں نے اعلان کیا کہ پانچ سال کے اندر 1957 تک میں دیش بھر سے پانچ کروڑ زمین کی مانگ کرتا ہوں تاکہ ہندستان میں کوئی بھی بے زمین والا کسان نہ رہے۔ ونوبا 13 نومبر کو دلی پہونچے ۔ ان 62 روز میں انہیں 19,436 ایکڑ زمین دان میں مل چکی تھی ۔ دلی میں وہ گیارہ روز رہے ۔ سرکار کو اپنی پنچ سالہ یوجنا کے لئے ونوبا کا سمرتھن تو نہ مل سکا ۔ پر دلی سے چل کر ونوبا اترپردیش میں گھسے ۔ یہاں کے رچناتمک کام کرنے والوں نے 1952 کے آخیر تک پانچ لاکھ ایکڑ زمین جمع کرنے کا سنکلپ کیا۔

اتر پردیش کا دورا

ونوبا نے ایک کے بعد ایک اترپردیش کے ضلعوں میں گھومنا شروع کیا ۔ ان کے پیر میں چوٹ لگ گئی ۔ کڑی سردی کے دن تھے اور آزاد بھارت کے پہلے چناؤ کا زور تھا ۔ ونوبا نے اپنی روز کی یاترا جاری رکھی اور وہ اپنا سندیش اٹوٹ شردھا کے ساتھ سناتے چلے گئے ۔

اپریل 1952 میں وہ بنارس پہنچے۔ اس موقعے پر سارے دیش کے سروودے وچار والے لوگ بنارس سے چودہ میل دور

सेवापुरी आश्रम में जमा हुए और दो साल के अन्दर पच्चीस लाख एकड़ ज़मीन जमा करने का सब ने निश्चय किया. अब तक विनोबा अपने काम में अकेले थे. सेवापुरी सम्मेलन के बाद से कुछ और लोगों ने हाथ बंटाना और थोड़ा बहुत वक़्त देना शुरू किया.

सेवापुरी के बाद विनोबा आगे बढ़े. जौनपुर, लखनऊ, उन्नाव, कानपुर, जालौन, हमीरपुर, फतेहपुर, राय बरेली, सुलतानपुर और प्रताबगढ़ ज़िलों में होते हुए 21 जून 1952 को वह इलाहाबाद पहुंचे. उस दिन अपने आराम कमरे में बैठे हुए, इलाहाबाद यूनिवरसिटी के एक प्रोफ़ेसर ने विनोबा की खिल्ली उड़ाते हुए अपने दोस्तों से कहा कि "अब यह गांधी के नये गधे निकले हैं जो भीख मांग मांग कर देश के सब से बड़े आर्थिक सवालों को—ज़मीन के सवाल को हल करना चाहते हैं." हमें यक़ीन है देश के दूसरे हिस्सों में भी बहुत से पढ़े लिखे लोगों ख़ास कर प्रोफ़ेसरों और वकीलों के दिमाग़ में. यही ख़याल आया होगा. मोटे तौर पर 1951 में भू-दान आन्दोलन पहले दौर में से गुज़रा जब उसकी तरफ़ लोग ध्यान ही नहीं देते थे. 1952 में दूसरा दौर शुरू हुआ जब कुछ लोग इसकी हंसी उड़ाने और मज़ाक करने लगे.

यू. पी. से बिहार

उत्तर प्रदेश के सब ज़िलों में घूमने के बाद (टेहरी गढ़वाल, अलमोड़ा और नैनीताल के पहाड़ी ज़िलों को छोड़ कर) विनोबा जी 4 जुलाई को बनारस में काशी विद्यापीठ पहुंचे. बरसात के दो महीने उन्होंने वहीं गुज़ारे 11 सितम्बर 1952 को वह बिहार के लिये निकले उस वक़्त तक 3,50,041 एकड़ ज़मीन देश भर में उन्हें मिल चुकी थी. विनोबा ने प्रन किया कि जब तक पांच करोड़ एकड़ पूरे नहीं हो जाते मैं परम धाम आश्रम वापस नहीं जाऊंगा.

बिहार, राजा जनक और भगवान बुद्ध की भूमि है. यहीं पर 1917 में महात्मा गांधी को अहिंसा देवी का सब से पहले साक्षात्कार हुआ था. विनोबा ने निश्चय किया कि बिहार इस बात की कसौटी बनना चाहिये कि अहिंसा की शक्ति से आर्थिक दायरे में क्या कुछ किया जा सकता है.उन्होंने बिहार का कोटा चार लाख एकड़ से (जैसा सेवापुरी में तय हुआ था) बढ़ा कर 32 लाख एकड़ कर दिया. यहां उन्होंने 'सम्पत्ति दान यज्ञ' का नया ख़याल पेश किया जिसमें "छठा दो" की मांग की. यानी हर आदमी अपनी कुछ मिलकियत का छटा हिस्सा ग़रीबों के लिये दान दे दे. इस नये यज्ञ के बारे में विनोबा का कहना है:

سیواپری آشرم میں جمع ہوئے اور دو سال کے اندر پچیس لاکھ ایکڑ زمین جمع کرنے کا سب نے نشچے کیا . اب تک ونوبا اپنے کام میں اکیلے تھے . سیواپری سمیلن کے بعد سے کچھ اور لوگوں نے بھی ہاتھ بٹانا اور تھوڑا بہت وقت دینا شروع کیا .

سیواپری کے بعد ونوبا آگے بڑھے . جونپور' لکھنؤ' اناؤ' کانپور 'جالون' حمیرپور' فتحپور' رائے بریلی' سلطانپور اور پرتابگڈھ ضلعوں میں ہوتے ہوئے 21 جون 1952 کو وہ الہ آباد پہنچے . اس دن اپنے آرام کمرے میں بیٹھے ہوئے' الہ آباد یونیورسٹی کے ایک پروفیسر نے ونوبا کی کھلی اُڑاتے ہوئے اپنے دوستوں سے کہا کہ "اب یہ گاندھی کے نئے گدھے نکلے ہیں جو بھیک مانگ کر دیش کے سب سے بڑے آرتھک سوالوں کو—زمین کے سوال کو حل کرنا چاہتے ہیں." ہمیں یقین ہے کہ دیش کے دوسرے حصوں میں بھی بہت سے پڑھے لکھے لوگوں خاص کر پروفیسروں اور وکیلوں کے دماغ میں یہی خیال آیا ہوگا . موٹے طور پر 1951 میں بھودان آندولن پہلے دور میں سے گذرا جب اُس کی طرف لوگ دھیان ہی نہیں دیتے تھے . 1952 میں دوسرا دور شروع ہوا جب کچھ لوگ اس کی ہنسی اُڑانے اور مذاق کرنے لگے .

یو . پی سے بہار

اُتر پردیش کے سب ضلعوں میں گھومنے کے بعد (ٹیہری گڈھوال' الموڑا اور نینی تال کے پہاڑی ضلعوں کو چھوڑ کر) ونوبا جی 4 جولائی کو بنارس میں کاشی ودیا پیٹھ پہنچے. برسات کے دو مہینے اُنہوں نے وہیں گذارے . 11 ستمبر 1952 کو وہ بہار کے لئے نکلے اُس وقت تک 350,041 ایکڑ زمین دیش بھر میں اُنہیں مل چکی تھی . ونوبا نے پرن کیا کہ جب تک پانچ کروڑ ایکڑ پورے نہیں ہو جاتے میں پرم دھام آشرم واپس نہیں جاؤں گا.

بہار' راجا جنک اور بھگوان بدھ کی بھومی ہے . یہیں پر 1917 میں مہاتما گاندھی کو اہنسا دیوی کا سب سے پہلے ساکشات کار ہوا تھا . ونوبا نے نشچے کیا کہ بہار اِس بات کی کسوٹی بننا چاہئے کہ اہنسا کی شکتی سے آرتھک دائرے میں کیا کچھ کیا جا سکتا ہے . اُنہوں نے بہار کا کوٹا چار لاکھ ایکڑ سے (جیسا سیواپری میں طے ہوا تھا) بڑھا کر 32 لاکھ ایکڑ کر دیا . یہاں اُنہوں نے 'سمپتی دان یگیہ' کا نیا خیال پیش کیا جس میں "چھٹا دو" کی مانگ کی . یعنی ہر آدمی اپنی کچھ ملکیت کا چھٹا حصہ غریبوں کے لئے دان دے دے . اِس نئے یگیہ کے بارے میں ونوبا کا کہنا ہے :

1. दान दी हुई सम्पत्ति हर एक को अपने पास ही रखना है ज़रूरत हो तो बैंक में भी रख सकते हैं.

2. आमदनी का जो हिस्सा देना है वह जीवन भर या कम से कम पांच साल तक देना है.

3. क़र्ज़दार यह दान नहीं दे सकता यानी दान देने वाले का क़रजे से मुक्त होना ज़रूरी है.

4. दान दी हुई सम्पत्ति का ख़र्च मेरे कहने के मुताबिक़ करना होगा.

साथ ही साथ उन्होंने काम का ढंग भी बदला. उन्होंने बिहार के हर ज़िले का कोटा मुक़र्रर किया और कार्यकर्ताओं से अपील की कि उसे पूरा करें. इसके अलावा बिहार का उन्होंने एक ज़िला चुना—गया ज़िला जहां काफ़ी ज़ियादा ज़ोर लगाया. अपने पुराने मंझे हुए काम करने वाले बुला कर लगभग साठ सत्तर आदमी गया ज़िले में नवम्बर 52 में लगा दिये और छै महीने के अन्दर एक लाख एकड़ ज़मीन की मांग की.

चांदिल सम्मेलन

दिसम्बर के महीने में विनोबा का स्वास्थ बहुत गिर गया. वह बीमार पड़ गए. मान भूमि ज़िले के चान्दिल नामक मुकाम पर उन्होंने क़याम किया. जब उनकी तबियत अच्छी होने लगी तो चांदिल में ही देश भर के भू दान कार्यकर्ता और सर्वोदय प्रेमी मार्च 1953 में जमा हुए. उस वक़्त तक सारे भारत से क़रीब आठ लाख एकड़ ज़मीन मिल चुकी थी. चान्दिल सम्मेलन में विनोबा ने बताया कि भू दान यज्ञ का असल मक़सद क्या है. उन्होंने बताया कि असल मक़सद वह आज़ाद जन शक्ति पैदा करना है जो सरकार की फ़ौजी या हिंसा शक्ति के ख़िलाफ़ होगी और क़ानून या सज़ा की शक्ति से भी ऊपर होगी और जिसके बल पर हिन्दुस्तान के लोग अपने पैरों पर खड़े हो कर गांव राज (यानी हर गांव में गांव वालों की ही हुकूमत) क़ायम कर सकेंगे.

चांदिल से बिनोबा फिर पैदल निकल पड़े. इस नए सफ़र में उन्हें ज़मीन लाख लाख एकड़ मिलने लगी. एक राजा ने अपने कुल परिवार की तरफ़ से दो लाख से ऊपर ज़मीन दी और विनोबा को इतमीनान दिलाया कि ज़मीन मांगने का काम अब हम करेंगे और दूसरे ज़मीदारों से करायेंगे. इसके साथ कुल गांव के गांव भी विनोबा को दान में मिलने लगे. इस तरीक़े का पहला दान मई 1952 में मिला था जब उत्तर प्रदेश के हमीरपुर ज़िले में मंगरोठ गांव के (जिसमें 105 घर हैं) 65 ज़मीन वाले परिवारों में से 64 ने अपनी कुल भूमि दान में दे दी और "सबै भूमि गोपाल की" वाला आदर्श दुनिया के सामने रखा.

1. دان دی ہوئی سمپتی ہر ایک کو اپنے پاس ہی رکھنا ہے . ضرورت ہو تو بینک میں بھی رکھ سکتے ہیں.

2. آمدنی کا جو حصہ دینا ہے وہ جیون بھر یا کم سے کم پانچ سال تک دینا ہے .

3. قرض دار دان نہیں دے سکتا یعنی دان دینے والے کا قرضے سے مکت ہونا ضروری ہے .

4. دان دی ہوئی سمپتی کا خرچ میرے کہنے کے مطابق کرنا ہوگا .

ساتھ ہی ساتھ انہوں نے کام کا ڈھنگ بھی بدلا . انہوں نے بہار کے ہر ضلعے کا کوٹا مقرر کیا اور کاریہ کرتاؤں سے اپیل کی کہ اسے پورا کریں . اس کے علاوہ بہار کا انہوں نے ایک ضلع چنا—گیا ضلع جہاں کافی زیادہ زور لگایا. اپنے پرانے منجھے ہوئے کام کرنے والے بلا کر لگ بھگ ساٹھ ستر آدمی گیا ضلعے میں نومبر 52' میں لگا دئیے اور چھ مہینے کے اندر ایک لاکھ ایکڑ زمین کی مانگ کی .

چاندل سمیلن

دسمبر کے مہینے میں ونوبا کا سواستھ بہت گر گیا . وہ بیمار پڑ گئے . مان بھومی ضلعے کے چاندل نامک مقام پر انہوں نے قیام کیا . جب ان کی طبیعت اچھی ہونے لگی تو چاندل میں ہی دیش بھر کے بھودان کاریہ کرتا اور سروودے پریمی مارچ 1953 میں جمع ہوئے. اس وقت تک سارے بھارت سے قریب آٹھ لاکھ ایکڑ زمین مل چکی تھی. چاندل سمیلن میں ونوبا نے بتایا کہ بھودان یگیہ کا اصل مقصد کیا ہے . انہوں نے بتایا کہ اصل مقصد وہ آزاد جن شکتی پیدا کرنا ہے جو سرکار فوجی یا ہنسا شکتی کے خلاف ہوگی اور قانون یا سزا کی شکتی سے بھی اوپر ہوگی اور جس کے بل پر ہندستان کے لوگ اپنے پیروں پر کھڑے ہو کر گاؤں راج (یعنی ہر گاؤں میں گاؤں والوں کی ہی حکومت) قائم کر سکیں گے .

چاندل سے ونوبا پھر پیدل نکل پڑے . اس نئے سفر میں انہیں زمین لاکھ لاکھ ایکڑ ملنے لگی . ایک راجا نے اپنے کل پریوار کی طرف سے دو لاکھ سے اوپر زمین دی اور ونوبا کو اطمینان دلایا کہ زمین مانگنے کا کام اب ہم کریں گے اور دوسرے زمینداروں سے کرائیں گے . اس کے ساتھ کل گاؤں کے گاؤں بھی ونوبا کو دان میں ملنے لگے. اس طریقے کا پہلا دان مئی 1952 میں ملا تھا جب اتر پردیش کے ہمیرپور ضلع کے منگروٹھ گاؤں کے (جس میں 105 گھر ہیں) 65 زمین والے پریواروں میں سے 64 نے اپنی کل بھومی دان میں دے دی اور "سبھئے بھومی گوپال کی" والا آدرش دنیا کے سامنے رکھا .

मीरा बहन के एतराज़

अब भू-दान-यज्ञ आन्दोलन दूसरे दौर से तीसरे दौर में आया. लोग समझ गए कि इसकी खिल्ली उड़ाने से कोई फ़ायदा नहीं है और यह धीरे धीरे गहरा होता चला जा रहा है. देश के समझदार लोगों का ध्यान इस ओर जाने लगा और उन्होंने अपनी निगाह से इसे देखना शुरू किया. आन्दोलन पर कड़ी टीकाएं होने लगीं. इन टीकाओं में सबसे जोरदार, सच्ची और प्रेम भरी टीका देश की महान सेवक और गांधी जी की परम भक्त मीरा बहन ने की. पिछली पहली मई के "हिन्दुस्तान टाइम्स" अखबार में उनका एक लेख छपा जिसमें उन्होंने अपने दिल का दर्द और शंकायें सामने रखीं. उनके पांच एतराज़ यह हैं :

1. भूदान वालों को मवेशियों और पेड़ों के बचाने की कोई चिन्ता नहीं है और यू. पी. में मिली हुई आधी ज़मीन ऐसी है जिस पर हमारे इन बेज़बान और क़ुदरती दोस्तों का हक़ था और होना चाहिये.

2. जो ज़मीन मिलती है उसका सिलसिलेवार हिसाब जनता के सामने नहीं आता.

3. इस आन्दोलन से ज़मीन के छोटे छोटे टुकड़े हो जाने का डर है और देहातियों की धार्मिक भावना का ग़लत फ़ायदा उठाया जाता है.

4. ज़ियादातर ख़राब ज़मीन ही दान में मिली है. जिसका नतीजा यह होगा कि ख़राब ज़मीन बेज़मीन वालों के मत्थे मढ़ जायगी और अच्छी ज़मीन पर ज़मीदारों का क़ब्ज़ा हमेशा बना रहेगा.

5. ऐसा लगता है कि पांच करोड़ एकड़ ज़मीन जिस तरह से भी हो सके जमा करने की कोशिश की जा रही है.

अब हम इनको बारी बारी से लेंगे.

(1) इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि आज हमारे देश में जितने समाज सेवक या कर्ता धर्ता हैं उनमें मवेशियों और पेड़ों के लिये जो ध्यान और मोहब्बत मीरा बहन के दिल में है वह किसी और के दिल में नहीं. बरसों से एक अनोखी लगन और लासानी श्रद्धा के साथ वह इनकी पैरोकार रही हैं और यह भी सही बात है कि भू दान वाले मवेशियों और पेड़ों की तरफ़ उतने मुख़ातिब नहीं हैं जितना होना चाहिये. हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी या अर्थनीति में मवेशियों और पेड़ पौधों की क्या जगह है, और खेती के मामले में मशीनें या ट्रैक्टर हमारे देश के लिये कितने हानिकर हैं; हम जानते हैं कि गाय, बैल या पेड़ों के पनपने पर ही हमारे गांवों का पनपना निर्भर है. पर आज कल हर जगह मशीनों का बोल बाला है. इसलिये यह बहुत मुमकिन था कि मशीनों के फेर में आ कर हम

میرا بہن کے اعتراض

اب بھودان یگیہ آندولن دوسرے دور سے تیسرے دور میں آیا۔ لوگ سمجھ گئے کہ اسکی کھلی اڑانے سے کوئی فائدہ نہیں ہے اور یہ دھیرے دھیرے گہرا ہوتا چلا جا رہا ہے۔ دیش کے سمجھدار لوگوں کا دھیان اس اور جانے لگا اور انہوں نے اپنی نگاہ سے اسے دیکھنا شروع کیا۔ آندولن پر کڑی ٹیکائیں ہونے لگیں۔ ان ٹیکاؤں میں سب سے زوردار، سچی اور پریم بھری ٹیکا دیش کی مہان سیوک اور گاندھی جی کی پرم بھگت میرا بہن نے کی۔ پچھلی پہلی مئی کے "ہندستان ٹائمس" اخبار میں ان کا ایک لیکھ چھپا جس میں انہوں نے اپنے دل کا درد اور شنکائیں سامنے رکھیں۔ ان کے پانچ اعتراض یہ ہیں :

1. بھودان والوں کو مویشیوں اور پیڑوں کے بچانے کی کوئی چنتا نہیں ہے اور یو۔ پی۔ میں ملی ہوئی آدھی زمین ایسی ہے جس پر ہمارے ان بے زبان اور قدرتی دوستوں کا حق تھا اور ہونا چاہئے۔

2. جو زمین ملتی ہے اسکا سلسلےوار حساب جنتا کے سامنے نہیں آتا۔

3. اس آندولن سے زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے ہو جانے کا ڈر ہے اور دیہاتیوں کی دھارمک بھاونا کا غلط فائدہ اٹھایا جاتا ہے۔

4. زیادہ تر خراب زمین ہی دان میں ملی ہے۔ جسکا نتیجہ یہ ہوگا کہ خراب زمین بے زمین والوں کے متھے مڑھ جائے گی اور اچھی زمین پر زمینداروں کا قبضہ ہمیشہ بنا رہے گا۔

5. ایسا لگتا ہے کہ پانچ کروڑ ایکڑ زمین جس طرح سے بھی ہو سکے جمع کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔

اب ہم ان کو باری باری سے لینگے۔

(1) اس سے کوئی انکار نہیں کر سکتا کہ آج ہمارے دیش میں جتنے سماج سیوک یا کرتا دھرتا ہیں ان میں مویشیوں اور پیڑوں کے لئے جو دھیان اور محبت میرا بہن کے دل میں ہے وہ کسی اور کے دل میں نہیں۔ برسوں سے ایک انوکھی لگن اور لاثانی شردھا کے ساتھ وہ ان کی پیروکار رہی ہیں اور یہ بھی سہی بات ہے کہ بھودان والے مویشیوں اور پیڑوں کی طرف اتنے مخاطب نہیں ہیں جتنا ہونا چاہئے۔ ہم یہ اچھی طرح جانتے ہیں کہ ہندستانی زندگی یا ارتھ نیتی میں مویشیوں اور پیڑ پودوں کی کیا جگہ ہے' اور کھیتی کے معاملے میں مشینیں یا ٹریکٹر ہمارے دیش کے لئے کتنے ہانکر ہیں' ہم جانتے ہیں کہ گائے' بیل' یا پیڑوں کے پنپنے پر ہی ہمارے گاؤں کا پنپنا نربھر ہے۔ پر آج کل ہر جگہ مشینوں کا بول بالا ہے۔ اس لئے یہ بہت ممکن تھا کہ مشینوں کے پھیر میں آ کر ہم

अपने सच्चे, बेज़बान और क़ुदरती साथियों को भूल जायं. इसलिये हम सब को मीरा बहन का अहसान मन्द होना चाहिये कि उन्होंने इस पहलू पर रोशनी डाली जिसे हर भूदान कार्यकर्ता को ख़याल में रखना चाहिये.

उत्तर प्रदेश में अब तक लगभग पांच लाख एकड़ ज़मीन मिल चुकी है. मीरा बहन का यह कहना बिलकुल सही है कि इस में से लगभग आधी ज़मीन 'पड़ती' होगी जिस पर मवेशियों या पेड़ों का हक़ है. हम भी इस हक़ को स्वीकार करते हैं और बहन जी को यह जान कर ख़ुशी होगी कि जो ज़मीन बांटी जाती है वह गांव वालों की सलाह से और जानवरों वग़ैरा के हित को ध्यान में रख ही बांटी जाती है. हमीरपुर ज़िले में अब तक लगभग बीस हज़ार एकड़ ज़मीन बंट चुकी है जिस में गांव वालों ने तेरह हज़ार एकड़ चरागाह और पेड़ों के लिये अलग कर दी है. हमें यक़ीन है कि ज़मीन बांटते वक़्त बहन जी की इस बात का आगे और भी ज़ियादा ध्यान रक्खा जायगा.

(2) मीरा बहन का यह कहना सोलह आना सही है कि जो ज़मीन मिलती है उसका पूरा व्योरा जनता के सामने नहीं आता. इसके तीन कारन हैं: (i) अच्छे कार्य कर्ताओं की कमी (ii)यू. पी. के पटवारियों का स्तीफ़ा और (iii) तफ़सील में जाने से आम तौर से लोगों का घबराना. दीन हीन के लिये सच्चे काम करने वालों की कितनी कमी है इसका तजुरबा बहन जी को ख़ूब है. फिर भी उनकी मांग सही है. हमें उम्मीद है कि जगह जगह की भूदान कमेटियां दान में मिलने वाली ज़मीन के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा जानकारी हासिल करेंगी और लोगों को देंगी. इससे बंटवारे में हद दरजे सहूलियत पैदा होगी.

(3) ज़मीन के छोटे छोटे टुकड़े किये जाने का इतराज़ पुराना है. बहुत कम लोग शायद यह जानते हों कि दाता जो ज़मीन देता है वह कहीं एक जगह इकट्ठी नहीं रहती बल्कि टुकड़ों टुकड़ों में इधर उधर बिखरी रहती है. शायद ही कहीं ऐसा हुआ हो कि भूदान में बांटने के कारन किसी टुकड़े के और टुकड़े किये गए हों. इस मसले पर काफ़ी गहरी चरचा स्वर्गीय श्री किशोरलाल मशरूवाला ने अपने कई लेखों में 'हरिजन' में की थी. भूदान में यह देखा जाता है कि हर आदमी को एक एकड़ तर या पांच एकड़ ख़ुश्क ज़मीन से कम न दी जाय.

विनोबा जी ने आन्दोलन को 'भूदान' नहीं 'भूदान यज्ञ' नाम दिया है. अगर 'भू' या ज़मीन इस आन्दोलन का दिल है और दान उसकी रीढ़ की हड्डी है तो हमारा मानना है कि 'यज्ञ' उसकी आत्मा है. इसकी वजह से इसमें हर एक से आहुति मंज़ूर की जाती है, हर एक से दान ले लिया जाता है. किसी का आर्थिक भावनाओं से सही या ग़लत फ़ायदा उठाने की बात ही नहीं है. दान पत्र दाता की मरज़ी से

سچے' بےزبان اور قدرتی ساتھیوں کو بھول جائیں. اِس لئے ہم سب کو میرا بہن کا احسان مند ہونا چاہئے کہ اُنھوں نے اِس پہلو پر روشنی ڈالی جِسے ہر بھودان کاریہ کرتاؤں کو خیال میں رکھنا چاہئے.

اُتر پردیش میں اب تک لگ بھگ پانچ لاکھ ایکڑ زمین مل چکی ہے. میرا بہن کا یہ کہنا بالکل صحیح ہے کہ اِس میں سے لگ بھگ آدھی زمین 'پڑتی' ہوگی جس پر مویشیوں یا پیڑوں کا حق ہے. ہم بھی اِس حق کو سویکار کرتے ہیں اور بہن جی کو یہ جان کر خوشی ہوگی کہ جو زمین بانٹی جاتی ہے وہ گاؤں والوں کی صلاح سے اور جانوروں وغیرہ کے ہت کو دھیان میں رکھکر ہی بانٹی جاتی ہے. ہمیرپور ضلعے میں اب تک لگ بھگ بیس ہزار ایکڑ زمین بٹ چکی ہے جس میں سے گاؤں والوں نے تیرہ ہزار ایکڑ چراگاہ اور پیڑوں کے لئے الگ کر دی ہے. ہمیں یقین ہے کہ زمین بانٹتے وقت بہن جی کی اِس بات کا آگے اور بھی زیادہ خیال رکھا جائیگا.

(2) میرا بہن کا یہ کہنا سولہ آنہ صحیح ہے کہ جو زمین ملتی ہے اُسکا پورا بیورا جنتا کے سامنے نہیں آتا. اِس کے تین کارن ہیں: (i) اچھے کاریہ کرتاؤں کی کمی (ii) یو. پی. کے پٹواریوں کا استعفی اور (iii) تفصیل میں جانے سے عام طور سے لوگوں کا گھبرانا. دین ہین کے لئے سچے کام کرنے والوں کی کتنی کمی ہے اِسکا تجربہ بہن جی کو خوب ہے. پھر بھی اُن کی مانگ سہی ہے. ہمیں اُمید ہے کہ جگہ جگہ کی بھودان کمیٹیاں دان میں ملنے والی زمین کے بارے میں زیادہ سے زیادہ جانکاری حاصل کریں گی اور لوگوں کو دیں گی. اِس سے بٹوارے میں حد درجے سہولیت پیدا ہوگی.

(3) زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے کئے جانے کا اعتراض پرانا ہے بہت کم لوگ شاید یہ جانتے ہوں کہ داتا جو زمین دیتا ہے وہ کہیں ایک جگہ اکٹھی نہیں رہتی بلکہ ٹکڑوں ٹکڑوں میں اِدھر اُدھر بکھری رہتی ہے. شاید ہی کہیں ایسا ہوا ہو کہ بھودان میں بانٹنے کے کارن کسی ٹکڑے کے اور ٹکڑے کئے گئے ہوں. اِس مسئلے پر کافی گہری چرچا سورگیہ شری کشور لال مشرو والا نے اپنے کئی لیکھوں میں 'ہریجن' میں کی تھی. بھودان میں یہ دیکھا جاتا ہے کہ ہر آدمی کو ایک ایکڑ تر یا پانچ ایکڑ خشک زمین سے کم نہ دی جائے.

ونوبا جی نے آندولن کو 'بھودان' نہیں 'بھودان یگیہ' نام دیا ہے. اگر 'بھو' یا زمین اِس آندولن کا دل ہے اور 'دان' اُسکی ریڑھ ہڈی ہے تو ہمارا ماننا ہے کہ 'یگیہ' اُسکی آتما ہے. اِسی وجہ سے اِس میں ہر ایک سے آہوتی منظور کی جاتی ہے' ہر ایک سے دان لے لیا جاتا ہے. کسی کی آرتھک بھاؤناؤں سے صحیح یا غلط فائدہ اُٹھانے کی بات ہی نہیں ہے. دان پتر داتا کی مرضی

और ख़ुशी से लिया जाता है. कोई दबाव नहीं डाला जाता. बिहार के गया जिले के सियाडीह गांव के लोगों ने अपनी कुल ज़मीन विनोबा जी को दान में दी थी. बाद में मालूम हुआ कि यह काम उन्होंने अपनी राज़ी से नहीं बल्कि किसी दबाव से किया था. तब विनोबा जी ने उनके सारे के सारे दान पत्र ख़ारिज कर दिये !

(4) मीरा बहन की यह शिकायत सही है कि दान में मिलने वाली अकसर ज़मीन ख़राब निकल जाती है. लेकिन ज़मीन मिलते वक़्त तो उसकी पूरी जानकारी इतनी नहीं है, दाता का भाव देखा जाता है. इसलिये कौन इनकार करे और किस आधार पर इनकार करे ? फिर, अगर वह खेती के लायक़ न हो तो चरागाह के काम आ सकती है. चरागाह के लायक़ न हो तो उसकी सख़्त मिट्टी से रेह बना कर साबुन बनाने का काम लिया जा सकता है, इसके लायक़ भी न हो तो उस पर बस्तियां बसाई जा सकती हैं जैसा कि शरनार्थियों को आज बदतर कही जाने वाली ज़मीनों पर बसते देखा गया है. लेकिन यह मानना पड़ेगा कि ज़मीन लेते वक़्त हर मुमकिन एहतियात बरतनी चाहिये. और बहन जी को यह जानकर ख़ुशी होगी कि यह एहतियात बरती जा रही है. और पहले के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा अच्छी ज़मीनें अब मिल रही हैं. हाल ही में, केरल में एक दाता ने ऐसी उपजाऊ दस एकड़ ज़मीन दी है जिसका दाम अस्सी हज़ार रुपया है.

इसी सिलसिले में एक बात और भी है. आज भले कोई दाता अच्छी ज़मीन रख कर ख़राब दे दे, लेकिन हवा बदल रही है और वह यह महसूस कर रहा है कि अब ज़मीन उसकी नहीं रहने वाली है. और बंट कर रहेगी. ज़मीन उसकी होगी जो उस पर काम करेगा. साथ ही साथ बे ज़मीन वालों में भी चेतना आ रही है और उनका भी एक नैतिक दबाव पड़ना शुरू हो गया है. जिसकी वजह से अच्छी ज़मीनें आसानी से मिलने लगी हैं और मिलेंगी.

आन्दोलन का मक़सद

(5) मीरा बहन का यह कहना कि किसी तरह भी ज़मीन जमा कर लेने की कोशिश है भूदान कार्य कर्ताओं के साथ ज़ियादती करना है. ऐसी कोई भाग दौड़ या कोशिश है ही नहीं. विनोबा जी ने हाल में ही कहा है :

"मैंने कहा था कि भूदान यज्ञ का काम 1957 तक पूरा होना चाहिये. मैं यह नहीं कहता कि 1957 तक पूरा करने के लिये उसे हिंसा से भी करो तो चलेगा. हम तो अहिंसा और प्रेम से समझा बुझा कर ही यह काम करना चाहते हैं. यह भूमि का मसला हमारे लिये एक साधन है. हम तो शुद्ध धर्म का प्रचार करना चाहते हैं. और उसके साथ साथ त्याग और प्रेम की भावना लोगों में फैलाना चाहते हैं."

اور خوشی سے لیا جاتا ھے. کوئی دباؤ نہیں ڈالا جاتا. بہار کے گیا ضلع کے سیاڈیہہ گاؤں کے لوگوں نے اپنی کل زمین ونوبا جی کو دان میں دی تھی. بعد میں معلوم کہ یہ کام اُنہوں نے اپنی راضی سے نہیں بلکہ کسی دباؤ سے کیا تھا. تب ونوباجی نے اُن کے سارے کے سارے دان پتر خارج کر دئیے!

(4) میرا بہن کی یہ شکایت صحیح ھے کہ دان میں ملنے والی اکثر زمین خراب نکل جاتی ھے. لیکن زمین ملتے وقت تو اُسکی پوری جانکاری اتنی نہیں ھے' داتا کا بھاؤ دیکھا جاتا ھے. اِس لئے کون اِنکار کرے اور کس آدھا پر اِنکار کرے؟ پھر' اگر وہ کھیتی کے لائق نہ ھو تو چراگاہ کے کام آ سکتی ھے' چراگاہ کے لائق نہ ھو تو اُسکی سخت مٹی سے ریہ بنا کر صابن بنانے کا کام لیا جا سکتا ھے' اِس کے لائق بھی نہ ھو تو اُس پر بستیاں بسائی جا سکتی ھیں. جیسا کہ سرنارتھیوں کو آج بدتر کہی جانے والی زمینوں پر بستے دیکھا گیا ھے. لیکن یہ ماننا پڑے گا کہ زمین لیتے وقت ھر ممکن احتیاط برتنی چاھئے. اور بہن جی کو یہ جان کر خوشی ھوگی کہ یہ احتیاط برتی جا رھی ھے. اور پہلے کے مقابلے کہیں زیادہ اچھی زمینیں اب مل رھی ھیں. حال ھی میں' کیرل میں ایک داتا نے ایسی اُپجاؤ دس ایکڑ زمین دی ھے جسکا دام اسی ھزار روپیہ ھے.

اِسی سلسلے میں ایک بات اور بھی ھے. آج بھلے کوئی داتا اچھی زمین رکھکر خراب دے دے' لیکن ھوا بدل رھی ھے اور وہ یہ محسوس کر رھا ھے کہ اب زمین اُسکی نہیں رھنے والی ھے. اور بنٹ کر رھے گی. زمین اُسکی ھوگی جو اُس پر کام کرے گا. ساتھ ھی ساتھ بےزمین والوں میں بھی چیتنا آ رھی ھے اور اُن کا بھی ایک نیتک دباؤ پڑنا شروع ھوگیا ھے. جسکی وجہ سے اچھی زمینیں آسانی سے ملنے لگی ھیں اور ملینگی.

آندولن کا مقصد

(5) میرا بہن کا یہ کہنا کہ کسی طرح بھی زمین جمع کر لینے کی کوشش ھے. بھودان کاریہ کرتاؤں کے ساتھ زیادتی کرنا ھے. ایسی کوئی بھاگ دوڑ یا کوشش ھے ھی نہیں. ونوبا جی نے حال میں ھی کہا ھے:

" میں نے کہا تھا' کہ بھودان یگیہ کا کام 1957 تک پورا ھونا چاھئے. میں یہ نہیں کہتا کہ 1957 تک پورا کرنے کے لئے اسے ھنسا سے بھی کرو تو چلے گا. ھم تو اھنسا اور پریم سے سمجھا بجھا کر ھی یہ کام کرنا چاھتے ھیں. یہ بھومی کا مسئلہ ھمارے لئے ایک سادھن ھے. ھم تو شدھ دھرم کا پرچار کرنا چاھتے ھیں. اور اُس کے ساتھ ساتھ تیاگ اور پریم کی بھاؤنا لوگوں میں پھیلانا چاھتے ھیں."

एक चीज़ और भी है. केवल ज़मीन जमा कर लेना भूदान यज्ञ का ध्येय नहीं है. असली मक़सद विनोबा जी के शब्दों में यह है :

"किसी की ज़मीन का छटा हिस्सा लेना भूदान यज्ञ का सब से छोटा अंग है. मिली ज़मीन को बांटना है. जिन्हें ज़मीन मिलेगी उन्हें खेती के साधन देना है. उन्हें उन ज़मीनों पर बसाना जमाना है. जिन गांवों में हमें ज़मीन मिले वहां खादी, ग्रामोद्योग, नई तालीम के ज़रिये ग्राम राज क़ायम करना है."

ऊपर के पांच एतराज़ों के अलावा आम तौर से दो तरह के एतराज़ और सुनने में आते हैं :

(1) भूदान यज्ञ में ग़रीबों से ज़मीन क्यों ली जाती है ?

(2) दूसरों से ज़मीन मांगने के बजाय सरकार से कह कर यह काम क्यों नहीं करा लिया जाता ?

दोनों सवाल साफ़ हैं. उनके जवाब भी उतने ही साफ़ हैं :

ग़रीबों से भी ज़मीन क्यों ?

विनोबा सबसे ज़मीन मांगते हैं. इसके यह माने नहीं कि वह सबसे बराबर ज़मीन मांगते हैं. मोटे तौर से वह छटा हिस्सा मांगते हैं. लेकिन बड़े ज़मींदारों किसानों से कहते हैं कि ज़रूरत भर की ज़मीन रख कर बाक़ी सब मुझे दे दो, जो ग़रीब हैं उनसे जो भी 'प्रसाद' के रूप में मिलता है उसे ले लेते हैं. ग़रीबों की भेंट मंज़ूर करने के, विनोबा के लफ़्ज़ों में, चार कारन हैं:

(i) "बेज़मीन वालों की ख़ातिर जिस तरह अमीर किसान का देना धर्म है उसी तरह ग़रीब किसान का भी है क्योंकि बेज़मीन वाले के मुक़ाबले तो वह अमीर ही हैं. पानी जैसे पहाड़ का समुद्र को जाता है वैसे ही मैदान का भी क्योंकि समुद्र से दोनों ही ऊंचे हैं. इसी तरह हर एक को अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहिये. मेरे खाते समय अगर कोई भूका आ पहुंचे तो ख़ुद आधे पेट या भूके रह कर भी उसे खिलाना मेरा फ़र्ज़ है. समाज के अन्दर मैं यह भावना पैदा करना चाहता हूं."

(ii) "मैं यह बात हर एक के दिल में बैठा देना चाहता हूं कि हवा और पानी की तरह ज़मीन भी केवल ईश्वर की है. आज जैसे अमीर अपने को अपनी ज़मीन का मालिक समझता है उसी तरह ग़रीब अपने को अपने टुकड़े का मालिक समझता है. मालिकी का रोग दोनों को है. जंगल में रहने वाले बाबा को अपनी लंगोटी का उतना ही मोह होता है जितना रईस को अपनी कपड़े

ایک چیز اور بھی ہے ۔ کیول زمین جمع کر لینا بھودان یگیہ کا دھیئے نہیں ہے ۔ اصلی مقصد ونوبا جی کے شبدوں میں یہ ہے :

" کسی کی زمین کا چھٹا حصہ لینا بھودان یگیہ کا سب سے چھوٹا انگ ہے. ملی زمین کو بانٹنا ہے ۔ جنہیں زمین ملے گی انہیں کھیتی کے سادھن دینا ہے ۔ انہیں ان زمینوں پر بسانا جمانا ہے ۔ جن گاؤں میں زمین ملے وہاں کھادی گرام ادیوگ، نئی تعلیم کے ذریعے گرام راج قائم کرنا ہے ۔"

اوپر کے پانچ اعتراضوں کے علاوہ عام طور سے دو طرح کے اعتراض اور سننے میں آتے ہیں :

(1) بھودان یگیہ میں غریبوں سے زمین کیوں لی جاتی ہے ؟

(2) دوسروں سے زمین مانگنے کے بجائے سرکار سے کہکر یہ کام کیوں نہیں کرا لیا جاتا ؟

دونوں سوال صاف ہیں ۔ ان کے جواب بھی اتنے ہی صاف ہیں :

غریبوں سے بھی زمین کیوں ؟

ونوبا سب سے زمین مانگتے ہیں. اس کے یہ معنی نہیں کہ وہ سب سے برابر زمین مانگتے ہیں. موٹے طور سے وہ چھٹا حصہ مانگتے ہیں ۔ لیکن بڑے زمین داروں کسانوں سے کہتے ہیں کہ ضرورت بھر کی زمین رکھکر باقی سب مجھے دے دو، جو غریب ہیں ان سے جو بھی 'پرساد' کے روپ میں ملتا ہے اسے لے لیتے ہیں. غریبوں کی بھینٹ منظور کرنے کے، ونوبا کے لفظوں میں، چار کارن ہیں :

(i) "بےزمین والوں کی خاطر جس طرح امیر کسان کا دینا دھرم ہے اسی طرح غریب کسان کا بھی ہے کیوں کہ بےزمین والے کے مقابلے تو وہ امیر ہی ہیں. پانی جیسے پہاڑ کا سمندر کو جاتا ہے ویسے ہی میدان کا بھی کیونکہ سمندر سے دونوں ہی اونچے ہیں ۔ اسی طرح ہر ایک کو اپنا فرض ادا کرنا چاہئے ۔ میرے کھاتے سمے اگر کوئی بھوکا آ پہنچے تو خود آدھے پیٹ یا بھوکے رہکر بھی اسے کھلانا میرا فرض ہے ۔ سماج کے اندر میں یہ بھاؤنا پیدا کرنا چاہتا ہوں ۔"

(ii) "میں یہ بات ہر ایک کے دل میں بیٹھا دینا چاہتا ہوں کہ ہوا اور پانی کی طرح زمین بھی کیول ایشور کی ہے ۔ آج جیسے امیر اپنے کو اپنی زمین کا مالک سمجھتا ہے اسی طرح غریب اپنے کو اپنے ٹکڑے کا مالک سمجھتا ہے ۔ مالکی کا روگ دونوں کو ہے. جنگل میں رہنے والے بابا کو اپنی لنگوٹی کو اتنا ہی موہ ہوتا ہے جتنا رئیس کو اپنی کپڑے

भरी पोटियों का. मैं चाहता हूँ कि यह मोह हर किसी में से निकल जाय.

(iii) "जब हज़ारों की तादाद में ग़रीब या छोटे लोग दान देते हैं तो उससे एक नैतिक ताक़त पैदा होती है जिसका असर अमीरों या बड़ों पर भी पड़ता है. ऐसा सचमुच हुआ. जहां ग़रीब लोग दो बरस से मुझे ज़मीन दे रहे थे उससे अमीरों में लज्जा पैदा हुई. और लज्जा क्या नहीं कर सकती?

(iv) "हमें छोटे बड़े के भेद मिटा कर सब को मिला कर एक ऐसी सेना खड़ी करनी है जो अपने बल पर लड़ सके. अगर अमीर लोग अपने दिल नहीं खोलते तो हम एक क़दम आगे जायेंगे. हमने अपने ऊपर यह पाबन्दी कभी नहीं लगाई कि जो कुछ अब कर रहे हैं उसके अलावा कभी कुछ और नहीं करेंगे. ऐसी पाबन्दियों में हमारा विश्वास नहीं है."

भूदान और सरकार

दूसरा सवाल है सरकार का. जो भाई बहन यह मान बैठे हैं कि भूदान का काम सरकार के एक इशारे में हो सकता है वह आजकल की राजनीति और अर्थनीति से नावाक़िफ़ हैं. सरकार को रोकता कौन है? अगर यह काम सरकार करना चाहती है तो क्यों नहीं कर डालती? सच यह है कि सरकार भी जान गई है कि भूदान यज्ञ केवल भूमि के नये बंटवारे का ही दूसरा नाम नहीं है, बल्कि दौलत व सम्पत्ति और उसके पैदा करने के सभी तरह के साधनों का नया बंटवारा भी इसमें शामिल है. इतना ही नहीं, सरकार की ताक़त और हकूमत का भी बंटवारा इसमें आ जाता है! कौन सरकार आज दुनिया में है जो अपने टुकड़े कराने को तैयार हो या खुद ही अपने पैर में कुल्हाड़ी चला ले? इसलिये भूदान यज्ञ सरकारी दायरे के परे की चीज है और सरकारी अधिकारी आज भले ही इसको साधुवाद कहें या इसकी तारीफ़ करें लेकिन कल नहीं तो परसों उनसे भूदान यज्ञ का फैला रूप बर्दाश्त नहीं होने वाला है. और फिर वह इसके साथ किस तरह पेश आएंगे मालिक ही जानता है.

लेकिन सरकार से कह कर भूदान यज्ञ का काम न कराने की और भी वजह हैं:

(i) सरकार से कराने के पहले अगर जनता खुद ही इसे कर डाले, अपनी ताक़त से ही इसे पूरा कर ले तो इससे बढ़ कर क्या हो सकता है. क़ानून का काम तो वैसा ही है जैसा किसी किताब के खतम हो जाने पर 'इतिश्री' या 'तमाम शुद' लिख देना. अगर किताब खतम हो गई है तो इसके लिखने न लिखने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं.

بھری پوٹیوں کا . میں چاہتا ہوں کہ یہ موہ ہر کسی میں سے نکل جائے .

(iii) "جب ہزاروں کی تعداد میں غریب یا چھوٹے لوگ دان دیتے ہیں تو اس سے ایک نیتک طاقت پیدا ہوتی ہے جس کا اثر امیروں یا بڑوں پر بھی پڑتا ہے . ایسا سچ مچ ہوا. جہاں غریب لوگ دو برس سے مجھے زمین دے رہے تھے اس سے امیروں میں لجا پیدا ہوئی . اور لجا کیا نہیں کرسکتی ؟

(iv) "ہمیں چھوٹے بڑے کے بھید مٹا کر سب کو ملاکر ایک ایسی سینا کھڑی کرنی ہے جو اپنے بل پر لڑ سکے . اگر امیر لوگ اپنے دل نہیں کھولتے تو ہم ایک قدم آگے جائیں گے. ہم نے اپنے اوپر یہ پابندی کبھی نہیں لگائی کہ جو کچھ اب کر رہے ہیں اس کے علاوہ کبھی کچھ اور نہیں کریں گے . ایسی پابندیوں میں ہمارا وشواس نہیں ہے ."

بھودان اور سرکار

دوسرا سوال ہے سرکار کا. جو بھائی بہن یہ مان بیٹھے ہیں کہ بھودان کا کام سرکار کے ایک اشارے میں ہوسکتا ہے وہ آجکل کی راج نیتی اور ارتھ نیتی سے ناواقف ہیں . سرکار کو روکتا کون ہے ؟ اگر یہ کام سرکار کرنا چاہتی ہے تو کیوں نہیں کر ڈالتی ؟ سچ یہ ہے کہ سرکار بھی جان گئی ہے کہ بھودان یگیہ کیول بھومی کے نئے بٹوارے کا ہی دوسرا نام نہیں ہے، بلکہ دولت و سمپتی اور اس کے پیدا کرنے کے سبھی طرح کے سادھنوں کا نیا بٹوارہ بھی اس میں شامل ہے . اتنا ہی نہیں، سرکار کی طاقت اور حکومت کا بھی بٹوارہ اس میں آ جاتا ہے ! کون سرکار آج دنیا میں ہے جو اپنے ٹکڑے کرانے کو تیار ہو یا خود ہی اپنے پیر میں کلہاڑی چلا لے ؟ اس لئے بھودان یگیہ سرکاری دائرے کے پرے کی چیز ہے اور سرکاری ادھیکاری آج بھلے ہی اس کو سادھوواد کہیں یا اس کی تعریف کریں لیکن کل نہیں تو پرسوں ان سے بھودان یگیہ کا پھیلا روپ برداشت نہیں ہونے والا ہے . اور پھر وہ اس کے ساتھ کس طرح پیش آئیں گے مالک ہی جانتا ہے .

لیکن سرکار سے کہکر بھودان یگیہ کا کام نہ کرانے کی اور بھی وجہ ہیں :

(i) سرکار سے کرانے کے پہلے اگر جنتا خود ہی اسے کر ڈالے، اپنی طاقت سے ہی اسے پورا کرلے تو اس سے بڑھکر کیا ہوسکتا ہے . قانون کا کام تو ویسا ہی ہے جیسا کسی کتاب کے ختم ہو جانے پر 'اِتی شری' یا 'تمام شد' لکھ دینا . اگر کتاب ختم ہوگئی ہے تو اس کے لکھنے نہ لکھنے سے کچھ بنتا بگڑتا نہیں .

आज जो जनता की आवाज़ है कल वह क़ानून आप से आप बन जायगा.

(ii) सरकार से कोई काम कराना माने सरकारी नीति या निज़ाम से कराना, यानी उन शक्तियों को मज़बूत करना जो आज सरकारी बन्दोबस्त को संभाले हुए हैं. इसलिये सरकार के ज़रिये से भूदान यज्ञ का काम कराने का मतलब है अपने को सरकार का और भी ज़ियादा ताबेदार या मोहताज बना लेना, यानी आज जिस शिकंजे में (अंगरेज़ों के बनाए सामराज शाही, पूंजी खोर और ग़रीब चूस शिकंजे में) भारत की जनता कसी हुई है उस शिकंजे को और भी ज़ियादा मज़बूत बना कर अपने को पुंज पुंज कर लेना. इसका मतलब हुआ अपनी बेड़ियां ख़ुद ही बांधना और अपनी रही सही आज़ादी को और भी ख़तम कर देना. इसके ख़िलाफ़ भूदान यज्ञ आन्दोलन का मक़सद है जनता का सच्चा समाज क़ायम करना. ऐसा समाज क़ायम करना जिसमें 'स्टेट' 'राजा' 'सरकार' या शासन नाम की चीज़ ही न रहे, शासन रहित (Stateless) और दरजे रहित (Classless) समाज. इसके लिये शुरू से कोशिश करनी चाहिये. इसीलिये भूदान डंके की चोट पर कहता है कि ज़मीन न मेरी, न तेरी, न सरकार की बल्कि ईश्वर की यानी समाज की और जो ज़मीन पर ख़ून पसीना एक करे वही खाए. यह दो उसूल भूदान यज्ञ आन्दोलन के अधार हैं और इनके बल बूते पर चल कर ही राम राज या हकूमते इलाही या किंडम आफ़ गाड क़ायम की जा सकती है.

(iii) भारत की मौजूदा सरकार विधान के बन्धनों से बंधी है. वह जब तक विधान न बदले ज़मीन बिला मावज़ा दिये किसी से नहीं ले सकती. इसलिये जब एक ताक़त किसी काम को कर ही नहीं सकती तो फिर उससे उस काम के लिये कहने से फ़ायदा क्या? हमारा अपना ख़याल है कि अगर सरकार से कहा जाय तो उसी वक़्त कहा जाय जब उसके 'न' के ख़िलाफ़ डटे रहने की हम में, देश में हिम्मत हो और चीज़ें उस तरह करवा लेने की ताक़त हो जैसे देश चाहता है. जब तक वह ताक़त नहीं है तब तक उसे पैदा करना चाहिये और अपनी फ़ौज को मज़बूत बनाना चाहिये. यही चाह है भूदान कार्यकर्ता की. और यही चाह है कट्टर से कट्टर समाजवादी, साम्यवादी या कम्यूनिस्ट की. दोनों सरकार की 'न' को जनता की 'हां' में बदल देना चाहते हैं. दोनों सरकार की 'न' को नेस्त-नाबूद कर देना चाहते हैं. वही नहीं, सरकारी सत्ता को ही नेस्त-नाबूद कर शासन रहित और दरजे रहित समाज बनाना चाहते हैं.

लेकिन अफ़सोस की बात है कि इतना होते हुए भी

جو جنتا کی آواز ہے کل وہ قانون آپ سے آپ بن جائیگا۔

(ii) سرکار سے کوئی کام کرانا معنے سرکاری نیتی یا نظام سے کرانا' یعنی ان شکتیوں کو مضبوط کرنا جو آج سرکاری بندوبست کو سنبھالے ہوئے ہیں۔ اس لئے سرکار کے ذریعے بھودان یگیہ کا کام کرانے کا مطلب ہے اپنے کو سرکار کا اور بھی زیادہ تابعدار یا محتاج بنا لینا' یعنی آج جس شکنجے میں (انگریزوں کے بنائے سامراج شاہی' پونجی خور اور غریب چوس شکنجے میں) بھارت کی جنتا کسی ہوئی ہے اس شکنجے کو اور بھی زیادہ مضبوط بناکر اپنے کو پنج پنج کرلینا۔ اس کا مطلب ہوا اپنی بیڑیاں خود ہی باندھنا اور اپنی رہی سہی آزادی کو اور بھی ختم کردینا۔ اس کے خلاف بھودان یگیہ آندولن کا مقصد ہے جنتا کا سچا سماج قائم کرنا۔ ایسا سماج قائم کرنا جس میں 'اسٹیٹ' 'راجہ' 'سرکار' یا شاسن نام کی چیز ہی نہ رہے' شاسن رہت (Stateless) اور درجے رہت (Classless) سماج۔ اس کے لئے شروع سے کوشش کرنی چاہئے۔ اسی لئے بھودان ڈنکے کی چوٹ پر کہتا ہے کہ زمین نہ میری نہ تیری' نہ سرکار کی بلکہ ایشور کی یعنی سماج کی اور جو زمین پر خون پسینہ ایک کرے وہی کھائے۔ یہ دو اصول بھودان یگیہ کے آندولن کے آدھار ہیں اور ان کے بل بوتے پر چلکر ہی رام راج یا حکومت الٰہی یا کنگڈم آف گاڈ قائم کی جاسکتی ہے۔

(iii) بھارت کی موجودہ سرکار ودھان کی بندھنوں سے بندھی ہے۔ وہ جب تک ودھان نہ بدلے زمین بلا معاوضہ دئے کسی سے نہیں لے سکتی۔ اس لئے جب ایک طاقت کسی کام کو کرہی نہیں سکتی تو پھر اس سے اس کام کے لئے کہنے سے فائدہ کیا؟ ہمارا اپنا خیال ہے کہ اگر سرکار سے کہا جائے تو اسی وقت جب کہا جائے اس کے 'نہ' کے خلاف ڈٹے رہنے کی ہم میں دیش میں ہمت ہو اور چیزیں اس طرح کروالینے کی طاقت ہو جیسے دیش چاہتا ہے۔ جب تک وہ طاقت نہیں ہے تب تک اسے پیدا کرنا چاہئے اور اپنی فوج کو مضبوط بنانا چاہئے۔ یہی چاہ ہے بھودان کاریہ کرتا کی۔ اور یہی چاہ ہے کٹر سے کٹر سماج وادی' سامیہ وادی یا کمیونسٹ کی۔ دونوں سرکار کی 'نہ' کو جنتا کی 'ہاں' میں بدل دینا چاہتے ہیں۔ دونوں سرکار کی 'نہ' کو نیست نابود کردینا چاہتے ہیں۔ وہی نہیں' سرکاری ستا کو ہی نیست نابود کر شاسن رہت اور درجے رہت سماج بنانا چاہتے ہیں۔

لیکن افسوس کی بات ہے کہ اتنا ہوتے ہوئے بھی

हमारे
निस्ट
नुकसा
है कि
खामिय
गलत
आज
कार्यक
रुकना

आई है
हुआ
बढ़ाए
अगस
मिल
हैं :
गिनतं

1.
2.
3.
4.
5.
6.
7.
8.
9.
10.
11.
12.
13.
14.
15.
16.
17.
18.
19.
20.
21.

हमारे देश के कुछ कार्यकर्ता, और विशेष कर कुछ कम्युनिस्ट भाई, भूदान यज्ञ आन्दोलन से अलग हैं. इससे नुक़सान सिर्फ़ देश का, जनता जनार्दन का है. हो सकता है कि भूदान के लोगों या कार्यकर्ताओं में दोष हों, खामियां हों, लेकिन उन दोषों की वजह से आन्दोलन को ग़लत नहीं कहा जा सकता. लोग आएंगे और जायंगे, आज नहीं तो कल, ग़लत कार्यकर्ताओं की जगह सही कार्यकर्ता आएंगे. लेकिन उनकी वजह से आन्दोलन न रुकना चाहिये न रुकेगा.

अब तक मिली ज़मीन का ब्योरा

चांदिल सम्मेलन के बाद आन्दोलन में कुछ तेज़ी आई है. जब बिहार का कोटा चार लाख से बत्तीस लाख हुआ तो दूसरे कई प्रदेशों ने भी अपने कोटे आप से आप बढ़ाए और डट कर काम करने का फ़ैसला किया. 31 अगस्त 1953 तक 20,66,895 एकड़ ज़मीन दान में मिल चुकी है. इसका प्रदेशवार ब्योरा हम नीचे दे रहे हैं :

गिनती	प्रदेश	कोटा	ज़मीन जो मिली	फ़ी सैकड़ा
1.	आसाम	25,000	1,349	5
2.	आंध्र	100,000	7097	7
3.	उत्तर प्रदेश	11,00,000	11,414	49
4.	उड़ीसा	225,000	18,118	12
5.	करनाटक	50,000	1,100	2
6.	केरल	25,000	6 00	25
7.	गुजरात	75,000	16,765	22
8.	तामिलनाड	150,000	14,000	9
9.	देहली	10,000	7,500	75
10.	पंजाब-पेप्सू	1,00,000	2,134	2
11.	बंगाल	2,00,000	169	10·0
12.	बिहार	32,00,000	10,75,217	33
13.	मध्यप्रदेश	2,00,000	52,420	26
14.	मध्य भारत	1,25,000	51,221	41
15.	महाराष्ट्र	1,00,000	8,665	8·5
16.	मैसूर	1,00,000	1,200	1
17.	राजस्थान	2,00,000	2,17,866	109
18.	विंध्य प्रदेश	40,000	3,467	8·5
19.	सौराष्ट्र	50,000	8,000	16
20.	हिमाचल	...	1,350	
21.	हैदराबाद	1,50,000	63,982	52
	जोड़	61,50,000	20,66,895	33

ہمارے دیش کے کچھ کاریہ‌کرتا، اور وشیش کر کچھ کمیونسٹ بھائی بھودان یگیہ آندولن سے الگ ہیں. اس سے نقصان صرف دیش کا، جنتا جناردن کا ہے. ہوسکتا ہے کہ بھودان کے لوگوں یا کاریہ‌کرتاؤں میں دوش ہوں، خامیاں ہوں، لیکن ان دوشوں کی وجہ سے آندولن کو غلط نہیں کہا جاسکتا. لوگ آئیں گے اور جائیں گے، آج نہیں تو کل، غلط کاریہ‌کرتاؤں کی جگہ صحیح کاریہ‌کرتا آئیں گے. لیکن ان کی وجہ سے آندولن نہ رکنا چاہئے نہ رکے گا.

اب تک ملی زمین کا بیورا

چاندل سمیلن کے بعد آندولن میں کچھ تیزی آئی ہے. جب بہار کا کوٹا چار لاکھ سے بتیس لاکھ ہوا تو دوسرے کئی پردیشوں نے بھی اپنے کوٹے آپ سے آپ بڑھائے اور ڈٹ کر کام کرنے کا فیصلہ کیا. 31 اگست 1953 تک 20,66,895 ایکڑ زمین دان میں مل چکی ہے. اس کا پردیش وار بیورا ہم نیچے دے رہے ہیں:

گنتی	پردیش	کوٹا	زمین جو ملی	فی سیکڑہ
.1	آسام	25,000	1,349	5
.2	آندھر	100,000	7097	7
.3	اُتر پردیش	11,00,000	11,414	49
.4	اُڑیسہ	225,000	18,118	12
.5	کرناٹک	50,000	1,100	2
.6	کیرل	25,000	6500	25
.7	گجرات	75,000	16,765	22
.8	تامل ناڈ	150,000	14,000	9
.9	دھلی	10,000	7,5,000	75
10	پنجاب-پیپسو	1,00,000	2,134	2
.11	بنگال	2,00,000	169	10·0
.12	بہار	3200,000	1075,217	33
.13	مدھیہ پردیش	2000,000	52,420	26
.14	مدھیہ بھارت	125,000	51,221	41
.15	مہاراشٹر	1,00,000	8,665	8·5
.16	میسور	100,000	1,200	1
.17	راجستھان	200,000	2,17,866	10
.18	وندھ پردیش	40,000	3,467	8·5
.19	سوراشٹر	50,000	8,000	16
.20	ھماچل		1,350	
.21	حیدرآباد	1,50,000	63,982	52
	جوڑ	61,50,000	20,66,895	33

ज़ाहिर है कि अभी एक तिहाई काम ही हुआ है. लेकिन, जैसा विनोबा जी ने इसी सितम्बर के शुरू में भूदान के सूबा संयोजकों से कहा, जब इतनी कम शक्ति से चांदिल के बाद से दो लाख एकड़ हर महीने में मिल गई तो अगले चालीस माह में चार करोड़ अस्सी लाख एकड़ (यानी हर माह में केवल बारह लाख) ज़रा ज़ियादा शक्ति लगा कर क्यों नहीं मिल सकती, ज़रूर मिल सकती है, सिर्फ़ लगने और जुट जाने की बात है.

भूदान एक चिराग़

आख़िर में, देश के पढ़े लिखों, समझदार और साधनदार भाई बहनों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं से, विशेश कर सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट साथियों से हमारी प्रार्थना है कि वह इस आन्दोलन को समझने की कोशिश करें और फिर कन्धे से कन्धा मिला कर चलें, हमारे दोश, ऐब बताएं और सुधरवाएं. आन्दोलन तीसरे दौर से निकल कर चौथे दौर में--विरोध और दबाने के दौर में--घुसने जा रहा है. क्या मुसीबत के वक़्त भी साथी लोग साथ नहीं देंगे ? और फिर यह खाई कब तक बनी रहेगी ? अगर हिन्दुस्तान की जनता को ज़िन्दा रहना है तो यह खाई पटनी चाहिये. क्या भूदानी और क्या कम्यूनिस्ट, और हर कोई वह जो मौजूदा शासन से असन्तुश्ट है और शासित जनता के साथ है, इनको मिलना होगा, एक होना होगा. इस मेल के लिये भूदान यज्ञ से बढ़ कर कोई दूसरा काम अभी तक इस वक़्त नहीं दीखता. हिन्दुस्तान में छाई हुई मुर्दनी और फैले हुए अंधेरे को चीरने वाला भू दान यज्ञ के अलावा कोई दूसरा कारगर चिराग़ नहीं दीखता. और जब तक कोई बड़ा या बेहतर काम नहीं मिलता हम सब इसमें क्यों न मिल जायं ? जहां कोई वाक़ई बड़ा या बेहतर काम हमारे हाथ लगा इसे बन्द करके हम सब उसमें लग जावेंगे.

20. 9. '53 —सुरेश रामभाई

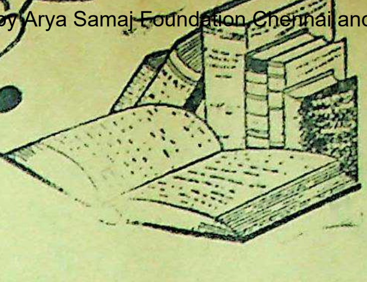
ظاہر ہے کہ ابھی ایک تہائی کام ہی ہوا ہے. لیکن، ونوبا جی نے اسی ستمبر کے شروع میں بھودان کے سنیوجکوں سے کہا، جب اتنی کم شکتی سے چاندل کے بعد سے دو لاکھ ایکڑ ہر مہینے میں مل گئی تو اگلے چالیس ماہ میں چار کروڑ اسی لاکھ ایکڑ (یعنی ہر ماہ کیول بارہ لاکھ) ذرا زیادہ شکتی لگا کر کیوں نہیں مل سکتی، ضرور مل سکتی ہے، صرف لگنے اور جٹ جانے کی بات ہے.

بھودان ایک چراغ

آخر میں، دیش کے پڑھے لکھوں، سمجھدار اور سادھن دار بھائی بہنوں اور راج نیتک کاریہ کرتاؤں سے، وشیش کر سوشلسٹ اور کمیونسٹ ساتھیوں سے ہماری پرارتھنا ہے کہ وہ اس آندولن کو سمجھنے کی کوشش کریں اور پھر کندھے سے کندھا ملا کر چلیں، ہمارے دوش، عیب بتائیں اور سدھروائیں. آندولن تیسرے دور سے نکل کر چوتھے دور میں—ورودھ اور دبانے کی دور میں—گھسنے جا رہا ہے. کیا مصیبت کے وقت بھی ساتھی لوگ ساتھ نہیں دیں گے؟ اور یہ کھائی کب تک بنی رہے گی؟ اگر ہندوستان کی جنتا کو زندہ رہنا ہے تو یہ کھائی پٹنی چاہئے. کیا بھودانی اور کیا کمیونسٹ، اور ہر کوئی وہ جو موجودہ شاسن سے اسنتشٹ ہے اور شاسِت جنتا کے ساتھ ہے، ان کو ملنا ہوگا، ایک ہونا ہوگا. اس میل کے لئے بھودان یگیہ سے بڑھکر کوئی دوسرا کام ابھی اس وقت نہیں دیکھتا. ہندوستان میں چھائی ہوئی مردنی اور پھیلے ہوئے اندھیرے کو چیرنے والا بھودان یگیہ کے علاوہ کوئی دوسرا کارگر چراغ نہیں دیکھتا. اور جب تک کوئی بڑا یا بہتر کام نہیں ملتا ہم سب اس میں کیوں نہ مل جائیں؟ جہاں کوئی واقعی بڑا یا بہتر کام ہمارے ہاتھ لگا اسے بند کرکے ہم سب اس میں لگ جاویں گے.

—سریش رام بھائی 20. 9. '53

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

भूदान यज्ञ

लेखक--विनोबा भावे.
प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद.
भाशा—हिन्दी; सफ़े—148.
क़ीमत—एक रुपया चार आना.

28 अप्रैल सन 1951 का दिन इस क्रान्तिकारी इतिहास का एक महान पर्व है. इसी दिन विनोबा के मन में एक नई चेतना ने स्थान लिया. हिन्दुस्तान के इस महान संत के दिल में एक टीस पैदा हुई, अपने देश के उन लाखों करोड़ों ग़रीबों, निर्धन और बेज़मीन वालों के लिये. क़ुदरत से हवा, धूप, पानी सब बे रोक टोक हर एक को मिलते हैं. इन पर सबका बराबर बराबर अधिकार है. इस उसूल को ले कर विनोबा जी पैदल चल कर हिन्दुस्तान भर का दौरा कर रहे हैं. वह ज़मीन मालिकों से ज़मीन ले कर बे ज़मीन वालों को देना चाहते हैं. विनोबा के इस भूदान आन्दोलन का आज संसार में शोर मचा हुआ है. वह अपने संदेश को घर घर पहुंचाते और जवान, बूढ़े, बच्चे, मर्द औरत सब के दिल पर अपने इस आन्दोलन का असर पैदा करते दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति के साथ आगे बढ़ रहे हैं. विनोबा जी ने आज हिन्दुस्तान को शान्ति पूर्न ढंग से ज़मीन की इस बड़ी समस्या को हल करने का अहिंसक मार्ग दिखाया. हिन्दुस्तान के बाहर भी बिनोबा के इस आन्दोलन की चरचा ज़ोरों से फैल रही है. लोग इस आन्दोलन को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं. कुछ विदेशियों का कहना है कि शान्ति मय तरीक़े से हिन्दुस्तान के बाहर भी ज़मीन का मसला तय किया जा सकता है.

भूदान यज्ञ की कल्पना, उसका विकास, उसका आरंभ क्यों और कैसे हुआ इसका सुन्दर परिचय थोड़े से में इस किताब में मिलेगा. इस पुस्तक में विनोबा जी के भूदान सम्बन्धी लेखों और भाशनों को जमा किया गया है. इस आन्दोलन में दिलचस्पी रखने वाले रचनात्मक कार्य कर्ताओं और सर्वोदय प्रेमियों के लिये यह किताब बहुत काम की है. सम्पत्ति दान वग़ैरा क्या है इसकी जानकारी भी इस छोटी सी पुस्तक में कराई गई है. इस किताब के पढ़ने के बाद लोगों को नई रोशनी मिलेगी. किताब की छपाई सादा और सुन्दर है. नव जीवन प्रकाशन मन्दिर को ऐसी किताब निकालने पर हम मुबारक बादबाद देते हैं.

—चेतन कुमार शर्मा

بھودان یگیہ

لیکھک—ونوبا بھاوے.
پرکاشک—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد.
بھاشا—ہندی؛ صفحے—148.
قیمت—ایک روپیہ چار آنہ.

28 اپریل سن 1951 کا دن اِس کرانتکاری اِتہاس کا ایک مہان پرو ہے. اِسی دن ونوبا کے من میں ایک نئی چیتنا نے استھان لیا. ہندستان کے اس مہان سنت کے دل میں ایک ٹیس پیدا ہوئی، اپنے دیش کے اُن لاکھوں کروڑوں غریبوں، نردھن اور بے زمین والوں کے لئے. قدرت سے ہوا، دھوپ، پانی سب بے روک ٹوک ہمیشہ ہر ایک کو ملتے ہیں. اِن پر سب کا برابر برابر ادھیکار ہے. اِس اُصول کو لے کر ونوباجی پیدل چل کر ہندستان بھر کا دورہ کر رہے ہیں. وہ زمین مالکوں سے زمین لے کر بے زمین والوں کو دینا چاہتے ہیں. ونوبا کے اِس بھودان آندولن کا آج سنسار میں شور مچا ہوا ہے. وہ اپنے سندیش کو گھر گھر پہنچاتے. اور جوان، بوڑھے، بچے، مرد عورت سب کے دل پر اپنے اِس آندولن کا اثر پیدا کرتے دن دونی رات چوگنی اُنتی کے ساتھ آگے بڑھ رہے ہیں. ونوبا جی نے آج ہندستان کو شانتی پورن ڈھنگ سے زمین کی اِس بڑی سمسیا کو حل کرنے کا اہنسک مارگ دکھایا. ہندستان کے باہر بھی ونوبا کے اِس آندولن کی چرچہ زوروں سے پھیل رہی ہے. لوگ اِس آندولن کو عزت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں. کچھ ودیشیوں کا کہنا ہے کہ شانتی مے طریقے سے ہندستان کے باہر بھی زمین کا مسئلہ طے کیا جا سکتا ہے.

بھودان یگیہ کی کلپنا، اُس کا وکاس، اُس کا آرمبھ کیوں اور کیسے ہوا اِس کا سندر پریچے تھوڑے سے میں اِس کتاب میں ملیگا. اِس پستک میں ونوبا جی کے بھودان سمبندھی لیکھوں اور بھاشنوں کو جمع کیا گیا ہے. اِس آندولن میں دلچسپی رکھنے والے رچناتمک کارکرتاؤں اور سروودے پریمیوں کے لئے یہ کتاب بہت کام کی ہے. سمپتی دان وغیرہ کیا ہے اِس کی جانکاری بھی اِس چھوٹی سی پستک میں کرائی گئی ہے. اِس کتاب کے پڑھنے کے بعد لوگوں کو نئی روشنی ملیگی. کتاب کی چھپائی سادہ اور سندر ہے. نوجیون پرکاشن مندر کو ایسی کتاب نکالنے پر ہم مبارکباد دیتے ہیں.

—چیتن کمار شرما

हमारी राय

आज़ादी की केक

15 अगस्त की तारीख़ हमारे इतिहास में अमर रहेगी. इस दिन हिन्दुस्तान की राजनीति ने पलटा खाया, अंगरेज़ी हकूमत का दौर ख़तम हो कर हिन्दुस्तान की अपनी हकूमत का दौर शुरू हुआ. आज़ादी की छटी सालगिरह के मौक़े पर हमारे राजपति और प्रधान मंत्री ने, दस्तूर के मुताबिक़, बयान दिये और झंडा फहराया.

राजपति ने अपने बयान में कहा कि "आज के दिन हमको अपने मुल्क में ख़ुशहाली और दुनिया में आम बेहतरी लाने की ग़रज़ से ज़ियादा काम करने के लिये अपने को फिर से समर्पन कर देना चाहिये." प्रधान मंत्री ने लाल क़िले पर झंडा फहराने के बाद कहा कि 'आज के दिन हमें फिर से प्रन लेना चाहिये कि आपस में मिल कर इस मुल्क की सेवा करेंगे और ग़रीबी के ख़िलाफ़ मोरचा लेने को तैयार होंगे.' राजेन्द्र बाबू और पंडित जवाहर लाल, दोनों ही हमारे देश की तपी तपाई और निखरी हुई हस्तियां हैं. इन्होंने एक ज़माने में इस मुल्क की ख़ातिर कोई क़ुरबानी बाक़ी नहीं रखी. उनकी इन पुरजोश अपीलों के आगे हमारा सर झुकता है और हमें यक़ीन है कि हर हिन्दुस्तानी के दिल की यही आवाज़ होगी कि इस मुल्क में ख़ुशहाली आए, दुनिया बेहतर बने, सब मिल कर रहें और ग़रीबी का नाश हो. सिरजनहार हम सब की इस दुआ को क़बूल करें!

फिर फ़ौरन ही ख़याल पैदा होता है कि क्या इन अपीलों में या हमारी इस दुआ में ताक़त है? दूसरे शब्दों में, क्या हमारे क़दम उसी मंज़िल की तरफ़ बढ़ रहे हैं जिस तक पहुंचने की हम दुआ कर रहे हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि दुआ पूरब जाने की कर रहे हों और रास्ता नाप रहे हों पच्छिम का! हमें अपना दिल टटोल कर देखना चाहिये, ईमान, इनसाफ़ और निडरता के साथ अपने दिल के हर कोने की तलाशी लेनी चाहिये और फिर उसी के अनुसार आगे की राह पकड़नी चाहिये. अगर बहके हुए हों तो लौट पड़ना चाहिये, अगर सही चल रहे हों तो क़दम ज़ियादा तेज़ी से बढ़ाने चाहियें.

ہماری رائے

آزادی کی کیک

15 اگست کی تاریخ ہمارے اِتہاس میں امر رہے گی. اس دن ہندستان کی راج نیتی نے پلٹا کھایا، انگریزی حکومت کا دور ختم ہو کر ہندستان کی اپنی حکومت کا دور شروع ہوا. آزادی کی چھٹی سال گرہ کے موقع پر ہمارے راج پتی اور پردھان منتری نے، دستور کے مطابق، بیان دیئے اور جھنڈا پھہرایا.

راج پتی نے اپنے بیان میں کہا کہ "آج کے دن ہم اپنے ملک میں خوش حالی اور دنیا میں عام بہتری لانے کی غرض سے زیادہ کام کرنے کے لئے اپنے کو پھر سے سمرپن کر دینا چاہئے." پردھان منتری نے لال قلعہ پر جھنڈا پھہرانے کے بعد کہا کہ "آج کے دن ہمیں پھر سے پرن لینا چاہئے کہ آپس میں مل کر اِس ملک کی سیوا کریں گے اور غریبی کے خلاف مورچہ لینے کو تیار ہوں گے." راجیندر بابو اور پنڈت جواہر لال، دونوں ہی ہمارے دیش کی تپی تپائی اور نکھری ہوئی ہستیاں ہیں. اِنہوں نے ایک زمانہ میں اِس ملک کی خاطر کوئی قربانی باقی نہیں رکھی. اُن کی اِن پر جوش اپیلوں کے آگے ہمارا سر جھکتا ہے اور ہمیں یقین ہے کہ ہر ہندستانی کے دل کی یہی آواز ہوگی کہ اِس ملک میں خوش حالی آئے، دنیا بہتر بنے، سب مل کر رہیں اور غریبی کا ناش ہو. سرجن ہار ہم سب کی اِس دعا کو قبول کریں!

پھر فوراً ہی خیال پیدا ہوتا ہے کہ کیا اِن اپیلوں میں یا ہماری اِس دعا میں طاقت ہے؟ دوسرے شبدوں میں، کیا ہمارے قدم اُسی منزل کی طرف بڑھ رہے ہیں جس تک پہونچنے کی ہم دعا کر رہے ہیں؟ کہیں ایسا تو نہیں کہ دعا پورب جانے کی کر رہے ہوں اور راستہ ناپ رہے ہوں پچھم کا! ہمیں اپنا دل ٹٹول کر دیکھنا چاہئے، ایمان، اِنصاف اور نڈرتا کے ساتھ اپنے دل کے ہر کونے کی تلاشی لینی چاہئے اور پھر اُسی کے انوسار آگے کی راہ پکڑنی چاہئے. اگر بھٹکے ہوئے ہوں تو لوٹ پڑنا چاہئے، اگر سہی چل رہے ہوں تو قدم زیادہ تیزی سے بڑھانے چاہئیں.

मुल्की पैमाने पर जब हम ज़रा बारीकी से देखते हैं तो एक दम झटका सा लगता है. हमने अख़बार में फ़ोटो देखा कि 15 अगस्त को राजपति ने अपने महल के बाग़ में एक आलीशान दावत दी जिसमें आला से आला लोग मौजूद थे. इस दावत में 'आज़ादी की एक केक' थी जिसे प्रधान मंत्री ने तलवार से काटा! कहीं हम सपना तो नहीं देख गये, कहां आज़ादी और कहां आज़ादी की केक! लेकिन नहीं, फ़ोटो हिन्द सरकार की तरफ़ से भेजा हुआ फ़ोटो है—साफ़ दीख रहा है कि पंडित जवाहरलाल किसी गोल चीज़ के टुकड़े कर रहे हैं. कहां यह नई दिल्ली की केक वाली दावत और कहां बारा खम्भा पार हमारे पढ़े लिखे बेरोज़गार नौजवान या देश में हर जगह मिलने वाले अनपढ़ किसान, जिन्होंने कभी यह भी नहीं जाना कि भर पेट खाना किसे कहते हैं! कहां खाने की वह दावत, कहां खाने की यह अदावत!

इस हालत को देख कर यह ख़याल पैदा होता है कि 1857 से ले कर 1947 तक हमारे बुज़ुर्गों ने जिस चीज़ के लिये अपने को मिटा दिया वह क्या थी? क्या हमारी आज़ादी का केवल यही मक़सद था कि अंगरेज़ों को हटा कर अंगरेज़ियत को बरक़रार रखें? क्या हमारे सारे स्वतंत्रता संग्राम की केवल यही मन्शा थी कि जिन कुर्सियों पर, जिन कोठियों में अंगरेज़ बैठे हैं वहां हमारे हिन्दुस्तानी भाई बैठ जायं और फिर हू बहू उनकी नक़ल उतारें. नहीं तो क्या मतलब रखता है आज़ादी के दिन प्रधान मंत्री का तलवार हाथ में ले कर केक काटना? क्या आज़ादी मनाने का कोई दूसरा तरीक़ा हमारे इल्म में है ही नहीं? क्या दावत का और कोई दस्तूर हम जानते ही नहीं! हमें यक़ीन है कि 15 अगस्त के उस जश्न में अगर शेरवानी और चूड़ीदार पाजामों की जगह कुछ लोगों को सूट पहना दिये जाते तो पता नहीं चल सकता था कि यह मजलिस हिन्दुस्तान की आज़ादी के सिलसिले में हो रही है या किसी दूसरी विलायत की. क्या सोचते होंगे परदेश वाले कि हिन्दुस्तानी अपनी आज़ादी का दिन भी अपने ढंग से नहीं मना सकते. तब फिर भला कोई दूसरा काम क्यों कर अपने ढंग से कर सकते हैं.

और वाक़या है कि अंगरेज़ियत हमारे हाकिमों के दिमाग़, मिज़ाज, बरताव और अदा में इस दरजे समा गई है और दिन दूनी रात चौगुनी समाती चली जा रही है कि जिस मक़सद के लिये स्वराज की कोशिश मुल्क ने की थी हम उस मक़सद से बहुत दूर हटते चले जा रहे हैं. यही वजह है कि मुल्क के धन्दे एक एक कर तबाह हो रहे हैं, मुल्क में बेरोज़गारी बढ़ रही है, भुकमरी और अकाल की सूरत हर दम कहीं न कहीं किसी न किसी शकल में बनी रहती है. और यही

ملکی پیمانے پر جب ہم ذرا باریکی سے دیکھتے ہیں تو ایک دم جھٹکا سا لگتا ہے . ہم نے اخبار میں فوٹو دیکھا کہ 15 اگست کو راج پتی نے اپنے محل کے باغ میں ایک عالیشان دعوت دی جس میں اعلیٰ سے اعلیٰ لوگ موجود تھے . اِس دعوت میں ' آزادی کی ایک کیک ' تھی جسے پردھان منتری نے تلوار سے کاٹا ! کہیں ہم سپنا تو نہیں دیکھ گئے' کہاں آزادی اور کہاں آزادی کی کیک ! لیکن نہیں' فوٹو ہند سرکار کی طرف سے بھیجا ہوا فوٹو ہے—صاف دیکھ رہا ہے کہ پنڈت جواہر لال کسی گول چیز کے ٹکڑے کر رہے ہیں . کہاں یہ نئی دلی کی کیک والی دعوت اور کہاں بارا کھمبا پار ہمارے پڑھے لکھے بے روزگار نوجوان یا دیش میں ہر جگہ ملنے والے اَن پڑھ کسان' جنہوں نے کبھی یہ بھی نہیں جانا کہ بھر پیٹ کھانا کسے کہتے ہیں ! کہاں کھانے کی وہ دعوت' کہاں کھانے کی یہ عداوت !

اِس حالت کو دیکھکر یہ خیال پیدا ہوتا ہے کہ 1857 سے لے کر 1947 تک ہمارے بزرگوں نے جس چیز کے لئے اپنے کو مٹا دیا وہ کیا تھی؟ کیا ہماری آزادی کا کیول یہی مقصد تھا کہ انگریزوں کو ہٹا کر انگریزیت کو برقرار رکھیں؟ کیا ہمارے سارے سوتنترتا سنگرام کی کیول یہی منشا تھی کہ جن کرسیوں پر' جن کوٹھیوں میں انگریز بیٹھے ہیں وہاں ہمارے ہندستانی بھائی بیٹھ جائیں اور پھر ہوبہو اُن کی نقل اُتاریں. نہیں تو کیا مطلب رکھتا ہے آزادی کے دن پردھان منتری کا تلوار ہاتھ میں لے کر کیک کاٹنا ؟ کیا آزادی منانے کا کوئی دوسرا طریقہ ہمارے علم میں ہے ہی نہیں ؟ کیا دعوت کا اور کوئی دستور ہم جانتے ہی نہیں! ہمیں یقین ہے کہ 15 اگست کے اُس جشن میں اگر شیروانی اور چوڑی دار پاجاموں کی جگہ کچھ لوگوں کو سوٹ پہنا دئے جاتے تو پتہ نہیں چل سکتا تھا کہ یہ مجلس ہندستان کی آزادی کے سلسلے میں ہو رہی ہے یا کسی دوسری ولایت کی . کیا سوچتے ہونگے پردیس والے کہ ہندستانی اپنی آزادی کا دن بھی اپنے ڈھنگ سے نہیں منا سکتے . تب پھر بھلا کوئی دوسرا کام کیوں کر اپنے ڈھنگ سے کر سکتے ہیں .

اور واقعہ ہے کہ انگریزیت ہمارے حاکموں کے دماغ' مزاج' برتاؤ اور ادا میں اِس درجے سما گئی ہے اور دن دونی رات چوگنی سماتی چلی جا رہی ہے کہ جس مقصد کے لئے سوراج کی کوشش ملک نے کی تھی ہم اُس مقصد سے بہت دور ہٹتے چلے جا رہے ہیں . یہی وجہ ہے کہ ملک کے دھندے ایک ایک کر تباہ ہو رہے ہیں' ملک میں بےروزگاری بڑھ رہی ہے' بھکمری اور اکال کی صورت ہردم کہیں نہ کہیں کسی نہ کسی شکل میں بنی رہتی ہے. اور یہی

वजह है कि हमारे सारे शोर गुल होते हुए राजस्थान का रेगिस्तान उत्तर प्रदेश में संध लगाता चला आ रहा है, जगह जगह के दरिया अपने रास्ते बदल कर उपजाऊ इलाक़ों को बंजर बना डाल रहे हैं और एक न एक आफ़त मुल्क पर आए दिन सवार रहती है.

ऐसी हालत में क्या मानी रखती हैं राजपति या प्रधान मंत्री की अपीलें. मिसाल के लिये हम देखें कि आज हिन्दुस्तान के अन्दर विदेशी पैसा, विदेशी माल, विदेशी ब्योपारी और सलाहकार या दल्लाल पहले से ज़ियादा हैं या कम ? अगर ज़ियादा हैं तो इसे हम अपनी तरक़्क़ी की निशानी समझें या गिरावट की. कसौटी यह है कि मुल्क के अमीरों और ग़रीबों के बीच की खाई कुछ कम हुई या नहीं. अगर खाई पटी है तो बाहर वाले मुबारक, हाकिम हुक्काम मुबारक. सब कुछ मुबारक. लेकिन असलियत क्या है ? हम यहां एक पुराने तजुरबेकार आई. सी. एस. अफ़सर की ही राय पेश करते हैं जो सोलह आने अंगरेज़ियत के पैरोकार हैं और मौजूदा हिन्द सरकार की कमेटियों मीटिंगों में जिन्हें जगह दी जाती है—उनका नाम है श्री ए. डी. गोरेवाला—उनका कहना है कि :

"आजकल ख़ुशहाल लोग ज़ियादा ख़ुशहाल हो गए हैं और अमीर ज़ियादा अमीर बन गए हैं. साथ ही साथ ग़रीब बिला शक पहले से ज़ियादा ग़रीब हो गए हैं."

कहां मुल्क में इस फ़र्क़ का बढ़ना और वहां नई दिल्ली में वह दावत ! अगर यही हालत बनी रही तो मुल्क में जो भी न हो जाय थोड़ा. महात्मा गांधी ने अपनी छोटी सी किताब "रचनात्मक प्रोग्राम" में लिखा है :

"नई दिल्ली के शानदार महलों और ग़रीबों, चोटी का पसीना एड़ी तक बहाने वालों की, काल कोठरियों के बीच का फ़र्क़ आज़ाद भारत में एक दिन भी नहीं रह सकता. आज़ाद भारत में ग़रीबों को वही शक्ति हासिल होगी जो अमीर से अमीर को. अगर अमीरी को ख़ुशी ख़ुशी न छोड़ा गया, अगर अमीरी से मिलने वाली शक्ति को न छोड़ा गया और फिर सब की बेहतरी के लिये उसका उपयोग न किया गया तो एक न एक दिन अहिंसात्मक इन्क़िलाब हो कर रहेगा."

लेकिन शायद हमारे शासकों ने इस सच्चाई से मुंह फेर लिया है और समझते हैं कि सचाई की तरफ़ न देखना ही सचाई को टालना करना है, नहीं तो 15 अगस्त जैसे पवित्र दिन उनसे उस दावत में बैठते भी न बनता और उन्हें ख़याल आया होता कि यह टीम टाम तो रोज़ की हैं. कम से कम आज के दिन तो—बरस के अन्दर एक दिन तो—कोई ऐसा नेक काम कर लें जिससे ग़रीब पड़ोसी के बच्चों की रोटी का कुछ सहारा हो जाय.

وجہ ہے کہ ہمارے سارے شور غل ہوتے ہوئے راجستھان کا ریگستان اتر پردیش میں سیندھ لگاتا چلا آرہا ہے، جگہ جگہ کے دریا اپنے راستے بدل کر اپجاؤ علاقوں کو بنجر بنا ڈال رہے ہیں اور ایک نہ ایک آفت ملک پر آئے دن سوار رہتی ہے۔

ایسی حالت میں کیا معنی رکھتی ہیں راج پتی یا پردھان منتری کی اپیلیں۔ مثال کے لئے ہم دیکھیں کہ آج ہندستان کے اندر ودیشی پیسہ، ودیشی مال، ودیشی بیوپاری اور صلاحکار یا دلال پہلے سے زیادہ ہیں یا کم؟ اگر زیادہ ہیں تو اسے ہم اپنی ترقی کی نشانی سمجھیں یا گراوٹ کی۔ کسوٹی یہ ہے کہ ملک کے امیروں اور غریبوں کے بیچ کی کھائی کچھ کم ہوئی یا نہیں۔ اگر کھائی پٹی ہے تو باہر والے مبارک، حاکم حکام مبارک، سب کچھ مبارک۔ لیکن اصلیت کیا ہے؟ ہم یہاں ایک پرانے تجربہ کار آئی۔ سی۔ ایس افسر کی ہی رائے پیش کرتے ہیں جو سولہ آنے انگریزیت کے پیروکار ہیں اور موجودہ ہند سرکار کی کمیٹیوں میٹنگوں میں جنہیں جگہ دی جاتی ہے — اُن کا نام ہے شری اے۔ ڈی۔ گورے والا — اُن کا کہنا ہے کہ :

"آج کل خوشحال لوگ زیادہ خوشحال ہوگئے ہیں اور امیر زیادہ امیر بن گئے ہیں۔ ساتھ ہی ساتھ غریب بلاشک پہلے سے زیادہ غریب ہوگئے ہیں۔"

کہاں ملک میں اس فرق کا بڑھنا اور وہاں نئی دلی میں وہ دعوت! اگر یہی حالت بنی رہی تو ملک میں جو بھی نہ ہو جائے تھوڑا۔ مہاتما گاندھی نے اپنی چھوٹی سی کتاب "رچناتمک پروگرام" میں لکھا ہے :

"نئی دلی کے شاندار محلوں اور غریبوں، چوٹی کا پسینہ ایڑی تک بہانے والوں کی، کال کوٹھریوں کے بیچ کا فرق آزاد بھارت میں ایک دن بھی نہیں رہ سکتا۔ آزاد بھارت میں ایک دن بھی نہیں رہ سکتا۔ آزاد بھارت میں غریبوں کو وہی شکتی حاصل ہوگی جو امیر سے امیر کو۔ اگر امیری کو خوشی خوشی نہ چھوڑا گیا، اگر امیری سے ملنے والی شکتی کو نہ چھوڑا گیا اور پھر سب کی بہتری کے لئے اس کا اپیوگ نہ کیا گیا تو ایک نہ ایک دن اہنساتمک انقلاب ہوکر رہیگا۔"

لیکن شائد ہمارے شاسکوں نے اس سچائی سے منھ پھیر لیا ہے اور سمجھتے ہیں کہ سچائی کی طرف نہ دیکھنا ہی سچائی کو ٹالنا کرنا ہے، نہیں تو 15 اگست جیسے پوتر دن اُن سے اس دعوت میں بیٹھتے بھی نہ بنتا اور انہیں خیال آیا ہوتا کہ یہ ٹیم ٹام تو روز کی ہے۔ کم سے کم آج کے دن تو — برس کے اندر ایک دن تو — کوئی ایسا نیک کام کرلیں جس سے غریب پڑوسی کے بچوں کی روٹی کا کچھ سہارا ہوجائے۔

वक़्त है कि हमारे हाकिम चेतें, समय की पुकार को समझें और उसे पूरा करें. नहीं तो, हिन्दुस्तान की जनता के आगे रास्ता साफ़ है. 15 अगस्त 1947 को इस जनता ने हिन्दुस्तान से अंगरेज़ों को विदा किया. अब किसी दूसरी 15 अगस्त का उसे इंतज़ार है जब वह हिन्दुस्तान से इस अंगरेज़ियत को भी विदा करेगी. तब भारत के शासक देश के ग़रीब मज़दूरों, किसानों और कारीगारों में से निकले हुए वह लोग होंगे जो अंगरेज़ नौकर शाही के भारतीय संस्करन न हो कर जनता के सच्चे सेवक होंगे, जनता को समझेंगे, जनता की तरह सीधे सादे ढंग से रहेंगे. देश का सारा समाजी, माली और राज काजी ढांचा दुनिया के अच्छे से अच्छे प्रगतिशील विचारों से पूरा लाभ उठाते हुए देश की आत्मा के अनुकूल और देश की अच्छी से अच्छी परमपराओं पर मज़बूती से क़ायम होगा.

26. 8. '53 —सुरेश रामभाई

जुर्म और देहाती धन्दे

पिछले महीने, 'रोग कुछ इलाज कुछ' नाम के अपने एक नोट में चोरी डकैती, क़त्ल और भगाए जाने वग़ैरा के बढ़ते हुए जुरमों की कई वजह गिनाते हुए पहली वजह हमने यह बताई थी :

'देहात के उद्योग धन्दों का दिन दूना रात चौगुना बरबाद होना.'

हाल ही में इसका एक नया ज़बरदस्त सबूत हमें मिला. इसी सितम्बर के दूसरे हफ़्ते में हमारा इन्दौर जाना हुआ जो मध्य भारत का सबसे बड़ा नगर है. इन्दौर से पचीस मील की दूरी पर देपालपुर नाम का एक बड़ा क़सबा है. जहां "सहकारी ग्रामोद्योग विकास संघ लिमिटेड" के नाम से एक कोआपरेटिव सोसाइटी कई साल से काम कर रही है. इसके मातहत दरी बुनाई, हड्डी खाद बनाने आदि के काम होते हैं. यह संघ कई बरस से काम कर रहा है. 1951-52 में जब इसका काम ज़ोर शोर से चलता था तो इसमें अस्सी कारीगर काम करते थे. इसका नतीजा यह हुआ कि देपालपुर व आस पास के इलाक़े से चोरी डकैती वग़ैरा जुर्म कम हो गए. हमने जब संघ के काग़ज़ात देखे तो उनमें संघ के सदर के नाम देपालपुर थाने के सब इन्सपेक्टर की एक चिट्ठी मिली जिसमें संघ के काम की खुले दिल से तारीफ़ की गई है.

यह चिट्ठी जो 15 जनवरी 1953 को लिखी गई है सब इन्सपेक्टर साहब कहते हैं :—

"निवेदन है कि आप की संस्था ने देहाती धन्दों का रचनात्मक काम दरी वग़ैरा बनाने व बुनाई व हड्डी खाद

وقت ہے کہ ہمارے حاکم چیتیں، سمے کی پکار کو سمجھیں اور اُسے پورا کریں. نہیں تو، ہندستان کی جنتا کے آگے راستہ صاف ہے. 15 اگست 1947 کو اِس جنتا نے ہندستان سے انگریزوں کو وداع کیا. اب کسی دوسری 15 کا اُسے اِنتظار ہے جب وہ ہندستان سے اِس انگریزیت کو بھی وداع کریگی. تب بھارت کے شاسک دیش کے غریب مزدوروں، کسانوں اور کاریگروں میں سے نکلے ہوئے وہ لوگ ہونگے جو انگریز نوکر شاہی کے بھارتیہ سنسکرن نہ ہوکر جنتا کے سچے سیوک ہونگے، جنتا کو سمجھینگے، جنتا کی طرح سیدھے سادے ڈھنگ سے رہیں گے. دیش کا سارا سماجی، مالی اور راج کاجی ڈھانچہ دنیا کے اچھے سے اچھے پرگتی شیل وچاروں سے پورا لابھ اُٹھاتے ہوئے دیش کی آتما کے انوکول اور دیش کی اچھی سے اچھی پرمپراؤں پر مضبوطی سے قائم ہوگا.

26 . 8 . '53 —سریش رام بھائی

جرم اور دیہاتی دھندے

پچھلے مہینے، 'روگ کچھ علاج کچھ' نام کے اپنے ایک نوٹ میں چوری ڈکیتی، قتل اور بھگائے جانے وغیرہ کے بڑھتے ہوئے جرموں کی کئی وجہ گناتے ہوئے پہلی وجہ ہم نے یہ بتائی تھی :

'دیہات کے اُدیوگ دھندوں کا دن دونا رات چوگنا برباد ہونا.'

حال ہی میں اِسکا ایک نیا زبردست ثبوت ہمیں ملا. اِسی ستمبر کے دوسرے ہفتے میں ہمارا اندور جانا ہوا جو مدھیہ بھارت کا سب سے بڑا نگر ہے. اِندور سے پچیس میل کی دوری پر دیپال پور نام کا ایک بڑا قصبہ ہے. جہاں "سہکاری گرام اُدیوگ وکاس سنگھ لمیٹڈ" کے نام سے ایک کوآپریٹو سوسائٹی کئی سال سے کام کر رہی ہے. اس کے ماتحت دری بنائی، ہڈی کھاد بنانے آدی کے کام ہوتے ہیں. یہ سنگھ کئی برس سے کام کر رہا ہے. 1951-52 میں جب اس کا کام زور شور سے چلتا تھا تو اِس میں اسی کاریگر کام کرتے تھے. اِس کا نتیجہ ہوا کہ دیپال پور و آس پاس کے علاقے سے چوری ڈکیتی وغیرہ جرم کم ہوگئے. ہم نے جب سنگھ کے کاغذات دیکھے تو اُن میں سنگھ کے صدر کے نام دیپال پور تھانے کے سب انسپکٹر کی ایک چٹھی ملی جس میں سنگھ کے کام کی کھلے دل سے تعریف کی گئی ہے.

یہ چٹھی جو 15 جنوری 1953 کو لکھی گئی ہے، سب انسپکٹر صاحب کہتے ہیں :

" نویدن ہے کہ آپ کی سنستھا نے دیہاتی دھندوں کا رچناتمک کام دری وغیرہ بنانے و بنائی و ہڈی کھاد

तैयार करने के और दूसरे काम देपालपुर में शुरू किये हैं जो इस समय मेरी तैनाती के दिनों में चालू हैं.

"इसका साफ़ साफ़ असर यहां के जुरमों पर पड़ा है. इससे बहुत से बेकार आदमी—जिनमें नूरा, शेख़ मुन्नू व फ़ौजदार ख़ां जैसे मशहूर जरायम पेशा हिस्ट्रीशीटर आदमी हैं, जिनका काम चतुराई से प्रजा को लूटना, संध लगाना और चोरियां करना था-एक दम धन्दे से लग गए. जब से आपने इनको काम दिया है इस परगने की चोरियां बहुत कम हो गई हैं और यह कहना चाहिये कि संगीन क़िस्म की चोरी तो बिलकुल ही बन्द हो गई है और यह लोग नेक चलन हो कर सुधर रहे हैं. चोरियां ज़ियादातर बेरोज़गारी व भूके मरने से भी होती थीं. इस संस्था के ज़रिये ज़ियादातर ऐसे ग़रीबों को काम मिला है जो भूकों मरते और चोरियां करते थे. इन्होंने रोज़गार मिलने पर पुराना काम छोड़ दिया. इसी तरह हमारे चौकीदारों को भी आपने काम दिया है जिससे उनकी माली हालत सुधरी. वह थाने से साढ़े सत्रह रुपये तनख़ा पाते थे जिससे पूरी गुज़र नहीं होती थी. वह जल्दी जल्दी एक दो माह में नौकरी छोड़ देते थे, वह अब सब धन्दे से लग गए हैं और नौकरी भी ठीक तौर से करते हैं. जहां तक जुरमों और रिआया की जान माल की हिफ़ाज़त का काम पुलिस के ज़िम्मे है उस काम में आज के उद्योग से बहुत मदद मिली. इस के लिये मैं अपने मय स्टाफ़ के आपका व आपकी संस्था का निहायत शुक्रगुज़ार हूं और आशा करता हूं कि आयन्दा भी इसी तरह काम चालू रख कर आप मदद करते रहेंगे." (लकीरें हमारी) इस चिट्ठी को देखकर हमें बहुत ख़ुशी हुई. हमने संघ के सदर से पूछा कि यह चिट्ठी तो आठ महीने पहले की है अब आठ महीने बाद क्या हालत है. थोड़ी देर तक वह चुप रहे. हमने जब अपना सवाल दोहराया तो उन्होंने दुख के साथ कहा कि "अब हालत बिलकुल बदल गई है, एक हिस्ट्री शीटर ने—जिसे पहले नेक चलनी का इनाम दिया गया था—अब इधर तीन बार चोरियां की हैं और अब उस के नाम वारन्ट है और गांव व पड़ोस में चोरी डकैती, जुर्म ज़ोरों से उभर आए हैं." जब हमने इसका कारन पूछा तो उन्होंने बताया कि "हमारे संघ में पहले जहां अस्सी आदमी धन्दे से लगे थे वहां अब केवल बारह रह गए हैं औरों के लिये हमारे पास काम नहीं है क्योंकि माल तैयार रखा है पर कोई ख़रीदार नहीं है—दरियां पड़ी हैं, हड्डी की खाद पड़ी है, लेने वाला कोई नहीं. सारा पैसा फंस गया और संघ की जान तक ख़तरे में है. ऐसी सूरत में लोगों को काम मिले तो कहां से मिले और फिर वह चोरी न करें तो क्या करें."

ऊपर की चिट्ठी और देपालपुर सहकारी ग्रामोद्योग

تیار کرنے کے اور دوسرے کام دیپال پور میں شروع کئے ہیں جو اس سمے میری تعیناتی کے دنوں میں چالو ہیں۔

"اس کا صاف صاف اثر یہاں کے جرموں پر پڑا ہے۔ اس سے بہت سے بیکار آدمی — جن میں نورا، شیخ منو و فوجدار خاں جیسے مشہور جرائم پیشہ، ہسٹری شیٹر آدمی ہیں، جن کا کام چترائی سے پرجا کو لوٹنا، سیندھ لگانا اور چوریاں کرنا تھا — ایک دم دھندے سے لگ گئے۔ جب سے آپ نے ان کو کام دیا ہے اس پرگنے کی چوریاں بہت کم ہو گئی ہیں اور یہ کہنا چاہئے کہ سنگین قسم کی چوری تو بالکل ہی بند ہو گئی ہے اور یہ لوگ نیک چلن ہو کر سدھر رہے ہیں۔ چوریاں زیادہ تر بے روزگاری و بھوکے مرنے سے بھی ہوتی تھیں۔ اس سنستھا کے ذریعے زیادہ تر ایسے غریبوں کو کام ملا ہے جو بھوکوں مرتے اور چوریاں کرتے تھے۔ انہوں نے روزگار ملنے پر پرانا کام چھوڑ دیا۔ اسی طرح ہمارے چوکیداروں کو بھی آپ نے کام دیا ہے جس سے ان کی مالی حالت سدھری۔ وہ تھانے سے ساڑھے سترہ روپے تنخواہ پاتے تھے جس سے پوری گذر نہیں ہوتی تھی۔ وہ جلدی جلدی ایک دو ماہ میں نوکری چھوڑ دیتے تھے، وہ اب سب دھندے سے لگ گئے ہیں اور نوکری بھی ٹھیک طور سے کرتے ہیں۔ جہاں تک جرموں اور رعایا کی جان مال کی حفاظت کا کام پولیس کے ذمہ ہے اس کام میں آپ کے اس ادیوگ سے بہت مدد ملی۔ اس کے لئے میں اپنے اسٹاف کے آپکا و آپ کی سنستھا کا نہایت شکرگذار ہوں اور آشا کرتا ہوں کہ آئندہ بھی اسی طرح کام چالو رکھ کر آپ مدد کرتے رہیں گے۔" (لکیریں ہماری) اس چٹھی کو دیکھ کر ہمیں بہت خوشی ہوئی۔ ہم نے سنگھ کے صدر سے پوچھا کہ یہ چٹھی تو آٹھ مہینے پہلے کی ہے اب آٹھ مہینے بعد کیا حالت ہے۔ تھوڑی دیر تک وہ چپ رہے۔ ہم نے جب اپنا سوال دوہرایا تو انہوں نے دکھ کے ساتھ کہا کہ "اب حالت بالکل بدل گئی ہے، ایک ہسٹری شیٹر نے — جسے پہلے نیک چلنی کا انعام دیا گیا تھا — اب ادھر تین بار چوریاں کی ہیں اور اب اس کے نام وارنٹ ہے اور گاؤں میں و پڑوس میں چوری ڈکیتی، جرم زوروں سے ابھر آئے ہیں۔" جب ہم نے اس کا کارن پوچھا تو انہوں نے بتایا کہ "ہمارے سنگھ میں پہلے جہاں اسی آدمی دھندے سے لگے تھے وہاں اب کیول بارہ رہ گئے ہیں، اوروں کے لئے ہمارے پاس کام نہیں ہے۔ کیونکہ مال تیار رکھا ہے پر کوئی خریدار نہیں ہے — دریاں پڑی ہیں، ہڈی کی کھاد پڑی ہے، لینے والا کوئی نہیں۔ سارا پیسہ پھنس گیا اور سنگھ کی جان تک خطرہ میں ہے۔ ایسی صورت میں لوگوں کو کام ملے تو کہاں سے ملے اور پھر وہ چوری نہ کریں تو کیا کریں۔"

اوپر کی چٹھی اور دیپال پور سہکاری گرام ادیوگ

विकास संघ के सदर से अपनी बातचीत हम देश के अर्थ शास्त्रियों, व्योपारियों, समाज विशेषज्ञों, अख़बारों के के एडीटरों, पुलिस व इन्डस्ट्री मिनिस्ट्रों, प्लानिंग कमीशन के मेम्बरों, सूबों के मुख्य मंत्रियों, पालियामेन्ट के मेम्बरों और प्रधान मंत्री के आगे पेश करते हैं. अपने देश के हाकिमों और सरपरस्तों से हमारी बिनती है कि इस चिट्ठी की रौशनी में वह हिन्दुस्तान के मौजूदा लोगों को ठीक ठीक पहचानें और फिर उसका सही इलाज तलाश करें. बड़ी बड़ी मशीनों और योजनाओं के फेर में फंस कर हमारे देश में न केवल बेरोज़गारी की नई पौध ही खड़ी हो रही है, पुराने रोज़गार से लगे हुए लोग भी तबाह होते जा रहे हैं. समय है कि देश के समझदार लोग चाहे सरकार में हों या उसके बाहर—ग़लत फ़ैशन के चक्कर में न पड़ कर ज़माने की मांग को—देहाती धन्दों या ग्रामोद्योग की पुकार को—सुनें और देश में फैलते हुए जुरमों और समाज में बढ़ने वाली नाइनसाफ़ी और इनसान इनसान के बीच खड़ी हो जाने वाली दीवारों को ख़तम करें.

18. 9. '53 —सुरेश रामभाई

गिरिराज गोवरधन की पूजा

इस महीने की 2 तारीख़ वाले, लखनऊ के प्रसिद्ध दैनिक 'नेशनल हेरल्ड' में एक तसवीर छपा है जिस में इस सूबे के गवरनर श्री कन्हैया लाल माणिकलाल मुन्शी और उनकी धर्म पत्नी एक पंडित जी के साथ बैठे पूजा कर रहे हैं. तसवीर के नीचे लिखा है कि "पिछली जन्माश्टमी के मौक़े पर (तारीख़ 31 अगस्त को) मथुरा में गिरीराज गोवरधन पर बन महोत्सव का उद्घाटन करने के पहले गवरनर श्री मुन्शी पूजा पर.' तसवीर के ऊपर 'नेशनल हेरल्ड' ने बहुत ही मुनासिब सुर्ख़ी दी है "हमारी सेकुलर स्टेट !" ऐसी बामानी और लाजवाब सुर्ख़ी के लिये हम अपने इस सहयोगी को बधाई देते हैं.

तसवीर के नीचे डेढ़ कालम में 'नेशनल हेरल्ड' ने वह रिपोर्ट छापी है जो इस सिलसिले में उत्तर प्रदेश के सूचना महकमे के संचालक ने उन्हें भेजी. उसमें ज़ियादातर हिस्सा श्री मुन्शी की स्पीच है. हमने ध्यान के साथ उस रिपोर्ट को पढ़ा. श्री मुन्शी की इस बात से हम सहमत हैं कि "राजस्थान की गरम हवाएं और वहां का बढ़ता हुआ रेगिस्तान हमारे सूबे के मथुरा और आगरा ज़िलों को, जो ब्रजभूमि नाम से सरनाम है, तबाह किये डाल रहा है और इस बढ़ाव को रोकने की सख़्त ज़रूरत है." श्री मुन्शी की इस बात से भी हम सहमत हैं कि "आज जो हिन्दुस्तान में जंगलों का रक़बा कुल ज़मीन का 20 फ़ी सदी रह गया है उसे बढ़ा कर 33 पर लाया जाय. इसलिये ज़रूरी है कि ज़ियादा से ज़ियादा पेड़ लगाए जायं." श्री मुन्शी के इस

وکاس سنگھ کے صدر سے اپنی بات چیت ہم دیش کے ارتھ شاستریوں، بیوپاریوں، سماج وشیشگیوں، اخباروں کے ایڈیٹروں، پولس و انڈسٹری منسٹروں، پلاننگ کمیشن کے ممبروں، صوبوں کے مکھیہ منتریوں، پارلیامنٹ کے ممبروں اور پردھان منتری کے آگے پیش کرتے ہیں. اپنے دیش کے حاکموں اور سرپرستوں سے ہماری بنتی ہے کہ اس چٹھی کی روشنی میں وہ ہندستان کے موجودہ لوگ کو ٹھیک ٹھیک پہچانیں اور پھر اس کا صحیح علاج تلاش کریں. بڑی بڑی مشینوں اور یوجناؤں کے پھیر میں پھنس کر ہمارے دیش میں نہ کیول بےروزگاری کی نئی پودھ ہی کھڑی ہو رہی ہے، پرانے روزگار سے لگے ہوئے لوگ بھی تباہ ہوتے جا رہے ہیں. سمے ہے کہ دیش کے سمجھدار لوگ—چاہے سرکار میں ہوں یا اس کے باہر—غلط فیشن کے چکر میں نہ پڑ کر زمانے کی مانگ کو—دیہاتی دھندوں یا گرام اُدیوگ کی پکار کو—سنیں اور دیش میں پھیلتے ہوئے جرموں اور سماج میں بڑھنے والی ناانصافی اور انسان انسان کے بیچ کھڑی ہوجانے والی دیواروں کو ختم کریں.

18. 9. '53 —سریش رام بھائی

گری راج گووردھن کی پوجا

اس مہینے کی 2 تاریخ والے، لکھنؤ کے پرسدھ دینک 'نیشنل ہیرلڈ' میں ایک تصویر چھپی ہے جس میں اس صوبے کے گورنر شری کنھیا لال مانک لال منشی اور اُن کی دھرم پتنی ایک پنڈت جی کے ساتھ بیٹھے پوجا کر رہے ہیں. تصویر کے نیچے لکھا ہے کہ "پچھلی جنماشٹمی کے موقع پر (تاریخ 31 اگست کو) متھرا میں گری راج گووردھن پر ون مہوتسو کا اُدگھاٹن کرنے کے پہلے گورنر شری منشی پوجا پر." تصویر کے اوپر 'نیشنل ہیرلڈ' نے بہت ہی مناسب سرخی دی ہے "ہماری سیکولر اسٹیٹ!" ایسی بامعنی اور لاجواب سرخی کے لئے ہم اپنے اس سہیوگی کو بدھائی دیتے ہیں.

تصویر کے نیچے ڈیڑھ کالم میں 'نیشنل ہیرلڈ' نے وہ رپورٹ چھاپی ہے جو اس سلسلے میں اتر پردیش کے سوچنا محکمے کے سنچالک نے انہیں بھیجی. اس میں زیادہ تر حصہ شری منشی کی اسپیچ ہے. ہم نے دھیان کے ساتھ اس رپورٹ کو پڑھا. شری منشی کی اس بات سے ہم سہمت ہیں کہ "راجستھان کی گرم ہوائیں اور وہاں کا بڑھتا ہوا ریگستان ہمارے صوبے کے متھرا اور آگرہ ضلعوں کو، جو برج بھومی نام سے سرنام ہے، تباہ کئے ڈال رہا ہے اور اس بڑھاؤ کو روکنے کی سخت ضرورت ہے." شری منشی کی اس بات سے بھی ہم سہمت ہیں کہ "آج جو ہندستان میں جنگلوں کا رقبہ کل زمین کا 20 فیصدی رہ گیا ہے اسے بڑھا کر 33 پر لایا جائے. اس لئے ضروری ہے کہ زیادہ سے زیادہ پیڑ لگائے جائیں." شری منشی کے اس

पर इसरार करने से हम इतफ़ाक़ करते हैं और मानते हैं कि इस काम में जनता को पूरा सहयोग देना चाहिये और सरकार को तो चाहिये ही कि कोई कोशिश उठा न रखे.

पर सवाल यही है कि वह कोशिश किस शकल में हो. गवरनर की हैसियत से श्री मुन्शी ने उस मौक़े पर जो स्पीच दी उसके कुछ जुमले हम नीचे देते हैं :

"वन महोत्सव का मालिक (Presiding Diety) श्री कृश्न है क्यों कि श्री कृश्न को जंगल प्यारे थे. वृन्दावन में वह गऊएं चराते थे, कदम बन में गोपियों के साथ खेलते थे और गिरिराज गोवरधन में अपने सखाओं के साथ उन्होंने अपनी जवानी गुज़ारी थी ?

'हम हिन्दुस्तानियों को पेड़ एक पाक चीज़ है.'

'पेड़ लगाने और सींचने से बढ़ कर पूजा का कोई दूसरा रास्ता नहीं हैं."

गवरनर की हैसियत से ही उन्होंने वह पूजा की जिस पर 'नेशनल हेरल्ड' से भी न रहा गया. अगर निजी हैसियत से कोई हिन्दू भाई अपने घर में बैठकर इस तरह की बातें करे और पंडित जी के इशारे पर आचमन आदि करे तो किसी को भी कोई शिकायत नहीं हो सकती. श्री मुन्शी खानगी तौर पर (न कि गवरनर के रंग ढंग, शान और रोब के साथ) अगर गिरि गोवरधन के मन्दिर में या और कहीं पूजा करें किसी को भी कोई शिकायत नहीं हो सकती. पर गवरनर बन कर और आम जनता के ख़रचे पर इस तरह पूजा करना और ऐसी बातें करना किस शासक को शोभा दे सकता है ? जब कि उसकी पूजा में पेड़ पत्थरों की पूजा करने वाले और पूजा नहीं करने वाले, श्री कृश्न को अवतार मानने वाले और नहीं मानने वाले, ईश्वर या ख़ुदा में यक़ीन रखने वाले और नहीं रखने वाले सभी तरह के लोग शामिल हैं ? हमें नहीं मालूम कि सखाओं के साथ जवानी गुज़ारने की या गोपियों के साथ खेलने का या चुरा चुरा कर मक्खन खाने का आदर्श गवरनर साहब हमारे आज के नौजवानों के आगे बनाए रखना चाहते हैं या नहीं.

न हमें यही मालूम कि गवरनर साहब की निगाह में पेड़ अगर पाक हैं तो क्या आदमी से भी ज़ियादा पाक हैं. और न यही मालूम कि भगवान की पूजा करने के लिये गवरनर साहब पेड़ लगवाना ज़ियादा अच्छा मानते हैं या सिर का पसीना चोटी तक बहा कर मेहनत की कमाई खाना.

गवरनर श्री मुन्शी जैसे इतिहास के जानकार यह ज़रूर जानते होंगे कि हिन्दुस्तान के घरों में तुलसी की पूजा लगातार होती रही है और होती है, पीपल के पेड़ के आगे यहां के लोग हाथ जोड़ते रहे हैं और अब भी जोड़ते हैं, श्री कृष्न का जन्म दिन मनाते रहे हैं और अब भी हर शहर और हर गांव में मनाते हैं. लेकिन फिर भी हमारा

اسرار کرنے سے ہم اتفاق کرتے ہیں اور مانتے ہیں کہ اس کام میں جنتا کو پورا سہیوگ دینا چاہئیے اور سرکار کو تو چاہئیے ہی کہ کوئی کوشش اُٹھا نہ رکھے.

پر سوال یہی ہے کہ وہ کوشش کس شکل میں ہو. گورنر کی حیثیت سے شری منشی نے اس موقعے پر جو سپیچ دی اس کے کچھ جملے ہم نیچے دیتے ہیں :

"ون مہوتسو کا مالک (Presiding Diety) شری کرشن ہے کیونکہ شری کرشن کو جنگل پیارے تھے. برندا ون میں وہ گوئیں چراتے تھے، کدم بن میں گوپیوں کے ساتھ کھیلتے تھے اور گری راج گوردھن میں اپنے سکھاؤں کے ساتھ انہوں نے اپنی جوانی گذاری تھی؟

'ہم ہندستانیوں کو پیڑ ایک پاک چیز ہے.'

'پیڑ لگانے اور سینچنے سے بڑھکر پوجا کا کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے."

گورنر کی حیثیت سے ہی انہوں نے وہ پوجا کی جس پر 'نیشنل ہیرالڈ' سے بھی نہ رہا گیا. اگر نجی حیثیت سے کوئی ہندو بھائی اپنے گھر میں بیٹھ کر اس طرح کی باتیں کرے اور پنڈت جی کے اشارہ پر آچمن آدی کرے تو کسی کو بھی کوئی شکایت نہیں ہو سکتی. شری منشی خانگی طور پر (نہ کہ گورنر کے رنگ ڈھنگ، شان اور رعب کے ساتھ) اگر گری گووردھن کے مندر میں یا اور کہیں پوجا کریں کسی کو بھی کوئی شکایت نہیں ہو سکتی. پر گورنر بن کر اور عام جنتا کے خرچہ پر اس طرح پوجا کرنا اور ایسی باتیں کرنا کس شاسک کو شوبھا دے سکتا ہے؟ جب کہ اسکی پوجا میں پیڑ پتھروں کی پوجا کرنے والے اور پوجا نہیں کرنے والے، شری کرشن کو اوتار ماننے والے اور نہیں ماننے والے، ایشور یا خدا میں یقین رکھنے والے اور نہیں رکھنے والے سبھی طرح کے لوگ شامل ہیں؟ ہمیں نہیں معلوم کہ سکھاؤں کے ساتھ جوانی گذارنے کی یا گوپیوں کے ساتھ کھیلنے کا یا چرا چرا کر مکھن کھانے کا آدرش گورنر صاحب ہمارے آج کے نوجوانوں کے آگے بنائے رکھنا چاہتے ہیں یا نہیں.

نہ ہمیں یہی معلوم کہ گورنر صاحب کی نگاہ میں پیڑ اگر پاک ہیں تو کیا آدمی سے بھی زیادہ پاک ہیں. اور نہ یہی معلوم کہ بھگوان کی پوجا کرنے کے لئیے گورنر صاحب پیڑ لگوانا زیادہ اچھا مانتے ہیں یا سر کا پسینہ چوٹی تک بہاکر محنت کی کمائی کھانا.

گورنر شری منشی جیسے اِتہاس کے جانکار یہ ضرور جانتے ہونگے کہ ہندستان کے گھروں میں تلسی کی پوجا لگاتار ہوتی رہی ہے اور ہوتی ہے، پیپل کے پیڑ کے آگے یہاں کے لوگ ہاتھ جوڑتے رہے ہیں اور اب بھی جوڑتے ہیں، شری کرشن کا جنم دن مناتے رہے ہیں اور اب بھی ہر شہر اور ہر گاؤں میں مناتے ہیں. لیکن پھر بھی ہمارا

देश गुलाम हो गया, हमारे जंगल कट कर ग़ायब हो गए, हमारे यहां दूध घी ला पता हो गया और हम इनसानियत से गिर गए? क्यों—सिर्फ़ इस वजह से कि हमने धर्म रूपी नारयल के ऊपरी खोपरे को तो पकड़ लिया मगर अन्दर की असली गरी पर कोई ध्यान नहीं दिया. अफ़सोस इस बात का है कि गवरनर श्री मुन्शी ने वैसा ही किया.

गवरनर मुन्शी जैसे लोगों को समझना चाहिये कि हमारे गाय बैलों, जंगलों और गांवों की तबाही का असली कारन बहुत से वह बड़े बड़े कारख़ाने हैं जहां खालें पकती और जूते बनते हैं, जहां मशीनों से तेल पेरा जाता और बनस्पती बनता है, वह बड़े बड़े पुतली घर हैं जिन्होंने करोड़ों कारीगरों को बरबाद कर दिया, वह बड़े ट्रैक्टर और अमरीकी खाद और ट्यूब वैल है जो जमीन को बरबाद करते और तालाबों, कुवों को सुखा देते हैं, वह फ़ौजें हैं जो जंगलों को जला डालती हैं. आज देश में जो निज़ाम हकूमत चल रहा है उसके अनुसार गाय बैल और जंगलों की जरूरत ही नहीं रह जाती. बनावटी खाद, बनावटी घी, बनावटी चावल वग़ैरा के आगे गोबर या देशी घी या अपने धान को कौन पूछे! इस नई तहज़ीब में क्या गांव, क्या गाय, क्या जंगल, सभी बे-मानी हैं और वैलफ़ेयर स्टेट के लिये मानो रुकावट हैं! इसलिये अगर गवरनर मुन्शी सचमुच यह चाहते हैं कि यहां के गांव, गाय और जंगल फूले फलें तो उन्हें अपनी हकूमत का तर्ज़ बदलना होगा और उसका मुंह पच्छिम से हटा कर पूरब की तरफ़ मोड़ना पड़ेगा. अगर ऐसा नहीं किया जाता तो जंगल सूखते जायंगे, राजस्थान का रेगिस्तान बढ़ता चला आएगा और गिरि गोवरधन की पूजा पाधा पुरोहितों द्वारा सीधे सादे बेगुनाहों को मूंडने लूटने का ज़रिये बनी रहेगी.

हमारे दिलों और दिमाग़ों के कोनों में अकसर कई इस तरह की इच्छाएं और भावनाएं छिपी दबी पड़ी रहती हैं जिनसे कभी कभी हम ख़ुद भी परिचित नहीं होते. हमें डर है कि सोमनाथ के बड़प्पन को फिर से क़ायम करना और उसके झूटे या सच्चे इतिहास को ताज़ा रखना, काशी में दो दो सौ ब्राह्मनों के पैर धोना और उन्हें दच्छिना देना, और इसी तरह गिरि गोवरधन की पूजा करना जैसे कामों के पीछे न भारत की जनता के सच्चे हित की चिन्ताइ तनी प्रबल होती है और न हिन्दू धर्म में श्रद्धा इतनी गहरी होती है जितनी यह चिन्ता और यह इच्छा कि भारत सरकार का सेकुलर पन किसी तरह बदले और भारत एक हिन्दू साम्प्रदायक राज दिखाई देने लगे. अगर हमारा यह शक किसी अंश में भी ठीक है—और हमें यक़ीन है कि है—तो इसमें शुबा नहीं कि यह हम सब के लिये बड़ी ही लज्जा और दुख की चीज़ है. सामप्रदायिकता का यह भूत हमें कब तक चिपटा रहेगा!

23. 9. '53

—सुरेश रामभाई

دیش غلام ہوگیا، ہمارے جنگل کٹ کر غائب ہوگئے، یہاں دودھ گھی لاپتہ ہوگیا اور ہم اِنسانیت سے گرگئے؟ کیوں—صرف اِس وجہ سے کہ ہم نے دھرم روپی ناریل کے اُوپری کھوپرے کو تو پکڑ لیا مگر اندر کی اصلی گری پر کوئی دھیان نہیں دیا. افسوس اِس بات کا ہے کہ گورنر شری منشی نے ویسا ہی کیا.

گورنر منشی جیسے لوگوں کو سمجھنا چاہئے کہ ہمارے گائے بیلوں، جنگلوں اور گاؤں کی تباہی کا اصلی کارن بہت سے وہ بڑے بڑے کارخانے ہیں جہاں کھالیں پکتی اور جوتے بنتے ہیں، جہاں مشینوں سے تیل پیرا جاتا اور بنسپتی بنتا ہے، وہ بڑے بڑے پتلی گھر ہیں جنھوں نے کروڑوں کاریگروں کو برباد کردیا، وہ بڑے ٹریکٹر اور امریکی کھاد اور ٹیوب ویل ہیں جو زمین کو برباد کرتے اور تالابوں، کنوؤں کو سکھا دیتے ہیں، وہ فوجیں ہیں جو جنگلوں کو جلا ڈالتی ہیں. آج دیش میں جو نظام حکومت چل رہا ہے اُس کے انوسار گائے بیل اور جنگلوں کی ضرورت ہی نہیں رہ جاتی. بناوٹی کھاد، بناوٹی گھی، بناوٹی چاول وغیرہ کے آگے گوبر یا دیشی گھی یا اپنے دھان کو کون پوچھے! اِس نئی تہذیب کیا گاؤں، کیا گائے کیا جنگل، سبھی بے معنی ہیں اور ویل فیئر اِسٹیٹ کے لئے مانو رکاوٹ ہیں! اس لئے اگر گورنر منشی سچ مچ یہ چاہتے ہیں کہ یہاں کے گاؤں، گائے اور جنگل پھولے پھلیں تو اُنہیں اپنی حکومت کا طرز بدلنا ہوگا اور اُس کا منہ پچھم سے ہٹاکر پورب کی طرف موڑنا پڑیگا. اگر ایسا نہیں کیا جاتا تو جنگل سوکھتے جائینگے، راجستھان کا ریگستان بڑھتا چلا آئیگا اور گری گووردھن کی پوجا پادھا پروہتوں دوارا سیدھے سادے بےگناہوں کو مونڈنے لوٹنے کا ذریعہ بنی رہیگی.

ہمارے دلوں اور دماغوں کے کونوں میں اکثر کئی اِس طرح کی اچھائیں اور بھاونائیں چھپی دبی پڑی رہتی ہیں جن سے کبھی کبھی ہم خود بھی پرچت نہیں ہوتے. ہمیں ڈر ہے کہ سومناتھ کے بڑپن کو پھر سے قائم کرنا اور اُس کے جھوٹے یا سچے اِتہاس کو تازہ رکھنا، کاشی میں دو دو سو براہمنوں کے پیر دھونا اور اُنہیں دکچھنا دینا، اور اِسی طرح گری گووردھن کی پوجا کرنا جیسے کاموں کے پیچھے نہ بھارت کی جنتا کے سچے ہت کی چنتا اِتنی پربل ہوتی ہے اور نہ ہندو دھرم میں شردھا اِتنی گہری ہوتی ہے جتنی یہ چنتا اور یہ اچھا کہ بھارت سرکار کا سیکولر پن کسی طرح بدلے اور بھارت ایک ہندو سامپردائک راج دیکھائی دینے لگے. اگر ہمارا یہ شک کسی انش میں بھی ٹھیک ہے—اور ہمیں یقین ہے کہ ہے—تو اِس میں شبہ نہیں کہ یہ ہم سب کے لئے بڑی ہی لجا اور دکھ کی چیز ہے. سامپردائکتا کا یہ بھوت ہمیں کب تک چپٹا رہیگا!

23. 9. '53

—سریش رام بھائی

हिन्दुस्तानी कलचर सासाइटी की किताबें

पचास रुपए से जियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी जरूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

هندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائےگی ۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا ۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا ۔ 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے ۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے ۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اس کا مقصد کیا ہے ۔

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا ۔ یہ دوسرا ایڈیشن ہے ۔ صفحے 25، دام کیول دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—
مینیجر، 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج' الہ آباد،

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़लामी, अन्याय और लूट ख़सोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے ' فراق '

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے ۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سمیت نہیں ہے' اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی ۔ غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی ۔

" اِن کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں... سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے... "

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں ۔ "

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں ۔ "

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے ۔ "

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوتر کے قائل ہیں ۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے ۔ کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے ۔ "

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے ۔ " —' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا ۔ سندر جلد' بڑھیا کاغذ ۔ عمدہ چھپائی ۔ دام صرف تین روپیہ ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن ۔

ملنے کا پتہ—
مینیجر ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ آباد ۔

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुशों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

"उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

———

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैंजनेर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواھر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ھے اور کہانی بھی. ھمارے دیش میں یہ پرانا رواج رھا ھے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ھیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ھوتی ھیں. بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ھیں، اپنی اِس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ھے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ھے. ھندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ھے. اس میں کہانی کا رس بھی ھے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی.

پنڈت جواھر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ھے—

"اُنھوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ھے. وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ھی مہتو کی اور پیاری چیز ھے.....مجھے خوشی ھے کہ یہ کتاب لکھی گئی ھے."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

———

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ھندی اُردو اور ھندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ھر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ھوگا—سوچنے کی راھیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ھند'

145 مٹھی گنج، الہ آباد.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े..."

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے.

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ.

---

700 PAGES,
32 ILLUSTRATION
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE
Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing aud authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment. **—National Herald, Lucknow.**

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known. **—Leader, Allahabad.**

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China. **—Blitz, Bombay.**

A mine of informatiou which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it. **—Bharat Jyoti, Bombay**

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs. **—Indian Express, Madras**

Cnina Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs. **—Vigil, Delhi.**

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—
مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج الٰہ آباد.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 45, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے [کانگ]ریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی [تج]ویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور [اسک]ی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی [سو]ختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے [دی]ش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں.

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری [ہے]. 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت [ص]رف دو روپئے.

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک--شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا [ک]ہ مہاتما گاندھی کیا چاھتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے [پ]ر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا [ج]ا سکتا ہے.

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے.

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں [ک]ی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے [د]یکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی [کو]شش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں [ن]ے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں [ر]ہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی [ک]وشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے. قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے.

ملنے کا پتہ—
منیجر، 'نیا ہند' 145، متھی گنج، الہ آباد

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइ उन का दर्दनाक आंखों देखा वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے.

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ.

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے.

سو صفحے کی کتاب. قیمت صرف بارہ آنے.

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا.

قیمت بارہ آنے.

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن. اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں. قیمت چار آنے.

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے. قیمت صرف دو آنے.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج اِلہ آباد.

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें

ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں .

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुख़न	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنس مرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنھ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنھیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشت، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانو
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलौना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

क़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना ौर प्रचार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों ग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, क्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में ापस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; इस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल क़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; क्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद लेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० र, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम न्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम काश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी ी फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया न्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से म्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई ताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ़यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम रा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:○:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़तम हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्बरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपी. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا.
دیش نے اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہو گیا.
دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ
اب ہی ممکن ہو سکا ہے.

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے
ساتھ دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی
قیمتی رائے اور سجھاؤں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے.
نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں
پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار
نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے.

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے
بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت
محمد کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی--ایک
ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون
کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلیگا
کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے
دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ
ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو
جنم دیا.

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی
کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائینگے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی. 160
صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام
صرف تین روپیہ.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 15 अक्तूबर, सन '53 नम्बर 4

نمبر 4 اکتوبر، سن '53 جلد 15

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर— सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

* * * * *

इस नम्बर के खास लेख

हमारी राय

اس نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے

...तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ...ستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

अक्तूबर 1953 اکتوبر

क़ीमत एक आना قیمت ایک آنہ

सफ़ा صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
नया हिन्द
145, मुट्ठीगंज इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 15 अक्तूबर, सन '53 नम्बर 4

جلد 15 اکتوبر، سن '53 نمبر 4

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

बापू की क़ुरबानी

(प्रेम धवन)

धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
भूल नहीं सकती है दुनिया तेरी अमर कहानी
हम सब तेरे क़ातिल हैं, हम ख़ूनी तेरे बापू
दाग़ कभी यह धो न सकेंगे सारी क़ौम के आंसू
पाप कभी यह धो न सकेगा गंगा का भी पानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
यह तेरा ही ख़ून नहीं है, यह ख़ून है मानवता का
ख़ून अमन का, आज़ादी का, दुखियारी जनता का
सब की आंख में आंसू हैं सब के मुख पर वीरानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
तू अंधियारे भारत में उजियाला ले कर आया
घर घर जाकर तू ने आज़ादी का दीप जलाया
तुझ से हमने अपनी यह क़ीमत पहचानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
तू ने सीना तान के शाही ताक़त को ललकारा
'छोड़ो भारत' 'छोड़ो भारत' गूंजा तेरा नारा
जेलों में बन गई बुढ़ापा तेरी वीर जवानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
तेरी क़ीमत पूछे कोई आज नोआखाली से
कैसा फूल है टूटा अपने गुलशन की डाली से
तू ने सब का दुख सुख बांटा, सब की पीड़ा जानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
जलती आग में तूने फूट की आग बुझाई
अपनी जान गंवा के लाखों की है जान बचाई
आख़िर सच की जीत हुई, और हार झूट ने मानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
अमर रहेगा अमर रहेगा, मौत से जो लड़ता है
आज़ादी के नाम पे मरने वाला कब मरता है
जब तक दुनिया है गूंजेगी तेरी अमृत बानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी

باپو کی قربانی

(پریم دھون)

دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
بھول نہیں سکتی ہے دنیا تیری امر کہانی
ہم سب تیرے قاتل ہیں، ہم خونی تیرے باپو
داغ کبھی یہ دھو نہ سکیں گے ساری قوم کے آنسو
پاپ کبھی یہ دھو نہ سکے گا گنگا کا بھی پانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
یہ تیرا ہی خون نہیں ہے، یہ خون ہے مانوتا کا
خون امن کا، آزادی کا، دکھیاری جنتا کا
سبکی آنکھ میں آنسو ہیں سب کے مکھ پر ویرانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
تو اندھیارے بھارت میں اُجیالا لے کر آیا
گھر گھر جا کر تونے آزادی کا دیپ جلایا
تجھ سے ہم نے اپنی یہ قیمت پہچانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
تو نے سینہ تان کے شاہی طاقت کو للکارا
'چھوڑو بھارت' 'چھوڑو بھارت' گونجا تیرا نارا
جیلوں میں بن گئی بڑھاپا تیری ویر جوانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
تیری قیمت پوچھے کوئی آج نواکھالی سے
کیسا پھول ہے ٹوٹا اپنے گلشن کی ڈالی سے
تونے سب کا دکھ سکھ بانٹا، سب کی پیڑا جانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
جلتی آگ میں تونے پھوٹ کی آگ بجھائی
اپنی جان گنوا کے لاکھوں کی ہے جان بچائی
آخر سچ کی جیت ہوئی، اور ہار جھوٹ نے مانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
امر رہیگا امر رہیگا، موت سے جو لڑتا ہے
آزادی کے نام پہ مرنے والا کب مرتا ہے
جب تک دنیا ہے گونجیگی تیری امرت بانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی

पुन और पाप

(डाक्टर भगवानदास)

ईसाई धर्म में 'सात अमर अच्छाइयां' यानी सात ख़ास पुन के काम गिनाए गए हैं. वह सात यह हैं :—श्रद्धा यानी एतक़ाद, उम्मीद, दया और रवादारी, इनसाफ़, समझदारी, बुरी चीज़ों से परहेज़ और धीरज. वेदान्त में छै साधन बताए गए हैं. साधन का मतलब है वह बातें जो आदमी को ऊपर उठने में मदद दें. वह छै यह हैं. एक दया भरी शान्ति, दूसरे अपने ऊपर क़ाबू रख कर बुराइयों से बचना, तीसरे वैराग यानी बेलाग रहना, चौथे बर्दाश्त सब्र या धीरज, पांचवें श्रद्धा और छटे सब से मेल रखते हुए एकाग्रता यानी यकसुई. ईसाई धर्म में सात घातक पाप माने जाते हैं. वह यह हैं :—ग़रूर, लालच, शहवत यानी काम, ग़ुस्सा, बहुत खाना, हसद यानी ईर्षा और क़ाहिली. वेदान्त में आदमी के छै दुश्मन गिनाए गए हैं. वह छै यह हैं:-काम यानी शहवत, क्रोध यानी ग़ुस्सा, लोभ, मोह, घमंड और हसद यानी दूसरों से जलन. मोह के अन्दर ज़ियादा खाना, सुस्ती और डर तीनों शामिल हैं.

मौलाना रूम ने आज से सात सौ बरस पहले इन सात या छै बुराइयों की जगह दो गुनाह सब गुनाहों की जड़ बताए हैं. उनका कहना है कि :—"ख़श्म और शहवत यानी क्रोध और काम आदमी को अन्धा कर देते हैं और उसकी रूह को सीधे रास्ते से भटका कर ग़लत रास्ते पर ले जाते हैं."

श्री कृश्न ने गीता में आज से पांच हज़ार बरस पहले कहा था कि :—"राग और द्वेष यानी कुछ चीज़ों से बेजा लगाव और कुछ चीज़ों से बेजा अलगाव आदमी के तरक़्क़ी के रास्ते की सब से बड़ी रुकावटें हैं." एक दूसरी जगह गीता में कहा गया है :—"काम और क्रोध ही इस दुनिया में आदमी के सब से बड़े दुश्मन हैं." श्री कृश्न के शब्द और मौलाना रूम के शब्द दोनों एक दूसरे की गूंज मालूम होते हैं.

योग शास्त्र के मुताबिक़ अहंकार यानी ख़ुदी ही इन सब बुराइयों और पापों की जड़ है. काम और क्रोध दोनों इसी से पैदा होते हैं. अहंकार की जड़ अविद्या है. अविद्या उस वहम या धोके को कहते हैं कि यह हाड़ मांस का छोटा सा जिस्म ही मैं हूं और मैं और दूसरे सब अलग अलग हैं और हम सब का असल असलियत यानी हक़ से अलहदा कोई अलग वजूद है. हमारे इस वहम या अविद्या से ही हमारी सब बुराइयां पैदा होती हैं. यह अविद्या ही

پن اور پاپ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

عیسائی دھرم میں 'سات امر اچھائیاں' یعنی سات خاص پن کے کام گنائے گئے ہیں. وہ سات یہ ہیں:—شردھا یعنی اعتقاد، اُمید، دیا اور رواداری، انصاف، سمجھداری، بُری چیزوں سے پرہیز اور دھیرج. ویدانت میں چھ سادھن بتائے گئے ہیں. سادھن کا مطلب ہے وہ باتیں جو آدمی کو اوپر اُٹھنے میں مدد دیں. وہ چھ یہ ہیں. ایک دیا بھری شانتی، دوسرے اپنے اوپر قابو رکھکر برائیوں سے بچنا، تیسرے ویراگ یعنی بےلاگ رہنا، چوتھے برداشت صبر یا دھیرج، پانچویں شردھا اور چھٹے سب سے میل رکھتے ہوئے ایکاگرتا یعنی یکسوئی. عیسائی دھرم میں سات گھاتک پاپ مانے جاتے ہیں وہ یہ ہیں:— غرور، لالچ، شہوت یعنی کام، غصہ، بہت کھانا، حسد یعنی ایرشا اور کاہلی. ویدانت میں آدمی کے چھ دشمن گنائے گئے ہیں. وہ چھ یہ ہیں:—کام یعنی شہوت، کرودھ یعنی غصہ، لوبھ، موہ، گھمنڈ اور حسد یعنی دوسروں سے جلن. موہ کے اندر زیادہ کھانا، سستی اور ڈر تینوں شامل ہیں.

مولانا روم نے آج سے سات سو برس پہلے اِن سات یا چھ برائیوں کی جگہ دو گناہ سب گناہوں کی جڑ بتائے ہیں. اُن کا کہنا ہے کہ :—"خشم اور شہوت یعنی کرودھ اور کام آدمی کو اندھا کر دیتے ہیں اور اُس کی روح کو سیدھے راستے سے بھٹکا کر غلط راستے پر لے جاتے ہیں."

شری کرشن نے گیتا میں آج سے پانچ ہزار برس پہلے کہا تھا کہ :—"راگ اور دویش یعنی کچھ چیزوں سے بیجا لگاؤ اور کچھ چیزوں سے بیجا الگاؤ آدمی کی ترقی کے راستے کی سب سے بڑی رکاوٹیں ہیں." ایک دوسری جگہ گیتا میں کہا گیا ہے :—"کام اور کرودھ ہی اِس دنیا میں آدمی کے سب سے بڑے دشمن ہیں." شری کرشن کے شبد اور مولانا روم کے شبد دونوں ایک دوسرے کی گونج معلوم ہوتے ہیں.

یوگ شاستر کے مطابق اہنکار یعنی خودی ہی اِن سب برائیوں اور پاپوں کی جڑ ہے. کام اور کرودھ دونوں اِسی سے پیدا ہوتے ہیں. اہنکار کی جڑ اَودیا ہے. اودیا اُس وہم یا دھوکے کو کہتے ہیں کہ یہ ہاڑ مانس کا چھوٹا سا جسم ہی میں ہوں اور میں اور دوسرے سب الگ الگ ہیں اور ہم سب کا اصل اصلیت یعنی حق سے علیحدہ کوئی الگ وجود ہے. ہمارے اِس وہم یا اَودیا سے ہی ہماری سب برائیاں پیدا ہوتی ہیں. یہ اَودیا ہی

असली कुफ़्र है. सूफ़ियों के मुताबिक़ कुफ़्र के भी अलग अलग दरजे हैं. शरीअत के मैदान में गुनाह में फंसना ही कुफ़्र या शिर्क है. तरीक़त के मैदान में दुनिया से मोहब्बत करना कुफ़्र या शिर्क है. हक़ीक़त के मैदान में ग़ैर यानी मा सिवा अल्लाह के ? वजूद को मानना ही कुफ़्र और शिर्क है. इसीलिये सूफ़ी किताब गुलशने राज़ में लिखा है : —

कि रा कुफ़्र हक़ीक़ी शुद पदीदार
ज़ इसलामे मजाज़ी गश्त बेज़ार.

यानी जिस किसी ने असली कुफ़्र को समझ लिया वह फिर इस इसलाम मजाज़ी से बेज़ार यानी अलग हो गया.

इसलाम मजाज़ी से मतलब ऊपर के इसलाम यानी रीत रिवाज के इसलाम से है. असल इसलाम अपनी ख़ुदी को मिटाता है. इसीलिये एक सूफ़ी ने कहा है :—

नमाज़े ज़ाहिदां क़दो सिजूद अस्त—
नमाज़े आशिक़ां तरके वजूद अस्त

यानी ज़ाहिद यानी रीत रिवाज में फंसे हुए मुसलमानों की नमाज़ कभी सीधे खड़े होना और कभी सजदे में झुकना है जो नमाज़ में किया जाता है और आशिक़ों यानी प्रेमियों की नमाज़ अपनी ख़ुदी यानी अहंकार को मिटाना है.

ब्रह्म माया के यानी ख़ुदा से ख़ुदी के असर में आ कर ही जीव यानी एक अलग वजूद हो जाता है. परमात्मा ही अविद्या के असर से जीव आत्मा दिखाई देने लगता है. आज़ाद असीर हो जाता है. इसी लिये फ़रिश्ते और शैतान के मेल का नाम इनसान है हममें से हर एक को अपने अन्दर फ़रिश्ता और शैतान दोनों एक साथ दिखाई दे सकते हैं. वही चेहरा कभी मुसकराता है और कभी ग़ुर्राता है. एक सूफ़ी ने कहा है कि :—

"दरिन्दों से भी तुझे हिस्सा मिला है और फ़रिश्तों से भी. दरिन्दों की हद से निकल जा तो तू फ़रिश्तों की भी हद से ऊपर उठ जायगा."

यही बात गीता में दूसरी तरह कही गई है.

अंगरेज़ शायर टेनीसन ने कहा है :—"हम अपनी छोटी छोटी ख़ुदियों को मार कर उनकी सीढ़ी बना कर धीरे धीरे ऊपर की रूहानी मनज़िलों तक पहुंच सकते हैं."

यह अहंकार या ख़ुदी अपने को तीन शक्लों में ज़ाहिर करती है. यह तीन ख़ाहिशें हैं. वेदान्त में इनके नाम हैं. एक 'स्याम' यानी मैं हमेशा रहूं, दूसरे 'बहू-स्याम' यानी मैं बहुत होजाऊं, तीसरे 'बहुधा स्याम' यानी मैं बहुत तरह हो जाऊं. वेदान्त में ही इनके नाम लोकेशना, वतेशना और दारेशना भी हैं. बोद्ध धर्म में इन्हें भू-तृश्ना, विभू-तृश्ना और काम तृश्ना कहा गया है. जैन धर्म में इन्हें आहार संज्ञा, परिग्रह संज्ञा और मैथुन संज्ञा कहते हैं. सूफ़ी लोग इसी को ज़मीन, ज़र और ज़न की

اصلی کفر ہے . صوفیوں کے مطابق کفر کے بھی الگ الگ درجے ہیں . شریعت کے میدان میں گناہ میں پھنسنا ہی کفر یا شرک ہے . طریقت کے میدان میں دنیا سے محبت کرنا کفر یا شرک ہے . حقیقت کے میدان میں غیر یعنی ماسوا اللہ کے ؟ وجود کو ماننا ہی کفر اور شرک ہے . اسی لئے صوفی کتاب گلشن راز میں لکھا ہے :—

کہ را کفر حقیقی شد پدیدار
ز اسلام مجازی گشت بیزار

یعنی جس کسی نے اصلی کفر کو سمجھ لیا وہ پھر اس اسلام مجازی سے بیزار یعنی الگ ہوگیا ہے .

اسلام مجازی سے مطلب اوپر کے اسلام یعنی ریت رواج کے اسلام سے ہے . اصل اسلام اپنی خودی کو مٹاتا ہے . اسی لئے ایک صوفی نے کہا ہے :—

نماز زاہداں قدو سجود است
نماز عاشقاں ترک وجود است

یعنی زاہد یعنی ریت رواج میں پھنسے ہوئے مسلمانوں کی نماز کبھی سیدھے کھڑے ہونا اور کبھی سجدے میں جھکنا ہے جو نماز میں کیا جاتا ہے اور عاشقوں یعنی پریمیوں کی نماز اپنی خودی یعنی اہنکار کو مٹانا ہے .

برہم مایا کے یعنی خدا سے خودی کے اثر میں آکر ہی جیو یعنی ایک الگ وجود ہو جاتا ہے . پرماتما ہی اودیا کے اثر سے جیو آتما دکھائی دینے لگتا ہے . آزاد اسیر ہو جاتا ہے . اسی لئے فرشتے اور شیطان کے میل کا نام انسان ہے . ہم میں سے ہر ایک کو اپنے اندر فرشتہ اور شیطان دونوں ایک ساتھ دکھائی دے سکتے ہیں . وہی چہرہ کبھی مسکراتا ہے اور کبھی غراتا ہے . ایک صوفی نے کہا ہے کہ :—

"درندوں سے بھی تجھے حصہ ملا ہے اور فرشتوں سے بھی . درندوں کی حد سے نکل جا تو تو فرشتوں کی بھی حد سے اوپر اٹھ جائے گا ."

یہی بات گیتا میں دوسری طرح کہی گئی ہے .

انگریز شاعر ٹینی سن نے کہا ہے :—"ہم اپنی چھوٹی چھوٹی خودیوں کو مار کر ان کی سیڑھی بناکر دھیرے دھیرے اوپر کی روحانی منزلوں تک پہنچ سکتے ہیں ."

یہ اہنکار یا خودی اپنے کو تین شکلوں میں ظاہر کرتی ہے . یہ تین خواہشیں ہیں . ویدانت میں ان کے نام ہیں . ایک 'سیام' یعنی میں ہمیشہ رہوں' دوسرے 'بہو سیام' یعنی میں بہت ہوجاؤں' تیسرے 'بہودھا سیام' یعنی میں بہت طرح ہوجاؤں . ویدانت میں ہی ان کے نام لوکیشنا' وتیشنا اور داریشنا' بھی ہیں . بودھ دھرم میں انہیں بھوترشنا' وبھو ترشنا اور کام ترشنا کہا گیا ہے . جین دھرم میں انہیں آہار سنگیا' پری گرہ سنگیا' اور میتھن سنگیا کہتے ہیں . صوفی لوگ اسی کو زمین' زر اور زن کی

ख़्वाहिश कहते हैं. इन्हीं को आहार इच्छा, धन इच्छा और रति इच्छा भी कहा जाता है. इन्हीं से क़ानून, मिलकियत और शादी का जन्म होता है. इनमें से हर एक के अच्छे और परोपकारी पहलू भी हैं. इन्हें अहिन्सा, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य कहा जाता है. सूफ़ी इन्हें तर्क ईज़ा रसानी, तर्क दौलत और तर्क शहवत कहते हैं. सत् यानी हक़ इन सबके ऊपर है.

जिस तरह अहंकार यानी ख़ुदी से सब बुराइयां पैदा होती हैं उसी तरह निरअहंकारता यानी असली बेख़ुदी से सब भलाइयां पैदा होती हैं. हज़रत ईसा ने कहा है :— "अपने पूरे दिल से ईश्वर से प्यार कर." उन्होंने यह भी कहा है :—"अपने पड़ोसी से उसी तरह प्यार कर जैसा अपने साथ." वजह साफ़ है. ईश्वर ही हमारे अन्दर की असल हक़ीक़त है और वही हमारे पड़ोसी के अन्दर की हक़ीक़त है. इसलिये असलियत दोनों की एक ही है.

जिस तरह ख़ुदी से काम और क्रोध पैदा होते हैं उसी तरह सच्ची बेख़ुदी से भक्ति यानी इश्क़े हक़ीक़ी और करुना यानी रहम पैदा होते हैं. एक हमें अविद्या और जहालत की तरफ़ ले जाता है और दूसरा विद्या यानी इरफ़ान की तरफ़. वेदान्त के मुताबिक़ अविद्या की ख़ास शकलें आवरन और विक्षेप हैं. इन्हीं दोनों को सूफ़ी हिजाब और ईज़ा कहते हैं. विद्या यानी इरफ़ान से ही काम और क्रोध को जीता जा सकता है. इसके लिये रास्ता त्याग यानी तर्क और व्यवसाय यानी मुजाहिदा का रास्ता है. इन्हीं को वैराग और अभ्यास भी कहते हैं यानी दुनिया से हट कर आत्मा यानी हक़ की तरफ़ दिल को लगाना. यह दुनिया से हटना दुनिया के फ़रायज़ से भागना नहीं है, क्योंकि सच्चे त्याग यानी तर्क से ही सर्व भूत हित यानी ख़िदमते ख़ल्क़ की लगन पैदा होती है.

मनुस्मृति में लिखा है :—

"अपनी आत्मा के अन्दर सबको देखो. सच और झूट ठीक और ग़लत सब उसी के अन्दर हैं. जो कोई अपनी आत्मा के अन्दर सबको देखता है उसका मन फिर पाप की तरफ़ नहीं जा सकता."

इंजील में लिखा है :—

"अपने पूरे दिल, पूरी आत्मा और पूरे मन से ईश्वर से प्रेम करो और अपने पड़ोसी के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने साथ. इन दोनों आज्ञाओं पर ही सारा धर्म और पुराने सब पैग़म्बरों के उपदेश इमहिसार करते हैं." (मैथ्यू)

इजील में और लिखा है :—

'जो तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाएं उन्हें आशीर्वाद दो, किसी को बददुआ न दो. जो ख़ुश हैं उनके साथ ख़ुशी मनाओ

...ہش کہتے ہیں . انہیں کو آہار اِچھا، دھن ...چھا اور رتی اِچھا بھی کہا جاتا ہے . انہیں سے ...ن، ملکیت اور شادی کا جنم ہوتا ہے. اِن میں سے ...ایک کے اچھے اور پروپکاری پہلو بھی ہیں . انہیں ...نسا، اپریگرہ اور برہم چریہ کہا جاتا ہے . صوفی انہیں ...ایذا رسانی، ترک دولت اور ترک شہوت کہتے ہیں. ...یعنی حق اِن سب کے اوپر ہے .

جس طرح اہنکار یعنی خودی سے سب برائیاں ...ا ہوتی ہیں اُسی طرح نراہنکارتا یعنی اصلی بے ...ی سے سب بھلائیاں پیدا ہوتی ہیں . حضرت عیسیٰ ... کہا ہے:—"اپنے پورے دل سے ایشور سے پیار کر." انہوں نے ...یہی کہا ہے :—"اپنے پڑوسی سے اُسی طرح پیار کر جیسا ...ساتھ." وجہ صاف ہے. ایشور ہی ہمارے اندر کی اصل ...حقیقت ہے اور وہی ہمارے پڑوسی کے اندر کی حقیقت ...اِس لئے اصلیت دونوں کی ایک ہی ہے .

جس طرح خودی سے کام اور کرودھ پیدا ہوتے ہیں ...ی طرح سچی بیخودی سے بھگتی یعنی عشق حقیقی ...کرونا یعنی رحم پیدا ہوتے ہیں. ایک ہمیں اَودیا اور ...جہالت کی طرف لے جاتا ہے اور دوسرا ودیا یعنی عرفان ...کی طرف . ویدانت کے مطابق اَودیا کی خاص شکلیں ...آورن اور وکشیپ ہیں. انہیں دونوں کو صوفی حجاب اور ...ایذا کہتے ہیں . ودیا یعنی عرفان ہی سے کام اور کرودھ ...کو جیتا جاسکتا ہے . اِس کے لئے راستہ تیاگ یعنی ...ترک اور ویوسائے یعنی مجاہدہ کا راستہ ہے . اِنہیں کو ...ویراگ اور ابھیاس بھی کہتے ہیں یعنی دنیا سے ہٹ کر ...آتما یعنی حق کی طرف دل کو لگانا . یہ دنیا سے ہٹنا ...دنیا کے فرائض سے بھاگنا نہیں ہے، کیونکہ سچے تیاگ ...یعنی ترک سے ہی سرو بھوت ہت یعنی خدمت خلق کی ...لگن پیدا ہوتی ہے .

منو اسمرتی میں لکھا ہے :—

"اپنی آتما کے اندر سب کو دیکھو. سچ اور جھوٹ ...ٹھیک اور غلط سب اُسی کے اندر ہیں . جو کوئی آتما کے ...اندر سب کو دیکھتا ہے اُس کا من پھر پاپ کی طرف ...نہیں جاسکتا ."

انجیل میں لکھا ہے :—

"اپنے پورے دل، پوری آتما اور پورے من سے ایشور سے ...پریم کرو اور اپنے پڑوسی کے ساتھ ویسا ہی پریم کرو جیسا ...اپنے ساتھ . اِن دونوں آگیاؤں پر ہی سارا دھرم اور پرانے ...سب پیغمبروں کے اُپدیش انحصار کرتے ہیں." (میتھیو).

انجیل میں اور لکھا ہے :—

"جو تمہیں تکلیف پہنچائیں اُنہیں آشیرباد دو، ...کسی کو بد دعا نہ دو. جو خوش ہیں اُن کے ساتھ خوشی مناؤ

और जो रोते हैं उनके साथ रोओ. एक दूसरे के साथ हम ख़याल हो. जहां तक तुम्हारी शक्ति में है सब लोगों के साथ अमन से रहो. सब तुम्हारे प्यारे हैं. किसी से बदला न लो. अगर तुम्हारा दुशमन भूका है तो उसे खाना खिलाओ. अगर वह प्यासा है तो उसे पानी पिलाओ. इस तरह करने से दुशमन की हैसियत से तुम इसके सर पर जलते हुए कोयले डाल दोगे. बुराई तुम्हें न जीतने पाए. तुम बुराई को भलाई से जीतो. सच्चे हाकिम वह हैं जिन से कोई नेकी करने वाला नहीं डरता और जिन से केवल बुराई करने वाले डरते हैं. इसलिये जो चीज़ जिसकी है उसे दो...किसी का उधार अपने ऊपर न रखो सिवाय इसके कि सब एक दूसरे से प्यार करो !'

"जो दूसरे को प्यार करता है वह सच्चे धर्म का पालन करता है. इसलिये बदचलनी न करो, किसी की जान न लो, चोरी न करो, झूटी गवाही न दो, दूसरे की चीज़ का लोभ न करो. और अगर कोई और हुक्म है तो यह है और इसमें सब आ जाते हैं कि अपने पड़ोसी के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने साथ. प्रेम कभी पड़ोसी को नुक़सान नहीं पहुंचा सकता. प्रेम ही पूरा धर्म है. सचाई यह सचाई कि सब के अन्दर एक ही आत्मा है तुम्हें सब बुराइयों से बचा लेगी और आज़ाद कर देगी." (इंजील रोमन्स और जान)

गीता में श्री कृश्न ने कहा है :—"ऐ अर्जुन ! इसमें कोई शक नहीं कि मन को रोक कर क़ाबू में करना बहुत मुशकिल है लेकिन अभ्यास से यानी बार बार मश्क़ करने से और वैराग यानी दुनिया से अपने दिल को हटाने से मन क़ाबू में आ जाता है."

गीता में और उपनिशदों में जगह जगह कहा गया है कि मन को बाहर की चीज़ों से हटा कर धीरे धीरे अपने अन्दर की तरफ़ लगाना चाहिये.

मौलाना रूम ने इसी बात को इन शब्दों में अदा किया है :—

"अपनी आखों को बन्द कर, अपने कानों को बन्द कर, अपने होटों को बन्द कर. फिर भी अगर हक़ीक़त का राज़ तुझे दिखाई न दे तो हम पर हंस लेना."

यही बात दूसरे सूफ़ियों ने तरह तरह से और बहुत तफ़सील के साथ कही है.

वेदान्त में कहा गया है :—"पुन और पाप दोनों पाप हैं क्योंकि दोनों आत्मा को इस जिस्म और इस दुनिया के साथ बांधते हैं."

एक सूफ़ी ने इसी चीज़ को इस तरह कहा है :—"चूंकि नेक और बद दोनों ख़ुदा ही से हैं इसलिये समझदार आदमी दोनों से दिल को हटा कर उसे अपने अन्दर के ख़ुदा की तरफ़ लगाता है."

اور جو روتے ہیں اُن کے ساتھ روؤ۔ ایک دوسرے کے ساتھ ہمخیال ہو۔ جہاں تک تمہاری شکتی میں ہے سب لوگوں کے ساتھ امن سے رہو۔ سب تمہارے پیارے ہیں کسی سے بدلہ نہ لو۔ اگر تمہارا دشمن بھوکا ہے تو اسے کھانا کھلاؤ۔ اگر وہ پیاسا ہے تو اُسے پانی پلاؤ۔ اس طرح کرنے سے دشمن کی حیثیت سے تم اِس کے سر پر جلتے ہوئے کوئلے ڈال دو گے۔ برائی تمہیں نہ جیتنے پائے۔ تم برائی کو بھلائی سے جیتو۔ سچے حاکم وہ ہیں جن سے کوئی نیکی کرنے والا نہیں ڈرتا اور جن سے کیول برائی کرنے والے ڈرتے ہیں۔ اِس لئے جو چیز جسکی ہے اسے دو......کسی کا اُدھار اپنے اوپر نہ رکھو سوائے اِس کے کہ سب ایک دوسرے سے پیار کرو۔"

"جو دوسرے کو پیار کرتا ہے وہ سچے دھرم کا پالن کرتا ہے۔ اِس لئے بد چلنی نہ کرو، کسی کی جان نہ لو چوری نہ کرو، جھوٹی گواہی نہ دو، دوسرے کی چیز کا لوبھ نہ کرو۔ اور اگر کوئی اور حکم ہے تو یہ ہے اور اِس میں سب آ جاتے ہیں کہ اپنے پڑوسی کے ساتھ ویسا ہی پریم کرو جیسا اپنے ساتھ۔ پریم کبھی پڑوسی کو نقصان نہیں پہنچا سکتا۔ پریم ہی پورا دھرم ہے۔ سچائی یہ سچائی کہ سب کے اندر ایک ہی آتما ہے تمہیں سب برائیوں سے بچا لے گی اور آزادی کر دے گی۔" (اِنجیل رومنس اور جان)

گیتا میں شری کرشن نے کہا ہے :—" اے ارجن ! اِس میں کوئی شک نہیں کہ من کو روک کر قابو میں کرنا بہت مشکل ہے لیکن ابھیاس سے یعنی بار بار مشق کرنے سے اور ویراگ یعنی دنیا سے اپنے دل کو ہٹانے سے من قابو میں آ جاتا ہے۔"

گیتا میں اُپنشدوں میں جگہ جگہ کہا گیا ہے کہ من کو باہر کی چیزوں سے ہٹا کر دھیرے دھیرے اپنے اندر کی طرف لگانا چاہئے۔

مولانا روم نے اسی بات کو اِن شبدوں میں ادا کیا ہے:—

" اپنی آنکھوں کو بند کر، اپنے کانوں کو بند کر، اپنے ہونٹوں کو بند کر۔ پھر بھی اگر حقیقت کا راز تجھے دکھائی نہ دے تو ہم پر ہنس لینا۔"

یہی بات دوسرے صوفیوں نے طرح طرح سے اور بہت تفصیل کے ساتھ کہی ہے۔

ویدانت میں کہا گیا ہے :—" پن اور پاپ دونوں پاپ ہیں کیونکہ دونوں آتما کو اِس جسم اور اِس دنیا کے ساتھ باندھتے ہیں۔"

ایک صوفی نے اِسی چیز کو اس طرح کہا ہے:—"چونکہ نیک اور بد دونوں خدا ہی سے ہیں اِس لئے سمجھدار آدمی دونوں سے دل کو ہٹا کر اسے اپنے اندر کے خدا کی طرف لگاتا ہے۔"

योरप की एक कहावत है :—"सब को समझ लेना सब को माफ़ कर देना है."

आदमी सब को तभी समझ सकता है जब पहले अपने को यानी अपने दिल को ठीक ठीक समझ ले. हम दूसरों की तरफ़ दयावान या हमदर्द तभी हो सकते हैं जब हम अपने अन्दर निगाह डाल कर अन्तर दृष्टि, यानी सीर नफ़सी के ज़रिये यह अच्छी तरह देख लें कि हमारी अपनी ज़िंदगी के और हमारे दिल के अन्दर कितनी कमज़ोरियां, बुराइयां और बद ख़यालियां छुपी हुई हैं.

महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है :—"13 नेकियां सब एक सच्चाई के अलग अलग रूप हैं. और 13 बुराइयां सब झूठ की अलग अलग शक़लें हैं."

पारसी धर्म की किताब गाथा में अहुर मज़्द से बार बार सचाई के दीदार की ही प्रार्थना की गई है.

महाभारत में कहा है कि :—"सचाई से बढ़ कर कोई धर्म है ही नहीं."

एक सूफ़ी कहता है :—"सूफ़ी के लिये सिवाय सचाई के मज़हब के और कोई मज़हब है ही नहीं. वह और कोई मज़हब जानता ही नहीं."

सब सचाइयों की यह सचाई कि सब के अन्दर एक ही आत्मा है अपने को "प्रेम" की शकल में ज़ाहिर करती है. प्रेम के अलग अलग रूप हैं. बड़ों के साथ वह आदर, इज़्ज़त, पूजा और एहतराम की शकल अख़तियार करता है. छोटों के साथ क्षमा, नरमी, मुहब्बत और दया की शकल लेता है. बराबर वालों के साथ दोस्ती और प्रेम की शकल. इन सब भावनाओं के साथ आदमी के अलग अलग फ़र्ज़ जुड़े हुए हैं. जब आदमी सब के अन्दर एक आत्मा देखता है तो ख़ुश दिली उस का फ़र्ज़ हो जाता है. प्रेम उसका मज़हब हो जाता है. बाक़ी सब नेकियां ख़ुद बख़ुद पीछे पीछे दौड़ती हैं और जहां सब भूटों का भूट यानी जुदाई ग़ैरियत का ख़याल ज़ोर करता है वहां प्रेम की जगह नफ़रतें पैदा होती हैं यानी अपने से बड़ों का डर, बराबर वालों पर ग़ुस्सा, और कमज़ोरों पर ज़ुल्म.

इंजील में कहा गया है कि :—"नेकी हर क़ौम को ऊंचा उठाती है."

इसी उसूल को पूरा करने के लिये कहा जा सकता है कि शहन शाहियत, ख़ुद ग़रज़ी, दूसरों पर ज़ुल्म ज़ियादती और दूसरी क़ौमों के जान व माल से बेजा फ़ायदा उठाने की ख़ाहिश या कमज़ोर क़ौमों को चूसने की इच्छा बड़ी से बड़ी क़ौम को नीचे गिरा देती है. केवल सब को अपनी तरह समझ कर ही आदमी इन सब बुराइयों और मुसीबतों से बच सकता है.

یورپ کی ایک کہاوت ہے :—" سب کو سمجھ لینا سب کو معاف کر دینا ہے ۔"

آدمی سب کو تبھی سمجھ سکتا ہے جب پہلے اپنے کو یعنی اپنے دل کو ٹھیک ٹھیک سمجھ لے ۔ ہم دوسروں کی طرف دیاوان یا ہمدرد تبھی ہو سکتے ہیں جب ہم اپنے اندر نگاہ ڈالکر انتر درشٹی، یعنی سیر نفسی کے ذریعے یہ اچھی طرح دیکھ لیں کہ ہماری اپنی زندگی کے اور ہمارے دل کے اندر کتنی کمزوریاں، برائیاں اور بد خیالیاں چھپی ہوئی ہیں ۔

مہابھارت کے شانتی پرو میں لکھا ہے :—" 13 نیکیاں سب ایک سچائی کے الگ الگ روپ ہیں ۔ اور 13 برائیاں سب جھوٹ کی الگ الگ شکلیں ہیں ۔"

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں اہور مزد سے بار بار سچائی کے دیدار کی ہی پرارتھنا کی گئی ہے ۔

مہا بھارت میں کہا ہے کہ :—" سچائی سے بڑھکر کوئی دھرم ہے ہی نہیں ۔"

ایک صوفی کہتا ہے :—" صوفی کے لئے سوائے سچائی کے مذہب کے اور کوئی مذہب ہے ہی نہیں ۔ وہ اور کوئی مذہب جانتا ہی نہیں ۔"

سب سچائیوں کی یہ سچائی کہ سب کے اندر ایک ہی آتما ہے اپنے کو " پریم " کی شکل میں ظاہر کرتی ہے ۔ پریم کے الگ الگ روپ ہیں ۔ بڑوں کے ساتھ وہ آدر، عزت، پوجا اور احترام کی شکل اختیار کرتا ہے ۔ چھوٹوں کے ساتھ کشما، نرمی، محبت اور دیا کی شکل لیتا ہے ۔ برابر والوں کے ساتھ دوستی اور پریم کی شکل ۔ ان سب بھوناؤں کے ساتھ آدمی کے الگ الگ فرض جڑے ہوئے ہیں ۔ جب آدمی سب کے اندر ایک آتما کو دیکھتا ہے تو خوش دلی اس کا فرض ہوجاتا ہے ۔ پریم اسکا مذہب ہوجاتا ہے ۔ باقی سب نیکیاں خودبخود پیچھے پیچھے دوڑتی ہیں اور جہاں سب جھوٹوں کا جھوٹ یعنی جدائی یا غیریت کا خیال زور کرتا ہے وہاں پریم کی جگہ نفرتیں پیدا ہوتی ہیں یعنی اپنے سے بڑوں کا ڈر، برابر والوں پر غصہ، اور کمزوروں پر ظلم ۔

انجیل میں کہا گیا ہے کہ :—" نیکی ہر قوم کو اونچا اٹھاتی ہے ۔"

اسی اصول کو پورا کرنے کے لئے کہا جا سکتا ہے کہ شہنشاہیت، خود غرضی، دوسروں پر ظلم زیادتی اور دوسری قوموں کے جان و مال سے بے جا فائدہ اٹھانے کی خواہش یا کمزور قوموں کو چوسنے کی اچھا بڑی سے بڑی قوم کو نیچے گرا دیتی ہے ۔ کیول سب کو اپنی طرح سمجھ کر ہی آدمی ان سب برائیوں اور مصیبتوں سے بچ سکتا ہے ۔

चीनी कनफ्यूशियस धर्म की किताब शू किंग में लिखा है :—

"बात साफ़ साफ़ कहो, लेकिन मिठास के साथ, दूसरों से नरमी से बरताव करो लेकिन ख़ुद्दारी के साथ, ताक़तवर बनो पर किसी पर ज़ुल्म न करो, काम ज़ोरों के साथ करो लेकिन किसी के साथ गुसताख़ी न करो, सब के साथ रवादारी बरतो लेकिन अपनी जगह अडिग रहो, नरम रहो लेकिन पक्के, बुराइयों से हिम्मत न हारो लेकिन नेकी का आदर मान बराबर दिल में बनाए रखो. दूसरों की कमज़ोरियां सच सच बताओ लेकिन इस तरह कि उसके दिल को चोट न पहुंचे, सब के सामने झुक कर चलो, लेकिन सचाई के लिये अपने को ख़तरे में डालने से कभी संकोच न करो. खुले दिल से दान दो लेकिन पात्र और कुपात्र देख कर, अपने इरादे में पक्के रहो लेकिन दिल हमेशा साफ़ और सच्चा रहे. बहादुर बनो लेकिन इनसाफ़ से न हटो." यह बीच का रास्ता ही सच्चे दीन धर्म का रास्ता है.

چینی کنفیوشیس دھرم کی ایک کتاب شو کنگ میں لکھا ہے :—

"بات صاف صاف کہو لیکن مٹھاس کے ساتھ، دوسروں سے نرمی سے برتاؤ کرو لیکن خود داری کے ساتھ، طاقتور بنو پر کسی پر ظلم نہ کرو، کام زوروں کے ساتھ کرو لیکن کسی کے ساتھ گستاخی نہ کرو، سب کے ساتھ رواداری برتو لیکن اپنی جگہ اڈگ رہو، نرم رہو لیکن پکے، برائیوں سے ہمت نہ ہارو لیکن نیکی کا آدرمان برابر دل میں بنائے رکھو۔ دوسروں کی کمزوریاں سچ سچ بتاؤ لیکن اس طرح کہ اُن کے دل کو چوٹ نہ پہنچے۔ سب کے سامنے جھک کر چلو، لیکن سچائی کے لئے اپنے کو خطرے میں ڈالنے سے کبھی سنکوچ نہ کرو۔ کھلے دل سے دان دو لیکن پاتر اور کوپاتر دیکھکر، اپنے ارادے میں پکے رہو لیکن دل ہمیشہ صاف اور سچا رہے۔ بہادر بنو لیکن انصاف سے نہ ہٹو۔"

یہ بیچ کا راستہ ہی سچے دین دھرم کا راستہ ہے۔

उलटी मंतिक़

(डाक्टर जाफ़र हसन)

जब कभी हिन्दी प्रेमियों और भाशा के शुद्धी परस्तों के सामने इन बातों का ज़िकर हुआ, तुरन्त ही जवाब मिला :

"और उरदू वाले क्या कर रहे हैं? पाकिस्तान में क्या हो रहा है?"

इसके बाद वह उरदू वालों की फ़ारसी परस्ती और अरबी ज़दगी की मिसालें गिनाने बैठते हैं, वह भी हिन्दुस्तानी के पक्ष पातियों को गोया हिन्दुस्तानी के मुआफ़िक़ों को उरदू दानों से न कोई रंजिश है न शिकायत!

एतराज़ का जवाब देने के बजाए एतराज़ करने वाले पर उलटा एतराज़ करना; इलज़ाम दूर करने के बजाए तोड़ इल्ज़ाम लगाना आम तरीक़ा सही मगर उलटा तरीक़ा है, उलटी समझ है, ग़लत मंतिक़ है. विद्याई भाशा में इस किसम की उलटी बहस को Iquoratio Eleuchi याने Irrelevance to Purpose या मक़सद से अलागूपन कहते हैं. मतलब यह कि बहस के

اُلٹی منتق

(ڈاکٹر جافر حسن)

جب کبھی ہندی پریمیوں اور بھاشا کے شدھی پرستوں کے سامنے ان باتوں کا ذکر ہوا، ترنت ہی جواب ملا :

"اور اُردو والے کیا کر رہے ہیں؟ پاکستان میں کیا ہو رہا ہے؟"

اس کے باد وہ اُردو والوں کی فارسی پرستی اور اربی زدگی کی مسالیں گنانے بیٹھتے ہیں، وہ بھی ہندستانی کے پکھ پاتیوں کو گویا ہندستانی کے موافقوں کو اُردو دانوں سے نہ کوئی رنجش ہے نہ شکایت!

ایتراز کا جواب دینے کی بجائے ایتراز کرنے والے پر اُلٹا ایتراز کرنا؛ اِلزام دور کرنے کی بجائے توڑ الزام لگانا آم تریقا سہی مگر اُلٹا تریقا ہے، اُلٹی سمجھ ہے، غلت منتق ہے۔ ودیائی بھاشا میں اس قسم کی الٹی بحس کو Iquoratio Eleuchi یانے Irrelevance to Purpose یا مقصد سے الاگوپن کہتے ہیں۔ مطلب یہ کہ بحس کے

नुक़्ते को छोड़ कर ऐसी बात पर बहस करना जिससे असल बात का कुछ लगाव न हो. यह "मक़सद से अलागू-पन" की वह क़िसम है जिसे इल्ज़ामी बहस कहना चाहिए.

हिन्दुस्तानी के निगाही नुक़्ते से हमें यह देखना है कि आजकल हिन्दी प्रेमी माने जाने वाले, हिन्दी साहित्य की सेवा करने वाली संस्थाएं, हिन्दी लेखक और हिन्दी विद्वान हिन्दी व्याकरन और हिन्दी जनता के आम उच्चारन को मानते हैं या नहीं ? इससे क्या बहस कि उरदू वाले सीधी चाल चल रहे हैं कि उलटी, ज़हर पी रहे हैं या अमृत, अक़्लमन्दी कर रहे हैं या नादानी ?

बहस यह है कि हमें अपने बोझ को हलका करना है, भाशा को आसान बनाना है ताकि विद्या की तरक़्क़ी तेज़ रफ़्तार से हो. अगर भाशा आसान होगी तो लोग भाशाओं और पुस्तकों से ज़ियादा फ़ायदा उठा सकेंगे, वह जानकारी में बहतर, हुनर या फ़न में भी बेहतर होंगे. हिन्दुस्तान के शहरियों का जीवन मेयार ज़ियादा ऊंचा होगा क्योंकि हम अपनी क़ूवत विद्या हासिल करने या हुनर सिखने में ज़ियादा सर्फ़ कर सकेंगे न कि भाशाएं और लिखावटें सीखने में. इन वजहों से हमें अपने बोझ को हलका करना है हिन्दी चूंकि राज भाशा बनने वाली है, इसलिये हिन्दी के बोझ को हलका करना और भी ज़रूरी है. यह नुक़्ता बहस तलब है. यह नहीं कि उरदू वाले अपने बोझ को बढ़ा रहे हैं या नहीं.

मंतिक़ यानी सोच बिचार के सही तरीक़े सिखाने वाली विद्या हमें सिखाती है कि "दो काले मिल कर एक गोरा नहीं होते; 'दो पापों से एक पुन नहीं होता; दो कपूतों से एक सपूत नहीं होता.'"

ठीक इसी तरह उरदू वाले भूल कर रहे हों तो इससे यह कैसे ज़ाहिर होता है कि हिन्दी वालों की भूल भूल नहीं है ? भारत माता के दो बेटे हों और दोनों के दोनों कपूत निकलें तो माता का दुख दूना होगा आधा नहीं.

यह बात आसानी से मेरी समझ में आती है कि दूसरों को ठाठ और राज करता हुआ देख कर हम भी तै कर लें कि दो दिन की ज़िन्दगी है, शान और मज़े में गुज़ार दें : चाहे इसका ज़रिया देस फ़रोशी हो या भट्टई, भान्ड पन हो या लूट, ग़सब हो या काला बाज़ार, जत्था बन्दी हो या क़ौम फ़रोशी ! अगर हमारा मक़सद ही यह हो कि किसी ना किसी तरह धन और राज के मालिक बन जाएं और इसे बढ़ाएं या संभाले रखें तो हम भी जन्ता को जाहिल रखने और उसे भूल भुलैयों में फंसा कर राज और ठाठ करने में ठीक रास्ते पर होंगे; जब हमारा मक़सद ही जनता को जाहिल रखना है तो फिर कठिन भाशा,

کو چھوڑ کر ایسی بات پر بحث کرنا جس
بات کو کچھ لگاؤ نہ ہو۔ یہ ”مقصد سے الاگوپن“
قسم ہے جسے اِلزامی بحث کہنا چاہئے۔

ہندستانی کے نگاہی نقطے سے ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ
ہندی پریمی مانے جانے والے، ہندی ساہتیہ کی
کرنے والی سنستھائیں، ہندی لیکھک اور ہندی
ہندی ویاکرن اور ہندی جنتا کے آم اچارن کو
ہیں یا نہیں؟ اِس سے کیا بحث کہ اُردو والے
چال چل رہے ہیں کہ الٹی، زہر پی رہے ہیں
مقلمندی کر رہے ہیں یا نادانی؟

بحث یہ ہے کہ ہمیں اپنے بوجھ کو ہلکا کرنا ہے، بھاشا کو
بنانا ہے تاکہ ودیا کی ترقی تیز رفتار سے ہو۔ اگر
آسان ہوگی تو لوگ بھاشاؤں اور پستکوں سے زیادا
اٹھا سکینگے، وہ جانکاری میں بہتر، ہنر یا فن
بہتر ہونگے۔ ہندستان کے شہریوں کا جیون معیار
اونچا ہوگا کیوں کہ ہم اپنی قوت ودیا حاصل کرنے
سیکھنے میں زیادا صرف کر سکینگے نہ کہ بھاشائیں
لکھاوٹیں سیکھنے میں۔ اِن وجہوں سے ہمیں اپنے
کو ہلکا کرنا ہے ہندی چوں کہ راج بھاشا بننے والی
اس لئے ہندی کے بوجھ کو ہلکا کرنا اور بھی ضروری
یہ نکتا بحث طلب ہے۔ یہ نہیں کہ اُردو والے اپنے
کو بڑھا رہے ہیں یا نہیں۔

منطق یانے سوچ بچار کے سہی طریقے سکھانے والی
ہمیں سکھاتی ہے کہ ”دو کالے مل کر ایک گورا نہیں
دو پاپوں سے ایک پن نہیں ہوتا؛ دو کپوتوں سے
سپوت نہیں ہوتا۔“

ٹھیک اسی طرح اُردو والے بھول کر رہے ہوں تو اس سے
کیسے ظاہر ہوتا ہے کہ ہندی والوں کی بھول بھول نہیں
؟ بھارت ماتا کے دو بیٹے ہوں اور دونو کے دونو کپوت
نکلیں تو ماتا کا دکھ دونا ہوگا آدھا نہیں۔

یہ بات آسانی سے میری سمجھ میں آتی ہے کہ
دوسروں کو ٹھاٹھ اور راج کرتا ہوا دیکھ کر ہم بھی طے
کہ دو دن کی زندگی ہے، شان اور مزے میں گزار
چاہے اس کا ذریعہ دیس فروشی ہو یا بھٹئی،
بھانڈپن ہو یا لوٹ، غضب ہو یا کالا بازار، جتھا بندی
ہو یا قوم فروشی! اگر ہمارا مقصد ہی یہ ہو کہ کسی
کسی طرح دھن اور راج کے مالک بن جائیں اور اسے
بڑھائیں یا سنبھالے رکھیں تو ہم بھی جنتا کو جاہل
اور اسے بھول بھلیوں میں پھنسا کر راج اور ٹھاٹھ کرنے
میں ٹھیک راستے پر ہونگے؛ جب ہمارا مقصد
ہی جنتا کو جاہل رکھنا ہے تو پھر کٹھن بھاشا،

इससे ज़ियादा कठिन व्याकरन, और सब से ज़ियादा कठिन परिभाशाई शब्दावली को जारी करना और कठिनाइयां बढ़ाना और फैलाना सभी ठीक होगा. सामराजी तबक़ा राजी और .खुद राजी, सभी जनता को नावाक़िफ़, अनपढ़ और जाहिल रखना चाहते थे क्योंकि जनता की नादानी, ना समझी और अनपढ़पन में उनकी अपनी भलाई छुपी थी.

अलबत्ता, जो लोग समझते हैं कि ठाठ की ज़िन्दी से सादगी, ढकोसलों की शान से निर्धनों की इज़्ज़त; भीक और डर के महलों से कमाई और आनन्द की झोपड़ियां; रिश्वतों के हज़ारों से ईमानदाराना मेहनत के सौ सवा सौ ही बेहतर हैं; जनता की तरक़्क़ी और जनता की भलाई की ख़ातिर सेवा करना राज और सामराज से अच्छा है वह कभी दुनियादारों और संसार प्रेमियों पर रश्क नहीं करते बल्कि विद्या प्रकाश करने के लिये भाशा, व्याकरन और शब्दावली को सरल बनाते हैं क्योंकि वह जानते, मानते और चाहते हैं कि राज का मक़सद जनता की भलाई है और भलाई के लिये जनता को हुनरमन्द और धनवान बनाना लाज़मी है, जिस के लिये जानकारी अटल है और जानकारी फैलाने और बढ़ाने के लिये आसान से आसान भाशा होनी चाहिये.

ग़र्ज़, भाशा का मसला भी हमारे जीवन फ़लसफ़े और निगाही नुक़ते से गहरा सम्बन्ध रखता है. अगर हम सच्चे जनता प्रेमी हैं तो हम पर हर हालत में जनताई भाशा को (और लाज़मी बात है) आम उच्चारन और आम व्याकरन को पसन्द करेंगे. अगर हम ज़ातबन्दी और ख़ुदग़र्ज़ी में फंसे हैं या हम में झूटी शेख़ी है तो हम भाशाई मामलों में जनता का विरोध करेंगे और आम झुकाव के ख़िलाफ़ अपनी हट चला कर जनता की भाशा तो बहरहाल नहीं बदल सकेंगे, हां इसकी तरक़्क़ी में रोड़े अटका कर उसके मेयार को नीचा और फैलाव को घिरा हुआ रख सकेंगे.

जब हार और जीत, तरक़्क़ी और गिरात्र सब जीवन फ़लसफ़े और निगाही नुक़ते से गहरा सम्बन्ध रखते हैं तो आम बातों में भी बड़ा मत भेद होगा. जिसे आप सज़ाए मौत कहेंगे मैं शहादत समझूंगा, जिस जीवन को आप बेकार समझेंगे मैं सफल ठहराऊंगा ? ठीक इसी तरह जिस चीज़ को आप हिन्दी प्रचार कहेंगे मैं हिन्दी की जकड़ बन्दी समझता हूं. यह तो किसी तरह मैं मान नहीं सकता कि एक शख़्श काम चोर, गुमराह और नादान है तो दूसरा शख़्स भी उसी की तक़लीद करे और अपनी ग़लतकारी का सबब पहले शख़्स को क़रार दे. ठीक इसी तरह अगर उरदू वाले दो ढाई हज़ार मील दूर की व्याकरन और उच्चारन से अपनी भाशा को मुश्किल और बोझल

اس سے زیادہ کٹھن ویاکرن، اور سب سے زیادہ کٹھن پری بھاشائی شبداولی کو جاری کرنا اور کٹھنائیاں بڑھانا اور پھیلانا سبھی ٹھیک ہوگا. سامراجی طبقہ، راجی اور خدراجی، سبھی جنتا کو ناواقف، انپڑھ اور جاہل رکھنا چاہتے تھے کیوں کہ جنتا کی نادانی، ناسمجھی اور انپڑھپن میں ان کی اپنی بھلائی چھپی تھی .

البتہ، جو لوگ سمجھتے ہیں کہ ٹھاٹھ کی زندگی سے سادگی، ڈھکوسلوں کی شان سے نردھنوں کی ازت؛ بھیک اور ڈر کے محلوں سے کمائی اور آنند کی جھونپڑیاں؛ رشوتوں کے ہزاروں سے ایماندارانہ محنت کے سو سوا سو ہی بہتر ہیں؛ جنتا کی ترقی اور جنتا کی بھلائی کی خاتر سیوا کرنا راج اور سامراج سے اچھا ہے وہ کبھی دنیاداروں اور سنسار پریمیوں پر رشک نہیں کرتے بلکہ ودیا پرکاش کرنے کے لئے بھاشا، ویاکرن اور شبداولی کو سرل بناتے ہیں کیوں کہ وہ جانتے، مانتے اور چاہتے ہیں کہ راج کا مقصد جنتا کی بھلائی ہے اور بھلائی کے لئے جنتا کو ہنرمند اور دھنوان بنانا لازمی ہے، جس کے لئے جانکاری اٹل ہے اور جانکاری پھیلانے اور بڑھانے کے لئے آسان سے آسان بھاشا ہونی چاہئے .

غرض، بھاشا کا مسئلہ بھی ہمارے جیون فلسفے اور نگاہی نقطے سے گہرا سمبندھ رکھتا ہے . اگر ہم سچے جنتا پریمی ہیں تو ہم پر ہر حالت میں جنتائی بھاشا کو (اور لازمی بات ہے) آم اچارن اور آم ویاکرن کو پسند کرینگے. اگر ہم ذات بندی اور خودغرضی میں پھنسے ہیں یا ہم میں جھوٹی شیخی ہے تو ہم بھاشائی معاملوں میں بھی جنتا کا ورودھ کرینگے اور آم جھکاؤ کے خلاف اپنی ہٹ چلاکر جنتا کی بھاشا تو بہر حال نہیں بدل سکینگے، ہاں اس کی ترقی میں روڑے اٹکا کر اس کے معیار کو نیچا اور پھیلاؤ کو گھرا ہوا رکھ سکینگے .

جب ہار اور جیت، ترقی اور گراؤ سب جیون فلسفے اور نگاہی نقطے سے گہرا سمبندھ رکھتے ہیں تو آم باتوں میں بھی بڑا مت بھید ہوگا . جسے آپ سزائے موت کہینگے میں شہادت سمجھونگا، جس جیون کو آپ بیکار سمجھینگے میں سپھل ٹھہراؤنگا ؟ ٹھیک اسی ترہ جس چیز کو آپ ہندی پرچار کہینگے میں ہندی کی جکڑ بندی سمجھتا ہوں . یہ تو کسی ترہ میں مان نہیں سکتا کہ ایک شخص کامچور، گمراہ اور نادان ہے تو دوسرا شخص بھی اسی کی تقلید کرے اور اپنی غلتکاری کا سبب پہلے شخص کو قرار دے . ٹھیک اسی ترہ اگر اردو والے دو ڈھائی ہزار میل دور کی ویاکرن اور اچارن سے اپنی بھاشا کو مشکل اور بوجھل

बना रहे हैं तो यह क्या ज़रूरी है कि हिन्दी प्रेमी भी दो ढाई हज़ार बरस पहले की व्याकरन और उच्चारन से आजकल की जनता पर बार डालें और अपनी सरल भाशा को भारी भरकम शब्दों और अजनबी उच्चारन से कठिन बनाएं.

इसलिये मैं हिन्दी प्रेमियों से कहता हूं कि दूसरों का ख़्याल किये बिना अपनी भाशा की ख़ैर मनाएं; आजकल के आम भाशाई झुकाव और उच्चारन को शुद्ध मानें और आम व्याकरन के मुताबिक़ अपना व्याकरन बनायें और इसी को सही मानें. हिन्दी प्रेमी आम तौर पर प्रजा राज के पक्शपाती होते हैं. कैसे अचरज की बात है कि प्रजा राज्य का बोल बुलन्द करने वाले हिन्दी प्रेमी भाशा के मामले में प्रजा का विरोध करते हैं और करोड़ों की ज़बानों पर चालू भाशा के ख़िलाफ़ चन्द संस्कृत प्रमियों के व्याकरन और उच्चारन को चलाना चाहते हैं. चन्द विद्याई अदारों और सरकारी विभागों में भले ही भाशाई शुद्धियावा की तहरीक चल पड़े मगर दस फ़ी सैकड़ा लोगों पर भी इसका असर नहीं पड़ेगा और हिन्दी वालों का भाशाई शुद्धियावा नाकाम साबित होगा. हां करोड़ों के ख़र्च पर भी तालीम का प्रकाश ज़ियादा नहीं होगा और कठिन भाशा में लिखी हुई पुस्तकों से पढ़ने वालों को कम फ़ायदा पहुंचेगा और अनगिनत किताबें बिन पढ़ी 'बिन समझी' बिन मुफ़ीद और बिन असर साबित होंगी.

हिन्दुस्तानी को सचमुच सारे देस की आम भाशा बनाना है तो हमें अच्छी तरह ख़ियाल करना होगा कि हिन्दी और उरदू संस्कृत पुजारियों और फ़ारसी परस्तों के हाथों जकड़ी हुई हैं और उनकी मदद से नहीं बल्कि उनकी मुख़ालफ़त के बावजूद तरक़्क़ी कर रही हैं.

हिन्दी प्रेमी माने या ना माने उरदू दानों और उर्दू के हामियों से हिन्दुस्तानी का प्रचार करने वालों की यह दरख़ास्त है कि वही अपनी ज़बान को ज़माने के झुकाव के मुताबिक़ बनने और पनपने दें न यह कि आम बोल चाल की मुख़ालफ़त करके उरदू की तरक़्क़ी में रुकावटें पैदा करें. उरदू वालों से हमें यह शिकायत है कि उरदू में बोले जाने वाले लफ़्ज़ों और जुमलों पर फ़ारसी और अरबी का कड़ियल बोझ डाला जा रहा है. ख़ास कर लफ़्ज़ों के गुन रूप और (इससे भी ज़ियादा) लफ़्ज़ों के कई पन में अकसर ग़ैर उरदू तरीक़े इस्तेमाल किये जाते हैं.

उरदू का यह आम क़ायदा है कि

तमाम मुज़क्कर इस्म जिन के आख़िर में अलिफ़ (الف) या हे (ہ) न हो एक पन और कई पन में यकसां होते हैं: जैसे मकान, आदमी, मच्छर, ओहदेदार, जागीरदार, पलंग, और जिन के आख़िर में अलिफ़ या हे हो उनका कई पन

...ھے ھیں تو یہ کیا ضروری ھے کہ ھندی پریمی دو ...ی ھزار برس پہلے کی ویاکرن اور اُچارن سے آجکل ...کی جنتا پر بار ڈالیں اور اپنی سرل بھاشا کو بھاری بھرکم ...بدوں اور اجنبی اُچارن سے کٹھن بنائیں ۔

اس لئے میں ھندی پریمیوں سے کہتا ھوں کہ دوسروں ...خیال کئے بنا اپنی بھاشا کی خیر منائیں؛ آجکل کے ...بھاشائی جھکاو اور اُچارن کو شدھ مانیں اور آم ویاکرن ...مطابق اپنا ویاکرن بنائیں اور اسی کو سچا مانیں ۔ ...ی پریمی آم تور پر پرجا راج کے پکش پاتی ھوتے ھیں۔ ...اچرج کی بات ھے کہ پرجا راج کا بول بلند کرنے ...ھندی پریمی بھاشا کے معاملے میں پرجا کا ورودھ کرتے ...اور کروڑوں کی زبانوں پر چالو بھاشا کے خلاف چند ...سنسکرت پریمیوں کے ویاکرن اور اُچارن کو چلانا چاھتے ھیں۔ ...ودیائی اداروں اور سرکاری وبھاگوں میں بھلے ھی ...بھاشائی شدھیاوا کی تحریک چل پڑے مگر دس فی ...سیکڑہ لوگوں پر بھی اِس کا اثر نہیں پڑیگا اور ھندی والوں ...کا بھاشائی شدھیاوا ناکام ثابت ھوگا۔ ھاں کروڑوں کے خرچ ...پر بھی تالیم کا پرکاش زیادا نہیں ھوگا اور کٹھن بھاشا ...میں لکھی ھوئی پستکوں سے پڑھنے والوں کو کم فایدا ...پہنچے گا اور ان گنت کتابیں بن پڑھی' بن سمجھی' ...بن مفید اور بن اثر ثابت ھونگی ۔

ھندستانی کو سچ مچ سارے دیس کی آم بھاشا بنانا ...ہے تو ھمیں اچھی طرح خیال کرنا ھوگا کہ ھندی اور اردو ...سنسکرت پجاریوں اور فارسی پرستوں کے ھاتھوں جکڑی ...ھوئی ھیں اور ان کی مدد سے نہیں بلکہ ان کی مخالفت ...کے باوجود ترقی کر رھی ھیں ۔

ھندی پریمی مانیں یا نہ مانیں اُردو دانوں اور اُردو ...کے حامیوں سے ھندستانی کا پرچار کرنے والوں کی یہ ...درخاست ھے کہ وھی اپنی زبان کو زمانے کے جھکاؤ کے ...مطابق بدلنے اور پنپنے دیں نہ یہ کہ آم بولچال کی مخالفت ...کرکے اردو کی ترقی میں رکاوٹیں پیدا کریں ۔ اردو والوں ...سے ھمیں یہ شکایت ھے کہ اردو میں بولے جانے والے لفزوں ...اور جملوں پر فارسی اور اربی کا کڑیل بوجھ ڈالا جا رھا ...ھے۔ خاس کر لفزوں کے گن روپ اور (اس سے بھی زیادا) ...لفزوں کے کئی پن میں اکسر غیر اُردو طریقے استعمال کئے ...جاتے ھیں ۔

اردو کا یہ عام قایدا ھے کہ

تمام مذکر اسم جن کے آخیر میں الف یا ہ نہ ھو' ایک ...پن اور کئی پن میں یکساں ھوتے ھیں : جیسے ...مکان' آدمی' مچھر' عہدیدار' جاگیردار' پلنگ' ...اور جن کے آخیر میں الف یا ہ ھو ان کا کئی پن

अलिफ़ (الف) या हे (ہ) की बजाय ये (ی) से बनता है. जैसे लड़का, लड़के, हिस्सा, हिस्से, घोड़ा, घोड़े, फ़ैसला, फ़ैसले.

इस आम क़ायदे और हिन्दी और उरदू में यकसां तरीक़े पर जमा बनाने के उसूल के ख़िलाफ़ उरदू के मुशकिल पसंद मेहरबान

हिस्से	लिखने या कहने की बजाय		हिस्स
क़िस्से	,,	,,	क़िस्स
मुहल्ले	,,	,,	मुहल्लाजात
क़बीले	,,	,,	क़बीलाजात
रक़बे	,,	,,	रक़बाजात
मुजज़े	,,	,,	मुजज़ात

इस्तेमाल करते हैं.

हिन्दी और उरदू दोनों में यह आम क़ायदा है कि बीसवीं मोअन्नस इसमों की जमाएँ बढ़ाने से बना ली जाती है. जैसे रियासतें, कैफ़ियतें, भैंसें तदबीरें मेज़ें, वग़ैरा.

यह क़ायदा आम भी है और आसान भी. आसान इसलिये कि किसी लफ़्ज़ में कुछ जोड़ देने से इस लफ़्ज़ की शकल नहीं बदलती जैसे समाज से समाजी बनाया जाय तो असल लफ़्ज़ समाज अपने गुन रूप में भी बाक़ी रहता है. ग़र्ज़ उरदू वाले ख़ास कर चन्द देहाईयों से

मिल्लत	का कई पन	मिल्लतें बनाने की बाजाय		मिलल
सीरत	,,	सीरतें	,,	सैर*
सूरत	,,	सूरतें	,,	सूर*
क़न्दील	,,	क़दीलें	,,	क़नादील
ख़सूसियत	,,	ख़सूसियतें	,,	ख़सूसियात
शिफ़ारिश	,,	शिफ़ारिशें	,,	शिफ़ारिशात
राय	,,	रायें	,,	आरा
रियासत	,,	रियासतें	,,	रियासतहा

ग़ौर से देखिये उरदू तरीक़े पर जमा बनाने के लिये असल लफ़्ज़ में जोड़ देना काफ़ी है. मगर फ़ारसियाना और अरबियाना तौर पर कई पन बनाना गोरख धन्दा है. कहीं तो सिरफ़ अलिफ़ (ا) ते (ت) जोड़ देते हैं जैसे शिफ़ारशात में, मगर कहीं आख़री हर्फ़ छोड़ कर अलिफ़ (الف) ते (ت) बढ़ा देते हैं जैसे "ख़ुसूसियात" में, कहीं आख़री हर्फ़ छोड़ कर बीच हर्फ़ की तकरार करते हैं, जैसे मिलल में. इतने क़ायदों के बाद भी जब उनको तशफ़्फ़ी

* इसे तफ़रीह के मानों में सैर (Saer) न पढ़ डालिये बल्कि सीयर (बर वज़न मीटर !)

* कितने पढ़े लिखे उरदू दां ताड़ सकेंगे कि 'ग़ालिब' के इस शेर में सूर सूरत की जमा है :—

है मुश्तमिल नमूद सूर पर वजूदे बहर
यां किया धरा है ? क़तरा व मौज व हुबाब में

الف یا ہ کی بجائے ے بنتا ہے. جیسے لڑکا' لڑکے' حصہ' حصے' گھوڑا' گھوڑے' فیصلہ' فیصلے .

اِس عام قاعدے اور ہندی اور اردو میں یکساں طریقہ پر جمع بنانے کے اصول کے خلاف اردو کے مشکل پسند مہربان

حصے	لکھنے یا کہنے کی بجائے			حصص
قصے	,,	,,	,,	قصص
محلے	,,	,,	,,	محلہ جات
قبیلے	,,	,,	,,	قبیلہ جات
رقبہ	,,	,,	,,	رقبہ جات
معجزے	,,	,,	,,	معجزات

استعمال کرتے ہیں .

ہندی اور اردو دونوں میں یہ عام قاعدہ ہے کہ بیسویں مونث اسموں کی جمعیں بڑھانے سے بنا لی جاتی ہے . جیسے ریاستیں' کیفیتیں' بھینسیں' تدبیریں' میزیں وغیرہ .

یہ قاعدہ عام بھی ہے اور آسان بھی . آسان اس لئے کہ کسی لفظ میں کچھ جوڑ دینے سے اس لفظ کی شکل نہیں بدلتی جیسے سماج سے سماجی بنایا جائے تو اصل لفظ سماج اپنے گن روپ میں بھی باقی رہتا ہے . غرض اردو والے خاصکر چند دیہاتیوں سے

ملت	کا کئی پن	ملتیں	بنانے کی بجائے	ملل
سیرت	,,	سیرتیں	,,	سیر*
صورت	,,	صورتیں	,,	صور*
قندیل	,,	قندیلیں	,,	قنادیل
خصوصیت	,,	خصوصیتیں	,,	خصوصیات
سفارش	,,	سفارشیں	,,	سفارشات
رائے	,,	رائیں	,,	آرا
ریاست	,,	ریاستیں	,,	ریاستہا

غور سے دیکھئے اردو طریقے پر جمع بنانے کے لئے اصل لفظ میں جوڑ دینا کافی ہے. مگر فارسیانہ اور عربیانہ طور پر کئی پن بنانا گورکھ دھندا ہے . کہیں تو صرف (الف) (ت) جوڑ دیتے ہیں جیسے سفارشات میں' مگر کہیں آخری حرف چھوڑ کر الف ت بڑھاتے ہیں جیسے "خصوصیات" میں' کہیں آخری حرف چھوڑ کر بیچ حرف کی تکرار کرتے ہیں' جیسے ملل میں. اِتنے قاعدوں کے بعد بھی جب ان کو تشفی

* اِسے تفریح کے معنوں میں سیر (Saer) نہ پڑھ ڈالئے بلکہ سی یر (بروزن میٹر !)

* کتنے پڑھے لکھے اردو داں تاڑ سکینگے کہ غالب کے اس شعر میں صور صورت کی جمع ہے :

ہے مشتمل نمود صور پر وجود بحر
یاں کیا دھرا ہے؟ قطرہ و موج و حباب میں

नहीं होती तो दूसरे क़ायदों से रियासतहा, सुर, आरा बना लेते हैं. अक्सर विद्वान अपनी जानकारी जताने के लिये और विद्याई अदारे अपनी शान बरक़रार रखने के लिये क़िस्म के कई पन इस्तेमाल करते हैं. उरदू के मुशकिल परस्त अरबी ज़दां लोग बाज़ ऐसे लफ़ज़ों की जमा इस्तेमाल करते हैं जिन का रिवाज इस माना में बहुत कम है. मसलन दौलत को वाहिद यानी एकपन की हालत में बमानी रियासत कोई इस्तेमाल नहीं करता मगर जमा में दौल रियासतों या मुमलिकतों के माने में इस्तेमाल किया जाता है. बाज़ नीम वहशी क़बीलों के लोग हसलियां डाल डाल कर अपनी गरदनें लांबी करते हैं या बल्ले डाल डाल कर अपने होंट या नाक चौड़े या चपटे करते हैं. इसी तरह हमारे उरदू के मुशकिल परस्त बहुतेरे क़ायदों के इस्तेमाल पर भी जब बेचैन रहते हैं तो एक ही लफ़ज़ की जमा दो दो क़ायदों से बनाते हैं, जैसे :

कैफ़ियत की जमा कैफ़ियतें बनाने की बजाय कैफ़ियात और कवाइफ़.

उरदू की मुशकिल परस्ती का नतीजा है कि गुज़िशता बीस पच्चीस बरस में जिन मुजक्कर इसमों का रिवाज हुआ है, उन पर उरदू क़ायदा नहीं लागू किया जाता बल्कि बिना ज़रूरत कई पन की अलामत जोड़ी जाती है. मसलन

मौज़ू की जमा मौज़ूआत

ग़ैर उरदू तरीक़े पर जमा बनाने का रिवाज बाज़ हलक़ों में इतना बढ़ गया है कि वाहिद और जमा को यकसां शकल में इस्तेमाल करना ग़लत समझा जाता है. ख़ास कर हैदराबाद और पंजाब में मिसाल के तौर पर अगर आप यह कहें—'क़ौमी लीडरों को मुख़तलिफ़ मौज़ूओं पर तक़रीरें करनी पड़ती हैं." तो उसको "ग़ैर फ़सीह" समझा जायगा. ख़ास उरदू में इस जुमले को यों कहेंगे :

"लीडराने क़ौम को मुख़तलिफ़ मौज़ूआत पर तक़ारीर करनी पड़ती हैं."

उरदू लफ़ज़ों के गुन रूप

उरदू वाले इसमों के अलावा गुन रूप भी फ़ारसियाना और अरबियाना तरीक़ों से बनाते हैं, जैसे :

मिल्लत से मिल्लती बनाने की बजाये मिल्ली (बरवज़न बिल्ली)

تو دوسرے قایدوں سے ریاستہا، صر،
ہوتی
بنا لیتے ہیں . اکسر ودوان اپنی جانکاری جتانے
لئے اور ودیای ادارے اپنی شان برقرار رکھنے کے لئے
قسم کے کئی پن استعمال کرتے ہیں . اردو کے مشکل
پرست اربی زدہ لوگ باز ایسے لفزوں کی جما استعمال
کرتے ہیں جن کا رواج اس مانا میں بہت کم ہے . مسلن
دولت کو واحد یعنی ایکپن کی حالت میں بمعنے ریاست
کوئی استعمال نہیں کرتا مگر جما میں دول ریاستوں یا
مملکتوں کے مانے میں استعمال کیا جاتا ہے . باز نیم
وحشی قبیلوں کے لوگ ہسلیاں ڈال ڈال کر اپنی گردنیں
لانبی کرتے ہیں یا بلے ڈال ڈال کر اپنے ہونٹ یا کان یا
ناک چوڑے یا چپٹے کرتے ہیں . اسی طرح ہمارے اردو
کے مشکل پرست بہترے قایدوں کے استعمال پر بھی جب
بےچین رہتے ہیں تو ایک ہی لفز کی جما دو دو قایدوں
سے بناتے ہیں جیسے :
کیفیت کی جمع کیفیتیں بنانے کی بجائے کیفیات اور
کوائف .

اردو کی مشکل پرستی کا نتیجہ ہے کہ گزشتہ بیس
پچیس برس میں جن مذکر اسموں کا رواج ہوا ہے، ان
پر اردو قایدا نہیں لاگو کیا جاتا بلکہ بنا ضرورت کئی پن کی
علامت جوڑی جاتی ہے . مسلن
موضوع کی جمع موضوعات
غیر اردو طریقے پر جما بنانے کا رواج باز حلقوں میں
اتنا بڑھ گیا ہے کہ واحد اور جمع کو یکساں شکل میں
استعمال کرنا غلط سمجھا جاتا ہے . خاص کر حیدرآباد
اور پنجاب میں مثال کے طور پر اگر آپ یہ کہیں "قومی
لیڈروں کو مختلف موضوعوں پر تقریریں کرنی پڑتی ہیں"
تو اس کو "غیر فصیح" سمجھا جائے گا . خاص اردو میں
اس جملے کو یوں کہیں گے :
"لیڈرانِ قوم کو مختلف موضوعات پر تقاریر کرنی
پڑتی ہیں ."

اردو لفزوں کے گن روپ

اردو والے اسموں کے الاوا گن روپ بھی فارسیانہ اور
عربیانہ طریقوں سے بناتے ہیں . جیسے :
ملت سے ملتی بنانے بجائے ملی (بروزن بلی)

पो चू ई: महान चीनी कवि

पो चू ई का नाम चीन के बड़े से बड़े कवियों में शुमार किया जाता है. इनका जन्म 772 ईसवी में हिन चेंग में हुआ. यह जगह होनान सूबे में है. इनके माता पिता मामूली हैसियत के आदमी थे. यहां तक कि गुज़र बसर भी आसानी से नहीं हो पाती थी. इन पर इनकी माता के विचारों का बहुत असर है. वह एक नेक और ख़ुदा-परस्त महिला थीं. ग़रीबों की सेवा करने में उनकी मां को बहुत सुख प्राप्त होता था. इनके पिता एक मामूली सरकारी नौकर थे. एक मामूली नौकर होते हुए भी उनके विचार बहुत ऊंचे थे और वह भी दीन हीन की सेवा करने में अपनी नेक पत्नी से किसी तरह कम न थे.

दूसरे और बच्चों की तरह इनका बचपन भी खेलने कूदने में बीता. इनके और दोस्त इनसे मिल कर बहुत खुश होते थे. शुरू की तालीम अपने गांव और हो नान सूबे में ही पाई. लेकिन इनका दिल ज़ियादा पढ़ने में नहीं लगता था. इनकी हर दम यही इच्छा रहती थी कि मैं खूब घूमूं और घूम घूम कर जनता की तकलीफ़ को समझूं. शुरू शुरू में पो चू ई को दिक़्क़तें सामने आईं. उन्होंने उनका सामना किया. घूमने और जनता की बिपता जानने के लिये उनको थोड़े से पैसे की ज़रूरत थी लेकिन पैसा कहां से आता. फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी और घूमने निकल पड़े. अपनी रोज़ी की तलाश में वह हू पेह, क्यांग सू और चे-कियांग सूबों में भी गए. लेकिन पो को कोई ख़ास सफलता नहीं मिली.

बड़ी मुशकिलों और दिक़्क़तों को सहन करते हुए 26 साल की उमर में पो ने रियासत में नौकरी पाने के लिये एक इम्तहान पास कर लिया. 28 साल की उमर में वह एक मामूली सरकारी अफ़सर बन गए.

सरकारी अफ़सर बनने के थोड़े अरसे बाद उन्होंने देखा कि बड़े बड़े हाकिम किस तरह ग़रीब जनता को सताते हैं, किस तरह उनका ख़ून चूसते हैं और सोने चांदी के टुकड़ों से किस तरह अपनी जेबें भरते हैं. यह सब बातें देख कर उनका दिल भर आता था. शाम को जब वह घर पहुंचते और रात को सोते समय दिन की बातों पर नज़र डालते तो उनकी आंखों में आंसू आ जाते. वह सदा ईश्वर से प्रार्थना करते कि इन ग़रीबों की सहायता करो. ग़रीबों की फ़िकर करते करते वह सो जाते. कभी कभी रात को सपने में देखते कि किसी हाकिम के हुकम से ग़रीब के कोड़े लगाए जा रहे हैं और वह ज़ालिम खड़ा खड़ा हंस रहा है.

پو چو اِی : مہان چینی کوی

پو چو اِی کا نام چین کے بڑے سے بڑے کویوں میں شمار کیا جاتا ہے ۔ اِن کا جنم 772 عیسوی میں ہِن چینگ میں ہوا ۔ یہ جگہ ہونان صوبے میں ہے ۔ اِن کے ماتا پتا معمولی حیثیت کے آدمی تھے ۔ یہاں تک کہ گذر بسر بھی آسانی سے نہیں ہو پاتی تھی ۔ اِن پر اِن کی ماتا کے وچاروں کا بہت اثر ہے ۔ وہ ایک نیک اور خدا پرست مہیلا تھیں ۔ غریبوں کی سیوا کرنے میں اُن کی ماں کو بہت سکھ پراپت ہوتا تھا ۔ اِن کے پتا ایک معمولی سرکاری نوکر تھے ۔ ایک معمولی نوکر ہوتے ہوئے بھی اُن کے وچار بہت اُونچے تھے اور وہ بھی دین ہین کی سیوا کرنے میں اپنی نیک پتنی سے کسی طرح کم نہ تھے ۔

دوسرے اور بچوں کی طرح اِن کا بچپن بھی کھیلنے کودنے میں بیتا ۔ اِن کے اور دوست اِن سے مل کر بہت خوش ہوتے تھے ۔ شروع کی تعلیم اپنے گاؤں اور ہو نان صوبے میں ہی پائی ۔ لیکن اِن کا دل زیادہ پڑھنے میں نہیں لگتا تھا ۔ ان کی ہر دم یہی اِچھا رہتی تھی کہ میں خوب گھوموں اور گھوم گھوم کر جنتا کی تکلیف کو سمجھوں ۔ شروع شروع میں پو چو اِی کو دقتیں سامنے آئیں ۔ اُنہوں نے اُن کا سامنا کیا ۔ گھومنے اور جنتا کی بپتا جاننے کے لئے اُن کو تھوڑے سے پیسے کی ضرورت تھی لیکن پیسہ کہاں سے آتا ۔ پھر بھی اُنہوں نے ہمت نہ ہاری اور گھومنے نکل پڑے ۔ اپنی روزی کی تلاش میں وہ ہو پیہ، کیانگ سو اور چے کیانگ صوبوں میں بھی گئے ۔ لیکن پو کو کوئی خاص سپھلتا نہیں ملی ۔

بڑی مشکلوں اور دقتوں کو سہن کرتے ہوئے 26 سال کی عمر میں پو نے ریاست میں نوکری پانے کے لئے ایک اِمتحان پاس کر لیا ۔ 28 سال کی عمر میں وہ ایک معمولی سرکاری افسر بن گئے ۔

سرکاری افسر بننے کے تھوڑے عرصہ بعد اُنہوں نے دیکھا کہ بڑے بڑے حاکم کس طرح غریب جنتا کو ستاتے ہیں، کس طرح اُن کا خون چوستے ہیں اور سونے چاندی کے ٹکڑوں سے اپنی کسطرح جیبیں بھرتے ہیں ۔ یہ سب باتیں دیکھ کر اُن کا دل بھر آتا تھا ۔ شام کو جب وہ گھر پہونچتے اور رات کو سوتے سمے دن کی باتوں پر نظر ڈالتے تو اُن کی آنکھوں میں آنسو آجاتے ۔ وہ سدا ایشور سے پرارتھنا کرتے کہ اِن غریبوں کی سہائتا کرو ۔ غریبوں کی فکر کرتے کرتے وہ سو جاتے ۔ کبھی کبھی رات کو سپنے میں دیکھتے کہ کسی حاکم کے حکم سے غریب کے کوڑے لگائے جا رہے ہیں اور وہ ظالم کھڑا کھڑا ہنس رہا ہے ۔

सरकारी नौकर की हैसियत से उन्होंने अपना काम बहुत अच्छी तरह अनजाम दिया. नौकर होते ही पो ने एक ख़त अपने दोस्त को लिखा : "जब मैं लोगों से मिलता जुलता या बातें करता हूं तो सदा सब तरह की बातें करता हूं. मैं इस बात को महसूस करता हूं कि साहित्य को वक़्त की पुकार सुनना चाहिये और कविता में जनता का सच्चा जीवन साफ़ साफ़ झलकना चहिये."

पो को सरकारी कामों में काफ़ी महारत थी लेकिन वह दरबारी न थे. वह इतने सच्चे और नेक दिल आत्मा थे कि दूसरे हाकिमों को उनकी बातों पर यक़ीन ही नहीं आता था. उनकी कविताओं में छोटे और बड़े सबकी ख़राबियां और कमज़ोरियां साफ़ साफ़ पता चलती हैं. उन्होंने अपनी मशहूर कविता 'कविता जमा करने वाला' में अपने बादशाह को हिदायत की कि पुराने काल के बादशाहों ने जनता के सुखों और दुखों को कविता के द्वारा ही समझा बूझा. इसलिये आपको भी कला के वास्ते एक अलग महकमा खोल देना चाहिये. पो ने लिखा

बड़े बड़े अफ़सर भ्रष्टाचारी हैं
ग़रीबों को सताते और उनका ख़ून चूसते हैं
अफ़सरों से बढ़ कर राज के मिनिस्टर हैं
जो हमेशा अपने बादशाह को धोका देते हैं.

पो की कविताओं में ख़ास बात यह थी कि वह हमेशा 'जनता को जगाने' की फ़िकर में रहते थे. कुछ लोग उनकी कविताओं को पढ़ कर या सुन कर खिल्ली उड़ाया करते थे. कुछ लोग समझते थे कि उनका दिमाग़ ख़राब हो गया है. लेकिन वह अपनी धुन के पक्के थे. वह बग़ैर किसी डर और हिचकिचाहट के कविता करते रहे. उन्होंने लोगों की खिल्ली उड़ाने या मज़ाक़ का कभी बुरा नहीं माना. वह तो सदा यही कहा करते थे कि एक दिन आएगा जब यही लोग मेरी कविता को क़द्र की निगाह से देखेंगे. और अन्त में हुआ भी यही.

शुरू शुरू में उन्होंने अपने एक दोस्त को लिखा : "मुझे इस बात की फ़िकर नहीं है कि चन्द लोग मेरी कविता के बारे में क्या राय क़ायम करते हैं. मैं जो कुछ भी लिखता हूं वह आम और जनता की भाषा में लिखता हूं. तुम ही मेरे एक प्यारे दोस्त हो जो मेरे व्यंगों को समझते और पसन्द करते हो."

राजकाजी ग़लतियां और समाजी कमज़ोरियां पो के दिनों में ज़ोर मार रही थीं. घरेलू झगड़ों और भारी भारी टैक्सों के कारन लोग तंग आ गए थे. बड़े बड़े टैक्स सिर्फ़ जनता से ही वसूल किये जाते थे. इन अमीर लोगों को ग़रीब जनता की कुछ भी परवाह नहीं थी. वह तो सदा इसी फ़िकर में रहते थे कि किस तरह तिजोरियों में सोना चांदी

سرکاری نوکر کی حیثیت سے اُنھوں نے اپنا کام بہت اچھی طرح انجام دیا ۔ نوکر ہوتے ہی پو نے ایک خط اپنے دوست کو لکھا : "جب میں لوگوں سے ملتا جلتا یا باتیں کرتا ہوں تو سدا سب طرح کی باتیں کرتا ہوں ۔ میں اس بات کو محسوس کرتا ہوں کہ ساہتیہ کو وقت کی پکار سننا چاہئیے اور کویتا میں جنتا کا سچا جیون صاف صاف جھلکنا چاہئیے ۔"

پو کو سرکاری کاموں میں کافی مہارت تھی لیکن وہ درباری نہ تھے ۔ وہ اتنے سچے اور نیک دل آتما تھے کہ دوسرے حاکموں کو اُن کی باتوں پر یقین ہی نہیں آتا تھا ۔ اُن کی کویتاؤں میں چھوٹے اور بڑے سب کی خرابیاں اور کمزوریاں صاف صاف پتہ چلتی ہیں ۔ اُنھوں نے اپنی مشہور کویتا 'کویتا جمع کرنے والا' میں اپنے بادشاہ کو ہدایت کی کہ پرانے کال کے بادشاہوں نے جنتا کے سکھوں اور دکھوں کو کویتا کے دوارا ہی سمجھا بوجھا ۔ اس لئے آپ کو بھی کلا کے واسطے ایک الگ محکمہ کھول دینا چاہئیے ۔ پو نے لکھا :

بڑے بڑے افسر بھرشٹاچاری ہیں
غریبوں کو ستاتے اور اُن کا خون چوستے ہیں
افسروں سے بڑھکر راج کے منسٹر ہیں
جو ہمیشہ اپنے بادشاہ کو دھوکہ دیتے ہیں ۔

پو کی کویتاؤں میں خاص بات یہ تھی کہ وہ ہمیشہ 'جنتا کو جگانے' کی فکر میں رہتے تھے ۔ کچھ لوگ اُن کی کویتاؤں کو پڑھکر یا سن کر کھلی اڑایا کرتے تھے ۔ کچھ لوگ سمجھتے تھے کہ اُن کا دماغ خراب ہوگیا ہے ۔ لیکن وہ اپنی دھن کے پکے تھے ۔ وہ بغیر کسی ڈر اور ہچکچاہٹ کے کویتا کرتے رہے ۔ اُنھوں نے لوگوں کی کھلی اُڑانے یا مذاق کا کبھی برا نہیں مانا ۔ وہ تو سدا یہی کہا کرتے تھے کہ ایک دن آئے گا جب یہی لوگ میری کویتا کو قدر کی نگاہ سے دیکھینگے ۔ اور انت میں ہوا بھی یہی ۔

شروع شروع میں اُنھوں نے اپنے ایک دوست کو لکھا : "مجھے اس بات کی فکر نہیں ہے کہ چند لوگ میری کویتا کے بارے میں کیا رائے قائم کرتے ہیں ۔ میں جو کچھ بھی لکھتا ہوں وہ عام اور جنتا کی بھاشا میں لکھتا ہوں ۔ تم ہی میرے ایک پیارے دوست ہو جو میرے ویئنگوں کو سمجھتے اور پسند کرتے ہو ۔"

راج کاجی غلطیاں اور سماجی کمزوریاں پو کے دنوں میں زور مار رہی تھیں ۔ گھریلو جھگڑوں اور بھاری بھاری ٹیکسوں کے کارن لوگ تنگ آ گئے تھے ۔ بڑے بڑے ٹیکس صرف جنتا سے ہی وصول کئے جاتے تھے ۔ ان امیر لوگوں کو غریب جنتا کی کچھ پرواہ نہیں تھی ۔ وہ تو سدا اِسی فکر میں رہتے تھے کہ کس طرح تجوریوں میں سونا چاندی

जमा
ने क
ख़राबि
प
उ
की को
फिर
किस
आ ज
किस
पहुंचा
अ
रोशन

जमा कर के रखा जाय, इन सब बातों के देखते हुए पो ने कोशिश की कि समाजी कमजोरियां और राजकाजी खराबियां बिलकुल खतम हो जायं या कुछ कम हो जायं.

पो ने अपनी कविता 'भारी टैक्स' में लिखा है :

लुटेरा अफ़सर शुरू से ही बुरी आदतें अपनाता है
वह मुझे क़ीमती ऊन अपने से ऊंचे हाकिम को खुश
करने के लिये देता है
वह हर मौसम—जाड़ा, बहार, बरसात—में कुछ
न कुछ मांगता ही रहता है
मैं टैक्स जमा करने वाले को देने पर मजबूर हूं
मैं इस काम में एक पल की भी देर नहीं कर सकता
ओ बुरे हाकिम,
तू ने मेरी पीठ की गरमी को भी छीन लिया है
अपने लिये, अपने को ऊंचा उठाने के लिये...

ऊपर की कविता का हमने अंगरेज़ी से अनुवाद करने की कोशिश की है. हम पूरे कामयाब न हो सके लेकिन फिर भी जनता से—ग़रीब लोगों, किसानों, मज़दूरों—किस तरह टैक्स वसूल किया जाता था साफ़ साफ़ सामने आ जाता है. यह भी साफ़ हो जाता है कि बड़े बड़े हाकिम किस तरह अपने निजी हित के लिये लोगों को तकलीफ़ पहुंचाते थे.

अगली कविता में किसान के दुख भरे जीवन पर रोशनी डाली गई है :

कड़कड़ाती गर्म ज़मीन ने किसानों के नंगे पैरों को
झुलस दिया है
सूरज की जलती किरनों ने किसानों की पीठ पर
गहरे निशान बना दिये हैं
सुबह से शाम तक काम में घिरे रहने के कारन
किसान गरमी की चिन्ता नहीं करता
वह अपने काम में मशग़ूल, दिन की रोशनी का
सद उपयोग करता है
किसान के बराबर एक औरत नहीं के बराबर
कपड़े पहने खड़ी है
एक छोटा बच्चा उसकी छाती से
चिपटा हुआ है
वह अपने सीधे हाथ से बचे खुचे
अनाज को जमा कर रही है
उसके बाएं हाथ में एक टूटी
टोकरी लटकी हुई है
"हम जो कुछ काटेंगे वह टैक्सों
में चला जायगा" वह कह रही है
हम बचे खुचे अनाज को अपनी भूक
मिटाने के लिये बटोर रहे हैं.....

جمع کر کے رکھا جائے . اِن سب باتوں کو دیکھتے ہوئے پو نے کوشش کی کہ سماجی کمزوریاں اور راج کاجی خرابیاں بالکل ختم ہو جائیں یا کچھ کم ہو جائیں.

پو نے اپنی کویتا ' بھاری ٹیکس ' میں لکھا ہے :

لٹیرا افسر شروع سے ہی بری عادتیں اپناتا ہے
وہ مجھے قیمتی اون اپنے سے اونچے حاکم کو خوش
کرنے کے لئے دیتا ہے
وہ ہر موسم—جاڑا' بہار' برسات—میں نہ کچھ
مانگتا ہی رہتا ہے
میں ٹیکس جمع کرنے والے کو دینے پر مجبور ہوں
میں اس کام میں ایک پل کی بھی دیر نہیں
کر سکتا
او برے حاکم'
تو نے میری پیٹھ کی گرمی کو بھی چھین لیا ہے
اپنے لئے' اپنے کو اونچا اُٹھانے کے لئے......

اوپر کی کویتا کا ہم نے انگریزی سے انوواد کرنے کی کوشش کی ہے . ہم پورے کامیاب نہ ہو سکے لیکن پھر بھی جنتا سے— غریب لوگوں 'کسانوں' مزدوروں—کس طرح ٹیکس وصول کیا جا تھا صاف صاف سامنے آ جاتا ہے . یہ بھی صاف ہو جاتا ہے کہ بڑے بڑے حاکم کس طرح اپنے نجی ہت کے لئے لوگوں کو تکلیف پہونچاتے تھے .

اگلی کویتا میں کسان کے دکھ بھرے جیون پر روشنی ڈالی گئی ہے :

کڑکڑاتی گرم زمین نے کسانوں کے
ننگے پیروں کو جھلس دیا ہے
سورج کی جلتی کرنوں نے کسانوں کی پیٹھ پر
گہرے نشان بنا دیئے ہیں
صبح سے شام تک کام میں گھرے رہنے کے کارن
کسان گرمی کی چنتا نہیں کرتا
وہ اپنے کام میں مشغول' دن کی روشنی کا
سد اُپیوگ کرتا ہے
کسان کے برابر ایک عورت نہیں کے برابر کپڑے پہنے
کھڑی ہے
ایک چھوٹا بچہ اُسکی چھاتی سے چپٹا ہوا ہے
وہ اپنے سیدھے ہاتھ سے بچے کھچے اناج کو جمع کر
رہی ہے
اُس کے بائیں ہاتھ میں ایک ٹوٹی ٹوکری لٹکی
ہوئی ہے
" ہم جو کچھ کاٹینگے وہ ٹیکسوں میں چلا جائے
گا" وہ کہ رہی ہے
ہم بچے کھچے اناج کو اپنی بھوک مٹانے کے لئے
بٹور رہے ہیں......

ऊपर की कविता एक जीता जागता मनजर पेश करती है. दिल में एक सिरहन पैदा कर देती है. कविता का एक एक लफ़्ज़ दिल की गहराई को छूता चला जाता है. पो की एक और कविता सुनिये. इस कविता का नाम है 'जड़ी बूटी जमा करने वाला.'

तमाम दिन मैं खेतों में इधर उधर घूमता रहा
अब मैं जड़ी बूटी की खोज करूंगा
सूरज निकलने से पहले हंसिया ले मैं निकला पड़ता
हूं, ढूंढता......
लेकिन जब शाम को सूरज छिपने के बाद
मैं घर खाली टोकरी लिये लौटता हूं.......
मैं अपनी जड़ी बूटियां बड़ी बड़ी कोठियों के
मालिकों के पास ले जाता हूं,
जिनके गालों में गढ़े पड़े हैं,
उनके घोड़ों को मज़बूत और तेज़ रफ़तार
बनाने के लिये
मैं अपनी जड़ी बेच देता हूं घोड़े के बचे खुचे
चारे के बदले में,
किस लिये, अपनी भूक मिटाने के लिये......

पाठकों को मालुम होगा कि कितना दर्द भरा है इस कविता में. आखों में आंसू आ जाते हैं. अन्दर से आवाज़ आती है कि भगवान करे कि यह तिजोरियों में रुपया बन्द कर के रखने वाले चेतें यह भी ज़रा ग़रीबों के दुख को जानें.

37 साल की उमर में पो चू इ को बादशाह का ख़ास सलाहकार मुक़र्रर किया गया. उसने बादशाह को सलाह दी कि ग़रीबों की पुकार सुने. अपने दूसरे झूटे सलाहकारों के फन्दे में न फंसें. इसके अलावा जनता की भलाई के वास्ते पो ने बहुत सी बातें बादशाह को बताईं. बादशाह के अलावा दूसरे सलाहकारों और मशीरों को भी उनका फ़र्ज़ बताया. उनको हर चन्द और बार बार समझाया कि उनका भला ग़रीबों की भलाई में है. 38 साल की उमर में उसने एक किताब लिखी. उसका नाम 'नये गीत' रखा. किताब की भूमिका में पो ने लिखा :

"......मेरी ज़बान सीधी सादी है. मामूली समझ का आदमी उसको आसानी से समझ सकता है. मैं सच बात कहता हूं. मेरी शैली बहुत आसान है और हर तरह के गानों में अपनाई जा सकती है. मेरी कविता सिर्फ़ जनता के लिये है. मैं जनता के लिये ही लिखता हूं. मैं कविता कविता के लिये ही नहीं करता."

दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई के बाद उसका एक व्यंग बहुत मशहूर हुआ. वह था—'एक बूढ़ा आदमी और उसका टूटा हुआ हाथ'. इसमें दिखाया गया है कि किस तरह एक बूढ़े आदमी ने ज़बरदस्ती फ़ौज में भरती किये जाने पर जान

اوپر کی کویتا ایک جیتا جاگتا منظر پیش کرتی ہے ۔
میں ایک سرھن پیدا کر دیتی ہے ۔ کویتا کا ایک
لفظ دل کی گہرائی کو چھوتا چلا جاتا ہے ۔ پو کی ایک
کویتا سنئے ۔ اِس کویتا کا نام ہے ۔ ' جڑی بوٹی جمع
کرنے والا ۔'

تمام دن میں کھیتوں میں اِدھر اُدھر گھومتا رہا
اب میں جڑی بوٹی کی کھوج کرونگا
سورج نکلنے سے پہلے ھنسیا لے میں
نکل پڑتا ہوں، ڈھونڈھتا..........
لیکن جب شام کو سورج چھپنے کے بعد
میں گھر خالی ٹوکری لئے لوٹتا ہوں........
میں اپنی جڑی بوٹیاں بڑی بڑی کوٹھیوں کے
مالکوں کے پاس لے جاتا ہوں
جن کے گالوں میں گڈھے پڑے ہیں،
اُن کے گھوڑوں کو مضبوط اور تیز رفتار بنانے کے لئے
میں اپنی جڑی بوٹی بیچ دیتا ہوں گھوڑے کے بچے کھچے
چارے کے بدلے میں،
کس لئے، اپنی بھوک مٹانے کے لئے........

پاٹھکوں کو معلوم ہوگا کہ کتنا درد بھرا ہے اِس کویتا میں ۔ آنکھوں میں آنسو آجاتے ہیں ۔ اندر سے آواز آتی ہے کہ بھگوان کرے کہ یہ تجوریوں میں روپیہ بند کرکے رکھنے والے چیتیں۔ یہ بھی ذرا غریبوں کے دکھ کو جانیں.

37 سال کی عمر میں پو چو اِی کو بادشاہ کا خاص صلاح کار مقرر کیا گیا ۔ اُس نے بادشاہ کو صلاح دی کہ غریبوں کی پکار سنے ۔ اپنے دوسرے جھوٹے صلاح کاروں کے پھندے میں نہ پھنسے ۔ اِس کے علاوہ جنتا کی بھلائی کے واسطے پو نے بہت سی باتیں بادشاہ کو بتائیں۔ بادشاہ کے علاوہ دوسرے صلاح کاروں اور مشیروں کو بھی اُن کا فرض بتایا ۔ اُن کو ہرچند اور بار بار سمجھایا کہ اُن کا بھلا غریبوں کی بھلائی میں ہے۔ 38 سال کی عمر میں اُس نے ایک کتاب لکھی ۔ اُس کا نام 'نئے گیت' رکھا. کتاب کی بھومکا میں پو نے لکھا :

"......میری زبان سیدھی سادی ہے۔ معمولی سمجھ کا آدمی اُسکو آسانی سے سمجھ سکتا ہے ۔ میں سچ بات کہتا ہوں ۔ میری شیلی بہت آسان ہے اور ہر طرح کے گیتوں میں اپنائی جاسکتی ہے ۔ میری کویتا صرف جنتا کے لئے ہے۔ میں جنتا کے لئے ہی لکھتا ہوں ۔ میں کویتا کویتا کے لئے ہی نہیں کرتا."

دنیا کی پہلی بڑی لڑائی کے بعد اُس کا ایک ویَنگ بہت مشہور ہوا ۔ وہ تھا—'ایک بوڑھا آدمی اور اُس کا ٹوٹا ہوا ہاتھ ۔' اِس میں دکھایا گیا ہے کہ کس طرح ایک بوڑھے آدمی نے زبردستی فوج میں بھرتی کئے جانے پر جان

बूझ कर किस तरह अपना हाथ तोड़ लिया. अपनी एक दूसरी कविता 'तू लिन का बूढ़ा किसान.' में ग़रीबों का दुख बयान करते हुए वह लिखता है:

तीसरे महीने बारिश की आशा थी
लेकिन आशा निराशा में बदल गई
एक ख़ुश्क हवा चल पड़ी
मेरे गेहूं के अंकुए अभी फूटे भी न थे
वह पीले पड़ गए और मुरझा गए
यकायक पतझड़ ऋतु में बहुत ठंड
पड़ने लगी
मेरे चावल के खेत जो अभी हरे
और अध पके थे
हाकिम आया, मुझको कुछ
ख़बर न दी
टैक्स फौरन मांगे गए
उनकी जबरन वसूली की गई
अपनी तरक़्क़ी और ख़िताब की सिर्फ़
उसको परवाह थी
टैकसों के अदा करने लिये
मैंने शहतूत के पेड़ और ज़मीन गिरवी रख दी
अब अगली फ़सल तक खाने को अनाज
तन ढकने को कपड़ा कहां से आएगा
ओ अफ़सर, तू ने मेरे तन से मेरा कपड़ा भी
छीन लिया
तू ने मेरे मुंह से मेरे दो कौर भी छीन लिये......

पो अपनी एक दूसरी कविता में रोंगटे खड़े कर देता है. कविता का नाम है—"एक बड़े आलीशान मकान पर रंज."

यह बड़ा आलीशान मकान किसके क़ब्ज़े में है.
इसकी सुन्दर खिड़कियां चौड़ी सड़क की
तरफ़ खुलती हैं
छै या सात बड़े बड़े कमरे एक दूसरे से सटे हैं
कमरों की छतों में चमकती दमकती
हरी ईंटें लगी हैं
एक एक कमरे की क़ीमत
एक एक लाख रुपया होगी
इसका मालिक क़रीब दस साल से
यहां रहता है
वह एक सरकारी ऊंचा अफ़सर भी है
उसका खाने का भंडार क़ीमती मांस से
भरा पड़ा है
उसकी तिजोरी सिक्कों से भरी पड़ी है.

بوجھ کر کس طرح اپنا ہاتھ توڑ لیا . اپنی ایک دوسری کویتا 'تو لن کا بوڑھا کسان' میں غریبوں کا دکھ بیان کرتے ہوئے وہ لکھتا ہے :

تیسرے مہینے بارش کی آشا تھی
لیکن آشا نراشا میں بدل گئی
ایک خشک ہوا چل پڑی
میرے گیہوں کے انکوئے ابھی پھوٹے بھی نہ تھے
وہ پیلے پڑ گئے اور مرجھا گئے
یکایک پت جھڑ رتو میں بہت ٹھنڈ پڑنے لگی
میرے چاول کے کھیت جو ابھی ہرے اور ادھ پکے تھے
حاکم آیا، مجھکو کچھ خبر نہ دی
ٹیکس فوراً مانگے گئے
اُن کی جبرن وصولی کی گئی
اپنی ترقی اور خطاب کی صرف اُس کو پرواہ تھی
ٹیکسوں کے ادا کرنے کے لئے
میں نے شہتوت کے پیڑ اور زمین گروی رکھ دی
اب اگلی فصل تک کھانے کو اناج
تن ڈھکنے کو کپڑا کہاں سے آئیگا ؟
او افسر، تونے میرے تن سے میرا کپڑا بھی چھین لیا
تونے میرے منھ سے میرے دو کور بھی چھین
لئے.........

پو اپنی ایک دوسری کویتا میں رونگٹے کھڑے کر دیتا ہے. کویتا کا نام ہے-- "ایک بڑے عالیشان مکان پر رنج."

یہ بڑا عالیشان مکان کس کے قبضہ میں ہے .
اس کی سندر کھڑکیاں چوڑی سڑک کی طرف
کھلتی ہیں
چھ یا سات بڑے بڑے کمرے ایک دوسرے سے سٹے
ہیں
کمروں کی چھتوں میں چمکتی دمکتی
ہری اینٹیں لگی ہیں
ایک ایک کمرے کی قیمت
ایک ایک لاکھ روپیہ ہوگی
اس کا مالک قریب دس سال سے یہاں رہتا ہے
وہ ایک سرکاری اونچا افسر بھی ہے
اس کے کھانے کا بھنڈار قیمتی مانس سے
بھرا پڑا ہے .
اس کی تجوری سکوں سے بھری پڑی ہے

मैं एक सवाल पूछ कर उसको
खबरदार कर देना चाहता हूं
क्या ग़रीबों का ख़ून भी तुम्हारी
तरह लाल नहीं है ?
क्या तुम उनका भूका रहना बर्दाश्त
कर सकते हो ?
तुम सिर्फ़ अपनी ही फ़िकर करते हो
दूसरों से तुम्हें कोई मतलब नहीं
क्या तुम एक हज़ार साल तक इसी तरह
अपनी क़िसमत पर मुसकराते रहोगे ?

जनता की भलाई चाहने वाला यह कवि बादशाह और दूसरे सलाहकारों और दरबारियों की नज़रों में खटकने लगा. उसको बदनाम किया गया. आख़िर में अपने सरकारी ओहदे से उसको हाथ धोना पड़ा. अब उसके दोस्त भी उससे कन्नी काटने लगे. वह अब पो की परछाइ से भी घबराते थे. बाद को वह हेंग चाव के कोतवाल हो गए. यह जगह चे कियांग सूबे में है.

पो चू ई ने 3840 कविताएं और 174 व्यंग लिखे.

"चिन क्यांग से क्यांग सी तक" की किताब में पो ने अपने एक दोस्त को लिखा :

"मैंने अपने इस सफ़र में क़रीब 3,000 मील का दौरा किया. मैं ने आम तौर पर अपनी कविताएं गांव के स्कूलों, होटलों, बुद्ध के मंदिरों और नावों के केबिनों पर लिखी देखीं. इसके अलावा साधुओं, पढ़े लिखे लोगों, बेपढ़ी औरतों और जवान लड़कियों को भी मैंने अपनी कविताएं गाते सुना."

पो चू ई एक महान कवि, फ़िलासफ़र और ऊंचे दरजे के राजकाजी हस्ती थे वह सच्चे मानों में जनता के लिये जिये और जनता के लिये मरे.

आज से कुछ बरस पहले बहुत कम लोग पो के नाम से वाक़िफ़ थे. लेकिन जब चीन में जनता की सरकार बनी तो वहां के पुराने शायरों और कवियों को खोज निकाला गया. इस बारे में चीन की सरकार और भी खोजें कर रही है. पो की कविताएं और व्यंग अब सिर्फ़ चीन, जापान और कोरिया में ही मशहूर नहीं हो रहे हैं बल्कि दूसरे मुल्क भी पो की कविताओं में एक नया सन्देश पाते हैं.

—राजेश सरन

میں ایک سوال پوچھ کر اس کو
خبردار کردینا چاہتا ہوں
کیا غریبوں کا خون بھی تمہاری
طرح لال نہیں ہے ؟
کیا تم ان کا بھوکا رہنا برداشت
کرسکتے ہو ؟
تم صرف اپنی ہی فکر کرتے ہو
دوسروں سے تمہیں کوئی مطلب نہیں
کیا تم ایک ہزار سال تک اسی طرح
اپنی قسمت پر مسکراتے رہوگے ؟

جنتا کی بھلائی چاہنے والا یہ کوی بادشاہ اور دوسرے [صلاح]کاروں اور درباریوں کی نظروں میں کھٹکنے لگا. [اس]کو بدنام کیا گیا. آخر میں اپنے سرکاری عہدے سے [اس]کو ہاتھ دھونا پڑا. اب اس کے دوست بھی اس سے [کنی] کاٹنے لگے. وہ اب پو کی پرچھائیں سے بھی گھبراتے [تھے]. بعد کو وہ ہینگ چاؤ کے کوتوال ہوگئے. یہ جگہ [چے] کیانگ صوبے میں ہے.

پو چو ای نے 3,840 کویتائیں اور 174 وینگ لکھے.

"چن کیانگ سے کیانگ سی تک" کی کتاب میں پو نے [اپنے] ایک دوست کو لکھا :

میں نے اپنے اس سفر میں قریب 3,000 میل کا دورہ [کیا]. میں نے عام طور پر اپنی کویتائیں گاؤں کے اسکولوں [ہوٹلوں]، بدھ کے مندروں اور ناؤں کی کیبنوں پر لکھی [دیکھی]ں. اس کے علاوہ سادھوؤں، پڑھے لکھے لوگوں، بے پڑھی [عورت]وں اور جوان لڑکیوں کو بھی میں نے اپنی کویتائیں [گاتے سن]ا.

پو چو ای ایک مہان کوی، فلاسفر اور اونچے درجے [کے] راجکاجی ہستی تھے. وہ سچے معنوں میں جنتا کے [لئے] جئے اور جنتا کے لئے مرے.

[آ]ج سے کچھ برس پہلے بہت کم لوگ پو چو ای کے نام [سے وا]قف تھے. لیکن جب چین میں جنتا کی سرکار بنی [تو و]ہاں کے پرانے شاعروں اور کویوں کو کھوج نکالا گیا. اس [بار]ے میں چین کی سرکار اور بھی کھوجیں کر رہی ہے. [پو] کی کویتائیں اور وینگ اب صرف چین، جاپان اور [کور]یا میں ہی مشہور نہیں ہو رہے ہیں بلکہ دوسرے [ملک] بھی پو کی کویتاؤں میں ایک نیا سندیش [پاتے] ہیں.

--راجیش سرن

कहानी

मुंशी जी की डकैती

भाई भाई को आपस में लड़ा देना, पड़ौसी पड़ौसी को एक दूसरे के खिलाफ़ भिड़ा देना, बाप बेटे में मन मुटाव पैदा करा देना, गांव की मुक़दमे बाज़ियों में अपना हर तरह से दख़ल रखना, जुआरियों, शराबियों, और गांव के दूसरे ख़राब आदमिओं की तरफ़दारी करना, यही व्योपार अब चौधरी रामपाल सिंह ने अपना लिया था. उन्हें अपने इसी हुनर का भरोसा था. न कोई चिन्ता, न कोई दिक़्क़त न कोई मशक़्क़त ! घर बैठे बिठाए उनके हिस्से का रुपया आ जाता था. सिर्फ़ दरोग़ा जी के पास आने जाने की तकलीफ़ ज़रूर होती थी.

चौधरी साहब ने राम बाबू को बुला कर आज ही एक लम्बा चौड़ा हाथ मारने की स्कीम बताई थी. राम बाबू को हर तरह से समझा बुझा कर सब मामला तय कर लिया. वायदा हो गया कि रात को 11 बजे में बाग़ में मिलेंगे.

राम बाबू—"बहुत अच्छा सरकार !" कह कह चला गया.

रात के बारह बज चुके थे. राम बाबू और उसके साथी बड़ी बेसबरी से चौधरी रामपाल सिंह का इंतज़ार कर रहे थे.

शराब के नशे में धुत भोला बोला—"यार, राम बाबू तू भी ख़ूब है. ख़ूब चकमा दिया. मानते हैं दोस्त तेरी इस अक़्ल को जो काम करने का मौक़ा है वह सब चौधरी साहब के इन्तज़ार में निकला जा रहा है. फिर वहां जाके क्या मुंह दिखाओगे ?"

"नहीं यार ! घबड़ा क्यों रहा है, उन्होंने मुझसे आने का पक्का वायदा किया था. चौधरी साहब रुकने वाले आसामी नहीं हैं. टाइम तो यार अभी बहुत है. आते ही होंगे." राम बाबू ने कहा.

मोहन मन ही मन में घुट रहा था. उसका चेहरा गुस्से से लाल पीला हो रहा था. मन ही मन सोच रहा था—"अच्छा लम्बा हाथ मारने आए. न इधर के रहे न उधर के. अब तक तो कहीं छोटा सा ही हाथ मार कर अपने घर पैर पसारे सोते होते. कितनी देर हो गई यहां बैठे बैठे !"

کہانی

منشی جی کی ڈکیتی

بھائی بھائی کو آپس میں لڑا دینا، پڑوسی پڑوسی کو ایک دوسرے کے خلاف بھڑا دینا، باپ بیٹے میں من مٹاؤ پیدا کرا دینا، گاؤں کی مقدمہ بازیوں میں اپنا ہر طرح سے دخل رکھنا، جواریوں، شرابیوں اور گاؤں کے دوسرے خراب آدمیوں کی طرفداری کرنا، یہی بیوپار اب چودھری رام پال سنگھ نے اپنا لیا تھا۔ اُنہیں اپنے اِسی ہنر کا بھروسہ تھا۔ نہ کوئی چنتا، نہ کوئی دقت نہ کوئی مشقت! گھر بیٹھے بٹھائے اُن کے حصہ کا روپیہ آجاتا تھا۔ صرف داروغہ جی کے پاس آنے جانے کی تکلیف ضرور ہوتی تھی۔

چودھری صاحب نے رام بابو کو بلاکر آج ہی ایک لمبا چوڑا ہاتھ مارنے کی اِسکیم بتائی تھی۔ رام بابو کو ہر طرح سے سمجھا بجھاکر سب معاملہ طے کرلیا۔ وعدہ ہوگیا کہ رات کو 11 بجے باغ میں ملیں گے۔

رام بابو—"بہت اچھا سرکار!" کہہ کر چلا گیا۔

رات کے بارہ بج چکے تھے۔ رام بابو اور اُس کے ساتھی بڑی بےصبری سے چودھری رام پال سنگھ کا اِنتظار کر رہے تھے۔

شراب کے نشے میں دھت بھولا بولا—"یار، رام بابو تو بھی خوب ہے۔ خوب چکمہ دیا۔ مانتے ہیں دوست، تیری اِس عقل کو! جو کام کرنے کا موقع ہے وہ سب چودھری صاحب کے اِنتظار میں نکلا جا رہا ہے۔ پھر وہاں جاکے کیا منھ دکھاؤگے؟"

"نہیں یار! گھبرا کیوں رہا ہے، اُنہوں نے مجھ سے آنے کا پکا وعدہ کیا تھا۔ چودھری صاحب رکنے والے آسامی نہیں ہیں۔ ٹائم تو یار ابھی بہت ہے۔ آتے ہی ہونگے۔" رام بابو نے کہا۔

موہن من ہی من میں گھٹ رہا تھا۔ اُس کا چہرہ غصے سے لال پیلا ہو رہا تھا۔ من ہی من سوچ رہا تھا—"اچھا لمبا ہاتھ مارنے آئے۔ نہ اِدھر کے رہے نہ اُدھر کے۔ اب تک تو کہیں چھوٹا سا ہی ہاتھ مار کر پیر پسارے سوتے ہوتے۔ کتنی دیر ہوگئی یہاں بیٹھے بیٹھے!"

अब उससे और ज़ियादा चुप न रहा गया. बोल ही पड़ा--"इस चौधरी की हमेशा से यही आदत रही है. होगा कहीं. क्या जाने कहीं इससे भी लम्बा हाथ मारने चला गया हो. उन्हें क्या पड़ी है! वह मौक़े पर थोड़े ही जाते हैं. मौक़े पर तो हमें जाना होता है न. वह तो बस माल का हिस्सा लेने को तैयार रहते हैं. वक़्त की उन्हें क्या चिन्ता? पिटेंगे तो हम, पकड़े जायंगे तो हम. उन्हें क्या!"

माफ़ करना भई मुझे बहुत देर हो गई. यकायक सामने आ कर चौधरी रामपाल सिंह ने कहा.

"अरे साहब! आपकी राह देखते देखते तो आंखें पथरा गई. बहुत देर कर दी सरकार! आख़िर कहां रह गए थे. सो गए थे या कहीं और दूसरी जगह चले गए थे."

"मोहन! तू तो अब बड़ा बातूनी हो गया है! चौधरी साहब ने कुछ टेढ़ी निगाह करते हुए मोहन की तरफ़ देखा. मानो उनकी आंखों का टेढ़ापन मोहन से कह रहा हो कि मैं कहीं भी गया था तू मुझसे पूछने वाला कौन होता है.

"भई! अब ज़ियादा बात करने का मौक़ा नहीं है. जल्दी करो, टाइम सब निकला जा रहा है. राम बाबू तूने सब समझ लिया न?"

"हां, सरकार! समझ तो सब लिया है."

"धोका मत खा जाना."

"नहीं हुज़ूर! लेकिन सरकार......"

राम बाबू ने बड़ी व्यग्रता के साथ कहा--"मैंने आपकी सब बातें इन सब को बता दी हैं. लेकिन यह लोग कुछ कच्चे पड़ रहे हैं"

जमींदार साहब बोले--"अरे राम बाबू! तुझे मेरे साथ रहते हुए इतने दिन हो गए और मैंने तुझसे न मालूम इस काम से कितने बड़े बड़े और काम कराए हैं और तूने ख़ुद किये हैं. क्या तू इतनी जल्दी भूल गया! अभी तो कल ही की तो बात है जब तूने मनोहर के लड़के का क़त्ल किया था. याद है न! तेरा उसमें क्या हुआ! जब तक मेरे दम में दम है मैं तेरा और तेरे इन साथियों का बाल बांका नहीं होने दूंगा. लेकिन तू तो सब जानता है तुझे यह भी मालूम है कि पिछले केस में अपने हाथ कुछ नहीं लगा. जो कुछ हिस्से में आया वह सब दरोग़ा जी की भेंट हो गया."

"हां, सरकार! आपके बल का तो हमें पूरा पूरा भरोसा है. अगर आपका भरोसा न हो हमारी क्या हस्ती है जो इस तरह से बाहर रह कर उछल कूद करें."

اب اس سے اور زیادہ چپ نہ رہا گیا. بول ہی پڑا-- "اس چودھری کی ہمیشہ سے یہی عادت رہی ہے. ہوگا کہیں. کیا جانے کہیں اِس سے بھی لمبا ہاتھ مارنے چلا گیا ہو. انہیں کیا پڑی ہے! وہ موقع پر تھوڑے ہی جاتے ہیں. موقع پر تو ہمیں جانا ہوتا ہے نہ. وہ تو بس مال کا حصہ لینے کو تیار رہتے ہیں. وقت کی انہیں کیا چنتا؟ پٹینگے تو ہم، پکڑے جائینگے تو ہم. انہیں کیا!"

"معاف کرنا بھئی مجھے بہت دیر ہوگئی" یکایک سامنے آکر چودھری رام پال سنگھ نے کہا.

"ارے صاحب! آپ کی راہ دیکھتے دیکھتے تو آنکھیں پتھرا گئیں. بہت دیر کر دی سرکار! آخر کہاں رہ گئے تھے. سو گئے تھے یا کہیں اور دوسری جگہ چلے گئے تھے."

"موہن! تو تو اب بڑا باتونی ہوگیا ہے!" چودھری صاحب نے کچھ ٹیڑھی نگاہ کرتے ہوئے موہن کی طرف دیکھا. مانو ان کی آنکھوں کا ٹیڑھاپن موہن سے کہہ رہا ہو کہ میں کہیں بھی گیا تھا تو مجھ سے پوچھنے والا کون ہوتا ہے.

"بھئی! اب زیادہ بات کرنے کا موقع نہیں ہے. جلدی کرو، ٹائم سب نکلا جا رہا ہے. رام بابو تو نے سب سمجھ لیا نہ؟"

"ہاں، سرکار! سمجھ تو سب لیا ہے."

"دھوکہ مت کھا جانا."

"نہیں حضور! لیکن سرکار......"

رام بابو نے بڑی ویگرتا کے ساتھ کہا--"میں نے آپ کی سب باتیں اِن سب کو بتادی ہیں. لیکن یہ لوگ کچھ کچے پڑ رہے ہیں."

زمیندار صاحب بولے--"ارے رام بابو! تجھے میرے ساتھ رہتے ہوئے اِتنے دن ہوگئے اور میں نے تجھ سے نہ معلوم اِس کام سے کتنے بڑے بڑے اور کام کرائے ہیں اور تو نے خود کئے ہیں. کیا تو اِتنی جلدی بھول گیا! ابھی کل ہی کی تو بات ہے جب تونے منوہر کے لڑکے کا قتل کیا تھا. یاد ہے نہ! تیرا اُس میں کیا ہوا! جب تک میرے دم میں دم ہے میں تیرا اور تیرے اِن ساتھیوں کا بال بانکا نہیں ہونے دونگا. لیکن تو تو سب جانتا ہے. تجھے یہ بھی معلوم ہے کہ پچھلے کیس میں اپنے ہاتھ کچھ نہیں لگا. جو کچھ حصے میں آیا وہ سب داروغہ جی کی بھینٹ ہوگیا."

"ہاں، سرکار! آپ کے بل کا تو ہمیں پورا پورا بھروسہ ہے. اگر آپ کا بھروسہ نہ ہوتا تو ہماری ہستی کیا ہے جو اِس طرح سے باہر رہ کر اُچھل کود کریں."

"लेकिन सरकार ! यह बात मेरे दिल में जम नहीं रही मेरा दिल न मालूम क्यों आपके इस काम से घबरा सा रहा है. गवाही नहीं देता ! जहां तक डकैती का सम्बन्ध है हम सब आसानी से उसे पूरा कर सकते हैं.लेकिन मुंशी जी के लड़के को जान से मार डालना, यह बात कुछ अपने दिल में बैठ नहीं रही है..."

"राम बाबू, तू बूढ़ा होने को आया लेकिन तुझे इतनी अक़्ल नहीं आई कि कौन आदमी हमारा हितैशी है और कौन हमारा दुशमन. तुझे याद है उसी क़त्ल वाले केस में इस मुंशी के लड़के और खुद मुंशी ने हम लोगों को फंसाने की कितनी कोशिश की थी. वह तो दरोग़ा जी की निगाह अपनी ओर सीधी थी वर्ना इन लोगों ने तो कोई कसर बाक़ी नही रक्खी थी. इस इलाक़े में अब सिर्फ़ एक यही तो ऐसा आदमी रह गया है जो हमेशा मेरी निगाह में खटकता रहता है. गांव में आए दिन हमेशा कुछ न कुछ हम लोगों के गुट के खिलाफ़ लोगों को भड़काता रहता है. इसके अलावा मुझे आज कल गांव के अन्दर और गांव से बाहर के इलाके के भी आसार और ही नज़र आ रहे हैं. इस मुंशी ने इलाके के देहातों में घूमकर न मालूम क्या एक नया जोश लोगों में पैदा कर दिया है, सब लोग उसी के गीत गाते हैं, जबकि सब मेरी रिआया है. मेरी ही ज़मीन पर रहते हैं, मेरी ही दया पर निर्भर हैं. इसलिये आगे पीछे की सब बातों को ख्याल में रखकर राम बाबू हमें यह काम करना ही होगा. इसके अलावा दरोग़ा जी तो इस आदमी से बहुत सख़्त नाराज़ हैं. हमें डरने की बात क्या है ! एक तरफ़ से धन और दूसरी तरफ़ से जन, दोनों ही पहलू हमें अपनाने हैं. लड़के के दम पर ही तो यह फ़ूना डोलता है. जब तक इसकी जड़ नही काटी जायगी, तब तक काम नही चल सकता.,,

× × ×

रात के अन्धेरे में फुस फुस हो रही थी. विचार यह था कि कोई नहीं सुन सकेगा, पत्ते भी नहीं. दम साधे नहीं सधता था. चौधरी साहब अकेले तसल्ली देते जाते थे, और बाक़ी हांप रहे थे, घबराये से थे.

राम बाबू ने अपने दिल को थामते हुए ज़मींदार साहब की बात का जवाब दिया—"हां सरकार ! अपनी जान में तो हमने कोई कसर छोड़ी नहीं ! हम तो बिलकुल मरा हुआ जानकर छोड़ आये हैं. पर सरकार ! मुझे तो उनमें से किसी ने पहचान लिया है मेरा नाम एक औरत ने लिया था."

ज़मींदार साहब ने फिर पूछा — माल कहां है और कितना हाथ लगा है !"

राम बाबू ने कहा—"नक़्द तो सिर्फ़ 500 ही है. बाक़ी का माल तो बाग़ में रक्खा है. कुछ गहने हैं और कुछ बर्तन."

"لیکن سرکار ! یہ بات میرے دل میں جم نہیں رہی . میرا دل نہ معلوم کیوں آپ کے اِس کام سے گھبرا سا رہا ہے . گواہی نہیں دیتا ! جہاں تک ڈکیتی کا سمبندھ ہے ہم سب آسانی سے اُسے پورا کرسکتے ہیں . لیکن منشی جی کے لڑکے کو جان سے مار ڈالنا' یہ بات کچھ اپنے دل میں بیٹھ نہیں رہی ہے......"

"رام بابو' تو بوڑھا ہونے کو آیا لیکن تجھے اِتنی عقل نہیں آئی کہ کون آدمی ہمارا ہتیشی ہے اور کون ہمارا دشمن. تجھے یاد ہے اُسی قتل والے کیس میں اِس منشی کے لڑکے اور خود منشی نے ہم لوگوں کو پھنسانے کی کتنی کوشش کی تھی . وہ تو داروغہ جی کی نگاہ اپنی اور سیدھی تھی ورنہ اِن لوگوں نے تو کوئی کسر باقی نہیں رکھی تھی . اِس علاقہ میں اب صرف ایک یہی تو ایسا آدمی رہ گیا ہے جو ہمیشہ میری نگاہ میں کھٹکتا رہتا ہے. گاؤں میں آئے دن ہمیشہ کچھ نہ کچھ ہم لوگوں کے گٹ کے خلاف لوگوں کو بھڑکاتا رہتا ہے . اِس کے علاوہ مجھے آجکل گاؤں کے اندر اور گاؤں سے باہر کے علاقے کے بھی آثار اور ہی نظر آ رہے ہیں . اِس منشی نے علاقے کے دیہاتوں میں گھوم کر نہ معلوم کیا ایک نیا جوش لوگوں میں پیدا کر دیا ہے. سب لوگ اُسی کے گیت گاتے ہیں جبکہ سب میری رعایا ہیں' میری ہی زمین پر رہتے ہیں' میری ہی دیا پر نربھر ہیں . اِس لئے آگے پیچھے کی سب باتوں کو خیال میں رکھکر رام بابو ہمیں یہ کام کرنا ہی ہوگا . اِس کے علاوہ داروغہ جی تو اِس آدمی سے بہت سخت ناراض ہیں . ہمیں ڈرنے کی بات کیا ہے ! ایک طرف سے دھن اور دوسری طرف سے جن' دونوں ہی پہلو ہمیں اپنانے ہیں . لڑکے کے دم پر ہی تو یہ پھولا ڈولتا ہے . جب تک اِس کی جڑ نہیں کاٹی جائیگی تب تک کام نہیں چل سکتا ."

× × ×

رات کے اندھیرے میں پھس پھس ہو رہی تھی . وچار یہ تھا کہ کوئی نہیں سن سکیگا' پتے بھی نہیں . دم سادھے نہیں سدھتا تھا . چودھری صاحب اکیلے تسلی دیتے جاتے تھے. اور باقی ہانپ رہے تھے' گھبرائے سے تھے.

رام بابو نے اپنے دل کو تھامتے ہوئے زمیندار صاحب کی بات کا جواب دیا—"ہاں سرکار ! اپنی جان میں تو ہم نے کوئی کسر چھوڑی نہیں ! ہم تو بالکل مرا ہوا جان کر چھوڑ آئے ہیں . پر سرکار ! مجھے تو اُن میں سے کسی نے پہچان لیا ہے . میرا نام ایک عورت نے لیا تھا!"

زمیندار صاحب نے پھر پوچھا—"مال کہاں ہے اور کتنا ہاتھ لگا ہے !"

رام بابو نے کہا—نقد تو صرف 500 ہی ہے. باقی کا مال تو باغ میں رکھا ہے. کچھ گہنے ہیں اور کچھ برتن ."

"गहने कितने के होंगे ?"

"जियादा से जियादा एक ढेड़ हज़ार के होंगे, उससे जियादा नहीं" राम बाबू ने जवाब दिया.

"अच्छा......ठीक है ! यह पांच सौ तो दरोग़ा जी को सवेरे ही भिजवा दिये जायंगे. इसलिये यह पांच सौ रुपए मुझे अभी दे दो. बाक़ी का फिर......"

× × ×

डकैती की छानबीन के लिये दरोग़ा जी दोपहर को गांव में पहुंचे. सीधे चौधरी रामपाल सिंह के मकान पर चले गए

"आइये !आइये !! दरोग़ा जी कैसे तकलीफ़ की आपने !"

भई यह क्या कर डाला रात को !

"कुछ नहीं साहब ! बस मामूली सी बात. उसका इतना तूल तूमार बांध दिया है ! आपने नाहक तकलीफ़ की ? मैं तो आपके पास आने ही वाला था ." चौधरी रामपाल सिंह मुसकरा मुसकरा कर कह रहे थे.

"चौधरी साहब ! सरकारी नैकरी है सरकारी ! हो चाहे जो कुछ लेकिन काग़ज़ों की खाना पुरी तो करनी ही पड़ती है !क्या करता आता नहीं तो ?'

चौधरी साहब और दरोग़ा जी की बातें हो ही रही थी . कि मुंशी जी आ पहुंचे .

"आइये आइये ! मुंशी जी ! मुझे सख्त अफ़सोस है. कम्बख्त बड़े ही ज़ालिम थे. आखिर लड़के ने क्या बिगाड़ा था ? रुपया पैसा लेने आए थे या लड़के को मारने ? मुंशी जी, सुना है कि कुछ डाकुओं को पहचान भी लिया है ."

मुंशी जी—"जी हां, पहचान तो जरूर लिया है, डाकू कौन थे ! रात दिन अपने पास बैठने उठने वालों ही में से थे !-किसको डाकू कहूं और किसको नहीं !"

"डाकुओं को पहचाना किसने था ?" दरोग़ा जी ने फिर सवाल किया .

"मेरे लड़के की बहू ने"

"लड़का कहां सो रहा था !"

"दरवाजे से घुसते ही दाहिने हाथ के कमरे में !"

"बहू कहां थी !"

"मेरे कमरे में."

"हैं...यह क्या...पति कहीं पत्नी कहीं. क्या दोनों में पटती नहीं ?" दरोगा जी ने एक दम चौंक कर पूछा.

दरोग़ा जी की इन बातों से मुंशी जी कुछ चकरा से गए. उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह मामला क्या

"گہنے کتنے کے ھونگے ؟"

"زیادہ سے زیادہ ایک ڈیڑھ ھزار کے ھونگے' اِس سے زیادہ نہیں" رام بابو نے جواب دیا .

"اچھا......ٹھیک ھے ! یہ پانچ سو تو داروغہ جی کو سویرے ھی بھجوا دیئے جائینگے . اِس لئے یہ پانچ سو روپے مجھے ابھی دے دو . باقی کا پھر......"

× × +

ڈکیتی کی چھان بین کے لئے داروغہ جی دوپہر کو گاؤں میں پہونچے . سیدھے چودھری رام پال سنگھ کے مکان پر چلے گئے .

"آیئے ! آیئے !! داروغہ جی' کیسے تکلیف کی آپنے !"

"بھئی ! یہ کیا کر ڈالا رات کو !"

"کچھ نہیں صاحب ! بس معمولی سی بات ھے . اس کا اِتنا طول تمار باندھ دیا ھے ! آپ نے ناحق تکلیف کی ؟ میں تو آپ کے پاس آنے ھی والا تھا " چودھری رام پال سنگھ مسکرا مسکرا کہہ رھے تھے .

"چودھری صاحب ! سرکاری نوکری ھے سرکاری ! ھو چاھے جو کچھ لیکن کاغذوں کی خانہ پری تو کرنی ھی پڑتی ھے ! کیا کرتا آتا نہیں تو ؟"

چودھری صاحب اور داروغہ جی کی باتیں ھو رھی تھیں کہ منشی جی آ پہونچے .

"آیئے آیئے ! منشی جی ! مجھے سخت افسوس ھے . کمبخت بڑے ھی ظالم تھے . آخر لڑکے نے کیا بگاڑا تھا ؟ روپیہ پیسہ لینے آئے تھے یا لڑکے کو مارنے ؟ منشی جی' سنا ھے کہ کچھ ڈاکوؤں کو پہچان بھی لیا ھے ."

منشی جی—" جی ھاں' پہچان تو ضرور لیا ھے' ڈاکو کون تھے ! رات دن اپنے پاس بیٹھنے اُٹھنے والوں ھی میں سے تھے ! کس کو ڈاکو کہوں اور کسکو نہیں !"

"ڈاکوؤں کو پہچانا کس نے تھا ؟" داروغہ جی نے پھر سوال کیا .

"میرے لڑکے کی بہو نے !"

"لڑکا کہاں سو رھا تھا !"

"دروازہ سے گھستے ھی داھنے ھاتھ کے کمرے میں !"

"بہو کہاں تھی !"

"میرے کمرے میں ."

"ھیں...! یہ کیا...! پتی کہیں پتنی کہیں . کیا دونوں میں پٹتی نہیں ؟" داروغہ جی نے ایک دم چونککر پوچھا .

داروغہ جی کی اِن باتوں سے منشی جی کچھ چکرا سے گئے . اُن کی کچھ سمجھ میں نہیں آ رھا تھا کہ یہ معاملہ کیا

है ! उन्होंने बदल कर कहा—

"दरोगा जी आप यह कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हैं ! मैं कुछ समझा नहीं. आपका मतलब क्या है ?"

"घबराइये नहीं, सब समझ में आ जायगा."

"यानी......"

"यानी क्या......जवान बेटा अलग....जवान बहू आपके साथ.......आपके कमरे में......आप की बीवी को मरे कितने दिन हो गये......?"

मुंशी जी ग़ुस्से में थर्राते हुए खड़े हो गये और बोले—"आपका मतलब !"

"सौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को जाय."

"दारोगा जी....."

"मतलब क्या ! ज़ाहिर है कि आप बहू को अपने पास रखते हैं, लड़के को फिर क्यों ज़िन्दा देखना चाहेंगे."

"बस ! बस !! दारोगा जी बहुत हो चुका. होश में..."

ग़ुस्से से मुंशी जी की आंखों में ख़ून उतर आया था, उनके पैर लड़खड़ा रहे थे, ज़बान से पूरी बातें नहीं निकल रही थी. उनकी आंखें डबडबा आई थीं.

दारोगा जी फिर बोले—"मुंशी जी ! आप एक पुलिस के दारोगा से बातें कर रहे हैं, ऐरा, ग़ैरा, नत्थू ख़ैरा से नहीं. ज़रा सोच समझ कर बात कीजिये."

मुंशी जी जवाब देने के बजाय उठ कर चलने लगे.

"ठहरिये ! जाते कहां हैं !" दरोगा जी ने रोब से कहा—"आपको मेरे साथ थाने चलना होगा !"

"थाने ! क्यों......"

दरोगा जी ने दो कानिस्टिबलों को इशारा किया और वह मुंशी जी के दायें बायें हो गये. फिर एक बन्द मुसकान से मुंशी जी की ओर देखा.

"कहिये अब तो चलेंगे !"

दरोगा जी ने काग़ज़ निकाल कर लिखना शुरू किया—लड़के की मौत ! डकैती !! इन सब का जुर्म मुंशी जी के सिर मढ़ा गया. इसकी ख़ास वजह लड़के की जवान बहू से नाजायज़ ताल्लुक़.

दरोगा जी गर्व के साथ लिख रहे थे. बीच बीच में चौधरी साहब, राम बाबू, मोहन और उनके दूसरे साथी बोल पड़ते थे—"हां साहब ! इनका तो बहुत पुराना ताल्लुक़ है. इसे गांव में कौन नहीं जानता !"

रिपोर्ट लिख कर पूरी कर ली गई. गवाहों में से चौधरी साहब, राम बाबू, और मोहन ख़ास थे.

सारे गांव में सन्नटा था ! हर तरफ़ ख़ामोशी थी.

दरोगा जी मुंशी जी को लिये थाने की ओर चले जा रहे थे.

चौधरी रामपाल सिंह मूंछों पर ताव देते हुए रामबाबू के कंधे पर हाथ मार कर कह रहे थे—"देखा तूने, इस तरह से काम होता है."

—चेतन कुमार शर्मा

ہے انہوں نے کہا—

"داروغہ جی، آپ یہ کیسی بہکی بہکی باتیں کر رہے ہیں! میں کچھ سمجھا نہیں۔ آپ کا مطلب کیا ہے؟"

"گھبرائیے نہیں، سب سمجھ میں آجائے گا۔"

"یعنی......"

"یعنی کیا......جوان بیٹا الگ......جوان بہو آپ کے ساتھ......آپ کے کمرے میں......آپ کی بیوی کو مرے کتنے دن ہوگئے......؟"

منشی جی غصہ میں تھراتے ہوئے کھڑے ہوگئے اور بولے—"آپ کا مطلب!"

"سو سو چوہے کھائے بلی حج کو جائے۔"

"داروغہ جی..."

مطلب کیا! ظاہر ہے کہ آپ بہو کو اپنے پاس رکھتے ہیں، لڑکے کو پھر کیوں زندہ دیکھنا چاہیں گے۔"

"بس! بس!! داروغہ جی بہت ہو چکا۔ ہوش میں......" غصہ سے منشی جی کی آنکھوں میں خون اتر آیا تھا۔ ان کے پیر لڑکھڑا رہے تھے۔ زبان سے پوری بات نہیں نکل رہی تھی۔ ان کی آنکھیں ڈبڈبا آئی تھیں۔

داروغہ جی پھر بولے—"منشی جی! آپ ایک پولیس کے داروغہ سے باتیں کر رہے ہیں، ایرا غیرا نتھو خیرا سے نہیں۔ ذرا سوچ سمجھکر بات کیجئے۔"

منشی جی جواب دینے کے بجائے اٹھکر چلنے لگے۔

"ٹھہریئے! جاتے کہاں ہیں!" داروغہ جی نے رعب سے کہا—"آپ کو میرے ساتھ تھانے چلنا ہوگا!"

"تھانے! کیوں......"

"داروغہ جی نے کانسٹیبلوں کو اشارہ کیا اور وہ منشی جی کے دائیں بائیں ہوگئے۔ پھر ایک بند مسکان سے منشی جی کی اور دیکھا۔

"کہئے اب تو چلینگے!"

داروغہ جی نے کاغذ نکالکر لکھنا شروع کیا—لڑکے کی موت! ڈکیتی!! ان سب کا جرم منشی جی کے سر مڑھا گیا۔ اسکی خاص وجہ لڑکے کی جوان بہو سے ناجائز تعلق۔"

داروغہ جی گرو کے ساتھ لکھ رہے تھے۔ بیچ بیچ میں چودھری صاحب، رام بابو، موہن اور ان کے دوسرے ساتھی بول پڑتے تھے—"ہاں صاحب! ان کا تو بہت پرانا تعلق ہے۔ اسے گاؤں میں کون نہیں جانتا!"

رپورٹ لکھکر پوری کر لی گئی۔ گواہوں میں سے چودھری صاحب، رام بابو اور موہن خاص تھے۔

سارے گاؤں میں سناٹا تھا! ہر طرف خاموشی تھی۔

داروغہ جی منشی جی کو لئے تھانے کی اور چلے جارہے تھے۔

چودھری رام پال سنگھ مونچھوں پر تاؤ دیتے ہوئے رام بابو کے کندھے پر ہاتھ مار کر کہ رہے تھے—"دیکھا تونے، اس طرح سے کام ہوتا ہے۔"

—چیتن کمار شرما

बम्बई की आरे कालोनी

बम्बई से चालीस पचास मील दूर, आरे नाम से एक बस्ती खड़ी हो गई है. यह बस्ती सिर्फ़ दूध का काम करती है. आस पास की बस्तियां छोड़ सारे बम्बई शहर को आरे बस्ती दूध भेजती है. बम्बई के हर निवासी की ज़ुबान पर उसका नाम सुना जा सकता है.

मैं इसी सितम्बर महीने में बम्बई था. सोलह दिन रहा. जिनके घर ठहरा था उनके घर आरे बस्ती का दूध पीने को मिला. दूध में अपने ढंग की गंध थी, ऐसी न थी जिसे बुरी कहा जा सके. एक तरह अच्छी थी. थोड़ी आग पा कर दूध गाढ़ा हो जाता था. पीने में अच्छा लगता था. पूछना पड़ा—इतना अच्छा दूध कहां से मिलता है? इस सवाल के जवाब में घर भर ने आरे के दूध के कारखाने की तारीफ़ करना शुरू कर दिया. घर की मालकिन ने भी कम तारीफ़ नहीं की. तारीफ़ सुन कर दूध बस्ती देखने को जी मचल पड़ा. दूसरे दिन बम्बई से निकलने वाले 'नवभारत' में यह ख़बर पढ़ने को मिली कि किसी लेडी डाक्टर ने दूध की जांच की और उस में पाव इंच से पौन इंच तक के पीले रंग के सूत जैसे कीड़े पाये गये. यह ख़बर पढ़ कर जी चाहा, जल्दी से जल्दी आरे बस्ती जाया जाय, उस कारख़ाने को देखा जाय.

जाने से पहले मैंने और कई जानकारों की जानकारी हासिल करना चाही. वह मिल गई. पता चला आरे बस्ती अपना दूध चौदह आने सेर बेचती है, अपने यहां का दूसरा दूध जिसका नाम 'टिन्ड-मिल्क' या बनावटी दूध है उसे आठ आना सेर बेचती है. यह सुनकर माथा ठनका. इसी सिलसिले में यह भी मालूम हुआ कि बोरीविली के पास एक और आदर्श दुग्धालय है जो अपना दूध सोलह आने या अठारह आने सेर बेचता है. कभी कभी उसका भाव बीस आने सेर हो जाता है.

यह भी पता चला कि आदर्श दुग्धालय का दूध मंहगा होने की वजह से बम्बई शहर में नहीं खपता. आस पास की बस्तियों तक ही रह जाता है. यह भी पता चला कि आदर्श दुग्धालय किसी कम्पनी की चीज़ है और आरे का दूध कारख़ाना बम्बई सरकार की चीज़ है. सरकार की चीज़ है तो, पर उसकी कमेटी इतनी बलवान है कि वह हमेशा सरकार के क़ाबू से बाहर रहती है. इस बात में सचाई कितनी है इसे बम्बई सरकार जाने.

इस जानकारी के तुरत बाद ऐसे साधन जुट गये कि मैं दूसरे दिन आरे बस्ती देखने चल दिया. बस्ती देखकर मेरे मन पर यह असर रह गये.

بمبئی کی آرے کالونی

بمبئی سے چالیس پچاس میل دور، آرے نام سے ایک بستی کھڑی ہوگئی ہے. یہ بستی صرف دودھ کا کام کرتی ہے. آس پاس کی بستیاں چھوڑ سارے بمبئی شہر کو آرے بستی دودھ بھیجتی ہے. بمبئی کے ہر نواسی کی زبان پر اس کا نام سنا جا سکتا ہے.

میں اسی ستمبر مہینے میں بمبئی تھا. سولہ دن رہا. جن کے گھر ٹھہرا تھا اُن کے گھر آرے بستی کا دودھ پینے کو ملا. دودھ میں اپنے ڈھنگ کی گندھ تھی، ایسی نہ تھی جسے بری کہا جا سکے. ایک طرح اچھی تھی. تھوڑی آگ پا کر دودھ گاڑھا ہو جاتا تھا. پینے میں اچھا لگتا تھا. پوچھنا پڑا—اتنا اچھا دودھ کہاں سے ملتا ہے؟ اس سوال کے جواب میں گھر بھر نے آرے کے دودھ کے کارخانے کی تعریف کرنا شروع کر دی. گھر کی مالکن نے بھی کم تعریف نہ کی. تعریف سن کر دودھ بستی دیکھنے کو جی مچل پڑا. دوسرے دن بمبئی سے نکلنے والے 'نو بھارت' میں یہ خبر پڑھنے کو ملی کہ کسی لیڈی ڈاکٹر نے دودھ کی جانچ کی اور اس میں پاؤ انچ سے پون انچ تک کے پیلے رنگ کے سوت جیسے کیڑے پائے گئے. یہ خبر پڑھکر جی چاہا، جلدی سے جلدی آرے بستی جایا جائے، اُس کارخانے کو دیکھا جائے.

جانے سے پہلے میں نے اور کئی جانکاروں سے جانکاری حاصل کرنا چاہی. وہ مل گئی. پتہ چلا آرے بستی اپنا دودھ چودہ آنے سیر بیچتی ہے، اپنے یہاں کا دوسرا دودھ جس کا نام 'ٹنڈ ملک' یا بناوٹی دودھ ہے اُسے آٹھ آنہ سیر بیچتی ہے. یہ سن کر ماتھا ٹھنکا. اسی سلسلے میں یہ بھی معلوم ہوا کہ بوری ولی کے پاس ایک اور آدرش دگدھالیہ ہے جو اپنا دودھ سولہ آنہ یا اٹھارہ آنہ سیر بیچتا ہے. کبھی کبھی اس کا بھاؤ بیس آنہ سیر ہو جاتا ہے.

یہ بھی پتہ چلا کہ آدرش دگدھالیہ کا دودھ مہنگا ہونے کی وجہ سے بمبئی شہر میں نہیں کھپتا. آس پاس کی بستیوں تک ہی رہ جاتا ہے. یہ بھی پتہ چلا کہ آدرش دگدھالیہ کسی کمپنی کی چیز ہے اور آرے کا دودھ کارخانہ بمبئی سرکار کی چیز ہے. سرکار کی چیز ہے تو، پر اس کی کمیٹی اتنی بلوان ہے کہ وہ ہمیشہ سرکار کے قابو سے باہر رہتی ہے. اس بات میں سچائی کتنی ہے اسے بمبئی سرکار جانے.

اس جانکاری کے ترت بعد ایسے سادھن جٹ گئے کہ میں دوسرے دن آرے بستی دیکھنے چل دیا. بستی دیکھکر میرے من پر یہ اثر رہ گئے.

(1) बस्ती, देखने में, बड़ी खूबसूरत और बहुत साफ़ है. हर देखने वाले का मन खींचती है.

(2) मशीनों का चलना, बोतलों की सफ़ाई, बर्तनों की सफ़ाई, हर आदमी देखकर वाह वाह करने लगता है. बच्चों के लिये बोतलों का, साफ़ होकर, अपने आप दूध लेने चलना तमाशा बन जाता है. इस तमाशे की ख़ातिर इतनी भीड़ हो जाती है कि देखने वालों को बाहर खड़ा रहना पड़ता है. एक जत्था देख ले, तब दूसरे की बारी आती है.

(3) मशीन की सफ़ाई और मशीन के पंपों की सफ़ाई, सुना, कि होती है. पर जिस वक़्त होती है उस वक़्त देखने वालों को देखने की इजाज़त नहीं होती. इस विषय में सवाल जवाब से हमारे मन पर यह असर पड़ा कि यह सफ़ाई ऐसी नहीं होती जैसी होनी चाहिये; शायद ऐसी हो भी नहीं सकती जैसी होनी चाहिये. बड़े बड़े कारख़ानों में इस बुराई से नहीं बचा जा सकता. इस बुराई को दूर करने के लिये कारख़ाने वाले विज्ञान की मदद लेते हैं. ऐसी चीज़ों से काम लेते हैं जिनसे जर्म्स मर जायं यानी वह कीड़े नष्ट हो जांय जो आंख से दिखाई नहीं देते और जो तरह तरह की बीमारी पैदा करते हैं.

(4) जब हम कारख़ाने के उस हिस्से में पहुंचे जहां बनावटी दूध तैयार होता है, तो पता लगा आस्ट्रेलिया से मक्खन निकाले दूध का सूखा चूरन मनियों डिब्बों में बंद कारख़ाने में आता है. वह एक मन गरम पानी में पौने चार सेर के हिसाब से मिलाया जाता है. जहां मिलाया जाता है वह जगह खुली है. जिस बर्तन में मिलाया जाता है उसका मुंह डेढ़ दो फ़ुट से कम व्यास का नहीं. वह ढका नहीं जा सकता. दूध का आटे जैसा चूरन, बर्तन के इधर उधर बिखरा रहता है. कभी कभी देखने वाले उसे उंगली से चाट कर देख भी लेते हैं. यही दूध आठ आने सेर बम्बई में मिलता है. इसे देख कर लेडी डाक्टर की कीड़ों वाली बात समझ में आने में देर न लगी.

(5) जहां बनावटी दूध बने वहां असली दूध बिकना ठीक नहीं. हाथ कते बुने कपड़े की दूकान पर खद्दर भंडार ने कभी मिल के सूत और हाथ के बुने कपड़े की बिक्री की इजाज़त नहीं दी. ऐसा होने से हमारे मन पर यह असर रह जाय कि ख़ालिस दूध भी बम्बई वालों को ख़ालिस नहीं मिलता, बेजा नहीं.

(6) बस्ती में कई हज़ार भैंस हैं. ख़ूब तन्दुरुस्त हैं. इनके रहने की जगह इतनी साफ़ है कि कोई सेठ भी अपनी एक दो गाय भैंस के लिये इतनी साफ़ जगह नहीं रख सकता. देखने वाली सब सफ़ाई यहां पूरी पूरी मिलती है, पर दूध दुहे जाने के बाद जिन बर्तनों में

(1) بستی، دیکھنے میں، بڑی خوبصورت اور بہت صاف ہے۔ ہر دیکھنے والے کا من کھینچتی ہے۔

(2) مشینوں کا چلنا، بوتلوں کی صفائی، برتنوں کی صفائی، ہر آدمی دیکھکر واہ واہ کرنے لگتا ہے۔ بچوں کے لئے بوتلوں کا، صاف ہو کر، اپنے آپ دودھ لینے چلنا تماشہ بن جاتا ہے۔ اس تماشہ کی خاطر اتنی بھیڑ ہوجاتی ہے کہ دیکھنے والوں کو باہر کھڑا رہنا پڑتا ہے۔ ایک جتھا دیکھ لے، تب دوسرے کی باری آتی ہے۔

(3) مشین کی صفائی اور مشین کے پمپوں کی صفائی، سنا کہ ہوتی ہے۔ پر جس وقت ہوتی ہے اس وقت دیکھنے والوں کو دیکھنے کی اجازت نہیں ہوتی۔ اس وشے میں سوال جواب سے ہمارے من پر یہ اثر پڑا کہ یہ صفائی ایسی نہیں ہوتی جیسی ہونی چاہئے؛ شائد ایسی ہو بھی نہیں سکتی جیسی ہونی چاہئے۔ بڑے بڑے کارخانوں میں اس برائی سے نہیں بچا جا سکتا۔ اس برائی کو دور کرنے کے لئے کارخانے والے وگیان کی مدد لیتے ہیں۔ ایسی چیزوں سے کام لیتے ہیں جن سے جرمس مر جائیں یعنی وہ کیڑے نشٹ ہو جائیں جو آنکھ سے دکھائی نہیں دیتے اور جو طرح طرح کی بیماری پیدا کرتے ہیں۔

(4) جب ہم کارخانے کی اس حصے میں پہنچے جہاں بناوٹی دودھ تیار ہوتا ہے، تو پتہ لگا آسٹریلیا سے مکھن نکالے دودھ کا سوکھا چورن منیوں ڈبے میں بند کارخانے میں آتا ہے۔ وہ ایک من گرم پانی میں پونے چار سیر کے حساب سے ملایا جاتا ہے۔ جہاں ملایا جاتا ہے، وہ جگہ کھلی ہے۔ جس برتن میں ملایا جاتا ہے اس کا منہ ڈیڑھ دو فٹ سے کم ویاس کا نہیں وہ ڈھکا نہیں جا سکتا۔ دودھ کا آٹے جیسا چورن، برتن کے ادھر ادھر بکھرا رہتا ہے۔ کبھی کبھی دیکھنے والے اسے انگلی سے چاٹ کر دیکھ بھی لیتے ہیں۔ یہی دودھ آٹھ آنے سیر بمبئی میں ملتا ہے۔ اسے دیکھکر لیڈی ڈاکٹر کی کیڑوں والی بات سمجھ میں آنے دیر نہ لگی۔

(5) جہاں بناوٹی دودھ بنے وہاں اصلی دودھ بکنا ٹھیک نہیں۔ ہاتھ کتے بنے کپڑے کی دوکان پر کھدر بھنڈار نے کبھی مل کے سوت اور ہاتھ کے بنے کپڑے کی بکری کی اجازت نہیں دی۔ ایسا ہونے سے ہمارے من پر یہ اثر رہ جائے کہ خالص دودھ بھی بمبئی والوں کو خالص نہیں ملتا، بیجا نہیں۔

(6) بستی میں کئی ہزار بھینسیں ہیں۔ خوب تندرست ہیں۔ ان کے رہنے کی جگہ اتنی صاف ہے کہ کوئی سیٹھ بھی اپنی ایک دو گائے بھینس کے لئے اتنی صاف جگہ نہیں رکھ سکتا۔ دیکھنے والی سب صفائی یہاں پوری پوری ملتی ہے، پر دودھ دہے جانے کے بعد جن برتنوں میں

जाता है और कारखाने में जा कर जिस तरह वह मशीन में डाला जाता है वह तरीक़ा ऐसा नहीं जिसे पूरा साफ़ कहा जा सके. उसे देख कर उन आदमियों का जी उस दूध को पीने को तैयार नहीं हो सकता जिन्होंने अपने घर में दूध के बर्तनों की सफ़ाई देखी है. इस दृश्य का भी मन पर अच्छा प्रभाव नहीं रहा.

(7) कारख़ाने देखने का टिकट भी लगता है. बम्बई जैसे शहर में यह ठीक है, पर जो आदमी चालीस पचास मील उसे देखने आता है, उसे ज़रूर अखरता होगा. यह दूसरी बात है कि जहां उसने इतना रेल किराया दिया है वहां दो चार आने बड़ी बात नहीं.

(8) देखने वालों के साथ जैसा बर्ताव होना चाहिये वैसा नहीं होता. टिकट लगाने पर तो इसका और भी ज़ियादा ख़्याल रखना चाहिये.

हम देख कर वापस चले आए. उसी दिन 'नव भारत' में यह ख़बर मिली कि जो ख़बर आरे बस्ती के दूध के बारे में छपी थी कि उसमें कीड़े निकले वह ग़लत है. इसे पढ़कर हमारे मन पर यह असर पड़ा कि कारख़ाने वाले, शायद सरकार भी, सचाई दबाने की कोशिश करते हैं.

तीसरे दिन फिर अख़बारों में यह पढ़ने को मिला कि कीड़ों वाली ख़बर ठीक थी पर वह कीड़े दूध में नहीं निकले थे, अस्पताल के बर्तन में थे. इसी सिलसिले में यह ख़बर भी पढ़ने को मिली कि कीड़े निकलने की शिकायत एक दो बार पहले भी हो चुकी है.

बम्बई इतना बड़ा शहर है और इतना सभ्य हो गया है कि वह सभ्यता के इस ऐब से तो नहीं बच सकता कि नासाफ़ दूध उसे पीने को न मिले पर इससे तो बच ही सकता है कि आस्ट्रेलिया से दूध का चूरन मंगा कर अपनी दूध पीने की इच्छा को पूरा न करे. और यह तो बम्बई सरकार को भी शोभा नहीं देता कि वह आस्ट्रेलिया से दूध के डिब्बे मंगाए और उनसे ऐसे कारख़ाने में दूध तैयार कराए जहां से वह शुद्ध दूध देने का दावा करती है.

—भगवानदीन

... اور کارخانے میں جاکر جس طرح وہ ... میں ڈالا جاتا ہے وہ طریقہ ایسا نہیں ... پورا صاف کہا جاسکے. اُسے دیکھکر اُن آدمیوں کا ... دودھ کو پینے کو تیار نہیں ہوسکتا جنہوں نے ... دودھ کے برتنوں کی صفائی دیکھی ہے. اِس ... بھی من پر اچھا پربھاؤ نہیں رہا.

(7) کارخانے دیکھنے کا ٹکٹ بھی لگتا ہے. بمبئی ... شہر میں یہ ٹھیک ہے، پر جو آدمی چالیس ... میل اُسے دیکھنے آتا ہے، اُسے ضرور اَکھرتا ہوگا. یہ ... بات ہے کہ جہاں اُس نے اِتنا ریل کرایہ دیا ہے ... دو چار آنے بڑی بات نہیں.

(8) دیکھنے والوں کے ساتھ جیسا برتاؤ ہونا چاہئے ... نہیں ہوتا. ٹکٹ لگانے پر تو اِس کا اور بھی زیادہ ... رکھنا چاہئے.

... دیکھکر واپس چلے آئے. اُسی دن 'نو بھارت' میں ... خبر ملی کہ جو خبر آرے بستی کے دودھ کے بارے ... چھپی تھی کہ اُس میں کیڑے نکلے وہ غلط ہے. اِسے ... ہمارے من پر یہ اثر پڑا کہ کارخانے والے، شاید سرکار ... سچائی دبانے کی کوشش کرتے ہیں.

... تیسرے دن پھر اخباروں میں یہ پڑھنے کو ملا کہ ... والی خبر ٹھیک تھی پر وہ کیڑے دودھ میں نہیں ... اسپتال کے برتن میں تھے. اِسی سلسلے میں ... خبر بھی پڑھنے کو ملی کہ کیڑے نکلنے کی شکایت ... دو بار پہلے بھی ہوچکی ہے.

... بمبئی اِتنا بڑا شہر ہے اور اِتنا سبھیہ ہوگیا ہے کہ وہ ... سبھیتا کے اِس عیب سے تو نہیں بچ سکتا کہ ناصاف ... اُسے پینے کو نہ ملے پر اِس سے تو بچ ہی سکتا ہے ... آسٹریلیا سے دودھ کا چورن منگاکر اپنی دودھ پینے کی ... کو پورا نہ کرے. اور یہ تو بمبئی سرکار کو بھی ... نہیں دیتا کہ وہ آسٹریلیا سے دودھ کے ڈبے ... اور اُن سے ایسے کارخانے میں دودھ تیار کرائے ... سے وہ شدھ دودھ دینے کا دعوٰی کرتی ہے.

—بھگوان دین

पीकिंग से ख़त

प्रिय नागर,

अपराधी हूं, एक ज़माने से तुम्हें लिखा नहीं. चीन आने के पहले ही लिखने वाले वाला था पर व्यस्त रहने के कारन लिख न सका. हज़ार कोशिश की पर समय न मिला. और आज हज़ारों मील दूर पीकिंग से लिख रहा हूं. यक़ीन है, देर के लिये बुरा न मानोगे.

पीकिंग पहली अक्तूबर की तैयारी में लगा है. तैयारियां शांति सम्मेलन के लिये बड़े ज़ोर से हो रही हैं. एशिया और दोनों अमरीका के अधिकतर देशों से प्रतिनिधि पहुंच गए हैं. कुछ आज पहुंच रहे हैं. इनकी एक बड़ी तादाद अब तक चीन पहुंच चुकी है. और पीकिंग की राह में हैं. कुछ प्रतिनिधियों को मौसम ख़राब होने से प्राग और मास्को रुक जाना पड़ा है. कुहरा छटा कि वह उड़े. बहुत से योरोपियन जो प्रतिनिधि नहीं हैं राजधानी में हैं. वह मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधि के रूप में पहली अक्तूबर के जलसे में शामिल होने आए हैं. विदेशियों के अलावा चीन की उन कमगिनत जातियों के प्रतिनिधि भी यहां हैं जिन्हें सरकार ख़ास कोशिश से सुखी रखती है. उनके रंग बिरंगे लिबास मन को बरबस खींच लेते हैं.

शान्ति सम्मेलन पहले की तय की हुई तारीख़ पर शुरू नहीं हो रहा है. किसी ने सुझाया कि इस तरह के सम्मेलन की शुरुआत हमारे गांधी के जन्म दिन 2 अक्तूबर को होनी चाहिये. सुझाव को पंख लग गए. डेलीगेशन से डेलीगेशन वह उड़ चला. वह दिन, जो एक ऐसे राजकाजी महात्मा के जन्म से पवित्र हो चुका हो, जो शान्ति के लिये ही जिया, शान्ति के लिये ही मरा, निश्चय ही ऐसे मौक़े के लिये मौज़ूं था. सभी प्रतिनिधि मंडलों ने सुझाव के पक्ष में मंज़ूरी दे दी. संसार की जनता गांधी को कितना प्यार करती है, नागर, उसके अमन के उसूलों की कितनी क़ायल है! आज 25 है और कल 26, और दूसरी अक्तूबर है हफ़्ते भर बाद. बड़ी अहम बात है, नागर, हफ़्ते भर कानफ़रेन्स को टाल देना. हफ़्ता भर रुके रहना कुछ आसान नहीं, न उनके लिये जो हज़ारों मील चल कर यहां पहुंचे हैं, न उन्हीं के लिये जो इतने आलम की मेहमांनवाज़ी करते हैं. बाहर से आने वालों का तो लमहा लमहा अनमोल है और उनका हफ़्ते भर रुक जाना, अमन और हिन्दुस्तान के लिये हद दर्जे का उत्साह और आदर ज़ाहिर करता है. काश,! हिन्दुस्तान के हमारे भाई इस राज़ को समझ पाते! पर मुझे डर है कि जो "जनतंत्र कहलाने वाली दुनिया" की ख़बरों की एजेंसियां कन्ट्रोल करते हैं वह इस तरह की

پیکنگ سے خط

پریہ ناگر،

اپرادھی ہوں، ایک زمانہ سے تمہیں لکھا نہیں. چین آنے کے پہلے ہی لکھنے والا تھا پر ویست رہنے کے کارن لکھ نہ سکا. ہزار کوشش کی پر سمے نہ ملا. اور آج ہزاروں میل دور پیکنگ سے لکھ رہا ہوں. یقین ہے، دیر کے لئے برا نہ مانو گے.

پیکنگ پہلی اکتوبر کی تیاری میں لگا ہے. تیاریاں شانتی سمے لن کے لئے بڑے زور سے ہو رہی ہیں. ایشیا اور دونوں امریکہ کے ادھک تر دیشوں سے پرتی ندھی پہونچ گئے ہیں. کچھ آج پہونچ رہے ہیں. ان کی ایک بڑی تعداد اب تک چین پہونچ چکی ہے. اور پیکنگ کی راہ میں ہیں. کچھ پرتی ندھیوں کو موسم خراب ہونے سے پراگ اور ماسکو رک جانا پڑا ہے. کہرا چھٹا کہ وہ اڑے. بہت سے یوروپین جو پرتی ندھی نہیں ہیں راجدھانی میں ہیں. وہ متر راشٹروں کے پرتی ندھی کے روپ میں پہلی اکتوبر کے جلسے میں شامل ہونے آئے ہیں. ودیشیوں کے علاوہ چین کی ان کم گنت جاتیوں کے پرتی ندھی بھی یہاں ہیں جنہیں سرکار خاص کوشش سے سکھی کر رہی ہے. ان کے رنگ برنگے لباس من کو بربس کھینچ لیتے ہیں.

شانتی سمے لن پہلے کی طے کی ہوئی تاریخ پر شروع نہیں ہو رہا ہے. کسی نے سجھایا کہ اس طرح کے سمے لن کی شروعات ہمارے گاندھی کے جنم دن 2 اکتوبر کو ہونی چاہئے. سجھاؤ پنکھ لگ گئے. ڈیلی گیشن وہ سے ڈیلی گیشن اڑ چلا. وہ دن، جو ایک ایسے راجکاجی مہاتما کے جنم سے پوتر ہوچکا ہو، جو شانتی کے لئے ہی جیا، شانتی کے لئے ہی مرا، نشچے ہی ایسے موقعہ کے لئے موضوع تھا. سبھی پرتی ندھی منڈلوں نے سجھاؤ کے پکش میں منظوری دے دی. سنسار کی جنتا گاندھی کو کتنا پیار کرتی ہے، ناگر، اس کے امن اصولوں کی کتنی قائل ہے! آج 25 ہے اور کل ہے 26، اور دوسری اکتوبر ہے ہفتے بھر بعد. بڑی اہم بات ہے، ناگر، ہفتہ بھر کانفرنس کو ٹال دینا. ہفتہ بھر رکے رہنا کچھ آسان نہیں، نہ ان کے لئے جو ہزاروں میل چل کر یہاں پہونچے ہیں، نہ انہیں کے لئے جو اتنے عالم کی مہمان نوازی کرتے ہیں. باہر سے آنے والوں کا تو لمحہ لمحہ انمول ہے اور ان کا ہفتہ بھر رک جانا، امن اور ہندستان کے لئے حد درجہ کا اُتساہ اور آدر ظاہر کرتا ہے. کاش! ہندستان کے ہمارے بھائی اس راز کو سمجھ پاتے! پر مجھے ڈر ہے کہ جو "جن تنتر کہلانے والی دنیا" کی خبروں کی ایجنسیاں کنٹرول کرتے ہیں وہ اس طرح کی

ख़बरों को कहीं छपने नहीं देंगे और यह भारती नुक़्ते नज़र की जीत अन्धेरे में ही पड़ी रह जायगी. पर आवाज़ है कि क़ब्र की छाती फाड़ पुकार उठती है, नूर है कि सौ स्याह परतों को छेद जाता है !

ग़रज़ यह कि मुझे चीन और उसके बाशिन्दों को देखने जानने को एक हफ़्ता और मिल गया. और इस मौक़े का मैं यक़ीनन सही इस्तेमाल करूंगा. शांति समिति ख़ुद बेकार नहीं बैठी है. रोज़ बरोज़ नई व पुरानी जगहें दिखाने का इन्तज़ाम करती है. हम आज ही चीन की महान दीवार देखने गए थे. नीचे उसका ब्यौरा देता हूं, यक़ीन है पसन्द आएगा.

सुबह आठ बजे ही तैयार हो गया था. दीवार देखने जाने वालों से बैठक भर गई थी. हम में से ज़ियादातर के लिये यह ज़िन्दगी का पहला मौक़ा था क्योंकि चीन की दीवार, तुम जानते हो आख़िर तुम्हारे लखनऊ की हज़रत गंज की सड़क नहीं जहां तुम जब चाहो अपनी "क़ानूनन चहलक़दमी" कर लेते हो. रेलवे प्लेटफ़ार्म भी इसी तरह की दुनिया की क़रीब क़रीब सारी जातियों के प्रतिनिधियों से भरा था, हवा में चुहल भरी थी, हंसी के फ़व्वारे छूट रहे थे. बधाइयां, स्वागत के शब्द, कान में कहे मुहब्बत भरे शब्द अनजानी ज़बानों में अनजाने मुहावरों में हवा में लहरा रहे थे. कितनी तरह की ज़बानें इसका तुम अटकल नहीं लगा सकते. आवाज़ें प्यार से बोझिल पर ऐसी कि कोई भाशा का माहिर उनका वर्गीकरन न कर सके. हां, पर ना समझ को भी अपने भाव से भर देने वाली. पूरब और पच्छिम का सही सम्मिलन !

नई और बिलकुल मार्डन, स्पेशल ट्रेन हमें देहात पार ले चली, पीकिंग की विशाल भूरी दीवारों के साए में, हम चले, बार बार दीवारें दूर खो जातीं, बार बार उनके परकोटे सिर पर क़िले उठाए हमारे ऊपर छा जाते, हाथ बढ़ाते उंगलियां उन्हें छू लेतीं, ट्रेन हरे भरे मैदानों के बीच हमें ले चली. काओ लियांग के हिलते हरे खेतों के बीच, पुराने सरहदी शहर नानकाऊ के परे, उधर चिहली की पहाड़ियों में उसने हमें ला उतारा.

महान दीवार दूर के छितिज (उफ़क़) को चूमती, पहाड़ों के सिरों पर फिरती क़ुदरत के माथे पर पहने हुए हार की तरह लग रही है. दैत्य की सी उसकी पहरू बुरजियां, दैत्य के से उसके दौड़ते परकोटे, अनन्त कड़ियों की अनन्त शृंखला ! दीवारें, जो देश की हमेशा से रखवाली रही हैं, पहाड़ों के ऊपर अनोखी ख़ूबसूरत आकाश-रेखा बना रही हैं. तुर्क, हून, खीतान, नूचेन, मंगोल और बर्बर— किसने समय समय पर इन पहरूओं को लांघने की कोशिश नहीं की ? किसने जब तब इसके परकोटे जहां तहां न छेद दिये ? जब तब बुरजियों के पहरों के बावजूद भी क्यों

کو کہیں چھپنے نہیں دینگے اور یہ بھارتی نقطہ نظر کی جیت اندھیرے میں ہی پڑی رہ جائیگی. پر آواز ہے کہ قبر کی چھاتی پھاڑ پکار اُٹھتی ہے، نور ہے کہ سو سیاہ پرتوں کو چھید جاتا ہے ۔

غرض یہ کہ مجھے چین اور اُس کے باشندوں کو دیکھنے جاننے کو ایک ہفتہ اور مل گیا۔ اور اِس موقعہ کا میں یقیناً صحیح اِستعمال کرونگا ۔ شانتی سمیتی خود بیکار نہیں بیٹھی ہے ۔ روز بروز نئی و پرانی جگہیں دکھانے کا انتظام کرتی ہے۔ ہم آج ہی چین کی مہان دیوار دیکھنے گئے تھے. نیچے اُس کا بیورا دیتا ہوں، یقین ہے پسند آئیگا.

صبح آٹھ بجے ہی تیار ہو گیا تھا ۔ دیوار دیکھنے جانے والوں سے بیٹھک بھر گئی تھی ۔ ہم میں سے زیادتر کے لئے یہ زندگی کا پہلا موقعہ تھا کیونکہ چین کی دیوار، تم جانتے ہو آخر تمہارے لکھنؤ کی حضرت گنج سڑک نہیں جہاں تم جب چاہو اپنی "قانونن چہل قدمی" کر لیتے ہو. ریلوے پلیٹ فارم بھی اُسی طرح کی دنیا کی قریب قریب ساری جاتیوں کے پرتی ندھیوں سے بھرا تھا، ہواؤں چہل بھری تھی، ہنسی کے فوارے چھوٹ رہے تھے. بدھائیاں، سواگت کے شبد کان میں کہے محبت بھرے شبد ان جانی زبانوں میں انجانے محاوروں میں ہوا میں لہرا رہے تھے ۔ کتنی طرح کی زبانیں اس کا تم اٹکل نہیں لگا سکتے ۔ آوازیں پیار سے بوجھل پر ایسی کہ کوئی بھاشا کا ماہر اُن کا ورگی کرن نہ کر سکے ۔ ہاں، پر ناسمجھ کو بھی اپنے بھاؤ سے بھر دینے والی. پورب اور پچھم کا صحیح سملن !

نئی بالکل ماڈرن، اسپیشل ٹرین ہمیں دیہات پار لے چلی، پیکنگ کی وشال بھوری دیواروں کے سائے میں، ہم چلے، بار بار دیواریں دور کھو جاتیں، بار بار اُن کے پرکوٹے سر پر قلعہ اُٹھائے ہمارے اوپر چھا جاتے ۔ ہاتھ بڑھاتے انگلیاں اُنہیں چھو لیتیں ۔ ٹرین ہرے بھرے میدانوں کے بیچ ہمیں لے چلی۔ کاؤ لیانگ کے ہلتے ہرے کھیتوں کے بیچ، پرانے سرحدی شہر نان کاؤ کے پرے، اُدھر چیہلی کی پہاڑیوں میں اُس نے ہمیں لا اُتارا ۔

مہان دیوار دور کے چھتیج (اُفق) کو چومتی، پہاڑوں کے سروں پر پھرتی قدرت کے ماتھے پر پہنے ہوئے ہار کی طرح لگ رہی ہے ۔ دیتیہ کی سے اُس کی پہرو برجیاں، دیتیہ کے سے اُس کے دوڑتے پرکوٹے اننت کڑیوں کی اننت شرنکھلا ! دیواریں، جو دیش کی ہمیشہ سے رکھوالی رہی ہیں، پہاڑوں کے اوپر انوکھی خوبصورت آکاش ریکھا بنا رہی ہیں ۔ ترک، ہون، کھیتان، نوچین، منگول اور بربر— کس نے سمے سمے پر اِن پہروؤں کو لانگھنے کی کوشش نہیں کی؟ کس نے جب تب اِس کے پرکوٹے جہاں تہاں نہ چھید دیئے؟ جب تب برجیوں کے پہروں کے باوجود بھی برابر

कामयाब हो गए. और वही 'जब तब' की बबर सफलताएं चीन का 'दुर्भाग्य' बन गईं, उसके पैरों की फ़ौलादी बेड़ियां.

एक बार मैंने इस चीनी दीवार पर भी कुछ लिखा था. तुमने मेरी हाल की किताब 'बुरजियों के पीछे' तो पढ़ी ही होगी. याद है, तुम्हें इसकी एक कापी भेजी थी. उसी में चीन की दीवार भी थी, पर तब मैंने इस पर दूर से लिखा था और वह दूरी ज़माने और ज़मीन दोनों की थी. आज उसकी चोटी पर चढ़ कर मैं दोनों को लांघ रहा हूं—ज़माने को भी, ज़मीन को भी !

यह चियांग लिंग चुयाओ का छोटा स्टेशन पीकिंग से क़रीब 70 मील दूर है, नौ बजे राजधानी से चले थे. एक बजे दीवार के नीचे आ खड़े हुए. दीवार का मशहूर दरवाज़ा 'पाता लिंग' स्टेशन से बस चन्द मिनट की दूरी पर है. दिन का खाना ट्रेन में ही सबने खा लिया था और हम बग़ैर एक मिनट खोए पैदल बढ़ चले.

गिरोह में पैदल चलने में भी बड़ा मज़ा आता है. बूढ़े और जवान यकसां चुसती से चले. अलीम, गोपालन, और मैं साथ साथ चल रहे थे. साथ ही अमृत भी थे. लड़कियां हिरनों की तरह उछल रही थीं. पेरिन, सरला, पंकज, श्री मती चटोपाध्याय और श्रीमती मेहता का एक झुंड था, पाकिस्तान के सर सिकन्दर हयात ख़ां की कन्या और पुत्र वधू का दूसरा. दल के बाद दल, टूटे परकोटे से हम दीवार की बग़ल में पहुंचे और चढ़ाई शुरू हो गई.

चोटी तक पहुंचने का हमने इरादा किया था पर वहां पहुंचना कुछ आसान न था फिर भी शुरू की चढ़ाई ऐसी कुछ मुश्किल भी न थी. हम ताज़ा थे. चहल क़दमी करते, उछलते दौड़ते चढ़ चले, पर जैसे जैसे चढ़ाई सीधी होती चली वैसे ही वैसे हमारे पैर थकने लगे. हमारी चाल धीमी हो गई. कुछ रुक चले. कुछ धीमे हो चले, कुछ राह में आराम करते चले. एकाएक मैंने महाराज जी (गुजरात के हरिशंकर जी व्यास, पच्छिमी भारत के बड़े बुज़ुर्ग कांग्रेसी नेता हैं) के दीवार को दूसरी ओर नीचे चट्टानों पर उछलते उतरते देखा. वह चोटी तक चढ़ चुके थे और अब वहां से उतर रहे थे जहां हम चढ़ते जा रहे थे. ताज्जुब ! 70 बरस के यह बूढ़े, जो बहुत नम्र और शालीनता (फ़राख़दिली) में अनोखे हैं चोटी पर पहुंचने वालों में पहले थे. हमने उन्हें झाड़ियों के बीच पहाड़ी चट्टानों से हो कर उतरने को मना किया और उन्हें परकोटे के ऊपर खींच लिया. हम ऊपर चढ़ते गए. धक्के देते और खाते एक दूसरे को संभालते. इसराइल के बूढ़े और महिला अब बैठ गए. पार लगाना उनके बस की बात न था. अमरीकी दल, उनके बीच आकर्षक श्रीमती गार्डनर, चढ़ाई चढ़ता रहा.

کامیاب ہوگئے۔ اور وہی 'جب تب' کی بربر سپھلتائیں چین کا 'دربھاگیہ' بن گئیں' اس کے پیروں کی فولادی بیڑیاں .

ایک بار میں نے اِس چینی دیوار پر بھی کچھ لکھا تھا . تم نے میری حال کی کتاب 'برجیوں کے پیچھے' تو پڑھی ہی ہوگی. یاد ہے' تمہیں اِس کی ایک کاپی بھیجی تھی. اُسی میں چین کی دیوار بھی تھی' پر تب میں نے اِس پر دور سے لکھا تھا اور وہ دوری زمانہ اور زمین دونوں کی تھی. آج اُس کی چوٹی پر چڑھکر میں دونوں کو لانگھ رہا ہوں زمانہ کو بھی' زمین کو بھی !

یہ چیانگ لنگ چیاؤ کا چھوٹا اِسٹیشن پیکنگ سے قریب 70 میل دور ہے . نو بجے راجدھانی سے چلے تھے. ایک بجے دیوار کے نیچے آ کھڑے ہوئے. دیوار کا مشہور دروازہ 'پاتا لنگ' اِسٹیشن سے بس چند منٹ کی دوری پر ہے. دن کا کھانا ٹرین میں ہی سب نے کھا لیا تھا اور اب ہم بغیر ایک منٹ کھوئے پیدل بڑھ چلے .

گروہ میں پیدل چلنے میں بھی بڑا مزا آتا ہے. بوڑھے اور جوان یکساں چستی سے چلے . علیم' گوپالن اور میں ساتھ ساتھ چل رہے تھے ساتھ ہی امرت بھی تھے . لڑکیاں ہرنوں کی طرح اُچھل رہی تھیں. پیرن' سرلا' پنکج' شریمتی چٹوپادھیائے اور شریمتی مہتا کا ایک جھنڈ تھا . پاکستان کے سر سکندر حیات خاں کی کنیا اور پتر ودھو کا دوسرا . دل کے بعد دل' ٹوٹے پرکوٹے سے ہم دیوار کی بغل میں پہونچے اور چڑھائی شروع ہوگئی .

چوٹی تک پہونچنے کا ہم نے اِرادہ کیا تھا پر وہاں پہونچنا کچھ آسان نہ تھا . پھر بھی شروع کی چڑھائی ایسی کچھ مشکل بھی نہ تھی. ہم تازہ تھے. چہل قدمی کرتے' اُچھلتے دوڑتے چڑھ چلے' پر جیسے جیسے چڑھائی سیدھی ہوتی چلی ویسے ہی ویسے ہمارے پیر تھکنے لگے. ہماری چال دھیمی ہو گئی . کچھ رک چلے' کچھ دھیمے ہو چلے' کچھ راہ میں آرام کرتے چلے . اِکا ایک میں نے مہاراج جی (گجرات کے ہری شنکر جی ویاس' پچھمی بھارت کے بڑے بزرگ کانگریسی نیتا ہیں) کو دیوار کے دوسری اور نیچے چٹانوں پر اُچھلتے اُترتے دیکھا. وہ چوٹی تک چڑھ چکے تھے اور اب وہاں سے اُتر رہے تھے جہاں ہم چڑھتے جا رہے تھے. تعجب ! 70 برس کے یہ بوڑھے' جو بہت نمر اور شالینتا (فراخ دلی) میں انوکھے ہیں چوٹی پر پہونچنے والوں میں پہلے تھے . ہم نے اُنہیں جھاڑیوں کے بیچ پہاڑی چٹانوں سے ہوکر اُترنے کو منع کیا اور اُنہیں پرکوٹے کے اوپر کھینچ لیا . ہم اوپر چڑھتے گئے . دھکے دیتے اور کھاتے ایک دوسرے کو سنبھالتے . اِسرائیل کے بوڑھے اور مہیلا اب بیٹھ گئے . پار لگانا اُن کے بس کی بات نہ تھا . امریکی دل' اُن کے بیچ آکرشک شریمتی گارڈنر چڑھائی چڑھتا رہا .

दिलों को छूती हुई हंसी, कभी न भूलने वाला बिरादराना ! ग़ैर बनावटी दोस्ती ! थक चला था पर पहाड़ों की चोटी पर चढ़ कर, पहाड़ों की ऊंचाई को नीचा दिखाने का लोभ बर्दाश्त न कर सका. हालां कि ऐसा करना महज़ अब 'फार्म' की बात थी क्योंकि मैं चोटी तक क़रीब क़रीब पहुंच ही गया था. उमा शंकर शुक्ल ने जो ऊपर से आए थे ऐसा कहा भी. बड़े प्यारे हैं यह गुजराती कवि और आलोचक. उनका परिचय पाकर नागर, तुम खुश होते. हालांकि मुझे शक है कि उनमें भी तुम्हारी तरह उन भूमध्य सागर के किनारे के पुराने सोदागरों के ख़ून की रवानी है जो पच्छिमी किनारे पर पुराने ज़माने में आ बसे थे. और वह मेरी तरह सिर्फ़ आलोचक भी नहीं हैं. आलोचक जो, चैनिंग पोलक के शब्दों में, सिखाता तो दौड़ना है पर ख़ुद जिसे पैर नहीं होते ! उमा शंकर कवि भी हैं और ऊंचे तब्क़े के.

फिर भी मैं कुछ सीढ़ियां और चढ़ ही गया. सीधा खड़ा हो चारों तरफ़ देखा. दूर तक फैली पहाड़ों की चोटियां, कहीं एक दूसरे के बराबर दौड़ती, कहीं एक से निकल कर दूसरे में खो जाती. दूर के क्षितिज में उनका छोर विलीन हो गया था. दीवार और पहाड़ों की क़तार, पहाड़ों की क़तार और दीवार, हद नज़र तक 1500 मील लम्बी, हिमालय की लम्बाई के बराबर. कभी घाटियों में डूबती, कभी पहाड़ की चोटियों पर चढ़ती, दूर तक फैली दीवार, और उसके वह परकोटे, क़िले और बुरजियां. युगों के तेज से चमकते हुए. वह महान दीवार नान काऊ दर्रे की पहाड़ियों से ऊपर होती उन ऊंची चोटियों के घेरे करती सांप की चाल से चली जाती है जिन पर इमारत का तो क्या आदमी का पैर टिकना मुश्किल है, जहां तहां उसमें कुंडलियां बन गई हैं जो उस पहाड़ी सूनेपन में डर पैदा करती हैं बहुत पुरानी रीत रिवाज़ और आज के बीच बनी वह दीवार ज़माने की बदलती तसवीरों को जैसे वह देख रही है. अशोक के राज काल के आस पास ही उसे क्रूर समराट चिन शिह हुआंग ती ने 214 ईसा से पहले बनवाया था. बदनाम समराट हुआंग ती ने विद्वानों का दमन और उनकी पुस्तकों को जला कर इतिहास में अपना नाम काला किया था. लेकिन महान दीवार का निर्मान उसकी अमर शोहरत का कारन हुआ. चीन का महान देश मामूली तरीक़े से पच्छिम में तिब्बत के ऊंचे पहाड़ों से महफ़ूज़ था. दक्खिन में यांगत्सी से और पूरब में समुद्र से लेकिन उत्तर ग़ैर महफ़ूज़ था. उसी तरफ़ से चीन हिम्मती हमलावरों की बेरहमी का शिकार था. चीन के इस खुले दरवाज़े का फ़ायदा उत्तर के उन बर्बरों ने उठाया जो यकायक देश के ख़ुशहाल मैदानों में उतर आते, उनके नगरों को बर्बाद कर देते, उनके असहाय निवासियों को तलवार के घाट उतार

دلوں کو چھوتی ہوئی ہنسی، کبھی نہ بھولنے والا برادرانہ! غیر بناوٹی دوستی! تھک چلا تھا پر پہاڑوں کی چوٹی پر چڑھکر، پہاڑوں کی اونچائی کو نیچا دکھانے کا لوبھ برداشت نہ کر سکا۔ حالانکہ ایسا کرنا محض اب 'فارم' کی بات تھی کیونکہ میں چوٹی تک قریب قریب پہونچ ہی گیا تھا۔ اما شنکر شکل نے جو اوپر سے آئے تھے ایسا کہا بھی۔ بڑے پیارے ہیں یہ گجراتی کوی اور آلوچک۔ ان کا پریچے پا کر ناگر، تم خوش ہوتے۔ حالانکہ مجھے شک ہے کہ ان میں بھی تمہاری طرح ان بھومدھیہ ساگر کے کنارے کے پرانے سوداگروں کے خون کی روانی ہے جو پچھمی کنارے پر پرانے زمانہ میں آ بسے تھے۔ اور وہ میری طرح صرف آلوچک بھی نہیں ہیں۔ آلوچک جو، چیننگ پولک کے شبدوں میں، سکھاتا تو دوڑنا ہے پر خود جسے پیر نہیں ہوتے! اما شنکر کوی بھی ہیں اور اونچے طبقے کے۔

پھر بھی میں کچھ سیڑھیاں اور چڑھ ہی گیا۔ سیدھا کھڑا ہو چاروں طرف دیکھا۔ دور تک پھیلی پہاڑوں کی چوٹیاں، کہیں ایک دوسرے کے برابر دوڑتی، کہیں ایک سے نکل کر دوسرے میں کھو جاتی۔ دور کے چھتج میں ان کا چھور ولین ہو گیا تھا۔ دیوار اور پہاڑوں کی قطار، پہاڑوں کی قطار اور دیوار، حد نظر تک 1500 میل لمبی، ہمالیہ کی لمبائی کے برابر۔ کبھی گھاٹیوں میں ڈوبتی، کبھی پہاڑ کی چوٹیوں پر چڑھتی، دور تک پھیلی دیوار۔ اور اس کے وہ پرکوٹے قلعہ اور برجیاں۔ یگوں کے تیج سے چمکتے ہوئے۔ وہ مہان دیوار نان کاؤ درّے کی پہاڑیوں سے اوپر ہوتی ان اونچی چوٹیوں کے گھیرے کرتی سانپ کی چال سے چلی جاتی ہے جن پر عمارت کا تو کیا آدمی کا پیر ٹکنا مشکل ہے۔ جہاں تہاں اس میں کنڈلیاں بن گئی ہیں جو اس پہاڑی سونے پن میں ڈر پیدا کرتی ہیں۔ بہت پرانی ریت رواج اور آج کے بیچ بنی وہ دیوار زمانے کی بدلتی تصویروں کو جیسے وہ دیکھ رہی ہے۔ اشوک کے راج کال کے آس پاس ہی اسے کرور سمراٹ چن شیہ ہوآنگتی نے 214 عیسیٰ سے پہلے بنوایا تھا۔ بدنام سمراٹ ہو آنگتی نے ودوانوں کا دمن اور ان کی پستکوں کو جلا کر اتہاس میں اپنا نام کالا کیا تھا۔ لیکن مہان دیوار کا نرمان اسکی امر شہرت کا کارن ہوا۔ چین کا مہان دیش معمولی طریقے سے پچھم میں تبت کے اونچے پہاڑوں سے محفوظ تھا۔ دکھن میں یانگتسی سے اور پورب میں سمندر سے۔ لیکن اتر غیر محفوظ تھا۔ اسی طرف سے چین ہمتی حملہ وروں کی بے رحمی کا شکار تھا۔ چین کے اس کھلے دروازہ کا فائدہ اتر کے ان بربروں نے اٹھایا جو یکایک دیش کے خوشحال میدانوں میں اتر آتے، ان کے نگروں کو برباد کر دیتے۔ ان کے اسہائے نواسیوں کو تلوار کے گھاٹ اتار

देते. हुआंगती ने जो अब रेगिस्तान से समुद्र तक का स्वामी था, दुश्मनों के सामने मुल्क की हिफ़ाज़त के लिये दीवार खड़ी कर देने का इरादा किया. उसके हुकम से उसके मशहूर सेनापति मेंग तिएन ने दीवार खड़ी कर दी. दस लाख आदमी लगे कुछ राज के रूप में, कुछ चौकीदारों के रूप में, बाक़ी सब मज़दूरों के रूप में. सिर्फ़ इन्सान की ताक़तों ने दस साल के अन्दर वह जादू की दीवार खड़ी कर दी. लेकिन लाखों मज़दूर दीवार खड़ी होने के पहले ही उसकी नींव में दरगोर हो गए. उनसे कहीं जियादा तादाद में वह थे जो घायल हो कर ज़िन्दगी भर के लिये बेकार हो गए. इसी लिये नया चीन, जैसे पुराने चीन के भी कुछ विचारवान लोग महान दीवार को ज़ुल्म और बेरहमी का निशान मानते हैं. वह विशाल इमारत वास्तव में ग़ैर मामूली है, लेकिन सामन्ती सदियों के दौरान में कितनी ही इमारतें ऐसी बनी हैं जिन्हें बनाने वाले हाथ बेकार हो गए हैं, बेकार कर दिये गये हैं. जो भी हो महान दीवार इतनी लम्बी चौड़ी है कि वह मुल्क की एक क़ुदरती सरहद बन गई है. चीन की क़रीब क़रीब सारा उत्तरी सरहद को घेरती हुई वह अटूट रेखा दूर के पच्छिमी कानसू के रेगिस्तान से पूरब के प्रशान्त महा सागर के किनारे तक पहुंचती है. जितना सामान इसमें लगा है, जानकारों का कहना है कि अगर उससे भू मध्य रेखा पर ज़मीन को घेरा जाय तो वह 8 फ़िट ऊंची 3 फ़िट मोटी वेस्टन के रूप में सारी ज़मीन को घेर लेगी.

पहरे की बुरजियों में बराबर फ़ौज रहती थी जो एक अजीब सिगनल के ज़रिये बहुत कम वक़्त में, एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज को सैकड़ों मील दूर ख़बर भेज देती थी. और सामराज की फ़ौज दीवार के नीचे आकर उन बर्बरों के ख़िलाफ़ तैयार हो जाती जो लूट खसोट की खोज में बराबर दीवार के एक सिरे से दूसरे तक घूमते रहते थे. नान काऊ का दर्रा हमेशा से चीन से दूर मंगोलिया जाने वाले क़ाफ़िलों का रास्ता रहा है. इसी की तरह और दर्रे भी और दिशाओं में जाते थे जिससे दीवार में रास्ते बनाने पड़ते थे. आज तो कई जगह उसे तोड़ कर रेल और दूसरे आने जाने के साधनों के लिये रास्ते बना लिये गये हैं, दीवार हमारे पास क़रीब 30 फ़ीट ऊंची है. और उसका परकोटा नीचे 25 फ़ीट चौड़ा है. ख़तरे की जगहें ठोस बनावट से मज़बूत कर ली गई हैं. ऊपर ईंटें लगी हैं और बाहरी दीवार की मज़बूती के लिये दोहरा परकोटा दौड़ता है.

हम दौड़ते,कूदते, ढेले बिखरी ईंटों और पत्थरों पर चलते नीचे उतरे. सीढ़ियों से नीचे और नीचे आख़ीर में ज़मीन पर, पृथ्वी माता पर आ खड़े हुए.

دیتے. ھوانگتی نے جو اب ریگستان سے سمندر تک کا سوامی تھا، دشمنوں کے سامنے ملک کی حفاظت کے لئے دیوار کھڑی کر دینے کا ارادہ کیا. اُس کے حکم سے اس کے مشہور سینا پتی مینگ تیئن نے دیوار کھڑی کر دی. دس لاکھ آدمی لگے کچھ راج کے روپ میں، کچھ چوکیداروں کے روپ میں، باقی سب مزدوروں کے روپ میں. صرف انسان کی طاقتوں نے دس سال کے اندر وہ جادو کی دیوار کھڑی کر دی. لیکن لاکھوں مزدور دیوار کھڑی ہونے کے پہلے ہی اُس کی نیو میں در گور ہوگئے. اُن سے کہیں زیادہ تعداد میں وہ تھے جو گھائل ہو کر زندگی بھر کے لئے بیکار ہوگئے. اِسی لئے نیا چین، جیسے پرانے چین کے بھی کچھ وچار وان لوگ مہان دیوار کو ظلم اور بے رحمی کا نشان مانتے ہیں. وہ وشال عمارت واستو میں غیر معمولی ہے. لیکن سامنتی صدیوں کے دوران میں کتنی ہی عمارتیں ایسی بنی ہیں جنہیں بنانے والے ہاتھ بیکار ہو گئے ہیں، بیکار کر دیئے گئے ہیں. جو بھی ہو مہان دیوار اتنی لمبی چوڑی ہے کہ وہ ملک کی ایک قدرتی سرحد بن گئی ہے. چین کی قریب قریب ساری اُتری سرحد کو گھیرتی ہوئی وہ اٹوٹ ریکھا دور کے پچھمی کان سو کے ریگستان سے پورب کے پرشانت مہا ساگر کے کنارے تک پہونچتی ہے. جتنا سامان اس میں لگا ہے، جانکاروں کا کہنا ہے کہ اگر اس سے بھومدھیہ ریکھا پر زمین کو گھیرا جائے تو وہ 8 فٹ اونچی 3 فٹ موٹی ویسٹن کے روپ میں ساری زمین کو گھیر لے گی.

پہرے کی برجیوں میں برابر فوج رہتی تھی جو ایک عجیب سگنل کے ذریعہ بہت کم وقت میں ایک برج سے دوسرے برج کو سیکڑوں میل دور خبر بھیج دیتی تھی، اور سامراج کی فوج دیوار کے نیچے آ کر اُن بربروں کے خلاف تیار ہو جاتی جو لوٹ کھسوٹ کی کھوج میں برابر دیوار کے ایک سرے سے دوسرے سرے تک گھومتے رہتے تھے. نان کاؤ کا درہ ہمیشہ سے چین سے دور منگولیا کے جانے والے قافلوں کا راستہ رہا ہے. اِسی کی طرح اور درے بھی اور دشاؤں میں جاتے تھے جس سے دیوار میں راستے بنانے پڑتے تھے. آج تو کئی جگہ اُسے توڑ کر ریل اور دوسرے آنے جانے کے سادھنوں کے لئے راستے بنا لئے گئے ہیں. دیوار ہمارے پاس قریب 30 فٹ اونچی ہے اور اُس کا پرکوٹا نیچے 25 فٹ چوڑا ہے. خطرے کی جگہوں ٹھوس بناوٹ سے مضبوط کر لی گئیں ہیں. اوپر اینٹیں لگی ہیں اور باہری دیوار کی مضبوطی کے لئے دوہرا پرکوٹا دوڑتا ہے.

ہم دوڑتے کودتے، ڈھیلے بکھری اینٹوں اور پتھروں پر چلتے نیچے اترے. سیڑھیوں سے نیچے اور نیچے. آخر میں زمین پر، پرتھوی ماتا پر آ کھڑے ہوئے.

बहुत से आगे चले गए थे, बहुत से पीछे थे. सब उस छोटे स्टेशन की ओर थके, हंसते, किलकते चले जा रहे थे कुछ ने झाड़ियों और जंगलों में अपना रास्ता खो कर फिर ढूंढ कर अपनी हिम्मत का सबूत दिया था. छोटे स्टेशन पर जीवन का स्रोत यकायक फूट पड़ा. तरह तरह की पीने की हज़ारों बोतलें खुलने और तेज़ी से ख़ाली होने लगीं. हम कई सौ थे. और चढ़ाई और धूप का असर असल में हम पर हुआ था, हालांकि वह हमारे ख़ुशी और आनन्द को कम नहीं कर सके.

ट्रेन चार बजे पीकिंग को रवाना हुई. तीन घंटे जैसे तीन मिनटों में गुज़र गए. और होटल पहुंचते ही सब अपने अपने कमरों को भागे. दौड़ धूप ख़ासी हुई थी. आराम की ज़रूरत सब को थी. बिस्तर में पड़ा महान दीवार की सी इमारतों की बे ज़रूरतों पर मैं देर तक विचार करता रहा. क्या ऐसी इमारतें, ख़ुद यह महान दीवार ही कभी ख़ूनी क़बीलों के हमले रोक सकी? शायद एक हद तक. शायद किसी हद तक नहीं. जो भी हो उनमें लगी बेशुमार मेहनत, धन, अनगिनत जीवन का नाश किसी भी सूरत में नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता.

इसीलिये नया चीन इस तरह की इमारतों की ममता छोड़ उस तरह के निर्मान में लगा हुआ है जो कम से कम वक़्त में मानव का कल्यान करेंगे. विश्वामित्र ने घोषना की थी—"गुह्यं ब्रवीमि न मानुषात श्रेष्ठ तरंहि किंचित." (भेद की बात कहता हूं. मनुष्य से बढ़ कर कुछ भी नहीं.") इस रहस्य का भेद माओ से ज़ियादा किसी और ने नहीं पाया.

नागर, फोटो के उन नेगेटिवों के लिये अनेक धन्यवाद जो चित्रा लिखती है, उसे मिल गए हैं. जब मैं चीन की ओर चला था, तुम्हारे बच्चे अभी बीमार ही थे. विश्वास है कि वह अब स्वस्थ हो गए होंगे. मेरी ओर से उन्हें प्यार करना, पत्नी को नमस्कार कहना.

स्नेह,

तुम्हारा
भगवत शरन

بہت سے آگے چلے گئے تھے، بہت سے پیچھے تھے۔ سب اس چھوٹے اسٹیشن کی اور تھکے، ہنستے، کلکتے چلے جا رہے تھے۔ کچھ نے جھاڑیوں اور جنگلوں میں اپنا راستہ کھو کر ڈھونڈھ کر اپنی ہمت کا ثبوت دیا تھا۔ چھوٹے اسٹیشن پر جیون کا سروت یکایک پھوٹ پڑا۔ طرح طرح کی پینے کی ہزاروں بوتلیں کھلنے اور تیزی سے خالی ہونے لگیں۔ ہم کئی سو تھے۔ اور چڑھائی اور دھوپ کا اثر اصل میں ہم پر ہوا تھا۔ حالانکہ وہ ہمارے خوشی اور آنند کو کم نہیں کر سکے۔

ٹرین چار بجے پیکنگ کو روانہ ہوئی۔ تین گھنٹے جیسے تین منٹوں میں گذر گئے۔ اور ہوٹل پہونچتے ہی سب اپنے اپنے کمروں کو بھاگے۔ دوڑ دھوپ خاص ہوئی تھی۔ آرام کی ضرورت سب کو تھی۔ بستر میں پڑا مہان دیوار کی سی عمارتوں کی بے ضرورتوں پر میں دیر تک وچار کرتا رہا۔ کیا ایسی عمارتیں، خود یہ مہان دیوار ہی کبھی خونی قبیلوں کے حملے روک سکی؟ شائد ایک حد تک۔ شائد کسی حد تک نہیں۔ جو بھی ہو ان میں لگی بے شمار محنت، دھن، انگنت جیون کا ناش کسی بھی صورت میں نظرانداز نہیں کیا جا سکتا۔

اسی لئے نیا چین اس طرح کی عمارتوں کی ممتا چھوڑ اس طرح کے نرمان میں لگا ہوا ہے جو کم سے کم وقت میں مانو کا کلیان کریگی۔ وشوامتر نے گھوشنا کی تھی—"گہیم بروییمی نامانوشات۔ سریشٹھ ترنگھی کنچت" (بھید کی بات کہتا ہوں۔ منوشیہ سے بڑھکر کچھ بھی نہیں!) اس رہسیہ کا بھید ماؤ سے زیادہ کسی اور نے نہیں پایا۔

ناگر، فوٹو کے ان نیگیٹیوں کے لئے انیک دھنیہ باد جو چترا لکھتی ہے، اسے مل گئے ہیں۔ جب میں چین کی اور چلا تھا، تمہارے بچے ابھی بیمار ہی تھے۔ وشواس ہے کہ وہ اب سوستھ ہوگئے ہونگے۔ میری اور سے انہیں پیار کرنا، پتنی کو نمسکار کہنا۔

سنیہ،

تمہارا
بھگوت شرن

समाजवाद और साम्यवाद

एक तरह से इन दोनों में इतना कम अन्तर है कि कोई भी समाजवाद को साम्यवाद और साम्यवाद को समाजवाद कह सकता है. साम्यवाद जैसी चीज़ अमल में कहीं है नहीं. रूस और चीन साम्यवादी कहलाते ज़रूर हैं पर वह तो अभी समाजवाद की पूरी मंज़िल नहीं पार कर पाये. हम बहुत बड़ी बात कह गये हैं, पर हमने यह बात ज़िम्मेदारी के साथ कही है. साम्यवाद सचमुच आदमी के लिये आदर्शवाद है. वह समझ में भले ही जल्दी आ जाय पर अमल में आना बेहद मुश्किल है. साम्यवाद समाज की उस अवस्था का नाम है जब समाज के लिये सरकार की हैसियत से कुछ करने के लिये रह ही नहीं जाता. थोड़े शब्दों में समाज के हर आदमी के दिल में यह बैठ जाना कि वह रैयत भी है और राजा भी—इसी का नाम है साम्यवाद. यह आसान काम नहीं. शायद मुश्किल भी नहीं, महा मुश्किल है.

अगर हम यह कहें कि समाजवाद लड़कपन की हालत का नाम है और साम्यवाद जवानी का तो ऊपर की बात थोड़ी कमज़ोर पड़ जाती है. हर लड़का जवान हो जाता है पर समाजवाद आज तक साम्यवाद का रूप लेते नहीं देखा गया. रूस चीन यह दलील देकर कि जब तक सारी दुनिया में समाजवाद न फैल जाय तब तक उनके देशों में साम्यवाद अपने पूरे रूप में नहीं खिल सकता, हमारा समर्थन ही करते मालूम होते हैं. समाजवाद और साम्यवाद को एक तरह और भी समझा जा सकता है. अगर समाज दुकान का रूप ले ले तो यह कहलायगा समाजवाद, अगर घर का रूप ले ले तो यह होगा साम्यवाद. पढ़ने वाले अब सोच कर देखलें कि जितना साम्यवाद कहने और समझने में आसान है, करने में आसान नहीं. हां, साम्यवाद का आदर्श सामने रख कर समाज की भलाई में लगना हर तरह ठीक. समाज से यहां मतलब मानव समाज से है, रूसी, चीनी, जापानी हिन्दुस्तानी, अंगरेज़ी, अमरीकी समाज से नहीं. विश्व बंधुत्व यानी जगत भाई चारे की आवाज़ उठाई जा सकती है, उस पर अमल नहीं किया जा सकता. दस बीस, लाख दो लाख, करोड़ दो करोड़ भी अगर अमल के लिये तैयार हो जाएं तब भी साम्यवाद के आदर्श को नहीं पहुंचा जा सकता. अब क्या इतनी मुश्किल चीज़ के लिये लोगों को कोशिश करनी चाहिये?

चांद सूरज को निशाना बना कर तीर फेंकने की कोशिश करना कुछ एक की नज़र में पागलपन हो सकता है, फेंकने वाले की नज़र में नहीं. वह आये दिन अपनी

سماج واد اور سامیہ واد

ایک طرح سے ان دونوں میں اتنا کم انتر ہے کہ کوئی بھی سماج واد کو سامیہ واد اور سامیہ واد کو سماج واد کہہ سکتا ہے۔ سامیہ واد جیسی چیز عمل میں کہیں ہے نہیں۔ روس اور چین سامیہ وادی کہلاتے ضرور ہیں پر وہ تو ابھی سماج واد کی پوری منزل نہیں پار کر پائے۔ ہم بہت بڑی بات کہہ گئے ہیں، پر ہم نے یہ بات ذمہ داری کے ساتھ کہی ہے۔ سامیہ واد سچ مچ آدمی کے لئے آدرش واد ہے۔ وہ سمجھ میں بھلے ہی جلدی آ جائے پر عمل میں آنا بے حد مشکل ہے۔ سامیہ واد سماج کی اس اوستھا کا نام ہے جب سماج کے لئے سرکار کی حیثیت سے کچھ کرنے کے لئے رہ ہی نہیں جاتا۔ تھوڑے شبدوں میں سماج کے ہر آدمی کے دل میں یہ بیٹھ جانا کہ وہ رعیت بھی ہے اور راجہ بھی۔ اسی کا نام ہے سماج واد۔ یہ آسان کام نہیں۔ شاید مشکل بھی نہیں، مہا مشکل ہے۔

اگر ہم یہ کہیں کہ سماج واد لڑکپن کی حالت کا نام ہے اور سامیہ واد جوانی کا تو اوپر کی بات تھوڑی کمزور پڑ جاتی ہے۔ ہر لڑکا جوان ہو جاتا ہے پر سماج واد آج تک سامیہ واد کا روپ لیتے نہیں دیکھا گیا۔ روس چین یہ دلیل دے کر کہ جب تک ساری دنیا میں سماج واد نہ پھیل جائے تب تک ان کے دیشوں میں سامیہ واد اپنے پورے روپ میں نہیں کھل سکتا، ہمارا سمرتھن ہی کرتے معلوم ہوتے ہیں۔ سماج واد اور سامیہ واد کو ایک طرح اور بھی سمجھا جا سکتا ہے۔ اگر سماج دوکان کا روپ لے لے تو یہ کہلائے گا سماج واد، اگر گھر کا روپ لے لے تو یہ ہوگا سامیہ واد۔ پڑھنے والے اب سوچ کر دیکھ لیں کہ جتنا سامیہ واد کہنے اور سمجھنے میں آسان ہے، کرنے میں آسان نہیں۔ ہاں، سامیہ واد کا آدرش سامنے رکھ کر سماج کی بھلائی میں لگنا ہر طرح ٹھیک۔ سماج سے یہاں مطلب مانو سماج سے ہے، روسی، چینی، جاپانی، ہندستانی، انگریزی، امریکی سماج سے نہیں۔ وشو بندھتو یعنی جگت بھائی چارے کی آواز اٹھائی جا سکتی ہے، اس پر عمل نہیں کیا جا سکتا۔ دس بیس، لاکھ دو لاکھ، کروڑ دو کروڑ بھی اگر عمل کے لئے تیار ہو جائیں تب بھی سامیہ واد کے آدرش کو نہیں پہنچا جا سکتا۔ اب کیا اتنی مشکل چیز کے لئے لوگوں کو کوشش کرنی چاہئے؟

چاند اور سورج کو نشانہ بنا کر تیر پھینکنے کی کوشش کرنا کچھ ایک کی نظر میں پاگل پن ہو سکتا ہے، پھینکنے والے کی نظر میں نہیں۔ وہ آئے دن اپنی

आंखों देखता है कि उसका तीर पहले से कहीं जियादा दूर जाता है. फिर क्यों न आदमी सारी दुनिया के भाई चारे का ख़्याल लेकर अपने देश के भाईचारे की बुनियाद डाले? और क्यों न उसे दुनिया के भाईचारे के नाम से पुकारे?

समाजवाद को सब ने साम्यवाद का पहला रूप माना है. समाजवाद और साम्यवाद दोनों छोटे रूप में हमेशा से हैं और हमेशा तक रहेंगे. समाज के जीवन चक्र का पूरा पूरा इतिहास अगर हमारे सामने होता तो आंखों से नहीं, समझ की आंखों से हम दोनों अवस्थाओं को समाज-जीवन के बहुत पहले युगों में देख सकते, पर वह इतिहास हमारे सामने नहीं. वह नहीं है, न सही, पुरानी चर्चा नहीं मिलती न सही; आजकल जो दो नाम हर राजविद्या पंडित के मुंह पर हैं—वह हैं, मार्क्स और ऐंजिल. मार्क्स को हिन्दुस्तान के नामी विद्वान लाला हरदयाल ने आज का ऋषि माना है. इन ऋषि का कहना है कि समाजवाद साम्यवाद का पहला रूप है. संत ऐंजिल्स ने भी इन्हीं की हां में हां मिलाई है. यही हाल रूसी और चीनी विचारकों का है. आज के विचारक आज की समस्या को हल करने में लगे हैं, उन्हीं बुनियादी नियमों को ढूंढ निकालने में जुटे हैं, जिन नियमों के बूते समाज ने अनेक हालतों में निकल कर आज का रूप लिया है. आगे क्या होगा इस पर वह ध्यान देते हैं सही, पर कम. जो लोग साम्यवाद की नींव डालने में लगे हैं, वह उस फ़र्क़ की तरफ़ नज़र नहीं डालते जो समाजवाद और साम्यवाद में है.

पैसे को निगाह में रख कर कितने ही ज़ोर से क्यों न कहा जाय कि इस अवस्था का नाम समाजवाद है. जब पैदा करने के सारे साधन समाज के हाथ में हों यानी उन पर सबका समान अधिकार हो, पर क्या इतने से समाजवाद के पूरे अर्थ हो गये? ऐसी हालत में दो बड़ी कमी समाज में फिर भी रह जाएंगी, मज़दूरी और ख़ुदा. थोड़े शब्दों में समाजवाद को यों समझ लीजिये— "हर एक से पूरा पूरा काम; हर एक को पूरे काम के पूरे दाम." यह मन को जितना भला लगता है अमल में उतना ही मुश्किल है, हां, असंभव नहीं. इस से इतना होगा, काम करने वाले काम के दाम पा सकेंगे. निकम्मों का क्या होगा? यह ठीक, इस व्यवस्था में अच्छे काम के अच्छे दाम और बहुत काम के बहुत दाम उठ सकेंगे; काम की अच्छाई बढ़ेगी, बढ़वारी भी होगी, पर इस से समाज की क्या सारी दिक़्क़तें दूर हो जावेंगी. पूंजीवाद पर इल्ज़ाम है कि वह व्योपार का ऐसा चक्र खड़ा कर देता है जिस से बेकारी बढ़ जाती है, काम करने वालों को उनके काम के पूरे पूरे दाम नहीं मिल पाते, क्योंकि उत्पादन के साधन पर सब का अधिकार नहीं होता, कुछ का होता है, जिनके हाथ

دیکھتا ہے کہ اُسکا تیر پہلے سے کہیں زیادہ دور جاتا ہے. پھر کیوں نہ آدمی ساری دنیا کے بھائی چارے کا خیال لیکر اپنے دیش کے بھائی چارے کی بنیاد ڈالے؟ اور کیوں نہ اسے دنیا کے بھائی چارے کے نام سے پکارے؟

سماج واد کو سب نے سامیہ واد کا پہلا روپ مانا ہے. سماج واد اور سامیہ واد دونوں چھوٹے روپ میں ہمیشہ سے ہیں اور ہمیشہ تک رہینگے. سماج کے جیون چکر کا پورا پورا اتہاس اگر ہمارے سامنے ہوتا تو آنکھوں سے نہیں، سمجھ کی آنکھوں سے ہم دونوں اوستھاؤں کو سماج جیون کے بہت پہلے یگوں میں دیکھ سکتے، پر وہ اتہاس ہمارے سامنے نہیں. وہ نہیں ہے، نہ سہی، پرانی چرچہ نہیں ملتی نہ سہی؛ آجکل جو دو نام ہر راج ودیا پنڈت کے منہ پر ہیں وہ ہیں، مارکس اور اینجل. مارکس کو ہندوستان کے نامی ودوان لالہ ہر دیال نے آج کا رشی مانا ہے. ان رشی کا کہنا ہے کہ سماج واد سامیہ واد کا پہلا روپ ہے. سنت اینجلس نے بھی انہیں کی ہاں میں ہاں ملائی ہے. یہی حال روسی اور چینی وچارکوں کا ہے. آج کے وچارک آجکی سمسیا کو حل کرنے میں لگے ہیں، انہیں بنیادی نیموں کو ڈھونڈھ نکالنے میں جٹے ہیں، جن نیموں کے بوتے سماج نے انیک حالتوں میں نکل کر آج کا روپ لیا ہے. آگے کیا ہوگا اِس پر وہ دھیان دیتے ہیں سہی، پر کم. جو لوگ سامیہ واد کی نیو ڈالنے میں لگے ہیں، وہ اس فرق کی طرف نظر نہیں ڈالتے جو سماج واد اور سامیہ واد میں ہے.

پیسے کو نگاہ میں رکھکر کتنے ہی زور سے کیوں نہ کہا جائے کہ اس اوستھا کا نام سماج واد ہے. جب پیدا کرنے کے سارے سادھن سماج کے ہاتھ میں ہوں یعنی اُن پر سب کا سمان ادھیکار ہو، پر کیا اتنے سے سماج واد کے پورے ارتھ ہوگئے؟ ایسی حالت میں دو بڑی کمی سماج میں پھر بھی رہ جائینگی، مزدوری اور خدا. تھوڑے شبدوں میں سماج واد کو یوں سمجھ لیجئے— "ہر ایک سے پورا پورا کام؛ ہر ایک کو پورے کام کے پورے دام." یہ من کو جتنا بھلا لگتا ہے عمل میں اتنا ہی مشکل ہے، ہاں اسمبھو نہیں. اس سے اتنا ہوگا، کام کرنے والے کام کے دام پا سکیں گے. نکموں کا کیا ہوگا؟ یہ ٹھیک، اِس ویوستھا میں اچھے کام کے اچھے دام اور بہت کام کے بہت دام اٹھ سکینگے؛ کام کی اچھائی بڑھے گی، بڑھواری بھی ہوگی، پر اِس سے سماج کی کیا ساری دقتیں دور ہو جائینگی. پونجی واد پر الزام ہے کہ وہ بیوپار کا ایسا چکر کھڑا کر دیتا ہے جس سے بیکاری بڑھ جاتی ہے، کام کرنے والوں کو انکے کام پورے پورے دام نہیں مل پاتے، کیونکہ اُتپادن کے سادھن پر سب کا ادھیکار نہیں ہوتا، کچھ ہوتا ہے، جن کے ہاتھ

में पूंजी होती है. इसी से मिलता जुलता छोटी छोटी दूकानों का हाल होता है. वह सब भी दूसरों की मेहनत से फ़ायदा उठाती हैं. मज़दूर जितना पैदा कर देता है उतने के दाम नहीं पाता. सब दाम अगर उसे मिल जाएं तो दूकानदार को क्या बचे ? समाजवाद का दावा है, वह पूंजीवाद और व्यक्तिवाद से कई गुना अच्छा है.

साम्यवाद इससे आगे की चीज़ है. साम्यवाद से समाजवादियों ने, या यूं कहिये, दुनिया के उन सब आदमियों ने, जो साम्यवाद के पुजारी हैं, साम्यवाद से बड़ी बड़ी उम्मीदें जोड़ रखी हैं. उनका ख़्याल है, साम्यवाद वह हालत लाकर रहेगा जब आदमी चीज़ों के पैदा करने में खुले दिल से पूरी पूरी ताक़त लगा सकेगा. जिन साधनों, जिन औज़ारों की आज कल्पना भी नहीं की जा सकती उन सब को वह ला खड़ा करेगा और खाने पीने पहनने की चीज़ें इस बहुतायत से होंगी कि किसी को किसी चीज़ की कमी न रह जायगी ! कविता की बोली में इस ख़्याल को यों दिखाया जा सकता है कि साम्यवाद दूध की गंगा बहा देगा, अनाज के पहाड़ों जैसे ढेर लगा देगा. न कपड़ों की कमी रहेगी, न मकानों की. जब इतनी बहुतायत होगी तब यह सिद्धांत अपने आप समाज में जगह ले लेगा कि "हर एक से पूरा पूरा काम और हर एक को जी भर इनाम." ऐसी बहुतायत में यह बात तो रहेगी ही कि बच्चे बूढ़े या वह औरतें जो बच्चे पैदा करने की वजह से काम नहीं कर सकतीं उन सब को भी खाने पीने को मिलेगा, जी भर मिलेगा. साम्यवाद जिस तरह का चित्र सामने रखता है उसमें यह दिखाई तो देता है कि माल की इतनी बहुतयात होगी कि जिसे जितनी ज़रूरत हो, जो जितने का उपयोग कर सके, ले और करे, पर यह कोरा चित्र है, है कहां ?

साम्यवाद दुनिया में ऐसी हालत पैदा करने के लिये कुछ शर्तें लगाता है. उन शर्तों के बग़ैर वैसी हालत लाने का वह दावा नहीं करता. उसका कहना है, साम्यवाद की बुनियाद एक देश में डाली तो जा सकती है पर वह फल तभी देगा जब उसकी बेल दुनिया के सब देशों में फैल चुकी होगी. यह उसकी बड़ी भारी शर्त है. इसका अर्थ हुआ कि साम्यवाद एक देश में फल ही नहीं सकता. सचमुच कोई आदमी एक बक्स में लौकी की बेल लगा कर उस से लौकी कैसे ले सकता है ? बेल के पत्ते, डंठल देख सकता है. साम्यवाद की इस व्याख्या से न स्टालिन को इन्कार था न ट्रोट्सकी को. पर अमल के बारे में दोनों का मतभेद था इसलिये दोनों एक देश में न निभ सके. साम्यवाद साफ़ कहता है कि जब तक दुनिया भर के उत्पादन के साधनों पर सारी दुनिया का समान रूप से अधिकार न हो जाये तब तक मैं वह फल नहीं दूंगा जिस से हर एक उतना

میں پونجی ہوتی ہے ۔ اس سے ملتا جلتا چھوٹی دوکانوں کا حال ہوتا ہے ۔ وہ سب بھی دوسروں کی محنت سے فائدہ اٹھاتی ہیں ۔ مزدور جتنا پیدا کر دیتا ہے اتنے کے دام نہیں پاتا ۔ سب دام اگر اسے مل جائیں تو دوکاندار کو کیا بچے ؟ سماج کا دعویٰ ہے، وہ پونجی واد ویکتی واد سے کئی گنا اچھا ہے ۔

سامیہ واد اس سے آگے کی چیز ہے ۔ سامیہ واد سے سماجوادیوں نے، یا یوں کہئے، دنیا کے ان سب آدمیوں نے، جو سامیہ واد کے پجاری ہیں، سامیہ واد سے بڑی بڑی امیدیں جوڑ رکھی ہیں ۔ ان کا خیال ہے، سامیہ واد وہ حالت لا کر رہے گا جب آدمی چیزوں کے پیدا کرنے میں کھلے دل سے پوری پوری طاقت لگا سکیگا ۔ جن سادھنوں، جن اوزاروں کی آج کلپنا بھی نہیں کی جاسکتی ان سب کو وہ لا کھڑا کرے گا اور کھانے پینے پہننے کی چیزیں اس بہتایت سے ہونگی کہ کسی کو کسی چیز کی کمی نہ رہ جائے گی ! کویتا کی بولی میں اس خیال کو یوں دکھایا جا سکتا ہے کہ سامیہ واد دودھ کی گنگا بہا دیگا، اناج کے پہاڑوں جیسے ڈھیر لگا دے گا ۔ نہ کپڑوں کی کمی رہے گی، نہ مکانوں کی ۔ جب اتنی بہتایت ہوگی تب یہ سدھانت اپنے آپ سماج میں جگہ لے گا کہ — "ہر ایک سے پورا پورا کام اور ہر ایک کو جی بھر انعام ۔"

ایسی بہتات میں یہ بات تو رہے گی ہی کہ بچے بوڑھے یا وہ عورتیں جو بچے پیدا کرنے کی وجہ سے کام نہیں کر سکتیں ان سب کو بھی کھانے پینے کو ملے گا جی بھر ملیگا سامیہ واد جس طرح کا چتر سامنے رکھتا ہے اس میں یہ دکھائی تو دیتا ہے کہ مال کی اتنی بہتات ہوگی کہ جسے جتنی ضرورت ہو، جو جتنے کا اپیوگ کر سکے، لے اور کرے، پر یہ کورا چتر ہے، ہے کہاں ؟

سامیہ واد دنیا میں ایسی حالت پیدا کرنے کے لئے کچھ شرطیں لگاتا ہے ۔ ان شرطوں کے بغیر ویسی حالت لانے کا وہ دعویٰ نہیں کرتا ۔ اسکا کہنا ہے، سامیہ واد کی بنیاد ایک دیش میں ڈالی تو جاسکتی ہے پر وہ پھل تب ہی دیگا جب اسکی بیل دنیا کے سب دیشوں میں پھیل چکی ہوگی ۔ یہ اسکی بڑی بھاری شرط ہے ۔ اسکا ارتھ ہوا کہ سامیہ واد ایک دیش میں پھل ہی سکتا ۔ سچ مچ کوئی آدمی ایک بکس میں لوکی کی بیل لگا کر اس سے لوکی کیسے لے سکتا ہے ؟ بیل کے پتے، ڈنٹھل دیکھ سکتا ہے ۔ سامیہ واد کی اس ویاکھیا سے نہ استالن کو انکار تھا نہ تراتسکی کو ۔ پر عمل کے بارے میں دونوں کا مت بھید تھا اس لئے دونوں ایک دیش میں نہ نبھ سکے ۔ سامیہ واد صاف کہتا ہے کہ جب تک دنیا بھر اتپادن کے سادھنوں پر ساری دنیا کا سمان روپ سے ادھیکار نہ ہو جائے تب تک میں وہ پھل نہیں دونگا جس سے ہر ایک اتنا

पा सकें जितनी उस को ज़रूरत है. यह आगे बताया जायगा कि साम्यवाद का यह भी दावा है कि उसके फल देते ही हकूमत नामी पत्ते पीले पड़ कर मुरझा चुके होंगे, क्योंकि उनको साम्यवाद की बेल से कोई रस ही न मिल रहा होगा. यहां ध्यान रहे हकूमत का ख़्याल मुरझा जायगा, हकूमत करने वाले नहीं, वह सब जीवित रहेंगे जैसे समाज के और आदमी. चोरों के ख़त्म हो जाने पर पुलिस विभाग खत्म हो जाता है, पुलिस वाले भी. वह उससे ज़ियादा अच्छे काम में लग जाते हैं. साम्यवाद का यह भी दावा है कि उसके फलने फूलने पर बे पढ़ा लिखा कोई न रह जायगा, दुबले पतले देखने को न मिलेंगे, जब मनोभावों का बे जगह, बे वक़्त, बे मतलब उपयोग ही नहीं होगा तो कोई बीमार क्यों पड़ेगा और क्यों न उसका व्यक्तित्व बढ़ेगा? उसकी शख़्सियत क्यों किसी से कम रह सकेगी? दो शब्दों में सारी दुनिया की वह उन्नति होगी जो आज तक कभी हुई ही नहीं.

साम्यवाद की तारीफ़ करते हुए साम्यवादियों का यह भी दावा है कि समाजवाद से बढ़कर साम्यवाद में एक बात और होगी, गुंडे नाम को न रह जावेंगे, आपसी मन मुटाव देखने को न मिलेगा, शहर देहात का भेद मिट जायगा. यानी वह हालत हो जायगी जिसकी कल्पना कहानियां लिखने वाले स्वर्ग में भी नहीं कर पाये. उन्हें यह मानना पड़ा कि स्वर्ग में आपसी मन मुटाव रहता है. इस बात को साबित करते हुए साम्यवाद ने यह दलील दी है कि जब देहात या ऐसी जगह जहां पिछड़े हुए लोग रहते हैं, शहर से अलग ही न होंगी तो कोई जंगली और देहाती रह ही क्यों जायगा? हर तरह का सुभीता हर जगह क्यों न पहुंचाया जा सकेगा? आने जाने के आज जितने साधन मौजूद हैं वह इतने ज़ियादा हैं कि उनकी पहुंच से परे दुनिया में कोई हिस्सा बच नहीं रहा, फिर साम्यवाद की हालत में सब मुल्कों की मिलकर जो बढ़वारी होगी तो उस में आने जाने के साधन आज से अच्छे ही बनेंगे तब दुनिया के किसी हिस्से में भी कोई क्यों पिछड़ा रह जायगा? आदिवासी कहलाने का कलंक से भरा टीका किसी के माथे पर कैसे रह सकेगा? सोच समझ कर कोई नंगा भले ही रहे, कपड़े न मिलने से कोई नंगा न रह सकेगा. क्या कला कौशल, क्या खेती सभी का अर्थ होगा सारी दुनिया की बढ़वारी. किसी एक देश या किसी एक जात की नहीं. ज़रूरत से ज़ियादा किसी चीज़ की पैदावार नहीं, ज़रूरत से कम किसी चीज़ को रहने देना नहीं. ज़रूरत से मतलब सारी दुनिया की ज़रूरत. साम्यवाद में आज की तरह कोई क्यों शहरों में जा कर रहेगा? क्यों इस तरह रहेगा जैसे काबुक के ख़ानों में कबूतर रहते हैं? साम्यवाद में हर आदमी को प्रकृति के साथ इसी तरह खेलने को

جتنی اُسکو ضرورت ہے۔ یہ آگے بتایا جائے گا کہ سامیہ واد کا یہ بھی دعویٰ ہے کہ اس کے پھل دیتے ہی حکومت نامی پتے پیلے پڑ کر مرجھا چکے ہونگے، کیونکہ انکو سامیہ واد کی بیل سے کوئی رس ہی نہ مل رہا ہوگا۔ یہاں یہ دھیان رہے حکومت کا خیال مرجھا جائیگا، حکومت کرنے والے نہیں، وہ سب جیوت رہیں گے جیسے سماج کے اور آدمی۔ چوروں کے ختم ہو جانے پر پولیس وبھاگ ختم ہو جاتا ہے، پولیس والے بھی۔ وہ اُن سے زیادہ اچھے کام میں لگ جاتے ہیں۔ سامیہ واد کا یہ بھی دعویٰ ہے کہ اس کے پھلنے پھولنے پر بے پڑھا لکھا کوئی نہ رہ جائے گا، دبلے پتلے دیکھنے کو نہ ملیں گے، جب منوبھاؤں کا بے جگہ، بے وقت، بے مطلب اُپیوگ ہی نہیں ہوگا تو کوئی بیمار کیوں پڑے گا۔ اور کیوں نہ اسکا ویکتتو بڑھے گا؟ اُسکی شخصیت کیوں کسی سے کم رہ سکے گی؟ دو شبدوں میں ساری دنیا کی وہ اُنتی ہوگی جو آج تک کبھی ہوئی ہی نہیں۔

سامیہ واد کی تعریف کرتے ہوئے سامیہ وادیوں کا یہ بھی دعویٰ ہے کہ سماج واد سے بڑھکر سامیہ واد میں ایک بات اور ہوگی، غنڈے نام کو نہ رہ جاوینگے۔ آپسی من مٹاؤ دیکھنے کو نہ ملے گا، شہر دیہات کا بھید مٹ جائے گا۔ یعنی وہ حالت ہو جائے گی جس کی کلپنا کہانیاں لکھنے والے سورگ میں بھی نہیں کر پائے۔ انہیں یہ ماننا پڑا کہ سورگ میں آپسی من مٹاؤ رہتا ہے۔ اِس بات کو ثابت کرتے ہوئے سامیہ واد نے یہ دلیل دی ہے کہ جب دیہات یا ایسی جگہ جہاں پچھڑے ہوئے لوگ رہتے ہیں، شہر سے الگ ہی نہ ہونگے تو کوئی جنگلی اور دیہاتی رہ ہی کیوں جائے گا؟ ہر طرح کا سبھیتا ہر جگہ کیوں نہ پہنچایا جا سکے گا؟ آنے جانے کے آج جتنے سادھن موجود ہیں وہ اِتنے زیادہ ہیں کہ ان کی پہنچ سے پرے دنیا میں کوئی حصہ بچ نہیں رہا، پھر سامیہ واد کی حالت میں سب ملکوں کی ملکر جو بڑھواری ہوگی تو اس میں آنے جانے کے سادھن آج سے اچھے ہی بنیں گے تب دنیا کے کسی حصے میں بھی کوئی کیوں پچھڑا رہ جائے گا؟ آدی واسی کہلانے کا کلنک سے بھرا ٹیکہ کسی کے ماتھے پر کیسے رہ سکے گا؟ سوچ سمجھ کر کوئی ننگا بھلے ہی رہے، کپڑے نہ ملنے سے کوئی ننگا نہ رہ سکے گا۔ کیا کلا کوشل کیا کھیتی سبھی کا ارتھ ہوگا ساری دنیا کی بڑھواری۔ کسی ایک دیش یا کسی ایک جات کی نہیں۔ ضرورت سے زیادہ کسی چیز کی پیداوار نہیں، ضرورت سے کم کسی چیز کو رہنے دینا نہیں۔ ضرورت سے مطلب ساری دنیا کی ضرورت۔ سامیہ واد میں آجکی طرح کوئی کیوں شہروں میں جا کر رہے گا؟ کیوں اِسطرح رہیگا جیسے کابک کے خانوں میں کبوتر رہتے ہیں؟ سامیہ واد میں ہر آدمی کو پرکرتی کے ساتھ اسی طرح کھیلنے کو

मिल सकेगा जिस तरह आज पशु पक्षी उसके साथ खेलते हैं.

इससे भी बढ़कर साम्यवाद में एक और बात होगी. लिखे पढ़ों और मज़दूरों में इतना आपसीपन आ जायगा जितना दो हाथों में. जज और चपरासी में नाम भेद ही होगा, खान पान और रहन सहन का भेद नहीं. यह सब भी ऊपर से नहीं लादा जायगा. हकूमत नाम की ऊपर रहने वाली चीज़ ऊपर रही न होगी. यह भाव अंदर से जागेंगे. भेद भाव सिर्फ़ इसी लिये हैं कि पैदावार पर सब का अधिकार नहीं. ऊंच नीच पैदा करने वाली वह असमता है जो पैदावार के बंटवारे में की जाती है. आज एक विद्यार्थी तन को बेचकर मन की खुराक देता है, मस्तक के लिए कुछ जुटाता है; एक मज़दूर मस्तक को बेचकर तन को खुराक देता है और मन के लिये कुछ जुटा लेता है. साम्यवाद में ऐसी मूर्खता जीवित न रह पायेगी. तन, मन, मस्तक तीनों को मुनासिब खुराक मिलेगी. यह कोई बड़ी बात नहीं.

सबसे मारके की बात यह है कि ऋषि मार्क्स के विचारों ने दुनिया के अनगिनत विचारकों के मस्तकों में जगह पा ली है. एक बहुत बड़ा दल यह पुकार पुकार कर कहने लगा है कि समाजवाद और साम्यवाद के आदर्शों तक पहुंचा जा सकता है. वह दल कह कर ही नहीं रह गया. उसने उस ओर कदम बढ़ाया है. और इतना आगे बढ़ गया है कि दूसरा दल जो यह समझता था कि यह दल कुंए में गिरने जा रहा है, वह अब यह समझने लगा है कि इसने तो अब लिया स्वर्ग. इस लिये वह दल साथ देने की जगह उसकी टांग पकड़ कर उसे घसीटने की फ़िकर में लगा हुआ है. मार्क्स और ऐंजिल्स अपने समय में यही समझते रहे कि सामाजिक क्रांति दुनिया में हो ही नहीं सकती जब तक दुनिया के सब मुल्कों में समाजवाद अपनी जड़ न जमा ले. हां थोड़ा बहुत आन्दोलन इन विचारों का सारी दुनिया में ज़रूर फैल सकता है. शायद, यह भी संभव है कि बड़े बड़े देशों के कुछ लोग मिलकर एक बड़ा आन्दोलन खड़ा कर दें.

समाजवाद या साम्यवाद ने और कुछ काम किया या न किया, इतना ज़रूर किया कि उसने रूस जैसे पिछड़े देश में एक ऐसा आदमी पैदा कर दिया जिसने पूंजीवाद की असमान बढ़वारी का एक सिद्धांत ही रच डाला. उसका नाम था "लेनिन". इस सिद्धांत का यह मतलब है कि दुनिया में साम्राज्यवाद के दौर में दुनिया के हर मुल्क में ऐसे सवाल खड़े हो गये हैं कि वह मुल्क लड़े बग़ैर नहीं रह सकते. हर देश दूसरे देश पर कब्ज़ा जमाने की फ़िकर में है. जब दो देश एक ही चीज़ को चाहें तो लड़ाई ज़रूर हो जाती है. इस लड़ाई की जड़ में रहता है पूंजीवाद. इसी आधार पर लेनिन इस नतीजे पर पहुंचे कि किसी न किसी देश में पूंजीवाद के

مل سکے گا جسطرح آج پشو پکشی اس کے ساتھ کھیلتے ہیں.

اِس سے بھی بڑھکر سامیہ واد میں ایک اور بات ہو گی . لکھے پڑھوں اور مزدوروں میں اِتنا آپسی پن آ جائے گا جتنا دو ہاتھوں میں. جج اور چپراسی میں نام بھید ہی ہوگا' کھان پان اور رہن سہن کا بھید نہیں . یہ سب بھی اوپر سے نہیں لادا جائے گا . حکومت نام کی اوپر رہنے والی چیز اوپر رہی نہ ہوگی . یہ بھاؤ اندر سے جاگینگے. بھید بھاؤ صرف اِس لئے ہیں کہ پیداوار پر سب کا ادھیکار نہیں . اونچ نیچ پیدا کرنے والی وہ اسمتا ہے جو پیداوار کے بٹوارے میں کی جاتی ہے . آج ایک ودیارتھی تن کو بیچ کر من کو خوراک دیتا ہے' مستک کے لئے کچھ جٹاتا ہے؛ ایک مزدور مستک کو بیچکر تن کو خوراک دیتا ہے اور من کے لئے کچھ جٹا لیتا ہے. سامیہ واد میں ایسی مورکھتا جیوت نہ رہ پائے گی . تن' من' مستک تینوں کو مناسب خوراک ملے گی . یہ کوئی بڑی بات نہیں .

سب سے مارکہ کی بات یہ ہے کہ رشی مارکس کے وچاروں نے دنیا کے اَن گنت وچارکوں کے مستکوں میں جگہ پا لی ہے. ایک بہت بڑا دل یہ پکار پکار کر کہنے لگا ہے کہ سماج واد اور سامیہ واد کے آدرشوں تک پہنچا جا سکتا ہے - وہ دل کہکر ہی نہیں رہ گیا . اس نے اس اور قدم بڑھایا ہے . اور اِتنا آگے بڑھ گیا ہے کہ دوسرا دل جو یہ سمجھتا تھا کہ یہ دل کنوئیں میں گرنے جا رہا ہے' وہ اب یہ سمجھنے لگا ہے کہ اِس نے تو اب لیا سوَرگ . اِس لئے وہ دل ساتھ دینے کی جگہ اس کی ٹانگ پکڑ کر اسے گھسیٹنے کی فکر میں لگا ہوا ہے. مارکس اور اینجلس اپنے سمے میں یہی سمجھتے رہے کہ سماجک کرانتی دنیا میں ہو ہی نہیں سکتی جب تک دنیا کے سب ملکوں میں سماج واد اپنی جڑ نہ جما لے. ہاں تھوڑا بہت آندولن اِن وچاروں کا ساری دنیا میں ضرور پھیل سکتا ہے . شاید' یہ بھی سمبھو ہے کہ بڑے بڑے دیشوں کے کچھ لوگ مل کر ایک بڑا آندولن کھڑا کر دیں .

سماج واد یا سامیہ واد نے اور کچھ کام کیا یا نہ کیا' اتنا ضرور کیا کہ اس نے روس جیسے پچھڑے دیش میں ایک ایسا آدمی پیدا کر دیا جس نے پونجی واد کی اسمان بڑھواری کا ایک سدھانت ہی رچ ڈالا. اس کا نام تھا "لینن." اِس سدھانت کا یہ مطلب ہے کہ دنیا میں سامراج واد کے دور میں دنیا کے ہر ملک میں ایسے سوال کھڑے ہوگئے ہیں کہ وہ ملک لڑے بغیر نہیں رہ سکتے. ہر دیش دوسرے دیش پر قبضہ جمانے کی فکر میں ہے . جب دو دیش ایک ہی چیز کو چاہیں تو لڑائی ضروری ہو جاتی ہے. اِس لڑائی کی جڑ میں رہتا ہے پونجی واد. اِسی آدھار پر لینن اِس نتیجے پر پہونچے کہ کسی نہ کسی دیش میں پونجی واد کے

ख़िलाफ़ आग भड़क कर रहेगी. शायद सबसे पहला देश वही होगा जो पूंजीवाद में सब से कमज़ोर होगा. साम्राजवाद उन दिनों सब जगह फैला हुआ था. पूंजीवाद का यह हाल नहीं था. वह कहीं बहुत कम था, कहीं मामूली, कहीं बहुत जियादा. ऐसी हालत देखकर लेनिन ने यह ठीक नहीं समझा कि वह मार्क्स और ऐंजिल की तरह उस वक्त का इंतज़ार करे जब सारी दुनिया में समाजवाद ने जड़ जमा ली हो. उसे चाहिये कि वह किसी एक देश में क्रांति की विजय कर के दिखला दे. लेनिन ने मार्क्स के सिद्धांत को सिर माथे चढ़ाया पर उन विचारों का बिलकुल साथ न दिया जो मार्क्स के समय के लिए भले ही बलवान रहे हों., लेनिन के समय के लिये निकम्मे थे. इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि लेनिन ने मार्क्स के सिद्धांतों में कोई घटत बढ़त की. सिद्धांतों में घटत बढ़त नहीं हुआ करती. सिद्धांत गढ़े नहीं जाते. सिद्धान्त हमेशा से प्रकृति में मौजूद रहते हैं. उसे कोई कोई खोज निकालता है. लेनिन ने सिर्फ़ वह समय, वह जगह ढूंढ निकाली जहां वह उस सिद्धान्त पर अमल कर सकता था. ऐसे साथी खोज लिये जिनकी मदद से विजय प्राप्ति में आसानी हो सकती थी. ऐसे भावों को ताड़ लिया जो क्रान्ति का रूप ले सकते थे. उसने तय कर लिया कि एक देश में ही समाजवादी समाज का गढ़ खड़ा कर दिया जाय.

सन 1915 में उसने यहां तक कह डाला कि राज-सत्ता और पैसे का असमान बढ़ाव पूंजीवाद का निरपेक्ष नियम है. यानी पूंजीवाद वह बला है जिससे पैसे का असमान बंटवारा होता है और राज की असमान ताक़तें अपनी जगह बना लेती हैं. इसलिये समाजवाद का बीज एक देश में भी जम सकता है, अंकुर फोड़ सकता है और फल सकता है. सन 1922 में आख़िर उसने कह ही डाला कि रूस समाजवादी हो जायगा. सन 1923 में लेनिन ने सहयोग पर एक पत्रक लिखा जिसमें उसने ज़ोर के साथ यह साबित किया कि सोवियत यूनियन में वह सब गुन मौजूद हैं जो एक भरे पूरे समाजवादी समाज में होने चाहिये.

लेनिन के यह उद्गार साफ़ कहते मालूम होते हैं कि मार्क्स और ऐंजिल्स अपने समय के लिये भले ही सही रहे हों, आज के लिये वह सही नहीं बैठते क्योंकि आज की हालत बदल गई है. लेनिन के शब्दों से यह बात साफ़ टपकती है कि पुराने विचारकों को इस बात का अनुभव ही नहीं था कि दुनिया भर में समाजवाद फैल सकता है. उनके सामने वैसी चीज़ थी ही नहीं फिर वह आगे के लिये ठीक ठीक कैसे सोच सकते थे? यह कह कर लेनिन ने एक ऐसी बात दुनिया को दे दी जो अब तक के ऋषि देते तो रहे थे पर अमल कर के कभी न दिखा पाए थे.

آگ بھڑک کر رہیگی. شاید سب سے پہلا دیش ہوگا جو پونجی واد میں سب سے کمزور ہوگا. سامراج واد اُن دنوں سب جگہ پھیلا ہوا تھا. پونجی واد کا یہ حال نہیں تھا. وہ کہیں بہت کم کہیں معمولی، کہیں بہت زیادہ. ایسی حالت دیکھ کر لینن نے یہ ٹھیک نہیں سمجھا کہ وہ مارکس اور اینجلس کی طرح اُس وقت کا اِنتظار کرے جب ساری دنیا میں سماجواد نے جڑ جمالی ہو. اُسے چاہئیے کہ وہ کسی ایک دیش میں کرانتی کی وجے کرکے دکھلا دے. لینن نے مارکس کے سدھانت کو سر ماتھے چڑھایا پر اُن وچاروں کا بالکل ساتھ نہیں دیا جو مارکس کے سمے کے لئے بھلے ہی بلوان رہے ہوں، لینن کے سمے کے لئے نکمے تھے. اِس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ لینن نے مارکس کے سدھانتوں میں کوئی گھٹت بڑھت کی. سدھانتوں میں گھٹت بڑھت نہیں ہوا کرتی. سدھانت گڑھے نہیں جاتے. سدھانت ہمیشہ سے پرکرتی میں موجود رہتے ہیں. اُسے کوئی کوئی کھوج نکالتا ہے. لینن نے صرف وہ سمے، وہ جگہ ڈھونڈھ نکالی جہاں وہ اُس سدھانت پر عمل کرسکتا تھا. ایسے ساتھی کھوج لئے جن کی مدد سے وجے پراپتی میں آسانی ہوسکتی تھی. ایسے بھاؤں کو تاڑ لیا جو کرانتی کا روپ لے سکتے تھے. اُس نے طے کر لیا کہ ایک دیش میں ہی سماجوادی سماج کا گڑھ کھڑا کر دیا جائے.

سن 1915 میں اُس نے یہاں تک کہہ ڈالا کہ راج ستہ اور پیسہ کا اسمان بڑھاؤ پونجی واد کا نرپیکش نیم ہے. یعنی پونجی واد وہ بلا ہے جس سے پیسے کا اسمان بٹوارہ ہوتا ہے اور راج کی اسمان طاقتیں اپنی جگہ بنا لیتی ہیں. اِس لئے سماجواد کا بیج ایک دیش میں بھی جم سکتا ہے، انکر پھوڑ سکتا ہے اور پھل سکتا ہے. سن 1922 میں آخر اس نے کہہ ہی ڈالا کہ روس سماجوادی ہوجائیگا. سن 1923 میں لینن نے سہیوگ پر ایک پترک لکھا جس میں اُس نے زور کے ساتھ یہ ثابت کیا کہ سوویت یونین میں وہ سب گن موجود ہیں جو ایک بھرے پورے سماجوادی سماج میں ہونے چاہئیں.

لینن کے یہ اُدگار صاف کہتے معلوم ہوتے ہیں کہ مارکس اور اینجلس اپنے سمے کے لئے بھلے ہی سہی رہے ہوں، آج کے لئے وہ سہی نہیں بیٹھتے. کیوں کہ آج کی حالت بدل گئی ہے. لینن کے شبدوں سے یہ بات صاف ٹپکتی ہے کہ پرانے وچارکوں کو اِس بات کا انوبھو ہی نہیں تھا کہ دنیا بھر میں سماجواد پھیل سکتا ہے. اُن کے سامنے ویسی چیز تھی ہی نہیں پھر وہ آگے کے لئے ٹھیک ٹھیک کیسے سوچ سکتے تھے؟ یہ کہہ کر لینن نے ایک ایسی بات دنیا کو دے دی جو اب تک کے رشی دیتے تو رہے تھے پر عمل کرکے کبھی نہ دکھا پائے تھے.

इसलिये लेनिन की बात जितनी गहरी दिल पर जाती है उतनी और ऋषियों की नहीं. सत्य और अहिंसा की बात ले लीजिये. महावीर और बुद्ध ने कहने में कोई कसर नहीं रखी पर गांधी जी ने उस पर अमल कर के उसको लोगों के दिलों में बहुत गहराई तक पहुंचा दिया. व्यक्तिगत आज़ादी के क्षेत्र में लेनिन की मिसाल गांधी जी जैसी ही है.

यह कितने मारके की बात है कि इसी बात को ले कर रूस में दो दल बन गए. स्टालिन और ट्राट्सकी अलग अलग हो गए. सोवियत यूनियन की उन्नति के इतिहास में यह एक नया मोड़ आया. यह ऐसा अवसर था जिस समय यह फ़ैसला करना ज़रूरी था कि देश के अन्दर जो साधन और मानव शक्ति मौजूद है उस सबका समाजवाद का महल खड़ा करने के लिये उपयोग किया जाय या नहीं. यह सवाल उठा इसलिये कि ऐसा करने के लिये यह बिलकुल ज़रूरी था कि दुनिया के बाक़ी सब मुल्कों के साथ सहयोग किया जाय और शान्ति के साथ रहा जाय. जो मार्क्स और एंजिल के सिद्धान्त के ख़िलाफ़ तो नहीं था पर तरीक़ों के ख़िलाफ़ ज़रूर था. अगर मार्क्स और एंजिल मौक़े पर ख़ुद मौजूद होते और अपने तरीक़ों में बदलाव करने के लिये तैयार न होते तो रूस में कभी वह क्रान्ति न करते जो लेनिन ने की और उस तरह की सरकार न बनाते जो स्टालिन ने बनाई. इसी ख़्याल को लेकर ट्रॉट्सकी को स्टालिन का साथ छोड़ना पड़ा. ट्रॉट्सकी यही तो चाहता था कि रूस अपने तमाम साधनों को दूसरे देशों में क्रान्ति करने के काम में लगाए यानी सारी दुनिया से लड़ाई मोल ले. ट्राट्सकी ने 'सन 1905 के साल' के नाम से जो किताब लिखी है उसने उसमें कहा है–"The contradiction in the situation of the worker's government in a backward country with an over whelming peasant population can be solved only on an international scale, on the arena of a world proletarian revolution." (पिछड़े हुए देश में जहां किसानों की तादाद बहुत ज़ियादा हो, मज़दूरों की सरकार की विपरीताओं का हल अन्तरक़ौमी पैमाने पर ही हो सकता है. उसके लिये सारी दुनिया में मज़दूर क्रान्ति खड़ी करने की ज़रूरत होती है.)

ट्राट्सकी के ऊपर लिखे विचार में जो बहुत उलझी गुत्थी है वह है किसान गुत्थी. ट्राट्सकी को लेनिन और स्टालिन के विचारों में तनिक भी विश्वास न था. वह मानता ही न था कि मज़दूरों और किसानों में कभी दोस्ती हो सकती है, क्योंकि इस दोस्ती में ऊपर हाथ रहेगा मज़दूर दल का. किसान दब जायगा. दबा हुआ दल दोस्ती

اِس لئے لینن کی بات جتنی گہری دل پر جاتی ہے اُتنی اور رشیوں کی نہیں. ستیہ اور اہنسا کی بات لے لیجئے. مہاویر اور بدھ نے کہنے میں کوئی کسر نہیں رکھی پر گاندھی جی نے اُس پر عمل کرکے اُس کو لوگوں کے دلوں میں بہت گہرائی تک پہونچا دیا. ویکتی گت آزادی کے چھیتر میں لینن کی مثال گاندھی جی جیسی ہی ہے.

یہ کتنے مارکہ کی بات ہے کہ اِسی بات کو لے کر روس میں دو دل بن گئے. اِستالن اور ٹراٹسکی الگ الگ ہو گئے. سوویت یونین کی اُنتی کے اِتہاس میں یہ ایک نیا موڑ آیا. یہ ایسا اوسر تھا جس سمے یہ فیصلہ کرنا ضروری تھا کہ دیش کے اندر جو سادھن اور مانو شکتی موجود ہے اُس سب کا سماج واد کا محل کھڑا کرنے کے لئے اُپیوگ کیا جائے یا نہیں. یہ سوال اُٹھا اِس لئے کہ ایسا کرنے کے لئے یہ بالکل ضروری تھا کہ دنیا کے باقی سب ملکوں کے ساتھ سہیوگ کیا جائے اور شانتی کے ساتھ رہا جائے. جو مارکس اور اینجلس کے سدھانت کے خلاف تو نہیں تھا پر طریقوں کے خلاف ضرور تھا. اگر مارکس اور اینجلس موقع پر خود موجود ہوتے اور اپنے طریقوں میں بدلاؤ کرنے کے لئے تیار نہ ہوتے تو روس میں کبھی وہ کرانتی نہ کرتے جو لینن نے کی اور اُس طرح کی سرکار نہ بناتے جو استالن نے بنائی. اِسی خیال کو لے کر ٹراٹسکی کو اِستالن کا ساتھ چھوڑنا پڑا. ٹراٹسکی یہی تو چاہتا تھا کہ روس اپنے تمام سادھنوں کو دوسرے دیشوں میں کرانتی کرنے کے کام میں لگائے یعنی ساری دنیا سے لڑائی مول لے. ٹراٹسکی نے 'سن 1905 کے سال' کے نام سے جو کتاب لکھی ہے اُس نے اُس میں کہا ہے— "The contradiction in the situation of the worker's government in a backward country with an over whelming peasant population can be solved only on an international scale, on the arena of a world proletarian revolution." (پچھڑے ہوئے دیش میں، جہاں کسانوں کی تعداد بہت زیادہ ہو، مزدوروں کی سرکار کی ویپریتاؤں کا حال انترقومی پیمانے پر ہی ہوسکتا ہے. اُس کے لئے ساری دنیا میں مزدور کرانتی کھڑی کرنے کی ضرورت ہوتی ہے.)

ٹراٹسکی کے اُوپر لکھے وچار میں جو بہت اُلجھی گتھی ہے وہ ہے کسان گتھی. ٹراٹسکی کو لینن اور اِستالن کے وچاروں میں تنک بھی وشواس نہ تھا. وہ مانتا ہی نہ تھا کہ مزدوروں اور کسانوں میں کبھی دوستی ہو سکتی ہے، کیونکہ اِس دوستی میں اُوپر ہاتھ رہیگا مزدور دل کا. کسان دب جائیگا. دبا ہوا دل دوستی

को न निभा सकेगा. लेनिन और स्टालिन यह समझते थे कि समाजवाद का महल खड़ा करने में ग़रीब और बीच की हालत वाले किसान बड़े पक्के दोस्त साबित होंगे. ट्राट्सकी को वह सब दुश्मन दिखाई देते थे. ट्राट्सकी का जो वाक्य ऊपर दिया गया है उसमें ट्राट्सकी के शक साफ़ दिखाई देते हैं. उसका ख़्याल था कि मज़दूरों को सिर्फ़ उन पैसे वालों से ही टक्कर नहीं लेनी पड़ेगी जो क्रान्ति के समय मज़दूरों की मदद कर रहे थे. उनको उन किसानों से भी टक्कर लेनी पड़ेगी जो बहुत बड़ी तादाद में फैले हुए हैं. इस सिलसिले में यह लिख देना ज़रूरी है कि स्टालिन ने किस होशियारी से 'कूलक' कहलाने वाले किसानों को अपने साथ लिया. 'कूलक' खाते पीते किसान थे. वह आसानी से क्रान्ति में साथ नहीं दे सकते थे इस बात पर राज़ी नहीं हो सकते थे कि खेत बड़े पैमाने पर मिला कर खेती के काम में लाए जांय क्योंकि ऐसा करने से उनके स्वार्थ को धक्का लगता था. ऐसे किसानों को उस दल में शामिल कर लेना आसान काम न था जो दल मज़दूर और ग़रीब किसानों का बना हुआ था. ग़रीब किसान अमीर किसानों के ख़िलाफ़ खड़े हो सकते थे पर अमीर किसान ग़रीबों के साथ मिल कर अपनी खेती का बंटवारा करने के लिये कैसे तैयार हो सकते थे. ट्राट्सकी को यह सब काम मुश्किल दिखाई देते थे. शायद असंभव मालूम होता हो. लेनिन और स्टालिन को यही काम आसान और मामूली दिखाई देते थे. अब रूस दो दलों में न बंटता तो क्या करता ?

यह ठीक है लेनिन ने अपने देश और अपने समय के लिये मार्क्स के तरीक़ों को ठीक नहीं समझा लेकिन मार्क्स के इस सिद्धांत को हमेशा ठीक समझता रहा कि साम्यवाद की स्थापना बड़े पैमाने पर ही हो सकती है और उसका पैमाना सारी दुनिया ही हो सकती है. सन 1938 में स्टालिन लेनिन के इस विचार से भी अलग पड़ गया. उसकी समझ में यही ठीक बैठा कि जिस तरह लेनिन की नज़र में मार्क्स के तरीक़े मार्क्स के समय के लिये ठीक थे, वैसे ही लेनिन की यह बात कि साम्यवाद दुनिया भर के बड़े पैमाने पर ही हो सकता है, लेनिन के समय के लिये भले ठीक हो, उसके, यानी स्टालिन के समय के लिये, ठीक नहीं. उसने इस विचार को पूरा रूप दे ही दिया कि एक देश में भी साम्यवाद की ख़ास ख़ास सूरतें पैदा की जा सकती हैं. हां, साम्यवाद की, ख़ास ख़ासियत '<u>बे सरकार की हकूमत</u>' क़ायम नहीं की जा सकती. स्टालिन की राय में एक देश में ऐसी हालत लाई जा सकती है कि खाने पीने की बहुतायत हो जाय और आपसी मन मुटाव नाम को न रहे. गुंडापन एक दम दूर हो जाय. ऊंच

نبھا سکیے گا. لینن اور اِستالن یہ سمجھتے تھے کہ سماجواد کا محل کھڑا کرنے میں غریب اور بیچ کی حالت والے کسان بڑے پکے دوست ثابت ہونگے. تراتسکی کا کو وہ سب دشمن دکھائی دیتے تھے. تراتسکی کا جو واکیہ اوپر دیا گیا ہے اس میں تراتسکی کے شک صاف دکھائی دیتے ہیں. اس کا خیال تھا کہ مزدوروں کو صرف اُن پیسے والوں سے ہی ٹکر نہیں لینی پڑیگی جو کرانتی کے سمے مزدوروں کی مدد کر رہے تھے. اُن کو اُن کسانوں سے بھی ٹکر لینی پڑیگی جو بہت بڑی تعداد میں پھیلے ہوئے ہیں. اِس سلسلے میں یہ لکھ دینا ضروری ہے کہ اِستالن نے کس ہوشیاری سے 'کولک' کہلانے والے کسانوں کو اپنے ساتھ لیا. 'کولک' کھاتے پیتے کسان تھے. وہ آسانی سے کرانتی میں ساتھ نہیں دے سکتے تھے اِس بات پر راضی نہیں ہوسکتے تھے کہ کھیت بڑے پیمانے پر ملاکر کھیتی کے کام میں لائے جائیں کیونکہ ایسا کرنے سے اُن کے سوارتھ کو دھکا لگتا تھا. ایسے کسانوں کو اُس دل میں شامل کرلینا آسان کام نہ تھا جو دل مزدور اور غریب کسانوں کا بنا ہوا تھا. غریب کسان امیر کسانوں کے خلاف کھڑے ہوسکتے تھے پر امیر کسان غریبوں کے ساتھ ملکر اپنی کھیتی کا بٹوارا کرنے کے لئے کیسے تیار ہوسکتے تھے. تراتسکی کو یہ سب کام مشکل دکھائی دیتے تھے. شاید اسمبھو معلوم ہوتا ہو. لینن اور اِستالن کو یہی کام آسان اور معمولی دکھائی دیتے تھے. اب روس دو دلوں میں نہ بنٹتا تو کیا کرتا ؟

یہ ٹھیک ہے لینن نے اپنے دیش اور اپنے سمے کے لئے مارکس کے طریقوں کو ٹھیک نہیں سمجھا لیکن مارکس کے اس سدھانت کو ہمیشہ ٹھیک سمجھتا رہا کہ سامیہ واد کی استھاپنا بڑے پیمانے پر ہی ہوسکتی ہے اور اُس کا پیمانہ ساری دنیا ہی ہوسکتی ہے. سن 1938 میں استالن لینن کے اِس وچار سے بھی الگ پڑ گیا. اُس کی سمجھ میں یہی ٹھیک بیٹھا کہ جس طرح لینن کی نظر میں مارکس کے طریقے مارکس کے سمے کے لئے ٹھیک تھے' ویسے ہی لینن کی یہ بات کہ سامیہ واد دنیا بھر کے بڑے پیمانے پر ہی ہوسکتا ہے، لینن کے سمے کے لئے بھلے ٹھیک ہو' اُس کے' یعنی استالن کے سمے کے لئے ٹھیک نہیں. اُس نے اِس وچار کو پورا روپ دے ہی دیا کہ ایک دیش میں بھی سامیہ واد کی خاص خاص صورتیں پیدا کی جاسکتی ہیں. ہاں' سامیہ واد کی خاص خاصیت '<u>بےسرکار کی حکومت</u>' قائم نہیں کی جاسکتی. استالن کی رائے میں ایک دیش میں ایسی حالت لائی جاسکتی ہے کہ کھانے پینے کی بہتائت ہو جائے اور آپسی من موٹاؤ نام کو نہ رہے. گنڈاپن ایک دم دور ہوجائے. اونچ

नीचपना भी दूर हो जाय. शहर और देहाती भेद भाव भी खतम हो जाय. मजदूरों और पढ़े लिखों में पूरी दोस्ती हो जाय. हां, पुलिस और फ़ौज ज़रूर रहेंगी जब तक कि सारी दुनिया से इस तरह का भेद भाव न मिट जाय. इस सिलसिले में कहने के लिये ज़रूरी बात एक और रह गई और वह यह कि लेनिन और स्टालिन मार्क्स के शुरू के विचारों से भले ही हटे हों पर मार्क्स के मूल सिद्धान्तों पर हमेशा डटे रहे. और वह था मार्क्स का डाइलेक्टिकल मेथड (Marxian Dielectical Method). डाइलेक्टिकल मेथड का मतलब है प्रबल रीति या सदा बढ़ने वाली रीति. इसका विस्तार से हाल तो अलग से एक लेख चाहता है. उस पर अलग ही लिखा जायगा. यहां इतना लिखे देते हैं कि लेनिन और स्टालिन दोनों यह सच्चे जी से समझते थे कि वह मार्क्स और ऐंजिल के पक्के अनुयायी हैं. उनका ख्याल था कि मार्क्स के सिद्धान्त की बुनियाद ही इस बात पर है और उस सिद्धांत की जान ही यह है कि उस पर अमल करने के तरीक़े सदा बढ़ते रहेंगे और फैलते रहेंगे. मार्क्स के सिद्धान्त का मानना इसी बात पर निर्भर है कि जैसे जैसे हालतें बदलें वैसे ही वैसे तरीक़े भी बदलें. सिद्धान्त को चिपके रहना, सिद्धान्त को न मानना है. दुनिया में होने वाले आन्दोलनों से निगाह फेर लेना सिद्धान्त की हंसी उड़ाना है. बदलाव जीवन है. सिद्धान्त की रीतियों में अगर बदलाव न आयगा तो सिद्धान्त सिद्धान्त ही न रह जायगा. जहां सिद्धान्त का अटल रहना ज़रूरी है वहां तरीक़ों का बदलते रहना ज़रूरी है. साधन बदलते रहते हैं, फिर तरीक़े और चालें क्यों न बदलेंगी ? सिद्धान्त को अटल बनाए रखने के लिये यह ख़ुराक है. बालकपन, जवानी में न बदले और जवानी बुढ़ापे की शकल न ले तो आदमी नाम का प्रानी सौ बरस कैसे जिये ? डाइलेक्टिकल मेथड इन बदलाव के बिना जीवित ही नहीं रह सकता.

हिसटारिकल मेटेरियेलिज्म यानी इतिहासी माटीवाद के सिद्धान्त ने सोवियत विचारकों में एक नई जान डाल दी. उन्होंने हर क्षेत्र में बदलाव कर डाले. समाज रचना को नया रूप दे दिया. समाज विद्या तक बदल डाली. कला, इतिहास, दर्शन, शिक्षन, नीति, राज विद्या कोई क्षेत्र नहीं बचा जिसको उन्होंने नया रूप न दिया हो. बड़ी मेहनत के साथ उन्होंने सभी विद्याओं को इतिहासी माटीवाद पर कसा है यानी हिसटारिकल मेटेरियेलिज्म से उसका मेल बिठाया है. यहां इतना ही याद रखना चाहिये कि उन्होंने एक नया विज्ञान खड़ा कर दिया है. यह कोई ऐसी चीज नहीं जो लोगों को काम करते करते अपने आप हासिल होती है. सौ जड़ी बूटियों को अलग अलग खा कर देखना और उनका असर लिख डालना आसान काम है, हर कोई

نیچ پنا بھی دور ہو جائے۔ شہر اور دیہاتی بھید بھاؤ بھی ختم ہو جائے۔ مزدوروں اور پڑھے لکھوں میں پوری دوستی ہو جائے۔ ہاں، پولیس اور فوج ضرور رہیں گی جب تک کہ ساری دنیا سے اس طرح کا بھید بھاؤ نہ مٹ جائے۔ اس سلسلے میں کہنے کے لئے ضروری بات ایک اور رہ گئی اور وہ یہ کہ لینن اور استالن مارکس کے شروع کے وچاروں سے بھلے ہی ہٹے ہوں پر مارکس کے مول سدھانتوں پر ہمیشہ ڈٹے رہے۔ اور وہ تھا مارکس کا ڈائلکٹیکل میتھڈ (Marxian Dielectical Method). ڈائلکٹیکل میتھڈ کا مطلب ہے پربل ریتی یا سدا بڑھنے والی ریتی۔ اس کا وستار سے حال تو الگ سے ایک لیکھ چاہتا ہے۔ اس پر الگ ہی لکھا جائیگا۔ یہاں اتنا لکھے دیتے ہیں کہ لینن اور استالن دونوں یہ سچے جی سے سمجھتے تھے کہ وہ مارکس اور اینجلس کے پکے انویائی ہیں۔ ان کا خیال تھا کہ مارکس کے سدھانت کی بنیاد ہی اس بات پر ہے اور اس سدھانت کی جان ہی یہ ہے کہ اس پر عمل کرنے کے طریقے سدا بڑھتے رہینگے اور پھیلتے رہینگے۔ مارکس کے سدھانت کا ماننا اس بات پر نربھر ہے کہ جیسے جیسے حالتیں بدلیں ویسے ہی ویسے طریقے بھی بدلیں۔ سدھانت کو چپکے رہنا، سدھانت کو نہ ماننا ہے۔ دنیا میں ہونے والے آندولنوں سے نگاہ پھیر لینا سدھانت کی ہنسی اڑانا ہے۔ بدلاؤ جیون ہے۔ سدھانت کی ریتوں میں اگر بدلاؤ نہ آئیگا تو سدھانت سدھانت ہی نہ رہ جائیگا۔ جہاں سدھانت کا اٹل رہنا ضروری ہے وہاں طریقوں کا بدلتے رہنا ضروری ہے۔ سادھن بدلتے رہتے ہیں، پھر طریقے اور چالیں کیوں نہ بدلیں گی ؟ سدھانت کو اٹل بنائے رکھنے کے لئے یہ خوراک ہے۔ بالک پن، جوانی میں نہ بدلے اور جوانی بڑھاپے کی شکل نہ لے تو آدمی نام کا پرانی سو برس کیسے جئے ؟ ڈائلکٹیکل میتھڈ ان بدلاؤ کے بنا جیوت ہی نہیں رہ سکتا۔

ہسٹاریکل میٹریلزم یعنی اتہاسی ماٹی واد کے سدھانت نے سوویت وچارکوں میں ایک نئی جان ڈالدی۔ انہوں نے ہر چھیتر میں بدلاؤ کر ڈالے۔ سماج رچنا کو نیا روپ دے دیا۔ سماج ودیا تک بدل ڈالی۔ کلا، اتہاس، درشن، شکشن، نیتی، راج ودیا کوئی چھیتر نہیں بچا جس کو انہوں نے نیا روپ نہ دیا ہو۔ بڑی محنت کے ساتھ انہوں نے سبھی ودیاؤں کو اتہاسی ماٹی واد پر کسا ہے یعنی ہسٹاریکل میٹریلزم سے اس کا میل بٹھایا ہے۔ یہاں اتنا ہی یاد رکھنا چاہئے کہ انہوں نے ایک نیا وگیان کھڑا کردیا ہے۔ یہ کوئی ایسی چیز نہیں جو لوگوں کو کام کرتے کرتے اپنے آپ حاصل ہوتی ہے۔ سو جڑی بوٹیوں کو الگ الگ کھاکر دیکھنا اور ان کا اثر لکھ ڈالنا آسان کام ہے، ہر کوئی

कर सकता है; पर उनको खा कर इस नतीजे पर पहुंचना कि कौन बूटी किस शक्ल में कैसा गुन रखती है यह आसान नहीं. इसी को विज्ञान कहा जाता है. रूसी विचारकों ने इतिहास को इसी रीति से पढ़ा और उन्होंने 'हिसटारिकल मेटेरियेलिज़्म' या डाइलेक्टिकल मेथड के नाम से एक नया विज्ञान खड़ा कर दिया जो समाज शास्त्रियों के लिये जानना ज़रूरी है और उसी की देन है, समाजवाद से गुज़रता साम्यवाद.

—भगवानदीन

अमरीकी रंग भेद क़ानून

(ख़ुरशीद मेहदी)

रंग और नसल के भेद के पैरोकार अमरीका को अपना गुरु मानते है. एक नाज़ी प्रोफ़ेसर ने लिखा है कि जरमनी के जाति भेद क़ानून बनाने में अमरीकी जाति भेद और रंग भेद क़ानून से बहुत मदद मिली है और इसके लिये जरमनी के नाज़ी अमरीका वालों के एहसानमन्द हैं. अमरीका के इन क़ानूनों को जानना और अमरीका में बसने वाली मज़लूम जातियों की परिस्थिति पर विचार करना बहुत ज़रूरी है. इस विशय पर सोचते वक़्त इस बात का ध्यान ज़रूरी है कि अमरीका में क़ानूनों के शब्द कुछ हैं और अमल कुछ है. इसलिये हमें क़ानून और अमल दोनों को साथ साथ देखना चाहिये.

सफ़ेद चमड़ी वालों के मुहल्लों में नीगरो और यहूदी न बसने पाएं ऐसा कोई क़ानून नहीं है. यह भी ठीक है कि कोई ऐसा क़ानून नहीं है कि जिस के अनुसार नीगरो अलग अछूत बस्तियां बसाने पर मजबूर हों लेकिन अमल में कुछ दूसरी बात दिखाई पड़ती है. बालटीमोर शहर की कुल आबादी का बीस फ़ी सदी हिस्सा नीगरो हैं. लेकिन आबादी की कुल ज़मीन के सिर्फ़ दो फ़ी सदी हिस्से पर उनकी कुल आबादी फैली हुई है. शिकागो में बड़ी तादाद में नीगरो आबाद हैं. पर पूरी आबादी थोड़ी सी ज़मीन पर बसी हुई है. एक मुरब्बा मील ज़मीन पर 90 हज़ार नीगरो बसे हुए हैं. तन्दुरुस्ती के लिहाज़ से एक

...ا ہے؛ پر اُن کو کھاکر اِس نتیجے پر پہونچنا
...کس شکل میں کیسا گن رکھتی ہے یہ
...بوٹی
...نہیں . اِسی کو وگیان کہا جاتا ہے .
...وچارکوں نے اِتہاس کو اِسی ریتی سے پڑھا اور اُنہوں
...سٹاریکل میٹیریلزم' یا ڈائیلکٹیکل میتھڈ کے نام
...نیا وگیان کھڑا کردیا جو سماج شاشتریوں کے لئے
...ضروری ہے اور اُسی کی دین ہے' سماجواد سے گذرتا
...یواد .

—بھگوان دین

امریکی رنگ بھید قانون

(خورشید مہدی)

...نگ اور نسل کے بھید کے پیروکار امریکہ کو اپنا گرو
...ہیں . ایک نازی پروفیسر نے لکھا ہے کہ جرمنی کے
...بھید قانون بنانے میں امریکی جاتی بھید اور
...بھید قانونوں سے بہت مدد ملی ہے اور اِس کے لئے
...منی کے نازی امریکہ والوں کے احسان مند ہیں . ہم
...کہ کے اِن قانونوں کو جاننا اور امریکہ میں بسنے والی
...لوم جاتیوں کی پرستھتی پر وچار کرنا بہت ضروری
... اِس وشے پر سوچتے وقت اِس بات کا دھیان ضروری
...کہ امریکہ میں قانونوں کے شبد کچھ ہیں اور عمل
...ہے. اِس لئے ہمیں قانون اور عمل دونوں کو ساتھ ساتھ
...یکھنا چاہئے .

...فید چمڑی والوں کے محلوں میں نیگرو اور یہودی نہ
...نے پائیں ایسا کوئی قانون نہیں ہے . یہ بھی ٹھیک
...کہ کوئی ایسا قانون نہیں ہے کہ جس کے انوسار نیگرو
...الگ اچھوت بستیاں بسانے پر مجبور ہوں . لیکن عمل
...میں کچھ دوسری بات دکھائی پڑتی ہے. بالٹیمور شہر کی
...آبادی کا بیس فیصدی حصہ نیگرو ہے . لیکن آبادی
...کی کل زمین کے صرف دو فیصدی حصے پر اُن کی کل
...آبادی پھیلی ہوئی ہے . شکاگو میں بڑی تعداد میں
...نیگرو آباد ہیں . پر پوری آبادی تھوڑی سی زمین پر
...بسی ہوئی ہے . ایک مربع میل زمین پر 90 ہزار نیگرو
...بسے ہوئے ہیں . تندرستی کے لحاظ سے ایک

मुरब्बा मील में जितनी आबादी ज़ियादा से ज़ियादा होनी चाहिये उससे यह आबादी तीन गुना है. एक कमेटी हारलेम शहर की आबादी की जांच कर रही थी. यहां भी नीगरो आबाद हैं. इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि अगर इतने सटा सटा कर लोगों को बसाया जाने लगा तो पूरे अमरीका की आबादी न्यूयार्क शहर के सिर्फ़ आधे हिस्से में बस जाएगी.

जूरी क़ानून

इसी तरह जूरी का क़ानून भी है. ख़ुद क़ानून में नसली भेद और रंग भेद का कहीं ज़िक्र भी नहीं है. यह क़ानून सब नागरिकों को एकसा मानता है. लेकिन अमल में मामला उलटा है. प्रोफ़ेसर पालिन किब ने अपनी किताब "टेकसा में लेटिन अमरीकन" में 1946 की एक रिपोर्ट का ज़िक्र किया है. इस रिपोर्ट में लिखा है कि "टेकसा की पचास काउन्टियां ऐसी हैं जहां लेटिन अमरीकनों की आबादी 15 फ़ी सदी से 25 फ़ी सदी तक है. इन इलाक़ों में भी मेक्सिकन नसल के लोगों को कभी भी जूरी में नहीं बुलाया जाता. माल के मामूली मुक़द्दमों में भी इस नसल के लोग जूरी के मेम्बर मुक़र्रर नहीं किए जाते."

यहां हमें यह बात साफ़ तरीक़े से समझ लेना चाहिए कि अमरीका में नसली और रंगी भेद भाव सिर्फ़ नीगरो तक ही सीमित नहीं है. यहूदी, लेटिन अमरीकी, पुराने अमरीकी और दूसरी जातियों के लोग भी इसके शिकार हैं.

पैसिफ़िक सागर में बहुत से दीप हैं जिन पर अमरीका का क़बज़ा है उन्हीं दीपों में किसी एक में समोवा जाति के लोग आबाद हैं. कोई अमरीकी क़ानून ऐसा नहीं है कि जो समोवा जाति के लोगों को डाक्टर या दांत का डाक्टर बनने से रोकता हो. लेकिन इस दीप के कालिजों में डाक्टरी की तालीम नहीं दी जाती. इन्तज़ाम फ़ौज के हाथ में है और फ़ौजी अधिकारी तालीम का ढर्रा भी तै करते हैं. यहां के स्कूलों में अंगरेज़ी ज़बान की पढ़ाई पर ज़ोर दिया जाता है और कुछ दस्तकारियां भी सिखाई जाती हैं. किसी सूरत में भी कोई तकनीकी तालीम नहीं दी जाती. अंगरेज़ी की पढ़ाई इस लिए होती है ताकि मालिकों को बात चीत करने और ब्योहार रखने में आसानी हो और दस्तकारियां इस लिये कि उनकी मेहनत कारख़ानेदारों के काम आ सके, बहरहाल कहने का मतलब यह है कि लिखा क़ानून एक बात है और ग़ैर लिखा अमली क़ानूनी दूसरी बात.

प्रान्ती कानून

अब हम लिखे दूसरे क़ानूनों को ले लें. अमरीका में 48 प्रान्त हैं. इन में से बहुत से प्रान्तों में ऐसे क़ानून

مربع میل میں جتنی آبادی زیادہ سے زیادہ ہونی چاہئے اس سے یہ آبادی تین گنا ہے۔ ایک کمیٹی ہارلم شہر کی آبادی کی جانچ کر رہی تھی۔ یہاں بھی نیگرو آباد ہیں۔ اس کمیٹی نے اپنی رپورٹ میں لکھا تھا کہ اگر اتنا سٹا سٹا کر لوگوں کو بسایا جانے لگا تو پورے امریکہ کی آبادی نیویارک شہر کے صرف آدھے حصے میں بس جائےگی۔

جوری قانون

اسی طرح جوری کا قانون بھی ہے۔ خود قانون میں نسلی بھید اور رنگ بھید کا کہیں ذکر بھی نہیں ہے۔ یہ قانون سب ناگرکوں کو یکساں مانتا ہے۔ لیکن عمل میں معاملہ اُلٹا ہے۔ پروفیسر پالن کب نے اپنی کتاب "ٹیکسا میں لیٹن امریکن" میں 1946 کی ایک رپورٹ کا ذکر کیا ہے۔ اس رپورٹ میں لکھا ہے کہ "ٹیکسا کی پچاس کاؤنٹیاں ایسی ہیں جہاں لیٹن امریکنوں کی آبادی 15 فی صدی سے 25 فی صدی تک ہے۔ ان علاقوں میں بھی میکسکن نسل کے لوگوں کو کبھی بھی جوری میں نہیں بلایا جاتا۔ مال کے معمولی مقدموں میں بھی اس نسل کے لوگ جوری کے ممبر مقرر نہیں کئے جاتے۔"

یہاں ہمیں یہ بات صاف طریقے سے سمجھ لینا چاہئے کہ امریکہ میں نسلی اور رنگی بھید بھاؤ صرف نیگرو تک ہی سمٹ نہیں ہے۔ یہودی، لیٹن امریکی، پرانے امریکی اور دوسری جاتیوں کے لوگ بھی اس کے شکار ہیں۔

پیسفک ساگر میں بہت سے دیپ ہیں جن پر امریکہ کا قبضہ ہے۔ انہیں دیپوں میں کسی ایک میں سموا جاتی کے لوگ آباد ہیں۔ کوئی امریکی قانون ایسا نہیں ہے جو سموا جاتی کے لوگوں کو ڈاکٹر یا دانت کا ڈاکٹر بننے سے روکتا ہو۔ لیکن اس دیپ کے کالجوں میں ڈاکٹری کی تعلیم نہیں دی جاتی۔ انتظام فوج کے ہاتھ میں ہے اور فوجی ادھیکاری تعلیم کا ڈھرا بھی طے کرتے ہیں۔ یہاں کے اسکولوں میں انگریزی زبان کی پڑھائی پر زور دیا جاتا ہے اور کچھ دستکاریاں بھی سکھائی جاتی ہیں۔ کسی صورت میں بھی کوئی تکنیکی تعلیم نہیں دی جاتی۔ انگریزی کی پڑھائی اس لئے ہوتی ہے تاکہ مالکوں کو بات چیت کرنے اور بیوہار رکھنے میں آسانی ہو اور دستکاریاں اس لئے کہ اُن کی محنت کارخانےداروں کے کام آ سکے۔ بہرحال کہنے کا مطلب یہ ہے کہ لکھا قانون ایک بات ہے اور غیر لکھا عملی قانون دوسری بات۔

پرانتی قانون

اب ہم لکھے دوسرے قانونوں کو لے لیں۔ امریکہ میں 48 پرانت ہیں۔ اِن میں سے بہت سے پرانتوں میں ایسے قانون

मौजूद हैं जो केन्द्रीय क़ानूनों के खिलाफ हैं, अंतराष्ट्रीय मुआहिदों के ख़िलाफ़ हैं, इन्सानियत के ख़िलाफ़ हैं. हम सब से पहिले मिसी सिपी के एक क़ानून का ज़िक्र करते हैं.

"जो आदमी या संस्था ऐसी चीज़ को छापे और प्रकाशित करे या उसको छपे, टाइप या हाथ के लिखे किसी रूप में बांटे जिस में गोरों और नीगरों की समाजी बराबरी और उनके बीच शादी के सम्बन्ध में बहस की गई हो या उस तरफ़ सिर्फ़ इशारा किया गया हो या इस बात की सूचना दी गई हो, वह आदमी या संस्था मुजरिम समझे जावेंगे और उन पर 500 डालर तक जुर्माना किया जायेगा या 6 महीने की सज़ा दी जावेगी और या सज़ा जुर्माना दोनों दंड उन्हें एक साथ दिये जायेंगे."

अमरीका के तीस प्रान्तों की सरकारें नीगरो और गोरों के बीच शादी की इजाज़त नहीं देती. अज़ाद देशों में असेम्बलियां क़ानून पास करती हैं और सरकारें उस पर अमल कराती हैं. लेकिन अमरीका में उल्टा मामला है. अमरीका के 6 प्रान्तों की असेम्बलियों को यह हक़ नहीं है कि वह कभी भी नीगरों और गोरों की शादी की इजाज़त दे सकें. यह हक़ इन प्रान्तों की सरकारों ने हज़म कर लिया है'

टैक्सा प्रान्त का शादी सम्बन्धी क़ानून बहुत ही दिल-चस्प है--

"अगर गोरे और नीगरों प्रान्त के अंदर आपस में शादी करते हैं, या उस प्रान्त के अन्दर शादी कर चुके हैं, और या प्रान्त से बाहर शादी कर चुके हैं और अब प्रान्त में आ कर मियां बीबी की तरह रह रहे हैं तो उनको कम से कम दो साल और ज़ियादा से ज़ियादा पांच साल तक उद्धारकारी जेल ख़ानों या तोबा घरों में रहने की सज़ा मिलेगी."

यह भी ध्यान देने की बात है कि जो पादरी गोरों और नीगरों की शादियां कराते हैं उन्हें भी सज़ा दी जाती है. इस क़िसम का क़ानून तीस प्रान्तों में है.

पच्छिम वरजिनिया के प्रान्त का यह क़ानून है--"जो आदमी सफ़ेद चमड़ी वालों और नीगरों में शादी कराता है वह मुजरिम समझा जायगा और मुक़दमा चला कर उस पर दो सौ डालर तक जुरमाना किया जायगा." यह क़ानून कुछ हलका है.

दक्खिन कोलीना प्रान्त में ऐसे पादरी को जो गोरों और नीगरों के बीच शादी कराता है एक साल तक की सख़्त सज़ा दी जाती है.

कुछ प्रान्तों में ऐसे क़ानून भी हैं जो गोरे और नीगरों पादरियों के बीच भी फ़रक़ करते हैं. जारजिया का क़ानून

ہیں جو کیندری قانونوں کے خلاف ہیں' انترراشٹری معاہدوں کے خلاف ہیں' انسانیت کے خلاف ہیں' ہم سب سے پہلے مسسی سپی کے ایک قانون کا ذکر کرتے ہیں—

"جو آدمی یا سنستھا ایسی چیز کو چھاپے اور پرکاشت کرے یا اُس کو چھپے' ٹائپ یا ہاتھ کے لکھے کسی روپ میں بانٹے جس میں گوروں اور نیگرو کی سماجی برابری اور اُن کے بیچ شادی کے سمبندھ میں بحث کی گئی ہو یا اِس طرف صرف اِشارہ کیا گیا ہو یا اس بات کی سوچنا دی گئی ہو' وہ آدمی یا سنستھا مجرم سمجھے جاوینگے اور اُن پر پانچ سو ڈالر تک جرمانہ کیا جائیگا یا چھ مہینے کی سزا دی جاویگی اور یا سزا اور جرمانہ دونوں ڈنڈ اُنہیں ایک ساتھ دئیے جائینگے۔"

امریکہ کے تیس پرانتوں کی سرکاریں نیگرو اور گوروں کے بیچ شادی کی اجازت نہیں دیتی۔ آزاد دیشوں میں اسمبلیاں قانون پاس کرتی ہیں اور سرکاریں اُس پر عمل کراتی ہیں۔ لیکن امریکہ میں الٹا معاملہ ہے۔ امریکہ کے چھ پرانتوں کی اسمبلیوں کو یہ حق نہیں ہے کہ وہ کبھی بھی نیگروؤں اور گوروں کی شادی کی اِجازت دے سکیں۔ یہ حق اِن پرانتوں کی سرکاروں نے ہضم کرلیا ہے۔

ٹکسا پرانت کا شادی سمبندھی قانون بہت ہی دلچسپ ہے—

"اگر گورے اور نیگرو پرانت کے اندر آپس میں شادی کرتے ہیں' یا اُس پرانت کے اندر شادی کر چکے ہیں' اور یا پرانت سے باہر شادی کر چکے ہیں اور اب پرانت میں آکر میاں بیوی کی طرح رہ رہے ہیں تو کم سے کم دو سال اور زیادہ سے زیادہ پانچ سال تک اُدھارکاری جیل خانوں یا توبہ گھروں میں رہنے کی سزا ملیگی۔"

یہ بھی دھیان دینے کی بات ہے کہ جو پادری گوروں اور نیگرو کی شادیاں کراتے ہیں انہیں بھی سزا دی جاتی ہے۔ اس قسم کا قانون تیس پرانتوں میں ہے۔

پچھم ورجینا کے پرانت کا یہ قانون ہے—"جو آدمی سفید چمڑی والوں اور نیگرو میں شادی کراتا ہے وہ مجرم سمجھا جائیگا اور مقدمہ چلاکر اس پر دو سو ڈالر تک جرمانہ کیا جائیگا۔" یہ قانون کچھ ہلکا ہے۔

دکھن کرولینا پرانت میں ایسے پادری کو جو گوروں اور نیگرو کے بیچ شادی کراتا ہے ایک سال تک کی سخت سزا دی جاتی ہے۔

کچھ پرانتوں میں ایسے قانون بھی ہیں جو گورے اور نیگرو پادریوں کے بیچ بھی فرق کرتے ہیں۔ جارجیا کا قانون

नीगरो पादरियों को सिर्फ़ नीगरो जोड़ों की शादी कराने की इजाज़त देता है और दूसरे सफ़ेद रंग के लोगों की शादी कराने से सख़्ती से मना करता है.

मेरी लैंड प्रान्त के एक क़ानून के शब्द यह हैं--"अगर किसी सफ़ेद नसल की औरत के पेट से किसी नीगरो का बच्चा पैदा होता है तो उस औरत को डेढ़ साल से लेकर ज़ियादा से ज़ियादा पांच साल की सज़ा दी जायगी." जारजिया और आकनास प्रान्तों में भी ऐसे कानून हैं.

पन्द्रह प्रान्त सफ़ेद नसल के लोगों और मंगोलियन और पूरब वालों के दरमियान शादी की मनाही करते हैं. पन्द्रह से कुछ कम ऐसे प्रान्त हैं जिन में सफ़ेद नसल के लोगों और मलाया के लोगों, रेड इनडियनों, अमरीकी हिन्दुस्तानियों, एशिया के हिन्दुस्तानियों के बीच शादी की इजाज़त नहीं है. इन प्रान्तों में अमरीकी हिन्दुस्तानी और मलाया के लोग भी नीगरो से शादी नहीं कर सकते.

प्रान्तों की सरकारों और असेम्बलियों के अलावा शहरी कमेटियों ने रंग भेद से सम्बनधित हज़ारों क़ानून बनाए है. उनमें से कुछ यह हैं.

अलबामा प्रान्त के बरमिंघम शहर के एक क़ानून की दफ़ा 597 के शब्द यह हैं. "नीगरों और सफ़ेद नस्ल के लोगों के लिये एक साथ खेलना या ताश शतरंज वग़ैरा ऐसे खेलों के लिये एक जगह इकट्ठा होना जुर्म है. ऐसा जुर्म करने वालों पर मुक़दमा चलाया जाएगा और उन को छै महीने की सज़ा दी जाएगी और या सौ डालर जुरमाना किया जाएगा."

एटलन्टा (जारजिया) का क़ानून सब से ज़ियादा दिलचस्प है-"कोई नाई जो सफ़ेद नसल का नहीं है किसी सफ़ेद नसल की औरत या लड़की की सेवा नहीं कर सकता."

क़बरस्तान के सम्बन्ध में भी क़ानून हैं--"जिस क़बरस्तान में सफ़ेद नसल के लोग गाड़े जाते हैं या जो जगह उनके इस्तेमाल के लिये छोड़ी गई है. उस क़बरस्तान में क़बरसतान का अफ़सर न किसी नीगरो को गाड़ेगा न गाड़ने की इजाज़त देगा."

वाशिंगटन में पागलपन की हद दिखाई पड़ती है. यहां के एक क़ानून के अनुसार वह कुत्ते जिनके मालिक गोरे हैं और वह कुत्ते जिनके मालिक काले या पीले नसल के लोग हैं एक क़बरस्तान में दफ़न नहीं किये जा सकते.

अमरीका में बहुत से गांव और शहर ऐसे भी हैं जहां नीगरों और मेक्सिकन अमरीकियों को इस बात की हिदायत है कि वह रात के समय उन इलाक़ों के बाहर न जाएं जो उनके लिये मख़सूस हैं. कुछ जगहों पर शहर के ख़ास ख़ास हिस्सों में यह लोग किसी भी वक़्त नहीं

نیگرو پادریوں کو صرف نیگرو جوڑوں کی شادی کرانے کی اجازت دیتا ہے اور دوسرے سفید رنگ کے لوگوں کی شادی کرانے سے سختی سے منع کرتا ہے ۔

میری لینڈ پرانت کے ایک قانون کے شبد یہ ہیں— ''اگر کسی سفید نسل کی عورت کے پیٹ سے کسی نیگرو کا بچہ پیدا ہوتا ہے تو اُس عورت کو ڈیڑھ سال سے لےکر زیادہ سے زیادہ پانچ سال کی سزا دی جائےگی ۔'' جارجیا اور آکناس پرانتوں میں بھی ایسے قانون ہیں ۔

پندرہ پرانت سفید نسل کے لوگوں اور منگولین اور پورب والوں کے درمیان شادی کی مناہی کرتے ہیں ۔ پندرہ سے کچھ کم ایسے پرانت ہیں جن میں سفید نسل کے لوگوں اور ملایا کے لوگوں، ریڈ انڈینوں، امریکی ہندستانیوں، ایشیا کے ہندستانیوں کے بیچ شادی کی اِجازت نہیں ہے ۔ اِن پرانتوں میں امریکی ہندستانی اور ملایا کے لوگ بھی نیگرو سے شادی نہیں کرسکتے ۔

پرانتوں کی سرکاروں اور اسمبلیوں کے علاوہ شہری کمیٹیوں نے رنگ بھید سے سمبندھت ہزاروں قانون بنائے ہیں ۔ اِن میں سے کچھ یہ ہیں ۔

الباما پرانت کے برمنگھم شہر کے ایک قانون کی دفعہ 597 کے شبد یہ ہیں—''نیگرو اور سفید نسل کے لوگوں کے لئے ایک ساتھ کھیلنا یا تاش شطرنج وغیرہ ایسے کھیلوں کے لئے ایک جگہ اکٹھا ہونا جرم ہے ۔ ایسا جرم کرنے والوں پر مقدمہ چلایا جائےگا اور اُن کو چھ مہینے کی سزا دی جائےگی اور یا سو ڈالر جرمانہ کیا جائےگا ۔''

اٹلانٹا (جارجیا) کا قانون سب سے زیادہ دلچسپ ہے —''کوئی نائی جو سفید نسل کا نہیں ہے کسی سفید نسل کی عورت یا لڑکی کی سیوا نہیں کرسکتا ۔''

قبرستان کے سمبندھ میں بھی قانون ہیں--''جس قبرستان میں سفید نسل کے لوگ گاڑے جاتے ہیں یا جو جگہ اُن کے اِستعمال کے لئے چھوڑی گئی ہے اُس قبرستان میں قبرستان کا افسر نہ کسی نیگرو کو گاڑے گا اور نہ گاڑنے کی اجازت دےگا ۔''

واشنگٹن میں پاگل پن کی حد دکھائی پڑتی ہے ۔ یہاں ایک قانون کے انوسار وہ کتے جن کے مالک گورے ہیں اور وہ کتے جن کے مالک کالے یا پیلے نسل کے لوگ ہیں ایک قبرستان میں دفن نہیں کئے جاسکتے ۔

امریکہ میں بہت سے گاؤں اور شہر ایسے بھی ہیں جہاں نیگرو اور میکسیکن امریکیوں کو اس بات کی ہدایت ہے کہ وہ رات کے سمے اُن علاقوں کے باہر نہ جائیں جو اُن کے لئے مخصوص ہیں ۔ کچھ جگہوں پر شہر کے خاص خاص حصوں میں یہ لوگ کسی بھی وقت نہیں

जा सकते. जिन इलाक़ों में नीगरो को जाने की इजाज़त नहीं है वही शहर के ख़ूबसूरत इलाक़े हैं और वहीं ही सैर और मनोरंजन का प्रबन्ध है.

तालीम में जाति भेद क़ानून

प्रान्तीय सरकारों ने तालीम के मैदान में भी जाति भेद और रंग भेद को जायज़ रक्खा है. 21 प्रान्तों ने ऐसे क़ानून बना रक्खे हैं जिनके अनुसार नीगरो और गोरे बच्चे पबलिक स्कूलों में एक साथ नहीं पढ़ सकते. उनके वास्ते अलग अलग स्कूल होते हैं. तीन प्रान्तों में तो अमरीकी हिन्दुस्तानी भी सफ़ेद नसल के अमरीकनों के साथ एक स्कूल में नहीं पढ़ सकते. दो प्रान्तों ने क़ानून बना कर अलग अलग जाति के बच्चों के वास्ते अलग अलग कोर्स की किताबें मुकर्रर कर रक्खी हैं. एक जाति के बच्चे को दूसरे जाति के बच्चे की कोर्स की किताब नहीं पढ़ाई जा सकती.

अमरीका के दक्खिनी भाग के बहुत से प्रान्तों में कारबारी कालिज, खेती के कालिज और दूसरे कालिजों में जाति भेद क़ानून लागू हैं. मेरी लैंड के एक क़ानून के अनुसार यह ज़रूरी है कि नीगरों स्कूलों का संचालक सफ़ेद नसल का आदमी हो. टैनेसी के प्रान्तों में यह क़ानून है कि कोई भी शख़्स जिसने वहां जन्म नहीं लिया है और सफ़ेद नसल का नहीं है, जिसने पैदाइश से ही अंगरेज़ी नहीं बोली है या जिसके मां बाप अंगरेज़ी नहीं बोलते हैं वह सफ़ेद नसल के बच्चों को नहीं पढ़ा सकता.

जैसा ऊपर मिसालों से ज़ाहिर है कि तालीम का ढांचा भी जाति भेद के आधार पर खड़ा है. 1947 में ऊंची तालीम की जांच करने के लिये एक केन्द्रीय कमीशन मुक़र्रर हुआ था उसने रिपोर्ट दी कि बहुत से कालिज "इस बात पर ज़ोर देते हैं कि कालिज में दाख़िले के वक़्त विद्यार्थी अपने धर्म जात और रंग व नसल के संबन्ध में कालिज अधिकारियों को पूरी पूरी जानकारी दें. विद्यार्थियों की क़ाबलियत का अन्दाज़ा लगाने या उन्हें किसी तरह की सहूलियत पहुंचाने के लिये यह जानकारी हासिल नहीं की जाती बल्कि इस जानकारी से फ़ायदा उठा कर ख़ास रंग और ख़ास जाति के लोगों को दाख़िल नहीं किया जाता."

जो कालिज ग़ैर सफ़ेद नसल के लोगों से यह बर्ताव करते हैं उनमें से बहुत से प्रान्तीय सरकारों के कालिज हैं, दूसरे कालिजों को टैक्स से छूट मिली है जिस कारन से यह अध सरकारी हो जाते हैं. इन सरकारी और अध सरकारी कालिजों में जब यह भेद बढ़ता जाता है और सरकार उसको नहीं रोक पाती है तो यह कहना ग़लत

…نہیں جا سکتے۔ جن علاقوں میں نیگرو کو جانے کی اجازت نہیں ہے وہی شہر کے خوبصورت علاقے ہیں اور وہیں ہی سیر اور منورنجن کا پربندھ ہے۔

تعلیم میں جاتی بھید قانون

پرانتی سرکاروں نے تعلیم کے میدان میں بھی جاتی بھید اور رنگ بھید کو جائز رکھا ہے۔ اکیس پرانتوں نے ایسے قانون بنا رکھے ہیں جن کے انوسار نیگرو اور گورے بچے پبلک اسکولوں میں ایک ساتھ نہیں پڑھ سکتے۔ ان کے واسطے الگ الگ اسکول ہوتے ہیں۔ تین پرانتوں میں تو امریکی ہندستانی بھی سفید نسل کے امریکنوں کے ساتھ ایک اسکول میں نہیں پڑھ سکتے۔ دو پرانتوں نے قانون بناکر الگ الگ جاتی کے بچوں کے واسطے الگ الگ کورس کی کتابیں مقرر کر رکھی ہیں۔ ایک جاتی کے بچے کو دوسرے جاتی کے بچے کی کورس کی کتاب نہیں پڑھائی جاسکتی۔

امریکہ کے دکھنی بھاگ کے بہت سے پرانتوں میں کاروباری کالج، کھیتی کے کالج اور دوسرے کالجوں میں جاتی بھید قانون لاگو ہے۔ میری لینڈ کے ایک قانون کے انوسار یہ ضروری ہے کہ نیگرو اسکولوں کا سنچالک سفید نسل کا آدمی ہو۔ ٹینیسی کے پرانت میں یہ قانون ہے کہ کوئی بھی شخص جس نے وہاں جنم نہیں لیا ہے اور سفید نسل کا نہیں ہے، جس نے پیدائش سے ہی انگریزی نہیں بولی ہے یا جس کے ماں باپ انگریزی نہیں بولتے ہیں سفید نسل کے بچوں کو نہیں پڑھا سکتا۔

اوپر کی مثالوں سے ظاہر ہے کہ تعلیم کا ڈھانچہ بھی جاتی بھید کے آدھار پر کھڑا ہے۔ 1947 میں اونچی تعلیم کی جانچ کرنے کے لئے ایک کیندری کمیشن مقرر ہوا تھا۔ اس نے رپورٹ دی کہ بہت سے کالج "اس بات پر زور دیتے ہیں کہ کالج میں داخلہ کے وقت ودیارتھی اپنے دھرم جات اور رنگ و نسل کے سمبندھ میں کالج ادھیکاریوں کو پوری پوری جانکاری دیں۔ ودیارتھیوں کی قابلیت کا اندازہ لگانے یا انہیں کسی طرح کی سہولیت پہنچانے کے لئے یہ جانکاری حاصل نہیں کی جاتی بلکہ اس جانکاری سے فائدہ اٹھاکر خاص رنگ اور خاص جاتیوں کے لوگوں کو داخل نہیں کیا جاتا۔"

جو کالج غیر سفید نسل کے لوگوں سے یہ برتاؤ کرتے ہیں ان میں سے بہت سے پرانتی سرکاروں کے کالج ہیں۔ دوسرے کالجوں کو ٹیکس سے چھوٹ ملی ہے، جس کارن سے یہ ادھ سرکاری ہو جاتے ہیں۔ ان سرکاری اور ادھ سرکاری کالجوں میں جب یہ بھید بڑھتا جاتا ہے اور سرکار اس کو نہیں روک پاتی ہے تو یہ کہنا غلط

नहीं होगा कि तालीम संस्थाओं ने भी रंग भेद और जाति भेद में ग़ैर लिखे अटल क़ानून का रूप ले लिया है.

जिस तरह अपने देश में डाक्टरी वग़ैरा पेशे करने के लिये प्रान्तीय सरकारों से लैसंस लेना पड़ता है. उसी तरह अमरीका में भी प्रान्तीय सरकारें बहुत से पेशे अख़्तयार करने के संबन्ध में लैसंस देती हैं. यह लैसंस एक सरकारी बोर्ड देता है. इस तरह के लैसंस देने में भी रंग और जात का ख़याल रक्खा जाता है. सन 1948 में एक सरकारी कमीशन ने इन बोर्डों की जांच की थी. और रिपोर्ट दी थी कि यह बोर्ड दरख़्वास्त वाले फ़ार्मों में ऐसी बहुत सी चीज़ें पूछते हैं जिनका पेशे से कोई ताल्लुक़ नहीं होता.

खेल मनोरंजन और सफ़र में जाति भेद क़ानून

दक्खिन के बहुत से प्रान्तों में नीगरो और गोरे एक साथ एक रेल के डिब्बे में नहीं बैठ सकते. नीगरों के लिये दूसरे डिब्बे होते हैं जो आम तरीक़े से ख़राब होते हैं. नीगरों का वेटिंग रूम भी अलग होता है.

नीगरों लोग उन पबलिक या प्राइवेट मनोरंजन घरों, पार्कों, अस्पतालों, सेवा सम्मितियों, होटलों और थियेटरों में नहीं जा सकते जो गोरों के लिये मख़सूस हैं या जिनके मालिक गोरी नसल के हैं. जेल भी अलग अलग होते हैं. फ़ैक्टरियों में काले और गोरे मज़दूर साथ काम नहीं कर सकते.

ओकला होमा में नीगरों और सफ़ेद नसल के लोगों के लिये टेलीफ़ोन करने के अलग अलग कमरे हैं. अगर कोई नीगरो उस कमरे से टेलीफ़ोन करता है जो सफ़ेद नसल वालों के लिये मख़सूस है तो क़ानून उसे मुजरिम ठहराता है.

टेक्सा प्रान्त का कानून गोरों और नीगरों को साथ साथ बाक्सिंग मैच में हिस्सा लेने की इजाज़त नहीं देता.

ऑकनासिंस प्रान्त के कानून के अनुसार गोरे और नीगरों एक ही जगह वोट नही दे सकते. चुनाव के समय नीगरों के लिये अलग इन्तज़ाम किया जाता है.

उत्तर कारोलीना में क़ानून है की उस प्रान्त का फ़ौजी अफ़सर हमेशा सफ़ेद नस्ल का ही होगा.

दक्खिनी कारोलिना में कानून है की सूती मिलों में नीगरो और सफ़ेद नसल के मज़दूर एक कमरे में मिलकर काम नहीं कर सकते. वह एक ही खिडकी से तनख़्वाह भी नहीं ले सकते. पीने और हाथ धोने के लिये पानी और साबुन का इंतज़ाम भी गोरे और कालों के लिये अलग अलग जगह और भिन्न भिन्न क़िसम का किया जाता है. यही नहीं, नीगरो और सफ़ेद नसल के लोग एक ही दरवाज़े

نہیں ہوگا کہ تعلیمی سنستھاؤں میں بھی رنگ بھید اور جاتی بھید نے غیر لکھے اٹل قانون کا روپ لے لیا ہے ۔

جس طرح اپنے دیش میں ڈاکٹری وغیرہ پیشے کرنے کے لئے پرانتی سرکاروں سے لائسنس لینا پڑتا ہے اسی طرح امریکہ میں بھی پرانتی سرکاریں بہت سے پیشے اختیار کرنے کے سمبندھ میں لائسنس دیتی ہیں. یہ لائسنس ایک سرکاری بورڈ دیتا ہے ۔ اس طرح کے لائسنس دینے میں بھی رنگ اور جات کا خیال رکھا جاتا ہے ۔ 1948 میں ایک سرکاری کمیشن نے اِن بورڈوں کی جانچ کی تھی اور رپورٹ دی تھی کہ یہ بورڈ درخواست والے فارموں میں ایسی بہت سی چیزیں پوچھتے ہیں جن کا پیشے سے کوئی تعلق نہیں ہوتا ۔

کھیل، منورنجن اور سفر میں جاتی بھید قانون

دکھن کے بہت سے پرانتوں میں نیگرو اور گورے ایک ساتھ ایک ریل کے ڈبے میں نہیں بیٹھ سکتے ۔ نیگرو کے لئے دوسرے ڈبے ہوتے ہیں ۔ جو عام طریقے سے خراب ہوتے ہیں ۔ نیگروؤں کا ویٹنگ روم بھی الگ ہوتا ہے ۔

نیگرو لوگ اُن پبلک یا پرائیویٹ منورنجن گھروں، پارکوں، اسپتالوں، سیواسمیتوں، ہوٹلوں اور تھیٹروں میں نہیں جاسکتے جو گوروں کے لئے مخصوص ہیں یا جن کے مالک گوری نسل کے ہیں. جیل بھی الگ الگ ہوتے ہیں ۔ فیکٹریوں میں کالے اور گورے مزدور ساتھ کام نہیں کرسکتے ۔

اوکلاہوما میں نیگرو اور سفید نسل کے لوگوں کے لئے ٹیلیفون کرنے کے الگ الگ کمرے ہیں. اگر کوئی نیگرو اُس کمرے سے ٹیلیفون کرتا ہے جو سفید نسل والوں کے لئے مخصوص ہے تو قانون اُسے مجرم ٹھہراتا ہے ۔

ٹیکسا پرانت کا قانون گوروں اور نیگروؤں کو ساتھ ساتھ باکسنگ میچ میں حصہ لینے کی اجازت نہیں دیتا ۔

آرکناسس پرانت کے قانون کے انوسار گورے اور نیگرو ایک ہی جگہ ووٹ نہیں دے سکتے ۔ چناؤ کے سمے نیگرو کے لئے الگ انتظام کیا جاتا ہے ۔

اُتری کارولینا میں قانون ہے کہ اُس پرانت کا فوجی افسر ہمیشہ سفید نسل کا ہی ہوگا ۔

دکھنی کارولینا میں قانون ہے کہ سوتی ملوں میں نیگرو اور سفید نسل کے مزدور ایک کمرے میں مل کر کام نہیں کرسکتے ۔ وہ ایک ہی کھڑکی سے تنخواہ بھی نہیں لے سکتے. پینے اور ہاتھ دھونے کے لئے پانی اور صابن کا انتظام بھی گورے اور کالوں کے لئے الگ الگ جگہ اور بھن بھن قسم کا کیا جاتا ہے ۔ یہی نہیں. نیگرو اور سفید نسل کے لوگ ایک ہی دروازے

से आ जा भी नहीं सकते. एक समय में और एक साथ एक खिड़की और एक सीढ़ी का इस्तेमाल करने की भी उन्हें इजाज़त नहीं है.

राजकाजी अधिकार

ज़ियादातर प्रान्तों में नीगरों और गोरों को वोट देने का बराबर का क़ानूनी हक़ है. इस सम्बन्ध में जितने जाति भेद और रंग भेद क़ानून थे वह सब ख़त्म हो गये हैं. विधान के चौदहवें बदलाव के अनुसार केन्द्र ने प्रान्तों को ऐसे क़ानून बनाने से मना कर दिया है. फिर भी दक्खिनी प्रान्तों में लाखों नीगरों और पिछड़े हुए क़बीले ऐसे हैं जिन्हें वोट देने का हक़ नहीं है. चालबाज़ी, ज़ुल्म और ज़बरदस्ती से इन नागरिकों को अपने नागरिक अधिकार से वंचित रक्खा जाता है. कुछ क़ानून ऐसे भी हैं जिनकी कुछ दफ़ाओं को उल्टे सीधे मानी पहनाए जाते हैं और जिनकी मदद से नीगरो का वोट का हक़ छीन लिया जाता है.

दक्खिनी प्रान्तों में उस आदमी को ही वोट का हक़ मिलता है जो सरकार को चुंगी अदा करता है. यह चुंगी आमदनी के लिहाज़ से लगाई जाती है. नीगरों आम तरीक़े से ग़रीब होते हैं. वह चुंगी नहीं देते इसलिये उन्हें वोट का हक़ नहीं मिलता.

वोट का हक़ देने से पहिले हर व्यक्ति की क़ाबलियत और समझ की परीक्षा की जाती है. यह क़ानून दक्खिन के तमाम प्रान्तों में लागू है. इस क़ानून के अनुसार वोटर बनने से पहिले हर आदमी को रजिस्ट्रार बोर्ड को इस बात का यक़ीन दिलाना पड़ेगा कि वह लिख पढ़ सकता है और अमरीका के केन्द्री विधान या प्रान्त के प्रांतीय विधान को समझ सकता है. इसके अलावा सरकारों ने रजिस्ट्रेशन बोर्ड को यह अख़्तयार दे दिया है कि रजिस्ट्रेशन के सम्बन्ध में वह ख़ुद जैसे नियम चाहे बना सकता है. रजिस्ट्रेशन में बहुत सी दिक़्क़तें होती हैं. रजिस्ट्रेशन बोर्ड के मेम्बरों को अपने गुन हर आदमी को वोटर बनने के लिये जताने पड़ते हैं. और वोटर होना या न होना उनकी मर्ज़ी पर निर्भर होता है. रजिस्ट्रेशन पबलिक जगहों पर नहीं किया जाता बल्कि इस मतलब के लिये सफ़ेद नसल वालों के घरों का इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि सफ़ेद नसल के अफ़सर कालों के घरों पर नहीं जा सकते. इस के अलावा दूसरी दिक़्क़तें भी हैं. जब कोई नीगरों रजिस्ट्रेशन कराने जाता है तो उसे टला दिया जाता है. कभी कह दिया जाता है कि वह किसी दूसरे समय आए या किसी दूसरे दिन आए, और दो चार दफ़ा दौड़ कर वह चुप हो जाता है. कभी कहा जाता है कि उसके आने

نہیں سکتے۔ ایک سمے میں اور ایک ساتھ کھڑکی اور ایک سیڑھی کا استعمال کرنے کی بھی اجازت نہیں ہے۔

راجکاجی ادھیکار

زیادہ تر پرانتوں میں نیگرو اور گوروں کو ووٹ دینے کا برابر کا قانونی حق ہے۔ اس سمبندھ میں جتنے جاتی بھید اور رنگ بھید قانون تھے وہ سب ختم ہو گئے ہیں۔ ودھان کے چودھویں بدلاؤ کے انوسار کیندر نے پرانتوں کو ایسے قانون بنانے سے منع کر دیا ہے۔ پھر بھی دکھنی پرانتوں میں لاکھوں نیگرو اور پچھڑے ہوئے قبیلے ایسے ہیں جنھیں ووٹ دینے کا حق نہیں ہے۔ چالبازی، ظلم اور زبردستی سے ان ناگرکوں کو نے ناگرک ادھیکار سے ونچت رکھا جاتا ہے۔ کچھ قانون ایسے بھی ہیں جن کی کچھ دفعوں کو الٹے سیدھے معنی پہنائے جاتے ہیں اور جن کی مدد سے نیگرو کا ووٹ کا حق چھین لیا جاتا ہے۔

دکھنی پرانتوں میں اس آدمی کو ہی ووٹ کا حق ملتا ہے جو سرکار کو چنگی ادا کرتا ہے۔ یہ چنگی آمدنی کے لحاظ سے لگائی جاتی ہے۔ نیگرو عام طریقے سے غریب ہوتے ہیں۔ وہ چنگی نہیں دیتے۔ اس لئے انہیں ووٹ کا حق نہیں ملتا۔

ووٹ کا حق دینے سے پہلے ہر ویکتی کی قابلیت اور سمجھ کی پریکشا کی جاتی ہے۔ یہ قانون دکھن کے تمام پرانتوں میں لاگو ہے۔ اس قانون کے انوسار ووٹر بننے سے پہلے ہر آدمی کو رجسٹرار بورڈ کو اس بات کا یقین دلانا پڑے گا کہ وہ لکھ پڑھ سکتا ہے اور امریکہ کے کیندری ودھان یا پرانت کے پرانتی ودھان کو سمجھ سکتا ہے۔ اس کے علاوہ سرکاروں نے رجسٹریشن بورڈ کو یہ اختیار دے دیا ہے کہ رجسٹریشن کے سمبندھ میں وہ خود جیسے نیم چاہے بنا سکتا ہے۔ رجسٹریشن میں بہت سی دقتیں ہوتی ہیں۔ رجسٹریشن بورڈ کے ممبروں کو اپنے گن ہر آدمی کو ووٹر بننے کے لئے جتانے پڑتے ہیں اور ووٹر ہونا یا نہ ہونا ان کی مرضی پر نربھر ہوتا ہے۔ رجسٹریشن پبلک جگہوں پر نہیں کیا جاتا بلکہ اس مطلب کے لئے سفید نسل والوں کے گھروں کا استعمال کیا جاتا ہے کیونکہ سفید نسل کے افسر کالوں کے گھروں پر نہیں جا سکتے۔ اس کے علاوہ دوسری دقتیں بھی ہیں۔ جب کوئی نیگرو رجسٹریشن کرانے جاتا ہے تو اسے ٹال دیا جاتا ہے۔ کبھی کہہ دیا جاتا ہے کہ وہ کسی دوسرے سمے آئے یا کسی دوسرے دن آئے، اور دو چار دفعہ دوڑ کر وہ چپ ہو جاتا ہے۔ کبھی کہا جاتا ہے کہ اسکے آنے

ज़रूरत नहीं. उसे काग़ज़ात घर ही पर भेज दिये जायंगे. यह काग़ज़ उस तक कभी नहीं पहुंचते. इस तरह नीगरों को वोटर बनने से रोका जाता है.

मिसी सिपी, अलबामा और लूसियाना प्रान्तों में 15 लाख नीगरो ऐसे हैं जो क़ानून के अनुसार वोटर बन सकते हैं. लेकिन इन में से सिर्फ़ 21 हज़ार को ही वोट देने का हक़ है. यह ताज्जुब की बात है. मिसी सिपी प्रान्त में नीगरों की कुल एक फ़ी सदी आबादी को वोट देने का हक़ है. अलबामा में कुल दो फ़ी सदी नीगरो वोट दे सकते हैं. लूसियाना में कुल तीन फ़ी सदी नीगरों को वोटर बनाया गया है. न्यूमैक्सिको और ऐरीज़ोना की सूबे की सरकारों ने 1948 तक एक लाख हिन्दुस्तानियों को वोट का हक़ नहीं दिया था. यह हिन्दुस्तानी अब भी समाजिक उद्धार केन्द्रों से फ़ायदा नहीं उठा सकते.

केन्द्री क़ानून में जाति भेद

बहुत से अन्तर क़ौमी समझौतों पर अमरीका के दस्तख़त हैं. दूसरी जंग के बाद सन 1945 में पोस्डम के समझौते पर बहुत से राष्ट्रों ने दस्तख़त किये हैं इस समझौते पर अमरीका के भी दस्तख़त हैं. इस समझौते में कहा गया है कि "वह तमाम नाज़ी क़ानून जो जाति धर्म और राजकाजी विचारों के आधार पर आदमियों में फ़र्क़ करते हैं उन्हें ख़त्म कर दिया जायेगा." अमरीका यूनो का मेम्बर है और उसने वायदा किया है कि वह यूनो के चार्टर पर अमल करेगा. यूनो का बुनियादी असूल यह है कि तमाम इनसान बराबर हैं और हर तरह की आज़ादी उनका बुनियादी हक़ है.

इन समझौतों और वायदों के बाद भी अमरीकी सरकार नसली फ़र्क़ को जायज़ रखती है. यह भेद भाव क़ानून के रूप में भी है और अमल में तो बरता ही जाता है. कोलंबिया में तालीम के क्षेत्र में जाति भेद बरता जाता है. यह भेद भाव का क़ानून केन्द्री सरकार के क़ानून के अनुसार है.

सरकार दावा करती है कि हर स्कूल में हर जाति को बराबर की सुविधायें दी जाएंगी. लेकिन वाशिंगटन, जार्जिया और अलबामा के स्कूलों में घुसते ही इस दावे का भांडा फूट जाता है.

वाशिंगटन में केन्द्री क़ानून लागू हैं और उन्हीं के अनुसार खेल और मनोरंजन के क्षेत्र में भेद भाव बरता जाता है. यहां का मामला और अनोखा है. जनता की तरफ़ से जो खेल कूद होते हैं उन में सब रंग और सब जाति के लोग एक साथ मिल कर हिस्सा ले सकते हैं. लेकिन ऐसे जो खेल कूद सरकार की तरफ़ से होते हैं उन में

ضرورت نہیں. اُسے کاغذات گھر ہی پر بھیج دیئے جائینگے. یہ کاغذ اُس تک کبھی نہیں پہونچتے. اِس طرح نیگروں کو ووٹر بننے سے روکا جاتا ہے.

مسی سپی، الباما اور لوسیانا پرانتوں میں پندرہ لاکھ نیگرو ایسے ہیں جو قانون کے انوسار ووٹر بن سکتے ہیں. لیکن اِن میں سے صرف 21 ہزار کو ہی ووٹ دینے کا حق ہے. یہ تعجب کی بات ہے. مسی سپی پرانت میں نیگروں کی کل ایک فیصدی آبادی کو ووٹ دینے کا حق ہے. الباما میں کل دو فیصدی نیگرو ووٹ دے سکتے ہیں. لوسیانا میں کل تین فیصدی نیگروں کو ووٹر بنایا گیا ہے. نیومیکسکو اور ایریزونا کی صوبے کی سرکاروں نے 1948 تک ایک لاکھ ہندستانیوں کو ووٹ کا حق نہیں دیا تھا. یہ ہندستانی اب بھی سماجک اُدھار کیندروں سے فائدہ نہیں اُٹھا سکتے.

کیندری قانون میں جاتی بھید

بہت سے انتر قومی سمجھوتوں پر امریکہ کے دستخط ہیں. دوسری جنگ کے بعد 1945 میں پوسٹڈم کے سمجھوتے پر بہت سے راشٹروں نے دستخط کئے ہیں. اِس سمجھوتے پر امریکہ کے بھی دستخط ہیں. اِس سمجھوتے میں کہا گیا ہے کہ "وہ تمام نازی قانون جو جاتی دھرم اور راج کاجی وچاروں کے آدھار پر آدمیوں میں فرق کرتے ہیں اُنہیں ختم کر دیا جائے گا." امریکہ یونو کا ممبر ہے اور اُس نے وعدہ کیا ہے کہ وہ یونو کے چارٹر پر عمل کرے گا. یونو کا بنیادی اصول یہ ہے کہ تمام انسان برابر ہیں اور ہر طرح کی آزادی اُن کا بنیادی حق ہے.

اِن سمجھوتوں اور وعدوں کے بعد بھی امریکی سرکار نسلی فرق کو جائز رکھتی ہے. یہ بھید بھاؤ قانون کے روپ میں بھی ہے اور عمل میں تو برتا ہی جاتا ہے. کولمبیا میں تعلیم کے چھیتر میں جاتی بھید برتا جاتا ہے. یہ بھید بھاؤ کا قانون کیندری سرکار کے قانون کے انوسار ہے.

سرکار دعویٰ کرتی ہے کہ ہر اِسکول میں ہر جاتی کو برابر کی سودھائیں دی جائیں گی. لیکن واشنگٹن، جارجیا اور الباما کے اسکولوں میں گھستے ہی اس دعوے کا بھانڈا پھوٹ جاتا ہے.

واشنگٹن میں کیندری قانون لاگو ہیں اور اُنہیں کے انوسار کھیل اور منورنجن کے چھیتر میں بھید بھاؤ برتا جاتا ہے. یہاں کا معاملہ اور انوکھا ہے. جنتا کی طرف سے جو کھیل کود ہوتے ہیں اُن میں سب رنگ اور سب جاتی کے لوگ ایک ساتھ ملکر حصہ لے سکتے ہیں. لیکن ایسے جو کھیل کود سرکار کی طرف سے ہوتے ہیں اُن میں

सफ़ेद नसल के लोगों के अलावा दूसरी जाति के लोग भाग नहीं ले सकते.

वाशिंगटन के रेस्ट्रां, थियेटर और होटलों में रंग भेद बरता जाता है. अमरीकी कांगरेस के क़रीब नीगरों की एक तंग व तारीक़ और गंदी बाड़ी है. इसके लिये अमरीकी सरकार ख़ास तौर से ज़िम्मेदार है क्योंकि इस ज़िले का इन्तज़ाम एक कमीशन करता है जिसे प्रेसीडेन्ट मुक़र्रर करता है.

दूसरे मुल्क वालों को अमरीका में आबाद करने और नागरिकता के अधिकार देने का हक़ केन्द्री सरकार को है. इस मामले में भी भेद भाव बरता जाता है. इसी बुनियाद पर अरबी, अफ़ग़ानी, जापानी, कोरियाई, बरमी, मालायाई इंडोनेशियाई और थाईलेंड के निवासी अमरीका के नागरिक नहीं हो सकते.

सफ़ेद नसल के लोगों को एक ही क़िस्म के काम के लिये दूसरे लोगों से ज़ियादा तनखाह दी जाती है. दूसरे रंग वालों को तरक़्क़ी नहीं दी जाती. मकान भी घटिया क़िस्म के दिये जाते हैं. पुलिस और अदालतें भी सब के साथ बराबरी का बरताव नहीं करतीं.

हिन्दुस्तानियों के साथ अधिक ज़ियादती होती है. आलासका में हिन्दुस्तानियों के साथ आज़ाद नागरिकों का सा बरताव नहीं किया जाता. अगस्त सन 1947 में मिस्टर टुरूमैन ने टांगस बिल पर दसख़त किये थे. दो दो पीढ़ियों से दक्खिनी पूर्वी अलासका में बहुत से हिन्दुस्तानी खेतों और बाग़ों पर क़ाबिज़ थे. लेकिन टांगस बिल पास करके उनसे यह हक़ छीन लिया गया है. हिन्दुस्तानियों के बारे में जो कुछ अमरीकी सोचते हैं उसकी एक झलक जनरल शेरीडन के क़ौल से मिलती है. "वही हिन्दुस्तानी अच्छा है जो मर गया है." हिन्दुस्तानियों की माली हालत बहुत गिरी हुई है.

अमरीका में नीगरों को पत्थर मार मार कर मार दिया जाता है या ज़िन्दा जला दिया जाता है. हिन्दुस्तान के अमरीकी दूतावास ने नीगरों की सही हालत बताने के लिये एक पैमफ़लेट छापा है जिस में इन ज़ालिमाना हरकतों पर पर्दा डालने की कोशिश की गई है लेकिन फिर भी यह माना गया है कि अब भी कहीं कहीं ऐसे अत्याचार हो जाते हैं.

दुनिया में उस समय तक शान्ति स्थायी रूप से क़ायम नहीं रह सकती जब तक कि दुनिया के तमाम इनसानों को बिना जात, धर्म, रंग और विचारों के फ़र्क़ के बराबर के अधिकार न मिल जाएं. शान्ति क़ायम होना आज दुनिया के हर इनसान के हित में है और इसलिये ज़रूरी है कि वह हर उस बात के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाए जो अशान्ति फ़ैलाती हो.

سفید نسل کے لوگوں کے علاوہ دوسرے جاتی کے لوگ بھاگ نہیں لے سکتے.

واشنگٹن کے ریستراں' تھیٹر اور ہوٹلوں میں رنگ بھید برتا جاتا ہے. امریکی کانگریس کے قریب نیگروں کی ایک تنگ و تاریک اور گندی باڑی ہے. اس کے لئے امریکی سرکار خاص طور سے ذمہ دار ہے کیونکہ اس ضلع کا انتظام ایک کمیشن کرتا ہے جسے پریسیڈنٹ مقرر کرتا ہے.

دوسرے ملک والوں کو امریکہ میں آباد کرنے اور ناگرکتا کے ادھیکار دینے کا حق کیندری سرکار کو ہے. اس معاملے میں بھی بھید بھاؤ برتا جاتا ہے. اسی بنیاد پر عربی، افغانی' جاپانی' کوریائی' برمی' ملایائی' انڈونیشیائی اور تھائی لینڈ کے نواسی امریکہ کے ناگرک نہیں ہو سکتے.

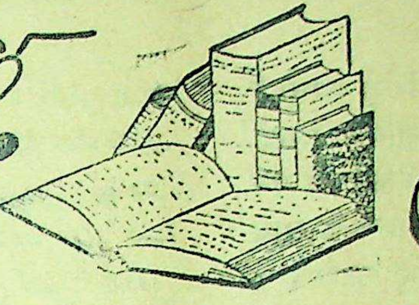
سفید نسل کے لوگوں کو ایک ہی قسم کے کام کے لئے دوسرے لوگوں سے زیادہ تنخواہ دی جاتی ہے. دوسرے رنگ والوں کو ترقی نہیں دی جاتی' مکان بھی گھٹیا قسم کے دئے جاتے ہیں. پولیس اور عدالتیں بھی سب کے ساتھ برابری کا برتاؤ نہیں کرتیں.

ہندستانیوں کے ساتھ ادھک زیادتی ہوتی ہے. الاسکا میں ہندستانیوں کے ساتھ آزاد ناگرکوں کا سا برتاؤ نہیں کیا جاتا. اگست 1947 میں مسٹر ٹرومن نے ٹانگس بل پر دستخط کئے تھے. دو دو پیڑھیوں سے دکھنی پوربی الاسکا میں بہت سے ہندستانی کھیتوں اور باغوں پر قابض تھے. لیکن ٹانگس بل پاس کر کے اُن سے یہ حق چھین لیا گیا ہے. ہندستانیوں کے بارے میں جو کچھ امریکی سوچتے ہیں اُسکی ایک جھلک جنرل شریڈن کے قول سے ملتی ہے." وہی ہندستانی اچھا ہے جو مر گیا ہے." ہندستانیوں کی مالی حالت بہت گری ہوئی ہے.

امریکہ میں نیگروؤں کو پتھر مار مار کر مار دیا جاتا ہے یا زندہ جلا دیا جاتا ہے. ہندستان کے امریکی دوتاواس نے نیگروؤں کی صحیح حالت بتانے کے لئے ایک پمفلٹ چھاپا ہے جس میں اِن ظالمانہ حرکتوں پر پردہ ڈالنے کی کوشش کی گئی ہے لیکن پھر بھی یہ مانا گیا ہے کہ اب بھی کہیں کہیں ایسے اتیاچار ہو جاتے ہیں.

دنیا میں اُس سمے تک شانتی استھائی روپ سے قائم نہیں رہ سکتی جب تک کہ دنیا کے تمام اِنسانوں کو بِنا جات' دھرم رنگ اور وچاروں کے فرق کے برابر کے ادھیکار نہ مل جائیں. شانتی قائم ہونا آج دنیا کے ہر انسان کے ہت میں ہے اور اس لئے ضروری ہے کہ وہ ہر اُس بات کے خلاف آواز اُٹھائے جو اشانتی پھیلاتی ہو.

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

रंगरूट

लेखक—बरेन बसु; अनुवादक— बी. के. मोज़िमदार; छापने वाले—पीपुल्स पबलिशिंग हाऊस, लिमिटेड, बम्बई 4; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—332; दाम चार रुपये.

'रंगरूट' बंगला भाषा में लिखी गई थी और इस नाविल के छपते ही बंगाल में हलचल मच गई थी. आलोचकों का कहना है कि इस नाविल ने बंगला के महान साहित्य को धनी बनाया है. इस नाविल का अंगरेज़ी में अनुवाद हो चुका है और अंगरेज़ी भाशी जनता ने दिल खोल कर इसका स्वागत किया है. अनुवादक और प्रकाशक ने हिन्दी जगत को यह किताब देकर बहुत ज़बरदस्त फ़र्ज़ निभाया है.

'रंगरूट' में गुलाम भारत की अंगरेज़ी फ़ौज का जीवन चित्रित किया गया है. लेखक ने दूर से इस जीवन का अनुभव नहीं किया वह ख़ुद फ़ौज में रहा है, सारी कड़वाहट को उसने ख़ुद अनुभव किया है. जो कुछ भी उसने लिखा है वह सच है. यथार्थ है.

'रंगरूट' में दो चीज़ों पर रोशनी पड़ती है. एक यह कि वह लोग पेट के हाथों मजबूर हो कर फ़ौज में भरती होते हैं जिन को लड़ाई से नफ़रत होती है, जिन्हें उस जीवन से लगाव नहीं होता. इस नाविल को पढ़ कर अंगरेज़ी शासकों के कुछ वाक्य फिर दिमाग़ में ताज़ा हो जाते हैं—हमारी किसी ने मदद नहीं की, हमारी सहायता भूक ने की है, भूक न होती तो हमें फ़ौजी न मिलते. दूसरी जिस बात पर रोशनी पड़ती है वह है फ़ौजी जीवन और वह परिस्थितियां जो अच्छे आदमी को जानवर बना देती हैं, एक भले वातावरन में पले इनसान को दुराचारी बनाती हैं, एक कोमल हृदय आदमी को कठोर बनाती हैं, आदमी को एक मशीन बना देती हैं जो हर बात का जवाब केवल "यस सर" देती हैं.

फ़ौजी जीवन को खोल कर सामने रखने वाला 'रंगरूट' पहला नाविल है इसमें अंगरेज़ों की फ़ौजी नीति और उनके अफ़सरों के तरीक़े पर भी रोशनी पड़ती है. इस बात की भी ठीक जानकारी मिलती है कि अफ़सरों और मातहतों में फ़रक़ होने के अलावा गोरे और काले का

رنگروت

لیکھک—برین بسو؛ انوادک—بی. کے مزومدار؛ چھاپنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لمیٹڈ، بمبئی 4؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ—332؛ دام چار روپیہ.

'رنگروت' بنگلہ بھاشا میں لکھی گئی تھی اور اِس ناول کے چھپتے ہی بنگال میں ہل چل مچ گئی تھی. آلوچکوں کا کہنا ہے کہ اِس ناول نے بنگلہ کے مہان ساہتیہ کو دھنی بنایا ہے. اِس ناول کا انگریزی میں انوواد ہو چکا ہے اور انگریزی بھاشی جنتا نے دل کھولکر اِس کا سواگت کیا ہے. انوادک اور پرکاشک نے ہندی جگت کو یہ کتاب دے کر بہت زبردست فرض نبھایا ہے.

'رنگروت' میں غلام بھارت کی انگریزی فوج کا جیون چترت کیا گیا ہے. لیکھک نے دور سے اس جیون کا انوبھو نہیں کیا. وہ خود فوج میں رہا ہے' ساری کڑواہٹ کو اس نے خود انوبھو کیا ہے. جو کچھ بھی اُس نے لکھا ہے وہ سچ ہے. یتھارتھ ہے.

'رنگروت' میں دو چیزوں پر روشنی پڑتی ہے. ایک یہ کہ وہ لوگ پیٹ کے ہاتھوں مجبور ہو کر فوج میں بھرتی ہوتے ہیں جن کو لڑائی سے نفرت ہوتی ہے' جنہیں اس جیون سے کوئی لگاؤ نہیں ہوتا. اِس ناول کو پڑھکر انگریز شاشکوں کے کچھ واکیہ پھر دماغ میں تازہ ہو جاتے ہیں—ہماری کسی نے مدد نہیں کی' ہماری سہائتا بھوک نے کی ہے' بھوک نہ ہوتی تو ہمیں فوجی نہ ملتے. دوسری جس بات پر روشنی پڑتی ہے وہ ہے فوجی جیون اور وہ پرستھتیاں جو اچھے آدمی کو جانور بنادیتی ہیں' ایک بھلے واتاورن میں پلے انسان کو دراچاری بناتی ہیں ایک کومل ہردے آدمی کو کٹھور بناتی ہیں' آدمی کو ایک مشین بنادیتی ہیں جو ہر بات کا جواب کیول "یس سر" دیتی ہے.

فوجی جیون کو کھول کر سامنے رکھنے والا 'رنگروت' پہلا ناول ہے. اِس میں انگریزوں کی فوجی نیتی اور اُن کے افسروں کے طریقے پر بھی روشنی پڑتی ہے. اس بات کی بھی ٹھیک جانکاری ملتی ہے کہ افسروں اور ماتحتوں میں فرق ہونے کے علاوہ گورے اور کالے کا

भी भेद भाव बरता जाता था. हिन्दुस्तानियों को दूसरा खाना, कम तनख़ा, कम सुविधाएं मिलती थीं और गोरों को अथाह सुविधायें दी जाती थीं.

'रङ्ग रूट' की कामयाबी इस बात को सिद्ध करती है कि प्रेम गाथा के बिना भी हृदय स्पर्शी नाविल लिखा जा सकता है. एक दफ़ा उठा लेने पर इसे रखने को मन नहीं चाहता. सुन्दर छपाई और ख़ूबसूरत जिल्द के साथ किताब में दुनिया के मशहूर चित्रकार चिता परसाद के चित्र भी इस में शामिल कर दिये गए हैं. यह चित्र किताब के मूल्य को बढ़ाते हैं. इस किताब का स्वागत होगा, ऐसी उम्मीद है.

—मुजीब रिज़वी

दस्ते सबा

लिखने वाले—फ़ैज़ अहमद फ़ैज़; निकालने वाले—आज़ाद किताब घर, कलां महल, देहली 6; लिखावट उरदू; सफ़ा 110; दाम दो रुपया चार आना.

दस्ते सबा फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ का ताज़ा मजमूआ है. इस में 40 क़िते, ग़ज़लें और नज़्में शामिल हैं. किसी किताब की इतनी तारीफ़ काफ़ी है कि उसके लेखक फ़ैज़ हैं. फ़ैज़ स्यासी और अदबी दोनों दुनियाओं में मशहूर हैं. अदब में उनका लोहा माना जाता है. अब सियासत ने भी उनका लोहा मान लिया है. फ़ैज़ ने उरदू अदब में नई राहें दिखाई हैं. उनकी सब से बड़ी देन यह कि पुराने अदबी ढांचे में उन्होंने नए ख़यालात को समो दिया है. यह मानना पड़ता है कि कला के मैदान पिछलों ने अदब को आसमान तक पहुंचा दिया है. ज़रूरत इस बात की है कि उस की मदद से नए ख़्यालात को जनता के सामने लाया जाए. फ़ैज़ ने अमल में यह बात करके दिखाई है और यह साबित किया है कि पुरानी कला और नए विचार का मेल बहुत ही सुन्दर और असरदार अदब पैदा करता है.

जो देश भक्त है वह ग़द्दार है, जो नहीं चाहता कि पाकिस्तान फिर से अमरीकियों का ग़ुलाम हो या अंगरेज़ों का दास बने वह मुजरिम है, वह पाकिस्तान का दुश्मन है. इस नीति का फ़ैज़ ने किस ख़ूबसूरती से परदा फ़ाश किया है.

"निसार मैं तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहां
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले
जो कोई चाहने वाला तवाफ़ को निकले
नज़र चुरा के चले, जिस्म व जां बचा के चले"

بھید بھاؤ برتا جاتا تھا۔ ہندستانیوں کو دوسرا کھانا، کم تنخواہ، کم سودھائیں ملتی تھیں اور گوروں کو اتھاہ سودھائیں دی جاتی تھیں۔

'رنگروٹ' کی کامیابی اس بات کو سدھ کرتی ہے کہ پریم گاتھا کے بنا بھی ہردے اسپرشی ناول لکھا جاسکتا ہے۔ ایک دفعہ اٹھا لینے پر اسے رکھنے کو من نہیں چاہتا۔ سندر چھپائی اور خوبصورت جلد کے ساتھ کتاب میں دنیا کے مشہور چترکار چتاپرساد کے چتر بھی اس میں شامل کر دئے گئے ہیں۔ یہ چتر کتاب کے مولیہ کو بڑھاتے ہیں۔ اس کتاب کا سواگت ہوگا، ایسی امید ہے۔

—مجیب رضوی

دست صبا

لکھنے والے—فیض احمد فیض؛ نکالنے والے—آزاد کتاب گھر، کلاں محل، دہلی 6؛ لکھاوٹ اردو؛ صفحے—110؛ دام دو روپیہ چار آنے۔

'دست صبا' فیض احمد فیض کا تازہ مجموعہ ہے۔ اس میں 40 قطعے، غزلیں اور نظمیں شامل ہیں۔ کسی کتاب کی اتنی تعریف کافی ہے کہ اس کے لیکھک فیض ہیں۔ فیض سیاسی اور ادبی دونوں دنیا میں مشہور ہیں۔ ادب میں ان کا لوہا مانا جاتا ہے۔ اب سیاست نے بھی ان کا لوہا مان لیا ہے۔ فیض نے اردو ادب میں نئی راہیں دکھائی ہیں۔ ان کی سب سے بڑی دین یہ ہے کہ پرانے ادبی ڈھانچے میں انہوں نے نئے خیالات کو سمو دیا ہے۔ یہ ماننا پڑتا ہے کہ کلا کے میدان میں پچھلوں نے ادب کو آسمان تک پہنچا دیا ہے۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ اس کی مدد سے نئے خیالات کو جنتا کے سامنے لایا جائے۔ فیض نے عمل میں یہ بات کرکے دکھائی ہے اور یہ ثابت کیا ہے کہ پرانی کلا اور نئے وچار کا میل بہت ہی سندر اور اثردار ادب پیدا کرتا ہے۔

جو دیش بھگت ہے وہ غدار ہے، جو نہیں چاہتا کہ پاکستان پھر سے امریکیوں کا غلام ہو یا انگریزوں کا داس بنے وہ مجرم ہے، وہ پاکستان کا دشمن۔ اس نیتی کا فیض نے کس خوبصورتی سے پردہ فاش کیا ہے۔

"نثار میں تری گلیوں پہ اے وطن کہ جہاں
چلی ہے رسم کہ کوئی نہ سر اٹھا کے چلے
جو کوئی چاہنے والا طواف کو نکلے
نظر چرا کے چلے، جسم و جاں بچا کے چلے"

स्यासी क़ैदियों के साथ जिस तरह इनसाफ़ किया जाता है उस पर फ़ैज़ ने सुन्दर व्यंग किया है.

"बने हैं अहल हविस, मुद्दई भी, मुंसिफ़ भी
किसे वकील करें, किस से मुंसफ़ी चाहें"

फ़ैज़ जानते हैं कि उनका ताल्लुक़ उन बुज़ुरगों से है जो हमेशा ज़ुल्म के ख़िलाफ़ लड़ते रहे हैं. फ़ैज़ को विश्वास है कि जीत उन्हीं की है क्योंकि वह सच्चाई के साथ हैं. वह कहते हैं—

"यूंही हमेशा उलझती रही है ज़ुल्म से ख़ल्क़
न उनकी रसम नई है, न अपनी रीत नई
यूंही हमेशा खिलाए हैं, हम ने आग में फूल
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई"

दुनिया आज दो गिरोहों में बंटी हुई है, एक रचना करना चाहता है, सब को आगे बढ़ाना चाहता है और दूसरा गिरोह ख़ुद ग़रज़ी से अन्धा हो कर सब को बरबाद कर देना चाहता है, लड़ाई छेड़ना चाहता है. इन दोनों गिरोहों में संघर्ष जारी है, फ़ैज़ लिखते हैं—

"इन दोनों में रन पड़ता है
नित बसती बसती, नगर नगर
हर बसते घर के सीने में
हर चलती राह के माथे पर

यह कालिक भरते फिरते हैं
वह ज्योत जगाते रहते हैं
यह आग लगाते फिरते हैं
वह आग बुझाते रहते हैं"

फ़ैज़ के इस मजमुए में वह नज़्में भी शामिल है जो उन्होंने जेल में लिखी हैं 'ज़िन्दां की एक शाम, ज़िन्दां की एक सुबह' बहुत ही कामयाब नज़्में हैं और दिल पर इस क़दर असर करती हैं कि बार बार पढ़ने पर भी तबीयत नहीं भरती, फ़ैज़ के इस मजमुए को हिन्दी लिखावट में भी होना चाहिए. लोग इधर ध्यान दें यह हमारी प्रार्थना है.

—मुजीब रिज़वी

سیاسی قیدیوں کے ساتھ جس طرح انصاف کیا جاتا ہے اُس پر فیض نے سندر ویَنگ کیا ہے .

بنے ہیں اہل ہوس' مدعی بھی' منصف بھی
کسے وکیل کریں' کس سے' منصفی چاہیں

فیض جانتے ہیں کہ اُن کا تعلق اُن بزرگوں سے ہے جو ہمیشہ ظلم کے خلاف لڑتے رہے ہیں. فیض کو وشواس ہے کہ جیت اُنہیں کی ہے کیونکہ وہ سچائی کے ساتھ ہیں. وہ کہتے ہیں—

" یونہی ہمیشہ اُلجھتی رہی ہے ظلم سے خلق
نہ اُن کی رسم نئی ہے' نہ اپنی ریت نئی
یونہی ہمیشہ کھلائے ہیں' ہم نے آگ میں پھول
نہ اُن کی ہار نئی ہے نہ اپنی جیت نئی "

دنیا آج دو گروہوں میں بٹی ہوئی ہے' ایک رچنا کرنا چاہتا ہے' سب کو آگے بڑھانا چاہتا ہے اور دوسرا گروہ خود غرضی سے اندھا ہو کر سب کو برباد کر دینا چاہتا ہے' لڑائی چھیڑنا چاہتا ہے . اِن دونوں گروہوں میں سنگھرش جاری ہے' فیض لکھتے ہیں—

" اِن دونوں میں رن پڑتا ہے
نت بستی بستی' نگر نگر
ہر بستے گھر کے سینے میں
ہر چلتی راہ کے ماتھے پر

یہ کالک بھرتے پھرتے ہیں
وہ جوت جگاتے رہتے ہیں
یہ آگ لگاتے پھرتے ہیں
وہ آگ بجھاتے رہتے ہیں ."

فیض کے اس مجموعے میں وہ نظمیں بھی شامل ہیں جو اُنہوں نے جیل میں لکھی ہیں . 'زنداں کی ایک شام' زنداں کی ایک صبح ' بہت ہی کامیاب نظمیں ہیں اور دل پر اس قدر اثر کرتی ہیں کہ بار بار پڑھنے پر بھی طبیعت نہیں بھرتی . فیض کے اِس مجموعے کو ہندی لکھاوٹ میں بھی ہونا چاہئے . لوگ ادھر دھیان دیں یہ ہماری پرارتھنا ہے .

—مجیب رضوی

जूआ

लेखिका—श्रीमती मुक्ताबाई दीक्षित एम. ए. अनुवादक—श्री प्र. रा. भुपटकर; प्रकाशक—महाराष्ट्र राष्ट्र भाषा सभा, राष्ट्र भाषा भवन, 388 नारायण पेठ, पूना सफ़े—88, क़ीमत—दो रुपये आठ आने.

इनसान अपने जीवन में अनेक संस्कारों, 'मानसिक विकारों और बाहरी घटनाओं से सदा लड़ाई करता है. इन घटनाओं की परिस्थितियां, कभी कभी मानसिक उथल पुथल और संघर्षों की तरफ़ इस तरह इशारा करती हैं कि घटना अकेली न रह कर जीवन के साथ बंध जाती है. नाटक ऐसी ही घटनाओं में से किसी ख़ास घटना का सूचक है. जिस नाटक लिखने वाले की नज़र इनसानी प्रकृति की ऊंची चट्टान तक पहुंचने की ताक़त रखती है वह बिखरी घटनाओं को एक कड़ी में पिरो देता है. ऐसे ही नाटककार की रचनाएं ज़िन्दगी की गहराई में उतर सकती हैं !

मुक्ताई भी ऐसे ही मराठी लेखिकाओं में से हैं. वह पुराने रीत रिवाजों और तंग नज़र विचार धाराओं की पाबन्द नहीं हैं और न आजकल के बाहरी वातावरन से परे. जीवन पथ पर उन्हें फूल भी मिले और कांटे भी. इस नाटक में उन्होंने आज के समाज की एक बहुत बड़ी कुरीति की तरफ़ सुन्दर ढंग से इशारा किया है और साथ ही साथ और उसका हल भी बहुत अच्छे तरीक़े से पाठकों सामने पेश किया है.

अपने इस नाटक में लेखिका ने एक महान आदर्श को लेकर ऊशा के त्याग की तसवीर अंकित की है. यह तसवीर सिर्फ़ तसवीर ही नहीं बल्कि एक नेक मानव प्रेमी और दुखी दिल की सच्ची पुकार है. तसवीर सचमुच महाराष्ट्र जीवन की एक ख़ासी झलक देती है. पाठकों के दिल को छूती हैं. किताब की भाशा सरल और महावरेदार है. हिन्दी जगत को राष्ट्रभाशा सभा की यह एक अनोखी देन है. किताब का साइज़ और सफ़ों के लिहाज़ से किताब की क़ीमत ढाई रुपया कुछ ज़ियादा ही मालूम पड़ती है.

—चेतन कुमार शर्मा

[جو]ا

[ل]یکھکا—شریمتی مکتا بائی دیکشت ایم. اے.
[انوواد]ک—شری پ. ر. بھوپٹکر؛ پرکاشک—مہاراشٹر راشٹر
[بھاشا] سبھا، راشٹر بھاشا بھون، 388 نرائن پیٹھ، پونا؛
[صف]ے—88؛ قیمت—دو روپئے آٹھ آنہ.

[انس]ان اپنے جیون میں انیک سنسکاروں، مانسک [وکا]روں اور باہری گھٹناؤں سے سدا لڑائی کرتا رہا ہے. ان [گھٹن]اؤں کی پرستھتیاں، کبھی کبھی مانسک اُتھل پتھل [اور سن]گھرشوں کی طرف اس طرح اشارہ کرتی ہیں کہ [گھٹ]نا اکیلی نہ رہ کر جیون کے ساتھ بندھ جاتی ہے. [ناٹک] ایسی ہی گھٹناؤں میں سے کسی خاص گھٹنا کا [سوچ]ک ہے. جس ناٹک لکھنے والے کی نظر انسانی [پرکرت]ی کی اونچی چٹان تک پہنچنے کی طاقت [رکھتی] ہے وہ بکھری گھٹناؤں کو ایک کڑی میں پرو دیتا ہے [ایس]ے ہی ناٹک کار کی رچنائیں زندگی کی گہرائی میں اُتر [سکت]ی ہیں.

[مک]تا بائی بھی ایسے ہی مراٹھی لکھکاؤں میں سے [ہی]ں. وہ پرانے ریت رواجوں اور تنگ نظر وچار دھاراؤں [کی] پابند نہیں ہیں اور نہ آجکل کے باہری واتاوون سے [پرے]. جیون پتھ پر انھیں پھول بھی ملے اور کانٹے بھی. [اس] ناٹک میں انھوں نے آج کے سماج کی ایک بہت [بڑی] کوریتی کی طرف سندر ڈھنگ سے اشارہ کیا ہے اور [ساتھ] ہی ساتھ اس کا حل بھی اچھے طریقے سے پاٹھکوں کے [سامن]ے پیش کیا ہے.

[اپن]ے اس ناٹک میں لیکھکا نے ایک مہان آدرش کو [لے] کر اوشا کے تیاگ کی تصویر انکت کی ہے. یہ تصویر [صر]ف تصویر ہی نہیں بلکہ ایک نیک مانو پریمی اور [دکھ]ی دل کی سچی پکار ہے. یہ تصویر سچ مچ مہا[راشٹر] جیون کی ایک خاصی جھلک دیتی ہے. پاٹھکوں [کے] دل کو چھوتی ہے. کتاب کی بھاشا سرل اور محاورے[دار] ہے. ہندی جگت کو راشٹر بھاشا کی یہ ایک انوکھی [دین] ہے. کتاب کا سائز اور صفحوں کے لحاظ سے کتاب [کی] قیمت ڈھائی روپیہ کچھ زیادہ ہی معلوم پڑتی ہے.

—چیتن کمار شرما

हमारी राय

ہماری رائے

कोरिया फिर !

26 जुलाई '53 को "हाथापाई बंद" पर दोनों दल के ज्यों त्यों कर दस्तखत हो गये. हाथापाई बंद को 'दुश्मनी अंत' का रूप देने के लिये तैयारियां हो गईं. पांच देशों के पंच थोड़ी फ़ौज लेकर कोरिया पहुंच गये. वह देश हैं स्वीडन, स्विटजरलैंड, ज़ेकोस्लोवेकिया, पोलेंड और भारत. यह पांच यों चुने गये कि इन में से किसी ने असली लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया था. इन पांच की कमेटी का सरपंच है भारत. इसे दोनों पक्षों ने चुना है. इस कमेटी के सुपुर्द काम है कि वह लड़ाई के क़ैदियों को उस उस मुल्क में भेज दे जहां के वह रहने वाले हैं.

मुद्दत से यू. एन. ओ. कमांड और दक्खिन कोरिया यह कहता चला आ रहा है कि उत्तर कोरिया और चीन के जो क़ैदी उनके कब्ज़े में हैं उन में से बहुत से उन मुल्कों में नहीं जाना चाहते जहां साम्यवादी सरकारें हैं. इस बात पर बहुत मुल्कों को एतबार नहीं. साम्यवादी मुल्कों को तो बिलकुल नहीं. इसलिये ज़रूरी हुआ कि ऐसे मुल्कों से पंच वहां भेजे जायं जो लड़ाई में उतरे न हों, वह क़ैदियों को देखें कि क्या सचमुच यह बात सही है कि क़ैदी अपने घर सिर्फ़ इस वजह से नहीं लौटना चाहते कि वहां साम्यवादी सरकारें हैं ? ऐसे देश ऊपर बताए पांच चुने गये और वहां भेज दिये गये.

इन पांचों में से भारत अपनी थोड़ी फ़ौज ले गया है, बाकी चार देशों के सिपाही नाम के लिये उस में शामिल हैं. यह सब भी इतने थोड़े हैं कि अगर दक्खिनी कोरिया बिगड़ बैठे और हमला बोल दे तो इनका मुकाबला ऐसा होगा जैसा दसियों डिवीज़न और एक दस्ते का. इन पंचों और इनकी फ़ौज की रक्षा की ज़िम्मेदारी यू. एन. ओ. कमांड ने ली है. पंचों के कोरिया पहुंचने से पहले इन के खिलाफ़ और खास तौर से भारतवर्ष के खिलाफ़ दक्खिनी कोरिया का नेता सिंगमन री अपने उद्गार निकाल चुका है. वहां पहुंचने पर उसने वैसा करना शुरू कर दिया है जैसा उसने कहा था.

کوریا پھر !

26 جولائی سن '53 کو "ہاتھا پائی بند" پر دونوں دل کے جوں توں کر دستخط ہوگئے. ہاتھا پائی بند کو دشمنی انت کا روپ دینے کے لئے تیاریاں ہو گئیں. پانچ دیشوں کے پنچ تھوڑی فوج لے کر کوریا پہنچ گئے. وہ دیش ہیں—سویڈن، سوئٹزرلینڈ، زیکوسلوویکیا، پولینڈ اور بھارت. یہ پانچ یوں چنے گئے کہ اِن میں سے کسی نے عملی لڑائی میں حصہ نہیں لیا تھا. ان پانچ کی کمیٹی کا سرپنچ ہے بھارت اِسے دونوں پکشوں نے چنا ہے. اِس کمیٹی کے سپرد کام ہے کہ وہ لڑائی کے قیدیوں کو اُس اُس ملک میں بھیج دے جہاں کے وہ رہنے والے ہیں.

مدت سے یو. این. او. کمانڈ اور دکھن کوریا یہ کہتا چلا آ رہا ہے کہ اُتر کوریا اور چین کے جو قیدی اُن کے قبضے میں ہیں اُن میں سے بہت سے اُن ملکوں میں نہیں جانا چاہتے جہاں سامیہ واد سرکاریں ہیں. اِس بات پر بہت ملکوں کو اعتبار نہیں. سامیہ واد ملکوں کو تو بالکل نہیں. اسی لئے ضروری ہوا کہ ایسے ملکوں سے پنچ وہاں بھیجے جائیں جو لڑائی میں اُترے نہ ہوں. وہ قیدیوں کو دیکھیں کہ کیا سچ مچ یہ بات سہی ہے کہ قیدی اپنے گھر صرف اِس وجہ سے نہیں لوٹنا چاہتے کہ وہاں سامیہ واد سرکار ہیں. ایسے دیش اوپر بتائے پانچ چنے گئے اور وہاں بھیج دئے گئے.

اِن پانچوں میں سے بھارت اپنی تھوڑی فوج لے گیا ہے، باقی چار دیشوں کے سپاہی نام کے لئے اُس میں شامل ہیں. یہ سب بھی اتنے تھوڑے ہیں کہ اگر دکھنی کوریا بگڑ بیٹھے اور حملہ بول دے تو اِن کا مقابلہ ایسا ہوگا جیسا دسیوں ڈویژن اور ایک دستے کا. اِن پنچوں اور اِن کی فوج کی رکشا کی ذمہ داری یو. این. او. کمانڈ نے لی ہے. پنچوں کے کوریا پہنچنے سے پہلے اِن کے خلاف اور خاص طور سے بھارت ورش کے خلاف دکھنی کوریا کا نیتا سنگمن ری اپنے اُدگار نکال چکا ہے. وہاں پہنچنے پر اِس نے ویسا کرنا شروع کردیا ہے جیسا اُس نے کہا تھا.

हाल में मिली खबरों से ऐसा नतीजा निकलता है कि यह बात कि क़ैदी अपने घर नहीं जाना चाहते सोलह आने सच नहीं है. आठ आने भी सच नहीं है. जितना आना पाई सच है वह भी उस प्रचार पर टिकी है जो यू. एन. ओ. कमांड और दक्खिनी कोरिया ने चीनी और कोरियाई क़ैदियों में किया है. न जाने क़ैदियों को क्या क्या कह कर बहकाया गया है. एक तो ऐसी अनोखी बात खुली है कि जिसकी कल्पना नहीं हो सकती. वह है---

एक क़ैदी के बदन पर यह गोदना गुदा था--मैं साम्यवाद को बहुत बुरा समझता हूं. मैं अपने घर नहीं लौटना चाहता क्योंकि मेरा घर उस जगह है जहां साम्यवादी सरकार है. ऊपर लिखा ज्यों के त्यों शब्दों में नहीं पर यह हम ज़िम्मेदारी के साथ कह रहे हैं कि उस क़ैदी के सारे बदन पर जो गोदना गुदा था वह इससे भी कई गुना बुरा था.

जब उस क़ैदी तक इन पांच मुल्कों के पंचों की मार्फ़त हाथापाई बंद की शर्तें पहुंची तो वह क़ैदी घर जाने के लिये मचल पड़ा. उसे अपने गोदने से नफ़रत होने लगी. अख़िर वह आदमी पत्थर का एक टुकड़ा लेकर अपने बदन को रगड़ने लगा और उसने अपना सारा बदन ख़ून ख़ुहान कर डाला. किसी भारती सिपाही की निगाह उस पर जा पड़ी. उसने पूछा—तुम यह क्या कर रहे हो? वह बोला—आप ही बताइये मैं इस गोदने को अपने बदन पर लेकर किस मुंह से अपने घर जाऊं? मेरे गांव के लोग मुझे क्या कहेंगे? मुझे धोकेबाज़ समझेंगे या नहीं? मैं उस तकलीफ़ को इस तकलीफ़ से कई गुना ज़ियादा समझता हूं. अब मैं ऐसा न करूं तो क्या करूं? यह सुन भारती सिपाही रो पड़ा.

'हांडी में से चांवल' न्याय से यह कहने में हमें झिझक नहीं कि यू. एन. ओ. कमांड ने जो एक तरह से अमरीकी कमान्ड है ख़ुद या अपने इशारे से यह काम दक्खिनी कोरिया के धूर्त नेता सिंगमन री की मार्फ़त कराया हो. न जाने क्या क्या और बातें उन क़ैदियों के दिलों में भरी गई हैं. न जाने और किस किस तरह उनके तन मन मस्तक को तोड़ा मरोड़ा गया है जिस से वह अपनी मातृ भूमि से बेज़ार हो उठे हैं. न जाने उनका क्या हाल कर दिया गया है कि वह अपने को इस क़ाबिल नहीं समझते कि अपना मुंह अपने भाइयों को दिखाने की हिम्मत कर सकें. इस तरह की गुंडई कर के यह कह बैठना कि कोरियाई और चीनी क़ैदी अपने घर जाना नहीं चाहते लोगों की आंखों में धूल झोंकना है.

अमरीका यह न समझे कि भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने जिस कड़ी बोली में दक्खिनी

حال میں ملی خبروں سے ایسا نتیجہ نکلتا ہے کہ یہ بات کہ قیدی اپنے گھر نہیں جانا چاہتے سولہ آنے سچ نہیں ہے. آٹھ آنے بھی سچ نہیں ہے. جتنا آنہ پائی سچ ہے وہ بھی اس پرچار پر ٹکی ہے جو یو. این. او. کمانڈ اور دکھنی کوریا نے چینی اور کوریائی قیدیوں میں کیا ہے. نہ جانے قیدیوں کو کیا کیا کہہ کر بہکایا گیا ہے. ایک تو ایسی انوکھی بات کھلی ہے کہ جس کی کلپنا نہیں ہو سکتی. وہ ہے—

ایک قیدی کے بدن پر یہ گودنا گدا تھا—میں سامیہ واد کو بہت برا سمجھتا ہوں. میں اپنے گھر نہیں لوٹنا چاہتا کیونکہ میرا گھر اس جگہ ہے جہاں سامیہ وادی سرکار ہے. اوپر لکھا جیوں کے تیوں شبدوں میں نہیں پر یہ ہم ذمہ داری کے ساتھ کہہ رہے ہیں کہ اس قیدی کے سارے بدن پر جو گودنا گدا تھا وہ اس سے بھی کئی گنا برا تھا.

جب اس قیدی تک ان پانچ ملکوں کے پنچوں کی معرفت ہاتھا پائی بند کی شرطیں پہنچی تو وہ قیدی گھر جانے کے لئے مچل پڑا. اسے اپنے گودنے سے نفرت ہونے لگی. آخر وہ آدمی پتھر کا ایک ٹکڑا لے کر اپنے بدن کو رگڑنے لگا اور اس نے اپنا سارا بدن خون خوہان کر ڈالا. کسی بھارتی سپاہی کی نگاہ اس پر جا پڑی. اس نے پوچھا—تم یہ کیا کر رہے ہو؟ وہ وہ بولا—آپ ہی بتائیے میں اس گودنے کو اپنے بدن پر لے کر کس منہ سے اپنے گھر جاؤں؟ میرے گاؤں کے لوگ مجھے کیا کہیں گے؟ مجھے دھوکے باز سمجھیں گے یا نہیں؟ میں اس تکلیف کو اس تکلیف سے کئی گنا زیادہ سمجھتا ہوں. اب میں ایسا نہ کروں تو کیا کروں؟ یہ سن بھارتی سپاہی رو پڑا.

'ہانڈی میں سے چاول' نیائے سے یہ کہنے میں ہمیں جھجھک نہیں کہ یو. این. او کمانڈ نے جو ایک طرح سے امریکی کمانڈ ہے خود یا اپنے اشارے سے یہ کام دکھنی کوریا کے دھورت نیتا سنگمن ری کی معرفت کرایا ہو. نہ جانے کیا کیا اور باتیں ان قیدیوں کے دلوں میں بھری گئی ہیں. نہ جانے اور کس کس طرح ان کے تن من مستک کو توڑا مروڑا گیا ہے جس سے وہ اپنی ماتر بھومی سے بیزار ہو اٹھے ہیں. نہ جانے ان کا کیا حال کر دیا گیا ہے کہ وہ اپنے کو اس قابل نہیں سمجھتے کہ اپنا منہ اپنے بھائیوں کو دکھانے کی ہمت کر سکیں. اس طرح کی غنڈئی کر کے یہ کہہ بیٹھنا کہ کوریائی اور چینی قیدی اپنے گھر جانا نہیں چاہتے لوگوں کی آنکھوں میں دھول جھونکنا ہے.

امریکہ یہ نہ سمجھے کہ بھارت کے پردھان منتری جواہر لال نہرو نے جس کڑی بولی میں دکھنی

कोरिया के धूर्त नेता सिंगमन री की ख़बर ली है वह कड़ी बोली उस तक महदूद है, नहीं वह अमरीकी सरकार तक जाती है. वह आदमी निरा मूर्ख समझा जायगा जिस के हाथ की लाठी को गलियां दी जा रही हों और वह यह समझे कि उसे कुछ नहीं कहा जा रहा है. सिंगमन री अमरीका की हाथ की लाठी के सिवाय कुछ नहीं. अगर वह कुछ होता तो क्या उत्तरी कोरिया को छोड़ कर इतनी बुरी तरह दुम दबा कर भागता कि दक्खिनी किनारे पूसान आ कर दम लेता और अपने पीछे जिसे छोड़ा था उसे आने देता? री जब भी भड़कता या कुछ कहता है अमरीका की शह उसे मिली होती है, उसके बिना वह एक शब्द बोलने की हिम्मत नहीं कर सकता.

नेहरू जी ने यह बात कही कि दक्खिनी कोरिया के पास आज हिन्दुस्तान से तिगुनी फ़ौज है और यह बताया कि दक्खिनी कोरिया उस फ़ौज को किसी तरह नहीं पाल सकता जब तक कोई दूसरे उसकी मदद न करें. एक तरह साफ़ साफ़ कह दिया है कि अमरीका दक्खिनी कोरिया को भड़का रहा है, बूते से बाहर फ़ौजें रखने के लिये मजबूर कर रहा है. न वह उनको सम्भाल सकता है, न उनकी उसे जरूरत है. अमरीका यह भले समझ ले कि वह ऊंचे दर्जे का दांव खेल रहा है, बड़ी गहरी चाल चल रहा है पर दुनिया के मुल्क ख़ूब समझते हैं कि वह इतने ओछेपन पर उतर आया है. वह यह भी नहीं समझता कि लोग उसे सीधे ना सीधे, वक़्त बे वक़्त ओछा कहते रहते हैं.

क्या अमरीका यह समझ बैठा है कि दुनिया यह भूल गई कि अमरीका ऐशिया के मुल्कों को आपस में लड़ाना चाहता है? यदि हां तो वह बड़ी भूल में है. जब तक आइज़न हावर साहब अमरीका की गद्दी पर मौजूद हैं तब तक आइज़नहावर के शब्द भी दुनिया के दिल पर पत्थर की लकीर की तरह बने रहेंगे.

अमरीका ऐटम बम और हाइड्रोजन बम के ज़ोम में तीसरी लड़ाई के लिये हुमहुमी भर सकता है, लड़ाई किसी बहाने छेड़ भी सकता है पर वह अपनी धाक और अपने पैसे को रेत के मोल लुटा कर भी दुनिया की हमदर्दी अपने लिये उस वक़्त तक हासिल नहीं कर सकता जब तक वह ओछी चाल बाज़ी से बाज़ न आए.

अगर अमरीका को चाल बाज़ियां ही चलना है तो वह बर्तानिया को गुरू बनाये वह उसे सिखा सकती है कि चाल बाज़ियां किस तरह चलने पर चालबाज़ी नहीं मालूम होतीं नेकियां सी लगती हैं. भारत माता तो उसको साफ़ दिली और साफ़ गोई सिखा सकती है.

—भगवानदीन

کوریا کے دھورت نیتا سنگمن ری کی خبر لی ہے وہ کڑی بولی اس تک محدود ہے، نہیں وہ امریکی سرکار تک جاتی ہے ۔ وہ آدمی نرا مورکھ سمجھا جائے گا جس کے ہاتھ کی لاٹھی کو گالیاں دی جا رہی ہوں اور وہ یہ سمجھے کہ اسے کچھ نہیں کہا جا رہا ہے ۔ سنگمن ری امریکہ کی ہاتھ کی لاٹھی کے سوائے کچھ نہیں ۔ اگر وہ کچھ ہوتا تو کیا اتری کوریا کو چھوڑ کر اتنی بری طرح دم دبا کر بھاگتا کہ دکھنی کنارے پوسان آ کر دم لیتا اور اپنے پیچھے جسے چھوڑا تھا اسے آنے دیتا ؟ ری جب بھی بھڑکتا یا کچھ کہتا ہے امریکہ کی شہ اسے ملی ہوتی ہے، اس کے بنا وہ ایک شبد بولنے کی ہمت نہیں کر سکتا ۔

نہرو جی نے یہ بات کہی کہ دکھنی کوریا کے پاس آج ہندستان سے تگنی فوج ہے اور یہ بتایا کہ دکھنی کوریا اس فوج کو کسی طرح نہیں پال سکتا جب تک کوئی دوسرے اسکی مدد نہ کریں ۔ ایک طرح صاف صاف کہہ دیا ہے کہ امریکہ دکھنی کوریا کو بھڑکا رہا ہے، بوتے سے باہر فوجیں رکھنے کے لئے مجبور کر رہا ہے ۔ نہ وہ ان کو سنبھال سکتا ہے، نہ ان کی اسے ضرورت ہے ۔ امریکہ یہ بھلے سمجھ لے کہ وہ اونچے درجے کا داؤں کھیل رہا ہے، بڑی گہری چال چل رہا ہے پر دنیا کے ملک خوب سمجھتے ہیں کہ وہ اتنے اوچھے پن پر اتر آیا ہے ۔ وہ یہ بھی نہیں سمجھتا کہ لوگ اسے سیدھے نہ سیدھے، وقت بےوقت اوچھا کہتے رہتے ہیں ۔

کیا امریکہ یہ سمجھ بیٹھا ہے کہ دنیا یہ بھول گئی کہ امریکہ ایشیا کے ملکوں کو آپس میں لڑانا چاہتا ہے ؟ یدی ہاں تو وہ بڑی بھول میں ہے ۔ جب تک آئزن ہاور صاحب امریکہ کی گدی پر موجود ہیں تب تک آئزن ہاور کے شبد بھی دنیا کے دل پتھر پر کی لکیر کی طرح بنے رہینگے ۔

امریکہ ایٹم بم اور ہائڈروجن بم کے زعم میں تیسری لڑائی کے لئے ہمہمی بھر سکتا ہے، لڑائی کسی بہانے چھیڑ بھی سکتا ہے پر وہ اپنی دھاک اور اپنے پیسے کو ریت کے مول لٹا کر بھی دنیا کی ہمدردی اپنے لئے اس وقت تک حاصل نہیں کر سکتا جب تک وہ اوچھی چال بازی سے باعض نہ آئے ۔

اگر امریکہ کو چال بازیاں ہی چلنا ہے تو برطانیہ کو گرو بنائے وہ اسے سکھا سکتی ہے کہ چال بازیاں کس طرح چلنے پر چال بازی نہیں معلوم ہوتیں، نیکیاں سی لگتی ہیں ۔ بھارت ماتا تو اسکو صاف دلی اور صاف گوئی سکھا سکتی ہے ۔

—بھگوان دین

विलायती खाद से बचिये

हमारी खुद मुख्तार सरकार को जहां और बहुत से शौक़ हैं उनमें एक है विलाती खाद के इस्तेमाल से अनाज की पैदावार को बढ़ाना. पिछली 3 सितम्बर को पार्लियामेन्ट में बोलते हुए खेती मिनिस्टर डाक्टर पंजाब राव देश मुख ने कहा कि नई दिल्ली की सरकार ने सूबों की सरकारों को खाद खरीदने के लिये आठ करोड़ रुपये क़र्ज़ देना तय कर लिया है जिस में से लगभग पौने पांच करोड़ खर्च हो भी चुका है. यह खाद कुछ विदेशों से आती है, ज़ियादातर अमरीका से, और कुछ हिन्दुस्तान में एक सरकारी कारखाने में भी बनती है जो बिहार में सिन्दरी नाम के गांव में है. सिन्दरी फ़ैक्ट्री में एमोनियम सलफ़ेट नाम की खाद खास कर बनाई जाती है. पिछले साल सरकार इसे 365 रुपये टन के हिसाब से बेचती थी लेकिन अब दाम घटा कर 290 रुपया कर दिया गया है ताकि किसान को खरीदने में सहूलियत हो.

इटावे में और दूसरी जगहों पर जो सरकारी 'विकास योजनाएं' चल रही हैं वहां भी अधिकारी लोग विलायती खाद का लालच किसानों के बीच पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं. मगर हमारा देहाती स्वभाव से ही कुछ ऐसा पैदा हुआ है कि उसे विलायती खाद या बड़ी बड़ी मशीनें नहीं भाती. यह केवल स्वभाव ही नहीं इसके पीछे सूझ बूझ भी है और अब साइंस भी इस सूझ बूझ को ठीक बता रही है. आज विलायती केमिकल खाद और मशीनों के कारन जिस तेज़ी से अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और दक्खिन अफ़्रीक़ा में लाखों एकड़ ज़मीन बरबाद होती जा रही है उससे साफ़ पता चलता है कि इस मामले में हमारे किसान की क़ुदरती सूझ ग़लत नहीं है.

आख़िर धरती या मिट्टी (Soil) क्या चीज़ है? इस में ज़ियादातर चार चीज़ें हैं—कैल्शियम, फासफोरिक एसिड, नाइट्रोजन, और पोटैशियम. लेकिन लेबोरेटरी में बैठा हुआ वैज्ञानिक इन चारों चीज़ों को जैसे चाहें मिला ले, मिट्टी नहीं पैदा कर सकता. जिस तरह शरीर के 24 तत्वों का मिला कर कोई इन्सान को नहीं खड़ा कर सकता. मिट्टी की असली चीज़ "जान" है. जानदार मिट्टी में छोटे छोटे जन्तु (earth worm), कंहरी और नन्हें कीड़े होते हैं. बताया जाता है कि एक इन्च मिट्टी में इन जन्तुओं की तादाद कम से कम पचास लाख होती है. यही जन्तु चट्टानों को तोड़ते हैं, ऐसा बारीक तोड़ते हैं कि वही चूरन उनका भोजन बन जाता है. इसी मिट्टी पर जीते, इसी में मरते, सड़ते (decompose) और सड़ने पर ठीक वही चीज़ तैयार कर देते हैं जो हरे पौधों को चाहिये. पौधे को जानवर

کھاد سے بچئیے

ہماری خود مختار سرکار کو جہاں اور بہت سے شوق ہیں ان میں ایک ہے ولایتی کھاد کے استعمال سے اناج کی پیداوار کو بڑھانا ۔ پچھلی 3 ستمبر کو پارلیامنٹ میں بولتے ہوئے کھیتی منسٹر ڈاکٹر پنجاب راؤ دیش مکھ نے کہا کہ نئی دلی کی سرکار نے صوبوں کی سرکاروں کو کھاد خریدنے کے لئیے 8 کروڑ روپئیے قرض دینا طے کر لیا ہے جس میں سے لگ بھگ پونے پانچ کروڑ خرچ بھی ہو چکا ہے ۔ یہ کھاد کچھ ودیشوں سے آتی ہے ' زیادہ تر امریکہ سے ' اور کچھ ہندوستان میں ایک سرکاری کارخانے میں بھی بنتی ہے جو بہار میں سندری نام کے گاؤں میں ہے ۔ سندری فیکٹری میں ایمونیم سلفیٹ نام کی کھاد خاص کر بنائی جاتی ہے ۔ پچھلے سال سرکار اسے 365 روپیہ ٹن کے حساب سے بیچتی تھی لیکن اب دام گھٹا کو 290 روپیہ کر دیا گیا ہے تاکہ کسان کو خریدنے میں سہولیت ہو ۔

اٹاوے میں اور دوسری جگہوں پر جو سرکاری وکاس یوجنائیں چل رہی ہیں وہاں بھی ادھکاری لوگ ولایتی کھاد کا لالچ کسانوں کے بیچ پیدا کرنے کی کوشش کر رہے ہیں ۔ مگر ہمارا دیہاتی سوبھاؤ سے ہی کچھ ایسا پیدا ہوا ہے کہ اسے ولایتی کھاد یا بڑی بڑی مشینیں نہیں بھاتیں ۔ یہ کیول سوبھاؤ ہی نہیں اس کے پیچھے سوجھ بوجھ بھی ہے ۔ اور اب سائنس بھی اس سوجھ بوجھ کو ٹھیک بتا رہی ہے ۔ آج ولایتی کیمیکل کھاد اور مشینوں کے کارن جس تیزی سے امریکہ و اسٹریلیا و نیوزیلینڈ اور دکھنی افریقہ میں لاکھوں ایکڑ زمین برباد ہوتی جا رہی ہے اس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ اس معاملہ میں ہمارے کسان کی قدرتی سوجھ غلط نہیں ہے ۔

آخر دھرتی یا مٹی (Soil) کیا چیز ہے ؟ اس میں زیادہ تر چار چیزیں ہیں ۔ کیلشیم' فاسفورک ایسڈ' نائٹروجن' اور پوٹیشیم ۔ لیکن لیبوریٹری میں بیٹھا ہوا ویگیانک ان چاروں چیزوں کو جیسے چاہے ملا لے' مٹی نہیں پیدا کر سکتا ۔ جس طرح شریر کے 24 تتوں کو ملا کر کوئی انسان کو نہیں کھڑا کر سکتا ۔ مٹی کی اصلی چیز "جان" ہے ۔ جان دار مٹی میں چھوٹے جنتو (earth worm) کنگھری اور ننھے کیڑے ہوتے ہیں ۔ بتایا جاتا ہے کہ ایک انچ مٹی میں ان جنتوؤں کی تعداد کم سے کم پچاس لاکھ ہوتی ہے ۔ یہی جنتو چٹانوں کو توڑتے ہیں' ایسا باریک توڑتے ہیں کہ وہی چورن ان کا بھوجن بن جاتا ہے ۔ اسی مٹی پر جیتے' اسی میں مرتے' سڑتے (decompose) اور سڑنے پر ٹھیک وہی چیز تیار کر دیتے ہیں جو ہرے پودوں کو چاہئیے ۔ پودھے کو جانور

खाता है और फिर पेशाब व गोबर के रास्ते उन जन्तुओं या कीड़ों को निकाल देता है जो मिट्टी के लिये ज़रूरी हैं और इस तरह क़ुदरत का यह चक्कर चलता रहता है.

ज़ाहिर है कि अगर जानवरों की जगह मशीनों से खेती की जायेगी तो मिट्टी को वह जन्तु नहीं मिलेंगे जो उसे चाहिये. यही नहीं, विलायती खाद की ख़ूबी यह है कि मिट्टी को जन्तु कीड़े देना तो दर किनार वह उसके रहे सहे जन्तु कीड़े को भी मार देती है. दूसरे शब्दों में, चौबे जी छब्बेजी होने चले थे और रह गए दुबे ही. यही कारन है, जैसा हमने ऊपर कहा है, कि बाहर के देशों की वह ज़मीनें जिनमें यह विलायती खाद वग़ैरा डाली जा रही हैं बेकार होती चली जा रही हैं. इसके ख़िलाफ़ मिस्र वाले हज़ारों बरस से नील नदी की घाटी में खेती कर रहे हैं पर इनकी ज़मीन दुनिया की सबसे अधिक उपजाऊ ज़मीन बनी हुई है.

ज़मीन बरबाद करने के अलावा एक और भयानक नुक़सान इन खादों से हो रहा है. वह यह है कि इन खादों से मिट्टी को फ़ासफ़ोरस, नाइट्रोजन और पोटैशियम तो मिल जाते हैं, जिससे घास पत्ती पैदा हो जाती हैं, मगर जैसा कि अमरीकी साइन्सदां गेलार्ड हाउज़र ने अपनी किताब 'Look Younger' 'Live Longer' में कहा है—"वह सत्रह या ज़ियादा चीज़ें नहीं मिलतीं जो एक पौधे की सेहत के लिये ज़रूरी हैं. इसलिये पौधे रोगी रह जाते हैं, और इसी वजह से उनको खाने वाले जानवर या इनसानों में नई नई कमज़ोरियां आ जाती हैं और बीमारियां बढ़ती हैं. इसके ख़िलाफ़ अगर गोबर या देशी खाद दी जाती है तो पौधे तन्दुरुस्त रहते हैं और उनको इस्तेमाल करने वाले आदमी भी तन्दुरुस्त रहते हैं."

विलायती खाद के बारे में एक मशहूर अंगरेज़ खेतिहर का कहना है कि "इनसे बनावटी ख़ुराक मिलती है जिसे खा कर बनावटी जानवर और बनावटी मर्द औरत बनते हैं." एक दूसरे वैज्ञानिक लार्ड नार्थ बोर्न का कहना है कि—"विलायती खाद और मशीनी खेती के कारन पिछले तीस बरस में जितनी ज़मीन की सत्यानास हुआ उतना दुनिया के पिछले कुल इतिहास में भी नहीं हुआ."

ज़ियादा कहने की ज़रूरत नहीं है. विलायती खाद से फ़ायदा अगर होगा—सो भी रुपये, पैसे में, तो केवल व्यापारियों को होगा—चाहे वह अमरीका के हों, इन्गलैन्ड के हों या चाहे हिन्दुस्तान के—या सरकार को. लेकिन किसान को इससे हद दर्जे का नुक़सान है, खेती और धरती की आफ़त ही आफ़त है. भारत सरकार से हम प्रार्थना करेंगे कि वह सिन्दरी के कारख़ाने को बन्द कर दे, विलायती खाद का लेन देन उठा दे और इससे कोसों दूर

کھاتا ہے اور پھر پیشاب و گوبر کے راستے اُن جنتوؤں یا کیڑوں کو نکال دیتا ہے جو مٹی کے لئے ضروری ہیں اور اس طرح قدرت کا یہ چکر چلتا رہتا ہے .

ظاہر ہے کہ اگر جانوروں کی جگہ مشینوں سے کھیتی کی جائے گی تو مٹی کو وہ جنتو نہیں ملیں گے جو اُسے چاہئیں یہ ہی نہیں' ولایتی کھاد کی خوبی یہ ہے کہ مٹی کو جنتو' کیڑے دینا تو درکنار وہ اُس کے رہے سہے جنتو' کیڑے کو بھی مار دیتی ہے . دوسرے شبدوں میں' چوبے جی چھبے جی ہونے چلے تھے اور رہ گئے دوبے ہی . یہی کارن ہے' جیسا ہم نے اوپر کہا ہے' کہ باہر کے دیشوں کی وہ زمینیں جن میں یہ ولایتی کھاد وغیرہ ڈالی جا رہی ہیں بیکار ہوتی چلی جا رہی ہیں . اِس کے خلاف مصر والے ہزاروں برس سے نیل ندی کی گھاٹی میں کھیتی کر رہے ہیں پر اُن کی زمین دنیا کی سب سے ادھک اُپجاؤ زمین بنی ہوئی ہے .

زمین برباد کرنے کے علاوہ ایک اور بھیانک نقصان اِن کھادوں سے ہو رہا ہے . وہ یہ ہے کہ اِن کھادوں سے مٹی کو فاسفورس' نائٹروجن اور پوٹیشیم تو مل جاتے ہیں' جس سے گھاس پتی پیدا ہو جاتی ہیں مگر جیسا کی امریکی سائنسداں گیلارڈ ہاؤزر نے اپنی کتاب (Look younger live longer) میں کہا ہے—" وہ سترہ یا زیادہ چیزیں نہیں ملتیں جو ایک پودے کی صحت کے لئے ضروری ہیں . اِس لئے پودے روگی رہ جاتے ہیں' اور اِسی وجہ سے ان کو کھانے والے جانور یا اِنسانوں میں نئی نئی کمزوریاں آجاتی ہیں اور بیماریاں بڑھتیں ہیں. اِس کے خلاف اگر گوبر یا دیسی کھاد دی جاتی ہے تو پودے تندرست رہتے ہیں اور اُن کو استعمال کرنے والے آدمی بھی تندرست رہتے ہیں ."

ولایتی کھاد کے بارے میں ایک مشہور انگریزی کھیتیہر کا کہنا ہے کہ ' اِن سے بناوٹی خوراک ملتی ہے جسے کھاکر بناوٹی جانور اور بناوٹی مرد عورت بنتے ہیں" ایک دوسرے ویگیانک' لارڈ نارتھ بورن کا کہنا ہے کہ—"ولایتی کھاد اور مشینی کھیتی کے کارن پچھلے تیس برس میں جتنی زمین کا ستیاناس ہوا اُتنا دنیا کے پچھلے کل اِتہاس میں بھی نہیں ہوا ."

زیادہ کہنے کی ضرورت نہیں ہے. ولایتی کھاد سے فائدہ اگر ہوگا سو بھی روپئے' پیسے میں' تو کیول بیوپاریوں کو ہوگا—چاہئے وہ امریکہ کے ہوں' اِنگلینڈ کے ہوں یا چاہئے ہندستان کے—یا سرکار کو . لیکن کسان کو اِس سے حد درجے کا نقصان ہے' کھیتی اور دھرتی کی آفت ہی آفت ہے . بھارت سرکار سے ہم پرارتھنا کریں گے کہ وہ سندری کے کارخانے کو بند کردے' ولایتی کھاد کا لین دین اُٹھا دے اور اس سے کوسوں دور

रहे. वरना, सरकार तो आज एक है कल दूसरी, पर हमारे किसान को—देश की करोड़ों जनता को—बिला गुनाह वह चोट पहुंच जाएगी जो कई पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगी और जिसके इलाज करने में अथाह ताक़त और वक़्त ख़र्च होंगे.

—सुरेश रामभाई

सरकार और खादी

इधर चन्द महीनों से भारत सरकार का ध्यान खादी की तरफ़ गया है और एक 'कुल हिन्द खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड' भी बनाया गया है. पिछली 29 अगस्त को हमारे राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने नई दिल्ली सरकार के मिनिस्टरों और ऊंचे अफ़सरों को राष्ट्रपति भवन में बुला कर खादी के इस्तेमाल के लिये अपील की और कहा :

'मैं यह नहीं कहता कि फ़ौज में खादी का इस्तेमाल हो, न यही कहता हूं कि पुलिस की वर्दी खादी की हो...... लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि राष्ट्रपति भवन और दूसरे विभागों में खादी का इस्तेमाल क्यों न हो. इसलिये मेरा सुझाव है कि सरकार सारे विभागों को—केवल फ़ौज और पुलिस को छोड़ कर—हिदायत कर दे कि कपड़े की ज़रूरत का सामान खादी भंडारों से खरीदा जाय."

उसी सभा में प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी खादी को "पेट्रोनाइज़" करने की सलाह दी. 11 सितम्बर को जवाहरलाल जी ने गांधी जयन्ती के लिये अपने संदेश के दौरान में कहा :

"खादी अपने करोड़ों भाई बहनों से हमारा नाता जोड़ देती है. इससे भाई चारे और साथ काम करने का वातावरण पैदा होता है......

"कुछ हद तक इस से बेकारी दूर करने में भी मदद मिलती है......

"खादी हमारा एक ख़ास ग्रामद्योग है......

"इस लिये हम को चाहिये कि खादी पहनें, इसका इस्तेमाल करें और हर तरह से इस को बढ़ावा दें......

"ख़ास तौर से, आज के दिन तो—गांधी जयन्ती के दिन—जब और बहुत सी यादें ताज़ी हो जाती हैं—हम यह करें ही."

हो सकता है कि राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री की इन अपीलों से इस गांधी जयन्ती के मौक़े पर खादी की बिक्री बढ़े. लेकिन हमें देखना यह है कि इससे खादी की आत्मा को कितना फ़ायदा पहुंचता है. खादी की आत्मा उस के बिक्री रूपी शरीर से जुदा चीज़ है. खादी की आत्मा से हमारा मतलब है वह खादी जो अहिंसा की निशानी है और ग़रीब से ग़रीब देहाती की बड़ी से बड़ी मदद है.

ورنہ سرکار تو آج ایک ہے کل دوسری، پر ہمارے کسانوں کو دیش کی کروڑوں جنتا کو — بلا گناہ وہ چوٹ پہنچے گی جو کئی پیڑھیوں کو بھگتنا پڑے گی اور جس کے علاج میں اتھاہ طاقت اور وقت خرچ ہوں گے۔

— سریش رام بھائی

سرکار اور کھادی

ادھر چند مہینوں سے بھارت سرکار کا دھیان کھادی کی طرف گیا ہے اور ایک 'کل ہند کھادی و گرام ادیوگ بورڈ' بھی بنایا گیا ہے۔ پچھلی 29 اگست کو ہمارے راشٹر پتی ڈاکٹر راجندر پرشاد نے نئی دلی سرکار کے منسٹروں اور اونچے افسروں کو راشٹر پتی بھون میں بلا کر کھادی کے استعمال کے لئے اپیل کی اور کہا:

"میں یہ نہیں کہتا کہ فوج میں کھادی کا استعمال ہو، نہ یہی کہتا ہوں کہ پولیس کی وردی کھادی کی ہو... لیکن میری سمجھ میں نہیں آتا کہ راشٹر پتی بھون اور دوسرے وبھاگوں میں کھادی کا استعمال کیوں نہ ہو...... اس لئے میرا سجھاؤ ہے کہ سرکار سارے وبھاگوں کو — کیول فوج اور پولیس کو چھوڑ کر — ہدایت کر دے کہ کپڑے کی ضرورت کا سامان کھادی بھنڈاروں سے خریدا جائے۔"

اسی سبھا میں پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے بھی کھادی کو "پیٹرونائز" کرنے کی صلاح دی۔ 11 ستمبر کو جواہر لال جی نے گاندھی جینتی کے لئے اپنے سندیش کے دوران میں کہا:

"کھادی اپنے کروڑوں بھائی بہنوں سے ہمارا ناتہ جوڑ دیتی ہے۔ اس سے بھائی چارے اور ساتھ کام کرنے کا واتاورن پیدا ہوتا ہے......

"کچھ حد تک اس سے بیکاری دور کرنے میں بھی مدد ملتی ہے......

"کھادی ہمارا ایک خاص گرام ادیوگ ہے......

"اس لئے ہم کو چاہئے کہ کھادی پہنیں، اس کا استعمال کریں اور ہر طرح سے اس کو بڑھاوا دیں......

"خاص طور سے، آج کے دن تو — گاندھی جینتی کے دن — جب اور بہت سی یادیں تازی ہو جاتی ہیں — ہم یہ کریں ہی۔"

ہو سکتا ہے کہ راشٹر پتی اور پردھان منتری کی ان اپیلوں سے اس گاندھی جینتی کے موقع پر کھادی کی بکری بڑھے۔ لیکن ہمیں دیکھنا یہ ہے کہ اس سے کھادی کی آتما کو کتنا فائدہ پہونچتا ہے۔ کھادی کی آتما اس کے بکری روپی شریر سے جدا چیز ہے۔ کھادی کی آتما سے مطلب ہے وہ کھادی جو اہنسا کی نشانی ہے اور غریب سے غریب دیہاتی کی بڑی سے بڑی مدد ہے۔

हमारी राय

एक बात हम यह भी साफ़ कर दें कि हम यह नहीं मानते कि जैसा राष्ट्रपति ने कहा है कि खादी फ़ौज और पुलिस की वरदियों के लिये काम नहीं दे सकती. कचचापन हमारे दिलों में है, खादी में नहीं है. अगर हमारी सरकार अपनी फ़ौज और पुलिस में खादी का इस्तेमाल करने लगे तो खादी की तरक़्क़ी और बढ़ौती में इस से बेहद मदद मिल सकती है. हमने मज़बूत खादी देखी और बरती है. अगर हमारी सरकार अपनी फ़ौज और पुलिस के लिये मिल के सूत और हाथ करघों का तैयार किया हुआ एक ख़ास नमूने का कपड़ा भी काम में लाने लगे तो इस से हमारे लाखों भूके मरते हुए बुनकरों के बच्चे पल सकते हैं. पर हमारी आंखें दूसरी ही तरफ़ लगी हुई हैं. जवाहरलाल जी की बातें भी ख़ास कर यह कि हम गांधी जयन्ती पर, तो खद्दर बरतें ही हमें बहुत संतोश देने वाली नहीं लगतीं.

अब रही खादी की आत्मा की बात. सन 1944 में जेल से छूटने के बाद गांधी जी ने कहा था :

"मैंने पहले खादी चलाई, पीछे उसका अभ्यास किया. इस तरह अपने को धोका देता रहा. मैंने लोगों को जो दिया सो दिया, असली चीज़--स्वावलम्बन लोगों को नहीं दे सका. मैंने मज़दूरी के रूप में पैसा दिया और लोगों को कहा कि इसमें स्वराज भरा है. लोगों ने मेरा भरोसा किया और मान लिया. आज भी मानते हैं. लेकिन इस विशय में अब मुझे शंका पैदा हुई है कि अब यह कहां तक चल सकेगा. मुझे डर है कि अगर इसी तरीक़े से खादी चलाते रहेंगे तो वह चलने वाली चीज़ ही नहीं."

"अगर बिना सोचे काम चलते रहेंगे तो हम लोगों को भी धोखा देंगे और ख़ुद को भी. आज हम उनको रोज़ी क्या देते हैं, एक तरह की भीक ही देते हैं, जैसे पत्थर तुड़वा कर या सड़क बनवा कर अकाल के समय दी जाती है. उसका कोई टिकाऊ मोल नहीं होता."

वह 'टिकाऊ मोल' क्या है ? या खादी के पीछे असली मक़सद क्या है ? महात्मा जी के शब्दों में :

"असल में जो दावा खादी की कल्पना के पीछे है वह तो गांवों के उठान का है और उसके ज़रिये अपने आप स्वराज की शक्ति जनता में पैदा करने का है."

ज़ाहिर है कि राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री ने जो चीज़ें कहीं उनसे खादी का 'भीक' वाला पहलू ही सामने आता है. वह खादी की आत्मा को ज़रा भी नहीं छूता. ऐसा होना क़ुदरती है, क्योंकि सरकार की निगाह में खादी गांव के उठान का ज़रिया नहीं है. यही वजह है कि देश में विकास योजनाओं पर जो करोड़ों रुपया नष्ट किया

ہماری رائے

ایک بات ہم یہ بھی صاف کر دیں کہ ہم یہ نہیں مانتے کہ جیسا راشٹر پتی نے کہا ہے کہ کھادی فوج اور پولیس کی وردیوں کے لئے کام نہیں دے سکتی. کچاپن ہمارے دلوں میں ہے، کھادی میں نہیں. اگر ہماری سرکار اپنی فوج اور پولیس میں کھادی کا استعمال کرنے لگے تو کھادی کی ترقی اور بڑھوتی میں اِس سے بے حد مدد مل سکتی ہے. ہم نے مضبوط کھادی دیکھی اور برتی ہے. اگر ہماری سرکار اپنی فوج اور پولیس کے لئے مل کے سوت اور ہاتھ کرگھوں کا تیار کیا ہوا ایک خاص نمونہ کا کپڑا بھی کام میں لانے لگے تو اِس سے ہمارے لاکھوں بھوکے مرتے ہوئے بنکروں کے بچے پل سکتے ہیں. پر ہماری آنکھیں دوسری ہی طرف لگی ہوئی ہیں. جواہر لال جی کی باتیں بھی خاص کر یہ کہ ہم گاندھی جینتی پر تو کھدر برتیں ہی ہمیں بہت سنتوش دینے والی نہیں لگتیں.

اب رہی کھادی کی آتما کی بات. سن 1944 میں جیل سے چھوٹنے کے بعد گاندھی جی نے کہا تھا :

"میں نے پہلے کھادی چلائی، پیچھے اُس کا ابھیاس کیا. اِس طرح اپنے کو دھوکہ دیتا رہا. میں نے لوگوں کو جو دیا سو دیا، اصلی چیز---سواولمبن-لوگوں کو نہیں دے سکا. میں نے مزدوری کے روپ میں پیسہ دیا اور لوگوں کو کہا کہ اِس میں سوراج بھرا ہے. لوگوں نے میرا بھروسہ کیا اور مان لیا. آج بھی مانتے ہیں. لیکن اِس وشے میں اب مجھے شنکا پیدا ہوئی ہے کہ اب یہ کہاں تک چل سکیگا. مجھے ڈر ہے کہ اگر اسی طریقے سے کھادی چلاتے رہینگے تو وہ چلنے والی چیز ہی نہیں."

"اگر بنا سوچے کام چلتے رہینگے تو ہم لوگوں کو بھی دھوکہ دینگے اور خود کو بھی. آج ہم اُن کو روزی کیا دیتے ہیں، ایک طرح کی بھیک ہی دیتے ہیں، جیسے پتھر تڑوا کر یا سڑک بنواکر اکال کے سمے دی جاتی ہے. اُس کا کوئی ٹکاؤ مول نہیں ہوتا."

وہ ٹکاؤ مول' کیا ہے؟ یا کھادی کے پیچھے اصلی مقصد کیا ہے؟ مہاتما جی کے شبدوں میں :

"اصل میں جو دعویٰ کھادی کی کلپنا کے پیچھے ہے، وہ تو گاؤں کے اُتھان کا ہے اور اُس کے ذریعہ اپنے آپ سوراج کی شکتی جنتا میں پیدا کرنے کا ہے."

ظاہر ہے کہ راشٹرپتی اور پردھان منتری نے جو چیزیں کہیں اُن سے کھادی کا بھیک والا پہلو ہی سامنے آتا ہے. وہ کھادی کی آتما کو ذرا بھی نہیں چھوتا. ایسا ہونا قدرتی ہے، کیونکہ سرکار کی نگاہ میں کھادی گاؤں کے اُتھان کا ذریعہ نہیں ہے. یہی وجہ ہے کہ دیش میں وکاس یوجناؤں پر جو کروڑوں روپیہ نشٹ کیا

जा रहा है, उसमें खादी और ग्रामोद्योग की तरक़्क़ी या बढ़ावे पर उतना ज़ोर नहीं है जितना मिल के माल और बड़े बड़े देशी विदेशी कल कारख़ानों पर. यही कारन है कि 2 अक्तूबर 1952 को जब विकास योजनाएं खोली गईं तो मीरा बहन ने कहा कि "यह बापू के दिल को टुकड़े टुकड़े कर देने के लिये काफ़ी हैं." विकास योजनाएं या सरकारी निज़ाम खादी से उतना ही दूर रहते हैं जितना कोई पुराने ज़माने का पंडा पुरोहित भंगी या चमार से.

इसलिये हमारा ख़्याल है कि सरकार का खादी ख़रीदना या उसको बढ़ावा देना उसके असली मतलब से ध्यान हटाने का ही काम करेगा और खादी के सिसक सिसक कर मरने का ज़िम्मेदार होगा. अगर सरकार को खादी से सचमुच प्यार है तो उसके चाम ही से नहीं उसकी आत्मा से भी नाता जोड़ना चाहिये. यह नाता तभी जुड़ सकता है जब सरकार अपनी मौजूदा व्यापारी, खेती, तालीमी, माली, निज़ामी, फ़ौजी वग़ैरा यानी हर तरह की नीति में, ढंग में और आचार ब्योहार में जड़ से परिवर्तन करे और उसकी कसौटी है--हिन्दुस्तान के गांव गांव का अपने पैरों पर खड़ा होना या खाने, कपड़े, मकान, तालीम और दवा दारू जैसी बुनियादी ज़रूरतों में किसी दूसरे या बाहर वाले का मोहताज न होना. ऐसा ग्राम राज क़ायम करना ही खादी का मक़सद है.

—सुरेश रामभाई

हिन्दी की नई किताब

गंगा से गोमती तक

(मुजीब रिज़वी)

इस किताब में मुजीब रिज़वी की तेरह कहानियां शामिल हैं. इन में से बहुत सी कहानियां 'नया हिन्द' के पाठक पढ़ चुके हैं और उन कहानियों के रस से अच्छी तरह परिचित हैं.

★ इन कहानियों में आजकल की समाजी उलझनों को बेनक़ाब किया गया है.

★ इन कहानियों में घटनाओं के साथ साथ उस हाथ की झलक दिखाई गई है जो इन घटनाओं के पीछे काम करता है.

★ इन कहानियों में जीवन है, सत्य है, चेतना है, इसीलिये मन मोहक असर है.

★ इस संग्रह में किसान, मज़दूर, मध्यम वर्ग सब के जीवन को चित्रित करने वाली कहानियां शामिल हैं.

★ इस संग्रह पर हिन्दी के बड़े बड़े लेखकों ने अपनी राय दी है. वह रायें भी इस संग्रह के साथ पढ़िये.

190 सफ़े की किताब, सुन्दर जिल्द, दाम केवल दो रुपया.

رہا ہے اسمیں کھادی اور گرام اُدیوگ کی ترقی یا بڑھاوے پر اُتنا زور نہیں ہے جتنا مل کے مال اور بڑے بڑے دیشی بدیشی کل کارخانوں پر. یہی کارن ہے کہ 2 اکتوبر 1952 کو جب وکاس یوجنائیں کھولی گئیں تو میرا بہن نے کہا کہ "یہ باپو کے دل کو ٹکڑے ٹکڑے کردینے کے لئے کافی ہیں." وکاس یوجنائیں یا سرکاری نظام کھادی سے اُتنا ہی دور رہتے ہیں جتنا کوئی پرانے زمانہ کا پنڈا پروہت بھنگی یا چمار سے.

اس لئے ہمارا خیال ہے کہ سرکار کا کھادی خریدنا یا اُسکو بڑھاوا دینا اُس کے اصلی مطلب سے دھیان ہٹانے کا ہی کام کریگا اور کھادی کے سسک سسک کر مرنے کا ذمہ دار ہوگا. اگر سرکار کو کھادی سے سچ مچ پیار ہے تو اُسکے چام ہی سے نہیں اُس کی آتما سے بھی ناتا جوڑنا چاہئے. یہ ناتا تبھی جڑ سکتا ہے جب سرکار اپنی موجودہ بیوپاری، کھیتی، تعلیمی، مالی، نظامی، فوجی وغیرہ یعنی ہر طرح کی نیتی میں ڈھنگ میں اور آچار بیوہار میں جڑ سے پری ورتن کرے اور اُس کی کسوٹی ہے-- ہندوستان کے گاؤں گاؤں کا اپنے پیروں پر کھڑا ہونا یا کھانے، کپڑے، مکان، تعلیم اور دوا دارو جیسی بنیادی ضرورتوں میں کسی دوسرے یا باہر والے کا محتاج نہ ہونا. ایسا گرام راج قائم کرنا ہی کھادی کا مقصد ہے.

—سریش رام بھائی

ہندی کی نئی کتاب

گنگا سے گومتی تک

(مجیب رضوی)

اس کتاب میں مجیب رضوی کی تیرہ کہانیاں شامل ہیں، اِن میں سے بہت سی کہانیاں 'نیا ہند' کے پاٹھک پڑھ چکے ہیں اور اُن کہانیوں کے رس سے اچھی طرح پریچت ہیں.

★ اِن کہانیوں میں آج کل کی سماجی اُلجھنوں کو بے نقاب کیا گیا ہے.

★ اِن کہانیوں میں گھٹناؤں کے ساتھ ساتھ اُس ہاتھ کی جھلک دکھائی گئی ہے جو اِن گھٹناؤں کے پیچھے کام کرتا ہے.

★ اِن کہانیوں میں جیون ہے، ستیہ ہے، چیتنا ہے، اسی لئے من موہک اثر ہے.

★ اِس سنگرہ میں کسان، مزدور، مدھیم ورگ سب کے جیون کو چترت کرنے والی کہانیاں شامل ہیں.

★ اِس سنگرہ پر ہندی کے بڑے بڑے لیکھکوں نے اپنی رائے دی ہے. وہ رائیں بھی اِس سنگرہ کے ساتھ پڑھئے.

190 صفحے کی کتاب، سندر جلد، دام کیول دو روپیہ.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری' بھائی چارے' پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے .

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے' چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو' میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—
مینیجر' 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد .

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं   صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی
2. शेर ओ सुख़न	”	8	0	0	”
3. गहरे पानी पैठ	”	2	8	0	”
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی
5. संस्मरण	”	3	0	0	”
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنھیالال مشر پربھاکر
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا
17. भारतीय शासन	”	3	0	0	”
18. नागरिक शास्त्र	”	2	4	0	”
19. साम्राज्य और उनका पतन	”	2	8	0	”
20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन	”	1	4	0	”
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	”	1	8	0	”
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے
26. जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین
27. मारने की हिम्मत !	”	1	0	0	”
28. सलौना सच	”	0	8	0	”
29. मेरे साथी	”	1	0	0	”

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

مینیجر 'نیا ہند'
145، مٹھی گنج' الہ آباد-3.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

द

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना प्रचार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, रों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में स का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; री—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद ान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम श पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से री की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई ताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम रा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145 مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

Registered No. A

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है,

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्बरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है. इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरका परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई कागज़ पर छपा 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا. اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا. ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ ممکن ہوسکا ہے.

ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی رائے اور سجھاووں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے. یشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں شمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار یعنی آمکھ لکھا ہے.

کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی--ایک زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلیگا طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو دیا.

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائینگے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام تین روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

* * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख — اس نمبر کے خاص لیکھ

हमारी राय — ہماری رائے

[हिन्दु]स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — [ہندو]ستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

नवम्बर 1953 نومبر

क़ीमत छः आना — قیمت چھ آنہ

"नया हिन्दी" "نیا ہند"

हिन्दुस्तानी कलचर सेसाइटी

ہندستانی کلچر سوسائٹی

का

کا

माहवारी परचा

ماہواری پرچا

नवम्बर 1953 نومبر

क्या किससे **सफ़ा** صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द · نیا ہند

जिल्द 15 नवम्बर, सन '53 नम्बर 5

نمبر 5 نومبر، سن '53 جلد 15

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

वह घड़ियां !

(शहाब सरमदी)

[जिस वातावरन पर इस कविता का आधार है उसकी जानकारी के बिना कविता का रस आधा रह जाता है. कवि घोड़ा उड़ाता चला जा रहा है—घास की कोंपलों को रौंदता हुआ, खेतों की छाती को खौंदता हुआ. नीचे क्या हो रहा है इससे बेखबर वह कहीं दूर फ़िज़ा में देख रहा है. यकायक दूर से कुछ सुन्दर गीतों के बोल सुनाई पड़ते हैं. रसिक आत्मा आनन्द से मस्त हो उठती है, वह उसी आनन्द में तल्लीन हो जाता है, अपना काम भूल जाता है. मंज़िल भूल जाता है. अपने को भूल जाता है लेकिन ......बदक़िस्मती को क्या करे कोई! जब गीत के स्रोत पर पहुँचा तो सारा गीत ही ख़त्म हो गया. गाने वालों की मसती और चंचलता ग़ायब हो गई. घोड़े, अंगरेज़ी कपड़े. बड़पन, अफ़सरी ठाट का भयानक डर उनकी आंखों में छलकने लगा. फ़ितरत का पुजारी शायर कुछ देर अचरज में खड़ा रहा और फिर एक ठन्डी सांस भर कर नीचे की पंक्तियां गुनगुनाता आगे बढ़ गया—ऐडीटर]

बरखा की रुत, घटाओं, में हलचल, पराया देश
हर सांस दे रही थी मुझे एक नया संदेश

रह रह के बन रही थी मेरे हक़ में दुशमनी
कोमल मगर कठोर हवाओं की सन सनी

उलझे फ़लक पे सुरमई बादल की सलवटें
बिखरी हुई फ़िज़ाओं में बरसात की लटें

रूहे सुब्क थी सबज़े के अन्दर रची हुई
शादाबियों की धूम थी हर-सू मची हुई

وہ گھڑیاں !

(شہاب سرمدی)

[جس واتاورن پر اس کویتا کا آدھار ہے اس کی جانکاری کے بنا کویتا کا رس آدھا رہ جاتا ہے۔ کوی گھوڑا اُڑاتا چلا جا رہا ہے—گھاس کی کونپلوں کو روندتا ہوا، کھیتوں کی چھاتی کو کھوندتا ہوا۔ نیچے کیا ہو رہا ہے اس سے بےخبر وہ کہیں دور فضا میں دیکھ رہا ہے۔ یکایک دور سے کچھ سندر گیتوں کے بول سنائی پڑتے ہیں۔ رسک آتما آنند سے مست ہو جاتی ہے، وہ اس آنند میں تلین ہو جاتا ہے، اپنا کام بھول جاتا ہے، منزل بھول جاتا ہے، اپنے کو بھول جاتا ہے۔ لیکن بدقسمتی کو کیا کرے کوئی! جب گیت کے سروت پر پہنچا تو سارا گیت ہی ختم ہو گیا۔ گانے والوں کی مستی اور چنچلتا غائب ہو گئی۔ گھوڑے، انگریزی کپڑے، بڑپن، افسری ٹھاٹ کا بھیانک ڈر اُن کی آنکھوں میں چھلکنے لگا۔ فطرت کا پجاری شاعر کچھ دیر اچرج میں کھڑا رہا اور پھر ایک ٹھنڈی سانس بھر کر نیچے کی پنکتیاں گنگناتا آگے بڑھ گیا—ایڈیٹر]

برکھا کی رت، گھٹاؤں میں ہلچل، پرایا دیش
ہر سانس دے رہی تھی مجھے اک نیا سندیش

رہ رہ کے بن رہی تھی میرے حق میں دشمنی
کومل مگر کٹھور ہواؤں کی سن سنی

اُلجھے فلک پہ سرمئی بادل کی سلوٹیں
بکھری ہوئی فضاؤں میں برسات کی لٹیں

روح خنک تھی سبزہ کے اندر رچی ہوئی
شادابیوں کی دھوم تھی ہر سو مچی ہوئی

लचकी थीं चन्द लड़कियां बहकी क़तार में
कुछ दूर एक खेत की कंचन बहार में

दमकी सी कनपटी पे पसीने की धारियां
शाने से भी ढली हुई बेरंग सारियां

होंठों पे सावनी वह तराने कि बन हिले
सीनों का ज़ेरो बम कि कहीं दिल से दिल मिले

गीतों के बोल सुर में भरे सोग में रचे
ग़मज़े भी हुस्नो इश्क़ की ज़द से बचे बचे

पलकों पे शर्म जैसे संभाले किसी का राज़
गरदन का ख़म कि रूह से निकली हुई नमाज़

चेहरे पर फ़िक्र नानेजवीं, बालापन की सोच
मेहनत से सोगवार बदन में बला का लोच

मायूसियों की ख़ाक से मुखड़ा अटा हुआ
परदा दरे शबाब था आंचल फटा हुआ

आंखों में ख़ुवाहिशात की मद्धिम चमक दमक
नस नस में एक सहमी हुई उम्र की कसक

नागाह जोशे वहशते ख़ातिर सिवा हुआ
मैं चल दिया वहां से यही सोचता हुआ

कैफ़ियतों में हुस्न के इतना हिरास क्यों ?
क़ुदरत हरी भरी है तो फ़ितरत उदास क्यों ?

چند لڑکیاں بہکی قطار میں
ایک کھیت کی کنچن بہار میں

سی کنپٹی پہ پسینے کی دھاریاں
شانے سے بھی ڈھلی ہوئی بےرنگ ساریاں

پہ ساونی وہ ترانے کہ بن ہلے
کا زیر و بم کہ کہیں دل سے دل ملے ۔

کے بول سر میں بھرے سوگ میں رچے
غمزے بھی حسن و عشق کی زد سے بچے بچے

پہ شرم جیسے سنبھالے کسی کا راز
کا خم کہ روح سے نکلی ہوئی نماز

چہرے پہ فکر نان جویں بالاپن کی سوچ
محنت سے سوگوار بدن میں بلا کا لوچ

کی خاک سے مکھڑا اٹا ہوا
در شباب تھا آنچل پھٹا ہوا

آنکھوں میں خواہشات کی مدھم چمک دمک
نس نس میں ایک سہمی ہوئی عمر کی کسک

جوش وحشت خاطر سوا ہوا
چلدیا وہاں سے یہی سوچتا ہوا

کیفیتوں میں حسن کے اتنا ہراس کیوں ؟
قدرت ہری بھری ہے تو فطرت اداس کیوں ؟

फ़लक—आसमान; ख़ुन्क—ठंडी; शादाबियों—हरियाली; ज़ेरोबम—ऊपर नीचे; ग़मज़े—भाव भंगिमा; ख़म—झुकाव; नानजवीं—खाना; दर—दरवाज़ा; शबाब—जवानी; नागाह—यकायक; वहशत—उलझन; कैफ़ियतों—आनन्द; फ़ितरत—प्रकृति;

فلک—آسمان؛ خنک—ٹھنڈی؛ شادابیوں—ہریالی؛ زیر و بم—اوپر نیچے؛ غمزے—بھاؤ بھنگما؛ خم—جھکاؤ؛ نان جویں—کھانا؛ در—دروازہ؛ شباب—جوانی؛ ناگاہ—یکایک؛ وحشت—الجھن؛ کیفیتوں—آنند؛ فطرت—پرکرتی؛

हमारे अन्दर का परमात्मा

(डाक्टर भगवानदास)

दुनिया के सब धर्म इस बात पर ज़ोर देते हैं कि परमात्मा सब के अन्दर है. गीता में लिखा है :—'ऐ अर्जुन, ईश्वर सब प्रानियों के दिल के अन्दर रहते हैं.'' क़ुरान में लिखा है :—'इनसान का दिल रहमान का घर है'' इससे साफ़ नतीजा निकलता है कि सब के अन्दर एक ही नूर है, एक ही जान है, एक ही आत्मा है. किसी भी हालत में अगर हम अपनी अन्तरात्मा यानी अपने अन्दर के उस ख़ुदा से सलाह लेते रहें, रास्ता पूछते रहें और उसी की सलाह पर उसी के बताए रास्ते पर चलते रहें तो हम कभी धोका नहीं खा सकते. कठिनाई यह है कि इनसान के अन्दर की ख़ुदी ख़ुदा की आवाज़ को दबा देने की कोशिश करती रहती है. यही खेंचातानी हर आदमी के अन्दर की खेंचातानी है. कम या ज़ियादा यह हर एक के अन्दर हर समय होती रहती है. आदमी का धर्म है कि हर समय अपनी ख़ुदी को दबाता और ख़ुदा की आवाज़ को उभारता रहे. इसी खेंचातानी को सूफ़ी लोग 'नफ़से रहमानी' और 'नफ़से अम्मारा' के बीच की खेंचातानी कहते हैं. नफ़से रहमानी को वेदान्त में 'ब्रह्म भूत' और नफ़से अम्मारा को 'अहंकार' कहा गया है। इन्हीं को 'शुभवासना' और 'अशुभ वासना' 'एकता' और 'भेद बुद्धि' कहते हैं. इस 'भेद बुद्धि' को ही 'तफ़रक़ा' 'इनफ़िसाल' और 'ग़ैरियत' भी कहते हैं, यानी जुदाई का ख़याल. एकता को अभेद बुद्धि, वहदत, इत्तिसाल और ऐनियत भी कहा जाता है. ग़ैरियत ही स्वार्थ है. एकता, परार्थ और परमार्थ है. इन्हीं दोनों हालतों को ख़ुद ग़रज़ी और बेग़रज़ी दोष और गुन, रज़ायल और फ़ज़ायल नाम भी दिये जाते हैं. अंगरेज़ी में इसी से होते होते एक तरफ़ कम्पिटीटिवनैस यानी प्रतिस्पर्धा और रक़ाबत है और दूसरी तरफ़ कोआपरेटिवनैस यानी सहयोग और मिल कर काम करने की भावना है. एक तरफ़ इनडिवी-जुअलिज़्म यानी अपनी अपनी आपाधापी है और दूसरी तरफ़ अच्छे से अच्छे मानों में सोशलिज़्म और कम्युनिज़्म यानी समाजवाद और साम्यवाद हैं. कम्युनिज़्म यानी साम्यवाद का असली रूप यही है कि हम सब के अन्दर एक आत्मा को देखें. सच्ची मानव एकता इसी से पैदा हो सकती है. इसी से एक दरजे तक आर्थिक यानी माली बराबरी समाज में आ सकती है. यह सारी बात आदमी बराबर सोचने और उस पर अमल करते रहने से ही धीरे धीरे समझता है. दिमाग़ से समझना, दिल से अनुभव

ہمارے اندر کا پرماتما

(ڈاکٹر بھگوان داس)

دنیا کے سب دھرم اس بات پر زور دیتے ہیں کہ پرماتما سب کے اندر ہے. گیتا میں لکھا ہے :—"اے ارجن' ایشور سب پرانیوں کے دل کے اندر رہتے ہیں." قرآن میں لکھا ہے :—"انسان کا دل رحمان کا گھر ہے." اس سے صاف نتیجہ نکلتا ہے کہ سب کے اندر ایک ہی نور ہے' ایک ہی جان ہے' ایک ہی آتما ہے. کسی بھی حالت میں اگر ہم اپنی انتر آتما یعنی اپنے اندر کے اس خدا سے صلاح لیتے رہیں' راستہ پوچھتے رہیں اور' اسی کی صلاح پر اسی کے بتائے راستے پر چلتے رہیں تو ہم کبھی دھوکا نہیں کھا سکتے. کٹھنائی یہ ہے کہ انسان کے اندر کی خودی خدا کی آواز کو دبا دینے کی کوشش کرتی رہتی ہے. یہی کھینچاتانی ہر آدمی کے اندر کی کھینچاتانی ہے. کم یا زیادہ یہ ہر ایک کے اندر ہر سمے ہوتی رہتی ہے. آدمی کا دھرم ہے کہ ہر سمے اپنی خودی کو دباتا اور خدا کی آواز کو ابھارتا رہے. اسی کھینچاتانی کو صوفی لوگ 'نفس رحمانی' اور 'نفس امارا' کے بیچ کی کھینچاتانی کہتے ہیں. نفس رحمانی کو ویدانت میں 'برہم بھوت' اور نفس امارا کو 'اہنکار' کہا گیا ہے. انہیں کو 'شبھ واسنا' اور 'اشبھ واسنا' 'ایکتا' اور 'بھید بدھی' کہتے ہیں. اس 'بھید بدھی' کو ہی 'تفرقہ' 'انفصال' اور 'غیریت' بھی کہتے ہیں' یعنی جدائی کا خیال. ایکتا کو ابھید بدھی' وحدت' اتصال اور عینیت بھی کہا جاتا ہے. غیریت ہی سوارتھ ہے. ایکتا' پرارتھ اور پرمارتھ ہے. انہیں دونوں حالتوں کو خود غرضی اور بےغرضی' دوش اور گن' رذایل اور فضایل نام بھی دیئے جاتے ہیں. انگریزی میں اسی سے ہوتے ہوتے ایک طرف کمپٹیٹونس یعنی پرتی اسپردھا اور رقابت ہے اور دوسری طرف 'کوآپریٹونیس' یعنی سہیوگ اور ملکر کام کرنے کی بھاونا ہے. ایک طرف انڈیویجولازم یعنی اپنی اپنی آپا دھاپی ہے اور دوسری طرف اچھے سے اچھے معنی میں شوشلزم اور کمیونزم یعنی سماج واد اور سامیہ واد ہیں. کمیونزم یعنی سامیہ واد کا اصلی روپ یہی ہے کہ ہم سب کے اندر ایک آتما کو دیکھیں. سچی مانو ایکتا اسی سے پیدا ہوسکتی ہے. اسی سے ایک درجے تک آرتھک یعنی مالی برابری سماج میں آسکتی ہے. یہ ساری بات آدمی برابر سوچنے اور اس پر عمل کرتے رہنے سے ہی دھیرے دھیرے سمجھتا ہے. دماغ سے سمجھنا' دل سے انوبھو

करना और उसी के अनुसार अमल करने की पूरी कोशिश करते रहना यही वह रास्ता है जिससे धीरे धीरे आदमी केवल दिमाग़ी ज्ञान से साक्षात्कार तक यानी शुनीदा से दीदा तक पहुंच जाता है.

चीन के कनफ़ूशियस मत में कहा गया है :—

"जेन" सब नेकियों की बुनियाद है. यही हमदर्दी है, यही दूसरों के साथ अपनी एकता अनुभव करना है, इसी से यह सुनहरा असूल निकला है कि दूसरों के साथ कोई ऐसा सलूक न करो जो तुम नहीं चाहते कि वह तुम्हारे साथ करें. इसी का नाम 'ताओ' है हर आदमी को इस रास्ते पर चलना पड़ता है. दूसरों के साथ अपनी एकता अनुभव करना ही 'ताओ' है और 'ताओ' ही यह एकता है. बिना इसके कोई सुनहरे असूल पर डट कर नहीं चल सकता. दुनिया की सब नेकियां 'जेन' से पैदा होती हैं, जैसे वफ़ादारी, मां बाप और बड़ों का आदर, बहादुरी, ठीक समझ, मुनासिब बरताव, वचन पूरा करना, नेकी और इन साफ़, बर्दाश्त, दया, प्रेम और परोपकार. दुनिया में नैतिक उसूल दो ही हैं—एक हमदर्दी यानी सब का भला चेतना और दूसरा इसके ख़िलाफ़ ख़ुद ग़रज़ी यानी अहंकार. हमदर्दी ही 'जेन' है. यही असली मनुष्य है. इसी से प्रेम पैदा होता है. इसी से सच्ची ख़ुशहाली, दयालुता, उदारता, रवादारी, सच्चाई और आत्म त्याग जनम लेते हैं. जब आदमी अपने दिल की ऊंची आवाज़ पर चलता है लेकिन कभी इनसाफ़ या एतदाल से इधर उधर नहीं जाता तब वह अपने अन्दर एक सच्चा तवाज़ुन, एक सच्चा समता पैदा करता है. तब वह ख़ुद 'जेन' हो जाता है. तब उसे 'संग जेन' कहने लगते हैं जिसका अर्थ है 'पाक आदमी' या 'साधू'. तब वह इहनी आज़ादी और बे गुनाही के साथ चलने फिरने लगता है जिस तरह कल का पैदा हुआ बच्चा. फिर वह जो कुछ करता है वह कभी 'चुंगताओ' यानी मध्यम मार्ग से नहीं भटकता."

ऊपर के वाक्यों में वही बात कही गई है जो वेदान्त और तसव्वुफ़ में कही गई है. 'ताओ' ही असली दीन और धर्म है, और 'संग जेन' का वही मतलब है जो 'ब्रह्म भूत' या 'जीवन मुक्त, या 'इनसाने कामिल' का है.

सूफ़ी कहता है :—

"नेस्त अन्दर जुब्बः अम ग़ैर अज़ ख़ुदा"

यानी मेरे चोग़े के अन्दर सिवाय ख़ुदा के और कोई है ही नहीं.

उपनिषद में लिखा है :—

"ब्रह्म वेद ब्रह्म व भवति
तद ब्रह्मास्मि अह्म अद्वयम्"

اسی کے انوسار عمل کرنے کی پوری کوشش کرتے رہنا یہی وہ راستہ ہے جس سے دھیرے دھیرے آدمی دماغی گیان سے ساکشاتکار تک یعنی شنیدہ سے دیدہ تک پہنچ جاتا ہے۔

چین کے کنفیوشس مت میں کہا گیا ہے :—

"جین' سب نیکیوں کی بنیاد ہے۔ یہی ہمدردی ہے' یہی دوسروں کے ساتھ اپنی ایکتا انوبھو کرنا ہے' اسی سے یہ سنہرا اصول نکلا ہے کہ دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا سلوک نہ کرو جو تم نہیں چاہتے کہ وہ تمہارے ساتھ کریں۔ اسی کا نام 'تاؤ' ہے۔ ہر آدمی کو اس راستے پر چلنا پڑتا ہے۔ دوسروں کے ساتھ اپنی ایکتا انوبھو کرنا ہی 'تاؤ' ہے اور 'تاؤ' ہی یہ ایکتا ہے۔ بنا اس کے کوئی سنہرے اصول پر ڈٹ کر نہیں چل سکتا۔ دنیا کی سب نیکیاں 'جین' سے پیدا ہوتی ہیں، جیسے وفاداری، ماں باپ اور بڑوں کا آدر، بہادری، ٹھیک سمجھ، مناسب برتاؤ، بچن پورا کرنا، نیکی اور انصاف، برداشت، دیا، پریم اور پروپکار۔ دنیا میں نیتک اصول دو ہی ہیں—ایک ہمدردی یعنی سب کا بھلا چیتنا اور دوسرا اس کے خلاف خود غرضی یعنی اہنکار۔ ہمدردی ہی 'جین' ہے۔ یہی اصلی منش ہے۔ اسی سے پریم پیدا ہوتا ہے۔ اسی سے سچی خوشحالی، دیالوتا، ادارتا، رواداری، سچائی اور آتم تیاگ جنم لیتے ہیں۔ جب آدمی اپنے دل کی اونچی آواز پر چلتا ہے لیکن کبھی انصاف یا اعتدال سے ادھر ادھر نہیں جاتا تب وہ اپنے اندر ایک سچا توازن، ایک سچی سمتا پیدا کرتا ہے۔ تب وہ خود 'جین' ہو جاتا ہے۔ تب اسے 'سنگ جین' کہنے لگتے ہیں جس کا ارتھ ہے 'پاک آدمی' یا 'سادھو'۔ تب وہ اپنی آزادی اور بے گناہی کے ساتھ چلنے پھرنے لگتا ہے جس طرح کل کا پیدا ہوا بچہ۔ پھر وہ جو کچھ کرتا ہے وہ کبھی 'چنگ تاؤ' یعنی مدھیم مارگ سے نہیں بھٹکتا۔"

اوپر کے واکیوں میں وہی بات کہی گئی ہے جو ویدانت اور تصوف میں کہی گئی ہے۔ تاؤ ہی اصلی دین اور دھرم ہے' اور 'سنگ جین' کا وہی مطلب ہے جو 'برہم بھوت' یا 'جیون مکت یا 'انسان کامل' کا ہے۔

صوفی کہتا ہے :—

"نیست اندر جبہ ام غیر از خدا۔"

یعنی میرے چغے کے اندر سوائے خدا کے اور کوئی ہے ہی نہیں۔

اپنشد میں لکھا ہے :—

"برہم وید برہمو بھوتی
تد برہماسمی اہم ادویم"

यानी ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है, वही ब्रह्म मैं हूं, कोई ग़ैर है ही नहीं.

सूफ़ी ने कहा :—

"आरिफ़ो मारूफ़ बमानी यकस्त
आंकि ख़ुदारा बेशनासद ख़ुदास्त"

यानी जानने वाला और जो जाना जाय दोनों एक ही हैं, जिस किसी ने ख़ुदा को पहचान लिया वह ख़ुदा है.

पुरानों में लिखा है कि "अपनी बुरी वासनाओं के कांटे को अच्छी वासनाओं के कांटों से निकाल कर बाहर फेंक देना चाहिये और फिर उस अच्छी वासनाओं वाले हाथ के कांटे को भी फेंक देना चाहिये. आदमी मामूली जिन्दगी में भी जब एक कांटे से अपने पैर के कांटे को निकाल कर फेंक देता है तो फिर उस हाथ के कांटे को भी अपने से उतनी ही दूर फेंक देता है."

इसी खयाल को सूफ़ी ने बड़ी अच्छी तरह ज़ाहिर किया है. वह कहता है :—

"सर बिरहना नेस्तम, दारम कुलाहे चार तर्क
तर्के दुनिया, तर्के उक़बा, तर्के मौला, तर्के तर्क"

यानी मेरा सिर नंगा नहीं है, चार तरह के त्याग की टोपी मेरे सिर पर है—पहले उस दुनिया के लिये इस दुनिया का त्याग, फिर मौला यानी अल्लाह के लिये उस दुनिया का त्याग, फिर त्याग के लिये मौला का भी त्याग यानी कोई ग़ैर रहे ही न और फिर आखिर में इस त्याग का भी त्याग.

महाभारत में लिखा है :—

"अधर्म से अपने लगाव को हटा कर अधर्म को छोड़ देना चाहिये. उसके बाद अपने संकल्प यानी इच्छा मात्र को मिटा कर धर्म को भी छोड़ देना चाहिये. इसी तरह अपनी बुद्धि को चमका कर सच और झूट दोनों को छोड़ देना चाहिये और जब भगवान का निश्चय हो जावे तो बुद्धि को भी छोड़ देना चाहिये. इन सब से ऊपर उठ कर जिस त्याग भावना से इन सब को त्यागा है उसको भी दूर फेंक देना चाहिये."

जब आदमी इस हालत को पहुंच जाता है तब उसके लिये बन्धन और मोक्ष, सुख और दुख, पाप और पुन्य कोई चीज़ नहीं रह जाती. उपनिषदों ने इस हालत को तरह तरह से बयान किया है. यही असली मुक्ति यानी निजात है. सूफ़ियों ने भी इसे इसी तरह के शब्दों में बयान किया है. एक सूफ़ी का यह कहना बड़े महत्व का है :—

"जब तक नफ़्स यानी मन रूह यानी आत्मा के क़ाबू में नहीं होगी तब तक आदमी का ज़ख़मी दिल न अच्छा हो सकता है और न आराम पा सकता है."

یعنی برہم کو جاننے والا برہم ہی ہو جاتا ہے' وہی برہم میں ہوں' کوئی غیر ہے ہی نہیں۔

صوفی نے کہا ہے:—

"عارفو معاروف بامعنی یک است
آنکہ خدا را بہ شناسد خدا ست"

یعنی جاننے والا اور جو جانا جائے دونوں ایک ہی ہیں' جس کسی نے خدا کو پہچان لیا وہ خدا ہے۔

پرانوں میں لکھا ہے کہ "اپنی بری واسناؤں کے کانٹے کو اچھی واسناؤں کے کانٹوں سے نکال کر باہر پھینک دینا چاہئے اور پھر اس اچھی واسناؤں والے ہاتھ کے کانٹے کو بھی پھینک دینا چاہئے." آدمی معمولی زندگی میں بھی جب ایک کانٹے سے اپنے پیر کے کانٹے کو نکال کر پھینک دیتا ہے تو پھر اس ہاتھ کے کانٹے کو بھی اپنے سے اتنی دور پھینک دیتا ہے۔

اسی خیال کو صوفی نے بڑی اچھی طرح ظاہر کیا ہے. وہ کہتا ہے:—

"سربرہنہ نیستم' دارم کلاہ چار ترک
ترک دنیا' ترک عقبیٰ' ترک مولا' ترک ترک"

یعنی میرا سر ننگا نہیں ہے' چار طرح کے تیاگ کی ٹوپی میرے سر پر ہے—پہلے اس دنیا کے لئے اس دنیا کا تیاگ' پھر مولا یعنی اللہ کے لئے اس دنیا کا تیاگ' پھر تیاگ کے لئے مولا کا بھی تیاگ یعنی کوئی غیر رہے ہی نہ اور پھر آخر میں اس تیاگ کا بھی تیاگ۔

مہابھارت میں لکھا ہے:—

"ادھرم سے اپنے لگاؤ کو ہٹا کر ادھرم کو چھوڑ دینا چاہئے. اس کے بعد اپنے سنکلپ یعنی اچھا ماتر کو مٹا کر دھرم کو بھی چھوڑ دینا چاہئے. اسی طرح اپنی بدھی کو چمکا کر سچ اور جھوٹ دونوں کو چھوڑ دینا چاہئے اور جب بھگوان کا نشچے ہو جائے تو بدھی کو بھی چھوڑ دینا چاہئے. ان سب سے اوپر اٹھ کر جس تیاگ بھاونا سے ان سب کو تیاگا ہے اس کو بھی دور پھینک دینا چاہئے."

جب آدمی اس حالت کو پہنچ جاتا ہے تب اس کے لئے بندھن اور موکش' سکھ اور دکھ' پاپ اور پن کوئی چیز نہیں رہ جاتی. اپنشدوں نے اس حالت کو طرح طرح سے بیان کیا ہے. یہی اصلی مکتی یعنی نجات ہے. صوفیوں نے بھی اسے اسی طرح کے شبدوں میں بیان کیا ہے. ایک صوفی کا یہ کہنا بڑے مہتو کا ہے:—

"جب تک نفس یعنی من روح یعنی آتما کے قابو میں نہیں ہوگی تب تک آدمی کا زخمی دل نہ اچھا ہو سکتا ہے اور نہ آرام پا سکتا ہے."

एक ईसाई महात्मा ने इसे और भी अच्छी तरह यूं कहा है :—

"बैथलेहम (वह शहर जहां हज़रत ईसा पैदा हुए थे) में ईसा अगर हज़ार बार भी पैदा हों लेकिन तुम्हारे अपने अन्दर उनका जन्म न हो तो तुम्हारी आत्मा सूनी की सूनी ही रहेगी. तुम 'गालगोथा' (हज़रत ईसा के सूली चढ़ने की जगह) में क्रास को फ़ज़ूल ढूंढते फिरते हो. क्रास गाड़ना है तो अपने अन्दर गाड़ो."

एक और सूफ़ी ने हज़रत नूह से नक़्ल किया है :—

'ऐ अविश्वासी लोगो! अब मैं मैं नहीं हूं. मैं अपनी छोटी जान से मर चुका. अब मैं अपने प्रीतम, सब जानों की जान से ज़िन्दा हूं. अब मेरे अन्दर सारे इनसानी हवास यानी इन्द्रियां जो मुझे दूसरों से अलग करती थीं मर गईं तो हक़ यानी सत्य यानी ईश्वर मेरे अन्दर रहने लगा और वह ही मेरे लिये मेरी आंख, कान और मेरी समझ बन गया. जब मैं मैं नहीं हूँ इसलिये मेरी ज़िन्दगी अब उसी हक़ से है. इस से पहले जो कुछ मेरे अन्दर जी रहा था वह काफ़िर यानी अविश्वासी मैं था. वह अब ख़तम हो चुका."

महात्मा बुद्ध जिनका पहला नाम गौतम था कहा करते थे कि "मेरे अन्दर का गौतम मर चुका, जो मुझे वही गौतम समझते हैं वह अविश्वासी हैं. जिन्हें विश्वास है वह मुझे अब बुद्ध जानते हैं. इस जीवन के अन्दर मैं निर्वान प्राप्त कर चुका."

इंजील में बार बार आता है :—

"जो कोई अपनी ज़िन्दगी को बचा कर रखेगा वह ज़िन्दगी खो देगा, और जो कोई ईश्वर के लिये यानी प्रानीमात्र के लिये अपनी ज़िन्दगी को मिटा देगा वह ज़िन्दगी हासिल कर लेगा."

"जो कोई इस ज़िन्दगी से प्यार करता है वह ज़िन्दगी खो देगा और जो इस दुनिया की ज़िन्दगी से नफ़रत करता है वह अनन्त ज़िन्दगी हासिल कर लेगा."

कबीर साहब ने कहा है :—

सिर राखे सिर जात है
सिर काटे सिर होए
जैसे बाती दीप की
कटि उजियारा होए
सीस उतारे भुईं धरे
ता पर राखै पांव
दास कबीरा यों कहे
ऐसा होए तो आओ

ایک عیسائی مہاتما نے اسے اور بھی اچھی طرح یوں کہا ہے :—

"بیتھلہم (وہ شہر جہاں حضرت عیسیٰ پیدا ہوئے تھے) میں عیسیٰ اگر ہزار بار بھی پیدا ہوں لیکن تمہارے اپنے اندر ان کا جنم نہ ہو تو تمہاری آتما سونی کی سونی ہی رہے گی. تم 'گالگوتھا' (حضرت عیسیٰ کے سولی چڑھنے کی جگہ) میں کراس کو فضول ڈھونڈتے پھرتے ہو. کراس گاڑنا ہے تو اپنے اندر گاڑو."

ایک اور صوفی نے حضرت نوح سے نقل کیا ہے :—

'اے اوشواسی لوگو! اب میں میں نہیں ہوں. میں اپنی چھوٹی جان سے مر چکا. اب میں اپنے پریتم، سب جانوں کی جان سے زندہ ہوں. اب میرے اندر سارے انسانی حواس یعنی اندریاں جو مجھے دوسروں سے الگ کرتی تھیں مر گئیں تو حق یعنی ستیہ یعنی ایشور میرے اندر رہنے لگا اور وہی میرے لئے میری آنکھ، کان اور میری سمجھ بن گیا. جب میں میں نہیں ہوں اس لئے میری زندگی اب اسی حق سے ہے. اس سے پہلے جو کچھ میرے اندر جی رہا تھا وہ کافر یعنی اوشواسی میں تھا. وہ اب ختم ہو چکا."

مہاتما بدھ جن کا پہلا نام گوتم تھا کہا کرتے تھے کہ "میرے اندر کا گوتم مر چکا، جو مجھے وہی گوتم سمجھتے ہیں وہ اوشواسی ہیں. جنہیں وشواس ہے وہ مجھے اب بدھ جانتے ہیں. اس جیون کے اندر میں نروان پراپت کر چکا."

انجیل میں بار بار آتا ہے :—

"جو کوئی اپنی زندگی کو بچا کر رکھے گا وہ زندگی کھو دے گا اور جو کوئی ایشور کے لئے یعنی پرانی ماتر کے لئے اپنی زندگی کو مٹا دے گا وہ زندگی حاصل کر لے گا."

"جو کوئی اس زندگی سے پیار کرتا ہے وہ زندگی کھو دے گا اور جو اس دنیا کی زندگی سے نفرت کرتا ہے وہ اننت زندگی حاصل کر لے گا."

کبیر صاحب نے کہا ہے :—

سر راکھے سر جات ہے
سر کاٹے سر ہوئے
جیسے باتی دیپ کی
کٹی اجیارا ہوئے
سیس اتارے بھوئیں دھرے
تا پر راکھے پاؤں
داس کبیرا یوں کہے
ایسا ہوئے تو آؤ

कबीर साहब के इस पद में भी ख़ुदी, अहंकार यानी अपने इस अलग आप को ही वह सिर कहा गया है जिसे काटने या उतार देने की ज़रूरत है.

हज़रत ईसा ने कहा है :—

"क्या तुम इस बात पर विश्वास नहीं करते कि मैं अपने पिता ईश्वर के अन्दर हूं और मेरा पिता ईश्वर मेरे अन्दर है ? जो शब्द मैं तुम से कहता हूं वह मैं अपने आप नहीं कहता, बल्कि वह पिता जो मेरे अन्दर रहता है वही सब कुछ कहता रहता है."

सन्ट पाल ने कहा है :—

"मैं ज़िन्दा हूं लेकिन मैं मैं नहीं हूं बल्कि मेरे अन्दर ईसा ज़िन्दा हैं."

इन्हीं मानों में एक सूफ़ी ने कहा है :—

"अगरचे क़ुरान पैग़म्बर मोहम्मद के होंटों से निकला फिर भी जो कोई यह कहे कि यह अल्लाह ने नहीं कहा वह काफ़िर यानी अविश्वासी है."

गीता में लिखा है कि "ईश्वर ही सब प्रानियों के दिल के अन्दर बैठा हुआ अपनी माया से सब को इस तरह चला रहा है जिस तरह कुम्हार अपने चाक पर चढ़े हुए बरतनों को घुमाता है"

उपनिषदों में यह बात बहुत अच्छी तरह तफ़सील से बयान की गई है. जो आत्मा या रूह सबके साथ प्रेम में डूब कर सबकी अन्तरात्मा यानी ईश्वर के लिये अपने अन्दर के पटों को खोल देती है ईश्वर उसके अन्दर भर जाता है और फूल की तरह खिल पड़ता है. ईश्वर और ईश्वर का प्रेमी दोनों एक हैं.

गीता में लिखा है :—

"जो कोई भक्ति के साथ मेरा भजन करते हैं वह मुझमें रहते हैं और मैं उनमें रहता हूं."

भागवत में ईश्वर ने अपने को 'दासों का दास, यानी अपने सेवकों का सेवक कहा है.

मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"अल्लाह कहता है कि जो कोई एक बालिश्त मेरी तरफ़ बढ़ता है मैं एक हाथ उसकी तरफ़ बढ़ता हूं."

गीता में लिखा है :—

"जो कोई सबके अन्दर मुझे देखता है और सबको मेरे अन्दर देखता है वह न फिर कभी मुझे खो सकता है और न मैं उसे खो सकता हूं."

इश्क़ यानी प्रेम का मतलब ही मिलन है. यही भक्त यानी इबादत का मक़सद है. जीव का ईश्वर में मिल जाना रूह का रूह-उल-अरवाह में मिल जाना यही निजात यानी मोक्ष है.

کبیر صاحب کے اِس پد میں بھی خودی' اہنکار یعنی اپنے اس الگ آپ کو ہی وہ سر کہا گیا ہے جسے کاٹنے یا اتار دینے کی ضرورت ہے .

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—

" کیا تم اس بات پر وشواس نہیں کرتے کہ میں اپنے پتا ایشور کے اندر ہوں اور میرا پتا ایشور میرے اندر ہے؟ جو شبد میں تم سے کہتا ہوں وہ میں اپنے آپ نہیں کہتا' بلکہ وہ پتا جو میرے اندر رہتا ہے وہی سب کچھ کہتا رہتا ہے ."

سینٹ پال نے کہا ہے :—

" میں زندہ ہوں لیکن میں میں نہیں ہوں بلکہ میرے اندر عیسیٰ زندہ ہیں ."

انہیں معنی میں ایک صوفی نے کہا ہے :—

" اگرچہ قرآن پیغمبر محمد کے ہونٹوں سے نکلا پھر بھی جو کوئی یہ کہے کہ یہ اللہ نے نہیں کہا وہ کافر یعنی اوشواسی ہے ."

گیتا میں لکھا ہے کہ " ایشور ہی پرانیوں کے دل کے اندر بیٹھا ہوا اپنی مایا سے سب کو اس طرح چلا رہا ہے جس طرح کمہار اپنے چاک پر چڑھے ہوئے برتنوں کو گھماتا ہے ."

اپنشدوں نے یہ بات بہت اچھی طرح تفصیل سے بیان کی گئی ہے . جو آتما یا روح سب کے ساتھ پریم میں ڈوب کر سب کی انتر آتما یعنی ایشور کے لئے اپنے اندر کے پٹوں کو کھول دیتی ہے ایشور اس کے اندر بھر جاتا ہے اور پھول کی طرح کھل پڑتا ہے . ایشور اور ایشور کا پریمی دونوں ایک ہیں .

گیتا میں لکھا ہے :—

" جو کوئی بھکتی کے ساتھ میرا بھجن کرتے ہیں وہ مجھ میں رہتے ہیں اور میں ان میں رہتا ہوں ."

بھاگوت میں ایشور نے اپنے کو داسوں کا داس' یعنی اپنے سیوکوں کا سیوک کہا ہے .

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

" اللہ کہتا ہے کہ جو کوئی ایک بالشت میری طرف بڑھتا ہے میں ایک ہاتھ اس کی طرف بڑھتا ہوں ."

گیتا میں لکھا ہے :

" جو کوئی سب کے اندر مجھے دیکھتا ہے اور سب کو میرے اندر دیکھتا ہے وہ نہ پھر کبھی مجھے کھو سکتا ہے اور نہ میں اسے کھو سکتا ہوں ."

عشق یعنی پریم کا مطلب ہی ملن ہے . یہی بھگتی یعنی عبادت کا مقصد ہے . جیو کا ایشور میں مل جانا روح کا روح الارواح میں مل جانا یہی نجات یعنی موکش ہے .

संस्कृत शब्द नमः या नमस्कार के मानी होते हैं "मैं नहीं." वेद की बहुत सी प्रार्थनाओं के आखिर में आता है 'न मम' यानी 'मेरा नहीं.' ईश्वर के सामने झुकने सिजदा करने या सलाम करने के भी यही मानी हैं,—'तेरी मरज़ी हो मेरी नहीं.'

आदमी जो सोचता है वही हो जाता है, जिससे प्यार करता है वही बन जाता है. जो मिट्टी से प्यार करता है मिट्टी बन जाता है. जो ईश्वर से प्यार करता है ईश्वर बन जाता है.

सूफ़ी कहता है :—

"जिस चीज़ की भी तू दिल से ख़ाहिश करता है वही तू हो जाता है. तेरे दिल में अगर गुलाब बसा होगा तो तू गुलाब हो जायगा और अगर बुलबुल बसा होगा तो तू बुलबुल हो जायगा. तू जुज़्व याना हिस्सा है. ईश्वर कुल है. अगर तू कुछ रोज़ कुल का ख़याल अपने सामने रखे तो तू कुल हो जायगा."

गीता में भी कहा गया है कि :—"जिसकी जैसी श्रद्धा होती है वैसा ही वह ख़ुद हो जाता है."

इसीलिये हर धर्म वाले इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मरते समय आदमी के सामने आख़ीर वक़्त में सिवाय सत्य यानी ईश्वर के ख़याल के और कुछ नहीं होना चाहिये. वेद और क़ुरान का पढ़ना तक उस समय मना किया जाता है. इसीलिये बच्चों को सुलाते समय उन्हें अच्छी अच्छी प्यारी बातों की लोरियां दी जाती हैं. बड़े लोगों को भी सोते वक़्त इसका ध्यान रखना चाहिये. उस समय मन शान्त और सन्तुष्ट रहना चाहिये.

मरते हुए आदमी के सामने हमेशा बहुत धीरे से बोलना चाहिये. ज़ाहिरा तौर पर जान निकल जाने के बाद भी कभी कभी मस्तिष्क काम करता रहता है. सिनेमा की सी तसवीरें अधिकतर पिछली ज़िन्दगी की दिमाग़ के सामने से निकलती रहती हैं. कभी कभी मरने वाला अपनी सारी ज़िन्दगी दोहरा जाता है. उस समय कमरे में सिवाए शान्ति, सन्तोश और सकून के और कोई चीज़ नहीं होनी चाहिये ताकि आगे की मंज़िलें तय करने में रूह को रुकावट न हो.

सूफ़ी ने कहा है :—

"ख़ासाने ख़ुदा यानी ईश्वर के सच्चे भक्त ख़ुदा नहीं होते, लेकिन ख़ुदा से जुदा भी नहीं होते."

इसके बाद दरजे और मंज़िलें हैं. योग शास्त्र में जिन्हें सिद्ध कहा है, वेदान्त में उन्हें ऋषि कहा जाता है. सूफ़ी उन्हें कामिल और अकमल कहते हैं. बौद्ध उन्हें चोहन, ध्यान चोहन, बोधिसत्व और बुद्ध कहते हैं. जैनी उन्हें अरहत,

سنسکرت شبد نمہ یا نمسکار کے معنی ہوتے ہیں "میں نہیں." وید کی بہت سی پرارتھناؤں کے آخر میں آتا ہے 'ن مم' یعنی 'میرا نہیں.' ایشور کے سامنے جھکنے سجدہ کرنے یا سلام کرنے کے بھی یہی معنی ہیں'—' تیری مرضی ہو میری نہیں.'

آدمی جو سوچتا ہے وہی ہو جاتا ہے' جس سے پیار کرتا ہے وہی بن جاتا ہے. جو مٹی سے پیار کرتا ہے مٹی بن جاتا ہے. جو ایشور سے پیار کرتا ہے ایشور بن جاتا ہے.

صوفی کہتا ہے :—

"جس چیز کی بھی تو دل سے خواہش کرتا ہے وہی تو ہو جاتا ہے. تیرے دل میں اگر گلاب بسا ہوگا تو تو گلاب ہو جائے گا اور اگر بلبل بسا ہوگا تو تو بلبل ہو جائے گا. تو جز یعنی حصہ ہے. ایشور کل ہے. اگر تو کچھ روز کل کا خیال اپنے سامنے رکھے تو تو کل ہو جائے گا"

گیتا میں بھی کہا گیا ہے کہ—' جسکی جیسی شردھا ہوتی ہے ویسا ہی وہ خود ہو جاتا ہے."

اسی لئے ہر دھرم والے اس بات پر زور دیتے ہیں کہ مرتے سمے آدمی کے سامنے آخیر وقت میں سوائے ستیہ یعنی ایشور کے خیال کے اور کچھ نہیں ہونا چاہئے. وید اور قرآن کا پڑھنا تک اس سمے منع کیا جاتا ہے. اسی لئے بچوں کو سلاتے سمے انہیں اچھی اچھی پیاری باتوں کی لوریاں دی جاتی ہیں. بڑے لوگوں کو بھی سوتے وقت اس کا دھیان رکھنا چاہئے. اس سمے من شانت اور سنتشٹ رہنا چاہئے.

مرتے ہوئے آدمی کے سامنے ہمیشہ بہت دھیرے سے بولنا چاہئے. ظاہرا طور پر جان نکل جانے کے بعد بھی کبھی کبھی مستشک کام کرتا رہتا ہے. سنیما کی سی تصویریں ادھک تر پچھلی زندگی کی دماغ کے سامنے سے نکلتی رہتی ہیں. کبھی کبھی مرنے والا اپنی ساری زندگی دہرا جاتا ہے. اس سمے کمرے میں سوائے شانتی سنتوش اور سکون کے اور کوئی چیز نہیں ہونی چاہئے تاکہ آگے کی منزلیں طے کرنے میں روح کو رکاوٹ نہ ہو.

صوفی نے کہا ہے :—

"خاصانِ خدا یعنی ایشور کے سچے بھگت خدا نہیں ہوتے' لیکن خدا سے جدا بھی نہیں ہوتے."

اس کے بعد درجے اور منزلیں ہیں. یوگ شاستر میں جنہیں سدھ کہا ہے' ویدانت میں انہیں رشی کہا جاتا ہے. صوفی انہیں کامل اور اکمل کہتے ہیں. بودھ انہیں چوہن' دھیان چوہن' بودھی ستو اور بدھ کہتے ہیں. جینی انہیں ارہت'

सिद्ध, मुनि और तीर्थंकर कहते हैं. इसी तरह के नाम ईसाइयों में भी हैं. यह सब वह मंज़िलें हैं जहां पहुंच कर हमारी इस धरती के मज़हबों का कोई फ़रक़ नहीं रह जाता. वहां हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिख, बौद्ध और जैन सब एक राह के राही दिखाई देते हैं. हमारे यहां के फ़रक़ फिर उन्हें गुज़रे हुए बचपन के खेल मालूम होते हैं.

चीन में

(कुमारी चक्रेश जैन)

जब मैं चीन पहुंची तो मुझे चीनी भाशा नहीं आती थी और चीन में चीनी जाने बग़ैर रहना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि वहां अंगरेज़ी से काम नहीं चलता, सब काम चीनी में होते हैं.

एक दिन मैं बाज़ार गई. दूकान पर मैंने बहुत सी शीशियां देखीं. एक में कुछ लाल रंग की चीज़ रखी हुई थी. मैंने इशारे से दूकानदार से पूछा कि इसमें क्या है. दूकानदार ने "फ़ंग मी" कहा. मैं कुछ समझ नहीं पाई और अपने सवाल को दुहराया. उससे फिर वही जवाब मिला. मैंने तीसरी बार प्रश्न किया. अब की बार उसने अपनी जीभ पर उंगली रखी, फिर अपने दोनों हाथ दोनों कंधों पर रखकर उड़ने का जतन करने लगा. मुझे बड़ी हंसी आई और समझ गई कि उसका मतलब मधुमक्खी से है. साथ ही अब समझ में आया की "फ़ंग मी" का मतलब शहद होता है. वह हंसने लगा और मैं शहद खरीद कर चली आई.

जब भी हम पीकिंग में बाहर घूमने या कुछ ख़रीदने जाते तो पचास साठ चीनी बच्चे, बूढ़े, औरतें हमारे पीछे पीछे चलने लगते. चीनी लोग हिन्दुस्तानियों को बहुत प्यार करते हैं. वह भोलेपन से हमारी तरफ़ देखते और प्रश्नों की झड़ी लगा देते–तुम किस देश के रहने वाले हो? क्या खाते हो? तुम्हारे देश में बर्फ़ पड़ता है? तुम्हारे देश में बहुत गरमी होती है? (दुपट्टे को छू कर) यह क्या है? किस काम में आता है? तुम्हारे माथे पर यह लाल लाल क्या है? तुमने माथे से ख़ून क्यों निकाला है? वग़ैरह वग़ैरह. बस, ट्राम, गाड़ी जहां कहीं भी हम जाते, हमसे वह कुछ न कुछ ज़रूर पूछते.

سدھ، منی اور تیرتھنکر کہتے ہیں۔ اسی طرح کے نام عیسائیوں میں بھی ہیں۔ یہ سب وہ منزلیں ہیں جہاں پہونچ کر ہماری اس دھرتی کے مذہبوں کا کوئی فرق نہیں رہ جاتا۔ وہاں ہندو، مسلمان، عیسائی، پارسی، سکھ، بودھ اور جین سب ایک راہ کے راہی دکھائی دیتے ہیں۔ ہمارے یہاں کے فرق پھر انہیں گذرے ہوئے بچپن کے کھیل معلوم ہونے لگتے ہیں۔

چین میں

(کماری چکریش جین)

جب میں چین پہنچی تو مجھے چینی بھاشا نہیں آتی تھی اور چین میں چینی جانے بغیر رہنا بڑا مشکل ہے، کیونکہ وہاں انگریزی سے کام نہیں چلتا، سب کام چینی میں ہوتے ہیں۔

ایک دن میں بازار گئی۔ دوکان پر میں نے بہت سی شیشیاں دیکھیں۔ ایک میں کچھ رنگ کی چیز رکھی ہوئی تھی۔ میں نے اشارے سے دوکاندار سے پوچھا کہ اس میں کیا ہے۔ دوکاندار نے "فنگ می" کہا۔ میں کچھ نہیں سمجھ پائی اور اپنے سوال کو دہرایا۔ اس سے پھر وہی جواب ملا۔ میں نے تیسری بار پرشن کیا۔ اب کی بار اس نے اپنی جیبھ پر انگلی رکھی، پھر اپنے دونوں ہاتھ دونوں کندھوں پر رکھکر اڑنے کا جتن کرنے لگا۔ مجھے بڑی ہنسی آئی اور سمجھ گئی کہ اس کا مطلب مدھو مکھی سے ہے۔ ساتھ ہی اب سمجھ میں آیا کہ "فنگ می" کا مطلب شہد ہوتا ہے۔ وہ ہنسنے لگا، اور میں شہد خرید کر چلی آئی۔

جب بھی ہم پیکنگ میں باہر گھومنے یا کچھ خریدنے جاتے تو پچاس ساٹھ چینی بچے، بوڑھے، عورتیں ہمارے پیچھے پیچھے چلنے لگتے۔ چینی لوگ ہندستانیوں کو بہت پیار کرتے ہیں۔ وہ بھولےپن سے ہماری طرف دیکھتے اور پرشنوں کی جھڑی لگا دیتے–"تم کس دیش کے رہنے والے ہو؟ تم کیا کھاتے ہو؟ تمہارے دیش میں برف پڑتا ہے؟ "تمہارے دیش میں بہت گرمی ہوتی ہے؟ (دوپٹے کو چھوکر) یہ کیا ہے؟ کس کام میں آتا ہے؟ تمہارے ماتھے پر یہ لال لال کیا ہے؟ تم نے ماتھے سے خون کیوں نکالا ہے؟ وغیرہ وغیرہ۔ بس، ٹرام، گاڑی جہاں کہیں بھی ہم جاتے، ہم سے وہ کچھ نہ کچھ ضرور پوچھتے۔

एक दिन मैं कुछ चीनी बच्चों के साथ बात कर रही थी. उन में से एक ने कहा कि हम तुम्हारे देश का नाच देखना चाहते हैं. मैंने उन्हें एक मनीपुरी नाच दिखाया. वे बड़े .खुश हुए और मुझे दोनों हाथों के अंगूठे दिखाने लगे. मैं चक्कर में पड़ गई और सोचने लगी कि यह लोग अंगूठे क्यों दिखा रहे हैं, शायद मेरे नाच की वजह से चिढ़ाते हैं. बाद में एक चीनी लड़के से मैंने इसका मतलब पूछा. उसने मुझे बताया—"जब हम लोगों को कोई चीज़ बहुत पसंद आती है तो हम अपनी खुशी अंगूठे दिखा कर प्रकट करते हैं."

इसके बाद उन्होंने अपना चीनी नाच दिखाया. मुझे बहुत पसंद आया और मैंने भी दोनों हाथों के अंगूठे दिखाये और कहा "हाओ, हाओ" (अच्छा है, अच्छा है)

जब हम पहले पहल केन्टन (चीन) पहुंचे तो हमें, चापइस्टीकें खाना खाने की दो गोल पतली तीलियां का उपयोग नहीं आता था. हम केन्टन स्टेशन पर उतरे बड़ी भूख लग रही थी. हम चीनी भाशा नहीं जानते थे. खाना कैसे मांगें यह समस्या थी. किसी तरह मैंने होटल वाले से "छुशु" (शाकाहारी भोजन) कह दिया. वह समझ गया और दो बड़े बड़े बेलों में चावल और सब्ज़ी और साथ में दो जोड़ी "चापइस्टिक" उसने ला कर हमारे सामने रख दिया. पिता जी और मैं बड़े सोच में पड़ गये. चम्मच थी नहीं, इन तीलियों से खाना कैसे खाते? धीरे धीरे हिम्मत कर के हमने चापस्टिक उठा लीं. बड़ी मुसीबत हुई, हमसे वह संभलती ही न थीं. मुश्किल से उन्हें संभाला, उंगलियों के बीच दबाया और खाना खाने लगे. इतने में बहुत से चीनी बच्चे इकट्ठे हो गये और हमारी तरफ़ देख कर हंसने लगे. हमने दूसरे चीनियों की ओर देखा और हंसी की वजह पूछी. मालूम हुआ की हमने तीलियां उलटी पकड़ रखी हैं.

पीकिंग में हमने कभी मार पीट नहीं देखी और न गाली गलौच ही सुनी. वहां के लोग अपने आपसी झगड़ों को वाद विवाद करके निपटा लेते हैं. यदि दो साइकिलों में टक्कर लग जाय तो पुलिस साइकिल वालों के पास आयेगी और उन्हें समझायेगी—"ध्यान से साइकिल चलाओ, नहीं तो टक्कर लग जायगी, चोट लगेगी और नुक़सान होगा." पुलिस वाले काफ़ी देर तक समझाते बुझाते रहेंगे. दोनों अपनी ग़लतियां समझ लेंगे और फिर अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए साइकिल पर चल देंगे. रात के समय किसी की साईकल में बत्ती या घंटी न हुई तो पुलिस उन्हें थाने नहीं ले जाती न घूस लेती है, न रोब जमाती है बल्कि ग़लती बता कर समझाती बुझाती है!

ایک دن میں کچھ چینی بچوں کے ساتھ بات کر رہی تھی۔ ان میں سے ایک نے کہا کہ ہم تمہارے دیش کا ناچ دیکھنا چاہتے ہیں۔ میں نے انہیں ایک منی پوری ناچ دکھایا۔ وہ بڑے خوش ہوئے اور مجھے دونوں ہاتھوں کے انگوٹھے دکھانے لگے۔ میں چکر میں پڑ گئی اور سوچنے لگی کہ یہ لوگ انگوٹھے کیوں دکھا رہے ہیں، شاید میرے ناچ کی وجہ سے چڑھاتے ہیں۔ بعد میں ایک چینی لڑکے سے میں نے اس کا مطلب پوچھا۔ اس نے مجھے بتایا—"جب ہم لوگوں کو کوئی چیز بہت پسند آتی ہے تو ہم اپنی خوشی انگوٹھے دکھا کر پرکٹ کرتے ہیں۔"

اس کے بعد انہوں نے اپنا چینی ناچ دکھایا۔ مجھے بہت پسند آیا اور میں نے بھی دونوں ہاتھوں کے انگوٹھے دکھائے اور کہا "ہاؤ، ہاؤ" (اچھا ہے، اچھا ہے)

جب ہم پہلے پہل کینٹن (چین) پہنچے تو ہمیں چاپ اسٹکوں کا (کھانے کی دو گول پتلی تیلیاں) استعمال نہیں آتا تھا۔ ہم کینٹن اسٹیشن پر اترے۔ بڑی بھوک لگ رہی تھی۔ ہم چینی بھاشا نہیں جانتے تھے۔ کھانا کیسے مانگیں یہ مسئلہ تھی۔ کسی طرح میں نے ہوٹل والے سے "چھوشو" (شاکاہاری بھوجن) کہہ دیا۔ وہ سمجھ گیا اور دو بڑے بڑے پیالوں میں چاول اور سبزی اور ساتھ میں دو جوڑی "چاپ اسٹک" اس نے ہمارے سامنے رکھ دیا۔ پتا جی اور میں بڑے سوچ میں پڑ گئے۔ چمچ تھی نہیں، ان تیلیوں سے کھانا کیسے کھاتے؟ دھیرے دھیرے ہمت کر کے ہم نے چاپ اسٹک اٹھا لیں۔ بڑی مصیبت ہوئی، ہم سے وہ سنبھلتی ہی نہیں۔ مشکل سے انہیں سنبھالا، انگلیوں کے بیچ دبایا اور کھانا کھانے لگے۔ اتنے میں بہت سے چینی بچے اکٹھے ہو گئے اور ہماری طرف دیکھ کر ہنسنے لگے۔ ہم نے دوسرے چینیوں کی اور دیکھا اور ہنسی کی وجہ پوچھی۔ معلوم ہوا کی ہم نے تیلیاں الٹی پکڑ رکھی ہیں۔

پیکنگ میں ہم نے کبھی مار پیٹ نہیں دیکھی اور نہ گالی گلوچ ہی سنی۔ وہاں کے لوگ اپنے آپسی جھگڑوں کو واد وواد کر کے نپٹا لیتے ہیں۔ یدی دو سائیکلوں میں ٹکر لگ جائے تو پولیس سائیکل والوں کے پاس آئے گی اور انہیں سمجھائے گی—"دھیان سے سائیکل چلاؤ، نہیں تو ٹکر لگ جائے گی، چوٹ لگے گی اور نقصان ہوگا۔" پولیس والے کافی دیر تک سمجھاتے بجھاتے رہیں گے۔ دونوں اپنی غلطیاں سمجھ لیں گے اور پھر افسوس ظاہر کرتے ہوئے سائیکل پر چل دیں گے۔ رات کے سمے کسی کی سائیکل میں بتی یا گھنٹی نہ ہوئی تو پولیس انہیں تھانے نہیں لے جاتی، نہ گھوس لیتی ہے، نہ رعب جماتی ہے، بلکہ غلطی بتا کر سمجھاتی بجھاتی ہے۔

एक दिन मैं साइकिल पर जा रही थी, शाम का वक़्त था, सब अपने अपने घर लौट रहे थे. साइकिलों की क़तार की क़तार जा रही थी. इतने में मेरी साइकिल किसी से उलझ गई और मैं गिर पड़ी. कुछ फ़ासले पर सिपाही खड़ा था. मुझे देखते ही वह दौड़ कर आया. मेरे कपड़े झाड़े, साइकिल उठाई और फ़ुटपाथ पर ले गया. अब तक एक हिन्दुस्तानी को देखकर ख़ासी भीड़ जमा हो गई थी. सिपाही ने कई सवाल पूछे. पर चूंकि पीकिंग आये मुझे चन्द ही दिन हुए थे, मैं उसकी ज़बान नहीं समझ पाई. इतने में एक चीनी शख़्स जो कि अंगरेज़ी जानता था, आगे आया और सिपाही के प्रश्न का अनुवाद करने लगा. मुझसे पूछा जा रहा था--"तुम्हें चोट तो नहीं आई "तुम्हारे कपड़े मैले हो गए हैं, चलो, मैं अस्पताल ले चलता हूं." जिसकी साइकिल से टक्कर हुई है उसके बारे में तुम कुछ कहना चाहती हो ?" मैंने सब बातों का 'नहीं' में जवाब दिया. फिर सिपाही ने दूसरे साइकिल वाले को बुलाया और पूछा—"साइकिल कैसे टकरा गई ?" इस लड़की के चोट लग जाती, साइकिल संभाल कर चलाया करो. लड़के ने अपनी ग़लती स्वीकार की, उसने कहा कि उसे अफ़सोस है. मैंने सिपाही को धन्यवाद दिया और साइकिल पर सवार हो कर आगे बढ़ गई.

ایک دن میں سائیکل پر جا رہی تھی، شام کا وقت تھا، سب اپنے اپنے گھر لوٹ رہے تھے. سائیکلوں کی قطار کی قطار جا رہی تھی. اِتنے میں میری سائیکل کسی کے اُلجھ گئی اور میں گر پڑی. کچھ فاصلے پر سپاہی کھڑا تھا. مجھے دیکھتے ہی وہ دوڑ کر آیا. میرے کپڑے جھاڑے، سائیکل اُٹھائی اور فٹ پاتھ پر لے گیا. اب تک ایک ہندستانی کو دیکھکر خاصی بھیڑ جمع ہو گئی تھی. سپاہی نے کئی سوال پوچھے. پر چونکہ پیکنگ آئے مجھے چند ہی دن ہوئے تھے، میں اُسکی زبان سمجھ نہیں پائی. اِتنے میں ایک چینی شخص جو کہ انگریزی جانتا تھا آگے آیا اور سپاہی کے پرشن کا انواد کرنے لگا. مجھ سے پوچھا جا رہا تھا—" تمہیں چوٹ تو نہیں آئی ؟ تمہارے کپڑے میلے ہو گئے ہیں. چلو میں اسپتال لے چلتا ہوں. جسکی سائیکل سے ٹکر ہوئی ہے اُس کے بارے میں تم کچھ کہنا چاہتی ہو؟" میں نے سب باتوں کا 'نہیں' میں جواب دیا. پھر سپاہی نے دوسرے سائیکل والے کو بلایا اور پوچھا—" سائیکل کیسے ٹکرا گئی ؟ اس لڑکی کے چوٹ لگ جاتی، سائیکل سنبھال کر چلایا کرو." لڑکے نے اپنی غلطی سویکار کی، اُس نے کہا کہ اُسے افسوس ہے. میں نے سپاہی کو دھنیواد دیا اور سائیکل پر سوار ہو کر آگے بڑھ گئی.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے.

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد.

हिन्दुस्तानी शब्दयात

(डाक्टर जाफ़र हसन)

अंगरेज़ी ग्रामर का असर

फ़ारसी की एक कहावत है : "पीरी व सद ऐब" यानी एक बुढ़ापे से सौ बुराइयां नमूदार होती हैं. इस कहावत को हम किसी क़दर बदल कर उर्दू और हिन्दी के हक़ में यूं कह सकते हैं कि "छुट वहम से सो बुराइयां" होती हैं. चुनांचे यही देखिए कि फ़ारसी, अरबी और संस्कृत व्याकरन और उच्चारन की बलाएं थीं सो थीं चन्द दहाइयों से अंगरेज़ी व्याकरन की बला भी हम पर नाज़िल हो रही है.

अंगरेज़ों ने एशियाई ज़बानों से बीसियों लफ़्ज़ लिये मगर हर लफ़्ज़ को अपना लिया और जैसा कि होना चाहिए हर लफ़्ज़ पर अपना उच्चारन और अपना व्यारन लागू किया. हैदराबाद को हैडरावैड कहा तो वहां के निज़ाम को "नईज़ीम" कहना शुरू किया. राजा का कईपन राजाज़ और रानी का रानीज़ बनाया. आमीरुलबहर का एडमिरल किया तो फिर इस्म बनाने के लिए एडमिरलटी बनाया. जो कुछ इन्होंने किया वह ठीक किया और वैसा ही होना चाहिए.

इसके बरक्स हिन्दुस्तानी अब भी आज़ादी हासिल करने के बाद भी अंगरेज़ों से इतना सहमे हुए हैं कि वह अंगरेज़ी लफ़्ज़ के उच्चारन अंगरेज़ी की तरह करते हैं और लफ़्ज़ों की जमा अंगरेज़ी क़ायदों के मुताबिक़ बनाते हैं. अंगरेज़ी की अन्धी तक़लीद और बे मौक़ा तक़लीद हिन्दी और उर्दू में यकसां आम है. इससे साबित होता है कि दोनों पर अंगरेज़ी का रोब छाया हुआ है और वह यकसां तौर पर छुट वहम में मुबतला हैं तब ही तो वह यूनीवरसिटी की जमा यूनीवर्सिटियां बनाने की बजाए यूनीवर्सिटीज़ लिखते हैं. ख़ालिस उर्दू क़ायदे या हिन्दी उसूल के मुताबिक़

"हमारे शहर में कई होटल हैं"

कहने की बजाए फ़रज़ गरज़ से कहेंगे.

"हमारे शहर में कई होटल्ज़ हैं"

हिन्दुस्तानी तरक़्क़ी के लिए यह उसूल अटल है और होना चाहिये कि लफ़्ज़ चाहे कहीं के हों हिन्दुस्तानी में दाख़िल होने के बाद उन पर हर सूरत में सिर्फ़ हिन्दुस्तानी व्याकरन लागू होना चाहिये, कोई दूसरा व्याकरन नहीं.

ھندستانی شبدیات

(ڈاکٹر جافر ھسن)

انگریزی گرامر کا اثر

فارسی کی ایک کہاوت ہے : "پیری و صد عیب" یانے بڑھاپے سے سو برائیاں نمودار ہوتی ہیں . اس کہاوت کو ہم کسی قدر بدل کر اردو اور ہندی کے حق میں یوں کہہ سکتے ہیں کہ "چھٹ وہم سے سو برائیاں" ہوتی ہیں. چنانچہ یہی دیکھئے کہ فارسی، اربی اور سنسکرت ویاکرن اور اچارن کی بلائیں تھیں سو تھیں چند دہائیوں سے انگریزی ویاکرن کی بلا بھی ہم پر نازل ہو رہی ہے .

انگریزوں نے ایشیائی زبانوں سے بیسیوں لفظ لئے مگر ہر لفظ کو اپنا لیا اور جیسا کہ ہونا چاہئے ہر لفظ پر اپنا اچارن اور اپنا ویاکرن لاگو کیا . حیدرآباد کو ہیڈرا بیڈ کہا تو وہاں کے نظام کو "نئی زیم" کہنا شرو کیا . راجا کا کئی پن راجاز اور رانی کا رانیز بنایا . امیرالبحر کا ایڈمرل کیا تو پھر اسم بنانے کے لئے ایڈمریلٹی بنایا . جو کچھ انہوں نے کیا وہ ٹھیک کیا اور ویسا ہی ہونا چاہئے .

اس کے براکس ہندستانی اب بھی آزادی حاسل کرنے کے باد بھی انگریزوں سے اتنا سہمے ہوئے ہیں کہ وہ انگریزی لفظ کے اچارن انگریزی کی طرح کرتے ہیں اور لفظوں کی جمع انگریزی قایدوں کے مطابق بناتے ہیں . انگریزی کی اندھی تقلید اور بے موقا تقلید ہندی اور اردو میں یکساں آم ہے. اس سے سابت ہوتا ہے کہ دونوں پر انگریزی کا روب چھایا ہوا ہے اور وہ یکساں طور پر چھٹ وہم میں مبتلا ہیں تب ہی تو وہ یونی ورسٹی کی جما یونیورسٹیاں بنانے کی بجائے یونیورسٹیز لکھتے ہیں . خالس اردو قایدے یا ہندی اسول کے مطابق

"ہمارے شہر میں کئی ہوٹل ہیں"

کہنے کی بجاے فرز غرز سے کہینگے .

"ہمارے شہر میں کئی ہوٹلز ہیں"

ہندستانی کی ترقی کے لئے یہ اسول اٹل ہے اور ہونا چاہئے کہ لفظ چاہے کہیں کے ہوں، ہندستانی میں داخل ہونے کے باد، ان پر ہر سورت میں سرف ہندستانی ویاکرن لاگو ہونا چاہئے، کوئی دوسرا ویاکرن نہیں .

हिन्दुस्तानी का भविश्य

हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने के जो असूल बयान किए गए हैं, उनकी टीका से ज़ाहिर है कि हिन्दी प्रेमी और उर्दू के हामी दोनों एक दूसरे के बिलकुल खिलाफ़ हैं, दोनों छुटवहम में मुबतला हैं, दोनों जनताई भाशा, जनताई व्याकरन और भाशा के आम झुकाव के सख्त खिलाफ़ हैं. इन ही वजहों से हिन्दी और उर्दू का फ़र्क़ बराबर बढ़ता जा रहा है. इनकी मिलवां शब्दावली कम होती जा रही है. उनकी अदबी और विद्याई भाशा इतनी अलग हो गई है कि ऊंची अदबी किताबें या विद्याई लेख हिन्दी और उर्दू में बिलकुल अलग अलग भाशाएं हो गई हैं. देखने में हालत इतनी निरासी है कि हिन्दुस्तानी का भविश बिलकुल काला दिखाई देता है. फिर भी हिन्दुस्तानी के मानने वालों की एक जमात पैदा हो रही है जो मिली जुली भाशा को बढ़ाने और परवान चढ़ाने की आशा रखती है.

हिन्दुस्तानी के भक्त पूरे विश्वास से नहीं कह सकते कि उनकी कोशिशें सफल होंगी. हो सकता है कि हिन्दुस्तानी के चन्द इने गिने लोग एक तमाशा बन जाएं मगर इतना तो मुझे यक़ीन है कि मौजूदा ज़माने की कठिन हिन्दी (जिसे ख़ास कर उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश के हिन्दी शत्रु हिन्दी प्रेमी चलाना चाहते हैं) या मुशकिल उर्दू (जिसे अब भी बाज़ नादान हिन्दुस्तान की "वाहिद क़ौमी और मुशतरिक ज़बान" ठहराते हैं और जिसे ख़ास कर भारत के पाकिस्तानी और पाकिस्तान वाले चलाने के आरज़ूमन्द हैं) कभी सारे मुल्क की ज़बान नहीं बन सकेगी.

उसी तरह मुझे पूरा यक़ीन है कि आजकल की कठिन हिन्दी या मुशकिल उर्दू भारत और पाकिस्तान के राजकाजी, व्योपारी, समाजी बन्धनों से पैदा होने वाली ज़रूरतों को पूरा नहीं कर सकती. चन्द अदबी रिसाले और तमाम सरकारी विभाग चाहे कठिन भाशा इस्तेमाल करने लगें मगर व्योपारी संस्थाएं, बाज़ार और फ़िल्म मिलवां भाशा का प्रचार करेंगे. गुजरात और बंगाल, मारवाड़ और उड़ीसा में शुद्ध हिन्दी का चलना मुशकिल है.

जो लोग यह ख़्याल करते हैं कि सिर्फ़ हकूमत के सहारे जनता की भाशा बदल सकती है या हकूमत की मुख़ालफ़त का कुछ भी असर नहीं होता, भूल कर रहे हैं. बाज़ संस्कृत प्रेमी विद्वान समझते हैं कि चन्द यूनीवर्सिटियों और अदबी संस्थाओं के कारन और सरकार के सहारे सारे देश की भाशा कड़ियल या शुद्ध हिन्दी हो जाएगी. बाज़ उरदू के हामी समझते हैं कि उनकी कोशिशें बिलकुल बरबाद जाएंगी और उरदू तमाम मुल्क की "वाहिद

ہندستانی کا بھوشیہ

ہندستانی کو ترقی دینے کے جو اسول بیان کئے گئے ہیں، ان کی ٹیکا سے ظاہر ہے کہ ہندی پریمی اور اُردو کے حامی دونوں ایک دوسرے کے بلکل خلاف ہیں۔ دونوں چھوٹ وہم میں مبتلا ہیں، دونو جنتای بھاشا، جنتای وِیاکرن اور بھاشا کے آم جھکاؤ کے سخت خلاف ہیں۔ ان ہی وجہوں سے ہندی اور اُردو کا فرق برابر بڑھتا جا رہا ہے۔ ان کی ملواں شبداولی کم ہوتی جا رہی ہے۔ ان کی ادبی اور ودیای بھاشا اتنی الگ ہوگئی ہے کہ اونچی ادبی کتابیں یا ودیای لیکھ ہندی اور اُردو میں بلکل الگ الگ بھاشائیں ہوگئی ہیں۔ دیکھنے میں حالت اتنی نراسی ہے کہ ہندستانی کا بھوشیہ بلکل کالا دکھای دیتا ہے۔ پھر بھی ہندستانی کے ماننے والوں کی ایک جماعت پیدا ہو رہی ہے جو ایک ملی جلی بھاشا کو بڑھانے اور پروان چڑھانے کی آشا رکھتی ہے۔

ہندستانی کے بھکت پورے وشواس سے نہیں کہہ سکتے کہ ان کی کوششیں سپھل ہونگی۔ ہوسکتا ہے کہ ہندستانی کے چندانے گِنے لوگ ایک تماشا بن جایں مگر اتنا تو مجھے یقین ہے کہ موجودا زمانے کی کٹھن ہندی (جسے خاس کر اُترپردیش، بہار اور مدھیہ پردیش کے ہندی شترو ہندی پریمی چلانا چاہتے ہیں) یا مشکل اُردو (جسے اب بھی باز نادان ہندستان کی "واحد قومی اور مشترک زبان" ٹھہراتے ہیں اور جسے خاس کر بھارت کے پاکستانی اور پاکستان والے چلانے کے آرزومند ہیں) کبھی سارے ملک کی آم زبان نہیں بن سکیگی۔

اسی ترہ مجھے پورا یقین ہے کہ آجکل کی کٹھن ہندی یا مشکل اُردو بھارت اور پاکستان کے راجکاجی، بیوپاری، سماجی بندھنوں سے پیدا ہونے والی ضرورتوں کو پورا نہیں کرسکتی۔ چند ادبی رسالے اور تمام سرکاری وبھاگ چاہے کٹھن بھاشا استعمال کرنے لگیں مگر بیوپاری سنستھایں، بازار اور فلم ملواں بھاشا کا پرچار کرینگے۔ گجرات اور بنگال، مارواڑ اور اڑیسا میں شدھ ہندی کا چلنا مشکل ہے۔

جو لوگ یہ خیال کرتے ہیں کہ سرف حکومت کے سہارے جنتا کی بھاشا بدل سکتی ہے یا حکومت کی مخالفت کا کچھ بھی اسر نہیں ہوتا بھول کر رہے ہیں۔ باز سنسکرت پریمی ودوان سمجھتے ہیں کہ چند یونیورسٹیوں اور ادبی سنستھاؤں کے کارن اور سرکار کے سہارے سارے دیش کی بھاشا کڑیل یا شدھ ہندی ہو جائیگی۔ باز اُردو کے حامی سمجھتے ہیں کہ اِن کی کوششیں بلکل برباد جاینگی اور اردو تمام ملک کی "واحد

क़ौमी मुशतिरक ज़बान" रहेगी ख़ास कर इसलिये कि उरदू को पाकिस्तान ने अपना लिया है.

हिन्दी वालों और उरदूदानों के एक दूसरे को तोड़ने वाले दावे अदबी सपने हैं. भोले भाले इनसानों की ख़ुश ख़यालियां या घमंडियों की लनतरानियां हैं. कड़ियल हिन्दी का समझना ख़ुद हिन्दी प्रेमियों के लिये नामुमकिन होता जा रहा है. हज़ारों लोगों ने सरकारी हिन्दी में ब्राडकास्ट की जाने वाली ख़बरों, ऐलानों और भाशनों का सुनना ही छोड़ दिया और हज़ारों हिन्दी प्रेमी सुनने को सुनते हैं मगर अच्छी तरह समझ नहीं सकते क्योंकि हिन्दी भाशा बराबर मुशकिल होती जा रही है. उरदू वालों की मुशकिल पसन्दी से घबरा कर हज़ारों हिन्दुओं ने उरदू को छोड़ दिया है और यह एक अनइनकार सकनी हक़ीक़त है कि हिन्दी हिन्दुओं की और उरदू मुसलमानों की ज़बान हो चुकी या होती जा रही है. उरदू न जानने वाले मुसलमान बंगालियों, मलाबारियों, दक्खिनयों और सरहदियों के लिये उरदू का सीखना उरदू की मुशकिल पसन्दी की वजह से दूभर हो रहा है. उरदू जानने वाले हिन्दू उरदू को छोड़ते जा रहे हैं.

जिस बुज़ुर्ग ने सन 1934 के लगभग यह मक़ूला कहा था कि :—

"उरदू ज़बान हिन्दू मुसलमानों को अपने आबा व अजदाद से एक मुशतरका और मुक़द्दस तरके की हैसियत से मिली है जो क़तअन नाक़ाबिले तक़सीम है."

उसी ने सन 1943 में यह भी कहा था कि :—

"हिन्दू उरदू छोड़ते जा रहे हैं. अब तक मुझे यह तवक़्क़ो थी कि कायस्थ और कशमीरी पंडित हमारा साथ देंगे लेकिन अफ़सोस! वह भी हटते जा रहे हैं" ‡

गोया उरदू के विरसेदार और तरकेदार ही अपना हक़ ख़ुद ही ख़ुशी ख़ुशी छोड़ते जा रहे हैं. इन्हें अपने बाप दादा की जायदाद, विरासत, मालियत और पूंजी में से कुछ नहीं चाहिये. क्योंकि सारी मालियत अजनबियाना, डरावनी और बेकार है अलबत्ता इसका कुछ हिस्सा अच्छा है और शायद बचाया जा सकता है. यह क़ाबिले यक़ीन है कि इसको संभालने की कोशिश की जाय. इसलिये हिन्दुस्तानी के नामलेवा उठ खड़े हुए हैं कि जहां तक बन पड़े उरदू और हिन्दी को ग़लत रास्ते से बचाएं और सारी की सारी हिन्दी और पूरी की पूरी उरदू के संभालने के बजाय दोनों में से आधा आधा बचाएं ताकि उनके मेल जोल से सारे मुल्क की एक ही भाशा बन सके और आपसी ज़रूरतों को पूरा कर सके.

‡ यह सर तेज बहादुर सप्रू का क़ौल था. ("उरदू" 1943, सफ़ा 238)

مشترک زبان " رھے گی خاص کر اس لئے کہ اردو کو پاکستان نے اپنا لیا ھے .

ہندی والوں اور اردودانوں کے ایک دوسرے کو توڑنے والے داوے ادبی سپنے ھیں . بھولے بھالے انسانوں کی خوش خیالیاں یا گھمنڈیوں کی لن ترانیاں ھیں . کڑیل ہندی کا سمجھنا خد ھندی پریمیوں کے لئے ناممکن ہوتا جا رہا ھے . ھزاروں لوگوں نے سرکاری ھندی میں براڈکاسٹ کی جانے والی خبروں، ایلانوں اور بھاشنوں کا سننا ہی چھوڑ دیا اور ھزاروں ھندی پریمی سننے کو سنتے ہیں مگر اچھی ترہ سمجھ نہیں سکتے کیوں کہ ہندی بھاشا برابر مشکل ھوتی جا رھی ھے . اردو والوں کی مشکل پسندی سے گھبرا کر ھزاروں ھندوؤں نے اردو کو چھوڑ دیا ہے اور یہ ایک آن انکار سکنی، حقیقت ھے کہ ھندی ہندوؤں کی اور اردو مسلمانوں کی زبان ھو چکی یا ھوتی جا رہی ہے . اردو نہ جاننے والے مسلمان بنگالیوں، ملاباریوں، دکھنیوں اور سرحدیوں کے لئے اردو کا سیکھنا اردو کی مشکل پسندی کی وجہ سے دوبھر ھو رہا ھے . اردو جاننے والے ھندو اردو کو چھوڑتے جا رھے ھیں .

جس بزرگ نے سن 1934 کے لگ بھگ یہ مقولا کہا تھا کہ :—

" اردو زبان ھندو مسلمانوں کو اپنے آبا واجداد سے ایک مشترکہ اور مقدس ترکے کی حیثیت سے ملی ھے جو قطعاً ناقابل تقسیم ھے ."

اسی نے سن 1943 میں یہ بھی کہا تھا کہ :—

" ھندو اردو چھوڑتے جا رھے ھیں . اب تک مجھے یہ توقع تھی کہ کایستھ اور کشمیری پنڈت ھمارا ساتھ دیں گے لیکن افسوس ! وہ بھی ھٹتے جا رھے ھیں. " ‡

گویا اردو کے ورسے دار اور ترکے دار ھی اپنا حق خد ہی خوشی خوشی چھوڑتے جا رھے ھیں . انھیں باپ دادا کی جایداد، وراست، مالیت اور پونجی میں سے کچھ نہیں چاھئے . کیوں کہ ساری مالیت اجنبیانہ، ڈراونی اور بیکار ھے . البتہ اس کا کچھ حصہ اچھا ھے اور شاید بچایا جا سکتا ھے . یہ قابل یقین ھے کہ اس کو سنبھالنے کی کوشش کی جائے . اسی لئے ھندستانی کے نام لیوا اٹھ کھڑے ھوئے ھیں کہ جہاں تک بن پڑے اردو اور ہندی کو غلت راستے سے بچائیں اور ساری کی ساری ہندی اور پوری کی پوری اردو کے سنبھالنے کی بجائے دونوں میں سے آدھا آدھا بچائیں تاکہ ان کے میل جول سے سارے ملک کی ایک ھی بھاشا بن سکے اور آپسی ضرورتوں کو پورا کر سکے .

‡ یہ سر تیج بہادر سپرو کا قول تھا . (" اردو " سن 1943، صفحہ 238)

ऐसी भाशा को बनाने, बढ़ाने, फैलाने और परवान चढ़ाने का एक ज़रिया यह भी है कि नये नये काम धन्दों और आज कल की ज़िन्दगी में इस्तेमाल हो सकने वाले हज़ारों नये नये लफ़्ज़ बनाए जायं. ऐसे लफ़्ज़ जो सिर्फ़ हिन्दी में नहीं, सिर्फ़ उरदू में नहीं बल्कि उरदू और हिन्दी दोनों में चल सकें. वही लफ़्ज़ जो हिन्दी में भी चल सकें और उदूर में भी जो हिन्दी वालों के भी समझ में आ सकें और उरदू वालों के भी, जिसे हिन्दी प्रेमी भी बर्दाश्त कर सकें और उरदू के हामी भी. वही सच्ची हिन्दुस्तानी है; वही हिन्दुस्तानी जो बटवारे के बावजूद और राजकाजी फूट होने पर भी समाज, व्योपार, अदब और सभ्यता में आपसी बन्धनों से पैदा होने वाली ज़रूरतों को पूरा कर रही है और आयन्दा इन बनधनों को बढ़ाने का सब से ज़ियादा अहम ज़रिया बन सकती है. कुछ अजब नहीं कि राजक़ाजी मिलाप भी पैदा करे. इसमें शक नहीं कि जनता राज में सब से बड़ी ताक़त भाशा है. जब तक भाशा एक रहेगी, एक मुल्क और एक क़ौम की आस बाक़ी रहेगी. हर हालत में देस के मुख़तलिफ़ प्रान्तों में रहने वाले भांत भांत के लोगों के बाहमी बन्धन एक भाशा के कारन बढ़ते और फैलते रहेंगे और मिली जुली भाशा की तरह मिली जुली तहज़ीब की रोशनी धीरे धीरे फैलती और बढ़ती जायगी.

ایسی بھاشا کو بنانے، بڑھانے، پھیلانے اور پروان چڑھانے کا ایک زریعا یہ بھی ہے کہ نئے نئے کام دھندوں اور آجکل کی زندگی میں استعمال ہو سکنے والے ہزاروں نئے نئے لفز بنائے جائیں۔ ایسے لفز جو سرف ہندی میں نہیں، سرف اردو میں نہیں بلکہ اردو اور ہندی دونوں میں چل سکیں۔ وہی لفز جو ہندی میں بھی چل سکیں اور اردو میں بھی۔ جو ہندی والوں کے بھی سمجھ میں آ سکیں اور اردو والوں کے بھی۔ جسے ہندی پریمی بھی برداشت کرسکیں اور اردو کے حامی بھی۔ وہی سچی ہندستانی ہے؛ وہی ہندستانی جو بٹوارے کے باوجود اور راج کاجی پھوٹ ہونے پر بھی سماج، بیوپار، ادب اور سبھیتا میں آپسی بندھنوں سے پیدا ہونے والی زرورتوں کو پورا کر رہی ہے اور آئندا ان بندھنوں کو بڑھانے کا سب سے زیادہ اہم زریعا بن سکتی ہے۔ کچھ اجب نہیں کہ راج کاجی ملاپ بھی پیدا کرے۔ اس میں شک نہیں کہ جنتا راج میں سب سے بڑی تاقت بھاشا ہے۔ جب تک بھاشا ایک رہے گی، ایک ملک اور ایک قوم کی آس باقی رہے گی۔ ہر حالت میں دیس کے مختلف پرانتوں میں رہنے والے بھانت بھانت کے لوگوں کے باہمی بندھن ایک بھاشا کے کارن بڑھتے اور پھیلتے رہینگے اور ملی جلی بھاشا کی ترہ ملی جلی تہذیب کی روشنی دھیرے دھیرے پھیلتی اور بڑھتی جائے گی۔

"मैं शान्ति पसन्द आदमी हूं. शान्ति में मेरा विश्वास है. लेकिन मैं चाहे जो क़ीमत दे कर शान्ति नहीं ख़रीदना चाहता. आप पत्थर में जो शान्ति पाते हैं वह मुझे नहीं चाहिये. जिसे आप क़ब्र में देखते हैं वह शान्ति मैं नहीं चाहता. लेकिन मैं वह शान्ति अवश्य चाहता हूं जो मनुश्य के हृदय में छुपी हुई है, और सारी दुनिया के वार करने के लिये तैयार होते हुए भी सर्व शक्तिमान ईश्वर की शक्ति जिसकी रक्षा करती है."

—महात्मा गांधी

"میں شانتی پسند آدمی ہوں۔ شانتی میں میرا وشواس ہے۔ لیکن میں چاہے جو قیمت دے کر شانتی نہیں خریدنا چاہتا۔ آپ پتھر میں جو شانتی پاتے ہیں وہ مجھے نہیں چاہئے۔ جسے آپ قبر میں دیکھتے ہیں وہ شانتی میں نہیں چاہتا۔ لیکن میں وہ شانتی اوشیہ چاہتا ہوں جو منش کے ہردے میں چھپی ہوئی ہے، اور ساری دنیا کے وار کرنے کے لئے تیار ہوتے ہوئے بھی سرو شکتمان ایشور کی شکتی جسکی رکشا کرتی ہے۔"

—مہاتما گاندھی

पार्डी का सत्याग्रह

हमेशा से हर देश की जनता का यह पैदायशी हक़ माना गया है कि वह अपनी उचित और सही शिकायतों को सरकार या दुनिया के सामने पेश करे और उन्हें दूर करने के लिये क़दम उठाए. अगर वह इस क़दम को खुले आम, शांति और मान मर्यादा के साथ उठाती है तो इस पर जनता को सिर्फ़ ख़ुशी और अभिमान ही नहीं होता, सवालों के सहज और ठीक हल निकलने में भी मदद मिलती है. साथ ही मुल्क के अन्दर का वातावरन संभलता और ऊपर उठता है. लेकिन अगर हवा के अन्दर पार्टी बाज़ी का धुंआ और ख़ुद ग़रज़ी का ज़ोर हो तो बहादुर से बहादुर और बड़े से बड़ा प्रदर्शन भी बेकार साबित होगा और जनता की बेड़ियां और ज़ियादा मज़बूत हो जायँगी. पर अगर जनता अपने रास्ते पर डटी रहे और बिना डर या मोह के, धीर और बेलाग हो कर अपनी राह पर चलती रहे तो जीत उसकी ज़रूर है. जब हम दो महीने पुराने उस आन्दोलन को देखते हैं जो पार्डी में श्री अशोक मेहता की अगुवाई में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी चला रही है तब कुछ इस तरह के विचार हमारे मन में आते हैं. इस आन्दोलन को अच्छी तरह और ठीक ठीक समझे बिना इस पर राय क़ायम करना मुश्किल है. इसमें एक तरफ़ से तो आचार्य कृपलानी और श्री जयप्रकाश नारायन की हमदर्दी है और दूसरी तरफ़ विरोध में बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर श्री मोरार जी देसाई और 'हरिजन' के सम्पादक श्री मगन भाई देसाई हैं.

पार्डी के आंकड़े

पार्डी सूरत ज़िले के एक ताल्लुक़ा या तहसील का नाम है. पार्डी ख़ास का स्टेशन बम्बई अहमदाबाद लाइन पर बम्बई से 114 मील की दूरी पर है. पार्डी तहसील में 82 गांव हैं. रक़्का 162 वर्ग मील और आबादी 1,10,000 है. 162 वर्ग मील यानी 1,03,680 एकड़ में 98,000 एकड़ ज़मीन खेती के क़ाबिल है. इसका हिसाब इस तरह है :—

गिनती	ज़मीन किस चीज़ की खेती में	एकड़	फ़ी सैकड़ा
1.	अनाज	28,000	28·5
2.	दालें	12,000	12·5
3.	फल	4,000	4·0
4.	घास	54,000	55·0
	जोड़	98,0000	100

پارڈی کا ستیہ گرہ

ہمیشہ سے ہر دیش کی جنتا کا یہ پیدائشی حق مانا گیا ہے کہ وہ اپنی اچت اور سہی شکایتوں کو سرکار یا دنیا کے سامنے پیش کرے اور انہیں دور کرنے کے لئے قدم اٹھائے. اگر وہ اِس قدم کو کھلے عام، شانتی اور مان مریادا کے ساتھ اٹھاتی ہے تو اس پر جنتا کو صرف خوشی اور ابھیمان ہی نہ ہوتا، سوالوں کے سہج اور ٹھیک حل نکلنے میں بھی مدد ملتی ہے. ساتھ ہی ملک کے اندر کا واتاورن سنبھلتا اور اوپر اٹھتا ہے. لیکن اگر ہوا کے اندر پارٹی بازی کا دھواں اور خود غرضی کا زور ہو تو بہادر سے بہادر اور بڑے سے بڑا پردرشن بھی بیکار ثابت ہوگا اور جنتا کی بیڑیاں اور زیادہ مضبوط ہو جائینگی. پر اگر جنتا اپنے راستے پر ڈٹی رہے اور بنا ڈر یا موہ کے، دھیر اور بیلاگ ہوکر اپنی راہ پر چلتی رہے تو جیت اس کی ضرور ہے. جب ہم دو مہینے پرانے اس آندولن کو دیکھتے ہیں جو پارڈی میں شری اشوک مہتا کی اگوائی میں پرجا سوشلسٹ پارٹی چلا رہی ہے تب کچھ اِس طرح کے وچار ہمارے من میں آتے ہیں. اِس آندولن کو اچھی طرح اور ٹھیک ٹھیک سمجھے بنا اِس پر رائے قائم کرنا مشکل ہے. اِس میں ایک طرف سے تو اچاریہ کرپلانی اور شری جے پرکاش نرائن کی ہمدردی ہے اور دوسری طرف ورودھ میں بمبئی کے چیف منسٹر اور 'ہریجن' کے سمپادک شری مگن بھائی ڈیسائی ہیں.

پارڈی کے آنکڑے

پارڈی سورت ضلع کے ایک تعلقہ یا تحصیل کا نام ہے. پارڈی خاص کا اِسٹیشن بمبئی احمدآباد لائن پر بمبئی سے 114 میل کی دوری پر ہے. پارڈی تحصیل میں 82 گاؤں ہیں. رقبہ 162 ورگ میل اور آبادی 1,10,000 ہے. 162 ورگ میل یعنی 1,03,680 ایکڑ میں 98,000 ایکڑ زمین کھیتی کے قابل ہے. اس کا حساب اِس طرح ہے.

زمین کس چیز کی کھیتی میں	ایکڑ	فی سیکڑہ
اناج	28,000	28·5
دالیں	12,000	12·5
پھل	4,000	4·0
گھاس	54,000	55·0
جوڑ	98,000	100

पानी जब कि पार्डी तहसील में आदमियों के लिये नाज की कमी है, वहां की 55 फ़ी सदी ज़मीन बम्बई के जानवरों के लिये घास पैदा करने के काम में लाई जा रही है !

श्री अशोक मेहता ने कहा है :—

"इस तहसील में कोई कारख़ाना नहीं है और यह लगभग सोलह आना खेती का इलाक़ा है. आबादी में साठ फ़ी सदी से ज़ियादा लोग आदिबासी हैं जो बहुत ही ग़रीबी की हालत में रहते हैं. तहसील की काफ़ी ज़मीन कुछ मुट्ठी भर बड़े ज़मीदारों के हाथ में है जो बिना किसी हिचकिचाहट के किसानों को बेदख़ल कर देते हैं और उस ज़मीन पर घास की बुआई कराते हैं जिससे उनको तो लम्बे चौड़े मुनाफ़े होते हैं पर ग़रीब और लाचार किसानों की रोज़ी मारी जाती है."

पिछले तीन बरस में 1,817 एकड़ ज़मीन किसानों के पास से छीन कर ज़मीदारों ने अपना ली. जो 36,000 एकड़ ज़मीन खेती में है इसमें से 23,000 बड़े ज़मीदारों के क़ब्ज़े में है. खेती करना यहां के लोगों का पुराना पेशा है. तालीम बहुत कम है. ज़ियादातर लोग रोज़ कुंआ खोदने और रोज़ पानी पीने वाली हालत में रहते हैं. बम्बई असेम्बली में इस इलाक़े से जो मेम्बर हैं वह एक प्रजा सोशलिस्ट भाई हैं.

आन्दोलन का इतिहास

पार्डी के लोगों के बीच किसान पंचायत नाम की संस्था जिसकी देख रेख सोशलिस्टों के हाथ में है, काम कर रही है. कई बरस से इस पंचायत ने सरकार का ध्यान उन बेदख़लियों की तरफ़ खींचा जो इस इलाक़े में हो रही हैं. एक साल से ज़ियादा अरसा हुआ जब तहसील में एक बड़ी भारी किसान कानफ़रेन्स इस पंचायत ने की और जनता की मुसीबतों व तकलीफ़ों को सरकार के आगे रखा. कम से कम तीन बार यह मामला बम्बई के माल मंत्री के ध्यान में लाया गया. भारत सरकार की तरफ़ से जो अकाल जांच कमेटी बनी थी उसके सामने भी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने सारी हालत रखी थी.

पिछले मार्च में एक सम्मेलन में सरकार से अपील की गई कि अगली बरसात तक किसानों की मांग पूरी कर दी जाय ताकि वह उस ज़मीन पर जुताई बुआई कर सकें और अपनी रोज़ी कमा सकें.

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का कहना है कि किसानों की मांगें दो हैं :—

(i) पिछली बेदख़लियों की जांच और गांव के काग़ज़ात सही करने के लिये एक कमेटी या कमीशन बैठाया जाय ताकि जिन किसानों की ज़मीनें ग़लत छीनी गई

یعنی جب کہ پارڈی تحصیل میں آدمیوں کے لئے ناج کی کمی ہے، وہاں کی 55 فیصدی زمین بمبئی کے جانوروں کے لئے گھاس پیدا کرنے کے کام میں لائی جا رہی ہے !

شری اشوک مہتا نے کہا ہے :—

"اس تحصیل میں کوئی کارخانہ نہیں ہے اور یہ لگ بھگ سولہ آنہ کھیتی کا علاقہ ہے ۔ آبادی میں 60 فیصدی سے زیادہ لوگ آدی واسی ہیں جو بہت ہی غریبی کی حالت میں رہتے ہیں. تحصیل کی کافی زمین کچھ مٹھی بھر بڑے زمینداروں کے ہاتھ میں ہے جو بنا کسی ہچکچاہٹ کے کسانوں کو بیدخل کردیتے ہیں اور اس زمین پر گھاس کی بوائی کراتے ہیں جس سے ان کو تو لمبے چوڑے منافع ہوتے ہیں پر غریب اور لاچار کسانوں کی روزی ماری جاتی ہے ۔"

پچھلے تین برس میں 1,817 ایکڑ زمین کسانوں کے پاس سے چھین کر زمینداروں نے اپنا لی. جو 36,000 ایکڑ زمین کھیتی میں ہے. اس میں سے 23,000 بڑے زمینداروں کے قبضے میں ہے. کھیتی کرنا یہاں کے لوگوں کا پرانا پیشہ ہے ۔ تعلیم بہت کم ہے ۔ زیادہ‌تر لوگ روز کنواں کھودنے اور روز پانی پینے والی حالت میں رہتے ہیں ۔ بمبئی اسمبلی میں اس علاقے سے جو ممبر ہوئے ہیں وہ ایک پرجا شوشلسٹ بھائی ہیں ۔

آندولن کا اتہاس

پارڈی کے لوگوں کے بیچ کسان پنچایت نام کی ایک سنستھا جس کی دیکھ ریکھ شوشلسٹوں کے ہاتھ میں ہے، کام کر رہی ہے ۔ کئی برس سے اس پنچایت نے سرکار کا دھیان ان بیدخلیوں کی طرف کھینچا جو اس علاقے میں ہو رہی ہیں ۔ ایک سال سے زیادہ عرصہ ہوا جب تحصیل میں ایک بڑی بھاری کسان کانفرنس اس پنچایت نے کی اور جنتا کی مصیبتوں اور تکلیفوں کو سرکار کے آگے رکھا ۔ کم سے کم تین بار یہ معاملہ بمبئی کے مال منتری کے دھیان میں لایا گیا ۔ بھارت سرکار کی طرف سے جو اکال جانچ کمیٹی بنی تھی اس کے سامنے بھی پرجا سوشلسٹ پارٹی نے ساری حالت رکھی تھی ۔

پچھلے مارچ میں ایک سمیلن میں سرکار سے اپیل کی گئی کہ اگلی برسات تک کسانوں کی مانگ پوری کردی جائے تاکہ وہ اس زمین پر جوتائی بوائی کرسکیں اور اپنی روزی کما سکیں ۔

پرجا سوشلسٹ پارٹی کا کہنا ہے کہ کسانوں کی مانگیں دو ہیں :—

(i) پچھلی بیدخلیوں کی جانچ اور گاؤں کے کاغذات صحیح کرنے کے لئے ایک کمیٹی یا کمیشن بیٹھایا جائے تاکہ جن کسانوں کی زمینیں غلط چھینی گئی

हैं उन्हें वापस मिल जायं.

(ii) कम से कम 5,000 एकड़ ज़मीन सरकार खुद ले ले और अनाज की फ़सल बोने के लिये इसी साल किसानों को दे दे.

जुलाई के महीने में एक कानफ़रेन्स में किसान पंचायत ने सरकार को सूचना दी कि अगर यह मांगें पूरी नहीं की गईं तो किसानों को मजबूर हो कर शांतिमय सत्याग्रह चलाना होगा. 21 अगस्त को एक चिट्ठी में भी अशोक मेहता ने बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर श्री मोरार जी देसाई को इस फ़ैसले की सूचना दे दी. 31 अगस्त को इसके जवाब में चीफ़ मिनिस्टर ने उनको लिखा कि जांच कमीशन बिठाना न मैं ज़रूरी समझता हूं न मुनासिब और सरकार जहां तक हो सकता है कोशिश कर रही है कि आदिवासियों को जियादा ज़मीन मिल जाय. उन्होंने यह भी कहा कि इस सत्याग्रह से मक़सद हासिल नहीं होगा और "इसे सत्याग्रह कह भी नहीं सकते."

जो होने वाला था सो हो कर रहा. सत्याग्रह छेड़ दिया गया. पहली सितम्बर को एक हज़ार से जियादा लोगों ने सत्याग्रह शुरू किया. इनमें 990 स्वयं सेवकों के अलावा 11 नेता थे और बारहवें श्री अशोक मेहता. हाथ में हंसिया फावड़ा ले कर वह लोग एक ऐसे खेत की तरफ़ बढ़ते चले आए जिसे ज़मीदार ने ज़बरदस्ती किसान से छीन लिया था और जिसे यह लोग जोतना चाहते थे. उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया, गिरफ़्तार कर लिया गया और जेल भेज दिया गया. इसके बाद आन्दोलन बराबर बढ़ता गया.

स्वंय सेवकों पर मुक़दमे चल रहे हैं और उन्हें सज़ाएं दी जा रही हैं. श्री अशोक मेहता पर भी मुक़दमा चलाया गया और उन्हें सोलह महीने की क़ैद का दन्ड दिया गया. अखबार की खबर है कि 226 आदिवासी औरतों को पचीस पचीस रुपये जुर्माने की सज़ा दी गई. जुर्माना न देने पर कोई दूसरा दन्ड देने के बजाय यह कहा गया है कि जुर्माना वसूल करने के लिये उनका घर द्वार और माल सामान क़ुर्क कर दिया जाय.

पार्टी का यह आन्दोलन और तेज़ होता जा रहा है. क्या मर्द क्या औरतें, जियादा से जियादा तादाद में शामिल हो रहे हैं और शान्ति के साथ इस अहिंसात्मक आन्दोलन में हिस्सा ले रहे हैं. इस पूरी तहरीक में पार्टी के अनपढ़ किसान शुरू से शान्तिमय और अहिंसक रहे. पुलिस के किसी सिपाही या ज़मीदार या ज़मीदार के आदमी के ऊपर उंगली तक नहीं उठाई गई. हाल की रिपोर्ट है कि घास की ज़मीन में काम करने वाले मज़दूर भी हरताल यानी असहयोग करेंगे और इस आन्दोलन में हिस्सा लेंगे.

ہیں واپس مل جائیں۔

(ii) کم سے کم 5,000 ایکڑ زمین سرکار خود لے لے اور اناج کی فصل بونے کے لئے اسی سال کسانوں کو دے دے۔

جولائی کے مہینے میں ایک کانفرنس میں کسان پنچایت نے سرکار کو سوچنا دی کہ اگر یہ مانگیں پوری نہیں کی گئیں تو کسانوں کو مجبور ہوکر شانتی مے ستیہ گرہ چلانا ہوگا۔ 21 اگست کو ایک چٹھی میں بھی اشوک مہتا نے بمبئی کے چیف منسٹر شری مورار جی دیسائی کو اس فیصلے کی سوچنا دیدی۔ 31 اگست کو اس کے جواب میں چیف منسٹر نے اُن کو لکھا کہ جانچ کمیشن بٹھانا نہ میں ضروری سمجھتا ہوں نہ مناسب اور سرکار جہاں تک ہوسکتا ہے کوشش کر رہی ہے کہ آدی واسیوں کو زیادہ زمین مل جائے۔ اُنھوں نے یہ بھی کہا کہ اس ستیہ گرہ سے مقصد حاصل نہیں ہوگا "اور اسے ستیہ گرہ کہہ بھی نہیں سکتے۔"

جو ہونے والا تھا سو ہوکر رہا۔ ستیہ گرہ چھیڑ دیا گیا۔ پہلی ستمبر کو ایک ہزار سے زیادہ لوگوں نے ستیہ گرہ شروع کیا۔ ان میں 990 سویم سیوکوں کے علاوہ 11 نیتا تھے اور بارھویں شری اشوک مہتا۔ ہاتھ میں ہنسیا پھاوڑا لے کر وہ لوگ ایک ایسے کھیت کی طرف بڑھتے چلے آئے جسے زمیندار نے زبردستی کسان سے چھین لیا تھا اور جسے یہ لوگ جوتنا چاہتے تھے۔ اُنھیں ایسا کرنے سے روک دیا گیا، گرفتار کر لیا گیا اور جیل بھیج دیا گیا۔ اس کے بعد آندولن برابر بڑھتا گیا۔

سویم سیوکوں پر مقدمے چل رہے ہیں اور اُنھیں سزائیں دی جا رہی ہیں۔ شری اشوک مہتا پر بھی مقدمہ چلایا گیا اور انہیں سولہ مہینے کی قید کا ڈنڈ دیا گیا۔ اخبار کی خبر ہے کہ 226 آدی واسی عورتوں کو پچیس پچیس روپے جرمانے کی سزا دی گئی۔ جرمانہ نہ دینے پر کوئی دوسرا ڈنڈ دینے کے بجائے یہ کہا گیا ہے کہ جرمانہ وصول کرنے کے لئے ان کا گھربار اور مال سامان قرق کردیا جائے۔

پارٹی کا یہ آندولن اور تیز ہوتا جا رہا ہے۔ کیا مرد کیا عورتیں، زیادہ سے زیادہ تعداد میں شامل ہو رہے ہیں اور شانتی کے ساتھ اس اہنساتمک آندولن میں حصہ لے رہے ہیں۔ اس پوری تحریک میں پارٹی کے اَن پڑھ کسان شروع سے شانتی مے اور اہنسک رہے۔ پولیس کے کسی سپاہی یا زمیندار یا زمیندار کے آدمی کے اوپر انگلی تک نہیں اٹھائی گئی۔ حال کی رپورٹ ہے کہ گھاس کی زمین میں کام کرنے والے مزدور بھی ہڑتال یعنی اسہیوگ کرینگے اور اس آندولن میں حصہ لینگے۔

दोनों पक्ष

आचार्य कृपलानी ने इस सत्याग्रह को सही और ठीक चीज़ बताया है, उनका कहना है :—

"जहां तक मैंने इस आन्दोलन को देखा है मैं कहूंगा कि मांगें नरम और सच्ची हैं. इस बात की पूरी कोशिश की गई थी कि सत्याग्रह के बिना मामला तय हो जाय. मैं यह भी जानता हूं कि सत्याग्रह शुरू करने से पहले ज़मीदार और सरकार दोनों को काफ़ी नोटिस दे दिया गया था. यह सत्याग्रह अहिंसक ढंग से चल रहा है. बारदोली का सत्याग्रह इसके मुक़ाबले जियादा अहिंसक नहीं था."

श्री अशोक मेहता और बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर के बीच बहुत चिट्ठी पत्री हुई जिस से सरकारी पक्ष सामने आ जाता है. चीफ़ मिनिस्टर ने इस आन्दोलन को "दुराग्रह" कहा है. वह दो बातें कहते हैं :—

(i) मुझे यह देख कर खुशी होगी कि पार्डी के बेज़मीन वाले किसान पार्डी छोड़ कर धर्मपुर की तहसील में चले जायं और वहां जो ज़मीन है उस पर बसें.

(ii) फ़सल बन्दी की कोई भी योजना क्यों न की जाय पार्डी को घास पैदा करने की जगह बनाए रखना ज़रूरी है और पार्डी में अनाज की जो कमी पड़े उसे जैसे अब तक होता रहा है, बाहर से मंगा कर पूरा किया जाय. पिछले पांच बरस में पार्डी में अनाज की जो कुछ कमी रही उसे दूसरे प्रान्तों या विदेशों से मंगा कर पूरा किया गया. पर बम्बई शहर में जो चारे या घास की ज़रूरत है उसे इस तरह से पूरा नहीं किया जा सकता ! बम्बई के जानवरों के लिये तो घास का इन्तज़ाम होना ही चाहिये.

'हरिजन' के सम्पादक श्री मगन भाई देसाई ने भी इस आन्दोलन को ग़लत कहा है. उन्हें हैरत है कि प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ता जो अब तब भूदान आन्दोलन में लगे थे वह इस तरफ़ क्यों बहक गए. मगन भाई का मानना है कि यह आन्दोलन भूदान से मेल नहीं खाता और सच्चे सत्याग्रह की ज़रूरी शर्तें भी पूरी नहीं करता. उनकी सिफ़ारिश है कि पार्डी के कार्यकर्ता विश्वास और श्रद्धा के साथ भूदान का काम ही करते रहें.

आन्दोलन पर निगाह

अब हम इस आन्दोलन को तीन तरह से देखने की कोशिश करेंगे :—

(i) सरकार यानी कांगरेस पार्टी की निगाह से,
(ii) प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की निगाह से,
(iii) जनता की निगाह से.

सरकार की निगाह से देखें तो यू. पी. के चीफ़ मिनिस्टर पंडित पंत कह चुके हैं कि प्रजातंत्र में सत्याग्रह

دونوں پکھش

آچاریہ کرپلانی نے اس ستیہ گرہ کو صحیح اور ٹھیک چیز بتایا ہے۔ ان کا کہنا ہے :—

"جہاں تک میں نے اس آندولن کو دیکھا ہے میں کہونگا کہ مانگیں نرم اور سچی ہیں۔ اس بات کی پوری کوشش کی گئی تھی کہ ستیہ گرہ کے بنا معاملہ طے ہو جائے۔ میں یہ بھی جانتا ہوں کہ ستیہ گرہ شروع کرنے سے پہلے زمیندار اور سرکار دونوں کو کافی نوٹس دے دیا گیا تھا۔ یہ ستیہ گرہ اہنسک ڈھنگ سے چل رہا ہے۔ باردولی کا ستیہ گرہ اس کے مقابلے زیادہ اہنسک نہیں تھا۔"

شری اشوک مہتا اور بمبئی کے چیف منسٹر کے بیچ بہت چٹھی پتری ہوئی جس سے سرکاری پکھش سامنے آجاتا ہے۔ چیف منسٹر نے اس آندولن کو "دراگرہ" کہا ہے۔ وہ دو باتیں کہتے ہیں :—

(i) مجھے یہ دیکھکر خوشی ہوگی کہ پارڈی کے بےزمین والے کسان پارڈی چھوڑ کر دھرمپور کی تحصیل میں چلے جائیں اور وہاں جو زمین ہے اس پر بسیں۔

(ii) فصل بندی کی کوئی بھی یوجنا کیوں نہ کی جائے پارڈی کو گھاس پیدا کرنے کی جگہ بنائے رکھنا ضروری ہے۔ اور پارڈی میں اناج کی جو کمی پڑے اسے جیسے اب تک ہوتا رہا ہے، باہر سے منگا کر پورا کیا جائے۔ پچھلے پانچ برس میں پارڈی میں اناج کی جو کچھ کمی رہی اسے دوسرے پرانتوں یا ودیشوں سے منگاکر پورا کیا گیا۔ پر بمبئی شہر میں جو چارے یا گھاس کی ضرورت ہے اسے اس طرح سے پورا نہیں کیا جاسکتا! بمبئی کے جانوروں کے لئے تو گھاس کا انتظام ہونا ہی چاہئے۔

'ہریجن' کے سمپادک شری مگن بھائی دیسائی نے اس آندولن کو غلط کہا ہے۔ انہیں حیرت ہے کہ پرجاسوشلسٹ پارٹی کے کارکرتا جو اب تک بھودان آندولن میں لگے تھے وہ اس طرف کیوں بہک گئے۔ مگن بھائی کا ماننا ہے کہ یہ آندولن بھودان سے میل نہیں کھاتا اور سچے ستیہ گرہ کی ضروری شرطیں بھی پوری نہیں کرتا۔ ان کی سفارش ہے کہ پارڈی کے کارکرتا وشواس اور شردھا کے ساتھ بھودان کا کام ہی کرتے رہیں۔

آندولن پر نگاہ

اب ہم اس آندولن کو تین طرح سے دیکھنے کی کوشش کرینگے :—

(i) سرکار یعنی کانگریس پارٹی کی نگاہ سے۔
(ii) پرجاسوشلسٹ پارٹی کی نگاہ سے۔
(iii) جنتا کی نگاہ سے۔

سرکار کی نگاہ سے دیکھیں تو یو۔ پی۔ کے چیف منسٹر پنڈت پنتھ کہہ چکے ہیں کہ پرجاتنتر میں ستیہ گرہ

के लिये जगह नहीं है. इसलिये इस देश में हर सत्याग्रह दुराग्रह क़रार दे दिया जायगा. शायद यही मत बम्बई सरकार का भी है. हो सकता है कि जब कोई विनोबा जैसी हस्ती सत्याग्रह करे तो हमारी सरकारें शुरू में शायद उसे भी "दुराग्रह" कहें, लेकिन जब उसके पीछे लोक शक्ति का बल देखें तो मुमकिन है सोचने लग जायं. ऐसा लगता है कि "अहिंसा" की दुहाई देने पर भी हमारी सरकारें अहिंसक क़दम की क़दर नहीं करतीं. मालूम होता है कि हिंसक क़दम का असर उन पर ज़ियादा पड़ता है.

दुख की बात है कि क़ानूनी, और अहिंसात्मक रास्तों की गुंजायश दिन पर दिन कम होती जा रही है. अपनी असेम्बलियों की कारवाइयों को देखें तो पता चलता है कि स्पीकर साहब हर टेढ़े मामले को 'Out of Order' (बहस बाहर) क़रार देकर गाड़ी चलना नामुमकिन कर देते हैं. जब तादाद के बल पर सब काम चलता है तो विरोधी की नेक से नेक बात भी निकम्मी मानी जाती है. हम हिंसक प्रदर्शनों या मार पीट के ढंग की ताईद नहीं कर रहे हैं, बल्कि सिर्फ़ यह कहना चाहते हैं कि आम तौर से जनता की आवाज़ सरकार के कानों तक नहीं पहुंचती, ठीक उसी तरह जैसे कि विदेशी मोटर में बैठे विदेशी साहब को तो राश्ट्रपति भवन में जाना आसान है लेकिन एक देहाती को बैलगाड़ी में बैठ कर राश्ट्रपति भवन में घुसना मना है.

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की निगाह से देखें तो उसके दोनों हाथों में लड्डू हैं. जीत हो गई तो सोने में सुहागा, जीत न हुई तो नेताओं को पुराने कांगरेस वालों की तरह वाह-वाही तो मिलेगी ही. जहां तक नैतिक सवाल है उस में मौजूदा कांगरेस और प्रजा पार्टी क़रीब क़रीब एक से हैं. दोनों को ही नैतिकता में दिखावे का विश्वास है, दोनों ही आजकल के ग़लत ढांचे को बनाये रखते हुए सत्ता चाहते हैं. पर आज शासक होने के नाते कांगरेस को धन-बल क़ानून-बल, फ़ौज-बल सभी हासिल हैं. प्रजापार्टी शासितों में से है जिससे उसे कुछ जन-बल हासिल है पूरा नहीं. पूरा इसलिये नहीं क्यों कि सब पार्टियों में से वह भी एक पारटी है. सत्य और अहिंसा की कसौटी पर हम प्रजा पार्टी को कसें तो कांगरेस की तरह वह भी पूरी नहीं उतरती लेकिन इस पर फिर भी राजनीतिक दल पार्टी को शिकायत नहीं हो सकती.

जनता की निगाह से देखें तो दिल पसीज उठता है. जब हमने अख़बार में पढ़ा कि आदिवासी औरतों को जुरमाने की सज़ाएं दी गईं और जुरमाने के एवज़ में उनका घर द्वार क़ुर्क़ करने की आज्ञा तो हम सोचने लगे कि हम सन 1953 में रह रहे हैं या सौ दो सौ बरस पहले के ज़माने में. जिस कमाल के साथ, जिस शक्ति के साथ, जिस निश्ठा के साथ, पार्टी वालों ने हज़ारों की

نہیں ہے. اس لئے اس دیش میں ہر ستیہ گرہ دراگرہ
دیا جائے گا. شاید یہی مت بمبئی سرکار کا بھی
سکتا ہے کہ جب کوئی ونوبا جیسی ہستی
کرے تو ہماری سرکاریں شروع میں شاید اسے بھی
"کہیں، لیکن جب اس کے پیچھے لوگ شکتی
دیکھیں تو ممکن ہے سوچنے لگ جائیں. ایسا
کہ "اہنسا" کی دہائی دینے پر بھی ہماری
اہنسک قدم کی قدر نہیں کرتیں. معلوم ہوتا ہے
ہنسک قدم کا اثر ان پر زیادہ پڑتا ہے.

دکھ کی بات ہے کہ قانونی اور اہنساتمک راستوں کی
گنجائش دن پر دن کم ہوتی جا رہی ہے. اپنی اسمبلیوں
کی کاروائیوں کو دیکھیں تو پتا چلتا ہے کہ اسپیکر صاحب
ہر ٹیڑھے معاملے کو 'Out of order' (بحث کے باہر)
قرار دیکر گاڑی چلنا ناممکن کر دیتے ہیں. جب تعداد کے
بل پر سب کام چلتا ہے تو ورودھی کی نیک سے نیک
بات بھی نکمی مانی جاتی ہے. ہم ہنسک پردرشنوں
یا مار پیٹ کے ڈھنگ کی تائید نہیں کر رہے ہیں بلکہ
صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ عام طور سے جنتا کی آواز
سرکار کے کانوں تک نہیں پہونچتی، ٹھیک اسی طرح
جیسے کہ ودیشی موٹر میں بیٹھے ودیشی صاحب کو تو
راشٹرپتی بھون میں جانا آسان ہے لیکن ایک دیہاتی
کو بیل گاڑی میں بیٹھکر راشٹرپتی بھون گھسنا منع ہے.

پرجا سوشلسٹ پارٹی کی نگاہ سے دیکھیں تو اس کے
دونوں ہاتھوں میں لڈو ہیں. جیت ہو گئی تو سونے
میں سہاگا، جیت نہ ہوئی تو نیتاؤں کو پرانے کانگریس
والوں کی طرح واہ واہی تو ملے گی ہی. جہاں تک نیتک
سوال ہے اس میں موجودہ کانگریس اور پرجا پارٹی قریب
قریب ایک سے ہیں. دونوں کو ہی نیتکتا میں دکھاوے
کا وشواس ہے، دونوں ہی آج کل کے غلط ڈھانچے کو بنائے
رکھتے ہوئے ستا چاہتے ہیں. پر آج شاشک ہونے کے
ناطے کانگریس دھن، بل، قانون بل، فوج بل سبھی
حاصل ہیں. پرجا پارٹی شاسِتوں میں سے ہے جس سے اسے
کچھ جن بل حاصل ہے پورا نہیں. پورا اسی لئے نہیں
کیونکہ سب پارٹیوں میں سے وہ بھی ایک پارٹی ہے.
ستیہ اور اہنسا کی کسوٹی پر ہم پرجا پارٹی کو کسیں تو
کانگریس کو کی طرح وہ بھی پوری نہیں اترتی لیکن اس
پر پھر بھی راج نیتک دل پارٹی کو شکایت نہیں ہوسکتی.

جنتا کی نگاہ سے دیکھیں تو دل پسیج اٹھتا ہے.
جب ہم نے اخبار میں پڑھا کہ آدی واسی عورتوں کو جرمانے
کی سزائیں دی گئیں اور جرمانے کے عوض میں انکا گھر
بار قرق کرنے کی آگیاں تو ہم سوچنے لگے کہ ہم سن
1953 میں رہ رہے ہیں یا سو دو سو برس پہلے کے
زمانے میں. جس کمال کے ساتھ، جس شکتی کے
ساتھ، جس نشٹھا کے ساتھ پارٹی والوں نے ہزاروں کی

तादाद में ग़लत अगुवाई में या सही अगुवाई में अपने दुखड़े को ज़ाहिर किया है उस पर सहज में विश्वास कोई मुश्किल से ही करेगा. लेकिन यह घटना हमें बताती है जनता की छिपी हुई शक्ति की सम्भावनाओं को. उसके आगे सर झुक जाता है. आज भले इस जनता को कोई राज सत्ता के बल से दबा ले या राजनीति के नाम पर बहका ले, लेकिन कल नहीं तो परसों यह जनता अपना हक़ हासिल करके रहेगी.

दोनों मांगें

अब हम दोनों मांगों पर विचार करेंगे. जहां तक पहली मांग—जांच के लिये कमीशन बैठे—का सवाल है वह ठीक और सच्ची है चाहे सरकार यह विश्वास करती हो कि इस इलाक़े में भूमिहीन मज़दूरों की जो हालत है उसे सरकार ख़ूब जानती है, तब भी दोबारा जांच होने से कोई नुक़सान नहीं होने वाला है न मामला बिगड़ने का डर है. भले ही जांच-कमीशन दो रोज़ में रिपोर्ट दे दे कि 'हमें जानने के लायक़ कोई चीज़ नहीं मिली और सब चीज़ ठीक है, तो इस में न सरकार को कुछ घाटा होगा न उसकी शान पर बट्टा लगेगा. जब हज़ारों-लाखों रुपया सरकार फ़ालतू कमीशनों पर ख़र्च करती है जिनकी रिपोर्टों को केवल दीमक चाटा करते हैं तो महज़ इस छोटी सी जांच को क्यों इनकार करती है? सिर्फ़ अधिकार का मोह दीखता है.

दूसरी मांग है कि पांच हज़ार एकड़ ज़मीन सरकार लेकर किसानों को दे. नम्रता के साथ हम कहेंगे कि यह हमें ग़लत मालूम पड़ती है. ज़रा देर को मान लें कि यह बात मंज़ूर कर ली जाती है तो हम पूछते हैं कि 54,000 एकड़ में से कौन से 5000 या 5 एकड़ दोबारा बंटना चाहिये, कौन बांटेगा और किसको? उन दो सूरतों को जाने दें जब ज़मींदार ख़ुद ही राज़ी से ज़मीन दे दे या सरकार ज़बरदस्ती छीन ले. मामूली तौर से, 'क' की ज़मीन 'ख' को क्यों दी जाये? मान लीजिये 'क' उसका नाजायज़ मालिक है तब भी 'ख' को वह कैसे दी जाये जब तक यह न मालूम हो कि वह 'ख' की ही है? प्रजा-पार्टी ने यह तकलीफ़ नहीं की कि ज़मीन के किसी टुकड़े के—जिस पर अब ज़मींदार जम गया है—असली मालिक का पता चलाये. यूं ही किसी को दे देना कोई माने नहीं रखता. यह ज़रूर है कि ग़रीब 'ख' के पास जो अपनी ज़मीन थी वह जाती रही. लेकिन इस धकापेल में यह कोई नहीं जानता कि उसकी ज़मीन कहां है, कौन सी है. उसे अब अपनी ही ज़मीन दिलाने की हामी कोई नहीं भरता.

यहां हम यह भी कहेंगे कि बिना देखे-समझे 'सहकारी' नाम के ढंग पर ज़मीन बांटने के हम क़तई ख़िलाफ़ हैं.

تعداد میں غلط اگوائی میں یا یہ صحیح اگوائی میں اپنے دکھڑے کو ظاہر کیا ہے اس پر سہج میں وشواس کوئی مشکل سے ہی کرے گا۔ لیکن یہ گھٹنا ہمیں بتاتی ہے جنتا کی چھپی ہوئی شکتی کی سمبھاؤناؤں کو۔ اس کے آگے سر جھک جاتا ہے۔ آج بھلے اس جنتا کو کوئی راج ستتا کے بل سے دبا لے یا راج نیتی کے نام پر بہکا لے، لیکن کل نہیں تو پرسوں یہ جنتا اپنا حق حاصل کر کے رہے گی۔

دونوں مانگیں

اب ہم دونوں مانگوں پر وچار کریں گے۔ جہاں تک پہلی—مانگ جانچ کے لئے کمیشن بیٹھے--کا سوال ہے وہ ٹھیک اور سچی ہے چاہے سرکار یہ وشواس کرتی ہو کہ اس علاقے میں بھوم ہین مزدوروں کی جو حالت ہے اسے سرکار خوب جانتی ہے، تب بھی دو بارہ جانچ ہونے سے بھی کوئی نقصان نہیں ہونے والا ہے' نہ معاملہ بگڑنے کا ڈر ہے۔ بھلے ہی جانچ کمیشن دو روز میں رپورٹ دے دے کہ ہمیں جاننے کے لائق کوئی چیز نہیں ملی اور سب چیز ٹھیک ہے' تو اس میں نہ سرکار کو کچھ گھاٹا ہوگا' نہ اس کی شان پر بٹا لگے گا۔ جب ہزاروں لاکھوں روپیہ سرکار فالتو کمیشنوں پر خرچ کرتی ہے جن کی رپورٹوں کو کیول دیمک چاٹا کرتے ہیں تو اس محض چھوٹی سی جانچ کو کیوں انکار کرتی ہے؟ صرف ادھیکار کا موہ دکھتا ہے۔

دوسری مانگ ہے کہ پانچ ہزار ایکڑ زمین سرکار لے کر کسانوں کو دے۔ نمرتا کے ساتھ ہم کہیں گے کہ یہ ہمیں غلط معلوم پڑتی ہے۔ ذرا دیر کو مان لیں کہ یہ بات منظور کر لی جاتی ہے تو ہم پوچھتے ہیں کہ 54'000 ایکڑ میں سے کون سے 5'000 یا پانچ ایکڑ دوبارہ بٹنا چاہئے' کون بانٹے گا اور کس کو۔ اُن دو صورتوں کو جانے دیں جب زمیندار خود ہی راضی سے زمین دے دے یا سرکار زبردستی چھین لے۔ معمولی طور سے ' ک ' کی زمین ' کھ ' کو کیوں دی جائے؟ مان لیجئے ' ک ' اس کا ناجائز مالک ہے تب بھی ' کھ ' کو وہ کیسے دیا جائے جب تک یہ نہ معلوم ہو کہ وہ ' کھ ' کی ہی ہے؟ پرجا پارٹی نے یہ تکلیف نہیں کی کہ زمین کے کسی ٹکڑے کے—جس پر اب زمیندار جم گیا ہے—اصلی مالک کا پتہ چلائے۔ یونہی کسی کو دے دینا کوئی معنی نہیں رکھتا۔ یہ ضرور ہے کہ غریب ' کھ ' کے پاس جو اپنی زمین تھی وہ جاتی رہی۔ لیکن اس دھکا پیل میں یہ کوئی نہیں جانتا کہ اس کی زمین کہاں ہے' کون سی ہے۔ اسے اب اپنی ہی زمین دلانے کی حامی کوئی نہیں بھرتا۔

یہاں ہم یہ بھی کہیں گے کہ بنا دیکھے سمجھے سہکاری نام کے ڈھنگ پر' زمین بانٹنے کے ہم قطعی خلاف ہیں

एक किसान की भाषा में 'सहकारी' माने चोरी या जालसाज़ी. अगर प्रजापार्टी यह समझती है कि 'सहकारी' तौर पर खेती के लिये मजबूर करके वह किसानों का घाव भर देगी तो हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि वह ग़लती पर है. इससे ज़ियादा बेहतर यह होगा कि वह घाव खुला छोड़ दे और सूखने का मौक़ा दे. इसलिये 5,000 एकड़ की मांग ग़लत है क्योंकि यह किसान को उसकी अपनी असली ज़मीन नहीं दिलाती.

माना कि पार्टी में अनाज की कमी है. माना कि जहां घास होती है वहां ग़ल्ला हो सकता है. माना कि घास उगाई से बेरोज़गारी बढ़ी है. माना कि रईस ज़मींदारों ने ग़रीब किसानों को बेजा तौर पर दबाया है और बेदख़ल किया है. यह और इससे कहीं ज़ियादा बातें मानी जा सकती हैं. लेकिन अगर इस शैतानी चक्कर को तोड़ना था तो यह ठीक ठीक मालूम करना चाहिये था कि किस ज़मीन से कौन किसान बेदख़ल किया गया. यह जांच प्रजा पार्टी को चुपचाप ख़ुद करनी चाहिये थी. इस जानकारी के साथ, प्रजा पार्टी डंके की चोट पर किसी भी हकूमत से ललकार कर कह सकती थी कि जिसकी ज़मीन छीनी गई है उसे दे दो. हम 'हरिजन' सम्पादक की इस राय से इत्तफ़ाक़ करते हैं कि "सत्याग्रह किसी और ही ठोस चीज़ का बना होता है." पर इतना ज़रूर जोड़ देंगे कि वह चीज़ नापैद नहीं है. पार्टी के लोगों में वह मौजूद है. हो सकता उसे ठीक सोचे में ढाला न जा सका हो.

पार्टी और भूदान

अब हम इस आन्दोलन को भूदान की रोशनी में देखें. आया यह आन्दोलन भूदान की आत्मा के अनुकूल है या नहीं. इसका सही जवाब विनोबा ही दे सकते हैं. हम सिर्फ़ इतना कहेंगे कि जिस तरह यह बात नामुमकिन है कि पैर भी लें और पानी में भी न जाना पड़े. उसी तरह यह बात नामुमकिन है कि भूदान की कल्पना पर एक तरफ़ से अमल हो और दूसरी तरफ़ से उसे धिक्कारा जाय. क्योंकि भूदान ख़ुद ही सत्याग्रह है. अगर भूदान सत्याग्रह नहीं है तो हमें इससे कोई सरोकार नहीं और अगर भूदान नाकामयाब होता है तो सत्याग्रह भी नाकामयाब. लेकिन सत्याग्रह की तरह भूदान भी नाकामयाब हो ही नहीं सकता. यह ज़रूर है कि उस पर अमल करने में हम ग़लती कर जायं.

लेकिन जैसा हमने ऊपर कहा है कि प्रजा पार्टी को कोई यह उपदेश नहीं दे सकता कि वह भूदान की राह पर चले. कम से कम कांग्रेस वाले तो यह उपदेश नहीं दे सकते. प्रजा पार्टी को किसी भी आन्दोलन के उठाने और चलाने का पूरा अधिकार है. ऐसी हालत में भूदान का नाम लेने का सवाल

[کسان] کی بھاشا میں 'سہکاری' معنی چوری یا [جعل] سازی. اگر پرجا پارٹی یہ سمجھتی ہے کہ 'سہکاری' [طور پر] کھیتی کے لئے مجبور کرکے وہ کسانوں کا گھاؤ بھر دے [گی تو] ہم بڑے ادب کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ وہ غلطی [پر] ہے. اس سے زیادہ بہتر یہ ہوگا کہ وہ گھاؤ کو کھلا چھوڑ [دے] اور سوکھنے کا موقع دے. اس لئے 5'000 ایکڑ [کی] مانگ غلط ہے کیونکہ یہ کسان کو اسکی اپنی اصلی [زمین] نہیں دلاتی.

مانا کہ پارٹی اناج کی کمی ہے. مانا کہ جہاں گھاس [ہوتی] ہے وہاں غلہ ہو سکتا ہے. مانا کہ گھاس اگائی سے [بے] روزگاری بڑھی ہے. مانا کہ رئیس زمینداروں نے غریب [کسانوں] کو بیجا طور پر دبایا ہے اور بے دخل کیا ہے. یہ [اور] اس سے کہیں زیادہ باتیں مانی جا سکتی ہیں. لیکن [اگر] اس شیطانی چکر کو توڑنا تھا تو یہ ٹھیک ٹھیک [معلوم] کرنا چاہئے تھا کہ کس زمین سے کون کسان بے دخل [کیا گیا]. یہ جانچ پرجا پارٹی کو چپ چاپ خود کرنی [چاہئے] تھی. اس جانکاری کے ساتھ پرجا پارٹی ڈنکے کی [چوٹ] پر کسی بھی حکومت سے للکار کر کہہ سکتی تھی [کہ] جس کی زمین چھینی گئی ہے اسے دے دو. ہم ['ہریجن'] سمپادک کی اس رائے سے اتفاق کرتے ہیں کہ ["ستیاگرہ] کسی اور ہی ٹھوس چیز کا بنا ہوتا ہے." پر اتنا [ضرور] جوڑ دینگے کہ وہ چیز ناپید نہیں ہے. پارٹی کے لوگوں [میں] وہ موجود ہے. ہو سکتا ہے اسے ٹھیک سانچے میں [ڈھ]الا نہ جا سکا ہو.

پارٹی اور بھودان.

اب ہم اس آندولن کو بھودان کی روشنی میں دیکھیں. [آیا] یہ آندولن بھودان کی آتما کے انکول ہے یا نہیں. اس [کا صحیح] جواب ونوبا ہی دے سکتے ہیں. ہم صرف اتنا [کہیں] گے کہ جس طرح یہ بات ناممکن ہے کہ پیر [بھی] لیں اور پانی میں بھی نہ جانا پڑے. اسی طرح یہ [بات] ناممکن ہے کہ بھودان کی کلپنا پر ایک طرف سے [عمل] ہو اور دوسری طرف سے اسے دھتکارا جائے. کیونکہ [بھو]دان خود ہی ستیہ گرہ ہے. اگر بھودان ستیہ گرہ نہیں [ہے] تو ہمیں اس سے کوئی سروکار نہیں اور اگر بھودان [ناکام]یاب ہوتا ہے تو ستیہ گرہ بھی ناکامیاب. لیکن ستیہ گرہ [کی] طرح بھودان بھی ناکامیاب ہو ہی نہیں سکتا. یہ ضرور [ہے] کہ اس پر عمل کرنے میں ہم غلطی کر جائیں.

لیکن جیسا ہم نے اوپر کہا ہے کہ پرجا پارٹی کو کوئی [یہ] اپدیش نہیں دے سکتا کہ وہ بھودان کی راہ پر چلے. [کم سے] کم کانگریس والے تو یہ اپدیش نہیں دے سکتے. [پر]جا پارٹی کو کسی بھی آندولن کے اٹھانے اور چلانے کا پورا آدھیکار [ہے]. ایسی حالت میں بھودان کا نام لینے کا سوال

ही नहीं उठता क्योंकि कांगरेस उसकी जितनी भक्त है उतनी प्रजा ही पार्टी. अगर प्रजा पार्टी वालों का भूदान छोड़ना बुरा है तो बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर का यह कहना कम बुरा नहीं कि पार्डी वालों को दूसरी जगह भूमि दे दी जाय और बम्बई की ख़ातिर पार्डी में घास उगाई जाय. इसलिये आचार्य कृपलानी का यह कहना कि 'तीन हज़ार परिवारों को घर द्वार छुड़ा कर दूसरी तहसील में भेजने के मुक़ाबले कुछ ज़मींदारों का दूसरी जगह घास पैदा करना ज़ियादा आसान है,' एकदम जायज़ और खरी बात है. कांगरेस सरकार का यह कहना कि पार्डी में तो घास पैदा की जायगी और अनाज बाहर से आयगा निहायत बेजा बात है. इसका मतलब है कि भारत में कभी ज़रूरत के लायक़ अनाज हो सकता है न वह कभी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है. दूसरे लफ़्ज़ों में, हमारे देहाती धन्दे या ग्रामोद्योग हमेशा के लिये ख़तम हो चुके और देश की आर्थिक रचना की कुंजी परदेशियों के हाथ में ही रहेगी.

पार्डी के सारे मामले पर ग़ौर करने के बाद हम इन नतीजों पर पहुंचे हैं :

(1) भारत में हाकिम और जनता के बीच भयानक खाई बढ़ती चली जा रही है.

(2) मुट्ठी भर रईसों की ख़ातिर लाखों करोड़ों का चूसना लगातार जारी है.

(3) हमारी सरकार अंगरेज़ों की खड़ी की हुई आर्थिक रचना को बदस्तूर बनाये रखना चाहती है जिसका नतीजा होगा हमारे गांवों और गांव वालों की तबाही और उन्हें विदेशी या देशी पूंजीपतियों का मोहताज बनाना.

(4) राज काजी पार्टियां जनता के हित के बजाय अपनी झूठी शान के फेर में ज़ियादा हैं.

(5) गांधी के नाम से सार्वजनिक कार्यकर्ता अभी तक लोगों को मूर्ख बनाते हैं.

(6) अपने सार्वजनिक कामों में हमें स्वार्थ घेरे रहता है और हम 'चुनीं दीगरे नेस्त' के नशे में चूर रहते हैं.

(7) हमारी जनता अन्दर से शुद्ध और साबित है और ऊंची से ऊंची क़ुर्बानी कर सकती है गोकि उसकी मौजूदा आर्थिक हालत बयान के बाहर है.

आख़िर में अपने देश के सभी पार्टी वालों से हम कहना चाहते हैं कि यह राजनीतिक छुआछूत हम कब तक जारी रखेंगे. क्या हम सब—कांगरेसी, प्रजा सोशलिस्ट, कम्यूनिस्ट, जनसंघी, 'गांधीवादी' और जो भी हों—मिल बैठ कर इस देश को बनाने की, अपने सपनों को धरती पर उतारने की सूरत नहीं पैदा कर सकते ? हमारा विश्वास है कि पैदा कर सकते हैं क्योंकि हमारे देश की जनता जानदार है और उसे ज़िन्दा रहना और बढ़ना है.

—सुरेश रामभाई

ہی نہیں اُٹھتا کیونکہ کانگریس اُسکی جتنی بھگت ہے اُتنی ہی پرجا پارٹی ۔ اگر پرجا پارٹی والوں کا بھودان چھوڑنا برا ہے تو بمبئی کے چیف منسٹر کا یہ کہنا کم برا نہیں کہ پارڈی والوں کو دوسری جگہ بھومی دے دی جائے اور بمبئی کی خاطر پارڈی میں گھاس اُگائی جائے۔ اس لئے آچاریہ کرپلانی کا یہ کہنا ہے کہ 'تین ہزار پریواروں کو گھر دوار چھڑا کر دوسری تحصیل میں بھیجنے کے مقابلے کچھ زمینداروں کا دوسری جگہ گھاس پیدا کرنا زیادہ آسان ہے' ایک دم جائز اور کھری بات ہے ۔ کانگریس سرکار کا یہ کہنا کہ پارڈی میں تو گھاس پیدا کی جائے گی اور اناج باہر سے آئے گا نہایت بیجا بات ہے ۔ اس کا مطلب ہے کہ بھارت میں نہ کبھی ضرورت کے لائق اناج ہو سکتا ہے نہ وہ کبھی اپنے پیروں پر کھڑا ہو سکتا ہے. دوسرے لفظوں میں، ہماری دیہاتی دھندھے یا گرام اُدیوگ ہمیشہ کے لئے ختم ہو چکے اور دیش کی آرتھک رچنا کی کنجی پردیسیوں کے ہاتھ میں ہی رہے گی ۔

پارڈی کے سارے معاملے پر غور کرنے کے بعد ہم اِن نتیجوں پر پہونچے ہیں :

(i) بھارت میں حاکم اور جنتا کے بیچ بھیانک کھائی بڑھتی چلی جا رہی ہے ۔

(ii) مٹھی بھر رئیسوں کی خاطر لاکھوں کروڑوں کا چوسنا لگاتار جاری ہے ۔

(iii) ہماری سرکار انگریزوں کی کھڑی کی ہوئی آرتھک رچنا کو بدستور بنائے رکھنا چاہتی ہے' جس کا نتیجہ ہوگا ہمارے گاؤں اور گاؤں والوں کی تباہی اور اُنھیں ودیسی یا دیسی پونجی پتیوں کا محتاج بنانا ۔

(iv) راج کاجی پارٹیاں جنتا کی ہت کے بجائے اپنی جھوٹی شان کے پھیر میں زیادہ ہیں ۔

(v) گاندھی کے نام سے سارو جنک کارکرتا ابھی تک لوگوں کو مورکھ بناتے ہیں ۔

(vi) اپنے سارو جنک کاموں میں ہمیں سوارتھ گھیرے رہتا ہے اور ہم 'چنیں دیگرے نیست' کے نشے میں چور رہتے ہیں ۔

(vii) ہماری جنتا اندر سے شدھ اور ثابت ہے اور اونچی سے اونچی قربانی کر سکتی ہے گوکہ اِسکی موجودہ آرتھک حالت بیان کے باہر ہے ۔

آخر میں اپنے دیش کے سب ہی پارٹی والوں سے ہم کہنا چاہتے ہیں کہ یہ راج نیتک چھواچھوت کب تک جاری رکھیں گے. کیا ہم سب — کانگریسی' پرجا سوشلسٹ' کمیونسٹ' جن سنگھی' گاندھی وادی' اور جو بھی ہوں — مل بیٹھ کر اس دیش کو بنانے کی' اپنے سپنوں کو دھرتی پر اُتارنے کی صورت نہیں پیدا کر سکتے ؟ ہمارا وشواس ہے کہ پیدا کر سکتے ہیں کیونکہ ہمارے دیش کی جنتا جاندار ہے اور اسے زندہ رہنا اور بڑھنا ہے ۔

— سریش رام بھائی

शिराओं (नसों) का रोगी

एक प्रेम पत्र का अंश

[यहां मैं अली दश्ती के एक लेख के कुछ हिस्से का हिन्दी अनुवाद दे रहा हूं. यह 'फ़ितना' नाम के एक संग्रह से लिया गया है. लगभग दस साल पहले जब 'फ़ितना' पहली बार शाया हुआ था तो उस पर बहुत वाद विवाद खड़ा हो गया था. अब वह वाद-विवाद क़रीब क़रीब खतम हो रहा है.

इस में शक नहीं कि दश्ती आजकल की गद्य यानी नसर के ऊंचे से ऊंचे लेखकों में से हैं. उन्होंने बहुत चीज़ें लिखी हैं, जिन में से बहुत सी मशहूर रिसाले "शफ़क़े-सुर्ख़" में पहले पहले निकली थीं.

अली दश्ती की एक अलग शैली है जिस के वह उस्ताद माने जाते हैं. उनके कहने के ढंग में सादगी भी है और संगीत और लय भी हैं, बयान ऐसा जो आंखों के सामने तसवीर उतर आए और साथ ही ताज़ा ताज़ा उपमाएं यानी इस्तआरे भी. आजकल के दूसरे लेखकों की तरह उनकी आत्मा के अन्दर एक गहरा असन्तोश हिलोरें लेता है जिस से मजबूर हो कर वह अपने अन्दर देखने लगते हैं और मायूस हो जाते हैं.

आजकल की ईरानी जिन्दगी और ईरानी चरित्र को जिस सफ़ाई और लगभग निर्दय मंतिक़ के साथ उन्होंने दुनिया के सामने खोल कर रख दिया है उसकी वजह से लोगों ने उन पर बड़ी बड़ी टीका टिप्पनियां की हैं. लेकिन उनकी क़लम में इतनी शक्ति है कि दोस्त और दुशमन दोनों उनकी तारीफ़ और क़द्र करते हैं.—तारा चन्द]

डाक्टर साहब ठीक कहते हैं जब तक शिराओं में कसक है तब तक और सारे इलाजों से कुछ फ़ायदा नहीं. क्यों ! शिराएं ही तो बदन के सारे प्रधान अंगों को चलाती हैं.

पर इस वक़्त मेरे सामने यह सवाल कहां है कि शिराओं का इलाज करना चाहिये या नहीं. मैं मान भी लूं कि शिराओं का इलाज करना ही है तब भी यह बात तो रह ही जाती है कि हम जैसे शिराओं के रोगियों के लिये इलाज करना मुनासिब भी है या नहीं.

अगर शिराओं की तन्दुरुस्ती की यह कसौटी है कि आदमी को सब कुछ भला लगने लगे, किसी चीज़ से उलझन न हो, न किसी बात का असर हो और हो भी तो

شراؤں (نسوں) کا روگی

ایک پریم پتر کا انش

[یہاں میں علی دشتی کے ایک لیکھ کے کچھ حصے کا انوواد دے رہا ہوں ۔ یہ 'فتنہ' نام کے ایک سنگرہ سے لیا گیا ہے ۔ لگ بھگ دس سال پہلے جب 'فتنہ' پہلی بار شائع ہوا تھا تو اس پر بہت واد وواد کھڑا ہوگیا تھا ۔ اب وہ واد وواد قریب قریب ختم ہو رہا ہے ۔

اس میں شک نہیں کہ دشتی آجکل کی گدیہ یعنی نثر کے اونچے سے اونچے لیکھکوں میں سے ہیں ۔ انہوں نے بہت چیزیں لکھی ہیں' جن میں سے بہت سی مشہور رسالے "شفق سرخ" میں پہلے پہلے نکلی تھیں ۔

علی دشتی کی ایک الگ شیلی ہے جس کے وہ استاد مانے جاتے ہیں ۔ ان کے کہنے کے ڈھنگ میں سادگی بھی ہے اور سنگیت اور لے بھی ہیں' بیان ایسا جو آنکھوں کے سامنے تصویر اتر آئے اور ساتھ ہی تازہ تازہ اپمائیں یعنی اِستعارے بھی ۔ آجکل کے دوسرے لیکھکوں کی طرح ان کی آتما کے اندر ایک گہرا اسنتوش ہلوریں لیتا ہے جس سے مجبور ہوکر وہ اپنے اندر دیکھنے لگتے ہیں اور مایوس ہو جاتے ہیں ۔

آج کل کی ایرانی زندگی اور ایرانی چرتر کو جس صفائی اور لگ بھگ نردے منطق کے ساتھ انہوں نے دنیا کے سامنے کھول کر رکھدیا ہے اس کی وجہ سے لوگوں نے ان پر بڑی بڑی ٹیکا ٹپنیاں کی ہیں ۔ لیکن ان کے قلم میں اتنی شکتی ہے کہ دوست اور دشمن دونوں ان کی تعریف اور قدر کرتے ہیں ۔—تارا چند]

ڈاکٹر صاحب ٹھیک کہتے ہیں جب تک شراؤں میں کسک ہے تب تک اور سارے علاجوں سے کچھ فائدہ نہیں ۔ کیوں ! شرائیں ہی تو بدن کے سارے پردھان انگوں کو چلاتی ہیں ۔

پر اس وقت میرے سامنے یہ سوال کہاں ہے کہ شراؤں کا علاج کرنا چاہئے یا نہیں ۔ میں مان بھی لوں کہ شراؤں کا علاج کرنا ہی ہے تب بھی یہ بات تو رہ ہی جاتی ہے کہ ہم جیسے شراؤں کے روگیوں کے لئے علاج کرنا مناسب بھی ہے یا نہیں ۔

اگر شراؤں کی تندرستی کی کسوٹی ہے کہ آدمی کو سب کچھ بھلا لگنے نہ لگے' کسی چیز سے الجھن نہ ہو' نہ کسی بات کا اثر ہو اور ہو بھی تو

दिल में किसी तरह की कसमसाहट न हो, न लगाव पैदा हो न भावना, न दुख न शोक, न राग न द्वेष, तो ऐसी तन्दुरुस्ती से बीमारी क्या बुरी है ?

डाक्टर कहता है "अगर चाहते हो कि मिज़ाज तन्दुरुस्त रहे तो ज़रूरी है कि शिराओं को आराम दो. अगर शिराओं को आराम देना चाहते हो तो ऐसे काम मत करो जिन से सोच विचार का बोझ उठाना पड़े. न तो ऐसे लेख लिखो, न ऐसी किताबें पढ़ो जो भावों और जज़बों को भड़काने वाली हों, जिन से समझ पर ज़ोर पड़े. सच पूछो तो फ़िकर करना ही नहीं चाहिये और सब ऐसी बातों से जिन से क्लेश पैदा होता है दूर रहना चाहिये. चाहिये क्या ? ख़ूब खाओ, ख़ूब सोओ, खुली हवा में घूमो, कोशिश करो कि हंसी ख़ुशी में दिन कटें. न ऐसे गाने सुनो जिन में विलाप की धुन हो, न सिगरेट पियो न शराब, औरतों से बहुत मिलो जुलो मत, न खेल खिलवाड करो, पहली रात सो जाओ, सवेरे तड़के उठो, दस बारह मिनट वरज़िश करो, खाना खाने में किताब मत पढ़ो, खाने के बाद आध घंटा आराम करो ...." ख़ूब ! आपने देखा डाक्टर के हुक्म से कैसे आदमी का सारा जीवन ढोर डंगर का सा बन जाता है.

मान लिया हम जैसे रोगियों को इसी तरह रहना चाहिये पर क्या यह मुमकिन है ?

कहां हो सकता है कि ऊंची अनुभवी किताबों को, आत्मीयता और भाव से भरी कविता को, गहरे विचारों और दर्शन के सिद्धांतों को आदमी न पढ़े और इन की जगह यत्न करे चूहे बिल्ली की कहानियों, सिकन्दर-नामा, अमीर अरसलान या हुसेन क़ुर्द फ़िरंगी के क़िस्सों और मिशलज़वागो और पूलफ़वाल के नाविलों को पढ़े. लेकिन कोई बताए तो सही कैसे हो सकता है कि आदमी बुद्धि के पटों को बन्द कर के बैठा रहे.

आदमी चाहे भी कि साधारन मूर्खों की तरह अलहड़ हंसुआ जीवन बिताए पर यह कैसे भूल जाए कि ज़िन्दगी दुख और कष्ट से भरी है. ज़िन्दगी की नींव खींचतान और लड़ाई-झगड़े पर क़ायम हैं, जीवन का अंग अंग द्वेष, लालसा, ज़ुल्म और अत्याचार से बना है. क्योंकर हंसते खेलते ज़िन्दगी के दिन कटें ? माना बाज़ी लगाना अच्छा नहीं पर यह तो कहो पहाड़ सा वक़्त कैसे कटे ? उम्र का यह रास्ता क्यों कर तय हो ?

माना गहरा संगीत जिस में दुख की दास्तान भरी है और जो आत्मा को झंझोड़ने वाले राग सुनाता है न सुना जाए और कोशिश की जाए केवल चलते गाने, हिन्दी ठुमरियां, फ़िरन्गी फ़ौक्सट्रोट सुनें, लेकिन क्या बाग़ों के दरख़्तों की सरसराहट नहीं बताती कि दुनिया दुख की

دل میں کسی طرح کی کسمساہٹ نہ ہو، نہ لگاؤ پیدا نہ بھاؤنا، نہ دکھ نہ شوک، نہ راگ نہ دویش، تو ایسی تندرستی سے بیماری کیا بری ہے ؟

ڈاکٹر کہتا ہے ''اگر چاہتے ہو کہ مزاج تندرست رہے تو ضروری ہے کہ شراؤں کو آرام دو. اگر شراؤں کو آرام دینا چاہتے ہو تو ایسے کام مت کرو جن سے سوچ وچار کا بوجھ اٹھانا پڑے. نہ تو ایسے لیکھ لکھو نہ ایسی کتابیں پڑھو جو بھاؤں اور جذبوں کو بھڑکانے والی ہوں، جن سے سمجھ پر زور پڑے. سچ پوچھو تو فکر کرنا ہی نہیں چاہئے اور سب ایسی باتوں سے جن سے کلیش پیدا ہوتا ہے دور رہنا چاہئے. چاہئے کیا ؟ خوب کھاؤ، خوب سوؤ، کھلی ہوا میں گھومو، کوشش کرو کہ ہنسی خوشی میں دن کٹیں. نہ ایسے گانے سنو جس میں ولاپ کی دھن ہو، نہ سگریٹ پیو نہ شراب، عورتوں سے بہت ملو جلو مت، نہ کھیل کھلواڑ کرو، پہلی رات سو جاؤ، سویرے تڑکے اٹھو، دس بارہ منٹ ورزش کرو، کھانا کھانے میں کتاب مت پڑھو، کھانے کے بعد آدھ گھنٹہ آرام کرو...... '' خوب ! آپ نے دیکھا ڈاکٹر کے حکم سے کیسے آدمی کا سارا جیون ڈھور ڈنگر کا سا بن جاتا ہے.

مان لیا ہم جیسے روگیوں کو اسی طرح رہنا چاہئے پر کیا یہ ممکن ہے ؟

کہاں ہوسکتا ہے کہ اونچی انبھوی کتابوں کو، آتمیتا اور بھاؤ سے بھری کویتا کو، گہرے وچاروں اور درشن کے سدھانتوں کو آدمی نہ پڑھے اور ان کی جگہ یتن کرے چوہے بلی کی کہانیوں، سکندرنامہ، امیرارسلان یا حسین کرد فرنگی کے قصوں اور مشلز واگو اور پول فوال - کے ناولوں کو پڑھے. لیکن کوئی بتائے تو سہی کیسے ہوسکتا ہے کہ آدمی بدھی کے پٹوں کو بند کرکے بیٹھا رہے.

آدمی چاہے بھی کہ سادھارن مورکھوں کی طرح الہڑ ہنسوا جیون بتائے پر یہ کیسے بھول جائے کہ زندگی دکھ اور کشٹ سے بھری ہے. زندگی کی نیو کھینچ تان اور لڑائی جھگڑے پر قائم ہے، جیون کا انگ انگ دویش، لالسا، ظلم اور اتیاچار سے بنا ہے. کیونکر ہنستے کھیلتے زندگی کے دن کٹیں ؟ مانا بازی لگانا اچھا نہیں پر یہ تو کہو پہاڑ سا وقت کیسے کٹے ؟ عمر کا یہ راستہ کیونکر طے ہو ؟

مانا گہرا سنگیت جس میں دکھ کی داستان بھری ہے اور جو آتما کو جھنجھوڑنے والے راگ سناتا ہے نہ سنا جائے اور کوشش کی جائے کیول چلتے گانے، ہندی ٹھمریاں، فرنگی فاکس ٹراٹ سنیں، لیکن کیا باغوں کے درختوں کی سرسراہٹ نہیں بتاتی کہ دنیا دکھ کی

पहेली है ? क्या झरनों के गिरते पानी की आवाज़ वातावरन को निराशा की फ़रयाद से आकुल नहीं करती ?

इनसान सिगार के धुंए न उड़ाए, शराब के प्याले न पिये, यानी सदा रूखी घटनाओं से जीवन के आतंकों का सामना करता जाए और इस नशे को जो कुछ घड़ियों के लिए दुनिया को भुला देता है और तबीयत को शांत कर देता है हाथों से खो दे ?

रात को जब दुनिया अंधेरे का मायावी भेस पहन कर जीवन की सुन्दरता को उजागर करती है आदमी को चाहिए कि पालतू मुर्गी की तरह दरबे में जाकर सो जाए. क्यों ? इसलिये कि सवेरे तड़के जैसे ही आंख खुले इस बेसिर पैर के सूरज पर निगाह डाले जो हर रोज़ पूरब में क्षितिज के ऊपर उठ कर इस दो टांगों वाले जानवर को इस बात की इजाज़त देता है कि पिछले दिन के पापों और शरारतों के सिलसिले को फिर से जारी करे. सचमुच आदमी को बड़ी ही मेहनत की ज़रूरत है डाक्टर बनने के लिये और अक़्ल से हाथ धोने के लिये. बहुत ख़ूब! डाक्टर साहब का हुक्म है औरत ज़ात से जो दया और भाव, सरूप और करुना की निगाह से इस सृष्टि का हंसता खिलता फूल है मेल जोल मत करो. पर क्या ऐसा हो सकता है कि तुम्हें न देखूं और अगर न भी देखूं तो तुम्हारा ध्यान न करूं ? यत्न करूं की दिल में तुम्हारा चित्र ही न आए. पर फिर सपनों का क्या इलाज करूं ? जिस वक़्त तुम्हारी सुन्दर आंखें आसमान की दो खिड़कियों की तरह आदमी के सामने खुलें तो बताओ आदमी के अख़तियार में क्या रह जाता है ?

और अगर फ़र्ज़ कर लूं कि जीवन के आकाश में तुम्हारी आंखों का सितारा नहीं चमकता तो फिर यह क्यों ज़रूरी है कि ऐसे जीवन की रक्षा के लिये कष्ट और संकट उठा कर डाक्टर साहब का हुकम माना जाए ?

डाक्टर कहता है शिराओं के लिये सकून की हालत ज़रूरी है और उन सब चीज़ों से परहेज़ ज़रूरी है जो उथल पुथल और हलचल पैदा करती हैं. मगर मेरी समझ में नहीं आता कि जो चीज़ें हलचल पैदा करती हैं क्यों मुझे अच्छी लगती हैं और फिर क्या जीवन अच्छे लगने और सुख भोगने के अलावा और भी कुछ चीज़ है ?

डाक्टरों को भी क्या ज़िद है कि बीमार की तबियत के ख़िलाफ़ ही हुकुम देते हैं. मुझे अच्छी तरह याद है पुराने हकीम हमेशा बीमारों के खाने के लिये किशनीज़ (धनिया) का शोरबा और नख़ुद आब (चने का पानी) बताया करते थे और जो ज़ियादा मेहरबान हुए तो चावल और अंडे की आज्ञा दे देते थे. बीमार की बात ही क्या

؟ کیا جھرنوں کے گرتے پانی کی آواز واتاورن
ی فریاد سے آکول نہیں کرتی ؟

ان سگار کے دھوئیں نہ اڑائے، شراب کے پیالے نہ
نی سدا روکھی گھٹناؤں سے جیون کے آتنکوں کا
کرتا جائے اور اس نشے کو جو کچھ گھڑیوں کے لئے
بھلا دیتا ہے اور طبیعت کو شانت کردیتا ہے
سے کھودے ؟

کو جب دنیا اندھیرے کا مایاوی بھیس پہنکر
کی سندرتا کو اجاگر کرتی ہے آدمی کو چاہئے کہ
رغی کی طرح دربے میں جاکر سو جائے ۔ کیوں ؟
کہ سویرے تڑکے جیسے ہی آنکھ کھلے اس بے سر
سورج پر نگاہ ڈالے جو ہر روز پورب میں چھتج کے
اٹھکر اس دو ٹانگوں والے جانور کو اس بات کی اجازت
کہ پچھلے دن کے پاپوں اور شرارتوں کے سلسلے کو
جاری کرے ۔ سچ مچ آدمی کو بڑی ہی محنت کی
ے، ڈاکٹر بننے کے لئے اور عقل سے ہاتھ دھونے کے لئے۔
ب! ڈاکٹر صاحب کا حکم ہے عورت ذات سے جو دیا
روپ اور کرونا کی نگاہ سے اس سرشٹی کا ہنستا
ول ہے میل جول مت کرو۔ پر کیا ایسا ہوسکتا
مہیں نہ دیکھوں اور اگر نہ بھی دیکھوں تو تمہارا
کروں؟ یتن کروں کہ دل میں تمہارا چترہی نہ
پر پھر سپنوں کا کیا علاج کروں؟ جس وقت تمہاری
آنکھیں آسمان کی دو کھڑکیوں کی طرح آدمی کے
کھلیں تو بتاؤ آدمی کے اختیار میں کیا رہ جاتاہے؟

اور اگر فرض کرلوں کہ جیون کے آکاش میں تمہاری
کا ستارا نہیں چمکتا تو پھر یہ کیوں ضروری ہے
جیون کی رکشا کے لئے کشٹ اور سنکٹ اٹھا کر
صاحب کا حکم مانا جائے ؟

ڈاکٹر کہتا ہے شراؤں کے لئے سکون کی حالت ضروری
ان سب چیزوں سے پرہیز ضروری ہے جو اتھل پتھل
ہل چل پیدا کرتی ہیں۔ مگر میری سمجھ میں
آتا کہ جو چیزیں ہل چل پیدا کرتی ہیں کیوں
اچھی لگتی ہیں اور پھر کیا جیون اچھے لگنے اور
کے علاوہ اور بھی کچھ چیز ہے ؟

ڈاکٹروں کو بھی کیا ضد ہے کہ بیمار کی طبیعت کے
خلاف ہی حکم دیتے ہیں۔ مجھے اچھی طرح یاد ہے
حکیم بیماروں کے کھانے کے لئے کشنیز (دھنیا) کا
اور نخود آب (چنے کا پانی) بتایا کرتے تھے اور جو
مہربان ہوئے تو چاول اور انڈے کی آگیاں
دیتے تھے ۔ بیمار کی بات ہی کیا

है कौन भला चंगा आदमी जिसे अच्छी भूक लगती है ऐसे खाने को पसन्द करेगा. इस मामले में नये फिरंगी डाक्टर कुछ कम नहीं हैं. मैंने तो अपने ही को देखा है, जी यही चाहता है कि डाक्टर के हुकुम के ठीक खिलाफ काम करूं.

मेरी शिराओं को तो चाबुक की ज़रूरत है. मुझ से यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि बिलकुल सकून और शान्ति का ठंडा जीवन व्यतीत करूं. मुझे तो चैन जब पड़ता है और सुख का अनुभव उस समय होता है जब मेरी शिराओं में ज़ोर से उथल पुथल हो. नहीं तो एक मुरदा आदमी की तरह ज़िन्दगी निकम्मी और आशा हीन लगने लगती है.

कल रात ऐसी ही दशा थी. खाने को भूक नहीं थी. किताब पढ़ते पढ़ते थक गया था. इसलिये कि मेरे पास ऐसी किताब नहीं थी जो मेरी शिराओं को भड़का सकती और आदमी को उसकी फीकी ज़िन्दगी से छुटकारा दिलाती. सिनेमा या तो देखे हुए थे या मेरे लिये दिलचस्पी से खाली थे. उससे पहली रात खूब जुए में बाज़ी लगाई थी और हारा भी खूब था और आज कुछ मन हटा सा था. सच्ची बात यह है कि फ़िज़ूल इधर उधर घूमने में मेरा जी नहीं लगता. प्रकृति के नज़ारे मुझे बहुत भले लगते हैं, लेकिन प्रकृति तो उस गोल थाली के समान है जिस का काम है आदमी की सारी भूकों की तालिका को घेरे में बन्द रखे. ग़रज़ यह है कि मुझे किसी चीज़ की ख्वाहिश नहीं थी, न कहीं जाना था और न कोई काम था. करने को कुछ होता तो शायद समय के बीतने का अनुभव न होता. आशाओं और इच्छाओं से शिराओं को सकून था. खुलासा यह कि हालत ऐसी ही थी जैसी डाक्टरों की फ़रमाइश है. निरार्थी, निर्जीव, हारा, थका, सुन्न, दुर्घटनाओं के हाथों बार बार चोटें खाते जीवन उदास और उजाड़ था.

रात का पहला पहर था, पूनो का चांद सोने के थाल के समान क्षितिज से ऊपर उठ चुका था. इसे देखते ही मेरे दिल में बेअख्तियार तुम्हारे दर्शन की अभिलाषा जागी. जैसे ही दिल में ख़याल आया तुम से मिलने चलूं सारी अलकसाहट, सारी पीड़ा और थकान दूर हो गई. तुम्हारे पास पहुंचा तो जीवन उल्लास और आनन्द से भरपूर था. जैसे मेरा दिल प्रेम से छलकता था वैसे ही तुम्हरा घर चांद के उजाले से जगमग था. तुम्हारे मुखड़े का निखार इच्छा और आशा से भरी रातों की तरह रौशन था. तुम्हारी आंखों में सुख का संदेस और मेरे दिल में अभिलाषा की तड़प लहरें लेती थीं.

फिर साधारन इधर उधर की बातों में बह गया. वह सब बातें जिन्हें इच्छाओं की सुगन्ध से भरी रातों में

ہے. کون بھلا چنگا آدمی جسے اچھی بھوک لگتی ہے ایسے کھانے کو پسند کرے گا . اس معاملے میں نئے فرنگی ڈاکٹر کچھ کم نہیں ہیں . میں نے تو اپنے ہی کو دیکھا ہے' جی یہی چاہتا ہے کہ ڈاکٹر کے حکم کے ٹھیک خلاف کام کروں .

میری شراؤں کو تو چابک کی ضرورت ہے . مجھ سے یہ ہرگز نہیں ہو سکتا کہ بالکل سکون اور شانتی کا ٹھنڈا جیون وتیت کروں . مجھے تو چین جب پڑتا ہے اور سکھ کا انوبھو اس سمے ہوتا ہے جب میری شراؤں میں زور سے اتھل پتھل ہو . نہیں تو ایک مردہ آدمی کی طرح زندگی نکمی اور آشاہین لگنے لگتی ہے .

کل رات ایسی ہی دشا تھی . کھانے کو بھوک نہیں تھی. کتاب پڑھتے پڑھتے تھک گیا تھا . اس لئے کہ میرے پاس ایسی کتاب نہیں تھی جو میری شراؤں کو بھڑکا سکتی اور آدمی کو اسکی پھیکی زندگی سے چھٹکارا دلاتی. سنیما یا تو دیکھے ہوئے تھے یا میرے لئے دلچسپی سے خالی تھے . اس سے پہلی رات خوب جوئے میں بازی لگائی تھی اور ہارا بھی خوب تھا اور آج کچھ من ہٹا سا تھا . سچی بات یہ ہے کہ فضول ادھر ادھر گھومنے میں میرا جی نہیں لگتا . پرکرتی کے نظارے مجھے بہت بھلے لگتے ہیں لیکن پرکرتی تو اس گول تھالی کے سمان ہے جس کا کام ہے آدمی کی ساری بھوکوں کی تالکا کو گھیرے میں بند رکھے . غرض یہ ہے کہ مجھے کسی چیز کی خواہش نہیں تھی' نہ کہیں جانا تھا اور نہ کوئی کام تھا . کرنے کو کچھ ہوتا تو شاید سمے کے بیتنے کا انوبھو نہ ہوتا . آشاؤں اور اچھاؤں سے شراؤں کو سکون تھا . خلاصہ یہ کہ حالت ایسی ہی تھی جیسی ڈاکٹروں کی فرمائش ہے. نرارتھی' نرجیو' ہارا' تھکا' سن' درگھٹناؤں کے ہاتھوں بار بار چوٹیں کھاتے جیون اداس اور اجاڑ تھا .

رات کا پہلا پہر تھا. پونو کا چاند سونے کے تھال کے سمان چھتج سے اوپر اٹھ چکا تھا . اسے دیکھتے ہی میرے دل میں بے اختیار تمہارے درشن کی ابھلاشا جاگی . جیسے ہی دل میں خیال آیا تم سے ملنے چلوں ساری الکساہٹ' ساری پیڑا اور تھکان دور ہو گئی . تمہارے پاس پہنچا تو جیون الاس اور آنند سے بھر پور تھا . جیسے میرا دل پریم سے چھلکتا تھا ویسے ہی تمہارا گھر چاند کے اجالے سے جگ مگ تھا . تمہارے مکھڑے کا نکھار اچھا اور آشا سے بھری راتوں کی طرح روشن تھا . تمہاری آنکھوں میں سکھ کا سندیس اور میرے دل میں ابھلاشا کی تڑپ لہریں لیتی تھیں .

پھر سادھارن ادھر ادھر کی باتوں میں بہہ گیا . وہ سب باتیں جنہیں اچھاؤں کی سوگندھ سے بھری راتوں میں

तुम से कहने के लिये सोचा था भूल गया. वह सारे गीत जो हरियाली डालियों और निथरी नदियों से तुम्हारे कानों को सुनाने के लिये सीखे थे मेरे होंठों पर थम कर मुरदा हो गए. क्यों तुम्हारे आकांक्षा से भरे होंठ, प्रेम को जगाने वाली तुम्हारी आंखों ने इन से कहीं सुन्दर गीत, इनसे कहीं ज़ियादा दिल को खेंचने वाले राग अलापने शुरू कर दिये.

यह ठीक है कि उस रात नींद को मेरी आंखों से प्यार नहीं था. उस वक़्त से जब तुम से जुदा हुआ, उस वक़्त तक कि चांद अकेला पच्छिमी क्षितिज की राह पर घूमता था मेरी आंखों के पलक चलते रहे. मेरा बिस्तर मेरी अभिलाषाओं से भरे तड़पते दिल की आग से गरम था. लेकिन चारा क्या था? क्या इससे गहरे, इससे मीठे लम्बे सपने मेरी राह नहीं देख रहे थे?

इस रात मैं नहीं सोया और इस समय तक जब मुर्ग़ों की ऊंची बांग दूर से सुनाई दी और अलबुर्ज़ की चोटियां ऊषा की मुसकराहट से सफ़ेद हुईं तुम्हारे सोच में, तुम्हारे ध्यान में डूबा रहा. अमीर ख़ुसरो का शेर है :—

गर जमाले यार नबुवद बाख़यालश हम ख़ुशेम
ख़ानए दरवेश रा शमए बह अज़ महताब नेस्त ॥

यार के दर्शन न सही मैं उसके ख़याल से ही ख़ुश हूं. फ़क़ीर के घर के लिये चांदनी से बढ़ कर किसी दीपक की रौशनी नहीं है.

आज जब नींद से आंख खुली और फिर उस गंदले मटियाले आसमान पर निगाह पड़ी देखा उसकी धुंधली रौशनी फ़ौलादी तलवार की तरह सूखी रस प्रेम हीन मेरे सर पर अपनी छाया डाल रही है. मुझे पछतावा भी नहीं है क्योंकि मुद्दत से इस आसमान को देख रहा हूं. मुझे वह एक रात याद है जो उम्मीद के तारों से चमक रही थी, जो रंगीले सपनों के रंग से रची हुई थी. वह रात जिसमें अभिलाषा और अकांक्षाओं की छाया फैली थी, वह एक रात थी जब मेरे भाग जागे थे जब भावों का वेग और तमन्नाओं का ताप मेरे हृदय को गरमा रहा था, वह रात थी जो इस वेअर्थ जीवन के फीके, बीते, सैकड़ों दिनों और रातों का बनाव सिंगार थी.

आज अगर मैं मुरदे के समान थका मांदा बिस्तर में पड़ा हूं, हरज क्या है? जीवन बिना रस के और है ही क्या. क्या वह एक घड़ी जो कल रात मैंने तुम्हारे साथ बिताई सैंकड़ों शताब्दियों से बढ़ कर न थी?

کہنے کے لئے سوچا تھا بھول گیا۔ وہ سارے
گیت جو ہریالی ڈالیوں اور نتھری ندیوں سے تمہارے کانوں
کو سنانے کے لئے سیکھے تھے میرے ہونٹوں پر تھم کر
مردہ ہو گئے۔ کیوں تمہارے آکانشا سے بھرے ہونٹ، پریم
کو جگانے والی تمہاری آنکھوں نے ان سے کہیں سندر
گیت، ان سے کہیں زیادہ دل کو کھینچنے والے راگ الاپنے
شروع کر دئے۔

یہ ٹھیک ہے کہ اس رات نیند کو میری آنکھوں سے پیار
نہیں تھا۔ اس وقت سے جب تم سے جدا ہوا، اس وقت
تک کہ چاند اکیلا پچھمی چھتج کی راہ پر گھومتا تھا
میری آنکھوں کے پلک چلتے رہے۔ میرا بستر میری
ابھلاشاؤں سے بھرے تڑپتے دل کی آگ سے گرم تھا۔ لیکن
چارا کیا تھا؟ کیا اس گہرے، اس سے میٹھے لمبے سپنے
میری راہ نہیں دیکھ رہے تھے؟

اس رات میں نہیں سویا اور اس سمے تک جب
مرغوں کی اونچی بانگ دور سے سنائی دی اور البرز کی
چوٹیاں اوشا کی مسکراہٹ سے سفید ہوئیں تمہارے
سوچ میں، تمہارے دھیان میں ڈوبا رہا۔ امیر خسرو کا
شعر ہے:—

گر جمال یار نبودیا خیالش هم خوشیم
خانه درویش را شمعے به از مهتاب نیست

یار کے درشن نہ سہی میں اس کے خیال سے ہی
خوش ہوں۔ فقیر کے گھر کے لئے چاندنی سے بڑھکر کسی
دیپک کی روشنی نہیں ہے۔

آج جب نیند سے آنکھ کھلی اور پھر اس گندلے مٹیالے
آسمان پر نگاہ پڑی دیکھا اسکی دھندلی روشنی فولادی
تلوار کی طرح سوکھی رس پریم ہین میرے سر پر اپنی
چھایا ڈال رہی ہے۔ مجھے پچھتاوا بھی نہیں ہے کیوں
کہ مدت سے اس آسمان کو دیکھ رہا ہوں۔ مجھے وہ ایک
رات یاد ہے جو امید کے تاروں سے چمک رہی تھی۔ جو
رنگیلے سپنوں کے رنگ سے رچی ہوئی تھی وہ رات جس
میں ابھلاشا اور آکانشاؤں کی چھایا پھیلی تھی، وہ ایک
رات تھی جب میرے بھاگ جاگے تھے جب بھاؤں کا ویگ
اور تمناؤں کا تاپ میرے ہردے کو گرما رہا تھا، وہ رات
تھی جو اس بے ارتھ جیون کے پھیکے، بیتے، سیکڑوں دنوں
اور راتوں کا بناؤ سنگار تھی۔

آج اگر میں مردے کے سمان تھکا ماندا بستر میں پڑا
ہوں، حرج کیا ہے؟ جیون بنا رس کے اور ہے ہی کیا۔ کیا
وہ ایک گھڑی جو کل رات میں نے تمہارے ساتھ بتائی
سیکڑوں شتابدیوں سے بڑھکر نہ تھی؟

मंदिर का दीप

(श्री अखिलन)

नारियल के बाग़ के पास की झोंपड़ी में बाहर की तरफ़ शामीन खटिया पर बैठा था. खाट की रस्सी जर जर हो के इधर उधर लटक रही थी. उम्मीद और घबराहट की मिली जुली कैफ़ियत उसे तराज़ू के कांटे की तरह दोनों तरफ़ हिला डुला रही थी.

बुढ़िया बाहर आई. उसके सूखे छितरे बाल हवा में लहरा रहे थे. वह बोली, "किसी न किसी तरह आज हो ही जायगा शामु, शाम होते होते बच्चा होगा, नहीं तो आज रात को ज़रूर......"

अन्दर से कभी कभी रुक रुक कर दर्द की आवाज़ सुनाई दे रही थी.

"किसी न किसी तरह थोड़ा सा मिट्टी का तेल ले आओ, रात भर दिया तो जले" बुढ़िया ने कहा.

"मिट्टी का तेल कहां से लाऊं?......रेंडी का तेल डाल कर दिया जलाओ, वह भी न हो......कहो कहीं से मूंग-फली का तेल मांग लाऊं?" शामीन ने उत्तर दिया.

ज़ोर की हवा चल रही है. दिया बुझ जाएगा. पिल्ले के पास जाओ! घर की परिस्थिति बता कर इसी लालटेन में थोड़ा सा तेल भर लाओ. तेल देना उसके हाथ में है. घर वाली के दर्द की बात कहोगे तो वह ज़रूर आज रात भर के लिये तेल दे देगा, बुढ़िया ने सुझाव रखा.

लालटेन, जिस पर धूल जमी हुई थी बुढ़िया ने उसे साफ़ किया और टूटे कांच को किसी न किसी तरह पट्टी लगा कर लालटेन पर जोड़ा. फिर शामीन को उसे थमाया. शामीन उसे लेकर झोंपड़ी के अन्दर घुसा और मटके से कुछ पैसे लेकर गांठ में बांधता हुआ वह बाहर चला गया.

जब से मिट्टी के तेल का क़हत पड़ा था तब से शामीन की झोपड़ी में रोशनी न होती थी. कहा जाता है कि पुराने ज़माने के जैन लोग अन्धेरा होने से पहले ही अपना सारा काम पूरा कर के लेट जाया करते थे. शामीन का घर इस मामले में जैन धर्म को अपना चुका था. ज़रूरत पड़ने पर ही मिट्टी का दिया और रेंडी का तेल काम में लाया जाता था. पर रेंडी का दिया चन्द मिनटों में ही ख़तम हो जाता था. नारियल के बाग़ की हवा जो आन्धी की तरह तेज़ थी छप्पर के छेदों से हो कर दीप के पास आ कर प्यार से पुचकारने लगती थी. इस प्रम का नतीजा रात के अन्धयारी में निकलता था.

مندر کا دیپ

(شری اکھلن)

ناریل کے باغ کے پاس کی جھونپڑی میں باہر کی طرف شامین کھٹیا پر بیٹھا تھا. کھاٹ کی رسی جر جر ہو کے اِدھر اُدھر لٹک رہی تھی. اُمید اور گھبراہٹ کی ملی جلی کیفیت اُسے ترازو کے کانٹے کی طرح دونوں طرف ہلا ڈلا رہی تھی.

بڑھیا باہر آئی . اُس کے سوکھے چھترے بال ہوا میں لہرا رہے تھے. وہ بولی—"کسی نہ کسی طرح آج ہو ہی جائے گا شامو، شام ہوتے ہوتے بچہ ہوگا، نہیں تو آج رات کو ضرور......"

اندر سے کبھی کبھی رک رک کر درد کی آواز سنائی دے رہی تھی. "کسی نہ کسی طرح تھوڑا سا مٹی کا تیل لے آؤ، رات بھر دیا تو جلے" بڑھیا نے کہا.

"مٹی کا تیل کہاں سے لاؤں؟......ریڈی کا تیل ڈال کے دیا جلاؤ، وہ بھی نہ ہو......کہو کہیں سے مونگ پھلی کا تیل مانگ لاؤں؟" شامین نے اُتر دیا.

"زور کی ہوا چل رہی ہے. دیا بجھ جائے گا. پلے کے پاس جاؤ! گھر کی پرستھتی بتا کر اِسی لالٹین میں تھوڑا سا تیل بھرا لاؤ. تیل دینا اُس کے ہاتھ میں ہے. گھر والی کے درد کی بات کہوگے تو وہ ضرور آج رات بھر کے لئے تیل دے دے گا" بڑھیا نے سجھاؤ رکھا.

لالٹین، جس پر دھول جمی ہوئی تھی بڑھیا نے اُسے صاف کیا اور ٹوٹے کانچ کو کسی نہ کسی طرح پٹی لگا کر جوڑا. پھر شامین کو اُسے تھمایا. شامین اُسے لے کر جھونپڑی کے اندر گھسا اور مٹکے سے کچھ پیسے لے کر گانٹھ میں باندھتا ہوا وہ باہر چلا گیا.

جب سے مٹی کے تیل کا قحط پڑا تھا تب سے شامین کی جھونپڑی میں روشنی نہ ہوتی تھی. کہا جاتا ہے کہ پرانے زمانے کے جین لوگ اندھیرا ہونے کے پہلے ہی اپنا سارا کام پورا کرکے لیٹ جایا کرتے تھے. شامین کا گھر اِس معاملے میں جین دھرم کو اپنا چکا تھا. ضرورت پڑنے پر ہی مٹی کا دیا اور ریڈی کا تیل کام میں لایا جاتا تھا. پر ریڈی کا دیا چند منٹوں میں ہی ختم ہو جاتا تھا. ناریل کے باغ کی ہوا جو آندھی کی طرح تیز تھی چھپر کے چھیدوں سے ہو کر دیپ کے پاس آ کر پیار سے پچکارنے لگتی تھی. اِس پریم کا نتیجہ رات کی اندھیاری میں نکلتا تھا.

शामीन पिल्ले की दुकान पर गया. वह वहां पर नहीं थे. शामीन ने दुकान के मुनीम से अपनी राम कहानी सुनाई और थोड़ा सा तेल देने की प्रार्थना की. पर बेचारा मुनीम क्या करता! उसने शामीन से हमदर्दी जाहिर की पर अपने मालिक की इजाज़त के बग़ैर उसे तेल देने की हिम्मत नहीं हुई.

"मालिक के पास जा कर मांगो! इजाज़त मिल जाए तो थोड़ा सा क्या एक बोतल तेल तुम्हें दे दूंगा." मुनीम ने कहा.

"पैसा दूंगा, मुफ़्त नहीं मांगता, फिर क्यों दौड़ाते हैं, ऐहसान जताते हैं, मैं भीक नहीं मांगता हूं" वह मन ही मन भुनभुनाता पिल्ले के घर की तरफ़ चल पड़ा.

दुकान पर कई लोग आए और चले गए. कुछ तो राशन कार्ड (Ration Card) भी लाए और कुछ वह भी नहीं. पर वह कौन थे? बड़े घरों के नौकर, हाकिमों के चपरासी, पिल्ले के जाने पहचाने लोग, ज़ियादा पैसे दे कर खरीदने वाले ज़रूरतमंद. छोटी बड़ी 'टीनों' में तेल ले कर वह चले गए. लेकिन ज़रा से तेल के लिये शामीन खड़ा रहा, इन्तज़ार करता रहा, मिन्नत समाजत करता रहा.

अरुनापालम पिल्ले उस गांव के करोसिन तेल के ठेकेदार हैं. लड़ाई के ज़माने में भगवान ने चावल, लकड़ी कपड़ा, चीनी, लोहा, सिमेन्ट के रूप में अपने भगतों के यहां औतार लिया था और उन्हें अमीर बनाया था. उसी भगवान ने अरुनापालम पिल्ले के यहां करोसिन तेल के रूप में औतार लिया था. उस दिन पिल्ले के यहां कोई जश्न या त्यौहार मनाया जा रहा था. इसीलिये ख़ास इन्तज़ाम किया गया था. वह दो मंज़िले मकान के बाहर चबूतरे पर बैठे नौकरों को हुकम दे रहे थे. दूसरी तरफ़ बिजली के लट्टुओं पर लगने वाले कई सौ "शेड" पड़े हुए थे. हर शेड पर एक आदमी कुछ लिख रहा था. शामीन ने आ कर प्रनाम किया. उसने अपनी दर्दनाक दास्तान सुनानी शुरू की. पिल्ले ने एक तरफ़ मुंह फेर लिया.

"दर्द से मेरी घर वाली तड़प रही है. आज रात भर लालटेन जलाना है. मेहरबानी कीजिये, चार आने का तेल दे दीजिये. मैं उम्र भर आपका ऐहसान मानूंगा." उसने बहुत गिड़गिड़ा कर कहा और टेंट से पैसा निकाल कर पिल्ले की तरफ़ बढ़ाया.

"तुम्हारी चव्वनी किसे चाहिये? यहां नाक में दम है......राशन कार्ड वालों के लिये कमी पड़ गई है. तुम को पाव बोतल तेल कहां से दे दूं. तेल की एक बूंद भी नहीं मिलेगी" अरुनापालम पिल्ले ने जवाब दिया.

شامین پلے کی دوکان پر گیا ۔ وہ وہاں پر نہیں تھے ۔ شامین نے دوکان کے منیم سے اپنی رام کہانی سنائی اور تھوڑا تیل دینے کی پرارتھنا کی ۔ پر بے چارا منیم کیا کرتا ۔ اس نے شامین سے ہمدردی ظاہر کی اپنے مالک کی پر اجازت بغیر اسے تیل دینے کی ہمت نہیں ہوئی ۔

"مالک کے پاس جا کر مانگو ! اجازت مل جائے تو تھوڑا سا کیا ایک بوتل تیل تمہیں دے دوں گا ۔" منیم نے کہا ۔

"پیسہ دوں گا ، مفت نہیں مانگتا ، پھر کیوں دوڑاتے ہیں ، احسان جتاتے ہیں ، میں بھیک نہیں مانگتا ہوں ،" وہ من ہی من بھنبھناتا پلے کے گھر کی طرف چل پڑا ۔

دوکان پر کئی لوگ آئے اور چلے گئے ۔ کچھ تو کارڈ (Ration card) بھی لائے اور کچھ وہ بھی نہیں ۔ پر وہ کون تھے؟ بڑے گھروں کے نوکر ، حاکموں کے چپراسی ، پلے کے جانے پہچانے لوگ ، زیادہ پیسے دیکر خریدنے والے ضرورت مند ، چھوٹی بڑی "ٹینوں" میں تیل لے کر وہ چلے گئے ۔ لیکن ذرا سے تیل کے لئے شامین کھڑا رہا ، انتظار کرتا رہا ، منت سماجت کرتا رہا ۔

ارونا پالم پلے اس گاؤں کے کروسن تیل کے ٹھیکیدار ہیں ۔ لڑائی کے زمانے میں بھگوان نے چاول ، لکڑی ، کپڑا ، چینی ، لوہا ، سیمنٹ کے روپ میں اپنے بھگتوں کے یہاں اوتار لیا تھا اور انہیں امیر بنایا تھا ۔ اسی بھگوان نے ارونا پالم پلے کے یہاں کروسن تیل کے روپ میں اوتار لیا تھا ۔ اسی دن پلے کے یہاں کوئی جشن یا تیوہار منایا جا رہا تھا ۔ اسلئے خاص انتظام کیا گیا تھا ۔ وہ دو منزلے مکان کے باہر چبوترے پر بیٹھے نوکروں کو حکم دے رہے تھے ۔ دوسری طرف بجلی کے لٹوؤں پر لگنے والے کئی سو "شیڈ" پڑے ہوئے تھے ۔ ہر شیڈ پر ایک آدمی کچھ لکھ رہا تھا ۔ شامین نے آ کر پرنام کیا ۔ اس نے اپنی دردناک داستان سنانی شروع کی ۔ پلے نے ایک طرف منہ پھیر لیا ۔

"درد سے میری گھر والی تڑپ رہی ہے ۔ آج رات بھر لالٹین جلانا ہے ۔ مہربانی کیجئے ، چار آنے کا تیل دے دیجئے ، میں عمر بھر آپ کا احسان مانوں گا ۔" اس نے بہت گڑگڑا کر کہا اور ٹینٹ سے پیسہ نکال کر پلے کی طرف بڑھایا ۔

"تمہاری چونی کسے چاہئے ؟ یہاں ناک میں دم ہے ...... راشن کارڈ والوں کے لئے بھی کمی پڑ گئی ہے ۔ تم کو پاؤ بوتل تیل کہاں سے دے دوں ۔ تیل کی ایک بوند بھی نہیں ملے گی ۔" ارونا پالم پلے نے جواب دیا ۔

"दया कीजिये सरकार! ऐसा ही समझिये कि तेल मुफ़्त में दिया......रात के लिये......सिर्फ़ चन्द घन्टों के लिये......कृपा कीजिये हुज़ूर ...... वह बोलता ही गया.

"तुम से फ़िज़ूल बात करने के लिये मुझे फ़ुर्सत नहीं है. मुफ़्त भी तेल नहीं मिलेगा और पैसे से भी नहीं मिलेगा. अभी मेरे कई काम पड़े हैं......जाओ" यह कह कर पिल्ले चबूतरे से उठ कर चले गए.

शामीन वहीं खड़ा रहा. उसका यह पहला बच्चा था. वह अपनी बीवी को बहुत प्यार करता था. वह भी उसे बहुत चाहती थी. दोनों उसी झोंपड़ी में बैठे बैठे पैदा होने वाले बच्चे के बारे में न जाने कितनी बार चरचा कर चुके हैं. इन दोनों से ज़ियादा होने वाले बच्चे में शामीन की बुढ़िया मां को दिलचस्पी थी. सारी बातें उसके दिमाग़ में गूंजने लगीं. लेकिन झट उसे याद पड़ गया कि वह मिट्टी का तेल लेने आया था. उसे पिल्ले का व्योहार और अपनी बिनती भी याद आई. वह झुंझला उठा. लेकिन क्या करता? वह फिर सोचने लगा कि जिस तरह भी हो, हाथ जोड़ कर या पांव पड़ कर, वह थोड़ा सा तेल लेले.

पिल्ले घर के अन्दर गए, खा पी कर थोड़ी देर में बाहर आए. शामीन को वहीं खड़ा देख कर ग़ुस्से में भर गए, उनका पारा चढ़ गया और बोले—

"अरे, तू ने हमको उधार तो नहीं दे रखा है. यहां से टलने का नाम भी नहीं लेता." पिल्ले ने उसे डांटा.

"आप की इजाज़त चाहिये सरकार, बस! मुनीम जी ने तेल देने का वायदा किया है......ज़रा......दया......"

'उसकी दुकान नहीं है. वह दुकानदारी के नफ़ा नुक़सान को क्या जाने? सरकार मेरा कान पकड़ेगी उसका क्या जाएगा! कह दिया, तेल हरगिज़, हरगिज़ नहीं मिल सकता.''

बेचारा शामीन और ज़ियादा गिड़गिड़ाने लगा, प्रार्थना करने लगा.

"यहीं खड़े रहो दिया जलने तक! मेरे पांव नहीं दुखते, मुझे क्या."

अरुनापालम पिल्ले ने हाथ में पान लिया और वह बड़बड़ाते एक तरफ़ चले गए. शामीन को ग़ुस्सा भी आया और रोना भी! वह ख़ाली लालटेन लिये अपनी झोंपड़ी की तरफ़ लौट चला.

नज़दीक पड़े बिजली के 'शीडों' में से एक निकाल कर पिल्ले ने देखा उसमें लिखा था "अरुनापालम पिल्ले का दान" हरूफ़ सुन्दर थे और लाल रंग में लिखे थे.

" دیا کیجئے سرکار ! ایسا ہی سمجھئے کہ تیل مفت میں دیا......رات کے لئے......صرف چند گھنٹوں کے لئے......کرپا کیجئے حضور ......" وہ بولتا ہی گیا .

" تم سے فضول باتیں کرنے کے لئے مجھے فرصت نہیں ہے . مفت بھی تیل نہیں ملے گا اور پیسے سے بھی نہیں ملے گا . ابھی میرے کئی کام پڑے ہیں......جاؤ" یہ کہ کر چبوترے سے اٹھ کر چلے گئے .

شامین وہیں کھڑا رہا . اس کا یہ پہلا بچہ تھا . وہ اپنی بیوی کو بہت پیار کرتا تھا . وہ بھی اسے بہت چاہتی تھی . دونوں اسی جھونپڑی میں بیٹھے بیٹھے پیدا ہونے والے بچے کے بارے میں نہ جانے کتنی بار چرچا کر چکے ہیں . ان دونوں سے زیادہ ہونے والے بچے میں شامین کی بڑھیا ماں کو دلچسپی تھی . ساری باتیں اس کے دماغ میں گونجنے لگیں . لیکن جھٹ اسے یاد پڑ گیا کہ وہ مٹی کا تیل لینے آیا تھا . اسے پلے کا بیوہار اور اپنی بنتی بھی یاد آئی . وہ جھنجھلا اٹھا . لیکن کیا کرتا ؟......وہ پھر سوچنے لگا کہ جس طرح بھی ہو ، ہاتھ جوڑ کر یا پاؤں پڑ کر وہ تھوڑا سا تیل لے لے .

پلے گھر کے اندر گئے . کھا پی کر تھوڑی دیر میں باہر آئے .

شامین کو وہیں کھڑا دیکھ کر غصے میں بھر گئے ، ان کا پارہ چڑھ گیا اور بولے—

" ارے ، تو نے ہم کو ادھار تو نہیں دے رکھا ہے . یہاں سے ٹلنے کا نام ہی نہیں لیتا . " پلے نے اسے ڈانٹا .

" آپ کی اجازت چاہئے سرکار ، بس ! منیم جی نے تیل دینے کا وعدہ کیا ہے......ذرا......دیا......"

" اس کی دوکان نہیں ہے . وہ دوکان داری کے نفع نقصان کو کیا جانے ؟ سرکار میرا کان پکڑے گی اس کا کیا جائے گا ! کہہ دیا تیل ہرگز ہرگز نہیں مل سکتا . "

بے چارا شامین اور زیادہ گڑگڑانے لگا . پرارتھنا کرنے لگا .

" یہیں کھڑے رہو دیا جلنے تک ! میرے پاؤں نہیں دکھتے ، مجھے کیا . "

ارونا پالم پلے نے ہاتھ میں پان لیا اور وہ بڑبڑاتے ایک طرف چلے گئے . شامین کو غصہ بھی آیا اور رونا بھی ! وہ خالی لالٹین لئے اپنی جھونپڑی کی طرف لوٹ چلا .

نزدیک پڑے بجلی کے 'شیڈوں' میں سے ایک نکال کر پلے نے دیکھا . اس میں لکھا تھا "ارونا پالم پلے کا دان ." حروف سندر تھے اور لال رنگ میں لکھے تھے .

"क्यों रे रामू, बलब (Bulb) में काले रंग से हमारा नाम लिखा जाये तो कितना सुन्दर लगेगा ?" लिखने वाले से पिल्ले ने मुसकुरा कर फ़ख्र से कहा.

"जी हां बहुत सुन्दर लगेगा" रामू ने जवाब दिया.

"ख्याल अच्छा है, पर......बलब से रोशनी नहीं निकलेगी" पिल्ले के बड़े बेटे ने एतराज़ किया. जी हां, छोटे सरकार का कहना बिल्कुल ठीक है. बलब को रंगाने से रोशनी नहीं होगी" रामू ने हां में हां मिलाई.

"अरे हां सब ठीक है, जलदी से जा कर इसे मंदिर में लगवा दो......ठीक आठ बजे कलक्टर साहब मन्दिर में तशरीफ़ लाएंगे, आज उनके कर-कमलों से दीप जलेंगे" पिल्ले ने ख़ुशी से झूम कर कहा.

दोई के मन्दिर में बिजली के बलब लगाने का ख़र्च पिल्ले ने अपने ज़िम्मे लिया था. हज़ारों रुपये ख़र्च करके उन्होंने प्रबन्ध किया था.

चीनी मंडी के ब्योपारी ने दोई को हीरे जड़े गहने (पदक) पहनाये. कपड़े के ब्योपारी चेट्टियार ने दोई के लिये सोने का कलस बनवाया. चावल के ब्योपारी ने शानदार सिंहासन का इन्तज़ाम किया, पैसे वाले इस तरह अपनी बड़ाई ज़ाहिर करते हैं! सब ने दोई के देवताओं को भेंट चढ़ाई थीं. अरूनापालम पिल्ले किस तरह चुप रहते ? उन्होंने क्या किसी से कम कमाया था! मन्दिर में दीप जलाने का पुन्य काम उन्होंने अपने ऊपर लिया. अरूनापालम पिल्ले के घर में बड़ी चहलपहल थी. अड़ोस-पड़ोस के नातेदार सब जमा हो गये थे. एक मेला सा हो गया था. मन्दिर भी जगमग-जगमग कर रहा था, ख़ूब सजाया गया था.

शाम हो चली थी, सूरज डूबने को था. धीरे-धीरे चारों तरफ़ अंधेरा छा रहा था. शामीन उसी जरजर खाठ पर परेशान बैठा था. खुली हवा ज़ोरों से चल रही थी और नारियल के बाग़ में एक हलचल पैदा कर रही थी. झोंपड़ी के अन्दर से दर्द-कराह बढ़ने लगी, कराह और चीख़-पुकार बुलन्द होती रही.

"मां ! हाये, हाये !......मां हाये !......"

चिल्लाओ मत, मत चिल्लाओ ! संभालो अपने को... भगवान की कृपा से बच्चा जल्दी हो जायेगा. डरो मत !" बुढ़िया इस तरह बहू को ढारस बंधा रही थी.

गहरा अंधेरा छा गया था. झोंपड़ी के अन्दर मिट्टी का दिया टिमटिमा रहा था. शामीन उस की तरफ़ देख रहा था. वही मिट्टी का दिया! वही रेन्डी का तेल! कितनी आशा से वह उस पर नज़र गड़ाये था. न जाने किधर से एक झोंका आया और दिया बुझ गया. उसकी औरत बड़ी ज़ोर से चीख़ उठी. बुढ़िया ने फ़ौरन दिया जलाया. दिया फिर

"کیوں رے رامو ھر (Bulb) بلب میں کالے رنگ سے ہمارا نام لکھا جائے تو کتنا سندر لگے گا ؟" لکھنے والے سے پلے نے مسکرا کر فخر سے کہا .

"جی ہاں، بہت سندر لگے گا" رامو نے جواب دیا .

"خیال اچھا ہے، پر......بلب سے روشنی نہیں نکلے گی" پلے کے بڑے بیٹے نے اعتراض کیا . جی ہاں، چھوٹے سرکار کا کہنا بالکل ٹھیک ہے . بلب کو رنگانے سے روشنی نہیں ہوگی" رامو نے ہاں میں ہاں ملائی .

"ارے ہاں سب ٹھیک ہے . جلدی سے جاکر اسے مندر میں لگوا دو......ٹھیک آٹھ بجے کلکٹر صاحب مندر میں تشریف لائینگے . آج اُن کے کرکملوں سے دیپ جلیں گے" پلے نے خوشی سے جھومکر کہا .

دوئی کے مندر میں بجلی کے بلب لگانے کا خرچ پلے نے اپنے ذمہ لیا تھا . ہزاروں روپئے خرچ کرکے اُنہوں نے انتظام کیا تھا .

چینی منڈی کے بیوپاری نے دوئی کو ہیرے جڑے گہنے (پدک) پہنائے . کپڑے کے بیوپاری چٹیار نے دوئی کے لئے سونے کا کلس بنوایا . چاول کے بیوپاری نے شاندار سنگھاسن کا انتظام کیا . پیسے والے اِسی طرح اپنی بڑائی ظاہر کرتے ہیں ! سب نے دوئی کے دیوتاؤں کو بھینٹ چڑھائی تھیں . ارونا پالم پلے کس طرح چپ رہتے ؟ اُنہوں نے کیا کسی سے کم کمایا تھا ! مندر میں دیپ جلانے کا پُن کام اُنہوں نے اپنے اُوپر لیا . ارونا پالم کے گھر میں بڑی چہل پہل تھی . اڑوس پڑوس کے ناتےدار سب جمع ہوگئے تھے، ایک میلہ سا ہوگیا تھا . مندر بھی جگ مگ جگ مگ کر رہا تھا، خوب سجایا گیا تھا .

شام ہو چلی تھی، سورج ڈوبنے کو تھا . دھیرے دھیرے چاروں طرف اندھیرا چھا رہا تھا . شامین اُسی جر جر کھاٹ پر پریشان بیٹھا تھا . کھلی ہوا زوروں سے چل رہی تھی اور ناریل کے باغ میں ایک ہل چل پیدا کر رہی تھی، جھونپڑی کے اندر سے درد کراہ بڑھنے لگی، کراہ اور چیخ پکار بلند ہوتی رہی .

"ماں ! ہائے، ہائے......ماں ہائے !......"

چلاؤ مت، مت چلاؤ ! سنبھالو اپنے کو......بھگوان کی کرپا سے بچہ جلدی ہو جائے گا . ڈرو مت ! بڑھیا اس طرح بہو کو ڈھارس بندھا رہی تھی .

گہرا اندھیرا چھا گیا تھا . جھونپڑی کے اندر مٹی کا دیا ٹمٹما رہا تھا . شامین اُسکی طرف دیکھ رہا تھا . وہی مٹی کا دیا ! وہی ریندی کا تیل ! کتنی آشا سے وہ اُس پر نظر گڑائے تھا . نہ جانے کدھر سے ایک جھونکا آیا اور دیا بجھ گیا . اُسکی عورت بڑے زور سے چیخ اُٹھی . بڑھیا نے فوراً دیا جلایا . دیا پھر

टिमटिमाता रहा. फिर वह बुझ गया, देर तक हवा और दिया आंखमिचोली खेलते रहे. दिया छिपता रहा, हवा उसे पकड़ने की कोशिश करती रही......लेकिन......हवा ने आखिर दिया को दबोच ही लिया, खेल ही खेल में उसका गला घोंट दिया.

अंधेरा! चीख पुकार!! अंधेरा और चीख पुकार!!!

दिया का जलना और बुझ जाना, कभी अंधेरा, कभी उजाला, कुटिया के अंदर यह नाटक कई बार खेला जा चुका है. हर बार दिया जलाने के लिये एक दियासलाई चाहिये. शामीन चुपचाप यह नाटक देखता रहा. वह अंदर नहीं जा सकता था. मनाही थी! दिया फिर जल गया लेकिन फिर एक झोंका आया. बड़े बड़े नरियल के पेड़ सर हिलाने लगे. सूखे पत्ते और डालियां धमाधम गिरने लगीं. फिर मिट्टी का दिया बुझ गया. एक दियासलाई......दूसरी ......तिसरी ...... चौथी ...... पेटी खाली हो गई. बुढ़िया ने उसे हिला कर देखा और मारे ग़ुस्से के उसे फेंक दिया. बुढ़िया बाहर आई और कहा—"शाम्बू! जलदी दौड़, दियासलाई एक पेटी ला. सब ख़तम हो गई." वह बात भी ख़तम न कर पाई थी कि अन्दर से "हाये मां" की डरावनी आवाज़ सुनाई पड़ी. बुढ़िया जल्द वापिस लौटी. अन्धेरे में बुढ़िया ने एक नौनिहाल बच्चे की आवाज़ सुनी. बुढ़िया ने कान लगा कर सुना. वह एक नौनिहाल बच्चे की दुनिया में पहिली आवाज़ थी! बच्चे की आवाज़ को हवा ने अपने में समो लिया. बच्चे की आवाज़ झोंपड़ी में गूंज उठी. शामीन ने भी सुना. पर वहीं खड़ा रहा, न हिला न डुला, न कुछ कहा न सुना.

"अरे शाम्बू! बच्चा हो गया! दियासलाई ला" बुढ़िया ख़ुशी से फूली नहीं समा रही थी. वह चिल्लाने लगी—बच्चा! बच्चा......शामीन का दिल ख़ुशी से भर गया.

"बच्चा! माई लड़का या लड़की?" उसने उल्लास से पूछा.

बुढ़िया को क्या मालूम था? बच्चा जनने वाली भी क्या जाने!

अन्धड़ और अन्धेरे से भरी झोंपड़ी में कौन जान सकता था कि नया बच्चा लड़का था या लड़की! उसे कौन जवाब देता? वह अपने कमर में पैसे टटोलता हुआ दुकान की तरफ़ दौड़ा. वह भागा जा रहा था बड़ी तेज़ी से! रास्ते के कांटे और कंकर पैरों में चुभ रहे थे पर उसे कुछ ज्ञान नहीं था. एक झाड़ी में उसकी धोती फंस गई. वह नाले में गिर पड़ा. उसमें से किसी सूरत निकला और एक दम दौड़ने लगा. वह दौड़ता रहा. नारियल के पेड़ों से टकराते-टकराते बचता था, कांटे भी लगते थे......पर जो भी हो, उसकी दौड़ जारी रही. दिल उससे पूछता रहा कि

ٹمٹماتا رہا. پھر وہ بجھ گیا. دیر تک ہوا اور دیا آنکھ مچولی کھیلتے رہے. دیا چھپتا رہا ہوا اسے پکڑنے کی کوشش کرتی رہی......لیکن...... ہوا نے آخر دیا کو دبوچ ہی لیا، کھیل ہی کھیل میں اس کا گلا گھونٹ دیا.

اندھیرا! چیخ پکار!! اندھیرا اور چیخ پکار!!!

دیا کا جلنا اور بجھ جانا، کبھی اندھیرا، کبھی اجالا— کٹیا کے اندر یہ ناٹک کئی بار کھیلا جا چکا ہے. ہر بار دیا جلانے کے لئے ایک دیا سلائی چاہئے. شامین چپ چاپ یہ ناٹک دیکھتا رہا. وہ اندر نہیں جا سکتا تھا. مناہی تھی! دیا پھر جل گیا. لیکن پھر ایک جھونکا آیا. بڑے بڑے ناریل کے پیڑ سر ہلانے لگے. سوکھے پتے اور ڈالیاں دھما دھم گرنے لگیں. پھر مٹی کا دیا بجھ گیا. ایک دیا سلائی......دوسری......تیسری......چوتھی...... پیٹی خالی ہو گئی. بڑھیا نے اسے ہلا کر دیکھا اور مارے غصے کے اسے پھینک دیا. بڑھیا باہر آئی اور کہا— "شامبو! جلدی دوڑ، دیا سلائی ایک پیٹی لا. سب ختم ہو گئی." وہ بات بھی ختم نہ کر پائی تھی کہ اندر سے "ہائے ماں" کی ڈراونی آواز سنائی پڑی. بڑھیا جلدی واپس لوٹی. اندھیرے میں بڑھیا نے ایک نونہال بچے کی آواز سنی. بڑھیا نے کان لگا کر سنا. وہ ایک نونہال بچے کی دنیا میں پہلی آواز تھی! بچے کی آواز کو ہوا نے اپنے میں سمو لیا، بچے کی آواز جھونپڑی میں گونج اٹھی. شامین نے بھی سنا. پر وہیں کھڑا رہا، نہ ہلا نہ ڈلا، نہ کچھ کہا نہ سنا.

"ارے شامبو! بچہ ہو گیا! دیا سلائی لا" بڑھیا خوشی سے پھولی نہیں سما رہی تھی. وہ چلانے لگی. بچہ! بچہ......شامین کا دل خوشی سے بھر گیا.

"بچہ! مائی—لڑکا یا لڑکی؟" اسنے الہاس سے پوچھا.
بڑھیا کو کیا معلوم تھا؟ بچہ جننے والی بھی کیا جانے!

اندھڑ اور اندھیرے سے بھری جھونپڑی میں کون جان سکتا تھا کہ نیا بچہ لڑکا تھا یا لڑکی! اسے کون جواب دیتا. وہ اپنی کمر میں پیسے ٹٹولتا ہوا دوکان کی طرف دوڑا. وہ بھاگا جا رہا تھا بڑی تیزی سے! راستے کے کانٹے اور کنکر پیروں میں چبھ رہے تھے پر اسے کچھ گیان نہیں تھا. ایک جھاڑی میں اسکی دھوتی پھنس گئی. وہ نالے میں گر پڑا. اس میں سے کسی صورت نکلا. اور ایک دم دوڑنے لگا. وہ دوڑتا رہا. ناریل کے پیڑوں سے ٹکراتے ٹکراتے بچتا تھا، کانٹے بھی لگتے تھے......پر جو بھی ہو اسکی دوڑ جاری رہی. دل اس سے پوچھتا رہا کہ

बच्चा लड़की है या लड़का ? गोरा है या काला ? इस वक़्त मां की हालत क्या है ? हाय रे ! उस बुढ़िया को दिन में भी कुछ साफ़ नहीं दिखता. अन्धेरे में कहीं बच्चे को रौंद न डाले......

आठ बजे दोई मन्दिर का घन्टा ज़ोर से बजने लगा. मजीरा, मृदंग, झांझ, शंख शहनाई, तुरुही सब की आवाज़ एक साथ मिल कर गूंज उठी. चकाचौंध करने वाली बिजली की सैकड़ों बत्तियां "अरूनापालम पिल्ले का दान" के इश्तहार के साथ मन्दिर में जगमगा रही थीं.

अरूनापालम की धरम पत्नी मन्दिर में मूरती के सामने कांसे के दिये में घी डाल रही थी.

घी के दिये और बिजली के बलब एक दूसरे से होड़ लगाये हुए थे. मन्दिर रोशनी का समुन्दर बन गया था. अरूनापालम पिल्ले मूरती के सामने मनोती कर रहे थे और कानों के हीरों को हिला-हिला कर मूरती उनकी प्रार्थना सुन रही थी. मन्दिर के अन्दर पूंजी की क़ैद में जो भगवान थे वह रोशनी की बाढ़ में गुमसुम बैठे थे और झोंपड़ी में जो भगवान थे वह अन्धेरे में छटपटा रहे थे, चिल्ला रहे थे......! यहां घन्टे बज रहे थे, गजर गूंज रहे थे. गजर की आवाज़ ने भगवान की आवाज़ को दबा दिया, पाताल में डाल दिया.

...لڑکی ہے یا لڑکا ؟ گورا ہے یا کالا ؟ اس وقت ماں کی ...کیا ہے ؟ ... ہائے رے ! اُس بڑھیا کو دن میں ...صاف نہیں دکھتا . اندھیرے میں کہیں بچے ...نہ ڈالے ......

...بجے دوئی مندر کا گھنٹا زور سے بجنے لگا . مجیرا، ...'جھانجھ'، شنکھ، شہنائی، ترہی سب کی آواز ایک ...مل کر گونج اٹھی . چکاچوندھ کرنے والی بجلی کی ...بتیاں "ارونا پالم پلے کا دان" کے اشتہار کے ساتھ ...میں جگمگا رہی تھیں .

ارونا پالم کی دھرم پتنی مندر میں مورتی کے سامنے ...کے دئے میں گھی ڈال رہی تھی .

...گھی کے دئے اور بجلی کے بلب ایک دوسرے سے ہوڑ ...ہوئے تھے . مندر روشنی کا سمندر بن گیا تھا . ارونا پالم ...مورتی کے سامنے منوتی کر رہے تھے . اور کانوں کے ...کو ہلا ہلا کر مورتی اُن کی پرارتھنا سن رہی تھی . ...کے اندر پونجی کی قید میں جو بھگوان تھے وہ ...کی باڑھ میں گمسم بیٹھے تھے اور جھونپڑی ...جو بھگوان تھے وہ اندھیرے میں چھٹپٹا رہے تھے، ...رہے تھے ... یہاں گھنٹے بج رہے تھے، گجر گونج رہے تھے. ...کی آواز نے بھگوان کی آواز کو دبا دیا، پاتال میں ...دیا .

मध्य भारत की एक झांकी

पिछली 7 सितम्बर को इन्दौर में रानी अहल्या बाई की पुन्य तिथि महात्मा भगवानदीन की सदारत में मनाई गई. यह जलसा राज महल में शाम के समय हुआ और इसका आयोजन इन्दौर की एक पुरानी पबलिक संस्था, 'अहल्या बाई स्मारक समिति' ने किया जिसके प्रधान श्री काशीनाथ त्रिवेदी और सेक्रेट्री डाक्टर उदयभानु हैं. इस मौक़े पर मुझे मध्य भारत के, ख़ास कर इन्दौर के, कारकुनों से मिलने का, और वहां की रचनात्मक संस्थाएं देखने का और उस इलाक़े के देहाती धन्दों को जानने समझने का सौभाग्य हासिल हुआ.

मध्य भारत प्रान्त का जन्म 28 मई 1948 को हुआ था. इस प्रान्त में 20 रियासतें—ग्वालियर, इन्दौर, धार, झाबुआ, रतलाम वग़ैरा शामिल हैं जिनका रक़बा 46,587 वर्ग मील है. सालाना आमदनी दस करोड़ के लगभग है. मध्य भारत में 16 जिले और 40 तहसीलें हैं. कुल गांव 21,094 हैं जिनमें 4,219 जागीरी गांव हैं. मध्य भारत में 1,327 जागीरदार हैं जिनकी जागीरदारी अभी बदस्तूर चली जा रही है. जल्द ही दूसरे प्रान्तों की तरह यहां भी जागीरदारी ख़ातमा क़ानून बनने की ख़बर है. सन 1951 की गिनती के अनुसार मध्य भारत की आबादी 79,42,778 है जिनमें आदिवासी 12 लाख के लगभग हैं और हरिजन 14 लाख के.

अहल्या बाई उत्सव

महारानी अहल्या बाई ने 1795 में अपना शरीर छोड़ा. होलकर राज उनके ससुर मल्हार राव ने ही क़ायम किया था. महारानी ने इसे ठोस रूप दिया. उनकी राजधानी महेश्वर में थी जो नर्बदा नदी के किनारे बसा हुआ है. महेश्वर इन्दौर से 65 मील के लगभग है. महेश्वर में महारानी के रहने का महल, दरबार हाल, मन्दिर वग़ैरा सभी वैसे के वैसे मौजूद हैं. नर्बदा में महारानी ने जो लम्बे-लम्बे, एक मील तक फैले हुए 50 घाट बनवाये वह मध्य भारत के लिये ही नहीं देश भर के लिये शान और गौरव की चीज़ हैं.

अहल्या बाई की पुन्य तिथि को मध्य भारत का एक त्योहार कहना चाहिये. उस दिन सभी कामकाज बन्द रहता है और जगह जगह उत्सव मनाया जाता है. इन्दौर में शाम के समय कई फ़र्लांग लम्बा जलूस सारे शहर में घूमता हुआ निकला. उसे देख कर दो सौ बरस पुराने भारत की तसवीर सामने आ जाती थी.

مدھیہ بھارت کی ایک جھانکی

پچھلی 7 ستمبر کو اندور میں رانی اہلیا بائی کی پن تتھی مہاتما بھگوان دین کی صدارت میں منائی گئی. یہ جلسہ راج محل میں شام کے سمے ہوا اور اس کا آیوجن اندور کی ایک پرانی پبلک سنستھا 'اہلیابائی اسمارک سمتی' نے کیا جس کے پردھان شری کاشی ناتھ ترویدی اور سکریٹری ڈاکٹر اُدے بھان ہیں. اس موقع پر مجھے مدھیہ بھارت کے، خاص کر اندور کے، کارکنوں سے ملنے کا، اور وہاں کی رچناتمک سنستھائیں دیکھنے کا اور اس علاقے کے دیہاتی دھندوں کو جاننے سمجھنے کا سوبھاگیہ حاصل ہوا.

مدھیہ بھارت پرانت کا جنم 28 مئی 1948 کو ہوا تھا. اس پرانت میں 20 ریاستیں—گوالیر، اندور، دھار، جھابوا، رتلام وغیرہ شامل ہیں جن کا رقبہ 46،587 ورگ میل ہے. سالانہ آمدنی 10 کروڑ کے لگ بھگ ہے. مدھیہ بھارت میں 16 ضلعے اور 40 تحصیلیں ہیں. کل گاؤں 21،094 ہیں جن میں 4،219 جاگیری گاؤں ہیں. مدھیہ بھارت میں 1،327 جاگیردار ہیں جن کی جاگیرداری ابھی بدستور چلی جا رہی ہے. جلد ہی دوسرے پرانتوں کی طرح یہاں بھی جاگیرداری خاتمہ قانون بننے کی خبر ہے. سن 1951 کی گنتی کے انوسار مدھیہ بھارت کی آبادی 79،42،778 ہے جن میں آدی واسی 12 لاکھ کے لگ بھگ ہیں اور ہریجن 14 لاکھ کے.

اہلیابائی اُتسو

مہارانی اہلیابائی نے 1795 میں اپنا شریر چھوڑا. ہولکر راج ان کے سسر ملہار راؤ نے ہی قائم کیا تھا. مہارانی نے اسے ٹھوس روپ دیا. ان کی راجدھانی مہیشور میں تھی جو نربدا ندی کے کنارے بسا ہوا ہے. مہیشور اندور سے 65 میل کے لگ بھگ ہے. مہیشور میں مہارانی کے رہنے کا محل، دربار ہال، مندر وغیرہ سبھی ویسے کے ویسے موجود ہیں. نربدا میں مہارانی نے جو لمبے لمبے 50 میل تک پھیلے ہوئے گھاٹ بنوائے وہ مدھیہ بھارت کے لئے ہی نہیں دیش بھر کے لئے شان اور گورو کی چیز ہیں.

اہلیابائی کی پن تتھی کو مدھیہ بھارت کا ایک تہوار کہنا چاہئے. اس دن سبھی کام کاج بند رہتا ہے اور جگہ جگہ اُتسو منایا جاتا ہے. اندور میں شام کے سمے کئی فرلانگ لمبا جلوس سارے شہر میں گھومتا ہوا نکلا. اسے دیکھکر دو سو برس پرانے بھارت کی تصویر سامنے آجاتی تھی.

महात्मा भगवान दीन ने अपने प्रवचन में कहा कि अहल्या बाई ने अटल विश्वास के साथ संकटों का सामना किया और दुनिया को दिखला दिया कि एक स्त्री किस तरह राजकाज संभाल सकती है. महात्मा जी ने लोगों से अपील की कि आजकल के समय में हम तरक़्क़ी करना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि जात पात तोड़ें और छुआ छूत ख़त्म करें. इससे भी जियादा जरूरी यह है कि अहल्या बाई की तरह हम में भी यह कला आये कि अपने-पराये की तमीज़ कर सकें. महात्मा जी ने कहा कि इस उत्सव के मनाने वालों को चाहिये कि पहले विदेशी चीज़ों की होली करें चाहे वह लिपस्टिक हो चाहे फ़ाउन्टैन पेन.

महात्मा जी ने सुझाया कि जुलूस में हर जात बिरादरी के लोग शामिल होने चाहिये और एक भोज भी होना चाहिये जिसमें सब जातों और मज़हबों के लोग शामिल हों.

इन्दौर और आस पास की सैर में नीमाड़ के दो उत्साही नौजवान महेन्द्र कुमार जैन और मुरली मनोहर कामेर मेरे साथ रहे.

हरिजन सेवक संघ

इन्दौर नगर में यूं तो बीसियों संस्थायें हैं, कुछ नाम की, कुछ काम की. मैं यहां पर दो की चर्चा करूंगा—हरिजन सेवक संघ और उद्यम कारख़ाना.

हरिजन सेवक संघ की शाख़ें देश के हर प्रान्त में और बहुत से ज़िलों में हैं. लेकिन मध्य भारत की शाख़ को देख कर जी फड़क उठता है. इसकी वजह है उस शाख़ के बूढ़े मगर मुस्तैद और अनुभवी मंत्री श्री कृश्न राव बासदेव दाते. प्रान्त के हर ज़िले में संघ के कार्यकर्ता मुस्तैदी से अपने काम पर लगे हुए हैं. इन्दौर के मोती तबेला नाम के मुहल्ले में एक हरिजन बोरडिंग हाउस है जिसमें छटे दर्जे से बी. ए. तक के लगभग 30 हरिजन लड़के रहते हैं. बोरडिंग हाउस में कोल्हू घानी का काम भी चलता है. इस के अलावा इन्दौर शहर से तीन मील की दूरी पर एक चमड़ा शाला (टैनेरी) भी संघ की तरफ़ से चलती है.

इस टैनेरी के पास ही वह जगह है जहां इन्दौर भर का मैला और गन्दगी इकट्ठा होती है. बाक़ायदा नालियां और गढ़े खुदे हुए हैं जहां मैले की खाद बना कर बेची जाती है. वहां का सारा इन्तज़ाम अच्छा मालूम पड़ा. दूसरे प्रान्तों के म्यूनिस्पिल बोर्ड भी उस से सबक़ ले सकते हैं.

ग्रामोद्योग का अर्थ शास्त्र

12-13 सितम्बर हमें हरिजन भाईयों का सतसंग करने का और उनके साथ चर्चा करने का सौभाग्य हासिल हुआ. विद्यार्थी जियादातर जागरूक दिखाई पड़े. एक सवाल

مہاتما بھگوان دین نے اپنے پروچن میں کہا کہ اہلیا بائی نے اٹل وشواس کے ساتھ سنکٹوں کا سامنا کیا اور دنیا کو دکھلا دیا کہ ایک استری کس طرح راج کاج سنبھال سکتی ہے۔ مہاتما جی نے لوگوں سے اپیل کی کہ آجکل کے سمے میں ہم ترقی کرنا چاہتے ہیں تو ہمیں چاہئے کہ جات پات توڑیں اور چھوا چھوت ختم کریں۔ اس سے بھی زیادہ ضروری یہ ہے کہ اہلیا بائی کی طرح ہم میں بھی یہ کلا آئے کہ اپنے پرائے کی تمیز کر سکیں۔ مہاتما جی نے کہا کہ اتسو کو منانے والوں کو چاہئے کہ پہلے ودیشی چیزوں کی ہولی کریں چاہے وہ لپ اسٹک ہو چاہے فاؤنٹن پین۔

مہاتما جی نے سمجھایا کہ جلوس میں ہر جات برادری کے لوگ شامل ہونے چاہئے اور ایک بھوج بھی ہونا چاہئے جس میں سب جاتوں اور مذہبوں کے لوگ شامل ہوں۔

اندور اور آس پاس کی سیر میں نیماڑ کے دو اتساہی نوجوان مہندر کمار جین اور مرلی منوہر کامیر میرے ساتھ رہے۔

ہریجن سیوک سنگھ

اندور نگر میں یوں تو بیسیوں سنستھائیں ہیں، کچھ نام کی کچھ کام کی۔ میں یہاں پر دو کی چرچا کروں گا—ہریجن سیوک سنگھ اور ادیم کارخانہ۔

ہریجن سیوک سنگھ کی شاخیں دیش کے ہر پرانت میں اور بہت سے ضلعوں میں ہیں۔ لیکن مدھیہ بھارت کی شاخ کو دیکھ کر جی پھڑک اٹھتا ہے۔ اسکی وجہ ہے اس شاخ کے بوڑھے مگر مستعد اور انبھوی منتری شری کرشن راؤ واسدیو داتے۔ پرانت کے ہر ضلع میں سنگھ کے کاریہ کرتا مستعدی سے اپنے کام پر لگے ہوئے ہیں۔ اندور کے موتی طبیلہ نام کے محلے میں ایک ہریجن بورڈنگ ہاؤس ہے جس میں چھٹے درجے سے بی۔ اے۔ تک کے لگ بھگ 30 ہریجن لڑکے رہتے ہیں۔ بورڈنگ ہاؤس میں کولہو گھانی کا کام بھی چلتا ہے۔ اس کے علاوہ اندور شہر سے تین میل کی دوری پر ایک چمڑا شالا (ٹینری) بھی سنگھ کی طرف سے چلتی ہے۔

اس ٹینری کے پاس ہی وہ جگہ ہے جہاں اندور بھر کا میلا اور گندگی اکٹھا ہوتی ہے۔ باقاعدہ نالیاں گڈھے کھدے ہوئے ہیں جہاں میلے کی کھاد بناکر بیچی جاتی ہے۔ وہاں کا سارا انتظام اچھا معلوم پڑا۔ دوسرے پرانتوں کے میونسپل بورڈ بھی اس سے سبق لے سکتے ہیں۔

گرام ادیوگ کا ارتھ شاستر

12-13 ستمبر ہمیں ہریجن بھائیوں کے ساتھ سنگت کرنے کا اور ان کے ساتھ چرچا کرنے کا سوبھاگیہ حاصل ہوا۔ ودیارتھی زیادہ تر جاگروک دکھائی پڑے۔ ایک سوال

उन्होंने पूछा कि मिल का माल सस्ता होता है, हाथ का मंहगा होता है—तब फिर मिल का माल विशेष कर अब जब मिलें अपनी देशी हैं—हम क्यों न इस्तेमाल करें. थोड़े में हमने उन्हें बताने की कोशिश की कि 'सस्ता' 'मंहगा' यह लफ्ज़ देश की आर्थिक हालत के साथ बदलते हैं. आज मिल का तेल 'सस्ता' है क्योंकि मिल वालों को बिजली एक यूनिट डेढ़ आने में मिल जाती है लेकिन वही यूनिट तेली को सवा रुपये में बैठती है. अगर दोनों को एक से भाव पर मिले तो फिर तेली का माल सस्ता बैठेगा और वह भूका न मरेगा. लेकिन मिल वालों को बिजली कम और सस्ते दाम पर क्यों मिलती है ? क्योंकि देश का सारा आर्थिक ढांचा पूंजी पतियों के हिसाब से ही बना है. झरिया और रानी गंज से कोयला और लोहा ढो-ढोकर, उस पर ढुलाई खर्च और इन्तज़ाम खर्च जोड़ कर एक यूनिट छै पैसे में देना वैसा ही है जैसे इन्दौर बैंक से सौ सेर सोना खान से निकालने की तदबीर में एक हज़ार रुपये खर्च होने पर (यानी दस रुपये सेर 'लागत' पड़ने पर) बाज़ार में बारह पंद्रह रुपये सेर सोना बेचना. हमारे देश की खानें जनता की धरोहर हैं. उनको केवल चन्द साधनदार या हैसियत वालों की खातिर खाली कर देना एक ज़बरदस्त नाइन्साफ़ी है जो हमें अंगरेज़ों से विरासत में मिली है. उन खानों पर जितना हक़ मिल वालों का है उतना ही तेली का. पर आज की हालत में मिल वाला उसका फ़ायदा उठा लेता है, तेली नहीं. यह ग़रीब जनता का खून चूस कर थोड़े से अमीरों को पालना है.

इनसाफ़ की मांग है कि देश के जितने सार्वजनिक साधन हैं या सम्पत्ति है उनका फ़ायदा सब को बराबर मिले, वरना ग़रीब की ग़रीबी बढ़ती जायगी और अमीर की अमीरी. आगे चल कर हम यह भी कहेंगे कि सारी दुनिया के साधन व सम्पत्ति किसी ख़ास इनसान या जमाअत या दल के हाथ में न रहनी चाहिये.

हाथ की बनी घड़ी

इन्दौर का उद्यम कारखाना तुकोगंज मुहल्ले में श्रीनाथ मन्दिर के पास है. इसके कर्ता धर्ता हैं भाई मोहिनी राज अमृतराव कस्तूरे जिन्होंने अपने हाथ से घड़ी बना लेने में कमाल हासिल किया है. 1947 की जून में जब बापू की घड़ी चोरी चली गई थी तो कस्तूरे जी ने ही अपने हाथ की बनी एक घड़ी बापू को भेंट की थी. घड़ी के बारीक बारीक पुर्ज़े, पहिये, पेच आदि सभी वह ख़ुद बना लेते हैं. सिर्फ़ मेनस्प्रिंग और ज्वैल बाहर के रहते हैं.

अपनी पच्चीस बरस की मेहनत के बाद श्री कस्तूरे जी ने साबित कर दिखाया कि घड़ी भारत में बन सकती है. फ़िलहाल उन्होंने दीवार घड़ी (क्लाक) का एक नमूना

انہوں نے پوچھا کہ مل کا مال سستا ہوتا ہے، ہاتھ کا مہنگا ہوتا ہے—تب پھر مل کا مال وشیش کر اب جب ملیں اپنی دیشی ہیں—ہم کیوں نہ استعمال کریں۔ تھوڑے میں ہم نے انہیں بتانے کی کوشش کی کہ 'سستا' 'مہنگا' یہ لفظ دیش کی آرتھک حالت کے ساتھ بدلتے ہیں. آج مل کا تیل سستا ہے کیونکہ مل والوں کو بجلی ایک یونٹ ڈیڑھ آنہ میں مل جاتی ہے۔ لیکن وہی یونٹ تیلی کو سوا روپیہ میں بیٹھتی ہے۔ اگر دونوں کو ایک سے بھاؤ پر ملے تو پھر تیلی کا مال سستا بیٹھے گا اور وہ بھوکا نہ مریگا. لیکن مل مالکوں کو بجلی کم اور سستے داموں پر کیوں ملتی ہے ؟ کیونکہ دیش کا سارا آرتھک ڈھانچہ پونجی پتیوں کے حساب سے ہی بنا ہے۔ جھریا اور رانی گنج سے کوئلہ اور لوہا ڈھو ڈھو کر اس پر ڈھولائی خرچ اور انتظام خرچ جوڑ کر ایک یونٹ چھ پیسے میں دینا ویسا ہی ہے جیسے اندور بینک سے سو سیر سونا کھان سے نکالنے کی تدبیر میں ایک ہزار روپئے خرچ ہونے پر (یعنی دس روپئے سیر 'لاگت' پڑنے پر) بازار میں بارہ پندرہ روپئے سیر سونا بیچنا. ہمارے دیش کی کھانیں جنتا کی دھروہر ہیں. ان کو کیول چند سادھن دار یا حیثیت والوں کی خاطر خالی کر دینا ایک زبردست ناانصافی ہے جو ہمیں انگریزوں سے وراثت میں ملی ہے۔ ان کھانوں پر جتنا حق مل والوں کا ہے اتنا ہی تیلی کا۔ پر آج کی حالت میں مل والا اس کا فائدہ اٹھا لیتا ہے، تیلی نہیں۔ یہ غریب جنتا کا خون چوس کر تھوڑے امیروں کو پالنا ہے۔

انصاف کی مانگ ہے کہ دیش کے جتنے سارو جنک سادھن ہیں یا سمپتی ہے ان کا فائدہ سب کو برابر ملے' ورنہ غریب کی غریبی بڑھتی جائے گی اور امیر کی امیری. آگے چل کر ہم یہ بھی کہیں گے کہ ساری دنیا کے سادھن سمپتی کسی خاص انسان یا جماعت یا دل کے ہاتھ میں نہ رہنی چاہئے۔

ہاتھ کی بنی گھڑی

اندور کا ادیم کارخانہ تکو گنج محلہ میں شری ناتھ مندر کے پاس ہے۔ اس کے کرتا دھرتا ہیں بھائی موہنی راج امرت راؤ کستورے جنہوں نے اپنے ہاتھ سے گھڑی بنا لینے میں کمال حاصل کیا ہے۔ 1947 کی جون میں جب باپو کی گھڑی چوری چلی گئی تھی تو کستورے جی نے ہی اپنے ہاتھ کی بنی ایک گھڑی باپو کو بھینٹ کی تھی۔ گھڑی کے باریک باریک پرزے' پہئے' پیچ آدی سبھی وہ خود بنا لیتے ہیں۔ صرف مین اسپرنگ اور جوئل باہر کے رہتے ہیں۔

اپنی پچیس برس کی محنت کے بعد شری کستورے جی نے ثابت کر دکھایا کہ گھڑی بھارت میں بن سکتی ہے۔ فی الحال انہوں نے دیوار گھڑی (کلاک) کا ایک نمونہ

तैयार किया है. इस घड़ी का दाम उन्होंने सौ रुपये रखा है. यह कारखाना देखने महात्मा भगवानदीन गये थे, उन्होंने सौ रुपये देकर एक घड़ी 'नया हिन्द' के दफ़्तर के लिये खरीद ली और उम्मीद की कि इसकी मांग बढ़ेगी. इसी कारखाने की बनी एक घड़ी डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा के पास वर्धा में है.

हमने तीन बरस की वह चिट्ठी पत्री भी देखीं जो मध्य भारत सरकार और केन्द्री सरकार और उद्यम कारखाने वालों से हुई. सौ बातों की एक बात यह है कि सरकार से इस कारखाने को अब तक न एक पैसे की मदद मिली न एक घड़ी का आर्डर.

हमें नहीं मालूम कि मध्य भारत सरकार या केन्द्री सरकार कब व किस रूप में मदद कर पाएंगी. अगर कोई वसीले वाला विदेशी ब्योपारी होता तो लाखों के आर्डर किसी भी सरकार से ले गया होता. श्री कस्तूरे मेहनती और अपनी धुन के पक्के हैं. वह न कभी ब्योपार के चक्कर में पड़े हैं न इश्तहारबाज़ी के शौक़ में. क्या ही अच्छा हो कि हिन्दुस्तान के हर बड़े दफ़्तर में या हर रईस के घर में उनकी एक दीवार घड़ी हो. इसी तरह और कारीगरों की भी हिम्मत बढ़ सकती है और देश ऊंचा उठ सकता है.

एक कुल पार्टी मीटिंग

इन्दौर की जिला कम्यूनिस्ट पार्टी के सेक्रेट्री भाई सरमंडल जी ने पूछा कि क्या आप यहां की शान्ति कौंसिल की बुलाई हुई एक पबलिक मीटिंग में बोलना पसंद करेंगे. हमने जवाब दिया कि जियादा अच्छा यह होगा कि आप यहां की सभी पार्टियों के कारकुनों को बुलायें और उनके साथ बैठ कर देश के आज के सवालों पर मिल कर विचार करें. मीटिंग हुई जिसमें लगभग 40-45 भाई बहन थे. उनमें कम्यूनिस्ट भी थे, कांगरेसी भी थे, प्रजापार्टी वाले भी थे. जन संघी भी थे, और रचनात्मक कार्यकर्ता भी थे. दो घंटे तक विश्व शान्ति, देश की आज की हालत, राजकाज और भूदान आन्दोलन पर चर्चा चली जिसमें सभी ने दिल खोल कर और ध्यान पूर्वक हिस्सा लिया. ऐसी मीटिंग का हमें और जगह भी इत्तफ़ाक़ हुआ है. हमारा विश्वास है कि आज पार्टियों के पचड़ों में पड़ कर हम लोग सही सही न देख पाते हैं न कुछ कर पाते हैं. महसूस होता है कि असली हित में यह पार्टियां अकसर रुकावट बन जाती हैं. ऐसी मीटिंगों से पता चलता है कि इस राजनीतिक जात पात या सियासी छुआ छूत से अलग रहने की तबियत हम में से बहुतों की होती है और इससे हटना उतना कठिन नहीं है जितना बाहर से दीखता है. अगर हम ज़रा जतन करें तो यह सहज ही हट जाए और फिर

[Urdu column]

کیا ھے . اِس گھڑی کا دام اُنھوں نے سو روپے رکھا ھے . یہ کارخانہ دیکھنے مہاتما بھگوان دین گئے تھے، اُنھوں نے سو روپے دے کر ایک گھڑی 'نیا ھند' کے دفتر کے لئے خرید لی اور اُمید کی کہ اُسکی مانگ بڑھے گی . اِسی کارخانے کی بنی ایک گھڑی ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا کے پاس وردھا میں ھے .

ھم نے تین برس کی وہ چھٹی پتری بھی دیکھی جو مدھیہ بھارت سرکار اور کیندری سرکار اور اُدیم کارخانے والوں سے ھوئی. سو باتوں کی ایک بات یہ ھے کہ سرکار سے اِس کارخانے کو اب تک نہ ایک پیسے کی مدد ملی نہ ایک گھڑی کا آرڈر .

ھمیں نہیں معلوم کہ مدھیہ بھارت سرکار یا کیندری سرکار کب و کس روپ میں مدد کر پائیں گی. اگر کوئی وسیلے والا ودیشی بیوپاری ھوتا تو لاکھوں کے آرڈر کسی بھی سرکار سے لے گیا ھوتا . شری کستورے محنتی اور اپنی دھن کے پکے ھیں . وہ نہ کبھی بیوپار کے چکر میں پڑے ھیں نہ اشتہار بازی کے شوق میں . کیا ھی اچھا ھو کہ ھندستان کے ھر بڑے دفتر میں یا ھر رئیس کے گھر میں اُنکی ایک دیوار گھڑی ھو . اِسی طرح اور کاریگروں کی بھی ھمت بڑھ سکتی ھے اور دیش اُونچا اُٹھ سکتا ھے .

ایک کل پارٹی میٹنگ

اِندور کی ضلع کمیونسٹ پارٹی کے سکریٹری بھائی سرمنڈل جی نے پوچھا کہ کیا آپ یہاں کی شانتی کونسل کی بلائی ھوئی ایک پبلک میٹنگ میں بولنا پسند کرینگے . ھم نے جواب دیا کہ زیادہ اچھا یہ ھوگا کہ آپ یہاں کی سبھی پارٹیوں کے کارکنوں کو بلائیں اور اُن کے ساتھ بیٹھکر دیش کے آج کے سوالوں پر مل کر وچار کریں. میٹنگ ھوئی جس میں لگ بھگ 40-45 بھائی بہن تھے. اُن میں کمیونسٹ بھی تھے، کانگریسی بھی تھے، پرجا پارٹی والے بھی تھے، جن سنگھی بھی تھے، اور رچناتمک کاریہ کرتا بھی تھے . دو گھنٹے تک وشو شانتی، دیش کی آجکی حالت، راج کاج اور بھودان آندولن پر چرچا چلی جس میں سبھی نے دل کھول کر اور دھیان پوروک حصہ لیا . ایسی میٹنگ کا ھمیں اور جگہ بھی اِتفاق ھوا ھے . ھمارا وشواس ھے کہ آج پارٹیوں کے پچڑوں میں پڑ کر ھم لوگ صحیح صحیح نہ دیکھ پاتے ھیں نہ کچھ کر پاتے ھیں . محسوس ھوتا ھے کہ اصلی ھت میں یہ پارٹیاں اکثر رکاوٹ بن جاتی ھیں. ایسی میٹنگوں سے پتہ چلتا ھے کہ اِس راجنیتک جات پات یا سیاسی چھوا چھوت سے الگ رھنے کی طبیعت ھم میں سے بہتوں کی ھوتی ھے اور اِس سے ھٹنا اُتنا کٹھن نہیں ھے جتنا باھر سے دیکھتا ھے . اگر ھم ذرا جتن کریں تو یہ سہج ھی ھٹ جائے اور پھر

मिल बैठ कर, प्रेम के साथ हम हर मसला मज़े में तय कर सकते हैं.

मध्य भारत के ग्रामोद्योग

मध्य भारत या कम से कम इन्दौर के गांव के धन्धे देखने का शौक़ हमें शुरू से था. हमने इन्दौर पहुंच कर मध्य भारत के डायरेक्टर आफ़ इन्डस्ट्रीज़ श्री नारायन स्वामी से भेंट की. उन्होंने ख़ुद हमारे साथ जा कर अपने विभाग के कारख़ाने दिखलाये और बतलाया कि पढ़े लिखों में बेकारी का सामना करने के लिये वह क्या क्या उपाय कर रहे हैं, जैसे तेल पेरना, बटन बनाना, निवाड़ या फ़ीते बुनना, खिलौने बनाना वग़ैरा. श्री स्वामी ने बताया कि सरकार की ओर से यशवन्त सागर में—जो इन्दौर से 15 मील पर है—रेशम के कीड़े पालने का काम किया जा रहा है. उसी के आगे देवपालपुर नाम की एक जगह है जहां एक इन्डस्ट्रियल कोआपरेटिव सोसाइटी चलती है और इन्दौर से सठ पैंसठ मील दक्खिन की तरफ़ महेश्वर नाम का मशहूर स्थान है जहां सरकार की तरफ़ से करघे के धन्धे को बढ़ाने की पूरी कोशिश की जा रही है.

शहतूत की खेती

यशवन्त सागर में रेशम के कीड़े पालने का काम सन 1949-50 में आधा एकड़ ज़मीन पर शुरू किया गया था. दूसरे साल सरकार ने इसे साढ़े चार एकड़ ज़मीन पर और बढ़ा दिया. तीसरे साल एक एकड़ और. इस तरह 1951-52 तक छै एकड़ ज़मीन पर सरकार की तरफ़ से शहतूत की खेती की जाने लगी. रेशम के कीड़े शहतूत के पत्तों पर पाले जाते हैं. धीरे धीरे आस पास के किसानों ने भी इसे अपनाया और 1951-52 में दो एकड़ ज़मीन, 1952-53 में ग्यारह एकड़ और 1953-54 में भी ग्यारह एकड़ पर उन्होंने शहतूत की काश्त की.

सरकारी फ़ारम से लगभग सात आठ दिन उम्र के रेशम के कीड़े किसानों को मुफ़्त दे दिये जाते हैं जिनकी मदद से पन्द्रह दिन में रेशम वाले कोकून तैयार हो जाते हैं. इन कोकूनों को सरकार दो रुपये पौंड के हिसाब से ख़रीद लेती है. एक पौंड में चार सौ पांच सौ कोकून होते हैं और पन्द्रह बीस पौंड कोकून से एक पौंड रेशम तैयार होता है. इस फ़ारम के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने हमें बताया कि मामूली मेहनत और सिंचाई से किसान को एक एकड़ पर पहले साल में 80 रुपये की और आगे से 300 रुपये सालाना की बचत हो सकती है.

आजकल हमारे देश में लाखों रुपये का असली या नक़ली रेशम जापान, इटली और विदेशों से आता है. ज़रूरत इस बात की है कि रेशम यहीं का यहीं तैयार हो.

مل بیٹھ کر پریم کے ساتھ ہم ہر مسلہ مزے میں طے کر سکتے ہیں۔

مدھیہ بھارت کے گرام اُدیوگ

مدھیہ بھارت کے یا کم سے کم اندور کے گاؤں کے دھندے دیکھنے کا شوق ہمیں شروع سے تھا۔ ہم نے اندور پہونچ کر مدھیہ بھارت کے ڈائریکٹر آف انڈسٹریز شری نارائن سوامی سے بھینٹ کی۔ اُنہوں نے خود ہمارے ساتھ جا کر اپنے وبھاگ کے کارخانے دکھلائے اور بتلایا کہ پڑھے لکھوں میں بیکاری کا سامنا کرنے کے لئے وہ کیا کیا اُپائے کر رہے ہیں، جیسے تیل پیرنا، بٹن بنانا، نواڑ یا فیتے بننا، کھلونے بنانا وغیرہ۔ شری سوامی نے بتایا کہ سرکار کی اور سے یشونت ساگر میں—جو اندور سے 15 میل پر ہے—ریشم کے کیڑے پالنے کا کام کیا جا رہا ہے۔ اسی کے آگے دیو پال پور نام کی ایک جگہ ہے جہاں ایک انڈسٹریل کوآپریٹو سوسائٹی چلتی ہے اور اندور سے 65-60 میل دکھن کی طرف مہیشور نام کا مشہور استھان ہے جہاں سرکار کی طرف سے کرگھے کے دھندھے کو بڑھانے کی پوری کوشش کی جا رہی ہے۔

شہتوت کی کھیتی

یشونت ساگر میں ریشم کے کیڑے پالنے کا کام سن 50-1949 میں آدھا ایکڑ زمین پر شروع کیا گیا تھا۔ دوسرے سال سرکار نے اسے ساڑھے چار ایکڑ زمین پر اور بڑھا دیا۔ تیسرے سال ایک ایکڑ اور۔ اس طرح 52-1951 تک چھ ایکڑ زمین پر سرکار کی طرف سے شہتوت کی کھیتی کی جانے لگی۔ ریشم کے کیڑے شہتوت کے پتوں پر پالے جاتے ہیں۔ دھیرے دھیرے آس پاس کے کسانوں نے بھی اسے اپنایا اور 52-1951 میں دو ایکڑ زمین، 53-1952 میں گیارہ ایکڑ اور 54-1953 میں بھی گیارہ ایکڑ پر اُنہوں نے شہتوت کی کاشت کی۔

سرکاری فارم سے لگ بھگ سات آٹھ دن عمر کے ریشم کے کیڑے کسانوں کو مفت دے دئے جاتے ہیں جن کی مدد سے پندرہ دن میں ریشم والے کوکون تیار ہو جاتے ہیں۔ ان کوکونوں کو سرکار دو روپیہ پونڈ کے حساب سے خرید لیتی ہے۔ ایک پونڈ میں چار سو۔ پانچ سو کوکون ہوتے ہیں اور پندرہ بیس پونڈ کوکون سے ایک پونڈ ریشم تیار ہوتا ہے۔ اس فارم کے سپرنٹنڈینٹ نے ہمیں بتایا کہ معمولی محنت اور سنچائی سے کسان کو ایک ایکڑ پر پہلے سال میں 80 روپیہ کی، اور آگے سے 300 روپے سالانہ کی بچت ہو سکتی ہے۔

آجکل ہمارے دیش میں لاکھوں روپے کا اصلی یا نقلی ریشم جاپان، اِٹلی اور ودیشوں سے آتا ہے۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ریشم یہیں کا یہیں تیار ہو

लेकिन इस बात की भी एहतियात चाहिये कि शहतूत की खेती एक सीमित दायरे तक रक्खी जाय और उसे ऐसा भयानक रूप न लेने दिया जाय जो ईख, चाय और रबड़ की खेती ने ले लिया है. पहली कोशिश हमारी यही होनी चाहिये कि हर ज़िले में कपास पैदा हो ताकि ज़रूरत का कपड़ा गांव गांव बनाने लगे और फिर नाज और कपास से जो फ़ालतू ज़मीन बचे वहां पर ज़ियादा ऐश आराम की चीज़ें तैयार की जायं.

जुर्म और बेरोज़गारी

यशवन्त सागर से आठ दस मील के फ़ासले पर देवपालपुर नाम का एक अच्छा क़सबा है जहां सहकारी ग्रामोद्योग विकास संघ लिमिटेड नाम से एक इन्डस्ट्रियल कोआपरेटिव सोसाइटी चल रही है. यहां पर हमने एक मार्के की चीज़ देखी थी जिसकी चर्चा हम सितम्बर के "नया हिन्द" में कर चुके हैं. इस संघ के रजिस्टरों में सब-इन्सपेक्टर पुलिस की जो चिट्ठी मिली थी उससे साफ़ पता चलता है कि हमारे देश में चोरी डकैती और जुर्म वग़ैरा के लिये हमारे यहां की बढ़ती हुई बेरोज़गारी और देहातों के धन्धों और रोज़गारों का चौपट होना कितनी दूर तक और किस गहराई तक ज़िम्मेदार है.

महेश्वर में बुनाई का काम

महेश्वर की आबादी लगभग सात हज़ार है. बुनाई के काम में मध्य भारत में यह बहुत ही सरनाम मुक़ाम है. यहां की बारीक सूती साड़ी दूर दूर तक मशहूर रही हैं. आजकल सरकार की तरफ़ से यहां पर एक सिखाई और उत्पत्ति केन्द्र चलता है. सरकारी फ़ैक्टरी के करघों में fly shuttle इस्तेमाल होता है. गांव के करघे ज़ियादातर throw shuttle से चलते हैं जिससे माल की औसत तैयारी कम बैठती है. सरकार की कोशिश है कि fly shuttle का इस्तेमाल बढ़े. अब तक 43 घरों में मदद के तौर पर सरकार की तरफ़ से fly shuttle दिया गया है जिसके आधे दाम (70 रुपये की बजाय 35 रुपये) बुनकरों से महीने महीने की क़िस्तों में छै दफ़ा कर के वसूल किया जाता है. काम को बढ़ावा देने के लिये सरकार की तरफ़ से सूत भी मिलता है जिसकी मज़दूरी जहां चार आने गज़ है वहां एक रुपये गज़ तक दे दी जाती है ताकि बुनकर जल्दी ही इसे अपना लें.

भारत के बीच के और दक्खिनी प्रान्तों में दो तरह के बुनकर होते हैं, मास्टर बुनकर और मामूली बुनकर. इनमें मास्टर बुनकर असरदार और मालदार होता है और खुद कुछ नहीं बुनाता. मामूली बुनकर ग़रीब मज़दूर की तरह बुनाई के सहारे ज़िंदा रहता है. हमने एक मामूली बुनकर से मुलाक़ात की. उसके करघे पर पांच गज़ लम्बी और पचास

بات کی بھی احتیاط چاہئے کہ شہتوت کی کھیتی
ہت دائرے تک رکھی جائے اور اُسے ایسا بھیانک
لینے دیا جائے جو ایکھ، چائے اور ربر کی کھیتی نے
لیا ہے. پہلی کوشش ہماری یہی ہونی چاہئے کہ ہر
کپاس پیدا ہو تاکہ ضرورت کا کپڑا گاؤں گاؤں بننے
پھر اناج اور کپاس سے جو فالتو زمین بچے وہاں
میں آرام کی چیزیں تیار کی جائیں ۔

جرم اور بے روزگاری

یشونت ساگر سے آٹھ دس میل کے فاصلے پر دیو پال پور
ایک اچھا قصبہ ہے جہاں سہکاری گرام اُدیوگ وکاس
سنگھ لمیٹڈ نام سے ایک انڈسٹریل کوآپریٹو سوسائٹی
ہے. یہاں پر ہم نے ایک معرکے کی چیز دیکھی تھی
کی چرچا ہم ستمبر کے "نیا ہند" میں کر چکے
اس سنگھ کے رجسٹروں میں سب انسپکٹر پولیس
جو چٹھی ملی تھی اس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ
دیش میں چوری ڈکیتی اور جرم وغیرہ کے لئے ہمارے
کی بڑھتی ہوئی بے روزگاری اور دیہاتوں کے دھندوں
روزگاروں کا چوپٹ ہونا کتنی دور تک اور کس گہرائی
ذمہ دار ہے ۔

مہیشور میں بنائی کا کام

مہیشور کی آبادی لگ بھگ سات ہزار ہے. بنائی
کام میں مدھیہ بھارت میں یہ بہت ہی سرنام مقام
یہاں کی باریک سوتی ساڑی دور دور تک مشہور
ہیں. آجکل سرکار کی طرف سے یہاں پر ایک سکھائی
اُتپتی کیندر چلتا ہے. سرکاری فیکٹری کے کرگھوں
fly-shuttle استعمال ہوتا ہے. گاؤں کے کرگھے زیادہ تر
throw-shuttle سے چلتے ہیں جس سے مال کی اوسط
کم بیٹھتی ہے. سرکار کی کوشش ہے کہ fly-
shuttle کا استعمال بڑھے. اب تک 43 گھروں میں مدد
طور پر سرکار کی طرف سے fly-shuttle دیا گیا ہے
کے آدھے دام (70 روپے کی بجائے 35 روپے) بنکروں
مہینے مہینے کی قسطوں میں چھ دفعہ کر کے وصول
جاتا ہے. کام کو بڑھاوا دینے کے لئے سرکار کی طرف سے
بھی ملتا ہے جسکی مزدوری جہاں چار آنے گز ہے
ایک روپیہ گز تک دے دی جاتی ہے تاکہ بنکر جلدی
اپنا لیں ۔

بھارت کے بیچ کے اور دکھنی پرانتوں میں دو طرح
بنکر ہوتے ہیں، ماسٹر بنکر اور معمولی بنکر. اس
میں ماسٹر بنکر اثردار اور مالدار ہوتا ہے اور خود کچھ
نہیں بنتا. معمولی بنکر غریب مزدور کی طرح بنائی
سہارے زندہ رہتا ہے. ہم نے ایک معمولی بنکر سے
ملاقات کی. اس کے کرگھے پر پانچ گز لمبی اور پچاس

इंच चौड़ी 12 साड़ियों का पोत बिछा हुआ था. हिसाब लगा कर देखा कि पांच गज़ रोज़ बुनाई करने पर भी उसे मुश्किल से एक रुपये रोज़ मज़दूरी मिलती है जिसमें करघे का रख-रखाव या सरंजाम ख़र्च भी शामिल है.

बुनकरों की तबाही

हमारी मुलाक़ात एक और बुनकर से हुई. उसकी साठ बरस की उम्र थी, कान का कुछ बहरा था, आंख से कम दीखता था लेकिन बुनता था. उसका घर उसकी स्त्री चला रही थी, जिसमें तीन बच्चे और उनकी विधवा बुआ और नानी को लेकर सात प्रानी थे. बुड्ढा पगड़ी वाला कपड़ा बुन रहा था. तानी चालीस गज़ लम्बी और नौ इंच चौड़ी थी. उसमें दो रुपये दस आने का आधा सेर सूत और बारह आने का कलाबत्तू लगा हुआ था. यानी लागत तीन रुपए छै आने थी. बाज़ार भाव से दो आने गज़ के हिसाब से चालीस गज़ का दाम पांच रुपया. रोज़ाना दस गज़ बुनाई के हिसाब से एक दिन की आमदनी सात आने ! और सात जनों के एक कुटुम्ब को इसमें गुज़र करना है ! फिर भी बाज़ार की हाय-हाय और ख़रीदार का पता नहीं.

ऐसी हालत में यह करघे कब तक ज़िन्दा रहेंगे ? हम एक मास्टर बुनकर से भी मिले जिसके यहां पीढ़ी दर पीढ़ी यह काम होता चला आ रहा था. उन्होंने बताया कि साड़ी की खपत मिल के मुक़ाबले के कारन दिन-दिन घटती जा रही है और काम मद्दा पड़ रहा है.

इन्दौर के आस-पास में ही दो जगहें ऐसी हैं जिन्हें देख कर कुछ तसल्ली होती है. एक है कस्तूरबा ग्राम जो इन्दौर से पांच मील पर है और दूसरा है माचला नाम का गांव जो कस्तूरबा ग्राम से चार मील पर है.

कस्तूरबा ग्राम

कस्तूरबा ग्राम, माता कस्तूरबा के नाम पर बसा हुआ है. सन 1944 में बा के देहान्त के बाद देश भर में कस्तूरबा गांधी स्मारक के नाम से कुछ पैसा जमा किया गया था. 2 अक्तूबर 1944 को यह निधि जब महात्मा गांधी को भेंट की गई तब उन्होंने इसका एक ट्रस्ट क़ायम कर दिया और देश के देहातियों की ख़ास कर बहनों की भलाई की ख़ातिर इसे ख़र्च करने को सौंप दिया. कस्तूरबा ग्राम जाने का हमें दो बार इत्तफ़ाक़ हुआ. हमारी मुलाक़ात भाई मानक चन्द कटारिया से हुई जो उस वक़्त दफ़्तर का काम देख रहे थे और जो ट्रस्ट के तिमाही अख़बार 'कस्तूरबा दर्शन' के सम्पादक हैं. विद्यालय के अलावा कस्तूरबा ग्राम में एक अस्पताल, ज़च्चा ख़ाना और बाल बाड़ी चलते हैं. विद्यालय में कताई-बुनाई वग़ैरा उद्योग भी सिखाये जाते हैं. कस्तूरबा ग्राम में क़रीब सौ एकड़ से ऊपर ज़मीन में ज्वार, धान, मूंगफली, कपास, साग, भाजी,

انچ چوڑی 12 ساڑیوں کا پوت بچھا ہوا تھا ۔ حساب لگاکر دیکھا کہ پانچ گز روز بنائی کرنے پر بھی اسے مشکل سے ایک روپیہ روز مزدوری ملتی ہے جس میں کرگھے کا رکھ رکھاؤ یا سرانجام خرچ بھی شامل ہے ۔

بنکروں کی تباہی

ہماری ملاقات ایک اور بنکر سے ہوئی ۔ اُسکی ساٹھ برس کی عمر تھی، کان کا کچھ بہرا تھا، آنکھ سے کم دیکھتا تھا لیکن بنتا تھا ۔ اُس کا گھر اُسکی اِستری چلا رہی تھی، جس میں تین بچے اور اُنکی ودھوا بوا اور نانی کو لیکر سات پرانی تھے ۔ بڈھا پگڑی والا کپڑا بن رہا تھا ۔ تانی چالیس گز لمبی اور نو اِنچ چوڑی تھی ۔ اُس میں دو روپئے دس آنے کا آدھا سیر سوت اور بارہ آنے کا کلابتو لگا ہوا تھا ۔ یعنی لاگت تین روپیہ چھ آنے تھی ۔ بازار بھاؤ سے دو آنے گز کے حساب سے چالیس گز کا دام پانچ روپیہ ۔ روزانہ دس گز بنائی کے حساب سے، ایک دن کی آمدنی سات آنے ! اور سات جنوں کے ایک کٹمب کو اِس میں گذر کرنا ہے ! پھر بھی بازار کی ہائے ہائے اور خریدار کا پتہ نہیں !

ایسی حالت میں کرگھے کب تک زندہ رہینگے ؟ ہم ایک ماسٹر بنکر سے بھی ملے جس کے یہاں پیڑھی در پیڑھی یہ کام ہوتا چلا آ رہا تھا ۔ اُنہوں نے بتایا کہ ساڑی کی کھپت مل کے مقابلے کے کارن دن دن گھٹتی جا رہی ہے اور کام مدا پڑ رہا ہے ۔

اِندور کے آس پاس میں ہی دو جگہیں ایسی ہیں جنھیں دیکھکر کچھ تسلی ہوتی ہے ۔ ایک ہے کستوربا گرام جو اِندور سے پانچ میل پر ہے اور دوسرا ہے ماچلا نام کا گاؤں جو کستوربا گرام سے چار میل پر ہے ۔

کستوربا گرام

کستوربا گرام ماتا کستوربا کے نام پر بسا ہوا ہے ۔ سن 1944 میں با کے دیہانت کے بعد دیش بھر میں اُن کی یاد میں کستوربا گاندھی اسمارک کے نام سے کچھ پیسہ جمع کیا گیا تھا ۔ 2 اکتوبر 1944 کو یہ ندھی جب مہاتما گاندھی کو بھینٹ کی گئی تب اُنہوں نے اِس کا ایک ٹرسٹ قایم کردیا اور دیش کے دیہاتیوں کی خاصکر بہنوں کی بھلائی کے خاطر اِسے خرچ کرنے کو سونپ دیا ۔ کستوربا گرام جانے کا ہمیں دوبار اِتفاق ہوا ۔ ہماری ملاقات بھائی مانک چند کٹاریا سے ہوئی جو اُس وقت دفتر کا کام دیکھ رہے تھے اور جو ٹرسٹ کے تماہی اخبار 'کستوربا درشن' کے سمپادک ہیں ۔ ودیالے کے علاوہ کستوربا گرام میں ایک سپتال، زچہ‌خانہ اور بال باڑی چلتے ہیں ۔ ودیالے میں کتائی بنائی وغیرہ اُدیوگ بھی سکھائے جاتے ہیں ۔ کستوربا گرام میں قریب سو ایکڑ سے اُوپر زمین میں جوار، دھان، مونگ پھلی، کپاس، ساگ بھاجی،

दालें, ईख, मिर्च मसाले, तिलहन वग़ैरा की खेती होती है इस इलाक़े में पानी की अकसर शिकायत हो जाती है जिसकी वजह से खेती का कोई आसरा नहीं किया जा सकता. लेकिन इस बार पानी अच्छा पड़ा और उम्दा फ़सल की आशा है.

कस्तूरबा ग्राम में सभी इन्तज़ाम अच्छा नज़र आया. कमी है उससे फ़ायदा उठाने वालों की. यहां के अस्पताल में अभी मरीज़ कम ही आते हैं और विद्यालय में बहनों की तादाद सिर्फ़ 17 थी. लेकिन हमने इन बहनों के काम को रसोई-घर में, कताई-घर में, बुनाई-घर में, बाल-बाड़ी में, जगह-जगह देखा. उनके काम की फुर्ती, मन की लगन और हाथ की सफ़ाई तारीफ़ के क़ाबिल थीं.

कस्तूरबा ट्रस्ट की तरफ़ से देश के लगभग हर प्रान्त में काम हो रहा है, सच्चा शान्त, और ख़ामोश.

माचला और गांव निर्मान

माचला के भाई देवेन्द्रनाथ गुप्त हमारे पुराने मित्र और साथी हैं. माचला में देवेन्द्र जी ने 20 बे-ज़मीन वाले किसानों की एक सहकारी सोसाइटी अभी हाल में बनाई है जो मिल कर 300 एकड़ ज़मीन का इन्तज़ाम कर रही है. उसमें मकई, ज्वार, चने वग़ैरा की काश्त की गई है. बीस जनों को लेकर सहकारी आधार पर तेल-घानी भी लगाई जा रही है. उधर ताड़ बहुत हैं. इस लिये ताड़ गुड़ बनाने की तैयारी है. देवेन्द्र जी की बातचीत, उनकी एक साल की रिपोर्ट, काम की हालत को देख कर हमारा यह अन्दाज़ा है कि अब से दो बरस के अन्दर देवेन्द्र जी व उनके साथी स्वावलम्बी हो जायेंगे यानी अपने खाने कपड़े का ख़र्च अपनी खेती-कताई से निकालने लग जायेंगे और गांव वालों को यह विश्वास हो जायेगा कि इस तरह अपनी हालत मज़बूत और ठोस बना कर चैन से रहा जा सकता है.

माचला की बहुत काफ़ी ज़मीन पर दूसरे लोग—जो न माचला में रहते हैं न कभी रहे हैं न उससे मतलब—क़ाबिज़ हैं. देवेन्द्र जी और उनके साथियों को इतमीनान है कि अगर क़स्बे की सब ज़मीन गांव वालों को मिल जाय तो गांव स्वावलम्बी बन सकता है.

हम उस दिन का इन्तज़ार है जब देवेन्द्र जी माचला वालों का दिल बदल कर भूदान में सारी ज़मीन लेकर इस गांव का ढांचा बदल देंगे. हम इस केन्द्र को स्वावलम्बी ग्राम रचना की एक बेहतरीन प्रयोग शाला मानते हैं.

हमारी इच्छा थी कि मध्य भारत के भील इलाक़ों का भी दर्शन करें. पर वह मुमकिन न हो सका. लेकिन उस जीवन की कुछ झलक हमें तब मिली जब हम महेश्वर से इन्दौर लौट रहे थे. इन्दौर मालवा प्रान्त में माना जाता है, महेश्वर नीमाड़ में नीमाड़ के अपने अनोखे लोक गीत हैं. महेश्वर

، مصالحے، تلہن وغیرہ کی کھیتی ہوتی
اس علاقہ میں پانی کی اکثر شکایت ہو جاتی ہے
وجہ سے کھیتی کا کوئی آسرا نہیں کیا جاسکتا
بار پانی اچھا پڑا اور عمدہ فصل کی آشا ہے ۔
کستوربا گرام میں سبھی انتظام اچھا نظر آیا ۔ کمی
فائدہ اٹھانے والوں کی ۔ یہاں کے اسپتال میں
مریض کم ہی آتے ہیں اور ودیالے میں بہنوں کی
صرف 17 تھی ۔ لیکن ہم نے ان بہنوں کے کام کو
گھر میں، کتائی گھر میں، بنائی گھر میں، بال
میں جگہ جگہ دیکھا ۔ ان کے کام کی پھرتی، من کی
ہاتھ کی صفائی تعریف کے قابل تھیں ۔
کستوربا ٹرسٹ کی طرف سے دیش کے لگ بھگ ہر
میں کام ہو رہا ہے، سچا، شانت اور خاموش ۔

ماچلا اور گاؤں نرمان

ماچلا کے بھائی دیویندر ناتھ گپت ہمارے پرانے متر اور
ہیں ۔ ماچلا میں دیویندر جی نے 20 بے زمین والے
کی ایک سہکاری سوسائٹی ابھی حال میں بنائی
مل کر 300 ایکڑ زمین کا انتظام کر رہی ہے ۔ اس
مکئی، جوار، چنے وغیرہ کی کاشت کی گئی ہے ۔
جنوں کو لیکر سہکاری آدھار پر تیل گھانی بھی
جا رہی ہے ۔ ادھر تاڑ بہت ہیں ۔ اس لئے تاڑ گڑ
کی تیاری ہے ۔ دیویندر جی کی بات چیت، انکی
سال کی رپورٹ، کام کی حالت کو دیکھکر ہمارا یہ
ہے کہ اب سے دو برس کے اندر دیویندر جی و ان کے
سواولمبی ہو جائیں گے ۔ یعنی اپنے کھانے کپڑے کا
اپنی کھیتی کتائی سے نکالنے لگ جائیں گے اور گاؤں
کو یہ وشواس ہو جائیگا کہ اس طرح اپنی حالت
اور ٹھوس بناکر چین سے رہا جاسکتا ہے ۔
ماچلا کی بہت کافی زمین پر دوسرے لوگ — جو نہ
میں رہتے ہیں نہ کبھی رہے ہیں نہ اس سے مطلب
قابض ہیں ۔ دیویندر جی اور ان کے ساتھیوں کو اطمینان
اگر قصبے کی سب زمین گاؤں والوں کو مل جائے تو
سواولمبی بن سکتا ہے ۔
ہم اس دن کا انتظار ہے جب دیویندر جی ماچلا
کا دل بدل کر بھودان میں ساری زمین لیکر اس
کا ڈھانچہ بدل دینگے ۔ ہم اس کیندر کو سواولمبی
رچنا کی ایک بہترین پریوگ شالا مانتے ہیں ۔
ہماری اچھا تھی کہ مدھیہ بھارت کے بھیل علاقوں کا
درشن کریں ۔ پر وہ ممکن نہ ہوسکا ۔ لیکن اس جیون
جھلک ہمیں تب ملی جب ہم مہیشور سے اندور
رہے تھے ۔ اندور مالوا پرانت میں مانا جاتا ہے، مہیشور
میں ، نیماڑ کے اپنے انوکھے لوک گیت ہیں ۔ مہیشور

से लौटते समय हम बड़वाहा भी कुछ देर के लिये भाई मुरली मनोहर के घर ठहरे और नीमाड़ के जीवन का कुछ परिचय लिया. नीमाड़ के लोक साहित्य के संग्रह का काम भाई महेन्द्र मुरली चाव से कर रहे हैं.

आखिर में हम एक अफ़सोसनाक घटना की चर्चा किये बग़ैर नहीं रह सकते. महात्मा भगवानदीन जब मध्य भारत के मुख्य मंत्री से मिलने गये तो भाई काशीनाथ जी के अलावा हम भी साथ थे. मुख्य मंत्री जी बड़े आदर सत्कार से मिले. महात्मा जी की और उनकी बात-चीत हम सुनते रहे. लेकिन सब कमरे में इधर-उधर निगाह दौड़ी तो देखा कि सामने जो मेज़, स्टूल रखे हैं उन पर मेज़-पोश खादी या हैन्डलूम के न होकर प्लास्टिक के हैं. कमरे में ग्रामोद्योग की किसी चीज़ का नाम तक नहीं था. शायद यही नज़ारा हर राजधानी में होगा.

मध्य भारत के अपने आठ रोज़ के प्रवास में जो देखा, सुना, समझा, सीखा उसके यह चित्र रह-रह कर याद आते हैं—एक बुनकर परिवार को दिन भर की कमाई में सात आने भी नहीं नसीब होते, रोज़ी का मारा कारीगर मजबूर हो कर चोरी. डकैती पर उतर आता है और एक मुख्य मंत्री के घर में प्लास्टिक के मेज़ पोश ! क्या इससे हम इस नतीजे पर नहीं पहुंचते कि हमारे देश में बेरोज़गारी बढ़ाने की एक बाक़ायदा योजना जारी है ? क्या इससे आम जनता इस नतीजे पर नहीं पहुंच सकती कि देश के मुट्ठी भर आदमी उसके शोशन व तबाही पर उतारू हैं ? और फिर क्या इससे इस नतीजे पर कोई पहुंचे बिना रह सकता है कि हिन्दुस्तान में सिर्फ़ चंद आदमी ही आज़ाद हैं और बाक़ी करोड़ों अभी तक ग़ुलाम हैं ? जनता को अपनी असली आज़ादी हासिल करना होगी. इन्दौर शहर की हर पार्टी-बैठक का इशारा है कि हम सब मिल कर उसके लिये जिद्दो-जिहद और क़ुरबानियां करेंगे. माचला गांव के नए तजुरबे का इशारा यह है कि आगे के लिये हमारे गांव खुशहाल होंगे, अपने पैरों पर खड़े होंगे, आज़ाद होंगे यानी देश की राज शक्ति गांव गांव में बंटी होगी, देश के सब रहने वाले हाथ की मेहनत की क़दर करेंगे और सब मेहनत करेंगे और देश के धन के बंटवारे में कम से कम फ़रक़ रहेगा। तभी जनता की सच्ची आज़ादी का दिन आएगा.

—सुरेश रामभाई

سے لوٹتے سمے ہم بڑواہا بھی کچھ دیر کے لئے بھائی مرلی منوہر کے گھر ٹھہرے اور نیماڑ کے جیون کا کچھ پریچے لیا. نیماڑ کے لوک ساہتیہ کے سنگرہ کا کام بھائی مہیندر مرلی چاؤ سے کر رہے ہیں .

آخر میں ہم ایک افسوسناک گھٹنا کی چرچا کئے بغیر نہیں رہ سکتے . مہاتما بھگوان دین جب مدھیہ بھارت کے مکھیہ منتری سے ملنے گئے تو بھائی کاشی ناتھ جی کے علاوہ ہم بھی ساتھ تھے. مکھیہ منتری جی بڑے آدر ستکار سے ملے . مہاتما جی کی اور اُنکی بات چیت ہم سنتے رہے . لیکن جب کمرے میں اِدھر اُدھر نگاہ دوڑی تو دیکھا کہ سامنے جو میز اِسٹول رکھے ہیں اُن پر میز پوش کھادی یا ہینڈلوم کے نہ ہوکر پلاسٹک کے ہیں . کمرے میں گرام اُدیوگ کی کسی چیز کا نام تک نہیں تھا . شاید یہی نظارہ ہر راجدھانی میں ہوگا .

مدھیہ بھارت کے اپنے آٹھ روز کے پرواس میں جو' دیکھا' سنا' سمجھا' سیکھا اُس کے یہ چتر رہ رہ کر یاد آتے ہیں— ایک بنکر پریوار کو دن بھر کی کمائی میں سات آنے بھی نہیں نصیب ہوتے' روزی کا مارا کاریگر مجبور ہوکر چوری ڈکیتی پر اُتر آتا ہے اور ایک مکھیہ منتری کے گھر میں پلاسٹک کے میز پوش ! کیا اِس سے ہم اِس نتیجے پر نہیں پہونچتے کہ ہمارے دیش میں بے روزگاری بڑھانے کی ایک باقاعدہ یوجنا جاری ہے ؟ کیا اِس سے عام جنتا اِس نتیجے پر نہیں پہونچ سکتی کہ دیش کے مٹھی بھر آدمی اُسکے شوشن و تباہی پر اُتارو ہیں ؟ اور پھر کیا اُس سے اِس نتیجے پر کوئی پہونچے بنا رہ سکتا ہے کہ ہندستان میں صرف چند آدمی ہی آزاد ہیں اور باقی کروڑوں ابھی تک غلام ہیں ؟ جنتا کو اپنی اصلی آزادی حاصل کرنا ہوگی. اِندور شہر کی ہر پارٹی بیٹھک اشارہ ہے کہ ہم سب ملکر اس کے لئے جدوجہد اور قربانیاں کرینگے . ماچلہ گاؤں کے نئے تجربے کا اِشارہ یہ ہے کہ آگے کے لئے ہمارے گاؤں خوشحال ہونگے' اپنے پیروں پر کھڑے ہونگے' آزاد ہونگے یعنی دیش کی راج شکتی گاؤں گاؤں میں بٹتی ہوئی' دیش کے سب رہنے والے ہاتھ کی محنت کی قدر کرینگے. اور سب محنت کرینگے اور دیش کے دھن کے بٹوارے میں کم سے کم فرق رہیگا تبھی جنتا کی سچی آزادی کا دن آئے گا .

—سریش رام بھائی

मार्क्सवाद कोरा समाज दर्शन नहीं

जो माटीवाद (मैटीरियलिज्म) बदनाम है,—जिन माटीवादों पर लोग फबतियां कसते हैं—वह है "मरियल, माटीवाद", वह है भी इसी जोग. जो डाइलेक्टिकल मैटीरियलिज्म नाम वाला माटीवाद है, वह है "जानदार माटीवाद." उसका काम सारे जगत पर निगाह डालना है. वह समाज-दर्शन के छोटे दायरे में घूम कर नहीं रह जाता. जानदार माटीवाद एक नया दर्शन है. उस की अगर इतनी छोटी निगाह होती जितनी लोग समझ बैठे हैं तो क्या वह एक क़दम आगे बढ़ सकता? सब सोवियत दार्शनिक जान बूझ कर, सोच समझकर उस बड़े सिद्धांत से अपना नाता जोड़े हैं जो 'जगत सिद्धांत' नाम से मशहूर है, जिसे तत्वज्ञान भी कहा जा सकता है; अंगरेजी में जिसे आॅन्टोलोजी कहते हैं. रूसी दर्शनकार अपना तर्क रखता है, अपने नीति सिद्धांत रखता है, उसके अपने कला सिद्धांत हैं, उसके ठीक ठीक सोचने के तरीक़े हैं. जानदार माटीवाद पर योंही उंगली उठा बैठना ठीक नहीं.

बेशक, उसकी यह राय है और पक्की राय है कि कोई कैसा भी सिद्धांत क्यों न हो कैसे ही असूल क्यों न हों, उन सिद्धांतों और उन असूलों को गढ़ने वाला कितनी ही यह कोशिश क्यों न करे कि वह सिद्धांत और वह असूल एक अपनी विशेषता लिये हो तो भी वह सब के सब सामाजी आधार पर ही टिके मिलेंगे. थोड़े शब्दों में समाज को निगाह में रख कर ही सारे सिद्धांत और नियम गढ़े जाते हैं. रूसी दर्शनकार किसी सिद्धांत को अलग मानने को तैयार नहीं. यही है जानदार माटीवाद (Dialectical materialism) का निचोड़. वह ऐसा क्यों न माने? हर सिद्धांत समाज पर अपना असर डालता ही है. हर नियम, हर असूल—फिर वह चाहे कितना ही इस लोक से परे परमात्मा या परलोक से सम्बन्ध रखता हो—समाज पर असर डाले बिना नहीं रहता. उसका यह भी विश्वास है कि सिद्धांत गढ़ने वाला चाहे जानबूझ कर ऐसा न सोचे तब भी उसके सिद्धांत का असर अपने आप समाज पर पड़ जाता है. मानव संस्कृति है ही ऐसी चीज़ कि वह किसी एक आदमी की नहीं कही जा सकती. उसका संबंध सारे समाज से है. हर आदमी का काम समाज भर पर असर डालता है, उसी तक महदूद नहीं रह सकता. समाज में अलग अलग ऐसी कोठरियां हैं ही नहीं जो एक दूसरे से संबंध न रखती हों.

रूसी विचारक, अपने ख़याल में, पच्छिम की जिस बढ़वारी की बात इतिहास में कही जाती है, जिस में बड़े

[مارک]س‌واد کورا سماج درشن نہیں

[...] ماٹی واد (میٹریلزم) بدنام ہے،—جن ماٹی‌وادوں [...] پھبتیاں کستے ہیں—وہ ہے "مریل ماٹی واد،" وہ ہے [...] جوگ جو ڈائی لیکٹیکل میٹریلزم کے نام والا ماٹی‌واد [...] "جاندار ماٹی‌واد." اُس کا کام سارے جگت پر [...] ڈالنا ہے. وہ سماج درشن کے چھوٹے دائرے میں گھوم کر [...] جاتا. جان‌دار ماٹی‌واد، ایک نیا درشن ہے. اُسکی [...] چھوٹی نگاہ ہوتی جتنی لوگ سمجھ بیٹھے ہیں [...] ایک قدم آگے بڑھ سکتا؟ سب سوویت دارشنک جان [...] سوچ سمجھکر اِس بڑے سدھانت سے اپنا ناتا جوڑے [...] 'جگت سدھانت' نام سے مشہور ہے، جسے تتوگیان [...] کہا جاسکتا ہے، انگریزی میں جسے 'انٹولاجی' کہتے [...] روسی درشن‌کار اپنا ترک رکھتا ہے، اپنے نیتی [...] رکھتا ہے، اُس کے اپنے کلا سدھانت ہیں، اُس کے [...] ٹھیک سوچنے کے طریقے ہیں. جان‌دار ماٹی‌واد پر [...] انگلی اُٹھا بیٹھنا ٹھیک نہیں.

[بے]شک، اُسکی یہ رائے ہے اور پکی رائے ہے کہ کوئی [...] بھی سدھانت کیوں نہ ہو، کیسے ہی اصول کیوں [...] اُن سدھانتوں اور اُن اصولوں کو گڑھنے والا کتنی [...] کوشش کیوں نہ کرے کہ وہ سدھانت اور وہ اصول [...] اپنی وشیشتا لئے ہوں تو بھی وہ سب کے سب سماجی [...] پر ہی ٹکے ملیں گے. تھوڑے شبدوں میں سماج کو [...] میں رکھکر ہی سارے سدھانت اور نیم گڑھے [...] ہیں. روسی درشن‌کار کسی سدھانت کو الگ [...] کو تیار نہیں. یہی ہے 'جان‌دار ماٹی‌واد' (Dialectical Materialism) کا نچوڑ. وہ ایسا کیوں [...] نہیں؟ ہر سدھانت سماج پر اپنا اثر ڈالتا ہی ہے. [...] ہر اصول—پھر وہ چاہے کتنا ہی اِس لوک سے پرے [...] یا پرلوک سے سمبندھ رکھتا ہو—سماج پر اثر ڈالے [...] نہیں رہتا. اُس کا یہ بھی وشواس ہے کہ سدھانت [...] والا چاہے جان بوجھکر ایسا نہ سوچے تب بھی اُس [...] سدھانت کا اثر اپنے آپ سماج پر پڑ جاتا ہے. مانو [...] ہے ہی ایسی چیز کہ وہ کسی ایک آدمی کی [...] کہی جاسکتی. اُس کا سمبندھ سارے سماج سے ہے. [...] کا کام سماج بھر پر اثر ڈالتا ہے، اُسی تک محدود [...] رہ سکتا ہے. سماج میں الگ الگ ایسی کوٹھریاں [...] ہی نہیں جو ایک دوسرے سے سمبندھ نہ رکھتی [...]

[...] روسی وچارک، اپنے خیال میں پچھم کی جس [...] کی بات اِتہاس میں کہی جاتی ہے، جس میں بڑے

बड़े दर्शनकारों का हाथ है, उस बढ़वारी की इज्जत करता है, उन दर्शनकारों की क़दर करता है, पर वह यह नहीं मानता कि जिस दर्शनकार ने जो दर्शन दिया वह एक बिल्कुल अलग चीज़ थी, उसका दूसरी बातों से कोई संबंध ही न था. वह यह मानता है कि हर दर्शनकार ने सारे जगत को निगाह में रखकर अपने दर्शन की नींव डाली, जगत में समाज शामिल ही है. डेमोक्रीटस, अफ़लातून, अरस्तू, संत थामस ऐक्वीनस, फ्रांसिस बेकन, हॉब्स, स्पाईनोज़ा, कान्ट और हीगल इत्यादि सब को वह ऊंची नज़र से देखता है. यह ठीक है कि इन सब दर्शनकारों ने ऐसा नहीं किया कि सभी क्षेत्रों में प्रवेश किया हो. पर इससे क्या ? कोई क्षेत्र उनके प्रभाव से बचा नहीं. शायद ही ऐसा कोई दर्शनकार हो जो सब क्षेत्रों की ज़िम्मेदारी लेने से भागता हो. असल में दर्शन है ही ऐसी चीज़ कि वह सब क्षेत्रों से सम्बन्ध रखे बिना रह नहीं सकता. दर्शनकार का मतलब ही यह है कि वह सब तरफ़ निगाह डाले और उस चीज़ को खोजे जो सब में एक है, फिर वह इकतरफ़ा अधूरा कैसे हो सकता है ? उसे अधूरा रहने कौन देगा ? कोई एक आदमी अपने को एक बात में विशेषज्ञ कह सकता है पर वह कोरा वही हो, यह नहीं हो सकता, न आज तक कोई देखने को मिला. हां, अलग अलग दर्शनकार अपने अपने ढंग से अपनी अपनी बात कह गए. बात कहते समय उनके सामने जीवन का एक अंग नहीं था, सब का सब जीवन था. मामूली से मामूली आदमी बिना जाने बूझे सब चीज़ों को निगाह में रखकर ही कोई बात कहता है. जीवन है ही ऐसी चीज़. वह अपने आप मनुष्य को मजबूर करता है कि या तो वह सब को निगाह में रखकर सोचे या अलग अलग सोच कर सब को मिला ले.

मनुष्य स्वभाव से रूसी विचारक इन्कार भी कैसे कर सकता है ? कोई विशेषज्ञ बनना चाहे बने, समाज उसका उपयोग अपने ढंग से कर लेगा. जो समाज के लिये उपयोगी है उसके विशेषज्ञ होने का अर्थ क्या रह गया ? आंख का विशेषज्ञ क्या सारी देह का हाल नहीं जानता ? सब विशेषज्ञों का यही हाल है. इस बात पर ज़ियादा बहस करने की ज़रूरत नहीं कि जगत को एक मान कर या सारे जगत पर निगाह रख कर कोई भले ही विशेषज्ञ बने, उससे समाज को लाभ ही होगा, हानि नहीं. यह ठीक है कि जगत की एकता अपने आप दिखाई नहीं देती. उसको देखने की निगाह पैदा करनी होती है, वह हो भी जाती है. अगर दर्शनकार ही ऐसी निगाह पैदा न करे तो और कौन करेगा ? दर्शनकार की यही तो विशेशता है कि वह जान-बूझ कर, सोच समझ कर, जगत में एकता को देखता है.

بڑے درشن کاروں کا ہاتھ ہے، اس بڑھواری کی عزت کرتا ہے، اُن درشن کاروں کی قدر کرتا ہے، پر وہ یہ نہیں مانتا کہ جس درشن کار نے جو درشن دیا وہ ایک بالکل الگ چیز تھی، اس کا دوسری باتوں سے کوئی سمبندھ ہی نہ تھا۔ وہ یہ مانتا ہے کہ ہر درشن کار نے سارے جگت کو نگاہ میں رکھکر اپنے درشن کی نیو ڈالی، جگت میں سماج شامل ہی ہے۔ ڈیموکریٹس، افلاطون، ارسطو، سنت تھامس، اے کوئی نس، فرانسس بیکن، ہابس، اسپائی نوزا، کانٹ اور ہیگل اتیادی سبکو وہ اونچی نظر سے دیکھتا ہے. یہ ٹھیک ہے کہ اِن سب درشن کاروں نے ایسا نہیں کیا کہ سبھی چھیتروں میں پرویش کیا ہو. پر اِس سے کیا ؟ کوئی چھیتر ان کے پربھاؤ سے بچا نہیں۔ شاید ہی ایسا کوئی درشن کار ہو جو سب چھیتروں کی ذمہ داری لینے سے بھاگتا ہو۔ اصل میں درشن ہے ہی ایسی چیز کہ وہ سب چھیتروں سے سمبندھ رکھے بنا رہ نہیں سکتا۔ درشن کار کا مطلب ہی یہ ہے کہ وہ سب طرف نگاہ ڈالے اور اس چیز کو کھوجے جو سب میں ایک ہے، پھر وہ اِکطرفہ ادھورا کیسے ہوسکتا ہے ؟ اسے ادھورا رہنے کون دیگا ؟ کوئی بھی ایک آدمی اپنے کو ایک بات میں وشیشگ کہہ سکتا ہے پر وہ کورا وہی ہو، یہ نہیں ہو سکتا، نہ آج تک کوئی دیکھنے کو ملا. ہاں، الگ الگ درشن کار اپنے اپنے ڈھنگ سے اپنی اپنی بات کہہ گئے۔ بات کہتے سمے ان کے سامنے جیون کا ایک انگ نہیں تھا، سب کا سب جیون تھا. معمولی سے معمولی آدمی بنا جانے بوجھے سب چیزوں کو نگاہ میں رکھکر ہی کوئی بات کہتا ہے۔ جیون ہے ہی ایسی چیز۔ وہ اپنے آپ منش کو مجبور کرتا ہے کہ یا تو وہ سب کو نگاہ میں رکھکر سوچے یا الگ الگ سوچکر سب کو ملا لے۔

منش سو بھاؤ سے روسی وچارک انکار بھی کیسے کر سکتا ہے ؟ کوئی وشیشگ بننا چاہے بنے، سماج اس کا اپیوگ اپنے ڈھنگ سے کرلیگا۔ جو سماج کے لئے اپیوگی ہے اس کے وشیشگ ہونے کا ارتھ کیا رہ گیا؟ آنکھ کا وشیشگ کیا ساری دیہہ کا حال نہیں جانتا ؟ سب وشیشگوں کا یہی حال ہے۔ اس بات پر زیادہ بحث کرنے کی ضرورت نہیں کہ جگت کو ایک مان کر یا سارے جگت پر نگاہ رکھکر کوئی بھلے ہی وشیشگ بنے، اس سے سماج کو لابھ ہی ہوگا ہانی نہیں. یہ ٹھیک ہے کہ جگت کی ایکتا اپنے آپ دکھائی نہیں دیتی. اسکو دیکھنے کی نگاہ پیدا کرنی ہوتی ہے، وہ ہو بھی جاتی ہے۔ اگر درشن کار ہی ایسی نگاہ پیدا نہ کرے تو اور کون کریگا ؟ درشن کار کی یہی تو وشیشتا ہے کہ وہ جان بوجھکر، سوچ سمجھکر، جگت میں ایکتا کو دیکھتا ہے۔

रूसी दर्शनकार पीछे हटना नहीं चाहता. वह सबका मेल मिलाता हुआ आगे बढ़ना चाहता है. वह अब तक के दर्शनों को नीची निगाह से नहीं देता. वह उन की तारीफ़ करता है. वह जानता है कि वह कितनी मेहनत से लिखे गये हैं. वह यह नहीं चाहता कि वह उन से होड़ ले. वह उन तक इसलिये पहुंचता है कि उन्हें जाने और यह देखे कि वह किस तरह सोचे गए हैं. वह उनसे सहमत या असहमत होने के झगड़े में नहीं पड़ता. वह जिधर भी चलता है इतिहासी निगाह लिये चलता है. वह हर दर्शन को समाज का एक रूप मानता है. सहमत असहमत होने का सवाल ही नहीं खड़ा होता. उसे अच्छी तरह मालूम है कि उसकी अपनी जड़ भी अब तक के सब दर्शनों में है. यही हाल उसके विरोधी का भी है. दर्शन जगत में आज तक जो जो आंदोलन हुए उनका संबंध उन आंदोलनों से ज़रूर है जो उस समय के समाज में हुए. रूसी विचारक ऐसा क्यों सोचता है—यह बात है तो काफ़ी साफ़ फिर भी आगे खोल कर बताए बग़ैर हर एक के दिल में नहीं बैठ सकती. उसे खोल कर बताना ही होगा.

माटीवादी दुनिया को किस तरह देखता है ?

आम तौर से रूसी दर्शनकार यही समझता है कि उसका दर्शन पूरा है, पर पूरा हो नहीं चुका. आगे वह बढ़ेगा, बढ़ कर भी अधूरा ही रहेगा, फिर भी पूरा न हो पायगा. उसने अपनी समझ में अपने दर्शन को बड़े अच्छे ढंग से पूरा कर दिया है, फिर भी उसे चारों तरफ़ से बंद नहीं किया. दरवाज़े खुले हैं. वह नये नये विचार लेकर और भी बढ़ सकता है. रूसी विचारक दर्शन (फ़िलासफ़ी) को विज्ञान (साइंस) मानता है और उसे विज्ञान जैसी ही आज़ादी देता है. जिस तरह विज्ञान, फूंक फूंक कर पांव रखता हुआ आगे बढ़ता है, रास्ता पाने पर छलांगें मारता है, वैसे ही रूसी दर्शन धीरे धीरे आगे बढ़ता और मौक़ा पाकर छलांगें मारता है. वह चाहता है कि उसका दर्शन हमेशा ठीक ढंग में बना रहे, उसी तरह बढ़ता रहे जैसे विज्ञान, उसमें उसी तरह बदलाव होते रहें, उन्नति होती रहे, जिस तरह विज्ञान में. यह ठीक है कि विज्ञान से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह जगत की सारी कहानी किसी एक वक़्त में हम से कह डाले और वह भी ऐसी कहानी जिसे वह अभी पूरी नहीं कर पाया. पर जितनी कहानी उसने हमसे अब तक कही है उस कहानी में और पूरे सत्य में बेमेलपना कहीं नहीं मिलता. वह कहानी जितनी है अपने आप में पूरी है. हां, न उसकी पहुंच इतनी लम्बी है, न इतनी गहरी है जितनी पूरे सत्य की.

अब कहिये जानदार माटीवादी (Dialectical-Materialist) कैसे रहस्यवाद (मिस्टीसिज़्म) की उस धार में बह जाय जो आज के दर्शनों ने बहा रखी है ?

روسی درشن کار پیچھے ہٹنا نہیں چاہتا۔ وہ سب کا میل ملاتا ہوا آگے بڑھنا چاہتا ہے۔ وہ اب تک کے درشنوں کو نیچی نگاہ سے نہیں دیکھتا۔ وہ انکی تعریف کرتا ہے۔ وہ جانتا ہے کہ وہ کتنی محنت سے لکھے گئے ہیں۔ وہ یہ نہیں چاہتا کہ وہ ان سے ہوڑ لے۔ وہ اُن تک اسی لئے پہنچتا ہے کہ انہیں جانے اور یہ دیکھے کہ وہ کس طرح سوچے گئے ہیں۔ وہ اُن سے سہمت یا اسہمت ہونے کے جھگڑے میں نہیں پڑتا۔ وہ جدھر بھی چلتا ہے اتہاسی نگاہ لئے چلتا ہے۔ وہ ہر درشن کو سماج کا ایک روپ مانتا ہے۔ سہمت اسہمت ہونے کا سوال ہی نہیں کھڑا ہوتا۔ اسے اچھی طرح معلوم ہے کہ اسکی اپنی جڑ بھی اب تک کے سب درشنوں میں ہے۔ یہی حال اس کے ورودھی کا بھی ہے۔ درشن جگت میں آج تک جو جو آندولن ہوئے ان کا سمبندھ اُن آندولنوں سے ضرور ہے جو اُس سمے کے سماج میں ہوئے۔ روسی وچارک ایسا کیوں سوچتا ہے—یہ بات ہے تو کافی صاف پھر بھی آگے کھول کر بتائے بغیر ہر ایک کے دل میں نہیں بیٹھ سکتی۔ اسے کھول کر بتانا ہی ہوگا۔

ماٹی وادی دنیا کو کس طرح دیکھتا ہے؟

عام طور سے روسی درشن کار یہی سمجھتا ہے کہ اُس کا درشن پورا ہے، پر پورا ہو نہیں چکا۔ آگے وہ بڑھے گا، بڑھکر بھی ادھورا رہیگا پھر بھی پورا نہ ہو پائے گا۔ اس نے اپنی سمجھ میں اپنے درشن کو بڑے اچھے ڈھنگ سے پورا کر دیا ہے، پھر بھی اسے چاروں طرف سے بند نہیں کیا۔ دروازے کھلے ہیں۔ وہ نئے نئے وچار لیکر اور بھی بڑھ سکتا ہے۔ روسی وچارک درشن (فلاسفی) کو وگیان (سائنس) مانتا ہے اور اسے وگیان جیسی ہی آزادی دیتا ہے۔ جس طرح وگیان، پھونک پھونک کر پاؤں رکھتا ہوا آگے بڑھتا ہے، راستہ پانے پر چھلانگیں مارتا ہے ویسے ہی روسی درشن دھیرے دھیرے آگے بڑھتا اور موقع پاکر چھلانگیں مارتا ہے۔ وہ چاہتا ہے کہ اُسکا درشن ہمیشہ ٹھیک ڈھنگ میں بنا رہے، اُسی طرح بڑھتا رہے جیسے وگیان، اُس میں اُسی طرح بدلاؤ ہوتے رہیں، اُنتی ہوتی رہے جس طرح وگیان میں۔ یہ ٹھیک ہے کہ وگیان سے یہ آشا نہیں کی جا سکتی کہ وہ جگت کی ساری کہانی کسی ایک وقت میں ہم سے کہہ ڈالے اور وہ بھی ایسی کہانی جسے وہ ابھی پوری نہیں کر پایا۔ پر جتنی کہانی اُس نے ہم سے اب تک کہی ہے اُس کہانی میں اور پورے ست میں بے میل پنا کہیں نہیں ملتا۔ وہ کہانی جتنی ہے اپنے آپ میں پوری ہے۔ ہاں، نہ اس کی پہنچ اتنی لمبی ہے، نہ اُتنی گہری جتنی پورے ست کی۔

اب کہئے جاندار ماٹی وادی (Dialectical Materialist) کیسے رہس واد (مسٹی سزم) کی اُس دھار میں بہ جائے جو آج کے درشنوں نے بہا رکھی ہے؟

वह अपनी आंखों देखता है कि रहस्यवाद की धार इन विचारों के फैलाने में मदद करती है कि विज्ञान चीज़ों के ग़ैर ज़रूरी पहलुओं पर ज़ोर देता है, यह कि असलियत उसके हाथ कभी नहीं आ सकती. आज का दर्शन खुद रहस्यवाद में जुटा हुआ है. आदमी के मस्तक को सीमित मानता है. विज्ञान के महत्व को जानने के लिये तैयार नहीं. ऐसी ऐसी चीज़ें गढ़ रखी हैं जिनके बारे में उसका कहना है कि वह समझ से परे हैं. उसकी यह सब बातें ऐसी हैं जो विज्ञानी ढंग को चुनौती देती हैं. अब अगर विज्ञान या विज्ञानी ढंग उस चुनौती के जवाब में कुछ कहे तो क्या बेजा करता है ? रहस्यवाद के प्रचार से लोगों में एक डर सा बैठ गया है कि विज्ञान में लग कर वह बड़े टोटे में रहेंगे, मनोभावों की गहराई तक पहुंच ही न पाएंगे, साहस के मैदान में कभी कूद ही न पायेंगे, उमंगें उनके पास न फटकेंगी, आनन्द उनसे एक दम दूर रहेगा. वह यह भूल रहे हैं कि आदमी ने अब तक जो उड़ान ली थी और जो कुछ उसने सोचा था विज्ञान उसे बहुत पीछे छोड़ चुका है और आए दिन आगे आगे बढ़ता चला जा रहा है. इतिहास की बोली में मानव उत्साह ने जो वीरतापूर्न साहस की लम्बी छलांग ली है उसमें विज्ञान बड़े काम का साबित हुआ है. उसने आदमी के दुनियावी विचारों को हद से ज़ियादा मालामाल कर दिया है. जीवन की क्या क्या संभावनाएं हैं इन सब का एक दफ़्तर खोल कर रख दिया है.

दूसरे शब्दों में, रहस्य में और विज्ञान में बड़ा फ़र्क़ है और वह ऐसा ही है जैसा लाचारी और आत्म विश्वास में, जैसा डरपोक और विचार शील में. जगत को रहस्यमयी समझ बैठना हार मान कर बैठ जाना है. यह तो ऐसा है जैसे कोई बुनियादी सवाल को यह समझ बैठे कि यह हल ही नहीं हो सकता, और ऐसा सिद्धान्त बना बैठे.

जानदार माटीवाद, और चाहे कुछ हो लेकिन हार कर बैठने वाला सिद्धान्त नहीं. यह ठीक है कि जीवन की राह जिधर गई है उधर दुख ही दुख है, मारधाड़ है और यह कि मानवता की पगडंडी ऐसे जंगल में हो कर गुज़री है जो आफ़तों से भरा है, पर क्या इससे जानदार माटीवादी यह कह बैठे कि दुनिया उसकी समझ से परे है ? ऐसी दुनिया और ऐसे जीवन को देख कर वह यह भी ठीक नहीं समझता कि दुखों को अपने सिर मोल ले और बलिदान को अपने सिर चढ़ाए. वह तो बस यही समझता है कि यह जीवन और दुनिया दोनों उसे चुनौती दे रहे हैं कि वह कारनों को खोज निकाले और अपने लिये ऐसी जगह बनाले जहां वह अपनी हालत को सुधार सके. उसकी राय में दुख का कारन आध्यात्मिक नहीं है. जगत

وہ اپنی آنکھوں دیکھتا ہے کہ رہس واد کی دھار ان وچاروں کے پھیلانے میں مدد کرتی ہے کہ وگیان چیزوں کے غیر ضروری پہلوؤں پر زور دیتا ہے، یہ کہ اصلیت اُس کے ہاتھ کبھی نہیں آ سکتی . آج کا درشن خود رہس‌واد میں جتا ہوا ہے . آدمی کے مستک کو سیمت مانتا ہے . وگیان کے مہتو کو جاننے کے لئے تیار نہیں . ایسی ایسی چیزیں گڑھ رکھی ہیں جن کے بارے میں اُس کا کہنا ہے کہ وہ سمجھ سے پرے ہیں . اُس کی یہ باتیں ایسی ہیں جو وگیانی ڈھنگ کو چنوتی دیتی ہیں . اب اگر وگیان یا وگیانی ڈھنگ اُس چنوتی کے جواب میں کچھ کہے تو کیا بیجا کرتا ہے ؟ رہس‌واد کے پرچار سے لوگوں میں ایک ڈر سا بیٹھ گیا ہے کہ وگیان میں لگ کر وہ بڑے ٹوٹے میں رہیں گے، منوبھاؤں کی گہرائی تک ہی نہ پائینگے، ساہس کے میدان میں کبھی کود ہی نہ پائیں گے، اُمنگیں اُن کے پاس نہ پھٹکیں گی، آنند اُن سے ایکدم دور رہے گا . وہ یہ بھول رہے ہیں کہ آدمی نے اب تک جو اُڑان لی تھی اور جو کچھ اس نے سوچا تھا وگیان اُسے بہت پیچھے چھوڑ چکا ہے اور آئے دن آگے آگے بڑھتا چلا جا رہا ہے . اِتہاس کی بولی میں مانو اُتساہ نے جو ویرتا پورن ساہس کی لمبی چھلانگ لی ہے اُس میں وگیان بڑے کام کا ثابت ہوا ہے . اُس نے آدمی کے دنیاوی وچاروں کو حد سے زیادہ مالامال کر دیا ہے . جیون کی کیا کیا سمبھاونائیں ہیں اِن سب کا ایک دفتر کھول کر رکھ دیا ہے .

دوسرے شبدوں میں، رہس میں اور وگیان میں بڑا فرق ہے اور وہ ایسا ہی ہے جیسا لاچاری اور آتم وشواس میں، جیسا ڈرپوک اور وچار شیل میں. جگت کو رہسمئی سمجھ بیٹھنا ہار مان کر بیٹھ جانا ہے . یہ تو ایسا ہے جیسے کوئی بنیادی سوال کو یہ سمجھ بیٹھے کہ یہ حل ہی نہیں ہو سکتا، اور ایسا سدھانت بنا بیٹھے .

جاندار ماٹی واد، اور چاہے کچھ ہو لیکن ہار کر بیٹھنے والا سدھانت نہیں. یہ ٹھیک ہے کہ جیون کی راہ جدھر گئی ہے اُدھر دکھ ہی دکھ ہے، مار دھاڑ ہے اور یہ کہ مانوتا کی پگڈنڈی ایسے جنگل میں ہو کر گذری ہے جو آفتوں سے بھرا ہے، پر کیا اس سے جاندار ماٹی وادی یہ کہہ بیٹھے کہ دنیا اُس کی سمجھ سے پرے ہے ؟ ایسی دنیا اور ایسے جیون کو دیکھکر وہ یہ بھی ٹھیک نہیں سمجھتا کہ دکھوں کو اپنے سر مول لے اور بلیدان کو اپنے سر چڑھائے . وہ تو بس یہی سمجھتا ہے کہ یہ جیون اور دنیا دونوں اُسے چنوتی دے رہے ہیں کہ وہ کارنوں کو کھوج نکالے اور اپنے لئے ایسی جگہ بنا لے جہاں وہ اپنی حالت کو سدھار سکے. اسکی رائے میں دکھ کا کارن آدھیاتمک نہیں ہے. جگت

इतना महान है कि वह सिद्धान्त रूप से कभी न मानव विरोधी हो सकता है न मानव पक्षपाती. हां, वह उससे बेपरवाह भी नहीं हो सकता क्योंकि जगत उसका है, वह उसमें है और जो कुछ होता है सबका एक दूसरे से संबन्ध है. यह मान कर कि आदमी समझदार प्रानी है जानदार माटीवादी आदमी के भविश्य में विश्वास रखता है. यह मान कर विश्वास रखता है कि जगत सीधी सादी चीज़ नहीं. अगर जगत सीधा सादा होता तब तो मानव प्रकृति का बुरा हाल होता, फिर वह ज्ञान हासिल कर के भी क्या करता? फिर तो ज्ञानी बनना पापी बनना हो जाता. अब जगत जैसा है उसीने हमारे सामने अनेकों ऐसी गुत्थियां डाल रखी हैं जिन्हें हम सुलझाते रहें, अनेकों ऐसी चीज़ें हैं जिनका हम विकास करते रहें. अभी मानवता है ही क्या? आंसुओं से रोने वाली बच्ची है जिस का एक दिन में कई कई बार दिल टूटता है और रात भर में ठीक हो जाता है. इसलिये जानदार माटीवादी न इस जगत के गीत गाता मिलेगा और न इसको कोसता. वह जगत से जूझता ज़रूर है, अपने फ़ायदे के लिये नहीं, सबके लिये. वह निराशा से परे है. वह आशावादी है पर ऐसा आशावादी नहीं जैसा आध्यात्मिक या तत्वज्ञानी. वह तो यही समझता है कि जगत उसे अवसर भर देगा. बाक़ी सब उस पर छोड़ देगा, सब उसे ख़ुद करना होगा.

इस तरह जानदार माटीवादी जगत में घर की तरह रहता है. वह यह नहीं समझता कि जगत आदमी के लिये बनाया गया है. वह तो प्रकृति को प्रकृति की तरह मानता है. इससे ज़ियादा कुछ नहीं. वह पक्का प्रकृतिवादी है. वह किसी रूप में भी प्रकृत्युत्तर (Supernatural) शक्तियों को नहीं मानता. इस मामले में उसकी दलीलें सीधी सादी होती हैं. उनमें कोई नयापन नहीं होता. अगर जगत अनादि है तो कभी भी इसकी बुनियाद नहीं पड़ी. शक्ति का कभी नाश नहीं होता. 'न कुछ' से 'कुछ' नहीं पाया जा सकता. 'कुछ' से 'न कुछ' नहीं निकल सकता. अगर जगत का आदि अंत नहीं है तो उसका बनाने वाला भी कोई नहीं. यह सवाल ही नहीं खड़ा होता कि जगत की कैसे बुनियाद पड़ी, इसका निकास कहां से है, इसको किसने बनाया? तर्क के सामने यह सवाल बेकार है. जगत के मानी ही हैं सब कुछ, फिर इसके परे और इसके बाहर की बात क्या? जगत के बाद हर चीज़ जगत से छोटी, क्योंकि हर चीज़ अनन्त पूरे से सान्त भाग वाली होगी. दो अनन्त नहीं रह सकते. ऐसे जगत को अपनी सिद्धि के लिये किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत नहीं जो प्रकृति से बढ़ कर हो यानी सुपरनेचुरल हो. जगत अपने आप में पूरा है और सब तरह काफ़ी है क्योंकि जो कुछ है सभी

[...]ہان ہے کہ وہ سدھانت روپ سے کبھی نہ مانو [...]ہو سکتا ہے نہ مانو پکشپاتی. ہاں، وہ اُس سے بے[...]ہی نہیں ہو سکتا کیونکہ جگت اُسکا ہے، وہ اُس [...]ہاں اور جو کچھ ہوتا ہے سب کا ایک دوسرے سے [...]ہے. یہ مان کر کہ آدمی سمجھدار پرانی ہے جاندار [...]ادی آدمی کے بھوشیہ میں وشواس رکھتا ہے. یہ [...]کر وشواس رکھتا ہے کہ جگت سیدھی سادی چیز [...]. اگر جگت سیدھا سادا ہوتا تو تب مانو پراکرتی [...]حال ہوتا، پھر وہ گیان حاصل کر کے بھی کیا کرتا؟ [...]گیانی بننا پاپی بننا ہو جاتا. اب جگت جیسا ہے [...]نے ہمارے سامنے انیکوں ایسی گتھیاں ڈال رکھی [...]جنہیں ہم سلجھاتے رہیں، انیکوں ایسی چیزیں ہیں [...]کا ہم وکاس کرتے رہیں. ابھی مانوتا ہے ہی کیا؟ [...]سے رونے والی بچی ہے جس کا ایک دن میں کئی [...]بار دل ٹوٹتا ہے اور رات بھر میں ٹھیک ہو جاتا ہے. [...]لئے جاندار ماٹی وادی نہ اس جگت کی گیت گاتا [...]اور نہ اِسکو کوستا. وہ جگت سے جوجھتا ضرور ہے اپنے [...]کے لئے نہیں، سب کے لئے. وہ نراشا سے پرے ہے. وہ [...]ی ہے پر ایسا آشاوادی نہیں جیسا آدھیاتمک یا [...]گیانی. وہ تو یہی سمجھتا ہے کہ جگت اُسے اوسر بھر [...]. باقی سب اُس پر چھوڑ دے گا، سب اُسے خود [...]ہوگا.

اس طرح جاندار ماٹی وادی جگت میں گھر کی طرح رہتا [...]یہ نہیں سمجھتا کہ جگت آدمی کے لئے بنایا گیا ہے. [...]پرکرتی کو پرکرتی کی طرح مانتا ہے، اِس سے زیادہ کچھ [...]. وہ پکا پرکرتی وادی ہے. وہ کسی روپ میں بھی [...]تر (Supernatural) شکتیوں کو نہیں مانتا. [...]معاملے میں اُس کی دلیلیں سیدھی سادی ہوتی ہیں. [...]میں کوئی نیا پن نہیں ہوتا. اگر جگت انادی ہے تو [...]بھی اِسکی بنیاد نہیں پڑی. شکتی کا کبھی ناش [...]ہوتا، 'نہ کچھ' سے 'کچھ' نہیں پایا جا سکتا. [...]' سے 'نہ کچھ' نہیں نکل سکتا. اگر جگت کا [...]انت نہیں ہے تو اُسکا بنانے والا بھی کوئی نہیں. [...]سوال ہی نہیں کھڑا ہوتا کہ جگت کی کیسے بنیاد [...]، اس کا نکاس کہاں سے ہے، اِسکو کس نے بنایا؟ ترک [...]سامنے یہ سوال بیکار ہے. جگت کے معنی ہی ہیں [...]کچھ، پھر اس کے پرے اور اس کے باہر کی بات کیا؟ [...]جگت کے بعد ہر چیز جگت سے چھوٹی، کیونکہ ہر چیز [...]نت پورے سے سانت بھاگ والی ہوگی. دو اننت نہیں [...]سکتے. ایسے جگت کو اپنی سدھی کے لئے کسی [...]چیز کی ضرورت نہیں جو پرکرتی سے بڑھ کر ہو [...]سوپرنیچرل ہو. جگت اپنے آپ میں پورا ہے [...]سب طرح کافی ہے کیونکہ جو کچھ ہے سبھی

तो उसमें शामिल है. जानदार माटीवादी की निगाह में जगत की मार्के की विशेषताओं में से कुछ यह हैं :— जगत अनादि अनन्त है, सुलझी खासियत वाला है, नियम बद्ध, समझे जाने जोग, उलझा पर रहस्यमय नहीं, पूरा मानवी पर मानवी जैसा नहीं, अंधविश्वासी नहीं विश्वास के जोग, झिझक कर नहीं खुले दिल से अपनाने जोग, वचन देने वाला नहीं, अवसर देने वाला, हां, वह यह भी कहेगा कि अब तक जगत का जितना हाल जाना गया है उससे यह पता ज़रूर चलता है कि इसकी सबसे महत्व की एक सिफ़त और है जो अभी तक पहुंच से परे है. पहुंच से परे का यह अर्थ नहीं है कि समझ से परे है. अनुभव में वह भी आ चुकी है पर अभी उसका शब्दों में रूप नहीं दिया जा सकता.

—भगवानदीन

تو اُس میں شامل ہے. جاندار ماٹی وادی کی نگاہ میں جگت کی معرکے کی وشیشتاؤں میں سے کچھ یہ ہیں :— جگت انادی اننت ہے، سلجھی خاصیت والا ہے، نیم بدھ، سمجھے جانے جوگ، اُلجھا پر رھسیہ مے نہیں، پورا مانوی پر مانوی جیسا نہیں، اندھ وشواسی نہیں وشواس کے جوگ، جھجھک کر نہیں کھلے دل سے اپنانے جوگ، وچن دینے والا نہیں اوسر دینے والا، ہاں، وہ یہ بھی کہے گا کہ اب تک جگت کا جتنا حال جانا گیا ہے اُس سے یہ پتہ ضرور چلتا ہے کہ اُس کی سب سے مہتو کی ایک صفت اور ہے جو ابھی تک پہنچ سے پرے ہے. پہنچ سے پرے کا یہ ارتھ نہیں ہے کہ سمجھ سے پرے ہے. انوبھو میں وہ بھی آچکی ہے پر ابھی اُسکا شبدوں میں روپ نہیں دیا جا سکتا.

—بھگوان دین

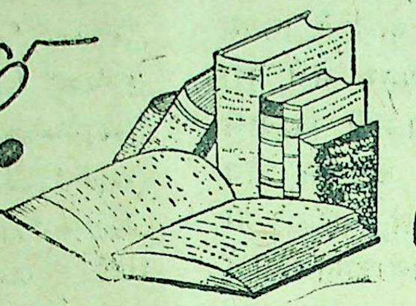
एक सवेरे जब सारा जगत तीसरे महा युद्ध के कारन मौत के मुंह में समा चुका था, एक बन्दर एक तहखाने से बाहर निकला. जब उसने अपनी नज़रें चारों तरफ़ दौड़ाईं तो हर तरफ़ बरबादी और तबाही का ही भयानक नज़ारा देख कर वह कांप उठा. दुखी हो कर वह सामने के ऊंचे पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और कूद कर जान देने ही वाला था कि पीछे एक आहट सुनाई पड़ी. घूम कर उसने देखा—एक दूसरे तहखाने से एक बंदरिया बाहर निकल कर उसकी तरफ़ देख रही थी. बन्दर मरने का विचार छोड़ कर उसके निकट पहुंच गया और बड़ी परेशानी के साथ बोला—"परमात्मा ही रक्षा करे! क्या हम लोगों को फिर से सृष्टि की रचना करनी होगी!"

नोबल प्राइज़ पाने वाले, विलियम फ़ाकनर

ایک سویرے جب سارا جگت تیرے مہایدھ کے کارن موت کے منہ میں سما چکا تھا، ایک بندر ایک تہ خانے سے باہر نکلا. جب اس نے اپنی نظریں چاروں طرف دوڑائیں تو ہر طرف بربادی اور تباہی کا ہی بھیانک نظارہ دیکھکر وہ کانپ اُٹھا. دکھی ہو کر وہ سامنے کے اُونچے پہاڑ کے چوٹی پر چڑھ گیا اور کود کر جان دینے ہی والا تھا کہ پیچھے ایک آہٹ سنائی پڑی. گھوم کر اس نے دیکھا—ایک دوسرے تہ خانے سے ایک بندریا باہر نکل کر اُسکی طرف دیکھ رہی تھی. بندر مرنے کا وچار چھوڑ کر اس کے نکٹ پہنچ گیا اور بڑی پریشانی کے ساتھ بولا—"پرماتما ہی رکشا کرے! کیا ہم لوگوں کو پھر سے سرشٹی کی رچنا کرنی ہوگی!"

نوبل پرائز پانے والے، ولیم فاکنر

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

भारत पर अमरीकी फन्दा

मूल अंगरेज़ी लेखक—एल. नटराजन; अनुवादक—ओम प्रकाश संगल; निकालने वाले—पीपिल्स पबलिशिंग हाउस लिमिटेड, बम्बई-4; लिखावट-हिन्दी; सफ़े 256—दाम तीन रुपया.

हिन्दुओं में साकार पूजा और निराकार पूजा यानी सनातन धर्मियों की तरह भगवान की मूर्ति बना कर पूजना या आर्य समाजियों और ब्रह्म समाजियों की तरह एक निराकार सब जगह मौजूद ईश्वर में ध्यान लगाना दोनों हमारे देश की पुरानी परम्पराएं है. लेकिन कम लोग जानते होंगे कि ग़ुलामी भी साकार और निराकार दोनों तरह की होती है. साकार ग़ुलामी साफ़ साफ़ चमकती है—राजा का झंडा हर जगह लहराता दीखता है और उसके ख़ास रंग ढंग के प्रतिनिध हर जगह रोब जमाए रहते हैं. लेकिन निराकार ग़ुलामी में राजा का न झंडा रहता है न उसके प्रतिनिधि कोई ख़ास रोब दाब जमाते दिखाई देते हैं. पर धीरे धीरे यह निराकार हाकिम जीवन के हर पहलू पर छा जाते हैं और जोंक बन कर देश का लहू चूसते रहते हैं.

जब दूसरी बड़ी लड़ाई ख़तम होने को हुई और यह आसार नज़र आने लगे कि अंगरेज़ हिन्दुस्तान में चंद दिन के मेहमान हैं तब अमरीका ने बहुत ही होशियारी और ख़ूबसूरती के साथ अपने पांव हिन्दुस्तान में गाड़ने शुरू किये. अंगरेज़ी राज के हट जाने के बाद अमरीका को पूरा सुभीता हो गया और उसने कल कारख़ानों, ब्योपारी, बीमा और जहाज़ी कम्पनियों, सहायता और सलाह के नाम पर हिन्दुस्तान के अन्दर अपना जाल बिछाना शुरू कर दिया. अमरीका के माली फंदे में इस तरह फंसने की ख़बर देश को तब लगी जब 5 जनवरी 1952 को एक "समझौते" पर नई दिल्ली में हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल ने भारत सरकार की तरफ़ से दस्तख़त किये. उसकी शर्तों को जब लोगों ने पढ़ा तो दंग रह गए और महसूस

[بھا]رت پر امریکی پھندا

[مو]ل انگریزی لیکھک—ایل. نٹراجن؛ انوواد‌ک—[او]م [پرکا]ش سنگل؛ نکالنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس [لمیٹڈ] بمبئی-4؛ لکھاوٹ-ہندی؛ صفحے-256؛ دام-تین [روپیہ].

[ہن]دؤں میں ساکار پوجا اور نراکار پوجا یعنی سناتن [دھرمی]وں کی طرح بھگوان کی مورتی بناکر پوجنا یا آریہ [سماجی]وں اور برہم سماجیوں کی طرح ایک نراکار سب [جگہ] موجود ایشور میں دھیان لگانا دونوں ہمارے دیش [کی] پرانی پرمپرائیں ہیں. لیکن کم لوگ جانتے ہونگے [کہ غ]لامی بھی ساکار اور نراکار دونوں طرح کی ہوتی ہے. [ساکار غ]لامی صاف صاف چمکتی ہے—راجا کا جھنڈا ہر [جگہ] لہراتا دیکھتا ہے اور اس کے خاص رنگ ڈھنگ کے [پرتی]ندھی ہر جگہ رعب جمائے رہتے ہیں. لیکن نراکار [غلامی م]یں راجا کا نہ جھنڈا رہتا ہے نہ اس کے پرتی ندھی [کوئی] خاص رعب داب جماتے دکھائی دیتے ہیں پر دھیرے [دھیرے ی]ہ نراکار حاکم جیون کے ہر پہلو پر چھا جاتے ہیں [اور ج]ونک بنکر دیش کا لہو چوستے رہتے ہیں.

جب دوسری بڑی لڑائی ختم ہونے کو ہوئی اور یہ [آثار] نظر آنے لگے کہ انگریز ہندستان میں چند دن کے [مہم]ان ہیں تب امریکہ نے بہت ہی ہوشیاری اور [خوبص]ورتی کے ساتھ اپنے پاؤں ہندستان میں گاڑنے شروع [کئے]. انگریزی راج کے ہٹ جانے کے بعد امریکہ کو پورا [سبھ]یتا ہوگیا اور اس نے کل کارخانوں، بیوپاری، بیما اور [جہا]زی کمپنیوں، سہایتا اور صلاح کے نام پر ہندستان کے [اندر] اپنا جال بچھانا شروع کردیا. امریکہ کے مالی پھندے [میں] اس طرح پھنسنے کی خبر دیش کو تب لگی جب [5] جنوری سن 1952 کو ایک "سمجھوتے" پر نئی دلی [میں] ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نے بھارت [سرکار] کی طرف سے دستخط کئے. اسکی شرطوں کو [جب] لوگوں نے پڑھا تو دنگ رہ گئے اور محسوس

हुआ कि यह अमरीका के साथ "समझौता" नहीं बल्कि "गुलामी का पट्टा" है. देश के कोने कोने से इस तरह की आवाज़ें उठीं लेकिन भारत सरकार ने मानो कान ही बन्द कर लिये और दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से वह अमरीकी फंदे में फंसती गई और फंसती जा रही है.

लेकिन किस तेज़ी के साथ इस थोड़े से अरसे में अमरीकी पैसे ने हिन्दुस्तान को अपना गुलाम बना लिया है, इसकी पूरी जानकारी आम तौर से कम थी. इस बात पर रोशनी डालने वाली कोई किताब न अंगरेज़ी में थी न हिन्दी में. खुशी की बात है कि मेहनत और लगन से भाई एल. नटराजन ने अंगरेज़ी में इस तरह की एक अनमोल किताब तैयार की और बम्बई के प्रकाशक पीपिल्स पब्लिशिंग हाउस ने उसे देश को भेंट किया, अब उस किताब का यह हिन्दी अनुवाद भी हमारे सामने आ गया है.

यह किताब एक ज़बरदस्त ज़रूरत को पूरा करती है. प्रस्तावना में डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा ने कहा है "यह जानकारियों का एक ख़ज़ाना है." इसे देखने पर पता चलेगा कि किस तरह हिन्दुस्तान के साधनों और कच्चे माल को लूट कर अमरीका खुद मालामाल बन रहा है और हिन्दुस्तान के शहर शहर और गांव गांव में अपना जाल बिछा रहा है. इससे यह भी पता चलेगा कि अमरीकी हाकिमों और ब्योपारियों की निगाह में ग़रीब हिन्दुस्तानियों की क्या क़ीमत है और वह हमें किस नीची निगाह से देखता है. हर देश प्रेमी, हर पबलिक कार्यकर्ता और राजनीति और अर्थशास्त्र के हर विद्यार्थी से हमारी अपील है कि इस आंख खोल देने वाली किताब को ज़रूर पढ़े. उसके बाद अपना दिल टटोल कर देखे कि अंगरेज़ी राज के ख़ात्मे के बाद इस नए अमरीकी राज से देश को छुड़ाने में वह क्या कर रहा है.

हिन्दी अनुवाद अच्छा है. भाशा सरल और सहज है. हिन्दी में यह किताब अपने ढंग की अनोखी है और हर हिन्दी जानने वाले भारतवासी को इसे पढ़ना चाहिये.

—सुरेश रामभाई

ہوا کہ یہ امریکہ کے ساتھ "سمجھوتہ" نہیں بلکہ "غلامی کا پٹہ" ہے. دیش کے کونے کونے سے اس طرح کی آوازیں اُٹھیں لیکن بھارت سرکار نے مانوں کان ہی بند کر لئے اور دن دونی رات چوگنی رفتار سے وہ امریکی پھندے میں پھنستی گئی اور پھنستی جا رہی ہے.

لیکن کس تیزی کے ساتھ اس تھوڑے سے عرصہ میں امریکی پیسے نے ہندستان کو اپنا غلام بنا لیا ہے' اِسکی پوری جانکاری عام طور سے کم تھی. اس بات پر روشنی ڈالنے والی کوئی کتاب نہ انگریزی میں تھی نہ ہندی میں. خوشی کی بات ہے کہ محنت اور لگن سے بھائی ایل. نٹ راجن نے انگریزی میں اس طرح کی ایک انمول کتاب تیار کی اور بمبئی کے پرکاشک پیپلس پبلشنگ ہاؤس نے اسے دیش کو بھینٹ کیا. اب اس کتاب کا یہ ہندی انوواد بھی ہمارے سامنے آگیا ہے.

یہ کتاب ایک زبردست ضرورت کو پورا کرتی ہے. پرستاؤنا میں ڈاکٹر جے. سی. کماریپا نے کہا ہے "یہ جانکاریوں کا ایک خزانہ ہے." اِسے دیکھنے پر پتہ چلے گا کہ کسی طرح ہندستان کے سادھنوں اور کچے مال کو لوٹ کر امریکہ خود مالا مال بن رہا ہے اور ہندستان کے شہر شہر اور گاؤں گاؤں میں اپنا جال بچھا رہا ہے. اِس سے یہ بھی پتہ چلے گا کہ امریکی حاکموں اور بیوپاریوں کی نگاہ میں غریب ہندستانیوں کی کیا قیمت ہے اور وہ ہمیں کسی نیچی نگاہ سے دیکھتا ہے. ہر دیش پریمی ہر پبلک کارکرتا اور راجنیت اور ارتھ شاستر کے ہر ودیارتھی سے ہماری اپیل ہے کہ اِس آنکھ کھول دینے والی کتاب کو ضرور پڑھے. اس کے بعد اپنا دل ٹٹول کر دیکھے کہ انگریزی راج کے خاتمہ کے بعد اس نئے امریکی راج سے دیش کو چھڑانے میں وہ کیا کر رہا ہے.

ہندی انواد اچھا ہے. بھاشا سرل اور سہج ہے. ہندی میں یہ کتاب اپنے ڈھنگ کی انوکھی ہے اور ہر ہندی جاننے والے بھارت واسی کو اِسے پڑھنا چاہئے.

—سریش رام بھائی

रक्से बिसमिल

लिखने वाली—सदीक़ा बेग़म; निकालने वाले—आज़ाद किताबघर, देहली—लिखावट; उरदू; सफ़े—192; दाम—दो रुपया बारह आने.

रक़्स बिसमिल उरदू की मशहूर लेखिका सदीक़ा बेग़म का नया कहानी संग्रह है. इसमें उनकी आठ कहानियां शामिल हैं.

सदीक़ा बेग़म छोटी मोटी रोज़मर्रा होने वाली घटनाओं पर क़लम उठाती हैं और उनका सुन्दर चित्रन करती हैं. उनका क़लम सिर्फ़ चित्रन करके ही नहीं रुक जाता बल्कि उस समाजी तत्व पर भी रोशनी डालता है जो इस घटना के होने में मदद करता है. सदीक़ा बेग़म ने ज़मींदारों के समाज में पली, बढ़ी, मुसलमान औरतों को बहुत अच्छी तरह समझा है. वह उनमें का अन्दर, बाहर सब कुछ जान गई हैं, इसीलिये जब भी इस वातावरन की किसी औरत पर आधारित करके वह कहानी लिखती हैं तो वह बहुत ही असरदार होती है. सदीक़ा बेग़म अपनी उस नायका के हर हावभाव, चाल ढाल, बोल चाल, पहनाव उढ़ाव को अच्छी तरह जानती हैं और बहुत आसानी से पाठक के सामने पूरा नक़्शा खींच देती हैं. औरतों के इस समाज को समझना बहुत ही ज़रूरी है और उसी के साथ साथ इसे समझने के लिये सदीक़ा बेग़म की कहानियों को भी पढ़ना ज़रूरी है.

सदीक़ा बेग़म ज़मींदाराना माहौल में पले मर्दों का भी चित्रन करती हैं. पर वह कामयाब तभी होती हैं जब वह घर और घरेलू माहौल से इन मर्दों का सम्बन्ध जोड़ कर लिखती हैं. इस संग्रह में "शीशे का घर" नामी कहानी का आधार यही मर्द हैं और उनकी मनोबृत्ति का अच्छा चित्रन किया गया है.

—मुजीब रिज़वी

...ی بسمل

...والی—صدیقہ بیگم؛ نکالنے والے—آزاد کتاب ...؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحے—192 دام دو روپیہ

...بسمل اُردو کی مشہور لیکھکا صدیقہ بیگم کا ... سنگرہ ہے. اِس میں اُن کی آٹھ کہانیاں شامل

...یقہ بیگم چھوٹی موٹی روزمرہ ہونے والی گھٹناؤں ... اُٹھاتی ہیں اور اُن کا سندر چترن کرتی ہیں. ...قلم صرف چترن کرکے ہی نہیں رک جاتا بلکہ ...ساجی تتو پر بھی روشنی ڈالتا ہے جو اِس گھٹنا ...نے میں مدد کرتا ہے. صدیقہ بیگم نے زمینداروں کے ...میں پلی، بڑھی، مسلمان عورتوں کو بہت اچھی ...سمجھا ہے، وہ اُن میں کا اندر، باہر سب کچھ ...گئی ہیں، اِسی لئے جب بھی اِس واتاورن کی کسی ... پر آدھارت کرکے وہ کہانی لکھتی ہیں تو ...بہت ہی اثردار ہوتی ہے. صدیقہ بیگم اپنی اس ...کے ہر ہاؤ بھاؤ، چال ڈھال، بول چال، پہناؤ اُڑھاؤ ...اچھی طرح جانتی ہیں اور بہت آسانی سے پاٹھک کے ...نے پورا نقشہ کھینچ دیتی ہیں. عورتوں کے اِس ...کو سمجھنا بہت ہی ضروری ہے اور اُسی کے ساتھ ...اِسے سمجھنے کے لئے صدیقہ بیگم کی کہانیوں کو بھی ...پڑھنا ضروری ہے.

...دیقہ بیگم زمیندارانہ ماحول میں پلے مردوں کا ...چترن کرتی ہیں. پر وہ کامیاب تبھی ہوتی ہیں ...وہ گھر اور گھریلو ماحول سے اِن مردوں کا سمبندھ ...جوڑ کر لکھتی ہیں. اس سنگرہ میں "شیشے کا گھر" ...کہانی کا آدھار یہی مرد ہیں اور اُن کی منووِرتی کا ...چترن کیا گیا ہے.

—مجیب رضوی

हमारी राय

ہماری رائے

विद्यार्थी और सरकार

इधर कुछ अरसे से हमारे प्रदेश के विद्यार्थियों और सरकार के बीच तनातनी चल रही है. इलाहाबाद और लखनऊ की यूनीवर्सिटियां कभी खुलती और कभी बन्द होती हैं, कभी उनमें हाज़री हड़ताल होती है और कभी भूख हड़ताल, कभी अधिकारी लोग अपना जलसा करते हैं और कभी विद्यार्थियों या उनके मां-बाप को जमा करते हैं. हालत संगीन होती चली जा रही है और विद्यार्थियों और अधिकारियों के बीच की खाई पटती नज़र नहीं आती.

विद्यार्थियों के ख़िलाफ़ शिकायत यह है कि न वह डिसिप्लिन मानते हैं न किसी के कहने पर चलते हैं, न पढ़ने में ध्यान लगाते हैं. हमने कई सरकारी हाकिमों को विद्यार्थी का नाम आते ही आग बगूला होते देखा सुना है. ऐसे मौक़े पर ठंडे दिल से सोचे बिना काम नहीं चल सकता. अगर हम मान भी लें कि हमारे विद्यार्थी भाई बहनों के ख़िलाफ़ यह शिकायतें सही हैं तो सवाल यह है कि इसकी जड़ कहां है ? हमें यह भी ग़ौर करना पड़ेगा कि आज की राजनीति या सियासत में क्या गुल खिल रहे हैं और उनकी वजह से हुक्काम या नेताओं को किन मजबूरियों का सामना करना पड़ रहा है.

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि विद्यार्थी हमारा ही अंग है, हमारी ही जान और जिगर का टुकड़ा है और वह हमारा है, हम उसके हैं. आज हम किसी पार्टी के नेता हों या मिनिस्टर, सूबे के गवर्नर हों या मजिस्ट्रेट, एम. एल. ए. हों या यूनीवर्सिटी के टीचर—कल नहीं तो परसों हम सब विद्यार्थी थे और कल नहीं तो परसों आज का विद्यार्थी हमारी जगह पर होगा. हम जाएंगे क्योंकि हमें जाना है, वह जगह ख़ाली नहीं रहेगी और विद्यार्थी ही उसे आगे चल कर भरेगा. इसलिये इस मामले में तेज़ी या तेवर दिखलाना अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने जैसा होगा.

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि अगर यू. पी. के गवर्नर श्री मुंशी ने जब तक वाइस चांसलरों की सभा नहीं

ودیارتھی اور سرکار

ادھر کچھ عرصے سے ہمارے پردیش کے ودیارتھیوں اور سرکار کے بیچ تناتنی چل رہی ہے۔ الہ آباد اور لکھنؤ کی یونیورسٹیاں کبھی کھلتی اور کبھی بند ہوتی ہیں، کبھی اُن میں حاضری ہڑتال ہوتی ہے اور کبھی بھوک ہڑتال، کبھی ادھیکاری لوگ اپنا جلسہ کرتے ہیں اور کبھی ودیارتھیوں یا اُن کے ماں باپ کو جمع کرتے ہیں۔ حالت سنگین ہوتی چلی جا رہی ہے اور ودیارتھیوں اور ادھیکاریوں کے بیچ کی کھائی پٹتی نظر نہیں آتی۔

ودیارتھیوں کے خلاف شکایت یہ ہے کہ نہ وہ ڈسپلن مانتے ہیں نہ کسی کے کہنے پر چلتے ہیں، نہ پڑھنے میں دھیان لگاتے ہیں. ہم نے کئی سرکاری حاکموں کو ودیارتھی کا نام آتے ہی آگ بگولا ہوتے دیکھا سنا ہے۔ ایسے موقعے پر ٹھنڈے دل سے سوچے بنا کام نہیں چل سکتا۔ اگر ہم مان بھی لیں کہ ہمارے ودیارتھی بھائی بہنوں کے خلاف یہ شکایتیں سہی ہیں تو سوال یہ ہے کہ اِسکی جڑ کہاں ہے ؟ ہمیں یہ بھی غور کرنا پڑے گا کہ آج کی راج نیتی یا سیاست میں کیا گل کھل رہے ہیں اور اُن کی وجہ سے حکام یا نیتاؤں کو کن مجبوریوں کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے۔

ہمیں یہ نہیں بھولنا چاہئے کہ ودیارتھی ہمارا ہی انگ ہے، ہماری ہی جان اور جگر کا ٹکڑا ہے اور وہ ہمارا ہے ہم اُس کے ہیں۔ آج ہم کسی پارٹی کے نیتا ہوں یا منسٹر، صوبے کے گورنر ہوں یا مجسٹریٹ، ایم. ایل. اے ہوں یا یونیورسٹی کے ٹیچر—کل نہیں تو پرسوں ہم سب ودیارتھی تھے اور کل نہیں تو پرسوں آج کا ودیارتھی ہماری جگہ پر ہوگا۔ ہم جائیں گے کیونکہ ہمیں جانا ہے، وہ جگہ خالی نہیں رہے گی اور وہ ودیارتھی ہی اُسے آگے چل کر بھرے گا۔ اِس لئے اس معاملے میں تیزی یا تیور دکھلانا اپنے پیر میں کلہاڑی مارنے جیسا ہوگا۔

یہ بات کسی سے چھپی نہیں ہے کہ اگر یو. پی. کے گورنر شری منشی نے جب تک وائس چانسلروں کی سبھا نہیں

बुलाई थी तब तक विद्यार्थी सागर में कोई तूफ़ान या ज्वार भाटे का कोई निशान भी नहीं था. एक तरफ़ वह सभा खत्म हुई दूसरी तरफ़ यह सरगर्मियां और झगड़े. यों तो उस सभा में वाइस चांसलर लोग आज़ादी के साथ इस नतीजे पर पहुंचे थे कि यूनिवर्सिटी के मास्टरों की सर्विस-बुक रहा करे, "सर्व श्रेष्ठ" लड़कों को इनाम मिला करें और यूनिवर्सिटियों का इन्तज़ाम ढंग से चले. लेकिन कौन नहीं जानता कि आज के हमारे वाइस चांसलर लोग किस हद तक 'आज़ाद' हैं. हमें याद हो आती है रजवाड़ों की जो अंगरेज़ी राज के पाबन्द होते हुये भी अपने को 'आज़ाद' समझते थे. सच यह है कि अपने दायरे में उन्हें न वह अधिकार हैं जो एक ज़िला मजिस्ट्रेट को और न वह आज़ादी जो एक म्युनिसिपल चेयरमैन को. इसलिये उन्हें मजबूरन गवर्नर यानी चांसलर के इशारे पर चलना पड़ता है. अक्सर चांसलर लोग दख़ल नहीं देते और वाइस चांसलर लोग आज़ादी का दम भरे रहते हैं. बदक़िस्मती की बात है कि गवर्नर श्री मुंशी को चैन न पड़ी और वह अपनी चांसलरी को नुमायां शकल देने पर उतर आये.

हो सकता है कि इस में कुछ इशारा प्रदेश की शासक पार्टी का भी हो क्योंकि दिन-दिन हालत यह हो रही है कि आम जनता, पढ़ी लिखी हो या अनपढ़, सरकार की तरफ़ से खिंचकर दूसरी पार्टियों की तरफ़ मुख़ातिब होती जा रही है. कांगरेस में न ज़ियादा नौजवान आते हैं न विद्यार्थी या दूसरे लोग इसके लिये कोई भक्ति या श्रद्धा दिखलाते हैं. इसलिये यह ज़रूरी हो जाता है कि कांगरेस पार्टी कुछ ऐसे रास्ते अपनाये जिनके ज़रिये से वह विद्यार्थियों को थोड़ा बहुत अपने असर में ला सके. शायद इसी वजह से गवर्नर श्री मुंशी की बुलाई हुई सभा में यह तय किया गया कि 'सब से अच्छे' लड़कों को मेडेल दिये जाएंगे;—इम्तहान में सबसे ऊंचे नम्बर पाने के लिये नहीं, क्लास में सब से ज़ियादा हाज़िर रहने के लिये नहीं, मैदान में सबसे तेज़ दौड़ने के लिये नहीं, बल्कि किसी और बात के लिये, 'सब से अच्छे' होने के लिये! ज़ाहिर है कि यह कोई नई बला है जिसका सम्बन्ध है न पढ़ाई से, न क्लास से और न खेल के मैदान से, बल्कि राजनीति से और शासकों की राजनीति से है. शायद इसी वजह से इलाहाबाद और लखनऊ की यूनीवर्सिटियों के अधिकारियों ने वहां के यूनियन के विधान में दख़ल दिया और सब विद्यार्थियों के लिये यूनियन का मेम्बर होना ग़ैर ज़रूरी क़रार दे दिया. जो चाहे हो जो चाहे न हो. हालांकि राधा कृष्णन यूनिवर्सिटी इन्क्वायरी कमीशन ने साफ़-साफ़ कहा है कि यूनियनों में अधिकारी लोग हाथ न डालें. मगर इसकी कोई परवाह

تب تک ودیارتھی ساگر میں کوئی
طوفان یا جوار بھاٹے کا کوئی نشان بھی نہیں تھا. ایک
طرف وہ سبھا ختم ہوئی دوسری طرف یہ سرگرمیاں اور
جھگڑے. یوں تو اس سبھا میں وائس چانسلر لوگ آزادی
کے ساتھ اس نتیجہ پر پہونچے تھے کہ یونیورسٹی کے ماسٹروں
کی سروس بک رہا کرے 'سرو شریشٹ' لڑکوں کو انعام
ملا کریں اور یونیورسٹی کا انتظام ڈھنگ سے چلے. لیکن
کون نہیں جانتا کہ آج کے ھمارے وائس چانسلر لوگ کس
حد تک 'آزاد' ھیں. ھمیں یاد ہو آتی ھے رجواڑوں کی
جو انگریزی راج کے پابند ہوتے بھی اپنے کو 'آزاد' سمجھتے
تھے. سچ یہ ھے کہ اپنے دائرے میں انہیں نہ وہ ادھیکار
ھیں جو ایک ضلع مجسٹریٹ کو اور نہ وہ آزادی جو
ایک میونسپل چیرمین کو. اس لئے انہیں مجبوراً گورنر
یعنی چانسلر کے اشارے پر چلنا پڑتا ھے. اکثر چانسلر
لوگ دخل نہیں دیتے اور وائس چانسلر لوگ آزادی کا
دم بھرے رھتے ھیں. بدقسمتی کی بات ھے کہ گورنر شری
منشی کو چین نہ پڑی اور وہ اپنی چانسلری کو نمایاں
شکل دینے پر اتر آئے.

ہوسکتا ھے کہ اس میں کچھ اشارہ پردیش کی شاسک
پارٹی کا بھی ہو کیوں کہ دن دن حالت یہ ہو رھی ھے
کہ عام جنتا' پڑھی لکھی ہو یا ان پڑھ' سرکار کی طرف سے
کھنچ کر دوسری پارٹیوں کی مخاطب ہوتی جا رھی ھے.
کانگریس میں نہ زیادہ نوجوان آتے ھیں نہ ودیارتھی یا
دوسرے لوگ اس کے لئے کوئی بھکتی یا شردھا دیکھاتے
ھیں. اس لئے یہ ضروری ہو جاتا ھے. کہ کانگریس پارٹی
کچھ ایسے راستے اپنائے جس کے ذریعے وہ ودیارتھیوں
کو تھوڑا بہت اپنے اثر میں لا سکے. شاید اسی وجہ سے
گورنر منشی کی بلائی ہوئی سبھا میں یہ طے کیا گیا کہ
'سب سے اچھے' لڑکوں کو میڈل دے جائینگے— امتحان
میں سب سے اونچے نمبر پانے کے لئے نہیں' کلاس میں سب
سے زیادہ حاضر رھنے کے لئے نہیں' میدان میں سب سے تیز
دوڑنے کے لئے نہیں' بلکہ کسی اور بات کے لئے' 'سب سے
اچھے' ہونے کے لئے! ظاھر ھے کہ یہ کوئی
نئی بلا ھے جسکا سمبندھ نہ پڑھائی سے' نہ
کلاس سے اور نہ کھیل کے میدان سے بلکہ راج نیتی
سے اور شاسکوں کی راج نیتی سے ھے. شاید اسی
وجہ سے الہ آباد اور لکھنؤ کی یونیورسٹیوں کے ادھیکاریوں
نے وھاں کے یونین کے ودھان میں دخل دیا اور سب
ودیارتھیوں کے لئے یونین کا ممبر ہونا غیر ضروری قرار دے
دیا. جو چاھے ہو جو چاھے نہ ہو. حالانکہ رادھا کرشنن
یونیورسٹی انکوائری کمیشن نے صاف صاف کہا ھے کہ یونین
میں ادھیکاری لوگ ہاتھ نہ ڈالیں. مگر اسکی کوئی پرواہ

न की गई, बरसों पुराने रिवाज का कोई लिहाज़ न किया गया. मनमाने तौर पर यूनीवर्सिटी के अधिकारी पेश आ रहे हैं. हम बधाई देंगे विद्यार्थी भाई बहनों को कि उन्होंने बहुत शान्ति और ख़ामोशी से अपना फ़र्ज़ निभाया और जो घाव उनके यूनियन रूपी शरीर पर किया गया है उस पर नमक छिड़के जाने के बावजूद वह आपे से बाहर न हुए.

हमें सलाह देने का शौक़ नहीं है. लेकिन सुझाव के तौर पर यह ज़रूरी कहना चाहते हैं कि आज के विद्यार्थी में जो तकलीफ़देह हरकतें कुछ बुज़ुर्गों या हाकिमों को नज़र आती हैं, इसके लिये वह आर्थिक व राजनीतिक ढांचा ज़िम्मेदार है जिसके अन्दर यह सूबा और देश कसा जा रहा है. अधिक तफ़सील में न जा कर हम सिर्फ़ इतना अर्ज़ करेंगे कि विदेशी माल देश में जितना ज़ियादा आयेगा, विदेशी फ़िल्में जितनी ज़ियादा फैलेंगी, मिलों का माल जितना ज़ियादा बढ़ेगा उतना ही ज़ियादा हमारे घर सूने पड़ेंगे, हमारे घरों में नहूसतें आएंगी और शैतान का राज होगा और हमारे घर में बच्चों के संस्कार बिगड़ेंगे और उनका पांव बाज़ार में बना रहेगा. लेकिन सरकार को तो मिलों और विदेशी चीज़ों से, सिनेमा और शराब से, बाज़ार और हाट से आमदनी ही आमदनी होती है. लिहाज़ा उसे न बुनकरों की परवाह, न तेलियों की फ़िकर, न बड़े बूढ़ों का लिहाज़, न नौजवानों का ख़याल. हमें यक़ीन है कि अगर आज गवर्नर श्री मुंशी राज भवन और मोटर छोड़ कर लखनऊ के किसी मोहल्ले में मकान ले कर मामूली इन्सान की तरह रहते हुए गवर्नर के फ़र्ज़ अदा करते रहें और उनकी देखा देखी हमारे सारे मिनिस्टर और वाइस चांसलर भी इसी तरह मोटरों को तिलांजलि दे कर जनता के बीच रह कर अपना ज़ियादा से ज़ियादा काम हाथ पैर की कमाई से करने लग जायें तो देखते देखते दुनिया बदल जायेगी और फिर न विद्यार्थी हड़ताल का नाम लेगा और न किसी को शिकायत या तकलीफ़ होगी. जब तक ऐसा नहीं होता और हुकूमत की कुर्सी से बैठ कर कांग्रेस वाले विद्यार्थियों पर अपना बेजा दबाव डालने की कोशिश करते रहेंगे तो दूसरी पार्टियां इसका मुक़ाबला करेंगी, कशमकश होगी, हड़तालें होंगी और जो न हो थोड़ा है.

कांग्रेस आज हाकिम है. किसी ने कहा है कि हुकूमत गिरा देती है और पूरी हुकूमत पूरे तौर से गिरा देती है. लेकिन गिरने वाला यही समझता है कि वह बदस्तूर क़ायम है. वह संभलने से इन्कार करता है और अपनी रफ़्तार नहीं बदलता, उल्टे और ज़ियादा तैश में आकर वार करता है. इसलिये यह क़ुदरती है कि कांग्रेस अपने

نہیں کی گئی، برسوں پرانے رواج کا کوئی لحاظ نہیں کیا گیا۔ من مانے طور پر یونیورسٹی کے ادھیکاری پیش آرہے ہیں۔ ہم بدھائی دینگے ودیارتھی بھائی بہنوں کو کہ انہوں نے بہت شانتی اور خاموشی سے اپنا فرض نبھایا اور جو گھاؤ اُن کے یونین روپی شریر پر کیا گیا ہے اُس پر نمک چھڑکے جانے کے باوجود وہ آپے سے باہر نہ ہوئے۔

ہمیں صلاح دینے کا شوق نہیں ہے۔ لیکن سوجھاؤ کے طور پر یہ ضرور کہنا چاہتے ہیں کہ آج کے ودیارتھی میں جو تکلیف دہ حرکتیں کچھ بزرگوں یا حاکموں کو نظر آتی ہیں، اس کے لئے وہ آرتھک و راجنیتک ڈھانچہ ذمہ دار ہے جس کے اندر یہ صوبہ اور دیش کسا جا رہا ہے۔ ادھک تفصیل میں نہ جاکر ہم صرف اتنا عرض کرینگے کہ ودیشی مال دیش میں جتنا زیادہ آئیگا، ودیشی فلمیں جتنی زیادہ پھیلیں گی، ملوں کا مال جتنا زیادہ بڑھے گا اتنا ہی زیادہ ہمارے گھر سونے پڑیں گے، ہمارے گھروں میں نحوستیں آئیں گی اور شیطان کا راج ہوگا اور ہمارے گھر میں بچوں کے سنسکار بگڑیں گے اور اُن کا پاؤں بازار میں بنا رہے گا۔ لیکن سرکار کو تو ملوں اور ودیشی چیزوں سے، سنیما اور شراب سے، بازار اور ہاٹ سے آمدنی ہی آمدنی ہوتی ہے۔ لہذا نہ اُسے بنکروں کی پرواہ، نہ تیلیوں کی فکر، نہ بڑے بوڑھوں کا لحاظ، نہ نوجوانوں کا خیال۔ ہمیں یقین ہے کہ آج گورنر شری منشی راج بھون اور موٹر چھوڑ کر لکھنؤ کے کسی محلے میں مکان لے کر معمولی انسان کی طرح رہتے ہوئے گورنر کے فرض ادا کرتے رہیں اور اُن کی دیکھا دیکھی ہمارے سارے منسٹر اور وائس چانسلر بھی اسی طرح موٹروں کو تلانجلی دے کر جنتا کے بیچ رہ کر اپنا زیادہ سے زیادہ کام ہاتھ پیر کی کمائی سے کرنے لگ جائیں تو دیکھتے دیکھتے دنیا بدل جائیگی اور پھر نہ ودیارتھی ہڑتال کا نام لےگا اور نہ کسی کو شکایت یا تکلیف ہوگی۔ جب تک ایسا نہیں ہوتا اور حکومت کی کرسی سے بیٹھ کر کانگریس والے ودیارتھیوں پر اپنا بیجا دباؤ ڈالنے کی کوشش کرتے رہینگے تو دوسری پارٹیاں اس کا مقابلہ کریں گی، کشمکش ہوگی، ہڑتالیں ہونگی اور جو نہ ہو تھوڑا ہے۔

کانگریس آج حاکم ہے۔ کسی نے کہا ہے کہ حکومت گرادیتی ہے اور پوری حکومت پورے طور سے گرادیتی ہے۔ لیکن گرنے والا یہی سمجھتا ہے کہ وہ بدستور قائم ہے۔ وہ سنبھلنے سے انکار کرتا ہے اور اپنی رفتار نہیں بدلتا، اُلٹے اور زیادہ طیش میں آکر وار کرتا ہے۔ اس لئے یہ قدرتی ہے کہ کانگریس اپنے

को बरक़रार रखने के लिये तरह तरह से ज़ोर डाले और कोशिशें करे—डंडे से, क़ानून से, पैसे से, मैडिल से. विद्यार्थियों को और सबको इससे आगाह रहना चाहिये. जो भी मौक़ा हो शान्ति और सदाचार से काम लेना चाहिये. वह जितना ज़ियादा ग़म खोयेंगे, जितना गहराई से काम करेंगे उतना ही सफल होंगे. वह इस तरह संभल कर चलें तो देश उनका है, भविष्य उनका है.

—सुरेश रामभाई

लखनऊ का विद्यार्थी आन्दोलन

श्री सुरेश रामभाई का यह नोट 31 अक्तूबर और 1, 2, और 3 नवम्बर की लखनऊ की घटनाओं से पहले का लिखा हुआ है. लखनऊ का इस समय का विद्यार्थी आन्दोलन क़रीब क़रीब ख़तम हो चुका. हो सकता है कि 'नया हिन्द' के इस अंक के निकलने से पहले विद्यार्थियों और अधिकारियों में कुछ सुलह समझौता भी हो चुका हो पर लखनऊ की इन चार दिन की घटनाओं पर हम सब को ठंडे दिल से सोचने की ज़रूरत है.

विद्यार्थियों और अधिकारियों के बीच के झगड़े की तफ़सील में इस समय जाना बेकार है. मोटे तौर पर यूनीवर्सिटी के विद्यार्थियों को अपनी यूनीवर्सिटी यूनियन के संगठन, चुनाव वग़ैरा के बारे में अंगरेज़ी ज़माने से कुछ अधिकार हासिल थे. हाल में कुछ ऊंचे सरकारी अधिकारियों ने उन अधिकारों का ज्यों का त्यों जारी रखना ख़तरनाक समझा. उनमें उलट फेर की तजवीज़ें की गईं. विद्यार्थियों को यह बात अच्छी न लगी. आन्दोलन शुरू हो गया. पर लखनऊ के विद्यार्थी आन्दोलन और उसको दबाने के लिये सरकार की कोशिशों ने जो रूप धारन किया इस के सामने यह सब बातें अब अधिक महत्व की नहीं रहीं.

विद्यार्थी आन्दोलन ने कहा जाता है कि कुछ अनुचित रूप भी धारन कर लिया था. कहीं कहीं कुछ लोगों ने पुलिस पर पत्थर फेंके. कहीं कहीं कोई छोटी मोटी सरकारी इमारतें जला दी गईं. कहीं कहीं तार और टेलीफ़ोन काटे गए. पर लखनऊ के डिसट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने अपने बयान में स्वीकार किया है कि इस तरह के कामों में आम तौर पर विद्यार्थी शामिल नहीं थे. कहीं कहीं तो ऐसे कामों में विद्यार्थी दिखाई ही नहीं दिये. अधिकारियों की तरफ़ से माना गया है कि इस तरह के काम अधिकतर शहर के कुछ आवारा और फ़ालतू लोगों ने ही किये. यह भी सब मानते हैं कि विद्यार्थियों के जलूस और उनका सारा आन्दोलन आम तौर पर शान्तिमय था. अगर हम यह

برقرار رکھنے کے لئے طرح طرح سے زور ڈالے اور کرے—ڈنڈے سے، قانون سے، پیسے سے، میڈل سے. ودیارتھیوں کو اور سب کو اس سے آگاہ رہنا چاہئے. جو بھی موقع ہو شانتی اور سداچار سے کام لینا چاہئے. وہ جتنا زیادہ غم کھائیں گے، جتنی گہرائی سے کام کریں گے اتنا ہی سپھل ہونگے. وہ اس طرح سنبھل کر چلیں تو دیش اُن کا ہے، بھوشیہ اُن کا ہے.

—سریش رام بھائی

لکھنؤ کا ودیارتھی آندولن

شری سریش رام بھائی کا یہ نوٹ 31 اکتوبر اور 1، 2 اور 3 نومبر کی لکھنؤ کی گھٹناؤں سے پہلے کا لکھا ہوا ہے. لکھنؤ کا اس سمے کا ودیارتھی آندولن قریب قریب ختم ہو چکا. ہوسکتا ہے کہ 'نیا ہند' کے اس انک کے نکلنے کے پہلے ودیارتھیوں اور ادھیکاریوں میں کچھ صلح سمجھوتہ بھی ہوچکا ہو. پر لکھنؤ کی اُن چار دن کی گھٹناؤں پر ہم سب کو ٹھنڈے دل سے سوچنے کی ضرورت ہے.

ودیارتھیوں اور ادھیکاریوں کے بیچ کے جھگڑے کی تفصیل میں اس سمے جانا بیکار ہے. موٹے طور پر یونیورسٹی کے ودیارتھیوں کو اپنی یونیورسٹی یونین کے سنگٹھن، چناؤ وغیرہ کے بارے میں انگریزی زمانے سے کچھ ادھیکار حاصل تھے. حال میں کچھ اونچے سرکاری ادھیکاریوں نے ادھیکاروں کو جوں کا توں جاری رکھنا خطرناک سمجھا. ان میں الٹ پھیر کی تجویزیں کی گئیں. ودیارتھیوں کو یہ بات اچھی نہیں لگی. آندولن شروع ہوگیا. پر لکھنؤ کے ودیارتھی آندولن اور اُس کو دبانے کے لئے سرکار کی کوششوں نے جو روپ دھارن کیا اُس کے سامنے یہ سب باتیں اب ادھک مہتو کی نہیں رہیں.

ودیارتھی آندولن نے کہا جاتا ہے کہ کچھ انوچت روپ بھی دھارن کرلیا تھا. کہیں کہیں کچھ لوگوں نے پولس پر پتھر پھینکے. کہیں کہیں کوئی چھوٹی موٹی سرکاری عمارتیں جلا دی گئیں. کہیں کہیں تار اور ٹیلیفون کاٹے گئے. پر لکھنؤ کے ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ نے اپنے بیان میں سویکار کیا ہے کہ اس طرح کے کاموں میں عام طور پر ودیارتھی شامل نہیں تھے. کہیں کہیں تو ایسے کاموں میں ودیارتھی دکھائی ہی نہیں دئے. ادھیکاریوں کی طرف سے مانا گیا ہے کہ اس طرح کے کام شہر کے کچھ آوارہ اور فالتو لوگوں نے ہی کئے. یہ بھی سب مانتے ہیں کہ ودیارتھیوں کے جلوس اور ان کا سارا آندولن عام طور پر شانتی مے تھا. اگر ہم یہ

मान लें कि कुछ विद्यार्थियों ने भी कहीं कहीं इस तरह की ग़लतियां कीं तब भी आन्दोलन को दबाने के लिये अधिकारियों ने जो तरीक़े इस्तेमाल किये उनसे सारे देश को एक बहुत बड़ा धक्का लगा.

अख़बारों की ख़बर है कि किसी टैकनिकल स्कूल के 80 विद्यार्थी अपने होस्टल के अन्दर थे. कहा जाता है कि इन में से कुछ विद्यार्थियों ने पास से जाती हुई एक पुलिस लारी पर कुछ पटाख़े फेंक दिये. इस पर पुलिस होस्टल के अन्दर घुस आई. बहुत से लड़कों ने डरके मारे अपने अपने कमरों में जा कर अन्दर से कमरों के दरवाज़े बन्द कर लिये. पुलिस ने ज़बरदस्ती दरवाज़े तोड़ डाले और एक एक कमरे में घुस कर सब लड़कों को लाठियों से 'बेदरदी से पीटा.' अख़बार में अंगरेज़ी शब्द हैं 'Merciless Beating'. इस के बाद अस्सी के अस्सी लड़के गिरफ़्तार कर के जेल पहुंचा दिये गए.

मामूली सवाल होता है कि क्या यह देख लिया गया था कि पटाख़े फेंकने में अस्सी के अस्सी लड़के शामिल थे? और जिन लड़कों ने पटाख़े फेंकने का जुर्म किया था—अगर यह जुर्म भी—हो तो क्या उन्हें बिना पीटे गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता था? जिन बच्चों ने डर के मारे अन्दर घुस कर दरवाज़े बन्द कर लिये थे क्या उन सब को भी गिरफ़्तार करना और गिरफ़्तारी से पहले बेदरदी के साथ पीटना ज़रूरी था? क्या देश का क़ानून पुलिस को इसकी इजाज़त देता है?

एक और ख़बर है कि क़ैसरबाग़ सबज़ीमंडी में जो खटिकों का मुहल्ला है, अचानक तीन बजे रात को पुलिस ने बहुत बड़ी तादाद में जाकर और एक एक घर में ज़बरदस्ती घुस कर सोते हुओं को जगाया और लगभग सब बालिग़ मरदों को जिनकी तादाद 129 थी गिरफ़्तार कर लिया. इन में कुछ तपेदिक़ के और दूसरी बीमारियों के मरीज़ और कुछ अपाहज भी थे. सब को जेल भेज दिया गया. इन लोगों ने ज़ाहिरा कम से कम उस समय कोई जुर्म नहीं किया था. वजह यह बताई जाती है कि एक दिन पहले उस जगह के आस पास कुछ टेलीफ़ोन के खम्बों और तारों को नुक़सान पहुंचा था और ख़्याल यह था कि इस के लिये उसी मुहल्ले के लोग क़सूरवार हैं.

शहर में जगह जगह लोगों का लाठियों से पीटा जाना, दूकानों का लूटा जाना, बिना किसी फ़र्क़ के गुनहगारों और बेगुनाहों सब पर गोलियों की बौछार करना वग़ैरा मामूली बातें थीं. गिरफ़्तारियों की तादाद एक दिन में तीन सौ से ऊपर गई. कुल तादाद क्या थी नहीं मालूम. इलाहाबाद से जाने वाले कुछ विद्यार्थी बिना कुछ किये ही लखनऊ स्टेशन पर गिरफ़्तार करके जेल भेज दिये गए. लाठियों

مان لیں کہ کچھ ودیارتھیوں نے بھی کہیں کہیں اِس طرح کی غلطیاں کیں تب بھی آندولن کو دبانے کے لئے ادھیکاریوں نے جو طریقے اِستعمال کئے اُن سے سارے دیش کو ایک بہت بڑا دھکا لگا۔

اخباروں کی خبر ہے کہ کسی ٹیکنیکل اِسکول کے 80 ودیارتھی اپنے ہوسٹل کے اندر تھے۔ کہا جاتا ہے کہ اِن میں سے کچھ ودیارتھیوں نے پاس سے جاتی ہوئی ایک پولس لاری پر کچھ پٹاخے پھینک دئے۔ اِس پر پولس ہوسٹل کے اندر گھس آئی۔ بہت سے لڑکوں نے ڈر کے مارے اپنے اپنے کمروں میں جاکر اندر سے کمروں کے دروازے بند کرلئے۔ پولس نے زبردستی دروازے توڑ ڈالے اور ایک ایک کمرے گھس کر سب لڑکوں کو لاٹھیوں سے 'بیدردی سے پیٹا۔' اخبار میں انگریزی شبد ہیں 'Merciless Beating' اس کے بعد اَسی کے اَسی لڑکے گرفتار کرکے جیل پہنچا دئے گئے۔

معمولی سوال ہوتا ہے کہ کیا یہ دیکھ لیا گیا تھا کہ پٹاخے پھینکنے میں اَسی کے اَسی لڑکے شامل تھے؟ اور جن لڑکوں نے پٹاخے پھینکنے کا جرم کیا تھا—اگر یہ جرم بھی ہو تو—کیا اُنہیں بنا پیٹے گرفتار نہیں کیا جاسکتا تھا؟ جن بچوں نے ڈر کے مارے اندر گھس کر دروازے بند کرلئے تھے کیا اُن سب کو بھی گرفتار کرنا اور گرفتاری سے پہلے بیدردی کے ساتھ پیٹنا ضروری تھا؟ کیا دیش کا قانون پولس کو اِسکی اجازت دیتا ہے؟

ایک اور خبر ہے کہ قیصر باغ سبزی منڈی میں جو کھٹکوں کا محلہ ہے اچانک تین بجے رات کو پولس نے بہت بڑی تعداد میں جاکر اور ایک ایک گھر میں زبردستی گھس کر سوتے ہوؤں کو جگایا اور لگ بھگ سب بالغ مردوں کو جن کی تعداد 129 تھی گرفتار کرلیا۔ اِن میں کچھ تپ دق کے اور دوسری بیماریوں کے مریض اور کچھ اپاہج بھی تھے۔ سب کو جیل بھیجدیا گیا۔ اِن لوگوں نے ظاہرا کم سے کم اُس سمے کوئی جرم نہیں کیا تھا۔ وجہ یہ بتائی جاتی ہے کہ ایک دن پہلے اُس جگہ کے آس پاس کچھ ٹیلیفون کے کھمبوں اور تاروں کو نقصان پہنچا تھا اور خیال یہ تھا کہ اِس کے لئے اُسی محلے کے لوگ قصوروار ہیں۔

شہر میں جگہ جگہ لوگوں کا لاٹھیوں سے پیٹے جانا، دوکانوں کا لوٹا جانا، بنا کسی فرق کے گنہگاروں اور بے گناہوں سب پر گولیوں کی بوچھار کرنا وغیرہ معمولی باتیں تھیں۔ گرفتاریوں کی تعداد ایک دن میں تین سو سے اُوپر گئی۔ کل تعداد کیا تھی، نہیں معلوم۔ الہ آباد سے جانے والے کچھ ودیارتھی بنا کچھ کئے ہی لکھنؤ اِسٹیشن پر گرفتار کرکے جیل بھیجدئے گئے۔ لاٹھیوں

और गोलियों से मरने वालों की तादाद का भी ठीक पता नहीं चलता. केवल पहले दिन के मरने वालों की तादाद 13 लड़कियां और 26 लड़के बताई जाती है. घोड़ों की टापों से लोगों, यहां तक कि लड़कियों का, कुचल जाना भी लोगों ने अपनी आंखों से देखा.

इन सब ख़बरों को सुन कर यह सोचना पड़ता है कि आख़िर हम देश को किधर ले जा रहे हैं. बहुत से लोगों को कांगरेस गवरमेन्टों से शिकायत थी कि इन्होंने हकूमत के पुराने अंगरेज़ी ढांचे को बदलने या सुधारने के बजाय उसे ज्यों का त्यों क़ायम रखा जिससे देश की हालत और ज़ियादा बिगड़ी. अब लखनऊ के समाचार सुन कर हमें 35 बरस पहले के दिन याद आ गए. मालूम होता है कि सार्वजनिक आन्दोलनों को दबाने के तरीक़े भी हमारे कुछ नये हाकिमों ने अपने पहले के अंगरेज़ मालिकों से पूरी तरह सीख लिये हैं. मशहूर जनरल डायर ने जलियानवाला हत्याकांड के बाद अपने एक बयान में कहा था कि "मैं लोगों के दिलों में डर बैठा देना (Strike terror) चाहता था." ज़ाहिर है कि लखनऊ के कुछ अधिकारियों के दिमाग़ भी ठीक इसी तरह काम कर रहे थे. उनके हाथ में ताक़त थी. गुनहगारों और बेगुनाहों में फ़र्क़ किये बिना एक बार जिस तरह हो आम जनता के दिलों में डर और धाक बैठा देना उन्होंने अपनी हकूमत की सलामती और शान क़ायम रखने के लिये ज़रूरी समझा.

हम इस सारे मामले में लाठी चलाने वाले या गोलियां चलाने वाले ग़रीब पुलिस वालों को दोशी नहीं मानते. वह बेचारे हुकुम के पाबन्द, ज़ाहिर है, किसी दूसरे हाथों में लाठी का काम दे रहे थे. इस सारे मामले में पुलिस वालों या छोटे मोटे पुलिस अफ़सरों को सज़ा देना उनके साथ इनसाफ़ करना न होगा. दोश कहीं न कहीं हमारे सारे आर्थिक और राजकाजी ढांचे में है.

आचार्य विनोबा भावे ने अपनी सेवापुरी की एक तक़रीर में हमारी मौजूदगी में कहा था कि :—"जब हमारी आजकल की सरकार अहिंसा की बात करती है तो बिलकुल यह लगता है कि बग़ल में छुरी और मुंह में राम राम." इन तीन दिन के अन्दर लखनऊ में वह छुरी बग़ल में न रह कर ख़ूब खुल कर खेली हम अकसर 'नानवायलेंस' यानी अहिंसा और 'डेमोक्रेसी' यानी लोक सत्ता दोनों की डींग मारा करते हैं. लखनऊ में हमने जो कुछ किया वह न अहिंसा था और न लोक सत्ता.

अहिंसा और लोक सत्ता की डींग मारते हुए हममें से कोई कोई ज़िम्मेदार आदमी कभी कभी नये कम्युनिस्ट चीन से अपना मुक़ाबला करके अपने को ऊंचा दिखाते हुए भी नहीं शरमाते. हम यहां चीन की हाल की केवल दो घटनाएं नीचे देते हैं.

...مرنے والوں کی تعداد کا بھی ٹھیک پتہ نہیں چلتا. پہلے دن کے مرنے والوں کی تعداد 13 لڑکیاں اور 26 لڑکے ...جاتی ہے. گھوڑوں کی ٹاپوں سے لوگوں، یہاں تک ...کا، کچلا جانا بھی لوگوں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا.

...ان سب خبروں کو سنکر یہ سوچنا پڑتا ہے کہ آخر ...کو کدھر لے جا رہے ہیں. بہت سے لوگوں کو ...گورنمنٹوں سے شکایت تھی کہ انہوں نے حکومت ...انگریزی ڈھانچے کو بدلنے یا سدھارنے کے بجائے ...قائم رکھا جس سے دیش کی حالت اور ...بگڑی. اب لکھنؤ کے سماچار سنکر ہمیں 35 برس ...دن یاد آگئے. معلوم ہوتا ہے کہ سارووجنک ...کو دبانے کے طریقے بھی ہمارے کچھ نئے حاکموں ...پہلے کے انگریز مالکوں سے پوری طرح سیکھ لئے ہیں. ...جنرل ڈائر نے جلیان والا ہتیاکانڈ کے بعد اپنے ...بیان میں کہا تھا کہ "میں لوگوں کے دلوں میں ڈر ...دینا (Strike terror) چاہتا تھا" ظاہر ہے کہ ...کے کچھ ادھیکاریوں کے دماغ بھی ٹھیک اسی طرح ...رہے تھے. ان کے ہاتھ میں طاقت تھی. گنہگاروں اور ...میں فرق کئے بنا ایک بار جس طرح ہو عام ...کے دلوں میں ڈر اور دھاک بٹھا دینا انہوں نے ...حکومت کی سلامتی اور شان قائم رکھنے کے لئے ...سمجھا.

ہم اس سارے معاملے میں لاٹھی چلانے والے یا گولیاں ...والے غریب پولس والوں کو دوشی نہیں مانتے. ...بیچارے حکم کے پابند، ظاہر ہے، کسی دوسرے ہاتھوں ...لاٹھی کا کام دے رہے تھے. اس سارے معاملے میں ...والوں یا چھوٹے موٹے پولس افسروں کو سزا دینا ...کے ساتھ انصاف کرنا نہ ہوگا. دوش کہیں نہ کہیں ...سارے آرتھک اور راج کاجی ڈھانچے میں ہے.

آچاریہ ونوبا بھاوے نے اپنی سیواپوری کی ایک تقریر ...ہماری موجودگی میں کہا تھا کہ :—"جب ہماری ...کی سرکار اہنسا کی بات کرتی ہے تو بالکل یہ لگتا ...بغل میں چھری اور منہ میں رام رام" ان تین دن ...لکھنؤ میں وہ چھری بغل میں نہ رہ کر خوب کھل کر ...ہم اکثر 'نان وائلینس' یعنی اہنسا اور 'ڈیموکریسی' ...لوک ستا دونوں کی ڈینگ مارا کرتے ہیں. لکھنؤ ...ہم نے جو کچھ کیا وہ نہ اہنسا تھا اور نہ لوک ستا.

اہنسا اور لوک ستا کی ڈینگ مارتے ہوئے ہم میں سے ...کوئی ذمہ دار آدمی کبھی کبھی نئے کمیونسٹ چین ...اپنا مقابلہ کرکے اپنے کو اونچا دکھاتے ہوئے بھی نہیں ...ہم یہاں سے چین کی حال کی دو گھٹنائیں ...دیتے ہیں.

कैन्टन का शहर माओ त्से तुंग और उनकी पार्टी के क़ब्ज़े में आ चुका था. एक बड़ा फ़ौजी अफ़सर वहां का एक कारख़ाना देखने के लिये गया. चौकीदार दरवाज़े पर खड़ा था. फ़ौजी अफ़सर के पास 'पास' नहीं था. चौकीदार ने बिना पास देखे अन्दर जाने देने से इनकार किया. फ़ौजी अफ़सर अपने घमंड में था. चौकीदार को हाथ से हटा कर वह ज़बरदस्ती अन्दर चला गया. यह देख कर लोगों ने काम बन्द कर दिया. अख़बारों में ख़ूब शोर मचा. सरकार को पता चला. उस फ़ौजी अफ़सर को हुकम मिला कि वह जा कर चौकीदार से माफ़ी मांगे और फिर कोई ऐसी हरकत न करे. उस का माफ़ीनामा शहर के अख़बारों में छाप दिया गया.

दूसरी घटना पीकिंग यूनीवर्सिटी की है डाक्टर ची वहां के प्रेसीडेन्ट हैं, बूढ़े और विद्वान हैं. यूनीवर्सिटी के साढ़े छै हज़ार लड़के उन्हें बड़े आदर और प्रेम की निगाह से देखते हैं. एक दिन एक लड़के को उसकी किसी ग़लती पर बुरा कहते हुए डाक्टर ची के मुंह से कोई ऐसा शब्द निकल गया जो पहले कभी बरता जाता था पर अब नए चीन में जिसका रिवाज बन्द हो गया है. लड़कों को मालूम हुआ तो उन्हें बुरा लगा. डाक्टर ची को पता चल गया. उन्होंने फ़ौरन सब लड़कों को जमा कर के सबके सामने अपनी ग़लती को माना, अपना शब्द वापस लिया और उस लड़के को प्रेम के साथ बुला कर थपथपाया. डाक्टर ची के लिये आदर और प्रेम यूनी-वर्सिटी के लड़के लड़कियों में इस घटना से घटा नहीं, और बढ़ गया.

हमारे एक हिन्दुस्तानी मित्र, जो हाल में पीकिंग यूनीवर्सिटी में हिन्दी के प्रोफ़ेसर रह चुके हैं, कहते थे कि चीन की यूनीवर्सिटियों में आजकल राज विद्यार्थियों का ही माना जाता है और है. और इससे पढ़ाई में या यूनी-वर्सिटी के दूसरे कामकाज में बाधा नहीं पड़ती, बेहद मदद मिलती है. हम तो इन बातों को सुनने से भी घबराते हैं.

सच यह है कि हमारा हकूमत का सारा ढांचा ही ग़लत और बिगड़ा हुआ है. 21 अक्तूबर को मुंगेर में व्याख्यान देते हुए आचार्य विनोबा भावे ने कुछ पते की बातें कही हैं. हम उनके कुछ वाक्य अंगरेज़ी से अनुवाद करके नीचे देते हैं. उन्होंने कहा कि :—

"सच्ची डेमोक्रेसी यानी लोक सत्ता उस समय तक केवल एक सपना रहेगी जब तक हम राज सत्ता को टुकड़े टुकड़े कर के उसे नीचे तक जनता में न बांट दें ..... पारलीमेन्टरी हकूमत और किसी एक राज का मन चाहा शासन दोनों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं......यानी यह

کینٹن کا شہر ماؤزے تنگ اور ان کی پارٹی کے قبضے میں آچکا تھا۔ ایک بڑا فوجی افسر وہاں کا ایک کارخانہ دیکھنے کے لئے گیا۔ چوکیدار دروازے پر کھڑا تھا۔ فوجی افسر کے پاس 'پاس' نہیں تھا۔ چوکیدار نے بنا پاس دیکھے اندر جانے دینے سے انکار کیا۔ فوجی افسر اپنے گھمنڈ میں تھا۔ چوکیدار کو ہاتھ سے ہٹا کر وہ زبردستی اندر چلا گیا۔ یہ دیکھ کر لوگوں نے کام بند کر دیا۔ اخباروں میں خوب شور مچا۔ سرکار کو پتہ چلا۔ اس فوجی افسر کو حکم ملا کہ وہ جا کر چوکیدار سے معافی مانگے اور پھر کوئی ایسی حرکت نہ کرے۔ اس کا معافی نامہ شہر کے اخباروں میں چھاپ دیا گیا۔

دوسری گھٹنا پیکنگ یونیورسٹی کی ہے۔ ڈاکٹر چی وہاں کے پریسیڈینٹ ہیں، بوڑھے اور ودوان ہیں۔ یونیورسٹی کے ساڑھے چھ ہزار لڑکے انہیں بڑے آدر اور پریم کی نگاہ سے دیکھتے ہیں۔ ایک دن ایک لڑکے کو اس کی کسی غلطی پر برا کہتے ہوتے ڈاکٹر چی کے منھ سے کوئی ایسا شبد نکل گیا جو پہلے کبھی برتا جاتا تھا پر اب نئے چین میں جس کا رواج بند ہو گیا ہے۔ لڑکوں کو معلوم ہوا تو انہیں برا لگا۔ ڈاکٹر چی کو پتہ چل گیا۔ انہوں نے فوراً سب لڑکوں کو جمع کر کے سب کے سامنے اپنی غلطی کو مانا، اپنا شبد واپس لیا اور اس لڑکے کو پریم کے ساتھ بلا کر تھپتھپایا۔ ڈاکٹر چی کے لئے آدر اور پریم یونیورسٹی کے لڑکے لڑکیوں میں اس گھٹنا سے گھٹا نہیں، اور بڑھ گیا۔

ہمارے ایک ہندستانی متر، جو حال میں پیکنگ یونیورسٹی میں ہندی کے پروفیسر رہ چکے ہیں، کہتے تھے کہ چین کی یونیورسٹیوں میں آجکل راج ودیارتھیوں ہی کا مانا جاتا ہے اور ہے۔ اور اس سے پڑھائی میں یا یونیورسٹی کے دوسرے کام کاج میں بادھا نہیں پڑتی، بے حد مدد ملتی ہے۔ ہم تو ان باتوں کو سننے سے بھی گھبراتے ہیں۔

سچ یہ ہے کہ ہمارا حکومت کا سارا ڈھانچہ ہی غلط اور بگڑا ہوا ہے۔ 21 اکتوبر کو مونگیر میں ویاکھیان دیتے ہوئے آچاریہ ونوبا بھاوے نے کچھ پتے کی باتیں کہی ہیں۔ ہم ان کے کچھ واکیہ انگریزی سے انواد کر کے نیچے دیتے ہیں۔ انہوں نے کہا کہ :—

"سچی ڈیموکریسی یعنی لوک ستا اس سمے تک کیول ایک سپنا رہے گی جب تک ہم راج ستا کو ٹکڑے ٹکڑے کر کے اسے نیچے تک جنتا میں نہ بانٹ دیں...... پارلیامنٹری حکومت اور کسی ایک راجا کا من چاہا شاشن دونوں ایک ہی تھیلی کے چٹے بٹے ہیں......یعنی یہ

नामधारी लोक सत्ता हिंसा के सहारे ही चल सकती है. इससे दुनिया में फूट बढ़ी है और हिंसा की बुरी ताक़तें सौ गुना ज़ियादा मज़बूत हो गई हैं. अब जनता का ज़माना आ रहा है और आ गया है. अब दुनिया में एक आदमी की हकूमत, चाहे वह कितना भी अच्छा हो, नहीं चल सकती..... लोक सत्ता का यह तमाशा जिसे एक आदमी की एक वोट के नाम पर चलाया जा रहा है बादशाहों और राजाओं की हकूमत से किसी तरह बेहतर नहीं है......यह क्या बात है कि प्लानिंग कमीशन की मंहगी योजनाओं और ढाई साल की लगातार कोशिशों के बाद भी बेकारी बढ़ती जा रही है.......हम करोड़ों आदमियों की ज़िन्दगी के साथ कब्र तक इस तरह खेलते रहेंगे? इसका इलाज यह है कि हम केवल शोशन हीन समाज ही नहीं बल्कि शासन हीन समाज क़ायम करें. यह तभी हो सकता है जब हम राज सत्ता को गांव गांव के अन्दर बांट दें......सच्ची लोक सत्ता तब तक क़ायम नहीं हो सकती जब तक लोक सत्ता के आजकल के ढांचे में क्रान्तिकारी तबदीलियां न की जाएं. लोगों के दिलों से डर निकालने, दुनिया में अमन क़ायम करने और सर्वोदय यानी सब के भले वाला समाज क़ायम करने का यही एक तरीक़ा है. सर्वोदय सच्ची लोक सत्ता का ही दूसरा नाम है. उस सच्ची लोक सत्ता में फिर बहुमत और अल्पमत का कोई सवाल ही न रह जायगा, क्योंकि उसमें कोई सरकार न होगी या यूं कहिये कि सरकार के हाथ में सत्ता नहीं के बराबर होगी."

हमने आचार्य विनोबा के भाशन का ज़रा लम्बा टुकड़ा केवल इसलिये दिया है क्योंकि इससे हमारे आज कल के रोग का ख़ासा पता चलता है.

लखनऊ के मामले में हम यह मानते हैं कि आम तौर पर विद्यार्थियों का आन्दोलन शान्तिमय और अहिंसात्मक रहा. इसके लिये वह बधाई के पात्र हैं. लेकिन उनसे ग़लतियां भी हुईं. कुछ विद्यार्थियों ने भी और कुछ दूसरे लोगों ने भी उनके नाम पर और उनसे हमदर्दी ज़ाहिर करने के लिये ग़लती से या शरारत से, हो सकता है कुछ ने जानकर उनके आन्दोलन को कलंकित करने के लिये, पुलिस पर पत्थर फेंके, पटाखे फेंके. यह सब काम बुरे और हिंसा के काम थे. सरकारी माल को या इमारतों को जलाना और तार काटना भी बुरे काम हैं. अपने विरोधी नेताओं के पुतलों को निकाल कर उनका निरादर करना और जलाना यह सब हिंसात्मक न हों तो भी गन्दे और बुरे काम हैं. इस तरह के काम किसी आन्दोलन की सफलता में मदद नहीं दे सकते, न उस आन्दोलन को दुनिया की नज़रों में ऊंचा उठा सकते हैं. लेकिन हम यह

لوک ستا هنسا کے سہارے هی چل سکتی هے. ... دنیا میں پھوٹ بڑھی هے اور هنسا کی بری طاقتیں ... زیادہ مضبوط ہوگئی هیں. اب جنتا کا زمانہ آ رہا ... آ گیا هے. اب دنیا میں ایک آدمی کی حکومت ... اچھا هو نہیں چل سکتی......لوک ... تماشہ جسے ایک آدمی کی ایک ووٹ کے نام پر ... جا رہا هے بادشاہوں اور راجاؤں کی حکومت سے ... طرح بہتر نہیں هے......یہ کیا بات هے کہ پلاننگ ... کی مہنگی یوجناؤں اور ڈھائی سال کی لگاتار کوششوں ... بعد بھی بیکاری بڑھتی جا رهی هے......هم کروڑوں ... کی زندگی کے ساتھ کب تک اس طرح کھیلتے ... رهیں گے؟ اس کا علاج یہ هے کہ کیول شوشن هین سماج ... نہیں بلکہ شاشن هین سماج قائم کریں. یہ تب ... هو سکتا هے جب هم راج ستا کو گاؤں گاؤں کے اندر ... دیں......سچی لوک ستا تب تک قائم نہیں هو ... جب تک لوک ستا کے آجکل کے ڈھانچے میں ... تبدیلیاں نہ کی جائیں. لوگوں کے دلوں سے ... دنیا میں امن قائم کرنے اور سرودے یعنی ... کے بھلے والا سماج قائم کرنے کا یہی ایک طریقہ هے. ... سچی لوک ستا کا هی دوسرا نام هے. اس سچی ... ستا میں پھر بہومت اور الپ مت کا کوئی سوال هی ... رہ جائے گا' کیوں کہ اس میں کوئی سرکار نہ ہوگی یا ... کہئے کہ سرکار کے هاتھ میں ستا نہیں کے برابر هوگی."

هم نے آچاریہ ونوبا کے بھاشن کا ذرا لمبا ٹکڑا کیول ... لئے دیا هے کیوں کہ اس سے همارے آجکل کے روگ کا ... پتہ چلتا هے.

لکھنؤ کے معاملے میں هم یہ مانتے هیں کہ عام ... ودیارتھیوں کا آندولن شانتی مے اور اهنساتمک ... اس کے لئے وہ بدھائی کے پاتر هیں. لیکن ان سے ... غلطیاں بھی ہوئیں. کچھ ودیارتھیوں نے بھی اور کچھ دوسرے ... نے بھی ان کے نام پر اور ان سے همدردی ظاهر کرنے ... غلطی سے یا شرارت سے' هو سکتا هے کچھ نے جان کر ... کے آندولن کو کلنکت کرنے کے لئے' پولس پر پتھر ... پٹاخے پھینکے. یہ سب کام برے اور هنسا کے کام ... سرکاری مال کو یا عمارتوں کو جلانا اور تار کاٹنا بھی ... کام هیں. اپنے ورودھی نیتاؤں کے پتلوں کو نکال کر ... نرادر کرنا اور جلانا یہ سب هنسانمک نہیں تو بھی ... اور برے کام هیں. اس طرح کے کام کسی آندولن ... سپھلتا میں مدد نہیں دے سکتے' نہ اس آندولن کو ... کی نظروں میں اونچا اٹھا سکتے هیں. لیکن هم یہ

कहे बिना नहीं रह सकते कि सरकारी अधिकारियों ने जो कुछ किया उसके सामने विद्यार्थियों की सारी ग़लतियां फीकी पड़ जाती हैं. जिस समय हम यह पंक्तियां लिख रहे हैं उस समय हमारे दिल का भाव यही है कि लखनऊ या प्रान्त के विद्यार्थी इस सारी दुर्घटना में अन्यायी कम और अन्याय पीड़ित कहीं अधिक हैं. उनके साथ जो बाहर सलूक हुआ उसके बाद उन सबका जेलों में रखा जाना, क़ानून की निगाह से ठीक हो या न हो, हम यह अनुभव करते हैं कि जिस जगह से बैठ कर हम यह लिख रहे हैं उसके मुक़ाबले में जेलख़ानों की वह कोठरियां कहीं ज़ियादा पवित्र हैं जिनमें इस समय हमारे सैकड़ों उत्साही बच्चे बन्द हैं. हमारा दिल उनके साथ है.

आगे के लिये हम अपने विद्यार्थियों से केवल यह कहना चाहते हैं कि अगर वह अपने आन्दोलन या आन्दोलनों में—और हर देश का इतिहास साक्षी है कि इस तरह के आन्दोलन एक लहर के दब जाने से हमेशा के लिये नहीं मरा करते—मन, बचन और कर्म से पूरी तरह अहिंसात्मक रहें और वह लाठियां और गोलियां बरसाने वाले पुलिस वालों को भी अपना भाई समझें, उनसे लड़ने से इनकार करें, उन पर वार करना तो दूर रहा उनके लिये कोई बुरा विचार भी अपने मन में न आने दें तो विजय अन्त में उनके पैर चूमे बिना नहीं रह सकती. इस तरह देश के अन्दर वह उस शासन हीन समाज के क़ायम करने में बहुत बड़ी मदद देंगे जिसकी तरफ़ विनोबा जी ने इशारा किया है. यही वह "नैतिक और आर्थिक स्वराज" होगा जिसके लिये महात्मा गांधी ने अन्त समय तक तड़पते हुए अपने प्रान दिये.

दूसरे पत्त के ख़ास ख़ास भाईयों—श्री कन्हैया लाल मुंशी, पंडित गोबिन्द वल्लभ पंत, श्री सम्पूर्णानन्द, श्री चन्द्र भान गुप्ता और श्री आचार्य जुगल किशोर से—जिन सबके साथ काम करने का हमें सौभाग्य मिल चुका है और जिनसे हमारे दिल में प्रेम है, हम बड़ी नम्रता के साथ केवल यह कहना चाहते हैं कि वह थोड़ी देर के लिये रुक कर ठंडे दिल से सोचें कि वह देश को किधर लेजा रहे हैं और किधर लेजाना चाहते हैं. कोई आदमी भी जो ख़ुद अपने देश की निहत्थी जनता पर और देश के लड़कों और लड़कियों पर बिना गोलियां बरसाए उन्हें क़ाबू में नहीं कर सकता वह न जन सत्ता या लोक सत्ता जैसे शब्द मुंह से निकालने का अधिकारी है और न देश पर शासन करने के क़ाबिल है.

प्रान्त के विद्यार्थियों के इस बार के आन्दोलन में दो आदियों ने जिस तरह अपने को संभाला या जिस तरह का हिस्सा लिया उसकी भी हम तारीफ़ किये बिना नहीं रह

کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ سرکاری ادھیکاریوں نے جو کچھ کیا اس کے سامنے ودیارتھیوں کی ساری غلطیاں پھیکی پڑ جاتی ہیں ۔ جس سمے ہم یہ پنکتیاں لکھ رہے ہیں اس سمے ہمارے دل کا بھاؤ یہی ہے کہ لکھنؤ یا پرانت کے ودیارتھی اس ساری درگھٹنا میں انیائی کم اور انیائے پیڑت کہیں ادھک ہیں ۔ ان کے ساتھ جو باہر سلوک ہوا اس کے بعد ان سب کا جیلوں میں رکھا جانا، قانون کی نگاہ سے ٹھیک ہو یا نہ ہو، ہم یہ انوبھو کرتے ہیں کہ جس جگہ سے بیٹھ کر ہم یہ لکھ رہے ہیں اس کے مقابلے میں جیل خانوں کی وہ کوٹھریاں کہیں زیادہ پوتر ہیں جن میں اس سمے ہمارے سیکڑوں اتساہی بچے بند ہیں. ہمارا دل ان کے ساتھ ہے ۔

آگے کے لئے ہم اپنے ودیارتھیوں سے کیول یہ کہنا چاہتے ہیں کہ اگر وہ اپنے آندولن یا آندولنوں میں—اور ہر دیش کا اتہاس ساکشی ہے کہ اس طرح کے آندولن ایک لہر کے دب جانے سے ہمیشہ کے لئے نہیں مرا کرتے—من، بچن اور کرم سے پوری طرح اہنسا تمک رہیں اور وہ لاٹھیاں اور گولیاں برسانے والے پولس والوں کو بھی اپنا بھائی سمجھیں، ان سے لڑنے سے انکار کریں، ان پر وار کرنا تو دور رہا ان کے لئے کوئی برا وچار بھی اپنے من میں نہ آنے دیں تو وجے انت میں ان کے پیر چومے بنا نہیں رہ سکتی ۔ اس طرح دیش کے اندر وہ اس شاسن ہین سماج کے قائم کرنے میں بہت بڑی مدد دینگے جسکی طرف ونوبا جی نے اشارہ کیا ہے ۔ یہی وہ "نیتک اور آرتھک سوراج" ہوگا جس کے لئے مہاتما گاندھی نے انت سمے تک تڑپتے ہوئے اپنے پران دئے ۔

دوسرے پکش کے خاص خاص بھائیوں—شری کنھیالعل منشی، پنڈت گووند ولبھ پنت، شری سمپورنا نند، شری چندر بھان گپتا اور شری آچاریہ جگل کشور سے—جن سب کے ساتھ کام کرنے کا ہمیں سوبھاگیہ مل چکا ہے اور جن سے ہمارے دل میں پریم ہے، ہم بڑی نمرتا کے ساتھ کیول یہ کہنا چاہتے ہیں کہ وہ تھوڑی دیر کے لئے رک کر ٹھنڈے دل سے سوچیں کہ وہ دیش کو کدھر لے جا رہے ہیں اور کدھر لے جانا چاہتے ہیں ۔ کوئی آدمی بھی جو خود اپنے دیش کی نہتی جنتا پر اور دیش کے لڑکوں اور لڑکیوں پر بنا گولیاں برسائے نہیں قابو میں نہیں کر سکتا وہ نہ جن ستا یا لوک ستا جیسے شبد منھ سے نکالنے کا ادھیکاری ہے، نہ دیش پر شاسن کرنے کے قابل ہے ۔

پرانت کے ودیارتھیوں کے اس بار کے آندولن میں دو آدمیوں نے جس طرح اپنے کو سنبھالا یا جس طرح کا حصہ لیا اس کی بھی ہم تعریف کئے بنا نہیں رہ

सकते. एक–सर राजा महाराज सिंह जो ठीक इस समय भी इनसाफ़ और इनसानियत को फिर से क़ायम करने की कोशिशों में लगे हुए हैं और दूसरे-इलाहाबाद का डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट जिसने बर्दाश्त और बुद्धिमत्ता के साथ विद्यार्थियों के जलूस के दिन सारी पुलिस को आम रास्तों या सड़कों पर से हटा लिया. अन्त में हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान हम सब को सुमति दे.

—सुन्दरलाल

यह यादगार कैसी ?

किसी ने कहा है कि जब सिरजनहार की समझ में यह नहीं आया कि एक महापुरुश को उसकी महानता के लिये क्या सजा दी जाय तो उसने यह काम उसके चेलों के सुपुर्द किया. इन चेलों की आम तौर पर यह ख़ूबी रही है कि उस के संदेश की आत्मा की बजाय उसके शब्दों से चिपके रहते हैं. अन्दर की गरी छोड़ कर वह बाहर के छिलके पर ही लट्टू हो जाते हैं. वह लोग अपने को अपने अन्दर के शैतान के हवाले कर अपनी वासनाओं के चक्कर में––अहंकार से भरी, हर दम रंग बदलने वाली खासियत की वासनाएं—बेलगाम घूमा करते हैं. इस तरह यह चेले भोग विलास, आडम्बर और आत्मफ़रेबी की जिन्दगी बिताते हैं. लेकिन बनते हैं अपने गुरु के बताए यम नियम के पंडित और दुनिया के साथ ठेकेदार या पंडा की तरह पेश आते हैं. काफ़ी अरसे तक उन की यह सत्ता बिला रोक टोक चलती है. मगर आख़िरकार इसी पिसी और ज़बान बन्द जनता में से कोई आदमी उठ खड़ा होता है जो अपनी शक्ति से चेलों की हुकूमत मानने से इन्कार करता है. उनको कामयाबी के साथ चुनौती देता है और आम लोगों के अन्दर नई जान और उमंग पैदा कर देता है.

जब से गांधी जी हमारे बीच से बिदा हुए तभी से हम से कहा जाता रहा है कि वह अमर हैं, उनका संदेश हमेशा के लिये है हमारे इतिहास और गाथा में उनका अमिट स्थान है और ईंट पत्थर की निशानियों से परे होने के कारन उन्हें किसी यादगार की ज़रूरत नहीं है. लेकिन फिर भी अठारह लाख रुपये के ख़र्च पर एक यादगार बनने की चर्चा आज देश में चल रही है. हमारे दफ़्तरों और अदालतों में गांधी जी की तसवीर रहती है. अस्पताल, कालिज, संस्थायें, चबूतरे, सड़कें आदि को गांधी का नाम दे दिया गया है. इस काम में दिलचस्पी सिर्फ सरकारी लोगों की ही नहीं ऐसे समझदार सार्वजनिक कार्य कर्ताओं की भी है जिन्होंने गांधी जी के साथ काफ़ी समय बिताया और काम किया है. यह कार्यकर्ता सरकार से ज़ियादातर मामलों में इत्तफ़ाक़ करते हैं और उनका यह भी ख़याल है

سرراجہ مہاراج سنگھ جو ٹھیک اِس سمے بھی انسانیت کو پھر سے قائم کرنے کی کوششوں میں اور دوسرے. الہ آباد کا ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ برداشت اور بدھی متا کے ساتھ ودیارتھیوں کے دن ساری پولس کو عام راستوں یا سڑکوں پر سے ہٹا میں ہم ایشور سے پرارتھنا کرتے ہیں کہ ہے بھگوان سمتی دے.

—سندر لال

یادگار کیسی

نے کہا ہے کہ جب سرجنہار کی سمجھ میں یہ ایک مہاپرش کو اُسکی مہانتا کے لئے کیا سزا تو اُس نے یہ کام اُس کے چیلوں کے سپرد کیا. کی عام طور پر یہ خوبی رہی ہے کہ اُس کے کی آتما کے بجائے اُس کے شبدوں سے چپکے رہتے اندر کی گری چھوڑ کر وہ باہر کے چھلکے پر ہی لٹو ہیں. وہ لوگ اپنے کو اپنے اندر کے شیطان کے حوالے واسناؤں کے چکر میں—اہنکار سے بھری، ہردم بدلنے والی خاصیت کی واسنائیں—بے لگام گھوما اس طرح یہ چیلے بھوگ بلاس، آڈمبر اور آتم کی زندگی بتاتے ہیں. لیکن بنتے ہیں اپنے گرو کے نیم کے پنڈت اور دنیا کے ساتھ ٹھیکیدار یا پنڈا طرح پیش آتے ہیں. کافی عرصے تک اُن کی یہ ستا ٹوک چلتی ہے. مگر آخرکار اِسی پسی اور زبان جنتا میں سے کوئی آدمی اُٹھ کھڑا ہوتا ہے جو اپنی سے چیلوں کی حکومت ماننے سے انکار کرتا ہے، اُن کامیابی کے ساتھ چنوتی دیتا ہے اور عام لوگوں کے اندر جان اور اُمنگ پیدا کردیتا ہے.

جب سے گاندھی جی ہمارے بیچ سے بدا ہوئے تب سے ہم سے کہا جاتا رہا ہے کہ وہ امر ہیں، اُن کا سندیش کے لئے ہے، ہمارے اتہاس اور گاتھا میں اُن کا آمٹ ہے اور اینٹ پتھر کی نشانیوں سے پرے ہونے کے انہیں کسی یادگار کی ضرورت نہیں ہے. لیکن پھر اٹھارہ لاکھ روپئے کے خرچ پر ایک یادگار بننے کی چرچا میں چل رہی ہے. ہمارے دفتروں اور عدالتوں گاندھی جی کی تصویر رہتی ہے. اسپتال، کالج، چبوترے، سڑکیں آدی کو گاندھی کا نام دے ہے. اِس کام میں دلچسپی صرف سرکاری لوگوں نہیں ایسے سمجھدار سارو جنک کارکرتاؤں کی بھی جنہوں نے گاندھی جی کے ساتھ کافی سمے بتایا کیا ہے. یہ کارکرتا سرکار سے زیادہ تر معاملوں اتفاق کرتے ہیں اور اُن کا یہ بھی خیال ہے

कि सरकार जो कुछ करती है वह गांधी जी के असूलों के अनुसार करती और गांधी मार्ग पर चलती है.

हमारे देश में जो कुछ आज हो रहा है उसकी एक सूरत यह है. इस के ख़िलाफ़ दूसरी सूरत यह है कि हमारे राजपति क़बूल करते हैं कि सरकार गांधी जी के आदर्शों को अमली जामा नहीं पहना सकी और हमारे प्रधान मंत्री क़बूल करते हैं कि सरकारी अफ़सरों और आम जनता के बीच खाई चौड़ी होती जा रही है. दूसरे शब्दों में, गांधी जी की मूर्ति, नाम या तसवीर जगह जगह जमाने में सरकार को जितनी ज़ियादा कामयाबी होती है वह उनके आदर्शों से उतनी ही दूर चली जाती है और जनता से खिंची चली जाती है. यही हालत बनी रही तो एक दिन वह आने वाला है जब हर सरकारी और नीम सरकारी काम से गांधी का नाम इतना पेवस्त हो जायगा कि आने वाली पीढ़ियां अचरज करेंगी कि आया इस तरह का कोई हाड़ मांस का पुतला भी इस ज़मीन पर चलता था उस तरह का नहीं जिसकी तारीफ़ आइन्सटाइन ने की और जिसने अपने देश वासियों की ख़ातिर अपने को धूल में मिला दिया. बल्कि उस तरह का जिसका इज़्हार देश भर में फैली यादगारों और मूर्तियों, तसवीरों से होता है और जिसने अपने को हुक्काम और स्वार्थी हितों में इतना घुला मिला दिया कि वह प्रतिक्रिया, शोशन और काहिली का निशान बन गया.

हम जानना चाहेंगे कि ग़रीब का पैसा बेकार की यादगारों में क्यों ख़र्च किया जा रहा है जबकि उस पैसे को कहीं ज़ियादा कारामद और कारगर दायरों में लगाया जा सकता है. क्या इन यादगारों के हिमायती यह सोचते हैं कि गांधी नाम की सट्टे वाली गद्दियां या पट खोल देंगे जहां गांधी ढंग के सेठ या पंडे रास्ता चलते या दर्शक को मन माना लूटा करेंगे ? या क्या वह यह समझते हैं कि गांधी सिर्फ़ उनकी बपौती है जिनकी तोंद फूली है, जो ज़ोर से चीख़ सकते हैं या जिनके पास अन्तःकरन नाम की चीज़ रहती नहीं ? या क्या वह यह मानते हैं कि समाधि पर फूल चढ़ाने से या यादगार में पूजा करने से गांधी को पटाया जा सकता है ? या क्या वह यह असर जनता पर जमाना चाहते हैं कि सरकार जो कुछ भी करे, जो फ़र्मान भी उसका हो वह 'गांधीवादी' है और इसलिये हर हालत में ही उसकी ताबेदारी की जाए ? आख़िर इस यादगार की मन्शा क्या है ?

अठारह लाख की यादगार चाहने वाले शायद यह नहीं जानते कि वह कुछ हालतों का शिकार हैं जो टाले नहीं टलने वाली हैं. शायद उनमें से कुछ लोग यह कहेंगे कि यह यादगार भारतीय संस्कृति के अनुकूल है. शायद

کہ سرکار جو کچھ کرتی ہے گاندھی جی کے اصولوں کے انوسار کرتی اور گاندھی مارگ پر چلتی ہے۔

ہمارے دیش میں جو کچھ آج ہو رہا ہے اسکی ایک صورت یہ ہے۔ اس کے خلاف دوسری صورت یہ ہے کہ ہمارے راجپتی قبول کرتے ہیں کہ سرکار گاندھی جی کے آدرشوں کو عملی جامہ نہیں پہنا سکی اور ہمارے پردھان منتری قبول کرتے ہیں کہ سرکاری افسروں اور عام جنتا کے بیچ کھائی چوڑی ہوتی جا رہی ہے۔ دوسرے شبدوں میں، گاندھی جی کی مورتی، نام یا تصویر جگہ جگہ جمانے میں سرکار کو جتنی زیادہ کامیابی ہوتی ہے وہ اُن کے آدرشوں سے اُتنی ہی دور چلی جاتی ہے اور جنتا سے کھنچی چلی جاتی ہے۔ یہی حالت بنی رہی تو ایک دن وہ آنے والا ہے جب ہر سرکاری اور نیم سرکاری کام سے گاندھی کا نام اتنا پیوست ہو جائیگا کہ آنے والی پیڑھیاں اچرج کرینگی کہ آیا اِس طرح کا کوئی ہاڑ ماس کا پتلا بھی اِس زمین پر چلتا تھا۔ اس طرح کا نہیں جس کی تعریف آئنسٹائن نے کی اور جس نے اپنے دیش واسیوں کے خاطر اپنے کو دھول میں ملا دیا۔ بلکہ اُس طرح جسکا اظہار دیش بھر میں پھیلی یادگاروں اور مورتیوں، تصویروں سے ہوتا ہے اور جس نے اپنے کو حکام اور سوارتھی ہتوں میں اتنا گھلا ملا دیا کہ وہ پرتکریا، شوشن اور کاہلی کا نشان بن گیا۔

ہم جاننا چاہیں گے کہ غریب کا پیسہ بیکار کی یادگاروں میں کیوں خرچ کیا جا رہا ہے جب کہ اُس پیسے کو کہیں زیادہ کارآمد اور کارگر دائروں میں لگایا جا سکتا ہے۔ کیا اِن یادگاروں کے حمایتی یہ سوچتے ہیں کہ گاندھی نام کی سٹے والی گدیاں یا پٹ کھول دیں گے جہاں گاندھی ڈھنگ کے سیٹھ یا پنڈے راستہ چلتے یا درشک کو من مانا لوٹا کرینگے؟ یا کیا وہ یہ سمجھتے ہیں کہ گاندھی صرف ان کی بپوتی ہے جن کی توند پھولی ہے، جو زور سے چیخ سکتے ہیں یا جن کے پاس انتہ کرن نام کی چیز رہتی نہیں؟ یا کیا وہ یہ مانتے ہیں کہ سمادھی پر پھول چڑھانے سے یا یادگار میں پوجا کرنے سے گاندھی کو پٹایا جا سکتا ہے؟ یا کیا وہ یہ اثر جنتا پر جمانا چاہتے ہیں کہ سرکار جو کچھ بھی کرے، جو فرمان بھی اُس کا ہو وہ 'گاندھی وادی' ہے اور اِس لئے ہر حالت میں ہی اس کی تابعداری کی جائے؟ آخر اِس یادگار کی منشا کیا ہے؟

اٹھارہ لاکھ کی یادگار چاہنے والے شاید یہ نہیں جانتے کہ وہ کچھ حالتوں کا شکار ہیں جو ٹالے نہیں ٹلنے والی ہیں۔ شاید ان میں سے کچھ لوگ یہ کہینگے کہ یہ یادگار بھارتی سنسکرتی کے انکول ہے۔ شاید

दूसरे कहेंगे कि यह उसी परम्परा का नतीजा है जिसके द्वारा हिन्दुस्तान अपने बड़े बड़े आदमियों को अपनाकर अपनी मिट्टी का हिस्सा बना लेता है. इन लोगों की राय पर फ़ैसला देने का न हमें अधिकार है और न हममें लायक़ी. पर हमारे पास एक कसौटी ज़रूर है जिस पर सब चीज़ें परखी जा सकती हैं. वह यह है कि इस जैसी यादगार से ग़रीबों का भला होता है या नहीं. बिला किसी शक शुबहे के हम कह सकते हैं कि ऐसी यादगारें अपने इस लक्ष्य की तरफ़ हमें एक इंच भी आगे नहीं ले जातीं. इनसे उलटा नुक़सान ही होगा, हमारा ध्यान बहकेगा और हम रास्ता भटक जायेंगे. इसके अलावा, इनसे कुछ ऐसी शक्तियों को बल मिलेगा जो सोलह आना पिछ घसीटू, हानि कारक और जान लेवा हैं. सचमुच वह रास्ते के रोड़े बन कर हमारी तरक़्क़ी रोक लेंगी और उनसे कोई भी रोशनी मिलने की उम्मीद नहीं है.

वक़्त आ गया है कि हिन्दुस्तान का समझदार लोकमत अपनी ज़ोरदार आवाज़ इन बांझ और बंजर यादगारों के ख़िलाफ़ उठाये. अगर यादगारें और खम्बे बुद्ध और 'बुद्ध धर्म' को हिन्दुस्तान में नहीं ठहरा सके तो गांधी और 'गांधीवाद' को तो वह हरगिज़ नहीं बचा सकेंगे. बेहतर यह है कि यादगारों की बजाए हमारी रोज़ाना ज़िन्दगी ही ख़ुद बता दे कि हम क्या हैं. हम एक नौजवान, जानदार और आज़ाद हिन्दुस्तान की औलाद हैं, हमें चाहिये कि गांधी के शब्दों पर चिपके रहने के बजाय उनके मतलब पर जायें और गहराई, दूरंदेशी व बुलन्दी के साथ अपना काम करें और अपने प्यारे आदर्शों के मुताबिक़ इस देश की फिर से रचना करें. हम इतिहास को यह कहने का मौक़ा न दें कि गांधी को शरीर छोड़े छै साल भी न बीते थे कि हम इस कतर-ब्योंत में लग गए कि कैसे गांधी के आदर्श या उसकी आत्मा को झुलसा दें या नेस्त-नाबूद कर दें.

13. 11. 53 —सुरेश रामभाई

केक, क्रिकेट और कालर

आजकल नई दिल्ली में आए दिन प्रान्तों के मिनिस्ट्रों के सम्मेलन हुआ करते हैं जिनमें चाय पानी और व्याख्यानों की धूम रहती है. डेढ़ दो दिन के यह तमाशे आये और चले गए, जन साधारन या देहाती तक न यह पहुंचते हैं और न वह लोग इसकी चिन्ता ही करते हैं. लेकिन 24 सितम्बर को जो खेती मिनिस्ट्रों का सम्मेलन हुआ वह इस बारे में अनोखा था. उसका श्रीगनेश प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया. उन्होंने उसमें जो भाशन दिया वह बहुत ही लाजवाब और अनोखा था. पंडित जवाहरलाल

...کہیںگے کہ یہ اسی پرمپرا کا نتیجہ ہے جس کے دوارا ...ستان اپنے بڑے بڑے آدمیوں کو اپنا کر اپنی مٹی کا حصہ ...لیتا ہے. ان لوگوں کی رائے پر فیصلہ دینے کا نہ ہمیں ...کار ہے اور نہ ہم میں لائقی. پر ہمارے پاس ایک ...ضرور ہے جس پر سب چیزیں پرکھی جا سکتی ہیں. ...یہ ہے کہ اس جیسی یادگار سے غریبوں کا بھلا ہوتا ہے ...ہیں. بلا کسی شک شبہے کے ہم کہہ سکتے ہیں کہ ایسی ...ریں اپنے اس لکش کی طرف ہمیں ایک انچ بھی ...نہیں لے جاتیں. ان سے الٹا نقصان ہی ہوگا. ہمارا ...بہکے گا اور ہم راستہ بھٹک جائیںگے. اس کے علاوہ ...کچھ ایسی شکتیوں کو بل ملیگا جو سولہ آنے پچھ گھسیٹو ...کارک اور جان لیوا ہیں. سچ مچ وہ راستے کے روڑے ...ہماری ترقی روک لینگی اور ان سے کوئی بھی ...نی ملنے کی امید ہے.

...وقت آگیا ہے کہ ہندستان کا سمجھدار لوک مت ...زوردار آواز ان بانجھ اور بنجر یادگاروں کے خلاف ...ے. اگر یادگاریں اور کھمبے بدھ اور 'بدھ دھرم' کو ...ستان میں نہیں ٹھہرا سکے تو گاندھی اور 'گاندھی واد' ...وہ ہرگز نہیں بچا سکیں گے. بہتر یہ ہے کہ یادگاروں ...بجائے ہماری روزانہ زندگی ہی خود بتا دے کی ہم ...ہیں. ہم ایک نوجوان' جاندار اور آزاد ہندستان کی ...ہیں' ہمیں چاہئیے کہ گاندھی کے شبدوں پر چپکے ...کے بجائے ان کے مطلب پر جائیں اور گہرائی' دور ...ی اور بلندی کے ساتھ اپنا کام کریں اور پیار سے ...وں کے مطابق اس دیش کی پھر سے رچنا کریں. ...اتہاس کو یہ کہنے کا موقعہ نہ دیں کہ گاندھی کو شریر ...ڑے چھ سال بھی نہ بیتے تھے کہ ہم اس کتر ...ت میں لگ گئے کہ کیسے گاندھی کے آدرش یا اس ...آتما کو جھلسا دیں یا نیست نابود کردیں.

13. 11. ... —سریش رام بھائی

...یک' کرکیٹ اور کالر

آجکل نئی دلی میں آئے پرانتوں کے منسٹروں ...سمیلن ہوا کرتے ہیں جن میں چائے پانی اور ویاکھیانوں ...دھوم رہتی ہے. ڈیڑھ دو دن کے یہ تماشے آئے اور چلے ...جن سادھارن یا دیہاتی تک نہ یہ پہونچتے ہیں اور ...لوگ اس کی چنتا ہی کرتے ہیں. لیکن 28 ستمبر ...کھیتی منسٹروں کا سمیلن ہوا وہ اس بارے میں ...تھا. اس کا شری گنیش پردھان منتری پنڈت ...لال نہرو نے کیا. انہوں نے اس میں جو بھاشن ...بہت ہی لاجواب اور انوکھا تھا. پنڈت جواہر لال

ने अपने व्याख्यान में अपने दिल की कसक और देश की मौजूदा हालत को साफ़ साफ़ सामने रख दिया.

पंडित जी के भाशन के कुछ खास हिस्से यह हैं :—

1. मिनिस्ट्रों या अफ़सरों की तक़रीरों से देश की तरक़्क़ी नहीं नापी जा सकती.

2. इस तरह के सम्मेलन करके और परचे छाप कर यह कोशिश की जाती है कि किसान लोग खेती के ज़ियादा बेहतर तरीक़े सीख जाएं. लेकिन यह मज़ाक़ नहीं तो क्या है? काम करने के इस ढंग पर मैं जितना ज़्यादा विचार करता हूं उतना ही दंग रह जाता हूं क्योंकि इस नक़्शे में आम अदमी—जिसका हित करना है—कहीं आता ही नहीं.

3. आज साधारन आदमी और अफ़सरों के बीच एक बहुत बड़ी खाई है. अफ़सर लोग साधारन आदमी की भाशा नहीं बोलते जिसके कारन अपनी खोजों और मेहनत के नतीजे वह आम आदमी तक नहीं पहुंचा पाते.

4. जात पात के कारन हिन्दुस्तान तबाह हो गया. पर आज हमारे मुल्क में एक 'नई जात' पैदा हो गई है जिसके लोग टोप, नैकटाई और कालर लगाते हैं.

हिन्दुस्तान में शायद ही कोई स्त्री पुरुश ऐसा होगा जो प्रधान मंत्री के इन अनमोल वचनों का समर्थन न करेगा. पंडित जवाहरलाल ने यह बातें कह कर गली या नगर के रास्ता चलते लोगों के दिल की आवाज़ को सामने रख दिया है. आज छै बरस से ऊपर हुए जब राश्ट्र की बाग-डोर पंडित जी के हाथों में आई. लेकिन ऐसा होने पर भी साधारन जन और अफ़सर के बीच एक चौड़ी 'खाई' खड़ी हो गई और आम जनता से अलग रहने वाली एक 'नई जात' पैदा हो गई. सचमुच यह बात दुख और चिन्ता की बात है देश की हालत में कहीं न कहीं ज़रूर कुछ दोश होना चाहिये जिस के कारन यह भयानक और ख़तरनाक सूरत पैदा हो गई है.

थोड़ा विचार करने पर इसकी जड़ तक पहुंचा जा सकता है. बहुत आदर से हमारा निवेदन है कि इस 'खाई' और 'नई जात' के लिये अगर कोई एक आदमी सब से जियादा ज़िम्मेदार है तो वह हमारे प्रधान मंत्री हैं. उनका लालन पालन एक मालदार घराने में एक अंगरेज़ के ट्यूटर की देख रेख में हुआ. उनकी तालीम इंगलैंड के स्कूलों और वहां की एक यूनीवर्सिटी में हुई. इस कारन वह अंगरेज़ी रहन सहन और अंगरेज़ी जीवन के बेहतरीन प्रतिनिधि हैं. अंगरेज़ी राज के वह कट्टर दुश्मन रहे पर अंगरेज़ी परम्परा या कलचर की वेदी पर उन्होंने सदा उपासना की है. जन साधारन की भाशा में, जवाहरलाल अंगरेज़ी राज से नफ़रत करते थे मगर अंगरेज़ियत के सोलह आने भक्त हैं. यही कारन है कि अपने प्रधानमंत्री राज के छै बरस में उन्होंने अंगरेज़ों

نے اپنے وکھیان میں اپنے دل کی کسک اور دیش کی موجودہ حالت کو صاف صاف سامنے رکھدیا ۔

پنڈت جی کے بھاشن کے کچھ خاص حصے یہ ہیں :—

1. منسٹروں یا افسروں کی تقریروں سے دیش کی ترقی نہیں ناپی جاسکتی ۔

2. اِس طرح کے سمیلن کرکے اور پرچے چھاپ کر یہ کوشش کی جاتی ہے کہ کسان لوگ کھیتی کے زیادہ بہتر طریقے سیکھ جائیں ۔ لیکن یہ مذاق نہیں تو کیا ہے ؟ کام کرنے کے اِس ڈھنگ پر میں جتنا زیادہ وچارکرتا ہوں اُتنا ہی دنگ رہ جاتا ہوں' کیونکہ اِس نقشہ میں عام آدمی — جس کا ہت کرنا ہے ۔ کہیں آتا ہی نہیں ۔

3. آج سادھارن آدمی اور افسروں کے بیچ ایک بہت بڑی کھائی ہے ۔ افسر لوگ سادھارن آدمی کی بھاشا نہیں بولتے جس کے کارن اپنی کھوجوں اور محنت کے نتیجے عام آدمی تک نہیں پہونچا پاتے ۔

4. جات پات کے کارن ہندستان تباہ ہوگیا پر آج ہمارے ملک میں ایک 'نئی جات' پیدا ہوگئی ہے جس کے لوگ 'ٹوپ' نیکٹائی اور کالر لگاتے ہیں ۔

ہندستان میں شاید ہی کوئی اِستری پروش ایسا ہوگا جو پردھان منتری کے ان انمول وچنوں کا سمرتھن نہ کریگا ۔ پنڈت جواہر لال نے یہ باتیں کہکر گلی یا نگر کے راستہ چلتے لوگوں کے دل کی آواز کو سامنے رکھدیا ہے ۔ آج چھ برس سے اوپر ہوئے جب راشٹر کی باگ ڈور پنڈت جی کے ہاتھوں میں آئی ۔ لیکن ایسا ہونے پر بھی سادھارن جن اور افسر کے بیچ ایک چوڑی 'کھائی' کھڑی ہوگئی اور عام جنتا سے الگ رہنے والی ایک 'نئی جات' پیدا ہوگئی ۔ سچ مچ یہ بہت دکھ اور چنتا کی بات ہے ۔ دیش کی حالت میں کہیں نہ کہیں ضرور کچھ دوش ہونا چاہئے جس کے کارن یہ بھیانک اور خطرناک حالت پیدا ہوگئی ہے ۔

تھوڑا وچار کرنے پر اِس کی جڑ تک پہونچا جاسکتا ہے ۔ بہت آدر سے ہمارا نویدن ہے کہ اِس 'کھائی' اور 'نئی جات' کے لئے اگر کوئی ایک آدمی سب سے زیادہ ذمہ دار ہے تو وہ ہمارے پردھان منتری ہیں ۔ اُن کا لالن پالن ایک مالدار گھرانے میں ایک انگریز ٹیوٹر کی دیکھ ریکھ میں ہوا ۔ اُن کی تعلیم اِنگلینڈ کے اِسکولوں اور وہاں کی ایک یونیورسٹی میں ہوئی ۔ اِس کارن وہ انگریزی رہن سہن اور انگریزی جیون کے بہترین پرتی ندھی ہیں ۔ انگریزی راج کے وہ کٹر دشمن رہے پر انگریزی پرمپرا یا کلچر کی ویدی پر اُنہوں نے سدا اُپاسنا کی ہے ۔ جن سادھارن کی بھاشا میں' جواہر لال انگریزی راج سے نفرت کرتے تھے مگر انگریزیت کے سولہ آنے بھکت ہیں ۔ یہی کارن ہے کہ اپنے پردھان منتری کال کے چھ برس میں اُنہوں نے انگریزوں

के जमाये सांचे में कोई तबदीली नहीं होने दी. यही कारन है कि आज के भारत में राजकाज, ब्योपार, फौज, कारखाने तालीम, क़ानून वग़ैरा का इन्तज़ाम वही है जो अंगरेज़ों ने क़ायम किया था. यही कारन है कि आज हमारे देश में बिदेशी आर्थिक स्वार्थ कहीं ज़ियादा गहरे और चौड़े पैठ गए हैं. विदेशियों को पूंजी और उससे उन्हें मुनाफ़ा पहले से कहीं बढ़ गए हैं. कोई यह न समझे कि जवाहरलाल को जन साधारन से प्रेम नहीं है या देश की चाह नहीं है. लेकिन यह क़ुदरती बात है कि वह जो कुछ करेंगे सो अपने ही ढंग से करेंगे. और उनके ढंग का निचोड़ एक शब्द में आता है—अंगरेज़ियत. इसी का नतीजा है कि अंगरेज़ियत के नशे में चूर एक बिरादरी बन गई है जिसे टोप, टाई और कालर के बिना चैन नहीं पड़ता.

क्या दिन में, क्या रात में, जो कुछ देश में होता दीखता है उससे हमारी इस बात का समर्थन होता है. दूर की चर्चा छोड़ें, अभी हाल ही में, 15 अगस्त को नई दिल्ली में क्या हुआ ? पंडित जवाहर लाल ने तलवार से आज़ादी की केक को काटा. भला साधारन आदमी को सपने में भी आज़ादी इस ढंग से मनाने का ख़याल आ सकता है ? क्या कोई और बदतर विलायती तरीक़ा आज़ादी मनाने का हो सकता है ? दूसरी घटना—सितम्बर के महीने में एक क्रिकेट मैच खेला गया जिसमें एक तरफ़ प्रधान मंत्री की टीम थी और दूसरी तरफ़ वाइस प्रेसीडेन्ट की. सिवाय ब्रिटेन के और कहीं भी इस तरीक़े के स्वांग नहीं किये जाते. इसी वजह से इसकी दाद अगर दी तो संसार भर में केवल एक अख़बार, लन्दन के 'टाइम्स' ने. उसने लिखा :—

"यह बात सारी दुनिया की समझ में भले ही न आये लेकिन ब्रिटेन वासी और भारत वासी इस पर फूले न समाते होंगे."

हर ब्रिटेन वासी ज़रूर इसे समझेगा और ख़ुश होगा. लेकिन हर भारत वासी हरगिज़ नहीं, सिर्फ़ उन भारत वासियों को छोड़ कर जिन्होंने अपने को अंगरेज़ियत के सांचे में ढाल लिया है और जिनके ख़ास नमूने पंडित जवाहर लाल हैं. ऐसे भारत वासियों के लिये केक या क्रिकेट में ही ज़िन्दगी का मज़ा है और यह मज़ा बिना कालर के नहीं मिलता. नई दिल्ली की किसी दावत को देखिये—मालूम होगा इंगलैन्ड के साहब और मेमें शेरवानी और साड़ी पहन कर मौजूद हो गये हैं. उनका लहजा, उनकी अदा, उनके हाव भाव ठेठ विलायती. इसलिये जब देश में केक और क्रिकेट की तूती बोल रही हो तो अफ़सरों को टोप, टाई और कालर लगाने पर टोकना सख़्त ज़ियादती है, उनके साथ अन्याय है. आख़िर यह साज़

سانچے میں کوئی تبدیلی نہیں ہونے دی ۔
کارن ہے کہ آج کے بھارت میں راج کاج، بیوپار، فوج
تعلیم، قانون وغیرہ کا انتظام وہی ہے جو انگریزوں
قائم کیا تھا. یہی کارن ہے کہ آج ہمارے دیش میں
آرتھک سوارتھ کہیں زیادہ گہرے اور چوڑے پیٹھ
ودیشیوں کی پونجی اور اس سے انہیں منافع
کہیں بڑھ گئے ہیں. کوئی یہ نہ سمجھے کہ
لال کو جن سادھارن سے پریم نہیں ہے یا دیش کی
نہیں ہے . لیکن یہ قدرتی بات ہے کہ وہ جو کچھ
سو اپنے ہی ڈھنگ سے کریں گے' اور اُن کے ڈھنگ
ایک شبد میں آتا ہے—انگریزیت. اِسی کا نتیجہ
انگریزیت کے نشے میں چور ایک برادری بن گئی
ٹوپ، ٹائی اور کالر کے بنا چین نہیں پڑتا ۔

دن میں' کیا رات میں' جو کچھ دیش میں
دیکھتا ہے اُس سے ہماری اِس بات کا سمرتھن ہوتا
کی چرچا چھوڑیں' ابھی حال ہی میں' 15 اگست
دلی میں کیا ہوا ؟ پنڈت جواہر لعل نے تلوار
آزادی کی کیک کو کاٹا . بھلا سادھارن آدمی کو سپنے
بھی آزادی اِس ڈھنگ سے منانے کا خیال آ سکتا
کیا کوئی اور بدتر ولایتی طریقہ آزادی منانے کا ہو
ہے ؟ دوسری گھٹنا—ستمبر کے مہینے میں ایک
میچ کھیلا گیا جس میں ایک طرف پردھان منتری
ٹیم تھی اور دوسری طرف وائس پریسیڈینٹ کی.
برٹین کے اور کہیں بھی اِس طریقے کے سوانگ نہیں
جاتے. اس وجہ سے اِسکی داد اگر دی تو سنسار بھر
ایک اخبار' لندن کے 'ٹائمس' نے . اُس نے
لکھا :—

"یہ بات ساری دنیا کے سمجھ میں بھلے ہی نہ
لیکن برٹین واسی اور بھارت واسی اِس پر پھولے نہ
سماتے ہونگے ."

ہر برٹین واسی ضرور اِسے سمجھے گا اور خوش ہوگا
لیکن ہر بھارت واسی ہرگز نہیں'—صرف اُن بھارت
واسیوں کو چھوڑ کر جنھوں نے اپنے کو انگریزیت کے سانچے
میں ڈھال لیا ہے اور جن کے خاص نمونے پنڈت جواہر
لعل ہیں. ایسے بھارت واسیوں کے لئے کیک یا کریکٹ
میں ہی زندگی کا مزا ہے اور یہ مزا بنا کالر کے نہیں
ملتا. نئی دلی کی کسی دعوت کو دیکھئے معلوم ہوگا
انگلینڈ کے صاحب اور میمیں شیروانی اور ساڑی
پہن کر موجود ہوگئے ہیں. اُن کا لہجہ' اُن کی ادا' اُن
کے ہاؤ بھاؤ ٹھیٹ ولایتی. اس لئے جب دیش میں
کیک اور کریکٹ کی طوطی بول رہی ہو
تو افسروں کو ٹوپ ٹائی اور کالر لگانے پر ٹوکنا سخت
زیادتی ہے' اُن کے ساتھ انیائے ہے. آخر یہ ساز

सामान कहां से आता है ?---पंडित नेहरू के मिनिस्टर ही इन्हें विदेशों से 'देश के हित में' (!) मंगाते हैं और मंगा रहे हैं! 'कनज़्यूमर गुड्स' (आए दिन बरतने की चीज़ों) के नाम से करोड़ों रुपये के टोप, टाई, कालर, तेल, साबुन, मंजन इतर, पालिश वग़ैरा वग़ैरा विदेशों से आ रहे हैं. जब आते हैं तो ख़र्च होने के लिये. अब साधारन आदमी के पास न तो पैसा और न शौक़ कि इन्हें ख़रीदे. इसलिये बेचारे अफ़सर को ही यह ख़रीदने पड़ते हैं क्योंकि बिने कालर के वह केक या क्रिकेट के रस्म में ठीक ठीक कैसे शरीक हो सकता है ?

प्रधान मंत्री की 28 सितम्बर की स्पीच से साफ़ पता चलता है कि आज के हाकिम या पढ़े लिखे के दिल और दिमाग़ में कैसी भयंकर टक्कर हो रही है. दिल कहता है पूरब को चलो तो दिमाग़ कहता है पच्छिम को. इसका नतीजा है दिल और दिमाग़ का एक दूसरे से कटते चला जाना. ऐसी हालत में अगर अफ़सर और जन साधारन के बीच 'खाई' बन जाए या एक 'नई जात' खड़ी हो जाए तो कौन ताज्जुब है. 'खाई' दिन दिन बढ़ेगी और 'नई जात' भी फैलेगी. अगर यही रूप कुछ अरसे तक क़ायम रहा तो हमारा बस भगवान ही मालिक है.

लेकिन इस अंधेरे में उजाले की एक किरन भी नज़र आती है. प्रधान मंत्री की टीम में विरोधी दल के नेता श्री ए. के. गोपालन भी थे जो कम्यूनिस्ट पार्टी के मेम्बर हैं. क्या हम यह विश्वास करें कि यह दोनों और इसी तरह दूसरे दल वाले भी सच्चे जन हित के, ठोस और स्थायी कामों के लिये एक साथ मिलकर इस देश की डूबती नाव को बचाने की कोशिश करेंगे ? हाल ही में जब भारत से सरकारी डेलीगेशन चीन गया था तो उसकी नेता, श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित से चीन के प्रधान, माओत्से तुंग ने कहा था, "रचना के लिये हम सब को मिल जाना चाहिये, शान्ति के लिये हम सब को मिल जाना चाहिये." सिरजनहार से हमारी बिनती है कि वह हमें यह हिम्मत और ताक़त दे कि हम केक, क्रिकेट और कालर के माया जाल से निकलें और समझ के साथ तामीर करें एक सुखी भारत की, एक नये एशिया की और एक शान्तिमय दुनिया की.

12.11.53

—सुरेश रामभाई

سامان کہاں سے آتا ہے؟—پنڈت نہرو کے منسٹر ہی انہیں ودیشوں سے 'دیش کے ہت میں' (!) منگاتے ہیں اور منگا رہے ہیں! 'کنزیومرس گڈس' (آئے دن برتنے کی چیزوں) کے نام سے کروڑوں کے ٹوپ، ٹائی، کالر، تیل، صابن، منجن، عطر، پالش وغیرہ وغیرہ ودیشوں سے آ رہے ہیں. جب آتے ہیں تو خرچ ہونے کے لئے. اب سادھارن آدمی کے پاس نہ پیسہ اور نہ شوق کہ انہیں خریدے. اس لئے بیچارے افسر کو ہی یہ خریدنے پڑتے ہیں کیوں کہ بنا کالر کے وہ کیک یا کریکٹ کے رسم میں ٹھیک ٹھیک کیسے شریک ہوسکتا ہے؟

پردھان منتری کے 28 ستمبر کی اسپیچ سے صاف صاف پتہ چلتا کہ آج کے حاکم یا پڑھے لکھے کے دل اور دماغ میں کیسی بھیانک ٹکر ہو رہی ہے. دل کہتا ہے پورب کو چلو تو دماغ کہتا ہے پچھم کو. اسی کا نتیجہ ہے دل اور دماغ کا ایک دوسرے سے کٹتے چلے جانا. ایسی حالت میں اگر افسر اور جن سادھارن کے بیچ 'کھائی' بن جائے یا ایک 'نئی جات' کھڑی ہو جائے تو کون تعجب ہے. 'کھائی' دن دن بڑھے گی. اور نئی بات بھی پھیلے گی. اگر یہی روپ کچھ عرصے تک قائم رہا تو ہمارا بس بھگوان ہی مالک ہے.

لیکن اس اندھیرے میں اُجالے کی ایک کرن بھی نظر آتی ہے' پردھان منتری کی ٹیم میں ورودھی دل کے نیتا شری اے. کے. گوپالن بھی تھے جو کمیونسٹ کے ممبر ہیں. کیا ہم یہ وشواس کریں کہ یہ دونوں اور اسی طرح دوسرے دل کے والے بھی سچے جن ہت کے، ٹھوس اور استھائی کاموں کے لئے ایک ساتھ مل کر اس دیش کی ڈوبتی ناؤ کو بچانے کی کوشش کریں گے؟ حال ہی میں جب بھارت سے سرکاری ڈیلیگیشن چین گیا تھا تھا تو اسکی نیتا، شریمتی وجے لکشمی پنڈت سے چین کے پردھان، ماؤتسے تنگ نے کہا تھا " رچنا کے لئے ہم سب کو مل جانا چاہئے، شانتی کے لئے ہم سب کو مل جانا چاہئے." پا جن ہار سے ہماری بنتی ہے کہ وہ ہمیں یہ ہمت اور طاقت دیں کہ ہم کیک، کریکٹ اور کالر کے مایا جال سے نکلیں اور سمجھ کے ساتھ تعمیر کریں ایک سکھی بھارت کی، ایک نئے ایشیا کی اور ایک شانتی مے دنیا کی.

—سریش رام بھائی

12 . 11 . '53

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی. پوری جانکاری کے لئے لکھئے.

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا. 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندلال دوارا مول انگریزی سے انوّادت.

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے. بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے.

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز. لگ بھگ چار سو پنّے. کپڑے کی سندر جلد. قیمت کیول ساڑھے سات روپئے.

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا.

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے.

سندر جلد. اچھا کاغذ. دو سو صفحے. قیمت دو روپیہ.

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام‌بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے. اس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اس کا مقصد کیا ہے.

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا. یہ دوسرا ایڈیشن ہے. صفحے 25. دام کیول دو آنے.

ملنے کا پتہ—
مینیجر، 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد.

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

'महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आंखों देखा वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذھبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج اِلہ آباد

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک — شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو ... نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اُردو شاعری ... بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے، اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی۔

"اِن کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... ... میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور ... ساہتیہ کے آدھنک دور میں اَدتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

"جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر ... ہیں۔"

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

"جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ... یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں۔"

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

"ہندی کے پاٹھک اِسنیہہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا ... اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے، یہ نشچت ہے۔"

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

"ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی، تازگی اور سوتر ... قائل ہیں۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... ... ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے۔ کہیں کہیں تو ... ہندی ہے۔"

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

"جھنکار کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا ... بول چال کے نکٹ ہے۔" —'نیا سماج' کلکتہ

... لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ ... نہیں نکلا۔ سندر جلد، بڑھیا کاغذ۔ عمدہ ... دام صرف تین روپیہ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ ... پر پچاس فیصدی کمیشن۔

... 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الہ آباد۔

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 45, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں.

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے. 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے.

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک--شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا جا سکتا ہے.

پھنتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے.

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے. قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے.

ملنے کا پتہ—
منیجر، نیا ہند، 145، مٹھی گنج، الٰہ آباد.

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें

یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں .

	नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک
1.	शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی
2.	शेर ओ सुख़न	,,	8	0	0	,,
3.	गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,
4.	हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی
5.	संस्मरण	,,	3	0	0	,,
6.	दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین
7.	ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین
8.	पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی
9.	पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے
10.	आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنھیالال مشر پربھاکر
11.	मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے
12.	मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن
13.	रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما
14.	मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا
15.	विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا
16.	भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'
17.	भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,
18.	नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,
19.	साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,
20.	भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन	,,	1	4	0	,,
21.	सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,
22.	हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے
23.	अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے . ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا
24.	नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے
25.	राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے
26.	जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین
27.	मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,
28.	सलौना सच	,,	0	8	0	,,
29.	मेरे साथी	,,	1	0	0	,,

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

'145 مٹھی گنج' الہ آباد-3.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

क़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना र प्रचार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों रा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में पस का मेल बढ़ाना.

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; स प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; टरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद ान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम पालीवाल.

म्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

ोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी स सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से ी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛
وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔
گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛
سکریٹری — پنڈت سندر لال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے ۔

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है,

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्बरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है. इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़ियानूसी और फ़िरका परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई कागज पर छपी. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

...تاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا.
...س کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا.
...یڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ
...مکن ہوسکا ہے.

...یڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے
...گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی
...اور سجھاوؤں سے اِس میں فائدہ اُٹھایا گیا ہے.
...کی خاص بات یہ ہے کہ اِس کتاب کے شروع میں
...مبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار
...آمکھ لکھا ہے.

...تاب سے اِسلام کی اصلی تعلیم اور اُس کے
...صولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت
...کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی--ایک
...گی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون
...کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اِس سے پتہ چلیگا
...طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے
...اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ
...دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو

...یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی
...مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اِس سے فائدہ اُٹھائینگے.

...جلد، بڑھیا ڈبل ڈِمائی کاغذ پر چھپی 160
...کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام
...روپیہ.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

...نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

नया हिन्द نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर – सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

* * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख

★ नेपाल में अमरीकी साज़िश—परमानन्द सिंह 'मदन'

★ हम एक हैं (कहानी)—भारत भूषण सुरपाल

★ हमारे सीखदाता —डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा

★ क़ुरान और सच्ची लोकशाही–मंज़र अली सोख़्ता

اس نمبر کے خاص لیکھ

★ نیپال میں امریکی سازش—پرمانند سنگھ 'مدن'

★ ہم ایک ہیں (کہانی)—بھارت بھوشن سرپال

★ ہمارے سیکھ داتا—ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا

★ قرآن اور سچی لوک شاہی—منظرعلی سوختہ

हमारी राय

★ विद्यार्थी आन्दोलन और श्री के. एम. मुंशी—सुन्दर लाल

★ हमारे बुनकर, मिलें और सरकार – सुरेश रामभाई

★ हमारे अमरीकी मेहमान—सुरेश रामभाई

ہماری رائے

★ ودیارتھی آندولن اور شری کے. ایم. منشی—سندر لال

★ ہمارے بنکر، ملیں اور سرکار—سریش رام بھائی

★ ہمارے امریکی مہمان—سریش رام بھائی

...तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

...ندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

दिसम्बर 1953 دسمبر

क़ीमत दस आना

"नया हिन्द"

"نیا ہند"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

दिसम्बर 1953 دسمبر

क्या किससे — सफ़ा صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द 15 | दिसम्बर, सन '53 | नम्बर 6

نمبر 6 | دسمبر، سن '53 | جلد 15

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

बापू महान

(गुनवंत मेहता)

[यह छोटी सी कविता एक ऐसे होनहार कवि की है जिसकी मातृ भाषा हिन्दुस्तानी नहीं है. इस लिये हम इसे बड़े शौक़ से छाप रहे हैं--एडीटर]

जय जय प्यारे बापू महान !
बुद्ध, ईसा की सूरत, शान
भारत मुक्ती का तू गान !--जय जय...

आज़ादी का तू अफ़साना
दया देवी का गोद-खिलौना
सत्य, क्षमा का तू परवाना
आला अहिंसा का नज़राना

हिल मिल...हिल मिल...गायें हम सब गुन तेरे ही महान
ओ आला धरती के इनसान !
निराली कैसी तेरी शान !—जय जय...

मानवता का तू मतवाला
और अभयता के दिल वाला
भारत भूमि का रखवाला
सत्य जगत; का तू उजियाला

झिलमिल...झिलमिल...झलझला उठे तेरी दीप मीनार
हर कश्ती का तू पतवार !
तेरा मंगल रूप निशान !--जय जय...

باپو مہان

(گنونت مہتا)

[یہ چھوٹی سی کویتا ایک ایسے ہونہار کوی کی ہے جسکی ماتر بھاشا ہندستانی نہیں ہے . اس لئے ہم اسے بڑے شوق سے چھاپ رہے ہیں—ایڈیٹر]

جے جے پیارے باپو مہان !
بدھ، عیسیٰ کی صورت، شان
بھارت مکتی کا تو گان—جے جے...

آزادی کا تو افسانا
دیا دیوی کا گود کھلونا
ستیہ، شما کا تو پروانا
عالی اہنسا کا نظرانا

ہل مل.. ہل مل... گائیں ہم سب گن تیرے ہی مہان
او عالی دھرتی کے انسان
نرالی تیری کیسی شان ! —جے جے...

مانوتا کا تو متوالا
اور ابھیتا کے دل والا
بھارت بھومی کا رکھوالا
ستیہ جگت کا تو اُجیالا

جھل مل... جھل مل... جھلجھلا اٹھے تیری دیپ مینار
ہر کشتی کا تو پتوار
تیرا منگل [illegible] نشان ! — جے جے...

हर मजहब का तू मस्ताना
हर होठों पे तेरा तराना
प्यार उमड़ता तू पैमाना
दसों दिशा का तू ही निशाना

हर दम...हर दिन...बढ़ती जाये तेरी मंद मुसकान
ओ बापू! भारत के अरमान
तेरा बेनमून है दान !--जय जय...

हिमालय का हृदय है तू
गंगा यमुना का संगम तू
भारत की हर धड़कन है तू
भारत की तड़पान

पल पल......हर पल......आहें भरते हम हर सुबह शाम
बता दे हम को अपना धाम
तड़पती राम नाम की तान !—जय जय...

दुबला पतला फिर भी तवाना
सीधा सादा और सयाना
हिन्दू मुसलमां तेरे नयना
हंसते नयना......रोते नयना

छम छम......छम छम.......नीर बहाये आंखें हुईं वीरान
मचायें दिल में बड़े तूफ़ान
दिलायें ग़म की सज़ा अनजान !—जय जय...

बीत गई कैसी रात तूफ़ानी
चमक गई तेरी शक्ति रूहानी
भारती तुझ बिन हुई दीवानी
तुझ सा रहा न दूजा सुख खानी

झम झम......झम झम......लहरें नाचें नाव रुकी मंझधार
छाया नभ में घन अंध्यार
गंवाया हमने खेवनहार !—जय जय...

दर्दभरी तेरी जीवन कहानी
होगी एक दिन सब की ज़बानी
मृत्यु तेरी है मरदानी
जिन्दगी तेरी है जौलानी

जग मग......जग मग......चांद सितारे सूरज भी गुलतान
हंस हंस कर होते क़ुरबान
बढ़ायें निश दिन तेरी आन !—जय जय...

ہر مذہب کا تو مستانا
ہر ہونٹھوں پہ تیرا ترانا
پیار امڑتا تو پیمانا
دسوں دشا کا تو ہی نشانا

ہر دم...ہر دن...بڑھتی جائے تیری مند مسکان
او باپو! بھارت کے ارمان
تیرا بے نمون ہے دان !—جے جے...

ہمالیہ کا ہردے ہے تو
گنگا جمنا کا سنگم تو
بھارت کی ہر دھڑکن ہے تو
بھارت کی تڑپان

پل پل...ہر پل...آہیں بھرتے ہم ہر صبح شام
بتا دے ہم کو اپنا دھام
تڑپتی رام نام کی تان !—جے جے...

دبلا پتلا پھر بھی توانا
سیدھا سادا اور سیانا
ہندو مسلماں تیرے نینا
ہنستے نینا...روتے نینا

چھم چھم...چھم چھم...نیر بہائیں آنکھیں ہوئی ویران
مچائیں دل میں بڑے طوفان
دلائیں غم کی سزا انجان !—جے جے...

بیت گئی کیسی رات طوفانی
چمک گئی تیری شکتی روحانی
بھارتی تجھ بن ہوئی دیوانی
تجھ سا رہا نہ دوجا سکھ کھانی

جھم جھم...جھم جھم...لہریں ناچیں ناؤ رکی منجدھار
چھایا نبھ میں گھن اندھیار
گنوایا ہم نے کھیون ہار !—جے جے...

درد بھری تیری جیون کہانی
ہوگی ایک دن سب کو زبانی
مرتیو تیری ہے مردانی
زندگی تیری ہے جولانی

جگ مگ...جگ مگ...چاند ستارے سورج بھی غلطان
ہنس ہنس کر ہوتے قربان
بڑھائیں نس دن تیری آن !—جے جے...

ख़ुदी को मिटाना ख़ुदा को जानना है

(डाक्टर भगवान दास)

जिस तरह ज्ञान यानी मारफ़त की राह में इसी तरह भक्ति यानी इश्क़ की राह में भी एक बहुत बड़ा ख़तरा है. ख़तरा यह है कि आदमी अपने अन्दर के ख़ुदा को ख़ुदी से अलग नहीं कर पाता, यहां तक कि वह अकसर ख़ुदी को ही ख़ुदा समझ बैठता है. किसी एक आदमी या देवी देवता के प्रेम को वह पूरी ईश्वर भक्ति समझ लेता है. इश्क़े मजाज़ी को वह इश्क़े हक़ीक़ी मान बैठता है. काम और राग एक तरह की चीज़ें हैं. प्रेम और भक्ति दूसरी तरह की. इनके फ़रक़ को ठीक ठीक समझ सकना कभी कभी बहुत कठिन हो जाता है. सूफ़ी लोग आदमी के अन्दर पांच तरह का नफ़्स यानी आपा मानते हैं. एक—'नफ़्से लव्वामा' यानी आदमी के आपे का वह पहलू जो उसे बुराई से आगाह करता रहता है. दूसरे—'नफ़्से मुतमइन्ना' यानी वह नफ़्स जिसने इतमिनान, सकून यानी शान्ति हासिल कर ली है. तीसरे—'नफ़्से मुलहिमा' यानी वह नफ़्स जिसे ईश्वर से इलहाम यानी प्रतिभा हासिल होती है. चौथे—'नफ़्से रहमानी' यानी वह नफ़्स जिसमें अल्लाह की तरह रहम या दया भर जाती है. पांचवें—'नफ़्से अम्मारा' यानी वह नफ़्स जो इस दुनिया के खेल कूद, ऐश आराम में फंसा हुआ है.

संस्कृत में नफ़्स का तरजुमा 'चित्तम' भी किया जा सकता है. इस तरह नफ़्से लव्वामा हुआ निषेध चित्तम. नफ़्से मुतमइन्ना हुआ प्रशम चित्तम. नफ़्से मुलहिमा हुआ प्रतिभा चित्तम या योग चित्तम. नफ़्से रहमानी करुना चित्तम और नफ़्से अम्मारा तृश्ना चित्तम.

इन में पहले चार 'शुद्धम मनस' में शामिल हैं और पांचवां 'अशुद्धम मनस' एक ऊपर का 'स्व' यानी आपा है दूसरा नीचे का 'स्व'. इन दोनों में फ़रक़ न कर सकने की वजह से ही 'स्वराज' 'शैतानी राज' हो जाता है.

उपनिषद में लिखा है :—

"इस जिसमानी ज़िंदगी रूपी दरख़्त के ऊपर दो पंछी दो तरह के बैठे हुए हैं. दोनों के पर बड़े सुन्दर हैं. दोनों साथ साथ पैदा हुए हैं और एक दूसरे के साथ साथ रहते हैं. इन में से एक दरख़्त के खट्टे मीठे फ़लों को खाता रहता है और उनका सुख दुख भोगता रहता है, और दूसरा बिना कुछ खाए दया और करुना से भरा हुआ अपने साथी की तरफ़ देखता रहता है."

सचमुच अपने अन्दर के इस धोके से बच सकना बहुत ही कठिन है. स्वर्ग और नरक, जन्नत और दोज़ख़

خودی کو مٹانا خدا کو جاننا ھے

(ڈاکٹر بھگوان داس)

جس طرح گیان یعنی معرفت کی راہ میں اسی طرح بھکتی یعنی عشق کی راہ میں بھی ایک بہت بڑا خطرہ ھے ۔ خطرہ یہ ھے کہ آدمی اپنے اندر کے خدا کو خودی سے الگ نہیں کرپاتا' یہاں تک کہ وہ اکثر خودی کو ھی خدا سمجھ بیٹھتا ھے ۔ کسی ایک آدمی یا دیوی دیوتا کے پریم کو وہ پوری ایشور بھکتی سمجھ لیتا ھے ۔ عشق مجازی کو وہ عشق حقیقی مان بیٹھتا ھے ۔ کام اور راگ ایک طرح کی چیزیں ھیں ۔ پریم اور بھکتی دوسری طرح کی ۔ ان کے فرق کو ٹھیک ٹھیک سمجھ سکنا کبھی کبھی بہت کٹھن ھو جاتا ھے ۔ صوفی لوگ آدمی کے اندر پانچ طرح کا نفس یعنی آپا مانتے ھیں. ایک—'نفس لوامہ' یعنی آدمی کے آپے کا وہ پہلو جو اسے برائی سے آگاہ کرتا رھتا ھے. دوسرے—'نفس مطمئنہ' یعنی وہ نفس جس نے اطمینان' سکون یعنی شانتی حاصل کرلی ھے. تیسرے—'نفس ملہمہ' یعنی وہ نفس جسے ایشور سے الہام یعنی پرتبھا حاصل ھوتی ھے ۔ چوتھے—'نفس رحمانی' یعنی وہ نفس جس میں اللہ کی طرح رحم یا دیا بھرجاتی ھے ۔ پانچویں—'نفس امارہ' یعنی وہ نفس جو اس دنیا کے کھیل کود' عیش آرام میں پھنسا ھوا ھے ۔

سنسکرت میں نفس کا ترجمہ چتم بھی کیا جاسکتا ھے ۔ اس طرح نفس لوامہ ھوا نشیدھ چتم. نفس مطمئنہ ھوا پرشم چتم. نفس ملہمہ ھوا پرتبھا چتم یا یوگ چتم. نفس رحمانی کرونا چتم اور نفس امارہ ترشنا چتم ۔

ان میں پہلے چار 'شدھم منس' میں شامل ھیں اور پانچواں 'اشدھم منس' ایک اوپر کا 'سوا' یعنی آپا ھے دوسرا نیچے کا 'سوا' ان دونوں میں فرق نہ کرنے کی وجہ سے ھی 'سوراج' 'شیطانی راج' ھوجاتا ھے ۔

اپنشد میں لکھا ھے :—

"اس جسمانی زندگی روپی درخت کے اوپر دو پنچھی دو طرح کے بیٹھے ھوئے ھیں ۔ دونوں کے پر بڑے سندر ھیں ۔ دونوں ساتھ ساتھ پیدا ھوئے ھیں اور ایک دوسرے کے ساتھ ساتھ رھتے ھیں. ان میں سے ایک درخت کے کھٹے میٹھے پھلوں کو کھاتا رھتا ھے اور انکا سکھ دکھ بھوگتا رھتا ھے' اور دوسرا بنا کچھ کھائے دیا اور کرونا سے بھرا ھوا اپنے ساتھی کی طرف دیکھتا رھتا ھے ."

سچ مچ اپنے اندر کے اس دھوکے سے بچ سکنا بہت ھی کٹھن ھے ۔ سورگ اور نرک' جنت اور دوزخ

के बीच केवल एक बाल की चौड़ाई के बराबर फ़ासला है. दोनों हर वक़्त हमारे अन्दर हैं. कभी एक हावी हो जाती है, कभी दूसरी. जब हम किसी को दुख से बचाना चाहते हैं तो हम स्वर्ग की तरफ़ बढ़ते हैं. जब हम अपने को बचाने वाला मान कर नेकनामी लेना चाहते हैं तो हम नरक की तरफ़ झुक जाते हैं.

क़ुरान में लिखा है :—

"जहन्नुम के ऊपर से एक पुल जाता है जो बाल की बराबर चौड़ा और तलवार की तरह पैना है. सब रूहों को इस पुल पर से जाना पड़ता है. केवल वह रूहें इसे पार कर सकती हैं जो नेक हैं."

उपनिषद् में लिखा है :—

"बुद्धिमान लोगों ने हमें बताया है कि वह पुराना रास्ता छुरे की धार की तरह पैना है. इस पर चल सकना बहुत कठिन है.'

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है :—

"चिनवत' नाम के पुल को हम तभी पार कर सकते हैं जब हमारी अन्तरात्मा (ज़मीर), नेकी, और आत्म-संयम (अपनी नफ़्स पर क़ाबू) यह तीनों हमें उंगली पकड़ कर ले चलें. वह अभागी आत्माएं जिन के अन्दर से इन पर लानत होती रहती है, जब उस पुल पर आती हैं जो बुरे और भले को अलग अलग करता है, तो असत्य यानी नाहक़ के घर में ढकेल दी जाती हैं जहां उन्हें बहुत बहुत दिनों तक कष्ट भोगने पड़ते हैं."

एक और पारसी किताब विषतास्प में लिखा है :—

"नेक आदमी की रूह, नेकी की ख़ुशी में, मशहूर, साफ़ और लम्बे 'चिनवत' पुल पर से, अपनी नेकी और सचाई की मदद से, साफ़ और सलामती के साथ पार निकल जाती है."

इंजील में लिखा है :—

"जो रास्ता सच्ची ज़िंदगी तक जाता है वह बहुत तंग रास्ता है. उसका दरवाज़ा बहुत छोटा सा दरवाज़ा है. बहुत कम उसे पाते हैं. लेकिन ईश्वर का राज कहीं बाहर नहीं है, वह तुम्हारे ही अन्दर है."

यानी यह कि हमारा 'शुद्धम मनस' भी हमारे अन्दर है और 'अशुद्धम मनस' भी हमारे अन्दर है. नफ़से रहमानी भी हमारे अन्दर है और नफ़से अम्मारा भी हमारे अन्दर है. एक ऐसी बारीक रेखा जो दिखाई न दे इन दोनों को एक दूसरे से अलग करती है. इनमें से एक से हट कर दूसरे की तरफ़ जाना बहुत कठिन भी है और बहुत आसान भी.

वेदों और पुरानों में बार बार कथाएं आती हैं कि ब्रह्मा के एक मानसपुत्र कश्यप ने धरती माता की गो

...لوں ایک بال کی چوڑائی کے برابر فاصلہ ھے. دونوں ...ھمارے اندر ھیں. کبھی ایک حاوی ھوجاتی ھے، ...سری. جب ھم کسی کو دکھ سے بچانا چاھتے ھیں تو ...گ کی طرف بڑھتے ھیں. جب ھم اپنے کو بچانے ...کر نیک نامی لینا چاھتے ھیں تو ھم نرک کی ...جھک جاتے ھیں.

...ان میں لکھا ھے :—

...جہنم کے اوپر سے ایک پل جاتا ھے جو بال کے برابر ...ر تلوار کی طرح پینا ھے. سب روحوں کو اس پل ...جانا پڑتا ھے. کیول وہ روحیں اسے پار کرسکتی ھیں ...ک ھیں."

...نشد میں لکھا ھے :—

"بدھیمان لوگوں نے ھمیں بتایا ھے کہ وہ پرانا راستہ ...ے کی دھار کی طرح پینا ھے. اس پر چل سکنا بہت ...ھے."

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ھے :—

"چنوت' نام کے پل کو ھم تبھی پار کرسکتے ھیں ...ھماری انتراتما (ضمیر)، نیکی، اور آتم سنیم ...نی نفس پر قابو) یہ تینوں ھمیں انگلی پکڑ کر لے ...یں، وہ ابھاگی آتمائیں جن کے اندر سے اِن پر لعنت ...رھتی ھے، جب اس پل پر آتی ھیں جو برے اور ...کو الگ الگ کرتا ھے، تو استیہ یعنی ناحق کے گھر ...ڈھکیل دی جاتی ھیں جہاں انھیں بہت بہت ...دنوں تک کشٹ بھوگنے پڑتے ھیں."

ایک اور پارسی کتاب وشتاسپ میں لکھا ھے :—

"نیک آدمی کی روح، نیکی کی خوشی میں، مشہور، ...ف اور لمبے 'چنوت' پل پر سے، اپنی نیکی اور سچائی ...مدد سے، صاف اور سلامتی کے ساتھ پار نکل جاتی ھے."

انجیل میں لکھا ھے :—

"جو راستہ سچی زندگی تک جاتا ھے وہ بہت تنگ ...ستہ ھے. اس کا دروازہ بہت چھوٹا سا دروازہ ھے. بہت ...م اسے پاتے ھیں. لیکن ایشور کا راج کہیں باھر نہیں ھے، ...تمہارے ھی اندر ھے."

...یعنی یہ کہ ھمارا 'شدھم منس' بھی ھمارے اندر ھے ...'اشدھم منس' بھی ھمارے اندر ھے. نفس رحمانی بھی ...ھمارے اندر ھے اور نفس اَمارا بھی ھمارے اندر ھے. ایک ...سی باریک ریکھا جو دکھائی نہ دے اِن دونوں کو ایک ...دوسرے سے الگ کرتی ھے. اِن میں سے ایک سے ھٹ کر ...دوسرے کی طرف جانا بہت کٹھن بھی ھے اور بہت ...آسان بھی.

...ویدوں اور پرانوں میں بار بار کتھائیں آتی ھیں کہ ...برھما کے ایک مانس پتر کشیپ نے دھرتی ماتا کی ...

बेटियों—
और नू
आदित्य
पैदा हुए
दूसरे से
दूसरे क
यह
फ़रिश्तों
दम ख़ुदी
बैठा औ
ने जन्नत
है. उसमें
उस में
आदम
बनाया.
आदमी
दोनों से
पर शैतान
फल खा
लगे. बाग़
को ढका.
गए. यह
धीरे 'ईस
फिर बच्च
दूसरा जन
उन्नति की
और धीरे
योग
राग, द्वेष
पैदा हुए.
दोनों क्लेश
पारसी
ढंग से
के पैराए
दुनिय
ख़ाली नही
महा
"दुनि
ही गुन या
है जिसमें
यही
चौड़ा है.
जो रू
इस तलवा

ख़ुदी को मिटाना ख़ुदा को जानना है

बेटियों—अदिति और दिति—से शादी की. अदिति रूहानी और नूरी है. दिति माद्दी और नारी है. पहली से उसके आदित्य और देवता पैदा हुए. दूसरी से दैत्य यानी शैतान पैदा हुए. दुनिया के अन्दर यह सौतेले भाई हमेशा एक दूसरे से लड़ते रहते हैं. कभी जीत एक की होती है, कभी दूसरे की.

यहूदी, ईसाई और इसलामी रिवायतों में ख़ुदा ने फ़रिश्तों को बनाया. उनमें सब से बड़ा अज़ाज़ील एक दम ख़ुदी, अहंकार यानी ग़रूर में आ कर बग़ावत कर बैठा और फिर शैतानों का सरदार बन गया. फिर अल्लाह ने जन्नत का बाग़ बनाया जिसे सतयुग कहा जा सकता है. उसमें आदम को बैठाया जो उस समय निषकलंक था. उस में मर्द औरत का फ़रक़ न था. फिर अल्लाह ने आदम की एक पसली निकाल कर उससे हव्वा को बनाया. इस तरह आदमी धीरे धीरे एक से दो यानी आदमी से मर्द और औरत हुआ. फिर अल्लाह ने उन दोनों से कह दिया कि ज्ञान के दरख़्त का फल न खाना. पर शैतान ने बाग़ में घुस कर उन्हें बहकाया. उन्होंने वह फल खा लिया. वह एक दूसरे को अपने से अलग समझने लगे. बाग़ से निकाल दिये गए. उन्होंने अपने जिस्मों को ढका. फिर नीचे नीचे माद्दी दुनिया में गिरते चले गए. यह शुरू का गुनाह ही अविद्या यानी माया थी. धीरे धीरे 'ईसा' यानी रूहानी ज्ञान आदमी में पैदा हुआ. वह फिर बच्चे की तरह मासूम और बेगुनाह बना. यह उसका दूसरा जन्म और दूसरा बचपन था. यूं वह अवनति से उन्नति की तरफ़ यानी तनज़्ज़ुल से तरक़्क़ी की तरफ़ मुड़ा और धीरे धीरे फिर से जन्नत यानी स्वर्ग का हक़दार हुआ.

योग शास्त्र में लिखा है कि अविद्या से ही अहंकार, राग, द्वेष और अभिनिवेष पैदा हुए. इसी से सुख दुख पैदा हुए. योग और वेदान्त के अनुसार सुख और दुख दोनों क्लेश हैं.

पारसी किताबों में भी यह गहरी रूहानी सचाई अपने ढंग से स्पैन्तमैन्यू और अंग्रमैन्यू की लगातार लड़ाइयों के पैराए में बयान की गई है.

दुनिया में कोई चीज़ भलाई या बुराई से बिलकुल ख़ाली नहीं होती. दोनों साथ साथ चलती हैं.

महा भारत में लिखा है :—

"दुनिया में न कोई चीज़ ऐसी है जिसमें केवल गुन ही गुन यानी भलाई ही भलाई हो, और न कोई चीज़ ऐसी है जिसमें केवल दोष ही दोष यानी बुराई ही बुराई हो."

यही ज़िन्दगी का वह तंग रास्ता है जो बाल के बराबर चौड़ा है.

जो रूहें यह चाहती हैं कि इस बारीक रास्ते पर से, इस तलवार की धार के बराबर पैने रास्ते पर से सलामती

خودی کو مٹانا خدا کو جاننا ہے

بیٹیوں—ادتی اور دتی—سے شادی کی. ادتی روحانی اور نوری ہے. دتی مادی اور ناری ہے. پہلی سے اس کے آدت اور دیوتا پیدا ہوئے. دوسری سے دیت یعنی شیطان پیدا ہوئے. دنیا کے اندر یہ سوتیلے بھائی ہمیشہ ایک دوسرے سے لڑتے رہتے ہیں. کبھی جیت ایک کی ہوتی ہے، کبھی دوسرے کی.

یہودی، عیسائی اور اسلامی روائتوں میں خدا نے فرشتوں کو بنایا. اُن میں سب سے بڑا عزازیل ایکدم خودی، اَہنکار یعنی غرور میں آکر بغاوت کر بیٹھا اور پھر شیطانوں کا سردار بن گیا. پھر اللہ نے جنت کا باغ بنایا جسے ست یگ کہا جا سکتا ہے. اس میں آدم کو بیٹھایا جو اس سمے نِش کلنک تھا. اُس میں مرد عورت کا فرق نہ تھا. پھر اللہ نے آدم کی ایک پسلی نکال کر اس سے حوا کو بنایا. اس طرح آدمی دھیرے دھیرے ایک سے دو یعنی آدمی سے مرد اور عورت ہوا. پھر اللہ نے اِن دونوں سے کہہ دیا کہ گیان کے درخت کا پھل نہ کھانا. پھر شیطان نے باغ میں گھس کر اُنہیں بہکایا. اُنہوں نے وہ پھل کھا لیا. وہ ایک دوسرے کو اپنے سے الگ سمجھنے لگے. باغ سے نکال دیئے گئے. اُنہوں اپنے جسموں کو ڈھکا. پھر نیچے نیچے مادی دنیا میں گرتے چلے گئے. یہ شروع کا گناہ ہی اَودیا یعنی مایا تھی. دھیرے دھیرے 'عیسیٰ' یعنی روحانی گیان آدمی میں پیدا ہوا. وہ پھر بچے کی طرح معصوم اور بے گناہ بنا. یہ اُس کا دوسرا جنم اور دوسرا بچپن تھا. یوں وہ اونتی سے اُنتی کی طرف یعنی تنزل سے ترقی کی طرف مڑا اور دھیرے دھیرے پھر سے جنت یعنی سورگ کا حقدار ہوا.

یوگ شاستر میں لکھا ہے کہ اَودیا سے ہی اَہنکار، راگ، دویش اور ابھی نویش پیدا ہوئے. اِسی سے سکھ دکھ پیدا ہوئے. یوگ اور ویدانت کے انوسار سکھ اور دکھ دونوں کلیش ہیں.

پارسی کتابوں میں بھی یہ گہری روحانی سچائی اپنے ڈھنگ سے اِسپینت مینیو' اور انگر مینیو کی لگاتار لڑائیوں کے پیرائے میں بیان کی گئی ہے.

دنیا میں کوئی چیز بھلائی یا برائی سے بالکل خالی نہیں ہوتی—دونوں ساتھ ساتھ چلتی ہیں.

مہا بھارت میں لکھا ہے :—

"دنیا میں نہ کوئی چیز ایسی ہے جس میں کیول گن ہی گن یعنی بھلائی ہی بھلائی ہو، اور نہ کوئی چیز ایسی ہے جس میں کیول دوش ہی دوش یعنی برائی ہی برائی ہو."

یہی زندگی کا وہ تنگ راستہ ہے جو بال کے برابر چوڑا ہے.

جو روحیں یہ چاہتی ہیں کہ اس باریک راستے پر سے، اس تلوار کی دھار کے برابر پینے راستے پر سے سلامتی

के साथ निकल जायं, उन्हें चाहिये कि लगातार कोशिश करके और अभ्यास कर के सबके अन्दर एक ही आत्मा को देखें और अपनी छोटी सी ख़ुदी को मार कर सब के साथ अपनी एकता को अनुभव करें और सबके लिये अपने दिल में प्रेम पैदा करें.

वेद में लिखा है :—

"मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि पश्येयम्"

यानी ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि :—"हम सब प्रानियों को मित्र यानी दोस्त की आंख से ही देखें."

फ़ारसी की मशहूर किताब मामुक़िमां का सूफ़ी लेखक अपनी किताब में बार बार नीचे के शेर को दोहराता है :—

ऐ बचश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त
हर कि बीनी बिदां कि मज़हरे ओस्त

यानी ऐ भाई ! अपने दिल की आंखों से किसी को सिवाय दोस्त के और कुछ मत देख, क्योंकि जो कुछ तू देखता है जान लें कि वह सब उसी एक अल्लाह का ज़हूर है.

हिन्दुस्तान के मशहूर संत कवि सूरदास ने कहा है :—

अब हौं कासौं बैर करौं
कहत पुकारत प्रभु निज मुख ते
घट घट हौं बिहरौं

विष्णु पुरान में लिखा है :—

"बुद्धिमान लोगों से यह जान कर कि ईश्वर सब प्रानियों के रूप में है, सब प्रानियों से दिल से प्यार और सबकी सेवा करनी चाहिये."

उपनिषद में लिखा है :—

"जो कोई अपनी आत्मा के अन्दर सब प्रानियों को देखता है और अपनी आत्मा को सब प्रानियों के अन्दर देखता है वह फिर कभी धोका नहीं खा सकता, कभी किसी से द्वेष नहीं कर सकता."

'हमा ओस्त' (सब वही है) के ठीक वही मानी हैं जो 'सर्वम् खलु इदं ब्रह्म' (यह सब ब्रह्म है) के हैं. 'हमा ओस्त' से ही क़ुदरती नतीजा निकलता है 'हमा दोस्त' यानी सब दोस्त ही दोस्त हैं.

यही असली भक्ति का मार्ग है. सूफ़ी इसे 'तसफ़ीयए दिल' यानी दिल को पाक साफ़ करना कहते हैं. इसी से लफ़्ज़ 'सूफ़ी' और 'तसव्वुफ़' बने हैं. योग शास्त्र में इसे 'चित्त प्रसादनम्' और 'चित्त परिकर्म' कहा गया है. दोनों के वही मानी हैं जो 'तसफ़ीयए दिल' के सूफ़ी किताबों में और योग शास्त्र में दोनों ने इस दरजे तक पहुंचने के लिये तरह तरह के अभ्यास, मश्क़, यम, नियम, व्रत, रोज़े और मजाहिदे बताए गए हैं. आहिस्ता आहिस्ता इस रास्ते पर चल कर आदमी ख़ुदी से पाक साफ़ हो कर पूर्न पुरुष यानी मर्दे कामिल बनता है. ख़ुदी का मिटना ही अन्दर के ख़ुदा का जागना है.

نکل جائیں، انہیں چاہئے کہ لگاتار کوشش کرکے ابھیاس کرکے سب کے اندر ایک ہی آتما کو دیکھیں اور چھوٹی سی خودی کو مار کر سب کے ساتھ اپنی ایکتا کو انوبھو کریں اور سب کے لئے اپنے دل میں پریم پیدا کریں۔

وید میں لکھا ہے :—

"مترسیہ چکشوشا سروانی بھوتانی پشییم" یعنی ایشور سے پرارتھنا کی گئی ہے کہ :—"ہم سب پرانیوں کو مِتر یعنی دوست کی آنکھ سے ہی دیکھیں۔"

فارسی کی مشہور کتاب ماموقیما کا صوفی لیکھک اپنی کتاب میں بار بار نیچے کے شعر کو دہراتا ہے :—

اے بچشمانِ دل مبیں جز دوست
ہرکہ بینی بدان کہ مظہرِ اوست

یعنی اے بھائی! اپنے دل کی آنکھوں سے کسی کو سوائے دوست کے اور کچھ مت دیکھ کیونکہ جو کچھ دیکھتا ہے جان لے کہ وہ سب اُسی ایک اللہ کا ظہور ہے۔

ہندستان کے مشہور سنت کوی سورداس نے کہا ہے :—

اب ہوں کاسوں بیر کروں
کہت پکارت پربھو نج مکھ تے
گھٹ گھٹ ہوں بہروں

وشنو پران میں لکھا ہے :—

"بدھمان لوگوں سے یہ جان کر کہ ایشور سب پرانیوں کے روپ میں ہے، سب پرانیوں سے دل سے پیار اور سب کی سیوا کرنی چاہئے۔"

اپنشد میں لکھا ہے :—

"جو کوئی اپنی آتما کے اندر سب پرانیوں کو دیکھتا ہے اور اپنی آتما کو سب پرانیوں کے اندر دیکھتا ہے وہ پھر کبھی دھوکا نہیں کھا سکتا، کبھی کسی سے دویش نہیں کر سکتا۔"

'ہما اوست' (سب وہی ہے) کے ٹھیک وہی معنی ہیں جو 'سروم کھلو ادم برہم' (یہ سب برہم ہے) کے ہیں۔ 'ہما اوست' سے ہی قدرتی نتیجہ نکلتا ہے 'ہما دوست' یعنی سب دوست ہی دوست ہیں۔

یہی اصلی بھکتی کا مارگ ہے۔ صوفی اِسے 'تصفیۂ دل' یعنی دل کو پاک صاف کرنا کہتے ہیں۔ اِسی سے لفظ 'صوفی' اور 'تصوف' بنے ہیں۔ یوگ شاستر میں اِسے 'چت پرسادنم' اور 'چت پری کرم' کہا گیا ہے۔ دونوں کے وہی معنی ہیں جو 'تصفیۂ دل' کے صوفی کتابوں میں اور یوگ شاستر میں۔ دونوں نے اِس درجے تک پہونچنے کے لئے طرح طرح کے ابھیاس، مشق، یم، نیم، برت، روزے اور مجاہدے بتائے گئے ہیں۔ آہستہ آہستہ اس راستے پر چل کر آدمی خودی سے پاک صاف ہو کر پورن پرش یعنی مرد کامل بنتا ہے۔ خودی کا مٹنا ہی اندر کے خدا کا جاگنا ہے۔

नेपाल में अमरीकी साज़िश

(परमानन्द सिंह 'मदन')

आज़ाद काश्मीर और आज़ाद नागा देश के आन्दोलन के पीछे अमरीकी हाथ भी था यह आम तौर पर ज़ाहिर हो चुका है. हम सुन चुके हैं कि किस तरह अमरीकी मिशनरियों, नेताओं, सैलानियों, और राष्ट्र संघ के अमरीकी निगहबानों ने उस समय के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला को आज़ाद काश्मीर का सब्ज़बाग़ दिखला कर भारत पाकिस्तान और काश्मीर तीनों को मुशकिल में डाल दिया था. काश्मीर की तरह आसाम का फ़ौजी महत्व भी कम नहीं है. वह भी जनवादी चीन की सीमा पर है. आसाम के चाय बगानों और उसके आस पास के इलाक़ों में अंगरेज़ पूंजीपतियों और विदेशी मिशनरियों का अब भी साम्राज्य क़ायम है. प्रधान मंत्री नेहरू और घर मंत्री काटजू ने भी विदेशी मिशनरियों को आसाम के नागा देश में उनकी साज़िशों के लिये कड़ी चेतावनी दी थी. अभी भी उनकी साज़िश इन इलाक़ों में बन्द नहीं हुई है.

हमारा पड़ोसी देश नेपाल भी अमरीकी साज़िशों से बचा नहीं. काश्मीर और नागा प्रदेश की तरह नेपाल की सीमा भी जनवादी तिब्बत से मिलती है. फ़ौजी और सामराजी निगाह से इस का महत्व भी आसानी से आंका जा सकता है. काश्मीर, नागा प्रदेश और नेपाल की यह साज़िशें उस सामराजी प्रोग्राम के अंग है जिस से अमरीका सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट देशों के चारों तरफ़ फ़ौजी अड्डों का जाल बिछाना चाहता है. नार्वे, डेनमार्क, जर्मनी, फ़्रांस, इटली, ग्रीस और टर्की के फ़ौजी अड्डों से वह यूरोप में समाजवादी इलाक़े के चारों ओर लोहे का तौक़ पहना चुका है. एशिया में अलास्का, अल्यूशियन, जापान, कोरिया, ओकीनावा, फ़ारमोसा, फ़िलिपाइन, हिन्दचीन और थाईलैंड में अमरीकी अड्डों की दीवाल खड़ी हो चुकी है. यूरोप और एशिया की इस फ़ौजी दीवाल को मिलाने के लिये बरमा, आसाम, भूटान, सिक्कम, नेपाल, हिमांचल प्रदेश और काश्मीर में और पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में फ़ौजी अड्डों की ज़रूरत है. ईरान में अमरीका दोस्त ज़ाहिदी सरकार क़ायम हो चुकी है. वहां पहले से भी अमरीकी अड्डे बने हुए हैं. अफ़ग़ानिस्तान में 'विकास योजनाओं' द्वारा अमरीकी डालरों और ज्ञान पांडों का प्रवेश शुरू हो गया है. पाकिस्तान शुरू से ही अमरीका और इंगलैंड का साथी है ही. कहते हैं चित्राल, गिलगित और स्कार्दू में बड़े बड़े हवाई अड्डे बन चुके हैं. ... २. पाकिस्तान और

نیپال میں امریکی سازش

(پرمانند سنگھ 'مدن')

آزاد کاشمیر اور آزاد ناگا دیش کے آندولن کے پیچھے امریکی ہاتھ بھی تھا یہ عام طور پر ظاہر ہو چکا ہے. ہم سن چکے ہیں کہ کس طرح امریکی مشنریوں' نیتاؤں' سیلانیوں اور راشٹرسنگھ کے امریکی نگہبانوں نے اُس سمے کے پردھان منتری شیخ عبداللہ کو آزاد کاشمیر کا سبز باغ دکھلا کر بھارت' پاکستان اور کاشمیر تینوں کو مشکل میں ڈال دیا تھا. کاشمیر کی طرح آسام کا فوجی مہتو بھی کم نہیں ہے. وہ بھی جن وادی چین کی سیما پر ہے. آسام کے چائے بگانوں اور اُس کے آس پاس کے علاقوں میں انگریز پونجی پتیوں اور ودیشی مشنریوں کا اب بھی سامراج قایم ہے. پردھان منتری نہرو اور گھر منتری کاٹجو نے بھی ودیشی مشنریوں کو آسام کے ناگا دیش میں اُن کی سازشوں کے لئے کڑی چیتاونی دی تھی. ابھی بھی اُن کی سازش اِن علاقوں میں بند نہیں ہوئی ہے.

ہمارا پڑوسی دیش نیپال بھی امریکی سازشوں سے بچا نہیں' کاشمیر اور ناگا پردیش کی طرح نیپال کی سیما بھی جن وادی تبت سے ملتی ہے. فوجی اور سامراجی نگاہ سے اس کا مہتو بھی آسانی سے آنکا جاسکتا ہے. کاشمیر' ناگا پردیش اور نیپال کی یہ سازشیں اس سامراجی پروگرام کے انگ ہیں جس سے امریکہ سوشلسٹ یا کمیونسٹ دیشوں کے چاروں طرف فوجی اڈوں کا جال بچھانا چاہتا ہے. ناروے' ڈینمارک' جرمنی' فرانس' اِٹلی' گریس اور ترکی کے فوجی اڈوں سے وہ یورپ میں سماج وادی علاقے کے چاروں اور لوہے کا طوق پہنا چکا ہے. ایشیا میں الاسکا' الیوشین' جاپان' کوریا' اوکی ناوا' فارموسا' فلی پائن' ہندچین اور تھائی لینڈ میں امریکی اڈوں کی دیوال کھڑی ہو چکی ہے. یورپ اور ایشیا کی اِس فوجی دیوال کو ملانے کے لئے برما' آسام' بھوٹان' سکم' نیپال' ہماچل پردیش اور کاشمیر میں اور پاکستان' افغانستان اور ایران میں فوجی اڈوں کی ضرورت ہے.

ایران میں امریکہ دوست زاہدی سرکار قایم ہو چکی ہے. وہاں پہلے سے بھی امریکی اڈے بنے ہوئے ہیں. افغانستان میں 'وکاس یوجناؤں' دوارا امریکی ڈالروں اور گیان پانڈوں کا پرویش شروع ہوگیا ہے. پاکستان شروع سے ہی امریکہ اور انگلینڈ کا ساتھی ہے ہی. کہتے ہیں چترال' گلگت اور اسکارڈو میں بڑے بڑے ہوائی اڈے بن چکے ہیں. پاکستان اور

अमरीका के बीच बाज़ाब्ता सैनिक सन्धि की बातें भी सुनाई दे रही हैं. टरकी से भी फ़ौजी सुलह की बात चीत चल रही है. बरमा में अपने इरादों को पूरा करने के लिये अमरीका नहीं चाहता कि नैशनलिस्ट चीनी फ़ौजें यानी च्यांग काई शेक की फ़ौजें वहां से हटा ली जायं. बरमा हो कर चीन के यूनन प्रदेश पर आसानी से हमला किया जा सकता है. अब हम देखेंगे कि नेपाल में किस तरह उनके हथकंडे चल रहे हैं.

नेपाल में भी अमरीकी मिशनरियों, सैलानियों और तरह तरह की विकास योजनाओं के नाम पर अमरीकी ज्ञानपांडों की बाढ़ आ रही है. नेपाल के साथ खुला राज दूती सम्बन्ध रहने के कारन उन्हें आसानी भी होती है. अमरीकी ज्ञान पांडे सैलानी और फ़ौजी मिशनों वाले नेपाल के फ़ौजी महत्व के स्थानों का दौरा करते हैं और उनके चित्र लेते हैं. डालरों के लालच में नेपाली नेताओं और पदाधिकारियों को फंसाया जा रहा है. नेपाली मिशनरियों में भी पिछले फ़ौजी अफ़सरों और ख़ुफ़िया विभाग के लोगों को पादरियों की जगह नियुक्त किया जा रहा है. एक पुराने बदनाम फ़ौजी एक्सपर्ट को काठ-मांडू को मिशन लाइब्रेरी का लाइब्रेरियन बनाया गया. लेकिन कहते हैं भेद खुल जाने पर सरकार ने उसे निकाल दिया. नेपाल में मिशनरियों के ख़तरे के बारे में लखनऊ के 'पीपुल' (People) के संवाददाता ने लिखा था कि—"कुछ महीने हुए नेपाल में मिशनरियों की तादाद इतनी तेज़ी से बढ़ने लगी थी कि नेपाल की सरकार भी उसमें ख़तरा देखने लगी. पर चूंकि महाराजा के कुछ बहुत पास के सलाहकार भी उस विदेशी शक्ति के ऐजन्ट हैं वह सारा मामला दबा दिया गया. (मॉडर्न रिव्यू, अगस्त 1953)

इन अमरीकी एजेन्टों ने रानाओं और उनकी गोरखा परिषद् से सांठ गांठ की. वह गोरखा परिषद् को कम्युनिस्टों की दिनोंदिन बढ़ती ताक़त के ख़िलाफ़ खड़ा करना चाहते हैं. लेकिन गोरखा परिषद इतनी साम्प्रदायिक बदनाम है कि उसे सत्ता हथियाने के लिये आगे बढ़ाने में इन्हें कठिनाई हो रही है. 'पीपुल' का संवाददाता फिर लिखता है कि—"वह विदेशी एजेन्ट चाहते हैं कि नेपाल में लगातार अराजकता रहे. ताकि कुछ दिनों बाद आगे चल कर वह उसे एक और कोरिया या काश्मीर बना सकें और उनकी अन्तर्राष्ट्रीय साज़िशें वहां ख़ूब चल सकें."

कहा जाता है कि इसी कारन यह कोइराला भाइयों एकता नहीं होने देना चाहते. शायद अभी अभी जो कोइराला भाइयों में एकता सी हुई है वह केवल कम्युनिस्टों की जीत से घबराहट के कारन हुई है. 'पीपुल' के संवाददाता

[امریکہ] کے بیچ باضابطہ سینک سندھی کی باتیں [بھی سنائی] دے رہی ہیں . ترکی سے بھی فوجی [صلح کی] بات چیت چل رہی ہے . برما میں اپنے ارادوں [کو پورا کرنے] کے لئے امریکہ نہیں چاہتا کہ نیشنلسٹ [چینی] فوجیں یعنی چیانگ کائی شیک کی فوجیں [وہاں سے ہٹا] لی جائیں . برما ہو کر چین کے یونن پردیش [پر آسانی] سے حملہ کیا جا سکتا ہے . اب ہم دیکھیں گے [کہ نیپال] میں کس طرح اُن کے ہتھکنڈے چل رہے ہیں .

نیپال میں بھی امریکی مشنریوں ، سیلانیوں اور [طرح] طرح کی وکاس یوجناؤں کے نام پر امریکی گیان [پانڈوں] کی باڑھ آ رہی ہے . نیپال کے ساتھ کھلا راج دوتی [سمبندھ] رہنے کے کارن انہیں آسانی بھی ہوتی ہے . [امریکی] گیان پانڈے ، سیلانی اور فوجی مشنوں والے نیپال [کے فوجی] مہتو کے استھانوں کا دورا کرتے ہیں اور اُن کے [چتر لیتے] ہیں . ڈالروں کے لالچ میں نیپالی نیتاؤں [اور] پدادھکاریوں کو پھنسایا جا رہا ہے . نیپالی مشنریوں [میں بھی] پچھلے فوجی افسروں اور خفیہ وبھاگ کے لوگوں [کو پادریوں] کی جگہ نیوکت کیا جا رہا ہے . ایک پرانے بدنام [فوجی] ایکسپرٹ کو کاٹھمانڈو کی مشن لائبریری کا لائبریرین [بنایا] گیا . لیکن کہتے ہیں بھید کھل جانے پر سرکار نے [اسے نکال] دیا . نیپال میں مشنریوں کے خطرے کے بارے [میں لکھنؤ] کے 'پیپل' (People) کے سمواددا تا نے لکھا [تھا کہ]—"کچھ مہینے ہوئے نیپال میں مشنریوں کی [تعداد] اتنی تیزی سے بڑھنے لگی تھی کہ نیپال کی سرکار [بھی] اس میں خطرہ دیکھنے لگی . پر چونکہ مہاراجہ کے [کچھ] بہت پاس کے صلاحکار بھی اُس ودیشی شکتی کے [ایجنٹ] ہیں وہ سارا معاملہ دبا دیا گیا . (ماڈرن ریویو [اگست] 1953)

[ان] امریکی ایجنٹوں نے راناؤں اور اُنکی گورکھا پریشد [سے سانٹھ] گانٹھ کی . وہ گورکھا پریشد کو کمیونسٹوں کی [دن دن] بڑھتی طاقت کے خلاف کھڑا کرنا چاہتے ہیں . [لیکن] گورکھا پریشد اتنی سامپردائک بدنام ہے کہ اُسے ستا [ہتھیانے] کے لئے آگے بڑھانے میں اُنہیں کٹھنائی ہو رہی [ہے] . 'پیپل' کا سمواددا تا پھر لکھتا ہے کہ—"وہ ودیشی [ایجنٹ] چاہتے ہیں کہ نیپال میں لگاتار اراجکتا رہے [تاکہ کچھ] دنوں بعد آگے چل کر وہ اُسے ایک اور کوریا یا [کشمیر] بنا سکیں اور اُن کی انترراشٹریہ سازشیں وہاں [خوب] چل سکیں ."

[کہا] جاتا ہے کہ اِسی کارن یہ کوئی رالا بھائیوں میں ایکتا [نہیں] ہونے دینا چاہتے . شاید ابھی ابھی جو کوئی رالا [بھائیوں] میں ایکتا سی ہوئی ہے وہ کیول کمیونسٹوں کی [جیت] سے گھبراہٹ کے کارن ہوئی ہے . 'پیپل' کے سمواددا تا

ने आगे लिखा है कि विदेशी ऐजेन्ट महाराजा नेपाल के एक ख़ास मित्र के ज़रिये, जो भारत में एक बड़े व्यापारी हैं, महाराजा पर दबाव डाल रहे हैं, नेपाल के गोरखा फ़ौजी भरती अड्डे इन साज़िशों की ख़ास जगह हैं.

नेपाल में कुछ अमरीकियों की साज़िशें इतनी बढ़ती जा रही हैं कि कई जगहों पर आम सभाओं में उनके ख़िलाफ़ खुली आवाज़ें उठाई गई हैं और राजधानी काठमांडू में भी उनके ख़िलाफ़ प्रदर्शन हुए हैं. कुछ दिन हुए नेपाल प्रजापरिशद के नेता श्री टंकप्रसाद आचार्य और नेपाली कांगरेस के नेता श्री बी० पी० कोइराला ने भी अपने बयानों में जो 'नया नैपाल' में प्रकाशित हुए थे अमरीकी ख़तरे पर गंभीर चिन्ता प्रकट की है. नेपाली कांगरेस के प्रमुख नेता श्री हृषीकेश शाह ने, जो पहले नेपाली राष्ट्रीय कांगरेस के (जीवराज शर्मा ग्रूप, जो अब नेपाली कांगरेस में मिल गया है) जनरल सेक्रेटरी थे, अपने एक भारती मित्र को साफ़ तौर पर बतलाया था कि अमरीकी एजेन्टों की साज़िश बड़ी तेज़ी के साथ नेपाल में बढ़ती जा रही है और हालत काफ़ी नाज़ुक हो गई है. लेकिन उन्होंने इसकी बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी भारत सरकार पर बतलाई जो इन अमरीकियों को प्रोत्साहन देती है. नेपाली राजनीति के एक विश्वस्त पत्रकार ने बताया था कि अमरीकी प्रचार विभाग (Osis) किस कुशलता के साथ नेपाली नेताओं और पदाधिकारियों और दूसरे ख़ास-ख़ास लोगों के बीच काम कर रहा है. कुल नेपाल जन कांगरेस के एक प्रमुख नेता ने भी कई बार इस बात को स्वीकार किया कि डालरवाद का प्रचार ज़ोरों से चल रहा है. नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी ने भी कुछ दिनों पहले एक लम्बा बयान निकाल कर अमरीकी साज़िशों के कारनामों पर से परदा हटाया था. इस तरह नेपाल में अमरी हथकंडों के समाचार धीरे-धीरे प्रकाश में आते जा रहे हैं.

काठमांडू के म्युनिसिपलटी के चुनाव में कम्युनिस्टों को जो सफलता मिली है उससे नेपाल की राजनीति में काफ़ी हलचल मच गई है. यह याद रखने की चीज़ है कि गोरखा परिशद को नेपाली कांगरेस के बराबर केवल तीन सीटें मिली हैं. कम्युनिस्टों से ख़तरा देख कर गोरखा परिशद कोई पैंतरा बदले तो अचरज नहीं. नेपाल और भारत दोनों ही सरकारों और दोनों जगह की जनता को सतर्क रहना ज़रूरी है.

نے آگے لکھا ہے کہ ودیشی ایجنٹ مہاراجہ نیپال کے ایک خاص متر کے ذریعہ، جو بھارت میں ایک بڑے ویاپاری ہیں، مہاراجہ پر دباؤ ڈال رہے ہیں، نیپال کے گورکھا فوجی بھرتی اڈے اِن سازشوں کی خاص جگہ ہیں۔

نیپال میں کچھ امریکیوں کی سازشیں اتنی بڑھتی جا رہی ہیں کہ کئی جگہوں پر عام سبھاؤں میں اُن کے خلاف کھلی آوازیں اُٹھائی گئی ہیں اور راجدھانی کاٹھمانڈو میں بھی اِن کے خلاف پردرشن ہوئے ہیں. کچھ دن ہوئے نیپال پرجاپریشد کے نیتا شری ٹنک پرساد آچاریہ اور نیپالی کانگریس کے نیتا شری وی. پی. کوئی رالا نے بھی اپنے بیانوں میں جو 'نیا نیپال' میں پرکاشت ہوئے تھے امریکی خطرے پر گمبھیر چنتا پرکٹ کی ہے۔ نیپالی کانگریس کے پرمکھ نیتا شری ہرشی کیش شاہ نے، جو پہلے نیپالی راشٹریہ کانگریس کے (جیو راج شرما گروپ، جو اَب نیپالی کانگریس میں مل گیا ہے) جنرل سکریٹری تھے، اپنے ایک بھارتی متر کو صاف طور پر بتلا دیا تھا کہ امریکی ایجنٹوں کی سازش بڑی تیزی کے ساتھ نیپال میں بڑھتی جا رہی ہے اور حالت کافی نازک ہوگئی ہے۔ لیکن انہوں نے اُس کی بہت بڑی ذمہ واری بھارت سرکار پر بتلائی جو اِن امریکیوں کو پروتساہن دیتی ہے. نیپالی راج نیت کے ایک وشوست پترکار نے بتایا تھا کہ امریکی پرچار وبھاگ (Osis) کس کشلتا کے ساتھ نیپالی نیتاؤں اور ادھیکاریوں اور دوسرے خاص خاص لوگوں کے بیچ کام کر رہا ہے. کل نیپال جن کانگریس کے ایک پرمکھ نیتا نے بھی کئی بار اِس بات کو سویکار کیا تھا کہ ڈالر واد کا پرچار زوروں سے چل رہا ہے ۔ نیپالی کمیونسٹ پارٹی نے بھی کچھ دنوں پہلے ایک لمبا بیان نکال کر امریکی سازشوں کے کارناموں پر سے پردہ ہٹایا تھا. اِس طرح نیپال میں امریکی ہتھکنڈوں کے سماچار دھیرے دھیرے پرکاش میں آتے جا رہے ہیں۔

کاٹھمانڈو کے میونسپلٹی کے چناؤ میں کمیونسٹوں کو جو سپھلتا ملی ہے اس سے نیپال کی راج نیت میں کافی ہل چل، مچ گئی ہے. یہ یاد رکھنے کی چیز ہے کہ گورکھا پریشد کو نیپالی کانگریس کے برابر کیول تین سیٹیں ملی ہیں. کمیونسٹوں سے خطرہ دیکھکر گورکھا پریشد کوئی پینترا بدلے تو اچرج نہیں. نیپال اور بھارت دونوں ہی سرکاروں اور دونوں جگہ کی جنتا کو ستَرک رہنا ضروری ہے۔

त्रिची.
4. 11. 53.

एक दक्खिनी भाई का ख़त

प्रिय भाई मुजीब,

तस्लीम ! आप की चिट्ठी मिली, बड़ी ख़ुशी हुई. पहली चिट्ठी शायद बच्चों के हाथ पड़ गई हो इसलिये कहीं गुम हो गई होगी. मुझे यहां एक अच्छे घर की खोज थी.

यहां के तमिल रिसालों में ख़्वाजा अब्बास, कृश्न चंदर और दूसरे तरक़्क़ी-पसंद लेखकों की कहानियां मेरी तरफ़ से अनुवाद हो कर छपती हैं. मैं यहां एक स्कूल में 'पार्ट टाइम वरकर' की हैसियत से काम कर रहा हूं इसलिये तनख़्वाह कम मिलती है. "इक़्तसादी (आर्थिक) हालत" गिरी हुई है फिर भी किसी तरह 'नया हिन्द' लेता रहता हूं. दिल्ली के 'हिन्दुस्तान' (हिन्दी) में तमिल कहानियों के अनुवाद भेजने वाला हूं. मैं तो 'नया हिन्दी' परिवार का आदमी हूं इसलिये बराबर मेरी सेवाएं आप को मिलती रहेंगी. 'दौलत' कहानी के साथ ही तमिल के नामी लेखक श्री 'अखिलन' की तमिल कहानी का अनुवाद 'मंदिर का दीप' उर्दू हरूफ़ में लिख कर भेजा है. आशा है कि वह शाया होगा. बहुत जल्दी श्री अखिलन का लेख 'तीसरा रास्ता' अनुवाद कर के भेजूंगा. तमिल रिसालों के लिये लेख या अनुवाद भेजने से पन्द्रह या बीस रुपये मिलते हैं. उन से ज़ियादातर किताबें ख़रीदता हूं. कभी-कभी मेहनताना नहीं भी मिलता. ख़ैर, बहुत दिन से मैं 'नया हिन्द' के 'मिशन' का ख़ैरख़्वाह हूं. इसलिये जब कभी मेरे लेख या कहानी का अनुवाद छपता है उसके लिये मुझे 'मेहनताना' देने की ज़रूरत नहीं है. पूंजीपति रिसालों से मेहनताना लेना ठीक है. लेकिन इतना ज़रूर करें कि जब मेरी कोई चीज़ 'नया हिन्द' में जगह पावे तो उस के लिये कम दाम वाली कुछ किताबें भेज दें. 'नया हिन्द' के लायक़ लेख भेजूंगा. इस बार मेहनताने के तौर पर तीन किताबें भेजें--

गीता और क़ुरान (नागरी लिखावट)
आज के शहीद ,, ,,
झंकार ,, ,,

एक और अर्ज़ है कि उत्तर के कुछ लेखकों के पते भी दें.

श्री राम वृक्ष शर्मा बेनीपूरी,
,, यशपाल,
,, राहुल सांकृत्यायन,
,, वेचन शर्मा (उग्र),
,, सुदर्शन,
,, रामानंद सागर,
,, रतनलाल बंसल.

ایک دکھنی بھائی کا خط

بھائی مجیب،

! آپکی چھٹی ملی. بڑی خوشی ہوئی. پہلی
بچوں کے ہاتھ پڑ گئی ہو اِسلئے کہیں گم
. مجھے یہاں ایک اچھے گھر کی کھوج تھی.
کے تمل رسالوں میں خواجہ عباس، کرشن چندر
ترقی پسند لیکھکوں کی کہانیاں میری طرف
کر چھپتی ہیں. میں یہاں ایک اسکول
ٹائم ورکر کی حیثیت سے کام کر رہا ہوں اسلئے
ملتی ہے. "اقتصادی (آرتھک) حالت" گری
ہے پھر بھی کسی طرح 'نیا ہند' لیتا رہتا ہوں.
ہندستان' (ہندی) میں تمل کہانیوں کے
بھیجنے والا ہوں. میں تو 'نیا ہند' پریوار کا آدمی
لئے برابر میری سیوائیں آپ کو ملتی رہینگی.
کہانی کے ساتھ ہی تمل کے نامی لیکھک شری
کی تمل کہانی کا انوواد 'مندر کا دیپ' اردو
میں لکھکر بھیجا ہے. آشا ہے وہ شایع ہوگا. بہت
شری اکھلن کا لیکھ 'تیسرا راستہ' انوواد کرکے
تمل رسالوں کے لئے لیکھ یا انوواد بھیجنے سے
بیس روپئے ملتے ہیں. اُن سے زیادہ‌تر کتابیں
ہوں. کبھی کبھی محنتانہ نہیں بھی ملتا.
بہت دن سے میں 'نیا ہند' کے 'مشن' کا خیرخواہ
اسلئے جب کبھی میرے لیکھ یا کہانی کا انوواد
ہے اس کے لئے مجھے 'محنتانہ' دینے کی ضرورت
پونجی پتی رسالوں سے محنتانہ لینا ٹھیک ہے.
تنا تو ضرور کریں کہ جب میری کوئی چیز
میں جگہ پاوے تو اس کے لئے کم دام والی کچھ
بھیج دیں. 'نیا ہند' کے لایق لیکھ بھیجونگا.
محنتانہ کے طور پر تین کتابیں بھیجیں—
اور قرآن (ناگری لکھاوٹ)
آج کے شہید "
جھنکار "
اور عرض ہے کہ اُتر کے کچھ لیکھکوں کے پتے
رام ورکش شرما بینی‌پوری،
یشپال،
راہل سانکرتیاین،
بیچن شرما (اُگر)،
سدرشن،
رامانند ساگر،
رتن لال بنسل.

ऊपर के लेखकों की चीज़ों का अनुवाद करने वाला हूं. आप का लेख 'सोवियत रूस के रस्म रिवाज' का अनुवाद करूंगा.

पहले जो सवाल भेजे थे उन्हें मुख़्तसिर में फिर देता हूं. सवाल मेरे दोस्तों के हैं. पर मैं उनसे आजकल ज़रा (विचारों में) दूर चला गया हूं. पंडित जी और आप लोग हमेशा दक्खिन की ख़ूबियों की तारीफ़ करते हैं और तहे दिल से भलाई चाहते हैं. पर यहां उत्तर, दक्खिन का सवाल बुलन्द होता (बढ़ता) जाता है. 'हिन्द' के और कई 'पाकिस्तान' बनाना चाहते हैं! यहां 'द्राविड़ फ़ैडरेशन' और 'द्राविड़ प्रोगरेसिव फ़ेडरेशन' के बारे में सुना होगा. नहीं तो माननीय सुन्दरलाल जी से पूछ लीजिये. 'द्राविड़स्तान' वालों का कहना यह है :—

1. दक्खिन को उत्तर से अलग कर के 'द्राविड़स्तान' बनाना ज़रूरी है! क्योंकि उत्तर दक्खिन को चूस कर ग़ुलाम बनाना चाहता है. पंचसाला स्कीम में दक्खिन के लिये कोई बड़ी गुंजाइश नहीं है.

2. द्राविड़ और आर्यों की तहज़ीबें जुदा जुदा हैं. इसलिये अलग होना चाहिये.

3. दक्खिन की तहज़ीबी ज़बानों पर हिन्दी साम्राजवाद का ज़ोर व दबाव होने वाला है. हिन्दी या संस्कृत आर्यों की संस्कृति के निशान हैं. आर्यों का धर्म हिन्दू धर्म है. द्राविड़ अपने को हिन्दू कहना छोड़ दें.

4. दक्खिन को 'सेंट्रेल गवर्नमेन्ट' का मुंह ताकना पड़ता है. 'मुकम्मिल हिन्द' (अखंड भारत) कहने से या एक रहने से दक्खिन आगे नहीं बढ़ सकता."

ऊपर की दलीलें दोनों दलों की हैं. एक हद तक उनकी राय पहले ठीक जंचती थी. पर ठीक सोचने पर यह इनसानों में फूट डालने वाली चीज़ मालूम होती है. इन दोनों दलों में पहले के सदर ई. बी. रामसामी हैं और दूसरे के सी. एन. अन्नथुराई एम. ए. दोनों अपने को 'नैशनेलिस्ट' (बुद्धिवादी) मानते हैं, फ़्रीथिन्कर (आज़ाद विचारक) मानते हैं. शास्त्र, पुरान जैसी किताबों में ख़ास कर 'मनुस्मृति' में जाति भेद के भाव हैं. इसलिये उन सब को जला डालना चाहते हैं. यह मुझे ठीक जंचता है. इस से वहम और अंध-विश्वास दूर होंगे. कभी कभी धार्मिक कट्टरता वाले कांगरेसी नेताओं के मुंह से 'आर्य संस्कृति' 'भारतीय संस्कृति' और उसी को तमाम भारत के बाशिन्दों को चाहे वे किसी भी मज़हब या जाति के हों अपनाना चाहिये" जैसे शब्द उपदेश के रूप में फूटते हैं. "संस्कृत भारत की राष्ट्रभाशा हो, वही भारत की प्राचीन संपत्ति है" वाली ग़ैर ज़िम्मेदार बातें कहने वाले लोगों की वजह से उसका बुरा असर दक्खिन के दिलों पर ज़ोर से पड़ता है. श्री कैलाशनाथ काटजू 'संस्कृत' की तारीफ़ करते नहीं

اُوپر کے لیکھکوں کی چیزوں کا اُنواد کرنے والا ہوں۔ آپ کا لیکھ 'سوویت روس کے رسم رواج' کا انوواد کرونگا۔

پہلے جو سوال بھیجے تھے اُنھیں مختصر میں پھر دیتا ہوں۔ سوال میرے دوستوں کے ہیں۔ پر میں اُن سے آجکل ذرا (وچاروں میں) دور چلا گیا ہوں۔ پنڈت جی اور آپ لوگ ہمیشہ دکھن کی خوبیوں کی تعریف کرتے ہیں اور تہ دل سے بھلائی چاہتے ہیں۔ پر یہاں اُتر دکھن کا سوال بلند ہوتا (بڑھتا) جاتا ہے۔ 'ہند' کے اور کئی 'پاکستان' بنانا چاہتے ہیں! یہاں 'دراوڑ فیڈریشن' اور 'دراوڑ پروگریسو فیڈریشن' کے بارے میں سنا ہوگا۔ نہیں تو مانیہ پنڈت سندر لال جی سے پوچھ لیجئے۔ 'دراوڑستان' والوں کا کہنا یہ ہے :—

1. "دکھن کو اُتر سے الگ کرکے 'دراوڑستان' بنانا ضروری ہے! کیونکہ اُتر دکھن کو چوس کر غلام بنانا چاہتا ہے۔ پنچسالہ سکیم میں دکھن کے لئے کوئی بڑی گنجائش نہیں ہے۔

2. دراوڑ اور آریوں کی تہذیبیں جدا جدا ہیں۔ اِس لئے الگ ہونا چاہئے۔

3. دکھن کی تہذیبی زبانوں پر ہندی سامراجواد کا زور و دباؤ ہونے والا ہے۔ ہندی یا سنسکرت آریوں کی سنسکرتی کے نشان ہیں۔ آریوں کا دھرم ہندو دھرم ہے۔ دراوڑ اپنے کو ہندو کہنا چھوڑ دیں۔

4. دکھن کو 'سنٹرل گورنمنٹ' کا منھ تاکنا پڑتا ہے۔ 'مکمل ہند' (اکھنڈ بھارت) کہنے سے یا ایک رہنے سے دکھن آگے نہیں بڑھ سکتا۔"

اُوپر کی دلیلیں دونوں دلوں کی ہیں۔ ایک حد تک اُن کی رائے پہلے ٹھیک جنچتی تھی۔ پر ٹھیک سوچنے پر یہ انسانوں میں پھوٹ ڈالنے والی چیز معلوم ہوتی ہے۔ اِن دونوں دلوں میں پہلے کے صدر ای۔ بی۔ رام سامی ہیں اور دوسرے کے سی۔ این۔ اَنتھورائی ایم۔ اے۔ دونوں اپنے کو 'نیشنلسٹ' (بدھی وادی) مانتے ہیں' فری تھنکر (آزاد وچارک) مانتے ہیں۔ شاستر' پران جیسی کتابوں میں خاصکر 'منواسمرتی' میں جاتی بھید کے بھاؤ ہیں۔ اس لئے اُن سب کو جلا ڈالنا چاہتے ہیں۔ یہ مجھے ٹھیک جنچتا ہے۔ اِس سے وہم اور اندھ وشواس دور ہوں گے۔ کبھی کبھی دھارمک کٹرتا والے کانگریسی نیتاؤں کے منھ سے 'آریہ سنسکرتی' 'بھارتی سنسکرتی' اور اُسی کو تمام بھارت کے باشندوں کو چاہے وہ کسی بھی مذہب یا جاتی کے ہوں اپنانا چاہئے" جیسے شبد اُپدیش کے روپ میں پھوٹتے ہیں۔ "سنسکرت بھارت کی راشٹر بھاشا ہو' وہی بھارت کی پراچین سمپتی ہے" والی غیر ذمہ دار باتیں کہنے والے لوگوں کی وجہ سے اس کا برا اثر دکھن کے دلوں پر زور سے پڑتا ہے۔ شری کیلاش ناتھ کاٹجو 'سنسکرت' کی تعریف کرتے نہیں

सकते. शायद, 'आर्य संस्कृत' ही उनकी बोली में एक मात्र सभ्यावस्था का चिन्ह है!

द्राविड़ पार्टी लाठी लेकर ऐसी बकवास पर बहस करने उठते हैं. उनका कहना है—"द्राविड़ सभ्यता बहुत पुरानी है, प्राकृतिक वस्तुओं को पूजने वाली है, एक समाज और एक ईश्वर को मानने वाली सभ्यता है. आर्य पुरानों के झूठे मनगढ़त क़िस्सों में द्राविड़ जाति को जंगली जाति, अनार्य जाति क़रार दिया गया है. रामायन में द्राविड़ जाति को 'बन्दर' कहा गया है! द्राविड़ इतिहास में आने वाली नारियां पतिव्रता थीं. आर्य पुरानों की नारियों में ज़ियादातर इसका ज़िक्र ही नहीं कि 'पतिव्रत' किस चिड़िया का नाम है. अहल्या, द्रौपदी और तारा को ले लें, उनके चरित्र बहुत मशहूर हैं यहां तक कि अमरीका में भी! द्रौपदी के पांच पति थे फिर भी वह पतिव्रता नारी है! उसकी सास कुँति तो बड़े मियां सो बड़े मियां छोटे मियां सुबहान अल्ला! साबित हुई. पांच व्यक्तियों के सम्मेलन से उसके पांच पुत्र हुए! पांडु राजा तो नाम के लिये पति था! यह आर्य सभ्यता का इतिहास है!......

राम लीला के समय उत्तर में रावन की मूरत को जलाते हैं! द्राविड़ लोग उसे द्राविड़ जाति का वीर मानते हैं. इसलिये उनको बड़ा दुख होता है."

द्राविड़ पार्टी वाले मानते हैं कि—"राम अवध का राजा था, वह भगवान का अवतार नहीं था. वह ब्राह्मनों का कठपुतला था! इन्साफ़-पसन्द नहीं था. छिप कर बाली को क़त्ल किया था. वह वीर नहीं था. धोके से रावन की बहन ताड़का को मार डाला!"

आगे चल कर कहते हैं—"द्राविड़ों में यश था. क़ुरबानी का अंधविश्वास नहीं था. आर्य रिशियों के "यज्ञों" की रक्षा के लिये राम गया, 'यज्ञों' के ख़िलाफ़ रहने वाले द्राविड़ों को राक्षस या जंगली कहा गया. इसलिये हम रामायण को आग में जलाना चाहते हैं. 'द्राविड़िस्तान' मिलने पर मज़हब या ख़ुदा को मानने न मानने पर ज़ोर न डालेंगे. 'बुत-परस्ती' के सिवाय वह भी घरों में चाहे जिस तरह ख़ुदा की याद कर सकते हैं. 'आस्तिकता' को महत्व नहीं दिया जायगा. जाति और मज़हब के फ़र्क़ मिटा कर सबों के बीच ब्याह शादी होना चाहिये. विधवा विवाह का प्रचार होना चाहिये. जब दिल्ली वाले सियासतदान मुसलमानों को एक अलग क़ौम (नेशन) मान कर पाकिस्तान देने पर राज़ी हो गए तब हमें क्यों हिक़ारत की निगाह से देखते हैं? हम भी एक नेशन हैं! द्राविड़-स्तान ले कर ही रहेंगे. दिल्ली पर जहाद करेंगे. सुखी और आज़ाद द्राविड़स्तान हमारा हक़ है. एक दिन बन कर रहेगा......"

شاید 'آریہ سنسکرت' ہی اُن کی بولی میں ایک ماتر سبھیاوستھا کا چنھ ہے!

دراوڑ پارٹی والے لاٹھی لیکر ایسی بکواس پر بحث کرنے اٹھتے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے—"دراوڑ سبھیتا بہت پرانی ہے، پراکرتک وستوؤں کو پوجنے والی ہے، ایک سماج اور ایک ایشور کو ماننے والی سبھیتا ہے۔ آریہ پرانوں کے جھوٹے من گھڑت قصوں میں دراوڑ جاتی کو جنگلی جاتی، اناریہ جاتی قرار دیا گیا ہے۔ راماین میں آریہ جاتی کو 'بندر' کہا گیا ہے! دراوڑ اتہاس میں آنے والی ناریاں پتی ورتا تھیں۔ آریہ پرانوں کی ناریوں میں زیادہ تر اِس کا ذکر ہی نہیں کہ 'پتی ورت'، کس چڑیا کا نام ہے۔ 'اھلیا' دروپدی اور تارا کو لے لیں، اُن کے چرتر بہت مشہور ہیں یہاں تک کہ امریکہ میں بھی! دروپدی کے پانچ پتی تھے پھر بھی وہ پتی ورتا ناری ہے! اُسکی ساس کنتی تو بڑے میاں سو بڑے میاں چھوٹے میاں سبحان اللہ! ثابت ہوئی۔ پانچ ویکتیوں کے سمیلن سے اس کے پانچ پتر ہوئے! پانڈو راجا تو نام کے لئے پتی تھا! یہ آریہ سبھیتا کا اتہاس ہے!......

"رام لیلا کے سمے اُتر میں راون کی مورت کو جلاتے ہیں! دراوڑ لوگ اُسے دراوڑ جاتی کا ویر مانتے ہیں! اِس لئے ان کو بڑا دکھ ہوتا ہے۔"

"دراوڑ پارٹی والے مانتے ہیں کہ—"رام اودھ کا راجا تھا، وہ بھگوان کا اوتار نہیں تھا۔ وہ براہمنوں کا کٹھ پتلا تھا! انصاف پسند نہیں تھا۔ چھپ کر بالی کو قتل کیا تھا۔ وہ ویر نہیں تھا۔ دھوکے سے راون کی بہن تاڑکا کو مار ڈالا!"

آگے چل کر کہتے ہیں—"دراوڑوں میں یش تھا۔ قربانی کا اندھ وشواس نہیں تھا۔ آریہ رشیوں کے "یگیوں" کی رکشا کے لئے رام گیا، 'یگیوں' کے خلاف رہنے والے دراوڑوں کو راکشس یا جنگلی کہا گیا۔ اس لئے ہم راماین کو آگ میں جلانا چاہتے ہیں۔ 'دراوڑستان' ملنے پر مذہب یا خدا کو ماننے یا نہ ماننے پر ہم زور نہ ڈالیں گے۔ 'بت پرستی' کے سوائے وہ بھی گھروں میں چاہے جس طرح خدا کی یاد کر سکتے ہیں۔ 'آستکتا' کو مہتو نہیں دیا جائے گا۔ جاتی اور مذہب کے فرق مٹا کر سبھوں کے بیچ بیاہ شادی ہونا چاہئے۔ ودھوا وواہ کا پرچار ہونا چاہئے۔ جب دلی والے سیاست دان مسلمانوں کو ایک الگ قوم (نیشن) مان کر پاکستان دینے پر راضی ہو گئے تب ہمیں کیوں حقارت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں؟ ہم بھی ایک نیشن ہیں! 'دراوڑستان' لے کر ہی رہیں گے۔ دلی پر جہاد کرینگے۔ سکھی اور آزاد دراوڑستان ہمارا حق ہے۔ ایک دن بن کر رہے گا......"

ऊपर की बातों में तमिलनाड की तसवीर साफ़ नज़र आती है. "रावन सीता को चुरा ले गया था! वह भी क्यों? सीता से प्रेम नहीं थी! बदला लेने के लिये ले गया था! रावन द्राविड़ वीर था. कायर नहीं था. वह शास्त्रों का पंडित भी था. उसमें अक़्ले सलीम (Rationalism) का माद्दा था. द्राविड़ों में किसी भी नारी को अपने लायक़ पति चुनने का हक़ था. राय ज़ाहिर कर के शादी कर सकती थीं. मान लो रावन की बहन शूर्पनखा राम या उसके भाई लक्ष्मण दोनों में से किसी से शादी करना चाहती थी तो क्या उसकी सज़ा यह थी कि शूर्पनखा को बदशकल करके नाक-कान काट दिया गया! उसने भाई रावण से शिकायत की तो बहन के अपमान का बदला लेने के लिये सीता को ले गया था. रावण सीता से मोहित न हुआ, जब वह राम की चाल से, क्योंकि विभीशन ने राम से मिल कर भाई से राज हड़पने की साज़िश की थी, मारा गया, तब रावन की स्त्री सती होने चली तब उसने कहा—'हाय पति देव! कुल परम्परा की लाज के लिये तुम शहीद हुए, सीता मुझ से सुन्दर तो नहीं थी, सीता से तुम्हें मोह न होने पर भी तुम्हें बदनाम होना पड़ा. 'द्राविड़ संघवाले' आर्य शास्त्र व पुरान पढ़कर जनता को जहालत से जगाने के लिये 'शास्त्र व पुरानों की खोज' नामी किताबें शाया करते हैं और उनकी पोल खोलते हैं!" वाली बातें ज़ोर से प्रचार करते हैं!

महाभारत की कथा अमरीका में मशहूर है! मिस मेओ की 'मदर इंडिया' पढ़कर उन्होंने सारी बातें जान लीं हैं। फिर भी भारत से विलायत जाने वाले सज्जन आर्य संस्कृति संस्कृत भाषा की तारीफ़ करते नहीं थकते! सिनेमा की तारिका श्रीमती...जब अमरिका गईं तो किसी ने उनसे पूछा कि "तुम्हारे बाक़ी चार पतिदेव कहाँ हैं और क्या करते हैं?" द्रौपदी की कहानी का यह असर है! द्राविड़ों की अलग परम्परा है, भाशाएं हैं और आला क़दीम रिवायात बेशबहा ख़ज़ाने हैं. इसलिये हमारी मांग सही है!"

द्राविड़ संघ वाले उत्तर के पूंजीपतियों के दक्खिन में पैर बढ़ाने के सख़्त ख़िलाफ़ हैं. यहां से दस मील की दूरी पर "डालमिया पुरम" रेलवे स्टेशन है. पहले इस स्टेशन का नाम "कल्लकुडी" था. द्राविड़ संघ वालों ने मीटिंगों में 'डालमिया पुरम' नाम हटाने के प्रस्ताव पास किये और सरकार से अपील की. दक्खिन के स्टेशन में एक उत्तर के पूंजीपति का नाम सुनकर वह चिढ़ते हैं. आख़िर पिकेटिंग शुरू हो गई. 'डालमिया पुरम' स्टेशन के बोर्ड पर 'कल्लकुडी' लिख कर नोटिसें लगवाईं. इंजन के आगे नेता व वालन्टीयर लेट गए. दंगा हो गया, गोलियाँ चलीं. तीन आदमी मारे गये. रेल के अंदर ऊपरी बर्थ पर लेटा हुआ एक आदमी भी मर गया. गोली ने रेल के तख़्ते को पार करके उस आदमी के दिमाग़ को छेद डाला.

اوپر کی باتوں میں تمل ناڈ کی تصویر صاف نظر آتی ہے. "راون سیتا کو چرا لے گیا وہ بھی کیوں؟ سیتا سے پریم نہیں تھا! بدلا لینے کے لئے لے گیا تھا! راون دراوڑ ویر تھا. کایر نہیں تھا. وہ شاستروں کا پنڈت بھی تھا. اس میں عقل سلیم (Rationalism) کا مادہ تھا. دراوڑوں میں کسی بھی ناری کو اپنے لایق پتی چننے کا حق تھا. رائے ظاہر کر کے شادی کر سکتی تھیں. مان لو راون کی بہن شورپ نکھا رام یا اس کے بھائی لکشمن دونوں میں سے کسی سے شادی کرنا چاہتی تھی تو کیا اس کی سزا یہ تھی کہ شورپ نکھا کو بدشکل کر کے ناک کان کاٹ دیا گیا! اس نے بھائی راون سے شکایت کی تو بہن کے اپمان کا بدلہ لینے کے لئے وہ سیتا کو لے گیا تھا. راون سیتا سے موہت نہ ہوا. جب وہ رام کی چال سے' کیونکہ وبھیشن نے رام سے مل کر بھائی سے راج ہڑپنے کی سازش کی تھی' مارا گیا' تب راون کی استری ستی ہونے چلی تب اس نے کہا—' ہائے پتی دیو! کل پرمپرا کی لاج کے لئے تم شہید ہوئے' سیتا مجھ سے سندر تو نہیں تھی' سیتا سے تمہیں موہ نہ ہونے پر بھی تمہیں بدنام ہونا پڑا. "دراوڑ سنگھ والے" آریہ شاستر و پران پڑھکر جنتا کو جہالت سے جگانے کے لئے 'شاستر و پرانوں کی کھوج' نامی کتابیں شائع کرتے ہیں اور ان کی پول کھولتے ہیں!" باقی باتیں زور سے پرچار کرتے ہیں.

مہا بھارت کی کتھا امریکہ میں مشہور ہے! مس میئو کی ' مدر انڈیا ' پڑھکر انہوں نے ساری باتیں جان لی ہیں. " پھر بھی بھارت سے ولایت جانے والے سجن آریہ سنسکرتی و سنسکرت بھاشا کی تعریف کرتے نہیں تھکتے! سنیما کی تاریکا شری متی......جب امریکہ گئیں تو کسی نے ان سے پوچھا کہ تمہارے باقی چار پتی دیو کہاں ہیں اور کیا کرتے ہیں؟" دروپدی کی کہانی کا یہ اثر ہے! دراوڑوں کی الگ پرمپرا ہے' بھاشائیں ہیں اور عالی قدیم روایات کے بیش بہا خزانے ہیں. اس لئے ہماری مانگ صحیح ہے."

دراوڑ سنگھ والے اتر کے پونجی پتیوں کے دکھن میں پیر بڑھانے کے سخت خلاف ہیں. یہاں سے دس میل کی دوری پر "ڈالمیا پورم" ریلوے اسٹیشن ہے. پہلے اس اسٹیشن کا نام ' کل کڈی ' تھا. دراوڑ سنگھ والوں نے میٹنگوں میں ' ڈالمیا پورم ' نام ہٹانے کے پرستاؤ پاس کئے اور سرکار سے اپیل کی. دکھن کے اسٹیشن میں ایک اتر کے پونجی پتی کا نام سن کر وہ چڑھتے ہیں. آخر میں ' پکیٹنگ ' شروع ہو گئی. ' ڈالمیا پورم ' اسٹیشن کے بورڈ پر ' کل کڈی ' لکھ کر نوٹس لگوائیں. انجن کے آگے نیتا و والنٹیر لیٹ گئے. دنگا ہوا' گولیاں چلیں. تین آدمی مارے گئے. ریل کے اندر اوپری' برتھ پر لیٹا ہوا ایک آدمی بھی مر گیا. گولی نے ریل کے تختے کو پار کر کے اس آدمی کے دماغ کو چھید ڈالا.

राजा जी की नई तालीम योजना के ख़िलाफ़ सत्याग्रह-मार्च करके क़रीब एक हज़ार लोग गिरफ़तार हुए. उन में द्राविड़ प्रोगरेसिव संघ के सदर सी. एन. अन्नथुराइ भी हैं. राजा जी की तजवीज़ है कि अपनी-अपनी परम्परा का पेशा हर एक को अपनाना चाहिये. स्कूल में पांच घन्टे की पढ़ाई के बदले तीन घन्टे की हो. उस में 'शिफ़्ट' का ढंग हो. शुरू की तालीम से पांचवे दरजे तक के बच्चों को उनके मां बाप के पेशे सीख लेने चाहियें.

द्राविड़ संघ कहता है—"इस से ब्राह्मन आर्य जाति के बच्चे ही फ़ायदा उठाएंगे. धोबी का बच्चा कपड़े धोएगा, कुम्हार का बच्चा घड़ा बनायेगा, मछवे का लड़का स्कूल में भी मछली पकड़ेगा. हज्जाम का लड़का हजामत करेगा, बढ़ई का लड़का बढ़ईगीरी करेगा, गरड़रिये का लड़का गाय, बैल बकरी चरायेगा, सोनार लोहार के लड़के अपने अपने पेशे करेंगे या सीखेंगे. ब्राह्मन लड़का क्या करेगा? प्रोहित का काम सीखेगा? नहीं! राजा जी की आर्य जाति का लड़का शहर में पढ़ेगा और दूसरी जातियों पर राज करेगा. गांव में ऐसी पढ़ाई होगी तो द्राविड़ जाति के लोग आगे न बढ़ेंगे. वह तो निहायत ग़रीब हैं. इस आर्य तहज़ीब ने द्राविड़ जाति को इस हालते ज़वाल तक पहुंचा दिया है." और एक बात! पिछले साल में तमिल नाड के तमाम रेलवे स्टेशनों पर के हिन्दी साइन बोर्डों को चारकोल से पोता गया था. "आर्य देव नागरी लिपि हिन्दी ऊपर है. द्राविड़ भाषा की लिपि नीचे है. नागरी देवता की लिपि है और द्राविड़ लिपि शायद जंगली राक्षस लिपि हो!" यह कह कर आन्दोलन खड़ा किया गया.

'भाशावादी प्रान्त' की तहरीक के सम्बन्ध में 'पंडित जवाहरलाल जी ने कहा था--"गाड़ियों को रोकना नानसेन्स" है. उसके ख़िलाफ़ रेलों को रोकने की तहरीक और ज़ोरदार हुई. द्राविड़ों को 'नानसेन्स' कहने का चैलेंज नागवार लगा. तूतिकोरिन में इसके लिये दंगा हो गया. उसमें भी कुछ मारे गए.

इस साल आर्य हिन्दू धर्म की मूरतों के "गनेश" की तरह मिट्टी के पुतले बना कर उन्हें खुले मैदानों में तोड़ डाला गया. इसके सदर 75 साल के ई० बी० राम सामी थे. चिट्ठी एक लेख बन गई है. माफ़ करें! मैं उन पुरानी तहज़ीबों में न पड़ कर एक नई तहज़ीब का 'सपना' देखता हूँ जो मार्क्स, लेनिन, एंजल्स और गांधी जी ने बताई है. यहां के गुमराहियों को ठीक रास्ता बताना हो तो विनोबा जी और सुन्दरलाल जैसे सज्जनों को आना चाहिये. द्राविड़ संघों की दलीलों को सुनना चाहिये. प्रेम के साथ हिन्दुस्तानी का प्रचार करें, देश की ख़ातिर हिन्दी नाम को छोड़ दें.

आपका भाई

'नया हिन्द' ग्राहक नं० 62 —डाक्टर राजन

راجا جی کی نئی تعلیم یوجنا کے خلاف ستیہ گرہ مارچ کر کے قریب ایک ہزار لوگ گرفتار ہوئے. اُن میں دراوڑ پروگریسو سنگھ کے صدر سی. این. انتھو رائی بھی ہیں. راجا جی کی تجویز ہے کہ اپنی اپنی پرمپرا کا پیشہ ہر ایک کو اپنانا چاہئے. اسکول میں پانچ گھنٹے کی پڑھائی کے بدلے تین گھنٹے کی ہو. اس میں 'شفٹ' کا ڈھنگ ہو. شروع کی تعلیم سے پانچویں درجہ تک کے بچوں کو ان کے ماں باپ کے پیشے سیکھ لینے چاہئیں!

دراوڑ سنگھ کہتا ہے— "اس سے براہمن آریہ جاتی کے بچے ہی فائدہ اُٹھائیں گے. دھوبی کا بچہ کپڑے دھوئے گا، کمہار کا بچہ گھڑا بنائے گا، مچھوے کا لڑکا اسکول میں بھی مچھلی پکڑیگا، حجام کا لڑکا حجامت کریگا، بڑھئی کا لڑکا بڑھئی گیری کریگا، گڑریے کا لڑکا گائے، بیل، بکری چرائے گا، سنار لوہار کے لڑکے اپنے اپنے پیشے کرینگے یا سیکھیں گے. براہمن لڑکا کیا کریگا؟ پروہت کا کام سیکھے گا؟ نہیں! راجا جی کی آریہ جاتی کا لڑکا شہر میں پڑھے گا اور دوسری جاتیوں پر راج کرے گا. گاؤں میں ایسی پڑھائی ہوگی تو دراوڑ جاتی کے لوگ آگے نہ بڑھینگے. وہ تو نہایت غریب ہیں. اس آریہ تہذیب نے دراوڑ جاتی کو اس حالت زوال تک پہونچا دیا ہے." اور ایک بات! پچھلے سال میں تمل ناڈ کے تمام ریلوے اسٹیشنوں پر کے ہندی سائن بورڈوں کو چارکول سے پوتا گیا تھا. "آریہ دیوناگری لپی ہندی اوپر ہے. دراوڑ بھاشا کی لپی نیچے ہے." ناگری دیوتا کی لپی ہے اور دراوڑ لپی شاید جنگلی راکشس لپی ہو!" یہ کہکر آندولن کھڑا کیا گیا.

'بھاشا وادی پرانت' کی تحریک کے سمبندھ میں 'پنڈت جواہر لال جی نے کہا تھا— "گاڑیوں کا روکنا نان سینس ہے". اس کے خلاف ریلوں کو روکنے کی تحریک اور زوردار ہوئی. دراوڑوں کو نان سینس کہنے کا چیلنج ناگوار لگا. توتی کورن میں اس کے لئے دنگا ہوگیا. اس میں بھی کچھ مارے گئے.

اس سال آریہ ہندو دھرم کی مورتوں کے "گنیش" کی طرح مٹی کے پتلے بنا کر انہیں کھلے میدانوں میں توڑ ڈالا گیا. اس کے صدر 75 سال کے ای. بی. رام سامی تھے. چٹھی ایک لیکھ بن گئی ہے. معاف کریں. میں ان پرانی تہذیبوں میں نہ پڑ کر ایک نئی تہذیب کا 'سپنا' دیکھتا ہوں جو مارکس، لینن اور گاندھی جی نے بتائی ہے. یہاں کے گمراہیوں کو ٹھیک راستہ بتانا ہو تو ونوبا جی اور سندر لال جیسے سجنوں کو آنا چاہئے. دراوڑ سنگھوں کی دلیلوں کو سننا چاہئے. پریم کے ساتھ ہندوستانی کا پرچار کریں، دیش کی خاطر ہندی نام کو چھوڑ دیں.

آپکا بھائی

'نیا ہند' گراہک نمبر 62 —ڈی. راجن

ऊपर का ख़त

[ऊपर का लेख दक्खिन के एक हिन्दी हिन्दुस्तानी प्रेमी और भारत की एकता के हामी दक्खिनी भाई का लिखा हुआ है. हमने इसे ज्यों का त्यों उन्हीं की भाशा में दिया है. इससे दक्खिन भारत के आजकल के हालात पर और वहां की विचार धाराओं पर अच्छी रोशनी पड़ती है. इस से हम सब को शान्ति और संजीदगी के साथ सोचने और अपनी कमज़ोरियों को जानने की भी सामग्री मिलती है. इसीलिये हम इसे ख़ुशी से 'नया हिन्द' में जगह दे रहे हैं--ऐडीटर]

हम द्राविड़स्तान या इस तरह के कोई भी और अलग-अलग 'स्तान' बना कर देश के और अधिक टुकड़े करने के ख़िलाफ़ हैं. दुनिया इस समय यदि हो सके तो, एक 'जनराज' 'विश्व राज', या 'वर्ल्ड स्टेट' की तरफ़ बढ़ने की कोशिश कर रही है. वैसे भी आजकल की दुनिया में बहुत छोटी-छोटी इकाइयां न अन्तर्राश्ट्रीय हालत पर कोई असर डाल सकती हैं और न देर तक इज़्ज़त के साथ अपनी हस्ती और आज़ादी क़ायम रख सकती हैं. मिसालें हमारे घर के पास मौजूद हैं. हम उन मिसालों में जाना नहीं चाहते. यह एक अकाट्य सच्चाई है कि देश का भला इस समय मिल कर चलने में है, टुकड़े-टुकड़े होने में नहीं.

दूसरी तरफ़ हम इस से भी इनकार नहीं कर सकते कि जो दलीलें द्राविड़स्तान चाहने वाले भाइयों की तरफ़ से इस ख़त में दी गई हैं. उनमें बहुत कुछ सच्चाई है. इस तरह की मांग और इस तरह के आन्दोलन की ज़िम्मेदारी जितनी आन्दोलन करने वालों पर है उस से कहीं ज़ियादा उन लोगों पर है जो उस आन्दोलन को ग़लत कहते हैं. तमिल प्रदेश में 'कल्लकुडी' का नाम बदल कर 'डालमिया पुरम' कर देना दोहरा पाप है. एक तरफ़ यह उस प्रदेश की भाशा और रहन-सहन पर ना जायज़ हमला है और दूसरी तरफ़ ग़रीब जनता के ऊपर पूंजीपतितों की ज़बरदस्ती धाक जमाना है. रामायन हो या महाभारत, मनुस्मृति हो या कोई और किताब, जो लोग इनमें से किसी को भी निर्भ्रान्त और हर देश, हर काल और हर बात के लिये प्रमान मानते हैं वह उतने ही ग़लत हैं जितने वह जो किसी किताब की बात को ठीक न मानने के कारन उसे जला देना चाहते हैं.

हठधर्मी भी दोनों तरफ़ है. रामायन या महाभारत बड़े ऊंचे दरजे की किताबें हैं, संसार से साहित्य में उनका बड़ा ऊंचा स्थान है. अब भी हमें उन से बड़े-बड़े सबक़ मिल सकते हैं. पर हम रामायन ही को प्रमान मान लें तब

اُوپر کا خط

[اوپر کا لیکھ دکھن کے ایک ہندی ہندستانی پریمی اور بھارت کی ایکتا کے حامی دکھنی بھائی کا لکھا ہوا ہے. ہم نے اِسے جیوں کا تیوں اُنہیں کی بھاشا میں دیا ہے. اِس سے دکھن بھارت کے آجکل کے حالات پر اور وہاں کی وچار دھاراوں پر اچھی روشنی پڑتی ہے. اِس سے ہم سب کو شانتی اور سنجیدگی کے ساتھ سوچنے اور اپنی کمزوریوں کو جاننے کی بھی سامگری ملتی ہے. اِسی لئے ہم اِسے خوشی سے 'نیا ہند' میں جگہ دے رہے ہیں — ایڈیٹر]

ہم دراوڑستان یا اِس طرح کے کوئی بھی اور الگ الگ 'اِستان' بناکر دیش کے اور ادھک ٹکڑے کرنے کے خلاف ہیں. دنیا اِس سمے' یہ ہوسکے تو' ایک 'جن راج' 'وشوراج' یا 'ورلڈ اسٹیٹ' کی طرف بڑھنے کی کوشش کر رہی ہے. ویسے بھی آجکل کی دنیا میں بہت چھوٹی چھوٹی اکائیاں نہ انترراشٹریہ حالت پر کوئی اثر ڈال سکتی ہیں اور نہ دیر تک عزت کے ساتھ اپنی ہستی اور آزادی قایم رکھ سکتی ہیں. مثالیں ہمارے گھر کے پاس موجود ہیں. ہم اُن مثالوں میں جانا نہیں چاہتے. یہ ایک اکاٹیہ سچائی ہے کہ دیش کا بھلا اس سمے ملکر چلنے میں ہے' ٹکڑے ٹکڑے ہونے میں نہیں.

دوسری طرف ہم اِس سے بھی اِنکار نہیں کرسکتے کہ جو دلیلیں دراوڑستان چاہنے والے بھائیوں کی طرف سے اِس خط میں دی گئی ہیں اُن میں بہت کچھ سچائی ہے. اِس طرح کی مانگ اور اِس طرح کے آندولن کی ذمہ داری جتنی آندولن کرنے والوں پر ہے اُس سے کہیں زیادہ اُن لوگوں پر ہے جو اِس آندولن کو غلط کہتے ہیں. تمل بھاشا میں 'کل کڈی' کا نام بدل کر 'ڈالمیاپورم' کردینا دوہرا پاپ ہے. ایک طرف یہ اُس پردیش کی بھاشا اور رہن سہن پر ناجائز حملہ ہے اور دوسری طرف غریب جنتا کے اُوپر پونجی پتیوں کی زبردستی دھاک جمانا ہے. راماین ہو یا مہابھارت' منوسمرتی ہو یا کوئی اور کتاب' جو لوگ اِن میں سے کسی کو بھی نربھرانت اور ہر دیش' ہر کال اور ہر بات کے لئے پرمان مانتے ہیں وہ اتنے ہی غلط ہیں جتنے وہ جو کسی کتاب کی کسی بات کو ٹھیک نہ ماننے کے کارن اُسے جلا دینا چاہتے ہیں.

ہٹ دھرمی دونوں طرف ہے. راماین یا مہابھارت بڑے اُونچے درجے کی کتابیں ہیں' سنسار کے ساہتیہ میں اُن کا بڑا اُونچا استھان ہے. اب بھی ہمیں اُن سے بڑے بڑے سبق مل سکتے ہیں. پر ہم راماین ہی کو پرمان لیں تب

भी इसमें शक नहीं कि रावन जिस देश पर राज करता था वहां की सभ्यता उस समय की अवध की सभ्यता से ऊंची थी. डाक्टर भगवान दास ने उन दोनों सभ्यताओं की तुलना करते हुए रावन की सभ्यता को 'मिकेनिकल' यानी मशीनी और उस समय के आर्यों की सभ्यता को 'पैस्टोरल' यानी चरवाहों की सभ्यता बताया है. यह भी ज़ाहिर है कि वह सारी कहानी अगर इधर के किसी विद्वान की जगह लंका के किसी विद्वान की लिखी हुई होती तो कहानी बिलकुल दूसरी ही होती. हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि लंका के दरबार में बड़े बड़े विद्वानों और पंडितों की कमी नहीं थी. रावन ख़ुद बहुत बड़ा पंडित था. किसी कम सभ्य लोगों का अपने से अधिक सभ्य लोलों को लड़ाई में हरा देना या मिटा डालना भी इतिहास में कोई अनोखी बात नहीं है. नीम जंगली रोम वालों ने अपने समय की सब से सभ्य क़ौम यूनानियों को मिटा डाला. असभ्य गाल और वेन्डाल जातियों ने अपने से कहीं सभ्य रोम वालों को ख़त्म कर दिया. इतिहास में मिसालें भरी पड़ी हैं. जो लोग बीसवीं सदी में भी यह मानते हैं कि सचमुच हनुमान जी के दुम थी और वह बन्दर थे उनकी अक़्ल को हम क्या कहें? इनसानों की किसी जाति को बन्दर कह देना भी कहने वाले की ऊंची संस्कृति की पहचान नहीं है और फिर उन्हें देवता मान कर पूजने लगना भी एक ऐसा अंधविश्वास है जो किसी राष्ट्र को ऊपर उठाने में मदद नहीं दे सकता न किसी स्त्री की नाक काट देना या कटवा देना या साल के साल अपने या अपने पुरखों से किसी समय के शत्रु का गुड्डा बना कर उसे फूंकना या किसी नगर या देश की नक़ल बना कर उसे आग लगाना संस्कृति या सुरुचि का लक्षन है. विभीशन को कट्टर अंध विश्वासी लोग चाहे कुछ भी मानें दुनिया उसे विश्वास घातक स्वदेश द्रोही कह कर ही याद करेगी. फिर भी हम कह चुके हैं कि वाल्मीकी रामायन और तुलसी रामायन दोनों दुनिया के साहित्य में बड़ा ऊंचा स्थान रखती हैं. दोनों से हमें बड़ी क़ीमती शिक्षा मिल सकती है. दोनों दुनिया के अमर ग्रन्थों में से हैं. इस तरह के किसी ग्रन्थ को कोई निर्भ्रान्त मान बैठे, या ईश्वर वाक्य मान बैठे, या इतिहास मान बैठे तो इस में क़सूर मानने वाले का है, उन पुस्तकों के लिखने वालों का नहीं. हम यह सब केवल इस लिये कह रहे हैं कि इन बातों में हमें कट्टरता, रूढ़ी पूजा, धर्मान्धता, और अन्ध-विश्वासों से ऊपर उठ कर बुद्धि और विवेक से काम लेना चाहिये नहीं तो नुक़सान हमारा ही है दुनिया का नहीं.

ऐसे ही मनुस्मृति में यदि जन्म से जाति का समर्थन मिलता है तो—और डाक्टर भगवान दास का कहना है कि नहीं मिलता—तो हम उसे या ऐसी ही और बातों को

...میں شک نہیں کہ راون جس دیش ... تھا وہاں کی سبھیتا اُس سمے کی اودھ ... سے اونچی تھی. ڈاکٹر بھگوان داس نے اُن ... سبھیتاؤں کی تولنا کرتے ہوئے راون کی سبھیتا کو ... یعنی مشینی اور اُس سمے کے آریوں کی ... 'پیسٹورل' یعنی چرواہوں کی سبھیتا بتایا ... ظاہر ہے کہ وہ ساری کہانی اگر اِدھر کے کسی ... جگہ لنکا کے کسی ودوان کی لکھی ہوئی ہوتی ... بالکل دوسری ہی ہوتی. ہمیں یہ بھی نہیں ... چاہئے کہ لنکا کے دربار میں بڑے بڑے ودوانوں اور ... کی کمی نہیں تھی. راون خود بہت بڑا پنڈت ... کم سبھیہ لوگوں کا اپنے سے ادھک سبھیہ لوگوں ... میں ہرا دینا یا مٹا ڈالنا بھی اتہاس میں ... انوکھی بات نہیں ہے. نیم جنگلی روم والوں نے اپنے ... سب سے سبھیہ قوم یونانیوں کو مٹا ڈالا. اسبھیہ ... وینڈال جاتیوں نے اپنے سے کہیں سبھیہ روم والوں ... کر دیا. اتہاس میں مثالیں بھری پڑی ہیں. جو ... بیسویں صدی میں بھی یہ مانتے ہیں کہ سچ مچ ... جی کے دم تھی اور وہ بندر تھے اُن کی عقل کو ... کہیں؟ انسانوں کی کسی جاتی کو بندر کہہ دینا ... والے کی اونچی سنسکرتی کی پہچان نہیں ہے ... انہیں دیوتا مان کر پوجنے لگنا بھی ایک ایسا ... وشواس ہے جو کسی راشٹر کو اوپر اُٹھانے میں مدد ... دے سکتا نہ کسی اِستری کی ناک کاٹ دینا یا ... یا سال کے سال اپنے یا اپنے پرکھوں کے کسی سمے ... کا گڈا بناکر اُسے پھونکنا یا کسی نگر یا دیش کی ... بناکر اُسے آگ لگانا سنسکرتی یا سورچی کا لکشن ہے. ... کو کٹر اندھ وشواسی لوگ چاہے کچھ بھی مانیں ... وشواس گھاتک سودیش دروہی کہہ کر ہی یاد ... پھر بھی ہم کہہ چکے ہیں کہ بالمیکی راماین ... راماین دونوں دنیا کے اتہاس میں بڑا اونچا ... رکھتی ہیں. دونوں سے ہمیں بڑی قیمتی شکشا ... سکتی ہے. دونوں دنیا کے امر گرنتھوں میں سے ہیں. ... طرح کے کسی گرنتھ کو کوئی نربھرانت مان بیٹھے' ... واکیہ مان بیٹھے' یا اتہاس مان بیٹھے تو اِس ... قصور ماننے والے کا ہے اُن پستک کے لکھنے والوں کا ... ہم یہ سب کیول اِس لئے کہہ رہے ہیں کہ اِن باتوں ... میں کٹرتا، روڑھی پوجا، دھرماندھتا اور اندھ ... سے اوپر اُٹھ کر بدھی اور وویک سے کام لینا چاہئے ... تو نقصان ہمارا ہی ہے دنیا کا نہیں.

... ہی منو اسمرتی میں یدی جنم سے جاتی کا سمرتھن ... ہے تو—اور ڈاکٹر بھگوان داس کا کہنا ہے ... نہیں ملتا—تو ہم ... اسے یا ایسی ہی اور باتوں کو

छोड़ कर मनुस्मृति की अच्छी अच्छी बातों को क्यों न ले लें. मनु के धर्म के दस लच्छनों को बुरा कौन कह सकता है? उससे बढ़कर व्यापक धर्म की परिभाशा और हो भी क्या सकती है? हम हर पेड़ में से कांटों को छोड़ कर फूल क्यों न चुन लें, और फिर हर फूल में से शहद की मक्खी की तरह ज़ीरा छोड़ कर शहद जमा कर लेना क्यों न सीखें.

इसी तरह भाशा के बारे में संस्कृत भाशा हमें प्यारी है. संस्कृत में लिखे हुए उपनिषद, गीता और योग सूत्र सारी दुनिया की क़ीमती पूंजी हैं साथ ही जब हम अपनी प्यारी बोलचाल की भाशा से संस्कृत की तुलना करते हैं तो हमें कबीर साहब का यह पद बिलकुल ठीक मालूम होता है :—

सन्सकिरत है कूप जल, भाशा बहता नीर.

याद रहे कबीर साहब ने 'संस्कृत' नहीं लिखा 'सन्सकिरत' लिखा है और ठीक लिखा है. ऐसे ही संस्कृत भारत की दूसरी उन्नत भाशाओं जैसे बंगला, तमिल, मराठी, गुजराती वग़ैरा की जगह नहीं ले सकती. न हिन्दी उनकी जगह ले सकती है. हमें याद रखना चाहिये कि इन में से अनेक भाशाएं हिन्दी से कहीं अधिक उन्नत हैं. हिन्दी भी सारे भारत के लिये सूबे सूबे के बीच के व्यवहार की भाशा तभी हो सकती है जब वह बोलचाल की भाशा के अधिक से अधिक निकट हो उसमें किसी तरह की तंगनज़री न हो, वह जहां तक हो सके भारत की सब भाशाओं का संगम दिखाई दे, और देश की किसी भी दूसरी भाशा को मिटा कर उसकी जगह लेने का न साहस करे और न दावा. हिन्दी को यदि बचना और चमकना है तो उसे प्रान्त प्रान्त के बीच के डाकिया, हरकारे और सेवक का काम करना होगा, देवी या रानी बन कर पुजने का पाप मन में नहीं लाना होगा. जो लोग संस्कृत को इस देश की राष्ट्र भाशा बनाने के फेर में हैं वह संस्कृत का मान नहीं बढ़ा रहे हैं, जाने या अनजाने उसे कीचड़ में घसीट रहे हैं, और अपनी आंखों पर धर्मान्धता की पट्टी बांध कर एक निकम्मा सपना देख रहे हैं. हमें इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि पिछले तीस बरस के अन्दर हिन्दी को इतना नुक़सान उसके विरोधियों से नहीं पहुंचा जितना उसके नासमझ और कट्टर 'नादान दोस्तों' से.

'सेब' को फ़ारसी बता कर 'उत्कोल' कहने वाले, रेल, टिकट और कुली को अंगरेज़ी बता कर वाष्पयान, प्रवेश पत्र, और भारवाहक कहने कहलाने वाले, और पृथ्वी की जगह ज़मीन लिखने वाले लड़कों के इम्तहान में नम्बर काटने वाले लोग हिन्दी के इसी

چھوڑ کر منو اسمرتی کی اچھی اچھی باتوں کو کیوں نہ لے لیں. منو کے دھرم کے دس لکشنوں کو برا کون کہہ سکتا ہے؟ اُس سے بڑھکر ویاپک دھرم کی پریبھاشا اور ہو بھی کیا سکتی ہے؟ ہم ہر پیڑ میں سے کانٹوں کو چھوڑ کر پھول کیوں نہ چن لیں، اور پھر ہر پھول میں سے شہد کی مکھی کی طرح زیرا چھوڑ کر شہد جمع کر لینا کیوں نہ سیکھیں۔

اِسی طرح بھاشا کے بارے میں سنسکرت بھاشا ہمیں پیاری ہے۔ سنسکرت میں لکھے ہوئے اُپنشد، گیتا اور یوگ سوتر ساری دنیا کی قیمتی پونجی ہیں۔ ساتھ ہی جب ہم اپنی پیاری بول چال کی بھاشا سے سنسکرت کی تولنا کرتے ہیں تو ہمیں کبیر صاحب کا یہ پد بالکل ٹھیک معلوم ہوتا ہے :—

سنسکرت ہے کوپ جل، بھاشا بہتا نیر۔

یاد رہے کبیر صاحب نے سنسکرت نہیں لکھا 'سنس کرت' لکھا ہے اور ٹھیک لکھا ہے۔ ایسے ہی سنسکرت بھارت کی دوسری انت بھاشاؤں جیسے بنگلا، تمل، مراٹھی، گجراتی وغیرہ کی جگہ نہیں لے سکتی۔ نہ ہندی اُن کی جگہ لے سکتی ہے۔ ہمیں یاد رکھنا چاہئے کہ اُن میں سے انیک بھاشائیں ہندی سے کہیں ادھک انت ہیں۔ ہندی بھی سارے بھارت کے لئے صوبے صوبے کے بیچ کے بیوہار کی بھاشا تبھی ہو سکتی ہے جب وہ بول چال کی بھاشا کے ادھک سے ادھک نکٹ ہو، اِس میں کسی طرح کی تنگ نظری نہ ہو، وہ جہاں تک ہو سکے بھارت کی سب بھاشاؤں کا سنگم دکھائی دے، اور دیش کی کسی بھی دوسری بھاشا کو مٹا کر اُس کی جگہ لینے کا نہ ساہس اور نہ دعوہ۔ ہندی کو یدی بچنا اور چمکنا ہے تو اُسے پرانت پرانت کے بیچ کے ڈاکیا، ہرکارے اور سیوک کا کام کرنا ہوگا، دیوی یا رانی بن کر پوجنے کا پاپ من میں نہیں لانا ہوگا۔ جو لوگ سنسکرت کو راشٹر بھاشا بنانے کے پھیر میں ہیں وہ سنسکرت کا مان نہیں بڑھا رہے ہیں، جانے یا انجانے اُسے کیچڑ میں گھسیٹ رہے ہیں اور اپنی آنکھوں پر دھرماندھتا کی پٹی باندھ کر ایک نکما سپنا دیکھ رہے ہیں۔ ہمیں اس میں ذرا بھی سندیہ نہیں کہ پچھلے تیس برس کے اندر ہندی کو اتنا نقصان اُس کے ورودھیوں سے نہیں پہونچا جتنا اُس کے نا سمجھ اور کٹر نادان دوستوں سے۔

'سیب' کو فارسی بتا کر 'اُتکول' کہنے والے، ریل، ٹکٹ اور قلی کو انگریزی بتا کر واشپیان، پرویش پتر، اور بھارواہک کہنے کہلانے والے، اور پرتھوی کی جگہ زمین لکھنے والے لڑکوں کے امتحان میں نمبر کاٹنے والے لوگ ہندی کے اِسی

तरह के 'नादान दोस्त' हैं जो उसके पनपने और बढ़ने में सब से बड़ी रुकावट हैं. माना भारत की और शायद दुनिया की बहुत सी भाशाओं का निकास किसी समय संस्कृत से ही हुआ है पर पोती को मार कर उसकी जगह दादी या नानी को फिर ला कर बिठाने की कोशिश पागलपन की कोशिश है.

अन्त में जो लोग भारत की अखन्डता और स्वतंत्रता को बनाए रखना चाहते हैं और उसे ख़ुशहाली और तरक़्क़ी के पथ पर बढ़ते देखना चाहते हैं उनसे हमारी प्रार्थना है कि वह अपने दिलों को हर तरह की संकीर्णता और कट्टरता से पाक रक्खें. वह यह समझ लें कि दुनिया बहुत तेज़ी के साथ आगे को बढ़ रही है. घड़ी की सुइयां कभी पीछे को नहीं चलाई जा सकतीं. दुनिया की कोई क़ौम भगवान की चहेती क़ौम नहीं है. किसी देश का कोई ज़माना बुराइयों और कमज़ोरियों से ख़ाली नहीं हुआ. अच्छे से अच्छा रीत रिवाज भी समय पा कर सड़ने और दुनिया को नुक़सान पहुंचाने लगता है. जात पांत, ब्राह्मनों और ऊंची जात वालों का किसी तरह का भी बड़प्पन, छुआ छूत और ऊंच नीच सब अब सड़ी गली और ज़हरीली रूढ़ियां हैं जो भारतीय समाज को घुन की तरह खा रही हैं. हमें इन्हें जड़ मूल से ख़तम करना होगा और फिर धरती में इतने नीचे गाड़ना होगा कि वह फिर कभी सर न उठा सकें. हमें अपने सदाचार को ऊंचा करना होगा. सामाजिक और आर्थिक समता की तरफ़ बढ़ना होगा. हर प्रान्त, हर धर्म और हर गिरोह के लोगों को हमें अपने अपने रहन सहन के ढंग और अपने अपने रीत रिवाज पालने में एक बराबर पूरी आज़ादी देनी होगी. हमें इस देश को स्टीम रोलर घुमा कर एक रंग का लान या सफ़ा चट मैदान नहीं बनना है. हमें उसे रंग बिरंगे फूलों की अलग अलग क्यारियों और तरह तरह के दरख़्तों और लताओं का एक विशाल सुन्दर बाग़ बनाना है और उन सब को सींचने के लिये बीच बीच में बराबरी, भाई चारे और प्रेम की नहरें बहाना है. हम एकता के इन सुनहरे असूलों को सामने रक्खें तो फूट के बीज जहां भी पड़ेंगे हमारी मट्टी में पड़ कर अपने आप सड़ जाएंगे. और सब रास्ते बरबादी के रास्ते हैं हम सबका भगवान हमें समझ और हिम्मत दे कि हम ठीक रास्ते पर चल सकें.

—सुन्दरलाल

نادان دوست ہیں جو اس کے پنپنے اور بڑھنے میں سب سے بڑی رکاوٹ ہیں۔ مانا بھارت کی اور شاید دنیا کی بہت سی بھاشاؤں کا نکاس کسی سمے سنسکرت سے ہی ہوا ہے پر پوتی کو مار کر اسکی دادی یا نانی کو پھر لا کر بٹھانے کی کوشش پاگل پن کی کوشش ہے۔

انت میں جو لوگ بھارت کی اکھنڈتا اور سوتنترتا کو بنائے رکھنا چاہتے ہیں اور اسے خوشحالی اور ترقی کے پتھ پر بڑھتے دیکھنا چاہتے ہیں ان سے ہماری پرارتھنا ہے کہ وہ اپنے دلوں کو ہر طرح کی سنکیرنتا اور کٹرتا سے پاک رکھیں۔ وہ یہ سمجھ لیں کہ دنیا بہت تیزی کے ساتھ آگے کو بڑھ رہی ہے۔ گھڑی کی سوئیاں کبھی پیچھے کو نہیں چلائی جا سکتیں۔ دنیا کی کوئی قوم بھگوان کی چہیتی قوم نہیں ہے۔ کسی دیش کا کوئی زمانہ برائیوں اور کمزوریوں سے خالی نہیں ہوا۔ اچھے سے اچھا ریت رواج بھی سمے پاکر سڑنے اور دنیا کو نقصان پہونچانے لگتا ہے۔ جات پانت، براہمنوں اور اونچی جات والوں کا کسی طرح کا بھی بڑپن، چھوا چھوت اور اونچ نیچ سب اب سڑی گلی اور زہریلی روڑھیاں ہیں جو بھارتی سماج کو گھن کی طرح کھا رہی ہیں۔ ہمیں انہیں جڑ مول سے ختم کرنا ہوگا اور پھر دھرتی میں اتنے نیچے گاڑنا ہوگا کہ وہ پھر کبھی سر نہ اٹھا سکیں۔ ہمیں اپنے سداچار کو اونچا کرنا ہوگا۔ سماجک اور آرتھک سمتا کی طرف بڑھنا ہوگا۔ ہر پرانت، ہر دھرم اور ہر گروہ کے لوگوں کو ہمیں اپنے اپنے رہن سہن کے ڈھنگ اور اپنے اپنے رواج پالنے میں ایک برابر پوری آزادی دینی ہوگی۔ ہمیں اِس دیش کو اسٹیم رولر گھما کر ایک رنگ کا لان یا صفا چٹ میدان نہیں بننا ہے۔ ہمیں اسے رنگ برنگے پھولوں کی الگ الگ کیاریوں اور طرح طرح کے درختوں اور لتاؤں کا ایک وشال سندر باغ بنانا ہے اور ان سب کو سینچنے کے لئے بیچ بیچ میں برابری، بھائی چارے اور پریم کی نہریں بہانا ہے۔ ہم ایکتا کے ان سنہرے اصولوں کو سامنے رکھیں تو پھوٹ کے بیج جہاں بھی پڑیں گے ہماری مٹی میں پڑ کر اپنے آپ سڑ جائیں گے۔ اور سب راستے بربادی کے راستے ہیں۔ ہم سب کا بھگوان ہمیں سمجھ اور ہمت دے کہ ہم ٹھیک راستے پر چل سکیں۔

—سندر لال

हम एक हैं !

(भारत भूषन सुरपाल)

दिसम्बर की एक सर्द अंधेरी रात में अपनी टुकड़ी से छूट कर एक आदमी दक्खिनी कोरिया का सैनिक 'मिलिटरी लाइन' से कोसों दूर भटक रहा था. आज रात जो आक्रमन उत्तरी कोरिया की थल और वायु सेना ने किया था, उसी की लपेट में आ कर वह अपनी टुकड़ी से बिछुड़ गया था. ठंड से बचने के लिये उसने अपने कोट के कालर ऊपर कर लिये थे, फिर भी वह ठंड से कांप रहा था. उसका नाम था 'शीको वाकी'.

मालूम नहीं, क्यों आज उसे अपने छोटे भाई 'विशी थान' की याद आ रही थी. वह विचार मग्न था. क्या यह उसकी कमज़ोरी थी या असीम दुखों की हीनता? उसके स्मृति पट पर वह दिन आ गया जब तीन बरस पहले 'विशी' दक्खिनी कोरिया को छोड़ कर उत्तरी कोरिया चला गया था, क्योंकि वह कम्युनिस्ट था. पहले तो उसका समाचार मिल भी जाता था, परन्तु अब—अब तो दक्खिनी और उत्तरी कोरिया का युद्ध दोनों भाइयों के कुशल समाचार में भी एक बाधा था. 'क्या वह विशी से कभी नहीं मिल सकेगा?' यही विचार बारम्बार शीको के दिमाग़ में चक्कर काट रहा था. वह सोच रहा था "इस लड़ाई का जीवन भी कोई जीवन है. यहां शत्रु शत्रु से कहां लड़ रहा है? यहां तो किसी अन्य के उकसाने पर देशवासी आपस में ही लड़ रहे हैं. भाई भाई पर गोलियां चलाते हैं. ओह!" वह रो पड़ा विशी की याद में!

उस दिन जब दक्खिनी सैनिकों ने उत्तरी कोरिया के सैनिकों पर प्रबल आक्रमन किया था और उत्तरी कोरिया के कुछ सैनिक बन्दी बना लिये गए थे तो उत्सुकता और भाई के स्नेह वश शीको ने एक बन्दी से अपने भाई विशी के विशय में पूछा था. उसे पता चला था कि विशी एक लड़ाकू वायुयान का चालक है. तब से जब भी उत्तरी कोरिया के वायुयान दक्खिनी कोरिया के अड्डों पर आक्रमन करने आते, उन पर गोली चलाने से पहले शीको का मन विह्वल हो उठता. वह सोचता "हो सकता है उसकी गोली जो वायुयान गिराए, उसी में उसका भाई हो." उसका हाथ बन्दूक़ के घोड़े से हट जाता. वह फिर सोचता "भाई है तो क्या हुआ? भावना से कर्तव्य ऊंचा है. क्या देशवासी आपस में लड़ें? एक भाई दूसरे भाई पर गोली चलाए? क्या यही कर्तव्य है?" वह फिर अपने से

ہم ایک ہیں !

(بھارت بھوشن سرپال)

دسمبر کی ایک سرد اندھیری رات میں اپنی ٹکڑی سے چھوٹ کر ایک آدمی دکھنی کوریا کا سینک 'ملٹری لائن' سے کوسوں دور بھٹک رہا تھا۔ آج رات جو آکرمن اُتری کوریا کی تھل اور وایو سینا نے کیا تھا' اُسی کی لپیٹ میں آکر وہ اپنی ٹکڑی سے بچھڑ گیا تھا۔ ٹھنڈ سے بچنے کے لئے اُس نے اپنے کوٹ کے کالر اُوپر کر لئے تھے' پھر بھی وہ ٹھنڈ سے کانپ رہا تھا۔ اُس کا نام تھا 'شیکوواکی'۔

معلوم نہیں' کیوں آج اُسے اپنے چھوٹے بھائی 'وشی تھان' کی یاد آ رہی تھی۔ وہ وچارمگن تھا۔ کیا یہ اُسکی کمزوری تھی یا اسیم دکھوں کی چھینتا ؟ اُس کے اسمرتی پٹ پر وہ دن آگیا جب تین ورش پہلے 'وشی' دکھنی کوریا کو چھوڑ کر اُتری کوریا چلا گیا تھا' کیونکہ وہ کمیونسٹ تھا۔ پہلے تو اُس کا سماچار مل بھی جاتا تھا' پرنتو اب—اب تو دکھنی اور اُتری کوریا کا یدھ دونوں بھائیوں کے کشل سماچار میں بھی ایک بادھا تھا۔ 'کیا وہ وشی سے کبھی نہیں مل سکے گا ؟' یہی وچار بارمبار شیکو کے دماغ میں چکر کاٹ رہا تھا۔ وہ سوچ رہا تھا "اس لڑائی کا جیون بھی کوئی جیون ہے۔ یہاں شترو شترو سے کہاں لڑ رہا ہے ؟ یہاں تو کسی انیہ کے اُکسانے پر دیش واسی آپس میں ہی لڑ رہے ہیں۔ بھائی بھائی پر گولیاں چلاتے ہیں۔ اوہ !" وہ رو پڑا وشی کی یاد میں !

اُس دن جب دکھنی سینکوں نے اُتری کوریا کے سینکوں پر پربل آکرمن کیا تھا اور اُتری کوریا کے کچھ سینک بندی بنا لئے گئے تھے تو اُتسکتا اور بھائی کے سنیہہ وش شیکو نے ایک بندی سے اپنے بھائی وشی کے وشے میں پوچھا تھا۔ اُسے پتہ چلا تھا کہ وشی ایک لڑاکو وایویان کا چالک ہے۔ تب سے جب بھی اُتری کوریا کے وایویان دکھنی کوریا کے اڈوں پر آکرمن کرنے آتے' اُن پر گولی چلانے سے پہلے شیکو کا من وہل ہو اُٹھتا۔ وہ سوچتا "ہو سکتا ہے اُسکی گولی جو وایویان گرائے' اُسی میں اُس کا بھائی ہو۔" اُسکا ہاتھ بندوق کے گھوڑے سے ہٹ جاتا۔ وہ پھر سوچتا "بھائی ہے تو کیا ہوا ؟ بھاونا سے کرتویہ اونچا ہے۔ کیا دیش واسی آپس میں لڑیں ؟ ایک بھائی دوسرے بھائی پر گولی چلائے ؟ کیا یہی کرتویہ ہے ؟" وہ پھر اپنے

ही प्रश्न करता "किसके लिये वह अपने देशवासियों से लड़े? किसके लिये वह अपने भाई पर गोली चलाए?" और मन का उत्तर होता "उनके लिये जिन्हें दूसरे देशों को हड़पने की लालसा है! जिन्हें यह देख कर प्रसन्नता होती हो कि भाई भाई पर गोली चलाए, भाई भाई को मारे. देशवासी अपनी ही मातृभूमि पर बम बरसायें. उसे धूसर और बंजर बनाए." वह यही सोचता रहता जब तक उत्तरी कोरिया के वायुयान आक्रमन कर वापस न लौट जाते.

उसके मानस पट पर वह दिन भी खिंच गया जब युद्ध में उत्तरी कोरिया का वायुयान शीको के निकट ही आ कर गिरा. उसके गिरते ही वह पागलों की भांति उस ओर भागा. जलते वायुयान में कूद, अपने प्रानों पर खेल, उसने चालक को बाहर निकाला. चालक के कपड़े बुरी तरह जल गए थे और उसका शरीर कई स्थानों पर झुलस गया था. शीको ने घायल चालक का सिर अपनी गोद में रख लिया और उसके मुंह को धीरे से थपथपाया. चालक की आंखें, जो बन्द थीं, कर-स्पर्श से खुल गईं. शीको को लगा जैसे घायल चालक विशी ही है. शंका निवारन के लिये उसने धीरे से कहा "विशी!" अधमृत चालक ने बहुत धीरे से उत्तर दिया 'मित्र! मैं विशी नहीं हूं. मैं तो निभा हूं" और कराह कर उसने सांस छोड़ दिया—अपना अन्तिम सांस. मृत चालक को देख कर एक भयानक शंका शीको के मन में उभर आई. "कहीं उसका विशी भी इसी प्रकार..." शव की ओर देख कर शीको ज़ोर से चीख उठा था.

घोर रात्रि में उस घटना की याद आते ही शीको एक बार फिर ज़ोर से चीख उठा.

रह रह कर उसे यही विचार तंग करने लगा कि वह अपने विशी से कभी मिल भी सकेगा या नहीं. घोर अंधकार में जब हाथ को हाथ नहीं दीख रहा था, शीको की आंखें कहीं दूर देखने का असफल प्रयास कर रही थीं और उसका मन कहीं और ही छटपटा रहा था. धप्प! अरे,! यह क्या हुआ? शीको एक खन्दक में गिर गया था. उसके पांव में कुछ चोट आई. वह वहीं बैठ गया. अचानक पास ही से उसे कराहने की आवाज़ सुनाई दी. उसने ध्यान से देखा. पास ही एक सैनिक पड़ा धीरे-धीरे कराह रहा था. शीको ने घायल सैनिक का सिर अपनी गोद में रख लिया और उसे आहिस्ता से सहलाने लगा! उसे प्रतीत हुआ जैसे विशी का ही सिर उसने अपनी गोद में रख लिया है. अपनी शंका का समाधान करने के लिये शीको ने घायल सैनिक के वस्त्रों को हाथ लगा कर जांचा. वह उत्तरी कोरियन वायुयान चालक के वस्त्र थे. उसने घायल सैनिक का चेहरा देखने का प्रयत्न किया, परन्तु

کرتا "کس کے لئے وہ اپنے دیش واسیوں
کس کے لئے وہ اپنے بھائی پر گولی چلائے؟"
اتر ہوتا "اُن کے لئے جنھیں دوسرے دیشوں
السا ہے! جنھیں یہ دیکھکر پرسنتا
کی بھائی بھائی پر گولی چلائے' بھائی
مارے. دیش واسی اپنی ھی ماتربھومی پر
اسے دھوسر اور بنجر بنائیں." وہ یہی سوچتا
تک اتری کوریا کے وایویان آکرمن کر واپس نہ

کے مانس پٹ پر وہ دن بھی کھنچ گیا جب یدھ
کوریا کا وایویان شیکو کے نکٹ ھی آکر گرا.
وہ پاگلوں کی بھانت اس اور بھاگا.
میں کود' اپنے پرانوں پر کھیل' اس نے چالک
چالک کے کپڑے بری طرح جل گئے تھے اور
شریر کئی استھانوں پر جھلس گیا تھا. شیکو نے
چالک کا سر اپنی گود میں رکھ لیا اور اس کے
دھیرے سے تھپتھپایا. چالک کی آنکھیں' جو
کراسپرش سے کھل گئیں. شیکو کو لگا جیسے
چالک وشی ھی ھے. شنکا نوارن کے لئے اس نے
سے کہا "وشی!" اردھ مرت چالک نے بہت
سے اتر دیا "متر! میں وشی نہیں ھوں. میں
ھوں" اور کراہ کر اس نے سانس چھوڑ دیا—
انتم سانس. مرت چالک کو دیکھکر ایک بھیانک
شیکو کے من میں ابھر آئی. "کہیں اس کا وشی بھی
پرکار......"
کی اور دیکھکر شیکو زور سے چیخ اُٹھا تھا.

راتری میں اُس گھٹنا کی یاد آتے ھی شیکو
پھر زور سے چیخ اُٹھا.

رہ کر اسے یہی وچار تنگ کرنے لگا کہ وہ اپنے وشی
مل بھی سکے گا یا نہیں. گھور اندھکار میں
ہاتھ کو ہاتھ نہیں دیکھ رہا تھا' شیکو کی آنکھیں
دور دیکھنے کا اسپھل پریاس کر رھی تھیں اور اس
کہیں اور ھی چھٹپٹا رہا تھا. دھپ! ارے! یہ
شیکو ایک خندق میں گر گیا تھا. اُس کے
میں کچھ چوٹ آئی. وہ وہیں بیٹھ گیا. اچانک
سے اسے کراھنے کی آواز سنائی دی. اسنے دھیان سے
پاس ھی ایک سینک پڑا دھیرے دھیرے کراہ
شیکو نے گھایل سینک کا سر اپنی گود میں رکھ
اسے آہستہ سے سہلانے لگا. اُسے پرتیت ھوا جیسے
کا ھی سر اس نے اپنی گود میں رکھ لیا ھے. اپنی
سمادھان کرنے کے لئے شیکو نے گھایل سینک کے وستروں
لگا کر جانچا. وہ اتری کوریئن وایویان چالک کے وستر
گھایل سینک کا چہرہ دیکھنے کا پریتن کیا' پرنتو

अंधेरे में कुछ अच्छी तरह देख न सका. न जाने क्यों शीको पागल की भांति घायल सैनिक का मुंह थपथपाते हुए विशी ! विशी !! चिल्लाने लगा.

कुछ देर बाद घायल सैनिक ने आंखें खोल दीं और फुसफुसाया "मेरा नाम किसने पुकारा है ? मैं कहा हूं ?"

"घबराओ नहीं" शीको ने ढाढ़स बंधाया, "मैं शीको हूं, तुम्हारा बड़ा भाई. आह ! कैसी कड़ाके की सर्दी पड़ रही है ! धन्यवाद है भगवान को, हम दोनों भाई मिले तो—मौत के मुंह में ही सही."

"क्या तुम सच कह रहे हो ? क्या तुम शीको वाकी ही हो." घायल सैनिक ने भरे गले से पूछा.

हां, हां, मैं सच ही कह रहा हूं ! मैं ही शीको वाकी हूं, विशी थान का बड़ा भाई," आनन्द और उत्साह से शीको ने कहा.

थोड़ी देर के लिये युद्ध और अपनी अपनी मंजिल को भू लदोनों भाई एक दूसरे से लिपटे हुए थे ! दोनों की आंखों से प्रेम के आंसू बह रहे थे ! उन्हें पहली ही बार आभास हुआ—पवित्र प्रेम के आलिंगन का आनन्द.

और तभी विशी शीको से अलग हो गया. बोला "पर इस समय तुम दक्खिनी कोरिया के सैनिक हो और मैं उत्तरी कोरिया का. हम एक दूसरे के शत्रु पहले हैं और भाई बाद में. आओ मेरे साथ द्वंद युद्ध करो."

"कैसा युद्ध पगले ?" शीको ने डांट कर कहा, "क्या अब भी तुम्हारा बचपन नहीं गया ?"

"मैं नफ़रत करता हूं तुम से ! तुम मेरे भाई नहीं हो. आओ मेरे साथ लड़ो" विशी बिगड़ा.

"कैसा लड़ना पगले ?" शीको बोला "तुम मेरे भाई हो. क्या कभी भाई भाई से भी लड़ता है ? हम दक्खिनी और उत्तरी कोरिया निवासी आपस में भाई भाई हैं. क्यों किसी और के उकसाने पर हम आपस में लड़ें ? कोरिया निवासी, कोरिया निवासियों के विरुद्ध नहीं लड़ेंगे, हम आपस में नहीं लड़ेंगे, हम सब भाई भाई हैं, हम सब एक हैं, हम एक हैं" वह पागलों की तरह चिल्लाता रहा.

विशी का हृदय भर आया, बोला "हां, भाई तुम ठीक ही कहते हो. दक्खिनी और उत्तरी कोरिया वाले सब भाई भाई हैं. भाई भाई के विरुद्ध, हथियार नहीं उठायेगा. अगर हमारा झगड़ा है तो उसे हम खुद ही निपट लेगें. हम किसी दूसरे का हस्तक्षेप सहन नहीं करेंगे, हम आपस में नही लड़ेंगे, हम सब भाई भाई हैं, हम सब एक हैं, हम एक हैं." वह फिर एक बार शीको के गले से लिपट गया.

"हम जल्दी ही सीधे रास्ते पर आ गये हैं. आओ, इस अवसर पर हम ... अपनी वर्दियां बदल लें" शीको ने कहा.

اندهیرے میں کچھ اچھی طرح دیکھ نہ سکا۔ نہ جانے کیوں شیکو پاگل کی بهانت گهایل سینک کا منهه تهپتهپاتے ہوئے "وشی! وشی!!" چلانے لگا۔

کچھ دیر بعد گهایل سینک نے آنکهیں کهول دیں اور پهسپهسایا "میرا نام کس نے پکارا هے ؟ میں کہاں هوں ؟"

"گهبراؤ نہیں" شیکو نے ڈهارس بندهایا "میں شیکو هوں، تمہارا بڑا بهائی۔ آہ ! کیسی کڑاکے کی سردی پڑ رهی هے ! دهنیواد هے بهگوان کو، هم دونوں بهائی ملے تو — موت کے منهه میں هی سهی۔"

"کیا تم سچ کہہ رهے هو؟" کیا تم شیکو واکی هی هو؟" گهایل سینک نے بهرے گلے سے پوچها !

"هاں، هاں، میں سچ هی کہہ رها هوں۔ میں هی شیکو واکی هوں، وشی تهان کا بڑا بهائی" آنند اور اتساہ سے شیکو نے کہا۔

تهوڑی دیر کے لئے یدھ اور اپنی اپنی منزل کو بهول دونوں بهائی ایک دوسرے سے لپٹے هوئے تهے ! دونوں کی آنکهوں سے پریم کے آنسو بہہ رهے تهے ! انهیں پہلی هی بار آبهاس هوا — پوتر پریم کے آلنگن کا آنند۔

اور تبهی وشی شیکو سے الگ هوگیا. بولا "پر اس سمے تم دکهنی کوریا کے سینک هو اور میں اتری کوریا کا۔ هم ایک دوسرے کے شترو پہلے هیں اور بهائی بعد میں۔ آؤ میرے ساتھ دوند یدھ کرو۔"

"کیسا یدھ پگلے؟" شیکو نے ڈانٹ کر کہا، "کیا اب بهی تمہارا بچپن نہیں گیا ؟"

"میں نفرت کرتا هوں تم سے ! تم میرے بهائی نہیں هو۔ آؤ میرے ساتھ لڑو" وشی بگڑا۔

"کیسا لڑنا پگلے؟" شیکو بولا "تم میرے بهائی هو۔ کیا کبهی بهائی بهائی سے لڑتا هے ؟ هم دکهنی اور اتری کوریا نواسی آپس میں بهائی بهائی هیں۔ کیوں کسی اور کے اکسانے پر هم آپس میں لڑیں ؟ کوریا نواسی، کوریا نواسی کے وروده نہیں لڑینگے، هم آپس میں نہیں لڑینگے، هم سب بهائی بهائی هیں، هم سب ایک هیں" وہ پاگلوں کی طرح چلاتا رها۔

وشی کا هردے بهر آیا، بولا "هاں، بهائی تم ٹهیک هی کہتے هو۔ دکهنی اور اتری کوریا والے سب بهائی بهائی هیں۔ بهائی بهائی کے وروده هتهیار نہیں اٹهائیگا۔ اگر همارا جهگڑا هے تو اسے هم خود هی نپٹ لینگے۔ هم کسی دوسرے کا هستکشیپ سہن نہیں کرینگے، هم آپس میں نہیں لڑینگے۔ هم سب بهائی بهائی هیں، هم سب ایک هیں، هم ایک هیں" وہ پهر ایک بار شیکو کے گلے سے لپٹ گیا۔

"هم جلدی هی سیدهے راستے پر آگئے هیں۔ آؤ، اس اوسر پر هم اپنی وردیاں بدل لیں" شیکو نے کہا

"हां ठीक है."

वर्दियां बदलने के बाद शीको ने कहा "जाओ विशी, तुम उत्तरी कोरिया में जा कर कहो कि हम आपस में नहीं लड़ेंगे, हम सब भाई भाई हैं. हम सब एक हैं, हम एक हैं. और यही प्रचार मैं दक्खिनी कोरिया में जा कर करूंगा."

दोनों बड़े यत्न से ख़न्दक़ से निकले और उत्साह से चिल्ला उठे, "हम एक हैं." एक तेज़ रोशनी उन पर पड़ी और दो सैकिंड बाद ही मित्र राष्ट्रीय सैनिकों से भरी हुई एक जीप उन के पास आ कर रुक गई. उस में से एक अमेरिकन कैप्टन और मित्र राष्ट्रों के कुछ सैनिक उतरे. जीप की रोशनी में कैप्टन ने देखा कि एक दक्खिनी कोरिया का सैनिक उत्तरी कोरिया के सैनिक के पास खड़ा है. उसने समझा दक्खिनी सैनिक को बन्दी बना कर ले जाया जा रहा है. उत्तरी कोरियन वस्त्रों वाले शीको की ओर संकेत करते हुये, उसने आज्ञा दी—"शूट !" इस से पहले की शीको कुछ बोलता, पांच सैनिकों ने गोली चला कर उसे मौत के घाट उतार दिया.

पल भर में ही समाप्त हो गया सब कुछ. विशी ने देखा शीको मारा गया है, वह चिल्ला उठा "ओ नारकीय कुत्ता! तुमने अपने एक शत्रु को, एक उत्तरी कोरिया के सैनिक को गोली नहीं मारी है, बल्कि अपने ही एक मित्र दक्खिनी कोरिया के सैनिक को गोली मारी है. मैं उत्तरी कोरिया का सैनिक हूं और वह दक्खिनी कोरिया का. हम ने कहा हम देशवासी आपस में नहीं लड़ेंगे. हम सब एक हैं और हमने वर्दियां बदल डाली थीं. तुम हमारा देश छोड़ कर चले जाओ. हम तुम्हारा हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकते. हम अपना झगड़ा ख़ुद निपट लेगें. हम आपस में नहीं लड़ेंगे. हम सब भाई भाई हैं. हम सब एक हैं. हम एक हैं" वह और भी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा.

"शूट हिम आलसो" (Shoot him also)—अमेरिकन कैप्टन अपनी हार पर खिन्न था.

शान्ति का झंडा फहराने वाले मित्र राष्ट्रों के सैनिकों ने विशी को "ट्रेटर" कह कर गोलियों से छेद दिया और विशी गिर पड़ा शीको के ऊपर—जैसे दो भाई आपस में गले लगे हों.

जीप "शान्ति के सैनिकों" को लेकर दूर जा रही थी, "शान्ति का स्मारक" वहीं छोड़ !

"ٹھیک ہے."

وردیاں بدلنے کے بعد شیکو نے کہا "جاؤ وشی، تم اُتری کوریا میں جاکر کہو کہ ہم آپس میں نہیں لڑینگے، ہم سب بھائی بھائی ہیں. ہم سب ایک ہیں، ہم ایک ہیں. اور یہی پرچار میں دکھنی کوریا میں جاکر کرونگا."

دونوں بڑے یتن سے خندق سے نکلے اور اُتساہ سے چلا اٹھے، "ہم ایک ہیں." ایک تیز روشنی اُن پر پڑی اور دو سیکنڈ بعد ہی متر راشٹریہ سینکوں سے بھری ایک جیپ اُن کے پاس آکر رک گئی. اُس میں سے ایک امریکن کیپٹن اور متر راشٹروں کے کچھ سینک اُترے. جیپ کی روشنی میں کیپٹن نے دیکھا کہ ایک دکھنی کوریا کا سینک اُتری کوریا کے سینک کے پاس کھڑا ہے. اُس نے سمجھا دکھنی سینک کو بندی بناکر لے جایا جا رہا ہے. اُتری کورین وستروں والے شیکو کی اور سنکیت کرتے ہوئے، اس نے آگیاں دی—"شوٹ!" اِس سے پہلے کہ شیکو کچھ بولتا، پانچ سینکوں نے گولی چلاکر اسے موت کے گھاٹ اُتار دیا.

پل بھر میں ہی سماپت ہوگیا سب کچھ. وشی نے دیکھا شیکو مارا گیا ہے، وہ چلا اُٹھا "او نارکیہ کتو! تم نے اپنے ایک شترو کو، ایک اُتری کوریا کے سینک کو گولی نہیں ماری ہے، بلکہ اپنے ہی ایک متر دکھنی کوریا کے سینک کو گولی ماری ہے. میں اُتری کوریا کا سینک ہوں اور وہ دکھنی کوریا کا. ہم نے کہا ہم دیش واسی آپس میں نہیں لڑینگے. ہم سب ایک ہیں اور ہم نے وردیاں بدل ڈالی تھیں. تم ہمارا دیش چھوڑکر چلے جاؤ. ہم تمہارا ہستکشیپ سہن نہیں کرسکتے. ہم اپنا جھگڑا سوئم نپٹ لینگے. ہم آپس میں نہیں لڑینگے. ہم سب بھائی بھائی ہیں. ہم سب ایک ہیں. ہم ایک ہیں" اور وہ اور بھی زور زور سے چلانے لگا.

"شوٹ ہم آلسو (Shoot him also)"—امریکن کیپٹن اپنی ہار پر کھن تھا.

شانتی کا جھنڈا پھہرانے والے متر راشٹروں کے سینکوں نے وشی کو 'ٹریٹر' کہہ کے گولیوں سے چھید دیا اور وشی گر پڑا شیکو کے اوپر—جیسے دو بھائی آپس میں گلے لگے ہوں.

جیپ "شانتی کے سینکوں" کو لےکر دور جارہی تھی، "شانتی کا اسمارک" وہیں چھوڑ!

हमारे सीखदाता

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

साल भर से जियादा हो गया जब से नई विकास योजनाएं और सामूहिक योजनाएं (Community Projects , चल रही हैं. बार बार लोगों ने इसके बारे में मेरी राय जाननी चाही है. मेरे दोस्त जानते हैं कि मैं शुरू से ही इन योजनाओं का राजकाजी और माली कारनों से विरोधी हूं. अब मैं अपने अनुभव को लोगों के सामने रखना चाहता हूं.

विकास क्या है ?

हम इन्हें "विकास योजनाएं" कहते हैं जब कि हम यह भी नहीं जानते कि विकास किसे कहते हैं. लिपस्टिक लगा लेनें से औरतों की ऊपरी सुन्दरता जो निखरती है क्या वह औरतों का विकास है ? क्या तम्बाकू पीने की आदत मर्द का विकास है ? अगर हम विकास का मतलब यही बाहरी और ऊपरी दिखावा ही समझते हैं तब तो इन मानों में ये योजनाएं ज़रूर विकास की योजनाएं हैं. लेकिन हम में से कुछ लोग विकास का मतलब बहुत ही गहरा लेते हैं और जिस की मंजिल कभी खतम नहीं होती. आज की दुनिया की हालत देखते हुए विकास की योजना ऐसी होनी चाहिए जो दुनिया के सुख चैन को बढ़ाए. गांधी जी के रचनात्मक प्रोग्राम इसी नज़र से बनाए गए थे कि एक अहिंसात्मक समाज बन सके जिस में समाज के सब प्रानी सुख शान्ति से रह सकें. लेकिन आजकल के ज़माने में ज़िन्दगी बिताना और खास कर के दिल्ली ऐसे शहर में बक़ौल जवाहरलाल जी के जंगली ज़िन्दगी है. इसका मतलब यह है कि हम लोग बिना सोचे समझे, बिना आपसी सहयोग के बेकार की ज़िन्दगी बिता रहे हैं. और यही हाल हमारी आज की योजनाओं की है.

हमारी ज़रूरतें

साइंसी होने का मतलब यह है कि हमारी जनता की ज़रूरतें और हमारे साधनों का एक सम्बन्ध होना चाहिये और उन रुकावटों को भी ध्यान में रखना चाहिये जो प्रकृति ने हमारे ऊपर डाल रखी हैं. अगर हम चाहते हैं कि हमारा विकास उन परिस्थितियों के अनुसार हो जो भारत में मौजूद हैं तो ज़रूरी है कि हम अपनी योजनाओं के हर पहलू पर विचार करें. हमारी विकास योजनाओं को देश की जल माटी के माफ़िक बनना होगा. आज की जो हालत है उस में हिन्दुस्तान को ज़रूरत इस बात की है कि

ھمارے سیکھ داتا

(ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا)

سال بھر سے زیادہ ھوگیا جب سے نئی وکاس یوجنائیں اور سامُوھک یوجنائیں (Community Projects) چل رھی ھیں. بار بار لوگوں نے اس کے بارے میں میری رائے جاننی چاھی ھے . میرے دوست جانتے ھیں کہ میں شروع سے ھی اِن یوجناؤں کا راج کاجی اور مالی کارنوں سے ورودھی ھوں. اب میں اپنے انوبھو کو لوگوں کے سامنے رکھنا چاھتا ھوں .

وکاس کیا ھے ؟

ھم اِنھیں "وکاس یوجنائیں" کھتے ھیں جب کہ ھم یہ بھی نھیں جانتے کہ وکاس کسے کھتے ھیں . لپ اِسٹک لگا لینے سے عورتوں کی اُوپری سندرتا جو نکھرتی ھے کیا وہ عورتوں کا وکاس ھے ؟ کیا تماکو پینے کی عادت مرد کا وکاس ھے ؟ اگر ھم وکاس کا مطلب یھی باھری اور اُوپری دکھاوا ھی سمجھتے ھیں تب تو اِن معنوں میں یہ یوجنائیں ضرور وکاس کی یوجنائیں ھیں. لیکن ھم میں سے کچھ لوگ وکاس مطلب بھت ھی گھرا لیتے ھیں اور جس کی منزل کبھی ختم نھیں ھوتی . آج کی دنیا کی حالت دیکھتے ھوئے وکاس کی یوجنا ایسی ھونی چاھئے جو دنیا کے سکھ چین کو بڑھائے . گاندھی جی کے رچناتمک پروگرام اِسی نظر سے بنائے گئے تھے کہ ایک اھنساتمک سماج بن سکے جس میں سماج کے سب پرانی سکھ شانتی سے رہ سکیں . لیکن آجکل کے زمانے میں زندگی بتانا اور خاصکر کے دلی ایسے شھر میں بقول جواھر لال جی کے دلی کی زندگی جنگل کی زندگی ھے . اِس کا مطلب یہ ھے کہ ھم لوگ بنا سوچے سمجھے، بنا آپسی سھیوگ کے بیکار کی زندگی بتا رھے ھیں اور یھی حال ھماری آج کی یوجناؤں کا ھے .

ھماری ضرورتیں

سائنسی ھونے کا مطلب یہ ھے کہ ھماری جنتا کی ضرورتیں اور ھمارے سادھنوں کا ایک سمبندھ ھونا چاھئے اور اُن رکاوٹوں کو بھی دھیان میں رکھنا چاھئے جو پرکرتی نے ھمارے اوپر ڈال رکھی ھیں . اگر ھم چاھتے ھیں کہ ھمارا وکاس اُن پرستھتیوں کے انوسار ھو جو بھارت میں موجود ھیں تو ضروری ھے کہ ھم اپنی یوجناؤں کے ھر پھلو پر وچار کریں. ھماری وکاس یوجناؤں کو دیش کی جل ماٹی کے موافق بننا ھوگا . آج کی جو حالت ھے اُس میں ھندستان کو ضرورت اس بات کی ھے کہ

हर काम कम खर्च में किया जाय और हर काम में जो भी कोशिश हम करें उससे लाभ हो.

हमारी संस्कृति और तहज़ीब और रीत यही रही है. हमारी तुरत की जरूरत यह है कि सिंचाई के लिए छोटे तालाब और कुए हों. पानी को रोकने, घर घर पहुंचाने और आमदरफ़्त के लिए छोटी छोटी नहरें हों क्योंकि हमारे विशाल देश में यह संभव नहीं है कि दूर आने जाने के के लिए पेट्रोल की ताक़त से, जोकि हमारे देश की पैदावार नहीं है काम लिया जाय. इसीलिए हिन्दुस्तान ने अपने बीते हुए ज़माने में इस बात पर ज़ोर दिया है कि वह किसी का मोहताज न रहे और अपने बूते पर सुख चैन की ज़िन्दगी की राहें पुख़्ता करे. जनता के पालन पोशन के लिए हिन्दुस्तान में खेती बाड़ी होती रही और इसका विकास जीवन मार्ग के तौर पर नहीं तो पेशे के तौर पर तो हुआ ही है.

हमारे तरीक़े

हमारा तरीक़ा यह रहा है कि धरती, ढोर, और मनुष्य में आपस का लेन देन इस ख़ूबी से चलता रहे कि हमारी ज़रूरतें उन्हीं तरीक़ों और कामों से पूरी हों जो इन तीनों से मिलते जुलते हों और इन्हीं के ज़रिए ज़रूरत की चीज़ें बनें संवरें. मिसाल के तौर पर धरती से जब अनाज बहुतायत से होता है तो इस अनाज को हम खाते हैं, ढोरों को चारा मिलता है और फिर वही खाद के रूप में धरती को लौट जाता है और यह चक्कर चलता रहता है. अगर हम कोई आम रास्ता बनाते हैं तो इसके साथ कुआं बावड़ी भी बनाते हैं ताकि रास्ते की ज़रूतें पूरी हों. इसी तरह हमारी सब योजनाओं में आपसी एकता है. इसकी बजाय जब कच्चे तेल (Crude oil) से चलाने वाले ट्रेक्टर काम में लाते हैं तो इस तरह की आपसी एकता नहीं रहती. ख़ारिज गैस बेकार जाती है और हवा को ख़राब करती है. ट्रेक्टर धरती और आदमी की दुनिया का एक जुज़ नहीं है. उसकी अलहद्‌गी साफ़ ज़ाहिर होती है. वह सिर्फ़ एक पेवंद है पेवंद. इसी तरह धरम की धारना भी हमें पशु, बनस्पति और धरती से एक करती है. इस तरह हमारे रोज़मर्रा के कामों में नैतिकता आती है. बिना ऐसे सम्बन्ध के नैतिकता से अलग हो कर और माटीवाद को ही आधार बना कर चलने वाले अमरीका में हर आदमी अपने दूसरे साथी को तंग करता रहता है. इसलिये हमारी विकास योजनाओं को हमारी पुरानी रीत पर चलना होगा और वह ढर्रा यह है.

हमारे सीखदाता

बदक़िस्मती से हमने ऐसे लोगों को अपना सीखदाता बनाया है जो हमारी ऊपर बताई हुई ज़रूरतों से बिलकुल

کیا جائے اور ہر کام میں جو بھی [illegible] کوشش ہم کریں اس سے لابھ ہو ۔

ہماری سنسکرتی اور تہذیب اور ریت یہی رہی ہے ۔ [illegible] ضرورت یہ ہے کہ سنچائی کے لئے چھوٹے [illegible] کنوئیں ہوں ۔ پانی کو روکنے ، گھر گھر پہونچانے [illegible] کے لئے چھوٹی چھوٹی نہریں ہوں کیونکہ [illegible] یہ سمبھو نہیں ہے کہ دور آنے [illegible] کے لئے پٹرول کی طاقت سے ، جو کہ ہمارے دیش [illegible] نہیں ہے کام لیا جائے ۔ اس لئے ہندوستان [illegible] زمانے میں اس بات پر زور دیا ہے کہ [illegible] محتاج نہ رہے اور اپنے بوتے پر سکھ چین کی [illegible] راہیں پختہ کرے ۔ جنتا کے پالن پوشن کے [illegible] میں کھیتی باڑی ہوتی رہی اور اس کا [illegible] مارگ کے طور پر نہیں تو پیشے کے طور پر [illegible] ہی ہے ۔

ہمارے طریقے

ہمارا طریقہ یہ رہا ہے کہ دھرتی ، ڈھور اور منش [illegible] کا لین دین اس خوبی سے چلتا رہا ہے کہ [illegible] ضرورتیں انہیں طریقوں اور کاموں سے پوری ہوں [illegible] سے ملتے جلتے ہوں اور انہیں کے ذریعے [illegible] کی چیزیں بنیں سنوریں ۔ مثال کے طور پر دھرتی [illegible] اناج بہتایت سے ہوتا ہے تو اس اناج کو ہم کھاتے [illegible] ڈھوروں کو چارا ملتا ہے اور پھر وہی کھاد کے روپ [illegible] دھرتی کو لوٹ جاتا ہے اور یہ چکر چلتا رہتا ہے ۔ [illegible] کوئی عام راستہ بناتے ہیں تو اس کے ساتھ کنواں [illegible] بھی بناتے تاکہ راستے کی ضرورتیں پوری ہوں ۔ [illegible] طرح ہماری سب یوجناؤں میں آپسی ایکتا ہے ۔ [illegible] بجائے جب کچے تیل (crude oil) سے چلنے [illegible] ٹریکٹر کام میں لاتے ہیں تو اس طرح کی آپسی [illegible] نہیں رہتی ۔ خارج گیس بیکار جاتی ہے اور ہوا [illegible] کرتی ہے ۔ ٹریکٹر دھرتی اور آدمی کی دنیا کا [illegible] جز نہیں ہے ۔ اسکی علیحدگی صاف ظاہر ہوتی [illegible] صرف ایک پیوند ہے پیوند ۔ اسی طرح دھرم کی [illegible] بھی ہمیں پشو ، بنسپتی اور دھرتی سے ایک [illegible] اس طرح ہمارے روزمرہ کے کاموں میں نیتکتا [illegible] بنا ایسے سمبندھ کے نیتکتا سے الگ ہو کر اور [illegible] واد کو ہی آدھار بنا کر چلنے والے امریکہ میں ہر [illegible] اپنے دوسرے ساتھی کو تنگ کرتا رہتا ہے ۔ اس لئے [illegible] وکاس یوجناؤں کو ہماری پرانی ریت پر چلنا ہے [illegible] ڈھرا یہ ہے ۔

ہمارے سکھ داتا

بدقسمتی سے ہم نے ایسے لوگوں کو اپنا سکھداتا بنایا ہے [illegible] اوپر بتائی ہوئی ضرورتوں سے بالکل

वाक़िफ़ नहीं हैं. अपने वातावरन के लिहाज़ से अमरीका हिन्दुस्तान के वातावरन से बिलकुल मुख़्तलिफ़ है. इसलिये वहां की तहज़ीब, रीत रिवाज और तौर तरीक़े, रहन-सहन कुछ ऐसे बन गए हैं जो हमारी ज़रूरतों की पूर्ति नहीं करते और उनमें रुकावट ही पैदा करते हैं. हमें जबकि किफ़ायतशिआरी की ज़रूरत है अमरीका फ़ज़ूलखर्ची पर ज़ोर देता है. हमें जबकि आपस में मेल जोल को बढ़ाने वाले तरीक़े चाहिये अमरीका पेवन्दशाही है. अमरीका खेती बाड़ी को एक उद्योग मानता है और उसके द्वारा धरती के धन को लूटना चाहता है. वह बख़ूबी ट्रेक्टर इस्तेमाल करे, बनावटी रसायनिक खाद काम में लावे वग़ैरा वग़ैरा, क्योंकि उन्हें तुरत नफ़ा कमाना है. उनके लिये खेती बाड़ी भी एक धन्दा है जिसका ख़ास मक़सद धन कमाना है. उसके लिये उन्हें बाहरी मंडियों की ज़रूरत है जहां से विदेशी तिजारत के नाम से मनमानी लूट की जा सके. ऐसे लोगों को अपने देश में बुला कर उनके हाथ में उस काम की बाग डोर सौंप देना, जिससे वह वाक़िफ़ ही नहीं हैं, न उनकी क़ाबलियत के लिये ठीक है और न हमारे हक़ में ठीक है. उनके दिमाग़ ग़रीबों की बातें सोच ही नहीं सकते. फ्रांस की रानी एन्टोनिटी की तरह वह लोग उन लोगों को रसगुल्ले खाने के लिये कहेंगे जिन्हें रोटी भी मयस्सर नहीं होती. यहां तक कि डाक्टर ए. ई. मोरगन सरीखा मशहूर तजुरबेकार बुनियादी कार्यकर्ता जो कि अमरीकी विशाल योजना (टी. बी. ए.) का चेयरमैन है हमें यह सलाह देता है कि एक गांव से दूसरे गांव में जाने के लिये बजाय इसके कि हम बैलगाड़ियों से जायें हम हवाई जहाज़ इस्तेमाल करें. हम हिन्दुस्तान और अमरीका की तहज़ीब को एक साथ नहीं ला सकते जब तक कि किसी एक को चोट न पहुंचाएं. अमरीका को अपना सीखदाता बनाने का मतलब यही होगा कि आख़िरकार हम लोग नाकामयाब रहेंगे. किसी मालदार के सपूत के साथ ग़रीब के नौनिहाल को साथ रख कर हम दोनों को बरबाद कर देंगे. हिन्दुस्तान को उन तरीक़ों की ज़रूरत है जिसमें संयम हो, त्याग हो, सादगी हो जब कि अमरीकी तरीक़े असंयमी, फ़िज़ूलख़र्च, ज़रूरतों को बढ़ाने वाले और ख़ुदग़र्ज़ी से भरे हैं. इन अमरीकी योजनाओं में यह बुराइयां बहुत साफ़ दिखाई देती हैं.

अमरीकी क़दम

इस तरह के अमरीकी सीखदाता बड़ी शान से अमीराना तौर पर रहते हैं और अपनी सारी ज़रूरत की चीज़ें, यहां तक कि अपना खाना तक, अमरीका से मंगवाते हैं. वह लोग ऐयर कन्डीशन घरों (Air conditioned) में रहते हैं जो कि अमरीका जैसे ऐश परस्त

واقف نہیں ہیں. اپنے واتاورن کے لحاظ سے امریکہ ہندستان کے واتاورن سے بالکل مختلف ہے. اس لئے وہاں کی تہذیب، ریت رواج، اور طور طریقے، رہن سہن کچھ ایسے بن گئے ہیں جو ہماری ضرورتوں کی پورتی نہیں کرتے اور ان میں رکاوٹ ہی پیدا کرتے ہیں. ہمیں جبکہ کفایت شعاری کی ضرورت ہے امریکہ فضول خرچی پر زور دیتا ہے. ہمیں جبکہ آپس میں میل جول کو بڑھانے والے طریقے چاہئے امریکہ پیوند شاہی ہے. امریکہ کھیتی باڑی کو ایک ادیوگ مانتا ہے اور اس کے دوارا دھرتی کے دھن کو لوٹنا چاہتا ہے. وہ بخوبی ٹریکٹر استعمال کرے، بناوٹی راسائنک کھاد کام میں لاوے وغیرہ وغیرہ، کیونکہ انہیں ترت نفع کمانا ہے. ان کے لئے کھیتی باڑی بھی ایک دھندا جس کا خاص مقصد دھن کمانا ہے. اس کے لئے انہیں باہری منڈیوں کی ضرورت ہے جہاں سے ودیشی تجارت کے نام سے من مانی لوٹ کی جا سکے. ایسے لوگوں کو اپنے دیش میں بلا کر ان کے ہاتھ میں اس کام کی باگ ڈور سونپ دینا جس سے وہ واقف ہی نہیں ہیں نہ ان کی قابلیت کے لئے ٹھیک ہے اور نہ ہمارے حق میں ٹھیک ہے. ان کے دماغ غریبوں کی باتیں سوچ ہی نہیں سکتے. فرانس کی رانی اینٹونٹی کی طرح وہ لوگ ان لوگوں کو رس گلے کھانے کے لئے کہینگے جنہیں روٹی بھی میسر نہیں ہوتی. یہاں تک کہ ڈاکٹر اے. ای. مورگن سریکھا مشہور تجربہ کار بنیادی کاریہ کرتا جو کہ امریکی وشال یوجنا (ٹی. بی. اے.) کا چیرمین ہے ہمیں یہ صلاح دیتا ہے کہ ایک گاؤں سے دوسرے گاؤں میں جانے کے لئے بجائے اس کے کہ ہم بیل گاڑیوں سے جائیں ہم ہوائی جہاز استعمال کریں. ہم ہندستان اور امریکہ کی تہذیب کو ایک ساتھ نہیں لا سکتے جب تک کہ کسی ایک کو چوٹ نہ پہونچائیں. امریکہ کو اپنا سیکھ داتا بنانے کا مطلب یہی ہوگا کہ آخرکار ہم لوگ ناکامیاب رہیں گے. کسی مالدار کے سپوت کے ساتھ غریب کے نونہال کو ساتھ رکھ کر ہم دونوں کو برباد کر دیں گے. ہندستان کو ان طریقوں کی ضرورت ہے جس میں سنیم ہو، تیاگ ہو، سادگی ہو جب کہ امریکی طریقے اسنیمی، فضول خرچ، ضرورتوں کو بڑھانے والے اور خودغرضی سے بھرے ہیں. ان امریکی یوجناؤں میں یہ برائیاں بہت صاف دکھائی دیتی ہیں.

امریکی قدم

اس طرح کے امریکی سیکھ داتا بڑی شان سے امیرانہ طور پر رہتے ہیں اور اپنی ساری ضرورت کی چیزیں، یہاں تک کہ اپنا کھانا تک، امریکہ سے منگواتے ہیں. وہ لوگ ائیر کنڈیشنڈ گھروں (Air-conditioned) میں رہتے ہیں جو کہ امریکہ جیسے عیش پرست

मुल्क में भी बहुत बड़ी ऐश परस्ती समझी जाती है. इसके पीछे कितनी ही भली नियत क्यों न हो मुझे नहीं लगता कि इससे कोई फ़ायदा हो सकेगा क्योंकि वह एक छोर पर है और हम दूसरे पर. इस छोटे से लेख में उन सब तरीक़ों को नहीं बताया जा सकता कि जिनका इस्तेमाल करके अमरीका वालों ने अपने देश को बनाया है. किस तरह से उन्होंने जंगल जलाए हैं और सड़कें बनाई हैं, कम समय में खेती उगाने के खेती के तरीके इस्तेमाल में लाए गए और बाद में उन्हें जगह जगह चरागाहों के लिये भटकना पड़ा. यह हमारे लिये बिलकुल ठीक नहीं कि हम लोग ऐसे लोगों को अपना सीखदाता बनाएं और सफलता की आशा रखें. इन विकास योजनाओं में अमरीकी सलाह लेना हमारी सबसे बड़ी भूल होगी. इस तरफ़ हमें जो भी तजुरबे हुए हैं वह इस राय को और भी पक्का करते हैं. हिन्दुस्तान अपने दिमाग़ से सोचना जितनी जल्दी शुरू करेगा और अपने तरीक़ों को अपनाएगा उतनी ही जल्दी इसका सही मानों में विकास होगा और वह दुनिया को अमनचैन का संदेश दे सकेगा.

मेरी राय में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की अर्थ व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उस में बिना खाने और कपड़े के कोई भी रहने न पाए. दूसरे शब्दों में हर एक को अपनी गुज़र बसर के लायक़ काफ़ी काम मिलना ही चाहिये. यह आदर्श तभी सिद्ध होगा जब कि जीवन की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के साधनों पर जनता का अधिकार रहेगा.

—महात्मा गांधी

ملک میں بھی بہت بڑی عیش پرستی سمجھی جاتی ہے۔ اس کے پیچھے کتنی ہی بھلی نیت کیوں نہ ہو مجھے نہیں لگتا کہ اس سے کوئی فائدہ ہوسکے گا کیونکہ وہ ایک چھور پر ہیں اور ہم دوسرے پر۔ اس چھوٹے سے لیکھ میں ان سب طریقوں کو نہیں بتایا جاسکتا کہ جن کا استعمال کرکے امریکہ والوں نے اپنے دیش کو بنایا ہے۔ کس طرح سے انہوں نے جنگل جلائے ہیں اور سڑکیں بنائی ہیں، کم سمے میں کھیتی اگانے کے کھیتی کے طریقے استعمال میں لائے گئے اور بعد میں انہیں جگہ جگہ چراگاہوں کے لئے بھٹکنا پڑا۔ یہ ہمارے لئے بالکل ٹھیک نہیں کہ ہم لوگ ایسے لوگوں کو اپنا سیکھ داتا بنائیں اور سپھلتا کی آشا رکھیں۔ ان وکاس یوجناؤں میں امریکی صلاح لینا ہماری سب سے بڑی بھول ہوگی۔ اس طرف ہمیں جو بھی تجربے ہوئے ہیں۔ وہ اس رائے کو اور بھی پکا کرتے ہیں۔ ہندوستان اپنے دماغ سے سوچنا جتنی جلدی شروع کرے گا اور اپنے طریقوں کو اپنائے گا اتنی ہی جلدی اس کا صحیح معانوں میں وکاس ہوگا اور وہ دنیا کو امن چین کا سندیش دے سکے گا۔

میری رائے میں ہندوستان کی اور سارے سنسار کی ارتھ ویوستھا ایسی ہونی چاہئے کہ اس میں بنا کھانے اور کپڑے کے کوئی بھی رہنے نہ پائے۔ دوسرے شبدوں میں ہر ایک کو اپنی گذر بسر کے لائق کافی کام ملنا ہی چاہئے۔ یہ آدرش تبھی سدھ ہوگا جبکہ جیون کی بنیادی ضرورتوں کو پورا کرنے کے سادھنوں پر جنتا کا ادھیکار رہے گا۔

—مہاتما گاندھی

हावूड़ा

रावी : आज सहदेव हावूड़ा की दूकान शहर में बच्चा बच्चा जानता है, उसकी दूकान पर गाहकों की इतनी भीड़ रहती है कि पांच पांच, सात सात नौकर उस भीड़ को नहीं संभाल सकते. परन्तु यह बात हमेशा से न थी. दूकान की साख तभी से बनी है जब से लाला हरनाम दास ने दूकान सहदेव को सौंप कर खुद विश्राम ग्रहन किया. यह सहदेव हावूड़ा कौन था, कहां से आया......यह भी एक बड़ी दिलचस्प कहानी है. कई साल पहले की बात है, मैं बाज़ार में चला जा रहा था कि एक जगह कुछ झगड़ा होते देख रुक गया.

सिपाही : (गरज कर) तुमने इस हलवाई के पैसे उठाए ?

लड़का : (मज़बूती से) नहीं दरोग़ा जी.

सिपाही : (धमकी से) ठीक बोलो, नहीं पड़ती है चपत.

लड़का : (उसी तरह) नहीं उठाए.

सिपाही : (तेज़ी से) नहीं बताओगे ?

लड़का : मैंने नहीं उठाये.

सिपाही : (लड़के को पीटता हुआ) अच्छा, नहीं उठाए तो ले (थप्पड़) और ले (थप्पड़) बता पैसे लिये कि नहीं (थप्पड़) झूठ बोला तो ज़मीन में खोद कर गाड़ दूंगा.

लड़का : (कुछ रुआंसा हो कर मगर उसी दृढ़ता से) मैंने नहीं लिये, नहीं लिये, नहीं लिये !

सिपाही : (हार कर) बड़ा पक्का है. बांधो तो इसके दोनों हाथ और लटका दो इसे पेड़ पर.

(भीड़ का कुछ शोर गुल, उसमें से उठती हुई लड़के की मां की आवाज़.)

मां : (सहसा फ़रियादी लहजे में परन्तु आत्म सम्मान छोड़े बिना) अरे, छोड़ दो इसे. क्यों मेरे बच्चे को बे क़सूर मारते हो.

सिपाही : यह तुम्हारा बच्चा है ?

मां : हां !

هابوڑا

راوی : آج سہدیو هابوڑا کی دوکان شہر میں بچہ بچہ جانتا ہے، اس کی دوکان پر گاہکوں کی اتنی بھیڑ رہتی ہے کہ پانچ پانچ، سات سات نوکر اس بھیڑ کو نہیں سنبھال سکتے. پرنتو یہ بات ہمیشہ سے نہ تھی. دوکان کی ساکھ تبھی سے بنی ہے جب سے لالہ ہرنام داس نے دوکان سہدیو کو سونپ کر خود وشرام گرہن کیا — یہ سہدیو هابوڑا کون تھا، کہاں سے آیا......یہ بھی ایک بڑی دلچسپ کہانی ہے . کئی سال پہلے کی بات ہے، میں بازار میں چلا جا رہا تھا کہ ایک جگہ کچھ جھگڑا ہوتے دیکھ رک گیا .

سپاہی : (گرج کر) تم نے اس حلوائی کے پیسے اٹھائے ؟

لڑکا : (مضبوطی سے) نہیں داروغہ جی .

سپاہی : (دھمکی سے) ٹھیک بولو، نہیں پڑتی ہے چپت .

لڑکا : (اسی طرح) نہیں اٹھائے .

سپاہی : (تیزی سے) نہیں بتاؤ گے ؟

لڑکا : میں نے نہیں اٹھائے .

سپاہی : (لڑکے کو پیٹتا ہوا) اچھا، نہیں اٹھائے تو لے (تھپڑ) اور لے (تھپڑ) بتا پیسے لئے کہ نہیں (تھپڑ) جھوٹ بولا تو زمین میں کھود کر گاڑ دوں گا .

لڑکا : (کچھ روانسا ہو کر مگر اسی دڑھتا سے) میں نے نہیں لئے، نہیں لئے، نہیں لئے !

سپاہی : (ہار کر) بڑا پکا ہے . باندھو تو اس کے دونوں ہاتھ اور لٹکا دو اسے پیڑ پر .

(بھیڑ کا کچھ شور غل، اس میں سے اٹھتی ہوئی لڑکے کی ماں کی آواز .)

ماں : (سہسا فریادی لہجہ میں پرنتو آتم سمان چھوڑے بنا) ارے چھوڑ دو اسے. کیوں میرے بچے کو بے قصور مارتے ہو .

سپاہی : یہ تمہارا بچہ ہے ؟

ماں : ہاں !

सिपाही : (मां को समझाते हुए मगर सख़्ती से) इसने हलवाई के तीन पैसे उठाए हैं और हलवाई कहता है इसके पास हैं. और मैं भी समझता हूं कि इससे पास हैं. मगर यह क़बूलता ही नहीं !

हलवाई : (मां को देख कर तरस खा जाता है) जाने दीजिये दरोग़ा जी, तीन पैसे के बदले तीन आने की तो इस पर मार पड़ चुकी है. छोड़िये, मैंने छोड़े अपने पैसे.

सिपाही : ये सांप के बच्चे हैं छोड़ना कैसा !

हलवाई : (उसी तरह) चलिये, अब तो रहम खा जाइये इस पर ! लो, मैं ही कहे देता हूं, नहीं लिये इसने मेरे पैसे.

मां : (प्यार से) आ बेटा, चल.

रावी : मैंने लड़के की मां को जो देखा तो मन में कुछ शंका पैदा हुई. उनके पीछे पीछे चल दिया और कुछ दूर जा कर उनसे मिल गया.

* * *

मैं : इन पुलीस वालों के दिल तो होता ही नहीं.

मां : हां जी, बिल्कुल नहीं होता. देखो न, छोटे से बच्चे को कितना मारा है. दोनों गालों पर ख़ून झलक रहा है.

मैं : बड़े अफ़सोस की बात है. हां, आप लोग हाबूड़े हैं न ! आपका पड़ाव कहां है ?

मां : यही सोमवारी के पास, डाक बंगले से लगा हुआ.

मैं : 'सोमवारी'. यह शब्द तो हाबूड़े नहीं बोलते. माफ़ करिये, एक बात पूछ सकता हूं ?

मां : हूं हूं.

मैं : आपकी बोली और लहजा हाबूड़ों से नहीं मिलती.

मां : ठीक है, क्योंकि न मेरी मां हाबूड़ी है, न मेरा बाप !

मैं : क्या मतलब ?

मां : जब मैं दस ग्यारह बरस की थी, अपने मां बाप के साथ रामघाट गंगा नहाने जा रही थी. रास्ते में हाबूड़े मुझे उठा ले गए. अब मैं उन्हीं के साथ हूं. मैं असल में इसी क़स्बे की रहने वाली हूं. आज आपकी बात-चीत से मेरा जी उमड़

(ماں کو سمجھاتے ہوئے مگر سختی سے) اس نے حلوائی کے تین پیسے اُٹھائے ہیں اور حلوائی کہتا ہے اس کے پاس ہیں۔ اور میں بھی سمجھتا ہوں کہ اس کے پاس ہیں۔ مگر یہ قبولتا ہی نہیں!

(ماں کو دیکھ کر ترس کھا جاتا ہے) جانے دیجئے داروغہ جی، تین پیسے کے بدلے تین آنے کی تو اس پر مار پڑ چکی ہے۔ چھوڑئیے میں نے چھوڑے اپنے پیسے۔

یہ سانپ کے بچے ہیں چھوڑنا کیسا۔

(اسی طرح) چلئے، اب تو رحم کھا جائیے اس پر! لو، میں ہی کہے دیتا ہوں، نہیں لئے اس نے میرے پیسے۔

(پیار سے) آبیٹا، چل۔

میں نے لڑکے کی ماں کو جو دیکھا تو من میں کچھ شنکا پیدا ہوئی—ان کے پیچھے پیچھے چل دیا اور کچھ دور جا کر ان سے مل گیا۔

* * *

ان پولیس والوں کے دل تو ہوتا ہی نہیں۔

ہاں جی، بالکل نہیں ہوتا۔ دیکھو نہ، چھوٹے سے بچے کو کتنا مارا ہے۔ دونوں گالوں پر خون جھلک رہا ہے۔

بڑے افسوس کی بات ہے۔ ہاں، آپ لوگ ہابوڑے ہیں نہ! آپ کا پڑاؤ کہاں ہے؟

یہی، سوموارى کے پاس، ڈاک بنگلے سے لگا ہوا۔

'سوموارى'۔ یہ شبد تو ہابوڑے نہیں بولتے۔ معاف کرئیے، ایک بات پوچھ سکتا ہوں۔

ہوں ہوں۔

آپ کی بولی اور لہجہ ہابوڑوں سے نہیں ملتی۔

ٹھیک ہے، کیونکہ نہ میری ماں ہابوڑی ہے، نہ میرا باپ۔

کیا مطلب؟

جب میں دس گیارہ برس کی تھی اپنے ماں باپ کے ساتھ رام گھاٹ گنگا نہانے جا رہی تھی۔ راستے میں ہابوڑے مجھے اٹھا لے گئے۔ اب میں انہیں کے ساتھ ہوں۔ میں اسی قصبہ کی رہنے والی ہوں آج آپ کی بات چیت سے

आया है. (उत्सुकता से) मैं एक दो दिन में ज़रूर अपने मां बाप से मिलने जाऊंगी. (कुछ सोच कर, पर वह क्या पहचानेंगे मुझे!

मैं : किस मुहल्ले में रहते हैं वह लोग? क्या नाम है? मुझे बताइये, मैं उनको ख़बर दे दूंगा.

मां : (स्त्री सुलभ चंचलता से) आपको नहीं बताऊंगी. देखूंगी सतरह बरस के बाद पहचानते हैं या नहीं.

मैं : (एकाएक) तो शायद नहीं पहचानेंगे. मगर थोड़ी देर में ज़रूर पहचान जायेंगे.

मां : देखूंगी. (सहसा सामने देख कर) लो वह इस लड़के के पिता आ रहे हैं.

पिता : कहो बेटा, यह तुम्हारे गाल लाल क्यों हैं?

लड़का : लाल मुंडासे ने मारा था.

पिता : क्यों?

लड़का : कहता था तूने दूकानदार के तीन पैसे उठाए हैं.

पिता : फिर?

लड़का : मैंने कह दिया मैंने नहीं उठाए, बस फिर उसने ख़ूब मारा.

पिता : तुम ने पैसे उठाए थे.

लड़का : हां उठाए थे. यह रहे तीन पैसे.

रावी : मैं दंग रह गया, मेरी समझ में कुछ न आया, मेरे चेहरे को शायद बच्चे की मां ने भांप लिया.

मां : इस की सच्चाई पर आप को अचरज होता है क्या?

पिता : यह क़स्बे वाले मामूली बातों को भी बड़ी गहरी निगाह से देखते हैं.

मैं : सचमुच यह बात तो हम क़स्बे वालों की समझ से परे है. इस लड़के ने इतनी मार खा कर भी जिस बात को नहीं क़बूला उसे आप के पूछने पर चट बता दिया. इसका क्या भेद है?

मां : इसी से पूछिये.

मैं : इस बच्चे से!

मां : हां, इस बच्चे से.

मैं : क्यों बेटा, वहां तो तुम इतना पिटने पर न क़बूले पर बाबा के पूछने पर चट सच सच बात कह दी, यह क्या!

लड़का : अपनों से कोई छिपाता है! अपनों से कोई झूठ बोलता है!

آیا ھے. (اُتسکتا سے) مہں ایک دو دن مہں ضرور اپنے ماں باپ سے ملنے جاؤں گی. (کچھ سوچکر) پر وہ کیا پہچانینگے مجھے!

مہں : کس محلے مہں رھتے ھہں وہ لوگ؟ کیا نام ھے؟ مجھے بتائیے، مہں اُن کو خبر دے دونگا.

ماں : (اِستری سلبھ چنچلتا سے) آپ کو نہیں بتاؤں گی. دیکھونگی سترہ برس کے بعد پہچانتے ھہں یا نہیں.

مہں : (یکایک) تو شاید نہیں پہچانینگے. مگر تھوڑی دیر مہں ضرور پہچان جائینگے.

ماں : دیکھونگی. (سہسا سامنے دیکھکر) لو وہ اس لڑکے کے پتا آ رھے ھہں.

پتا : کہو بیٹا، یہ تمہارے گال لال کیوں ھہں؟

لڑکا : لال منڈاسے نے مارا تھا.

پتا : کیوں؟

لڑکا : کہتا تھا تونے دوکاندار کے تین پیسے اُٹھائے ھہں.

پھر.

مہں نے کہ دیا مہں نے نہیں اُٹھائے، بس پھر اس نے خوب مارا.

تم نے پیسے اُٹھائے تھے؟

ھاں اُٹھائے تھے. یہ رھے تین پیسے.

مہں دنگ رہ گیا، میری سمجھ مہں کچھ نہ آیا، میرے چہرے کو شاید بچے کی ماں نے بھانپ لیا.

اس کی سچائی پر آپ کو اچرج ھوتا ھے کیا؟

یہ قصبے والے معمولی باتوں کو بھی بڑی گہری نگاہ سے دیکھتے ھہں.

سچ سچ یہ بات تو ھم قصبہ والوں کی سمجھ سے پرے ھے. اس لڑکے نے اتنی مار کھا کر بھی جس بات کو نہیں قبولا اسے آپ کے پوچھنے پر چٹ بتا دیا. اس کا کیا بھید ھے؟

ماں : اسی سے پوچھئے.

مہں : اس بچے سے!

ماں : ھاں، اس بچے سے.

مہں : کیوں بیٹا، وھاں تو تم اتنا پٹنے پر نہ قبولے پر بابا کے پوچھنے پر چٹ سچ سچ بات کہ دی، یہ کیا!

لڑکا : اپنوں سے کوئی چھپاتا ھے! اپنوں سے [illegible] جھوٹ بولتا ھے!

मैं : भई वाह ! क्या तालीम दी है बच्चे को. आप हाबूड़े लोग वाकई महान शिक्षक हैं !

रावी : वह सुखदेवी, जिसे सत्रह बरस पहले हाबूड़े उठा ले गए थे, जब अपने मां बाप से मिलने गई तो मां ने तो एक निगाह में पहचान लिया. उन लोगों के कोई और औलाद न थी. हाबूड़ों से तय हुआ कि वह बच्चे को गोद दे दें. मां भी राज़ी हो गई. लड़के का नाम सहदेव रखा गया और उसे स्कूल में भरती करा दिया गया.

❀ ❀ ❀

मास्टर : (क्रोध में) बताओ किस किस ने इस बाग़ से आम तोड़े ?

कुछ लड़के : हमने नहीं तोड़े माटसाब !

मास्टर : ठीक ठीक बताओ, नहीं तो अभी सब की पीठ पर कमचियां पड़ती हैं.

वही लड़के : हम तो बाग़ में गए तक नहीं माटसाब !

सहदेव : (कुछ सहमा हुआ) मास्टर साहब !

मास्टर : हां; कहो क्या बात है सहदेव ?

सहदेव : मैं बाग़ में गया था, मैंने आम तोड़े थे. यह रहे वह आम लीजिये.

(चकित हो कर) अच्छा बेटा ! बताओ तो और कौन कौन बाग़ में गया था ? किस किस ने आम तोड़े थे ?

इन्हीं से पूछिये मास्टर साहब !

(फिर क्रोध से) यह तो अब कमचिआं पड़ने पर बताएंगे. (चिल्ला कर) चलो सब उधर आओ और कतार बांध कर खड़े हो जाओ.

(एक कमची की आवाज़, फिर एक कमची फिर और कमचियां...... फेड आउट)

❀ ❀ ❀

लड़का : क्यों बे सहदेव शर्म नहीं आती, मास्टर जी से सच्ची बात कह कर हम सब को पिटवाया.

दूसरा लड़का : और हज़रत आप साफ़ बच गये.

पहला लड़का : देखो न कितना चालाक है.

दूसरा लड़का : अच्छा बच्चू, देख लेंगे फिर कभी.

सहदेव : (चकित हो कर) कहीं आपस में झूठ बोलते हैं ? कहीं अपनों से सच छिपाते हैं ?

लड़कों की समझ में कुछ न आया. सब सहदेव को बुरा भला कहते हुए घर चले

بھئی واہ ! کیا تعلیم دی ہے بچے کو . آپ هابوڑے لوگ واقعی مہان شکشک هیں .

وہ سکھ دیوی ، جسے سترہ برس پہلے هابوڑے اٹھا لے گئے تھے ، جب اپنے ماں باپ سے ملنے گئی تو ماں نے تو ایک نگاہ میں پہچان لیا . ان لوگوں کے کوئی اور اولاد نہ تھی . هابوڑوں سے طے ہوا کہ وہ بچے کو گود دے دیں . ماں بھی راضی ہوگئی . لڑکے کا نام سہدیو رکھا گیا اور اسے اسکول میں بھرتی کرا دیا گیا .

❀ ❀ ❀

(کرودھ میں) بتاؤ کس کس نے اس باغ سے آم توڑے ہیں ؟

ہم نے نہیں توڑے ماٹ ساب !

ٹھیک ٹھیک بتاؤ ، نہیں تو ابھی سب کی پیٹھ پر کمچیاں پڑتی ہیں .

ہم تو باغ میں گئے تک نہیں ماٹ ساب !

(کچھ سہما ہوا) ماسٹر صاحب !

ہاں ، کہو کیا بات ہے سہدیو ؟

میں باغ میں گیا تھا ، میں نے آم توڑے تھے . یہ رہے وہ آم . لیجئے .

(چکت ہو کر) اچھا بیٹا ! بتاؤ تو اور کون کون باغ میں گیا تھا ؟ کس کس نے آم توڑے تھے ؟

انہیں سے پوچھئے ماسٹر صاحب !

(پھر کرودھ سے) یہ تو اب کمچیاں پڑنے پر بتائیںگے . (چلاکر) چلو سب ادھر آؤ اور قطار باندھکر کھڑے ہو جاؤ .

(ایک کمچی کی آواز ، پھر ایک کمچی پھر اور کمچیاں...... فیڈ آؤٹ)

❀ ❀ ❀

کیوں بے سہدیو شرم نہیں آتی ، ماسٹر جی سے سچی بات کہکر ہم سب کو پٹوایا .

اور حضرت آپ صاف بچ گئے .

دیکھو نہ کتنا چالاک ہے .

اچھا بچو ، دیکھ لینگے پھر کبھی .

(چکت ہوکر) کہیں آپس میں جھوٹ بولتے ہیں ؟ کہیں اپنوں سے سچ چھپاتے ہیں .

(لڑکوں کی سمجھ میں کچھ نہ آیا سب سہدیو کو برا بھلا کہتے ہوئے گھر چلے

गए. समय बीतता चला, सहदेव बड़ा हो गया और अपने नाना, लाला हरनाम दास की दूकान पर ही काम करने लगा.

नानी : बेटा सहदेव......बेटा सहदेव......सहदेव ......अरे बेटा, तू यहां बैठा क्या कर रहा है? मैं कब से खाना खाने के लिये पुकार रही हूं.

सहदेव : मां, आप ठीक कहती हैं, मैंने सुना ही नहीं.

नानी : क्यों, क्या बात है?

सहदेव : मां, आज दूकान पर बैठा गाहकों को कपड़ा दिखा रहा था. गाहक ने दाम पूछे, मुझे कपड़े के असली दाम मालूम थे. मैंने गाहक को वही बता दिये. गाहक से सौदा न पटा. वह चल दिया. इस पर पिता जी बहुत बिगड़े और कहने लगे कि तुम क्या ख़ाक दूकानदारी करोगे. तब से मैं इसी सोच में पड़ा हूं कि मैंने क्या ग़लती की जो पिता जी इतनी बड़ी बात कह गये.

नानी : बेटा, तुमने जो किया, ठीक ही किया. परन्तु आजकल दूकानदारी का यह रिवाज है कि गाहक को किसी चीज़ का ठीक ठीक पता नहीं देते.

सहदेव : ऐसा क्यों?

नानी : बस रिवाज है, रिवाज में क्यों कैसा?

सहदेव : और अगर मैं यह रिवाज़ तोड़ दूं तो?

नानी : तो कुछ को भला मालूम होगा, कुछ को बुरा लगेगा. पर मेरा ख़्याल है कि भला मानने वाले अधिक होंगे और बुरा मानने वाले कम.

सहदेव : तब तो मैं इस रिवाज़ को तोड़ दूंगा.

नानी : अच्छा बेटा, चल अब खाना खा ले.

नाना : (घबराए हुए) देखा सहदेव की अम्मा, देखा?

नानी : क्यों, क्या हो गया?

नाना : यही तुम्हारे लाड़ले आज गाहक के सामने दिल खोल कर रखने लगे, और फिर सौदा क्या पटना था. ऐसा ही रहा तो चार दिन में दूकान चौपट हो जाएगी.

नानी : तो क्या सच्चाई इतनी बुरी चीज़ है?

नाना : मैं सचाई को कब बुरा कहता हूं.

नानी : तो फिर आप क्या कह रहे हैं?

नाना : मैं तो यह कह रहा हूं कि वह मौक़ा ऐसा नहीं था जहां सचाई से काम लिया जाय.

گئے. سمے بیتتا چلا، سہدیو بڑا ہوگیا اور اپنے نانا، لالہ ہرنام داس کی دوکان پر ہی کام کرنے لگا)

نانی : بیٹا سہدیو... بیٹا سہدیو... سہدیو... ارے بیٹا! تو یہاں بیٹھا کیا کر رہا ہے؟ میں سب سے کھانا کھانے کے لئے پکار رہی ہوں.

سہدیو : ماں، آپ ٹھیک کہتی ہیں، میں نے سنا ہی نہیں.

نانی : کیوں، کیا بات ہے؟

سہدیو : ماں، آج دوکان پر بیٹھا گاہکوں کو کپڑا دکھا رہا تھا. گاہک نے دام پوچھے، مجھے کپڑے کے اصلی دام معلوم تھے. میں نے گاہک کو وہی بتا دئے. گاہک سے سودا نہ پٹا. وہ چل دیا. اس پر پتا جی بہت بگڑے اور کہنے لگے کہ تم کیا خاک دوکانداری کروگے. تب سے میں اسی سوچ میں پڑا ہوں کہ میں نے کیا غلطی کی جو پتا جی اتنی بڑی بات کہہ گئے.

نانی : بیٹا، تم نے جو کیا، ٹھیک ہی کیا. پرنتو آجکل دوکانداری کا یہ رواج ہے کہ گاہک کو کسی چیز کا ٹھیک ٹھیک پتا نہیں دیتے.

سہدیو : ایسا کیوں؟

نانی : بس رواج ہے، رواج میں کیوں کیسا؟

سہدیو : اگر میں یہ رواج توڑ دوں تو؟

نانی : تو کچھ کو بھلا معلوم ہوگا، کچھ کو برا لگے گا. پر میرا خیال ہے کہ بھلا ماننے والے ادھک ہونگے اور برا ماننے والے کم.

سہدیو : تب تو میں اس رواج کو توڑ دونگا.

نانی : اچھا بیٹا، چل اب کھانا کھالے.

نانا : (گھبرائے ہوئے) دیکھا سہدیو کی اماں، دیکھا؟

نانی : کیوں، کیا ہوگیا؟

نانا : یہی تمہارے لاڈلے آج گاہک کے سامنے دل کھولکر رکھنے لگے، اور پھر سودا کیا پٹنا تھا. ایسا ہی رہا تو چار دن میں دوکان چوپٹ ہوجائیگی.

نانی : تو کیا سچائی اتنی بری چیز ہے؟

نانا : میں سچائی کو کب برا کہتا ہوں.

نانی : تو پھر آپ کیا کہہ رہے ہیں؟

نانا : میں تو یہ کہہ رہا ہوں کہ وہ موقع ایسا نہیں تھا جہاں سچائی سے کام لیا جائے.

वह जमीन बुरी थी जहां सचाई का बीज बोया गया.

नानी : और अगर यों कहा जाए कि वह जगह बुरी थी जहां से सच्चाई की बात कही गई ?

नाना : क्या मतलब ?

नानी : मतलब यही कि जिस दूकान से गाहक रोज़ दुगुने तिगुने दाम सुनता रहा हो उस दूकान से आज ठीक ठीक दाम सुन कर सहसा कैसे एतबार कर ले ?

नाना : तो यह कह कर आप यह साबित करना चाहती हैं कि गाहक को सचाई की परख नहीं है.

नानी : सच्चाई की परख गाहक को होती है. हां, कपड़े की परख उसे नहीं होती. इसीलिये वह दूकानदार की बात को हमेशा झूठा सच्चा समझता है.

नाना : तो क्या तुम्हारा ख़याल है कि सच बोलने से और एक दाम कहने से दूकान चल जाएगी.

नानी : यह मुझे नहीं मालूम. मैं तो इतना जानती हूं कि सच्चाई आग की तरह चमकती है और उसे परखने में दिक़्क़त नहीं होती. अगर आपका यह तजुरबा है कि सच बोल कर दूकान नहीं चल सकती तो नहीं चलेगी.

नाना : भई साफ़ बात है, मैंने तो सच बोल कर दूकान को चला कर देखा नहीं. पर हां, यह ज़रूर जानता हूं कि झूठ बोल कर दूकान चलती है और चला रहा हूं और अच्छी चला रहा हूं.

नानी : तो ज़रा एक बार सच्चाई के साथ भी दूकान चला कर देख लीजिये.

नाना : अब बुढ़ापे में ?

नानी : माला तो लोग बुढ़ापे में ही फेरते हैं.

नाना : हां, मगर दूकान छोड़ कर.

नानी : दूकान पर बैठ कर क्यों नहीं ?

नाना : यह नहीं हो सकता.

नानी : तो क्या आपकी समझ में सच्चाई और व्योपार में बैर है ?

नाना : अकेला मैं ही दूकानदार नहीं हूं. इस क़स्बे में और बहुत से दूकानदार हैं. जैसा और सब करते हैं वैसा ही मैं भी करता हूं.

نیا ہند

وہ زمین بری تھی جہاں سچائی کا بیج بویا گیا ۔

اور اگر یوں کہا جائے کہ وہ جگہ بری تھی جہاں سے سچائی کی بات کہی گئی ؟

کیا مطلب ؟

مطلب یہ کہ جس دوکان سے گاہک روز دگنے تگنے دام سنتا رہا ہو اس دوکان سے آج ٹھیک ٹھیک دام سنکر سہسا کیسے اعتبار کرلے ؟

تو یہ کہکر آپ یہ ثابت کرنا چاہتی ہیں کہ گاہک کو سچائی کی پرکھ نہیں ہے ۔

سچائی کی پرکھ گاہک کو ہوتی ہے ۔ ہاں، کپڑے کی پرکھ اسے نہیں ہوتی ۔ اسی لئے وہ دوکاندار کی بات کو ہمیشہ جھوٹا سچا سمجھتا ہے ۔

تو کیا تمہارا خیال ہے کہ سچ بولنے سے اور ایک دام کہنے سے دوکان چل جائیگی؟

یہ مجھے نہیں معلوم ۔ میں اتنا جانتی ہوں کہ سچائی آگ کی طرح چمکتی ہے اور اسے پرکھنے میں دقت نہیں ہوتی ۔ اگر آپکا یہ تجربہ ہے کہ سچ بولکر دوکان نہیں چل سکتی تو نہیں چلے گی ۔

بھئی صاف بات ہے، میں نے تو سچ بولکر دوکان کو چلاکر دیکھا نہیں۔ پر ہاں، یہ ضرور جانتا ہوں کہ جھوٹ بولکر دوکان چلتی ہے اور چلا رہا ہوں، اور اچھی چلا رہا ہوں ۔

تو ذرا ایک بار سچائی کے ساتھ بھی دوکان چلاکر دیکھ لیجئے ۔

اب بڑھاپے میں ؟

مالا تو لوگ بڑھاپے میں ہی پھیرتے ہیں ۔

ہاں، مگر دوکان چھوڑکر ۔

دوکان پر بیٹھکر کیوں نہیں ؟

یہ نہیں ہوسکتا ۔

تو کیا آپکی سمجھ میں سچائی اور بیوپار میں بیر ہے ؟

اکیلا میں ہی دوکاندار نہیں ہوں ۔ اس قصبہ میں اور بہت سے دوکاندار ہیں ۔ جیسا اور سب کرتے ہیں ویسا ہی میں بھی کرتا ہوں ۔

सहदेव : (प्रवेश कर) पिता जी, प्रनाम.

नानी : लो, अब मुझ से बहस होती नहीं, अब आगे इसी से झगड़ो.

सहदेव : मां ! क्या बात है ?

नानी : तेरे पिता जी का मत है कि गाहक के साथ सच्चाई का बर्ताव नहीं किया जा सकता.

सहदेव : पिता जी ! जब आपकी दूकान में कोई थान नहीं होता और उसको आप पड़ोसी की दूकान से मंगाते हैं तो क्या वह भी आप के साथ इसी तरह सौदा करता है जिस तरह आप गाहक से ?

नाना : अरे आपस में कहीं मोल तोल चलता है ?

सहदेव : तो आपस में आप सच्चे व्यवहार को मानते हैं ?

नाना : बेशक.

सहदेव : और अगर कोई गाहक को आपस का समझे तो ?

नाना : बिल्ली चूहे को आपस का समझे तो भूखी मर जाए.

सहदेव : आदमी गाय को माता मान कर खूब घी दूध खाता है, टोटे में नहीं रहता.

नाना : उससे दूध जो मिलता है.

सहदेव : गाहक से भी नफ़ा मिलता है.

नाना : गाय खूंटे से बंधी रहती है, गाहक क्या खूंटे से बंधा रहता है ? वह एक दूकानदार से क्यों बंधे ?

सहदेव : क्या सच्चाई ऐसा खूंटा नहीं हो सकती जिससे गाहक अपने आप बंधना पसन्द करें.

नाना : क्या तुम समझते हो कि सच्चाई ऐसा खूंटा हो सकती है ?

सहदेव : मैं तो ऐसा ही समझता हूं.

नाना : देखो बेटा ! मैं बूढ़ा हो चला हूं. दूकान तुम्हारी है, तुम को ही संभालना है, तुम्हीं को गृहस्थी पालना है. अपना भला बुरा सोच लो. मेरी राय में तुम ग़लत राह पकड़ना चाहते हो. बूढ़े की सलाह न मानो, तुम जानो.

नानी : जब आप हर तरह उसी को दूकान सौंप रहे हैं और उसे अपनी राह चलने के लिये आज़ाद छोड़ते हैं तो उसे घबराइये नहीं. सच्चे जी से आशीर्वाद दीजिए.

سہدیو : (پرویش کر) پتا جی پرنام .

نانی : لو، اب مجھ سے بحث ہوتی نہیں، اب آگے اسی سے جھگڑو .

سہدیو : ماں کیا بات ہے ؟

نانی : تیرے پتا جی کا مت ہے کہ گاہک کے ساتھ سچائی کا برتاؤ نہیں کیا جاسکتا .

سہدیو : پتا جی ! جب آپکی دوکان میں کوئی تھان نہیں ہوتا اور اس کو آپ پڑوسی کی دوکان سے منگاتے ہیں تو کیا وہ بھی آپ کے ساتھ اسی طرح سودا کرتا ہے جس طرح آپ گاہک سے ؟

نانا : ارے آپس میں کہیں مول تول چلتا ہے ؟

سہدیو : تو آپس میں آپ سچے ویوہار کو مانتے ہیں ؟

نانا : بیشک .

سہدیو : اور اگر کوئی گاہک کو آپس کا سمجھے تو ؟

نانا : بلی چوہے کو آپس کا سمجھے تو بھوکی مر جائے .

سہدیو : آدمی گائے کو ماتا مانکر خوب گھی دودھ کھاتا ہے، ٹوٹے میں نہیں رہتا .

نانا : اس سے دودھ جو ملتا ہے .

سہدیو : گاہک سے بھی نفع ملتا ہے .

نانا : گائے کھونٹے سے بندھی رہتی ہے، گاہک کیا کھونٹے سے بندھا رہتا ہے ؟ وہ ایک دوکان‌دار سے کیوں بندھے ؟

سہدیو : کیا سچائی ایسا کھونٹا نہیں ہوسکتی جس سے گاہک اپنے آپ بندھنا پسند کریں .

نانا : کیا تم سمجھتے ہو کہ سچائی ایسا کھونٹا ہوسکتی ہے ؟

سہدیو : میں تو ایسا ہی سمجھتا ہوں .

نانا : دیکھو بیٹا ! میں بوڑھا ہو چلا ہوں . دوکان تمہاری ہے، تم کو ہی سنبھالنا ہے، تمہیں کو گرہستی پالنا ہے . اپنا بھلا برا سوچ لو . میری رائے میں تم غلط راہ پکڑنا چاہتے ہو . بوڑھے کی صلاح نہ مانو، تم جانو .

نانی : جب آپ ہر طرح اسی کو دوکان سونپ رہے ہیں اور اسے اپنی راہ چلنے کے لئے آزاد [illegible] ہیں تو اسے گھبرائیے نہیں . سچے جی [illegible] .

नाना : सहदेव की अम्मां, मैं सच्चे जी से उसका भला चाहता हूं. आशीर्वाद दे सकता हूं पर सच्चे जी से नहीं.

नानी : यह क्यों ?

नाना : यह यों कि उस भली राह में मुझे सचमुच इतनी भलाई दिखाई नहीं देती जो सहदेव की भलाई कर सके.

नानी : अच्छा, आप आशीर्वाद ही दीजिये.

नाना : बेटा सहदेव ! तुम सच्चाई की राह पर व्यौपार में चल रहे हो. तुम उस पर सच्चे जी से चल रहे हो. परमात्मा तुम्हें सुखी रखे, तुम्हारे व्यापार में बढ़ती हो, और तुम दुनिया में नाम कमाओ.

--भगवानदीन

क़ुरान और सच्ची लोकशाही

(मंज़र अली सोख़्ता)

[अलीगढ़ में 31 अक्तूबर सन '53 से 2 नवम्बर '53 तक एक आल इंडिया मुसलिम कन्वैन्शन हुआ था. श्री मंज़र अली सोख़्ता ने उस कन्वैन्शन में एक तजवीज़ पेश करना चाहा था जो किसी कारन न कर सके. वह तजवीज़ उन्होंने 'नया हिन्द' में छपने के लिये भेजी है. उसे हम नीचे दे रहे हैं.

—ऐडीटर]

यह कन्वैन्शन हिन्दुस्तान के मुसलमानों का ध्यान उन नाज़ुक और ख़तरनाक हालतों की तरफ़ दिलाता है जो आजकल की पच्छिमी सभ्यता अपने साथ लाई है और जो इनसानी दुनिया पर अपने गहरे असर डाल रही हैं. इस पच्छिमी सभ्यता की एक ख़ास बात यह है कि इसने उस मेल और समतोल को उलट दिया है जो मज़हब ने आदमी की रूहानी और माद्दी ज़िन्दगियों में क़ायम किया था. इसने तौहीद यानी एक ईश्वर में विश्वास की जगह नास्तिकता को और क़ुदरत के क़ानूनों को दी है. रूहानियत की जगह उसने दुनिया और दौलत परस्ती को दी है. इख़लाक़ यानी सदाचार की जगह पालिसी यानी हिकमतेअमली और अवसरवाद, राजकाजी ठाठ बाट और ऐश व इशरत को. रूहानी और इख़लाक़ी

سہدیو کی اماں، میں سچے جی سے اس کا بھلا چاہتا ہوں. آشیرواد دے سکتا ہوں پر سچے جی سے نہیں۔

یہ کیوں ؟

یہ یوں کہ اس بھلی راہ میں مجھے سچ مچ اتنی بھلائی دکھائی نہیں دیتی جو سہدیو کی بھلائی کر سکے۔

اچھا، آپ آشیرواد ہی دیجئے۔

بیٹا سہدیو ! تم سچائی کی راہ پر ویاپار میں چل رہے ہو. تم اس پر سچے جی سے چل رہے ہو۔ پرماتما تمہیں سکھی رکھے تمہارے بیوپار میں بڑھتی ہو، اور تم دنیا میں نام کماؤ۔

—بھگوان دین

قرآن اور سچی لوک شاہی

(منظر علی سوختہ)

[علی گڑھ میں 31 اکتوبر سن '53 سے 2 نومبر '53 تک ایک آل انڈیا مسلم کنوینشن ہوا تھا. منظر علی سوختہ نے اس کنوینشن میں ایک تجویز پیش کرنا چاہا تھا جو کسی کارن نہ کر سکے. پھر انہوں نے 'نیا ہند' میں چھپنے کے لئے بھیجی، اسے نیچے دے رہے ہیں

—ایڈیٹر]

یہ کنوینشن ہندستان کے مسلمانوں کا دھیان اُن نازک اور خطرناک حالتوں کی طرف دلاتا ہے جو آجکل کی پچھمی سبھیتا اپنے ساتھ لائی ہے اور جو انسانی دنیا پر اپنے گہرے اثر ڈال رہی ہیں. اس پچھمی سبھیتا کی ایک خاص بات یہ ہے کہ اس نے اس میل اور سمتول کو الٹ دیا ہے جو مذہب نے آدمی کی روحانی اور مادی زندگیوں میں قایم کیا تھا. اس نے توحید یعنی ایک ایشور میں وشواس کی جگہ ناستکتا کو اور قدرت کے قانونوں کو دی ہے. روحانیت کی جگہ اس نے دنیا اور دولت پرستی کو دی ہے. اخلاق یعنی سداچار کی جگہ پالیسی یعنی حکمت عملی اور اوسرواد، راجکاجی ٹھاٹھ باٹھ اور عیش و عشرت کو. روحانی اور اخلاقی

यानी नैतिक ताक़तों की जगह उसने हैवानी और शैतानी ताक़तों को दे दी है, परलोक की जगह इस लोक को. इस इतने बड़े इन्क़लाब के साथ साथ इसकी यह तालीम है कि अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को बढ़ाओ और उनको पूरा करने में अपनी सारी शक्ति लगा दो. इसी को यह सभ्यता तरक़्क़ी कहती है और यही इसके लिये ज़िन्दगी का मक़सद है. यह तहज़ीब कुल मानव समाज की भलाई का लक्ष अपने सामने नहीं रखती और न निस्वार्थ सेवा, त्याग और क़ुरबानी में उसे विश्वास है. उसका कहना है कि हर आदमी के लिये अपनी निजी या क़ौमी या मुलकी या नसली फ़ायदे को ही देखना इनसान की ज़िन्दगी का मक़सद है और इस मक़सद तक पहुंचने का ज़रिया केवल तलवार और हिंसा है.

इस कन्वैन्शन की यह राय है कि ईश्वर का जो कोप इस वक़्त दुनिया पर उतर रहा है उसका केवल एक यह कारन है कि दुनिया वालों ने अपनी मज़हबी राहें छोड़ कर पच्छिमी सभ्यता का रास्ता पकड़ लिया है. यह कन्वैन्शन मुसलमानों को ख़ास कर और मज़हब के मानने वालों को आम तौर पर चेतावनी देता है कि जब तक वह हक़ यानी सच्चाई पर क़ायम रहने और नेक काम करने की सीधी राह अख़्तियार न करेंगे ईश्वर का कोप उन पर उतरता रहेगा और हम उन क़ौमों की तरह मिट जायेंगे जिनके अविश्वास और बुरे कामों ने उन्हें बरबाद कर दिया. यह कन्वैन्शन मुसलमानों का ध्यान उन असूलों की तरफ़ दिलाता है जिन पर क़ुरान में आदमी की ज़िन्दगी के रूहानी, समाजी, आर्थिक और राजकाजी पहलुओं को क़ायम किया है. यह कन्वैन्शन उन असूलों में से कुछ को ज़रा विस्तार के साथ बताना चाहता है क्योंकि आम जनता इस समय उनसे बेख़बर है और लोगों को यह भी पता नहीं है कि इन असूलों में जम्हूरियत यानी लोकशाही को कितना महत्व दिया गया है और किस पैमाने पर इनसान इनसान की बराबरी, भाई चारे और सबकी आज़ादी को जो लोकशाही के बुनियादी असूल हैं, इनसानी ज़िन्दगी की बुनियाद बताया गया है.

इसलाम के रूहानी असूल

क़ुरान ईश्वर के एक होने को दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई बताता है और आदमी की ज़िन्दगी के हर पहलू की बुनियाद इसी सच्चाई पर क़ायम करता है. क़ुरान का कहना है कि जब कुल सृष्टि का ईश्वर यानी रब एक है तो ज़रूरी है कि यह सृष्टि अपने बनाने वाले की एकता का अक्स हो. मानव जाति अपनी अक़्ल और समझ और रूहानी और इख़लाक़ी तजरबों की ...

یعنی نیتک طاقتوں کی جگہ اس نے حیوانی اور شیطانی طاقتوں کو دے دی ہے، پرلوک کی جگہ اس لوک کو. اس اتنے بڑے انقلاب کے ساتھ ساتھ اس کی یہ تعلیم ہے کہ اپنی زندگی کی ضرورتوں کو بڑھاؤ اور ان کو پورا کرنے میں اپنی ساری شکتی لگا دو. اسی کو یہ سبھیتا ترقی کہتی ہے، اور یہی اس کے لئے زندگی کا مقصد ہے. یہ تہذیب کل مانو سماج کی بھلائی کا لکش اپنے سامنے نہیں رکھتی اور نہ نسوارتھ سیوا، تیاگ اور قربانی میں اسے وشواس ہے. اس کا کہنا ہے کہ ہر آدمی کے لئے اپنی نجی یا قومی یا ملکی یا نسلی فائدے کو ہی دیکھنا انسان کی زندگی کا مقصد ہے اور اس مقصد تک پہونچنے کا ذریعہ کیول تلوار اور اہنسا ہے.

اس کنوینشن کی یہ رائے ہے کہ ایشور کا جو کوپ اس وقت دنیا پر اتر رہا ہے اس کا کیول ایک یہ کارن ہے کہ دنیا والوں نے اپنی مذہبی راہیں چھوڑ کر پچھمی سبھیتا کا راستہ پکڑ لیا ہے. یہ کنوینشن مسلمانوں کو خاصکر اور مذہب کے ماننے والوں کو عام طور پر چیتاونی دیتا ہے کہ جب تک وہ حق یعنی سچائی پر قائم رہنے اور نیک کام کرنے کی سیدھی راہ اختیار نہ کرینگے ایشور کا کوپ ان پر اترتا رہیگا اور ہم ان قوموں کی طرح مٹ جائینگے جن کے اوشواس اور برے کاموں نے انہیں برباد کردیا. یہ کنوینشن مسلمانوں کا دھیان ان اصولوں کی طرف دلاتا ہے جن پر قرآن میں آدمی کی زندگی کے 'روحانی' سماجی، آرتھک اور راجکاجی پہلوؤں کو قائم کیا ہے. یہ کنوینشن ان اصولوں میں سے کچھ کو ذرا وستار کے ساتھ بتانا چاہتا ہے کیونکہ عام جنتا اس سمے ان سے بے خبر ہے. اور لوگوں کو یہ بھی پتہ نہیں ہے کہ ان اصولوں میں جمہوریت یعنی لوک شاہی کو کتنا مہتو دیا گیا ہے اور کس پیمانے پر انسان انسان کی برابری، بھائی چارہ اور سب کی آزادی کو جو لوک شاہی کے بنیادی اصول ہیں، انسانی زندگی کی بنیاد بتایا گیا ہے.

اسلام کے روحانی اصول

قرآن ایشور کے ایک ہونے کو دنیا کی سب سے بڑی سچائی بتاتا ہے اور آدمی کی زندگی کے ہر پہلو کی بنیاد اسی سچائی پر قائم کرتا ہے. قرآن کا کہنا ہے کہ جب کل سرشٹی کا ایشور یعنی رب ایک ہے تو ضروری ہے کہ یہ سرشٹی اپنے بنانے والے کی ایکتا کا عکس ہو. مانو جات اپنی عقل اور سمجھ اور روحانی اور اخلاقی تجربوں کی ...

से इस सचाई को समझने की योग्यता रखती है. इसलिये आदमी का पहला फ़र्ज़ यह है कि इस सचाई को अपने ईमान की बुनियाद बनाए और उस मालिक के सामने जिसने उसे पैदा किया है और दुनिया की नेमतें दी हैं दीनता और शुक्र गुज़ारी के साथ अपना सर झुकाए. इसलाम की रूहानियत का यही पहला असूल है.

दूसरा असूल यह है कि उन सब फ़रज़ों को जो आदमी की रूहानी और इख़लाक़ी तालीम से सम्बन्ध रखते हैं आदमी दीनता, निस्वार्थता, हृदय की शुद्धता और ईमान और विश्वास के साथ पूरा करे. इसका मतलब यह है कि आदमी अपने हर धार्मिक फ़र्ज़ को अपने हर निजी नफ़े नुक़सान से बिलकुल अलग रख कर पूरा करे. यहां तक कि बहिश्त या जन्नत की इच्छा का भी फ़र्ज़ के साथ लगाव न हो.

रोज़ा और नमाज़ का मतलब अल्लाह की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को पूरा करना है. यह फ़र्ज़ अपनी निजी ज़रूरतों या ग़रज़ों को सामने रख कर पूरा नहीं हो सकता. इस फ़र्ज़ का पूरा करना शुक्रगुज़ारी, दीनता और ईश्वर निश्ठा पर निर्भर है. इनके साथ साथ 'सिरातेमुस्तक़ीम' यानी दीन की सीधी राह पर चलने का पक्का इरादा करना और ईश्वर से इसके लिये शक्ति और सफलता मांगना बिल्कुल ज़रूरी है. तीसरा असूल यह है कि अल्लाह की तरफ़ अपने इस फ़र्ज़ को पूरा करने से आदमी को जो रूहानी और इख़लाक़ी शक्ति हासिल हो उसे सारे मानव समाज की सेवा और भलाई में ख़र्च करे. उसे एक अमानत समझे जो अल्लाह ने उसे दुनिया की सेवा और भलाई करने के लिये प्रदान की है.

रूहानी ज़िन्दगी के यही तीन ख़ास असूल हैं. यह कनवेनशन इन असूलों की तरफ़ मुसलमानों का ध्यान दिलाता है और उन्हें आगाह करता है कि क़ब्रों और पीरों की पूजा और तरह तरह के अंध विश्वास क़ुरान की आज्ञाओं के ख़िलाफ़ हैं. मुसलमानों को उनसे बचना और दूर रहना चाहिये. इससे भी ज़ियादा ज़रूरी यह है कि वह रोज़ा नमाज़ और दूसरे फ़र्ज़ों के पूरा करते वक़्त उनके असली मतलब और उनकी ग़रज़ को अपने सामने रखें और अपनी रोज़ की ज़िन्दगी में उस असल ग़रज़ को पूरा करने की कोशिश करें. जो रोज़ा, नमाज़, ज़कात (ख़ैरात) वग़ैरा जन्नत प्राप्त करने के लिये या किसी भी निजी फ़ायदे को सामने रख कर की जायेगी वह दीन या दुनिया में कहीं भी फ़ायदा नहीं पहुंचा सकती.

यह कनवैनशन मुसलमानों का ध्यान ख़ास तौर से इस बात की तरफ़ दिलाना चाहता है कि इस्लाम ने [illegible]

سچائی کو سمجھنے کی یوگیتا رکھتی ہے۔ اسلئے آدمی کا پہلا فرض یہ ہے کہ اس سچائی کو اپنے ایمان کی بنیاد بنائے اور اس مالک کے سامنے جس نے اسے پیدا کیا اور دنیا کی نعمتیں دی ہیں دینتا اور شکر گزاری کے ساتھ اپنا سر جھکائے۔ اسلام کی روحانیت کا یہی پہلا اصول ہے۔

دوسرا اصول یہ ہے کہ ان سب فرضوں کو جو آدمی کی روحانی اور اخلاقی تعلیم سے سمبندھ رکھتے ہیں آدمی دینتا، نسوارتھتا، ہردے کی شدھتا اور ایمان اور وشواس کے ساتھ پورا کرے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ آدمی اپنے ہر دھارمک فرض کو اپنے ہر نجی نفع نقصان سے الگ رکھکر پورا کرے۔ یہاں تک کہ بہشت یا جنت کی اچھا کا بھی فرض کے ساتھ لگاؤ نہ ہو۔

روزہ اور نماز کا مطلب اللہ کی طرف اپنے فرض کو پورا کرنا ہے، یہ فرض اپنی نجی ضرورتوں یا غرضوں کو سامنے رکھکر پورا نہیں ہوسکتا۔ اس فرض کا پورا کرنا شکر گزاری، دینتا اور ایشور نشٹھا پر نربھر ہے۔ ان کے ساتھ ساتھ صراط مستقیم یعنی دین کی سیدھی راہ پر چلنے کا پکا ارادہ کرنا اور ایشور سے اس کے لئے شکتی اور سپھلتا مانگنا بالکل ضروری ہے۔ تیسرا اصول یہ ہے کہ اللہ کی طرف اپنے اس فرض کو پورا کرنے سے آدمی کو جو روحانی اور اخلاقی شکتی حاصل ہو اسے سارے مانو سماج کی سیوا اور بھلائی میں خرچ کرے۔ اسے ایک امانت سمجھے جو اللہ نے اسے دنیا کی سیوا اور بھلائی کرنے کے لئے پردان کی ہے۔

روحانی زندگی کے یہی تین خاص اصول ہیں۔ یہ کنوینشن ان اصولوں کی طرف مسلمانوں کا دھیان دلاتا ہے اور آگاہ کرتا ہے کہ قبروں اور پیروں کی پوجا اور طرح طرح کے اندھ وشواس قرآن کی آگیاؤں کے خلاف ہیں۔ مسلمانوں کو ان سے بچنا اور دور رہنا چاہئے۔ اس سے زیادہ ضروری یہ ہے کہ وہ روزہ نماز اور دوسرے فرضوں کو پورا کرتے وقت ان کے اصلی مطلب اور ان کی غرض کو سامنے رکھیں اور اپنی روز کی زندگی میں اس غرض کو پورا کرنے کی کوشش کریں۔ جو روزہ، نماز، زکات (خیرات) وغیرہ جنت پراپت کرنے کے لئے یا کسی بھی نجی فائدہ کو سامنے رکھکر کی جائیگی وہ دین یا دنیا میں کہیں بھی فائدہ نہیں پہونچا سکتی۔

یہ کنوینشن مسلمانوں کا دھیان خاص طور سے اس بات کی طرف دلانا چاہتا ہے کہ اسلام [illegible] نے حق الله [illegible]

यानी ईश्वर की तरफ़ आदमी के फ़र्ज़ और हक़ुलबाद यानी दूसरे आदमियों की तरफ़ आदमी के फ़र्ज़ में फ़र्क़ क्या है और यह बताया है कि रोज़ा, नमाज़, ज़कात और क़ुर्बानी वग़ैरा जो हक़्क़े-अल्लाह में शामिल हैं उनके न पूरा करने को अल्लाह माफ़ कर सकता है लेकिन हक़ुलबाद यानी दूसरे इनसानों की तरफ़ फ़र्ज़ के पूरा न करने को यानी उन में कमी या भूल को अल्लाह हरगिज़ माफ़ नहीं करता. उसकी सज़ा इस लोक में या परलोक में ज़रूर मिलती है.

जो हक़ुलबाद क़ुरान में समाजी, आर्थिक और राजकाजी जिन्दगी के लिये क़ायम किये हैं उनमें से ख़ास ख़ास नीचे दिये जाते हैं.

इस्लाम के समाजी असूल—

क़ुरान में इनसान की समाजी जिन्दगी का पहला फ़र्ज़ ग़रीबों, दुखियों, लाचारों और मज़लूमों के साथ हमदर्दी करना और उनकी मदद करना है. क़ुरान ने समाजी जिंदगी की बुनयाद एक ईश्वर में विश्वास और इनसानी भाई-चारे के असूलों पर रखी है और इस भाई चारे के अंदर कुल मानव समाज को शामिल किया है और बताया है कि आदमी के हर काम का मक़सद कुल इनसानों की बेहतरी और भलाई होना चाहिये. क़ुरान सारी इनसानी क़ौम को एक कुटुम्ब बताता है. मोहम्मद साहब अपनी पांचों वक़्त की नमाज़ में कहा करते थे :—"मैं शहादत देता हूं कि सब आदमी आपस में भाई-भाई हैं." इस से ज़ियादा खुले और ज़ोरदार शब्दों में इनसानी भाई चारे को और सब इनसानों के एक कुटुम्ब होने को बयान नहीं किया जा सकता. यह भी ज़ाहिर है कि क़ुरान की यह तालीम और रसूले क़रीम की यह तसदीक़ उन सारे रीत, रिवाजों, क़ानूनों और तरह तरह के क़ौमी, मुल्की, नस्ली या मज़हबी फ़िर्क़ों और अलग-अलग संगठनों को एक साथ ख़त्म कर देती है जो एक आदमी को दूसरे आदमी से अलहदा करते हैं और इनसान की समाजी ज़िंदगी में भेद भाव और झगड़े पैदा करते हैं.

इसके साथ साथ यह भी साफ़ हो जाता है कि जो भेद भाव आज हम दुनिया में मालिक और नौकर, छूत और अछूत, शरीफ़ रज़ील, ऊंच नीच, हिन्दू मुसलमान, शेख़ सैयद, शीया सुन्नी, ब्रह्मन शूद्र, खत्री कायस्थ वग़ैरा के देखते हैं, चाहे वह किसी भी रंग रूप में हों, खुले तौर पर इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं. इस तरह के भेदों को मानना क़ुरान की तालीम को झुटलाना है.

और बहुत से धर्म वालों की तरह इस्लाम के मानने वालों ने भी अपने आप को लोहे के एक पिंजरे में बंद कर लिया है. इस पिंजरे को वह [illegible] इस्लाम [illegible]

ایشور کی طرف آدمی کے فرض اور حق العباد یعنی دوسرے آدمیوں کی طرف آدمی کے فرض میں فرق کیا ہے اور یہ بتایا ہے کہ روزہ، نماز، زکوٰۃ اور قربانی وغیرہ جو حقِ اللہ میں شامل ہیں اُن کے نہ پورا کرنے کو اللہ معاف کر سکتا ہے لیکن حق العباد یعنی دوسرے انسانوں کی طرف فرض کے پورا نہ کرنے کو یعنی اُن میں کمی یا بھول کو اللہ ہرگز معاف نہیں کرتا۔ اُسکی سزا اِس لوک میں یا پرلوک میں ضرور ملتی ہے۔

جو حق العباد قرآن میں سماجی، آرتھک اور راجکاجی زندگی کے لئے قائم کئے ہیں اُن میں سے خاص خاص نیچے دئیے جاتے ہیں۔

اِسلام کے سماجی اصول

قرآن میں اِنسان کی سماجی زندگی کا پہلا فرض غریبوں، دکھیوں، لاچاروں اور مظلوموں کے ساتھ ہمدردی کرنا اور اُن کی مدد کرنا ہے۔ قرآن نے سماجی زندگی کی بنیاد ایک ایشور میں وشواس اور اِنسانی بھائی چارہ کے اصولوں پر رکھی ہے اور اُس بھائی چارہ کے اندر کل مانو سماج کو شامل کیا ہے اور بتایا ہے کہ آدمی کے ہر کام کا مقصد کل اِنسانوں کی بہتری اور بھلائی ہونا چاہئے۔ قرآن ساری اِنسانی قوم کو ایک کٹمب بتاتا ہے۔ محمد صاحب اپنی پانچوں وقت کی نماز میں کہا کرتے تھے:— "میں شہادت دیتا ہوں کہ سب آدمی آپس میں بھائی بھائی ہیں۔" اِس سے زیادہ کھلے اور زوردار شبدوں میں انسانی بھائی چارے کو اور سب انسانوں کے ایک کٹمب ہونے کو بیان نہیں کیا جا سکتا۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ قرآن کی یہ تعلیم اور رسول کریم کی یہ تصدیق اُن سارے ریت، رواجوں، قانونوں اور طرح طرح کے قومی، ملکی، نسلی یا مذہبی فرقوں اور الگ الگ سنگٹھنوں کو ایک ساتھ ختم کر دیتی ہے جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے علیحدہ کرتے ہیں اور انسان کی سماجی زندگی میں بھید بھاؤ اور جھگڑے پیدا کرتے ہیں۔

اِس کے ساتھ ساتھ یہ بھی صاف ہو جاتا ہے کہ جو بھید بھاؤ آج ہم دنیا میں مالک اور نوکر، چھوت اور اچھوت، شریف رذیل، اونچ نیچ، ہندو مسلمان، شیخ سید، شیعہ سنی، برہمن شودر، کھتری کائستھ وغیرہ کے دیکھتے ہیں، چاہے وہ کسی بھی رنگ روپ میں ہوں، کھلے طور پر اِسلام کے خلاف ہیں۔ اِس طرح کے بھیدوں کو ماننا قرآن کی تعلیم کو جھٹلانا ہے۔

اور بہت سے دھرم والوں کی طرح اِسلام کے ماننے والوں نے بھی اپنے آپ کو لوہے کے ایک پنجرے میں بند کر لیا ہے۔ اس پنجرے [illegible]

से
…ामी भाई चारा कहते हैं. आये दिन की समाजी …गी में उन्होंने इस भाई चारे की ऐसी रिवाजी और …ी शकलें पैदा कर दी हैं, जिन को मिटाना क़ुरान और …ूल का ख़ास मक़सद था.

यह कनवैनशन मुसलमानों से प्रार्थना करता है कि वह अपने मज़हब के इन ज़रूरी पहलुओं की तरफ़ ध्यान दें और क़ुरान की तालीम और रसूल के उपदेश सामने रख कर उन सारे समाजी तुफ़रक़ों को जो भाई भाई में फ़र्क़ करते हैं और उनमें दर्दनाक झगड़े और आपसी खींचातानी पैदा करते हैं क़ुरान की आज्ञा के ख़िलाफ़ समझ कर एक दम मिटाने की कोशिश करें.

आदमी की आये दिन की समाजी ज़िंदगी में एक आदमी को दूसरे आदमी के साथ जिस तरह का बर्ताव करना चाहिये और उस बर्ताव में जिस असूल को सामने रखना चाहिये उसे क़ुरान ने अद्ल यानी इंसाफ़ का नाम दिया है. अद्ल और इनसाफ़ से बढ़ कर आपसी संबंधों में बराबरी लाने वाला कोई दूसरा असूल नहीं हो सकता. भाई चारे और एक खानदान के विचार को सामने रखते हुए इंसाफ़ के इस असूल के सिवा कोई दूसरा असूल क़ायम हो ही नहीं सकता. इंसाफ़ की व्याख्या करते हुए क़ुरान ने हर आदमी के लिये हर ग़ैर ज़रूरी चीज़ का रखना ग़लत ठहराया है और उसे मना किया है. कोई ग़ैर ज़रूरी चीज़ अपने क़ब्ज़े में नहीं रखी जा सकती और अगर … रखी जाय तो केवल अमानत के तौर पर रखी जा सकती है और फिर उसे जल्दी से जल्दी उसके हक़दार के पास पहुंचा देना चाहिये. ख़ास कर क़ुरान ने ग़ैर ज़रूरी सोने … और चांदी को आदमी के लिये एक अज़ाब यानी मुसीब…त बताया है और कहा है कि जो कोई ग़ैर ज़रूरी सोना … और चांदी अपने पास रखता है बदला मिलने के दिन उ…सकी छाती और हड्डियां उस सोने और चांदी से दाग़ी … जाती हैं. इस तरह की चीज़ों को रखना जो मना किया … गया है उसकी बुनयाद रहमानिय्यत यानी वैराग्य या दुनिया … को छोड़ने पर नहीं है, बल्कि अपने पड़ोसी और दूसरे … इंसानों की ज़रूरतों और उनके हक़ पर है सब एक खुदा … के बंदे हैं. सब की ज़रूरतें एक सी पूरी होनी चाहिये. इसलि…ये जो अपनी ज़रूरत से ज़ियादा काम में लाता है या ज…मा रखता है वह दूसरों को उनके हक़ से महरूम कर देता है… वह खुदा की उन नैमतों को जो सब के लिये एक सी हैं … बेजा तौर पर हथिया लेता है. ऐसा करना खुला ज़ुल्म … है और इंसाफ़ के असूल के बिलकुल ख़िलाफ़ है. इन असूल…ों की बुनयाद इस बात पर है कि सब की माद्दी और संसार…ी ज़िंदगी अच्छी से अच्छी हो. उनकी बुनियाद अख़वत … यानी भाई चारे और जम्हूरिय… … यानी … शाही … पर है, और उनके पीछे … निगाह रुहानी और इख़लाक़ी है.

…بھائی چارہ کہتے ھیں ۔ آئے دن کی سماجی زندگی …نہوں نے اِس بھائی چارہ کی ایسی رواجی اور …شکلیں پیدا کر دی ھیں جن کو مٹانا قرآن اور رسول …مقصد تھا ۔

…کنوینشن مسلمانوں سے پرارتھنا کرتا ھے کہ وہ اپنے …کے ان ضروری پہلوؤں کی طرف دھیان دیں اور …تعلیم اور رسول کے اپدیش سامنے رکھکر اُن سارے …تفرقوں کو جو بھائی بھائی میں فرق کرتے ھیں …درد ناک جھگڑے اور آپسی کھینچاتانی …میں قرآن کی آگیاں کے خلاف سمجھکر ایک دم …کوشش کریں ۔

…کی آئے دن کی سماجی زندگی میں ایک آدمی کو …آدمی کے ساتھ جس طرح کا برتاؤ کرنا چاھئے …برتاؤ میں جس اصول کو سامنے رکھنا چاھئے اُسے …عدل یعنی انصاف کا نام دیا ھے ۔ عدل اور …سے بڑھکر آپسی سمبندھوں میں برابری لانے والا …دوسرا اصول نہیں ھو سکتا ۔ بھائی چارے اور ایک …کے وچار کو سامنے رکھتے ھوئے انصاف کے اس …کے سوا کوئی دوسرا اصول قائم ھو ھی نہیں سکتا ۔ …کی ویاکھیا کرتے ھوئے قرآن نے ھر آدمی کے لئے ھر …چیز کا رکھنا غلط ٹھہرایا ھے اور اِسے منع کیا …کوئی غیرضروری چیز اپنے قبضہ میں نہیں رکھی جا …اور اگر رکھی جائے تو کیول امانت کے طور پر …جا سکتی ھے اور پھر اُسے جلدی سے جلدی اُس کے …کے پاس پہونچا دینا چاھئے ۔ خاص کر قرآن نے …سونے اور چاندی کو آدمی کے لئے ایک عذاب …مصیبت بتایا ھے اور کہا ھے کہ جو کوئی غیرضروری …چاندی اپنے پاس رکھتا ھے بدلا ملنے کے دن اس …اور ھڈیاں اس سونے اور چاندی سے داغی جاتی …اس طرح کی چیزوں کو رکھنا جو منع کیا گیا ھے …کی بنیاد رھبانیت یعنی ویراگ یا دنیا کو چھوڑنے …نہیں ھے، بلکہ اپنے پڑوسی اور دوسرے انسانوں کی …اور اُن کے حق پر ھے ۔ سب ایک خدا کے بندے …سب کی ضرورتیں ایک سی پوری ھونی چاھئیں ۔ …لئے جو اپنی ضرورت سے زیادہ کام میں لاتا ھے یا جمع …وہ دوسروں کو اُن کے حق سے محروم کر دیتا ھے ۔ …خدا کی ان نعمتوں کو جو سب کے لئے ایک سی ھیں …طور پر ھتھیا لیتا ھے ۔ ایسا کرنا کھلا ظلم ھے اور …کے اصول کے بالکل خلاف ھے ۔ ان اصولوں کی …اس بات پر ھے کہ سب کی مادی اور سنساری …اچھی سے اچھی ھو ۔ ان کی بنیاد اخوت یعنی …چارے اور جمہوریت یعنی لوک شاھی …اور ان کے پیچھے نگاہ …روحانی اور اخلاقی ھے ۔

साफ़ ज़ाहिर है कि पूंजीवाद या सरमायादारी का इससे ज़ियादा कड़ा विरोध नहीं सकता. क़ुरान ने सूद लेना, जुआ, शराबख़ोरी और शराब बनाने को हराम बता कर आदमी की समाजी ज़िंदगी से ख़त्म कर दिया. अगर आज दुनिया में इस्लाम के उन सुनहरे असूलों पर अमल हुआ होता तो सरमायादारी हर सूरत और हर शक्ल में दुनिया से मिट चुकी होती. और वह पच्छिमी शहनशाहियत जो आज नाम की जम्हूरियत की शकल में दुनिया पर राज कर रही है कभी वजूद में भी न आ सकती. इस सिलसिले में एक बात जो मुसलमान अकसर भूल जाते हैं यह है कि क़ुरान के यह सारे असूल सिर्फ़ मोमनीन, सालहीन और सादक़ीन यानी सिर्फ़ ऊंचे दर्जे के दीनदारों के लिये ही नहीं हैं. उनके लिये तो ईसार यानी त्याग और ज़ुहद व तक़वा यानी परहेज़गारी और कड़ी से कड़ी रियाज़तें यानी तपस्यायें अलग बताई गई हैं. इंसाफ़ का यह असूल और हक़ूलबाद के यह फ़र्ज़ तो हर आदमी के लिये ज़रूरी हैं. उनका पूरा न करना ईश्वर की आज्ञा के ख़िलाफ़ अमल करना है.

आज जो हम 90 फ़ीसदी मुसलमानों की ज़िंदगी बिल्कुल उन असूलों के ख़िलाफ़ देखते हैं इसका सबब यह है कि हमारी ज़िंदगियां क़ुरान के बताए हुए असूलों पर क़ायम नहीं हैं बल्कि उन फ़क़ीहों यानी पंडे पुरोहितों के बताये हुए असूलों पर क़ायम हैं जिन्होंने अपने अपने ढंग से क़ुरान के मानी किये हैं. क़ुरान में ख़ुदा ने अपने बंदों को यह इजाज़त दी है कि वह दुनिया की ज़ीनतों यानी शोभा की चीज़ों और हलाल खाने की चीज़ों से फ़ायदा उठाएं और कहा है कि हमने तुम पर इन चीज़ों को हराम नहीं किया. इस आयत से लोग दुनिया परस्ती और ऐश व आराम के सब सामान को जाइज़ समझ बैठे. यह लोग यह नहीं देखते कि किसी चीज़ की इजाज़त होना उन असूलों को रद नहीं कर देता जो इस चीज़ के स्तेमाल के लिये बता दिये गये हैं, और न उन असूलों की जगह कोई नये असूल क़ायम कर देता है. इसलिये वह असूल चाहे वह किसी ने भी बनाये हों जो इंसाफ़ के असूल के और क़ुरान की हिदायतों के ख़िलाफ़ हैं या जो तौहीद और इंसानी भाई चारे के असूलों के ख़िलाफ़ जाते हैं, बिलकुल ग़लत और बे बुनियाद हैं.

यह कनवैनशन मुसलमानों से अपील करता है कि वह अपने इंसानी फ़र्ज़ों को पूरा करने में क़ुरान की हिदायतों के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी को ढालें और उन फ़र्ज़ों में से वह पहलू निकाल दें जो उन्हें इस लोक और परलोक दोनों से महरूम करने वाले हैं. यह कनवैनशन मुसलमानों को यक़ीन दिलाता है कि क़ुरान की हिदायतों पर चलना उनमें ख़ुद्दारी, अपने ऊपर भरोसा और अपने पैरों पर

ظاہر ہے کہ پونجی واد یا سرمایہ داری کا اس سے زیادہ کڑا ورودھ نہیں ہو سکتا۔ قرآن نے سود لینا، جوا، شراب خوری اور شراب بنانے کو حرام بتا کر آدمی کی سماجی زندگی سے ختم کر دیا۔ اگر آج دنیا میں اسلام کے اُن سنہرے اصولوں پر عمل ہوا ہوتا تو سرمایہ داری ہر صورت اور ہر شکل میں دنیا سے مٹ چکی ہوتی۔ اور وہ پچھمی شہنشاہیت جو آج نام کی جمہوریت کی شکل میں دنیا پر راج کر رہی ہے کبھی وجود میں بھی نہ آ سکتی۔ اس سلسلے میں ایک بات جو مسلمان اکثر بھول جاتے ہیں یہ ہے کہ قرآن کے یہ سارے اصول صرف مومنین، صالحین اور صادقین یعنی صرف اونچے درجہ کے دینداروں کے لئے ہی نہیں ہیں۔ ان کے لئے تو ایثار یعنی تیاگ اور زہد و تقویٰ یعنی پرہیزگاری اور کڑی سے کڑی ریاضتیں یعنی تپسیائیں الگ بتائی گئی ہیں۔ انصاف کا یہ اصول اور حق العباد کے یہ فرض تو ہر آدمی کے لئے ضروری ہیں۔ ان کا پورا نہ کرنا ایشور کی آگیاں کے خلاف عمل کرنا ہے۔

آج جو ہم 90 فیصدی مسلمانوں کی زندگی بالکل اُن اصولوں کے خلاف دیکھتے ہیں اس کا سبب یہ ہے کہ ہماری زندگیاں قرآن کے بتائے ہوئے اصولوں پر قائم نہیں ہیں بلکہ اُن فقیہوں یعنی پنڈے پروہتوں کے بتائے ہوئے اصولوں پر قائم ہیں جنہوں نے اپنے اپنے ڈھنگ سے قرآن کے معنی کئے ہیں۔ قرآن میں خدا نے اپنے بندوں کو یہ اجازت دی ہے کہ وہ دنیا کی زینتوں یعنی شوبھا کی چیزوں اور حلال کھانے کی چیزوں سے فائدہ اُٹھائیں اور کہا ہے کہ ہم نے تم پر اِن چیزوں کو حرام نہیں کیا۔ اِس آیت سے لوگ دنیا پرستی اور عیش و آرام کے سب سامان کو جائز سمجھ بیٹھے۔ یہ لوگ یہ نہیں دیکھتے کہ کسی چیز کی اِجازت ہونا اُن اصولوں کو رد نہیں کر دیتا جو اس چیز کے استعمال کے لئے بتا دیئے گئے ہیں، اور نہ ان اصولوں کی جگہ کوئی نئے اصول قائم کر دیتا ہے۔ اس لئے وہ اصول چاہے وہ کسی نے بھی بنائے ہوں جو انصاف کے اصول کے اور قرآن کی ہدایتوں کے خلاف ہیں یا جو توحید اور انسانی بھائی چارے کے اصولوں کے خلاف جاتے ہیں، بالکل غلط اور بے بنیاد ہیں۔

یہ کنوینشن مسلمانوں سے اپیل کرتا ہے کہ وہ اپنے انسانی فرضوں کو پورا کرنے میں قرآن کی ہدایتوں کے مطابق اپنی زندگی کو ڈھالیں اور ان فرضوں میں سے وہ پہلو نکال دیں جو انہیں اِس لوک اور پرلوک دونوں سے محروم کرنے والے ہیں۔ یہ کنوینشن مسلمانوں کو یقین دلاتا ہے کہ قرآن کی ہدایتوں پر چلنا اُن میں خودداری، اپنے اوپر بھروسہ اور اپنے پیروں [illegible]

होने की ताक़त पैदा कर देगा, अल्लाह की दया उनके से होगी, उनके दुख दर्द दूर हो जायेंगे, और दुनिया में सच्चा इंसानी भाई चारा और सच्ची जम्हूरियत या लोक शाही क़ायम करने का सहरा उन्हीं के सर बंधेगा.

इस्लाम के आर्थिक असूल—

क़ुरान ने इस आधार पर कि आदमी में अक़्ल और समझ है और उस में रूहानी और इख़लाक़ी बातों को समझने की शक्ति भी है अशरफ़ुलमख़लूक़ात यानी सब प्रानियों में श्रेष्ठ कहा है और उसे यह इजाज़त दी है कि वह ख़ुदा की दी हुई नेमतों से ज़रूरत के मुताबिक़ आप फ़ायदा उठाये और दूसरों को फ़ायदा पहुंचाये. इसी के साथ उन नेमतों को बरतने में भी इंसाफ़ की तराज़ू उसके हाथ में दे दी है. उसके बाद क़ुरान ने हर इंसान को यह ख़ुशख़बरी दी है कि वह ख़ुद ख़ुदा का ख़लीफ़ा है, उसका फ़र्ज़ है कि ख़ुदा की नेमतों का ठीक ठीक बटवारा करे और कराये. इसी असूल को ज़मीन की "ख़िलाफ़त" कहते हैं. इस ख़िलाफ़त का सारा मतलब इंसानी भाई चारा है. जब सब आदमी भाई भाई हैं तो लाज़िमी तौर पर दुनिया की सब नेमतों में सब का बराबर का हक़ है. इसलिये क़ुरानी ज़िंदगी में ग़रीबी और अमीरी जैसी सूरतें रह ही नहीं सकतीं.

जो आर्थिक ऊंच नीच या छोटाई बड़ाई आज दुनिया में फैली हुई है पच्छिमी तहज़ीब के कुछ प्रेमी इसकी सारी ज़िम्मेदारी ख़ुदा और मज़हबों के प्रचार पर डालते हैं. इस ऊंच नीच का कारन मज़हबों के असूल नहीं हैं बल्कि आदमी की दुनियापरस्ती, दौलतपरस्ती और उसकी वह हवस यानी तृशना है जो कभी पूरी नहीं हो सकती. यह वह चीज़ें हैं जिन्हें मज़हब के मानने वाले कोशिश करने पर भी न मिटा सके और जिन्हें पच्छिमी तहज़ीब आज जान बूझ कर अपने नाजाइज़ फ़ायदे के लिये बढ़ा रही है और काम में ला रही है.

क़ुरान ने हुक्म दिया है कि हर आदमी अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हद दर्जे की किफ़ायतशआरी से काम ले और कहा है कि किसी आदमी को अपने ऊपर उस से ज़ियादा ख़र्च नहीं करना चाहिये जितना तंदरुस्त रहने के लिये ज़रूरी है. फ़िज़ूल ख़र्ची करने वालों को क़ुरान "अख़्वानुलशयातीन" यानी शैतान के साथी बताता है. इस से ज़ियादा खुला सबूत और क्या हो सकता है कि क़ुरान शहनशाहियत या बादशाहत के शानोशौकत के सामानों को ही नहीं बल्कि छोटी से छोटी फ़िज़ूल ख़र्ची को भी अल्लाह की निगाह में गुनाह और सज़ा देने की चीज़ बताता है.

क़ुरान हर ऐसे पेशे को नाजायज़ क़रार देता है जिस में बग़ैर मेहनत किये रुपये कमाया जा सके.

...کی طاقت پیدا کر دے گا اللہ کی دیا ان کے ساتھ ... کے دکھ درد دور ہو جائینگے' اور دنیا میں سچا ... بھائی چارا اور سچی جمہوریت یا لوک شاہی ... کا سہرا انہیں کے سر بندھے گا.

...لام کے آرتھک اصول

...ن نے اس آدھار پر کہ آدمی میں عقل اور سمجھ ہے ... میں روحانی اور اخلاقی باتوں کو سمجھنے کی شکتی ... اشرف المخلوقات یعنی سب پرانیوں میں شریشٹھ ... اور اسے یہ اجازت دی ہے کہ وہ خدا کی دی ہوئی ... سے ضرورت کے مطابق آپ فائدہ اٹھائے اور دوسروں ... پہونچائے. اسی کے ساتھ ان نعمتوں کے برتنے ... انصاف کی ترازو اس کے ہاتھ میں دے دی ... کے بعد قرآن نے ہر انسان کو یہ خوش خبری ... کہ وہ خود خدا کا خلیفہ ہے' اس کا فرض ہے کہ ... کی نعمتوں کا ٹھیک ٹھیک بٹوارہ کرے اور کرائے. ... اصول کو زمین کی "خلافت" کہتے ہیں. اس ... کا سارا مطلب انسانی بھائی چارہ ہے. جب سب ... بھائی بھائی ہیں تو لازمی طور پر دنیا کی سب ... میں سب کا برابر کا حق ہے. اس لئے قرآنی ... میں غریبی اور امیری جیسی صورتیں رہ ہی ... سکتیں.

...آرتھک اونچ نیچ یا چھوٹائی بڑائی آج دنیا میں ... ہوئی ہے' پچھمی تہذیب کے کچھ پریمی اسکی ... ذمہ داری خدا اور مذہبوں کے پرچار پر ڈالتے ہیں. ... اونچ نیچ کا کارن مذہبوں کے اصول نہیں ہیں بلکہ ... کی دنیا پرستی' دولت پرستی اور اسکی وہ ہوس یعنی ... ہے جو کبھی پوری نہیں ہو سکتی. یہ وہ چیزیں ... جنہیں مذہب کے ماننے والے کوشش کرنے پر بھی ... مٹا سکے اور جنہیں پچھمی تہذیب آج جان بوجھکر ... ناجائز فائدے کے لئے بڑھا رہی ہے اور کام میں لا رہی ہے.

قرآن نے حکم دیا ہے کہ ہر آدمی اپنی روزمرہ کی ... زندگی میں حد درجہ کی کفایت شعاری سے کام لے اور ... کہ کسی آدمی کو اپنے اوپر اس سے زیادہ خرچ نہیں ... چاہئے جتنا تندرست رہنے کے لئے ضروری ہے. فضول ... خرچی کرنے والوں کو قرآن "اخوان الشیاطین" یعنی ... شیطان کے ساتھی بتاتا ہے. اس سے زیادہ کھلا ثبوت اور ... کیا ہو سکتا ہے کہ قرآن شہنشاہیت یا بادشاہت کے ... شان و شوکت کے سامانوں کو ہی نہیں بلکہ چھوٹی سے ... چھوٹی فضول خرچی کو بھی اللہ کی نگاہ میں گناہ اور ... سزا دینے کی چیز بتاتا ہے.

قرآن ہر ایسے پیشے کو ناجائز قرار دیتا ہے ... جس میں بغیر محنت کئے روپیہ کمایا جا سکے.

या जिसमें दूसरों की मेहनत से नाजाइज़ फ़ायदा उठाया जा सके या जिससे किसी तरह का भी नुक़सान इनसानी समाज को पहुंचता हो. इन बातों की गहराई में न जा कर यहां केवल इतना कहना काफ़ी है कि अगर हम इनसाफ़ के असूलों को अपनी रोज़ की ज़िन्दगी में सामने रखें और उन पर अमल करें तो हम क़ुरान की हिदायतों को आसानी से पूरा कर सकते हैं.

यह कनवेनशन मुसलमानों का ध्यान क़ुरान की एक ख़ास हिदायत की तरफ़ दिलाना चाहता है जिसे क़ुरान ने "कसबेतैयब" बताया है. कसबेतैयब का मतलब पाक या सुथरा धन्दा है. हर पाक किताब और हर नबी ने कसबेतैयब की बड़ाई की है. कसबेतैयब का असूल दुनिया के सब पेशों और धन्दों में से उन पेशों या धन्दों को ऊंचा और अच्छा बताता है जिन में आदमी ख़ुद अपने हाथ की मेहनत से रोज़ी कमावे. मोहम्मद साहब शुरू के ख़लीफ़ा और 'सहाबा यानी मोहम्मद साहब के साथी सब अपनी ज़िन्दगी में इसी असूल पर अमल करते थे. मोहम्मद साहब ने एक जगह कहा है कि "अपने हाथ की मेहनत से रोज़ी कमाने वाला ख़ुदा का प्यारा होता है."

यह कनवेनशन मुसलमानों का ध्यान इस ख़ास पहलू की तरफ़ दिलाता है कि दुनिया के मज़हबों और ख़ास कर इसलाम की कसबेतैयब की तालीम और लाखों मुसलमानों के इस पर अमल करने ने आज इस असूल को दुनिया की आर्थिक ज़िन्दगी का सब से पक्का और प्यारा असूल बना दिया है. हर हकूमत ज़ोरों के साथ इसे अपनी मुल्की ज़िन्दगी में चलाने की कोशिश कर रही है और रूस और चीन की हकूमतों ने इस असूल को अपनी मुलकी ज़िन्दगी के क़ायदे क़ानून में सबसे बड़ी जगह दी है.

यह कनवेनशन मुसलमानों का यह पाक फ़र्ज़ समझता है कि वह किसी क़ौम या मुल्क के इस मैदान में अपने मुल्क से आगे निकल जाने को अपने लिये शर्म की चीज़ समझें. उन्हें जल्दी से जल्दी ऐसे प्रोग्राम बनाने चाहियें जिन से हर मुसलमान और हर इनसान को कसबेतैयब के असूल को सामने रख कर रोज़ी कमाने का मौक़ा मिले. अगर केवल एक यही बात लग कर पूरी कर ली जाये तो उस मुल्क की सारी आर्थिक ज़िन्दगी नये सिरे से तामीर हो सकती है और हमारा मुल्क दूसरे मुल्कों की आर्थिक लूट मार से हमेशा के लिये बच सकता है.

इसलाम के राजकाजी असूल

आदमी की समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी की तरह [illegible]

[illegible]س میں دوسروں کی محنت سے ناجائز فائدہ اُٹھایا [illegible] یا جس سے کسی طرح کا بھی نقصان انسانی سماج پہونچتا ہو۔ ان باتوں کی گہرائی میں نہ جاکر یہاں [illegible]ول اتنا کہنا کافی ہے کہ اگر ہم اِنصاف کے اصولوں کو اپنی روز کی زندگی میں سامنے رکھیں اور ان پر عمل کریں تو ہم قرآن کی ہدایتوں کو آسانی سے پورا کرسکتے ہیں۔

یہ کنونشن مسلمانوں کا دھیان قرآن کی ایک خاص ہدایت کی طرف دلانا چاہتا ہے جسے قرآن نے "کسب طیب" بتایا ہے۔ کسب طیب کا مطلب پاک یا ستھرا دھندا ہے۔ ہر پاک کتاب اور ہر نبی نے کسب طیب کی بڑائی کی ہے۔ کسب طیب کا اصول دنیا کے سب پیشوں اور دھندوں میں سے ان پیشوں یا دھندوں کو اونچا اور اچھا بتاتا ہے جن میں آدمی خود اپنے ہاتھ کی محنت سے روزی کماوے۔ محمد صاحب شروع کے خلیفہ اور صحابہ یعنی محمد صاحب کے ساتھی سب اپنی زندگی میں اِسی اصول پر عمل کرتے تھے۔ محمد صاحب نے ایک جگہ کہا ہے کہ "اپنے ہاتھ کی محنت سے روزی کمانے والا خدا کا پیارا ہوتا ہے۔"

یہ کنونشن مسلمانوں کا دھیان اس خاص پہلو کی طرف دلاتا ہے کہ دنیا کے مذہبوں اور خاصکر اِسلام کی کسب طیب کی تعلیم اور لاکھوں مسلمانوں کے اس پر عمل کرنے نے آج اس اصول کو دنیا کی آرتھک زندگی کا سب سے پکا اور پیارا اصول بنا دیا ہے۔ ہر حکومت زوروں کے ساتھ اِسے اپنی ملکی زندگی میں چلانے کی کوشش کر رہی ہے اور روس اور چین کی حکومتوں نے اِس اصول کو اپنی ملکی زندگی کے قاعدے قانون میں سب سے بڑی جگہ دی ہے۔

یہ کنونشن مسلمانوں کا یہ پاک فرض سمجھتا ہے کہ وہ کسی قوم یا ملک کے اس میدان میں اپنے ملک سے آگے نکل جانے کو اپنے لئے شرم کی چیز سمجھیں۔ انھیں جلدی سے جلدی ایسے پروگرام بنانے چاہئیں جن سے ہر مسلمان اور ہر انسان کو کسب طیب کے اصول کو سامنے رکھکر روزی کمانے کا موقع ملے۔ اگر کیول ایک یہی بات لگ کر پوری کرلی جائے تو اِس ملک کی ساری آرتھک زندگی نئے سرے سے تعمیر ہوسکتی ہے اور ہمارا ملک دوسرے ملکوں کی آرتھک لوٹ مار سے ہمیشہ کے لئے بچ سکتا ہے۔

اسلام کے راج کاجی اصول

آدمی کی سماجی اور آرتھک زندگی کی طرح [illegible]

से राजकाजी ज़िन्दगी को भी क़ुरान ने आदमी के अशरफ़ुलमख़लूक़ात होने के असूल पर ही चलाने की हिदायत दी है. इस राजकाजी ज़िन्दगी में भी क़ुरान ने इनसाफ़ को ही सबसे बड़ी चीज़ बताया है. क़ुरान की हिदायत है कि हर आदमी को हर वक़्त अपने कामों में यह ध्यान रखना चाहिये कि मैं एक मिले जुले ख़ानदान का मैम्बर हूं और मेरे सब काम, मेरे विचार और मेरे दिल के भाव सगे भाइयों की आपसी मोहब्बत और मिल कर काम करने का नमूना होने चाहियें. एक बार इस ख़याल को अपने दिल में जमा लेने के बाद क़ुरान के बताये हुए रास्ते पर चलना आसान हो जाता है और क़ुरान की सारी हिदायतों का मतलब अच्छी तरह समझ में आ जाता है. तब आदमी ज़ोरों के साथ यह देखने लगता है कि वह सारे भेद भाव और सारे संगठन जो आज इनसानी समाज को बड़े से बड़े नुक़सान पहुंचा रहे हैं और तरह तरह के आर्थिक और राजकाजी तूफ़ान को पैदा कर रहे हैं केवल इस एक सच्चाई को भुला देने का नतीजा है. भाई चारे की दुनिया में चाहे एक ख़ानदान का भाई चारा हो या किसी एक जमात का या तमाम इनसानी समाज का, किसी बादशाह या वज़ीर या प्यादे या हाकिम या महकूम या ओहदेदारों या पासबानों का सवाल ही पैदा नहीं हो सकता. हर इनसान अल्लाह का ख़लीफ़ा यानी नायब है. हर इनसान का पैदायशी हक़ है कि वह ख़ुदमुख़्तार हो, बेख़ौफ़ हो और किसी का मोहताज न हो. इस ख़याल के एक बार दिल में जम जाने के बाद फिर किसी भी तरह की ऊंच नीच को बर्दाश्त कर सकना आदमी के लिये नामुमकिन हो जाता है. फिर हर आदमी में अपने भाइयों के हक़ों की रचा करने और उन पर ज़ालिमों के ज़ुल्मों का मुक़ाबला करने की इख़लाक़ी और रूहानी शक्ति पैदा हो जायेगी. फिर कोई बाहर की ताक़त उसकी इस आज़ादी को और अपने ऊपर भरोसा करने की आदत को उससे छीन न सकेगी.

मज़हब और राजकाज के एक दूसरे से सम्बन्ध को क़ुरान ने लाइकराह फ़िउद्दीन यानी दीन के मामले में किसी को किसी के साथ किसी तरह की भी ज़बर्दस्ती नहीं करनी चाहिये, के असूल पर क़ायम किया है. यह असूल हर आदमी को अपने धार्मिक फ़र्ज़ को पूरा करने की पूरी आज़ादी देता है और उसमें दूसरों के किसी तरह भी दख़ल देने को हिंसा और ज़ुल्म ठहराता है जिस के ख़िलाफ़ जिहाद यानी कोशिश करना हर आदमी और हर जमाअत का फ़र्ज़ है. ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने की हैसियत से हर आदमी अपने अल्लाह से सीधा संबंध रखने का एक बराबर हक़ रखता है. उसे अख़्तियार है कि अपने बनाने वाले की बंदगी और उपासना की जो राह चाहे

قرآن نے آدمی کے اشرف المخلوقات
...راج کاجی زندگی کو بھی
...اصول پر ھی چلانے کی ھدایت دی ھے۔ اس راج
...زندگی میں بھی قرآن نے اِنصاف کو ھی سب سے
...بڑی چیز بتایا ھے۔ قرآن کی ھدایت ھے کہ ھر آدمی کو
...اپنے کاموں میں یہ دھیان رکھنا چاھئے کہ میں
...ملے جلے خاندان کا ممبر ھوں اور میرے سب کام،
...وچار اور میرے دل کے بھاؤ سگے بھائیوں کی آپسی
...اور ملکر کام کرنے کا نمونہ ھونے چاھئیں۔ ایک
...خیال کو اپنے دل میں جما لینے کے بعد قرآن
...ھوئے راستے پر چلنا آسان ھو جاتا ھے اور قرآن
...ساری ھدایتوں کا مطلب اچھی طرح سمجھ میں
...تب آدمی زوروں کے ساتھ یہ دیکھنے لگتا ھے کہ
...سارے بھید بھاؤ اور سارے سنگٹھن جو آج انسانی
...بڑے سے بڑے نقصان پہنچا رھے ھیں اور طرح
...آرتھک اور راج کاجی طوفان کو پیدا کر رھے ھیں
...اس ایک سچائی کو بھلا دینے کا نتیجہ ھیں۔
...چارے کی دنیا میں چاھے ایک خاندان کا بھائی
...یا کسی ایک جماعت کا یا تمام اِنسانی سماج
...کسی بادشاہ یا وزیر یا پیادے یا حاکم یا محکوم یا
...داروں یا پاسبانوں کا سوال پیدا ھی نہیں ھوسکتا۔ ھر
...اللہ کا خلیفہ یعنی نائب ھے۔ ھر اِنسان کا
...حق ھے کہ وہ خود مختار ھو، بےخوف ھو اور
...محتاج نہ ھو۔ اِس خیال کے ایک بار
...میں جم جانے کے بعد پھر کسی بھی طرح
...اونچ نیچ کو برداشت کرسکنا آدمی کے لئے
...ھوجاتا ھے۔ پھر ھر آدمی میں اپنے بھائیوں کے
...کی رکشا کرنے اور اُن پر ظالموں کے ظلموں کا مقابلہ
...کی اخلاقی اور روحانی شکتی پیدا ھو جائیگی۔ پھر
...باھر کی طاقت اُسکی اِس آزادی کو اور اپنے اُوپر
...کرنے کی عادت کو اس سے چھین نہ سکیگی۔

مذھب اور راج کاج کے ایک دوسرے سے سمبندھ کو
...لا اکراہ فی الدین یعنی دین کے معاملے میں کسی
...کے ساتھ کسی طرح کی بھی زبردستی نہیں کرنی
...کے اصول پر قائم کیا ھے۔ یہ اصول ھر آدمی کو
...دھارمک فرض کو پورا کرنے کی پوری آزادی دیتا ھے
...میں دوسروں کے کسی طرح بھی دخل دینے کو
...اور ظلم ٹھہراتا ھے جس کے خلاف جہاد یعنی
...کرنا ھر آدمی اور ھر جماعت کا فرض ھے۔ خدا کا
...ھونے کی حیثیت سے ھر آدمی اپنے اللہ سے سیدھا
...رکھنے کا ایک برابر حق رکھتا ھے۔ اُسے اختیار ھے
...بنانے والے کی بندگی اور اُپاسنا کی جو ... راہ چاھے

अपनाये. उसकी इस आज़ादी में दख़ल देना ज़ुल्म और गुनाह है. इस से बढ़ कर इख़लाक़ी और रूहानी उन्नति और आज़ादी का और उस आज़ादी में दख़ल देने से जो नुक़सान पैदा होते हैं उन से बचने का कोई दूसरा तरीक़ा नहीं हो सकता.

इस बुनयादी उसूल को क़ायम करने के बाद क़ुरान ने सच्चे भाई चारे या सच्ची लोकशाही या हकूमते इलाही क़ायम करना हर आदमी का पहला फ़र्ज़ बताया है और इस फ़र्ज़ को पूरा करने के उसूल बताए हैं.

हकूमते इलाही (रामराज) का पहला असूल यह है कि उसमें ग़रीबों, लाचारों, दर्दमन्दों, दुखियों और मज़लूमों के दुख दूर करने की हद दरजे की कोशिश और उसका पूरा इन्तज़ाम होना चाहिये. इनसानी समाज के वह सब रीतरिवाज और उसकी वह सब बुराइयां जो ऊंच नीच और अमीर ग़रीब के फ़र्क़ पैदा करती हैं और उन्हें बनाए रखती हैं नेस्तनाबूद कर दी जायें क्योंकि इन ऊंच नीच और ग़रीब अमीर के फ़रक़ों से ज़ियादा बदइन्तज़ामी का सबूत नहीं मिल सकता. इन तफ़रक़ों का होना अल्लाह के हुकमों से इनकार और इनसानी क़ौम के लिये शर्म की चीज़ है. साफ़ ज़ाहिर है कि अगर इन नादार, लाचार और दुखियों का दुख दरद दूर हो गया तो फिर कोई दुखिया या नादार नहीं रह सकता. इसीलिये क़ुरान इस असूल पर सबसे ज़ियादा ज़ोर देता है. इनसानी भाई चारे की यही सच्ची बुनियाद हो सकती है.

क़ुरान ने अपने संगठन में एक ख़ानदान के उस छोटे बड़े के फ़र्क़ को भी माना और रखा है जो क़ुदरती तौर पर हर ख़ानदान के लोगों में होता है. बड़े और छोटे, कमज़ोर और ताक़तवर, ज़हीन और कुंदज़हन, तन्दुरुस्त और बीमार, मां और बाप, पति और पतनी, बेटा और बेटी जैसे फ़रक़ों को निगाह में रख कर क़ुरान फिर एक असूल क़ायम करता है. ख़ानदान का हर मेम्बर ना बराबर की मेहनत कर सकता है और ना बराबर कमा सकता है, ना हर एक पर बराबर ख़र्च हो सकता है. ज़ाहिर है कि हर मेम्बर अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार ही मेहनत करेगा और ख़ानदान उसकी तन्दुरुस्ती को निगाह में रख कर उस पर ख़र्च करेंगे. इसी असूल को कम्युनिज़म ने आज अपना आर्थिक नारा बनाया है. पर उसने अभी यह महसूस नहीं किया कि इस असूल पर तब तक ठीक ठीक अमल नहीं किया जा सकता जब तक कि एक ईश्वर और इनसानी भाई चारा दोनों में लोगों को पूरा विश्वास न हो.

राजकाज में सबसे बड़ा सवाल यह है कि एक आदमी दूसरे आदमी को अपने अधीन कैसे करे और उसे ...

...اپنی اِس آزادی میں دخل دینا ظلم اور گناہ ... سے بڑھکر اخلاقی اور روحانی اُنتی اور آزادی کا ... آزادی میں دخل دینے سے جو نقصان پیدا ہوتے ... ان سے بچنے کا کوئی دوسرا طریقہ نہیں ... سکتا.

اِس بنیادی اصول کو قائم کرنے کے بعد قرآن نے سچے بھائی چارے یا سچی لوک شاہی یا حکومت اِلٰہی قائم کرنا ہر آدمی کا پہلا فرض بتایا ہے اور اِس فرض کو پورا کرنے کے اصول بتائے ہیں.

حکومت الٰہی (رام راج) کا پہلا اِصول یہ ہے کہ اس میں غریبوں، لاچاروں، دردمندوں، دکھیوں اور مظلوموں کے دکھ دور کرنے کی حد درجے کی کوشش اور اُس کا پورا انتظام ہونا چاہئے. انسانی سماج کے وہ سب ریت رواج اور اُسکی وہ سب برائیاں جو اونچ نیچ اور امیر غریب کے فرق پیدا کرتی ہیں اور انہیں بنائے رکھتی ہیں نیست نابود کر دی جائیں کیونکہ اِن اونچ نیچ اور غریب امیر کے فرقوں سے زیادہ بدانتظامی کا ثبوت نہیں مل سکتا. اِن تفرقوں کا ہونا اللہ کے حکموں سے انکار اور اِنسانی قوم کے لئے شرم کی چیز ہے. صاف ظاہر ہے کہ اگر اُن نادار، لاچار اور دکھیوں کا دکھ درد دور ہو گیا تو پھر کوئی دکھیا یا نادار نہیں رہ سکتا. اِسی لئے قرآن اِس اصول پر سب سے زیادہ زور دیتا ہے. اِنسانی بھائی چارے کی یہی سچی بنیاد ہوسکتی ہے.

قرآن نے اپنے سنگٹھن میں ایک خاندان کے اس چھوٹے بڑے کے فرق کو بھی مانا اور رکھا ہے جو قدرتی طور پر ہر خاندان کے لوگوں میں ہوتا ہے. بڑے اور چھوٹے، کمزور اور طاقتور، ذہین اور کندذہن، تندرست اور بیمار، ماں اور باپ، پتی اور پتنی، بیٹا اور بیٹی جیسے فرقوں کو نگاہ میں رکھ کر قرآن پھر ایک اصول قائم کرتا ہے. خاندان کا ہر ممبر نہ برابر کی محنت کر سکتا ہے اور نہ برابر کما سکتا ہے، نہ ہر ایک پر برابر خرچ ہوسکتا ہے. ظاہر ہے کہ ہر ممبر اپنی شکتی اور یوگتا کے انوسار ہی محنت کریگا اور خاندان اُسکی تندرستی کو نگاہ میں رکھکر اُس پر خرچ کرے گا. اسی اصول کو کمیونزم نے آج اپنا آرتھک نعرہ بنایا ہے. پر اس نے ابھی یہ محسوس نہیں کیا کہ اس اصول پر تب تک ٹھیک ٹھیک عمل نہیں کیا جا سکتا جب تک کہ ایک ایشور اور اِنسانی بھائی چارہ دونوں میں لوگوں کو پورا وشواس نہ ہو...

راج ... میں سب سے بڑا سوال یہ ہے کہ ایک آدمی دوسرے آدمی ... کرے ...

[भ]लाई के रास्ते पर कैसे चलावे. ज़ोर ज़बरदस्ती या [हिं]से अपने ख़ान्दान के अन्दर काम लेना इनसानियत [को ध]क्का पहुंचाना है. इसलिये क़ुरान ने उसे अपने [समा]जी संगठन की बुनियाद नहीं बनाया. उसने ज़ोर [ज़ब]रदस्ती की जगह निस्वार्थ सेवा, त्याग और मुहब्बत को दी है. क़ुरान का दावा है कि निस्वार्थ सेवा और त्याग एक आदमी को दूसरे आदमी का फ़रमांबरदार बना देता है. और यह फ़रमाबरदारी इतनी गहरी और पक्की होती है कि जिसका मुक़ाबला वह फ़रमांबरदारी जो ज़ोर ज़बरदस्ती और हिंसा से किसी को नुक़सान पहुंचा कर पैदा की जाये नहीं कर सकती. क़ुरान का कहना है कि ख़िदमत करने से आदमी मख़दूम हो जाता है यानी सेवा करने से सेव्या बन जाता है और यही आदमी की सबसे बड़ी शक्ति है. पर आदमी में यह शक्ति पैदा होना आसान नहीं है. इसलिये इस शक्ति के पैदा करने के तरीक़े को क़ुरान ने जिहादे अकबर यानी सबसे बड़ा जिहाद कहा है. जहादे अकबर के लिये अपने नफ़्स यानी अपनी आत्मा पर क़ाबू और अपने क़ल्ब यानी हृदय की शुद्धि दोनों ज़रूरी हैं क्योंकि जब तक आदमी अपने भाई की तरफ़ से गुस्सा, नफ़रत, ईर्शा, द्वेश वग़ैरा से पाक नहीं कर लेता तब तक वह उसकी सच्ची सेवा नहीं कर सकता. जब तक आदमी अपने ऊपर क़ाबू हासिल नहीं करता तब तक वह इनसाफ़ के असूलों पर क़ायम नहीं रह सकता तब तक वह ऊंच नीच का भी शिकार रहेगा और उससे दूसरों को नुक़सान और तक़लीफ़ भी पहुंचती रहेगी. लेकिन सेवा की राह पर उसे इनसाफ़ के मुक़ाम से भी आगे बढ़ना होगा, उसे दूसरों की ज़रूरतों को पहले और अपनी ज़रूरतों को पीछे रखना होगा, उसे त्याग करना होगा. तब ही वह सच्चे मानी में ख़ादिमे ख़लक़ यानी दुनिया का सेवक बन कर मख़दूम यानी सेव्या के रुतबे तक पहुंच सकता है. इस तरह का ख़ादिम बनने की जद्दोजहद यानी कोशिश को ही क़ुरान जहादे अकबर यानी सबसे बड़ा जहाद बतलाता है. इसी को वह जहादे फ़ीसबीलिल्लाह यानी अल्लाह की राह में जहाद और सिराते मुस्तक़ीम यानी सीधी राह पर चलने का रास्ता बतलाता है.

इसमें शक नहीं कि क़ुरान ने आदमी को अपनी हिफ़ाज़त या बचाव के लिये हिन्सा की भी इजाज़त दी है और इसके लिये तलवार के इस्तेमाल को जायज़ बताया है. पर क़ुरान इसे जेहादे असग़र यानी छोटा जेहाद कहता है. राज काज में तलवार और हिंसा के इस्तेमाल की हर मज़हब ने इजाज़त दी है. आदमी का जुग़राफ़ी और

بھلائی کے راستے پر کیسے چلاوے. زور زبردستی یا ہنسا
سے خاندان کے اندر کام لینا انسانیت کو دھکا پہونچانا
ہے. اس لئے قرآن نے اسے اپنے سماجی سنگٹھن کی بنیاد
نہیں بنایا. اس نے زور زبردستی کی جگہ نسوارتھ سیوا،
تیاگ اور محبت کو دی ہے. قرآن کا دعویٰ ہے کہ نسوارتھ
سیوا اور تیاگ ایک آدمی کو دوسرے آدمی کا فرمانبردار
بنا دیتا ہے. اور یہ فرمانبرداری اتنی گہری اور پکی
ہوتی ہے کہ جس کا مقابلہ وہ فرمانبرداری جو زور زبردستی
اور ہنسا سے کسی کو نقصان پہونچا کر پیدا کی جائے
نہیں کر سکتی. قرآن کا کہنا ہے کہ خدمت کرنے سے
آدمی مخدوم ہو جاتا ہے یعنی سیوا کرنے سے سیویہ بن
جاتا ہے اور یہی آدمی کی سب سے بڑی شکتی ہے. پر آدمی
میں یہ شکتی پیدا ہونا آسان نہیں ہے اس لئے اس
شکتی کے پیدا کرنے کے طریقے کو قرآن نے جہاد اکبر یعنی
سب سے بڑا جہاد کہا ہے. جہاد اکبر کے لئے اپنے نفس
یعنی اپنی آتما پر قابو اور اپنے قلب یعنی ہردے کی
شدھی دونوں ضروری ہیں. کیونکہ جب تک آدمی اپنے
اپنے بھائی کی طرف سے غصہ، نفرت، ایرشا، دویش
وغیرہ سے پاک نہیں کر لیتا تب تک وہ اسکی سچی
سیوا نہیں کر سکتا. جب تک آدمی اپنے اوپر قابو حاصل
نہیں کرتا تب تک وہ انصاف کے اصولوں پر قائم نہیں رہ
سکتا تب تک وہ اونچ نیچ کا بھی شکار رہے گا اور اس
سے دوسروں کو نقصان اور تکلیف بھی پہونچتی رہے گی.
لیکن سیوا کی راہ پر اسے انصاف کے مقام سے بھی آگے
بڑھنا ہوگا، اسے دوسروں کی ضرورتوں کو پہلے اور اپنی
ضرورتوں کو پیچھے رکھنا ہوگا، اسے تیاگ کرنا ہوگا. تبھی وہ
سچے معنی میں خادم خلق یعنی دنیا کا سیوک بن
کر مخدوم یعنی سیویہ کے رتبے تک پہونچ سکتا ہے. اس
طرح کا خادم بننے کی جدوجہد یعنی کوشش کو ہی
قرآن جہاد اکبر یعنی سب سے بڑا جہاد بتلاتا ہے. اسی
کو وہ جہاد فی سبیل اللہ یعنی اللہ کی راہ میں جہاد
اور صراط مستقیم یعنی سیدھی راہ پر چلنے کا راستہ
بتلاتا ہے.

اس میں شک نہیں کہ قرآن نے آدمی کو اپنی
حفاظت یا بچاؤ کے لئے ہنسا کی بھی اجازت دی ہے
اور اس کے لئے تلوار کے استعمال کو جائز بتایا ہے. پر
قرآن اسے جہاد اصغر یعنی چھوٹا جہاد کہتا ہے.
راج کاج میں تلوار اور ہنسا کے استعمال کی ہر
مذہب نے اجازت دی ہے. آدمی کا جغرافیائی اور

तारीख़ी माहौल यानी भूगोली और इतिहासी वातावरन ऐसा है कि जिसमें तलवार और हिंसा के इस्तेमाल को एक बारगी इन्सान के समाजी ज़िन्दगी से मिटाया नहीं जा सकता था. पर साथ ही हर मज़हब ने तलवार और हिंसा को बड़ी कड़ाई के साथ केवल बचाओ के दायरे तक मेहदूद कर दिया है और उनके बिलकुल छोड़ देने और ख़तम कर देने के लिये धीरे धीरे बढ़ती हुई राहें आदमी के सामने रखीं हैं. लेकिन किसी मज़हब के मानने वाले भी कड़ी से कड़ी मज़हबी हिदायतों के होते हुये तलवार और हिंसा को केवल बचाव के दायरों तक मेहदूद न रख सके, चूंकि उन्होंने जहादे अकबर की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया. वह दुनिया और दौलत की हिरस से छुटकारा भी ना पा सके, इसलिये जहादे असग़र को उन्होंने जहादे अकबर की जगह दे दी और केवल बचाओ की हदों से बाहर निकल कर तलवार और हिंसा की दुनिया और दौलत हासिल करने और मुलकों और क़ौमों को अपने अधीन करने का ज़रिया बना लिया. इस दर्दनाक ग़लतकारी ने उनकी सारी रूहानी और अख़लाक़ी ताक़तों को मिटा दिया. हकूमत और शहनशाहियत के लोभ में फिर वह ऐसे फंसे कि उनके अन्दर रूहानी या इख़लाक़ी शक्तियां पैदा होने के सारे दरवाज़े बन्द हो गए. नतीजा यह हुआ कि वह दुनिया और औक़बा यानी यह लोक और पर लोक दोनों खो बैठे. दुनिया से उनकी शान और धाक मिट गई और आज पच्छिम की माद्दियत और नस्तिकता उन पर छाए हुए है और अपनी सारी ताक़त उनकी रही सही बुनियादों को खोद डालने में लगा रही है. अगर मज़हबी दुनिया अब भी नहीं जागती और उन रास्तों को नहीं अपनाती जो उसकी पाक किताबों और नबियों ने उसके लिये बता दिये हैं तो माद्दियत का तूफ़ान उसी का नहीं बल्कि पूरे मानव समाज का ख़ात्मा कर देगा.

यह कनवेनशन मुसलमानों का ध्यान उनके मज़हब के सबसे बड़े पहलू की तरफ़ दिलाता है कि ईश्वर की एकता और इनसानी भाई चारे और ख़िलाफ़त के असूल एक दूसरे के साथ ऐसे मिले जुले हैं कि अलग अलग नहीं किये जा सकते. इनमें ईश्वर की एकता सब में ऊंचा असूल है. मगर इन तीनों में वही सम्बन्ध है जो रूह का जिस्म से और खाल का मांस से होता है. अगर हम ईश्वर की एकता से इन्कार करें तो भाई चारे और ख़िलाफ़त के असूल बिलकुल बेजान और बेमानी हो जाते हैं. अगर हम भाई चारे के असूल से इन्कार करें तो कोई रास्ता ऐसा बाक़ी नहीं रह जाता जो एक आदमी को दूसरे आदमी से प्रेम और उसे निस्वार्थ सेवा की ज़ंजीर में जकड़ सके. इस असूल से इनकार कर देने से समाजी ज़िन्दगी इनफ़ादी या व्यक्तिगत और इफ़त्राक़ी यानी एक दूसरे में फ़र्क़ पैदा करने वाली बन जाती है. और इसमें वह छितराव और आपसी खींचातानी पैदा हो जाती

ماحول یعنی بھوگولی اور اِتہاسی ایسا ہے کہ جس میں تلوار اور ہنسا کے استعمال کو ایک بارگی اِنسان کی سماجی زندگی سے مٹایا نہیں جاسکتا تھا. پر ساتھ ہی ہر مذہب نے تلوار اور ہنسا کو بڑی کڑائی کے ساتھ کیول بچاؤ کے دائرے تک محدود کر دیا ہے اور اُن کے بالکل چھوڑ دینے اور ختم کر دینے کے لئے دھیرے دھیرے بڑھتی ہوئی راہیں آدمی کے سامنے رکھی ہیں. لیکن کسی مذہب کے ماننے والے بھی کڑی سے کڑی مذہبی ہدایتوں کے ہوتے ہوئے تلوار اور ہنسا کو کیول بچاؤ کے دائروں تک محدود نہ رکھ سکے، چونکہ انہوں نے جہاد اکبر کی طرف کوئی دھیان نہیں دیا. وہ دنیا اور دولت کی حرص سے چھٹکارا بھی نہ پا سکے اس لئے جہاد اصغر کو انہوں نے جہاد اکبر کی جگہ دے دی اور کیول بچاؤ کی حدوں سے باہر نکل کر تلوار اور ہنسا کو دنیا اور دولت حاصل کرنے اور ملکوں اور قوموں کو اپنے ادھین کرنے کا ذریعہ بنا لیا. اِس دردناک غلط کاری نے اُن کی ساری روحانی اور اخلاقی طاقتوں کو مٹا دیا. حکومت اور شہنشاہیت کے لوبھ میں پھر وہ ایسے پھنسے کہ اُن کے اندر روحانی یا اخلاقی شکتیاں پیدا ہونے کے سارے دروازے بند ہو گئے. نتیجہ یہ ہوا کہ وہ دنیا اور عقبیٰ یعنی یہ لوک اور پرلوک دونوں کھو بیٹھے. دنیا سے اُن کی شان اور دھاک مٹ گئی اور آج پچھم کی مادیت اور ناستکتا اُن پر چھائے ہوئے ہے، اور اپنی ساری طاقت اُن کی رہی سہی بنیادوں کو کھود ڈالنے میں لگا رہی ہے. اگر مذہبی دنیا اب بھی نہیں جاگتی اور اُن راستوں کو نہیں اپناتی جو اس کی پاک کتابوں اور نبیوں نے اس کے لئے بتا دیئے ہیں تو مادیت کا طوفان اسی کا نہیں بلکہ پورے مانو سماج کا خاتمہ کر دے گا.

یہ کنوینشن مسلمانوں کا دھیان اُن کے مذہب کے سب سے بڑے پہلو کی طرف دلاتا ہے کہ ایشور کی ایکتا اور اِنسانی بھائی چارے اور خلافت کے اصول ایک دوسرے کے ساتھ ایسے ملے جلے ہیں کہ الگ الگ نہیں کئے جا سکتے. اِن میں ایشور کی ایکتا سب میں اونچا اصول ہے. مگر اِن تینوں میں وہی سمبندھ ہے جو روح کا جسم سے اور کھال کا ماس سے ہوتا ہے. اگر ہم ایشور کی ایکتا سے انکار کریں تو بھائی چارے اور خلافت کے اصول بالکل بے جان اور بے معنی ہو جاتے ہیں. اگر ہم بھائی چارے کے اصول سے انکار کریں تو کوئی رستہ ایسا باقی نہیں رہ جاتا جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے پریم اور اسے نسوارتھ سیوا کی زنجیر میں جکڑ سکے. اس اصول سے انکار کر دینے سے سماجی زندگی اِنفرادی یا ویکتی گت اور اِفتراقی یعنی ایک دوسرے میں فرق پیدا کرنے والی بن جاتی ہے. اور اِس [illegible]

से जिसके दूर करने के लिये कोई नैतिक या आत्मिक ...का बाक़ी नहीं रहता. तारीख़ बताती है कि ईश्वर की ...पना ने इनसान की ज़िन्दगी से छितराव को दूर करने ...र उसके हैवानी रुजहानों को महदूद करने और उसे इनसान बनाने में जो हिस्सा लिया है वह दुनिया के किसी दूसरे ख़्याल ने नहीं लिया. अगर हम केवल आख़ीरी तीन चार सौ साल की तारीख़ को देखें तो हमें साफ़ नज़र आएगा कि जितनी नास्तिकता और माद्दियत की कल्पनाएं ईश्वर की एकता और इनसानी भाई चारे की कल्पनाओं को कमज़ोर करने और उनके बनाए हुए नक़्शों को इनसान के दिल और दिमाग़ से मिटाने में कामयाब होती गईं उसी पैमाने पर इंसानी समाज में हैवानियत और बर्बादी की सूरतें बढ़ती गईं और इस सब के साथ साथ आपसी टक्करों के तूफ़ान ऐसे पैदा हो गये हैं कि जिन से इंसान की सभ्यता और जान माल सब ही ख़तरे में पड़ गए हैं. इस इल्हाद यानी नास्तिकता और माद्दियत के इस तूफ़ान ने मज़हब के मानने वालों के सामने ज़िंदगी और मौत का सवाल पैदा कर दिया है. या तो यह ख़ामोश रह कर इस तूफ़ान के हाथों अपनी सारी सभ्यता और मज़हब का मिट जाना चुपचाप बर्दाश्त करें या यह अपनी आर्थिक, समाजी और रूहानी ज़िंदगी को पच्छिम की ग़ुलामी से आज़ाद करने के लिये कमर बांध लें मगर इस तैयारी का पहला क़दम यह होगा कि वह दुनिया और दौलत की अंधी पूजा और ऐश आराम के सुनहरे जाल को तोड़ फेंकें जिस में पच्छिम की तहज़ीब ने उन्हें फंसा लिया है. दूसरा क़दम यह होगा कि वह अपने मज़हब के ऊंचे असूलों और तालीम पर सच्चे दिल से अमल करना शुरू करें. अगर वह ऐसा करेंगे तो ख़ुदा उनका साथ देगा और फिर दुनिया की कोई शक्ति उनके रास्ते की रुकावट नहीं बन सकती. उन्हें यह जानना चाहिये कि अभी पच्छिमी तहज़ीब का ज़हर सिर्फ़ पूरबी मुल्कों के ऊंचे पढ़े लिखे लोगों तक ही महदूद है यह अभी छन कर आम लोगों तक नहीं पहुंचा, इनके दिलों पर ख़ुदा के वजूद और मज़हब के असूलों के गहरे से गहरे असर जमे हुए हैं. अगर एक बार पच्छिम की सभ्यता की हैवानी और डरावनी तसवीर उनके सामने आजाए और इसे मिटाने के लिये उन्हें संगठित कर दिया जाए तो एक ज़बरदस्त इनक़्लाब जल्द से जल्द पैदा हो सकता है.

यह कन्वैन्शन मज़हब के मानने वालों से प्रार्थना करता है कि वह इस तरफ़ ध्यान दें और अपने मज़हब और मुल्क को इन ख़तरों से बचाएं जो दिन दिन बढ़ते जा रहे हैं. और मज़हबों से ज़ियादा इस वक़्त हिन्द के मुसलमानों की हालत नाज़ुक हो रही है. उनके सामने इस वक़्त तीन सूरतें हैं. या तो वे इस्लाम को छोड़ कर कम्यूनिज़्म के पैरौ बन जायें या ईश्वर की एकता, इंसानी भाई चारे और ख़िलाफ़त के असूलों पर सच्चाई और ईमान के साथ चलने के लिये तैयार हो जायें तीसरा तरीक़ा यह है कि अपनी आजकल की ग़ुलामी

...لئے کوئی نیتک یا آتمک ...کرنے کے ...نہیں رہتا. تاریخ بتاتی ہے کہ ایشور کی ...کی زندگی سے چھتراؤ کو دور کرنے اور اس ...رجحانوں کو محدود کرنے اور اسے انسان بنانے ...لیا ہے وہ دنیا کے کسی دوسرے خیال نے ...اگر ہم کیول آخری تین چار سو سال کی ...تو ہمیں صاف نظر آئے گا کہ جتنی ...اور مادیت کی کلپنائیں ایشور کی ایکتا اور ...بھائی چارے کی کلپناؤں کو کمزور کرنے اور ...ہوئے نقشوں کو انسان کے دل اور دماغ سے ...میں کامیاب ہوتی گئیں اسی پیمانے پر انسانی سماج ...حیوانیت اور بربادی کی صورتیں بڑھتی گئیں اور ...سب کے ساتھ ساتھ آپسی ٹکروں کے طوفان ...پیدا ہوگئے ہیں کہ جن سے انسان کی سبھیتا اور ...مال سب ہی خطرے میں پڑگئے ہیں. اس الحاد ...ناستکتا اور مادیت کے اس طوفان نے مذہب کے ...والوں کے سامنے زندگی اور موت کا سوال پیدا کردیا ...یا تو یہ خاموش رہ کر اس طوفان کے ہاتھوں اپنی ...سبھیتا اور مذہب کا مٹ جانا چپ چاپ برداشت ...یا یہ اپنی آرتھک، سماجی اور روحانی زندگی ...پچھم کی غلامی سے آزاد کرنے کے لئے کمر باندھ لیں. ...اس تیاری کا پہلا قدم یہ ہوگا کہ وہ دنیا اور دولت ...اندھی پوجا اور عیش آرام کے سنہرے جال کو توڑ ...جس میں پچھم کی تہذیب نے انہیں پھنسا ...دوسرا قدم یہ ہوگا کہ وہ اپنے مذہب کے اونچے ...اور تعلیم پر سچے دل سے عمل کرنا شروع کریں. ...ایسا کرینگے تو خدا ان کا ساتھ دیگا اور پھر دنیا ...کی شکتی ان کے راستے کی رکاوٹ نہیں بن سکتی. ...جاننا چاہئے کہ ابھی پچھمی تہذیب کا زہر ...پوربی ملکوں کے اونچے پڑھے لکھے لوگوں تک ہی ...ہے، یہ ابھی چھن کر عام لوگوں تک نہیں پہونچا. ...دلوں پر خدا کے وجود اور مذہب کے اصولوں کے ...گہرے اثر جمے ہوئے ہیں. اگر ایک بار پچھم کی ...حیوانی اور ڈراونی تصویر ان کے سامنے آ ...اور اسے مٹانے کے لئے انہیں سنگٹھت کردیا جائے ...زبردست انقلاب جلد سے جلد پیدا ہوسکتا ہے.

...کنوینشن مذہب کے ماننے والوں سے پرارتھنا کرتا ...وہ اس طرف دھیان دیں اور اپنے مذہب اور ملک ...خطروں سے بچائیں جو دن دن بڑھتے جا رہے ہیں. ...مذہبوں سے زیادہ اس وقت ہند کے مسلمانوں کی ...نازک ہو رہی ہے. ان کے سامنے اس وقت تین ...ہیں. یا تو وہ اسلام کو چھوڑ کر کمیونزم یا سوشلزم ...پیرو بن جائیں یا ایشور کی ایکتا، انسانی ...چارے اور خلافت کے اصولوں پر سچائی ...ایمان کے ساتھ چلنے کے لئے تیار ہوجائیں ...طریقہ یہ ہے کہ اپنی آجکل ...

में गिरफ़्तार रह कर कभी ख़ामोशी और मायूसी के दिन गुज़ारें और कभी कम गिनत और बहुगिनत की क़ुर्बानगाह (वेदी) पर जा कर पुराने फ़िर्क़ावाराना तूफ़ान पैदा करें और फिर ख़ुद ही उनका शिकार बन जावें. इन तीन के सिवा और कोई तरीक़ा इनके सामने नहीं है.

इस कन्वैन्शन की सलाह यह है कि हिन्द के मुसलमानों को अपनी पुरानी मज़हबी लकीरों और राजकाजी ग़लत राहों को छोड़ कर नया रास्ता निकालना चाहिये अब तक वह दौलतपरस्ती और अपनी हवस को पूरा करने की राहों पर चलते रहे हैं. अब उन्हें इन राहों को छोड़ कर सच्ची रोशनी से मदद लेकर सच्ची जम्हूरियत यानी सच्ची लोकशाही या हकूमते इलाही क़ायम करने को अपनी ज़िंदगी का मक़सद बनाना चाहिये. उन्हें चाहिये कि अपनी माली, समाजी और रूहानी ज़िंदगी को सुधारने के लिये क़ुरान के मुताबिक़ प्रोग्राम बनाएं और उन प्रोग्रामों को ज़ोर शोर के साथ चलाने में लग जायें.

इस कन्वैन्शन की यह भी सलाह है कि मुसलमान इस तहरीक में शामिल होने की अपने हिन्दू भाइयों को भी दावत दें और उन्हें यह यक़ीन दिलायें कि कम गिनत और बहुगिनत और तमाम फ़िर्क़ावाराना भेद भावों और मज़हबी बिरादरियों की सच्ची जम्हूरियत या लोकराज में कोई जगह नहीं है. अगर हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल कर अपनी इन बीच की दीवारों को ढा दें तो इनके ढहे जाने के बाद हमारी समाज वह सूरत ले सकती है जिसे हम सच्ची जम्हूरियत या हकूमते इलाही या रामराज कह सकते हैं. इस कन्वैन्शन को यह यक़ीन है कि अगर सच्ची जम्हूरियत हिन्दुस्तान में क़ायम हो जाये तो पाकिस्तान इसके असर से बाहर नहीं रह सकता. बस यही एक रास्ता है जिस से वह ज़ख़्म कि जो अंगरेज़ी हिकमते अमली ने लगाये हैं भर सकते हैं. जिस्म के दो टुकड़े जिन से आज भी ख़ून बह रहा है जुड़ सकते हैं और वह दो भाई जो आज एक दूसरे के ख़िलाफ़ जंगी मोर्चे तैयार कर रहे हैं फिर से गले मिल सकते हैं.

इस कन्वैन्शन को पूरा यक़ीन है कि अगर इसकी सलाह मान ली जाय तो मुल्क की ज़िंदगी में ज़बरदस्त इनक़लाब पैदा हो सकता है. इस इनक़लाब के पैदा करने के लिये मुनासिब यह होगा कि यह कन्वैन्शन अपने इस जलसे में कोई प्रोग्राम न बनाये बल्कि उन तजवीज़ों को जो इसके सामने आई हैं मुल्क के सामने रखे इस प्रार्थना के साथ कि मुक़ामी मीटिंगों और कान्फ्रेंसों में इन्हें पेश करके आम राय इन की बाबत हासिल की जाए. फिर एक मुद्दत के बाद उस सारी छान बीन की रोशनी में यह कन्वैन्शन अपने दूसरे जलसे में आगे के काम के लिये प्रोग्राम तैयार करे.

گرفتار رہ کر کبھی خاموشی اور مایوسی کے دن گزاریں اور کبھی کم گنت اور بہوگنت کی قربانگاہ (ویدی) پر جا کر پرانے فرقہ وارانہ طوفان پیدا کریں اور پھر خود ہی ان کا شکار بن جاویں . ان تین کے سوا اور کوئی طریقہ ان کے سامنے نہیں ہے .

اِس کنوینشن کی صلاح یہ ہے کہ ہند کے مسلمانوں کو اپنی پرانی مذہبی لکیروں اور راجکاجی غلط راہوں کو چھوڑ کر نیا راستہ نکالنا چاہئے. اب تک وہ دولت پرستی اور اپنی ہوس کو پورا کرنے کی راہوں پر چلتے رہے ہیں . اب انہیں اِن راہوں کو چھوڑ کر سچی روشنی سے مدد لیکر سچی جمہوریت یعنی سچی لوک شاہی یا حکومت اِلٰہی قائم کرنے کو اپنی زندگی کا مقصد بنانا چاہئے. اِنہیں چاہئے کہ اپنی مالی، سماجی اور روحانی زندگی کو سدھارنے کے لئے قرآن کے مطابق پروگرام بنائیں اور اِن پروگراموں کو زور شور کے ساتھ چلانے میں لگ جائیں .

اِس کنوینشن کی یہ بھی صلاح ہے کہ مسلمان اس تحریک میں شامل ہونے کی اپنے ہندو بھائیوں کو بھی دعوت دیں اور اُنہیں یہ یقین دلائیں کہ کم گنت اور بہوگنت اور تمام فرقہ وارانہ بھید بھاؤں اور مذہبی برادریوں کی سچی جمہوریت یا لوک راج میں کوئی جگہ نہیں ہے. اگر ہندو اور مسلمان دونوں مل کر اپنی ان بیچ کی دیواروں کو ڈھا دیں تو ان کے ڈھے جانے کے بعد ہماری سماج وہ صورت لے سکتی ہے جسے ہم سچی جمہوریت یا حکومت الٰہی یا رام راج کہہ سکتے ہیں . اس کنوینشن کو یہ یقین ہے کہ اگر سچی جمہوریت ہندستان میں قائم ہوجائے تو پاکستان اس کے اثر سے باہر نہیں رہ سکتا . بس یہی ایک راستہ ہے کہ جس سے وہ زخم کہ جو انگریزی حکمت عملی نے لگائے ہیں بھر سکتے ہیں . جسم کے دو ٹکڑے جن سے آج بھی خون بہہ رہا ہے جڑ سکتے ہیں اور وہ دو بھائی جو آج ایک دوسرے کے خلاف جنگی مورچے تیار کر رہے ہیں پھر سے گلے مل سکتے ہیں .

اس کنونشن کو پورا یقین ہے کہ اگر اسکی صلاح مان لی جائے تو ملک کی زندگی میں زبردست انقلاب پیدا ہوسکتا ہے . اس انقلاب کے پیدا کرنے کے لئے مناسب یہ ہوگا کہ یہ کنوینشن اپنے اس جلسے میں کوئی پروگرام نہ بنائے بلکہ ان تجویزوں کو جو اِس کے سامنے آئی ہیں ملک کے سامنے رکھے اِس پرارتھنا کے ساتھ کہ مقامی میٹنگوں اور کنفرنسوں میں انہیں پیش کرکے عام رائے ان کی بابت حاصل کی جائے. پھر ایک مدت کے بعد اس ساری چھان بین کی روشنی میں یہ کنوینشن اپنے دوسرے جلسے میں آگے کے کام کے لئے پروگرام تیار کرے.

हमारी राय

ہماری رائے

विद्यार्थी आन्दोलन और श्री के. एम. मुंशी

हर देश में कई तरह की विचार धाराओं का एक साथ चलना और उन में टक्करों का होना क़ुदरती है और एक दर्जे तक देश के अन्दर जागृति और जीवन की पहचान है. हमारे देश के अन्दर भी कई तरह की विचार धाराएं चल रही हैं और उनमें जब तब टक्करें भी होती रहती हैं. उनमें बहुत दिनों से दो धाराएं ख़ास हैं—एक संकीर्न धार्मिक, फ़िरक़ा-परस्ती, कट्टरता और पुराने अंधे विश्वासों की तरफ़ झुकने वाली धारा और दूसरी उदारता, रवादारी, तरक़्क़ी पसन्दी और बुद्धिवाद की तरफ़ ले जाने वाली धारा. इनमें पहली धारा देशवासी देशवासी में ग़ैरियत और नफ़रतों के बीज बो कर देश को फूट और बरबादी की तरफ़ ले जाने वाली है, और दूसरी आपसी प्रेम बढ़ा कर एकता और ख़ुशहाली की तरफ़ ले जाने वाली. डेढ़ सौ बरस तक अंगरेज़ों की गुलामी क़ायम रखने में इस पहली धारा ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया. उस समय के हाकिमों ने इससे पूरा पूरा फ़ायदा उठाया. इसी धारा ने धर्म के आधार पर अलग अलग क़ौमों के सिद्धान्त की नींव डाली. इसी ने आख़िर में देश के दो टुकड़े कराए. महात्मा गांधी ने जीवन भर इन ग़लत और ज़हरीले विचारों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी और अंत में इसी लड़ाई में बहादुरी और शान्ति के साथ अपने प्रान दिये.

लेकिन महात्मा गांधी के बलिदान के बाद भी इस तरह के ग़लत और हानिकर विचार हमारे देश से मिटे नहीं हैं. अब भी काफ़ी लोग इस तरह के देश में हैं जो सेकुलर राज की कल्पना को—यानी उस कल्पना को कि मज़हब के मामले में राज बिलकुल ग़ैर जानिबदार हो, उसका किसी धर्म या सामप्रदाय से कोई ख़ास संबन्ध न हो और वह सब धर्मों और धर्म वालों को एक बराबर की निगाह से देखे—ग़लत समझते हैं. यह लोग इस देश

ودیارتھی آندولن اور شری کے. ایم. منشی

ہر دیش میں کئی طرح کی وچار دھاراؤں کا ایک ساتھ چلنا اور ان میں ٹکروں کا ہونا قدرتی ہے اور ایک درجے تک دیش کے اندر جاگرتی اور جیون کی پہچان ہے. ہمارے دیش کے اندر بھی کئی طرح کی وچار دھارائیں چل رہی ہیں اور ان میں جب تب ٹکریں بھی ہوتی رہتی ہیں. ان میں بہت دنوں سے دو دھارائیں خاص ہیں—ایک سنکیرن دھارمک وچاروں' فرقہ پرستی' کٹرتا اور پرانے اندھ وشواسوں کی طرف جھکنے والی دھارا اور دوسری اُدارتا' رواداری' ترقی پسندی اور بدھی واد کی طرف لے جانیوالی دھارا. ان میں پہلی دھارا دیش واسی دیش واسی میں غیریت اور نفرتوں کے بیج بو کر دیش کو پھوٹ اور بربادی کی طرف لے جانیوالی ہے' اور دوسری آپسی پریم بڑھاکر ایکتا اور خوشحالی کی طرف لے جانے والی. ڈیڑھ سو برس تک انگریزوں کی غلامی قائم رکھنے میں اس پہلی دھارا نے بہت بڑا حصہ لیا. اس سمے کے حاکموں نے اس سے پورا پورا فائدہ اٹھایا. اسی دھارا نے دھرم کے آدھار پر الگ الگ قوموں کے سدھانت کی نیو ڈالی. اسی نے آخیر میں دیش کے دو ٹکڑے کرائے. مہاتما گاندھی نے جیون بھر ان غلط اور زہریلے وچاروں کے خلاف لڑائی لڑی اور انت میں اسی لڑائی میں بہادری اور شانتی کے ساتھ اپنے پران دئے.

لیکن مہاتما گاندھی کے بلیدان کے بعد بھی اس طرح کے غلط اور ہانیکر وچار ہمارے دیش سے مٹے نہیں ہیں. اب بھی کافی لوگ اس طرح کے دیش میں ہیں جو سیکولر راج کی کلپنا کو—یعنی اس کلپنا کو کہ مذہب کے معاملے میں راج بالکل غیر جانبدار ہو' اس کا کسی دھرم یا سامپردائے سے کوئی خاص سمبندھ نہ ہو اور وہ سب دھرموں اور دھرم والوں کو ایک برابر کی نگاہ سے دیکھے—غلط سمجھتے ہیں. یہ لوگ اس دیش

के राज को हिन्दू राज बनाना चाहते हैं और हकूमत के कामों में कुछ हिन्दू रीत रिवाजों और पूजा पाठों को इस तरह शामिल कर लेना चाहते हैं कि जिससे दुनिया देख ले कि भारत की हकूमत हिन्दू हकूमत है. पाकिस्तान के मुस्लिम राज की कल्पना से इन लोगों को काफ़ी शह मिलती रही है और अब भी मिल रही है.

हम इस तरह के विचार रखने वालों की ईमानदारी में सन्देह नहीं करते. ईमानदार, नेक और चरित्रवान आदमी कम या ज़ियादा हर विचार के लोगों में मिलेंगे. पर इस तरह के विचारों को हम देश के लिये इस समय सबसे अधिक ख़तरे की चीज़ मानते हैं.

उत्तर प्रदेश के गवर्नर श्री कन्हैया लाल मुंशी शुरू से लगभग इन ही विचारों के हैं. श्री कन्हैया लाल मंशी हमारे मित्रों में से हैं. हम एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित हैं. सोमनाथ के पुनरुद्धार के मामले में उनका ज़बर्दस्त हिस्सा लेना, सूबा के गवर्नर होते हुए मथुरा में उनका गोबरधन पूजा करना, गवर्नर के महल में आए दिन उनका हिन्दू रिवाजों के अनुसार पूजा पाठ और अनुष्ठान कराना यह सब उनकी इसी मनोवृत्ति का सबूत है. हम इस बारे में उनका कोई क़ुसूर भी नहीं समझते. दुनिया के अधिकतर आदमी अपनी शिक्षा दीक्षा और संसकारों की पैदावार होते हैं. वही वह भी हैं. हो सकता है वह ही हम भी हों. पर इस समय हमारे सामने सवाल दूसरा है.

इस तरह की चीज़ें गवर्नर होते हुए भी अगर वह केवल अपने निजी जीवन तक ही महदूद रखते तो शायद उनसे इतने बुरे नतीजे पैदा न होते जो हुए. उनकी और पिछली कार्रवाइयों की चरचा न करते हुए हाल में लखनऊ, इलाहाबाद और आगरा यूनीवर्सिटियों के चांसलर की हैसियत से वह अपनी हद से बहुत ज़ियादा बढ़ गए.

यूनीवर्सिटियों में आम तौर पर—और यह एक क़ुदरती बात है—लड़के और लड़कियां धर्म, मज़हब जैसे मामलों में आज़ाद ख़्याली की तरफ़ ज़ियादा जा रहे हैं. इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि यूनीवर्सिटियों के विद्यार्थी जाने या अनजाने कई तरह की बातों में कम्यूनिज़्म जैसे विचारों की तरफ़ झुक रहे हैं. यह भी आजकल के ज़माने में एक क़ुदरती बात है. पुराने ढंग के धार्मिक विचारों और रीत रिवाजों में अब पढ़े लिखे नौ जवानों को दिलचस्पी महसूस नहीं होती. हिन्दू राज और मुसलिम राज की कल्पनाएं भी उनके दिलों को अपील नहीं करतीं. श्री के. एम. मुंशी ने चांसलर की हैसियत से समय की इस धारा को पलटना चाहा.

راج کو ھندو راج بنانا چاھتے ھیں اور حکومت کے کاموں میں کچھ ھندو ریت رواجوں اور پوجا پاٹھوں کو اس طرح شامل کرلینا چاھتے ھیں کہ جس سے دنیا دیکھ لے کہ بھارت کی حکومت ھندو حکومت ھے. پاکستان کی مسلم راج کی کلپنا سے اِن لوگوں کو کافی شہہ ملتی رھی ھے اور اب بھی مل رھی ھے .

ھم اِس طرح کے وچار رکھنے والوں کی ایمانداری میں سندیہہ نہیں کرتے . ایماندار' نیک اور چرتروان آدمی کم یا زیادہ ھر وچار کے لوگوں میں ملینگے . پر اِس طرح کے وچاروں کو ھم دیش کے لئے اِس سمے سب سے ادھک خطرے کی چیز مانتے ھیں .

اُتر پردیش کے گورنر شری کنھیا لال منشی شروع سے لگ بھگ اِن ھی وچاروں کے ھیں. شری کنھیا لال منشی ھمارے متروں میں سے ھیں . ھم ایک دوسرے سے اچھی طرح پریچت ھیں. سومناتھ کے پنر ادھار کے معاملے میں اُن کا زبردست حصہ لینا' صوبہ کے گورنر ھوتے ھوئے متھرا میں اُن کا گوبردھن پوجا کرنا' گورنر کے محل میں آئے دن اُن کا ھندو رواجوں کے انوسار پوجا پاٹھ اور انشٹھان کرانا یہ سب اُن کی اِسی منوورتی کا ثبوت ھیں. ھم اِس بارے میں اُن کا کوئی قصور بھی نہیں سمجھتے . دنیا کے ادھک تر آدمی اپنی شکشا دیکشا اور سنسکاروں کی پیداوار ھوتے ھیں. وھی وہ بھی ھیں. ھوسکتا ھے وھی ھم بھی ھوں. پر اِس سمے ھمارے سامنے سوال دوسرا ھے .

اِس طرح کی چیزیں گورنر ھوتے ھوئے بھی اگر وہ کیول اپنے نجی جیون تک ھی محدود رکھتے تو شاید اُن سے اِتنے برے نتیجے پیدا نہ ھوتے جو ھوئے . اُن کی اور پچھلی کارروائیوں کی چرچہ نہ کرتے ھوئے حال میں لکھنؤ' الہ آباد اور آگرہ یونیورسٹیوں کے چانسلر کی حیثیت سے وہ اپنی حد سے بہت زیادہ بڑھ گئے .

یونیورسٹیوں میں عام طور پر—اور یہ ایک قدرتی بات ھے—لڑکے اور لڑکیاں دھرم مذھب جیسے معاملوں میں آزاد خیالی کی طرف زیادہ جارھے ھیں . اِس سے بھی انکار نہیں کیا جاسکتا کہ یونیورسٹیوں کے ودیارتھی جانے یا انجانے کئی طرح کی باتوں میں کمیونزم جیسے وچاروں کی طرف جھک رھے ھیں. یہ بھی آجکل کے زمانہ میں ایک قدرتی بات ھے . پرانے ڈھنگ کے دھارمک وچاروں اور ریت رواجوں میں اب پڑھے لکھے نوجوانوں کو دلچسپی محسوس نہیں ھوتی. ھندو راج اور مسلم راج کی کلپنائیں بھی اُن کے دلوں کو اپیل نہیں کرتیں . شری کے. ایم. منشی نے چانسلر کی حیثیت سے سمے کی اِس دھارا کو پلٹنا چاہا .

धर्म, राजनीति और अर्थ नीति सब में मानव समाज को पीछे घसीटने वाली सब ताक़तें आपस में मिल जाती हैं. इस लिये देश की फ़िरक़ परस्त ताक़तें अधिकतर अमरीकी और अंगरेज़ी समाजवाद और देशी और विदेशी पूंजीवाद दानों के साथ मिल कर चलती हैं. यह भी एक कारन है कि श्री के. एम. मुंशी को कम्यूनिस्टों के साथ या उनसे मिलते जुलते विचार वालों से ख़ास डर और एक ख़ास नाराज़गी है.

अंगरेज़ी ज़माने से यूनीवर्सिटियों के विद्यार्थियों को अपनी यूनीवर्सिटी यूनियन बनाने और उनके ओहदेदार वग़ैरा चुनने के कुछ अधिकार मिले हुए थे. श्री के. एम. मुंशी ने विद्यार्थियों को अपने रास्ते पर लाने के लिये यह ज़रूरी समझा कि उनकी ताक़त को तोड़ा जाय. इस के लिये उन्होंने विद्यार्थियों के इन अधिकारों में दख़ल देना और उन्हें कम करना चाहा. तफ़सील में जाने की ज़रूरत नहीं है. विद्यार्थियों में इससे असंतोश पैदा हुआ. जगह जगह यूनीवर्सिटी यूनियन के विधान को बदलने के ख़िलाफ़ शान्ति और अहिंसात्मक प्रदर्शन हुए.

एक और बात हुई जिस से श्री के. एम. मुंशी के अंदर के विचार और चमक उठे. देश के सब विचारवान लोग इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि हमारे उस समय के अंगरेज़ हाकिमों ने देश के अंदर हिन्दू और मुसलमानों के दिलों में एक दूसरे से नफ़रत पैदा करने के लिये जो जो तरीक़े बरते थे उनमें एक ख़ास तरीक़ा भारत के पिछले इतिहास को और ख़ासकर मुस्लिम और मुग़ल ज़माने के इतिहास को इस तरह रंग कर देश के सामने रखना था जिससे नफ़रतें बढ़ें. मुस्लिम बादशाहों की छोटी-मोटी ग़लतियों को चुन-चुन कर सामने लाना, उन्हें रंग देना और उन बादशाहों की नेकियों, उन के अहसानों और उस ज़माने के करोड़ों हिन्दू मुसलमानों के प्रेम भरे आपसी संबंधों को दबाना और छुपाना इन नापाक तरीक़ों में से एक ख़ास तरीक़ा था हाल के ज़माने में कुछ समझदार हिंदुस्तानी इतिहास लेखकों का ध्यान इस तरफ़ गया. कुछ लिखने वालों ने जिनमें इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के कुछ प्रोफ़ेसर भी थे अपनी नई इतिहास की किताबों में इस दोश को कम करने की कोशिश की. श्री के.एम. मुन्शी ने यूनिवर्सिटी का चांसलर होने के बाद इस बात को गवारा करना ठीक न समझा. सुना जाता है कि नैनीताल में जो उन्होंने प्रदेश की यूनीवर्सिटियों के कुछ लोगों को जमा करके उन्हें सलाहें दीं, उनमें से एक ख़ास सलाह यह भी थी कि यूनिवर्सिटी की इतिहास की किताबों के लिखने वालों के इस रुझान को बदला जावे. हमें मालूम है कि ख़ुद श्री के. एम. मुन्शी की इतिहास की जानकारी यकतर्फ़ा और ग़लत है, और उनकी

دھرم، راج نیتی اور ارتھ نیتی سب میں مانو سماج کو پیچھے گھسیٹنے والی سب طاقتیں آپس میں مل جاتی ہیں۔ اس لئے دیش کی فرقہ پرست طاقتیں ادھکتر امریکی اور انگریزی سامراجواد اور دیشی اور ودیشی پونجیواد دونوں کے ساتھ ملکر چلتی ہیں۔ یہ بھی ایک کارن ہے کہ شری کے. ایم. منشی کو کمیونسٹوں کے ساتھ یا ان سے ملتے جلتے وچار والوں سے خاص ڈر اور ایک خاص ناراضگی ہے۔

انگریزی زمانہ سے یونیورسٹیوں کے ودیارتھیوں کو اپنی یونیورسٹی یونین بنانے اور ان کے عہدہ دار وغیرہ چننے کے کچھ ادھیکار ملے ہوئے تھے۔ شری کے. ایم. منشی نے ودیارتھیوں کو اپنے راستے پر لانے کے لئے یہ ضروری سمجھا کہ ان کی طاقت کو توڑا جائے۔ اس کے لئے انہوں نے ان ادھیکاروں میں دخل دینا اور انہیں کم کرنا چاہا۔ تفصیل میں جانے کی ضرورت نہیں ہے۔ ودیارتھیوں میں اس سے اسنتوش پیدا ہوا۔ جگہ جگہ یونین کے ودھان کو بدلنے کے خلاف شانت اور اہنسک پردرشن ہوئے۔

ایک اور بات ہوئی جس سے شری کے. ایم. منشی کے اندر کے وچار اور چمک اٹھے۔ دیش کے سب وچاروان لوگ اس بات کو اچھی طرح سمجھتے ہیں کہ ہمارے اس وقت کے انگریز حاکموں نے دیش کے اندر ہندو اور مسلمانوں کے دلوں میں ایک دوسرے سے نفرت پیدا کرنے کے لئے جو جو طریقے برتے تھے ان میں ایک خاص طریقہ بھارت کے پچھلے اتہاس کو اور خاص کر مسلم اور مغل زمانے کے اتہاس کو اس طرح رنگ کر دیش کے سامنے رکھنا تھا جس سے نفرتیں بڑھیں۔ مسلم بادشاہوں کی چھوٹی موٹی غلطیوں کو چن چن کر سامنے لانا، انہیں رنگ دینا اور ان بادشاہوں کی نیکیوں، ان کے احسانوں اور اس زمانے کے کروڑوں ہندو مسلمانوں کے پریم بھرے آپسی سمبندھوں کو دبانا اور چھپانا ان ناپاک طریقوں میں سے ایک خاص طریقہ تھا۔ حال کے زمانہ میں کچھ سمجھدار ہندوستانی اتہاس لیکھکوں کا دھیان اس طرف گیا۔ کچھ لکھنے والوں نے جن میں الہ آباد یونیورسٹی کے کچھ پروفیسر بھی تھے اپنی نئی اتہاس کی کتابوں میں اس دوش کو کم کرنے کی کوشش کی۔ شری کے. ایم. منشی نے یونیورسٹی کا چانسلر ہونے کے بعد اس بات کو گوارا کرنا ٹھیک نہ سمجھا۔ سنا جاتا ہے کہ نینی تال میں جو انہوں نے پردیش کی یونیورسٹیوں کے کچھ لوگوں کو جمع کر کے انہیں صلاحیں دیں، ان میں سے ایک خاص صلاح یہ بھی تھی کہ یونیورسٹی کی اتہاس کی کتابوں کے لکھنے والوں کے اس رجحان کو بدلا جاوے۔ ہمیں معلوم ہے کہ خود شری کے. ایم. منشی کی اتہاس کی جانکاری ایک طرفہ اور غلط ہے، اور ان کی

निगाह साम्प्रदायक है. यूनिवर्सिटी के विद्वान लेखक श्री के. एम. मुन्शी को इतिहास में सनद कैसे मान सकते थे. बात यों ही चलती रही.

सुना जाता है कि श्री के. एम. मुन्शी ने इस बात की भी कोशिश की यूनीवर्सिटी के टीचरों में कम्यूनिज़्म जैसी चीज़ों को बढ़ने से रोकने के लिये उनकी लगभग उसी तरह की सरविस बुक्स रखी जावें जिस तरह कि पुलिस या कुछ और मोहकमों में रखी जाती हैं. इस पर भी टीचर्स में काफ़ी असंतोश हुआ.

इसी गरज़ के लिये श्री के. एम. मुन्शी और उनके हम ख़्याल लोगों ने यूनिवर्सिटी यूनियनों के विधान को बदल कर लड़कों को क़ाबू में करना चाहा.

और भी कई छोटी-छोटी किन्तु भद्दी चीज़ें सुनने में आ रही हैं जो न किसी यूनीवर्सिटी की शान को बढ़ा सकती हैं और न किसी चांसलर या गवर्नर की.

नैनीताल में, सुना जाता है, ज़ियादातर एक ख़्याल के लड़कों को ही बुलाया गया था और जिस तरह की हवा वहां पर थी उससे मालूम होता था कि श्री के. एम. मुन्शी को यह ध्यान ही नहीं कि हिन्दू लड़कों के साथ साथ मुस्लिम, ईसाई, पारसी और सिख लड़के भी यूनिवर्सिटीयों में पढ़ते हैं और उनको यूनीवर्सिटीयों पर उतना ही और उसके बराबर का हक़ है जितना हिन्दू लड़कों को.

हमें यह सब लिखते हुए तकलीफ़ हो रही है. पर हम मजबूर हैं. यह सारा सवाल देश के लिये केवल उन्नति और अवनति का ही नहीं, ख़ुशहाली और बरबादी, ज़िन्दगी और मौत का सवाल है.

यह सब असली जड़ें हैं उस सारे विद्यार्थी आंदोलन और उस से पैदा होने वाली उस बदअमनी की जिसने देश के बड़े बड़े सेवकों को चिन्ता में डाल दिया. लखनऊ की भयंकर घटनाएं आई गई हो चुकीं. ज़ाहिर है और कुदर्ती था कि आम जनता की हमदर्दी विद्यार्थियों के साथ थी इस लिये नहीं कि कमयूनिज़्म की फ़लास्फ़ी जनता को ज़्यादा अपील करती है या किसी और पार्टी की पालिसी. बल्कि केवल इसलिये कि देश की जनता को देश के विद्यार्थियों अच्छे या बुरे, मुल्क की आइन्दा की उम्मेदों को इस तरह कुचलने और क़ाबू में करने का ढंग हरगिज़ पसन्द नहीं आ सकता. हम भी कई यूनिवर्सिटियों में पढ़ चुके हैं. देश में यह एक पुराना बेलिखा रिवाज चला आता था कि यूनिवर्सिटी के अन्दर और यूनीवर्सिटी के मामलों में पुलिस को किसी तरह का दख़ल नहीं देने दिया जाता था. आज न केवल यह रिवाज ही तोड़ डाला गया बल्कि गर्वनर खुले भाशन में पुलिस को शाबाशी देता है कि पुलिस ने विद्यार्थी [illegible] शाबाशी दे [illegible]

سامپردائک ہے۔ یونیورسٹی کے ودوان لیکھک شری کے۔ ایم۔ منشی کو اتہاس میں سند کیسے مان سکتے تھے۔ بات یوں ہی چلتی رہی۔

سنا جاتا ہے کہ شری کے۔ ایم۔ منشی نے اس بات کی بھی کوشش کی کہ یونیورسٹی کے ٹیچروں میں کمیونزم جیسی چیزوں کو بڑھنے سے روکنے کے لئے ان کی لگ بھگ اسی طرح کی سروس بکس رکھی جاویں جس طرح کہ پولس یا کچھ اور محکموں میں رکھی جاتی ہیں۔ اس پر بھی ٹیچرس میں کافی اسنتوش ہوا۔

اسی غرض کے لئے شری کے۔ ایم۔ منشی اور ان کے ہم خیال لوگوں نے یونیورسٹی یونینوں کے ودھان کو بدل کر لڑکوں کو قابو میں کرنا چاہا۔

اور بھی کئی چھوٹی چھوٹی کنتو بھدی چیزیں سننے میں آ رہی ہیں جو نہ کسی یونیورسٹی کی شان کو بڑھا سکتی ہیں اور نہ کسی چانسلر یا گورنر کی۔

نینی تال میں، سنا جاتا ہے، زیادہ تر ایک خیال کے لڑکوں کو ہی بلایا گیا تھا اور جس طرح کی ہوا وہاں پر تھی اس سے معلوم ہوتا تھا کہ شری کے۔ ایم۔ منشی کو یہ دھیان ہی نہیں کہ ہندو لڑکوں کے ساتھ ساتھ مسلم، عیسائی، پارسی اور سکھ لڑکے بھی یونیورسٹیوں میں پڑھتے ہیں اور ان کو یونیورسٹیوں پر اتنا ہی اور اس کے برابر کا حق ہے جتنا ہندو لڑکوں کو۔

ہمیں یہ سب لکھتے ہوئے تکلیف ہو رہی ہے۔ پر ہم مجبور ہیں۔ یہ سارا سوال دیش کے لئے کیول اُنتی اور اَونتی کا ہی نہیں، خوشحالی اور بربادی، زندگی اور موت کا سوال ہے۔

یہ سب اصلی جڑیں ہیں اس سارے ودیارتھی آندولن اور اس سے پیدا ہونے والی اس بدامنی کی جس نے دیش کے بڑے بڑے سیوکوں کو چنتا میں ڈال دیا۔ لکھنؤ کی بھینکر گھٹنائیں آئی گئی ہو چکیں۔ ظاہر ہے اور قدرتی تھا کہ عام جنتا کی ہمدردی ودیارتھیوں کے ساتھ تھی اس لئے نہیں کہ کمیونزم کی فلاسفی جنتا کو زیادہ اپیل کرتی ہے یا کسی اور پارٹی کی پالیسی۔ بلکہ کیول اس لئے کہ دیش کی جنتا کو دیش کے ودیارتھیوں، اچھے یا برے، ملک کی آئندہ کی امیدوں کو اس طرح کچلنے اور قابو میں کرنے کا ڈھنگ ہرگز پسند نہیں آ سکتا۔ ہم بھی کئی یونیورسٹیوں میں پڑھ چکے ہیں۔ دیش میں یہ ایک پرانا بے لکھا رواج چلا آتا تھا کہ یونیورسٹی کے اندر اور یونیورسٹی کے معاملوں میں پولیس کو کسی طرح کا دخل نہیں دینے دیا جاتا تھا۔ آج نہ کیول یہ رواج [illegible] توڑ ڈالا گیا بلکہ گورنر کھلے بھاشن [illegible] کو شاباشی دیتا ہے کہ پولیس نے ودیارتھی [illegible]

...आंदोलन को खूब दबाया. इस में शक नहीं विद्यार्थियों से भी गलतियां हुई हैं. विद्यार्थीयों से हमदर्दी दिखाने वाली जनता ने भी कुछ ग़लत हरकतें कीं. लेकिन इन सब के होते हुए हम यह पूरी ज़िम्मेवारी के साथ कह सकते हैं कि कुल मिला कर विद्यार्थियों के काम और उनका रुख़ अफ़सरों के कामों और उन के रुख़ के मुक़ाबिले में अहिंसात्मक और क़ाबिल माफ़ी रहा और मुक़ामी अफ़सरों के काम और उनका रुख़ के विद्यार्थियों के कामों और रुख़ के मुक़ाबिले में हिंसात्मक और नाक़ाबिल बर्दाश्त. सच यह है कि यह सारी मुसीबत और बदअमनी ही इसलिये पैदा हुई कि निहत्थे विद्यार्थियों के अहिंसात्मक आंदोलन को जबरदस्ती हिंसा से दबाने की कोशिश की गई और यों उसके रूप को ही बदल दिया गया. इस सब की ज़िम्मेवारी हम मुक़ामी अफ़सरों या दूसरे बड़े हाकिमों पर नहीं रखते असली ज़िम्मेदारी चांसलर की हैसियत से श्री के. एम. मुन्शी की ग़लत ख़्वाहिशों, ग़लत कोशिशों और ग़लत पालिसी पर है.

अन्त में हम विद्यार्थीयों और शासकों सब से नम्रता के साथ यह कहना चाहते हैं कि ज़माने की घड़ी की सुईयां हज़ार कोशिश करने पर भी पीछे को नहीं मोड़ी जा सकतीं. इस तरह की ग़लत कोशिशों से हम देश और देशवासियों के लिये मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, इतिहास के धारे को नहीं पलट सकते. विद्यार्थियों से हम यह खुले कहना चाहते हैं कि अगर वह अपने दिलों को साफ़ रखें, मन, बचन और कर्म में हिंसा से अपने को और अपने आन्दोलन को पाक रखें और अपने इरादे के पक्के रहें तो देश का भविष्य उन्हीं के साथ और उनहीं के हाथों में है.

9. 12. 53.

—सुंदर लाल

हमारे बुनकर, मिलें और सरकार

नवम्बर के आख़री हफ़्ते में हिन्द सरकार के कामर्स और इन्डस्ट्री मिनिस्टर ने पार्लिमेन्ट में 'धोती बिल' नाम का एक बिल पेश किया. उसमें कहा गया कि किसी मिल को जितनी धोतियां तैयार करने की इजाज़त है वह अगर उससे ज़ियादा तैयार करे तो फ़ी गज़ दो आने से आठ आने तक की चुंगी उस पर लगा दी जाएगी. यहां हम यह बता दें कि पारसाल 1952 में जब बुनकरों पर सख़्त मुसीबत थी और सारे देश के, ख़ास कर मद्रास प्रान्त के बुनकर बहुत ज़ियादा तबाही की हालत में थे तो मद्रास के मुख्य मंत्री श्री राज गोपालाचारी ने आवाज़ उठाई थी कि मिलों में धोती और साड़ियों की बुनाई बन्द कर दी जाय और केवल हाथ करघों पर ही

...بہت دبایا. اس میں شک نہیں ودیارتھیوں سے
بھی غلطیاں ہوئی ہیں. ودیارتھیوں سے ہمدردی دکھانے والی
...نے بھی کچھ غلط حرکتیں کیں. لیکن ان سب کے
ہوتے ہوئے ہم یہ پوری ذمہ واری کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ
کل ملا کر ودیارتھیوں کے کام اور اُن کا رخ افسروں کے کاموں
اور رخ کے مقابلے میں اہنساتمک اور قابل معافی
رہا اور مقامی افسروں کے کام اور ان کا رخ ودیارتھیوں کے
کاموں اور رخ کے مقابلے میں ہنساتمک اور ناقابل
برداشت. سچ یہ ہے کہ یہ ساری مصیبت اور بدامنی ہی
اس لئے پیدا ہوئی کہ نہتھے ودیارتھیوں کے اہنساتمک
آندولن کو زبردستی ہنسا سے دبانے کی کوشش کی گئی
اور یوں اس کے روپ کو ہی بدل دیا گیا. اس سب کی
ذمہ واری ہم مقامی افسروں یا دوسرے بڑے حاکموں پر
نہیں رکھتے. اصلی ذمہ واری چانسلر کی حیثیت سے
شری کے. ایم. منشی کی غلط خواہشوں، غلط کوششوں
اور غلط پالیسی پر ہے.

آخر میں ہم ودیارتھیوں اور شاسکوں سب سے نمرتا
کے ساتھ یہ کہنا چاہتے ہیں کہ زمانہ کی گھڑی کی سوئیاں
ہزار کوشش کرنے پر بھی پیچھے کو نہیں موڑی جاسکتیں.
اس طرح کی غلط کوششوں سے ہم دیش اور دیش واسیوں
کے لئے مصیبتیں کھڑی کر سکتے ہیں، اتہاس کے دھارے
کو نہیں پلٹ سکتے. ودیارتھیوں سے ہم یہ کھلے کہنا
چاہتے ہیں کہ اگر وہ اپنے دلوں کو صاف رکھیں، من بچن
اور کرم میں ہنسا سے اپنے کو اور اپنے آندولن کو پاک رکھیں
اور اپنے ارادہ کے پکے رہیں تو دیش کا بھوشیہ انہیں کے
ساتھ اور انہیں کے ہاتھوں میں ہے.

9.12.53

—سندر لال

ہمارے بنکر، ملیں اور سرکار

نومبر کے آخری ہفتے میں ہند سرکار کے کامرس اور
انڈسٹری منسٹر نے پارلیمنٹ میں 'دھوتی بل' نام کا
ایک بل پیش کیا. اس میں کہا گیا کہ کسی مل کو جتنی
دھوتیاں تیار کرنے کی اجازت ہے وہ اگر اُس سے زیادہ تیار
کرے تو فی گز دو آنے سے آٹھ آنے تک کی چنگی اس پر
لگا دی جائے گی. یہاں ہم یہ بتا دیں کہ پار سال 1952
میں جب بنکروں پر سخت مصیبت تھی اور سارے دیش کے،
خاص کر مدراس پرانت کے بنکر بہت زیادہ خراب حالت میں تھے
تو مدراس کے مکھیہ منتری شری راج گوپالاچاری نے آواز اٹھائی
تھی کہ ملوں میں دھوتی اور ساڑیوں کی بنائی بند کر دی
جائے اور کیول ہاتھ کرگھوں پر ہی

यह कपड़े तैयार हों. नई दिल्ली सरकार को यह मंजूर न हुआ. लेकिन उसने यह हुक्म जारी किया कि अप्रैल 1951 से मार्च 1952 तक जितनी धोतियां मिलों ने बनाईं हों आइन्दा उसकी सिर्फ़ साठ फ़ी सदी ही बनाएं. नई दिल्ली सरकार की यह पाबन्दी बहुत हद तक काग़ज़ी रही. काफ़ी मिलों ने इसकी कोई परवाह न की और कई सूबा सरकारों ने भी इसकी तरफ़ कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया. नतीजा यह हुआ कि धोतियां मिलों में, मिलों की सुविधा के अनुसार, बनती चली गईं और बुनकरों की बेकारी और परेशानी में भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा क्योंकि आज भी क्या उत्तर प्रदेश, क्या बिहार, क्या मध्यप्रदेश और क्या मद्रास, हर जगह का बुनकर दुखी है और अपना काम छोड़ने पर मजबूर हो रहा है.

पार्लिमेन्ट में इस बिल पर जो बहस हुई वह बहुत दिलचस्प थी. एक भाई ने कहा कि नई चुंगी से धोतियां मंहगी हो जायेंगी और आम ख़रीदार को घाटा रहेगा! दूसरे ने कहा कि इस बिल से बुनकरों के हित को बड़ी चोट पहुंचेगी और सरकार उनको जो इमदाद पहुंचाना चाहती है सो न पहुंचा सकेगी! तीसरे ने कहा कि देश के अन्दर विदेश से कपड़ा आना बन्द किया जाए! चौथे ने कहा कि जब तक सरकार कपड़े की तमाम मिलों को अपने हाथ में ले कर खुद न चलायेगी तब तक वह न आम ख़रीदार का भला कर सकेगी न बुनकरों का! इन्डस्ट्री मिनिस्टर ने बहस का जवाब देते हुए अपने बयान में कहा कि "अगर मेम्बर लोग इस नये बिल का विरोध करेंगे तो मुझे मजबूर होकर साठ फ़ी सदी पाबन्दी वाला पुराना हुक्म हटा देना पड़ेगा! और अगर बाहर से कपड़ा मंगाना हमने बन्द किया तो फिर हम भी अपनी मिलों का कपड़ा बाहर नहीं भेज पाएंगे!"

पार्लिमेन्ट में इस विषय पर जो चर्चा रही उससे और इन्डस्ट्री मिनिस्टर के बयान से कई बातों का साफ़ पता चल जाता है :

1. सरकार विदेशों से कपड़ा मंगा रही है और मंगाने की नीति में तबदीली नहीं करना चाहती.

2. सरकार मिल वालों से अपनी बात मनवाने में असमर्थ है.

3. बुनकरों की बुनियादी मांगें—सूत ख़रीद की सुविधा और तैयार माल बिक्री—मानने से सरकार लाचार है.

'धोती बिल' की ज़रूरत पड़ना ही यह साबित करता है कि सरकार का पुराना हुक्म काग़ज़ी दर्जे तक ही रहा और अमली शकल नहीं ले सका. हमें याद है कि जब साठ फ़ी सदी वाली पाबन्दी लागू की [illegible] मिल मालिक संस्थाओं ने एतराज़ किया [illegible]

[illegible] تیار ہوں . نئی دلی سرکار کو یہ [illegible] نہ ہوا . لیکن اُس نے یہ حکم جاری کیا کہ [illegible] 1951 سے مارچ 1952 تک جتنی دھوتیاں [illegible] نے بنائی ہوں آئندہ اُس کی صرف ساٹھ فیصدی [illegible] بنائیں . نئی دلی سرکار کی یہ پابندی بہت حد تک [illegible] رہی . کافی ملوں نے اِس کی کوئی پرواہ نہ کی اور [illegible] صوبہ سرکاروں نے بھی اِسکی طرف کوئی خاص دھیان [illegible] نہیں دیا . نتیجہ یہ ہوا کہ دھوتیاں ملوں میں' سودھا کے انوسار بنتی چلی گئیں اور بنکروں کی بیکاری اور پریشانی میں بھی کوئی فرق نہیں پڑا کیونکہ آج بھی کیا اُتر پردیش' کیا بہار' کیا مدھیہ پردیش اور کیا مدراس' ہر جگہ کا بنکر دکھی ہے اور اپنا کام چھوڑنے پر مجبور ہو رہا ہے .

پارلیمنٹ میں اِس بل پر جو بحث ہوئی وہ بہت دلچسپ تھی . ایک بھائی نے کہا کہ نئی چنگی سے دھوتیاں مہنگی ہو جائینگی اور عام خریدار کو گھاٹا رہے گا! دوسرے نے کہا کہ اِس بل سے بنکروں کے ہت کو بڑی چوٹ پہونچیگی اور سرکار اُن کو جو امداد پہونچانا چاہتی ہے سو نہ پہونچا سکے گی! تیسرے نے کہا کہ دیش کے اندر ودیش سے کپڑا آنا بند کیا جائے! چوتھے نے کہا کہ جب تک سرکار کپڑے کی تمام ملوں کو اپنے ہاتھ میں لے کر خود نہ چلائیگی تب تک وہ نہ عام خریدار کا بھلا کر سکے گی نہ بنکروں کا! اِنڈسٹری منسٹر نے بحث کا جواب دیتے ہوئے اپنے بیان میں کہا کہ " اگر ممبر لوگ اِس نئے بل کا ورودھ کرینگے تو مجھے مجبور ہو کر ساٹھ فیصدی پابندی والا پرانا حکم ہٹا دینا پڑے گا! اور اگر باہر سے کپڑا منگانا ہم نے بند کیا تو پھر ہم بھی اپنی ملوں کا کپڑا باہر نہیں بھیج پائینگے!"

پارلیمنٹ میں اِس وشے پر جو چرچا رہی اُس سے اور اِنڈسٹری منسٹر کے بیان سے کئی باتوں کا صاف پتہ چل جاتا ہے :

1. سرکار ودیشوں سے کپڑا منگا رہی ہے اور منگانے کی نیتی میں تبدیلی نہیں کرنا چاہتی .

2. سرکار مل والوں سے اپنی بات منوانے میں اسمرتھ ہے .

3. بنکروں کی بنیادی مانگیں—سوت خرید کی سودھا اور تیار مال بکری—ماننے سے سرکار لاچار ہے .

'دھوتی بل' کی ضرورت پڑنا ہی یہ ثابت کرتا ہے کہ سرکار کا پرانا حکم کاغذی درجے تک ہی رہا اور عملی شکل نہیں لے سکا . ہمیں یاد ہے کہ جب ساٹھ فیصدی والی پابندی [illegible] مالک سنستھاؤں نے اعتراض کیا تھا اور کئی [illegible]

से सरकारों की हमदर्दी भी उन्हें हासिल थी. फिर, कौन जानता कि आजकल हमारे बहुत से मिल मालिक दो ... के हिसाब किताब रखते हैं. हाथी के दांत खाने के ... दिखाने के और, उसी तरह एक हिसाब असली होता ... दूसरा सरकारी हाकिमों को दिखाने का होता है. साठ ... सदी से ज़ियादा धोतियां बना लेने पर भी हिसाब में ... साठ से कम दिखाई जा सकती हैं. और मान लिया जाय ... ठीक दिखा भी दी गई, साठ से ज़ियादा, तब भी हिसाब देखने वाले सरकारी आदमी को हमारे मिल वालों जैसे वसीले वाले आसानी से इस पर राज़ी कर सकते हैं कि कोई बात क़ाबिले एतराज़ मिलों ने नहीं की. यह बात हमें बड़ी तकलीफ़ के साथ कहना पड़ती है क्योंकि हमारी सरकार का मिल वालों के आगे बस चलता मालूम नहीं पड़ता.

एक मिसाल हम लें. 24 नवम्बर को ही जब पार्लिमेन्ट में धोती बिल पर बहस चल रही थी—कौन्सिल आफ़ स्टेट में एक भाई ने सवाल पूछा कि 1947-48 में रेलवे के डिब्बों की चोरी के जो मामले पकड़े गए थे उनमें मोदी इन्डस्ट्रीज़ नाम की मिल वालों के ख़िलाफ़ कार्रवाई क्यों न की गई. डिप्टी रेलवे मिनिस्टर ने क़बूल किया कि मोदी इन्डस्ट्रीज़ के ख़िलाफ़ वाला मामला लगभग एक करोड़ रुपये का था (99,54,064 रुपया 9 आने) और इसे क़ानून मिनिस्ट्री के पास भेजा गया मगर सालीसिटर जनरल ने यह मशविरा दिया कि मुक़दमा न चलाया जाय. डिप्टी मिनिस्टर के जवाब से मेम्बरों को कोई तसल्ली नहीं हुई और कौन्सिल के सदर, हिन्दुस्तान के वाइस प्रेसीडेन्ट, डाक्टर राधा कृष्णन ने कहा—"मेम्बरों को जो सवाल परेशान कर रहा है वह यह कि छै मामलों में से पांच मामलों में मुक़दमा चलाया गया और एक मामले में न चलाया गया. डिप्टी मिनिस्टर (रेलवे) का कहना है कि यह तय करना था क़ानून और होम मिनिस्ट्रियों को. मेम्बर लोग कहते हैं कि इस व्यवहार में तरफ़दारी की गई."

"व्यवहार में तरफ़दारी" आज हमारी मिनिस्ट्रियों के कारिन्दों का मानो पेशा ही बन गया है जिसकी वजह से जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली बात क्या नई दिल्ली के सेक्रेटेरियट और क्या सूबों के सेक्रेटेरियट, सब जगह कम या ज़ियादा चल रही है. ऐसी सूरत में बेचारे बुनकरों का कहां ठिकाना है? हमारे इन्डस्ट्री मिनिस्टर उन्हें तो "बवाले जान" कहा ही करते हैं. सारे सरकारी निज़ाम में बुनकर हो या चमार या देहात का कोई और कारीगर, किसी की कोई गुंजाइश नहीं है. यही वजह है कि अंगरेज़ी राज में जो चोट इन धन्दों को नहीं पहुंची उससे ज़ियादा भयानक चोट आज़ाद भारत में पहुंची है और पहुंच रही

... کی ہمدردی بھی انہیں حاصل تھی. پھر کون نہیں ... ہمارے بہت سے مل مالک دو طرح کے حساب ... ہاتھی کے دانت کھانے کے اور دکھانے ... ہیں. ایک حساب اصلی ہوتا ہے، دوسرا ... طرح کو دکھانے کا ہوتا ہے. ساٹھ فیصدی سے ... بنا لینے پر بھی حساب میں ساٹھ سے کم ... سکتی ہیں. اور مان لیا جائے کہ ٹھیک ... ساٹھ سے زیادہ، تب بھی حساب دیکھنے ... کو ہمارے مل والوں جیسے وسیلے والے ... اس پر راضی کر سکتے ہیں کہ کوئی بات قابل ... نے نہیں کی. یہ بات ہمیں بڑی تکلیف ... کہنا پڑتی ہے کیونکہ ہماری سرکار کا مل والوں کے ... چلتا معلوم نہیں پڑتا.

... مثال ہم لیں. 24 نومبر کو ہی—جب ... میں دھوتی بل پر بحث چل رہی تھی ... اسٹیٹ میں ایک بھائی نے سوال پوچھا کہ ... میں ریلوے کے ڈبوں کی چوری کے جو معاملے ... ان میں مودی انڈسٹریز نام کی مل والوں ... کاروائی کیوں نہ کی گئی. ڈپٹی ریلوے منسٹر ... کیا کہ مودی انڈسٹریز کے خلاف والا معاملہ ... ایک کروڑ روپیہ کا تھا. (99,54,064 روپیہ ...) اور اسے قانون منسٹری کے پاس بھیجا گیا مگر ... جنرل نے یہ مشورہ دیا کہ مقدمہ نہ چلایا جائے. ... منسٹر کے جواب سے ممبروں کو کوئی تسلی نہیں ... اور کونسل کے صدر، ہندستان کے وائس پریزیڈنٹ، ... کرشنن نے کہا " ممبروں کو جو سوال پریشان ... ہے وہ یہ کہ چھ معاملوں میں مقدمہ چلایا گیا ... ایک معاملے میں نہ چلایا گیا. ڈپٹی منسٹر (ریلوے) ... ہے کہ یہ طے کرنا تھا قانون اور ہوم منسٹریوں کو ... لوگ کہتے ہیں کہ اس ویوہار میں طرفداری ... گئی."

"ویوہار میں طرفداری" آج ہماری منسٹریوں کے ... کا مانو پیشہ ہی بن گیا ہے جس کی وجہ سے ... لاٹھی اسکی بھینس والی بات کیا نئی دلی کے ... اور کیا صوبوں کے سکریٹریٹ، سب جگہ کم یا ... چل رہی ہے. ایسی صورت میں بیچارے بنکروں ... ٹھکانا ہے؟ ہمارے انڈسٹریز منسٹر انہیں تو ... جان" کہا ہی کرتے ہیں. سارے سرکاری نظام میں ... ہو یا چمار یا دیہات کا کوئی اور کاریگر، کسی کی ... گنجائش نہیں ہے. یہی وجہ ہے کہ انگریزی راج ... جو چوٹ ان دھندوں کو نہیں پہونچی اس سے زیادہ ... چوٹ آزاد بھارت میں پہونچی ہے اور پہونچ رہی

है. मिलें जो माल चाहें, जितना चाहें, जैसे चाहें पैदा करें, सरकार उनका बाल भी बांका नहीं कर सकती. मिल वालों के पास हज़ार बहाने हैं अपनी इच्छा सरकार से पूरी कराने के. हाल ही में उनके कई टैक्स माफ़ किये गए हैं. क्यों? क्योंकि बाहर कपड़ा भेजना है और वह उन टैक्सों के कारन 'मंहगा' पड़ रहा था. हिन्दुस्तान के लोगों को कपड़ा न मिले, बुनकरों को सूत न मिले, लेकिन मिलें कपड़ा पर देश जरूर भेजेंगी और सरकार भिजवायेगी!

ज़ाहिर है कि जनता या बुनकरों के हित के अलावा कोई दूसरे ही हितों को पूरा करने के लिये सरकार इस तरह की आर्थिक या व्योपारी नीति पर चल रही है. वह हित क्या हैं—इसकी तफ़सील में हम इस वक़्त नहीं पड़ेंगे. लेकिन वह हित आम जनता के हित नहीं हैं, यह साफ़ है. वह हित देहाती कारीगर और धन्दों के हित नहीं हैं, यह भी साफ़ है. आज हमारी सरकार इन हितों को नज़र अन्दाज़ कर रही है. मगर यह हित जनता के करोड़ों के हित हैं जिन्हें अरसे तक नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता. चन्द बरस पहले हमारे देश में एक बड़ी ताक़तवर सरकार थी जो जनता के हितों के साथ लगभग इसी तरह पेश आती थी. वह सरकार ज़ियादा दिन न टिकी. मौजूदा सरकार से भी हमारी अपील है कि इतिहास से सबक़ ले और जनता के हितों की क़द्र करे. 'धोती बिल' सरकार के नाम पर कलंक है, मिल वालों को मन माना करने के लिये परवाना है और बुनकरों को बेमौत मारने का हथियार है.

20. 11. '53 -सुरेश रामभाई.

हमारे अमरीकी मेहमान

हिन्दुस्तान में आए दिन अमरीका से सलाहकार और मेहमान आते रहते हैं. हिन्द-अमरीकी "समझौते" के मुताबिक उन्हें यहां आने की हर इजाज़त व सहूलियत है. दिसम्बर के पहले हफ़्ते में अमरीका के वाइस प्रेज़ीडेन्ट श्री रिचर्ड निकसन नई दिल्ली आए और राष्ट्रपति के मेहमान रहे. उन्होंने पार्लिमेन्ट के मेम्बरों के सामने स्पीच देने की इजाज़त भी हिन्द सरकार से पाई. उन्होंने अमरीकी प्रेज़ीडेन्ट आइज़न हावर के बारे में कहा कि—"इतिहास में वह अपने फ़ौजी कारनामों के कारन उतने याद नहीं किये जायंगे जितने इस बात के लिये कि मुसीबतज़दा दुनिया के जिन नेताओं ने अमन क़ायम करने की कोशिश की उनके साथ मिल कर उन्होंने ज़ोरदार काम किया." अमरीकी फ़ौजी नीति के बारे में उन्होंने कहा—"जो हमारा मक़सद है बड़ी दुनिया के दूसरे आज़ाद राष्ट्रों का है. हम सब की यह जिम्मेदारी है कि अपनी फ़ौजी ताक़त इतनी बढ़ालें कि कम्युनिस्ट राष्ट्र [illegible]

[illegible] ملیں جو مال چاہیں، جتنا چاہیں، جیسے [illegible] پیدا کریں، سرکار اُن کا بال بھی بانکا نہیں کر [illegible]. مل والوں کے پاس ہزار بہانے ہیں اپنی اچھا [illegible] سے پوری کرانے کے. حال ہی میں اُن کے کئی ٹیکس [illegible] کئے گئے ہیں. کیوں؟ کیونکہ باہر کپڑا بھیجنا [illegible] اور وہ اُن ٹیکسوں کے کارن 'مہنگا' پڑ رہا تھا. [illegible] کے لوگوں کو کپڑا نہ ملے، بُنکروں کو سوت نہ [illegible] لیکن ملیں کپڑا پردیس ضرور بھیجینگی اور سرکار بھجوائیگی!

ظاہر ہے کہ جنتا یا بُنکروں کے ہت کے علاوہ کوئی دوسرے ہی ہتوں کو پورا کرنے کے لئے سرکار اِس طرح کی [illegible] یا بیوپاری نیتی پر چل رہی ہے. وہ ہت کیا ہیں—اس کی تفصیل میں ہم اس وقت نہیں پڑینگے. لیکن وہ ہت عام جنتا کے ہت نہیں ہیں، یہ صاف ہے. وہ ہت دیہاتی کاریگر اور دھندوں کے ہت نہیں ہیں، یہ بھی صاف ہے. آج ہماری سرکار ان ہتوں کو نظرانداز کر رہی ہے. مگر یہ ہت جنتا کے کروڑوں کے ہت ہیں جنہیں عرصے تک نظرانداز نہیں کیا جا سکتا. چند برس پہلے ہمارے دیش میں ایک بڑی طاقتور سرکار تھی جو جنتا کے ہتوں سے ساتھ لگ بھگ اسی طرح پیش آتی تھی، وہ سرکار زیادہ دن نہ ٹکی. موجودہ سرکار سے بھی ہماری اپیل ہے کہ اتہاس سے سبق لے اور جنتا کے ہتوں کی قدر کرے. 'دھوتی بل' سرکار کے نام پر کلنک ہے، مل والوں کو من مانا کرنے کے لئے پروانہ ہے اور بُنکروں کو بے موت مارنے کا ہتھیار ہے.

—سریش رام بھائی

ہمارے امریکی مہمان

[illegible] دستان میں آئے دن امریکہ سے صلاحکار اور مہمان آتے رہتے ہیں. ہند امریکی "سمجھوتے" کے مطابق انہیں یہاں آنے کی ہر اجازت و سہولیت ہے. دسمبر کے پہلے ہفتے میں امریکہ کے وائس پریذیڈنٹ شری رچرڈ نکسن نئی دلی آئے اور راشٹرپتی کے مہمان رہے. انہوں نے پارلیمنٹ کے ممبروں کے سامنے اسپیچ دینے کی اجازت بھی ہند سرکار سے پائی. انہوں نے امریکی پریذیڈنٹ آئی زن ہاور کے بارے میں کہا کہ—"اتہاس میں وہ اپنے فوجی کارناموں کے کارن اُتنے یاد نہیں کئے جائینگے جتنے اس بات کے لئے کہ مصیبت زدہ دنیا کے جن نیتاؤں نے امن قائم کرنے کی کوشش کی اُن کے ساتھ ملکر انہوں نے زوردار کام کیا." امریکی فوجی نیتی کے بارے میں انہوں نے کہا "جو ہمارا مقصد ہے وہی دنیا کے دوسرے آزاد راشٹروں کا ہے. [illegible] کی یہ ذمہ داری ہے کہ اپنی فوجی طاقت اتنی بڑھالیں [illegible] راشٹر [illegible] نہ سکیں

वह लड़ाई छिड़वा सकते हैं और फिर कभी छुड़ा ले सकेंगे." हिन्दुस्तान के बारे में उन्होंने कहा—"आप जिस हवा में यहां रहते हैं वह आज़ाद हवा है यहां धर्म की आज़ादी है. स्पीच की आज़ादी है, प्रेस की आज़ादी है, कानून में इन्साफ़ है और शान्ति के रास्ते के लिये सब की पुकार है."

हमें नहीं मालूम कि नई दिल्ली के हाकिमों और पार्लिमेन्ट के मेम्बरों ने श्री निकसन की इन स्पीचों का क्या असर लिया. हिन्द सरकार ने उनकी पोज़ीशन के मुताबिक़ उनकी ख़ातिरदारी कर मेहमांनवाज़ी का फ़र्ज़ अच्छी तरह निभाया. श्री निकसन यहां से पाकिस्तान गए, फिर एशिया अमरीका के दूसरे देश होते हुए अपने देश वापिस जाएंगे और अपने मालिक आइज़न हावर को रिपोर्ट देंगे. हिन्दुस्तान की तारीफ़ में श्री निकसन जो न कहते थोड़ा था. आम तौर से हर अमरीकी को हिन्दुस्तान में वही आज़ादी महसूस होती होगी जो उसे फ़िलिपाइन या जापान में महसूस होती है क्योंकि हमारी सरकार की तरफ़ से उसे पूरी छूट मिल गई है. इसी का नतीजा है कि आज आज़ाद हिन्दुस्तान में जितने अमरीकन हैं, जितना अमरीकी माल-सामान है, जितना अमरीकी पैसा लगा हुआ है उतना पहले कभी नहीं था और इन चीज़ों में दिन दिन इज़ाफ़ा भी हो रहा है जिसकी बदौलत अमरीका के हाथ में हिन्दुस्तान की आर्थिक बागडोर बड़ी तेज़ी से आ रही है और अपने हर आर्थिक काम में हिन्द सरकार को अमरीका का मुंह देखना पड़ता है. इस लिये हर अमरीकी भाई बहन का, ख़ासकर अमरीकी हुक्काम का. हिन्दुस्तान की जो मौजूदा हालत है जिसमें अमरीका को अपने आर्थिक चंगुल फैलाने का पूरा मौका मिल रहा है, उसकी दाद देना ज़रूरी है. हिन्द सरकार के हुक्काम भी इस पर फूले नहीं समाते कि जब इस तरह अमरीकी वाइस प्रेज़ीडेन्ट हम से ख़ुश है तो फिर अमरीका से पैसा भी और मिलेगा ही.

श्री निकसन ने अपनी हर स्पीच में दुनिया को दो टुकड़ों में बंटा बताया—एक "आज़ाद राष्ट्रों" की दुनिया और दूसरी "कम्युनिस्ट राष्ट्रों" की दुनिया. ज़ाहिर है कि "आज़ाद राष्ट्रों" में हैं—इंगलैंड, फ्रांस, जापान, तुरकी, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान वग़ैरा जिनका सिर मौर अमरीका है—यानी वह राष्ट्र जो आर्थिक रूप से अमरीका के बहुत कुछ ताबेदार हैं और कम्युनिस्ट राष्ट्रों में रूस, चीन वग़ैरा हैं. दूसरे शब्दों में, जो राष्ट्र अमरीका की सरपरस्ती क़बूल करे वह 'आज़ाद' है और जो न करे वह 'कम्युनिस्ट' है चाहे वहां कम्युनिस्ट सरकार हो या न हो. श्री निकसन ने एक जगह यह भी कहा कि अमरीका उन लोगों की मदद भी कर रहा है, और करना चाहता है जो "अपने को पुराने समय *की सामराजशाही से मुक्त करना चाहते हैं."* उन्होंने यह भी *कहा कि—"काफ़ी एहतियात* से सोच

لڑائی چھڑوا سکتے ھیں اور پھر کبھی چھڑا لے سکیں گے." ھندستان کے بارے میں انہوں نے کہا—"آپ جس ہوا میں یہاں رہتے ھیں وہ آزاد ہوا ھے. یہاں دھرم کی آزادی ھے، اسپیچ کی آزادی ھے، پریس کی آزادی ھے، قانون میں انصاف ھے اور شانتی کے راستے کے لئے سب کی پکار ھے."

ہمیں نہیں معلوم کہ نئی دلی کے حاکموں اور پارلیمنٹ کے ممبروں نے شری نکسن کی ان اسپیچوں کا کیا اثر لیا. ہند سرکار نے اُن کی پوزیشن کے مطابق اُن کی خاطرداری کر مہماں نوازی کا فرض اچھی طرح نبھایا. شری نکسن یہاں سے پاکستان گئے، پھر ایشیا افریقہ کے دیش ہوتے ہوئے اپنے دیش واپس جائیں گے اور اپنے مالک آئزن ہاور کو رپورٹ دیں گے. ھندستان کی تعریف میں شری نکسن جو نہ کہتے تھوڑا تھا. عام طور سے ہر امریکی کو ھندستان میں وہی آزادی محسوس ہوتی ہوگی جو اسے فلپائن یا جاپان میں محسوس ہوتی ھے کیونکہ ہماری سرکار کی طرف سے اسے پوری چھوٹ مل گئی ھے. اسی کا نتیجہ ھے کہ آج آزاد ھندستان میں جتنے امریکن ھیں، جتنا امریکی مال سامان ھے، جتنا امریکی پیسہ لگا ہوا ھے اتنا پہلے کبھی نہیں تھا اور ان چیزوں میں دن دن اضافہ بھی ہو رہا ھے جس کی بدولت امریکہ کے ہاتھ میں ھندستان کی آرتھک باگ ڈور بڑی تیزی سے آ رہی ھے اور اپنے ہر آرتھک کام میں ہند سرکار کو امریکہ کا منھ دیکھنا پڑتا ھے. اس لئے ہر امریکی بھائی بہن کا، خاصکر امریکی حکام کا، ھندستان کی جو موجودہ حالت ھے جس میں امریکہ کو اپنے آرتھک چنگل پھیلانے کا پورا موقعہ مل رہا ھے، اسکی داد دینا ضروری ھے. ہند سرکار کے حکام بھی اس پر پھولے نہیں سماتے کہ جب اس طرح امریکی وائس پریذیڈنٹ ہم سے خوش ھے تو پھر امریکہ سے پیسہ بھی اور ملیگا ہی.

شری نکسن نے اپنی ہر اسپیچ میں دنیا کو دو ٹکڑوں میں بٹا بتایا—ایک "آزاد راشٹروں" کی دنیا اور دوسری "کمیونسٹ راشٹروں" کی دنیا. ظاہر ھے کہ "آزاد راشٹروں" میں ھیں—انگلینڈ، فرانس، جاپان، ترکی، پاکستان، ہندستان وغیرہ جن کا سرمور امریکہ ھے—یعنی وہ راشٹر جو آرتھک روپ سے امریکہ کے بہت کچھ تابعدار ھیں اور کمیونسٹ راشٹروں میں روس چین وغیرہ ھیں. دوسرے شبدوں میں، جو راشٹر امریکہ کی سرپرستی قبول کرے وہ 'آزاد' ھے اور جو نہ کرے وہ 'کمیونسٹ' ھے چاہے وہاں کمیونسٹ سرکار ہو یا نہ ہو. شری نکسن نے ایک جگہ یہ بھی کہا کہ امریکہ اُن لوگوں کی مدد بھی کر رہا ھے اور کرنا چاہتا ھے جو "اپنے کو پرانے سمے کی سامراج شاہی سے مکت کرنا چاہتے ھیں." انہوں نے یہ بھی کہا کہ—"کافی احتیاط سے سوچ

विचार करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि दुनिया की शान्ति को जो आज एक ख़तरा है वह उस तानाशाही से ही है जिस के कर्ता धर्ता कम्यूनिस्ट नेता हैं."

श्री निकसन के इस भोलेपन पर हमें अचरज होता है कि या तो उन्होंने हिन्दुस्तान के लोगों को निपट अनपढ़ और राजनीति से नावाक़िफ़ समझ लिया है या ख़ुद अपनी निगाह पर एक ऐसा रंगीन चश्मा लगा रखा है कि सब हरा ही हरा उन्हें सूझता है. आज कौन मदद कर रहा है दक्खिन कोरिया के पिछ्वसीटू डाक्टर सिंगमनरी की? कौन सहारा दिये हुए है चीन के ग़द्दार च्यांग काई शेक को? कौन बना रहा है पाकिस्तान में फ़ौजी अड्डे? कौन फ्रांस की फ़ौजों को हथियार व रसद पहुंचा रहा है वीतनाम में या मोरक्को में? कौन अंदर ही अंदर बढ़ावा दे रहा है दक्खिन अफ़रीका की गोरा शाही को? कौन केनिया में जड़ें मज़बूत कर रहा है विदेशी अंग्रेज़ी राज की? और कौन दबा रहा है ब्रिटिश गायना की जनता को जो आज़ाद होना चाहती है? वग़ैरा वग़ैरा. इन सब सवालों का एक ही जवाब है—अमरीका. आज कौन हकूमत है जो आर्थिक इमदाद के नाम पर देश देश में अपना असर जमाने और जाल फैलाने की कोशिश कर रही है और जगह जगह की साहूकार बन कर वहां की आर्थिक नीति खुले और राजकाजी व फ़ौजी नीति छिप कर अपने क़बज़े में करना चाहती है? वही जवाब है—अमरीका. इसलिये आज दुनिया की शान्ति के लिये सब से ज़ियादा ख़तरनाक, शान्ति के रास्ते में सब से बड़ी अड़चन और शान्ति का सब से गहरा दुश्मन अमरीका ही–यानी अमरीकी सरकार है. कम्यूनिस्ट देशों को दोश देना और ख़ुद मनमानी करते रहना ज़ियादती है, नाइन्साफ़ी है, गुनाह है.

यह सच्चाई दुनिया के समझदार लोगों के दिमाग़ पर दिन दिन साफ़ होती जा रही है. इनसानियत या ईमान की तराज़ू में एक तरफ़ अमरीका को रखें, दूसरी तरफ़ रूस को तो अमरीका का पल्ला हलका नज़र आता है और कहना पड़ता है कि आज दुनिया में जो अशान्ति, बेचैनी, घबराहट और ग़रीबी है उस के लिये अगर कोई एक हकूमत ज़िम्मेदार है तो वह अमरीका की हकूमत है. श्री निकसन अपनी स्पीचों या सफ़ाइयों से किसी को धोखे में नहीं डाल सकते, कम से कम हिन्दुस्तान की जनता इन बातों को ख़ूब अच्छी तरह समझती है. हमें आशा है कि प्रधान मंत्री, पंडित जवाहरलाल ने जनता के जज़बात को श्री निकसन तक पहुंचाया होगा और उन्हें बताया होगा कि जब तक अमरीकी सरकार अपनी ग़ुलामी परस्त और आज़ादी नाशक नीति में अमली तबदीली नहीं करती तब तक कोई प्रोपेगेन्डा, कोई प्रचार या कोई ताक़त भी क्या हिन्दुस्तान को, क्या दुनिया की आज़ाद [illegible] जनता को इस तर[illegible] ख़याल [illegible] नहीं बना सकती.

21. 12. '53.

—सुरेश रामभाई

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

[illegible]ज रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने [illegible]को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. [illegible] जानकारी के लिए लिखिये.

[illegible]क या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

[illegible] जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. [illegible] 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल [illegible] मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदा[illegible]यता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको [illegible]क जगह मिलेगा.

भार[illegible] के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर[illegible] भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस[illegible] ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपए[illegible].

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

[illegible] विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इ[illegible]स छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ [illegible] और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है. पहला [illegible] एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने [illegible] सोच

मिलने का पता— [illegible]

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

[illegible] روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں [illegible] بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی۔ پوری [illegible] کے لئے لکھئے۔

[illegible] یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

[illegible] جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔ [illegible] بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال [illegible] انگریزی سے انووادت۔

[illegible] بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین [illegible] بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی [illegible] سمجھے۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا [illegible]

[illegible] بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ [illegible] چار سو پنّے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول [illegible] سات روپئے۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

[illegible] پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک [illegible] جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا [illegible] سب آپکو ایک جگہ ملیگا۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ [illegible] بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور [illegible] کو اپنے اندر سے صاف کرے۔

[illegible] سندر جلد۔ اچھا کاغذ۔ دو سو صفحے۔ قیمت [illegible]

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

[illegible] جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے۔ [illegible] چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ [illegible] شروع ہوا اور اس کا مقصد کیا ہے۔ [illegible] ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا۔ یہ دوسرا [illegible] سے [illegible] سوچ

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आंखों देखा बनन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की [illegible]

21. 12. '53.

हम [illegible] नहीं बना सकती [illegible] ख्याल [illegible]

—सुरेश रामभाई

لیکھک۔۔۔پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

[illegible] کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل [illegible] باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا [illegible] قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں [illegible] قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا [illegible] سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ۔

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئیے تھے۔

[illegible] سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

[illegible] سمپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اسی [illegible] آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا۔

قیمت بارہ آنے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

[illegible] سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ [illegible] کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا [illegible] آنکھوں دیکھا ورنن۔ اس چھوٹی سی کتاب [illegible] میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ [illegible] سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں۔ قیمت چار آنے۔

بنگال اور اُس سے سبق

اس [illegible] چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی [illegible] ایک روپیہ کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی [illegible] کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی [illegible]

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें

ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ:— یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

	नाम किताब	लेखक	दाम		
1.	शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0
2.	शेर ओ सुखन	"	8	0	0
3.	गहरे पानी पैठ	"	2	8	0
4.	हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0
5.	संस्मरण	"	3	0	0
6.	दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0
7.	ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0
8.	पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0
9.	पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0
10.	आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0
11.	मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0
12.	मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0
13.	रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0
14.	मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0
15.	विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0
16.	भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0
17.	भारतीय शासन				
18.	नागरिक शास्त्र	"	3	0	0
19.	साम्राज्य और उनका	"	2	4	0
	पतन	"	2	8	0
20.	भारतीय स्वाधीनता				
	अन्दोलन	"	1	4	0
21.	सर्वोदय अर्थ व्यवस्था				
		"	1	8	0
22.	हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0
23.	अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0
24.	नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0
25.	राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे			
26.	[illegible] जवानो		1	8	0
27.	छोटा सी [illegible] हिम्मत !	महात्मा भगवानदीन	3	0	0
	[illegible] कब और कैसे शुरू	"	1	0	0
	[illegible] एडीशन हाथों	"	0	8	0
	[illegible] सोच		1	0	0

यह [illegible] पहला [illegible] एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने [illegible]

मिलने का पता— [illegible]

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना ार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों ा छापना.

) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में का मेल बढ़ाना.

—: :—

ाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; सीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल वरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; ० सुन्दरलाल.

वरनिंग बाडी के और मेम्बर—

सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम का, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम लीवाल.

रो के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरो सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" ग्राहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया ने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या म की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا ور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں غیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، وکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—: ٥ :—

سوسائٹی کے پریزیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندر لال
سکریٹری، هندستانی کلچر سوسائٹی،
145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی هے ۔ "نیا هند" کے جو گاهک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر هی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی هوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام

Registered No.

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है,

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्बरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरका परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपा. … सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

…ب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا.
…ں کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا.
…یشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ
…ں ہوسکا ہے.

…یشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے
…گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی
…ور سجھاوؤں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے.
…کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں
…ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار
…مکھ لکھا ہے.

…ب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے
…لوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت
…سیدھی سچی اور بے مثال زندگی—ایک
… جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون
…ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلیگا
… حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے
… فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ
…دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو

…یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی
…مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائینگے.

…جلد، بڑھیا ڈبل ڈیمائی کاغذ پر چھپی 160
…تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام
…روپیہ.

… 145، مٹھی گنج الہ آباد.

नया हिन्द

نیا ہند

अप्रैल सन् १९५१
क़ीमत दस आना

اپریل سن 1951
قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

अप्रैल १९५१

क्या किस से

" نیا ھند "

ھندستانی کلچر سوسایٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

اپریل 1951

کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द १० अप्रैल सन् '५१ नम्बर ४

جلد ۱۰ اپریل سن ۵۱' نمبر ۴

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नयाहिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

बंजारा

(भाई तनवीर नक़वी)

बन बन जा बंजारे

नगर नगर है तेरी नगरी डगर डगर है गाँव
देख देख थक जाएँ आँखें थकें न तेरे पाँव
अपने को समझा रे, जा रे
बन बन जा, बंजारे !

हर एक आन है तेरे आगे नई नवेली दुनिया
तू दुनिया का साथी फिर भी तेरी अकेली दुनिया
दुनिया नई बसा रे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

بنجارہ

(بھائی تنویر نقوی)

بن بن جا بنجارے !

نگر نگر ہے تیری نگری ڈگر ڈگر ہے گاؤں
دیکھ دیکھ تھک جائیں آنکھیں تھکیں نہ تیرے پاؤں
اپنے کو سمجھا رے' جا رے
بن بن جا بنجارے !

ہر اک آن ہے تیرے آگے نئی نویلی دنیا
تو دنیا کا ساتھی پھر بھی تیری اکیلی دنیا
دنیا نئی بسا رے' جا رے
بن بن جا بنجارے !

भीगी मस्त हवाएँ तुझको गहरी नींद सुलाएँ
भोर भए आज़ाद परिन्दे गाएँ तुझे जगाएँ

उठ जा रे मतवारे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

आगे बढ़ना काम है तेरा चलना तेरी रीत
आँधी, रेत बगूले तूफ़ाँ सब ही तेरे मीत

इन से मन बहला रे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

पलट पलट कर क्या तकती हैं तेरी थकी निगाहें
दूर खड़ी है मंज़िल तेरी खोले अपनी बाहें

जा रे गले लग जा रे, जा रे
बन बन जा बंजा रे !

अपना आप सहारा लेकर सारे तोड़ सहारे
तेरी नदिया वह नदिया है जिसके नहीं किनारे

बह जा खेवन हारे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

بھیگی مست ہوائیں تجھکو گہری نیند سلائیں
بھور بھئے آزاد پرندے گائیں تجھے جگائیں

اُٹھ جا رے متوارے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

آگے بڑھنا کام ہے تیرا چلنا تیری ریت
آندھی، ریت، بگولے، طوفاں سب ہی تیرے میت

اِن سے من بہلا رے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

پلٹ پلٹ کر کیا تکتی ہیں تیری تھکی نگاہیں
دور کھڑی ہے منزل تیری کھولے اپنی باہیں

جا رے گلے لگ جا رے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

اپنا آپ سہارا لے کر سارے توڑ سہارے
تیری ندیا وہ ندیا ہے جس کے نہیں کنارے

بہ جا کھیون ہارے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

हिन्दू मुसलिम सवाल का आध्यात्मिक यानी रूहानी पहलू

आदमी की ज़िन्दगी के हर सवाल को कई तरह से और कई पहलुओं से देखा जा सकता है. जितने अलग अलग पहलू इस ज़िन्दगी के हैं, या हो सकते हैं, उतने ही तरह के सब सवालों के हो सकते हैं. मोटे तौर पर इनसान की ज़िन्दगी के तीन पहलू हमें दिखाई देते हैं. एक तारीख़ी या इतिहासी पहलू. दूसरा समाजी, कलचरल यानी आए दिन की ज़िन्दगी और रहन सहन का पहलू और तीसरा आध्यात्मिक या रूहानी पहलू. जिस सवाल की हम इस लेख में चरचा करेंगे उस का एक और चौथा सियासी यानी राजकाजी पहलू भी एक ख़ास पहलू है. इन सब पहलुओं, ख़ास कर आध्यात्मिक पहलू को, सामने रख कर ही हम आजकल के हिन्दू मुसलिम सवाल पर एक सरसरी निगाह डालना चाहते हैं.

इस सवाल का इतिहासी पहलू एक लम्बी चीज़ है. थोड़े से में उसका निचोड़ यह है. देश में कई अलग अलग मज़हबी ख़यालों के लोग रहते थे. उनकी मानताओं, मज़हबी उसूलों और रहन सहन के तरीक़ों में काफ़ी फ़रक़ था. कोई निराकार के पूजने वाले, कोई साकार के. कोई मूर्ति पूजक, कोई मूर्ति पूजा को पाप समझने वाले. कोई ईश्वर को जगत का कर्ता मानने वाले और कोई किसी भी कर्ता के होने

ھندو مسلم سوال کا آدھیاتمک یعنی روحانی پہلو

آدمی کے زندگی کے ھر سوال کو کئی طرح سے اور کئی پہلوؤں سے دیکھا جا سکتا ھے . جتنے الگ الگ پہلو اس زندگی کے ھیں ' یا ھوسکتے ھیں ' اُتنے ھی طرح کے سب سوالوں کے ھوسکتے ھیں . موٹے طور پر انسان کی زندگی کے تین پہلو ھمیں دکھائی دیتے ھیں . ایک تاریخی یا اتہاسی پہلو . دوسرا سماجی ' کلچرل یعنی آئے دن کی زندگی اور رھن سھن کا پہلو اور تیسرا آدھیاتمک یا روحانی پہلو . جس سوال کی ھم اِس لیکھ میں چرچا کرینگے اُس کا ایک اور چوتھا سیاسی یعنی راج کاجی پہلو بھی ایک خاص پہلو ھے . اِن سب پہلوؤں ' خاص کر آدھیاتمک پہلو کو ' سامنے رکھ کر ھی ھم آجکل کے ھندو مسلم سوال پر ایک سرسری نگاہ ڈالنا چاھتے ھیں .

اِس سوال کا اِتہاسی پہلو ایک لمبی چیز ھے . تھوڑے سے میں اُسکا نچوڑ یہ ھے — دیس میں کئی الگ الگ مذھبی خیالوں کے لوگ رھتے تھے . اُن کی مانتاؤں ' مذھبی اُصولوں اور رھن سھن کے طریقوں میں کافی فرق تھا . کوئی نراکار کے پوجنے والے ' کوئی ساکار کے ' کوئی مورتی پوجک ' کوئی مورتی پوجا کو پاپ سمجھنے والے . کوئی ایشور کو جگت کا کرتا ماننے والے اور کوئی کسی بھی کرتا کے ھونے

से इनकार करने वाले. कोई मांस खाने को अपने धर्म का ज़रूरी हिस्सा मानने वाले और कोई उसे पाप समझने वाले. कोई देवी के सामने हवन में मदिरा चढ़ाने वाले और कोई मदिरा छूने तक को गुनाह समझने वाले वग़ैरा वग़ैरा. लेकिन यह सब लोग किसी तरह एक गिरोह में गिन लिये जाते थे, जिसे हिन्दू कहा जाता था. थोड़े से ईसाई और यहूदी भी देस के किसी किसी कोने में थे, पर देस की आम ज़िन्दगी पर उनका असर नहीं के बराबर था. ऐसी हालत में एक नया मज़हब इस देस में आया—इसलाम. इस नए धर्म के मानने वाले एक ईश्वर को मानते थे. जात पात और छुआ छूत, जो हिन्दू धर्म का एक ख़ास हिस्सा बन चुकी थी, उनमें बिलकुल न थी. मूर्ति पूजा को वह गुनाह समझते थे. वह एक निराकार के उपासक थे. उनमें मामूली आदमियों और ईश्वर के बीच किसी पुरोहित की ज़रूरत न थी. आदमी आदमी सब बराबर. लेकिन उनके धर्म को जन्म देने वाले महापुरुश हज़रत मुहम्मद अरब में जन्मे थे, हिन्दुस्तान में नहीं. उनकी ख़ास मज़हबी किताब क़ुरान अरबी में लिखी हुई थी, संस्कृत या किसी हिन्दुस्तानी ज़बान में नहीं.

हिन्दू धर्म के साथ इसलाम की थोड़ी बहुत टक्कर होना क़ुदरती था. यह टक्कर कोई नई चीज़ नहीं थी. इस देस के इतिहास में इस से पहले पुराने द्राविड़ धर्म और नए आर्य धर्म में कई हज़ार बरस तक टक्कर रह चुकी थी. हज़ारों बरस तक वेदों के मानने वाले आर्य

سے انکار کرنے والے ۔ کوئی مانس کھانے کو اپنے دھرم کا ضروری حصہ ماننے والے اور کوئی اُسے پاپ سمجھنے والے ۔ کوئی دیوی کے سامنے ہون میں مدیرا چڑھانے والے اور کوئی مدیرا چھونے تک کو گناہ سمجھنے والے وغیرہ وغیرہ ۔ لیکن یہ سب لوگ کسی طرح ایک گروہ میں گن لیئے جاتے تھے، جسے ہندو کہا جاتا تھا ۔ تھوڑے سے عیسائی اور یہودی بھی دیس کے کسی کسی کونے میں تھے، پر دیس کی عام زندگی پر انکا اثر نہیں کے برابر تھا ۔ ایسی حالت میں ایک نیا مذہب اِس دیس میں آیا—اسلام ۔ اس نئے دھرم کے ماننے والے ایک ایشور کو مانتے تھے ۔ جات پات اور چھوا چھوت، جو ہندو دھرم کا ایک خاص حصہ بن چکی تھی، اُن میں بالکل نہ تھی ۔ مورتی پوجا کو وہ گناہ سمجھتے تھے ۔ وہ ایک نراکار کے اُپاسک تھے ۔ اُن میں معمولی آدمیوں اور ایشور کے بیچ کسی پروہت کی ضرورت نہ تھی ۔ آدمی آدمی سب برابر ۔ لیکن اُن کے دھرم کو جنم دینے والے مہاپرش حضرت محمد عرب میں جنمے تھے، ہندستان میں نہیں ۔ اُن کی خاص مذہبی کتاب قرآن عربی میں لکھی ہوئی تھی، سنسکرت یا کسی ہندستانی زبان میں نہیں ۔

ہندو دھرم کے ساتھ اسلام کی تھوڑی بہت ٹکر ہونا قدرتی تھا ۔ یہ ٹکر کوئی نئی چیز نہیں تھی ۔ اس دیس کے اِتہاس میں اس سے پہلے پرانے دراوڑ دھرم اور نئے آریہ دھرم میں کئی ہزار برس تک ٹکر

से पहले पुराने द्राविड़ धर्म और नए आर्य धर्म में कई हज़ार बरस तक टक्कर रह चुकी थी. हज़ारों बरस तक वेदों के मानने वाले आर्य

और चतुर्भुज विश्नु की पूजा को ही जारी रखना चाहते थे. बहसें हुईं, गिरोह के गिरोह मिटा डाले गए. आख़ीर में कई हज़ार बरस की टक्करों के बाद जब दोनों धाराएँ गंगा और जमुना की तरह एक दूसरे में मिल गईं तो आज यह पता लगाना भी मुश्किल है कि इस मिली जुली जीवन धारा का कौन सा कन आर्य है और कौन सा द्राविड़. मित्र, वरुन और इन्द्र के मन्दिर हिन्दुस्तान भर में आज ढूँढे से भी मिलने मुश्किल हैं, पर द्राविड़ जाति के शिव आज करोड़ों के देव देव महादेव बन कर लगभग हर मन्दिर के अंदर मौजूद हैं. चतुर्भुज विश्नु इतने अपना लिये गए कि हिन्दुओं के सब अवतार विश्नु के अवतार गिने जाते हैं. यह उस महान संगम की सिर्फ़ एक छोटी सी मिसाल है.

जिस तरह की टक्कर आर्यों और द्राबिड़ों में रही, उसी तरह की थोड़ी बहुत उसके बाद के ज़माने में हिन्दुओं और जैनियों में और आठवीं सदी ईसवी तक शैवों और शाक्तों में, यहाँ तक कि राम के भक्तों और कृश्न के उपासकों में बराबर होती रही. इन टक्करों में एक दूसरे का बहिश्कार भी हुआ और लाठियाँ और तलवारें भी चलीं. आजतक—'हस्तिना पीड्यमानोऽपि न गच्छेत जैनमन्दिरम्' (हाथी से भी पीछा किये जाने पर न जाय जैन मंदिर में) जैसे फ़िक़रे देस के साहित्य से मिटे नहीं हैं. यह सब टक्करें एक क़ुदरती ढंग से पैदा हुईं और उतने ही क़ुदरती ढंग से मिट गईं. पुराने ज़माने के यह सब सवाल आज इतिहास की एक कहानी रह गए हैं.

پرانے دراوڑ دھرم اور نئے آریہ دھرم میں کئی ہزار برس تک ٹکر رہ چکی تھی. ہزاروں برس تک ویدوں کے ماننے والے آریہ

اور چتربھج وشنو کی پوجا کو ہی جاری رکھنا چاہتے تھے. بحثیں ہوئیں، گروہ کے گروہ مٹا ڈالے گئے. آخیر میں کئی ہزار برس کی ٹکروں کے بعد جب دونوں دھارائیں گنگا اور جمنا کی طرح ایک دوسرے میں مل گئیں تو آج یہ پتہ لگانا بھی مشکل ہے کہ اس ملی جلی جیون دھارا کا کون سا کن آریہ ہے اور کون سا دراوڑ. متر، ورون اور اندر کے مندر ہندستان بھر میں آج ڈھونڈھے سے بھی ملنے مشکل ہیں، پر دراوڑ جاتی کے شیو آج کروڑوں کے دیو دیو مہادیو بن کر لگ بھگ ہر مندر کے اندر موجود ہیں. چتربھج وشنو اتنے اپنا لئے گئے کہ ہندوؤں کے سب اوتار وشنو کے اوتار گنے جاتے ہیں. یہ اس مہان سنگم کی صرف ایک چھوٹی سی مثال ہے.

جس طرح کی ٹکر آریوں اور دراوڑوں میں رہی، اسی طرح کی تھوڑی بہت اسکے بعد کے زمانے میں ہندوؤں اور جینیوں میں اور آٹھویں صدی عیسوی تک شیووں اور شاکتوں میں، یہاں تک کہ رام کے بھکتوں اور کرشن کے اپاسکوں میں برابر ہوتی رہی. ان ٹکروں میں ایک دوسرے کا بہشکار بھی ہوا اور لاٹھیاں اور تلواریں بھی چلیں. آج تک--'ہستنا پیڈیہ مانو پی نہ گچھیت جین مندرم' (ہاتھی سے بھی پیچھا کیا جانے پر نہ جائے جین مندر میں) جیسے فقرے دیس کے ساہتیہ سے مٹے نہیں ہیں. یہ سب ٹکریں ایک قدرتی ڈھنگ سے پیدا ہوئیں اور اتنے ہی قدرتی ڈھنگ سے مٹ گئیں. پرانے زمانے کے یہ سب سوال آج اتہاس کی ایک کہانی رہ گئے ہیں.

इसलाम के आने के साथ देस में नई टक्करों का होना क़ुदरती था. टक्करें शुरू हुईं. देस के अलग अलग हिस्से में और ज़िन्दगी के अलग अलग पहलुओं में उन्होंने अलग अलग रूप लिये. फिर भी सात सौ आठ सौ बरस तक देस के इस सिरे से उस सिरे तक सैकड़ों शहरों और हज़ारों गाँवों में हिन्दू और मुसलमान प्रेम के साथ मिलजुल कर रहते रहे. इस सारे समय में बाहर से आकर देस में बस जाने वाले मुसलमानों की तादाद कुछ हज़ार से ज्यादा नहीं थी. बाक़ी सब लाखों और करोड़ों आदमी, जिन्होंने इसलाम धर्म को अपनाया, यहीं के रहने वाले और यहीं के हिन्दू माता पिता की औलाद थे. हर गाँव और हर शहर में हिन्दू और मुसलमान एक ही जबान बोलते थे. एक दूसरे के त्योहारों और तक़रीबों, व्याह शादियों और रीति रिवाजों में शरीक होते थे. एक दूसरे को 'चाचा' 'ताया' 'मामा' 'भाई' वग़ैरा कह कर पुकारते थे. ज्यादातर मुसलमान घरानों में आज तक सैकड़ों हिन्दू रस्में पालन की जाती हैं. जैसे दसूठन, सालगिरह, कनछेदन, नकछेदन, शादी में दरवाजे का चार, तेल चढ़ाना, हल्दी चढ़ाना, कलेवा बाँधना, कँगना बाँधना, मँडवा. ऐसे ही हिन्दुओं ने काफ़ी रस्में मुसलमानों से लीं. जैसे, घोड़ी चढ़ना, जामा, सेहरा, शहबाला. दोनों ने मिल कर इस देस की कारीगरी, चित्रकारी, उद्योग धन्दे, कला कौशल, तिजारत, संगीत वग़ैरा को अपूर्व उन्नति दी. मुग़लों की सलतनत का जमाना इन सब

اِسلام کے آنے کے ساتھ دیس میں نئی ٹکروں کا ہونا قدرتی تھا۔ ٹکریں شروع ہوئیں۔ دیس کے الگ الگ حصے میں اور زندگی کے الگ الگ پہلوؤں میں اُنھوں نے الگ الگ روپ لئے۔ پھر بھی سات سو آٹھ سو برس تک دیس کے اس سرے سے اُس سرے تک سیکڑوں شہروں اور ہزاروں گاؤں میں ہندو اور مسلمان پریم کے ساتھ مل جل کر رہتے رہے۔ اس سارے سمے میں باہر سے آکر دیس میں بس جانے والے مسلمانوں کی تعداد کچھ ہزار سے زیادہ نہیں تھی۔ باقی سب لاکھوں اور کروڑوں آدمی، جنھوں نے اسلام دھرم کو اپنایا، یہیں کے رہنے والے اور یہیں کے ہندو ماتا پتا کی اولاد تھے۔ ہر گاؤں اور ہر شہر میں ہندو اور مسلمان ایک ہی زبان بولتے تھے۔ ایک دوسرے کے تیوہاروں اور تقریبوں، بیاہ شادیوں اور ریت رواجوں میں شریک ہوتے تھے۔ ایک دوسرے کو 'چاچا' 'تایا' 'ماما' 'بھائی' وغیرہ کہکر پکارتے تھے۔ زیادہ تر مسلمان گھرانوں میں آج تک سیکڑوں ہندو رسمیں پالن کی جاتی ہیں۔ جیسے دسوٹھن، سال گرہ، کن چھیدن، نک چھیدن، شادی میں دروازے کا چار، تیل چڑھانا، ہلدی چڑھانا، کلیوا باندھنا، کنگنا باندھنا، منڈوا۔ ایسے ہی ہندؤوں نے کافی رسمیں مسلمانوں سے لیں۔ جیسے گھوڑی چڑھنا، جامہ، سہرا، شہہ بالا۔ دونوں نے مل کر اس دیس کی کاریگری، چترکاری، اُدیوگ دھندے، کلا کوشل، تجارت، سنگیت وغیرہ کو اپوروا اُنتی دی۔ مغلوں کی سلطنت کا زمانہ ان سب

कारीगरी, चित्रकारी, उद्योग धन्दे, कला कौशल, तिजारत, संगीत
वग़ैरा को अपूर्व उन्नति दी. मुग़लों की सलतनत का ज़माना इन सब

बात में एक राय हैं कि उस ज़माने में दुनिया का कोई देस धन दौलत, सुख चैन, ख़ुशहाली, तिजारत और उद्योग धन्दों में हिन्दुस्तान का मुक़ाबला नहीं कर सकता था. राजाओं राजाओं में लड़ाइयाँ होती थीं, पर जिस तरह कहीं कहीं हिन्दू और मुसलमान लड़े हैं उसी तरह हिन्दू हिन्दू और मुसलमान मुसलमान भी आपस में लड़े हैं. बाहर से हमला करने वाले मुसलमानों के ख़िलाफ़ देस के मुसलमान हुक्मरानों का डट कर लड़ना और यहाँ के हिन्दू राजाओं का उनका साथ देना एक मामूली घटना थी. मुसलमान बादशाहों की फ़ौज में हिन्दू सिपाही और हिन्दू सेनापति, और हिन्दू राजाओं की सेना में मुसलमान सिपाही और मुसलमान सेनापति, ऐसे ही हिन्दू राजाओं के मुसलमान प्रधान मन्त्री और मुसलमान बादशाहों के हिन्दू वज़ीरे आज़म सात सौ बरस के भारतीय इतिहास में क़दम क़दम पर देखने को मिलते हैं.

उस सारे ज़माने में हमें मुल्क के जीवन में तीन साफ़ अलग अलग लहरें बहती हुई दिखाई देती हैं. एक इसलाम के आने से पहले की ब्राह्मनों के प्रभुत्व, जात पात और छूआ छूत की तंग हिन्दू लहर. दूसरी फ़िक़ह (कर्मकांड) का कट्टरता से पालन करने वाली तंग इसलामी लहर और तीसरी दोनों के मेल जोल की वह प्रेम की लहर, जो दोनों की तंगख़यालियों से ऊपर उठ कर दोनों के गुनों को अपने अन्दर लिये हुए थी. रहन सहन, खान पान, चित्रकारी, मकानों का बनाना, धर्म और संस्कृति, सब में यह तीनों लहरें साफ़ दिखाई दे रही थीं. इनमें धीरे धीरे तंग ख़याली की दोनों लहरें सूखती जाती थीं और मेल मिलाप की लहर बढ़ती और फैलती जा

وغیرہ کو اپورو انتی دی۔ مغلوں کی سلطنت کا زمانہ ان سب

اس بات میں ایک رائے ہیں کہ اُس زمانے میں دنیا کا کوئی دیس دھن دولت سکھ چین، خوش حالی، تجارت اور اُدیوگ دھندوں میں ہندستان کا مقابلہ نہیں کر سکتا تھا۔ راجاؤں راجاؤں میں لڑائیاں ہوتی تھیں، پر جس طرح کہیں کہیں ہندو اور مسلمان لڑے ہیں، اُسی طرح ہندو ہندو اور مسلمان مسلمان بھی آپس میں لڑے ہیں۔ باہر سے حملہ کرنے والے مسلمانوں کے خلاف دیس کے مسلمان حکمرانوں کا ڈٹ کر لڑنا اور یہاں کے ہندو راجاؤں کا اُن کا ساتھ دینا ایک معمولی گھٹنا تھی۔ مسلمان بادشاہوں کی فوج میں ہندو سپاہی اور ہندو سینا پتی، اور ہندو راجاؤں کی سینا میں مسلمان سپاہی اور مسلمان سینا پتی، ایسے ہی ہندو راجاؤں کے مسلمان پردھان منتری اور مسلمان بادشاہوں کے ہندو وزیرِ اعظم سات سو برس کے بھارتی اتہاس میں قدم قدم پر دیکھنے کو ملتے ہیں۔

اُس سارے زمانے میں ہمیں ملک کے جیون میں تین صاف الگ الگ لہریں بہتی ہوئی دکھائی دیتی ہیں۔ ایک اسلام کے آنے سے پہلے کی براہمنوں کے پربھتو، جات پات اور چھوا چھوت کی تنگ ہندو لہر۔ دوسری فقہ (کرم کانڈ) کا کٹرتا سے پالن کرنے والی تنگ اسلامی لہر اور تیسری دونوں کے میل جول کی وہ پریم کی لہر، جو دونوں کی تنگ خیالیوں سے اُوپر اُٹھ کر دونوں کے گنوں کو اپنے اندر لئے ہوئے تھی۔ رہن سہن، کھان پان، چترکاری، مکانوں کا بنانا، دھرم اور سنسکرتی، سب میں یہ تینوں لہریں صاف دکھائی دے رہی تھیں۔ ان میں دھیرے دھیرے تنگ خیالی کی دونوں لہریں سوکھتی جاتی تھیں اور میل ملاپ کی لہر بڑھتی اور پھیلتی جا

रही थी. आशा होती थी कि देस में समन्वय की पुरानी परम्परा को क़ायम रखते हुए एक दिन यह प्रेम की लहर सारे मैदान को ढक लेगी और देस के अन्दर उस नई संस्कृति, नए समाज और नई धार्मिक कल्पना को जन्म देगी, जो अलग अलग तंग ख़यालों से बढ़ कर और उनसे ऊँची होगी.

इन तीनों अलग अलग लहरों की हम एक छोटी सी मिसाल ईंट पत्थरों की ठोस शकल में देना चाहते हैं. फ़न्ने तामीर यानी गृह निर्मान कला में अगर हमें एक तरफ़ इसलाम से पहले के पुराने हिन्दू आदर्शों को देखना हो तो दक्खिन के मन्दिर हैं. कुर्सी के ऊपर कुर्सी, कंगूरे के ऊपर कंगूरा, ठोस पत्थर, आसमान से बात करते हुए कलश और मन्दिर के चारों तरफ़ की दीवारों की एक एक इंच जगह मूर्तियों से ढकी, ठीक उसी तरह जिस तरह हिन्दुस्तान के घने जंगल. इन इमारतों का अपना एक गौरव है. दूसरी तरफ़ बाहर से आने वाले इसलामी आदर्श का नमूना—अजमेर और दिल्ली की मसजिदें, साफ़ सफ़ाचट दीवारें, जिनमें सिवाय अल्लाह के कोई चीज़ दिखाई न दे, गोल सफ़ेद गुम्बद और ऊँचे मीनार, अरब के बयाबान रेगिस्तान की याद दिलाने वाले. इनकी भी अपनी एक अलग शान है. तीसरे इन दोनों आदर्शों का मेल, इनकी एक दूसरे पर क़लम, इनका प्रेमालिंगन अगर देखना हो तो आगरे का ताज, जो दुनिया की सबसे सुन्दर इमारतों में गिना जाता है और जो आज

رہی تھی ۔ آشا ہوتی تھی کہ دیس میں سمنوے کی پرانی پرمپرا کو قائم رکھتے ہوئے ایک دن یہ پریم کی لہر سارے میدان کو ڈھک لیگی اور دیس کے اندر اُس نئی سنسکرتی، نئے سماج اور نئی دھارمک کلپنا کو جنم دیگی، جو الگ الگ تنگ خیالوں سے بڑھکر اور اُن سے اُنچی ہوگی ۔

اِن تینوں الگ الگ لہروں کی ہم ایک چھوٹی سی مثال اینٹ پتھروں کی ٹھوس شکل میں دینا چاہتے ہیں ۔ فن تعمیر یعنی گرہ نرمان کلا میں اگر ہمیں ایک طرف اِسلام سے پہلے کے پرانے ہندو آدرشوں کو دیکھنا ہو تو دکھن کے مندر ہیں ۔ کرسی کے اوپر کرسی، کنگورے کے اوپر کنگورا، ٹھوس پتھر، آسمان سے بات کرتے ہوئے کلش اور مندر کے چاروں طرف کی دیواروں کی ایک ایک انچ جگہ مورتیوں سے ڈھکی، ٹھیک اُسی طرح جس طرح ہندستان کے گھنے جنگل ۔ ان عمارتوں کا اپنا ایک گورو ہے ۔ دوسری طرف باہر سے آنے والے اسلامی آدرش کا نمونہ—اجمیر اور دلی کی مسجدیں، صاف صفاچٹ دیواریں، جن میں سوائے اللہ کے کوئی چیز دکھائی نہ دے، گول سفید گمبد اور اُونچے مینار، عرب کے بیابان ریگستان کی یاد دلانے والے ۔ ان کی بھی اپنی ایک الگ شان ہے ۔ تیسرے ان دونوں آدرشوں کا میل، ان کی ایک دوسرے پر قلم، ان کا پریم‌النگن اگر دیکھنا ہو تو آگرے کا تاج، جو دنیا کی سب سے سندر عمارتوں میں گنا جاتا ہے اور جو آج بھی

तरह के फल, नए फूल, नए नए जानवर, नई तरह के कपड़े इस मुल्क में आए और न जाने कितने नए नए खाने और नई नई

طرح کے پھل، نئے پھول نئے نئے جانور، نئی طرح کے کپڑے اِس

पर क़लम, इनका प्रेमालिंगन अगर देखना हो तो आगरे का ताज,
जो दुनिया की सबसे सुन्दर इमारतों में गिना जाता है और जो आज

तरह के फल, नए फूल, नए नए जानवर, नई तरह के कपड़े इस मुल्क में आए और न जाने कितने नए नए खाने और नई नई मिठाइयाँ जारी हुईं. आजकल के दिल्ली या आगरे या मथुरा के किसी भी हलवाई की दुकान की मिठाइयाँ और ढाका और मुर्शिदाबाद के रेशमी और सूती कपड़ों के नाम हमें अपनी ईजाद के समय की याद दिला रहे हैं.

यह मेल मिलाप की लहर हमारे रूहानी यानी आध्यात्मिक जीवन में भी गहरी चली गई थी. कबीर, दादू, नानक, पलटू, चैतन्य, तुकाराम, बाबा फ़रीद, बुल्लेशाह, मुईनुद्दीन चिश्ती और यारी साहब जैसे सैकड़ों हिन्दू और मुसलमान फ़क़ीर हिन्दू धर्म और इसलाम, दोनों के ऊपरी कर्मकान्डों से ऊपर उठकर हमें प्रेम धर्म का सन्देश सुना रहे थे और देस भर में चारों ओर प्रेम के सोते बहा रहे थे. हिन्दू धर्म ने इसलाम के सम्पर्क से अपने अन्दर अनेक सुधार की लहरें पैदा कीं. अनेक हिन्दू आचार्यों ने जात पात और छुआछूत को तोड़ने और आदमी आदमी के बीच बराबरी क़ायम करने का उपदेश दिया. हिन्दू धर्म के सम्पर्क से इसलाम का ज़रूरत से ज्यादा नुकीलापन या कटीलापन भी टूटा. मुसलमान फ़क़ीरों और महात्माओं के मज़ारों पर बसन्त के दिन बसन्ती चादरें चढ़ाई जाने लगीं. मुसलमान बादशाहों के दरबारों में होली, दिवाली, रक्षाबन्धन और दशहरा जगह जगह उसी प्रेम, उसी जोश और उसी उमंग से मनाया जाता था, जिस तरह हिन्दू दरबारों में. कोई सन्देह नहीं कि अगर थोड़ा सा और समय मिल गया होता तो यह देस उस ज़माने के हिन्दू धर्म और इसलाम के मेल से अपने अन्दर उसी तरह एक

طرح کے پھل، نئے پھول نئے نئے جانور، نئی طرح کے کپڑے اِس ملک میں آئے اور نہ جانے کتنے نئے نئے کھانے اور نئی نئی مٹھائیاں جاری ہوئیں۔ آجکل کے دلی یا آگرے یا متھرا کے کسی بھی حلوائی کی دوکان کی مٹھائیاں اور ڈھاکہ اور مرشدآباد کے ریشمی اور سوتی کپڑوں کے نام ہمیں اپنی ایجاد کے سمے کی یاد دلا رہے ہیں۔

یہ میل ملاپ کی لہر ہمارے روحانی یعنی آدھیاتمک جیون میں بھی گہری چلی گئی تھی۔ کبیر، دادو، نانک، پلٹو، چیتنیہ، تکارام، بابا فرید، بلے شاہ، معین الدین چشتی اور یاری صاحب جیسے سیکڑوں ہندو اور مسلمان فقیر ہندو دھرم اور اسلام، دونوں کے اُوپری کرم کانڈوں سے اُوپر اُٹھکر ہمیں پریم دھرم کا سندیش سنا رہے تھے اور دیس بھر میں چاروں اور پریم کے سوتے بہا رہے تھے۔ ہندو دھرم نے اسلام کے سمپرک سے اپنے اندر انیک سدھار کی لہریں پیدا کیں۔ انیک ہندو آچاریوں نے جات پات اور چھوا چھوت کو توڑنے اور آدمی آدمی کے بیچ برابری قائم کرنے کا اُپدیش دیا۔ ہندو دھرم کے سمپرک سے اسلام کا ضرورت سے زیادہ نکیلاپن یا کٹیلاپن بھی ٹوٹا۔ مسلمان فقیروں اور مہاتماؤں کے مزاروں پر بسنت کے دن بسنتی چادریں چڑھائی جانے لگیں۔ مسلمان بادشاہوں کے درباروں میں ہولی، دیوالی، رکشا بندھن اور دشہرہ جگہ جگہ اُسی پریم، اُسی جوش اور اُسی اُمنگ سے منایا جاتا تھا، جس طرح ہندو درباروں میں۔ کوئی سندیہ نہیں کہ اگر تھوڑا سا اور سمے مل گیا ہوتا تو یہ دیس اُس زمانے کے ہندو دھرم اور اسلام کے میل سے اپنے اندر اُسی طرح ایک

नया मिलाजुला और ज्यादा ऊँचा जीवन पैदा करके दिखला देता, जिस तरह इससे पहले की सब टक्करों के बाद दिखला चुका था, पर उस शुभ दिन के आने से ठीक पहले देस में एक तीसरी ताक़त ने क़दम रक्खा.

इस नई बिदेसी ताक़त को अपना भला इसी में दिखाई दिया कि देस की इन दोनों जमातों को एक दूसरे से मिलने से रोके. इन दोनों को फाड़े रखने में ही उसे अपनी ज़िन्दगी दिखाई दी. सन् १७५७ से तरह तरह की चालों, कूटनीतियों और सियासी तदबीरों के ज़रिये देस के हिन्दू और मुसलमानों को एक दूसरे से अलग रखने के पूरे जतन किये गए. रोग बीज रूप में शरीर के अन्दर मौजूद था ही. उसे सिर्फ़ भड़काने और बढ़ाने की जरूरत थी. सरकारी नौकरियों में होड़, म्यूनिसपलटियों और एसेम्बलियों के चुनाव, जुदागाना चुनाव, अलग अलग यूनीवर्सिटियाँ, महासभा और लीग, अखंड भारत और पाकिस्तान, इन सब ने देस की इस कठिन समस्या को उलझाने में हिस्सा लिया है. पर यह राजकाजी हथकंडे हमें सिर्फ़ इसीलिये नुक़सान पहुँचा सके, क्योंकि फूट, अलहदगी और दुई के बीज हमारे अन्दर मौजूद थे. बाहर के कीड़े या जर्म्स उस समय तक रोग पैदा नहीं कर सकते, जबतक कि जिस्म के अन्दर का समतोल न बिगड़ा हो, जबतक कि ख़ून के अन्दर कोई न कोई इस तरह की कमज़ोरी, कमी या बेशी पैदा न हो गई हो, जो उन

نیا ملا جلا اور زیادہ اونچا جیون پیدا کرکے دکھلا دیتا، جس طرح اس سے پہلے کی سب ٹکروں کے بعد دکھلا چکا تھا، پر اُس شبھ دن کے آنے سے ٹھیک پہلے دیس میں ایک تیسری طاقت نے قدم رکھا.

اس نئی بدیسی طاقت کو اپنا بھلا اسی میں دکھائی دیا کہ دیس کی ان دونوں جماعتوں کو ایک دوسرے سے ملنے سے روکے. ان دونوں کو پھاڑے رکھنے میں ہی اسے اپنی زندگی دکھائی دی. سن ۱۷۵۷ سے طرح طرح کی چالوں، کوٹ نیتیوں اور سیاسی تدبیروں کے ذریعہ دیس کے ہندو اور مسلمانوں کو ایک دوسرے سے الگ رکھنے کے پورے جتن کئے گئے. روگ بیج روپ میں شریر کے اندر موجود تھا ہی. اُسے صرف بھڑکانے اور بڑھانے کی ضرورت تھی. سرکاری نوکریوں میں ہوڑ، میونسپلٹیوں اور اسمبلیوں کے چناؤ، جداگانہ چناؤ، الگ الگ یونیورسٹیاں، مہا سبھا اور لیگ، اکھنڈ بھارت اور پاکستان، ان سب نے دیس کی اس کٹھن سمسیا کو الجھانے میں حصہ لیا ہے، پر یہ راج کاجی ہتھکنڈے ہمیں صرف اسی لئے نقصان پہونچا سکے، کیونکہ پھوٹ، علیحدگی اور دوئی کے بیج ہمارے اندر موجود تھے. باہر کے کیڑے یا جرمس اُس سمے تک روگ پیدا نہیں کر سکتے، جب تک کہ جسم کے اندر کا سمتول نہ بگڑا ہو، جب تک کہ خون کے اندر کوئی نہ کوئی اس طرح کی کمزوری، کمی یا بیشی پیدا نہ ہو گئی ہو، جو اُن کیڑوں کو وہاں ٹکنے اور

और मुसलिम कलचर ख़तरे में है', 'हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये हिन्दू

اور مسلم کلچر خطرے میں ہے'، 'ہندو دھرم کی رکشا کے لئے ہندو

तरह की कमज़ोरी, कमी या बेशी पैदा न हो गई हो, जो उन

और मुसलिम कलचर ख़तरे में है', 'हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये हिन्दू संगठन ज़रूरी है', 'इसलाम की हिफ़ाज़त के लिये मुसलमानों की अलग तंज़ीम लाज़िमी है', शुद्धि और तबलीग़, बोलने चालने और लिखने पढ़ने की ज़बान को एक तरफ़ संस्कृत के और दूसरी तरफ़ फ़ारसी और अरबी के ज्यादा नज़दीक लाने की कोशिशें, राष्ट्री कान्फ़रेंसों और राष्ट्री संस्थाओं तक में हिन्दू रंग ढंग और हिन्दू तौर तरीक़ों को बरतने और चमकाने की लालसा—यह सब चीज़ें इस बात को साबित कर रही हैं कि हमने अभी तक ऊपरी रीत रिवाजों के फ़रक़ों से उठकर एक मिली जुली क़ौमी ज़िन्दगी बसर करने के उस सबक़ को पूरी तरह नहीं सीखा, जो क़ुदरत हमें इन दोनों धर्मों को एक जगह लाकर सिखाना चाहती थी.

रोग का इलाज भी साफ़ है. इस सारी भूल भुलइयों में से हम चाहें तो अपना रास्ता साफ़ देख सकते हैं. रास्ता वही है, जो इससे पहले की टक्करों में से निकलने का रास्ता था. जबतक आदमी आदमी है, उसमें तरह तरह के विचारों का पैदा होना, उसके तरह तरह के विश्वास और तरह तरह की मानताएँ होना क़ुदरती है. यह चीज़ वैसी ही क़ुदरती है, जैसी एक विशाल बन या सुन्दर उपवन के अन्दर तरह तरह की बनस्पतियों और रंग बिरंगे फूलों का उगना. हरेक का अपना सौन्दर्य है. हरेक की अपनी उपयोगिता है. जिनके आँखें हैं, उन्हें इस विचित्रता में ही, इस रंग बिरंगे पन में ही, क़ुदरत के बाग़ का असली सौन्दर्य दिखाई देगा. इस विचित्रता में से ही मानव विकास का रास्ता मिलता है. कोई देस उस समय तक सभ्य नहीं कहा जा सकता, जबतक कि उसके रहने वालों को अपने विचारों

اور مسلم کلچر خطرے میں ہے'، 'ہندو دھرم کی رکشا کے لئے ہندو سنگٹھن ضروری ہے'، 'اسلام کی حفاظت کے لئے مسلمانوں کی الگ تنظیم لازمی ہے'، شدھی اور تبلیغ، بولنے چالنے اور لکھنے پڑھنے کی زبان کو ایک طرف سنسکرت کے اور دوسری طرف فارسی اور عربی کے زیادہ نزدیک لانے کی کوششیں، راشٹری کانفرنسوں اور راشٹری سنستھاؤں تک میں ہندو رنگ ڈھنگ اور ہندو طور طریقوں کو برتنے اور چمکانے کی لالسا — یہ سب چیزیں اِس بات کو ثابت کر رہی ہیں کہ ہم نے ابھی تک اوپری ریت رواجوں کے فرقوں سے اوپر اُٹھکر ایک ملی جلی قومی زندگی بسر کرنے کے اُس سبق کو پوری طرح نہیں سیکھا، جو قدرت ہمیں اِن دونوں دھرموں کو ایک جگہ لاکر سکھانا چاہتی تھی۔

روگ کا علاج بھی صاف ہے۔ اِس ساری بھول بھلیوں میں سے ہم چاہیں تو اپنا راستہ صاف دیکھ سکتے ہیں۔ راستہ وہی ہے، جو اِس سے پہلے کی ٹکروں میں سے نکلنے کا راستہ تھا۔ جب تک آدمی آدمی ہے، اُس میں طرح طرح کے وچاروں کا پیدا ہونا، اُسکے طرح طرح کے وشواس اور طرح طرح کی مانتائیں ہونا قدرتی ہے۔ یہ چیز ویسی ہی قدرتی ہے، جیسی ایک وشال بن یا سندر اُپون کے اندر طرح طرح کی بنسپتیوں اور رنگ برنگے پھولوں کا اُگنا۔ ہر ایک کا اپنا سوندریہ ہے۔ ہر ایک کی اپنی اُپیوگتا ہے۔ جنکے آنکھیں ہیں اُنہیں اِس وچترتا میں ہی، اِس رنگ برنگے پن میں ہی، قدرت کے باغ کا اصلی سوندریہ دکھائی دیگا۔ اِس وچترتا میں سے ہی مانو وکاس کا راستہ ملتا ہے۔ کوئی دیس اُس سمے تک سبھیہ نہیں کہا جا سکتا، جبتک کہ اُس کے رہنے والوں کو اپنے وچاروں

और विश्वासों में, अपनी पूजा और इबादत के तरीक़ों में पूरी आज़ादी हासिल न हो. हमारे देस के अन्दर भी तरह तरह के विचारों का हज़ारों बरस से एक दूसरे के साथ रहना और आख़ीर में घुल मिल जाना इस बात को साबित कर रहा है कि हम ज़िन्दगी के इस सुनहरे उसूल को काफ़ी जानते और समझते रहे हैं. बहुत सी बातों में हिन्दुओं और जैनियों, वैशनवों और शाक्तों, सनातन-धर्मियों और आर्यसमाजियों, वर्नाश्रमियों और ब्राह्मनों में जितना उसूली फ़रक़ है, आर्य समाजियों और मुसलमानों या मामूली हिन्दुओं और मुसलमानों में उससे कहीं कम है. बात सिर्फ़ इतनी है, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, कि हमारे इतिहास का यह आख़िरी मेल जोल अभी पूरा नहीं हो पाया था कि बाहरी ताक़तों ने छेड़कर हमारी हालत को थोड़ा सा जटिल कर दिया और कुछ देर के लिये देस में एक संकट पैदा हो गया.

हमें अब सिर्फ़ दो बातें समझनी हैं. एक यह कि मज़हबी रीत रिवाजों या पूजा पाठ के तरीक़ों के अलग अलग होते हुए भी हमें देस में एक मिली जुली समाजी ज़िन्दगी, मिला जुला रहन सहन, मिली जुली ज़बान पैदा करनी है, बढ़ानी है और उसे क़ायम रखना है. रीत रिवाज सब ऊपरी चीज़ें हैं. हर देस में वह बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे. जिस तरह शरीर का बदलना जब तब ज़रूरी हो जाता है, उसी तरह इन ऊपरी रीत रिवाजों का बदलते रहना भी समाजी ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी होता है. हिन्दुओं की जन्मना

اور وشواسوں میں، اپنی پوجا اور عبادت کے طریقوں میں پوری آزادی حاصل نہ ہو۔ ہمارے دیس کے اندر بھی طرح طرح کے وچاروں کا ہزاروں برس سے ایک دوسرے کے ساتھ رہنا اور آخر میں گھل مل جانا اس بات کو ثابت کر رہا ہے کہ ہم زندگی کے اس سنہرے اصول کو کافی جانتے اور سمجھتے رہے ہیں۔ بہت سی باتوں میں ہندوؤں اور جینیوں، ویشنوؤں اور شاکتوں، سناتن دھرمیوں اور آریہ سماجیوں، ورناشرمیوں اور براہمنوں میں جتنا اصولی فرق ہے، آریہ سماجیوں اور مسلمانوں یا معمولی ہندوؤں اور مسلمانوں میں اس سے کہیں کم ہے۔ بات صرف اتنی ہے، جیسا ہم اوپر کہہ چکے ہیں، کہ ہمارے اتہاس کا یہ آخری میل جول ابھی پورا نہیں ہو پایا تھا کہ باہری طاقتوں نے چھیڑ کر ہماری حالت کو تھوڑا سا جٹل کر دیا اور کچھ دیر کے لئے دیس میں ایک سنکٹ پیدا ہو گیا۔

ہمیں اب صرف دو باتیں سمجھنی ہیں۔ ایک یہ کہ مذہبی ریت رواجوں یا پوجا پاٹھ کے طریقوں کے الگ الگ ہوتے ہوئے بھی ہمیں دیس میں ایک ملی جلی سماجی زندگی، ملا جلا رہن سہن، ملی جلی زبان پیدا کرنی ہے، بڑھانی ہے اور اسے قائم رکھنا ہے۔ ریت رواج سب اوپری چیزیں ہیں۔ ہر دیس میں وہ بدلتے رہے ہیں اور بدلتے رہینگے۔ جس طرح شریر کا بدلنا جب تب ضروری ہو جاتا ہے اسی طرح ان اوپری ریت رواجوں کا بدلتے رہنا بھی سماجی زندگی کے لئے ضروری ہوتا ہے۔ ہندوؤں کی جنمنا

और हानिकर रूढ़ि है, जिसका अन्त करना हमारे समाजी जीवन

اور ہانیکر روڑھی ہے، جس کا انت کرنا ہمارے سماجی جیون کو

जाता है, उसी तरह इन ऊपरी रीत रिवाजों का बदलते रहना भी
समाजी ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी होता है. हिन्दुओं की जन्मना

और हानिकर रूढ़ि है, जिसका अन्त करना हमारे समाजी जीवन को क़ायम रखने के लिये ज़रूरी है: बुद्ध भगवान् के समय से लेकर बीच के ज़माने के सन्तों, कबीर और दादू तक सब हमें यही उपदेश देते चले आए हैं. ऐसे ही बोलचाल में या किताबों और अख़बारों में 'आवश्यकता' की जगह 'ज़रूरत' या 'ज़रूरत' की जगह 'आवश्यकता' पर ज़ोर देना, 'नुमाइश' जैसे आमफ़हम शब्द को बदल कर 'प्रदर्शिनी' करना, 'हवाई जहाज़' को 'वायुयान' या 'तैयारा' कहने की कोशिश करना एक बीमारी है, जो हमारी समाजी ज़िन्दगी को टुकड़े टुकड़े कर रही है और हमारी आत्माओं को तंग बना रही है. एक सीधी सादी, मिली जुली, आमफ़हम बोली की जगह संस्कृत भरी हिन्दी या फ़ारसी अरबी भरी उर्दू की तरफ़ जाने की ख़्वाहिश उन चीज़ों में से है, जिन्होंने हिन्दू मुसलिम सवाल को पैदा किया और बढ़ाया. हमें हिन्दी और उर्दू दोनों को हिन्दुस्तानी भाशा मानना होगा. दोनों से प्रेम करना होगा और दोनों के सच्चे संगम से एक राष्ट्र भाशा हिन्दुस्तानी को रूप देना, बढ़ाना और मालामाल करना होगा. इसी तरह अपनी राष्ट्रीय संस्थाओं, कांगरेसों, कान्फ़रेंसों, स्कूलों, कालेजों वग़ैरा में हमें मिले जुले तरीक़े और इस तरह के ढंग बरतने होंगे, जो सब धर्मों और मज़हबों के देसबासियों को एक से प्यारे लगें. हम ऊपर लिख चुके हैं कि हम आज से चन्द पीढ़ी तक इसी तरह की एक मिली जुली समाजी ज़िन्दगी और मिली जुली कलचर की तरफ़ बढ़ रहे थे. हमें अपनी उस थोड़े दिन पहले की प्रवृत्ति को फिर से ताज़ा करना होगा.

दूसरी बात, जो हमें समझनी है, वह इससे भी ज़्यादा

اور ھانیکر رودھی ھے، جس کا انت کرنا ھمارے سماجی جیون کو قائم رکھنے کے لئے ضروری ھے. بدھ بھگوان کے سمے سے لے کر بیچ کے زمانے کے سنتوں، کبیر اور دادو تک سب ھمیں یہی اُپدیش دیتے چلے آئے ھیں. ایسے ھی بول چال میں یا کتابوں اور اخباروں میں 'آوشیکتا' کی جگہ 'ضرورت' یا 'ضرورت' کی جگہ 'آوشیکتا' پر زور دینا، 'نمائش' جیسے عام فہم شبد کو بدل کر 'پردرشنی' کرنا، 'ھوائی جہاز' کو 'وایویان' یا 'طیارہ' کہنے کی کوشش کرنا ایک بیماری ھے، جو ھماری سماجی زندگی کو ٹکڑے ٹکڑے کر رھی ھے اور ھماری آتماؤں کو تنگ بنا رھی ھے. ایک سیدھی سادی، ملی جلی، عام فہم بولی کی جگہ سنسکرت بھری ھندی یا فارسی عربی بھری اُردو کی طرف جانے کی خواھش اُن چیزوں میں سے ھے، جنھوں نے ھندو مسلم سوال کو پیدا کیا اور بڑھایا. ھمیں ھندی اور اردو دونوں کو ھندستانی بھاشا ماننا ھوگا. دونوں سے پریم کرنا ھوگا اور دونوں کے سچے سنگم سے ایک راشٹر بھاشا ھندستانی کو روپ دینا، بڑھانا اور مالامال کرنا ھوگا. اِسی طرح اپنی راشٹری سنستھاؤں، کانگریسوں، کانفرنسوں، اسکولوں، کالجوں وغیرہ میں ھمیں ملے جلے طریقے اور اِس طرح کے ڈھنگ برتنے ھونگے، جو سب دھرموں اور مذھبوں کے دیس باسیوں کو ایک سے پیارے لگیں. ھم اوپر لکھ چکے ھیں کہ ھم آج سے چند پیڑھی تک اِسی طرح کی ایک ملی جلی سماجی زندگی اور ملی جلی کلچر کی طرف بڑھ رھے تھے. ھمیں اپنی اُس تھوڑے دن پہلے کی پرورتی کو پھر سے تازہ کرنا ھوگا.

دوسری بات، جو ھمیں سمجھنی ھے، وہ اِس سے بھی زیادہ

गहरी है. और वह है इस हिन्दू मुसलिम सवाल का आध्यात्मिक यानी रूहानी पहलू. दुनिया के अलग अलग धर्मों के क़ायम करने वालों ने अगर किसी बात पर सबसे ज्यादा जोर दिया है तो वह यही है कि सब इनसान एक क़ौम हैं, हम सब मिलकर एक छोटा सा कुटुम्ब हैं, सब एक जिस्म के अलग अलग अंगों की तरह हैं. सब का एक ही ईश्वर या अल्लाह है. ईश्वर एक है और सब उसी के बन्दे हैं तो ज़ाहिर है कि सबका धर्म भी एक ही है. फिर यह अलग अलग धर्मों के फ़रक़ क्यों? इन धर्मों के इतिहास और उनकी पाक किताबों को प्रेम के साथ देखने से साफ़ पता चलता है कि इन सब धर्मों और मत मतान्तरों के मूल तत्व एक हैं. इनमें फ़रक़ सिर्फ़ या तो उन अटकली बातों में है, जिनमें आदमी का दिमाग़ आख़िरी फ़ैसले नहीं कर पाता, जैसे जीव और ब्रह्म का एक होना या दो होना, नरक और स्वर्ग की कल्पनाएँ वग़ैरा, और या ऊपरी रीत रिवाजों और कर्मकाण्डों में हैं, जैसे पूरब की तरफ़ मुँह करके पूजा करना या पच्छिम की तरफ़ मुँह करके, संस्कृत में दुआ मांगना या अरबी में. यह सब फ़रक़ गौन यानी फ़रूई हैं. हमें इनसे ऊपर उठकर और इनके भीतर से सब धर्मों की बुनियादी एकता को देखना होगा. इतना ही नहीं हमें यह समझना होगा कि ख़ुदा की नज़रों में दुनिया की कोई भाषा दूसरी भाषा से ज्यादा पवित्र नहीं है. कोई ऊपरी रीत रिवाज दूसरे रीत रिवाज से ज्यादा पाक नहीं है. आदमी, आदमी है. हमें सब धर्मों के क़ायम करने वाले महापुरुषों की इज्ज़त करनी

گہری ہے ۔ اور وہ ہے اِس ہندو مسلم سوال کا آدھیاتمک یعنی روحانی پہلو ۔ دنیا کے الگ الگ دھرموں کے قائم کرنے والوں نے اگر کسی بات پر سب سے زیادہ زور دیا ہے تو وہ یہی ہے کہ سب انسان ایک قوم ہیں' ہم سب ملکر ایک چھوٹا سا کٹمب ہیں' سب ایک جسم کے الگ الگ انگوں کی طرح ہیں ۔ سب کا ایک ہی ایشور یا اللہ ہے ۔ ایشور ایک ہے اور سب اُسی کے بندے ہیں تو ظاہر ہے کہ سب کا دھرم بھی ایک ہی ہے ۔ پھر یہ الگ الگ دھرموں کے فرق کیوں ؟ اِن دھرموں کے اِتہاس اور اُن کی پاک کتابوں کو پریم کے ساتھ دیکھنے سے صاف پتہ چلتا ہے کہ اِن سب دھرموں اور مت متانتروں کے مول تتو ایک ہیں ۔ ان میں فرق صرف یا تو اُن اٹکلی باتوں میں ہے' جن میں آدمی کا دماغ آخری فیصلے نہیں کر پاتا' جیسے جیو اور برہم کا ایک ہونا یا دو ہونا' نرک اور سورگ کی کلپنائیں وغیرہ' اور یا اوپری ریت رواجوں اور کرم کانڈوں میں ہیں' جیسے پورب کی طرف منہ کرکے پوجا کرنا یا پچھم کی طرف منہ کرکے' سنسکرت میں دعا مانگنا یا عربی میں ۔ یہ سب فرق گون یعنی فروعی ہیں ۔ ہمیں اِن سے اُوپر اُٹھ کر اور اِنکے بھیتر سے سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو دیکھنا ہوگا. اتنا ہی نہیں' ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ خدا کی نظروں میں دنیا کی کوئی بھاشا دوسری بھاشا سے زیادہ پوتر نہیں ہے. کوئی اوپری ریت رواج دوسرے ریت رواج سے زیادہ پاک نہیں ہے. آدمی' آدمی ہے ۔ ہمیں سب دھرموں کے قائم کرنے والے مہاپرشوں کی عزت

प्रेम के साथ पढ़ना और उनसे सबक़ हासिल करना होगा. इन

रिवाज दूसरे रीत रिवाज से ज़्यादा पाक नहीं है. आदमी, आदमी
है. हमें सब धर्मों के क़ायम करने वाले महापुरुषों की इज़्ज़त करनी

प्रेम के साथ पढ़ना और उनसे सबक़ हासिल करना होगा. इन धर्मों और किताबों के फ़रक़ सब देस और काल के फ़रक़ हैं. हमें इनसे ऊपर उठकर सब धर्मों के सार यानी उस मानव धर्म, उस प्रेम धर्म, उस मज़हबे इश्क़, उस मज़हबे इनसानियत को साक्षात् करना होगा, जो आजकल के सब मत,मतान्तरों की जगह भावी मानव समाज का एकमात्र धर्म होगा, जिसकी बुनियादें सच्चाई, सदाचार और प्रेम पर होंगी और जो सब के अन्दर एक ईश्वर के दर्शन करते हुए आध्यात्मिक जीवन की उन गहराइयों तक पहुंचने और उन समस्याओं के हल करने की कोशिश करेगा, जिन तक पहुँचना और जिनका हल करना इस पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन का अन्तिम और असली लक्ष्य है. यही वह क़ीमती सबक़ है, जो क़ुदरत हमें इस छोटी सी हिन्दू मुसलिम समस्या के ज़रिये सिखाना चाहती है. हमारा देस इस समय इसी सच्चे मानवधर्म को पैदा करने की प्रसववेदना में से होकर निकल रहा है. सारा संसार शुभ दिन की बाट जोह रहा है. ❀

—सुन्दरलाल

❀ 'प्रेमी अभिनन्दन ग्रंथ' से.

پریم کے ساتھ پڑھنا اور اُن سے سبق حاصل کرنا ہوگا . ان دھرموں اور کتابوں کے فرق سب دیس اور کال کے فرق ہیں. ہمیں ان سے اوپر اُٹھکر سب دھرموں کے سار یعنی اُس مانو دھرم، اُس پریم دھرم، اُس مذہب عشق، اُس مذہب انسانیت کو ساکشات کرنا ہوگا، جو آجکل کے سب مت متانتروں کی جگہ بھاوی مانو سماج کا ایک ماتر دھرم ہوگا، جسکی بنیادیں سچائی، سداچار اور پریم پر ہونگی اور جو سب کے اندر ایک ایشور کے درشن کرتے ہوئے آدھیاتمک جیون کی اُن گہرائیوں تک پہونچنے اور اُن سمسیاؤں کے حل کرنے کی کوشش کریگا، جن تک پہونچنا اور جن کا حل کرنا اس پرتھوی پر منشیہ کے جیون کا انتم اور اصلی لکش ہے . یہی وہ قیمتی سبق ہے، جو قدرت ہمیں اِس چھوٹی سی ہندو مسلم سمسیا کے ذریعے سکھانا چاہتی ہے . ہمارا دیس اِس سمے اِسی سچے مانو دھرم کو پیدا کرنے کی پرسو ویدنا میں سے ہوکر نکل رہا ہے . سارا سنسار شبھ دن کی باٹ جوہ رہا ہے . *

— سندر لال

* 'پریمی ابھنندن گرنتھ' سے .

कलाकार वान गोक

(भाई 'परदेशी')

१९ वीं सदी के पिछले बरसों में, सब से मशहूर चित्रकारों में वान गोक का नाम बड़ी इज्ज़त के साथ लिया जाता है. दर असल वान गोक चित्रकार के रूप में संसार की महान आत्माओं का नमूना था. उसके जीवन की तुलना बड़े से बड़े सन्तों और महात्माओं से ही की जा सकती है.

बाइबिल के इस सत्य का वह आदर्श नमूना था कि 'अपने जीवन की कमी विश्वास से पूरी कर ले!'

और योरप के इस विश्वास का भी वह उदाहरन था कि 'मन भर अक़्लमंदी से रत्ती भर श्रद्धा अधिक भारी है.'

चित्रकार के रूप में उसकी पहुँच और सफलता अचरज में डालने वाली थी. पर सफल चित्रकार बनने के लिये उसे जो जो कठिनाइयाँ और मुसीबतें झेलनी पड़ीं वह बड़े बड़े सूरमाओं ने देखी भी न होंगी. उसका जीवन तपस्या और साधना का जीवन था. उसकी हरेक साँस संघर्षों और तजरबों में पल कर आगे बढ़ी थी. उसने क़दम क़दम पर भेद भाव, ना बराबरी और लूट खसोट के खिलाफ़ अपनी कभी न खतम होने वाली लड़ाई जारी रखी.

کلاکار وان گوک

(بھائی 'پردیشی')

۱۹ ویں صدی کے پچھلے برسوں میں، سب سے مشہور چترکاروں میں وان گوک کا نام بڑی عزت کے ساتھ لیا جاتا ہے. در اصل وان گوک چترکار کے روپ میں سنسار کی مہان آتماؤں کا نمونہ تھا. اُسکے جیون کی تلنا بڑے سے بڑے سنتوں اور مہاتماؤں سے ھی کی جا سکتی ہے.

بائبل کے اِس ستیہ کا وہ آدرش نمونہ تھا کہ 'اپنے جیون کی کمی وشواس سے پوری کر لے!'

اور یوروپ کے اِس وشواس کا بھی وہ اُداھرن تھا کہ 'من بھر عقلمندی سے رتی بھر شردھا ادھک بھاری ہے.'

چترکار کے روپ میں اُسکی پہنچ اور سپھلتا اچرج میں ڈالنے والی تھی. پر سپھل چترکار بننے کے لئے اُسے جو جو کٹھنائیاں اور مصیبتیں جھیلنی پڑیں وہ بڑے بڑے سورماؤں نے دیکھی بھی نہ ہونگی. اُس کا جیون تپسیا اور سادھنا کا جیون تھا. اُسکی ہر ایک سانس سنگھرشوں اور تجربوں میں پل کر آگے بڑھی تھی. اُس نے قدم قدم پر بھید بھاؤ، نابرابری اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف اپنی کبھی نہ ختم ہونے والی لڑائی جاری رکھی.

लोगों, रईसों और शाहज़ादों का चित्रन नहीं किया बलिक टूटी फूटी

لوگوں، رئیسوں اور شاہزادوں کا چترن نہیں کیا بلکہ ٹوٹی پھوٹی

उसने क़दम क़दम पर भेद भाव, ना बराबरी और लूट खसोट के ख़िलाफ़ अपनी कभी न ख़तम होने वाली लड़ाई जारी रखी.

قدم قدم پر بھید بھاؤ نابرابری اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف اپنی کبھی نہ ختم ہونے والی لڑائی جاری رکھی۔

लोगों, रईसों और शाहज़ादों का चित्रन नहीं किया बल्कि टूटी फूटी झोपड़ियों में भूके पेट रहने वाले मज़दूरों, दुखियारों और पीड़ितों का ऐसा चित्रन किया जिसे देखने पर आज भी हमारी आँखों से आँसू निकल पड़ेंगे. उसके ब्रुश ने ऊँचे ख़ानदान की औरतों की परछाइयाँ नहीं देखीं. बल्कि भयानक सरदी में कूड़ेखानों पर कोयला चुनती ग़रीब स्त्रियों की तसवीरें उसने बनाईं. इन तसवीरों के ज़रिये उसने कठोर से कठोर और संगदिल इनसान के दिल पर भी ऐसे हथौड़े चलाए कि उसकी धमक आज भी गूंज उठती है. जब उसने चित्रकारी शुरू की तो वह यह न समझ सका कि इन बड़े बड़े चित्रकारों के चित्रों की स्त्रियाँ और बच्चे दुनिया में चलते फिरते लोगों से मेल क्यों नहीं खाते ? इनमें कहीं भी ज़मीन की तह में गहरी खानों में डूब कर काम करने वालों का चित्र क्यों नहीं है ? इनमें से किसी के मुँह पर उस भारी भूक की छाप नहीं है जो रात दिन सड़क पर मारे मारे फिरने वाले राहगीरों के चेहरों पर देखी जा सकती है ? बस, बिना उस्ताद की सहायता के ही, यही सब तस्वीरें खींच देने को वह तैयार होगया. बरसों तपस्या करता रहा और एक दिन उसका सपना सच्चा होगया. जब उसके ऐसे चित्रों को लोगों ने देखा तो वह चकित रह गए और औरतें यह भयानक दृश्य देखकर बेहोश हो गईं ! वान गोक ने रंगीन और बनावटी तस्वीरों के बजाय खेतों और फ़सलों की सच्ची तस्वीरें खींचीं. आलू की खेती करने वाले एक परिवार के खाने की मेज वाला जो मशहूर चित्र "आलू खाने वाले" उसने बनाया वह हज़ारों बरस तक अमर रहेगा. इस तरह चित्रकला की तारीख़ में विन्सेन्ट वान गोक ने पहली बार

لوگوں، رئیسوں اور شاہزادوں کا چترن نہیں کیا بلکہ ٹوٹی پھوٹی جھونپڑیوں میں بھوکے پیٹ رہنے والے مزدوروں، دکھیاروں اور پیڑتوں کا ایسا چترن کیا جسے دیکھنے پر آج بھی ہماری آنکھوں سے آنسو نکل پڑینگے۔ اُسکے برش نے اونچے خاندان کی عورتوں کی پرچھائیاں نہیں دیکھیں بلکہ بھیانک سردی میں کوڑے خانوں پر کوئلہ چنتی غریب استریوں کی تصویریں اُسنے بنائیں۔ ان تصویروں کے ذریعے اُسنے کٹھور سے کٹھور اور سنگدل انسان کے دل پر بھی ایسے ہتھوڑے چلائے کہ اُس کی دھمک آج بھی گونج اُٹھتی ہے۔ جب اُس نے چترکاری شروع کی تو وہ یہ نہ سمجھ سکا کہ ان بڑے بڑے چترکاروں کے چتروں کی استریاں اور بچے دنیا میں چلتے پھرتے لوگوں سے میل کیوں نہیں کھاتے؟ ان میں کہیں بھی زمین کی تہ میں گہری کھانوں میں ڈوب کر کام کرنے والوں کا چتر کیوں نہیں ہے؟ ان میں سے کسی کے منہ پر اُس بھاری بھوک کی چھاپ نہیں ہے جو رات دن سڑک پر مارے مارے پھرنے والے راہگیروں کے چہروں پر دیکھی جا سکتی ہے؟ بس، بنا اُستاد کی سہایتا کے ہی، یہی سب تصویریں کھینچ دینے کو وہ تیار ہو گیا۔ برسوں تپسیا کرتا رہا اور ایک دن اُس کا سپنا سچا ہو گیا۔ جب اُسکے ایسے چتروں کو لوگوں نے دیکھا تو وہ چکت رہ گئے اور عورتیں یہ بھیانک درشیہ دیکھکر بیہوش ہو گئیں! وان گوک نے رنگین اور بناوٹی تصویروں کے بجائے کھیتوں اور فصلوں کی سچی تصویریں کھینچیں۔ آلو کی کھیتی کرنے والے ایک پریوار کے کھانے کی میز والا جو مشہور چتر "آلو کھانے والے" اُسنے بنایا وہ ہزاروں برس تک امر رہے گا۔ اس طرح چترکلا کی تاریخ میں ونسنٹ وان گوک نے پہلی بار

ख़याली तस्वीरों की जगह सचाई ज़ाहिर करने वाले चित्रों का सिक्का जमाया.

और यह चित्र बनाते समय वह अच्छी इमारतों या रेशमी गद्देदार कुर्सियों और मेज़ों पर नहीं था. न उसके पास उनके हासिल होने का कोई ज़रिया ही था. हाँ, अगर वह चाहता तो बड़ी शान से रह सकता था, पर अपने आसपास की, लन्दन, पेरिस और हेग की जनता और अवाम की दुर्दशा देखकर उसे अमीरी के विलासी जीवन से नफ़रत होगई थी और वह लूट खसोट का कट्टर विरोधी हो गया था.

उसने अपने चित्र झोपड़ियों में, खेतों में बैठ कर बनाए. बरसती बरसात में वह बाहर घूमता. चिलचिलाती धूप उसे नहीं रोक पाती थी. गिरते बरफ़ में वह मैदानों में कहीं पड़ा मिलता. वान गोक केवल काफ़ी पी कर रह जाता. कभी काली रोटी खा कर रह जाता. कभी चाय और काफ़ी के पैसे न होने पर सिर्फ़ गरम पानी ही पी कर रह जाता. एक दो दिन नहीं महीनों तक वह केवल पानी पी पी कर गुज़र कर लेता था. या तो भोजन मिलता ही नहीं था या उसे खाने की सुध न रहती. वह अपना क़लम और ब्रुश बराबर चलाए जाता! उसके इस तप की तुलना महात्मा गांधी के उपवास से ही हो सकती है. अपने फ़ाक़ों के दिनों में भी अगर कोई आ जाता तो हमेशा वह सब कुछ उसे दे देता. और यह बात इतनी बढ़ गई कि उसके पास

خیالی تصویروں کی جگہ سچائی ظاهر کرنے والے چتروں کا سکہ جمایا .

اور یہ چتر بناتے سمے وہ اچھی عمارتوں یا ریشمی گدے دار کرسیوں اور میزوں پر نہیں تھا . نہ اُسکے پاس اُنکے حاصل ہونے کا کوئی ذریعہ هی تھا . هاں، اگر وہ چاهتا تو بڑی شان سے رہ سکتا تھا، پر اپنے آس پاس کی، لندن، پیرس اور هیگ کی جنتا اور عوام کی دردشا دیکھکر اُسے امیری کے بلاسی جیون سے نفرت هو گئی تھی اور وہ لوٹ کھسوٹ کا کٹر ورودھی هو گیا تھا .

اُس نے اپنے چتر جھونپڑیوں میں، کھیتوں میں بیٹھکر بنائے . برستی برسات میں وہ باهر گھومتا . چلچلاتی دھوپ اُسے نہیں روک پاتی تھی . گرتے برف میں وہ میدانوں میں کہیں پڑا ملتا . وان گوک کیول کافی پی کر رہ جاتا . کبھی کالی روٹی کھاکر رہ جاتا . کبھی چائے اور کافی کے پیسے نہ ہونے پر صرف گرم پانی هی پی کر رہ جاتا . ایک دو دن نہیں مہینوں تک وہ کیول پانی پی پی کر گزر کر لیتا تھا . یا تو بھوجن ملتا هی نہیں تھا یا اُسے کھانے کی سدھ نہ رهتی . وہ اپنا قلم اور برش برابر چلائے جاتا ! اُسکے اِس تپ کی تلنا مہاتما گاندھی کے اُپواس سے هی هو سکتی هے . اپنے فاقوں کے دنوں میں بھی اگر کوئی آجاتا تو همیشہ وہ سب کچھ اُسے دے دیتا . اور یہ بات اتنی بڑھ گئی کہ اُسکے پاس کبھی کچھ نہ رها

है. अपने फाकों के दिनों में भी अगर कोई आ जाता तो हमेशा वह
सब कुछ उसे दे देता. और यह बात इतनी बढ़ गई कि उसके पास

और अपने काम में उसे इन तस्वीरों पर पाँच पचीस रुपए से अधिक न मिले. और जब पहली बार बड़ी क़ीमत में उसकी तस्वीर बिकी तो उसे बड़ा अचरज हुआ ! ख़रीदार मज़ाक़ तो नहीं कर रहा है ? लेकिन भूके वान गोक को क्या पता था कि ५० साल बाद उसका कोड़ी न कमा सकने वाला चित्र दस दस लाख डालर में बिकेगा. और जब अमरीका या इंग्लैंड में इनकी नुमाइश होगी तो इस तरह भीड़ होगी कि पुलिस को डंडे चलाने पड़ेंगे ! लेकिन कितने कलाकारों का ख़ून पी कर, कितनों के घर उजाड़ कर संसार में कलाएँ फूली फलीं, यह शायद कभी किसी ने नहीं सोचा है !

पादरी के बेटे विन्सेन्ट वान गोक का जन्म हालैंड में सन् १८५३ में हुआ था. अगर वह चाहता तो पादरी का पेशा अपना कर काफ़ी शान से रह सकता था. या अपने एक चाचा का, जो फ़ौज में आला अफ़सर था, उसका वारिस बन सकता था. लेकिन वान गोक वारिस बनने के लिये पैदा नहीं हुआ था. वह तो खयालों की दुनिया में रहने वालों, उन्हीं में जीने वालों को नया रास्ता दिखाने और नया संदेसा देने आया था !

१६ बरस की उम्र में वान गोक के बाप ने उसे 'गुपिल्स' की पेरिस वाली दुकान पर भेज दिया. गुपिल्स लन्दन और पेरिस की मशहूर तस्वीरें बेचनेवाली संस्था है. वान गोक का भाई थियो पेरिस वाली गुपिल्स शाख का डायरेक्टर था.

पेरिस में उसने इतनी मेहनत और ईमानदारी से काम किया कि लन्दन भेज दिया गया. लन्दन में विन्सेन्ट का जीवन बहुत

اور اپنے کام میں اُسے ان تصویروں پر پانچ پچیس روپے سے ادھک نہ ملے ۔ اور جب پہلی بار بڑی قیمت میں اُسکی تصویر بکی تو اُسے بڑا اچرج ہوا ۔ خریدار مذاق تو نہیں کر رہا ہے ؟ لیکن بھوکے وان گوک کو کیا پتہ تھا کہ ٥٠ سال بعد اُسکا کوڑی نہ کما سکنے والا چتر دس دس لاکھ ڈالر میں بکے گا ۔ اور جب امریکہ یا انگلینڈ میں ان کی نمائش ہوگی تو اس طرح بھیڑ ہوگی کہ پولیس کو ڈنڈے چلانے پڑینگے ۔ لیکن کتنے کلا کاروں کا خون پی کر، کتنوں کے گھر اُجاڑ کر سنسار میں کلائیں پھولی پھلیں، یہ شاید کبھی کسی نے نہیں سوچا ہے !

پادری کے بیٹے ونسنٹ وان گوک کا جنم ہالینڈ میں سن ١٨٥٣ میں ہوا تھا ۔ اگر وہ چاھتا تو پادری کا پیشہ اپنا کر کافی شان سے رہ سکتا تھا ۔ یا اپنے ایک چاچا کا، جو فوج میں اعلی افسر تھا، اُسکا وارث بن سکتا تھا ۔ لیکن وان گوک وارث بننے کے لئے پیدا نہیں ہوا تھا ۔ وہ تو خیالوں کی دنیا میں رہنے والوں، اُنہیں میں جینے والوں کو نیا راستہ دکھانے اور نیا سندیسہ دینے آیا تھا !

١٦ برس کی عمر میں وان گوک کے باپ نے اُسے 'گوپلس' کی پیرس والی دوکان پر بھیج دیا ۔ گوپلس لندن اور پیرس کی مشہور تصویریں بیچنے والی سنستھا ہے ۔ وان گوک کا بھائی تھیو پیرس والی گوپلس شاخ کا ڈائرکٹر تھا ۔

پیرس میں اُس نے اتنی محنت اور ایمانداری سے کام کیا کہ لندن بھیج دیا گیا ۔ لندن میں ونسنٹ کا جیون بہت

साधारन था और उस में कई दिनों तक कोई परिवर्तन नहीं आया. लेकिन वह ठहरा भावुक और सनकी. लन्दन में अपनी मालकिन की लड़की उर्सुला के प्रेम में पड़ गया. यह लड़की जितनी ख़ूबसूरत और शानदार थी उतनी ही बेरहम और संगदिल थी. उसने वान गोक की मुहब्बत को ठुकरा दिया और उसकी बड़ी हंसी उड़ाई. अमरीका के सबसे बड़े लेखक इर्विंग स्टोन ने अपनी किताब 'लस्ट फ़ार लाइफ़' में इस प्रेम का बड़ा दर्दनाक और सही चित्र खींचा है. विन्सेन्ट उर्सुला के पीछे पागल था. जहाँ उसके पैर पड़ते वह उसी जगह को अपना काबा समझने लगता. जहाँ वह रहती, वही जगह उसके लिये काशी बन जाती. यही नहीं, उसका घर छोड़ देने पर तो वान गोक लन्दन की कड़कड़ाती सर्दी और बर्फ़ में ठिठुरता, फटे जूतों बीस बीस मील पैदल चलकर उर्सुला की एक झलक देख लेने के लिये, उसके घर के बाहर चक्कर काटता. और यह होता सनीचर से, क्यों कि सोमवार की सुबह उसे वापस स्कूल में पहुंचना होता, जहां वह मुलाज़िम था.

इस प्रेम ने उसे पागल बना दिया. मां बाप ने बेटे को घर बुला लिया. लेकिन उसका जी न लगा और वह वापस लन्दन भाग आया. ग़रीबों के मुहल्लों में रह कर पादरी बना और बाइबिल का सही संदेसा सुनाया. उसका भाशन सुन कर लोग भौंचक्के रह जाते. उसकी बेढंगी शक्ल में उन्हें ईसू मसीह के दर्शन होते. पर वह अब भी उर्सुला का सपना देखता था, उसे अब भी नहीं भूला था. अपनी बाइबिल और अपनी उर्सुला—दुनिया में यही दो उसके सहारे

سادھارن تھا اور اُس میں کئی دنوں تک کوئی پریورتن نہیں آیا . لیکن وہ ٹھہرا بھاوک اور سنکی . لندن میں اپنی مالکن کی لڑکی اُرسلا کے پریم میں پڑ گیا . یہ لڑکی جتنی خوبصورت اور شاندار تھی اُتنی ہی بے رحم اور سنگدل تھی . اس نے وان گوک کی محبت کو ٹھکرا دیا اور اُسکی بڑی ہنسی اُڑائی . امریکہ کے سب سے بڑے لیکھک اِرونگ اسٹون نے اپنی کتاب 'لسٹ فار لائف' میں اُس پریم کا بڑا دردناک اور صحیح چتر کھینچا ہے . ونسنٹ اُرسلا کے پیچھے پاگل تھا . جہاں اُسکے پیر پڑتے وہ اُسی جگہ کو اپنا کعبہ سمجھنے لگتا . جہاں وہ رہتی، وہی جگہ اُسکے لئے کاشی بن جاتی . یہی نہیں، اُس کا گھر چھوڑ دینے پر تو وان گوک لندن کی کڑکڑاتی سردی اور برف میں ٹھٹھرتا، پھٹے جوتوں بیس بیس میل پیدل چلکر اُرسلا کی ایک جھلک دیکھ لینے کے لئے، اُسکے گھر کے باہر چکر کاٹتا . اور یہ ہوتا سنیچر سے، کیونکہ سوموار کی صبح اُسے واپس اسکول میں پہنچنا ہوتا جہاں وہ ملازم تھا .

اِس پریم نے اُسے پاگل بنا دیا . ماں باپ نے بیٹے کو گھر بلا لیا . لیکن اُسکا جی نہ لگا اور وہ واپس لندن بھاگ آیا . غریبوں کے محلوں میں رہکر پادری بنا اور بائبل کا صحیح سندیسہ سنایا . اُسکا بھاشن سنکر لوگ بھونچکے رہ جاتے . اُسکی بے ڈھنگی شکل میں اُنھیں یسوع مسیح کے درشن ہوتے . پر وہ اب بھی اُرسلا کا سپنا دیکھتا تھا، اُسے اب بھی نہیں بھولا تھا . اپنی

भी उर्सुला का सपना देखता था, उसे अब भी नहीं भूला था. अपनी बाइबिल और अपनी उर्सुला—दुनिया में यही दो उसके सहारे

वह दूर लन्दन चल देता, अपनी प्रेमिका की एक झलक पा जाने के लिये. एक बार जो पहुंचा तो उर्सुला नई पोशाक में एक नौजवान की बाँह थामे गाड़ी में बैठ रही थी. बाजे बज रहे थे. आज उर्सुला का ब्याह हो गया था. आज वह पराई होगयी थी.

अपनी प्रेमिका की आखिरी झलक देखकर निराश, हताश और भूका प्यासा विन्सेन्ट अपने डेरे की तरफ़ लौट पड़ा. रास्ते में बरफ़ के तूफ़ान ने उसे सड़क पर सुला दिया. लन्दन ने उसका दिल तोड़ दिया था. वह लन्दन से बेल्जियम आ गया. वहाँ के गिरजे में बदली करा ली और दिल में मुहब्बत का दर्द लिये हुए विन्सेन्ट ने ब्रुश सँभाला और मुसव्विर बनने का इरादा किया. अब वह उर्सुला के बजाय कला का पुजारी बन गया. मगर उस वक़्त उसकी तस्वीरें टेढ़ी मेढ़ी भद्दी लकीरों के सिवा और कुछ न होती थीं. कई बरस तक वह निराशा और नाउम्मीदी की हालत में जाता रहा. भूक और बेचैनी की मंज़िलों से गुज़रता रहा.

बेल्जियम में जिस जगह वह रहता था वह कोयले की खानों के क़रीब थी. खान के कामगारों में वह धर्म प्रचार करने जाया करता था. उनकी हालत देखकर वह काँप गया. उसकी नस नस तप उठी. दर्द से दिल भर गया. वह उन्हीं के चित्र बनाने में लग गया. फिर महीनों सोचता रहा और एक दिन उसने बाइबिल फेंक दी. कपड़े बाँट दिये. गिरजा की इमारत को आखिरी सलाम किया और पाव रोटी बनाने वाले एक ग़रीब मज़दूर के घर रहने लगा. यहाँ रहकर वह मज़दूरों की सेवा करता. उनके बच्चों को पढ़ाता,

اُرسلا کا سپنا دیکھتا تھا، اُسے اب بھی نہیں بھولا تھا . ایکی

وہ دور لندن چل دیتا، اپنی پریمیکا کی ایک جھلک پاجانے کے لئے . ایک بار جو پہنچا تو اُرسلا نئی پوشاک میں ایک نوجوان کی بانہہ تھامے گاڑی میں بیٹھ رہی تھی . باجے بج رہے تھے . آج اُرسلا کا بیاہ ہو گیا تھا . آج وہ پرائی ہو گئی تھی .

اپنی پریمیکا کی آخری جھلک دیکھکر نراش، ہتاش اور بھوکا پیاسا ونسنٹ اپنے ڈیرے کی طرف لوٹ پڑا . راستے میں برف کے طوفان نے اُسے سڑک پر سلا دیا . لندن نے اُسکا دل توڑ دیا تھا . وہ لندن سے بلجیم آگیا . وہاں کے گرجے میں بدلی کرالی اور دل میں محبت کا درد لئے ہوئے ونسنٹ نے برش سنبھالا اور مصور بننے کا ارادہ کیا . اب وہ اُرسلا کے بجائے کلا کا پجاری بن گیا . مگر اُس وقت اسکی تصویریں ٹیڑھی میڑھی بھدی لکیروں کے سوا اور کچھ نہ ہوتی تھیں . کئی برس تک وہ نراشا اور نااُمیدی کی حالت میں جیتا رہا . بھوک اور بیچینی کی منزلوں سے گزرتا رہا .

بلجیم میں جس جگہ وہ رہتا تھا وہ کوئلے کی کھانوں کے قریب تھی . کھان کے کامگاروں میں وہ دھرم پرچار کرنے جایا کرتا تھا . اُن کی حالت دیکھکر وہ کانپ گیا . اُسکی نس نس تپ اُٹھی . درد سے دل بھر گیا . وہ اُنھیں کے چتر بنانے میں لگ گیا . پھر مہینوں سوچتا رہا اور ایک دن اُس نے بائبل پھینک دی، کپڑے بانٹ دئے . گرجا کی عمارت کو آخری سلام کیا اور پاؤ روٹی بنانے والے ایک غریب مزدور کے گھر رہنے لگا . یہاں رہکر وہ مزدوروں کی سیوا کرتا . اُنکے بچوں کو پڑھاتا،

रोगियों की दवा करता, बूढ़ों को तसल्ली देता और नंगों को अपने कपड़े उतार कर पहना देता. उसने उन्हें भूक से तड़पते देखा, ठंड में ठिठुरते देखा और बरखा में बे सहारे भीगते देखा. उसे उन्हीं में थरथराता ईसू नज़र आया. वह उन्हीं की तस्वीरें बनाने लगा. अब उसने अपने पास पड़ोस की सच्ची तस्वीरें बनाईं. और जब उसके भाई थियो ने उन्हें देखा तो वह धक से रह गया. थियो कला का बड़ा जानकार और परखैया था. सारे पेरिस में उसकी बड़ी इज्ज़त थी. थियो को विश्वास हो गया कि उसका यह पागल भाई एक न एक दिन दुनिया का महान चित्रकार बनेगा. इसलिये वह निराशा में डूबे विन्सेन्ट को हिम्मत दिलाता रहता. उसके लिये नई नई किताबें, रंग और कपड़े भेजता, रुपया पैसा भेजता और उसे सलाह देता. उसके काम की आलोचना भी करता. पागल कलाकार की ऐसी सहायता करने से घर और बाहर वाले, जान पहचान वाले सब थियो से नाराज़ हो गए. पर थियो तो भविष्य की एक बड़ी से बड़ी हस्ती की सेवा कर रहा था, उसने लोगों की बातों पर ज़रा भी ध्यान न दिया. अगर भाई हो तो लछमन के बाद थियो जैसा हो !

भोर के चक्कर में विन्सेन्ट वान गोक अपनी रोटी मजदूरों में बाँट आता, पैसा दे आता और खुद भूका ही काम में लग जाता. उसकी इस भलाई ने, भूक और सरदी ने उसका बदन तोड़ दिया.

روگیوں کی دوا کرتا، بوڑھوں کو تسلی دیتا اور ننگوں کو اپنے کپڑے اُتار کر پہنا دیتا ۔ اُس نے اُنھیں بھوک سے تڑپتے دیکھا، ٹھنڈ میں ٹھٹھرتے دیکھا اور برکھا میں بے سہارے بھیگتے دیکھا ۔ اُسے انھیں میں تھر تھراتا یسوع نظر آیا ۔ وہ اُنھیں کی تصویریں بنانے لگا ۔ اب اُس نے اپنے پاس پڑوس کی سچی تصویریں بنائیں، اور جب اُسکے بھائی تھیو نے اُنھیں دیکھا تو وہ دھک سے رہ گیا ۔ تھیو کلا کا بڑا جانکار اور پرکھیا تھا ۔ سارے پیرس میں اُسکی بڑی عزت تھی ۔ تھیو کو وشواس ہوگیا کہ اُسکا یہ پاگل بھائی ایک نہ ایک دن دنیا کا مہان چترکار بنے گا اِسلئے وہ نراشا میں ڈوبے ونسنٹ کو ہمت دلاتا رہتا ۔ اُسکے لئے نئی نئی کتابیں، رنگ اور کپڑے بھیجتا، روپیہ پیسہ بھیجتا اور اُسے صلاح دیتا ۔ اُسکے کام کی آلوچنا بھی کرتا ۔ پاگل کلاکار کی ایسی سہایتا کرنے سے گھر اور باہر والے، جان پہچان والے سب تھیو سے ناراض ہو گئے ۔ پر تھیو تو بھوشیہ کی ایک بڑی سے بڑی ہستی کی سیوا کر رہا تھا ۔ اُس نے لوگوں کی باتوں پر ذرا بھی دھیان نہ دیا ۔ اگر بھائی ہو تو لچھمن کے بعد تھیو جیسا ہو !

بھور کے چکر میں ونسنٹ وان گوک اپنی روٹی مزدوروں میں بانٹ آتا، پیسے دے آتا اور خود بھوکا ہی کام میں لگ جاتا ۔ اُس کی اِس بھلائی نے، بھوک اور سردی نے اُس کا بدن توڑ دیا ۔

दुनिया माँग रही हैं. उसे ऐसा संसार चाहिये जिसमें लूट खसोट, डर, भूक और अन्याय न हो. उसने भाई को लिखा—"मैं इनसानों के बीच रह रहा हूँ, उन्हीं के लिये जी रहा हूँ. महान कलाकार मसीह ने भी तो यही किया था." इस तरह उसे भरोसा था कि उसके चित्र चाहे बहुत सुहावने और लुभावने न हों, चाहे वह मामूली दरजे के हों पर उनमें एक ऐसी आवाज जरूर होगी जिसे सुनने के लिये दुनिया एक दिन मजबूर हो जायगी.

विन्सेन्ट बेल्जियम में बहुत बीमार हो गया. घर वाले अपने साथ उसे ले गए. पर वहाँ अकेले उसका जी बेचैन रहने लगा. वह दिन भर बाहर भटकता, खेतों की मेड़ों पर बैठ कर धान के चित्र बनाता. किसानों को देखता, उनके जीवन को और उनकी कठिनाइयों को देखता, उनकी मदद करता और उन्हीं का सा जीवन बिताता. उसने जैसा देखा, हूबहू तस्वीर में उतार दिया.

उन्हीं दिनों उसकी मौसी की एक लड़की विधवा होकर अपने बच्चे को लिये उसके यहाँ आ गई थी. दोनों दुखियों का मन मिल गया. दोनों साथ साथ घूमते. वह दिन भर उसे जंगलों में चित्र बनाते देखती. लड़की कलाकार के मन में बस गई. कलाकार ने एक दिन उसे बाजुओं में कस कर गले से लगा लिया. वह लड़की अपने बच्चे को छाती से चिमटाए, भरे खेतों में से पागलों की तरह दौड़ती अपने घर आई और बंद कमरे में घन्टों रोती रही. मां बाप ने अपनी लड़की के अपमान पर विन्सेन्ट को बहुत बुरा भला कहा. विन्सेन्ट को भी दुख हुआ, पछतावा हुआ, मगर उसकी समझ में यह बात

دنیا مانگ رہی ہے۔ اُسے ایسا سنسار چاہئے جس میں لوٹ گھسوٹ، ڈر، بھوک اور انیائے نہ ہو۔ اُس نے بھائی کو لکھا—"میں انسانوں کے بیچ رہ رہا ہوں، اُنھیں کے لئے جی رہا ہوں۔ مہان کلاکار مسیح نے بھی تو یہی کیا تھا۔" اِس طرح اُسے بھروسہ تھا کہ اُس کے چتر چاہے بہت سہاونے اور لبھاونے نہ ہوں، چاہے وہ معمولی درجے کے ہوں پر اُن میں ایک ایسی آواز ضرور ہوگی جسے سننے کے لئے دنیا ایک دن مجبور ہو جائیگی۔

ونسنٹ بلجیم میں بہت بیمار ہوگیا۔ گھر والے اپنے ساتھ اُسے لے گئے۔ پر وہاں اکیلے اُس کا جی بے چین رہنے لگا۔ وہ دن بھر باہر بھٹکتا، کھیتوں کی مینڈوں پر بیٹھکر دھان کے چتر بناتا۔ کسانوں کو دیکھتا، اُن کے جیون کو اور اُن کی کٹھنائیوں کو دیکھتا، اُن کی مدد کرتا اور اُنھیں کا سا جیون بتاتا۔ اُسنے جیسا دیکھا، ہو بہو وہی تصویر میں اُتار دیا۔

اُنھیں دنوں اُسکی موسی کی ایک لڑکی ودھوا ہوکر اپنے بچے کو لئے اس کے یہاں آگئی تھی۔ دونوں دکھیوں کا من مل گیا۔ دونوں ساتھ ساتھ گھومتے۔ وہ دن بھر اُسے جنگلوں میں چتر بناتے دیکھتی۔ لڑکی کلاکار کے من میں بس گئی۔ کلاکار نے ایک دن اُسے بازوؤں میں کس کر گلے سے لگا لیا۔ وہ لڑکی اپنے بچے کو چھاتی سے چمٹائے، بھرے کھیتوں میں سے پاگلوں کی طرح دوڑتی اپنے گھر آئی اور بند کمرے میں گھنٹوں روتی رہی۔ ماں باپ نے لڑکی کے اپمان پر ونسنٹ کو بہت برا بھلا کہا۔ ونسنٹ کو بھی دکھ ہوا، پچھتاوا ہوا مگر اُسکی سمجھ میں یہ بات

न आई कि उससे क्या ग़लती हुई है ? उसे तो अब भी विश्वास था कि लड़की उससे मुहब्बत करती है.

लड़की अपने पिता के घर लौट गई. विन्सेन्ट भी पहुँच गया. वहाँ उसके मौसा ने अपनी लड़की से न मिलने देने की निगरानी रक्खी. जब विन्सेन्ट को यह मालूम हुआ तो वह आग बबूला हो गया. विन्सेन्ट ने लड़की के बाप से मिल कर शादी की बात की. मगर उसे जवाब मिला कि तू भिकमंगा हो कर इतने बड़े पादरी की बेटी से ब्याह कैसे कर सकता है ? वह बहुत बड़े ज़मींदार के घर जा रही है. पागल हो कर विन्सेन्ट लौट आया. लेकिन उसने कुछ सोच कर फिर मौसा का दरवाज़ा खटखटाया. वहाँ नौकरानी ने घर में घुसने से मना किया. विन्सेन्ट उसे ढकेल कर अन्दर चला गया और देखा कि काली पोशाक वाली एक छाया एक तरफ़ छिप गई है. लड़की के बाप ने विन्सेन्ट को बहुत बुरा भला कहा लेकिन विन्सेन्ट अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और बोला कि मुझे एक बार उस से मिल लेने दो. बाप ने पिस्तौल निकाल लिया और विन्सेन्ट ने क़मीज़ के बटन खोल कर सीना तान दिया. मगर उसी समय उसकी मौसी बीच में आ गई. विन्सेन्ट बोला—"कहो कि नहीं मिलने देंगे." और उसने अपना हाथ जलते हुए बड़े लैम्प पर धर दिया. चमड़ा जला, माँस जला, हड्डी जलने लगी मगर न तो मौसा पिघला और न विन्सेन्ट ही पीछे हटा. आख़िर मौसी ने लैम्प को ढकेल दिया और नौकरों ने विन्सेन्ट को सड़क पर फेंक दिया.

نہ آئی کہ اُس سے کیا غلطی ہوئی ہے ؟ اُسے تو اب بھی وشواس تھا کہ لڑکی اُس سے محبت کرتی ہے ۔

لڑکی اپنے پتا کے گھر لوٹ گئی ۔ ونسنٹ بھی پہنچ گیا ۔ وہاں اُسکے موسا نے اپنی لڑکی سے نہ ملنے دینے کی نگرانی رکھی ۔ جب ونسنٹ کو یہ معلوم ہوا تو وہ آگ ببولا ہوگیا ۔ ونسنٹ نے لڑکی کے باپ سے ملکر شادی کی بات کی ۔ مگر اُسے جواب ملا کہ تو بھک منگا ہو کر اِتنے بڑے پادری کی بیٹی سے بیاہ کیسے کر سکتا ہے ؟ وہ بہت بڑے زمیندار کے گھر جا رہی ہے ۔ پاگل ہوکر ونسنٹ لوٹ آیا ۔ لیکن اُس نے کچھ سوچ کر پھر موسا کا دروازہ کھٹکھٹایا ۔ وہاں نوکرانی نے گھر میں گھسنے سے منع کیا ۔ ونسنٹ اُسے ڈھکیل کر اندر چلا گیا اور دیکھا کہ کالی پوشاک والی ایک چھایا ایک طرف چھپ گئی ہے ۔ لڑکی کے باپ نے ونسنٹ کو بہت برا بھلا کہا لیکن ونسنٹ اپنی ضد پر اڑا رہا اور بولا کہ مجھے ایک بار اُس سے مل لینے دو ۔ باپ نے پستول نکال لیا اور ونسنٹ نے قمیض کے بٹن کھول کر سینہ تان دیا مگر اُسی سمے اُسکی موسی بیچ میں آگئی ۔ ونسنٹ بولا —''کہو کہ نہیں ملنے دینگے ۔'' اور اُسنے اپنا ہاتھ جلتے ہوئے لیمپ پر دھر دیا ۔ چمڑا جلا' ماس جلا' ہڈی جلنے لگی مگر نہ تو موسا پگھلا اور نہ ونسنٹ ہی پیچھے ہٹا ۔ آخر موسی نے لیمپ کو ڈھکیل دیا اور نوکروں نے ونسنٹ کو سڑک پر پھینک دیا ۔

दिया. चमड़ी जली, मांस जला, हड्डी जलने लगी मगर न तो मौसी पिघली और न विन्सेन्ट ही पीछे हटा. आखिर मौसी ने लैम्प को ठंडा किया और नौकरों ने विन्सेन्ट को सड़क पर फेंक दिया.

भर उसके ख़िलाफ़ थी. उसके चित्रों का लोग मज़ाक़ उड़ाते. उसे पागल और सनकी कहकर मारते पीटते. बच्चे पत्थर और ढेले फेंकते. लोग उसे ठगते. फिर भी भूक का यह कारीगर अपनी तपस्या में लगा रहा. वह इनसान की ज़िन्दगी को समझने की कोशिश कर रहा था. वह वर्ग भेद और भूक के ख़िलाफ़ लड़ रहा था. अपनी तस्वीरों को गिरे हुओं की आवाज़ बना रहा था. पर उस आवाज़ को कौन सुनता ? पत्थर को पिघला देने वाले उसके चित्र अभी संगदिल इनसान को पिघला देने वाले नहीं बने थे. और जिनके दिल पिघले थे वह चन्द ही थे.

विन्सेन्ट एन्टवर्प चला आया. आधी रोटी खाकर, भाई के भेजे हुए पैसों में से कुछ बचाकर अपनी तस्वीरों के माडल के लिये लोगों को कुछ दे कर सामने बिठाता. उनके चित्र खींचता. इस तरह वह चित्रकला की साधना करता रहा.

एन्टवर्प में ५ बच्चों वाली, चेचक भरे मुँह की एक वेश्या से विन्सेन्ट की दोस्ती हो गई. इस समय उसके पेट में बच्चा था. वह आवारा, शराबी और बदचलन होते हुए भी नेक और सीधी थी. उसके जीवन में कहीं छल कपट और धोका नहीं था. वह वेश्या इसलिये थी कि उसके ५ बच्चे थे. कुटुम्ब था, मां और भाई थे. विन्सेन्ट का हृदय सागर इस औरत की दशा देखकर महीनों तक ज्वार उठाता रहा. वह पागल हो गया, परेशान हो गया. उसी में उसे दुनिया की सताई हुई, ठुकराई हुई और सदियों से कुचली हुई औरत के दर्शन हुए. विन्सेन्ट ने उसे अन्नपूर्णा माना और उसकी सेवा में लग

४

آخر موسی نے لیمپ کو ٹھنڈا کیا اور نوکروں نے ونسنٹ کو سڑک پر پھینک دیا ۔

بھر اُس کے خلاف تھی ۔ اُسکے چتروں کا لوگ مذاق اُڑاتے ۔ اُسے پاگل اور سنکی کہہ کر مارتے پیٹتے ۔ بچے پتھر اور ڈھیلے پھینکتے ۔ لوگ اُسے ٹھگتے ۔ پھر بھی بھوک کا یہ کاریگر اپنی تپسیا میں لگا رہا ۔ وہ انسان کی زندگی کو سمجھنے کی کوشش کر رہا تھا ۔ وہ ورگ بھید اور بھوک کے خلاف لڑ رہا تھا ۔ اپنی تصویروں کو گرے ہوؤں کی آواز بنا رہا تھا ۔ پر اُس آواز کو کون سنتا ؟ پتھر کو پگھلا دینے والے اُس کے چتر ابھی سنگدل انسان کو پگھلا دینے والے نہیں بنے تھے ۔ اور جنکے دل پگھلے تھے وہ چند ھی تھے ۔

ونسنٹ اینٹ ورپ چلا آیا ۔ آدھی روٹی کھاکر، بھائی کے بھیجے ہوئے پیسوں میں سے کچھ بچا کر اپنی تصویروں کے ماڈل کے لئے لوگوں کو کچھ دے کر سامنے بٹھاتا ۔ اُن کے چتر کھینچتا ۔ اِس طرح وہ چتر کلا کی سادھنا کرتا رہا ۔

اینٹ ورپ میں ۵ بچوں والی، چیچک بھرے منہ کی ایک ویشیا سے ونسنٹ کی دوستی ہوگئی ۔ اس سمے اُسکے پیٹ میں بچہ تھا ۔ وہ آوارہ، شرابی اور بدچلن ہوتے ہوئے بھی نیک اور سیدھی تھی ۔ اُسکے جیون میں کہیں چھل کپٹ اور دھوکا نہیں تھا ۔ وہ ویشیا اِس لئے تھی کہ اُسکے ۵ بچے تھے، کٹمب تھا، ماں اور بھائی تھے ۔ ونسنٹ کا ہردے ساگر اس عورت کی دشا دیکھکر مہینوں تک جوار اُٹھاتا رہا ۔ وہ پاگل ہوگیا، پریشان ہوگیا ۔ اُسی میں اُسے دنیا کی ستائی ہوئی، ٹھکرائی ہوئی اور صدیوں سے کچلی ہوئی عورت کے درشن ہوئے ۔ ونسنٹ نے اُسے اَن پورنا مانا اور اُسکی سیوا میں لگ

कर अपने को भूल गया. दोनों एक हो गए. उसे भी जैसे ईश्वर ने इसी के लिये भेजा था. बाद में विन्सेन्ट ने उसे अपने स्टुडियो में रख लिया. अस्पताल में उसके बच्चा पैदा हुआ.

इस औरत ने हालाँकि वान गोक की बड़ी सेवा की और हालाँकि वान गोक ने उसकी बहुत पूजा की, पर इस औरत का स्वभाव बहुत सख्त था, और अब भी वह अपने आवारापन से बाज़ न आती थी. अब भी गाली गलौज और वेश्या पन को उसने तलाक़ नहीं दिया था. विन्सेन्ट कई तरह की परेशानियों में पड़ गया. वह बीमार हो गया और उसका भाई आकर उसे ले गया.

इस औरत को अपनी तस्वीर "वेदना" में उसने अमर कर दिया है और तस्वीर के नीचे लिखा है—"क्या कारन है कि एक औरत इस तरह अकेली और ठुकराई हुई है ?"

और विन्सेन्ट ने बताया—"मेरा जीवन बेकार है, लेकिन मैं सबमें इनसानियत को महसूस कर रहा हूँ."

और थियो जब एन्टवर्प आया और विन्सेन्ट के स्टुडियो में दाखिल हुआ तो उसके अचरज की सीमा न रही कि पेरिस में रहने वाले इस मशहूर डायरेक्टर और गुपिलस के हिस्सेदार का भाई किस बुरे हाल में जी रहा है. विन्सेन्ट का चेहरा सूख गया है. आँखें गढ़ों में धँस चुकी हैं. घर में खाने को कुछ नहीं है. बदन पर कपड़े चिथड़े हो कर लटक रहे हैं. और वह फिर भी नई दुनिया

کر اپنے کو بھول گیا . دونوں ایک ہوگئے . اُسے بھی جیسے ایشور نے اِسی کے لئے بھیجا تھا . بعد میں ونسنٹ نے اُسے اپنے اسٹوڈیو میں رکھ لیا . اسپتال میں اُس کے بچہ پیدا ہوا .

اِس عورت نے حالانکہ وان گوک کی بڑی سیوا کی اور حالانکہ وان گوک نے اُسکی بہت پوجا کی ' پر اس عورت کا سوبھاؤ بہت سخت تھا ' اور اب بھی وہ اپنے آوارہ پن سے باز نہ آتی تھی . اب بھی گالی گلوج اور ویشیاپن کو اُسنے طلاق نہیں دیا تھا . ونسنٹ کئی طرح کی پریشانیوں میں پڑ گیا . وہ بیمار ہو گیا اور اُسکا بھائی آکر اُسے لے گیا .

اس عورت کو اپنی تصویر ''ویدنا'' میں اُسنے امر کردیا ہے اور تصویر کے نیچے لکھا ہے — ''کیا کارن ہے کہ ایک عورت اِس طرح اکیلی اور ٹھکرائی ہوئی ہے ؟''

اور ونسنٹ نے بتایا — ''میرا جیون بیکار ہے ' لیکن میں سب میں انسانیت کو محسوس کر رہا ہوں .''

اور تھیو جب اینٹ ورپ آیا اور ونسنٹ کے اسٹوڈیو میں داخل ہوا تو اُسکے اچرج کی سیما نہ رہی کہ پیرس میں رہنے والے اِس مشہور ڈائریکٹر اور گوپلس کے حصے دار کا بھائی کس برے حال میں جی رہا ہے . ونسنٹ کا چہرہ سوکھ گیا ہے ' آنکھیں گڑھوں میں دھنس چکی ہیں . گھر میں کھانے کو کچھ نہیں ہے . بدن پر کپڑے چیتھڑے ہوکر لٹک رہے ہیں اور وہ پھر بھی نئی دنیا اور

श्राँखें गड्ढों में धँस चुकी हैं. घर में खाने को कुछ नहीं है. बदन पर कपड़े चिथड़े हो कर लटक रहे हैं. और वह फिर भी नई दुनिया

थियो बाजार गया. अच्छे कपड़े और खाना लाया. उसे नहला कर कपड़े पहनाए. गरम खाना खिलाया और सोने जाने का हुक्म दिया. विन्सेन्ट को कुछ राहत मिली.

थियो उसे पेरिस ले आया और उसे अपने ही पास रखा ताकि उसकी अच्छी तरह देख भाल कर सके. पेरिस में थियो विन्सेन्ट को लोगों से मिलाता. जिनमें बड़े बड़े कलाकर—पिसारो, लावत्रेक, स्युरेत और कहानी कार एमली ज़ोला और उसके चेले मोपासाँ थे. यह वही आजाद और मस्त नौजवान थे जिन्होंने अपनी कहानियों में उन पात्रों को जगह दी थी जिन्हें दुनिया में कहीं ठिकाना न था. अपने समय के पेरिस ने उन्हें ठुकराया और उनका मजक़ उड़ाया. लेकिन कुछ ही बरस के बाद सारी दुनिया उन्हें खोजती हुई आई और उनका नाम लेकर अपने को धन्य समझने लगी. सचाई पसन्दों का यह सारा गिरोह भूकों मरता था. पागल और सनकी समझा जाता था. लेकिन यह सब कुछ समझने वालों को क्या मालूम था कि आने वाले समय के महान कलाकर यही लोग माने जाएंगे.

इन दिनों विन्सेन्ट के उत्साह का ठिकाना नहीं था, उसे हिम्मत बंधी. मन की झिझक दूर हो गई. बरसों की तपस्या अब बरदान पाने वाली थी. उसे अपनी कला का मोल देने वालों की नहीं, मोल आँकने वालों की जरूरत थी. नए आत्म विश्वास ने विन्सेन्ट में नई जान फूँक दी. थियो की मदद से उसने पेरिस के शोर गुल से दूर, आर्लेस में नया मकान लिया. 'लाइट हाउस' (रोशनी का घर) उसका नाम रखा. उसको सजा संवार कर उसे अपना स्टुडियो बनाया, "मुझे अब फिर से सब काम शुरू करना चाहिये." और

میں دھنس چکی ھیں . گھر میں کھانے کو کچھ نہیں ہے . بدن پر کپڑے چیتھڑے ھوکر لٹک رہے ھیں اور وہ پھر بھی نئی دنیا اور

تھیو بازار گیا . اچھے کپڑے اور کھانا لایا . اُسے نہلا کر کپڑے پہنائے . گرم کھانا کھلایا اور سونے جانے کا حکم دیا . ونسنٹ کو کچھ راحت ملی .

تھیو اُسے پیرس لے آیا اور اُسے اپنے ھی پاس رکھا تاکہ اُسکی اچھی طرح دیکھ بھال کر سکے . پیرس میں تھیو ونسنٹ کو لوگوں سے ملاتا . جن میں بڑے بڑے کلاکار—پسارو، لاوتریک، سیوریت اور کہانی کار ایملی زولا اور اُسکے چیلے موپاساں تھے . یہ وہی آزاد اور مست نوجوان تھے جنھوں نے اپنی کہانیوں میں اُن پاتروں کو جگہ دی تھی جنھیں دنیا میں کہیں ٹھکانا نہ تھا . اپنے سمے کے پیرس نے اُنھیں ٹھکرایا اور ان کا مذاق اُڑایا . لیکن کچھ ھی برس کے بعد ساری دنیا اُنھیں کھوجتی ھوئی آئی اور اُن کا نام لے کر اپنے کو دھنیہ سمجھنے لگی . سچائی پسندوں کا یہ سارا گروہ بھوکوں مرتا تھا . پاگل اور سنکی سمجھا جاتا تھا . لیکن یہ سب کچھ سمجھنے والوں کو کیا معلوم تھا کہ آنے والے سمے کے مہان کلاکار یہی لوگ مانے جائینگے .

ان دنوں ونسنٹ کے اُتساہ کا ٹھکانہ نہیں تھا . اُسے ھمت بندھی . من کی جھجھک دور ھو گئی . برسوں کی تپسیا اب بردان پانے والی تھی . اُسے اپنی کلا کا مول دینے والوں کی نہیں، مول آنکنے والوں کی ضرورت تھی . نئے آتم وشواس نے ونسنٹ میں نئی جان پھونک دی . تھیو کی مدد سے اُسنے پیرس کے شورغل سے دور، آرلس میں نیا مکان لیا . 'لائٹ ھاؤس' (روشنی کا گھر) اُسکا نام رکھا . اُسکو سجا سنوار کر اُسے اپنا اسٹوڈیو بنایا ، "مجھے اب پھر سے سب کام شروع کرنا چاھئے ." اور

वह रात दिन तस्वीरें बनाने लगा. उसका मन प्रसन्न था. एक के बाद एक सैकड़ों तस्वीरें उसने बनाईं. कड़ी धूप और भूके पेट भी उसने अपना ब्रुश नहीं रोका. रेखाएँ काग़ज़ पर इनसान और पौदों की शक्ल बनाती रहीं और रंग पाकर बोलने लगीं. अब उसका सपना काग़ज़ और कैनवस पर सही सही उतर रहा था. अब उसकी तस्वीर के पात्र ठीक वैसे ही थे जैसे चलते फिरते आदमी. उसके बनाए धान के खेत, आलू, फूल और चिड़ियाँ बिलकुल क़ुदरती मालूम होती थीं. दोनों में रंग था. दोनों में उड़ान थी और एक हमेशा गूँजने वाली ज़िन्दगी की जीत की आवाज़ थी.

आर्लेस में विन्सेन्ट ने अपने एक दोस्त गागिन को बुला लिया. गागिन भी एक मशहूर चित्रकार था लेकिन वह पूरा पागल था. उसके असर ने विन्सेन्ट को बड़ी हानि पहुँचाई. दोनों चित्रकार थे. साथ ही रहते और तस्वीरें बनाते. खाते पीते और उठते, बैठते लड़ते झगड़ते और हँसते! गागिन के जीवन का वेश्याओं से गहरा सम्बध था. पेरिस की सैकड़ों वेश्याएँ उसे जानती थीं. जब विन्सेन्ट उससे पहला बार मिला तो गागिन के कमरे में इतनी लड़कियाँ थीं कि विन्सेन्ट अचरज से बुत बना खड़ा रह गया. कुछ भी हो, गागिन पहुँचा हुआ आदमी था. उसने वेश्या जीवन के जो चित्र खींचे, वह तड़पा देने वाले हैं.

وہ رات دن تصویریں بنانے لگا ۔ اُسکا من پرسن تھا ۔ ایک کے بعد ایک سیکڑوں تصویریں اُسنے بنائیں. کڑی دھوپ اور بھوکے پیٹ بھی اُسنے اپنا برش نہیں روکا. ریکھائیں کاغذ پر انسان اور پودوں کی شکلیں بناتی رہیں اور رنگ پاکر بولنے لگیں ۔ اب اُس کا سپنا کاغذ اور کینوس پر صحیح صحیح اُتر رہا تھا ۔ اب اُسکی تصویر کے پاتر ٹھیک ویسے ہی تھے جیسے چلتے پھرتے آدمی ۔ اُسکے بنائے دھان کے کھیت، آلو، پھول اور چڑیاں بالکل قدرتی معلوم ہوتی تھیں ۔ دونوں میں رنگ تھا، دونوں میں اُڑان تھی اور ایک ہمیشہ گونجنے والی زندگی کی جیت کی آواز تھی ۔

آرلس میں ونسنٹ نے اپنے ایک دوست گاگن کو بلایا لیا ۔ گاگن بھی ایک مشہور چترکار تھا لیکن وہ پورا پاگل تھا ۔ اُسکے اثر نے ونسنٹ کو بڑی ہانی پہنچائی ۔ دونوں چترکار تھے ۔ ساتھ ہی رہتے اور تصویریں بناتے ۔ کھاتے پیتے اور اُٹھتے بیٹھتے، لڑتے جھگڑتے اور ہنستے! گاگن کے جیون کا ویشیاؤں سے گہرا سمبندھ تھا ۔ پیرس کی سیکڑوں ویشیائیں اُسے جانتی تھیں ۔ جب ونسنٹ اُس سے پہلی بار ملا تو گاگن کے کمرے میں اتنی لڑکیاں تھیں کہ ونسنٹ اچرج سے بت بنا کھڑا رہ گیا ۔ کچھ بھی ہو، گاگن پہنچا ہوا آدمی تھا ۔ اُسنے ویشیا جیون کے جو چتر کھینچے، وہ تڑپا دینے والے ہیں ۔

आर्लेस की एक वेश्या से गागिन के ज़रिये विन्सेन्ट का परिचय

آرلس کی ایک ویشیا سے گاگن کے ذریعے ونسنٹ کا پریچے ہوا ۔

खींचे, वह तड़पा देने वाले हैं.

आर्लेस की एक वेश्या से गागिन के ज़रिये विन्सेन्ट का परिचय

मूरत बसाली. वेश्याओं के घर जाने वाला विन्सेन्ट गागिन की तरह खुश रहने नहीं जा रहा था. वह बड़ा गंभीर था. ज़िन्दगी की तहें उसके सामने खुलती जा रही थीं और उसके सामने खड़ी होकर अपना सही रूप दिखाते हुए अपना बयान देती जा रही थीं.

ऐसे समय, बड़े दिन का त्योहार आ गया. लड़की हमेशा विन्सेन्ट के दाहिने कान की तारीफ़ किया करती थी, बोली कि बड़े दिन के उपहार में यह कान मुझे दे देना.

विन्सेन्ट सच्चा प्रेमी था. उसके जीवन में, कहीं छल कपट को जगह ही नहीं थी. बड़े दिन की सुबह को ही वह अपने हाथों में कटा कान लिये हुए प्रेमिका के घर जा पहुंचा. वह देखकर एक दम पीछे हट गई, चीख़ उठी. उसने एक मामूली आदमी से नहीं एक महात्मा से मज़ाक़ किया था.

आर्लेस में वान गोक ने जो कई चित्र बनाए उनमें से एक दाढ़ी वाले डाकिये रूलिन का चित्र मशहूर है. रूलिन, विन्सेन्ट का बड़ा मददगार था. वह हर माह उसके मनीआर्डर लाता, उसकी सेवा करता और उसे बचाता. लाइट हाउस की बूढ़ी मालकिन को भी उसने चित्रों में संजीवनी बूटी खिलाई है. आर्लेस में ही चाँदनी रातों में घूम घूम कर उसने "चाँदनी में साइप्रस" के ऊँचे पेड़ों वाले चित्र खींचे. इन चित्रों में 'सूरजमुखी,' 'जूतों का जोड़ा' 'लहराते खेत जिनपर कौए उड़ रहे हैं' 'क्रूसीफ़िकेशन' वग़ैरा बहुत मशहूर हुए हैं. वह कहता था—"मैं, अपने घर में पालना झुलाती माओं और लहरों में नाव खेते माँझियों के चित्र बनाऊंगा. पिछड़े हुए और कुचले हुए लोगों के

ھیں .

آرلس کی ایک ویشیا سے گاگن کے ذریعے ونسنت کا پریچے ھوا .

مورت بسالي. ویشیاؤں کے گھر جانے والا ونسنت گاگن کی طرح خوش رھنے نہیں جا رھا تھا . وہ بڑا گمبھیر تھا . زندگی کي تہیں اُسکے سامنے کھلتی جا رھی تھیں اور اُسکے سامنے کھڑي ھو کر اپنا صحیح روپ دکھاتے ھوئے اپنا بیان دیتی جا رھی تھیں .

ایسے سمے' بڑے دن کا تیوھار آگیا . لڑکی ھمیشہ ونسنت کے داھنے کان کی تعریف کیا کرتی تھی' بولي کہ بڑے دن کے اُپہار میں یہ کان مجھے دیدینا .

ونسنت سچا پریمي تھا . اُسکے جیون میں کہیں چھل کپٹ کو جگہ ھی نہیں تھی . بڑے دن کی صبح کو ھی وہ اپنے ھاتھوں میں کٹا کان لئے ھوئے پریمیکا کے گھر جا پہنچا . وہ دیکھکر ایک دم پیچھے ھٹ گئی' چیخ اُٹھي . اُسنے ایک معمولی آدمی سے نہیں ایک مہاتما سے مذاق کیا تھا .

آرلس میں وان گوک نے جو کئی چتر بنائے اُن میں سے ایک داڑھی والے ڈاکئے رولن کا چتر مشہور ھے . رولن' ونسنت کا بڑا مددگار تھا . وہ ھر ماہ اُسکے منی آرڈر لاتا' اُسکی سیوا کرتا اور اُسے بچاتا . لائٹ ھاؤس کی بوڑھی مالکن کو بھی اُسنے چتروں میں سنجیونی بوٹي کھلائی ھے . آرلس میں ھی چاندنی راتوں میں گھوم گھوم کر اُسنے ''چاندنی میں سائپرس'' کے اونچے پیڑوں والے چتر کھینچے . ان چتروں میں 'سورج مکھی' 'جوتوں کا جوڑا' 'لھراتے کھیت جن پر کوے اُڑ رھے ھیں' 'کروسیفکیشن' وغیرہ بہت مشھور ھوئے ھیں . وہ کہتا تھا—''میں' اپنے گھر میں پالنا جھلاتی ماؤں اور لھروں میں ناؤ کھیتے مانجھیوں کے چتر بناؤں گا . پچھڑے ھوئے اور کچلے ھوئے لوگوں کے

चित्र बनाना मुझे ज्यदा पसंद है. लम्बे कपड़े पहने बच्चों को मैं अपना देवता मानता हूँ." वह बूढ़ियों और कुंआरियों के चित्र खींचने में बहुत होशियार था, जिनके लिये उसने कहा था—"बूढ़ियों के चेहरे धूल भरी घास की तरह नुकीले हैं और जवान लड़कियाँ, जो खेतों की तरह ताज़ा हैं और जिनकी हर एक रेखा अछूती और कुँआरी है."

वान गोक के यह चित्र साधारन नहीं हैं, बल्कि बहुत ही ऊँचे दरजे के चित्र हैं, जिन में जान है. इन तस्वीरों की 'धरती' अपनी कहानी कहती है. इनका 'फूल' डाली पर लहराता मालूम होता है. 'खेत का धान' जीवन की अमरता का संदेस देता है. आँधी पानी के चित्रों में, 'बिजलियाँ' कुछ कहती हैं. उनमें अजीब जादू और विचित्र मोहिनी है. उसने इनसानी शकल सूरत की ऊपरी रेखाएं खींच कर रंग रोग़न नहीं भर दिया, बल्कि उसके दिल, दिमाग़ और कलेजे भी काग़ज़ पर उतार दिये. उसने यह भी बता दिया कि उसके चित्र का माडल क्या सोच रहा है, क्या कर रहा है, क्या कहना चाहता है और क्या माँग रहा है.

टाल्स्टाय और डिकेन्स की तरह विन्सेन्ट का विश्वास था कि कला का कुछ मक़सद होना चाहिये. उसका कोई निश्चित संदेस होना चाहिये. कला सिर्फ़ नैतिक उपदेशों का ढाँचा या उनसे भरा बोझ नहीं है. उसने उस सच्चे धर्म और पाक मज़हब पर विश्वास किया जो दुनिया में, सम्पूर्न मानवता में रोशन है. उसने साम्यवादी संसार का सपना ही नहीं देखा, अपने जीवन में उसके बुनियादी

چتر بنانا مجھے زیادہ پسند ہے ۔ لمبے کپڑے پہنے بچوں کو میں اپنے دیوتا مانتا ہوں ." وہ بوڑھیوں اور کنواریوں کے چتر کھینچنے میں بہت ہوشیار تھا ' جنکے لئے اُسنے کہا تھا—"بوڑھیوں کے چہرے دھول بھری گھاس کی طرح نوکیلے ہیں اور جوان لڑکیاں ' جو کھیتوں کی طرح تازہ ہیں اور جنکی ہر ایک ریکھا اچھوتی اور کنواری ہے ."

وان گوک کے یہ چتر سادھارن نہیں ہیں ' بلکہ بہت ہی اونچے درجے کے چتر ہیں ' جن میں جان ہے ۔ ان تصویروں کی 'دھرتی' اپنی کہانی کہتی ہے ۔ ان کا 'پھول' ڈالی پر لہراتا معلوم ہوتا ہے ۔ 'کھیت کا دھان' جیون کی امرتا کا سندیس دیتا ہے ۔ آندھی پانی کے چتروں میں 'بجلیاں' کچھ کہتی ہیں ۔ اُن میں عجیب جادو اور وچتر موہنی ہے ۔ اُسنے انسانی شکل صورت کی اوپری ریکھائیں کھینچ کر رنگ روغن نہیں بھر دیا بلکہ اُسکے دل ' دماغ اور کلیجے بھی کاغذ پر اُتار دیئے ۔ اُس نے یہ بھی بتا دیا کہ اُس کے چتر کا ماڈل کیا سوچ رہا ہے ' کیا کر رہا ہے ' کیا کہنا چاہتا ہے اور کیا مانگ رہا ہے ۔

ٹالسٹائے اور ڈیکنس کی طرح ونسنٹ کا وشواس تھا کہ کلا کا کچھ مقصد ہونا چاہئے ' اُسکا کوئی نشچت سندیس ہونا چاہئے ۔ کلا صرف نیتک اُپدیشوں کا ڈھانچہ یا اُن سے بھرا بوجھ نہیں ہے ۔ اُس نے اُس سچے دھرم اور پاک مذہب پر وشواس کیا جو دنیا میں سمپورن مانوتا میں روشن ہے ۔ اُس نے سامیہ وادی سنسار کا سپنا ہی نہیں دیکھا ' اپنے جیون میں اُسکے

नया हिन्द कलाकार वान गोक अप्रैल सन् '५१
बेरोज़गारों, वेश्याओं और शोषितों, अनपढ़ों और कुचले हुए लोगों

نیا ہند کلاکار وان گوک اپریل سن '۵۱
بےروزگاروں ' ویشیاؤں اور شوشتوں ' ان پڑھوں اور کچلے ہوئے لوگوں کی

किया जो दुनिया में,सम्पूर्न मानवता में रोशन है. उसने साम्यवादी संसार का सपना ही नहीं देखा, अपने जीवन में उसके बुनियादी [illegible]

बेरोज़गारों, वेश्याओं और शोशितों, अनपढ़ों और कुचले हुए लोगों की तस्वीरें बनाईं. लेकिन हमारी बदक़िस्मती से वह तस्वीरें भी अमीरों और सरकारों ने खरीद खरीद कर (विन्सेन्ट से नहीं खरीदीं) अपनी इमारतों और कमरों में लगा लीं. लेकि आज जब कभी भी वह बाहर की हवा और रोशनी देखती हैं तो अपने लोगों को पहचान कर फिर से हँसने लग जाती हैं और उस महान पुरुश का संदेसा दुहराती हैं जिन्हें सुनकर गिरे हुए इनसानों के झुके हुए सर गर्व से ऊँचे हो जाते हैं. वह नई ज़िन्दगी की रोशनी को अपने क़रीब महसूस करते हैं, और मुस्कराते हैं.

कान काट कर भेंट कर देने के बाद विन्सेन्ट का जीवन और दूभर हो गया. मुहल्ले के आवारा लड़के रात दिन उसे चिढ़ाते. उसके चित्र फाड़ डालते और समझदार कहलाने वाले लोग भी उसमें हिस्सा लेते. इसी तरह कई दिन निकल गए. दिन पर दिन उसके लिये भारी होता जाता था. फिर थियो आया और उसका इलाज कराया पर कुछ न हुआ.

कला का यह पुजारी उन्हीं दिनों आवर्स के पागल ख़ाने में भेज दिया गया. लेकिन वहाँ के डाक्टर उसकी क्या दवा करते. उस की दवा अपने ही पास थी. वह तो ख़ुद दुनिया का मसीहा बन कर आया था. उसकी संगत पाकर डाक्टर उसे समझ कर हैरान रह गए. यहाँ पागलों को देखकर विन्सेंट को जीवन को और समझने का मौक़ा मिला. वह पागलों की सेवा में लग गया. वह आस पास के चित्र भी खींचता. डाक्टरों ने यह देख कर उसे अस्पताल ही में आज़ाद कर दिया.

جو دنیا میں سمپورن مانوتا میں روشن ہے . اس نے سامیہ وادی سنسار کا سپنا ہی نہیں دیکھا' اپنے جیون میں اسکے [illegible]

بے روزگاروں' ویشیاؤں اور اد شوشتوں' ان پڑھوں اور کچلے ہوئے لوگوں کی تصویریں بنائیں . لیکن ھماری بدقسمتی سے وہ تصویریں بھی امیروں اور سرکاروں نے خرید خرید کر (ونسنٹ سے نہیں خریدیں) اپنی عمارتوں اور کمروں میں لگا لیں . لیکن آج جب کبھی بھی وہ باہر کی ہوا اور روشنی دیکھتی ہیں تو اپنے لوگوں کو پہچان کر پھر سے ہنسنے لگ جاتی ہیں اور اُس مہان پرش کا سندیسہ دہراتی ہیں جنھیں سن کر گرے ہوئے انسانوں کے جھکے ہوئے سر گرو سے اُونچے ہوجاتے ہیں . وہ نئی زندگی کی روشنی کو اپنے قریب محسوس کرتے ہیں اور مسکراتے ہیں .

کان کاٹ کر بھینٹ کر دینے کے بعد ونسنٹ کا جیون اور دوبھر ہوگیا . محلے کے آوارہ لڑکے رات دن اُسے چڑھاتے' اُس کے چتر پھاڑ ڈالتے اور سمجھدار کہلانے والے لوگ بھی اُسمیں حصہ لیتے . اسی طرح کئی دن نکل گئے . دن پر دن اُسکے لئے بھاری ہوتا جاتا تھا . پھر تھیو آیا اور اُس کا علاج کرایا پر کچھ نہ ہوا .

کلا کا یہ پجاری اُنھیں دنوں آورس کے پاگل خانے میں بھیج دیا گیا . لیکن وہاں کے ڈاکٹر اُسکی کیا دوا کرتے . اُسکی دوا اپنے ہی پاس تھی . وہ تو خود دنیا کا مسیحا بن کر آیا تھا . اُسکی سنگت پاکر ڈاکٹر اُسے سمجھکر حیران رہ گئے . یہاں پاگلوں کو دیکھکر ونسنٹ کو جیون کو اور سمجھنے کا موقع ملا . وہ پاگلوں کی سیوا میں لگ گیا . وہ آس پاس کے چتر بھی کھینچتا . ڈاکٹروں نے یہ دیکھکر اُسے اسپتال ہی میں آزاد کر دیا .

एक दिन दुनिया को उसने अपने सामने साकार देखा. वह उससे बातें कर रही थी. उसने अपना हाल कलाकार को बताया. विन्सेंट ने आइने में झलकती शक्ल की तरह दुनिया को देखा, समझा और परखा. जैसे दुनिया के कभी न मिटने वाले दर्द को उसने अपने सामने देख लिया. दुनिया भर के दुख दर्द से जैसे उसका महा मिलन हुआ. विन्सेन्ट ने अपनी छाती में गोली मारली. डाक्टर दौड़ते हुए आए. विन्सेन्ट बोला—"मैंने शिकार किया है." सचमुच दुनिया की सारी बुराई उसकी नज़रों में आगई थी. उसने उसी को मारना चाहा था. पर ख़ुद को गोली मार बैठा और अन्त में ३७ बरस की उमर में अपने पुराने पाइप से आख़िरी कश खींचते हुए उसने एक लम्बी और आख़री साँस ली.

उसे उसी खेत में दफ़नाया गया जहाँ एकान्त में उसने अपनी मौसी की बेटी को पहली और आख़िरी बार प्यार किया था. जिस खेत को 'ब्ल्यू कार्न' (नीला दाना) नामकी जीती जागती तस्वीर में उसने ज्यों का त्यों उतारा था, जो खेत उसको सबसे अज़ीज़ और सब से प्यारा था.

इस तरह धरती का यह बेचैन बेटा लहलाती धरती की गोद में सदा के लिये चैन से सो गया !

ایک دن دنیا کو اُسنے اپنے سامنے ساکار دیکھا . وہ اُس سے باتیں کر رہی تھی . اُسنے اپنا حال کلاکار کو بتایا . ونسنٹ نے آئینے میں جھلکتی شکل کی طرح دنیا کو دیکھا، سمجھا اور پرکھا . جیسے دنیا کے کبھی نہ مٹنے والے درد کو اُس نے اپنے سامنے دیکھ لیا . دنیا بھر کے دکھ درد سے جیسے اُسکا مہا ملن ہوا . ونسنٹ نے اپنی چھاتی میں گولی مارلی . ڈاکٹر دوڑتے ہوئے آئے . ونسنٹ بولا—"میں نے شکار کیا ہے ." سچ مچ دنیا کی ساری برائی اُس کی نظروں میں آگئی تھی . اُس نے اُسی کو مارنا چاہا تھا پر خود کو گولی مار بیٹھا اور انت میں ۳۷ برس کی عمر میں پرانے پائپ سے آخری کش کھینچتے ہوئے اُس نے ایک لمبی اور آخری سانس لی .

اُسے اُسی کھیت میں دفنایا گیا جہاں ایکانت میں اُسنے اپنی موسی کی بیٹی کو پہلی اور آخری بار پیار کیا تھا . جس کھیت کو 'بلیوکارن' (نیلا دانا) نام کی جیتی جاگتی تصویر میں اُس نے جیوں کا تیوں اُتارا تھا، جو کھیت اُسکو سب سے عزیز اور سب سے پیارا تھا .

اِس طرح دھرتی کا یہ بیچین بیٹا لہلہاتی دھرتی کی گود میں سدا کے لئے چین سے سو گیا .

जवानो

जवानी न जाने के लिये आती है और न कभी जाती है. वह तो खो दी जाती है या खदेड़ दी जाती है. बालों का सफ़ेद हो जाना या दाँतों का गिर जाना बुढ़ापा नहीं है. चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाना भी बुढ़ापा नहीं है. अगर यह तीनों तबदीलियाँ बुढ़ापे की निशानी होतीं तो गाँधी जी हिन्दुस्तानियों को दूभर न होते और एक बूढ़े दिल जवान को उनकी जान लेने की बात न सूझती. आदमी की जान लेने की बात डरपोक और कायर ही सोच सकते हैं. डर और कायरता यानी बुज़दिली जवान के पास नहीं फटकती. अगर किसी जवान को उनसे बेजा लगाव है तो फिर वह या तो बच्चा है या बूढ़े का नाटक कर रहा है या बुढ़ापे की ओर दौड़ लगा रहा है. जिसमें डर नहीं और जिसका कायरता से कुछ मेल जोल नहीं उसे अगर कोई बूढ़ा कह बैठे और सिर्फ़ इस वजह से बूढ़ा कह बैठे कि उसके बाल सफ़ेद हैं, उसके दाँत ग़ायब हैं और उसके चेहरे पर न तनाव है न चिकनाहट तो यही समझना चाहिये कि अगर वह ख़ुद बूढ़ा नहीं है तो उसका दिल ज़रूर बूढ़ा हो गया है, भले ही फिर उसके बाल काजल काले हों और बत्तीसी इतनी मज़बूत हो कि उनके बीच में आई सुपारी पलक मारते चूर हो जाती हो. जापान के उस अस्सी बरस के जनरल नियोगी को, कहो तो जवानो, तुम कैसे बूढ़ा कह दोगे जिसको जब दो सिपाहियों ने हाथ लगाकर

جوانو

جوانی نہ جانے کے لئے آتی ھے اور نہ کبھی جاتی ھے . وہ تو کھو دی جاتی ھے یا کھدیڑ دی جاتی ھے . بالوں کا سفید ھوجانا یا دانتوں کا گرجانا بڑھاپا نہیں ھے . چہرے پر جھریاں پڑجانا بھی بڑھاپا نہیں ھے . اگر یہ تینوں تبدیلیاں بڑھاپے کی نشانی ھوتیں تو گاندھی جی ھندستانیوں کو دوبھر نہ ھوتے اور ایک بوڑھے دل جوان کو اُن کی جان لینے کی بات نہ سوجھتی . آدمی کی جان لینے کی بات ڈرپوک اور کائر ھی سوچ سکتے ھیں . ڈر اور کائرتا یعنی بزدلی جوان کے پاس نہیں پھٹکتی . اگر کسی جوان کو اُن سے بیجا لگاؤ ھے تو پھر وہ یا تو بچہ ھے یا بوڑھے کا ناٹک کر رھا ھے یا بڑھاپے کی اور دوڑ لگا رھا ھے . جس میں ڈر نہیں اور جسکا کائرتا سے کچھ میل جول نہیں اُسے اگر کوئی بوڑھا کہہ بیٹھے اور صرف اِس وجہ سے بوڑھا کہہ بیٹھے کہ اُسکے بال سفید ھیں، اُسکے دانت غائب ھیں اور اُسکے چہرے پر نہ تناؤ ھے نہ چکناھٹ تو یہی سمجھنا چاھئے کہ اگر وہ خود بوڑھا نہیں ھے تو اُس کا دل ضرور بوڑھا ھوگیا ھے، بھلے ھی پھر اُسکے بال کاجل کلے ھوں اور بتیسی اتنی مضبوط ھو کہ اُن کے بیچ میں آئی سپاری پلک مارتے چور ھو جاتی ھو . جاپان کے اُس اسی برس کے جنرل نیوگی کو، کھو تو جوانو، تم کیسے بوڑھا کہہ دوگے جسکو جب دو سپاھیوں نے ھاتھ لگا کر

घोड़े पर चढ़ाया था और जिसका यह तमाशा देख कर जब एक सिपाही जनरल नियोगी पर हँस दिया था और उस हँसी से बिगड़ कर जनरल नियोगी ने जब उससे हँसने की वजह पूछी थी और जब उस सिपाही ने जवाब में यह लफ्ज़ कहे थे कि जिस आदमी को घोड़े पर चढ़ाने के लिये दो आदमी चाहियें उसका फ़ौज में आने का क्या काम और इस खरे जवाब को सुनकर जिस जनरल नियोगी ने यह जवाब दिया था कि हाँ, मुझे घोड़े पर चढ़ाने के के लिये दो आदमी चाहियें पर हज़ारों ही चाहियें जो मुझे घोड़े से उतार सकें. जनरल नियोगी कभी बूढ़ा हुआ ही नहीं. यह अस्सी या सौ साल की लम्बाई नहीं है जो किसी को बूढ़ा करती है. यह दिल की कमज़ोरी है जो बदलने और बदलते रहने से इनकार करती है. पीछे नज़र डालना बुरा नहीं, यों तो जवान को उसकी भी ज़रूरत नहीं. पर पीछे मुड़ने की सोचना जवानी की बेक़दरी करना है. और जिस जवानी की जब क़दर ही न रही वह जवान के साथ रह कर क्या करेगी. पीछे है क्या, बचपन है. फिर चाहे वह समाज का हो, संतों का हो, महंतों का हो, धर्मों का हो, राजाओं का हो, राजनेताओं का हो, राजकाजियों का हो, कलाकारों का हो, साहित्यकारों का हो या किसी का भी हो. अपने बचपन का या अपने बचपन के भले कामों का कोई जवान अभिमान तो कर सकता है पर उन पर उसी तरह अमल करने की नहीं सोच सकता. जो ऐसा सोचेगा, जवानी उसका साथ छोड़ कर चल देगी. जवान पीछे बहुत कम देखता है. इसका यह मतलब कोई हरगिज़ न समझे कि वह आंखामुन्द बिना सोचे समझे आगे ही बढ़ता चला

گھوڑے پر چڑھایا تھا اور جس کا یہ تماشہ دیکھکر جب ایک سپاہی جنرل نیوگی پر ہنس دیا تھا اور اُس ہنسی سے بگڑ کر جنرل نیوگی نے جب اُس سے ہنسنے کی وجہ پوچھی تھی اور جب اُس سپاہی نے جواب میں یہ لفظ کہے تھے کہ جس آدمی کو گھوڑے پر چڑھانے کے لئے دو آدمی چاہئیں اُس کا فوج میں آنے کا کیا کام اور اِس کھرے جواب کو سنکر جس جنرل نیوگی نے یہ جواب دیا تھا کہ ہاں، مجھے گھوڑے پر چڑھانے کے لئے دو آدمی چاہئیں پر ہزاروں ہی چاہئیں جو مجھے گھوڑے سے اُتار سکیں. جنرل نیوگی کبھی بوڑھا ہوا ہی نہیں. یہ اسی یا سو سال کی لمبائی نہیں ہے جو کسی کو بوڑھا کرتی ہے. یہ دل کی کمزوری ہے جو بدلنے اور بدلتے رہنے سے انکار کرتی ہے. پیچھے نظر ڈالنا برا نہیں، یوں تو جوان کو اُسکی بھی ضرورت نہیں. پر پیچھے مڑنے کی سوچنا جوانی کی بے قدری کرنا ہے. اور جس جوانی کی جب قدر ہی نہ رہی وہ جوان کے ساتھ رہ کر کیا کریگی. پیچھے ہے کیا، بچپن ہے. پھر چاہے وہ سماج کا ہو، سنتوں کا ہو، مہنتوں کا ہو، دھرموں کا ہو، راجاؤں کا ہو، راج نیتاؤں کا ہو، راج کا جیوں کا ہو، کلا کاروں کا ہو، ساہتیہ کاروں کا ہو یا کسی کا بھی ہو. اپنے بچپن کا یا اپنے بچپن کے بھلے کاموں کا کوئی جوان ابھیمان تو کر سکتا ہے پر اُن پر اُسی طرح عمل کرنے کی نہیں سوچ سکتا. جو ایسا سوچے گا، جوانی اُس کا ساتھ چھوڑ کر چل دے گی. جوان پیچھے بہت کم دیکھتا ہے. اس کا یہ مطلب کوئی ہرگز نہ

जाता है. आगे बढ़ना जवानी का काम ज़रूर है जवानी की शान नहीं है. जवानी की शान तो पीछे न हटना है फिर चाहे कितने ही ज़ोर के धक्के क्यों न आएं. जो पीछे नहीं हटता उसका क़दम आगे बढ़ता ही.है, और जो एक क़दम बढ़ गया वह बढ़ गया. यही एक क़दम बढ़ना तो शान है. जवान लम्बी डगें भी रखता है और मौक़ा पाकर सरपट भी दौड़ता है पर इस डग भरने और सरपट दौड़ने में उसका पीछे का तजरबा अपने आप उसे ढकेलता हुआ मालूम होता है. तभी तो वह पीछे मुड़कर नहीं देखता. वह 'था' का यानी जो पीछे बीत चुका उसका तो बना हुआ पुतला ही है. उधर नज़र डालने की उसे ज़रूरत भी क्यों? उसका 'है' तो इतना बारीक होता है कि वह उस पर नज़र डाले डाले जब तक उसका क़दम 'गा' में जा टिकता है. यही वजह है कि जो आदमी सच्चे मानों में जवान है वह हमेशा आगे बढ़ता रहता है.

आगे बढ़ना बदलने के सिवाय और कुछ नहीं. बढ़ने में वक़्त बदलता है, जगह बदलती है, काम बदलता है, भाव बदलते हैं. वक़्त पर तो किसी का अख़्तियार नहीं. इसके बदलने में किसी का हाथ नहीं. वक़्त तो हम सबको बदलने वाला ईश्वर है. और वह ऐसा ईश्वर है कि ज़रा देर के लिये भी ठाली नहीं बैठता. आप काम करें या न करें, वह आप को बच्चे से जवान बना देगा, जवान से बूढ़ा बना देगा. आप किसी चीज़ को कितनी ही होशियारी से कितने ही तालों के अन्दर कितने ही मज़बूत सेफ़ में क्यों न रखदें वक़्त का ईश्वर वहाँ पहुँच कर भी उसको पुराना और कमज़ोर किये बग़ैर न मानेगा. जगह के बदलने में हमारा थोड़ा हाथ रहता है पर

جاتا ہے. آگے بڑھنا جوانی کا کام ضرور ہے جوانی کی شان نہیں ہے. جوانی کی شان تو پیچھے نہ ہٹنا ہے پھر چاہے کتنے ہی زور کے دھکے کیوں نہ آئیں. جو پیچھے نہیں ہٹتا اسکا قدم آگے بڑھتا ہی ہے، اور جو ایک قدم بڑھ گیا وہ بڑھ گیا. یہی ایک قدم بڑھنا تو شان ہے. جوان لمبی ڈگیں بھی رکھتا ہے اور موقعہ پاکر سرپٹ بھی دوڑتا ہے پر اس ڈگ بھرنے اور سرپٹ دوڑنے میں اس کا پیچھے کا تجربہ اپنے آپ اسے ڈھکیلتا ہوا معلوم ہوتا ہے. تبھی تو وہ پیچھے مڑ کر نہیں دیکھتا. وہ 'تھا' کا یعنی جو پیچھے بیت چکا اس کا تو بنا ہوا پتلا ہی ہے. ادھر نظر ڈالنے کی اسے ضرورت بھی کیوں؟ اس کا 'ہے' تو اتنا باریک ہوتا ہے کہ وہ اس پر نظر ڈالے ڈالے جب تک اس کا قدم 'گا' میں جاٹکتا ہے. یہی وجہ ہے کہ جو آدمی سچے معنوں میں جوان ہے وہ ہمیشہ آگے بڑھتا رہتا ہے.

آگے بڑھنا بدلنے کے سوائے اور کچھ نہیں. بڑھنے میں وقت بدلتا ہے، جگہ بدلتی ہے، کام بدلتا ہے، بھاؤ بدلتے ہیں. وقت پر تو کسی کا اختیار نہیں. اس کے بدلنے میں کسی کا ہاتھ نہیں. وقت تو ہم سب کو بدلنے والا ایشور ہے. اور وہ ایسا ایشور ہے کہ ذرا دیر کے لئے بھی ٹھالی نہیں بیٹھتا. آپ کام کریں یہ نہ کریں، وہ آپ کو بچے سے جوان بنا دے گا، جوان سے بوڑھا بنا دے گا. آپ کسی اور چیز کو کتنی ہی ہوشیاری سے کتنے ہی تالوں کے اندر کتنے ہی مضبوط سیف میں کیوں نہ رکھدیں وقت کا ایشور وہاں پہونچ کر بھی اسکو پرانا کمزور کئے بغیر نہ مانیگا. جگہ کے بدلنے میں ہمارا تھوڑا ہاتھ رہتا ہے پر

वह भी बहुत कम. सर्दी, गरमी, बरसात हमसे हमारी जगह बदलवा कर ही रहती है. हाँ, काम पर हममें से हर एक का पूरा पूरा अधिकार नहीं है. काम बदलने में हम वक़्त और जगह के लिहाज़ से भले ही ज्यादा ख़ुदमुख़्तार हों पर पूरे पूरे ख़ुदमुख़्तार नहीं हैं. पर जितनी ख़ुदमुख़्तारी हमें मिली हुई है वह कम नहीं है. उसके बल बूते पर हम बहुत जल्दी काम बदलने में पूरे पूरे ख़ुदमुख़्तार हो सकते हैं. काम बदलने की ख़ुदमुख़्तारी का नाम ही जवानी है और यही आज़ादी है. जवानो, अगर तुम ऐसे काम में लगे हुए हो जो तुम्हारे ऊपर थोपा गया है और जिसको तुम अपनी तबियत मार कर कर रहे हो और जिसके बदलने में तुम्हें सैकड़ों तरह की ऊँच नीच सोचना पड़ती है तो तुम समझ लो कि तुम बूढ़े हो गए. वक़्त और जगह के बदलने से कोई बूढ़ा नहीं होता. काम के बदलने की क़ाबलियत कम हो जाना बुढ़ापा है और बिलकुल न रहना मौत. आगे बढ़ने के लिये हर जवान को काम बदलना होगा और रस्मोरिवाज काम हैं. इनको बदलना ही होगा. रहन सहन, खान पान, ओढ़ना बिछाना, हकूमत करना और हकूमत में रहना सब काम हैं. सब तबदीली चाहते हैं. तबदीली ही इनकी जान है. और इन कामों में तबदीली को जान फूंकने के तुम ईश्वर हो. अगर यह नहीं कर सकते तो न तुम जवान हो, न बूढ़े हो और न इनसानों में गिने जाने लायक़ हो.

وہ بھی بہت کم . سردی، گرمی، برسات ہم سے ہماری جگہ بدلواکر ہی رہتی ہے . ہاں، کام پر ہم میں سے ہر ایک کا پورا پورا ادھیکار نہیں ہے . کام بدلنے میں ہم وقت اور جگہ کے لحاظ سے بھلے ہی زیادہ خود مختار ہوں پر پورے پورے خود مختار نہیں ہیں . پر جتنی خود مختاری ہمیں ملی ہوئی ہے وہ کم نہیں ہے . اُسکے بل بوتے پر ہم بہت جلدی کام بدلنے میں پورے پورے خود مختار ہوسکتے ہیں . کام بدلنے کی خود مختاری کا نام ہی جوانی ہے اور یہی آزادی ہے . جوانو، اگر تم ایسے کام میں لگے ہوئے ہو جو تمہارے اُوپر تھوپا گیا ہے اور جسکو تم اپنی طبیعت مارکر کر رہے ہو اور جس کے بدلنے میں تمہیں سیکڑوں طرح کی اُونچ نیچ سوچنا پڑتی ہے تو تم سمجھ لو کہ تم بوڑھے ہوگئے . وقت اور جگہ کے بدلنے سے کوئی بوڑھا نہیں ہوتا . کام کے بدلنے کی قابلیت کم ہوجانا بڑھاپا ہے اور بالکل نہ رہنا موت . آگے بڑھنے کے لئے ہر جوان کو کام بدلنا ہوگا . اور رسم و رواج کام ہیں . اِن کو بدلنا ہی ہوگا . رہن سہن، کھانا پان، اوڑھنا بچھانا، حکومت کرنا، اور حکومت میں رہنا سب کام ہیں . سب تبدیلی چاہتے ہیں . تبدیلی ہی اِن کی جان ہے . اور ان کاموں میں تبدیلی کی جان پھونکنے کے تم ایشور ہو . اگر یہ نہیں کرسکتے تو نہ تم جوان ہو، نہ بوڑھے ہو اور نہ انسانوں میں گنے جانے لائق ہو .

अब रह गया भाव का बदलाव यानी विचारों की तबदीली.
इस काम में तुम पूरे मुख्तार हो. अगर इसमें तबदीली

करने में तुमने ज़रा भी आनाकानी की तो फ़ौरन तुम्हारी जवानी बुढ़ापे में तबदील हो जायगी.

धर्म को ले लो. जब तुम पैदा हुए थे, तुम अपने साथ कोई धर्म नहीं लाए थे. किसी धर्म के निशान के साथ तुम पैदा भी नहीं हुए. धर्म तुम्हारा वह है जो तुम में उस वक़्त फूँका गया है जब कि तुम यह समझते ही न थे कि धर्म है क्या चीज़. रहा इनसानी धर्म जिसे तुम साथ लेकर जनमे हो और जिससे तुममें नक़ली धर्म फूँक कर बचपन से ही दूर रक्खा गया है वह तुममें से कहीं गया नहीं है. वह सोया हुआ है. वह तुममें कभी कभी जागता है. और जब वह जागता है तब तुम्हारा मन और मस्तक उमंगें भरता है. यही उमंगें तो जवानी की निशानी हैं. यह जिस दिन पूरा जागेगा तब तुम पर थोपा हुआ धर्म तुममें सुई की तरह से चुभने लगेगा. उस धर्म के जामे को फेंक देने के सिवाय तुम्हारे पास कोई चारा नहीं रह जायगा. फिर तुम क्या यह समझते हो कि अधर्मी हो जाओगे? हरगिज़ नहीं. अधर्मी तो तुम अब हो जब उस धर्म की हद बाँधे बैठे हो जो हद को नहीं मानता और जो हदों में फँस कर अपना दम घोंट बैठता है.

(बाक़ी फिर)

—भगवानदीन

اب رہ گیا بھاؤ کا بدلاؤ یعنی وچاروں کی تبدیلی .
اس کام میں تم پورے مختار ہو . اگر اس میں تبدیلی

کرنے میں تم نے ذرا بھی آنا کانی کی تو فوراً تمہاری جوانی بڑھاپے میں تبدیل ہوجائیگی .

دھرم کو لے لو . جب تم پیدا ہوئے تھے ؛ تم اپنے ساتھ کوئی دھرم نہیں لائے تھے . کسی دھرم کے نشان کے ساتھ تم پیدا بھی نہیں ہوئے . دھرم تمہارا وہ ہے جو تم میں اس وقت پھونکا گیا ہے جبکہ تم یہ سمجھتے ہی نہ تھے کہ دھرم ہے کیا چیز . رہا انسانی دھرم جسے تم ساتھ لیکر جنمے ہو اور جس سے تم میں نقلی دھرم پھونک کر بچپن سے ہی دور رکھا گیا ہے وہ تم میں سے کہیں گیا نہیں ہے . وہ سویا ہوا ہے . وہ تم میں کبھی کبھی جاگتا ہے اور جب وہ جاگتا ہے تب تمہارا من اور مستک اُمنگیں بھرتا ہے ، یہی اُمنگیں تو جوانی کی نشانی ہیں . یہ جس دن پورا جاگیگا تب تم پر تھوپا ہوا دھرم تم میں سوئی کی طرح سے چبھنے لگیگا . اُس دھرم کے جامے کو پھینک دینے کے سوائے تمہارے پاس کوئی چارا نہیں رہ جائیگا . پھر تم کیا یہ سمجھتے ہو کہ ادھرمی ہو جاؤ گے ؟ ہرگز نہیں . ادھرمی تو تم اب ہو جب اُس دھرم کی حد باندھے بیٹھے ہو جو حد کو نہیں مانتا اور جو حدوں میں پھنس کر اپنا دم گھونٹ بیٹھتا ہے .

(باقی پھر)

—بھگوان دین

"एकता का नारा"

(भाई हाफ़िज़ अताउल्ला 'एकता')

हम हिन्द के रहने वाले हैं, जयहिन्द हमारा नारा है
हम नाव के अपने खेवैया हैं, यह देश हमारा सारा है.

गर हिन्दू मुस्लिम जाति को, तुम एक न समझे क्या समझे
समझो ! न अगर तुम समझोगे, तो पस्त तुम्हारा तारा है.

भारत के सदा ग़मख़्वार रहो, भारत में जियो भारत पे मरो
करना क्या है जग से तुम को, यह भारत देस तुम्हारा है.

बापू ने गोली खाई क्यों, निज जान की भेंट चढ़ाई क्यों
अब तक भी न समझा ए हिन्दी, क्या सच्चा धर्म हमारा है.

इस्लाम, अहिंसा की शिक्षा, है एक ही मतलब दोनों का
पर शब्द के गोरखधन्दे ने, फैलाया यह अंधियारा है.

ऊँच नीच के छोड़ो चर्चे, छूत अछूत के बोल हैं कच्चे
सब ही धर्म हैं मूल में सच्चे शेश आडम्बर सारा है.

मन्दिर हो कलीसा या मस्जिद, या सिक्खों का गुरुद्वारा हो
इन सब को समझो हर का घर, हर धर्म का यह ही नारा है.

यह हिन्दू है वह मुस्लिम है, यह सिख है और वह ईसाई
यह नाम की ... ... है. इक सिरजनहार हमारा है.

"ایکتا کا نعرہ"

(بھائی حافظ عطا اللہ 'یکتا')

ہم ہند کے رہنے والے ہیں، جے ہند ہمارا نعرہ ہے
ہم ناؤ کے اپنے کھویا ہیں یہ دیس ہمارا سارا ہے۔

گر ہندو مسلم جاتی کو تم ایک نہ سمجھے کیا سمجھے
سمجھو ! نہ اگر تم سمجھوگے، تو پست تمہارا تارا ہے

بھارت کے سدا غمخوار رہو بھارت میں جیو بھارت پہ مرو
کرنا کیا ہے جگ سے تم کو، یہ بھارت دیس تمہارا ہے

باپو نے گولی کھائی کیوں، نج جان کی بھینٹ چڑھائی کیوں
اب تک بھی نہ سمجھا اے ہندی کیا سچا دھرم ہمارا ہے۔

اسلام، اہنسا کی شکشا، ہے ایک ہی مطلب دونوں کا
پر شبد کے گورکھ دھندے نے، پھیلایا یہ اندھیارا ہے۔

اونچ نیچ کے چھوڑو چرچے، چھوت اچھوت کے بول ہیں کچے
سب ہی دھرم ہیں مول میں سچے، شیش آڈمبر سارا ہے۔

مندر ہو کلیسا یا مسجد، یا سکھوں کا گردوارا ہو
ان سب کو سمجھو ہر کا گھر، ہر دھرم کا یہ ہی نعرہ ہے۔

یہ ہندو ہے وہ مسلم ہے، یہ سکھ ہے اور وہ عیسائی
یہ نام ... ... ہے اک سرجن ہار ہمارا ہے

इन सबको समझो हर को घर, हर धर्म का यह ही नारा है.
यह हिन्दू है वह मुस्लिम है, यह सिख है और वह ईसाई

वह अल्ला एक सभी का है, पर नाम हैं उसके जुदा जुदा
भगवान कहीं यज़दान कहीं, वह एक ही पालनहारा है.

जो हिन्द का रहने वाला है, वह मुस्लिम हो या ईसाई
वह हिन्दू है और हिन्दी है, यह जग ने सदा पुकारा है.

इनसान हो तुम इनसान बनो, और एका से भारत में रहो
इस दुई का परदा चाक करो, फिर जीवन में उजियारा है.

وہ اللہ ایک سبھی کا ہے، پر نام ہیں اُس کے جدا جدا
بھگوان کہیں یزدان کہیں، وہ ایک ہی پالن ہارا ہے۔

جو ہند کا رہنے والا ہے وہ مسلم ہو یا عیسائی
وہ ہندو ہے اور ہندی ہے یہ جگ نے سدا پکارا ہے۔

انسان ہو تم اِنسان بنو، اور ایکا سے بھارت میں رہو
اِس دوئی کا پردا چاک کرو، پھر جیون میں اُجیارا ہے۔

तुरकी के गाँव की एक झलक

(भाई महमूद मकल)

[महमूद मकल बीच अनातोलिया के एक गाँव में मास्टर है. बीस बरस की उमर में ही आस पास की ग़रीबी ने उसके दिल पर असर किया. क़लम ने उसके भावों को किताब का रूप दे दिया. किताब का नाम है "मेरा गाँव". किताब के छपते ही महमूद दुनिया में मशहूर होगया. सरकार को डर पैदा हुआ और बेचारा अदालत के कटहरे में ला खड़ा किया गया. लेकिन अदालत ने महमूद को निर्दोश ठहरा कर छोड़ दिया. सरकार ने उसको शहर में मास्टर बनाने का लालच दिया. उसने स्वीकार नहीं किया और अभी तक गाँव में मास्टर है. दूसरी किताब जो महमूद लिखने में लगा हुआ है उसका नाम "तुम्हारे नगर" है.

—अनुवादक]

लोग कहते हैं कि पूरबी अनातोलिया की हालत बहुत ख़राब है. पर हम तो बीच अनातोलिया में रहते हैं. अपनी आँखों से मैं यहाँ की मुसीबतों को देखता हूँ और सोच कर काँप उठता हूं. क्या पूरबी अनातोलिया वालों का जीवन सचमुच हम से भी बदतर है? जाड़े से बचने के लिये हमारे पास न घर है और न कपड़ा. भूक की आग बुझाने को खाना नहीं, ईंधन की भी कमी है. ऐसी सूरत में [illegible]

ترکی کے گاؤں کی ایک جھلک

(بھائی محمود مکل)

[محمود مکل بیچ اناطولیہ کے ایک گاؤں میں ماسٹر ہے. بیس برس کی عمر میں ہی آس پاس کی غریبی نے اُس کے دل پر اثر کیا. قلم نے اُسکے بھاؤں کو کتاب کا روپ دے دیا. کتاب کا نام ہے "میرا گاؤں". کتاب کے چھپتے ہی محمود دنیا میں مشہور ہوگیا. سرکار کو ڈر پیدا ہوا اور بیچارا عدالت کے کٹھہرے میں لا کھڑا کیا گیا. لیکن عدالت نے محمود کو نردوش ٹھہرا کر چھوڑ دیا. سرکار نے اُس کو شہر میں ماسٹر بنانے کا لالچ دیا. اُس نے سویکار نہیں کیا اور ابھی تک گاؤں میں ماسٹر ہے. دوسری کتاب جو محمود لکھنے میں لگا ہوا ہے اُس کا نام "تمہارے نگر" ہے.

—انوواڈک]

لوگ کہتے ہیں کہ پوربی اناطولیہ کی حالت بہت خراب ہے. پر ہم تو بیچ اناطولیہ میں رہتے ہیں. اپنی آنکھوں سے میں یہاں کی مصیبتوں کو دیکھتا ہوں اور سوچ کر کانپ اُٹھتا ہوں. کیا پوربی اناطولیہ والوں کا جیون سچ مچ ہم سے بھی بدتر ہے؟ جاڑے سے بچنے کے لئے ہمارے پاس نہ گھر ہے اور نہ کپڑا. بھوک کی آگ بجھانے کو کھانا نہیں، ایندھن کی بھی کمی ہے. ایسی [illegible]

जाड़े से बचने के लिये हमारे पास न घर है और न कपड़ा. भूक की आग बुझाने को खाना नहीं, ईंधन की भी कमी है. ऐसी सूरत में

جاڑے سے بچنے کے لئے ہمارے پاس نہ گھر ہے اور کپڑا . بھوک کی آگ بجھانے کو کھانا نہیں' ایندھن کی بھی کمی ہے . ایسی

कुछ ख़रीदती भी है तो पाँच दस साल में एक बार और वह भी बहुत घटिया क़िस्म का कपड़ा. यहाँ के लोग पूरी आस्तीन के कपड़े नहीं पहनते केवल गंजी और पाजामे से काम चलाते हैं, खड़ाऊँ से पैर की रक्षा करते हैं. कम ऐसे होंगे जिनके पास चमड़े के जूते हैं. अधिकतर लोग जाड़े में खड़ाऊँ और गरमी में भेड़ की खाल की खनतरी पहनते हैं. मोज़ा तो एक नेमत है ! लोग मुशकिल से ही जाड़े में बाहर निकलते हैं. बाहर जाने के लिये जगह ही कौनसी है. इसलिये वह खड़ाऊँ पहनकर चलते फिरते हैं.

औरतों के पास और भी कपड़े की कमी है. वह मर्दों से अधिक सरदी खाती हैं. उनको जाड़े में और अधिक काम करना पड़ता है. वह खड़ी खेती की देख भाल करती हैं, पानी भरती हैं और क़रीब क़रीब सारे ही कामों की ज़िम्मेदारी उनके कंधों पर होती है. आदमी घर में कपड़े में लिपटे काँपा करते हैं. कहा जाता है कि गोबर जलाना बेवक़ूफ़ी है क्योंकि गोबर की जरूरत खेतों में खाद के लिये होती है. बहुत से अख़बार भी इस बारे में लिखते रहते हैं. पर ऐसे उपदेशकों को यह नहीं मालूम कि गोबर भी हमारे पास बहुत कम है. किसान अगर गोबर न जलाए तो वह अपने को गरम कैसे रक्खे ? क्या अपने पापों का कूड़ा सुलगा कर ? कितने किसान ऐसे हैं जिन्होंने लकड़ी का चैला या कोयला देखा भी है ? ईंधन की कमी किसान के वास्ते एक मुसीबत है !

मेरे स्कूल में पचास साठ विद्यार्थी हैं. किसी तरह फ़रवरी के शुरू तक पढ़ाई जारी रखते हैं हालाँकि सरदी से काँपते रहते हैं.

کچھ خریدتی بھی ہے تو پانچ دس سال میں ایک بار اور وہ بھی بہت گھٹیا قسم کا کپڑا . یہاں کے لوگ پوری آستین کے کپڑے نہیں پہنتے کیول گنجی اور پاجامے سے کام چلاتے ہیں' کھڑاؤں سے پیر کی رکشا کرتے ہیں . کم ایسے ہونگے جن کے پاس چمڑے کے جوتے ہیں . ادھک تر لوگ جاڑے میں کھڑاؤں اور گرمی میں بھیڑ کی کھال کی کھنتری پہنتے ہیں . موزہ تو ایک نعمت ہے ! لوگ مشکل سے ہی جاڑے میں باہر نکلتے ہیں . باہر جانے کے لئے جگہ ہی کون سی ہے . اس لئے وہ کھڑاؤں پہن کر چلتے پھرتے ہیں .

عورتوں کے پاس اور بھی کپڑے کی کمی ہے . وہ مردوں سے ادھک سردی کھاتی ہیں . اُن کو جاڑے میں اور ادھک کام کرنا پڑتا ہے . وہ کھڑی کھیتی کی دیکھ بھال کرتی ہیں' پانی بھرتی ہیں اور قریب قریب سارے ہی کاموں کی ذمہ داری اُن کے کندھوں پر ہوتی ہے . آدمی گھر میں کپڑے میں لپٹے کانپا کرتے ہیں . کہا جاتا ہے کہ گوبر جلانا بیوقوفی ہے کیونکہ گوبر کی ضرورت کھیتوں میں کھاد کے لئے ہوتی ہے . بہت سے اخبار بھی اس بارے میں لکھتے رہتے ہیں . پر ایسے اُپدیشکوں کو یہ نہیں معلوم کہ گوبر بھی ہمارے پاس بہت کم ہے . کسان اگر گوبر نہ جلائے تو وہ اپنے کو گرم کیسے رکھے ؟ کیا اپنے پاپوں کا کوڑا سلگا کر ؟ کتنے کسان ایسے ہیں جنھوں نے لکڑی کا چیلا یا کوئلہ دیکھا بھی ہے ؟ ایندھن کی کمی کسان کے واسطے ایک مصیبت ہے !

میرے اسکول میں پچاس ساٹھ ودیارتھی ہیں. کسی طرح فروری کے شروع تک پڑھائی جاری رکھتے ہیں حالانکہ سردی سے کانپتے رہتے ہیں.

फ़रवरी में बचा खुचा हमारा ईंधन ख़तम हो जाता है और हालत और भी बदतर हो जाती है. मुझे मालूम हुआ कि दो विद्यार्थियों के घर पर सूखे उपले हैं. पर वह दोनों मक्खीचूस मुटवार किसानों के लड़के थे. मेरी हिम्मत नहीं पड़ी कि उन से कुछ ईंधन स्कूल लाने के लिये कहूं. दिन में किसी तरह काम करता था पर जैसे ही रात आती मैं काँपने लगता और किसी काम के जोग न रह जाता……

हमने किताब और कापियाँ फाड़ फाड़ कर जलाईं ताकि किसी सूरत से अप्रैल तक ठेल सकें. नौजवानों के लिये सरदी झेलना मुशकिल होता है और बच्चे तो मर ही जाते हैं. एक साल से कम उमर का कोई बच्चा गाँव में बाक़ी नहीं बचा. सब के सब मर गए. सरदी और महामारी इन छोटे चूहों को हड़प कर गई.

खाना

हमारे घरों में चिट्ठा मिट्ठा की खोज न कीजिये. दूकानों से न हम ख़रीदते हैं और न ताज़ा रोटी पकाते हैं. जो कुछ भी हम सितम्बर अक्तूबर में इकट्ठा करते हैं वही जाड़े भर खाते हैं. जिस तरह हमारा जीवन निकम्मा है उसी तरह हमारी उड़ान बहुत कम और साधन भी बहुत थोड़े हैं. यहाँ तक कि चाय और चावल हमारे लिये भोग विलास की चीज़ें हैं. एक ऐसी घटना है जिसे मैं कभी न भूल सकूँगा—

दरजे की किताबों में हम यह वाक्य पढ़ते हैं—"पिता जी, मुझे कुछ शहद ख़रीद दीजिये." मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि शहद क्या होता है? छप्पन लड़कों में से केवल एक ने कभी शहद देखा

فروری میں بچا کھچا ہمارا ایندھن ختم ہوجاتا ہے اور حالت اور بھی بدتر ہوجاتی ہے . مجھے معلوم ہوا کہ دو ودیارتھیوں کے گھر پر سوکھے اُپلے ہیں . پر وہ دونوں مکھی چوس، متوار کسانوں کے لڑکے تھے . میری ہمت نہیں پڑی کہ اُن سے کچھ ایندھن اسکول لانے کے لئے کہوں . دن میں کسی طرح کام کرتا تھا پر جیسے ہی رات آتی، میں کانپنے لگتا اور کسی کام کے جو نہ رہ جاتا……………

ہم نے کتاب اور کاپیاں پھاڑ پھاڑ کر جلائیں تاکہ کسی صورت سے اپریل تک ٹھیل سکیں . نوجوانوں کے لئے سردی جھیلنا مشکل ہوتا ہے اور بچے تو مر ہی جاتے ہیں . ایک سال سے کم عمر کا کوئی بچہ گاؤں میں باقی نہیں بچا . سب کے سب مر گئے . سردی اور مہا ماری اِن چھوٹے چوہوں کو ہڑپ کر گئی .

کھانا

ہمارے گھروں میں چٹھا مٹھا کی کھوج نہ کیجئے . دوکانوں سے نہ ہم خریدتے ہیں اور نہ تازہ روٹی پکاتے ہیں . جو کچھ بھی ہم ستمبر اکتوبر میں اکٹھا کرتے ہیں وہی جاڑے بھر کھاتے ہیں . جس طرح ہمارا جیون نکما ہے اُسی طرح ہماری اُڑان بہت کم اور سادھن بھی بہت تھوڑے ہیں . یہاں تک کہ چائے اور چاول ہمارے لئے بھوگ ولاس کی چیزیں ہیں . ایک ایسی گھٹنا ہے جسے میں کبھی نہ بھول سکونگا—

درجے کی کتابوں میں ہم یہ واکیہ پڑھتے ہیں—" پتا جی، مجھے کچھ شہد خرید دیجئے ." میں نے اپنے ودیارتھیوں سے پوچھا کہ شہد کیا ہوتا ہے؟ چھپن لڑکوں میں سے کیول ایک نے کبھی شہد دیکھا

कुछ शहद खरीद दीजिये." मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि शहद क्या होता है ? छप्पन लड़कों में से केवल एक ने कभी शहद देखा

था. और दूसरों को अनुमान तक न था कि शहद क्या होता है. उस लड़के ने भी किसी पास के गाँव में देखा था.

तरकारियाँ हमारे गाँव में उगाई जाती हैं. मई में बोई जाती हैं और अगस्त में इकट्ठा की जाती हैं. आम तौर से किसान लौकी और चुक़न्दर उगाते हैं. कई कई महीने वह लौकी और चुक़न्दर ही खाते हैं क्योंकि और कोई दूसरी चीज़ खाने को नहीं होती. जाड़े में घुँघनी खाते हैं. बहुत से घरों में कुछ भी नहीं होता और तीन चार महीने नई फ़सल खड़ी होने तक वह लगभग बिना खाए ही गुज़ारा करते हैं. औरतें और लड़कियाँ घास इकट्ठा करके उबाल उबाल कर खाती हैं. लगभग हर घर में एक पतीली उबला करती है. लेकिन खाने की जगह उसमें दुख दर्द होता है. यही वह रस है जो लोगों को दुबला और पीला करता रहता है. यह सच है कि कुछ लोग आलू और फलियाँ भी खाते हैं. पर ऐसे इने गिने हैं. पूरे गाँव में शायद पाँच या ज़्यादा से ज़्यादा दस. मेरे पड़ोसी के दो लड़के हैं. मार्च अप्रैल में वह घास खाते हैं और जाड़े में सूखी रोटी. इस पड़ोसी की पूरी गृहस्थी एक पुराना बोरा, एक पुरानी चटाई और कुछ भेड़ की खालें हैं. जाड़ा हो या गरमी, मां और बच्चे एक चटाई पर लेट जाते हैं फिर ऊपर से अपने को भेड़ की खालों से ढक लेते हैं. ख़ुदा इन की मदद करे और सब्र दे.

ज़मीन की समस्या

कुछ दिन पहले मैं एक गाँव के नम्बरदार के घर गया. वहाँ एक अनोखा नाटक खेला जा रहा था. एक के बाद दूसरा किसान

مجھے کچھ شہد خرید دیجئے." میں نے اپنے ودیارتھیوں سے پوچھا کہ شہد کیا ہوتا ہے؟ چھپن لڑکوں میں سے کیول ایک نے کبھی شہد دیکھا

تھا اور دوسروں کو انومان تک نہ تھا کہ شہد کیا ہوتا ہے. اس لڑکے نے بھی کسی پاس کے گاؤں میں دیکھا تھا.

ترکاریاں ہمارے گاؤں میں اُگائی جاتی ہیں. مئی میں بوئی جاتی ہیں اور اگست میں اکٹھا کی جاتی ہیں. عام طور سے کسان لوکی اور چقندر اُگاتے ہیں. کئی کئی مہینے وہ لوکی اور چقندر ہی کھاتے ہیں کیونکہ اور کوئی دوسری چیز کھانے کو نہیں ہوتی. جاڑے میں گھنگھنی کھاتے ہیں. بہت سے گھروں میں کچھ بھی نہیں ہوتا اور تین چار مہینے نئی فصل کھڑی ہونے تک وہ لگ بھگ بنا کھائے ہی گزارا کرتے ہیں. عورتیں اور لڑکیاں گھاس اکٹھا کر کے اُبال اُبال کر کھاتی ہیں. لگ بھگ ہر گھر میں ایک پتیلی اُبلا کرتی ہے. لیکن کھانے کی جگہ اُس میں دکھ درد ہوتا ہے. یہی وہ رس ہے جو لوگوں کو دبلا اور پیلا کرتا رہتا ہے. یہ سچ ہے کہ کچھ لوگ آلو اور پھلیاں بھی کھاتے ہیں پر ایسے اِنے گنے ہیں. پورے گاؤں میں شاید پانچ یا زیادہ سے زیادہ دس. میرے پڑوسی کے دو لڑکے ہیں. مارچ اپریل میں وہ گھاس کھاتے ہیں اور جاڑے میں سوکھی روٹی. اس پڑوسی کی پوری گرہستی ایک پرانا بورا، ایک پرانی چٹائی اور کچھ بھیڑ کی کھالیں ہیں. جاڑا ہو یا گرمی، ماں اور بچے ایک چٹائی پر لیٹ جاتے ہیں پھر اوپر سے اپنے کو بھیڑ کی کھالوں سے ڈھک لیتے ہیں. خدا اِن کی مدد کرے اور صبر دے.

زمین کی سمسیا

کچھ دن پہلے میں ایک گاؤں کے نمبردار کے گھر گیا. وہاں ایک انوکھا ناٹک کھیلا جا رہا تھا. ایک کے بعد دوسرا کسان

आता था और हलफ़ उठाता था. बाद में मुझे मालूम हुआ कि यह लोग इस बात पर हलफ़ उठाने के लिये मजबूर किये गए थे कि वह पड़ोस के गाँव के किसानों से लड़ेंगे इसलिये कि वह उनकी ज़मीन उन से छीन लें. यह है हमारी जहालत जो हमें आपस में दुशमन बनाती है. इस तरह अनातोलिया में ज़मीन की समस्या हल की जाती है.

रोटी

गाँव में जितना अपनी रोटी कमाना कठिन है उतना ही उसका सेंकना और उतना ही उसका खाना भी कठिन है. यहाँ कोई ढंग के चूल्हे नहीं होते. किसान ज़मीन के अन्दर एक तरह की भट्टी बना लेते हैं. गाँवों में खाई जाने वाली रोटी और शहर में खाई जाने वाली रोटी में कोई मेल मत सोचिये ! गाँव वासी मोटी रोटी खाते हैं और वह भी अक्सर इतनी कच्ची होती है कि हज़म करना भी मुशकिल होता है. यह रोटी रबर के समान चीमड़ और दफ़्ती के समान सख़्त होती है और बिना पानी में भिगोए नहीं खाई जा सकती. काश ! लोग जान सकें कि गाँव में रोटी पकाना कितना कठिन है ! मैं अक्सर सोचता हूँ कि रोटी पकाते पकाते हमारी माओं बहनों की उमर आधी हो जाती है. बहुत से किसान सितम्बर अक्तूबर में हफ़्तों रोटी पकाने में बिताते हैं. इस तरह इकट्ठी पकी हुई रोटी को पहले पानी में भिगोते हैं और फिर खाते हैं. पास पड़ोस के गाँवों में कुछ किसान ताज़ी रोटी भी खाते हैं. वह लोग हम से अधिक बार रोटियाँ पकाते हैं. अगर औरतें ख़राब रोटियाँ बनाती हैं तो उनके पति गाली गलौज करते हैं और उनको पीटते हैं.

آتا تھا اور حلف اُٹھاتا تھا ۔ بعد میں مجھے معلوم ہوا کہ یہ لوگ اِس بات پر حلف اُٹھانے کے لئے مجبور کئے گئے تھے کہ وہ پڑوس کے گاؤں کے کسانوں سے لڑینگے اس لئے کہ وہ ان کی زمین اُن سے چھین لیں ۔ یہ ہے ہماری جہالت جو ہمیں آپس میں دشمن بناتی ہے ۔ اس طرح اناطولیہ میں زمین کی سمسیا حل کی جاتی ہے ۔

روٹی

گاؤں میں جتنا اپنی روٹی کمانا کٹھن ہے اُتنا ہی اُس کا سینکنا اور اُتنا ہی اُس کا کھانا بھی کٹھن ہے ۔ یہاں کوئی ڈھنگ کے چولھے نہیں ہوتے ۔ کسان زمین کے اندر ایک طرح کی بھٹی بنا لیتے ہیں ۔ گاؤں میں کھائی جانے والی روٹی اور شہر میں کھائی جانے والی روٹی میں کوئی میل مت سوچئے ! گاؤں واسی موٹی روٹی کھاتے ہیں اور وہ بھی اکثر اتنی کچی ہوتی ہے کہ ہضم کرنا بھی مشکل ہوتا ہے ۔ یہ روٹی ربر کے سمان چیمڑ اور دفتی کے سمان سخت ہوتی ہے اور بنا پانی میں بھگوئے نہیں کھائی جاسکتی ۔ کاش ! لوگ جان سکیں کہ گاؤں میں روٹی پکانا کتنا کٹھن ہے ! میں اکثر سوچتا ہوں کہ روٹی پکاتے پکاتے ہماری ماؤں بہنوں کی عمر آدھی ہوجاتی ہے ۔ بہت سے کسان ستمبر اکتوبر میں ہفتوں روٹی پکانے میں بتاتے ہیں ۔ اس طرح اکٹھی پکی ہوئی روٹی کو پہلے پانی میں بھگوتے ہیں اور پھر کھاتے ہیں ۔ پاس پڑوس کے گاؤں میں کچھ کسان تازی روٹی بھی کھاتے ہیں ۔ وہ لوگ ہم سے ادھک بار روٹیاں پکاتے ہیں ۔ اگر عورتیں خراب روٹیاں بناتی ہیں تو اُن کے پتی گالی گلوچ کرتے ہیں اور اُن کو پیٹتے ہیں ۔

रोटी पकाते समय काला धुआँ औरतों की आँखों से आँसू की

روٹی پکاتے سمے کالا دھواں عورتوں کی آنکھوں سے آنسو کی

बार रोटियाँ पकाते हैं. अगर औरतें खराब रोटियाँ बनाती हैं तो उनके पति गाली गलौज करते हैं और उनको पीटते हैं.

रोटी पकाते समय काला धुआँ औरतों की आँखों से आँसू की नदी बहाता है. सारा घर धुएँ से भर जाता है. मुझ से अगर कोई पूछे कि दुनिया में सब से अधिक दुख देने वाली चीज़ जो मैं सोच सकता हूँ, क्या हो सकती है तो मैं जवाब दूंगा "हमारे गाँव में रोटी पकाना."

औज़ारों की कमी

सरदी के ख़तम होते ही बसन्त गरमी लेकर आ जाता है. हम लोग काँपना बन्द कर देते हैं. आस्मान जब साफ़ रहता है तो पढ़ाई लिखाई बाहर घास पर होती है. हमारे चारों तरफ़ किसान जुताई करते रहते हैं. कुछ किसान बैल से जोतते हैं कुछ ख़च्चर से, और अधिक तर फावड़े से ही ज़मीन उलटते पलटते हैं. हमारे क्लास के पास ही एक किसान जोत रहा है और उसकी बहन ढेले फोड़ती जाती है. इस लड़की के हाथ सख़्त और मुँह पीला है.

मेरे एक विद्यार्थी ने बताया कि लड़की को उसके भाई ने नंगे पैर कांटे रौंदने पर मजबूर किया था. उसके पैर घायल हो गए और बहुत दिनों तक तकलीफ़ देते रहे. पर अब घाव भर गए हैं. पड़ोसी हँसते हैं और कहते हैं कि इसके पैर पत्थर के हो गए, अब जूते की जरूरत नहीं है. चेहरा मोहरा इसका रोगियों सा हो गया है. मुँह इसका सूखा सूखा है और हर समय आंसुओं की एक धारा गालों पर बहती है. पर वास्तव में वह अब पैर के नीचे कंकर पत्थर या काँटे की परवाह नहीं करती. बैल कभी कभी सुस्ताने के लिये रुक जाते हैं पर यह लड़की सदा

روٹی پکاتے سمے کالا دھواں عورتوں کی آنکھوں سے آنسو کی ندی بہاتا ھے. سارا گھر دھوئیں سے بھر جاتا ھے. مجھ سے اگر کوئی پوچھے کہ دنیا میں سب سے ادھک دکھ دینے والی چیز جو میں سوچ سکتا ھوں، کیا ھوسکتی ھے تو میں جواب دونگا- "ھمارے گاؤں میں روٹی پکانا."

اوزاروں کی کمی

سردی کے ختم ھوتے ھی بسنت گرمی لے کر آجاتا ھے. ھم لوگ کانپنا بند کر دیتے ھیں. آسمان جب صاف رھتا ھے تو پڑھائی لکھائی باھر گھاس پر ھوتی ھے. ھمارے چاروں طرف کسان جوتائی کرتے رھتے ھیں. کچھ کسان بیل سے جوتتے ھیں، کچھ خچر سے، ھی اور ادھک تر پھاوڑے سے زمین الٹتے پلٹتے ھیں. ھمارے کلاس کے پاس ھی ایک کسان جوت رھا ھے اور اس کی بہن ڈھیلے پھوڑتی جاتی ھے. اس لڑی کے ھاتھ سخت اور منہ پیلا ھے.

میرے ایک ودیارتھی نے بتایا کہ لڑکی کو اس کے بھائی نے ننگے پیر کانٹے روندنے پر مجبور کیا تھا. اس کے پیر گھائل ھوگئے اور بہت دنوں تک تکلیف دیتے رھے. پر اب گھاؤ بھر گئے ھیں. پڑوسی ھنستے ھیں اور کہتے ھیں کہ اسکے پیر پتھر کے ھوگئے، اب جوتے کی ضرورت نہیں ھے. چہرہ مہرہ اسکا روگیوں سا ھوگیا ھے. منہ اسکا سوکھا ساکھا ھے اور ھر سمے آنسوؤں کی ایک دھارا گالوں پر بہتی ھے. پر واستو میں وہ اب پیر کے نیچے کنکر پتھر یا کانٹے کی پرواہ نہیں کرتی. بیل کبھی کبھی سستانے کے لئے رک جاتے ھیں پر یہ لڑکی سدا

काम करती रहती है. मैंने एक किसान से पूछा—"तुम एक दिन में कितना जोत सकते हो ?"

"कभी कभी दस पंद्रह क़दम" उसने जवाब दिया. यह चाल कछुए की है. यहाँ की जमीन पथरीली है. इसको जोतना बहुत ही कठिन है.

मेरी मां

रोज़े के दिन आ गए. मेरी मां रोज़े भी रखती है और हम सब के साथ काम भी करती है. बहुत दिनों तक बिना खाना पानी गुज़र करते करते वह बहुत दुबली हो गई. मुझे उसकी हालत देख कर दुगना दुख होता था.

हालाँ कि ज्यादातर किसानों ने अब की रोज़े रक्खे थे फिर भी इस साल थोड़ा सा ही नुक़सान हुआ. केवल एक नौजवान उपवास से मर गया. बच्चों की बात दूसरी है. जब कि माता पिता खेत काट रहे थे तो मौत इधर बच्चों को काट रही थी. हर रोज़ कोई न कोई एक साल से कम उमर का बच्चा गाँव में मरता था. पहले दो हफ़्ते में बाईस मर गए. जब मैंने अपनी माँ से कुछ भी पूछा तो उसने जवाब दिया—

"मुझ में एक शब्द कहने की भी शक्ति नहीं है." वह दिन भर भगवान के नाम का जाप करती है. मैं जब उससे पूछता हूँ—"यह सब तो ठीक है माँ, पर तुम दिन भर जाप करते करते थकती नहीं हो ?" वह जवाब देती है—"अगर मैं प्रार्थना न करूँगी तो इस दुख

کام کرتی رھتی ھے . میں نے ایک کسان سے پوچھا—"تم ایک دن میں کتنا جوت سکتے ھو ؟"

"کبھی کبھی دس پندرہ قدم" اُسنے جواب دیا . یہ چال کچھوے کی ھے . یہاں کی زمین پتھریلی ھے . اِس کو جوتنا بہت ھی کٹھن ھے .

میری ماں

روزے کے دن آ گئے . میری ماں روزے بھی رکھتی ھے اور ھم سب کے ساتھ کام بھی کرتی ھے . بہت دنوں تک بنا کھانا پانی گزر کرتے کرتے وہ بہت دبلی ھو گئی . مجھے اُس کی حالت دیکھکر دگنا دکھ ھوتا تھا .

حالانکہ زیادہ تر کسانوں نے اب کی روزے رکھے تھے پھر بھی اِس سال تھوڑا سا ھی نقصان ھوا . کیول ایک نوجوان اُپواس سے مر گیا . بچوں کی بات دوسری ھے . جب کہ ماتا پتا کھیت کاٹ رھے تھے تو موت ادھر بچوں کو کاٹ رھی تھی . ھر روز کوئی نہ کوئی ایک سال سے کم عمر کا بچہ گاؤں میں مرتا تھا . پہلے دو ھفتے میں بائیس مر گئے . جب میں نے اپنی ماں سے کچھ بھی پوچھا تو اُسنے جواب دیا—

"مجھ میں ایک شبد کہنے کی بھی شکتی نہیں ھے ." وہ دن بھر بھگوان کے نام کا جاپ کرتی ھے . میں جب اُس سے پوچھتا ھوں—"یہ سب تو ٹھیک ھے ماں' پر تم دن بھر جاپ کرتے کرتے تھکتی نہیں ھو ؟" وہ جواب دیتی ھے—"اگر میں پرارتھنا نہ

औरतों की दुर्दशा

عورتوں کی دردشا

भगवान के नाम का जाप करती है. मैं जब उससे पूछता हूं—यह सब तो ठीक है माँ, पर तुम दिन भर जाप करते करते थकती नहीं हो ?" वह जवाब देती है—"अगर मैं प्रार्थना न करूँगी तो इस दुख [illegible]

औरतों की दुर्दशा

बच्चे अपने मां बाप का आदर करते हैं पर औरतें उनसे कहीं अधिक अपने पति का आदर करती हैं और उससे डरती हैं. ऐसा भी होता है कि शादी के थोड़े दिनों तक पति पत्नी से प्रेम जताता है. पर उसके बाद औरत पति की दासी बन जाती है. उसे वह सब कुछ करना पड़ता है जो पति कहता है. मर्द पेट के बल लेटा रहता है और हुक्म चलाता है—"यह ला, वह कर." औरत को जवाब में एक शब्द भी कहने का अधिकार नहीं हैं. हर औरत उतनी ही पाक और गुनवती मानी जाती है जितना कि वह अपने पति से डरती और उसका आदर करती है. पति पत्नी को गाली दे सकता है, तिरस्कार कर सकता है, मार पीट सकता है, उसको आसूँ में नहला सकता है, पर पत्नी बदले में मुँह भी नहीं खोल सकती...... जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं औरत बूढ़ी होती जाती है और तब उसको इनसान कहलाने का भी अधिकार नहीं रह जाता. औरतों को बिना मुँह ढके इधर उधर जाने की मनाही है. वह अपने घूँघट का एक कोना दाँत से दबाए रहती हैं और केवल खाते समय मुँह खोल सकती हैं. खाना औरतें मर्दों के संग नहीं खातीं और न बात ही करती हैं. एक नौजवान लड़की और खासकर नई नवेली दुल्हन को अधिकार नहीं है कि वह किसी मर्द से इशारे से भी बात कर सके चाहे वह मर्द लड़की के बड़े बूढ़े या नातेदार ही क्यों न हों. अगर यह कहावत सच है कि इस लोक में कहे शब्दों का हिसाब हमें परलोक में देना पड़ेगा तो तुरकी की किसान स्त्री बहुत भाग्यवान है !

ہوں—"یہ سب تو ٹھیک ہے ماں، پر تم دن بھر جاپ کرتے کرتے [illegible]

عورتوں کی دردشا

بچے اپنے ماں باپ کا آدر کرتے ھیں پر عورتیں اُن سے کہیں ادھک اپنے پتی کا آدر کرتی ھیں اور اُس سے ڈرتی ھیں . ایسا بھی ہوتا ھے کہ شادی کے تھوڑے دنوں تک پتی پتنی سے پریم جتاتا ھے . پر اُس کے بعد عورت پتی کی داسی بن جاتی ھے . اُسے وہ سب کچھ کرنا پڑتا ھے جو پتی کہتا ھے . مرد پیٹ کے بل لیٹا رھتا ھے اور حکم چلاتا ھے—"یہ لا، وہ کر." عورت کو جواب میں ایک شبد بھی کہنے کا ادھیکار نہیں ھے . ھر عورت اُتنی ھی پاک اور گن وتی مانی جاتی ھے جتنا کہ وہ اپنے پتی سے ڈرتی اور اُس کا آدر کرتی ھے . پتی پتنی کو گالی دے سکتا ھے، ترسکار کر سکتا ھے، مار پیٹ سکتا ھے، اُس کو آنسو میں نہلا سکتا ھے، پر پتنی بدلے میں منہ بھی نہیں کھول سکتی......... جیسے جیسے دن بیتتے جاتے ھیں عورت بوڑھی ھوتی جاتی ھے اور تب اُس کو انسان کہلانے کا بھی ادھیکار نہیں رہ جاتا . عورتوں کو بنا منہ ڈھکے ادھر اُدھر جانے کی مناھی ھے . وہ اپنے گھونگھٹ کا ایک کونہ دانت سے دبائے رھتی ھیں اور کیول کھاتے سمے منہ کھول سکتی ھیں . کھانا عورتیں مردوں کے سنگ نہیں کھاتیں اور نہ بات ھی کرتی ھیں . ایک نوجوان لڑکی اور خاص کر نئی نویلی دلہن کو ادھیکار نہیں ھے کہ وہ کسی مرد سے اشارے سے بھی بات کر سکے چاھے وہ مرد لڑکی کے بڑے بوڑھے یا ناتے دار ھی کیوں نہ ھوں . اگر یہ کہاوت سچ ھے کہ اِس لوک میں کہے شبدوں کا حساب ھمیں پرلوک میں دینا پڑیگا تو ترکی کی کسان استری بہت بھاگوان ھے !

गाँव में ऐसा रिवाज है कि औरतें सात साल से ऊपर के मर्द के लिये हमेशा रास्ता छोड़ देती हैं. अगर मर्द सड़क पर जा रहा है तो औरतें पटरी पर रुक जाती हैं और उसको गुजर जाने देती हैं. हर मर्द यह देखता रहता है कि कोई औरत उससे आगे निकलने की कोशिश न करे. कभी कभार अगर भूल चूक से कोई औरत आगे निकल जाती है तो उसकी कनपटी पर एक मुक्का पड़ता है. यही वजह है कि औरतें मर्दों के पीछे पीछे दासियों की तरह चलती हैं. यहाँ तक कि अगर कोई औरत भारी बोझ लिये जा रही हो और उससे कह दिया जाय कि इन्तज़ार न करो, आगे बढ़ जाओ तो भी वह ऐसा करने की हिम्मत नहीं करेगी.

एक बार मेरा चचा हुसैन और उसकी पत्नी आयशा क़रीब के नगर में डाक्टर के पास गए, डाक्टर ने चची से पूछा--"तकलीफ़ कहाँ है, कहाँ दर्द हो रहा है ?" पर सिवाय सर हिलाने के चची डाक्टर को कोई जवाब न दे सकी. तब चचा ने डाक्टर को बीमारी बतलाई. वहाँ से निकलने के बाद मेरे चचा ने सोचा--चालीस साल में पहली बार शहर आए हैं, कुछ न कुछ हलुआ ज़रूर पत्नी के लिये खरीदना चाहिये. और वह दोनों एक दूकान पर गए. चचा आगे थे और उनके पीछे पीछे चची. थोड़ी देर बाद चचा पीछे मुड़े और देखा कि चची पीछे आड़ में खड़ी है, उसका मुँह ढंका है और वह डर से काँप रही है. चचा ने पूछा कि पीछे क्यों रह गई. उस ने जवाब दिया—"मैं मर्दों के आगे कैसे जा सकती हूं

گاؤں میں ایسا رواج ھے کہ عورتیں سات سال سے اوپر کے مرد کے لئے ھمیشہ راستہ چھوڑ دیتی ھیں. اگر مرد سڑک پر جا رھا ھے تو عورتیں پٹری پر رک جاتی ھیں اور اُس کو گزر جانے دیتی ھیں. ھر مرد یہ دیکھتا رھتا ھے کہ کوئی عورت اُس سے آگے نکلنے کی کوشش نہ کرے. کبھی کبھار اگر بھول چوک سے کوئی عورت آگے نکل جاتی ھے تو اُس کی کنپٹی پر ایک مکہ پڑتا ھے. یہی وجہ ھے کہ عورتیں مردوں کے پیچھے پیچھے داسیوں کی طرح چلتی ھیں. یہاں تک کہ اگر کوئی عورت بھاری بوجھ لئے جا رھی ھو اور اُس سے کہدیا جائے کہ انتظار نہ کرو، آگے بڑھ جاؤ تو بھی وہ ایسا کرنے کی ھمت نہیں کریگی.

ایک بار میرا چچا حسین اور اُسکی پتنی عائشہ قریب کے نگر میں ڈاکٹر کے پاس گئے. ڈاکٹر نے چچی سے پوچھا--"تکلیف کہاں ھے، کہاں درد ھو رھا ھے؟" پر سوائے سر ھلانے کے چچی ڈاکٹر کو کوئی جواب نہ دے سکی. تب چچا نے ڈاکٹر کو بیماری بتلائی. وھاں سے نکلنے کے بعد میرے چچا نے سوچا--چالیس سال میں پہلی بار شہر آئے ھیں، کچھ نہ کچھ حلوا ضرور پتنی کے لئے خریدنا چاھئے. اور وہ دونوں ایک دوکان پر گئے. چچا آگے تھے اور اُن کے پیچھے پیچھے چچی. تھوڑی دیر بعد چچا پیچھے مڑے اور دیکھا کہ چچی پیچھے آڑ میں کھڑی ھے، اُس کا منہ ڈھکا ھے اور وہ ڈر سے کانپ رھی ھے. چچا نے پوچھا کہ پیچھے کیوں رہ گئی. اُس نے جواب دیا--" میں مردوں کے آگے کیسے جا سکتی ھوں اور یہاں ھر

जन्म और मरन

جنم اور مرن

पीछे मुड़े और देखा कि चचा पीछे आड़ में खड़ा है, उसका मुँह ढंका है और वह डर से काँप रहा है. चचा ने पूछा कि पीछे क्यों रह गई. बहू ने जवाब दिया—"मैं मर्दों के आगे कैसे जा सकती हूँ"

अपने तजरबे और उन खबरों से जो गाँव के बड़े बूढ़ों से मैं इकट्ठा कर सका, मैंने जन्म और मरन का एक ब्योरा तैयार किया. (न) गाँव का भी जहाँ मैं पढ़ाता हूं और (द) गाँव का भी जहाँ मैं पैदा हुआ. मेरी लिस्ट में हर घर के बड़े बूढ़े का नाम भी लिखा है. पर नाम जाहिर करने में कोई तुक नहीं है.

(द) गाव में ३५० घर हैं. २२६ बच्चे चार साल में पैदा हुए और इसी बीच में १३४ मर गए. इस तरह गाँव की आबादी चार साल में ९२ फ़ी सदी बढ़ गई. ज्यादातर बच्चे एक साल की उमर पूरी करते करते मर गए, बहुत से सोहर में ही चल बसे, बाक़ी जन्म के पहले महीने में ही खतम हो गए. सारी मौतों का कारन था बच्चों की ठीक से देख भाल न होना.

(न) गाँव में १३५ घर और ७०८ वासी हैं. चार साल में ९२ घरों में १६३ बच्चे पैदा हुए और उनमें से ६७ मर गये. इस के अलावा इसी बीच ४० नौजवान भी मर गए. दूसरे शब्दों में इस गाँव में १६७ पैदा हुए और १०७ मर गए. इस तरह ५६ फ़ी सदी आबादी इस गाँव की बढ़ गई. तुरकी के गाँव में पैदा होने की गिनती बहुत तेज है. अगर महामारी न फैले तो बुरी से बुरी हालत में भी कुछ न कुछ आबादी बढ़ती ही है.

गाँव के लोग बच्चों की देख भाल के बारे में जरा भी नहीं जानते. इस बारे में अगर वह कुछ जानकारी रखते भी हैं तो कठिन जीवन उन्हें समय नहीं देता कि उस जानकारी का अच्छा उपयोग कर सकें.

اپنے تجربے اور اُن خبروں سے جو گاؤں کے بڑے بوڑھوں سے میں اکٹھا کر سکا، میں نے جنم اور مرن کا ایک بیورا تیار کیا ۔ (ن) گاؤں کا بھی جہاں میں پڑھاتا ہوں اور (د) گاؤں کا بھی جہاں میں پیدا ہوا ۔ میری لسٹ میں ہر گھر کے بڑے بوڑھے کا نام بھی لکھا ہے ۔ پر نام ظاہر کرنے میں کوئی تک نہیں ہے ۔

(د) گاؤں میں ۳۵۰ گھر ہیں ۔ ۲۲۶ بچے چار سال میں پیدا ہوئے اور اُسی بیچ میں ۱۳۴ مر گئے ۔ اِسطرح گاؤں کی آبادی چار سال میں ۹۲ فیصدی بڑھ گئی ۔ زیادہ تر بچے ایک سال کی عمر پوری کرتے کرتے مر گئے، بہت سے سوہر میں ہی چل بسے، باقی جنم کے پہلے مہینے میں ہی ختم ہو گئے ۔ ساری موتوں کا کارن تھا بچوں کی ٹھیک سے دیکھ بھال نہ ہونا ۔

(ن) گاؤں میں ۱۳۵ گھر اور ۷۰۸ واسی ہیں ۔ چار سال میں ۹۲ گھروں میں ۱۶۳ بچے پیدا ہوئے اور اُن میں سے ۶۷ مر گئے ۔ اِس کے علاوہ اسی بیچ ۴۰ نوجوان بھی مر گئے ۔ دوسرے شبدوں میں اِس گاؤں میں ۱۶۷ پیدا ہوئے اور ۱۰۷ مر گئے ۔ اِس طرح ۵۶ فیصدی آبادی اِس گاؤں کی بڑھ گئی ۔ ترکی کے گاؤں میں پیدا ہونے کی گنتی بہت تیز ہے ۔ اگر مہا ماری نہ پھیلے تو بری سے بری حالت میں بھی کچھ نہ کچھ آبادی بڑھتی ہی ہے ۔

گاؤں کے لوگ بچوں کی دیکھ بھال کے بارے میں ذرا بھی نہیں جانتے ۔ اس بارے میں اگر وہ کچھ جان کاری رکھتے بھی ہیں تو کٹھن جیون اُنہیں سمے نہیں دیتا کہ اُس جانکاری کا اچھا اپیوگ کر سکیں ۔

मैंने हिसाब लगाया है कि गरमी में जो ९० फ़ी सदी लड़के मरते हैं उसकी वजह पेचिश होती है. जैसे ही किसी बच्चे को यह रोग लिपटा फिर बचने की उम्मीद नहीं होती. कुछ भी हो इस सब का बुनियादी कारन भुकमरी और ग़रीबी है.

बच्चों का खाना

बच्चों की आँखों से जीवन ग़ायब होता है और मुखड़ा पीला. वह दुबले पतले और दब्बू होते हैं. बच्चों को मोटा ताज़ा, सुर्ख़ और तन्दुरुस्त होना चाहिये. ऐसे बच्चे कहाँ मिल सकते हैं? यह बच्चे तो अभी दस साल के भी नहीं हैं और दुखी हैं.

अपने चेलों को घर पर मिलने वाले खाने के बारे में मैंने पूछ ताछ की. मेरी जाँच के यह नतीजे हैं—दूसरे दरजे में मेरे तीस विद्यार्थी हैं और मैंने उनके खाने के बारे में तीन बार जाँच की—अक्तूबर, जनवरी और अप्रैल. इस तरह मुझे पता चला कि वह सितम्बर, अक्तूबर, जाड़े और मार्च अप्रैल में क्या खाते हैं. अक्तूबर की ९ तारीख़ को सनीचर के दिन पढ़ाना ख़तम करके मैंने एक के बाद दूसरे बच्चे से सवाल किया. उस दिन बीस भूके थे. किसी तरह का भी खाना खाए बिना स्कूल आए थे. दस ने केवल सूखी रोटी खाई थी. हाँ, ११ अक्तूबर को सारे लड़के रोटी खाकर आए थे और ऊपर से उन्होंने तरबूज़ भी खाया था.

मैंने दूसरी जाँच २० जनवरी को जुमेरात के दिन रात के खाने के बाद की. ... ही दलिया खाकर आए थे, और सोलह को तेल चुपड़ी रोटी मिली

میں نے حساب لگایا هے کہ گرمی میں جو ۹۰ فیصدی لڑکے مرتے هیں اُس کی وجہ پیچش هوتی هے ۔ جیسے هی کسی بچے کو یہ روگ لپٹا پھر بچنے کی اُمید نہیں هوتی ۔ کچھ بھی هو اس سب کا بنیادی کارن بھکمری اور غریبی هے ۔

بچوں کا کھانا

بچوں کی آنکھوں سے جیون غائب هوتا هے اور مکھڑا پیلا ۔ وہ دبلے پتلے اور دبو هوتے هیں ۔ بچوں کو موٹا تازہ' سرخ اور تندرست هونا چاهئے ۔ ایسے بچے کہاں مل سکتے هیں ؟ یہ بچے تو ابھی دس سال کے بھی نہیں هیں اور دکھی هیں ۔

اپنے چیلوں کو گھر پر ملنے والے کھانے کے بارے میں میں نے پوچھ تاچھ کی ۔ میری جانچ کے یہ نتیجے هیں--دوسرے درجے میں میرے تیس ودیارتھی هیں اور میں نے اُن کے کھانے کے بارے میں تین بار جانچ کی--اکتوبر' جنوری اور اپریل ۔ اِس طرح مجھے پتہ چلا کہ وہ ستمبر اکتوبر' جاڑے اور مارچ اپریل میں کیا کھاتے هیں ۔ اکتوبر کی ۹ تاریخ کو سنیچر کے دن پڑھانا ختم کر کے میں نے ایک کے بعد دوسرے بچے سے سوال کیا ۔ اُس دن بیس بھوکے تھے ۔ کسی طرح کا بھی کھانا کھائے بنا اسکول آئے تھے ۔ دس نے کیول سوکھی روٹی کھائی تھی ۔ هاں ۱۱ اکتوبر کو سارے لڑکے روٹی کھا کر آئے تھے اور اوپر سے اُنھوں نے تربوز بھی کھایا تھا ۔

आए थे और ऊपर से उन्होंने तरबूज़ भी खाया था.

मैंने दूसरी जाँच २० जनवरी को जुमेरात के दिन रात के खाने [illegible] ही दलिया खाकर आए थे, और सोलह को तेल चुपड़ी रोटी मिली थी. दो लड़कों की माएँ बाहर थीं इसलिये वह भूके ही स्कूल आ गए और बाक़ी ने नमक प्याज़ से पेट भरा था.

अप्रैल आते आते गोदाम ख़ाली होने लगता है. आटा तक ख़तम हो जाता है. लोग बाग दोनों वक़्त मिठाई और दलिया खाते हैं. अप्रैल की पहली तारीख़ को बारह लड़कों ने कुछ भी नहीं खाया था, ग्यारह सूखी रोटी खा कर आए थे और सात को दलिया मिला था. रात को घुँघनी के अलावा किसी को कुछ न मिल सका. जब मैं "दलिया" कहता हूँ तो यह न समझिये कि यह कोई अच्छी और शक्ति देने वाली चीज़ है. जो चीज़ यहाँ दलिया कहलाता है वह सूखी घास को पीस कर बनाया जाता है.

स्कूल का भी अन्त हो गया

पाँच साल पहले स्कूल बना था. लड़कों के घरौंदे और इस स्कूल की बिलडिंग में ज़रा सा ही अन्तर था. बारिश मिट्टी की दीवार को बहा ले गई और दरवाज़े और खिड़कियाँ ज़मीन पर आ रहीं. बड़ी कठिनाई से हम इस घरौंदे में पढ़ाई कर रहे थे.

एक सनीचर को मेरी माँ बीमार हो गई और मैं दो रोज़ के लिये अपने गाँव चला गया. लौट कर देखा कि स्कूल खंडहर हो गया है. किसानों ने मुझे बताया कि पानी ने इसको गिरा दिया. मैंने एक टूटी ईंट उठाई पर हाथ में वह इस तरह घुल गई जैसे कि आटे का ख़मीर. ख़ुशी इस बात की थी कि स्कूल गिरते समय

روٹی کھا کر آئے تھے اور اوپر سے اُنھوں نے تربوز بھی کھایا تھا .

میں نے دوسری جانچ ۲۰ جنوری کو جمعرات کے دن رات کے [illegible]

چھ دلیا کھا کر آئے تھے ' اور سولہ کو تیل چپڑی ملی تھی . دو لڑکوں کی مائیں باہر تھیں اس لئے وہ بھوکے ھی اسکول آگئے اور باقی نے نمک پیاز سے پیٹ بھرا تھا .

اپریل آتے آتے گودام خالی ہونے لگتا ھے . آٹا تک ختم ھو جاتا ھے . لوگ باگ دونوں وقت مٹھائی اور دلیا کھاتے ھیں . اپریل کی پہلی تاریخ کو بارہ لڑکوں نے کچھ بھی نہیں کھایا تھا' گیارہ سوکھی روٹی کھا کر آئے تھے اور سات کو دلیا ملا تھا . رات کو گھنگھنی کے علاوہ کسی کو کچھ نہ مل سکا . جب میں " دلیا " کہتا ھوں تو یہ نہ سمجھئے کہ یہ کوئی اچھی اور شکتی دینے والی چیز ھے . جو چیز یہاں دلیا کہلاتا ھے وہ سوکھی گھاس کو پیس کر بنایا جاتا ھے .

اسکول کا بھی انت ھو گیا

پانچ سال پہلے اسکول بنا تھا . لڑکوں کے گھروندے اور اِس اسکول کی بلڈنگ میں ذرا سا ھی انتر تھا . بارش مٹی کی دیوار کو بہا لے گئی اور دروازے اور کھڑکیاں زمین پر آ رھیں . بڑی کٹھنائی سے ھم اِس گھروندے میں پڑھائی کر رھے تھے .

ایک سنیچر کو میری ماں بیمار ھو گئی اور میں دو روز کے لئے اپنے گاؤں چلا گیا . لوٹ کر دیکھا کہ اسکول کھنڈر ھو گیا ھے . کسانوں نے مجھے بتایا کہ پانی نے اِسکو گرا دیا . میں نے ایک ٹوٹی اینٹ اُٹھائی پر ھاتھ میں وہ اِسطرح گھل گئی جیسے کہ آٹے کا خمیر . خوشی اِس بات کی تھی کہ اسکول گرتے سمے

हम लोग अन्दर नहीं थे. लेकिन अब हम क्या करें ? मरम्मत करना असम्भव है, बिलडिंग की कोई नीव ही बाक़ी नहीं है. और एक दूसरा स्कूल खड़ा करना बड़ा काम है !!

—अनुवादक, मुजीब रिज़वी

'नया हिन्द' की छमाही बँधी हुई बढ़िया जिल्दें

जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९५० तक की.

क़ीमत हर जिल्द की सिर्फ़ छै रुपया.

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दें ख़रीदने पर डाक ख़र्च माफ़.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठीगंज,
इलाहाबाद.

ھم لوگ اندر نہیں تھے. لیکن اب ھم کیا کریں ؟ مرمت کرنا اسمبھو ھے، بلڈنگ کی کوئی نیو ھی باقی نہیں ھے. اور ایک دوسرا اسکول کھڑا کرنا بڑا کام ھے !!

انوواد‌ک، مجیب رضوی

'نیا ھند' کی چھماھی بندھی ھوئی بڑھیا جلدیں

جولائی سن ١٩٤٦ سے دسمبر سن ١٩٥٠ تک کی.

قیمت ھر جلد کی صرف چھ روپیہ.

نوٹ—شروع سے آج تک کی کل جلدیں خریدنے پر ڈاک خرچ معاف.

—مینیجر 'نیا ھند'
١٤٥، مٹھی گنج،
الہ آباد.

१४५, मुट्ठीगंज,
इलाहाबाद.

۱۴۵، مٹھی گنج،
الہ آباد.

'हरिजन सेवक' से

राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप

श्री मगन भाई देसाई ने गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद की तरफ़ से श्री जवाहरलाल जी से प्रार्थना की थी कि जब वह कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की बैठक में अहमदाबाद आएँ, तब राष्ट्र भाशा हिन्दी के काम करने वालों और उसके प्रचार में दिलचस्पी लेने वालों को मिलने का मौक़ा दें और उनको राह दिखाएँ.

३१ जनवरी सन्' ५१ को शाम के सात बजे यह सभा हुई. श्री जवाहरलाल जी का स्वागत करते हुए श्री मगन भाई ने कहा—

माननीय जवाहर लाल जी,

आपका हम पर बहुत ही अनुग्रह है कि आपके सिर पर बड़े कामों का इतना बोझ होते हुए भी आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली और समय निकाल कर यहाँ पधारे. इस से पता चलता है कि आपको इस काम से कितना प्रेम है और इसको आप कितना अहम और ज़रूरी समझते हैं. बापू ने राष्ट्र भाशा के बारे में अपने विचार 'हिन्द स्वराज्य' में प्रकट किये और दक्खिन अफ़रीका से वापस आते ही उन्हों ने राष्ट्र भाशा के प्रचार का काम हमारे यहाँ शुरू कर दिया और अपने आखिर समय तक करते रहे. बापू ने शुरू में राष्ट्र भाशा को हिन्दी नाम

'ہریجن سیوک' سے

راشٹر بھاشا ہندی کا سوروپ

شری مگن بھائی دیسائی نے گجرات ودیا پیٹھ' احمد آباد کی طرف سے شری جواہر لال جی سے پرارتھنا کی تھی کہ جب وہ کل ہند کانگریس کمیٹی کی بیٹھک میں احمد آباد آئیں' تب راشٹر بھاشا ہندی کے کام کرنے والوں اور اُسکے پرچار میں دلچسپی لینے والوں کو ملنے کا موقع دیں اور اُن کو راہ دکھائیں.

۳۱ جنوری سن '۵۱ کو شام کے ۷ بجے یہ سبھا ہوئی. شری جواہر لال جی کا سواگت کرتے ہوئے شری مگن بھائی نے کہا—

مانئیہ جواہر لال جی'

آپ کا ہم پر بہت ہی انوگرہ ہے کہ آپ کے سر پر بڑے کاموں کا اتنا بوجھ ہوتے ہوئے بھی آپ نے ہماری پرارتھنا سویکار کرلی اور سمے نکالکر یہاں پدھارے. اِس سے پتہ چلتا ہے کہ آپکو اِس کام سے کتنا پریم ہے اور اِسکو آپ کتنا اہم اور ضروری سمجھتے ہیں. باپو نے راشٹر بھاشا کے بارے میں اپنے وچار 'ہند سوراج' میں پرکٹ کئے اور دکھن افریقا سے واپس آتے ہی اُنھوں نے راشٹر بھاشا کے پرچار کا کام ہمارے یہاں شروع کر دیا اور اپنے آخر سمے تک کرتے رہے. باپو نے شروع میں راشٹر بھاشا کو ہندی نام

दिया. मगर जब 'हिन्दी' का अर्थ संकुचित हो गया, तो उन्हों ने राष्ट्र भाशा का नाम हिन्दी से बदल कर हिन्दुस्तानी कर दिया. पर इस काम की बुनियाद, भूमिका और सिद्धांत में किसी तरह का फेर न हुआ.

गुजरात में यह काम उन्होंने गुजरात विद्यापीठ क़ायम करके शुरू किया. तब से आज तक हम यह काम अपनी शक्ति के अनुसार करते आए हैं. इसकी तफ़सील में जाकर यहाँ सभा का समय लेना ठीक नहीं.

हमारी विधान सभा ने राजभाशा के बारे में ठहराव पास करके इस सवाल को हल करने में अच्छी मदद पहुँचाई.

हमें इस बात की खुशी है कि बापू ने राष्ट्र भाशा के जो बुनियादी उसूल बताए थे, उनको ही विधान सभा ने मंज़ूर किया और सेक्शन ३५ में 'हिन्दुस्तानी' शब्द का ज़िक्र करके उसको राज भाशा के लिये अपनाया. लेकिन नाम 'हिन्दी' रखने से काफ़ी ग़लत-फ़हमी और बुद्धि भेद पैदा किया जा रहा है. और ऐसी संकुचित हिन्दी का प्रचार किया जा रह है, जो सेक्शन ३५ में बताई हुई 'हिन्दी' के अनुसार नहीं है. यह एक बड़ा खतरा है. बापू ने और आपने हमें ठीक ही कहा है कि अंत में राष्ट्रभाशा राष्ट्र के लोग ही बनाएँगे. लेकिन फिर भी पढ़े लिखों के भावों का और प्रचार का असर लोगों पर पड़ता ही है.

राजभाशा के (हिन्दी) के विकास में दूसरी प्रान्ती भाशाओं की सहायता के अलावा उर्दू से, जो वास्तव में विशाल हिन्दी की

دیا . مگر جب 'هندی' کا ارتھ سنکچت هو گیا' تو اُنھوں نے راشٹر بھاشا کا نام هندی سے بدل کر هندستانی کر دیا . پر اِس کام کی بنیاد' بھومیکا اور سدھانت میں کسی طرح کا پھیر نہ هوا .

گجرات میں یہ کام اُنھوں نے گجرات ودیا پیٹھ قائم کر کے شروع کیا . تب سے آج تک هم یہ کام اپنی شکتی کے انوسار کرتے آئے هیں . اِس کی تفصیل میں جا کر یہاں سبھا کا سمے لینا ٹھیک نہیں .

هماری ودھان سبھا نے راج بھاشا کے بارے میں ٹھہراؤ پاس کر کے اِس سوال کو حل کرنے میں اچھی مدد پہنچائی . همیں اس بات کی خوشی هے کہ باپو نے راشٹر بھاشا کے جو بنیادی اُصول بتائے تھے' اُنکو هی ودھان سبھا نے منظور کیا اور سکشن ٣٥ میں 'هندستانی' شبد کا ذکر کر کے اُسکو راج بھاشا کے لئے اپنایا . لیکن نام 'هندی' رکھنے سے کافی غلط فہمی اور بدھی بھید پیدا کیا جا رها هے . اور ایسی سنکچت هندی کا پرچار کیا جا رها هے' جو سکشن ٣٥ میں بتائی هوئی 'هندی' کے انوسار نہیں هے . یہ ایک بڑا خطرہ هے . باپو نے اور آپ نے همیں ٹھیک هی کہا هے کہ انت میں راشٹر بھاشا راشٹر کے لوگ هی بنائینگے . لیکن پھر بھی پڑھے لکھوں کے بھاووں کا اور پرچار کا اثر لوگوں پر پڑتا هی هے .

راج بھاشا کے (هندی کے) وکاس میں دوسری پرانتی بھاشاؤں کی سہایتا کے علاوہ اُردو سے' جو واستو میں وشال هندی کی

राजभाषा के (हिन्दी) के विकास में दूसरी प्रान्ती भाशाओं की सहायता के अलावा उर्दू से, जो वास्तव में विशाल हिन्दी की

एक शैली है, काफ़ी मदद लेनी है. इस बात को हमें न भूलना चाहिये. हम चाहते हैं कि 'उर्दू' में जो विशाल उपयोगी साहित्य पड़ा है, उसको नागरी 'लिपि में लाया जाय. विद्यापीठ यह काम शुरू करना चाहती है.

एक बात और है, जो हम महसूस करते हैं. वह यह है कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश वग़ैरा हिन्दी और उर्दू के वतन हैं. वहां के लोग अगर एक मिली जुली शैली पैदा करें, जो आसान हो और जिसे जनता समझ सके तो यह देश पर बड़ा ही एहसान होगा. प्रजातंत्र तब ही चल सकता है, जब देस की समस्यायें ऐसी भाशा में समझाई जाएँ, जिसे लोग समझ सकें. अब हिन्दी प्रचार का काम सब सूबों में होगा और वह भी हिन्दी के विकास में हाथ बटाएँगे. अगर उत्तर में एक सरल शैली पैदा की गई तो ग़ैरहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार करने में बड़ी सहायता होगी.

माननीय पंडित जी, इन चंद शब्दों में हमने अपने काम की रूपरेखा आपको बताई. इसके लिये आपका समय लिया, इसकी आपसे माफ़ी चाहता हूं. आप कृपा करके इस बड़े अहम काम में हमें रास्ता बताएं और फ़रमाएं कि किस ढंग से इस काम को आगे बढ़ाया जाय.

श्री जवाहरलाल जी का भाशन

हिन्दुस्तानी प्रचार के सिलसिले में कई बातें उठती हैं. हिन्दुस्तानी क्या है ? उसका स्वरूप क्या है ? और उसका प्रचार कैसे हो ? इन बातों में आज काफ़ी बहस उठती है. आपने कहा है कि चूँकि

راج بھاشا کے (ھندی کے) وکاس میں دوسری پرانتی بھاشاؤں کی سہایتا کے علاوہ اردو سے، جو واستو میں وشال ھندی کی

ایک شیلی ہے، کافی مدد لینی ہے. اس بات کو ہمیں نہ بھولنا چاہئے. ہم چاہتے ہیں کہ 'اردو' میں جو وشال اپیوگی ساہتیہ پڑا ہے، اس کو ناگری لپی میں لایا جائے. ودیا پیٹھ یہ کام شروع کرنا چاہتی ہے.

ایک بات اور ہے، جو ہم محسوس کرتے ہیں. وہ یہ ہے کہ دلی اور اتر پردیش وغیرہ ھندی اور اردو کے وطن ہیں. وہاں کے لوگ اگر ایک ملی جلی شیلی پیدا کریں، جو آسان ہو اور جسے جنتا سمجھ سکے تو یہ دیس پر بڑا ہی احسان ہوگا. پرجا تنتر تب ہی چل سکتا ہے، جب دیس کی سمسیائیں ایسی بھاشا میں سمجھائی جائیں، جسے لوگ سمجھ سکیں. اب ھندی پرچار کا کام سب صوبوں میں ہوگا اور وہ بھی ھندی کے وکاس میں ہاتھ بٹائینگے. اگر اتر میں ایک سرل شیلی پیدا کی گئی تو غیر ھندی پرانتوں میں ھندی پرچار کرنے میں بڑی سہایتا ہوگی.

مانئیہ پنڈت جی، ان چند شبدوں میں ہم نے اپنے کام کی روپ ریکھا آپ کو بتائی. اسکے لئے آپ کا سمے لیا، اسکی آپ سے معافی چاہتا ہوں. آپ کرپا کر کے اس بڑے اہم کام میں ہمیں راستہ بتائیں اور فرمائیں کہ کس ڈھنگ سے اس کام کو آگے بڑھایا جائے.

شری جواہر لال جی کا بھاشن

ھندستانی پرچار کے سلسلے میں کئی باتیں اٹھتی ہیں. ھندستانی کیا ہے؟ اسکا سوروپ کیا ہے؟ اور اسکا پرچار کیسے ہو؟ ان باتوں میں آج کافی بحث اٹھتی ہے. آپ نے کہا ہے کہ چونکہ

उत्तर प्रदेश हिन्दी का वतन है, इसलिये वहां ऐसी भाशा बनाई जाय जो आम लोगों की भाशा हो. यह बात ठीक है कि उत्तर प्रदेश में हिन्दी और उर्दू दोनों भाशायें हैं. दोनों भाशाओं के आसान लफ़्ज़ों से हिन्दुस्तानी भाशा बनी है.

आज लोग कहते हैं कि उर्दू पाकिस्तान की भाशा है. वह मुसलमानों की ज़बान है. मगर यह उनकी ग़लतफ़हमी है. उर्दू तो हमारे ही देस की भाशा है. उत्तर प्रदेश में वह बढ़ी और ख़ासकर यू. पी., बिहार, पंजाब और राजस्थान में पली. उत्तर प्रदेश के लोग सही उर्दू बोलते हैं. पाकिस्तान वाले सही उर्दू बोल भी नहीं सकते. हां, वहां जो लोग उत्तर प्रदेश से अब गये हैं वह ज़रूर सही उर्दू बोलते हैं. हमें अपने दिल से यह ख़याल निकाल देना चाहिये कि उर्दू परदेसी भाशा है. दिल्ली और लखनऊ उर्दू ज़बान के मरकज़ हैं. हां, यह बात सही है कि मुग़लराज के ज़माने में उर्दू में फ़ारसी के शब्द अधिक आ गए.

भाशा कैसे बनती है ? वह ऊपर से, ज़बरदस्ती नहीं लादी जा सकती, न वह क़ानून के ज़रिये बनाई जा सकती है. हाँ, पढ़ाई से हम उस पर कुछ असर डाल सकते हैं. लेकिन आख़िर में तो जनता जो भाशा बोलती है और लिखती है, उसी से भाशा बनती है. पढ़े लिखे आदमी भाशा पर कुछ असर डालते हैं. तुलसीदास के पहले लोग संस्कृत में लिखते थे. मुग़ल राज के ज़माने में संस्कृत छूटने लगी और फ़ारसी शुरू हुई. हमारे ज़माने में लोग अब अंगरेज़ी में लिखते हैं. मैंने भी तो जो चार पाँच किताबें लिखी हैं वह अंगरेज़ी में ही लिखीं. हिन्दी अभी तक एक देहाती भाशा समझी जाती है.

اُتر پردیش ہندی کا وطن ہے، اِسلئے وہاں ایسی بھاشا بنائی جائے جو عام لوگوں کی بھاشا ہو ۔ یہ بات ٹھیک ہے کہ اُتر پردیش میں ہندی اور اُردو دونوں بھاشائیں ہیں ۔ دونوں بھاشاؤں کے آسان لفظوں سے ہندستانی بھاشا بنی ہے ۔

آج لوگ کہتے ہیں کہ اُردو پاکستان کی بھاشا ہے وہ مسلمانوں کی زبان ہے ۔ مگر یہ اُنکی غلط فہمی ہے ۔ اُردو تو ہمارے ہی دیس کی بھاشا ہے ۔ اُتر پردیش میں وہ بڑھی اور خاص کر یو ۔ پی ۔، بہار، پنجاب اور راجستھان میں پلی ۔ اُتر پردیش کے لوگ صحیح اُردو بولتے ہیں ۔ پاکستان والے صحیح اُردو بول بھی نہیں سکتے ۔ ہاں، وہاں جو لوگ اُتر پردیش سے اب گئے ہیں، وہ ضرور صحیح اُردو بولتے ہیں ۔ ہمیں اپنے دل سے یہ خیال نکال دینا چاہئے کہ اُردو پردیسی بھاشا ہے ۔ دلی اور لکھنؤ اُردو زبان کے مرکز ہیں ۔ ہاں، یہ بات صحیح ہے کہ مغل راج کے زمانے میں اُردو میں فارسی کے شبد ادھک آگئے ۔

بھاشا کیسے بنتی ہے ؟ وہ اوپر سے، زبردستی نہیں لادی جا سکتی، نہ وہ قانون کے ذریعے بنائی جاسکتی ہے ۔ ہاں پڑھائی سے ہم اُس پر کچھ اثر ڈال سکتے ہیں ۔ لیکن آخر میں تو جنتا جو بھاشا بولتی ہے اور لکھتی ہے، اُسی سے بھاشا بنتی ہے ۔ پڑھے لکھے آدمی بھاشا پر کچھ اثر ڈالتے ہیں ۔ تلسی داس کے پہلے لوگ سنسکرت میں لکھتے تھے ۔ مغل راج کے زمانے میں سنسکرت چھوٹنے لگی اور فارسی شروع ہوئی ۔ ہمارے زمانے میں لوگ اب انگریزی میں لکھتے ہیں ۔ میں نے بھی تو جو چار پانچ کتابیں لکھی ہیں وہ انگریزی میں ہی لکھیں ۔ ہندی ابھی تک ایک دیہاتی بھاشا سمجھی

लोग संस्कृत में लिखते थे. मुगल राज के ज़माने में संस्कृत छूटने लगी और फ़ारसी शुरू हुई. हमारे ज़माने में लोग अब अंगरेज़ी में लिखते हैं. मैंने भी तो जो चार पाँच किताबें लिखी हैं वह अंगरेज़ी में ही लिखीं. हिन्दी अभी तक एक देहाती भाशा समझी जाती है. मगर अब ऐसा समझने से काम नहीं चलेगा. देस के सब लोग अंगरेज़ी नहीं सीख सकते. संस्कृत, फ़ारसी और अंगरेज़ी के होते हुए भी हिन्दी हिन्दुस्तानी तो रही ही और तमाम लोगों का काम इसी भाशा से चलता रहा है.

हमारे देस में आज नौ दस बढ़ती हुई भाशाएँ हैं. जैसे गुजराती, मराठी, बंगाली, तामिल, वग़ैरा. गुजराती भी एक अच्छी भाशा है. उस में बढ़िया साहित्य भी है. आपकी शिक्षा गुजराती के ज़रिये ही होगी. लेकिन फिर भी यह ज़रूरी है कि सारे देस की एक भाशा हो. वह सिर्फ़ हिन्दी हिन्दुस्तानी ही हो सकती है. चाहे हम उसे हिन्दी कहें या हिन्दुस्तानी कहें.

महात्मा जी ने देस के कितने ही सवाल हाथ में लिये. जिस सवाल को वह ज़रूरी समझते थे उसके पीछे जुट जाते थे. बापू ने बहुत से कामों में ध्यान दिया और काम करने वालों को आगे बढ़ाया. एक बार मैंने इन कामों की फ़हरिस्त बनाई. बहुत लम्बी फ़हरिस्त बनी.

बापू ने हिन्दी हिन्दुस्तानी का सवाल भी उठाया, देस की शक्ति बढ़ाने के लिये, जनता में जाग्रति लाने के लिये. वह कहते थे कि हमें ऐसी भाशा बनानी है जो पढ़े लिखे लोगों की न हो मगर आम लोगों की हो.

मैं उत्तरप्रदेश में जाता हूँ और वहाँ जो कुछ कहता हूँ, उसे लोग आसानी से समझ लेते हैं. यही सच्ची भाशा है. लेकिन अब वहाँ ख़ासकर लैजिस्लेचर में और पढ़े लिखे लोगों की ऐसी बोली

مغل راج کے زمانے میں سنسکرت چھوٹنے لگی اور فارسی شروع ہوئی. ہمارے زمانے میں لوگ اب انگریزی میں

میں ہی لکھیں۔ ہندی ابھی تک ایک دیہاتی بھاشا سمجھی جاتی ہے۔ مگر اب ایسا سمجھنے سے کام نہیں چلے گا۔ دیس کے سب لوگ انگریزی نہیں سیکھ سکتے۔ سنسکرت، فارسی اور انگریزی کے ہوتے ہوئے بھی ہندی ہندستانی تو رہی ہی اور تمام لوگوں کا کام اِسی بھاشا سے چلتا رہا ہے۔

ہمارے دیس میں آج نو دس بڑھتی ہوئی بھاشائیں ہیں جیسے گجراتی، مراٹھی، بنگالی، تامل وغیرہ۔ گجراتی بھی ایک اچھی بھاشا ہے۔ اُس میں بڑھیا ساہتیہ بھی ہے۔ آپ کی شکشا گجراتی کے ذریعے ہی ہوگی۔ لیکن پھر بھی یہ ضروری ہے کہ سارے دیس کی ایک بھاشا ہو۔ وہ صرف ہندی ہندستانی ہی ہوسکتی ہے۔ چاہے ہم اُسے ہندی کہیں یا ہندستانی کہیں۔

مہاتما جی نے دیس کے کتنے ہی سوال ہاتھ میں لئے۔ جس سوال کو وہ ضروری سمجھتے تھے اُسکے پیچھے جٹ جاتے تھے۔ باپو نے بہت سے کاموں میں دھیان دیا اور کام کرنے والوں کو آگے بڑھایا۔ ایک بار میں نے اِن کاموں کی فہرست بنائی۔ بہت لمبی فہرست بنی۔

باپو نے ہندی ہندستانی کا سوال بھی اُٹھایا، دیس کی شکتی بڑھانے کے لئے، جنتا میں جاگرتی لانے کے لئے۔ وہ کہتے تھے کہ ہمیں ایسی بھاشا بنانی ہے جو پڑھے لکھے لوگوں کی نہ ہو مگر عام لوگوں کی ہو۔

میں اُتر پردیش میں جاتا ہوں اور وہاں جو کچھ کہتا ہوں، اُسے لوگ آسانی سے سمجھ لیتے ہیں۔ یہی سچی بھاشا ہے۔ لیکن اب وہاں خاصکر لیجسلیچر میں اور پڑھے لکھے لوگوں کی ایسی بولی

होने लगी है, जो आसानी से मेरी समझ में भी नहीं आती. वहाँ अब शुद्ध हिन्दी भाषा बोलने का प्रयत्न हो रहा है. कई लोग यह समझते हैं कि हिन्दी ऐसी होनी चाहिये जिस में बाहर के शब्द न आएँ. यह ग़लत तरीक़ा है. अंगरेज़ी भाषा दुनिया की बड़ी भाषाओं में एक है. वह ताक़तवर भाषा है. आपको जान कर अचरज होगा कि हर साल उस में थोड़े नहीं, कई हज़ार नए शब्द बढ़ जाते हैं. मैं अहमदनगर के क़िले में था, उस वक़्त मेरे पास काफ़ी समय था. एक दफ़ा मैं अंगरेज़ी डिक्शनरी लेकर बैठ गया और अपने देस के लफ़्ज़ों की फ़हरिस्त बनाने लगा. पचास साठ सफ़े ही देखे थे कि सैकड़ों की फ़हरिस्त हो गई. हमारे बहुत से शब्दों को लेकर उन्होंने अपने कपड़े पहना दिये हैं. वह भाषा कमज़ोर हो जाती है, जो नये शब्द नहीं लेती. जो भाषा नये शब्द लेकर उन्हें अपने कपड़े पहनाती है, वह भाषा ज़िन्दा रहती है. लेकिन नये शब्द भी ज़िन्दा और जीवित रहने चाहियें. भाषा के दरवाज़े हमेशा खुले रहने चाहियें. हाल ही में दिल्ली के पेशावर लोगों के पेशों के शब्दों की जाँच कराई गई, तो मालूम हुआ कि उन्होंने अपने काम के ख़याल से जो शब्द बनाए हैं, वह बहुत उचित और अर्थपूर्ण हैं.

हम अंगरेज़ी भाषा के शब्द क्यों न लें. रेलवे या स्टेशन के लिये महाराष्ट्र में लम्बे लम्बे शब्द निकाले गए हैं. यह बात भाषा को मारने की है. क्या भाषा कोई तमाशा है? रूसी, चीनी, अरबी, फ़ारसी कोई भी भाषा हो, जिस से हम नये शब्द ले सकें, लेने

हमारी भाषा का सही स्वरूप हिन्दुस्तानी है. मुझे संस्कृत से

ھونے لگی ھے، جو آسانی سے میری سمجھ میں بھی نہیں آتی ۔ وھاں اب شدھ ھندی بھاشا بولنے کا پریتن ھو رھا ھے ۔ کئی لوگ یہ سمجھتے ھیں کہ ھندی ایسی ھونی چاھئے جس میں باھر کے شبد نہ آئیں ۔ یہ غلط طریقہ ھے ۔ انگریزی بھاشا دنیا کی بڑی بھاشاؤں میں ایک ھے ۔ وہ طاقتور بھاشا ھے ۔ آپ کو جان کر اچرج ھوگا کہ ھر سال اُس میں تھوڑے نہیں، کئی ھزار نئے شبد بڑھ جاتے ھیں ۔ میں احمد نگر کے قلعے میں تھا، اُس وقت میرے پاس کافی سمے تھا ۔ ایک دفعہ میں انگریزی ڈکشنری لے کر بیٹھ گیا اور اپنے دیس کے لفظوں کی فہرست بنانے لگا ۔ پچاس ساٹھ صفحے ھی دیکھے تھے کہ سیکڑوں کی فہرست ھوگئی ۔ ھمارے بہت سے شبدوں کو لے کر اُنھوں نے اپنے کپڑے پہنا دیئے ھیں ۔ وہ بھاشا کمزور ھوجاتی ھے، جو نئے شبد نہیں لیتی ۔ جو بھاشا نئے شبد لے کر اُنھیں اپنے کپڑے پہناتی ھے، وہ بھاشا زندہ رھتی ھے ۔ لیکن نئے شبد بھی زندہ اور جیوت رھنے چاھئیں ۔ بھاشا کے دروازے ھمیشہ کھلے رھنے چاھئیں ۔ حال ھی میں دلی کے پیشہ ور لوگوں کے پیشوں کے شبدوں کی جانچ کرائی گئی، تو معلوم ھوا کہ اُنھوں نے اپنے کام کے خیال سے جو شبد بنائے ھیں وہ بہت اُچت اور ارتھ پورن ھیں ۔

ھم انگریزی بھاشا کے شبد کیوں نہ لیں ۔ ریلوے یا اسٹیشن کے لئے مہاراشٹر میں لمبے لمبے شبد نکالے گئے ھیں ۔ یہ بات بھاشا کو مارنے کی ھے ۔ کیا بھاشا کوئی تماشا ھے ؟ روسی، چینی، عربی، فارسی کوئی بھی بھاشا ھو، جس سے ھم نئے شبد لے سکیں،

ھماری بھاشا کا صحیح سروپ ھندستانی ھے ۔ مجھے سنسکرت

लिये महाराष्ट्र में लम्बे लम्बे शब्द निकाले गए हैं. यह बात भाषा को मारने की है. क्या भाषा कोई तमाशा है ? रूसी, चीनी, अरबी

हमारी भाषा का सही स्वरूप हिन्दुस्तानी है. मुझे संस्कृत से कोई परहेज़ नहीं. मुझे इस में कोई रुकावट नहीं कि नए शब्द संस्कृत से आएँ. लेकिन वह शब्द नक़ली रूप से न आने चाहियें. आजकल हिन्दी ही के प्रेमी हिन्दी को हानि पहुँचा रहे हैं. वह ऐसी हिन्दी बनाना चाहते हैं जिसे चन्द लोग समझ सकें.

हिन्दुस्तानी प्रचार का काम सब तरह से बहुत जरूरी है, क्योंकि वह राष्ट्र की माँग है. राष्ट्र भाषा हमारे राष्ट्र को बाँधती है, उसे मज़बूत करती है. हमें राष्ट्र भाषा को तमाम लोगों की भाषा बनाना है, इस लिये उस में नये शब्द लेने वाले भाषा की सेवा करते हैं. आप लोग यहाँ जो काम कर रहे हैं उस से मुझे ख़ुशी है. राष्ट्र भाषा के प्रचार का काम एक ज़रूरी काम है. मैं चाहता हूँ कि आप को इसमें सफलता हासिल हो.

हماری بھاشا کا صحیح سروپ ھندستانی ھے . مجھے سنسکرت سے کوئی پرھیز نہیں. مجھے اِس میں کوئی رکاوٹ نہیں کہ نئے شبد سنسکرت سے آئیں . لیکن وہ شبد نقلی روپ سے نہ آنے چاھئیں . آج کل ھندی ھی کے پریمی ھندی کو ھانی پہنچا رھے ھیں . وہ ایسی ھندی بنانا چاھتے ھیں جسے چند لوگ سمجھ سکیں .

ھندستانی پرچار کا کام سب طرح سے بہت ضروری ھے ، کیونکہ وہ راشٹر کی مانگ ھے . راشٹر بھاشا ھمارے راشٹر کو باندھتی ھے ، اُسے مضبوط کرتی ھے . ھمیں راشٹر بھاشا کو تمام لوگوں کی بھاشا بنانا ھے ، اِس لئے اُس میں نئے شبد لینے والے بھاشا کی سیوا کرتے ھیں . آپ لوگ یہاں جو کام کر رھے ھیں اُس سے مجھے خوشی ھے . راشٹر بھاشا کے پرچار کا کام ایک ضروری کام ھے . میں چاھتا ھوں کہ آپکو اس میں سپھلتا حاصل ھو .

'नया हिन्द' के फुटकर पुराने परचे

कम क़ीमत पर ख़रीदिये

		हर परचे की क़ीमत
सन १९५० के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ आठ आना
सन १९४९ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना
सन १९४८ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना
सन १९४७ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना
जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९४६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना

नोट—शुरू से आज तक के कुल परचे ख़रीदने पर डाक ख़र्च माफ़

—मैनेजर 'नया हिन्द'

१४५ मुट्ठीगंज इलाहाबाद

'نیا ھند' کے پھٹکر پرانے پرچے

کم قیمت پر خریدئے

		ھر پرچے کی قیمت
سن ١٩٥٠ کے پھٹکر پرچے	..	صرف آٹھ آنا
سن ١٩٤٩ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھہ آنہ
سن ١٩٤٨ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھہ آنہ
سن ١٩٤٧ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھہ آنہ
جولائی سن ١٩٤٦ سے دسمبر سن ١٩٤٦ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھے آنہ

نوٹ — شروع سے آج تک کے کل پرچے خریدنے پر ڈاک خرچ معاف .

—مینیجر 'نیا ھند'

١٣٥ ، مٹھی گنج ، الہ آباد .

'सर्वोदय' से

चरखा बनाम खेती व सर्व धर्मी प्रार्थना

(आचार्य विनोबा भावे)

कताई मंडल प्रसारकों ने दो सवाल पूछे हैं. मंगलूर के क्रिश्चन लोगों की तरफ़ से यह सवाल आए हुए हैं.

सवाल १—आज सब लोग कहते हैं कि हमारे देस के लिये प्रधान धंदा खेती का है. तो फिर आप लोग वही क्यों नहीं हाथ में लेते ? चरखा क्यों ?

सवाल २—आश्रम प्रार्थना में मुसलमानों को अपनी तरफ़ खींचने के लिये क़ुरान शरीफ़ की आयतें ली गई हैं. कुछ बौद्ध और पारसी मन्त्र भी लिये हैं. क्रिश्चन क्यों नहीं ? 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' की जगह 'यसू अल्लाह तेरे नाम' ऐसा कहना भी आप लोगों को उचित नहीं मालूम होता ?

जवाब १—हिन्दुस्तान की आज की हालत में सर्वोदय सेवकों को खेती की तरफ़ जरूर ध्यान देना चाहिये, इसमें कोई शक नहीं है. मैं तो इन दिनों पूरा किसान बन गया हूँ, यह मेरे मित्र जानते हैं. 'सर्वोदय' में मेरे इन प्रयोगों की कुछ तफ़सील भी दी जाती है. ग्राम सेवा के काम की बुनियाद खेती पर रखी की जाय ...

'سروودے' سے

چرخه بنام کهیتی و سرو دهرمی پرارتهنا

(آچاریه ونوبا بهاوے)

کتائی منڈل پر سارکوں نے دو سوال پوچھے هیں . منگلور کے کرشچین لوگوں کی طرف سے یه سوال آئے هوئے هیں .

سوال ۱—آج سب لوگ کہتے هیں که همارے دیس کے لئے پردهان دهندا کهیتی کا هے . تو پھر آپ لوگ وهی کیوں نهیں هاتھ میں لیتے ؟ چرخه کیوں ؟

سوال ۲—آشرم پرارتهنا میں مسلمانوں کو اپنی طرف کهینچنے کے لئے قرآن شریف کی آئتیں لی گئی هیں . کچھ بودھ اور پارسی منتر بھی لئے گئے هیں. کرشچین کیوں نهیں؟ 'ایشور الله تیرے نام' کی جگه 'یسوع الله تیرے نام' ایسا کهنا بھی آپ لوگوں کو اُچت نهیں معلوم هوتا؟

جواب ۱—هندستان کی آج کی حالت میں سروودے سیوکوں کو کهیتی کی طرف ضرور دھیان دینا چاهئے؛ اس میں کوئی شک نهیں هے . میں تو ان دنوں پورا کسان بن گیا هوں' یه میرے متر جانتے هیں . 'سروودے' میں میرے ان پریوگوں کی کچھ تفصیل بھی دی جاتی هے . گرام سیوا کے کام کی ...

है. मैं तो इन दिनों पूरा किसान बन गया हूँ, यह मेरे मित्र जानते हैं. 'सर्वोदय' में मेरे इन प्रयोगों की कुछ तफ़सील भी दी जाती है. ग्राम

हिदायत भी सब सेवकों को सर्व सेवा संघ दे चुका है. लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि चरखे को छोड़ कर हम खेती में लग जाँय. जहाँ हम भूक को मिटाना चाहते हैं वहाँ हम नंगे रहने को भी पसंद नहीं करेंगे. खेती किसी न किसी मात्रा में लोग करते ही आए हैं, और उसके ख़िलाफ़ कोई झगड़ा खड़ा नहीं है. चरखे का उद्योग टूट चुका था. उसको खड़ा करने की कोशिश अगर हम नहीं करते हैं तो और कोई करने वाला नहीं है. इतना ही नहीं, इस के विरोध में मिलों का पुरस्कार करने वाला यन्त्रवाद खड़ा है. उस यन्त्रवाद के ख़िलाफ़ हमारी जो बग़ावत है, उसकी निशानी चरखा बन जाता है.

परंधाम में हम लोग दिन का ख़ास हिस्सा खेती करने में और कुआँ खोदने में लगाते हैं. उसकी तारीफ़ करते हुए एक अख़बार ने लिखा था कि विनोबा ने आज कल चरखा यग्य की जगह खेती यग्य शुरू कर दिया है. हमें उसका प्रतिवाद करना पड़ा. हम अपना दिन का काम चरखे से ही शुरू करते और ख़तम करते हैं. चरखे को हमने कम नहीं किया बल्कि उसे बढ़ाया है क्योंकि कपास से लेकर कपड़ा बुनने तक का सारा काम हर एक घर में घरेलू काम के तौर पर होना चाहिये. ऐसा हमने माना है. और रोज़ क़रीब दो घंटे हम उस में लगाते हैं. चरखे को हमने प्राथना में जगह दी है और हमारी उपासना वही है. हाँ, यह ज़रूर है कि हम व्योपारी खादी को अब महत्व नहीं देते. इसका मतलब यह भी नहीं कि बेकारी दूर करने का जो काम चरखे से होता है, उसकी हम क़दर नहीं करते. लेकिन चरखे का वह ख़ास काम नहीं है. उसका ख़ास

میرے متر جانتے ہیں۔ 'سرودے' میں میرے ان پریوگوں کی کچھ تفصیل بھی دی جاتی ہے۔ گرام سیوا کے کام کی

ھدایت بھی سب سیوکوں کو سرو سیوا سنگھ دے چکا ھے۔ لیکن اسکا مطلب یہ نہیں کہ چرخے کو چھوڑ کر ھم کھیتی میں لگ جائیں۔ جہاں ھم بھوک کو مٹانا چاھتے ھیں وھاں ھم ننگے رھنے کو بھی پسند نہیں کرینگے۔ کھیتی کسی نہ کسی ماترا میں لوگ کرتے ھی آئے ھیں، اور اُسکے خلاف کوئی جھگڑا کھڑا نہیں ھے۔ چرخے کا اُدیوگ ٹوٹ چکا تھا۔ اُسکو کھڑا کرنے کی کوشش اگر ھم نہیں کرتے ھیں تو اور کوئی کرنے والا نہیں ھے۔ اتنا ھی نہیں، اُسکے وِرودھ میں ملوں کا پرسکار کرنے والا یِنتر واد کھڑا ھے۔ اُس ینتر واد کے خلاف ھماری جو بغاوت ھے، اُسکی نشانی چرخہ بن جاتا ھے۔

پرندھام میں ھم لوگ دن کا خاص حصہ کھیتی کرنے میں اور کنواں کھودنے میں لگاتے ھیں۔ اُسکی تعریف کرتے ھوئے ایک اخبار نے لکھا تھا کہ ونوبا نے آج کل چرخہ یگیہ کی جگہ کھیتی یگیہ شروع کر دیا ھے۔ ھمیں اُسکا پرتی واد کرنا پڑا۔ ھم اپنا دن کا کام چرخے سے ھی شروع کرتے اور ختم کرتے ھیں۔ چرخے کو ھم نے کم نہیں کیا بلکہ اُسے بڑھایا ھے کیونکہ کپاس سے لیکر کپڑا بننے تک کا سارا کام ھر ایک گھر میں گھریلو کام کے طور پر ھونا چاھئے ایسا ھم نے مانا ھے۔ اور روز قریب دو گھنٹے ھم اُس میں لگاتے ھیں۔ چرخے کو ھم نے پرارتھنا میں جگہ دی ھے اور ھماری اُپاسنا وھی ھے۔ ھاں، یہ ضرور ھے کہ ھم بیوپاری کھادی کو اب مہتو نہیں دیتے۔ اِسکا مطلب یہ نہیں کہ بیکاری دور کرنے کا جو کام چرخے سے ھوتا ھے، اُسکی ھم قدر نہیں کرتے۔ لیکن چرخے کا وہ خاص کام نہیں ھے۔ اُسکا خاص

काम सर्वोदय समाज क़ायम करना है जो हिन्दुस्तान में तो चरखा ही कर सकता है.

जवाब २—आश्रम प्रार्थना में अलग अलग धर्मों की प्रार्थनायें किस तरह दाखिल हुईं, इसका ज़िक्र गांधीजी ने बहुत बार किया है इसलिये उसे मैं दुहराना नहीं चाहूँगा. इतना ही कहूँगा कि उनका एक भक्त हृदय था और जो चीज सहज भाव में जैसी मिल गई वैसी उन्होंने ले ली. मैंने देखा कि पारसियों का जो मंत्र आश्रम प्रार्थना में बोला जाता है, वह उस धर्म की निगाह से सबसे अच्छा चुनाव भी नहीं है. वह अच्छा तो है, लेकिन पारसियों का ख़ास मंत्र, जिसे हम पारसियों की गायत्री कह सकते हैं, वह है 'अहुनवैर्य' मैंने यह मंत्र परंधाम की प्रार्थना में मराठी पद्य में तरजुमा करके दाख़िल कर लिया है. लेकिन बापू ने तो एक दिन डाक्टर गिल्डर सहज ही जो मंत्र बोल गये उसी को चलाया.

क्रिश्चन भाइयों के साथ एक रूप होने के ख़याल से 'लीड काइन्डली लाइट' का गुजराती तरजुमा आश्रम की प्रार्थना में इतवार के दिन बोलने का बापू का रिवाज था. तालीमी संघ की प्रार्थना में ईसाई प्रार्थना रोज बोली जाती है और जहाँ ईसाई समाज विशेश है वहाँ ऐसा ही करना चाहिये. इतना ही नहीं, बल्कि हम नये सिरे से जहाँ सब मिलकर प्रार्थना का आयोजन करेंगे, वहाँ सब धर्मों के कुछ हिस्से उस प्रार्थना में रहने चाहियें, ऐसा मैं मानता हूँ और परंधाम में मैंने वैसा किया भी है.

کام سرودے سماج قائم کرنا هے' جو هندستان میں تو چرخه هی کر سکتا هے .

جواب ۲—آشرم پرارتهنا میں الگ الگ دهرموں کی پرارتهنائیں کس طرح داخل هوئیں' اسکا ذکر گاندهی جی نے بہت بار کیا هے اِسلئے اُسے میں دهرانا نہیں چاهوں گا . اتنا هي کهوں گا که اُن کا ایک بهکت هردے تها اور جو چیز سہج بهاؤ میں جیسی مل گئی ویسی اُنهوں نے لے لی . میں نے دیکها که پارسیوں کا جو منتر آشرم پرارتهنا میں بولا جاتا هے' وه اُس دهرم کی نگاه سے سب سے اچها چناؤ بهی نہیں هے . وه اچها تو هے' لیکن پارسیوں کا خاص منتر' جسے هم پارسیوں کی گایتری کہ سکتے هیں' وه هے 'اهون ویریه' میں نے یه منتر پرندهام کی پرارتهنا میں مراٹهی پدیه میں ترجمه کرکے داخل کر لیا هے . لیکن باپو نے تو ایک دن ڈاکٹر گلڈر سہج هی جو منتر بول گئے اُسی کو چلایا .

کرشچین بهائیوں کے ساته ایک روپ هونے کے خیال سے ' لیڈ کائنڈلی لائٹ' کا گجراتی ترجمه آشرم کی پرارتهنا میں اتوار کے دن بولنے کا باپو کا رواج تها . تعلیمی سنگه کی پرارتهنا میں عیسائی پرارتهنا روز بولي جاتي هے اور جہاں عیسائی سماج وشیش هے وهاں ایسا هی کرنا چاهئے . اتنا هی نہیں' بلکه هم نئے سرے سے جہاں سب ملکر پرارتهنا کا آیوجن کرینگے' وهاں سب دهرموں کے کچه حصے اُس پرارتهنا میں رهنے چاهئیں' ایسا میں مانتا هوں اور پرندهام میں میں نے ویسا کیا بهی هے .

बल्कि हम नये सिर से जहाँ सब मिलकर प्रार्थना का आयोजन करेंगे, वहाँ सब धर्मों के कुछ हिस्से उस प्रार्थना में रहने चाहियें, ऐसा मैं मानता हूँ और परंधाम में मैंने वैसा किया भी है.

'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' तो नोआखाली में सहज ही सूझा था. उस में सब धर्मों ने और सब पंथों ने मान्य किये हुए भगवान के सब नाम छिपे माने हैं, लेकिन अगर दूसरे नाम भी इस में जोड़ दें तो कोई दोश नहीं होगा. ईश्वर अल्लाह, गाड गोविन्द, मज़्द महादेव, जनारदन जहूवा, यह सब मिलकर एक नाम बना सकते हो या किसी भी एक नाम में यह सारे समझ सकते हो.

अब 'ईसू अल्लाह तेरे नाम' की बात. अगरचे यह एक क्रिश्चन भाई का सुझाव है, मुझे डर है कि परमेश्वर की जगह ईसू का नाम शायद क्रिश्चन लोग पसन्द नहीं करेंगे. यह मैं ठीक ठीक नहीं जानता. लेकिन ईश्वर की जगह अगर ईश्वर मोहम्मद हम बोलते तो मुसलमान उसे पसन्द न करते यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ. भक्ति भाव के नशे में गुरु को ईश्वर की पदवी देना वैदिक, वेदान्ती और हिन्दू कल्पना है जो शायद ईसाइयों को पसन्द न आए. लेकिन अगर उन्हें वह पसन्द आए तो मुझे इस में कोई उज्र नहीं. मैं एक भावार्थी मनुष्य हूँ और ईश्वरतत्व के विचार में दलील को कोई मूल्य नहीं देता. मैं ईसू और मोहम्मद को तो क्या, अपने पिता और माता को भी सम्पूर्न परमेश्वर मान सकता हूँ, जबकि वह शरीर से मुक्त हो चुके हैं. देह मुक्त महापुरुश को जब हम परमेश्वर का रूप देते हैं तब हम उसके व्यक्तित्व को मिटा देते हैं. इतना ध्यान में रखना चाहिये. अगर यह ख़तरा मंज़ूर है तो ख़ुशी से ईसू अल्लाह कह सकते हैं.

२०-१-५१.   —परंधाम, पवनार

' ایشور اللہ تیرے نام ' تو نواکھالی میں سہج ہی سوجھا تھا ۔ اُس میں سب دھرموں نے اور سب پنتھوں نے مانیہ کئے ہوئے بھگوان کے سب نام چھپے مانے ہیں' لیکن اگر دوسرے نام بھی اس میں جوڑ دیں تو کوئی درش نہیں ہوگا ۔ ایشور اللہ' گاڈ گووند' مزد مہادیو' جنار دن جہووا' یہ سب ملکر ایک نام بنا سکتے ہو یا کسی بھی ایک نام میں یہ سارے سمجھ سکتے ہو ۔

اب ' یسوع اللہ تیرے نام' کی بات ۔ اگرچہ یہ ایک کرشچن بھائی کا سجھاؤ ہے' مجھے ڈر ہے کہ پرمیشور کی جگہ یسوع کا نام شاید کرشچن لوگ پسند نہیں کرینگے ۔ یہ میں ٹھیک ٹھیک نہیں جانتا ۔ لیکن ایشوو کی جگہ اگر ایشور محمد ہم بولتے تو مسلمان اُسے پسند نہ کرتے یہ میں اچھی طرح جانتا ہوں ۔ بھکتی بھاؤ کے نشے میں گرو کو ایشور کی پدوی دنیا ویدک' ویدانتی اور ھندو کلپنا ہے جو شائد عیسائیوں کو پسند نہ آئے ۔ لیکن اگر اُنھیں وہ پسند آئے تو مجھے اس میں کوئی عذر نہیں ۔ میں ایک بھاوارتھی منش ہوں اور ایشور تتو کے وچار میں دلیل کو کوئی مولیہ نہیں دیتا ۔ میں یسوع اور محمد کو تو کیا' اپنے پتا اور ماتا کو بھی سمپورن پرمیشور مان سکتا ہوں' جبکہ وہ شریر سے مکت ہو چکے ہیں ۔ دیہہ مکت مہاپرش کو جب ہم پرمیشور کا روپ دیتے ہیں تب ہم اُس کے ویکتتو کو مٹا دیتے ہیں ۔ اتنا دھیان میں رکھنا چاھئے ۔ اگر یہ خطرہ منظور ہے تو خوشی سے یسوع اللہ کہہ سکتے ہیں ۔

٥١-١-٢٠   —پرندھام' پونار

बच्चों की दुनिया



एडीटर—प्रेम भाई | ایڈیٹر—پریم بھائی

بچوں کی دنیا

शांति के गीत

(भाई इफ़तिखार अहमद 'इक़बाल')

आओ आओ जग में आज ख़ुशी के दीप जलाएँ
दुनिया में सुख नाच उठे हम ऐसे गीत सुनाएँ
सब हैं भाई भाई आओ सब को गले लगाएँ
गाएं ख़ुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

जग है चार दिनों का मेला, जीवन सुखी बिताएँ
मन में खोट न रख कर, सबकी सेवा में लग जाएँ
पढ़ें, लिखें, आकाश पे जाएँ, आगे क़दम बढ़ाएँ
गाएं ख़ुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

देस हमारा सब से प्यारा करेंगे इसकी सेवा
गंगा, जमना, कृशना* बहतीं, ऊँचा खड़ा हिमाला
देस को अपने ऊँचा करना अब है काम हमारा
गाएं ख़ुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

شانتی کے گیت

(بھائی افتخار احمد 'اقبال')

آؤ آؤ جگ میں آج خوشی کے دیپ جلائیں
دنیا میں سکھ ناچ اُٹھے ہم ایسے گیت سنائیں
سب ہیں بھائی بھائی آؤ سب کو گلے لگائیں
گائیں خوشی کے گیت آؤ، آؤ ہم سب میت

جگ ہے چار دنوں کا میلہ، جیون سکھی بتائیں
من میں کھوٹ نہ رکھکر، سب کی سیوا میں لگ جائیں
پڑھیں، لکھیں، آکاش پہ جائیں، آگے قدم بڑھائیں
گائیں خوشی کے گیت آؤ، آؤ ہم سب میت

دیس ہمارا سب سے پیارا کرینگے اِس کی سیوا
گنگا، جمنا، کرشنا* بہتیں، اونچا کھڑا ہمالا
دیس کو اپنے اونچا کرنا اب ہے کام ہمارا
گائیں خوشی کے گیت آؤ، آؤ ہم سب میت

* कृशना नदी

* کرشنا ندی

छुट्टी का दिन

(भाई शीतल सिंह, धौल पेठ)

बाग़ में आम के, जामुन के, नारंगी के, संतरे के पेड़ थे. जामुन के पेड़ चारों ओर बाग़ के कोनों पर लगे हुए थे. आम के कुँज अलग, नारंगी के झाड़ अलग, संतरे के झाड़ अलग और एक तरफ़ सुन्दर फूलों की क्यारियाँ थीं. गुलाब के फूल की क्यारी, गुलाबी पत्तों का गुलाब, हरे पत्तों का गुलाब, चमेली की बेलें दरख़्तों पर लपटी हुई थीं. फूल तारों की तरह जगमग जगमग कर रहे थे. नन्हे नन्हे और सुन्दरता के सुन्दर रूप ! बाग़ में ऐसी बहार थी कि मन चाहता था घूमते फिरते ही रहें, इसी तरह सुबह से शाम हो जाए. मैं और फ़रीद दोनों फिर रहे थे. फ़रीद ने कहा—"देखो तो, यह बाग़ कितना सुन्दर है."

मैंने कहा—"हाँ भई फ़रीद, यह बाग़ तो बड़ा ही सुन्दर है. मन चाहता है कि घर न जायें, यहीं घूमते रहें और जब रात हो तब किसी पेड़ के सहारे सो रहें......"

"हाँ, हाँ, ठंडी और ख़ुशबूभरी हवा से तो ऐसी नींद आएगी कि हमारा दिमाग़ मस्त हो जाएगा." फ़रीद ने सर के बालों को ठीक करते हुए कहा.

इतने में बादल आ गए. ठंडी हवा साँय साँय करती चलने लगी. ख़ुशबू की लपटें आने लगीं और पंछी चहचहाने लगे. कोयल बोली, मोर बोला, पपीहा गाया, बगुले उड़ने लगे. बादलों के काले काले धुएँ में उजले उजले बगुले बड़े भले लग रहे थे.

چھٹی کا دن

(بھائی شیتل سنگھ، دھول پیٹھ)

باغ میں آم کے، جامن کے، نارنگی کے، سنترے کے پیڑ تھے۔ جامن کے پیڑ چاروں اور باغ کے کونوں پر لگے ہوئے تھے۔ آم کے کنج الگ، نارنگی کے جھاڑ الگ، سنترے کے جھاڑ الگ اور ایک طرف سندر پھولوں کی کیاریاں تھیں۔ گلاب کے پھول کی کیاری، گلابی پتوں کا گلاب، ہرے پتوں کا گلاب، چمیلی کی بیلیں درختوں پر لپٹی ہوئی تھیں۔ پھول تاروں کی طرح جگ مگ جگ مگ کر رہے تھے۔ ننھے ننھے اور سندرتا کے سندر روپ! باغ میں ایسی بہار تھی کہ من چاہتا تھا گھومتے پھرتے ہی رہیں، اسی طرح صبح سے شام ہوجائے۔ میں اور فرید دونوں پھر رہے تھے۔ فرید نے کہا— ''دیکھو تو یہ باغ کتنا سندر ہے۔''

میں نے کہا— ''ہاں بھئی فرید، یہ باغ تو بڑا ہی سندر ہے۔ من چاہتا ہے کہ گھر نہ جائیں، یہیں گھومتے رہیں اور جب رات ہو تب کسی پیڑ کے سہارے سو رہیں......''

''ہاں، ہاں، ٹھنڈی اور خوشبو بھری ہوا سے تو ایسی نیند آئے گی کہ ہمارا دماغ مست ہوجائے گا۔'' فرید نے سر کے بالوں کو ٹھیک کرتے ہوئے کہا۔

اتنے میں بادل آگئے۔ ٹھنڈی ہوا سائیں سائیں کرتی چلنے لگی۔ خوشبو کی لپٹیں آنے لگیں اور پنچھی چہچہانے لگے۔ کوئل بولی، مور بولا، پپیہا گایا، بگلے اُڑنے لگے۔ بادلوں کے کالے کالے دھوئیں میں اُجلے اُجلے بگلے بڑے بھلے لگ رہے تھے۔

छम छम जल बरसने लगा. फ़रीद ने कहा—"भागो." मैंने भी कहा—"हाँ तेज़ भागो". हमारा घर दूर था, फ़रीद का घर पास था. दोनों भागे. फ़रीद अपने घर में घुस गए और मैं भी उन के साथ घर में पहुंच गया. दोनों के कपड़े भीग गए थे. दोनों ने कपड़े उतारे, नेकर पहन लिये. इतने में फ़रीद की बहन गरम गरम कचौरियाँ लिये आ पहुंची और कहने लगी—"चलो शीतल भाई, आओ गरम गरम कचौरियाँ खाएँगे. आप दोनों के जिस्म में गरमी आ जाएगी."

और हम दोनों मेज़ पर बैठ गए और कचौरियां खाने लगे. बड़े मज़े की थीं. फिर हम बैठे कहानियों की किताबें पढ़ने लगे. फ़रीद की बहन सईदा दौड़ती हुई अपने बाबा के कमरे में गई, और एक किताब लेकर मेरी कुरसी के क़रीब खड़ी होकर कहने लगी—"देखो शीतल भाई, यह किताब कितनी अच्छी है," फिर मैंने कहा—"अच्छा तो यह बताओ तुमने यह जाना कैसे कि यह किताब अच्छी है ..... बताओ भई, मुँह क्यों तकने लगी हो ?"

सईदा ने किताब के पन्ने उलटते हुए कहा—"तुम समझते हो कि मुझे पढ़ना नहीं आता, जब ही तो पूछ रहे हो ना ?" और सईदा ने मुझे घूरते हुए कहा—"सुनो इसका नाम है महात्मा गांधी की वसीयत." फिर मैंने पूछा—"अच्छा सईदा, तुम बापू जी के बारे में क्या जानती हो ?"

"मैं, बापू जी के बारे में .... वह बापू जी थे, हमारे तुम्हारे और सारे भारत के, बापू ने ही तो हमें आज़ादी

था कि वह मर गए...... पर मैं कहती हूँ कि वह अमर हैं. और

چھم چھم جل برسنے لگا . فرید نے کہا—"بھاگو." میں نے بھی کہا—"ہاں تیز بھاگو." ہمارا گھر دور تھا' فرید کا گھر پاس تھا . دونوں بھاگے . فرید اپنے گھر میں گھس گئے اور میں بھی اُن کے ساتھ گھر میں پہنچ گیا . دونوں کے کپڑے بھیگ گئے تھے . دونوں نے کپڑے اُتارے' نیکر پہن لئے . اتنے میں فرید کی بہن گرم گرم کچوریاں لئے آپہنچی اور کہنے لگی "—چلو شیتل بھائی' آؤ گرم گرم کچوریاں کھائینگے . آپ دونوں کے جسم میں گرمی آجائے گی ."

اور ہم دونوں میز پر بیٹھ گئے اور کچوریاں کھانے لگے . بڑے مزے کی تھیں . پھر ہم بیٹھے کہانیوں کی کتابیں پڑھنے لگے . فرید کی بہن سعیدہ دوڑتی ہوئی اپنے بابا کے کمرے میں گئی' اور ایک کتاب لے کر میری کرسی کے قریب کھڑی ہوکر کہنے لگی— "دیکھو شیتل بھائی' یہ کتاب کتنی اچھی ہے." پھر میں نے کہا—"اچھا تو یہ بتاؤ تم نے یہ جانا کیسے کہ یہ کتاب اچھی ہے.......بتاؤ بھئی' منہ کیوں تکنے لگی ہو ؟"

سعیدہ نے کتاب کے پنے اُلٹتے ہوئے کہا—"تم سمجھتے ہو کہ مجھے پڑھنا نہیں آتا' جب ہی تو پوچھ رہے ہو نا ؟" اور سعیدہ نے مجھے گھورتے ہوئے کہا—"سنو اِس کا نام ہے "مہاتما گاندھی کی وصیت". پھر میں نے پوچھا—"اچھا سعیدہ' تم باپو جی کے بارے میں کیا جانتی ہو ؟"

"میں' باپو جی کے بارے میں.......وہ باپو جی تھے' ہمارے تمہارے اور سارے بھارت کے' باپو نے ہی تو ہمیں آزادی

تھا کہ وہ مر گئے.........پر میں کہتی ہوں کہ وہ امر ہیں . اور بھی

बारे में क्या जानती हो ?"

"मैं, बापू जी के बारे में .... वह बापू जी थे, हमारे तुम्हारे और सारे भारत के, बापू ने ही तो हमें आजादी [illegible] था कि वह मर गए...... पर मैं कहती हूँ कि वह अमर हैं. और भैया मैं परसों से चरखा कातना भी सीख रही हूं......" यह कहते कहते सईदा दूसरे कमरे में भाग खड़ी हुई.

इतने में आठ बज गए, मुझे घर जाना था, रात बड़ी जो हो रही थी, और फिर हमारे कपड़े भी सूख गए. चलते समय मैंने फ़रीद भाई और सईदा बहन से कहा—"कल तुम दोनों मेरे घर जरूर आना, मैं भी तुम्हें गरम गरम दोशे और पकौड़ियां खिलाऊँगा, चुटपुटे और सलोने." और मैं घर चला आया, इस तरह हमारी छुट्टी का दिन घूमते गुज़रा.

नाक मिचोली

(बहन दुर्दाना अन्सारी)

मैंने कहा—"अम्मी जान, आज तो हम आँख मिचोली खेलेंगे, इजाज़त दे दीजिये ना ?" अम्मी जान ने गुस्सा भरी नज़रों से घूर कर देखा और मुन्नी की मुड़ी हुई नाक की ओर इशारा करके कहा—"ना बीबी, मैं तो इस खेल के खेलने की इजाज़त कभी न दूंगी. मुन्नी की नाक को देखो, अब क्या अपनी नाक भी तोड़ने का इरादा है."

हमें अम्मी की इन बातों पर ग़ुस्सा आजाता है, भला नाक हम क्यों तोड़ने चले. हम सब तो आँख मिचोली खेल रहे थे. मैं

"میں، باپو جی کے بارے میں......وہ باپو جی تھے، ہمارے تمہارے اور سارے بھارت کے، باپو نے ہی تو ہمیں آزادی [illegible] تھا کہ وہ مر گئے......پر میں کہتی ہوں کہ وہ امر ہیں۔ اور بھیا میں پرسوں سے چرخہ کاتنا بھی سیکھ رہی ہوں......" یہ کہتے کہتے سعیدہ دوسرے کمرے میں بھاگ کھڑی ہوئی۔

اتنے میں آٹھ بج گئے، مجھے گھر جانا تھا، رات بڑی جو ہو رہی تھی، اور پھر ہمارے کپڑے بھی سوکھ گئے۔ چلتے سمے میں نے فرید بھائی اور سعیدہ بہن سے کہا—"کل تم دونوں میرے گھر ضرور آنا، میں بھی تمہیں گرم گرم دوشے اور پکوڑیاں کھلاؤں گا، چٹ پٹے اور سلونے۔" اور میں گھر چلا آیا، اس طرح ہماری چھٹی کا دن گھومتے گذرا۔

ناک مچولی

(بہن دردانہ انصاری)

میں نے کہا—"امی جان، آج تو ہم آنکھ مچولی کھیلیں گے، اجازت دیدیجئے نا؟" امی جان نے غصہ بھری نظروں سے گھور کر دیکھا اور منی کی مڑی ہوئی ناک کی اور اشارہ کر کے کہا—"نا بی بی، میں تو اس کھیل کے کھیلنے کی اجازت کبھی نہ دوں گی۔ منی کی ناک کو دیکھو، اب کیا اپنی ناک بھی توڑنے کا ارادہ ہے۔"

ہمیں امی کی ان باتوں پر غصہ آجاتا ہے۔ بھلا ناک ہم کیوں توڑنے چلے۔ ہم سب تو آنکھ مچولی کھیل رہے تھے۔ میں

चोर बनी थी और अहमदी, सलोचना, सीता और मुन्नी को पकड़ने जा रही थी कि मुझे देख कर मुन्नी दूसरी जगह भाग खड़ी हुई, और अंधेरे में उसकी टक्कर दीवार से होगई. वह गिर पड़ी, फिर नाक चपक गई. इस में मेरा क्या दोश........ नाक के इलाज के लिये डाक्टर वग़ैरा बुलाए गए. दर्द तो अब कम हो गया है, पर नाक जो पहले से बहुत छोटी थी अब और भी छोटी हो गई.

हम से जब कोई रास्ता पूछता है तो हम उसे मज़ाक़ में यह कह देते हैं कि मुन्नी की नाक की सीध चले जाओ, वहीं पहुँच जाओगे. मुन्नी की नाक क्या टूटी हमारी आँख मिचोली बन्द हो गई.

एक दिन अम्मी रात को चची के घर गई हुई थीं और मुन्नी भी उनके साथ थी. फिर क्या था, हमारा राज हुआ और आँख मिचोली शुरू हो गई. हम चोर बन गए और सब छुप गए. रोशनी बुझा दी गई. घर में चारों ओर घटा टोप अँधेरा देख कर मेरा मन धक धक करने लगा और डर कर "आना, आना" कहती मैं चल पड़ी. एक जगह कोने में रज़ाई रखी हुई थी और जो पलंग बिछा था उसमें एक बड़ा सा छेद था, मैं जो रज़ाई पर से गिरी तो सर नीचे हो गया और टाँगें ऊपर. मैं और घबराई. फिर ऐसा लगा कि संदूक़ खड़ा हुआ चल फिर रहा है. मैं इतनी डर गई कि मेरे मुँह से एक चीख़ निकल गई और मेरी चीख से मुन्ना जो क़रीब ही पालने में पड़ा सो रहा था, जाग पड़ा और डर कर नीचे जो कूदा तो उसका भी सर नीचे और टाँगें ऊपर. और फिर वह नाक पकड़ कर

چور بنی تھی اور احمدی، سلوچنا، سیتا اور منی کو پکڑنے جارهی تھی کہ مجھے دیکھکر منی دوسری جگہ بھاگ کھڑی هوئی، اور اندھیرے میں اُسکی ٹکر دیوار سے هوگئی ۔ وہ گر پڑی، پھر ناک چپک گئی ۔ اِس میں میرا کیا دوش......ناک کے علاج کے لئے ڈاکٹر وغیرہ بلائے گئے ۔ درد تو اب کم هو گیا هے، پر ناک جو پہلے سے بہت چھوٹی تھی اب اور چھوٹی هو گئی ۔

هم سے جب کوئی راستہ پوچھتا هے تو هم اُسے مذاق میں یہ کہہ دیتے هیں کہ منی کی ناک کے سیدھ چلے جاؤ، وهیں پہنچ جاؤگے۔ منی کی ناک کیا ٹوٹی هماری آنکھ مچولی بند هو گئی ۔

ایک دن امی رات کو چچی کے گھر گئی هوئی تھیں اور منی بھی اُنکے ساتھ تھی ۔ پھر کیا تھا، همارا راج هوا اور آنکھ مچولی شروع هو گئی ۔ هم چور بن گئے اور سب چھپ گئے ۔ روشنی بجھا دی گئی ۔ گھر میں چاروں اور گھٹا ٹوپ اندھیرا دیکھکر میرا من دھک دھک کرنے لگا اور ڈر کر "آنا، آنا" کہتی میں چل پڑی ۔ ایک جگہ کونے میں رضائی رکھی هوئی تھی اور جو پلنگ بچھا تھا اُس میں ایک بڑا سا چھید تھا، میں جو رضائی پر سے گری تو سر نیچے هو گیا اور ٹانگیں اوپر ۔ میں اور گھبرائی ۔ پھر ایسا لگا کہ صندوق کھڑا هوا چل پھر رها هے۔ میں اتنی ڈر گئی کہ میرے منہ سے ایک چیخ نکل گئی اور میری چیخ سے منا جو قریب هی پالنے میں پڑا سو رها تھا، جاگ پڑا اور ڈر کر نیچے جو کودا تو اُسکا بھی سر نیچے اور ٹانگیں اوپر اور پھر وہ ناک پکڑ کر

में पड़ा सो रहा था, जाग पड़ा और डर कर नीचे जो कूदा तो
उसका भी सर नीचे और टाँगें ऊपर. और फिर वह नाक पकड़ कर

मैंने दिल मजबूत करते हुए कहा—"ठहरो मैं अभी कपड़ा और आइडिन लाती हूँ." बाद को आइडिन लगा कर नाक पर पट्टी बाँधी गई, और अम्मी के आने से पहले मुन्ने को थपक कर सुला दिया गया, सहेलियाँ भी एक एक कर के खिसक गईं. मैं भी सोने चल पड़ी. पलंग पर लेटी आँखें मीच कर नींद का इन्तजार करने लगी. अम्मी से मार खाने और अब्बा के डाँटने का डर बराबर परेशान कर रहा था कि एक दम धड़ धड़ धड़ाम की आवाज आई. मेरा तो यह हाल हो गया कि काटो तो लहू नहीं. तरह तरह के खयाल मन में आने लगे. दिल धक धक करने लगा. झट मैंने रजाई ओढ़ ली और साँस रोके पड़ी रही, पर नींद के आने का ठिकाना ही नहीं, मन ही मन में अल्लाह मियाँ को याद करने लगी. और फिर थोड़ी देर बाद नींद आ गई और मैं सो गई.

सुबह डरते डरते मैं जल्द ही उठ बैठी. जल्दी से मुन्ने के पास गई. वह सो रहा था. मैंने उसे जगाया और नाक से पट्टी खोली गई. यह देख कर मन दो दो हाथ उछलने लगा कि मुन्ने साहब की नाक सीधी क़ुतब साहब की लाठ की तरह खड़ी है, सिर्फ थोड़ा सा चोट का निशान था.

यों भी मुन्ने मियाँ कि नाक थी भी कहाँ, जो टूटती. इसलिये कि उन की नाक बहुत नन्ही मुन्नी सी थी, जिस का होना न होना दोनों बराबर थे. और मुझे ऐसी ही नाक पसन्द आती है इसलिये कि उस के टूटने का कभी भी डर नहीं रहता. अब भी जब कभी भी किसी की लम्बी नाक मुड़ी देखते हैं तो बड़े छोटे का

میں پالنے میں پڑا سو رہا تھا، جاگ پڑا اور ڈر کر نیچے جو کودا تو

میں نے دل مضبوط کرتے ہوئے کہا—"ٹھہرو میں ابھی کپڑا اور آیڈین لاتی ہوں." بعد کو آیڈین لگاکر ناک پر پٹی باندھی گئی. اور امی کے آنے سے پہلے منے کو تھپک کر سلا دیا گیا. سہیلیاں بھی ایک ایک کر کے کھسک گئیں. میں بھی سونے چل پڑی. پلنگ پر لیٹی آنکھیں میچ کر نیند کا انتظار کرنے لگی. امی سے مار کھانے اور ابا کے ڈانٹنے کا ڈر برابر پریشان کر رہا تھا کہ ایک دم دھڑ دھڑ دھڑام کی آواز آئی. میرا تو یہ حال ہوگیا کہ کاٹو تو لہو نہیں. طرح طرح کے خیال من میں آنے لگے. دل دھک دھک کرنے لگا. جھٹ میں نے رضائی اوڑھ لی اور سانس روکے پڑی رہی، پر نیند کے آنے کا ٹھکانا ہی نہیں، من ہی من میں اللہ میاں کو یاد کرنے لگی اور پھر تھوڑی دیر بعد نیند آگئی اور میں سو گئی.

صبح ڈرتے ڈرتے میں جلد ہی اٹھ بیٹھی. جلدی سے منے کے پاس گئی. وہ سو رہا تھا. میں نے اسے جگایا اور ناک سے پٹی کھولی گئی. یہ دیکھکر من دو دو ہاتھ اچھلنے لگا کہ منے صاحب کی ناک سیدھی قطب صاحب کی لاٹھ کی طرح کھڑی ہے، صرف تھوڑا سا چوٹ کا نشان تھا.

یوں بھی منے میاں کی ناک تھی بھی کہاں، جو ٹوٹتی. اس لئے کہ اُن کی ناک بہت ننھی منھی سی تھی، جس کا ہونا نہ ہونا دونوں برابر تھے. اور مجھے ایسی ہی ناک پسند آتی ہے اس لئے کہ اس کے ٹوٹنے کا کبھی بھی ڈر نہیں رہتا. اب بھی جب کبھی بھی کسی کی لمبی ناک مڑی دیکھتے ہیں تو بڑے چھوٹے کا

ख़याल छोड़ कर एकदम हँस पड़ते हैं. और हम सोचने लगते हैं कि हो न हो उस ने भी कभी आँख-मिचोली खेली है. जभी तो नाक की यह दुरगत बनी है. और हम अपनी नाक पर हाथ फेर कर तोबा करते हैं कि अब कभी भी आँख-मिचोली न खेलेंगे, क्योंकि अब आँख मिचोली हमारे लिये नाक मिचोली बन गई है.

मैं तो "बच्चों की दुनिया" पढ़ने वालों से भी कहूँगी कि आप भी लगे हाथों अपनी नाकों को देख लीजिये. अगर वह लम्बी है और मुड़ी है तो फिर आपने भी नाक मिचोली खेली है. है ना यह बात ठीक............ !!

चुटकुला

राजेश—भाई साहब, आप बहुत परेशान दिखाई पड़ते हैं.

सुरेश—हाँ, मेरी ऐनक खो गई है. और मुशकिल यह है कि बिना ऐनक लगाए मैं उसे ढूँढ़ भी नहीं सकता.

हमें इस पते पर अपने लेख "बच्चों की दुनिया" में छपने को भेजो—प्रेम भाई, एडीटर "बच्चों की दुनिया"
१३५, मुग़ल पुरा, हैदराबाद दक्खिन (भारत)

خیال چھوڑ کر ایک دم ہنس پڑتے ہیں . اور سوچنے لگتے ہیں کہ ہو نہ ہو اس نے بھی کبھی آنکھ مچولی کھیلی ہے . جبھی تو ناک کی یہ درگت بنی ہے . اور ہم اپنی ناک پر ہاتھ پھیر کر توبہ کرتے ہیں کہ اب کبھی بھی آنکھ مچولی نہ کھیلینگے ' کیونکہ اب آنکھ مچولی ہمارے لئے ناک مچولی بن گئی ہے .

میں تو " بچوں کی دنیا " پڑھنے والوں سے بھی کہونگی کہ آپ بھی لگے ہاتھوں اپنی ناکوں کو دیکھ لیجئے . اگر وہ لمبی ہے اور مڑی ہے تو پھر آپ نے بھی ناک مچولی کھیلی ہے . ہے نا یہ بات ٹھیک........ !!

چٹکلہ

راجیش—بھائی صاحب ' آپ بہت پریشان دکھائی پڑتے ہیں .

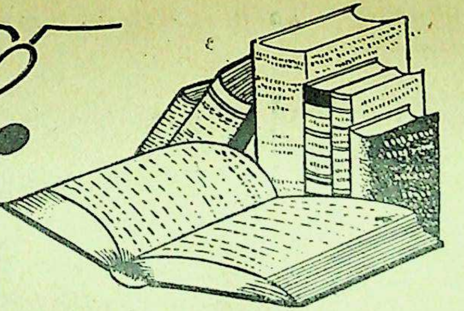
سریش—ہاں ' میری عینک کھو گئی ہے . اور مشکل یہ ہے کہ بنا عینک لگائے میں اُسے ڈھونڈھ بھی نہیں سکتا .

ہمیں اس پتے پر اپنے لیکھ " بچوں کی دنیا " میں چھپنے کو بھیجو—پریم بھائی ' اڈیٹر " بچوں کی دنیا "
۱۳۵ ' مغل پورہ ' حیدرآباد دکھن (بھارت)

भेजो—प्रेम भाई, एडीटर "बच्चों की दुनिया"
१३५, मुग़ल पुरा, हैदराबाद दक्खिन (भारत)

بھیجو—پریم بھائی، ایڈیٹر "بچوں کی دنیا"
۱۳۵ مغل پورہ حیدرآباد دکھن (بھارت)

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

श्री रामचरित मानस

सम्पादक—मुन्शी कन्हैयालाल एम० ए०, एल-एल० बी० ऐडवोकेट, छपवाने वाले—पंचक्रोशी सिन्डिकेट, "कृश्न कुंज" पंचक्रोशी समिति रोड, इलाहाबाद. सफ़े ५७६, क़ीमत तीन रुपए बारह आने.

गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायन हिन्दी साहित्य में एक बहुत ऊँचा स्थान रखती है. सच यह है कि यह पुस्तक संसार भर के साहित्य में ऊँची से ऊँची पुस्तकों में गिने जाने के योग्य है. इसमें हर तरह के पढ़ने वाले, धर्म प्रेमी हों या साहित्य प्रेमी, बूढ़े हों या बच्चे, पुरुष हों या स्त्री, सब के लिये अपनी अपनी रुचि की उपयोगी सामग्री मिलती है. हिन्दी की यह पुस्तक लाखों घरों में जरूर है. ऐसी हरदिल अज़ीज़ किताब का एक नया एडीशन यों तो कोई ख़ास बात नहीं पैदा करता मगर यह संस्करन जो हमारे सामने है अपनी विशेशताओं के कारन तुलसीदास जी की रामायनों में एक विशेश स्थान प्राप्त करेगा. इसमें मुन्शी कन्हैयालाल

شری رام چرت مانس

سمپادک—منشی کنھیا لال ایم-اے- ایل ایل-بی-ایڈوکیٹ، چھپوانے والے—پنچ کروشی سنڈیکیٹ، "کرشن کنج" پنچ کروشی سمتی روڈ، الہ آباد. صفحے ۵۷۶، قیمت تین روپے بارہ آنے.

گوسوامی تلسی داس جی کی راماین ہندی ساہتیہ میں ایک بہت اونچا استھان رکھتی ہے. سچ یہ ہے کہ یہ پستک سنسار بھر کے ساہتیہ میں اونچی سے اونچی پستکوں میں گنے جانے کے یوگیہ ہے. اِسمیں ہر طرح کے پڑھنے والے، دھرم پریمی ہوں یا ساہتیہ پریمی، بوڑھے ہوں یا بچے، پرش ہوں یا استری، سب کے لئے اپنی اپنی رچی کی اُپیوگی سامگری ملتی ہے. ہندی کی یہ پستک لاکھوں گھروں میں ضرور ہے. ایسی ہردلعزیز کتاب کا ایک نیا ایڈیشن یوں تو کوئی خاص بات نہیں پیدا کرتا مگر یہ سنسکرن جو ہمارے سامنے ہے اپنی وشیشتاؤں کے کارن تلسی داس جی کی رامائنوں میں ایک وشیش استھان پراپت کریگا. اس میں منشی کنھیا لال

ने बड़ी मेहनत के साथ ऐसी ऐसी चीज़ें दी हैं जो ज्यादातर रामायनों में मुशकिल से मिलती हैं. जैसे एक पूरा खंड 'चित्रावली' के नाम से है जिसमें सैकड़ों तस्वीरें रामायन की उन कहानियों की हैं जिनसे रामायन बनती है. यह बच्चों में रामायन के लिये प्रेम पैदा करने में बहुत काम की चीज़ होगी. इसके अलावा भी जगह जगह और भी बहुत से चित्र दिये गए हैं. रामायन पढ़ने वालों के लिये रामशलका, तुलसीदास जी का जीवन चरित्र, पारायन विधि, अनुश्ठान प्रयोग जैसी चीज़ें सभी इस पुस्तक में हैं. आख़ीर में रामायन की महानता पर कुछ ख़ास लोगों की राएँ भी दी गई हैं जैसे, महात्मा गांधी, पं० मदन मोहन मालवीय, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सर सी० वाई० चिन्तामनि वग़ैरा. हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक पढ़ने वाले ख़ूब पसन्द करेंगे. दाम वाजिबी जान पड़ते हैं.

२३-२-५१ —सुन्दरलाल

साज़े लरज़ां

लेखक—ग़ुलाम रब्बानी 'ताबाँ', निकालने वाली— इन्डियन, लिट्रेचर सुसाइटी, जामेया नगर, देहली. सफ़ा १४०–रायल साइज़ क़ीमत दो रुपए आठ आने.

यह किताब उरदू के मशहूर शायर ग़ुलाम रब्बानी 'ताबाँ' की ५६ नज़्मों ग़ज़लों का मजमूआ यानी संग्रह है. 'ताबाँ' का कलाम बहुत पहले से उरदू के अच्छे रिसालों में छपता रहा है. इस अरसे

نے بڑی محنت کے ساتھ ایسی ایسی چیزیں دی ھیں جو زیادہ تر راماینوں میں مشکل سے ملتی ھیں . جیسے ایک پورا کھنڈ 'چتراولی' کے نام سے ھے جسمیں سوکڑوں تصویریں راماین کی اُن کہانیوں کی ھیں جن سے راماین بنتی ھے . یہ بچوں میں راماین کے لئے پریم پیدا کرنے میں بہت کام کی چیز ھوگی . اس کے علاوہ بھی جگہ جگہ اور بھی بہت سے چتر دئے گئے ھیں . راماین پڑھنے والوں کے لئے رام شلاکا' تلسی داس جی کا جیون چرتر' پاراین ودھی' انوشٹھان پریوگ' جیسی چیزیں سبھی اس پستک میں ھیں . آخیر میں راماین کی مہانتا پر کچھ خاص لوگوں کی رائیں بھی دی گئی ھیں . جیسے' مہاتما گاندھی' پنڈت مدن موھن مالوی' ڈاکٹر راجیندر پرساد' سر . سی . وائی . چنتامنی وغیرہ . ھمیں اُمید ھے کہ یہ پستک پڑھنے والے خوب پسندکرینگے . دام واجبی جان پڑتے ھیں .

۲۳-۲-۵۱ —سندرلال

ساز لرزاں

لیکھک — غلام ربانی 'تاباں' نکالنے—والی انڈین لٹریچر سوسائٹی' جامعہ نگر' دھلی . صفحہ ۱۴۰ رائل سائز قیمت دو روپئے آٹھ آنے .

یہ کتاب اُردو کے مشہور شاعر غلام ربانی 'تاباں' کی ۵۹ نظموں غزلوں کا مجموعہ یعنی سنگرہ ھے . 'تاباں' کا کلام بہت پہلے سے اُردو کے اچھے رسالوں میں چھپتا رہا ھے . اس عرصے

यह किताब उर्दू के मशहूर शायर ...
५९ नज़्मों ग़ज़लों का मजमूआ यानी संग्रह है. 'ताबाँ' का कलाम बहुत पहले से उर्दू के अच्छे रिसालों में छपता रहा है. इस अरसे ...

'साज़े लरज़ाँ' को देखने से मालूम होता है कि उन्होंने जान बूझ कर और सोच समझकर अपना संग्रह छपवाने में धीरज से काम लिया है. इस संग्रह में उनकी जो नज़्में हैं उनको देख कर भी यही मालूम होता है कि छपवाने के लिये नज़्मों का बड़ी सख़्ती से चुनाव किया गया है और किताब के सफ़े बढ़ाने के लालच में किसी भरती की नज़्म को इस संग्रह में जगह नहीं दी गई.

'साज़े लरज़ाँ' में 'ताबाँ' की रूमानी नज़्में भी हैं समाजी भी और सियासी भी. हर तरह की नज़्मों में 'ताबाँ' का एक ख़ास रंग है जिसे हम सही तरक़्क़ी पसन्द रंग कह सकते हैं. रोमानी नज़्मों में 'ताबाँ' का प्रेम इसी दुनिया का प्रेम मालूम होता है और वह ख़याली दुनिया की बातें नहीं करते. इसी तरह जब वह राजकाज की बातें करते हैं और इनक़लाब का नारा लगाते हैं तो भी यह नहीं मालूम होता कि वह हवाई क़िले बना रहे हैं.

'ताबाँ' पुराने रस्म रिवाज, पुराने समाज, पुराने साम्राजवादी और पूँजीवाद निज़ाम और पुरानी शायरी सभी के ख़िलाफ़ हैं. उन्हें नए समाज से प्रेम है, नए निज़ाम से प्रेम है, नई दुनिया से प्रेम है और नई शायरी से प्रेम है. वह हर पुरानी चीज़ की जगह नई चीज़ लाना चाहते हैं. पुरानेपन से बग़ावत 'ताबाँ' की सारी शायरी में भरी है. वह पुराने उर्दू शायरों की तरह, जिनके पीछे आज भी उर्दू के ज्यादतर शायर चलते हैं, माशूक़ को मर्द के रूप में नहीं देखते बल्कि औरत के रूप में देखते हैं और साफ़ कहते हैं—

जब कभी भूले से दिल में याद आएगी मेरी
गर्म पेशानी में तुम कुछ कुछ नमी सी पाओगी

उन्हें उर्दू के ऐसे मुशायरे भी पसन्द नहीं जहाँ एक ही तरह में सब शायर ग़ज़लें लिखकर सुनाने के लिये इकट्ठा होते हैं क्योंकि

نظموں غزلوں کا مجموعہ یعنی سنگرہ ھے ۔ 'تاباں' کا کلام بہت
پہلے سے اُردو کے اچھے رسالوں میں چھپتا رہا ھے ۔ اس عرصے

'ساز لرزاں' کو دیکھنے سے معلوم ہوتا ھے کہ اُنھوں نے جان بوجھکر اور سوچ سمجھکر اپنا سنگرہ چھپوانے میں دھیرج سے کام لیا ھے ۔ اس سنگرہ میں اُنکی جو نظمیں ھیں اُنکو دیکھکر بھی یہی معلوم ہوتا ھے کہ چھپوانے کے لئے نظموں کا بڑی سختی سے چناؤ کیا گیا ھے اور کتاب کے صفحے بڑھانے کے لالچ میں کسی بھرتی کی نظم کو اِس سنگرہ میں جگہ نہیں دی گئی ۔

'ساز لرزاں' میں 'تاباں' کی رومانی نظمیں بھی ھیں، سماجی بھی اور سیاسی بھی ۔ ہر طرح کی نظموں میں 'تاباں' کا ایک خاص رنگ ھے جسے ہم صحیح ترقی پسند رنگ کہہ سکتے ھیں ۔ رومانی نظموں میں 'تاباں' کا پریم اِسی دنیا کا پریم معلوم ہوتا ھے اور وہ خیالی دنیا کی باتیں نہیں کرتے اِسی طرح جب وہ راج کاج کی باتیں کرتے ھیں اور انقلاب کا نعرہ لگاتے ھیں تو بھی یہ نہیں معلوم ہوتا کہ وہ ہوائی قلعے بنا رہے ھیں ۔

'تاباں' پرانے رسم رواج' پرانے سماج' پرانے سامراجوادی اور پونجی وادی نظام اور پرانی شاعری سبھی کے خلاف ھیں. اُنھیں نئے سماج سے پریم ھے' نئے نظام سے پریم ھے' نئی دنیا سے پریم ھے اور نئی شاعری سے پریم ھے ۔ وہ ہر پرانی چیز کی جگہ نئی چیز لانا چاھتے ھیں ۔ پرانے پن سے بغاوت 'تاباں' کی ساری شاعری میں بھری ھے ۔ وہ پرانے اُردو شاعروں کی طرح' جنکے پیچھے آج بھی اُردو کے زیادہ تر شاعر چلتے ھیں' معشوق کو مرد کے روپ میں نہیں دیکھتے بلکہ عورت کے روپ میں دیکھتے ھیں اور صاف کہتے ھیں —

جب کبھی بھولے سے دل میں یاد آئے گی مری
گرم پیشانی میں تم کچھ کچھ نمی سی پاؤ گی

اُنھیں اُردو کے ایسے مشاعرے بھی پسند نہیں جہاں ایک ہی طرح میں سب شاعر غزلیں لکھکر سنانے کے لئے اکٹھا ہوتے ھیں کیونکہ

मुशायरों का यह ढंग भी पुराना है. 'ताबाँ' कहते हैं—

> जो चाहूँ तरह पर भी शेर कह सकता हूं मैं लेकिन
> मुझे नफ़रत सी है कुछ सनअते अशआर साज़ी से

जब तक दिल में शेर कहने के लिये कोई ख़ास जज़बा न पैदा हो, 'ताबाँ' के ख़याल में, सच्चा शेर नहीं हो सकता. केवल सुनाने के लिये शेर कहने को वह शायरी नहीं कारीगरी कहते हैं.

पुरानेपन से बग़ावत का यह जज़बा कहीं कहीं बेहद तेज़ हो गया है.

फ़तेहपूर सीकरी की पुरानी शाही इमारतें भी 'ताबाँ' को अच्छी नहीं लगतीं क्योंकि वह पुराने 'मुग़ल साम्राज्य' की यादगार हैं. ताबाँ उन पुराने निशानों की जगह 'इनसान की आज़ादी के महल' खड़े देखना चाहते हैं. कहीं कहीं 'नएपन' के प्रेम और पुरानेपन से नफ़रत ने उनके ख़यालों को उलझा भी दिया है और पढ़ने वाला यह सोचने लगता है कि क्या शायर जिस ज़माने को लाना चाहता है उसमें हर पुरानी चीज़ मिटा डाली जायगी. क्या फ़तेहपूर सीकरी या उसी तरह की दूसरी इमारतें गिराए बग़ैर उन को सुधार कर उन से जनता की भलाई का दूसरा काम नहीं लिया जा सकता? या "१५ अगस्त सन् १९४७ ई०" वाली नज़्म में जब वह हिन्दुस्तान की आज़ादी के एलान पर कहते हैं—

> जिस्म पहले से क़ैद था लेकिन
> रूह पर उस ने दाम फेंक दिया

तो भी यह समझ में नहीं आता कि उन्होंने इस आज़ादी को किस निगाह से देखा है. अगर वह यह कहते कि जिस्म को क़ैद से आज़ाद करके रूह को ग़ुलाम बनालिया तब तो बात कुछ साफ़ समझ में आसकती थी. मगर यह कहना कि पहले जिस्म क़ैद था

مشاعروں کا یہ ڈھنگ بھی پرانا ہے۔ 'تاباں' کہتے ہیں—

> جو چاہوں طرح پر بھی شعر کہہ سکتا ہوں میں لیکن
> مجھے نفرت سی ہے کچھ صنعت اشعار سازی سے

جب تک دل میں شعر کہنے کے لئے کوئی خاص جذبہ نہ پیدا ہو، تاباں کے خیال میں، سچا شعر نہیں ہو سکتا۔ کیول سنانے کے لئے شعر کہنے کو وہ شاعری نہیں کاریگری کہتے ہیں۔

پرانے پن سے بغاوت کا یہ جذبہ کہیں کہیں بیحد تیز ہوگیا ہے۔ فتح پور سیکری کی پرانی شاہی عمارتیں بھی 'تاباں' کو اچھی نہیں لگتیں کیونکہ وہ پرانے 'مغل سامراج' کی یادگار ہیں۔ 'تاباں' ان پرانے نشانوں کی جگہ 'انسان کی آزادی کے محل' کھڑے دیکھنا چاہتے ہیں۔ کہیں کہیں 'نئے پن' کے پریم اور پرانے پن سے نفرت نے اُنکے خیالوں کو اُلجھا بھی دیا ہے اور پڑھنے والا یہ سوچنے لگتا ہے کہ کیا شاعر جس زمانے کو لانا چاہتا ہے اُس میں ہر پرانی چیز مٹا ڈالی جائیگی۔ کیا فتح پور سیکری یا اسی طرح کی دوسری عمارتیں گرائے بغیر اُن کو سدھار کر اُن سے جنتا کی بھلائی کا دوسرا کام نہیں لیا جا سکتا؟ یا "١٥ اگست سن ١٩٤٧" والی نظم میں جب وہ ہندستان کی آزادی کے اعلان پر کہتے ہیں—

> جسم پہلے سے قید تھا لیکن
> روح پر اس نے دام پھینک دیا

تو بھی یہ سمجھ میں نہیں آتا کہ اُنھوں نے اِس آزادی کو کس نگاہ سے دیکھا ہے۔ اگر وہ یہ کہتے کہ جسم کو قید سے آزاد کر کے روح کو غلام بنا لیا تب تو بات کچھ صاف سمجھ میں آ سکتی تھی۔ مگر یہ کہنا کہ پہلے جسم قید تھا اب روح پر

ही अहम घटना की तरफ़ से आँखें बन्द कर लेना है. हम मानते हैं कि आज़ादी मिलने के बाद देस की हालत सुधरी नहीं, ग़रीबों को और बीच के तबक़े को आज़ादी का कोई सुख नहीं मिला मगर इसके लिये अंगरेज़ों को कोसने की जगह उन कठिनाइयों पर भी नज़र रखनी होगी जो अंगरेज़ हमारे देस के लिये पैदा कर गए. हमें उन कठिनाइयों का मुक़ाबला करना होगा, उन्हें दूर करने का जतन करना होगा—लेकिन इस नज़्म में ऐसा कोई हल नहीं बताया गया. यह नज़्म एक ऐसे बेबस और निराश आदमी की फ़रियाद मालूम होती है जो ख़ुद कुछ करने की हिम्मत नहीं रखता. हालाँकि इसके बाद ही की नज़्म "इन्डोनेशिया" ज़िन्दगी से भरपूर है और दूसरों के दिलों में भी एक उमंग पैदा करती है. हमें इस संग्रह की "जेल में किसी का ख़त पाकर" और "दिवाली" नज़्में बहुत पसन्द आईं. बाक़ी नज़्मों में रोमानी नज़्मों का पल्ला राजकाजी नज़्मों से भारी नज़र आता है. लिखाई छपाई और गेटअप बहुत सुन्दर है.

—'माह'

रूपावली----

लेखक—श्रीनन्दलाल वसु

मिलने का पता—विश्वभारती ग्रन्थालय, २ बंकिम चटरजी स्ट्रीट, कलकत्ता.

चित्रकारी की इस किताब के तीन भाग हैं—पहला, दूसरा,

ہی اہم گھٹنا کی طرف سے آنکھیں بند کر لینا ہے۔ ہم مانتے ہیں کہ آزادی ملنے کے بعد دیس کی حالت سدھری نہیں، غریبوں کو اور بیچ کے طبقے کو آزادی کا کوئی سکھ نہیں ملا مگر اس کے لئے انگریزوں کو کوسنے کی جگہ اُن کٹھنائیوں پر بھی نظر رکھنی ہوگی جو انگریز ہمارے دیس کے لئے پیدا کر گئے۔ ہمیں اُن کٹھنائیوں کا مقابلہ کرنا ہوگا، انہیں دور کرنے کا جتن کرنا ہوگا—لیکن اس نظم میں ایسا کوئی حل نہیں بتایا گیا۔ یہ نظم ایک ایسے بے بس اور نراش آدمی کی فریاد معلوم ہوتی ہے جو خود کچھ کرنے کی ہمت نہیں رکھتا، حالانکہ اس کے بعد ہی کی نظم "انڈونیشیا" زندگی سے بھرپور ہے اور دوسروں کے دلوں میں بھی ایک امنگ پیدا کرتی ہے۔ ہمیں اس سنگرہ کی "جیل میں کسی کا خط پاکر" اور "دیوالی" نظمیں بہت پسند آئیں۔ باقی نظموں میں رومانی نظموں کا پلہ راج کاجی نظموں سے بھاری نظر آتا ہے۔ لکھائی چھپائی اور گیٹ اپ بہت سندر ہے۔

—'ماہ'

روپا ولی——

لیکھک—شری نند لال بسو

ملنے کا پتہ—وشو بھارتی گرنتھالیہ، ۲ بنکم چٹرجی اسٹریٹ، کلکتہ۔

چترکاری کی اس کتاب کے تین بھاگ ہیں—پہلا، دوسرا،

तीसरा. रेखा चित्र, भी इन किताब में दिए गये हैं, उनके आधार है :—

अजन्ता गुफा, बाग गुफा, और सिगोरिया (लंका) के भीत चित्र, कोर्नाक मन्दिर और बंगाल की मूर्तियाँ, और काश्मीरी और राजपूत के क़लम के चित्र.

इस कला पुस्तक की यह ख़ूबी है कि इसमें जितने रेखा चित्र हैं उनमें शिलपछंद दर्शाने की कोशिश की गई है. आदमियों के ज्यों के त्यों चित्र खींचना मुश्किल भी हो सकते हैं और आसान भी पर उस तरह की मुश्किल और आसानी से चित्रकार के अन्दर का चित्रकार जाग नहीं पाता और वह शिल्प में छंद को नहीं दर्शा सकता. शिल्प छंद के ज़रिये रूप और टेढ़ी मेढ़ी लकीरें मिलकर एक ऐसी मनोहर दुनिया खड़ी कर देते हैं कि जिसकी तरफ़ मन को खिंचते ही बनता है और वह रोके नहीं रुकता. इस किताब के ज़रिये जो लोग चित्रकारी सीखना चाहेंगे उनमें उनके भीतर के चित्रकार को जागने के लिये मजबूर होना पड़ेगा और उसमें छंद दर्शाने की क़ाबिलियत आपो आप ज़ोर मारेगी. नई सूझ और नया सिरजन जिसको आज कल की फ़ोटोग्राफ़ी खा गई है और खाती जारही है उनमें इन किताबों की क़द्र करने से और काम में लाने से जान पड़ जायगी. और जल्दी ही फिर हरे भरे हो जाने की सम्भावना है.

छपाई, सफ़ाई, ख़ूब सुथरी है.

—भगवानदीन

تیسرا . ریکھا چتر بھی ان کتابوں میں دئے گئے ہیں، انکے آدھار ہیں :—

اجنتا گپھا، باگ گپھا اور سگوریا (لنکا) کے بھیت چتر، کوناراک مندر اور بنگال کی مورتیاں، اور کاشمیری اور راجپوت قلم کے چتر .

اس کلا پستک کی یہ خوبی ہے کہ اس میں جتنے ریکھا چتر ہیں ان میں شلپ چھند درشانے کی کوشش کی گئی ہے . آدمیوں کے جیوں کے تیوں چتر کھینچنا مشکل بھی ہوسکتے ہیں اور آسان بھی پر اس طرح کی مشکل اور آسانی سے چترکار کے اندر کا چترکار جاگ نہیں پاتا اور وہ شلپ میں چھند کو نہیں درشا سکتا . شلپ چھند کے ذریعے روپ اور ٹیڑھی میڑھی لکیریں ملکر ایک ایسی منوہر دنیا کھڑی کر دیتے ہیں کہ جسکی طرف من کو کھنچتے ہی بنتا ہے اور وہ روکے نہیں رکتا . اس کتاب کے ذریعے جو لوگ چتر کاری سیکھنا چاہینگے ان میں انکے بھیتر کے چترکار کو جاگنے کیلئے مجبور ہونا پڑیگا اور اس میں چھند درشانے کی قابلیت آپو آپ زور ماریگی . نئی سوجھ اور نیا سرجن جسکو آجکل کی فوٹو گرافی کھا گئی ہے اور کھاتی جارہی ہے ان میں ان کتابوں کی قدر کرنے سے اور کام میں لانے سے جان پڑجائیگی اور جلدی ہی پھر ہرے بھرے ہوجانے کی سمبھاونا ہے .

چھپائی، صفائی خوب ستھری ہے .

—بھگوان دین

छपाई, सफ़ाई, खूब सुथरी है.

—भगवानदीन

—بھگوان دین

چھپائی صفائی خوب ستھری ہے .

हमारी राय

ہماری رائے

दिल्ली पीस कानफ़रेन्स पर रोक—

दुनिया के बहुत से देसों में कुछ दिनों से एक तहरीक चल रही है जिसे पीस मूवमेन्ट या अमन तहरीक कहा जाता है. इस में दो बातों पर जोर दिया जाता है. एक जंग के खिलाफ़ जनता में राय पैदा करना और दूसरे किसी भी लड़ाई में एटम बम के इस्तेमाल को नाजायज़ ठहराना. हम यह अपने निजी तजुरबे की बिना पर कह रहे हैं. हमने इस तहरीक के कई जलसों में हिस्सा लिया है और इस का कुछ साहित्य भी पढ़ा है. इस सम्बन्ध में एटम बम के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ एक अपील निकल चुकी है जो स्टाकहाम अपील के नाम से मशहूर है. इस तहरीक का एक ख़ास काम उस अपील पर लोगों के दसख़त कराना भी है. अपील 'नया हिन्द' में छप चुकी है. हम उसे फिर नीचे दोहराते हैं—

''हमारी माँग है कि एटम हथियार पर, जो जनता को डराने और मिटाने का हथियार है, बिना शर्त रोक लगाई जाय.

हमारी माँग है कि इस फ़ैसले को लागू करने के लिये एक कड़ा अन्तरक़ौमी कंट्रोल क़ायम किया जावे.

دلی پیس کانفرنس پر روک—

دنیا کے بہت سے دیسوں میں کچھ دنوں سے ایک تحریک چل رہی ہے جسے پیس مومنٹ یا امن تحریک کہا جاتا ہے . اس میں دو باتوں پر زور دیا جاتا ہے . ایک جنگ کے خلاف جنتا میں رائے پیدا کرنا اور دوسرے کسی بھی لڑائی میں ایٹم بم کے استعمال کو ناجائز ٹھہرانا . ہم یہ اپنے نجی تجربے کی بنا پر کہہ رہے ہیں . ہم نے اس تحریک کے کئی جلسوں میں حصہ لیا ہے اور اس کا کچھ ساہتیہ بھی پڑھا ہے . اس سمبندھ میں ایٹم بم کے استعمال کے خلاف ایک اپیل نکل چکی ہے جو اسٹاک ہام اپیل کے نام سے مشہور ہے . اس تحریک کا ایک خاص کام اُس اپیل پر لوگوں کے دستخط کرانا بھی ہے . اپیل 'نیا ہند' میں چھپ چکی ہے . ہم اُسے پھر نیچے دوہراتے ہیں—

''ہماری مانگ ہے کہ ایٹم ہتھیار پر' جو جنتا کو ڈرانے اور مٹانے کا ہتھیار ہے' بنا شرط روک لگائی جائے .

ہماری مانگ ہے کہ اس فیصلے کو لاگو کرنے کے لئے ایک کڑا انتر قومی کنٹرول قائم کیا جاوے .

हम मानते हैं कि जो सरकार किसी भी दूसरे देस के ख़िलाफ़ एटम हथियार का पहले इस्तेमाल करेगी वह मानव जाति के ख़िलाफ़ जुर्म करेगी और उसे युद्ध अपराधी माना जायगा."

दुनिया के बहुत से देसों में करोड़ों आदमी जिनके दिल आने वाली जंग और उसमें एटम बम के उपयोग की कल्पना करके काँप उठते हैं इस अपील पर दसख़त कर चुके हैं. हमने भी इस पर दसख़त किये हैं हैं. इस देस के लाखों दसख़त करने वालों में दो ख़ास नाम यह साबित करने के लिये काफ़ी हैं कि इस तहरीक के साथ किस तरह के,लोगों की हमदर्दी है, एक बनारस के मशहूर सूफ़ी विद्वान डा० भगवानदास और दूसरे हरिजन, हरिजन सेवक और हरिजनबन्धु के सम्पादक भाई किशोरलाल मशरूवाला.

इसी तरह की एक पीस कानफ़रेन्स पिछले जनवरी महीने में इलाहाबाद यूनीवरसिटी में बड़ी धूम धाम के साथ हुई थी जिसे यूनीवरसिटी के वाइस चान्सलर ने खोला था. इसी तहरीक की एक और बड़ी कानफ़रेन्स अप्रैल के महीने में दिल्ली में होने वाली थी. इस कानफ़रेन्स में भारत के अलग अलग सूबों के अलावा बिदेसों से भी कुछ जंग विरोधी प्रतिनिधि आने वाले थे. अचानक ख़बर मिली कि भारत सरकार ने कानफ़रेन्स को दिल्ली में होने से रोक दिया और यह बात भी एलान कर दी कि वह भारत से बाहर के किसी प्रतिनिधि को इस काम के लिये भारत आने की इजाज़त न दी जायगी यह भी कहा गया कि यह अमन कानफ़रेन्स अगर दिल्ली प्रान्त से बाहर की जाय तो सरकार को कोई एतराज़ न होगा क्योंकि दिल्ली में सब देसों के राजदूत रहते हैं और वहाँ ऐसी कानफ़रेन्स से अंतर देसी उलझनें पैदा होने का डर है. पर कानफ़रेन्स कहीं भी की जाय दूसरे देसों के प्रतिनिधि उसमें नहीं आने दिये जायँगे.

ہم مانتے ہیں کہ جو سرکار کسی بھی دوسرے دیس کے خلاف ایٹم ہتھیار کا پہلے استعمال کریگی وہ مانو جاتی کے خلاف جرم کریگی اور اُسے یدھ اپرادھی مانا جائیگا ."

دنیا کے بہت سے دیسوں میں کروڑوں آدمی جن کے دل آنے والی جنگ اور اُس میں ایٹم بم کے اُپیوگ کی کلپنا کرکے کانپ اُٹھتے ہیں اِس اپیل پر دستخط کر چکے ہیں . ہم نے بھی اس پر دستخط کئے ہیں. اس دیس کے لاکھوں دستخط کرنے والوں میں دو خاص نام یہ ثابت کرنے کے لئے کافی ہیں کہ اس تحریک کے ساتھ کس طرح کے لوگوں کی ہمدردی ہے، ایک بنارس کے مشہور صوفی ودوان ڈاکٹر بھگوان داس اور دوسرے ہریجن، ہریجن سیوک اور ہریجن بندھو کے سمپادک بھائی کشور لال مشرووالا .

اسی طرح کی ایک پیس کانفرنس پچھلے جنوری مہینے میں الہ‌آباد یونیورسٹی میں بڑی دھوم دھام کے ساتھ ہوئی تھی جسے یونیورسٹی کے وائس چانسلر نے کھولا تھا . اِسی تحریک کی ایک اور بڑی کانفرنس اپریل کے مہینے میں دلی میں ہونے والی تھی. اس کانفرنس میں بھارت کے الگ الگ صوبوں کے علاوہ بدیسوں سے بھی کچھ جنگ ورودھی پرتی‌ندھی آنے والے تھے. اچانک خبر ملی کہ بھارت سرکار نے کانفرنس کو دلی میں ہونے سے روک دیا . اور یہ بات بھی اعلان کر دی کہ بھارت سے باہر کے کسی پرتی‌ندھی کو اس کام کے لئے بھارت آنے کی اجازت نہ دی جائیگی . یہ بھی کہا گیا کہ یہ امن کانفرنس اگر دلی پرانت سے باہر کی جائے تو سرکار کو کوئی اعتراض نہ ہوگا کیونکہ دلی میں سب دیسوں کے راج دوت رہتے ہیں اور وہاں ایسی کانفرنس سے انتر دیسی الجھنیں پیدا ہونے کا ڈر ہے . پر کانفرنس کہیں بھی کی جائے دوسرے دیسوں کے پرتی‌ندھی اُس میں نہیں آنے دئے جائینگے .

फ़रेन्स से अंतर देसी उलझनें पैदा होने का डर है. पर कानफ़रेन्स कहीं भी की जाय दूसरे देसों के प्रतिनिधि उसमें नहीं आने दिये जायेंगे.

थी. वहाँ हमारी सरकार ने कानफ़रेन्स को नहीं रोका था पर दूसरे देसों के प्रतिनिधियों को वहाँ भी नहीं आने दिया गया था.

हम मानते हैं कि लगभग सब ही अमन चाहते हैं. जंग को भी बुरा लगभग सब ही कहते हैं. भारत सरकार और ख़ासकर भारत के प्रधान वज़ीर जिस सच्चाई और लगन के साथ दुनिया को जंग से बचाने और अमन क़ायम रखने की कोशिशें करते रहे हैं और कर रहे हैं, उससे दुनिया अच्छी तरह परिचित है. भारत सरकार के इस काम को जितना सराहा जाय थोड़ा है. इस पर भी हमें दुख है कि कानफ़रेन्स पर भारत सरकार की इस रोक थाम को हम नहीं समझ सके.

जहाँ तक हमने पढ़ा है या हम समझ सके कानफ़रेन्स पर बल्कि इस सारी अमन तहरीक पर सबसे बड़ा एतराज़ यह किया जाता है कि इसके पीछे भारत के कम्यूनिस्ट हैं. इस पर दिल्ली कानफ़रेन्स की स्वागत कमेटी के कुछ लोग प्रधान वज़ीर श्री नेहरू और घर वज़ीर श्री राजागोपालाचारी से मिले. उन्होंने इन दोनों वज़ीरों को बताया कि अमन कानफ़रेन्स में हिस्सा लेने वाले बहुत लोग ऐसे हैं जो कम्यूनिस्ट नहीं हैं. और कानफ़रेन्स का मतलब सरकार की अमन की कोशिशों में केवल उसके हाथ मज़बूत करना ही है. कहा जाता है इसके जवाब में सरकार की तरफ़ से कहा गया कि जो ग़ैर-कम्यूनिस्ट नेता उस अमन कानफ़रेन्स में शामिल हो रहे हैं उन्होंने कानफ़रेन्स के पीछे काम करने वाले असली मक़सद को ठीक नहीं समझा. यह भी कहा गया कि भारत सरकार को अपनी अमन की कोशिशों में इतनी काफ़ी मदद चारों तरफ़ से मिल रही है कि उन्हें ऐसी किसी कानफ़रेन्स की मदद की ज़रूरत नहीं न देस से बाहर के अमन पसन्दों की ज़रूरत है. इसलिये सरकार अपने इस फ़ैसले पर क़ायम है कि यह कानफ़रेन्स दिल्ली में न हो.

ऊपर की ख़बर हमने १७ मार्च के 'अमृत बाजार पत्रिका' से ली

تھی . وہاں ہماری سرکار نے کانفرنس کو نہیں روکا تھا پر دوسرے دیسوں کے پرتی ندھیوں کو وہاں بھی نہیں آنے دیا گیا تھا .

ہم مانتے ہیں کہ لگ بھگ سب ہی امن چاہتے ہیں . جنگ کو بھی برا لگ بھگ سب ہی کہتے ہیں . بھارت سرکار اور خاص کر بھارت کے پردھان وزیر جس سچائی اور لگن کے ساتھ دنیا کو جنگ سے بچانے اور امن قائم رکھنے کی کوششیں کرتے رہے ہیں اور کر رہے ہیں، اُس سے دنیا اچھی طرح پریچت ہے . بھارت سرکار کے اِس کام کو جتنا سراہا جائے تھوڑا ہے . اس پر بھی ہمیں دکھ ہے کہ کانفرنس پر بھارت سرکار کی اس روک تھام کو ہم نہیں سمجھ سکے .

جہاں تک ہم نے پڑھا ہے یا ہم سمجھ سکے کانفرنس پر بلکہ اس ساری امن تحریک پر سب سے بڑا اعتراض یہ کیا جاتا ہے کہ اسکے پیچھے بھارت کے کمیونسٹ ہیں . اس پر دلی کانفرنس کی سوائت کمیٹی کے کچھ لوگ پردھان وزیر شری نہرو اور گھر وزیر شری راجہ گوپالا چاری سے ملے . انہوں نے اِن دونوں وزیروں کو بتایا کہ امن کانفرنس میں حصہ لینے والے بہت لوگ ایسے ہیں جو کمیونسٹ نہیں ہیں . اور کانفرنس کا مطلب سرکار کی امن کی کوششوں میں کیول اُس کے ہاتھ مضبوط کرنا ہی ہے . کہا جاتا ہے اس کے جواب میں سرکار کی طرف سے کہا گیا کہ جو غیر کمیونسٹ نیتا اُس امن کانفرنس میں شامل ہو رہے ہیں انہوں نے کانفرنس کے پیچھے کام کرنے والے اصلی مقصد کو ٹھیک ٹھیک نہیں سمجھا . یہ بھی کہا گیا کہ بھارت سرکار کو اپنی امن کی کوشش میں اتنی کافی مدد چاروں طرف سے مل رہی ہے کہ انہیں ایسی کسی کانفرنس کی مدد کی ضرورت نہیں نہ دیس سے باہر کے امن پسندوں کی ضرورت ہے . اس لئے سرکار اپنے اس فیصلے پر قائم ہے کہ یہ کانفرنس دلی میں نہ ہو .

اوپر کی خبر ہم نے ۱۷ مارچ کے 'امرت بازار پتریکا' سے لی

है. दिल्ली सरकार ने जो कुछ फ़ैसला किया उसका उसे क़ानूनी अधिकार है. पर हमें विश्वास नहीं होता कि जो शब्द ज़िम्मेदार सरकारी लोगों के कहे हुए इस ख़बर में बताए गए हैं वह सचमुच उनके मुँह से निकले हैं. यह भी ज़ाहिर है कि इस समय आने वाली जंग और एटम बम के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ जितनी ज़्यादा आवाज़ रूस, चीन और एशिया के कम्यूनिस्ट और ग़ैर-कम्यूनिस्ट मुल्कों से उठ रही है उतनी अमरीका इंगलिस्तान और उनके साथियों से नहीं. यह है भी एक क़ुदरती बात. पर इससे अमन की आवाज़ उठाने, जंग का विरोध करने या एटम बम के उपयोग को बुरा कहने की क़ीमत कम नहीं हो जाती. भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी के कई कामों से हम सहमत नहीं हैं पर हज़ारों चोर बाज़ार वालों और रिश्वत ख़ोरों के खद्दर पहनने से खद्दर बुरा नहीं हो जाता न ऐसे लोगों को खद्दर पहनने, बेचने या ख़रीदने से रोका जाता है. हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि किसी भी तहरीक के मक़सद को ठीक ठीक समझने की शक्ति जैसी सरकार के अन्दर के लोगों को हो सकती है वैसी ही सरकार के बाहर के लोगों को भी हो सकती है और कभी कभी सरकार के बाहर के लोगों में यह शक्ति अधिक होती है, कम से कम वह अधिक सचाई और सफ़ाई के साथ अपने दिल की बात कह सकते हैं. किसी सरकार को यह कहना भी शोभा नहीं देता कि उसे अपने काम में और ख़ास कर जंग के ख़िलाफ़ लोगों की राय बनाने जैसे काम में किसी की मदद की ज़रूरत नहीं.

जहाँ तक बाहर के देसों के साथ उलझनें पैदा होने का सवाल है वहाँ तक भी हम अपनी सरकार के इस फ़ैसले की क़द्र कर सकने के नाक़ाबिल हैं. इसी मार्च के आख़ीर में एक 'इन्डियन काँगरेस आफ़ कलचरल फ़्रीडम' दिल्ली में हो रही है जिसमें अमरीका, योरप और दक्खिन पूरब एशिया के अनेक प्रतिनिधि आकर हिस्सा लेंगे.

ھے ۔ دلی سرکار نے جو کچھ فیصلہ کیا اسکا اسے قانونی ادھیکار ھے ۔ پر ھمیں وشواس نہیں ھوتا کہ جو شبد ذمہ دار سرکاری لوگوں کے کہے ھوئے اس خبر میں بتائے گئے ھیں وہ سچ مچ ان کے منہ سے نکلے ھیں ۔ یہ بھی ظاھر ھے کہ اس سمے آنے والی جنگ اور ایٹم بم کے استعمال کے خلاف جتنی زیادہ آواز روس، چین اور ایشیا کے کمیونسٹ اور غیر کمیونسٹ ملکوں سے اُٹھ رھی ھے اُتنی امریکہ، انگلستان اور اُن کے ساتھیوں سے نہیں ۔ یہ ھے بھی ایک قدرتی بات ۔ پر اس سے امن کی آواز اُٹھانے، جنگ کا ورودھ کرنے یا ایٹم بم کے اُپیوگ کو برا کہنے کی قیمت کم نہیں ھو جاتی ۔ بھارت کی کمیونسٹ پارٹی کے کئی کاموں سے ھم سہمت نہیں ھیں پر ھزاروں چور بازار والوں اور رشوت خوروں کے کھدر پہننے سے کھدر برا نہیں ھو جاتا نہ ایسے لوگوں کو کھدر پہننے، بیچنے یا خریدنے سے روکا جاتا ھے ۔ ھم بڑے ادب کے ساتھ کہنا چاھتے ھیں کہ کسی بھی تحریک کے مقصد کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کی شکتی جیسی سرکار کے اندر کے لوگوں کو ھو سکتی ھے ویسی ھی سرکار کے باھر کے لوگوں کو بھی ھو سکتی ھے اور کبھی کبھی سرکار کے باھر کے لوگوں میں یہ شکتی ادھک ھوتی ھے، کم سے کم وہ ادھک سچائی اور صفائی کے ساتھ اپنے دل کی بات کہہ سکتے ھیں ۔ کسی سرکار کو یہ کہنا بھی شوبھا نہیں دیتا کہ اُسے اپنے کام میں اور خاص کر جنگ کے خلاف لوگوں کی رائے بنانے جیسے کام میں کسی کی مدد کی ضرورت نہیں ۔

جہاں تک باھر کے دیسوں کے ساتھ اُلجھنیں پیدا ھونے کا سوال ھے وہاں تک بھی ھم اپنی سرکار کے اس فیصلے کی قدر کر سکنے کے ناقابل ھیں ۔ اسی مارچ کے آخیر میں ایک 'انڈین کانگریس آف کلچرل فریڈم' دلی میں ھو رھی ھے جسمیں امریکہ، یورپ اور دکھن پورب ایشیا کے انیک پرتیندھی آکر حصہ لینگے ۔

के नाक़ाबिल हैं. इसी मार्च के आख़ीर में एक 'इन्डियन कॉंगरेस आफ़ कलचरल फ्रीडम' दिल्ली में हो रही है जिसमें अमरीका, योरप और दक्खिन पूरब एशिया के अनेक प्रतिनिधि आकर हिस्सा लेंगे.

ناقابل ھیں. اسی مارچ کے آخیر میں ایک 'انڈین کانگریس آف کلچرل فریڈم' دلی میں ہو رہی ہے جسمیں امریکہ، یورپ

है उसमें कई ऐसे व्यक्तियों और ऐसी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के नाम मौजूद हैं जो असूली तौर पर कम्यूनिज्म के खुले विरोधी हैं. नाम गिनाने की ज़रूरत नहीं. इस कॉंगरेस के सेक्रेटरी ने एक प्रेस कानफ़रेन्स में यह साफ़ बताया कि इस कानफ़रेन्स का मक़सद देस को कम्यूनिज्म के ख़तरे से बचाना है और यहाँ तक कह दिया—"अगर इस देस की हुकूमत पर कम्यूनिज्म ने क़ब्ज़ा कर लिया तो आज़ादी नष्ट हो जायगी." इसी मार्च महीने में यह भी ख़बरें आती रही हैं कि अमरीका के यात्री सैकड़ों की तादाद में भारत आ चुके हैं, आ रहे हैं और देस भर के दौरे कर रहे हैं. रूस, चीन और कम्यूनिज्म की तरफ़ अमरीका की सरकार और वहाँ के बहुत से लोगों का रुख़ किसी से छिपा नहीं है. हमारी सरकार की तरफ़ से आख़िर यह भेद भाव क्यों? ऐसी सूरत में लोगों को यह शक करने का मौक़ा मिलता है कि सरकार के इस रुख़ के पीछे किसी ऐसी बिदेसी शक्ति या शक्तियों को संतुश्ट रखने की ख़ाहिश काम कर रही है जिससे कम से कम इस समय हमें अपना अधिक निकट का सम्बन्ध दिखाई दे रहा है. अगर ऐसा है तो हमें खेद है कि इस चीज़ पर हम अपनी सरकार को या देस को बधाई नहीं दे सकते.

[इस नोट के छपते छपते हमें ख़बर मिली कि यह 'इन्डियन कांगरेस आफ़ कलचरल फ्रीडम' भी किसी कारन दिल्ली से हटकर बम्बई में हो रही है, पर कई बिदेसी प्रतिनिधि इसमें शरीक हैं.

—सुन्दरलाल]

कम्यूनिस्ट देस और मज़हब

हम अमरीका और इंगलिस्तान दोनों के साथ दोस्ती क़ायम रखना चाहते हैं. संसार के सब देसों के साथ हम सुलह से रहना चाहते हैं. सब को हम अपना दोस्त समझते हैं. और अगर कहीं हमें विरोध के

११

ہے اس میں کئی ایسے ویکتیوں اور ایسی سنستھاؤں کے پرتیندھیوں کے نام موجود ھیں جو اصولی طور پر کمیونزم کے کھلے وِرودھی ھیں. نام گنانے کی ضرورت نہیں. اس کانگریس کے سکریٹری نے ایک پریس کانفرنس میں یہ صاف بتایا کہ اس کانفرنس کا مقصد دیس کو کمیونزم کے خطرے سے بچانا ھے اور یہاں تک کہدیا—"اگر اس دیس کی حکومت پر کمیونزم نے قبضہ کر لیا تو آزادی نشٹ ہو جائیگی." اسی مارچ مہینے میں یہ بھی خبریں آتی رہی ھیں کہ امریکہ کے یاتری سیکڑوں کی تعداد میں بھارت آچکے ھیں، آرہے ھیں اور دیس بھر کے دورے کر رہے ھیں. روس، چین اور کمیونزم کی طرف امریکہ کی سرکار اور وھاں کے بہت سے لوگوں کا رخ کسی سے چھپا نہیں ھے. ھماری سرکار کی طرف سے آخر یہ بھید بھاؤ کیوں؟ ایسی صورت میں لوگوں کو یہ شک کرنے کا موقع ملتا ھے کہ سرکار کے اس رخ کے پیچھے کسی ایسی بدیسی شکتی یا شکتیوں کو سنتشٹ رکھنے کی خواھش کام کر رہی ھے جس سے کم سے کم اس سمے ھمیں اپنا ادھک نکٹ کا سمبندھ دکھائی دے رہا ھے. اگر ایسا ھے تو ھمیں کھید ھے کہ اس چیز پر ہم اپنی سرکار کو یا دیس کو بدھائی نہیں دے سکتے.

[اس نوٹ کے چھپتے چھپتے ھمیں خبر ملی کہ یہ 'انڈین کانگریس آف کلچر فریڈم' بھی کسی کارن دلی سے ھٹکر بمبئی میں ہو رہی ھے، پر کئی بدیسی پرتیندھی اِسمیں شریک ھیں.

—سندرلال]

کمیونسٹ دیس اور مذھب

ہم امریکہ اور انگلستان دونوں کے ساتھ دوستی قائم رکھنا چاھتے ھیں. سنسار کے سب دیسوں کے ساتھ ہم صلح سے رھنا چاھتے ھیں. سب کو ہم اپنا دوست سمجھتے ھیں. اور اگر کہیں ھمیں وِرودھ کے

अंकुर दिखाई देते हैं तो उन्हें भी हम प्रेम, शान्ति और समझौते से ही हल कर लेना चाहते हैं. रूस और चीन के साथ भी हमारा गहरा नाता है और खासकर चीन के साथ हमारा सम्बन्ध हज़ारों बरस का पुराना है. हमें दुख है कि रूस, चीन और कम्यूनिज्म के ख़िलाफ़ कई तरह की आवाजें इस देस में कई कोनों से उठती रहती हैं. हमारा कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों से कई बातों में असहमत होना एक अलग बात है. धर्म और इनसाफ़ यह है कि जिसके साथ हम सहमत न हों उसके भी सच्चे गुनों की क़द्र करें. कम्यूनिज्म के ख़िलाफ़ एक बहुत बड़ा इलज़ाम यह लगाया जाता है कि वह धर्म या मज़हब के ख़िलाफ़ है. कहा जाता है कम्यूनिस्ट देसों में मजहब की आज़ादी नहीं. हाल में सोवियत रूस के एक मुसलमान नेता मि० नमशीना ने लाहौर में कहा था कि रूस में मुसलमानों के ऊपर ज़्यादतियों की जितनी खबरें उड़ाई जा रही हैं वह "बे बुनियाद हैं और जान बूझ कर शरारतन फैलाई जाती हैं." उनसे कहा गया कि रूस में मुसलिम औरतों को बुरक़ा नहीं पहनने दिया जाता. उन्होंने जवाब में कहा कि "रूस के उनसब हिस्सों में जहाँ मुसलमान रहते हैं, आपको जगह जगह बुरक़ा ओढ़े मुसलमान औरतें दिखाई देंगी." पिछली फ़रवरी में अंगरेज़ पादरी रेवेरेन्ड टामस स्काट ने जो उत्तर चीन में ईसाई धर्म प्रचार का काम करते रहे हैं लन्दन में कहा था कि चीन में जब से जनता की नई सरकार क़ायम हुई है तब से ईसाई धर्म के प्रचार का काम पहले से बहुत आसान होगया है. चीनी ईसाई धर्म प्रचारकों को अपने धर्म के प्रचार की पूरी पूरी और खुली आज़ादी है. कम्यूनिज्म ने उनके इस काम को किसी तरह भी नहीं रोका जिसका नतीजा यह है कि तमाम चीनी ईसाई नई सरकार के जोशीले समर्थक हैं. लाल चीन की सेना जब तिब्बत आई थी तो सिपाहियों को खास तौर पर यह हुकम दिये गए थे कि किसी मठ या [illegible]

انکر دکھائی دیتے ہیں تو اُنھیں بھی ہم پریم، شانتی اور سمجھوتے سے ہی حل کر لینا چاہتے ہیں ۔ روس اور چین کے ساتھ بھی ہمارا گہرا ناتا ہے اور خاصکر چین کے ساتھ ہمارا سمبندھ ہزاروں برس کا پرانا ہے ۔ ہمیں دکھ ہے کہ روس، چین اور کمیونیزم کے خلاف کئی طرح کی آوازیں اس دیس میں کئی کونوں سے اُٹھتی رہتی ہیں ۔ ہمارا کمیونزم کے سدھانتوں سے کئی باتوں میں اسہمت ہونا ایک الگ بات ہے ۔ دھرم اور انصاف یہ ہے کہ جس کے ساتھ ہم سہمت نہ ہوں اس کے بھی سچے گنوں کی قدر کریں ۔ کمیونزم کے خلاف ایک بہت بڑا الزام یہ لگایا جاتا ہے کہ وہ دھرم یا مذہب کے خلاف ہے ۔ کہا جاتا ہے کمیونسٹ دیسوں میں مذہب کی آزادی نہیں ۔ حال میں سوویت روس کے ایک مسلمان نیتا مسٹر نم شینا نے لاہور میں کہا تھا کہ روس میں مسلمانوں کے اوپر زیادتیوں کی جتنی خبریں اُڑائی جارہی ہیں وہ "بے بنیاد ہیں اور جان بوجھکر شرارتاً پھیلائی جاتی ہیں ۔" اُن سے کہا گیا کہ روس میں مسلم عورتوں کو برقعہ نہیں پہننے دیا جاتا ۔ اُنھوں نے جواب میں کہا کہ "روس کے اُن سب حصوں میں جہاں مسلمان رہتے ہیں، آپ کو جگہ جگہ برقعہ اوڑھے مسلمان عورتیں دکھائی دینگی ۔" پچھلی فروری میں انگریز پادری ریورنڈ ٹامس اسکاٹ نے جو اُتر چین میں عیسائی دھرم پرچار کا کام کرتے رہے ہیں لندن میں کہا تھا کہ چین میں جب سے جنتا کی نئی سرکار قائم ہوئی ہے تب سے عیسائی دھرم کے پرچار کا کام پہلے سے بہت آسان ہوگیا ہے ۔ چینی عیسائی دھرم پرچارکوں کو اپنے دھرم کے پرچار کی پوری پوری اور کھلی آزادی ہے ۔ کمیونزم نے اُن کے اِس کام کو کسی طرح بھی نہیں روکا جس کا نتیجہ یہ ہے کہ تمام چینی عیسائی نئی سرکار کے جوشیلے سمرتھک ہیں ۔ لال چین کی سینا جب تبت آئی تھی تو سپاہیوں کو [illegible]

काम ऐसा न करें जिससे तिब्बतियों के किसी धार्मिक नियम पर चोट लगती हो. फिर भी यह ग़लत ख़बर दुनिया भर में उड़ाई जाती है कि कम्यूनिस्ट देसों में लोगों को मज़हबी आज़ादी नहीं है.

अमरीकी जापान

हम चाहते हैं कि अमरीका और अमरीकी फलें फूलें. पर हमें इस सच्चाई को भी आँख से ओझल नहीं करना चाहिये कि उस जापान के अन्दर जो आजकल अमरीकी फ़ौजों के क़ब्ज़े में है, इसी मार्च की लन्दन की एक ख़बर के अनुसार लगभग ग्यारह हज़ार रुपए में एक मन चावल बिक रहा है, जापानी माँ-बाप अपना पेट भरने के लिये अपने बच्चों को बेच रहे हैं और कहा जाता है कि टोकियो की इम्पीरियल यूनीवरसिटी में लगभग पाँच सौ विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें अपना ख़र्च चलाने के लिये हर महीने अपना ख़ून बेचना पड़ता है. जापान के छोटे छोटे उद्योग धन्दे बन्द होते जा रहे हैं, बेकारी बढ़ रही है और अमरीका का बना हुआ माल और अमरीकी मशीनें बाज़ारों में भरी पड़ी हैं. यह भी बताया जाता है कि लाखों जापानी औरतें पेट पालने के लिये बुरा पेशा करने पर मजबूर हो गई हैं. अकेले टोकियों में इस समय इस तरह की तीन लाख औरतें हैं.

रूस में खाने की चीज़ें

इस के मुक़ाबले में इसी महीने की ख़बर है कि रूस में खाने पीने की सब चीज़ें दिन दिन सस्ती होती जा रही हैं. आटा, रोटी, पनीर, चर्बी, गोश्त और साबुन के भाव हाल में पच्चीस फ़ी सदी कम होगए हैं. यही हाल दूसरी बरतने की चीज़ों का है. रूस के किसान अपने यहाँ के साइन्स वालों की मदद से उन सब देसों की जनता को भूक से बचाने के लिये, जिन तक रूस की पहुँच है, साल में पाँच पाँच फ़सलें गेहूँ की काट रहे हैं.

کام ایسا نہ کریں جس سے تبتیوں کے کسی دھارمک نیم پر چوٹ لگتی ھو۔ پھر بھی یہ غلط خبر دنیا بھر میں اُڑائی جاتی ھے کہ کمیونسٹ دیسوں میں لوگوں کو مذھبی آزادی نہیں ھے۔

امریکی جاپان

ھم چاھتے ھیں کہ امریکہ اور امریکی پھلیں پھولیں۔ پر ھمیں اس سچائی کو بھی آنکھ سے اوجھل نہیں کرنا چاھئے کہ اُس جاپان کے اندر جو آج کل امریکی فوجوں کے قبضے میں ھے اِسی مارچ کی لندن کی ایک خبر کے انوسار لگ بھگ گیارہ ھزار روپے میں ایک من چاول بک رھا ھے، جاپانی ماں-باپ اپنا پیٹ بھرنے کے لئے اپنے بچوں کو بیچ رھے ھیں اور کہا جاتا ھے کہ توکیو کی اِمپیریل یونیورسٹی میں لگ بھگ پانچ سو ودیارتھی ایسے ھیں جنھیں اپنا خرچ چلانے کے لئے ھر مہینے اپنا خون بیچنا پڑتا ھے۔ جاپان کے چھوٹے چھوٹے اودیوگ دھندے بند ھوتے جارھے ھیں، بیکاری بڑھ رھی ھے اور امریکہ کا بنا ھوا مال اور امریکی مشینیں بازاروں میں بھری پڑی ھیں۔ یہ بھی بتایا جاتا ھے کہ لاکھوں جاپانی عورتیں پیٹ پالنے کے لئے برا پیشہ کرنے پر مجبور ھوگئی ھیں۔ اکیلے توکیو میں اس سمے اِس طرح کی تین لاکھ عورتیں ھیں۔

روس میں کھانے کی چیزیں

اس کے مقابلے میں اسی مہینے کی خبر ھے کہ روس میں کھانے پینے کی سب چیزیں دن دن سستی ھوتی جارھی ھیں۔ آٹا، روٹی، پنیر، چربی، گوشت اور صابن کے بھاو حال میں پچیس فیصدی کم ھوگئے ھیں۔ یہی حال دوسری برتنے کی چیزوں کا ھے۔ روس کے کسان اپنے یہاں کے سائینس والوں کی مدد سے اُن سب دیسوں کی جنتا کو بھوک سے بچانے کے لئے، جن تک روس کی پہونچ ھے، سال میں پانچ پانچ فصلیں گیہوں کی کاٹ رھے ھیں۔

अमरीकी नीत की जड़ें

जब कि रूस में दस्तकारियाँ और उद्योग धन्दे दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं और अपने कारखानों की जरूरत के लिये लगभग सारा कच्चा माल रूस खुद पैदा कर लेता है, दूसरी तरफ़ अमरीका की न्यूयार्क रियासत के गवरनर टामस डयूई ने हाल में वहाँ की कांगरेस की एक कमेटी में कहा था कि अमरीका को अगर हिन्दुस्तान और दुनिया के दूसरे देसों से जरूरी कच्चा माल न मिला तो अमरीका के उद्योग धंदे और कल कारख़ाने ठप होजायँगे. उन्होंने बताया कि जंग के लिये अमरीका को जिस जिस कच्चे माल की जरूरत है उनमें इकहत्तर चीजें, जिनमें वह यूरेनियम भी शामिल है जिससे एटम बम बनता है, अमरीका को दूसरे देसों से ही लेनी होंगी.

कोरिया, चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और दूसरे देसों में, जो फ़ौजी निगाह से कमज़ोर दिखाई देते हैं, अमरीका की बिदेसी नीत की जड़ें ऊपर साफ़ दिखाई दे रही हैं. यही कारन है कि अमरीका की सेनेट के मुताबिक़ पिछले आठ महीने में कोरिया की लड़ाई में अमरीका के चौदह अरब डालर यानी लगभग पचहत्तर अरब रुपए ख़र्च हो चुके हैं.

अमरीका में बोलने की आजादी की यह हालत है कि हाल ही में जब ग्राम उद्योग संघ, वर्धा के सदर श्री जे० सी० कुमारप्पा के भाई डा० भारतन कुमारप्पा ने, जो कट्टर गांधीवादी हैं, अमरीका पहुँचने पर अपने देसबासियों के विचार साफ़ साफ़ प्रकट करने शुरू किये तो डेन्टन शहर के अधिकारियों ने उनके लेक्चर के लिये, उनके विचारों की बिना पर, टाउनहाल देने तक से इनकार कर दिया और यहाँ तक कहा गया है कि डा० भारतन कुमारप्पा के इन आजाद विचारों के कारन ही गेहूँ के भारत आने में भी रुकावटें पड़ रही हैं जो

امریکی نیت کی جڑیں

جب کہ روس میں دستکاریاں اور اُدیوگ دھندے دنوں دن بڑھتے جا رہے ہیں اور اپنے کارخانوں کی ضرورت کے لئے لگ بھگ سارا کچا مال روس خود پیدا کر لیتا ہے، دوسری طرف امریکہ کی نیویارک ریاست کے گورنر ٹامس ڈیوی نے حال میں وہاں کی کانگریس کی ایک کمیٹی میں کہا تھا کہ امریکہ کو اگر ہندستان اور دنیا کے دوسرے دیسوں سے ضروری کچا مال نہ ملا تو امریکہ کے اُدیوگ دھندے اور کل کارخانے ٹھپ ہوجائینگے. اُنہوں نے بتایا کہ جنگ کے لئے امریکہ کو جس جس کچے مال کی ضرورت ہے اُن میں اکہتر چیزیں، جن میں وہ یورینیم بھی شامل ہے، جس سے ایٹم بم بنتا ہے، امریکہ کو دوسرے دیسوں سے ہی لینی ہونگی.

کوریا، چین، ہندستان، ایران اور دوسرے دیسوں میں، جو فوجی نگاہ سے کمزور دکھائی دیتے ہیں، امریکہ کی بدیسی نیت کی جڑیں اوپر صاف دکھائی دے رہی ہیں. یہی کارن ہے کہ امریکہ کی سینیٹ کے مطابق پچھلے آٹھ مہینے میں کوریا کی لڑائی میں امریکہ کے چودہ ارب ڈالر یعنی لگ بھگ پچہتر ارب روپے خرچ ہوچکے ہیں.

امریکہ میں بولنے کی آزادی کی یہ حالت ہے کہ حال ہی میں جب گرام اُدیوگ سنگھ، وردھا کے صدر شری جے-سی-کماریا کے بھائی ڈاکٹر بھارتن کماریا نے، جو کٹر گاندھی وادی ہیں، امریکہ پہونچنے پر اپنے دیس باسیوں کے وچار صاف صاف پرکٹ کرنے شروع کئے تو ڈینٹن شہر کے ادھیکاریوں نے اُن کے لیکچر کے لئے، اُن کے وچاروں کی بنا پر، ٹاؤن ہال دینے تک سے انکار کر دیا اور یہاں تک کہا گیا ہے کہ ڈاکٹر بھارتن کماریا کے ان آزاد وچاروں کے کارن ہی گیہوں کے بھارت آنے میں بھی رکاوٹیں پڑ رہی ہیں جو

की बिना पर, टाउनहाल देने तक से इनकार कर दिया और यहाँ तक कहा गया है कि डा० भारतन कुमारप्पा के इन आज़ाद विचारों के कारन ही बैन मोंई के भारत आने में भी रुकावटें पड़ रही हैं जो

इसी कारन चीन की सारी जनता और वहाँ की सरकार दोनों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अमरीकी फ़ौज ताइवान (फ़ारमूसा) में डटे रहने और देसघातक चाँगकाई शेक को बढ़ावा देने का वह राजनैतिक बलात्कार कर रही है जिसे कोई एशियावासी बल्कि कोई न्याय प्रेमी इनसान नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकता.

इसी कारन अमरीका कोरिया के अन्दर किसी भी तरह फ़तेह हासिल करने के लिये बेचैन है. जिस कमेटी में मि० टामस ड्यूई ने अमरीका के उद्योग धन्दों की बाबत अपना वह बयान दिया था जिसका ज़िकर हम ऊपर कर आए हैं उसी में एटलान्टिक पैक्ट आर्मी के सबसे बड़े कमान्डर जनरल ईसेनहोवर ने खुले शब्दों में कहा कि लड़ाई में हमें अगर ज़रूरत पड़ गई और अगर हमें यह यक़ीन हुआ कि उससे दुशमन के काफ़ी लोग मर जायँगे तो हम "फ़ौरन" एटम बम इस्तेमाल करेंगे. जनरल ईसेनहोवर ने यह भी कहा कि सदाचार की निगाह से हमारा ऐसा करना बिल्कुल ठीक होगा. इस पर श्री जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली में बिल्कुल ठीक कहा कि इससे किसी का कोई भला नहीं हो सकता. श्री जवाहरलाल नेहरू अनेक बार एटम बम के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ अपने विचार प्रकट कर चुके हैं. उन्होंने यह भी बताया कि अगर जंग हुई और उसमें एटम बम खुले इस्तेमाल किये गए तो कम से कम दुनिया की आधी आबादी यानी लगभग एक अरब आदमी मरेंगे या जख़्मी होंगे. और किसी का भी कोई भला नहीं हो सकता, कोई मक़सद पूरा नहीं हो सकता, दुनिया के सदाचार का तो ख़ात्मा हो ही जायगा. हम ही नहीं सारा एशिया जवाहरलाल जी के इन विचारों से सहमत है. हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि दुनिया इस आफ़त से बची रहे. पर हमें डर है कि अमरीकी नेता इस मामले में अपने ग़लत आर्थिक संगठन और अपने देस की हालत से लाचार और अंधे हो रहे हैं.

وچاروں کی بنا پر، ٹاؤن ہال دینے تک سے انکار کر دیا اور یہاں تک کہا گیا ہے کہ ڈاکٹر بھارتن کمارپا کے ان آزاد وچاروں کے کارن ہی

اسی کارن چین کی ساری جنتا اور وہاں کی سرکار دونوں کی مرضی کے خلاف امریکی فوج تائی وان (فارموسا) میں ڈٹے رہنے اور دیس گھاتک چانگ کائی شیک بڑھاوا کو دینے کا وہ راجنیتک بلاتکار کر رہی ہے جسے کوئی ایشیا واسی بلکہ کوئی نیائے پریمی انسان نظر انداز نہیں کرسکتا .

اسی کارن امریکہ کوریا کے اندر کسی بھی طرح فتح حاصل کرنے کے لئے بےچین ہے . جس کمیٹی میں مسٹر ٹامس ڈیوئی نے امریکہ کے اُدیوگ دھندوں کی بابت اپنا وہ بیان دیا تھا جس کا ذکر ہم اوپر کر آئے ہیں اُسی میں اٹیلانٹک پیکٹ آرمی کے سب سے بڑے کمانڈر جنرل ایسن ہوور نے کھلے شبدوں میں کہا کہ لڑائی میں ہمیں اگر ضرورت پڑ گئی اور اگر ہمیں یہ یقین ہوا کہ اُس سے دشمن کے کافی لوگ مرجائینگے تو "ہم فوراً" ایٹم بم استعمال کرینگے . جنرل ایسن ہوور نے یہ بھی کہا کہ سداچار کی نگاہ سے ہمارا ایسا کرنا بالکل ٹھیک ہوگا . اس پر شری جواہر لال نہرو نے دلی میں بالکل ٹھیک کہا کہ اِس سے کسی کا کوئی بھلا نہیں ہوسکتا . شری جواہر لال نہرو انیک بار ایٹم بم کے استعمال کے خلاف اپنے وچار پرکٹ کر چکے ہیں . اُنہوں نے یہ بھی بتایا کہ اگر جنگ ہوئی اور اس میں ایٹم بم کھلے استعمال کئے گئے تو کم سے کم دنیا کی آدھی آبادی یعنی لگ بھگ ایک ارب آدمی مرینگے یا زخمی ہونگے اور کسی کا بھی کوئی بھلا نہیں ہوسکتا، کوئی مقصد پورا نہیں ہو سکتا، دنیا کے سداچار کا تو خاتمہ ہو ہی جائیگا . ہم ہی نہیں سارا ایشیا جواہر لال جی کے ان وچاروں سے سہمت ہے . ہماری ایشور سے پرارتھنا ہے کہ دنیا اِس آفت سے بچی رہے . پر ہمیں ڈر ہے کہ امریکی نیتا اس معاملے میں اپنے غلط آرتھک سنگٹھن اور اپنے دیس کی حالت سے لاچار اور اندھے ہو رہے ہیں .

अमरीका के साथी—फ़्रान्स

अब अगर हम अमरीकी दल के दूसरे देशों की तरफ़ निगाह डालें तो हालत और भी भयंकर दिखाई देने लगती है.

उत्तर अफ़रीक़ा का एक बड़ा हिस्सा फ़्रान्स के क़ब्ज़े में है. सन १९१२ में उस समय के मोरक्को (मराकश) के सुलतान और फ़्रान्सीसी सरकार के बीच एक संधि हुई जिस के अनुसार उत्तर अफ़रीक़ा के बहुत बड़े हिस्से की रक्षा का भार फ़्रान्स ने अपने ऊपर ले लिया, थोड़ा सा हिस्सा स्पेन के क़ब्ज़े में है और कुछ अंतरक़ौमी इलाक़ समझा जाता है. आज से एक पीढ़ी पहले मोरक्को में एक दल खड़ा होगया जो इस्तक़लाल पार्टी कहलाता है. यह दल सन १९१२ की संधि को रद्द कराकर मोरक्को और सारे उत्तर अफ़रीक़ा को बिदेसी ताक़तों के पंजे से आज़ाद करना चाहता है. पिछली बड़ी जंग में मित्र राष्ट्रों ने मोरक्को के लोगों को आज़ाद कर देने का बार बार वादा किया. अमरीका के प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ख़ुद मोरक्को पहुँचे और उन्होंने अपनी निजी ज़िम्मेवारी पर सुलतान से वादा किया कि जंग के बाद मोरक्कों को आज़ाद कर दिया जावेगा. पर वादा आज तक पूरा नहीं हुआ. मौजूदा सुलतान जो नाम मात्र का सुलतान है फ़्रान्सीसी रेज़ीडेन्ट जनरल के हाथ में केवल एक कठपुतली है. फ़्रान्स और अमरीका की दोस्ती मोरक्को में पूरी तरह चमक रही है. अगली जंग की तैयारी के लिये पाँच बड़े बड़े हवाई जंगी अड्डे अमरीका को दे दिये गए हैं. कहा जाता है कि यहीं से सारे योरप को कम्यूनिस्टों से बचाने की सबसे अच्छी कोशिशें की जाने वाली हैं. मालूम होता है अमरीका और उसके साथियों का अब दुनिया में एक ही काम रह गया है और वह है दुनिया को कम्यूनिज़्म से बचाना ! मोरक्को निवासियों में आज़ादी की कोशिशें जारी हैं. कहा जाता है पिछली

امریکہ کے ساتھی—فرانس

اب اگر ہم امریکی دل کے دوسرے دیسوں کی طرف نگاہ ڈالیں تو حالت اور بھی بھینکر دکھائی دینے لگتی ہے ۔

اُتر افریقہ کا ایک بڑا حصہ فرانس کے قبضے میں ہے ۔ سن ۱۹۱۲ میں اُس سمے کے مورکو (مراقش) کے سلطان اور فرانسیسی سرکار کے بیچ ایک سندھی ہوئی جسکے انوسار اُتر افریقہ کے بہت بڑے حصے کی رکشا کا بھار فرانس نے اپنے اوپر لے لیا، تھوڑا سا حصہ اسپین کے قبضے میں ہے ۔ اور کچھ انتر قومی علاقہ سمجھا جاتا ہے آج سے ایک پیڑھی پہلے مورکو میں ایک دل کھڑا ہوگیا جو استقلال پارٹی کہلاتا ہے ۔ یہ دل سن ۱۹۱۲ کی سندھی کو رد کرا کر مورکو اور سارے اُتر افریقہ کو بدیسی طاقتوں کے پنجے سے آزاد کرانا چاہتا ہے ۔ پچھلی بڑی جنگ میں متر راشٹروں نے مورکو کے لوگوں کو آزاد کر دینے کا بار بار وعدہ کیا ۔ امریکہ کے پریسیڈنٹ روزولٹ خود مورکو پہونچے اور اُنہوں نے اپنی نجی ذمہ واری پر سلطان سے وعدہ کیا کہ جنگ کے بعد مورکو کو آزاد کر دیا جاویگا ۔ پر وعدہ آج تک پورا نہیں ہوا ۔ موجودہ سلطان جو نام ماتر کا سلطان ہے فرانسیسی ریزیڈنٹ جنرل کے ہاتھ میں کیول ایک کٹھپتلی ہے ۔ فرانس اور امریکہ کی دوستی مورکو میں پوری طرح چمک رہی ہے ۔ اگلی جنگ کی تیاری کیلئے پانچ بڑے بڑے ہوائی جنگی اڈے امریکہ کو دے دیئے گئے ہیں ۔ کہا جاتا ہے کہ یہیں سے سارے یورپ کو کمیونسٹوں سے بچانے کی سب سے اچھی کوششیں کی جانیوالی ہیں ۔ معلوم ہوتا ہے امریکہ اور اسکے ساتھیوں کا اب دنیا میں ایک ہی کام رہ گیا ہے اور وہ ہے دنیا کو کمیونزم سے بچانا ! مورکو نواسیوں میں آزادی کی کوششیں جاری ہیں ۔ کہا جاتا ہے پچھلی

अमरीका और उसके साथियों का अब दुनिया में एक ही काम रह गया है और वह है दुनिया को कम्युनिज़्म से बचाना! मोरक्को निवासियों में आज़ादी की कोशिशें जारी हैं. कहा जाता है पिछली [illegible] क़त्ल किया जा चुका है और इस समय चालीस हज़ार देशभक्त जेलों में पड़े सड़ रहे हैं. उत्तर अफ़रीक़ा की आज़ादी के इस सवाल के ऊपर मिस्र और सारी अरब दुनिया में गहरा असंतोश है. इस्तक़लाल पार्टी के नेता बार बार एलान कर रहे हैं कि इस आन्दोलन का मज़हब से कोई सम्बन्ध नहीं.

यही ज़ुल्म ज़्यादतियाँ आजकल की फ़्रान्त की सरकार इन्डो-चाइना में कर रही है.

इंगलिस्तान

इंगलिस्तान की फ़ौज सारी मिस्री क़ौम की इच्छा के विरुद्ध मिस्र में अड्डा बनाए बैठी है और अभी हाल में अंगरेज़ फ़ील्ड मारशल वाइकाउन्ट मान्टगुमरी जो पिछले युद्ध में उत्तर अफ़रीक़ा के अन्दर बड़े बड़े कारनामे दिखा चुके हैं और जो एटम बम फेंकने के लिये तैयार बैठे हुए जनरल ईसेनहोवर के दाहिने हाथ गिने जाते हैं, ज़बरदस्ती मिस्र पहुँच कर उस देस को अंगरेज़ी फ़ौजी अड्डा बनाकर जम गए हैं. दूसरी तरफ़ नैपाल के गोरखों को इंगलिस्तान की फ़ौज में बनाए रखने, उनकी तादाद बढ़ाने और मलाया जैसे देसों में एशियाई क़ौमों की आज़ादी को कुचलने में उनका उपयोग करने की तजवीज़ें लन्दन से खुले तौर पर एलान की जा रही हैं.

ईरान और इराक़ में वहाँ के तेल के कुओं पर क़ब्ज़ा जमाए रखने की अमरीका और इंगलिस्तान की साज़िशें, वहाँ के लोगों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़, ज़ोरों से जारी हैं और इस सिलसिले में भी इन क़ीमती कुओं के रूस के हाथ में पड़ जाने का डर बराबर दुनिया को दिखाया जा रहा है.

हालैंड

अमरीका, फ़्रान्स और इंगलिस्तान का एक और छुटभइया

ہوتا ہے امریکہ اور اسکے ساتھیوں کا اب دنیا میں ایک ہی کام رہ گیا ہے اور وہ ہے دنیا کو کمیونزم سے بچانا ! مورکو نواسیوں میں آزادی کی کوششیں جاری ہیں . کہا جاتا ہے پچھلی [illegible] قتل کیا جا چکا ہے اور اس سمے چالیس ہزار دیش بھکت جیلوں میں پڑے سڑ رہے ہیں . اتر افریقہ کی آزادی کے اس سوال کے اوپر مصر اور ساری عرب دنیا میں گہرا اسنتوش ہے . استقلال پارٹی کے نیتا بار بار اعلان کر رہے ہیں کہ اس آندولن کا مذہب سے کوئی سمبندھ نہیں .

یہی ظلم زیادتیاں آج کل کی فرانس کی سرکار انڈو چائنا میں کر رہی ہے .

انگلستان

انگلستان کی فوج ساری مصری قوم کی اِچھا کے وِرودھ مصر میں اڈا بنائے بیٹھی ہے اور ابھی حال میں انگریز فیلڈ مارشل وائی کاونٹ مانٹ گمری جو پچھلے یدھ میں اتر افریقہ کے اندر بڑے بڑے کارنامے دکھا چکے ہیں اور جو ایٹم بم پھینکنے کے لئے تیار بیٹھے ہوئے جنرل ایسن ہوور کے داھنے ھاتھ گنے جاتے ہیں، زبردستی مصر پہونچ کر اس دیس کو انگریزی فوجی اڈا بنا کر جم گئے ہیں . دوسری طرف نیپال کے گورکھوں کو انگلستان کی فوج میں بنائے رکھنے، اُن کی تعداد بڑھانے اور ملایا جیسے دیسوں میں ایشیائی قوموں کی آزادی کو کچلنے میں ان کا اُپیوگ کرنے کی تجویزیں لندن سے کھلے طور پر اعلان کی جا رہی ہیں .

ایران اور اعراق میں وہاں کے تیل کے کنؤں پر قبضہ جمائے رکھنے کی امریکہ اور انگلستان کی سازشیں، وہاں کے لوگوں کی مرضی کے خلاف زوروں سے جاری ہیں اور اِس سلسلے میں بھی ان قیمتی کنؤوں کے روس کے ہاتھ میں پڑ جانے کا ڈر برابر دنیا کو دکھایا جا رہا ہے .

ہالینڈ

امریکہ فرانس اور انگلستان کا ایک اور چھوٹ بھیا

साथी हालैंड है जिसके न्यू गाइना पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़े और इंडोनीशिया के ख़िलाफ़ साज़िशों की चरचा बराबर आती रहती है.

यह हैं अमरीका और उसके साथियों के वह कारनामे जिन्हें दुनिया हैरानी के साथ देख रही है.

स्टालिन की बयान

आजकल की अन्तरक़ौमी हालत के जो चित्र समय समय पर अलग अलग देसों के नेताओं की तरफ़ से दुनिया के सामने रखे जारहे हैं उनमें दुनिया के अधिकतर अमन पसन्द, ग़ैर जानिबदार लोगों को स्टालिन के उस बयान में बहुत कुछ सच्चाई दिखाई देती है जो पिछली १६ फ़रवरी को मास्को रेडियो से ब्राडकास्ट हुआ था. इंगलिस्तान के प्रधान वज़ीर एटली ने रूस के ख़िलाफ़ कई तरह की ग़लत बयानियाँ की थीं. उनका तफ़सील के साथ जवाब देने के बाद स्टालिन ने कहा कि:—

"यू.एन. ओ. जो शुरू में अमन बनाए रखने के एक साधन के तौर पर क़ायम हुई थी अब एक नई बड़ी जंग के शुरू कर देने का साधन बनती जारही है.

"यू. एन. ओ. अमरीकी दल के असर में है. अब वह दुनिया की चीज़ नहीं रह गई है बल्कि एक अमरीकी संस्था है जो अमरीका के लिये काम करती है.

"प्रधान वज़ीर एटली अपने को अमन का तरफ़दार कहते हैं. अगर वह सचमुच अमन चाहते हैं तो जिस वक़्त सोवियट यूनियन ने यू. एन. ओ. के सामने यह तजवीज़ रखी थी कि सोवियट यूनियन, बरतानिया, अमरीका, चीन, और फ्रांस के बीच ...

ساتھی هالینڈ هے جس کے نیوگائنا پر زبردستی قبضے اور انڈونیشیا کے خلاف سازشوں کی چرچا برابر آتی رهتی هے .

یه هیں امریکه اور اُسکے ساتھیوں کے وه کارنامے جنھیں دنیا حیرانی کے ساتھ دیکھ رهی هے .

استالن کا بیان

آج کل کی انتر قومی حالت کے جو چتر سمے سمے پر الگ الگ دیسوں کے نیتاؤں کی طرف سے دنیا کے سامنے رکھے جا رهے هیں ان میں دنیا کے ادھک تر امن پسند، غیر جانب‌دار لوگوں کو استالن کے اُس بیان میں بهت کچھ سچائی دکھائی دیتی هے جو پچھلی ١٦ فروری کو ماسکو ریڈیو سے براڈ کاست هوا تھا . انگلستان کے پردھان وزیر ایٹلی نے روس کے خلاف کئی طرح کی غلط بیانیاں کی تھیں . اُن کا تفصیل کے ساتھ جواب دینے کے بعد استالن نے کہا کہ :—

یو . این . او . جو شروع میں امن بنائے رکھنے کے ایک سادھن کے طور پر قائم هوئی تھی اب ایک نئی بڑی جنگ کے شروع کردینے کا سادھن بنتی جا رهی هے .

یو . این . او . امریکی دل کے اثر میں هے . اب وه دنیا کی چیز نهیں ره گئی بلکه ایک امریکی سنستھا هے جو امریکه کے لئے کام کرتی هے .

"پردھان وزیر ایٹلی اپنے کو امن کا طرف‌دار کہتے هیں . اگر وه سچ مچ امن چاهتے هیں تو جس وقت سوویت یونین نے یو . این . او . کے سامنے یه تجویز رکھی تھی کہ سوویت یونین، برطانیه، امریکه، چین اور فرانس کے بیچ ...

“प्रधान वज़ीर एटली अपने को अमन का तरफ़दार कहते हैं. अगर वह सचमुच अमन चाहते हैं तो जिस वक़्त सोवियट यूनियन ने यू. एन. ओ. के सामने यह तजवीज़ रखी थी कि सोवियट यूनियन, बरतानिया, अमरीका, चीन, और फ़्रान्स के बीच ...

एक यह अहदनामा होजावे कि वह अमन क़ायम रखेंगे तो मिस्टर एटली ने उस तजवीज़ को क्यों ठुकरा दिया था ?

“अगर वह सचमुच अमन-की तरफ़ हैं तो उन्होंने सोवियट यूनियन की इन तजवीज़ों को क्यों नामंज़ूर किया था कि सब देस तुरन्त एक साथ अपने अपने हथियार कम करना शुरू करदें और ऐटम बम और दूसरे ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल की तुरन्त मनाही कर दी जावे ?

“मिस्टर ऐटली अपने यहाँ अमन तहरीक चलाने वालों को क्यों सता रहे हैं ? उन्होंने इंगलिस्तान में होने वाली अमन कांगरेस को क्यों रोक दिया ?

“ज़ाहिर है कि प्रधान वज़ीर ऐटली अमन क़ायम करने के पक्ष में नहीं हैं. वह ज़बरदस्ती एक नये संसार व्यापी युद्ध को छेड़ने की फ़िक्र में हैं.

“जहाँ तक सोवियट यूनियन का सम्बन्ध है वह हमेशा अमन क़ायम रखने और युद्ध को रोकने की अपनी नीत पर क़ायम रहेगी.

“अमरीका और इंगलिस्तान के सिपाहियों को भी उन कोरिया वालों से युद्ध करने का विचार, जो अपने देस की रक्षा कर रहे हैं, बहुत नापसन्द है. सिपाहियों को यह विश्वास दिलाना सचमुच कठिन है कि चीन ने ज़्यादती की है, चीन एग्रेसर है और अमरीका और बरतानिया जो फ़ारमूसा को हुड़पे हुए हैं और कोरिया में घुसे हुए हैं अमन के रक्षक हैं.

“उन के लिये यह समझना बहुत कठिन है कि कोरिया और चीन को अपने देस की रक्षा करने का हक़ नहीं है. यही कारन है कि जब सिपाही केवल अनमने दिल से हुकुम की पाबन्दी करने के लिये लड़ रहे हों तो अच्छे से अच्छे जरनैल और अफ़सर भी लड़ाई हार जाते हैं.

اگر وہ سچ مچ امن چاہتے ہیں تو جس وقت سوویٹ یونین نے یو . این . او . کے سامنے یہ تجویز رکھی تھی کہ ...

ایک یہ عہدنامہ ہو جاوے کہ وہ امن قائم رکھینگے تو مسٹر ایٹلی نے اُس تجویز کو کیوں ٹھکرا دیا تھا ؟

”اگر وہ سچ مچ امن کی طرف ہیں تو اُنہوں نے سوویٹ یونین کی اِن تجویزوں کو کیوں نامنظور کیا تھا کہ سب دیس ترنت ایک ساتھ اپنے اپنے ہتھیار کم کرنا شروع کر دیں اور ایٹم بم اور دوسرے ایٹمی ہتھیاروں کے استعمال کی ترنت مناہی کر دی جاوے .

”مسٹر ایٹلی اپنے یہاں امن تحریک چلانے والوں کو کیوں ستا رہے ہیں ؟ اُنہوں نے انگلستان میں ہونے والی امن کانگریس کو کیوں روک دیا ؟

”ظاہر ہے کہ پردھان وزیر ایٹلی امن قائم کرنے کے پکش میں نہیں ہیں . وہ زبردستی ایک نئے سنسار ویاپی یدھ کو چھیڑنے کی فکر میں ہیں .

”جہاں تک سوویٹ یونین کا سمبندھ ہے وہ ہمیشہ امن قائم رکھنے اور یدھ کو روکنے کی اپنی نیت پر قائم رہیگی .

”امریکہ اور انگلستان کے سپاہیوں کو بھی اُن کوریا والوں سے یدھ کرنے کا وچار، جو اپنے دیس کی رکشا کر رہے ہیں، بہت ناپسند ہے . سپاہیوں کو یہ وشواس دلانا سچ مچ کٹھن ہے کہ چین نے زیادتی کی ہے، چین ایگریسر ہے اور امریکہ اور برطانیہ جو فارموسا کو ہڑپے ہوئے ہیں اور کوریا میں گھسے ہوئے ہیں امن کے رکشک ہیں .

”اُنکے لئے یہ سمجھنا بہت کٹھن ہے کہ کوریا اور چین کو اپنے دیس کی رکشا کرنے کا حق نہیں ہے . یہی کارن ہے کہ جب سپاہی کیول اَن‌منے دل سے حکم کی پابندی کرنے کے لئے لڑ رہے ہوں تو اچھے سے اچھے جرنیل اور افسر بھی لڑائی ہار جاتے ہیں .

(۳۸۷)

१२

"यू. एन. ओ. में ज़ोर इन दस देसों का है जो उत्तर एटलांटिक समझौते में हिस्सेदार हैं, यानी अमरीका, बरतानिया, फ्रांस, कनैडा, बेलजियम, हालैंड, लक्सेमबर्ग, डेनमार्क, नारवे और आइसलैंड. लैटिन अमरीका के अन्दर के बीस छोटे छोटे देस इनके साथ हैं. यह सब देस मिल कर दुनिया के अमन या जंग का फ़ैसला करते हैं. इन्हीं ने मिल कर चीन की लोकशाही हुकूमत को एग्रेसर क़रार दे दिया.

"आजकल के यू. एन. ओ. में यह एक अजीब बात है कि अमरीका का एक छोटा सा देस डोमीनीकन रिपब्लिक जिस की आबादी बीस लाख भी नहीं है यू. एन. ओ. में उतना ही वज़न रखता है जितना भारत. और चीन की लोकशाही सरकार की तो वहाँ कोई जगह है ही नहीं.

"इन सब देसों के बड़े बड़े व्योपारी पूँजीपति योरप में या एशिया में कहीं भी नई जंग चाह रहे हैं ताकि जंग के दिनों में वह लड़ने वाले देसों को तरह तरह का माल बेच सकें और इस ख़ून ख़राबे से करोड़ों और अरबों रुपए कमा सकें.

"यू. एन. ओ. की भी, ज़ाहिर है, वही दुर्गत होने वाली है जो लीग आफ़ नेशन्स की हो चुकी है.

"मैं अब भी यह नहीं मानता कि जंग रोकी नहीं जा सकती लेकिन अमरीका, बरतानिया और फ़्रांस के अन्दर इस तरह की ताक़तें काम कर रही हैं जो लड़ाई की प्यासी हैं. यही ताक़तें वहाँ की सरकारों को कठपुतली की तरह नचा रही हैं. पर वह सरकारें अपने अपने यहाँ की जनता से डरती हैं. जनता कहीं भी नया युद्ध नहीं चाहती. वह सब जगह अमन चाहती है.

'इसी लिये यह लोग झूटी बातें उड़ाकर अपने अपने यहाँ की जनता को फँसाना चाहते हैं, अमन पसन्द देसों की अमन पसन्दी को [illegible] बताते हैं और अपने को दुनिया का रक्षक.

''یو . این . او . میں زور اِن دس دیسوں کا ہے جو اُتر اٹلانٹک سمجھوتے میں حصےدار ہیں ' یعنی امریکہ ' برطانیہ ' فرانس ' کنیڈا ' بلجیم ' ہالینڈ ' لکسیمبرگ ' ڈنمارک ' ناروے اور آئس لینڈ . لیٹن امریکہ کے اندر کے بیس چھوٹے چھوٹے دیس ان کے ساتھ ہیں . یہ سب دیس ملکر دنیا کے امن یا جنگ کا فیصلہ کرتے ہیں . انہوں نے ملکر چین کی لوک شاہی حکومت کو ایگریسر قرار دیدیا .

''آجکل کے یو . این . او . میں یہ ایک عجیب بات ہے کہ امریکہ کا ایک چھوٹا سا دیس ڈومینیکن ریپبلک جسکی آبادی بیس لاکھ بھی نہیں ہے یو . این . او . میں اُتنا ہی وزن رکھتا ہے جتنا بھارت . اور چین کی لوک شاہی سرکار کی تو وہاں کوئی جگہ ہے ہی نہیں .

''ان سب دیسوں کے بڑے بڑے بیوپاری پونجی پتی یورپ میں یا ایشیا میں کہیں بھی نئی جنگ چاہ رہے ہیں تاکہ جنگ کے دنوں میں وہ لڑنے والے دیسوں کو طرح طرح کا مال بیچ سکیں اور اس خون خرابے سے کروڑوں اور اربوں روپئے کما سکیں .

''یو . این . او . کی بھی ' ظاہر ہے ' وہی درگت ہونے والی ہے جو لیگ آف نیشنز کی ہو چکی ہے .

'' میں اب بھی یہ نہیں مانتا کہ جنگ روکی نہیں جا سکتی لیکن امریکہ ' برطانیہ اور فرانس کے اندر اسطرح کی طاقتیں کام کر رہی ہیں جو لڑائی کی پیاسی ہیں . یہی طاقتیں وہاں کی سرکاروں کو کٹھ پتلی کی طرح نچا رہی ہیں . پر وہ سرکاریں اپنے اپنے یہاں کی جنتا سے ڈرتی ہیں . جنتا کہیں بھی نیا یدھ نہیں چاہتی . وہ سب جگہ امن چاہتی ہے .''

اسی لئے یہ لوگ جھوٹی باتیں اُڑا کر اپنے اپنے یہاں کی جنتا کو پھنسانا چاہتے ہیں ' امن پسند دیسوں کی امن پسندی کو [illegible]

नहीं चाहती. वह सब जगह अमन चाहती है.

'इसी लिये यह लोग झूटी बातें उड़ाकर अपने अपने यहाँ की जनता को फँसाना चाहते हैं, अमन पसन्द देशों की अमन पसन्दी

چاھتی . وہ سب جگہ امن چاھتی ھے ."

اسی لئے یہ لوگ جھوٹی باتیں اڑا کر اپنے اپنے یہاں کی جنتا کو

"इसी लिये यह लोग अमन की तहरीक से भी डरते हैं.

"इसी लिये यह लोग सोवियट सरकार की इस तरह की सब तजवीज़ों को, जैसे यह कि अमन क़ायम रखने का अहदनामा कर लिया जावे, हथियार कम कर दिये जावें, और एटम बम ऐसी चीज़ों पर रोक लगा दी जावे, ठुकराते रहे हैं.

"अमन पसन्द शक्तियों और इन हमला करने वाली शक्तियों के बीच की इस खींचा तानी का क्या नतीजा होगा कौन जाने."

नतीजा

हम पूरी शक्ति भर अपने देस को इन अलग अलग दलों की खींचातानी से अलग रखना चाहते हैं. हम अमरीका और इंगलिस्तान, रूस और चीन सबका भला चाहते हैं और सबके साथ मित्रता से रहना चाहते हैं. हमें यह भी विश्वास है कि भारत की जनता और भारत सरकार दोनों के इस विशय में एक से और लगभग यही विचार हैं. हमने यह सब केवल यह दिखाने के लिये लिखा है कि हमारी राय में भारत सरकार का दिल्ली पीस कानफ़रेन्स पर इस तरह की रोक थाम लगाना राजकाजी पालिसी या हिकमते अमली की निगाह से चाहे कुछ भी क़ीमत रखता हो पर हक़ीक़त की निगाह से और देस की जनता के भावों के निगाह से ग़लत है.

असली ख़तरा

भारत की और दुनिया की सरकारों को यह बात भी अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि दुनिया की जनता की निगाहों में 'कम्यूनिस्ट ख़तरा' या 'लाल ख़तरा' नाम का इस समय कोई ख़तरा नहीं है. ख़तरा है उन लोगों से जो 'कम्यूनिस्ट ख़तरा' जैसी आवाज़ें उठा कर दुनिया में व्यर्थ का द्वेश बढ़ाते हैं और ख़तरा

"اسی لئے یہ لوگ امن کی تحریک سے بھی ڈرتے ھیں.

"اسی لئے یہ لوگ سوویت سرکار کی اسطرح کی سب تجویزوں کو، جیسے یہ کہ امن قائم رکھنے کا عہدنامہ کر لیا جاوے، ھتھیار کم کر دئے جاویں، اور ایٹم بم ایسی چیزوں پر روک لگا دی جاوے، ٹھکراتے رھے ھیں.

"امن پسند شکتیوں اور ان حملہ کرنے والی شکتیوں کے بیچ کی اس کھینچا تانی کا کیا نتیجہ ھوگا کون جانے ؟"

نتیجہ

ھم پوری شکتی بھر اپنے دیس کو ان الگ الگ دلوں کی کھینچاتانی سے الگ رکھنا چاھتے ھیں . ھم امریکہ اور انگلستان، روس اور چین سب کا بھلا چاھتے ھیں اور سب کے ساتھ مترتا سے رھنا چاھتے ھیں . ھمیں یہ بھی وشواس ھے کہ بھارت کی جنتا اور بھارت سرکار دونوں کے اس وشے میں ایک سے اور لگ بھگ یہی وچار ھیں . ھم نے یہ سب کیول یہ دکھانے کے لئے لکھا ھے کہ ھماری رائے میں بھارت سرکار کا دلی پیس کانفرنس پر اس طرح کی روک تھام لگانا راج کاجی پالیسی یا حکمت عملی کی نگاہ سے چاھے کچھ بھی قیمت رکھتا ھو پر حقیقت کی نگاہ سے اور دیس کی جنتا کے بھاؤں کی نگاہ سے غلط ھے .

اصلی خطرہ

بھارت کی اور دنیا کی سرکاروں کو یہ بات بھی اچھی طرح جان لینا چاھئے کہ دنیا کی جنتا کی نگاھوں میں 'کمیونسٹ خطرہ' یا 'لال خطرہ' نام کا اس سمے کوئی خطرہ نہیں ھے . خطرہ ھے اُن لوگوں سے جو 'کمیونسٹ خطرہ' جیسی آوازیں اُٹھا کر دنیا میں ویرتھ کا دویش بڑھاتے ھیں اور خطرہ

है अमरीका और उसके साथियों की दुनिया भर के कच्चे माल की प्यास से और दूसरे देसों के सर अपने यहाँ के बने माल जबरदस्ती मढ़ने की लालसा से. यह प्यास और यह लालसा ही सारे साम्राजवाद, युद्धों और दुनिया की मुसीबतों की जड़ है.

२०-३-५१ —सुन्दरलाल

सत्याग्रह की गूंज—

खाना और कपड़ा आदमी की दो सबसे बड़ी जरूरतें हैं और इसमें शक नहीं कि इन दोनों की हिन्दुस्तानी जनता को बेहद तकलीफ़ है. खाने के लिये बिहार के ज़िले मानभूम में और सूत के लिये नागपूर में अगर सरकार के ख़िलाफ़ सत्याग्रह उठ खड़ा हुआ तो अचरज नहीं. अचरज हमें यह है कि इन दो तकलीफ़ों को जनता अब तक किस तरह बरदाश्त करती रही.

हमारी पूछ ताछ और हमारी खोज बीन हमें इस नतीजे पर पहुँचाती है कि खाने के सामान की हिन्दुस्तान में इतनी कमी नहीं है जितना उस कमी के बारे में सरकार की तरफ़ से शोर मचाया जाता है. काले बाज़ार और रिशवत ने एक ऐसी हवा पैदा कर दी है कि सरकार को अपने अहलकारों से जो आँकड़े मिलते हैं वह ठीक नहीं होते. इतना ही नहीं वह बहुत हद तक बनावटी और फ़रज़ी होते हैं. और सरकार खाने पीने की चीज़ों के मामले में उन्हीं आँकड़ों पर काम करती और इंतज़ाम की बात सोचती है. इसी बात को हम यों साफ़ कर देना चाहते हैं कि जिस वक़्त बाज़ार में गेहूं का भाव तीन सेर है और सरकार साढ़े तीन सेर का कंट्रोल भाव निकाल कर किसान से ३॥ सेर के भाव खरीदना चाहेगी तब किसान क्यों न अहलकारों को रिशवत देकर अपने यहाँ अनाज के पैदा होने की कमी दिखायगा. बाकी ५०० मन पैदावार को ३०० [illegible]

ہے امریکہ اور اُسکے ساتھیوں کی دنیا بھر کے کچے مال کی پیاس سے اور دوسرے دیسوں کے سر اپنے یہاں کے بنے مال زبردستی موڑھنے کی لالسا سے . یہ پیاس اور یہ لالسا ہی سارے سامراجواد، یدھوں اور اور دنیا کی مصیبتوں کی جڑ ہے .

٢٠-٣-٥١ ——سندرلال

ستیہ گرہ کی گونج——

کھانا اور کپڑا آدمی کی دو سب سے بڑی ضرورتیں ہیں اور اس میں شک نہیں کہ اِن دونوں کی ہندستانی جنتا کو بیحد تکلیف ہے . کھانے کے لئے بہار کے ضلعے مان بھوم میں اور سوت کے لئے ناگپور میں اگر سرکار کے خلاف ستیا گرہ اُٹھ کھڑا ہوا تو اچرج نہیں . اچرج ہمیں یہ ہے کہ اِن دو تکلیفوں کو جنتا اب تک کس طرح برداشت کرتی رہی .

ہماری پوچھ تاچھ اور ہماری کھوج بین ہمیں اس نتیجے پر پہونچاتی ہے کہ کھانے کے سامان کی ہندستان میں اتنی کمی نہیں ہے جتنا اُس کمی کے بارے میں سرکار کی طرف سے شور مچایا جاتا ہے . کالے بازار اور رشوت نے ایک ایسی ہوا پیدا کر دی ہے کہ سرکار کو اپنے اہلکاروں سے جو آنکڑے ملتے ہیں وہ ٹھیک نہیں ہوتے . اتنا ہی نہیں وہ بہت حد تک بناوٹی اور فرضی ہوتے ہیں . اور سرکار کھانے پینے کی چیزوں کے معاملے میں انہیں آنکڑوں پر کام کرتی اور انتظام کی بات سوچتی ہے . اسی بات کو ہم یوں صاف کر دینا چاہتے ہیں کہ جسوقت بازار میں گیہوں کا بھاؤ تین سیر ہے اور سرکار ساڑھے تین سیر کا کنٹرول بھاؤ نکال کر کسان سے ساڑھے تین سیر کے بھاؤ خریدنا چاہے گی تب کسان کیوں نہ اہلکاروں کو رشوت دے کر اپنے یہاں [illegible]

में गेहूं का भाव तीन सेर है और सरकार साढ़े तीन सेर का कंट्रोल
भाव निकाल कर किसान से ३॥ सेर के भाव खरीदना चाहेगी
तब किसान क्यों न अहलकारों को रिशवत देकर अपने यहाँ अनाज

या २५० मन बतलाकर सरकार से छुटकारा हासिल करेगा और बाक़ी माल को बाजार में ३ सेर के भाव बेचकर फ़ायदा उठायेगा और उस फ़ायदे से जो रिशवत दी है उसको पूरा करेगा और बाक़ी को अपने लिये बचा लेगा. इस तरह पैदावार का आँकड़ा ५०० मन के बजाय ३०० या २५० मन रह जायगा और अब जहाँ ५०० मन की जरूरत थी वहाँ २५० मन का आँकड़ा देखकर इंतज़ाम करने वालों में खलबली मचेगी, वह इस कमी का शोर मचायेंगे, बाहर से अनाज मंगाने की कोशिश करेंगे और इस सब का नतीजा बाजार भाव पर पड़ेगा. भाव चढ़ जायगा. भाव चढ़ने से दूकानदार छिपाना शुरू कर देंगे और चोर बाजारी शुरू हो जायगी.

इस तरह के चक्कर से बचने का एक ही तरीक़ा था. कन्ट्रोल का खत्म कर देना और राशन की दुकानों का या तो बिल्कुल न होना या कम से कम उनसे खरीदना जरूरी न होना. एक बार नागपुर में हम यह अपनी आँखों देख चुके हैं. वहाँ राशन की दूकानें भी थीं और बाजार में राशन की चीजों की निजी दूकानें भी थीं. राशन की दूकान से बँधे दर पर माल मिलता था और निजी दूकानों से अपने अपने सुभीते के मुताबिक़ कम ज्यादा दर पर चीजें मिल जाती थीं. अब इस तरह का रिवाज है या नहीं हमें नहीं मालूम. हाँ, कहीं कहीं अपने ढंग का एक नया बेतुकापन जरूर देखने में आया, जैसे कहीं कहीं गेहूँ पर कन्ट्रोल है मगर डबल रोटी चाहे जितनी खरीदिये. बिस्कुट जो गेहूँ के ही बनते हैं उन पर तो कहीं हमने न कन्ट्रोल देखा न कूपन जारी होते सुना.

इस तरह के और कितने ही बेतुकेपन गिनाये जा सकते हैं. पर इस वक़्त तो हम सीधे सत्याग्रह पर बात करेंगे.

मानभूम सत्याग्रह

७१ बरस के बुढ्ढे श्री अतुल चन्द्र घोश अपनी संगिनी को

یا ۲۵۰ من بتلا کر سرکار سے چھٹکارا حاصل کرے گا اور باقی مال کو بازار میں ۳ سیر کے بھاؤ بیچ کر فائدہ اٹھائے گا اور اُس فائدے سے جو رشوت دی ہے اسکو پورا کرے گا اور باقی کو اپنے لئے بچا لے گا ۔ اسطرح پیداوار کا آنکڑا ۵۰۰ من کے بجائے ۳۰۰ یا ۲۵۰ من رہ جائیگا اور اب جہاں ۵۰۰ من کی ضرورت تھی وہاں ۲۵۰ من کا آنکڑا دیکھکر انتظام کرنے والوں میں کھلبلی مچے گی، وہ اس کمی کا شور مچائینگے، باہر سے اناج منگانے کی کوشش کرینگے اور اس سب کا نتیجہ بازار بھاؤ پر پڑیگا ۔ بھاؤ چڑھ جائیگا ۔ بھاؤ چڑھنے سے دوکاندار چھپانا شروع کر دینگے اور چور بازاری شروع ہو جائیگی ۔

اسطرح کے چکر سے بچنے کا ایک ہی طریقہ تھا ۔ کنٹرول کا ختم کر دینا اور راشن کی دوکانوں کا یا تو بالکل نہ ہونا یا کم سے کم اُن سے خریدنا ضروری نہ ہونا ۔ ایک بار ناگپور میں ہم یہ اپنی آنکھوں دیکھ چکے ہیں ۔ وہاں راشن کی دوکانیں بھی تھیں اور بازار میں راشن کی چیزوں کی نجی دوکانیں بھی تھیں ۔ راشن کی دوکان سے بندھے در پر مال ملتا تھا اور نجی دوکانوں سے اپنے اپنے سبھیتے کے مطابق کم زیادہ در پر چیزیں مل جاتی تھیں ۔ اب اسطرح کا رواج ہے یا نہیں ہمیں نہیں معلوم ۔ ہاں کہیں کہیں اپنے ڈھنگ کا ایک نیا بے تکا پن ضرور دیکھنے میں آیا، جیسے کہیں کہیں گیہوں پر کنٹرول ہے مگر ڈبل روٹی چاہے جتنی خریدیئے ۔ بسکٹ جو گیہوں کے ہی بنتے ہیں اُن پر تو کہیں ہم نے نہ کنٹرول دیکھا نہ کوپن جاری ہوتے سنا ۔

اسطرح کے اور کتنے ہی بے تکے پن گنائے جا سکتے ہیں ۔ پر اسوقت تو ہم سیدھے ستیاگرہ پر بات کرینگے ۔

مان بھوم ستیاگرہ

۷۱ برس کے بڈھے شری اتول چندر گھوش اپنی سنگنی کو

लेकर जो सत्याग्रह के मैदान में कूद पड़े हैं, वहाँ हमें न जल्दबाज़ी मालूम होती है, न जोश दिखाई देता है और न नासमझी मिलती है. भोजन सत्याग्रह बहुत दुखी होकर ही उठाया गया है और वह सत्याग्रह की कसौटी पर ठीक भी उतरता मालूम होता है. हमारी राय में जो गाँव अनाज पैदा करता है वह सचाई पर है अगर वह अपनी उस पैदावार को बाहर जाने से रोकता है जिसके बाहर चले जाने से उस गाँव वालों को भूका मरने की नौबत आ जाना मुमकिन है. आज तक के मानभूम सत्याग्रह में सरकार की ओर से कोई रुकावट डालने की बात नहीं सुनी गई. इसलिये हम इस पर इससे ज्यादा और क्या कह सकते हैं कि जो आदमी इस सत्याग्रह के काम में लगे हुए हैं वह सचमुच जी से यही चाहते हैं कि न उनके गाँव वाले भूके मरें और न उनके प्रांत वाले. उन पर प्रान्तपने का भी कोई इलज़ाम नहीं लगाया जा सकता जब तक वह सिर्फ़ यह चाहते हैं कि सरकार अपनी कन्ट्रोल नीत में ऐसा सुधार करे जिससे उनके प्रान्त का कोई आदमी भूका न मर पाये.

नागपुर सत्याग्रह

नागपुर सत्याग्रह अपने क़िस्म का अलग है. वह अभी सत्याग्रह ही नहीं है, वह तो सिर्फ़ सत्याग्रह के लिये उठाया हुआ एक क़दम है. वहाँ के बुनकर इस वजह से बेकार हो गए है कि उन्हें सूत कातने वाली मिलें सूत नहीं दे रहीं हैं और वह सिर्फ़ यही शिकायत लेकर उन आदमियों के पास पहुँचे थे जिन्हें उन्होंने क़ानून बनाने और सरकार चलाने के काम के लिये चुना था. यह दूसरी बात है कि वह ख़ुद पहुँचे थे या पहुँचाये गये थे. ठीक तो यही होता कि वह ख़ुद पहुंचते पर इस लिहाज से कि आजकल की सरकारें ठीक ठीक न समझती हैं और न समझना चाहती हैं कि उनके और [illegible]

لیکر جو ستیا گره کے میدان میں کود پڑے هیں ، وهاں همیں نه جلد بازی معلوم هوتی هے ، نه جوش دکھائی دیتا هے اور نه ناسمجھی ملتی هے . بھوجن ستیا گره بہت دکھی هو کر هی اُٹھایا گیا هے اور وه ستیا گره کی کسوٹی پر ٹھیک بھی اُترتا معلوم هوتا هے . همارى رائے میں جو گاؤں اناج پیدا کرتا هے وه سچائی پر هے اگر وه اپنی اس پیداوار کو باهر جانے سے روکتا هے جسکے باهر چلے جانے سے اُس گاؤں والوں کو بھوکا مرنے کی نوبت آجانا ممکن هے . آج تک کے مان بھوم ستیا گره میں سرکار کی اور سے کوئی رکاوٹ ڈالنے کی بات نهیں سنی گئی . اسلئے هم اِسپر اس سے زیاده اور کیا کہہ سکتے هیں که جو آدمی اس ستیا گره کے کام میں لگے هوئے هیں وه سچ مچ جی سے یهی چاهتے هیں که نه اُنکے گاؤں والے بھوکے مریں نه اُنکے پرانت والے . اُن پر پرانت پنے کا بھی کوئی الزام نهیں لگایا جا سکتا جب تک وه صرف یه چاهتے هیں که سرکار اپنی کنٹرول نیت میں ایسا سدھار کرے جس سے اُنکے پرانت کا کوئی آدمی بھوکا نه مر پائے .

ناگپور ستیا گره

ناگپور ستیا گره اپنے قسم کا الگ هے . وه ابھی ستیا گره هی نهیں هے ، وه تو صرف ستیا گره کے لئے اُٹھایا هوا ایک قدم هے . وهاں کے بنکر اس وجه سے بیکار هو گئے هیں که اُنهیں سوت کاتنے والی ملیں سوت نهیں دے رهے هیں اور وه صرف یهی شکایت لیکر اُن آدمیوں کے پاس پهونچے تھے جنهیں انهوں نے قانون بنانے اور سرکار چلانے کے کام کے لئے چنا تھا . یه دوسری بات هے که وه خود پهونچے تھے یا پهنچائے گئے تھے . ٹھیک تو یهی هوتا که وه خود پهونچتے پر اس لحاظ سے که آجکل کی سرکاریں ٹھیک ٹھیک نه سمجھتی هیں اور نه سمجھنا چاهتی هیں که اُنکے [illegible]

एक धारा सभा के मेम्बर के साथ पहुँचे और ऐसा करके एक तरीक़े से उन्होंने मिनिस्टरों की उस बेजा शान को धक्का पहुँचने से रोक दिया जो उनको अँगरेज़ों से विरासत में मिली है. हम यह समझ ही नहीं पाते कि किसी जिम्मेदार मिनिस्टर का दफ़्तर से बाहर निकल कर श्री कुम्भारे जी से मिलकर क्या बिगड़ता और क्यों शान को बट्टा लगता. आख़िर तो वह अपने साथ काम करने वाले से मिल रहे थे. अगर यू० पी० के प्रधान मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ जी हर मौक़े पर आम आदमियों से मिल लेते हैं तो मध्यप्रान्त के मिनिस्टरों को इतनी झिझक क्यों ? हमारा ख़याल है कि अगर ज़रा भी होशियारी और हमदर्दी से काम लिया गया होता तो यह सत्याग्रह की तरफ़ उठाया हुआ क़दम वहीं का वहीं रुक जाता. किसी भी कानूनी धारा के नाम पर किसी को जेल भेजने का तमाशा सन '२३ के नागपुर के झंडा सत्याग्रह में हम ख़ूब देख चुके हैं और हमें यह भी मालूम है कि नागपुर के उस समय के डिप्टी कमिश्नर के धारा के इस तरह इस्तेमाल करने पर राजाजी ने, जो आजकल दिल्ली में होम मिनिस्टर हैं, ख़ूब मज़ाक उड़ाया था.

इस वक़्त सरकार और सरकारों के ख़िलाफ़ इतनी बुरी हवा फैली हुई है कि श्री कुम्भारे जी ने नागपुर में सत्याग्रह उठाकर, श्री अतुलचन्द्र घोश ने मानभूम ज़िले में सत्याग्रह उठा कर सरकार के हक़ में बहुत बड़ी भलाई की है. इन सत्याग्रहों में लोगों का जोश निकल कर उस बड़ी क्रांति को रोक लेगा जो बहुत दिनों दबे रहकर उसको जन्म दे बैठता. हमारी राय में वह लोग सरकार का भला नहीं कर रहे हैं जो इस वक़्त न तो सत्याग्रह में भाग लेते हैं और न इतना भी कहते हैं कि यह सत्याग्रह सच्चाई पर हैं और ठीक वक़्त से शुरू हुए हैं.

सत्याग्रहियों के प्यासे रखने और प्यासे रहने देने की बात सुनकर तो हमें ऐसा मालूम होता है कि अंगरेज़ी राज के किस्से

ایک دھارا سبھا کے ممبر کے ساتھ پہونچے اور ایسا کرکے ایک طریقے سے انہوں نے منسٹروں کی اس بیجا شان کو دھکا پہونچنے سے روک دیا جو انکو انگریزوں سے وراثت میں ملی ہے ۔ ہم یہ سمجھ ہی نہیں پاتے کہ کسی ذمہ دار منسٹر کا دفتر سے باہر نکل کر شری کمبھارے جی سے مل کر کیا بگڑتا اور کیوں شان کو بٹا لگتا ۔ آخر تو وہ اپنے ساتھ کام کرنے والے سے مل رہے تھے ۔ اگر یو ۔ پی ۔ کے پردھان منتری شری گووند ولبھ جی ہر موقع پر عام آدمیوں سے مل لیتے ہیں تو مدھ پرانت کے منسٹروں کو اتنی جھجھک کیوں ؟ ہمارا خیال ہے کہ اگر ذرا بھی ہوشیاری اور ہمدردی سے کام لیا گیا ہوتا تو یہ ستیا گرہ کی طرف اُٹھایا ہوا قدم وہیں کا وہیں رک جاتا ۔ کسی بھی قانونی دھارا کے نام پر کسی کو جیل بھیجنے کا تماشا سن '۲۳ کے ناگپور کے جھنڈا ستیا گرہ میں ہم خوب دیکھ چکے ہیں اور ہمیں یہ بھی معلوم ہے کہ ناگپور کے اُس سمے کے ڈپٹی کمشنر کے دھارا کے اسطرح استعمال کرنے پر راجا جی نے' جو آجکل دلی میں ہوم منسٹر ہیں' خوب مذاق اُڑایا تھا ۔

اسوقت سرکار اور سرکاروں کے خلاف اتنی بری ہوا پھیلی ہوئی ہے کہ شری کمبھارے جی نے ناگپور میں ستیا گرہ اٹھا کر' شری اتول چندر گھوش نے مان بھوم ضلع میں ستیا گرہ اٹھاکر سرکار کے حق میں بہت بڑی بھلائی کی ہے ۔ ان ستیا گرہوں میں لوگوں کا جوش نکل کر اُس بڑی کرانتی کو روک لے گا جو بہت دنوں دبے رہ کر اسکو جنم دے بیٹھتا ۔ ہماری رائے میں وہ لوگ سرکار کا بھلا نہیں کر رہے ہیں جو اسوقت نہ تو ستیا گرہ میں بھاگ لیتے ہیں اور نہ اتنا بھی کہتے ہیں کہ یہ ستیا گرہ سچائی پر ہیں اور ٹھیک وقت سے شروع ہوئے ہیں ۔

ستیا گرہیوں کے پیاسے رکھنے اور پیاسے رہنے دینے کی بات سنکر تو ہمیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ انگریزی راج کے کسی

ऐब के घेरे से भी अभी हम नहीं निकल पाए हैं. और इसे छोड़िये इस वक़्त तो हम यही चाहते हैं कि काँगरेस इससे सबक़ ले और आगे वह ऐसे मौक़ों के लिये तैयार रहा करे, और ख़ुद बीच में कूद कर भड़की हुई सरकार की भड़क को उस हद तक हरगिज़ न पहुँचने दे जिस हद तक अंगरेज़ी सरकार कुछ देर भी सोचे बिना पहुँच जाया करती थी.

नागपुर के सत्याग्रह से सरकार और सरकारों को यह सबक़ ज़रूर लेना चाहिये कि वह सूत कातने वाली मिलें किस तरह ज़रा सी भूल से या अगर चाहें तो जान बूझकर बुनकरों में बेकारी पैदा करके सरकार के ख़िलाफ़ एक नई आफ़त खड़ी कर सकती हैं. हम तो यही कहेंगे कि मध्यप्रान्त सरकार को बहुत जल्द अपने जेलख़ानों और अपने स्कूलों को सूत कातने के कारख़ानों में बदल देना चाहिये और सूत के मामले में दिल्ली सरकार की उँगली पकड़कर चलना छोड़ देना चाहिये.

श्री रुईकर जी की कही हुई बात से हमें ऐसी गंध आती है कि सत्याग्रह की जड़ में सच्चाई के साथ साथ चुनाव की चालाकी भी है. तब तो हम यही सलाह देंगे कि उस चुनाव चालाकी को वहाँ से बिल्कुल दूर कर देने से ही सब का भला होगा.

हम नागपुर रहे हैं और वहाँ के १४ बरस के तजुरबे के बलपर यह कह सकते हैं कि नागपुर के बुनकर ख़ास तौर से और और लोग आम तौर से ठीक ठीक सत्याग्रह करना जानते हैं. और उनसे ऐसी भूल बहुत कम ही होती है जो सरकार में भड़क पैदा कर सके, इसलिये हम मध्यप्रान्त की सरकार से चाहेंगे कि वह बेमतलब की शान को फेंककर उनकी शिकायत को सुन ले और जल्दी से जल्दी उस शिकायत को दूर करने की कोशिश करे.

عیب کے گھیرے سے بھی ابھی ہم نہیں نکل پائے ہیں. اور اسے چھوڑئیے اِسوقت تو ہم یہی چاہتے ہیں کہ کانگریس اس سے سبق لے اور آگے وہ ایسے موقعوں کے لئے تیار رہا کرے' اور خود بیچ میں کود کر بھڑکی ہوئی سرکار کی بھڑک کو اُس حد تک ہرگز نہ پہونچنے دے جس حد تک انگریزی سرکار کچھ دیر بھی سوچے بنا پہنچ جایا کرتی تھی.

ناگپور کے ستیاگرہ سے سرکار اور سرکاروں کو یہ سبق ضرور لینا چاہئے کہ وہ سوت کاتنے والی ملیں کسطرح ذرا سی بھول سے یا اگر چاہیں تو جان بوجھ کر بنکروں میں بیکاری پیدا کرکے سرکار کے خلاف ایک نئی آفت کھڑی کر سکتی ہیں. ہم تو یہی کہینگے کہ مدھ پرانت سرکار کو بہت جلد اپنے جیل‌خانوں اور اپنے اسکولوں کو سوت کاتنے کے کارخانوں میں بدل دینا چاہئیے اور سوت کے معاملے میں دلی سرکار کی انگلی پکڑ کر چلنا چھوڑ دینا چاہئیے.

شری روئیکر جی کی کہی ہوئی بات سے ہمیں ایسی گندھ آتی ہے کہ ستیاگرہ کی جڑ میں سچائی کے ساتھ ساتھ چناؤ کی چالاکی بھی ہے. تب تو ہم یہی صلاح دینگے کہ اُس چناؤ چالاکی کو وہاں سے بالکل دور کر دینے سے ہی سب کا بھلا ہوگا.

ہم ناگپور رہے ہیں اور وہاں کے ۱۴ برس کے تجربے کے بل پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ ناگپور کے بنکر خاص طور سے اور اور لوگ عام طور سے ٹھیک ٹھیک ستیاگرہ کرنا جانتے ہیں. اور ان سے ایسی بھول بہت کم ہی ہوتی ہے جو سرکار میں بھڑک پیدا کر سکے' اسلئے ہم مدھ پرانت کی سرکار سے چاہینگے کہ وہ بےمطلب کی شان کو پھینک کر اُنکی شکایت کو سن لے اور جلدی سے جلدی اُس شکایت کو دور کرنے کی کوشش کرے.

दिल्ली सरकार से मिलने पहुँचे हैं इसलिये हमें उम्मीद है कि बुनकरों

कर सके, इसलिये हम मध्यप्रान्त की सरकार से चाहेंगे कि वह बेमतलब की शान को फेंककर उनकी शिकायत को सुन ले और जल्दी से जल्दी इस शिकायत को दूर करने की कोशिश करे.

दिल्ली सरकार से मिलने पहुँचे हैं इसलिये हमें उम्मीद है कि बुनकरों की शिकायत दूर होने में बहुत देर न लगेगी.

२०. ३. ५१ —भगवानदीन

एक नया राष्ट्रीय ख़तरा ?

२७ फ़रवरी को दिल्ली में इन्डियन सेन्ट्रल शुगरकेन कमेटी के सामने ख़ूराक और खेती विभाग के वज़ीर श्री के. एम. मुनशी ने बताया कि—"उत्तर प्रदेश और बिहार के चीनी के कारख़ाने इस समय ख़तरनाक हालत में हैं........चीनी और गुड़ के बीच होड़ (rivalry) लगभग इतनी अधिक बढ़ गई है कि यह एक राष्ट्रीय ख़तरा होगया है. शहरों और गावों के हित एक दूसरे से टकरा रहे हैं.......अगर हमने इसका जल्दी कुछ इलाज न किया तो वह वक़्त आजायगा जब क़ुदरती तौर पर इन इलाक़ों के चीनी के कारख़ानों को दक्खिन की तरफ़ उठा लेजाना पड़ेगा जिससे यह इलाक़े बरबाद हो जाएँगे..........."

चीनी के कारख़ानों को इस ख़तरे से बचाने के लिये कमेटियाँ और सब-कमेटियाँ बन रही हैं और ज़ोरदार तजवीज़ें हो रही हैं.

इस देस के चरखों, करघों और कपड़े की कारीगरी की बरबादी की बाबत आम तौर पर यह कहा जाता है और समझा जाता है कि हाथ के धन्दे मिलों के सामने नहीं ठहर सकते और उन की मौत एक क़ुदरती मौत है. पर हमने लगभग दो सौ बरस के अपने देस के उस इतिहास को ध्यान से पढ़ा है. जिन अन्यायों और

دلی سرکار سے ملنے پہونچے ھیں اس لئے ھمیں اُمید ھے کہ بنکروں کی شکایت دور ھونے میں بہت دیر نہ لگے گی ۔

۲۰-۳-۵۱ —بھگوان دین

ایک نیا راشٹریہ خطرہ

۲۷ فروری کو دلی میں انڈین سنٹرل شوگر کین کمیٹی کے سامنے خوراک اور کھیتی وبھاگ کے وزیر شری کے ۔ ایم ۔ منشی نے بتایا کہ—"اُتر پردیش اور بہار کے چینی کے کارخانے اس سمے خطرناک حالت میں ھیں........چینی اور گڑ کے بیچ ھوڑ (rivalry) لگ بھگ اتنی آدھک بڑھ گئی ھے کہ یہ ایک راشٹریہ خطرہ ھوگیا ھے ۔ شہروں اور گانوں کے ھت ایک دوسرے سے ٹکرا رھے ھیں......اگر ھم نے اِسکا جلدی کچھ علاج نہ کیا تو وہ وقت آجاویگا جب قدرتی طور پر ان علاقوں کے چینی کے کارخانوں کو دکھن کی طرف اُٹھا لیجانا پڑیگا جس سے یہ علاقے برباد ھوجائینگے..."

چینی کے کارخانوں کو اس خطرہ سے بچانے کے لئے کمیٹیاں اور سب کمیٹیاں بن رھی ھیں اور زوردار تجویزیں ھو رھی ھیں ۔

اس دیس کے چرخوں' کرگھوں اور کپڑے کی کاریگری کی بربادی کی بابت عام طور پر یہ کہا جاتا ھے اور سمجھا جاتا ھے کہ ھاتھ کے دھندے ملوں کے سامنے نہیں ٹھہر سکتے اور اُن کی موت ایک قدرتی موت ھے ۔ پر ھم نے لگ بھگ دو سو برس کے اپنے دیس کے اُس اتہاس کو دھیان سے پڑھا ھے ۔ جن انیایوں اور

राजकाजी चालों से उस समय हमारे वह धन्दे ख़तम किये गए उन की तफ़सील में यहाँ जाने की ज़रूरत नहीं. उस सारे दुख भरे इतिहास का निचोड़ बयान करते हुए इतिहास लेखक विलसन लिखता है कि—"बिदेसी कारख़ाने वालों ने अपने मुक़ाबले के एक ऐसे कारीगर को दबाकर रखने और आख़िर में उसका गला घोट देने के लिये, जिस के साथ वह बराबरी की शर्तों पर मुक़ाबला न कर सकते थे, राजकाजी अन्याय के हथियार से काम लिया......अगर यह न किया गया होता तो पेज़ली और मैनचेस्टर के पुतली घर खुलते ही बन्द हो गए होते और फिर भाप की ताक़त से भी दोबारा न चलाये जा सकते."

हमारे हाथ के कपड़े के धन्दे की बरबादी ने हमारे गाँवों और उन में रहने वाली अस्सी फ़ी सदी जनता की तीन चौथाई जान निकाल ली. उसी से मिलती जुलती आफ़त अब हमारे गन्ने की खेती और गुड़ के धन्दे पर आ रही है. श्री के० एम० मुनशी के अनुसार गाँव के गुड़ बनाने वाले कोल्हुओं और चीनी के बड़े बड़े धुवाँ उगलने वाले कारख़ानों में एक होड़ है जिसमें श्री के० एम० मुनशी को एक "राष्ट्रीय ख़तरा" दिखाई पड़ता है. कोल्हू ग़रीब देहातियों के हैं और कारख़ाने बड़े बड़े पूँजीपतियों के. कोल्हू अधिकतर रस और गुड़ पैदा करते हैं जो ग़रीबों को सहारा और सुख देता है. मिल की सफ़ैद चीनी अधिकतर शहर वालों और पैसे वालों के काम आती है. चीनी के कारख़ानों की अधिकतर आमदनी बड़े बड़े पूँजीपतियों की जेबों में जाती है. गुड़ के धन्दे की सारी आमदनी ग़रीब गाँव वालों

راج کاجی چالوں سے اُس سمے ھمارے وہ دھندے ختم کئے گئے اُن کی تفصیل میں یہاں جانے کی ضرورت نہیں. اُس سارے دکھ بھرے اتہاس کا نچوڑ بیان کرتے ھوئے اتہاس لیکھک ولسن لکھتا ھے کہ —"بدیسی کارخانے والوں نے اپنے مقابلے کے ایک ایسے کاریگر کو دبا کر رکھنے اور آخر میں اس کا گلا گھونٹ دینے کیلئے، جسکے ساتھ وہ برابری کی شرطوں پر مقابلہ نہ کر سکتے تھے، راج کاجی انیائے کے ھتھیار سے کام لیا......اگر یہ نہ کیا گیا ھوتا تو پیز لی اور مینچسٹر کے پتلی گھر کھلتے ھی بند ھوگئے ھوتے اور پھر بھاپ کی طاقت سے بھی دوبارہ نہ چلائے جاسکتے."

ھمارے ھاتھ کے کپڑے کے دھندے کی بربادی نے ھمارے گانوں اور ان میں رھنے والی اسی فیصدی جنتا کی تین چوتھائی جان نکال لی. اُسی سے ملتی جلتی آفت اب ھمارے گنے کی کھیتی اور گڑ کے دھندے پر آرھی ھے. شری کے. ایم. منشی کے انوسار گانوں کے گڑ بنانے والے کولھوؤں اور چینی کے بڑے بڑے دھواں اگلنے والے کارخانوں میں ایک ھوڑ ھے جسمیں شری کے. ایم. منشی کو ایک "راشٹریہ خطرہ" دکھائی پڑتا ھے. کولھو غریب دیہاتیوں کے ھیں اور کارخانے بڑے بڑے پونجی پتیوں کے. کولھو ادھک تر رس اور گڑ پیدا کرتے ھیں جو غریبوں کو سہارا اور سکھ دیتا ھے. مل کی سفید چینی ادھک تر شہر والوں اور پیسے والوں کے کام آتی ھے. چینی کے کارخانوں کی ادھک تر آمدنی بڑے بڑے پونجی پتیوں کی جیبوں میں جاتی ھے. گڑ کے دھندے کی ساری آمدنی غریب گانوں

सफ़ेद चीनी अधिकतर शहर वालों और पैसे वालों के काम आती है. चीनी के कारख़ानों की अधिकतर आमदनी बड़े बड़े पूँजीपतियों की जेबों में जाती है. गुड़ के धन्दे की सारी आमदनी ग़रीब गाँव वालों

इंगलिस्तान की बनी मशीनों और कैमीकल के सहारे चलते हैं. कोल्हू और ख़ासकर लकड़ी के कोल्हू अधिकतर गाँव में ही तैयार हो जाते हैं. फिर भी श्री के० एम० मुनशी को इस होड़ में एक "राष्ट्रीय ख़तरा'' दिखाई देता है—क्योंकि उनका "राष्ट्र'' अमीरों और शहर वालों का ही राष्ट्र है. गाँव और गाँव वाले केवल शहरों और शहर वालों को ज़िन्दा रखने और उनके ऐश आराम को बनाए रखने के साधन हैं !

पिछले दिनों कोल्हुओं पर कुछ रोक थाम लगाई गई थी. कुछ समझदार लोगों के शोर मचाने पर वह रोक थाम हटी या कुछ कम हुई. अब फिर नई नई तजवीज़ें की जा रही हैं. श्री के० एम० मुनशी के बयान से ज़ाहिर है कि अगर सरकार ख़ास तौर पर एक फ़रीक़ को मदद न दे और गाँव और शहरों के बीच की इस "होड़'' को क़ुदरती तौर पर अपना निपटारा कर लेने दे तो बड़े से बड़े कारख़ानों की भाप और बिजली और बड़े से बड़े पूँजीपतियों की थैलियाँ हमारे कोल्हुओं और गुड़ के धन्दे को मिटा नहीं सकतीं. पर बात साफ़ दिखाई दे रही है. देस के पूँजीपति और कुछ सरकारी लोग मिल कर—और ज़ाहिर है. बिदेसों के उन पूँजीपतियों का भी इसमें हाथ है जिन की बनाई मशीनों और जिन के कैमीकल्स से यह चीनी के कारख़ाने चलते हैं—गुड़, कोल्हू और हमारे देहातों की रही सही ज़िन्दगी को ख़तम करने के चक्कर में हैं.

१९४७ में एक बार जब भारत के कुछ पूँजीपति अमरीका और इंगलिस्तान डेपूटेशन ले कर गए थे तो गांधी जी ने 'हरिजन' में बहुत

انگلستان کی بنی مشینوں اور کیمیکل کے سہارے چلتے ہیں. کولہو اور خاصکر لکڑی کے کولہو ادھکتر گانوں میں ہی تیار ہوجاتے ہیں. پھر بھی شری کے. ایم. منشی کو اس ہوڑ میں ایک ''راشٹریہ خطرہ'' دکھائی دیتا ہے—کیونکہ اُن کا ''راشٹر'' امیروں اور شہر والوں کا ہی راشٹر ہے. گانوں اور گانوں والے کیول شہروں اور شہر والوں کو زندہ رکھنے اور انکے عیش آرام کو بنائے رکھنے کے سادھن ہیں !

پچھلے دنوں کولہوں پر کچھ روک تھام لگائی گئی تھی. کچھ سمجھدار لوگوں کے شور مچانے پر وہ روک تھام ہٹی یا کچھ کم ہوئی. اب پھر نئی نئی تجویزیں کی جارہی ہیں. شری کے. ایم. منشی کے بیان سے ظاہر ہے کہ اگر سرکار خاص طور پر ایک فریق کو مدد نہ دے اور گانوں اور شہروں کے بیچ کی اُس ''ہوڑ'' کو قدرتی طور پر اپنا نپٹارا کر لینے دے تو بڑے سے بڑے کارخانوں کی بھاپ اور بجلی اور بڑے سے بڑے پونجی پتیوں کی تھیلیاں ہمارے کولہوؤں اور گڑ کے دھندے کو مٹا نہیں سکتیں. پر بات صاف دکھائی دے رہی ہے. دیس کے پونجی پتی اور کچھ سرکاری لوگ ملکر—اور ظاہر ہے' بدیسوں کے اُن پونجی پتیوں کا بھی اس میں ہاتھ ہے جنکی بنائی مشینوں اور جنکے کیمیکلس سے یہ چینی کے کارخانے چلتے ہیں—گڑ' کولہو اور ہمارے دیہاتوں کی رہی سہی زندگی کو ختم کرنے کے چکر میں ہیں.

۱۹۴۷ میں ایکبار جب بھارت کے کچھ پونجی پتی امریکہ اور انگلستان ڈیپوٹیشن لیکر گئے تھے تو گاندھی جی نے 'ہریجن' میں بہت

साफ़ साफ़ लिखा था कि इस देस के यह पूंजीपति बिदेसी पूँजीपतियों के साथ मिल कर और हिस्सा बटा कर इस देस को बेचने और यहाँ की करोड़ों जनता को और अधिक चूसने और बरबाद करने की फ़िक्र में हैं. यह आना जाना और चक्कर बराबार जारी है. हमें अधिक दुख इस बात का है कि हमारी राष्ट्रीय सरकारों के कुछ लोग भी जाने या अनजाने इसी चक्कर में लिपटे हुए हैं.

२०-३-५१. —सुन्दरलाल

विनोबा जी की सर्वोदय—यात्रा

बापू के जाने के बाद से हिन्दुस्तान में मानों अँधेरा छा गया है. प्रजा की बे हाली और तकलीफ़ों का कोई ठिकाना नहीं है, हुकूमत से हुकूमत करते नहीं बन रहा है और कम हुक्काम ऐसे बचे हैं जिनका दामन चिट्टा और साफ़ हो. बापू की राह पर चलने वाले भी—रचनात्मक काम करना जिनकी ज़िन्दगी का मक़सद था—भटके से मालूम हो रहे हैं. क्या चर्खा, क्या ग्रामोद्योग, क्या नई तालीम, क्या नशाबन्दी, क्या हिन्दुस्तानी, क्या कोई दूसरा प्रोग्राम —सभी पिछड़े और उखड़े हुए दिखलाई पड़ते हैं. हर किसी पर पैसे का रोब ग़ालिब है और ऐसे ग़ज़ब का उसका असर है, ऐसे क़माल का उसका निज़ाम है कि उसके चंगुल से निकलना नामुम-किन सा लगता है. इसी का नतीजा यह है कि सिरजनहार की बरकत—इनसान जैसी हस्ती की मेहनत की कोई क़ीमत नहीं रह

صاف صاف لکھا تھا کہ اس دیس کے یہ پونجی پتی بدیسی پونجی پتیوں کے ساتھ ملکر اور حصہ بٹا کر اس دیس کو بیچنے اور یہاں کی کروڑوں جنتا کو اور ادھک چوسنے اور برباد کرنے کی فکر میں ھیں . یہ آنا جانا اور چکر برابر جاری ھے . ھمیں ادھک دکھ اس بات کا ھے کہ ھماری راشٹریہ سرکاروں کے کچھ لوگ بھی جانے یا انجانے اسی چکر میں لپٹے ھوئے ھیں .

۲۰-۳-۵۱ — سندر لال

ونوبا جی کی سرووے یاترا

باپو کے جانے کے بعد سے ھندستان میں مانو اندھیرا چھا گیا ھے . پرجا کی بے حالی اور تکلیفوں کا کوئی ٹھکانا نہیں ھے' حکومت سے حکومت کرتے نہیں بن رھا ھے اور کم حکام ایسے بچے ھیں جن کا دامن چٹا اور صاف ھو . باپو کی راہ پر چلنے والے بھی— رچناتمک کام کرنا جنکی زندگی کا مقصد تھا—بھٹکے سے معلوم ھورھے ھیں . کیا چرخہ' کیا گراموديوگ' کیا نئی تعلیم' کیا نشہ بندی' کیا ھندستانی' کیا کوئی دوسرا پروگرام—سبھی پچھڑے اور اُکھڑے ھوئے دکھلائی پڑتے ھیں . ھر کسی پر پیسے کا رعب غالب ھے اور ایسے غضب کا اُسکا اثر ھے' ایسے کمال کا اُسکا نظام ھے کہ اُسکے چنگل سے نکلنا ناممکن سا لگتا ھے . اسی کا نتیجہ یہ ھے کہ سرجن ھار کی برکت— انسان جیسی ھستی کی محنت کی کوئی قیمت نہیں رہ گئی ھے .

क़माल का उसका निज़ाम है कि उसके चंगुल से निकलना नामुम–
किन सा लगता है. इसी का नतीजा यह है कि सिरजनहार की
बरकत—इनसान जैसी हस्ती की मेहनत की कोई क़ीमत नहीं रह

नहीं, अपनी ग़रज़ के लिये ही हर कोई दीवाना दिखलाई पड़ता है. सारा ज़माना उलट गया है. कोई सूरत नज़र नहीं आती, कोई उम्मीद बर नहीं आती.

ऐसा लगता है मानों सब डूब गया हो यानी सर्वास्त हो गया हो. इस अंधेरे-तारीकी में कब तक ज़िन्दा रहा जा सकेगा. ज़रूरत है सर्वोदय के सूरज के निकलने की. बापू ने इसका मंत्र दिया. उनके जाने के बाद उनके बहुत से पैरोकारों ने सेवाग्राम में जमा होकर, विनोबा जी के बताने पर, सर्वोदय समाज क़ायम किया. इस समाज का सालाना सम्मेलन राष्ट्रीय अठवारे में—६ और १३ अप्रैल के बीच—हुआ करता है. सेवाग्राम के बाद यह जलसा राऊ (इन्दौर) में हुआ, फिर अनुगुल (उड़ीसा) में. इस साल यह हैदराबाद (दकन) से चार-पाँच मील दूर शिवरामपल्ली में हो रहा है. ता० ८ मार्च को अपने परमधाम आश्रम से विनोबा जी शिवरामपल्ली के लिये पैदल निकले हैं. शिवरामपल्ली परमधाम से ३०० मील पर है. पैदल जाने का फ़ैसला उन्होंने इस वजह से किया ताकि अपना सर्वोदय संदेश जगह जगह पर आम जनता तक ख़ुद पहुँचा सकें और उससे अपील कर सकें कि गांधी जी की बरसी के मौक़े पर हर आदमी अपने काते सूत की एक गुन्डी लेकर मेले की जगह पर जमा किया करे. यह गुन्डी एक निशानी है श्रम (मेहनत) यज्ञ की यानी मेहनत की क़द्रदानी की, बापू में अपनी श्रद्धा ज़ाहिर करने की, सर्वोदय की ख़ातिर एक अदना कोशिश करने की.

हमें यक़ीन है कि मध्यप्रदेश और हैदराबाद के गाँवों में

ناممکن سا لگتا ہے. اسی کا نتیجہ یہ ہے کہ سرجن ہار کی برکت—
انسان جیسی ہستی کی محنت کی کوئی قیمت نہیں رہ گئی ہے

نہیں، اپنی غرض کیلئے ہی ہر کوئی دیوانہ دکھلائی پڑتا ہے. سارا زمانہ اُلٹ گیا ہے. کوئی صورت نظر نہیں آتی، کوئی اُمید بر نہیں آتی.

ایسا لگتا ہے مانو سب ڈوب گیا ہو یعنی سرواست ہوگیا ہو. اِس اندھیرے-تاریکی میں کب تک زندہ رہا جاسکیگا. ضرورت ہے سرودے کے سورج کے نکلنے کی. باپو نے اِسکا منتر دیا. اُنکے جانے کے بعد اُنکے بہت سے پیروکاروں نے سیواگرام میں جمع ہوکر، ونوبا جی کے بتانے پر، سرودے سماج قائم کیا. اس سماج کا سالانہ سمیلن راشٹریہ اٹھوارے میں—۶ اور ۱۳ اپریل کے بیچ—ہوا کرتا ہے. سیواگرام کے بعد یہ جلسہ راؤ (اندور) میں ہوا، پھر انوگل (اُڑیسہ) میں. اس سال یہ حیدرآباد (دکن) سے چار پانچ میل دور شورام پلی میں ہو رہا ہے. تاریخ ۸ مارچ کو اپنے پرم دھام آشرم سے ونوبا جی شورام پلی کیلئے پیدل نکلے ہیں. شورام پلی پرم دھام سے ۳۰۰ میل پر ہے. پیدل جانے کا فیصلہ اُنھوں نے اس وجہ سے کیا تاکہ اپنا سرودے سندیس جگہ جگہ پر عام جنتا تک خود پہنچا سکیں اور اُس سے اپیل کر سکیں کہ گاندھی جی کی برسی کے موقع پر ہر آدمی اپنے کاتے سوت کی ایک گنڈی لیکر میلے کی جگہ پر جمع کیا کرے. یہ گنڈی ایک نشانی ہے شرم (محنت) یگیہ کی یعنی محنت کی قدر دانی کی، باپو میں اپنی شردھا ظاہر کرنے کی، سرودے کی خاطر ایک ادنیٰ کوشش کرنے کی.

ہمیں یقین ہے کہ مدھیہ پردیش اور حیدرآباد کے گاؤں میں

विनोबा जी की पैदल यात्रा वहाँ के रहने वालों के लिये नसीहत भरी साबित होगी. साथ ही साथ इससे, कुछ सबक़ हमारे रचनात्मक कार्यकर्ता भी सीखेंगे जो रेल के डिब्बे को ही अपना तजुरबा घर बनाए हुए हैं, जो काँगरेस वालों की तरह अपने अपने घरोंदों में गद्दी बना बनाकर जम गये हैं. जिनकी लत स्मारक निधियों के सहारे या सरकारी ग्रान्टों के बल पर संस्थायें चलाने की पड़ गई है, जो खुद कोई जिस्मानी मेहनत नहीं करते जिसकी वजह से एक तरफ़ से तो जनता से सम्पर्क खो बैठे हैं और दूसरी तरफ़ एक दीवार अपने और अपने नीचे काम करने वालों के बीच खड़ी कर ली है. हमें उम्मीद है कि शिवरामपल्ली में जमा होकर वह ज़रा गहराई के साथ गौर करेंगे और विनोबा जी की सरपरस्ती में जनता के ज्यादा निकट लाने वाले रास्ते पर चलना शुरू कर देंगे.

२४-३-१९५१. —सुरेश राम भाई

एक समस्या

मार्च महीने के 'मंगल प्रभात' में सफ़ा ५१ पर रैहाना तैयबजी की तरफ़ से एक समस्या छपी है. रैहाना बहन से हम बड़ौदा में उनके पिता जी के जीते जी मिले हैं, यों उनके स्वभाव से थोड़ी जानकारी है. बस इसी नाते हम समस्या को मार्के को समझते हैं और अपने तजरबे के बल पर उसका जवाब नीचे दर्ज करते हैं.

समस्या का खुलासा यह है—

एक शीरीं बहन हैं जो पारसी हैं. वह विधवा हो जाती हैं और

ونوباجي کی پیدل یاترا وهاں کے رهنے والوں کیلئے نصیحت بھری ثابت هوگی . ساتھ هی ساتھ اِس سے کچھ سبق همارے رچناتمک کاریہ کرتا بھی سیکھینگے جو ریل کے ڈبے کو هي اپنا تجربہ گھر بنائے هوئےهیں' جو کانگریس والوں کی طرح اپنے اپنے گھروندوں میں گدی بنا بنا کر جم گئے هیں' جنکی لت اسمارک ندھیوں کے سہارے یا سرکاری گرانٹوں کے بل پر سنستھائیں چلانے کی پڑ گئی هے' جو خود کوئي جسماني محنت نہیں کرتے جسکی وجه سے ایک طرف سے تو جنتا سے سمپرک کھو بیٹھے هیں اور دوسري طرف ایک دیوار اپنے اور اپنے نیچے کام کرنے والوں کے بیچ کھڑي کر لی هے . همیں اُمید هے که شورام پلی میں جمع هوکر وہ ذرا گہرائی کے ساتھ غور کرینگے اور ونوبا جی کی سرپرستی میں جنتا کے زیادہ نکٹ لانے والے راستے پر چلنا شروع کر دینگے .

٢٤-٣-٥١ —سریش رام بھائی

ایک سمسیا

مارچ مہینے کے ' منگل پربھات ' میں صفحه ٥١ پر ریحانه طیب جی کي طرف سے ایک سمسیا چھپی هے . ریحانه بہن سے هم بڑودہ میں اُنکے پتا جی کے جیتے جی ملے هیں' یوں اُنکے سبھاو سے تھوڑی جان کاري هے . بس اِسي ناتے هم سمسیا کو مارکے کی سمجھتے هیں اور اپنے تجربے کے بل پر اُس کا جواب نیچے درج کرتے هیں .

سمسیا کا خلاصہ یہ هے—

ایک شیریں بہن هیں جو پارسی هیں . وہ ودھوا هوجاتی هیں اور

करते हैं.

समस्या का खुलासा यह है—

एक शीरीं बहन हैं जो पारसी हैं. वह विधवा हो जाती हैं और

अपने गुजारे के लिये कुछ काम करने लगती हैं. अकेलेपन से बचने के लिये अपनी एक सहेली मिसेज़ जोन्स के साथ रहने लगती हैं. मिसेज़ जोन्स ईसाई हैं. मिसेज़ जोन्स भी विधवा हैं. दोनों में खूब प्रेम है. यह प्रेम ११ बरस चलता है. अब शीरीं बहन बाक़ायदा ईसाई धर्म का बपतिस्मा तो नहीं लेतीं पर चाल ढाल, रंग रूप, रस्मरिवाज, पूजा पाठ सभी में ईसाई बन जाती हैं. दोनों कई बार साथ साथ गिरजा जा चुकी हैं. पर एक दिन अचानक मिसेज़ जोन्स शीरीं को डपट कर अपनी मोटर गाड़ी से यह कह कर उतार देती हैं कि वह पारसी हैं इसलिये गिरजा नहीं जा सकतीं. शीरीं बहन उतर जाती हैं. पर बेहद दुख मानती हैं यहाँ तक कि न खाना खाती हैं, न सो पाती हैं, न आँसू रोक पाती हैं और न किसी और तरह चैन पाती हैं. उसके बाद से दोनों की जो एक ही धर्म पर मिल बैठ कर चरचा होती थी बन्द हो जाती है. अब तीन साल होने आते हैं, न भजन होता है न सतसंग, न धर्म सम्बन्धी और कुछ बात. दोनों में प्यार खूब बना हुआ है, अलग होना कोई नहीं चाहता. पर धर्म के मामले में दोनों ऐसे रहती हैं मानो एक दूसरे की सौत हैं.

रैहाना बहन शीरीं बहन की तरफ़ से यह सवाल पूछती हैं कि शीरीं बहन अब क्या करें.

हमारा जवाब—

हर धर्म में यह ताक़त है कि अगर उस पर सच्चे जी से अमल किया जाय तो फिर बहुत ही कम प्रानी ऐसे मिलेंगे जो

کرتے ہیں ۔

سمسیا کا خلاصہ یہ ہے—

ایک شیریں بہن ہیں جو پارسی ہیں۔ وہ ودھوا ہوجاتی ہیں اور

اپنے گزارے کیلئے کچھ کام کرنے لگتی ہیں ۔ اکیلے پن سے بچنے کیلئے اپنی ایک سہیلی مسز جونس کے ساتھ رہنے لگتی ہیں ۔ مسز جونس عیسائی ہیں ۔ مسز جونس بھی ودھوا ہیں ۔ دونوں میں خوب پریم ہے ۔ یہ پریم ۱۱ برس چلتا ہے ۔ اب شیریں بہن باقاعدہ عیسائی دھرم کا بپتسما تو نہیں لیتیں پر چال ڈھال' رنگ روپ' رسم رواج' پوجا پاٹھ سبھی میں عیسائی بن جاتی ہیں۔ دونوں کئی بار ساتھ ساتھ گرجا جاچکی ہیں ۔ پر ایک دن اچانک مسزجونس شیریں کو ڈپٹ کر اپنی موٹر گاڑی سے یہ کہکر اُتار دیتی ہیں کہ وہ پارسی ہیں اسلئے گرجا نہیں جا سکتیں شیریں بہن اُتر جاتی ہیں ۔ پر بے حد دکھ مانتی ہیں یہاں تک کہ نہ کھانا کھاتی ہیں' نہ سو پاتی ہیں' نہ آنسو روک پاتی ہیں اور نہ کسی اور طرح چین پاتی ہیں ۔ اُسکے بعد سے دونوں کی جو ایک ہی دھرم پر مل بیٹھ کر چرچا ہوتی تھی بند ہوجاتی ہے ۔ اب تین سال ہونے آتے ہیں' نہ بھجن ہوتا ہے نہ ست سنگ' نہ دھرم سمبندھی اور کچھ بات ۔ دونوں میں پیار خوب بنا ہوا ہے' الگ ہونا کوئی نہیں چاہتا ۔ پر دھرم کے معاملے میں دونوں ایسے رہتی ہیں مانو ایک دوسرے کی سوت ہیں ۔

ریحانہ بہن شیریں بہن کی طرف سے یہ سوال پوچھتی ہیں کہ شیریں بہن اب کیا کریں ۔

ہمارا جواب—

ہر دھرم میں یہ طاقت ہے کہ اگر اُس پر سچے جی سے عمل کیا جائے تو پھر بہت ہی کم پرانی ایسے ملینگے جو

उस धर्म पर अमल करने वाले की तरफ़ न खिंच सकें और अपना पूरा पूरा प्यार उसे न दे सकें. फिर यह तो हो ही नहीं सकता कि उस धर्मात्मा के सखा या सहेली रूठ बैठें या वह मिलकर भजन पूजन न कर सकें या धर्म चरचा न कर सकें. शीरीं बहन जब जी से ईसाई धर्म को अपना लेंगी तब वह मिसेज़ जोन्स की सौत सी न रहकर सहेली बन जायँगी. कृष्न की गोपियों में सौतिया डाह न था, फिर ईसा की गोपियों में क्यों रहने लगा ?

सच्चे ईसाई बनने से हमारा क्या मतलब है, इसे हम ज़रा साफ़ कर दें. हज़रत ईसा के बाप ईसाई नहीं थे. और हज़रत ईसा न ईसाई पैदा हुए और न ईसाई मरे. वे उस धर्म के धर्मात्मा थे जिस धर्म का धर्म के सिवा और कोई नाम नहीं हो सकता. सच्चे धर्मात्मा होने के नाते वह सभी को प्यारे थे. और क्रूस पर चढ़ाये जाने का हुकम देने वाले जज को और क्रूस पर चढ़ाने वाले को भी वह बेहद प्यारे थे. तभी तो वह क्रूस पर चढ़ कर भी मरे नहीं. हज़रत ईसा सच्चे धर्मात्मा थे इसलिये लोगों ने उन्हीं के नाम पर धर्म का नाम ईसाई धर्म रख दिया जिसका सीधा सादा मतलब यह है कि धर्म पर अमल इस तरह करो जैसे ईसा ने किया. बस, अब हम शीरीं बहन को यही सलाह देते हैं कि वह ईसाई धर्म को इस तरह अपनाएँ कि ईसाई न रह कर सिर्फ़ शीरीं रह जायँ और हमें विश्वास है कि फिर उन्हें मिसेज़ जोन्स से कोई शिकायत न रह जायगी.

२८. ३. ५१ —भगवानदीन

اُس دهرم پر عمل کرنے والے کی طرف نہ کهنچ سکیں اور اپنا پورا پورا پیار اُسے نہ دے سکیں . پهر یہ تو هو هی نہیں سکتا کہ اُس دهرماتما کے سکها یا سہیلی روٹھ بیٹھیں یا وہ ملکر بهجن پوجن نہ کرسکیں یا دهرم چرچا نہ کرسکیں . شیریں بہن جب جی سے عیسائی دهرم کو اپنا لینگی تب وہ مسز جونس کی سوت سی نہ رہ کر سہیلی بن جائیں گی . کرشن کی گوپیوں میں سوتیاڈاہ نہ تها ' پهر عیسیٰ کی گوپیوں میں کیوں رهنے لگا ؟

سچے عیسائی بننے سے همارا کیا مطلب هے ' اِسے هم ذرا صاف کردیں . حضرت عیسیٰ کے باپ عیسائی نہیں تهے . اور حضرت عیسیٰ نہ عیسائی پیدا هوئے اور نہ عیسائی مرے . وہ اُس دهرم کے دهرماتما تهے جس دهرم کا دهرم کے سوا اور کوئی نام نہیں هوسکتا . سچے دهرماتما هونے کے ناتے وہ سبهی کو پیارے تهے . اور کروس پر چڑهائے جانے کا حکم دینے والے جج کو اور کروس پر چڑهانے والے کو بهی وہ بے حد پیارے تهے تبهی تو وہ کروس پر چڑهکر بهی مرے نہیں . حضرت عیسیٰ سچے دهرماتما تهے اِسلئے لوگوں نے اُنهیں کے نام پر دهرم کا نام عیسائی دهرم رکھ دیا جس کا سیدها سادها مطلب یہ هے کہ دهرم پر عمل اس طرح کرو جیسے عیسیٰ نے کیا . بس ' اب هم شیریں بہن کو یہی صلاح دیتے هیں کہ وہ عیسائی دهرم کو اس طرح اپنائیں کہ عیسائی نہ رہ کر صرف شیریں رہ جائیں اور همیں وشواس هے کہ پهر اُنهیں مسز جونس سے کوئی شکایت نہ رہ جائے گی .

۲۸-۳-۵۱ —بهگوان دین

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में

जाय और हम विश्वास है कि फिर उन्हें मिसेज़ जान्स से कोई शिकायत न रह जायगी.

२८. ३. ५२ —भगवानदीन

کسی ان کو ... کوئی شکایت نہ رہ جائے گی۔

۲۸-۳-۵۱ —بھگوان دین

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

२९ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक'लोक सेवक संघ'बना कर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफ़से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देस के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا۔

مہاتما گاندھي کي وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوري سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا۔ اِس ودھان میں اُنہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں۔

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جي کي طرف سے اُسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں۔ یہ چھوٹا سا ودھان دیس کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شري منظر علی سوختہ نے کي ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیس کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵' مٹھی گنج' الہ آباد۔

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔

اُسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اِس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قران کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اس میں قران کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُنھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند'، ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد۔

پنڈت سندرلال کی اور کتابیں:-

सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

हिन्दू मुसलिम एकता— इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़—साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देस पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है— महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़— इस छोटी सी किताब में सन १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—مینیجر 'نیا ھند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

پنڈت سندر لال کی اور کتابیں :—

ھندو مسلم ایکتا— اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق — سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیس پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے— مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق— اس چھوٹی سی کتاب میں ۵۰-۱۹۴۹ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—مینیجر 'نیا ھند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

हिन्द के विधान की अंगरेज़ी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास ज़रूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त— लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद — सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार— लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

ہند کے ودھان کی انگریزی ہندی شبداولی

(انگریزي ناگری لکھاوٹ میں)

ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزي شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے. قیمت دو روپئے.

مسلم دیش بھکت—لیکھک—شري رتن لال بنسل.

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے.

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے.

آج کے شہید—سمپادک — شری رتن لال بنسل.

اِس کتاب میں ان ویروں کي کہانیاں ہیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائي پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کي اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی.

ان بہادروں کي کہانیاں جو فرقہ‌وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے.

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب.

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ.

کسان کی پکار— لیکھک — شري آر. وینکٹ راؤ.

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں، اُن لوگوں کےلئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتي باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں، اور بھارت کے انن سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں. قیمت پانچ آنے.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

(१) एक देसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

یہ کتاب کسانوں کے لئے ھی نہیں، اُن لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ھیں، اور بھارت کے انّ سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ھیں۔ قیمت پانچ آنے۔

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، مسٹر ایس۔ کے۔ رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے –

سندر لال

سکریٹری، ھندستانی کلچر سوسائٹی،
۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ھے۔ "نیا ھند" کے جو گاھک ممبر بننا چاھیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کراسکینگے۔

Registered No. A—210

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १६५० से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आज़ाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता :— मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठी गंज.
इलाहाबाद.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو ۲۶ جنوری سن ۱۹۵۰ سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔

بھارت میں انگریزی راج کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انوادت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھ لے۔

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں۔

آسانی کے لئے کتاب کے آخر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنے کی شبد مالا دے دی گئی ہے۔

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

ملنے کا پتہ — منیجر "نیا ہند"
۱۴۵ مٹھی گنج
الہ آباد

नया हिन्द

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख—

اس نمبر کے خاص لیکھ —

मई सन् १९५१
क़ीमत दस आना

مئی سن 1951
قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद
ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہٰ آباد

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

मई १९५१

क्या किस से

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छे रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने।

मैनेजर "नया हिन्द"

"نیا ھند"

ھندستانی کلچر سوسایٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

مئی 1951

کیا کس سے

قیمت — ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر "نیا ھند"

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द १०　　मई, सन् '५१　　नम्बर ५

جلد ۱۰　　مئی سن ۵۱　　نمبر ۵

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

जब आएगा नया ज़माना

(भाई चरन सरन 'नाज़')

हिमगिरि की दहलेगी छाती, गंगा की पलटेगी धारा
खोली में सर्वोदय होगा, महलों का डूबेगा तारा
नवजीवन का स्रोत बहेगा, दुख का होगा वारा न्यारा

काली काली रात से साथी,
इस रजनी के गात से साथी,
जीत से साथी मात से साथी,

भोर की किरनें फूट रही हैं,
शतरंजी चालें टूट रही हैं,
ज़ुल्म की नब्ज़ें छूट रही हैं.

جب آئیگا نیا زمانہ

(بھائی چرن سرن 'ناز')

ہمگری کی دہلے گی چھاتی، گنگا کی پلٹے گی دھارا
کھولی میں سرودے ہوگا، محلوں کا ڈوبے گا تارا
نوجیون کا سروت بہے گا، دکھ کا ہوگا وارا نیارا

کالی کالی رات سے ساتھی،
اِس رجنی کے گات سے ساتھی،
جیت سے ساتھی مات سے ساتھی،

بھور کی کرنیں پھوٹ رہی ہیں،
شطرنجی چالیں ٹوٹ رہی ہیں،
ظلم کی نبضیں چھوٹ رہی ہیں.

लौ दे उट्ठेंगे ऐ साथी, दामन पर आँसू के धब्बे
कर्म की ऐसी जोत जगेगी, जाग उठेंगे जुग के सपने
धरती ऐसी समतल होगी, मिट जाएँगे ऊँचे नीचे

छतें महल की नीची होंगी,
झोंपड़ियाँ कुछ ऊँची होंगी,
ऊँची नीची एक सी होंगी,

छोटे बड़े बराबर होंगे,
छत्री शूद्र बराबर होंगे,
सभी समान उजागर होंगे.

देवों की भाशा के ऊपर, मानो बानी छा जाएगी
गिट पिट सिट पिट सुनकर जनता, कबतक आखिर भरमाएगी
'ऐन' 'ग़ैन' 'फ़े' 'क़ाफ़' के डर से, कबतक जनता भय खाएगी

खोली की भाशा में साथी,
खेतों की गाथा में साथी,
दलितों की चरचा में साथी,

फिर से वेद रचे जाएँगे,
फिर जिबरील सँदेसे देंगे,
हल, कुदाल के मन्त्र कहेंगे.

तक़दीरें अँगड़ाई लेंगी, मेरी कविता के सरगम से
नव युग का निर्मान करूँगा, अपने आँसू के ऐटम से
सुख का इक संसार रचूँगा, दुख की लय से अपने ग़म से

दुख है सुख का पहला जीना,
एक करूँगा खून पसीना,

لودے اُٹھیں گے اے ساتھی، دامن پر آنسو کے دھبے
کرم کی ایسی جوت جگے گی، جاگ اُٹھینگے جگ کے سپنے
دھرتی ایسی سم تل ہوگی، مٹ جائینگے اونچے نیچے

چھتیں محل کی نیچی ہونگی،
جھونپڑیاں کچھ اونچی ہونگی،
اونچی نیچی ایک سی ہونگی،

چھوٹے بڑے برابر ہوں گے،
چھتری، شودر برابر ہوں گے،
سبھی سمان اُجاگر ہوں گے.

دیووں کی بھاشا کے اوپر، مانو بانی چھا جائے گی
گٹ پٹ سٹ پٹ سنکر جنتا، کب تک آخر بھرمائے گی
ع، غ، ف، ق، کے ڈر سے، کب تک جنتا بھے کھائیگی

کھولی کی بھاشا میں ساتھی،
کھیتوں کی گاتھا میں ساتھی،
دلتوں کی چرچا میں ساتھی،

پھر سے وید رچے جائیں گے،
پھر جبریل سندیسے دیں گے،
ہل، کدال کے منتر کہیں گے.

تقدیریں انگڑائی لیں گی، موری کویتا کے سرگم سے
نویگ کا نرمان کروں گا، اپنے آنسو کے ایٹم سے
سکھ کا اک سنسار رچوں گا، دکھ کی لے سے اپنے غم سے

دکھ ہے سکھ کا پہلا زینہ،
ایک کروں گا خون پسینہ،

सुख का इक संसार रचूँगा, दुख की लय से अपने ग़म से

दुख है सुख का पहला जीना,
एक करूँगा जन पसीना,
[illegible]

मरुथल पर भी सावन होगा,
सुखमय सबका जीवन होगा,
मरुथल भी अब मधुबन होगा.

बादल की बजती है नौबत, प्लावन लेता है अंगड़ाई
सोई उमंगें जाग उठी हैं, आँखें मलती है तरुनाई
राई उठ कर परबत होगी, परबत बन जाएगा राई

पैरों के डगमग में साथी,
दुखती हुई रग रग में साथी,
मानव के हर डग में साथी,

यौवन जादू फूँक रहा है,
जीवन चाबी कूक रहा है,
नाड़ी में बल हूक रहा है.

धरती का उलटेगा आँचल, स्वर्ग का परदा हट जाएगा
जीवन जोत से दमकेगा कन, जुग का अँधेरा छट जाएगा
जुग जुग का संताप ऐ साथी, धीरे धीरे कट जाएगा

धरती के आँचल की ममता,
मानव को देती है समता,
क्या राजा, क्या जोगी रमता,

एक कोख से सब जन्मे हैं,
हम सब इस धरती ही के हैं,
कौन है बैरी ? सभी सगे हैं.

प्लावन = तूफ़ान.

مرو تھل پر بھی ساون ہوگا،
سکھ مے سب کا جیون ہوگا،
مرو تھل بھی اب مدھو بن ہوگا .

بادل کی بجتی ہے نوبت، *پلاون لیتا ہے انگڑائی
سوئی اُمنگیں جاگ اُٹھی ہیں، آنکھیں ملتی ہے ترونائی
رائی اُٹھکر پربت ہوگی، پربت بن جائے گا رائی

پیروں کے ڈگمگ میں ساتھی،
دکھتی ہوئی رگ رگ میں ساتھی،
مانو کے ہر ڈگ میں ساتھی،

یوون جادو پھونک رہا ہے،
جیون چابی کوک رہا ہے،
ناڑی میں بل ہوک رہا ہے .

دھرتی کا اُلٹے گا آنچل، سورگ کا پردہ ہٹ جائے گا
جیون جوت سے دمکے گا کن، جگ کا اندھیرا چھٹ جائیگا
جگ جگ کا سنتاپ اے ساتھی، دھیرے دھیرے کٹ جائیگا.

دھرتی کے آنچل کی ممتا،
مانو کو دیتی ہے سمتا،
کیا راجہ، کیا جوگی رمتا،

ایک کوکھ سے سب جنمے ہیں،
ہم سب اِس دھرتی ہی کے ہیں،
کون ہے بیری؟ سبھی سگے ہیں.

---

*پلاون = طوفان

सर तेज बहादुर सपरू

(भाई नूरी असफ़न्दयारी)

[नई दिल्ली में ईरान के राजदूत जनाब नूरी असफ़न्दयारी ने २० जनवरी सन '५१ को सर तेज बहादुर सपरू के जीवन पर एक तक़रीर की थी. 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों के लिये उनका वह भाशन हम यहाँ छाप रहे हैं. —एडीटर]

सर तेज बहादुर सपरू ईरान की संस्था फ़रहंगिस्तान के एक एसोशियेट मेम्बर थे. उनकी याद में यह जलसा किया गया है. वह हिन्दुस्तान के सब से बुद्धिमान और सब से ऊँचे आदमियों में से एक थे. उनकी कीर्ति और उनकी शोहरत केवल इस उप-महाद्वीप की सीमाओं के अन्दर ही महदूद नहीं थी बल्कि इस मुल्क की जुग़राफ़ियाई सीमाओं से बाहर के कलचरी दायरों में भी उन्होंने बहुत बड़ी इज्ज़त और बहुत बड़ा मान पाया था. उनकी यह इज्ज़त और उनका यह मान उनके विशेश गुनों के कारन, उनके बहुत बड़े तजरबे के कारन और ख़ास कर उनके उस असर के कारन था जिस से दिलों को मिलाने में बड़ी मदद मिलती थी.

भेद भावों के मिटाने में, अलग अलग तरह के लोगों में मेल-मिलाप पैदा करने में और क़ौमी एकता की मिली जुली टिकाऊ बुनियादें डालने में उन्होंने बड़ी क़ीमती सेवाएँ कीं जिस से अपने मुल्क के लोगों में भी उनकी बड़ी इज्ज़त और क़दर हुई.

अफ़सोस आज वह ज़िन्दा नहीं हैं कि अपने मुल्क को आज़ाद देख सकते और महज नेक नियती और इनसानी प्रेम के बल पर [illegible]

سر تیج بہادر سپرو

(بھائی نوری اسفندیاری)

[نئی دلی میں ایران کے راج دوت جناب نوری اسفندیاری نے ۲۰ جنوری سن ۵۱ کو سرتیج بہادر سپرو کے جیون پر ایک تقریر کی تھی. ' نیا ہند ' کے پڑھنے والوں کیلئے اُن کا وہ بھاشن ہم یہاں چھاپ رہے ہیں —اڈیٹر]

سرتیج بہادر سپرو ایران کی سنستھا فرہنگستان کے ایک ایسوشی ایٹ ممبر تھے . اُن کی یاد میں یہ جلسہ کیا گیا ہے . وہ ہندستان کے سب سے بدھی مان اور سب سے اُونچے آدمیوں میں سے ایک تھے . اُن کی کیرتی اور ان کی شہرت کیول اِس اُپ مہادیپ کی سیماؤں کے اندر ہی محدود نہیں تھی بلکہ اِس ملک کی جغرافیائی سیماؤں سے باہر کے کلچری دائروں میں بھی اُنھوں نے بہت بڑی عزت اور بہت بڑا مان پایا تھا . اُن کی یہ عزت اور اُن کا یہ مان اُنکے وشیش گُنوں کے کارن ' اُنکے بہت بڑے تجربہ کے کارن اور خاصکر اُنکے اُس اثر کے کارن تھا جس سے دلوں کو ملانے میں بڑی مدد ملتی تھی .

بھید بھاؤں کے مٹانے میں ' الگ الگ طرح کے لوگوں میں میل ملاپ پیدا کرنے میں اور قومی ایکتا کی ملی جلی ٹکاؤ بنیادیں ڈالنے میں اُنھوں نے بڑی قیمتی سیوائیں کیں جس سے اپنے ملک کے لوگوں میں بھی اُن کی بڑی عزت اور قدر ہوئی .

افسوس آج وہ زندہ نہیں ہیں کہ اپنے ملک کو آزاد دیکھ سکتے اور محض نیک نیتی اور انسانی پریم کے بل پر [illegible]

मुल्क के लोगों में भी उनकी बड़ी इज्जत और क़दर हुई.

अफ़सोस आज वह ज़िन्दा नहीं हैं कि अपने मुल्क को आज़ाद देख सकते और महज़ नेक नियती और इनसानी प्रेम के बल पर ...

कोशिश कर सकते. वह इस बात को जानते थे कि उनके मुल्क की आगे की ख़ुशहाली केवल इस बात पर निर्भर है कि लोग महात्मा गांधी के महान उपदेशों पर अमल करें और आपस के झगड़ों और ना-इत्तफ़ाक़ियों से बचें. मेरे दोस्त मिस्टर अली असग़र हिकमत की रहनुमाई में ईरान का कलचरी मिशन जब हिन्दुस्तान आया था तो इस मुल्क के मुख़तलिफ़ कलचरी मरकज़ों का दौरा करते हुए उसे इस बात का मौक़ा मिला था कि इलाहाबाद में मरहूम सर तेज बहादुर सपरू की विद्वता और विशेशताओं का कुछ परिचय प्राप्त करे. उनकी यह विशेशताएँ सिर्फ़ इल्मी मैदान में ही नहीं बल्कि जीवन के सब मैदानों में थीं. कोई ताज्जुब नहीं कि उस मिशन को जब सर तेज बहादुर के बड़प्पन और उनकी इख़लाक़ी ऊँचाई की आमने सामने जानकारी हुई तो उसने तेहरान लौट कर वहाँ की कलचरी और इल्मी संस्थाओं से इसकी चरचा की.

ईरान की संस्था फ़रहंगिस्तान, ईरान और हिन्दुस्तान के बीच पुराने रिशतों को ज्यादा मजबूत करने और दोनों मुल्कों में कलचरी सम्बन्ध बढ़ाने और इस दोस्त क़ौम के बड़े बड़े विद्वानों का मान करने के लिये हमेशा उत्सुक रहती है. फ़रहंगिस्तान ने सर तेज बहादुर को अपने एसोशियेट मेम्बरों में शामिल करके यह दिखलाया कि प्रेम और भाईचारे के सन्देश को फैलाने की जो कोशिशें सर तेज बहादुर ने की थीं उनकी फ़रहंगिस्तान कितनी क़दर करती है.

मरहूम सर तेज बहादुर सपरू हिन्दुस्तान के उन ग्यारह विद्वानों में से एक थे जो उस संस्था के एसोशियेट मेम्बर बनाए गए. उस मशहूर हस्ती के उठ जाने पर ईरान के तमाम कलचरी दायरों ने बहुत शोक मनाया. हमारे कलचरी कौंसिलर मिस्टर मोहिद उस शोक के वक़्त वहाँ मौजूद थे. वह आप से उसकी चरचा करेंगे.

کوشش کرسکتے ۔ وہ اِس بات کو جانتے تھے کہ اُنکے ملک کی آگے کی خوش حالی کیول اِس بات پر نربھر ھے کہ لوگ مہاتما گاندھی کے مہان اُپدیشوں پر عمل کریں اور آپس کے جھگڑوں اور نااتفاقیوں سے بچیں ۔ میرے دوست مسٹر علی اصغر حکمت کی رھنمائی میں ایران کا کلچری مشن جب ھندستان آیا تھا تو اِس ملک کے مختلف کلچری مرکزوں کا دورہ کرتے ہوئے اُسے اِسبات کا موقع ملا تھا کہ الہ آباد میں مرحوم سرتیج بہادر سپرو کی ودوتا اور وشیشتاؤں کا کچھ پریچے پراپت کرے ۔ اُن کی یہ وشیشتائیں صرف علمی میدان میں ھی نہیں بلکہ جیون کے سب میدانوں میں تھیں ۔ کوئی تعجب نہیں کہ اُس مشن کو جب سرتیج بہادر کے بڑپن اور اُن کی اخلاقی اونچائی کی آمنے سامنے جانکاری ہوئی تو اُسنے طہران لوٹ کر وھاں کی کلچری اور علمی سنستھاؤں سے اِسکی چرچا کی ۔

ایران کی سنستھا فرھنگستان' ایران اور ھندستان کے بیچ پرانے رشتوں کو زیادہ مضبوط کرنے اور دونوں ملکوں میں کلچری سمبندھ بڑھانے اور اِس دوست قوم کے بڑے بڑے ودوانوں کا مان کرنے کے لئے ھمیشہ اُتسک رھتی ھے ۔ فرھنگستان نے سرتیج بہادر کو اپنے ایسوشی ایٹ ممبروں میں شامل کرکے یہ دکھلایا کہ پریم اور بھائی چارے کے سندیش کو پھیلانے کی جو کوششیں سرتیج بہادر نے کی تھیں اُن کی فرھنگستان کتنی قدر کرتی ھے ۔

مرحوم سرتیج بہادر سپرو ھندستان کے اُن گیارہ ودوانوں میں سے ایک تھے جو اُس سنستھا کے ایسوشی ایٹ ممبر بنائے گئے ۔ اُس مشہور ھستی کے اُٹھ جانے پر ایران کے تمام کلچری دائروں نے بہت شوک منایا ۔ ھمارے کلچری کاؤنسلر مسٹر موحد اُس شوک کے وقت وھاں موجود تھے ۔ وہ آپ سے اُس کی چرچا کریں گے ۔

ईरान के लोग जो दिल से यह चाहते हैं कि शान्ति की बुनियादों को मजबूती से क़ायम हुई देखें और जो अपने हिन्दुस्तानी भाइयों की ख़ुशहाली और भलाई चाहते हैं, इनसानी क़ौम के इस तरह के शुभ चिन्तकों का मान और उनकी इज्ज़त करते हैं. वह चाहते हैं कि जो लोग सर तेज के आदर्शों को मानते हैं और हिन्दुस्तान के बड़े नेताओं की बताई राह पर चल कर आगे बढ़ना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सर तेज बहादुर के उन उसूलों पर चलें और उन पर सच्चाई से अमल करें ताकि उनका मुल्क ख़ुशहाल हो और तरक़्क़ी करे.

आज सर तेज का जिस्म हमारे साथ नहीं है लेकिन सचमुच आज़ाद हिन्दुस्तान में उनके आदर्शों की इस सराहना को देखने के लिये इस दोस्ताना जलसे में उनकी नूरानी आत्मा जरूर मौजूद होगी. मुझे इजाज़त दीजिये कि अपनी बात ख़तम करते हुए सात सौ बरस पहले के अपने यहाँ के एक महाकवि का एक शैर आप को याद दिलाऊँ. उन्होंने हमें यह तालीम दी थी कि सारी इनसानी क़ौम मिल कर एक जिस्म है जिसमें सब अलग अलग इनसान उस जिस्म के हाथ पैर और उंगलियों की तरह हैं.

हमारे एक और शायर ने कहा है कि जो आदमी नेक नाम जीता है वह हमेशा जिन्दा रहता है क्योंकि उसके बाद भी उसकी शुभ चरचा उसके नाम को जिन्दा रखती है.

ایران کے لوگ جو دل سے یہ چاهتے هیں کہ شانتی کی بنیادوں کو مضبوطی سے قائم هوئی دیکھیں اور جو اپنے هندستانی بھائیوں کی خوشحالی اور بھلائی چاهتے هیں، انسانی قوم کے اِس طرح کے شبھ چنتکوں کا مان اور اُن کی عزت کرتے هیں . وہ چاهتے هیں کہ جو لوگ سرتیج کے آدرشوں کو مانتے هیں اور هندستان کے بڑے نیتاؤں کی بتائی راہ پر چلکر آگے بڑھنا چاهتے هیں اُنھیں چاهئے کہ سرتیج بہادر کے اُن اصولوں پر چلیں اور اُن پر سچائی سے عمل کریں تاکہ ان کا ملک خوش حال هو اور ترقی کرے .

آج سرتیج کا جسم همارے ساتھ نہیں هے لیکن سچ مچ آزاد هندستان میں اُن کے آدرشوں کی اِس سراهنا کو دیکھنے کے لئے اِس دوستانہ جلسے میں اُنکی نورانی آتما ضرور موجود هوگی . مجھے اجازت دیجئے کہ اپنی بات ختم کرتے هوئے سات سو برس پہلے کے اپنے یہاں کے ایک مہا کوی کا ایک شعر آپکو یاد دلاؤں . اُنھوں نے همیں یہ تعلیم دی تھی کہ ساری انسانی قوم ملکر ایک جسم هے جس میں سب الگ الگ انسان اُس جسم کے هاتھ پیر اور انگلیوں کی طرح هیں .

همارے ایک اور شاعر نے کہا هے کہ جو آدمی نیک نام جیتا هے وہ همیشہ زندہ رهتا هے کیونکہ اُس کے بعد بھی اُس کی شبھ چرچا اُس کے نام کو زندہ رکھتی هے .

अहिंसात्मक इनक़लाब का रास्ता

(एक)

(भाई मंज़र अली सोख़्ता)

[महात्मा गांधी की 'लोक सेवक संघ' की तजवीज़ को सामने रखकर श्री मंज़र अली सोख़्ता ने 'लोक सेवा संघ' की एक योजना देस के सामने रक्खी है. इस पर उन्होंने एक लेख 'नया हिन्द' में छपने के लिये भेजा है. उस लेख का यह पहला हिस्सा है. दूसरा हिस्सा अगले नम्बर में निकलेगा. 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों से हमारी प्रार्थना है कि वह इन लेखों को ध्यान से पढ़ें, इन पर विचार करें और अधिक जानकारी के लिये श्री मंज़र अली सोख़्ता, सेवा कुँज आश्रम, पोस्ट गंगाघाट, उन्नाव, यू. पी. (Unnao, U. P.) से लिखा पढ़ी करें—सुन्दरलाल]

(१)

बापू के जीवन का मिशन मानव समाज में अहिंसा के साधनों और तरीकों की मदद से एक अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा कर देना था. वह यह जानते थे कि टिकाऊ शान्ति और उन्नति हमारे समाज में सिर्फ़ एक ही तरह से हो सकती है कि हम अपने आपस के राजकाजी और आरथिक ब्योहार को सदाचार के उन असूलों पर क़ायम करलें जिन्हें हर इनसान ठीक, अच्छा और ऊँचा मानता है. हज़ारों साल के तजरबे ने इन असूलों के इस पहलू को ठीक साबित कर दिया है.

बापू के रास्ते की सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि जिस युग में वह पैदा हुए उसमें राजकाजी जीवन समाज में ख़ास जगह ले

اهنساتمک انقلاب کا راستہ

(ایک)

(بھائی منظر علی سوختہ)

[مہاتما گاندھی کی 'لوک سیوک سنگھ' کی تجویز کو سامنے رکھکر شری منظر علی سوختہ نے 'لوک سیوا سنگھ' کی ایک یوجنا دیس کے سامنے رکھی ہے . اس پر اُنھوں نے ایک لیکھ 'نیا ہند' میں چھپنے کے لئے بھیجا ہے. اُس لیکھ کا یہ پہلا حصہ ہے . دوسرا حصہ اگلے نمبر میں نکلیگا . 'نیا ہند' کے پڑھنے والوں سے ہماری پرارتھنا ہے کہ وہ اِن لیکھوں کو دھیان سے پڑھیں، اِن پر وچار کریں اور ادھک جان کاری کے لئے شری منظر علی سوختہ، سیوا کنج آشرم، پوسٹ گنگا گھاٹ، اُناؤ . یو . پی . (Unnao U. P.) سے لکھا پڑھی کریں—سندر لال]

(۱)

باپو کے جیون کا مشن مانو سماج میں اهنسا کے سادھنوں اور طریقوں کی مدد سے ایک اهنساتمک انقلاب پیدا کر دینا تھا . وہ یہ جانتے تھے کہ ٹکاؤ شانتی اور اُنتی ہمارے سماج میں صرف ایک ہی طرح سے ہو سکتی ہے کہ ہم اپنے آپس کے راج کاجی اور آرتھک بیوہار کو سدا چار کے اُن اصولوں پر قائم کر لیں جنھیں ہر انسان ٹھیک، اچھا اور اُونچا مانتا ہے . ہزاروں سال کے تجربے نے اِن اصولوں کے اِس پہلو کو ٹھیک ثابت کر دیا ہے .

باپو کے راستے کی سب سے بڑی کٹھنائی یہ تھی کہ جس یگ میں وہ پیدا ہوئے اُسمیں راج کاجی جیون سماج میں خاص جگہ لے

चुका था. हमारी नैतिक (इख़लाक़ी) और आरथिक जिन्दगी को उसने बिलकुल अपने क़ब्ज़े में कर लिया था. ईश्वर, मज़हब, नेकी, बदी, ईमान, धर्म सबकी जगह अपने अपने देस हित के आदर्शों और योजनाओं ने ले ली थी. इस ख़याल का कि सारी दुनिया के इनसान एक कुटुम्ब हैं और एक दूसरे के सगे भाई हैं, बिलकुल ख़ात्मा हो चुका था. जिन धर्मों और मज़हबों का जन्म इन ऊँचे आदर्शों और मक़सदों के पूरा करने के लिये हुआ था वह अपना पुराना रूप रंग और तेज खो चुके थे और बजाय सब इनसानों को एक कुटुम्ब बनाने के उन्हें एक दूसरे से अलग रखने में लोहे की दीवारों का काम कर रहे थे. इसलिये बापू को अपना मिशन पूरा करने में इनमें से किसी से भी कोई ख़ास मदद नहीं मिल सकती थी. इसीलिये उन्होंने इनकी ज़ाहरी और बाहरी बातों की तरफ़ ज़रा भी ध्यान न देकर इनके असली मक़सद और सिद्धान्तों को अपने सामने रक्खा और उन्हीं पर अपने सारे मिशन की बुनियाद डाली.

दक्खिन अफ़रीक़ा की अंगरेज़ी सरकार हिन्दुस्तानियों के साथ क़रीब क़रीब वैसा ही बुरा बरताव कर रही थी जैसा हम अपने से नीची और अछूत जातियों के साथ करते हैं. बापू से यह सहा न गया. उन्होंने वहाँ की सरकार पर अपने अहिंसा के तरीक़ों और योजनाओं से गहरा असर डालकर कुछ सुधार भी हासिल किये. लेकिन इससे उन्हें सन्तोश नहीं हुआ. उन्होंने यह देख लिया कि बिना राजकाजी दबाव के वह अपने देस भाइयों की रक्षा वहाँ की सरकार के अन्यायों और ज़ुल्मों से नहीं कर सकते. एक बार यह यक़ीन हो जाने के बाद उनके लिये दक्खिनी अफ़रीक़ा में आन्दोलन चलाना बेकार हो गया. जब तक हिन्दुस्तानी अपने देस में ख़ुद ग़ुलाम रहेंगे दूसरे देसों का उनके साथ आज़ाद आदमियों का सा बरताव करना नामुमकिन रहेगा. इसलिये हिन्दुस्तान को आज़ाद करने का सवाल बापू के

چکا تھا ۔ ہماری نیتک (اِخلاقی) اور آرتھک زندگی کو اُس نے بالکل اپنے قبضے میں کر لیا تھا ۔ ایشور، مذہب، نیکی، بدی، ایمان، دھرم سب کی جگہ اپنے اپنے دیس ہت کے آدرشوں اور یوجناؤں نے لے لی تھی ۔ اِس خیال کا کہ ساری دنیا کے اِنسان ایک کٹمب ہیں اور ایک دوسرے کے سگے بھائی ہیں، بالکل خاتمہ ہوچکا تھا ۔ جن دھرموں اور مذہبوں کا جنم اِن اُنچے آدرشوں اور مقصدوں کے پورا کرنے کے لئے ہوا تھا وہ اپنا پرانا روپ رنگ اور تیج کھو چکے تھے اور بجائے سب انسانوں کو ایک کٹمب بنانے کے اُنہیں ایک دوسرے سے الگ رکھنے میں لوہے کی دیواروں کا کام کر رہے تھے ۔ اسلئے باپو کو اپنا مشن پورا کرنے میں اِن میں سے کسی سے بھی کوئی خاص مدد نہیں مل سکتی تھی ۔ اِسی لئے اُنھوں نے اِن کی ظاہری اور باہری باتوں کی طرف ذرا بھی دھیان نہ دے کر اُنکے اصلی مقصد اور سدھانتوں کو اپنے سامنے رکھا اور اُنھیں پر اپنے سارے مشن کی بنیاد ڈالی ۔

دکھن افریقہ کی انگریزی سرکار ہندستانیوں کے ساتھ قریب قریب ویسا ہی برا برتاؤ کر رہی تھی جیسا ہم اپنے سے نیچی اور اچھوت جاتیوں کے ساتھ کرتے ہیں ۔ باپو سے یہ سہا نہ گیا ۔ اُنھوں نے وہاں کی سرکار پر اپنے اہنسا کے طریقوں اور یوجناؤں سے گہرا اثر ڈالکر کچھ سدھار بھی حاصل کئے ۔ لیکن اس سے اُنھیں سنتوش نہیں ہوا ۔ اُنھوں نے یہ دیکھ لیا کہ بنا راج کاجی دباو کے وہ اپنے دیس بھائیوں کی رکشا وہاں کی سرکار کے انیایوں اور ظلموں سے نہیں کر سکتے ۔ ایک بار یہ یقین ہوجانے کے بعد اُنکے لئے دکھنی افریقہ میں آندولن چلانا بیکار ہوگیا ۔ جب تک ہندستانی اپنے دیس میں خود غلام رہینگے دوسرے دیسوں کا اُنکے ساتھ آزاد آدمیوں کا سا برتاؤ کرنا ناممکن رہیگا ۔ اس لئے ہندستان کو آزاد کرنے کا

हो गया. जब तक हिन्दुस्तानी अपने देस में खुद गुलाम रहेंगे दूसरे देसों का उनके साथ आजाद आदमियों का सा बरताव करना नामुमकिन रहेगा. इसलिये हिन्दुस्तान को आजाद करने का सवाल बापू के

हिन्दुस्तान आ गए. लेकिन हमें यह सब समझ लेना चाहिये कि देस हित का जो आदर्श, देस पूजा का जो मक़सद इस युग के लोगों के सामने था, बापू उसे अपने सामने रख कर हिन्दुस्तान को आजाद कराना नहीं चाहते थे. वह उस अन्याय और अत्याचार को संसार से मिटाना चाहते थे जो पच्छिमी हुकूमतें हिन्दुस्तान में और दुनिया के दूसरे देसों में कर रही थीं.

हिन्दुस्तान में इंडियन नेशनल कॉंगरेस अंगरेजी राज का मुक़ाबला बापू के आने के लगभग ३० साल पहले से कर रही थी. उसके सामने आजकल के पच्छिमी आदर्श थे, पच्छिमी देस हित का रूप था, पच्छिमी तरीक़े की पार्लीमेन्टरी हुकूमत क़ायम करने को उसने अपना मक़सद बनाया था और इस मक़सद को हासिल करने में वह बिलकुल पच्छिमी तरीक़े अख्तियार कर रही थी जिनका अहिंसा या सदाचार से किसी तरह का कोई वास्ता नहीं था.

तीन साल राजनीत से अलग रह कर बापू ने देस की हालत को समझने की कोशिश की और आखीर में इस नतीजे पर पहुँचे कि उन्हें बिदेसी सरकार से लड़ने में कॉंगरेस का साथ देना चाहिये. वह देखते थे कि कॉंगरेस गहरे से गहरे पच्छिमी रंगों में डूबी हुई है और जो असूल या तरीक़े उन्होंने दक्खिनी अफ़रीक़ा में इस्तेमाल किये थे उनसे इसका जरा भी सम्बन्ध नहीं है और न शायद वह कभी उन्हें अपनाने को तैयार हो.

रौलट एक्ट के आन्दोलन के जमाने में जब बापू ने राजनीत में हिस्सा लेने का फ़ैसला किया तो उन्होंने यह कोशिश की थी कि वह ढाई तीन हजार ऐसे लोगों की फ़ेहरिस्त तैयार करवालें कि जो चाहे कॉंगरेस उनका साथ दे या न दे, हर हालत में उनके आन्दोलन में हिस्सा लेने को तैयार हों. उनका खयाल था कि इतने साथी मिल जावें तो वह ब्रिटिश हुकूमत का कामयाबी के साथ मुक़ाबला कर सकेंगे.

ہندستان آگئے ۔ لیکن ہمیں یہ خوب سمجھ لینا چاہئے کہ دیس ہت کا جو آدرش، دیس پوجا کا جو مقصد اِس یگ کے لوگوں کے سامنے تھا، باپو اُسے اپنے سامنے رکھکر ہندستان کو آزاد کرانا نہیں چاہتے تھے ۔ وہ اُس انیائے اور اَتیاچار کو سنسار سے مٹانا چاہتے تھے جو پچھمی حکومتیں ہندستان میں اور دنیا کے دوسرے دیسوں میں کر رہی تھیں ۔

ہندستان میں انڈین نیشنل کانگریس انگریزی راج کا مقابلہ باپو کے آنے کے لگ بھگ ۳۰ سال پہلے سے کر رہی تھی ۔ اسکے سامنے آجکل کے پچھمی آدرش تھے، پچھمی دیس ہت کا روپ تھا، پچھمی طریقے کی پارلیمنٹری حکومت قائم کرنے کو اُس نے اپنا مقصد بنایا تھا اور اِس مقصد کو حاصل کرنے میں وہ بالکل پچھمی طریقے اختیار کر رہی تھی جنکا اہنسا یا سداچار سے کسی طرح کا کوئی واسطہ نہیں تھا ۔

تین سال راج نیت سے الگ رہ کر باپو نے دیس کی حالت کو سمجھنے کی کوشش کی اور آخیر میں اس نتیجے پر پہونچے کہ اُنھیں بدیسی سرکار سے لڑنے میں کانگریس کا ساتھ دینا چاہئے ۔ وہ دیکھتے تھے کہ کانگریس گہرے سے گہرے پچھمی رنگوں میں ڈوبی ہوئی ہے اور جو اصول یا طریقے اُنھوں نے دکھنی افریقہ میں استعمال کئے تھے اُن سے اِس کا ذرا بھی سمبندھ نہیں ہے اور نہ شاید وہ کبھی اُنھیں اپنانے کو تیار ہو ۔

رولٹ ایکٹ کے آندولن کے زمانے میں جب باپو نے راج نیت میں حصہ لینے کا فیصلہ کیا تو اُنھوں نے یہ کوشش کی تھی کہ وہ ڈھائی تین ہزار ایسے لوگوں کی فہرست تیار کروا لیں کہ جو چاہے کانگریس اُن کا ساتھ دے یا نہ دے، ہر حالت میں اُنکے اندولن میں حصہ لینے کو تیار ہوں ۔ اُن کا خیال تھا کہ اتنے ساتھی مل جاویں تو وہ برٹش حکومت کا کامیابی کے ساتھ مقابلہ کر سکینگے ۔

तैयार करने पड़े, इन काजकर्ताओं से वह हमेशा काँगरेस की पार्टीबन्दियों और राजकाजी दायरों की गंदी खींचातानी से बाहर रख कर काम लेना चाहते थे. काँगरेस की हालत को देखकर उन्हें यह यक़ीन हो गया था कि आख़ीर में काँगरेस के ज़रिये अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा नहीं किया जा सकेगा और अपने इस मिशन को पूरा करने के लिये उन्हें अपनी इसी रिज़र्व सेना से काम लेना होगा. बापू का यह ख़याल बराबर मज़बूत होता गया इस तरह बापू के और काँगरेस के बीच की खाई बराबर गहरी और चौड़ी होती गई. बापू का असर काँगरेस पर बराबर घटता गया यहाँ तक कि एक दिन वह आया कि बापू का काँगरेस के अन्दर रहना भी मुमकिन न रह गया.

बापू काँगरेस में इस शर्त पर शामिल हुए थे कि काँगरेस "जायज़ और शान्तिमय साधनों" का इस्तेमाल करना अपना मक़सद बना लेगी. उनके कहने से इस मक़सद को काँगरेस ने अपने विधान में शामिल कर लिया था. सन ३० और ३२ के आन्दोलनों में काँगरेस ने बहुत सी बातें ऐसी कीं जिन्हें बापू नाजायज़ और हिंसा समझते थे. इस पर बापू में और काँगरेस के लीडरों में गहरा मतभेद हो गया. इन लीडरों का यह कहना था कि लूटमार, क़त्ल और ख़ून को छोड़ कर और जितनी बातें और कोशिशें देस हित के लिये की जाँय वह सब 'जायज़' शब्द में आती हैं चाहे बापू इनके मानी कुछ भी समझें. बापू कहते थे कि काँगरेस विधान में जायज़ (लेजिटिमेट) और शान्तिमय (पीसफ़ुल) यह दोनों शब्द मैंने ही सत्य और अहिंसा के मानी में जुड़वाए हैं कि जिसमें आम लोग इसे समझ सकें. अब साफ़ ज़ाहिर हो गया है कि इन शब्दों से भ्रम पैदा हो सकता है. इसीलिये इन शब्दों का यह मतलब साफ़ कर देना चाहिये. आख़िर को यह बात बम्बई में आल इंडिया काँग्रेस कमेटी के सामने आई. कमेटी ने बापू की बात [illegible]

تیار کرنے پڑے ۔ اِن کاج کرتاؤں سے وہ ہمیشہ کانگریس کی پارٹی بندیوں اور راج کاجی دائروں کی گندی کھینچا تانی سے باہر رکھکر کام لینا چاہتے تھے ۔ کانگریس کی حالت کو دیکھکر اُنھیں یہ یقین ہوگیا تھا کہ آخیر میں کانگریس کے ذریعے اہنساتمک انقلاب پیدا نہیں کیا جاسکیگا اور اپنے اس مشن کو پورا کرنے کیلئے اُنھیں اپنی اِسی رزرو سینا سے کام لینا ہوگا ۔ باپو کا یہ خیال برابر مضبوط ہوتا گیا ۔ اسطرح باپو کے اور کانگریس کے بیچ کی کھائی برابر گہری اور چوڑی ہوتی گئی ۔ باپو کا اثر کانگریس پر برابر گھٹتا گیا یہاں تک کہ ایک دن وہ آیا کہ باپو کا کانگریس کے اندر رہنا بھی ممکن نہ رہ گیا ۔

باپو کانگریس میں اِس شرط پر شامل ہوئے تھے کہ کانگریس " جائز اور شانتی مے سادھنوں " کا استعمال کرنا اپنا مقصد بنالے گی ۔ اُنکے کہنے سے اِس مقصد کو کانگریس نے اپنے ودھان میں شامل کر لیا تھا ۔ سن ۳۰ اور ۳۲ کے آندولنوں میں کانگریس نے بہت سی باتیں ایسی کیں جنھیں باپو ناجائز اور ہنسا سمجھتے تھے ۔ اس پر باپو میں اور کانگریس کے لیڈروں میں گہرا مت بھید ہوگیا ۔ اِن لیڈروں کا یہ کہنا تھا کہ لوٹ مار، قتل اور خون کو چھوڑ کر اور جتنی باتیں اور کوششیں دیس ہت کیلئے کی جائیں وہ سب ' جائز ' شبد میں آتی ہیں چاہے باپو اِسکے معنی کچھ بھی سمجھیں ۔ باپو کہتے تھے کہ کانگریس ودھان میں جائز (لے جیٹیمیٹ) اور شانتی مے (پیس فل) یہ دونوں شبد میں نے ہی ستیہ اور اہنسا کے معنی میں جڑ وائے ہیں کہ جس میں عام لوگ اِسے سمجھ سکیں ۔ اَب صاف ظاہر ہوگیا ہے کہ اِن شبدوں سے بھرم پیدا ہوسکتا ہے ۔ اِسلئے اِن شبدوں کا یہ مطلب صاف کردینا چاہئے ۔ آخر کو یہ بات بمبئی میں آل انڈیا [illegible]

जिसमें आम लोग इसे समझ सकें. अब साफ़ ज़ाहिर हो गया है कि इन शब्दों से भ्रम पैदा हो सकता है. इसीलिये इन शब्दों का यह मतलब साफ़ कर देना चाहिये. आखिर को यह बात बम्बई में ... इंडिया काँगरेस कमेटी के सामने आई. ... कमेटी ने बापू की बात

को नहीं माना और काँगरेस के मक़सद को वैसा ही रहने दिया. आख़िर इसी बिना बापू को काँगरेस की चार आने वाली मेम्बरी तक से इस्तीफ़ा देना पड़ा. काँगरेस के मेम्बर न होते हुए भी बापू बराबर काँगरेस की रहनुमाई करते रहे. उन्होंने कोई दूसरा दल नहीं बनाया और न अपने रचनात्मक काजकर्ताओं को काँगरेस संगठन से अलग किया. कारन यह था कि अगर रचनात्मक काजकर्ता काँगरेस से अलग हो जाते तो काँगरेस फिर से हिंसात्मक रास्तों को अख़्तियार करने पर लाचार हो जाती. दूसरे बापू का एक नया दल बना लेना देस की मिलीजुली शक्ति के टुकड़े कर देता. इससे काँगरेस कमज़ोर पड़ जाती और बिदेसी हकूमत की देस को नुक़सान पहुंचाने की और देस पर अपना क़ब्ज़ा क़ायम रखने की ताक़त बहुत बढ़ जाती. इस सबसे बापू के अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा करने के मिशन को बहुत बड़ा नुक़सान पहुँच सकता था. इसलिये उन्होंने आखिर दम तक कोई दल अपना अलग नहीं बनाया और गहरे से गहरे मतभेद होते हुए भी बिदेसी हुकूमत के खिलाफ़ काँगरेस का साथ देते रहे.

काँगरेस ने इससे पूरा फ़ायदा उठाया. काँगरेस के वह नेता जो बापू के आदर्शों, साधनों और योजनाओं को कोरा आदर्शवाद और अव्योहारिक समझते थे, यानी यह मानते थे कि यह केवल कहने की बातें हैं करने धरने की नहीं, जनता के सामने बापू की और उनके साधनों, व योजनाओं की इतनी तारीफ़ें करते थे कि जनता को यह शुबह ही नहीं हो सकता था कि इनमें और बापू में कितना गहरा मतभेद है और यह अपनी सारी ताक़त देस को उन रास्तों की तरफ़ ले जाने में लगा रहे हैं जो बापू को नापसन्द हैं और जिन्हें बापू देस के लिये घातक समझते हैं. जनता बापू की शक्ति को अपार मानती थी और समझती थी कि उनकी मर्ज़ी के खिलाफ़

میں عام لوگ اسے سمجھ سکیں . آب صاف ظاہر ہوگیا ہے کہ ان شبدوں سے بھرم پیدا ہوسکتا ہے . اسلئے ان شبدوں کا یہ مطلب صاف کردینا چاہئے . آخر کو یہ بات بمبئی میں آل انڈیا ...

کو نہیں مانا اور کانگریس کے مقصد کو ویسا ہی رہنے دیا . آخر اسی بنا پر باپو کو کانگریس کی چار آنے والی ممبری تک سے استعفا دینا پڑا. کانگریس کے ممبر نہ ہوتے ہوئے بھی باپو برابر کانگریس کی رہنمائی کرتے رہے . انہوں نے کوئی دوسرا دل نہیں بنایا اور نہ اپنے رچناتمک کاج کرتاؤں کو کانگریس سنگٹھن سے الگ کیا. کارن یہ تھا کہ اگر رچناتمک کاج کرتا کانگریس سے الگ ہوجاتے تو کانگریس پھر سے ہنساتمک راستوں کو اختیار کرنے پر لاچار ہوجاتی . دوسرے باپو کا ایک نیا دل بنا لینا دیس کی ملی جلی شکتی کے ٹکڑے کر دیتا . اس سے کانگریس کمزور پڑجاتی اور بدیسی حکومت کی دیس کو نقصان پہونچانے کی اور دیس پر اپنا قبضہ قائم رکھنے کی طاقت بہت بڑھ جاتی . اس سب سے باپو کے اہنساتمک انقلاب پیدا کرنے کے مشن کو بہت بڑا نقصان پہونچ سکتا تھا . اسلئے انہوں نے آخر دم تک کوئی دل اپنا الگ نہیں بنایا اور گہرے سے گہرے مت بھید ہوتے ہوئے بھی بدیسی حکومت کے خلاف کانگریس کا ساتھ دیتے رہے .

کانگریس نے اس سے پورا فائدہ اٹھایا . کانگریس کے وہ نیتا جو باپو کے آدرشوں، سادھنوں اور یوجناؤں کو کورا آدرشواد اور ابیوہارک سمجھتے تھے، یعنی یہ مانتے تھے کہ یہ کیول کہنے کی باتیں ہیں کرنے دھرنے کی نہیں، جنتا کے سامنے باپو کی اور انکے سادھنوں و یوجناؤں کی اتنی تعریفیں کرتے تھے کہ جنتا کو یہ شبہ ہی نہیں ہوسکتا تھا کہ ان میں اور باپو میں کتنا گہرا مت بھید ہے اور یہ اپنی ساری طاقت دیس کو ان راستوں کی طرف لے جانے میں لگا رہے ہیں جو باپو کو ناپسند ہیں اور جنہیں باپو دیس کیلئے گھاتک سمجھتے ہیں . جنتا باپو کی شکتی کو اپار مانتی تھی، اور سمجھتی تھی کہ ان کی مرضی کے خلاف

कोई बात हो ही नहीं सकती. मगर हालत बिलकुल इसके उल्टी थी. हालत यहाँ तक पहुँच गई थी कि आख़िर दिनों में अपने चेलों की बातों और बहसों की सख़्ती और कुटता को बापू बरदाश्त न कर सकते थे और ख़ामोश होकर आँसू बहाने लगते थे. बापू काँगरेस में दो दल किये बग़ैर न तो नया संगठन बना सकते थे, न जनता की मदद से काँगरेस के नेताओं को अपनी पालिसी बदलने पर मजबूर कर सकते थे. ज्यों ज्यों आज़ादी का समय क़रीब आता गया बापू की बेबसी बराबर बढ़ती गई. आख़िर नौबत यहाँ तक पहुंची कि बापू की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ और बिना उनकी सलाह के देस के दो टुकड़े कर दिये गये. इस ग़लत क़दम से जो नतीजे पैदा हुए उनसे देस को बचाने की कोशिश में बापू को अपनी जान देनी पड़ी. देस के टुकड़े हो जाना बापू के जीवन के लिये बहुत दुख की बात थी. जीवन में इतना बड़ा धक्का बापू को कभी न पहुँचा था. फिर भी इतनी उदारता के साथ उन्होंने अपने चेलों की इस ग़लती को निबाहा और इतनी हिम्मत और ताक़त के साथ इस ग़लती से पैदा होने वाले तूफ़ान का मुक़ाबला किया कि यह बापू की ज़िन्दगी की सबके बड़ी यादगार है.

काँगरेस के तरीक़ों और पालसियों पर इस बलिदान का ज़रा भी असर न पड़ा. काँगरेस ने हुकूमत पाते ही जो तरीक़े अख़्तियार किये उनसे यह साफ़ ज़ाहिर हो गया कि काँगरेस को अब बापू के आदर्शों और साधनों की कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं रही. जिस ग़रज़ के लिये काँगरेस बापू का इस्तेमाल करती थी वह पूरी होगई. अब वह पीच्छमी सभ्यता को देस में फैलायगी और पच्छिमी राजनीत के रास्तों पर चलेगी. काँगरेस के जीवन में इतनी बड़ी तबदीली का होजाना बापू और देस दोनों के लिये एक बड़ी घटना थी. देस का इस से बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता था कि बड़े [illegible] आज़ादी इसलिये मिले कि वह

کوئی بات هو هی نہیں سکتی. مگر حالت بالکل اِسکے اُلٹی تھی. حالت یہاں تک پہونچ گئی تھی کہ آخر دنوں میں اپنے چیلوں کی باتوں اور بحثوں کی سختی اور کٹوتا کو باپو برداشت نہ کر سکتے تھے اور خاموش هوکر آنسو بہانے لگتے تھے. باپو کانگریس میں دو دل کئے بغیر نہ تو نیا سنگٹھن بنا سکتے تھے، نہ جنتا کی مدد سے کانگریس کے نیتاؤں کو اپنی پالیسی بدلنے پر مجبور کر سکتے تھے. جیوں جیوں آزادی کا سمے قریب آتا گیا باپو کی بے بسی برابر بڑھتی گئی. آخر نوبت یہاں تک پہونچی کہ باپو کی مرضی کے خلاف اور بنا اُن کی صلاح کے دیس کے دو ٹکڑے کر دئے گئے. اِس غلط قدم سے جو نتیجے پیدا هوئے اُن سے دیس کو بچانے کی کوشش میں باپو کو اپنی جان دینی پڑی. دیس کے ٹکڑے هوجانا باپو کے جیون کیلئے بہت دکھ کی بات تھی. جیون میں اِتنا بڑا دھکا باپو کو کبھی نہ پہونچا تھا. پھر بھی اِتنی اُدارتا کے ساتھ اُنھوں نے اپنے چیلوں کی اِس غلطی کو نباها اور اتنی همت اور طاقت کے ساتھ اِس غلطی سے پیدا هونے والے طوفان کا مقابلہ کیا کہ یہ باپو کی زندگی کی سب سے بڑی یادگار هے.

کانگریس کے طریقوں اور پالیسیوں پر اس بلیدان کا ذرا بھی اثر نہ پڑا. کانگریس نے حکومت پاتے هی جو طریقے اختیار کئے اُن سے یہ صاف ظاهر هوگیا کہ کانگریس کو اب باپو کے آدرشوں اور سادھنوں کی کوئی ضرورت باقی نہیں رهی. جس غرض کیلئے کانگریس باپو کا استعمال کرتی تھی وہ پوری هوگئی. اب وہ پچھمی سبھیتا کو دیس میں پھیلائے گی اور پچھمی راج نیت کے راستوں پر چلے گی. کانگریس کے جیون میں اِتنی بڑی تبدیلی کا هوجانا باپو اور دیس دونوں کیلئے ایک بڑی گھٹنا تھی. دیس کا اِس سے بڑا دربھاگیہ اور کیا هوسکتا تھا کہ اسے راج کاجی آزادی اسلئے ملے کہ وہ اپنی

अपनी सभ्यता और संस्कृति को मिटा कर हमेशा के लिये सामाजिक, आरथिक और नैतिक जीवन में आज कल के पच्छिम का ग़ुलाम बन जाय. बापू के लिये इस से ज़्यादा दुखकी घटना और क्या हो सकती थी कि उनका सत्य और अहिंसा के हथियारों से संसार में अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा कर देने का सपना पूरा होने के नज़दीक पहुँच कर इस तरह एकबारगी भंग होजाय. उस सपने का भंग होजाना जो उनके जीवन का मिशन था और जिस के पूरा करने की कोशिश में उन्होंने अपने जीवन के ५० साल खपाये थे और अपना तन मन धन सब कुछ निछावर किया था, एक तरह से गांधी युग के पहिले दौर का ख़तम हो जाना है. ख़ुद बापू पर इसका यही असर पड़ा. इसका सब से बड़ा सबूत बापू का 'लोक सेवक संघ' बनाना है जो असल में उनके जीवन के दूसरे दौर का बुनियादी पत्थर था.

बापू के ख़ास ख़ास साथी यह देख रहे थे कि अपनी मौत के साल डेढ़ साल पहिले बापू अहिंसात्मक इनक़लाब के इतिहास में एक नया युग शुरू करने के ख़याल में डूबे रहते हैं, और अपनी पुरानी योजनाओं में बुनियादी तबदीलियाँ कर रहे हैं. बापू के आस पास के लोगों को उनका बातों से यह साफ़ पता चलता था कि वह कोई इनक़लाबी क़दम उठाने की तैयारी कर रहे हैं. बापू ने अपनी खादी की योजना को बिलकुल बदल दिया, उस में से केवल खादी पैदा करने के बदले 'वस्त्र स्वावलंबन' यानी अपने कपड़ों के लिये ख़ुद सूत कात कर उसी के कपड़े पहनना, खादी योजना का ख़ास मक़सद बना दिया. बापू ने अपनी रचनात्मक संस्थाओं के सामने यह योजना पेश की कि सब संस्थाएँ अपने अलग अलग संगठनों को तोड़ डालें और एक संघ का रूप ले लें. इसी के साथ साथ उन्होंने अपनी सारी पुरानी रचनात्मक योजनाओं को मिला कर उसे 'समग्र सेवा' (सब तरह की सेवा) का नाम दिया. इस तरह

پرانی سبھیتا اور سنسکرتی کو مٹا کر ہمیشہ کیلئے سماجک، آرتھک اور نیتک جیون میں آجکل کے پچھم کا غلام بن جائے. باپو کیلئے اس سے زیادہ دکھ کی گھٹنا اور کیا ہو سکتی تھی کہ ان کا ستیہ اور اہنسا کے ہتھیاروں سے سنسار میں اہنساتمک انقلاب پیدا کردینے کا سپنا پورا ہونے کے نزدیک پہونچ کر اسطرح ایکبارگی بھنگ ہو جائے. اس سپنے کا بھنگ ہوجانا' جو انکے جیون کا مشن تھا اور جسکے پورا کرنے کی کوشش میں انہوں نے اپنے جیون کے پچاس سال کھپائے تھے اور اپنا تن من دھن سب کچھ نچھاور کیا تھا' ایک طرح سے گاندھی یگ کے پہلے دور کا ختم ہوجانا ہے. خود باپو پر اسکا یہی اثر پڑا. اسکا سب سے بڑا ثبوت باپو کا 'لوک سیوک سنگھ' بنانا ہے جو اصل میں انکے جیون کے دوسرے دور کا بنیادی پتھر تھا.

باپو کے خاص خاص ساتھی یہ دیکھ رہے تھے کہ اپنی موت کے سال ڈیڑھ سال پہلے باپو اہنساتمک انقلاب کے اتہاس میں ایک نیا یگ شروع کرنے کے خیال میں ڈوبے رہتے ہیں' اور اپنی پرانی یوجناؤں میں بنیادی تبدیلیاں کر رہے ہیں. باپو کے آس پاس کے لوگوں کو ان کی باتوں سے یہ صاف پتہ چلتا تھا کہ وہ کوئی انقلابی قدم اٹھانے کی تیاری کر رہے ہیں. باپو نے اپنی کھادی کی یوجنا کو بالکل بدل دیا' اس میں سے کیول کھادی پیدا کرنے کے بدلے ' وستر سواولمبن ' یعنی اپنے کپڑوں کیلئے خود سوت کات کر اسی کے کپڑے پہننا' کھادی یوجنا کا خاص مقصد بنا دیا. باپو نے اپنی رچنا تمک سنستھاؤں کے سامنے یہ یوجنا پیش کی کہ سب سنستھائیں اپنے الگ الگ سنگٹھنوں کو توڑ ڈالیں اور ایک سنگھ کا روپ لے لیں. اسی کے ساتھ ساتھ انہوں نے اپنی ساری پرانی رچناتمک یوجناؤں کو ملا کر اسے 'سمگر سیوا' (سب طرح کی سیوا) کا نام دیا. اسطرح

धीरे धीरे अपने नये प्रोग्राम की रूप रेखा तैयार कर लेने के बाद उन्होंने वर्धा में रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफ़रेन्स बुलवाने की चरचा करनी शुरू की. पर यह कानफ़रेन्स उनकी जिन्दगी में नहीं हो सकी. उनके मरने के बाद यह कानफ़रेन्स उस समय हुई जब देस की हालत बिलकुल बदल चुकी थी.

जिस तरह अपने रचनात्मक काजकर्ताओं और साथियों के सामने बापू अपने विचार रख रहे थे उसी तरह कांगरेस और हुकूमत के खास लोगों से वह अपनी विचारधारा पर बहसें कर रहे थे. हुकूमत को छोड़ देने और कांगरेस संगठन को तोड़ देने का खयाल उनके सामने था और अपनी ज़िन्दगी में पहिली बार कांगरेस के अधिकारियों और अपने पुराने राजकाजी चेलों को बापू यह बता रहे थे कि अगर कांगरेस अब भी उनकी बातों को न मानेगी और अहिंसात्मक इनक़लाब यानी अहिंसात्मक क्रान्ति के रास्ते को नहीं अपनायगी तो बापू देस में अपना आन्दोलन चलाने के लिये एक नया दल तैयार करेंगे. कांगरेस और उसकी हुकूमत के लिये इससे ज़्यादा ख़तरनाक बात दूसरी नहीं हो सकती थी. इसलिये बड़े से बड़े राजकाजी लीडरों ने बापू को समझाने और उनके इस इरादे को बदलवाने के लिये बेहद कोशिश की मगर कामयाब न हुए. आखिरकार बापू ने अपने सारे विचारों को 'लोक सेवक संघ' का रूप देकर इंडियन नेशनल कांगरेस के मंत्री को इसके विधान का मसविदा इस हिदायत के साथ दे दिया कि यह इसे बापू की तरफ़ से प्रस्ताव के रूप में आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने पेश करें. इस के तीन चार घंटे के बाद ही बापू के संसारी जीवन का अंत हो गया.

(२)

लोक सेवक संघ का मसौदा बापू के मरने के बाद, बापू की आखिरी वसीयत के नाम से 'हरिजन' में छपा था. आल इंडिया

دھیرے دھیرے اپنے نئے پروگرام کی روپ ریکھا تیار کر لینے کے بعد اُنہوں نے وردھا میں رچناتمک کاج کرتاؤں کی ایک کانفرنس بلوانے کی چرچا کرنی شروع کی ۔ پر یہ کانفرنس اُن کی زندگی میں نہیں ہوسکی ۔ اُنکے مرنے کے بعد یہ کانفرنس اُس سمے ہوئی جب دیس کی حالت بالکل بدل چکی تھی ۔

جسطرح اپنے رچناتمک کاج کرتاؤں اور ساتھیوں کے سامنے باپو اپنے وچار رکھ رہے تھے اسی طرح کانگریس اور حکومت کے خاص لوگوں سے وہ اپنی وچار دھارا پر بحثیں کر رہے تھے ۔ حکومت کو چھوڑ دینے اور کانگریس سنگٹھن کو توڑ دینے کا خیال اُنکے سامنے تھا اور اپنی زندگی میں پہلی بار کانگریس کے ادھیکاریوں اور اپنے پرانے راج کاجی چیلوں کو باپو یہ بتا رہے تھے کہ اگر کانگریس اب بھی اُن کی باتوں کو نہ مانے گی اور اہنساتمک انقلاب یعنی اہنساتمک کرانتی کے راستے کو نہیں اپنائے گی تو باپو دیس میں اپنا آندولن چلانے کیلئے ایک نیا دل تیار کرینگے ۔ کانگریس اور اسکی حکومت کیلئے اس سے زیادہ خطرناک بات دوسری نہیں ہوسکتی تھی ۔ اِسلئے بڑے سے بڑے راج کاجی لیڈروں نے باپو کو سمجھانے اور اُنکے اِس ارادے کو بدلوانے کیلئے بے حد کوشش کی مگر کامیاب نہ ہوئے ۔ آخرکار باپو نے اپنے سارے وچاروں کو 'لوک سیوک سنگھ' کا روپ دے کر انڈین نیشنل کانگریس کے منتری کو اِسکے ودھان کا مسودہ اس ہدایت کے ساتھ دے دیا کہ وہ اِسے باپو کی طرف سے پرستاؤ کے روپ میں آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے پیش کریں ۔ اِسکے تین چار گھنٹے کے بعد ھی باپو کے سنساری جیون کا انت ہوگیا ۔

(۲)

'لوک سیوک سنگھ' کا مسودہ باپو کے مرنے کے بعد، باپو کی آخری وصیت کے نام سے 'ہریجن' میں چھپا تھا ۔ آل انڈیا

लोक सेवक संघ का मसौदा बापू के मरने के बाद, बापू की आखिरी वसीयत के नाम से 'हरिजन' में छपा था. आल इंडिया

कांगरेस कमेटी ने भी इस पर ग़ौर किया. पर इसकी तरफ़ देस में किसी का खास ध्यान न गया. बात यह है कि रचनात्मक काज-कर्ताओं ने इसे बापू के जीवन का एक ऐसा राजकाजी क़दम समझा जिसका उनसे कोई खास सम्बन्ध दिखाई नहीं देता था. इधर आल इंडिया कांगरेस कमेटी के लिये इस प्रस्ताव को मान कर अपने हाथों आत्म हत्या कर लेना बिलकुल नामुमकिन था. इसलिये उसने बापू की ज़िन्दगी के सबसे बड़े और सब से इनक़लाबी क़दम की तरफ़ कोई खास ध्यान नहीं दिया.

बापू ख़ूब जानते थे कि आल इंडिया काँगरेस कमेटी हरगिज़ उनके प्रस्ताव को मंज़ूर न करेगी. यह प्रस्ताव उसके सामने रखकर बापू ने उसकी तरफ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया और साथ ही साथ उसे यह चेतावनी दे दी कि अब वह अपने मिशन को पूरा करने के लिये देस में एक नया दल क़ायम करेंगे. अगर बापू ज़िन्दा रहते तो इस प्रस्ताव का आल इंडिया काँगरेस कमेटी पर काफ़ी दबाव पड़ता और देस के सामने एक बड़ी गंभीर हालत पैदा हो जाती. बापू की मौत ने आल इंडिया काँगरेस कमेटी का रास्ता साफ़ कर दिया और उसे उस प्रस्ताव की तरफ़ कोई खास ध्यान देने की ज़रूरत ही न रही.

'लोक सेवक संघ' की योजना बापू ने उस कानफ़रेन्स के सामने पेश करने के लिये बनाई थी जिसे वह वर्धा में बुलाना चाहते थे. उनके मरने के बाद वह कानफ़रेन्स तो हुई लेकिन उस पर काँगरेस और हुकूमत के लीडरों का इतना असर रहा कि उसका ध्यान भी इस योजना की तरफ़ न गया. देस के सारे रचनात्मक काजकर्ता ३० बरस तक राजनीत में हमेशा काँगरेस के पीछे पीछे चलते रहे. जो ज़बर-दस्त इनक़लाबी क़दम बापू ने अपने 'लोक सेवक संघ' के रूप में उठाया था उसकी इन काजकर्ताओं को न बापू से आशा ही थी और न उसकी राजकाजी अहमियत की तरफ़ इन काजकर्ताओं का ध्यान ही

'لوک سیوک سنگھ' کا مسودہ باپو کے مرنے کے بعد، باپو کی آخری وصیت کے نام سے 'ہریجن' میں چھپا تھا۔ آل انڈیا

کانگریس کمیٹی نے بھی اسپر غور کیا۔ پر اسکی طرف دیس میں کسی کا خاص دھیان نہ گیا۔ بات یہ ہے کہ رچناتمک کاج کرتاؤں نے اسے باپو کے جیون کا ایک ایسا راج کاجی قدم سمجھا جسکا اُن سے کوئی خاص سمبندھ دکھائی نہیں دیتا تھا۔ ادھر آل انڈیا کانگریس کمیٹی کیلئے اِس پرستاؤ کو مان کر اپنے ہاتھوں آتم ہتیا کر لینا بالکل نا ممکن تھا۔ اسلئے اُسنے باپو کی زندگی کے سب سے بڑے اور سب سے انقلابی قدم کی طرف کوئی خاص دھیان نہیں دیا۔

باپو خوب جانتے تھے کہ آل انڈیا کانگریس کمیٹی ہرگز اُنکے پرستاؤ کو منظور نہ کرے گی۔ یہ پرستاؤ اُسکے سامنے رکھکر باپو نے اُسکی طرف اپنا فرض ادا کیا اور ساتھ ہی ساتھ اُسے یہ چیتاونی دے دی کہ اب وہ اپنے مشن کو پورا کرنے کیلئے دیس میں ایک نیا دل قائم کرینگے۔ اگر باپو زندہ رہتے تو اس پرستاؤ کا آل انڈیا کانگریس کمیٹی پر کافی دباؤ پڑتا اور دیس کے سامنے ایک بڑی گمبھیر حالت پیدا ہوجاتی۔ باپو کی موت نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کا راستہ صاف کر دیا اور اُسے اُس پرستاؤ کی طرف کوئی خاص دھیان دینے کی ضرورت ہی نہ رہی۔

'لوک سیوک سنگھ' کی یوجنا باپو نے اُس کانفرنس کے سامنے پیش کرنے کیلئے بنائی تھی جسے وہ وردھا میں بلانا چاہتے تھے۔ اُنکے مرنے کے بعد وہ کانفرنس تو ہوئی لیکن اُسپر کانگریس اور حکومت کے لیڈروں کا اتنا اثر رہا کہ اُسکا دھیان بھی اِس یوجنا کی طرف نہ گیا۔ دیس کے سارے رچناتمک کاج کرتا ۳۰ برس تک راج نیت میں ہمیشہ کانگریس کے پیچھے پیچھے چلتے رہے۔ جو زبردست انقلابی قدم باپو نے اپنے 'لوک سیوک سنگھ' کے روپ میں اُٹھایا تھا اُسکی اِن کاج کرتاؤں کو نہ باپو سے آشا ہی تھی اور نہ اُسکی راج کاجی اہمیت کی طرف اِن کاج کرتاؤں کا دھیان ہی

जा सकता था. इस कानफ़रेन्स में 'लोक सेवक संघ' का नाम जरूर आया. हमने ऊपर कहा है कि बापू रचनात्मक संस्थाओं के अलग अलग संगठनों को तोड़ कर उन सबको एक कर देना चाहते थे. इस कानफ़रेन्स की सबजेक्ट कमेटी में इस सवाल पर ग़ौर हुआ लेकिन कोई संस्था अपना संगठन तोड़ने पर राज़ी न हुई. आखिर में कानफ़रेन्स ने इस सवाल पर ग़ौर करने के लिये एक कमेटी बना दी जिसने कुछ महीने बाद इन संस्थाओं के संगठनों को अलग अलग रखते हुए एक मिली जुली काजकारी कमेटी बना दी और उसका नाम 'लोक सेवक संघ' रख दिया.

'लोक सेवक संघ' बनाने की दूसरी कोशिश यू. पी. प्रान्त में हुई. यहाँ सूबे की रचनात्मक कमेटी ने अपनी एक बैठक में, जिसमें श्री पंत जी, श्री टंडन जी और प्रान्त के दूसरे कई मिनिस्टर मौजूद थे, प्रान्तीय 'लोक सेवक संघ' बनाने के लिये एक कानफ़रेन्स बुलाना तय किया. यह कानफ़रेन्स कानपुर में हुई. इस कानफ़रेन्स ने 'लोक सेवक संघ' का विधान बनाने का काम एक काजकारी कमेटी बना कर उसके सुपुर्द कर दिया. इस कमेटी ने 'लोक सेवक संघ' का एक विधान बना लिया और यह कमेटी उसके मुताबिक़ प्रान्त में काम कर रही है.

इस 'लोक सेवक संघ' में और बापू के संघ में ऐसा बुनियादी फ़रक़ है जिससे वह मक़सद पूरा नहीं हो सकता जिसे सामने रखकर बापू ने अपना नया संघ बनाने की तजवीज़ की थी. बापू अपने संघ को काँगरेस और हुकूमत दोनों के दायरों से बाहर रखना चाहते थे. हमारे सूबे के संघ की काजकारी कमेटी में, जिसके आचार्य कृपलानी सदर हैं, तीन चौथाई से ज़्यादा मेम्बर एसेम्बली के मेम्बर हैं. यहाँ हम इस बात के अच्छे या बुरे, उचित या अनुचित होने की बहस में जाना नहीं चाहते. हम सिर्फ़ यह कहना चाहते हैं कि बापू काँगरेस और हुकूमत के बाहर एक ऐसा संगठन बनाना चाहते थे जो राजनीत

جاسکتا تھا . اِس کانفرنس میں 'لوک سیوک سنگھ' کا نام ضرور آیا . ہم نے اُوپر کہا ہے کہ باپو رچناتمک سنستھاؤں کے الگ الگ سنگٹھنوں کو توڑ کر اُن سب کو ایک کر دینا چاہتے تھے . اِس کانفرنس کی سبجیکٹ کمیٹی میں اس سوال پر غور ہوا لیکن کوئی سنستھا اپنا سنگٹھن توڑنے پر راضی نہ ہوئی . آخر میں کانفرنس نے اِس سوال پر غور کرنے کیلئے ایک کمیٹی بنا دی جسنے کچھ مہینے بعد ان سنستھاؤں کے سنگٹھنوں کو الگ الگ رکھتے ہوئے ایک ملی جلی کاج کاری کمیٹی بنا دی اور اُسکا نام 'لوک سیوک سنگھ' رکھ دیا .

'لوک سیوک سنگھ' بنانے کی دوسری کوشش یو . پی . پرانت میں ہوئی . یہاں صوبے کی رچناتمک کمیٹی نے اپنی ایک بیٹھک میں' جسمیں شری پنت جی' شری ٹنڈن جی اور پرانت کے دوسرے کئی منسٹر موجود تھے' پرانتیہ 'لوک سیوک سنگھ' بنانے کیلئے ایک کانفرنس بلانا طے کیا . یہ کانفرنس کانپور میں ہوئی . اِس کانفرنس نے 'لوک سیوک سنگھ' کا ودھان بنانے کا کام ایک کاج کاری کمیٹی بنا کر اُسکے سپرد کر دیا . اِس کمیٹی نے 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک ودھان بنا لیا اور یہ کمیٹی اُسکے مطابق پرانت میں کام کر رہی ہے .

اس 'لوک سیوک سنگھ' میں اور باپو کے سنگھ میں ایسا بنیادی فرق ہے جس سے وہ مقصد پورا نہیں ہوسکتا جسے سامنے رکھکر باپو نے اپنا نیا سنگھ بنانے کی تجویز کی تھی . باپو اپنے سنگھ کو کانگریس اور حکومت دونوں کے دائروں سے باہر رکھنا چاہتے تھے . ہمارے صوبے کے سنگھ کی کاج کاری کمیٹی میں' جسکے آچاریہ کرپلانی صدر ہیں' تین چوتھائی سے زیادہ ممبر اسمبلی کے ممبر ہیں . یہاں ہم اسبات کے اچھے یا برے' اچت یا آنوچت ہونے کی بحث میں جانا نہیں چاہتے . ہم صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ باپو کا کانگریس اور حکومت کے باہر ایک ایسا سنگٹھن بنانا چاہتے تھے جو راجنیت

नया हिन्द　　अहिंसात्मक इनक़लाब का रास्ता　　मई सन् '५१

हम इस बात के अच्छे या बुरे, उचित या अनुचित होने की बहस में जाना नहीं चाहते. हम सिर्फ़ यह कहना चाहते हैं कि बापू काँगरेस और हुकूमत के बाहर एक ऐसा संगठन बनाना चाहते थे जो राजनीत

से बाहर रहते हुए उसे नैतिक बन्धनों में जकड़ सके, जो जनता को राजनीत के आतंक और शोशन से बचा कर रख सके और जो देस की सामाजिक, नैतिक और आरथिक हालत को पच्छिम की ग़ुलामी से आज़ाद रख सके. बापू का अटल विश्वास यह था कि काँगरेस और हुकूमत के दायरों के अन्दर रह कर यह मक़सद हासिल नहीं किया जा सकता. इसीलिये बरसों के गंम्भीर विचार के बाद बापू ने अपने नये संघ की बुनियाद डाली. हमारे सूबे का संघ, ज़ाहिर है, उनकी इस मंशा को पूरा नहीं करता बापू का यह नया तजरबा पूरा करने के लिये यह ज़रूरी है कि उसे शुद्ध रूप में और उनके आदर्शों और असूलों को सामने रखकर काम किया जाय. तभी देस को इससे पूरे फ़ायदे की उम्मीद हो सकती है.

कुछ लोगों का ख़याल है कि बापू काँगरेस का मौजूदा संगठन तोड़ देना और हुकूमत से बाहर आजाना नहीं चाहते थे. यह ख़याल ठीक नहीं है. ऐसे लोगों को यक़ीन दिलाने के लिये हम बताते हैं कि श्री जवाहरलाल नेहरू ने वर्धा कानफ़रेन्स में रचनात्मक काजकर्ताओं के सामने कहा था कि—"बापू यह चाहते थे कि हम हुकूमत छोड़ दें और काँगरेस के मौजूदा संगठन को तोड़ दें. पर हमारी समझ में यह नहीं आता था कि हम अपनी ज़िम्मेदारी किस पर छोड़ दें." डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी नई पुस्तक "बापू के क़दमों में" में नीचे दी हुई सतरें लिखी हैं—

"उन्होंने (बापू ने) अपनी हत्या के कुछ ही घंटे पहले अपने विचारों को लेख-बद्ध कर दिया था. उनका ख़याल था कि काँगरेस राजनीत के काम से, जिसमें वह प्रत्यक्ष (सीधे) भाग लेती रही थी और अपने मंत्रिमंडल द्वारा काम करा रही थी, अलग होकर 'लोक सेवक संघ' का काम करे. 'लोक सेवक संघ' द्वारा ही वह गवरमेन्ट पर जो कुछ असर डाल सकती है डाले. पर यह काँगरेस के प्रमुख लोगों

ہم اسبات کے اچھے یا برے، اچت یا انوچت ہونے کی بحث میں جانا نہیں چاہتے۔ ہم صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ باپو کانگریس اور حکومت کے باہر ایک ایسا سنگٹھن بنانا چاہتے تھے جو راجنیت

سے باہر رہتے ہوئے اُسے نیتک بندھنوں میں جکڑ سکے، جو جنتا کو راج نیت کے آتنک اور شوشن سے بچا کر رکھ سکے اور جو دیس کی ساماجک، نیتک اور آرتھک حالت کو پچھم کی غلامی سے آزاد رکھ سکے۔ باپو کا اَٹل وشواس یہ تھا کہ کانگریس اور حکومت کے دائروں کے اندر رہ کر یہ مقصد حاصل نہیں کیا جاسکتا۔ اِسی لئے برسوں کے گمبھیر وچار کے بعد باپو نے اپنے نئے سنگھ کی بنیاد ڈالی۔ ہمارے صوبے کا 'سنگھ ظاہر ہے' اُن کی اِس منشا کو پورا نہیں کرتا۔ باپو کا یہ نیا تجربہ پورا کرنے کیلئے یہ ضروری ہے کہ اُسے شدھ روپ میں اور اُن کے آدرشوں اور اصولوں کو سامنے رکھکر کام کیا جائے۔ تبھی دیس کو اس سے پورے فائدے کی اُمید ہو سکتی ہے۔

کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ باپو کانگریس کا موجودہ سنگٹھن توڑ دینا اور حکومت سے باہر آجانا نہیں چاہتے تھے۔ یہ خیال ٹھیک نہیں ہے۔ ایسے لوگوں کو یقین دلانے کیلئے ہم بتاتے ہیں کہ شری جواہر لال نہرو نے وردھا کانفرنس میں رچناتمک کاج کرتاؤں کے سامنے کہا تھا کہ—"باپو یہ چاہتے تھے کہ ہم حکومت چھوڑ دیں اور کانگریس کے موجودہ سنگٹھن کو توڑ دیں۔ پر ہماری سمجھ میں یہ نہیں آتا تھا کہ ہم اپنی یہ ذمہ داری کس پر چھوڑ دیں۔" ڈاکٹر راجندر پرساد نے اپنی نئی پستک "باپو کے قدموں میں" میں نیچے دی ہوئی سطریں لکھی ہیں—

"اُنھوں نے (باپو نے) اپنی ہتیا کے کچھ ہی گھنٹے پہلے اپنے وچاروں کو لیکھ بدھ کر دیا تھا۔ اُن کا خیال تھا کہ کانگریس راج نیت کے کام سے، جسمیں وہ پرتیکش (سیدھے) بھاگ لیتی رہی تھی اور اپنے منتری منڈل دوارا کام کرا رہی تھی، الگ ہو کر 'لوک سیوک سنگھ' کا کام کرے۔ 'لوک سیوک سنگھ' دوارا ہی وہ گورنمنٹ پر جو کچھ اثر ڈال سکتی ہے ڈالے۔ پر یہ کانگریس کے پرمکھ لوگوں

को पसन्द नहीं था. इसीलिये नियमावली में जो संशोधन (सुधार) हुआ उसका रूप ऐसा नहीं हुआ कि काँगरेस 'लोक सेवक संघ' बन जाय. पर उनकी मृत्यु के कारन इस विशय पर और ज़्यादा ज़ोर देने वाला भी अब कोई नहीं रह गया."

(बाक़ी अगले नम्बर में)

"सुधारकों को विरोधियों के ग़ुस्से की आग में प्रानों की आहुती देनी पड़ेगी."

—गांधी जी

کو پسند نهیں تها. اِسی لئے نیماولی میں جو سنشودهن (سدهار) هوا اسکا روپ ایسا نهیں هوا که کانگریس 'لوک سیوک سنگه' بن جاے. پر اُن کی مرتیو کے کارن اِس وشے پر اور زیاده زور دینے والا بهی اب کوئی نهیں ره گیا."

(باقی اگلے نمبر میں)

"سدهارکوں کو وِرودهیوں کے غصے کی آگ میں پرانوں کی آهوتی دینی پڑے گی."

—گاندهی جی

पिछले नम्बर से आगे

जवानो !

वह जवान बूढ़ा होगया जो सिर्फ़ 'हाँ' करना जानता है. और जिसने 'ना' करने को ऐसा भुला दिया है मानो उसके पास अक़ल ही नहीं. फ़ौज में छाँट छाँट कर जवान लिये जाते हैं मगर तुम्हें यह मालूम है कि वह किस लिये ? सिर्फ़ बूढ़ा बनाने के लिये. गाँव का किसान जवान है. रँगरूट हुआ और जवानी का दम घुटा. सिपाही बना और जवानी ने आख़िरी साँस ली. सिपाही मशीन बन जाता है. 'ना' करने से उसे सरोकार ही नहीं. और मशीन कितनी ही नई क्यों न हो उसे जवान नहीं कहा जा सकता. जवान लफ़्ज़ तो वक़्त, जगह, काम और भाव की तबदीली का दूसरा नाम है. वह जवान जवान नहीं है जिसके लिये हर एक बात उसका धर्म ग्रन्थ, उसका गुरू, उसका अफ़सर या उसका मालिक उसके लिये सोच दे. वह जवान जवान नहीं है जिसके बीमार होने का फ़ैसला डाक्टरी की किताबें, डाक्टर या और कोई करे. वह जवान जवान नहीं है जिसका फ़ैसला समाज करे कि उसको किस ब्योपार में लगना चाहिये. वह जवान ज़वान नहीं है जो अपनी संगिनी छाँटने के मामले में अपने को उन बूढ़े माँ बाप के सपुर्द कर देता है जो किसी समाज के जाल में फँस कर रस्म रिवाज से इतने दबे हुए होते हैं कि वह बहुत समझदार होते हुए भी ठीक ठीक फ़ैसला कर सकने के क़ाबिल होने पर भी किसी मजबूरी की वजह से न ठीक फ़ैसला दे सकते हैं, न मन चाही बात कह सकते हैं. किस जवान लड़के या लड़की को यह तजरबा नहीं है कि जब वह अपनी जात, प्रान्त, धर्म या मुल्क के बाहर से किसी से शादी कर बैठता

پچھلے نمبر سے آگے

جوانو !

وہ جوان بوڑھا ہو گیا جو صرف 'ہاں' کرنا جانتا ہے ۔ اور جس نے 'نا' کرنے کو ایسا بھلا دیا ہے مانو اسکے پاس عقل ہی نہیں ۔ فوج میں چھانٹ چھانٹ کر جوان لئے جاتے ہیں مگر تمہیں یہ معلوم ہے کہ وہ کس لئے ؟ صرف بوڑھا بنانے کے لئے ۔ گاؤں کا کسان جوان ہے ۔ رنگروٹ ہوا اور جوانی کا دم گھٹا ۔ سپاہی بنا اور جوانی نے آخری سانس لی ۔ سپاہی مشین بن جاتا ہے ۔ 'نا' کرنے سے اسے سروکار ہی نہیں ۔ اور مشین کتنی ہی نئی کیوں نہ ہو اسے جوان نہیں کہا جا سکتا ۔ جوان لفظ تو وقت' جگہ' کام اور بھاؤ کی تبدیلی کا دوسرا نام ہے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جسکے لئے ہر ایک بات اسکا دھرم گرنتھ' اسکا گرو' اس کا افسر یا اس کا مالک اس کے لئے سوچ دے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جسکے بیمار ہونے کا فیصلہ ڈاکٹری کی کتابیں' ڈاکٹر یا اور کوئی کرے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جسکا فیصلہ سماج کرے کہ اسکو کس بیوپار میں لگنا چاہئے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جو اپنی سنگنی چھانٹنے کے معاملے میں اپنے آپکو ان بوڑھے ماں باپ کے سپرد کر دیتا ہے جو کسی سماج کے جال میں پھنس کر رسم و رواج سے اتنے دبے ہوئے ہوتے ہیں کہ وہ بہت سمجھدار ہوتے ہوئے بھی اور ٹھیک ٹھیک فیصلے کر سکنے کے قابل ہونے پر بھی کسی مجبوری کی وجہ سے نہ ٹھیک فیصلہ دے سکتے ہیں' نہ من چاہی بات کہہ سکتے ہیں ۔ کسی جوان لڑکے یا لڑکی کو یہ تجربہ نہیں ہے کہ جب وہ اپنی ذات' پرانت' دھرم یا ملک کے باہر سے کسی سے شادی کر بیٹھتا

है तो जिन माँ बाप ने शुरू शुरू में बहुत शोर मचाया होता है वही उस शादी शुदा जवान को कितने शौक़ से अपने घर में जगह देते हैं और किस तरह अपना सारा प्यार उस नई बहू पर उंडेल देते हैं. कहीं कहीं हमारी इस बात के ख़िलाफ़ ब्योहार भी सुनने और देखने को मिल सकता है. पर ज़रा गहरे जाने पर उस बुरे ब्योहार की तह में बेटे की समाज ब्योहार के लिहाज़ से अटपटी शादी कारन न मिलेगी. वहाँ कारन मिलेगा उनका इस तरह का स्वभाव. वह तो अगर बेटे ने बिलकुल रिवाजों के माफ़िक़ और माँ बाप की मर्ज़ी के मुताबिक़ भी शादी की होती तो उस बहू को भी वही फटकार और दुतकार मिलती जो दूसरी ज़ात या धर्म की बहू को मिल रही है. जवान को इतना गहरा जाने की ज़रूरत नहीं. उसका काम तो ऊँचा जाना है. जवान का ग्यान जवान के लिये बोझा नहीं होना चाहिये. और अगर वह बोझा है तो समझना चाहिये कि वह जवान बूढ़ा होगया. ग्यान आज़ादी पर सवार है. और आज़ादी पंखों वाली है, इसलिये आज़ादी और ग्यान मिलकर जवान को न बेजा ठोकर खाने देते हैं और न ऊँचा उठने से रोकते हैं. न जाने क्यों जवानों के बारे में यह कह बैठने का आम रिवाज हो गया है कि जवान जल्दी भटक जाता है और बुरे रास्ते पर लग जाता है. यह बात इतनी ही सच्चाई से दूर है जितनी यह बात कि आग की लौ ऊपर न जा कर नीचे की तरफ़ जाती है. हाँ, आग की लौ सुनार की फुँकनी से नीचे भी जाती हुई देखी जा सकती है. उसी तरह से जवान भी समाज सुनार की रिवाज फुँकनी के ज़रिये भटकते और खोटी राह पर चलते हुए मिल सकते हैं. पुलिस से तंग आकर जवानों के डकैत बनने की बात किसे नहीं मालूम. और समाज से तंग आकर जवान लड़कियों के वेश्या बन जाने की बात किससे छिपी हुई है. यह जवानी नहीं है जो बुराई की

ھے تو جن ماں باپ نے شروع شروع میں بہت شور مچایا ہوتا ھے وھی اُس شادی شدہ جوان کو کتنے شوق سے اپنے گھر میں جگہ دیتے ھیں اور کس طرح اپنا سارا پیار اُس نئی بہو پر اُنڈیل دیتے ھیں. کہیں کہیں ھماری اِس بات کے خلاف بیوھار بھی سننے اور دیکھنے کو مل سکتا ھے . پر ذرا گہرے جانے پر اُس برے بیوھار کی تہہ میں بیٹے کی سماج بیوھار کے لحاظ سے اٹپٹی شادی کارن نہ ملیگی . وھاں کارن ملیگا ان کا اس طرح کا سوبھاؤ . وہ تو اگر بیٹے نے بالکل رواجوں کے موافق اور ماں باپ کی مرضی کے مطابق بھی شادی کی ھوتی تو اُس بہو کو بھی وھی پھٹکار اور دتکار ملتی جو دوسری جات یا دھرم کی بہو کو مل رھی ھے . جوان کو اتنا گہرا جانے کی ضرورت نہیں . اس کا کام تو اونچا جانا ھے . جوان کا گیان جوان کے لئے بوجھا نہیں ھونا چاھئے . اور اگر وہ بوجھا ھے تو سمجھنا چاھئے کہ وہ جوان بوڑھا ھوگیا . گیان آزادی پر سوار ھے . اور آزادی پنکھوں والی ھے' اسلئے آزادی اور گیان مل کر جوان کو نہ بیجا ٹھوکر کھانے دیتے ھیں اور نہ اُونچا اُٹھنے سے روکتے ھیں. نہ جانے کیوں جوانوں کے بارے میں یہ کہہ بیٹھنے کا عام رواج ھو گیا ھے کہ جوان جلدی بھٹک جاتا ھے اور برے راستے پر لگ جاتا ھے . یہ بات اِتنی ھی سچائی سے دور ھے جتنی یہ بات کہ آگ کی لو اوپر نہ جا کر نیچے کی طرف جاتی ھے . ھاں' آگ کی لو سنار کی پھکنی سے نیچے بھی جاتی ھوئی دیکھی جا سکتی ھے . اُسی طرح سے جوان بھی سماج سنار کی رواج پھکنی کے ذریعے بھٹکتے اور کھوٹی راہ پر چلتے ھوئے مل سکتے ھیں . پولس سے تنگ آکر جوانوں کے ڈکیت بننے کی بات کسے نہیں معلوم . اور سماج سے تنگ آکر جوان لڑکیوں کے ویشیا بن جانے کی بات کس سے چھپی ھوئی ھے . یہ جوانی نہیں ھے جو برائی کی طرف

तंग आकर जवानों के डकैत बनने की बात किसे नहीं मालूम. और समाज से तंग आकर जवान लड़कियों के वेश्या बन जाने की बात किससे छिपी हुई है. यह जवानी नहीं है जो बुराई की

बेतुके रस्म रिवाज, गवरमेन्ट के कड़े कानून और माँ बाप की मामूली से ज्यादा अपने ठीक ना ठीक सभी हुकमों की पाबंदी की ख़ाहिश.

जवानो ! तुम जवान हो. सौ हाथी की ताक़त रखने वाली काम वासना को तुम्हीं रोकते आए हो, तुम्हीं रोक सकते हो और तुम्हीं उसको अगर चाहो तो बच्चे पैदा करने की जगह अपने जिस्म को चमकाने के काम में लगा सकते हो और उससे सोचने की ताक़त बढ़ाकर दुनिया की तकलीफ़ों का हल निकालने के काम में उसे जोत सकते हो. यह काम न अधेड़ हाथ में ले सकते हैं न बूढ़े. और तुम उनके हाथ में यह काम सौंपना अपनी शान के खिलाफ़ समझोगे. जवानो ! ग़ुस्से जैसे ताक़तवर भाव को तुम्हारे सिवा कौन क़ाबू में रख सकता है. क्या बूढ़ा बुद्ध राजपाट को लात मार सकता था ? क्या बूढ़ा बुद्ध जवान औरत और पहले बच्चे को छोड़ने की हिम्मत कर सकता था ? बुद्ध का बाप सचमुच बूढ़ा था और राम का बाप तो इतना बूढ़ा था कि बेटे की अलहदगी भी न सह सका. क्या बूढ़ा राम तिलक के वक़्त राज छोड़ने की बात सोच सकता था ? क्या बूढ़े राम को जंगल में सीता को रखने की बात सूझ सकती थी ? त्याग बूढ़ों का कामन हीं, जवान ही कर सकता है. गाँधी ने जिनके बल पर हिन्दुस्तान को आजाद किया उन में ३० बरस से ऊपर के बहुत ही कम थे. और अगर कुछ बूढ़े थे तो उनमें से बहुत से ऐसे थे जो अपने बेटे बेटियों के मोह के कारन गाँधी के साथ लग लिये थे. अगर उनके बेटे बेटी गाँधी के असर में न आते तो क्या वह कभी हिन्दुस्तान की आजादी की बात सोचते ? जवान अरविंद ही, बूढ़ा अरविंद नहीं, जवानों को हथेली पर सिर रखना सिखा सका. उसके साथी जवान हिंसा के क़ायल होते हुए भी हिंसक नहीं थे, न हिंसा उनका पेशा था, न मन बहलाव, न कुछ और. उनकी लगन थी हिन्दुस्तान की आजादी. उस

بےتکے رسم رواج، گورنمنٹ کے کڑے قانون اور ماں باپ کی معمولی سے زیادہ اپنے ٹھیک، ناٹھیک سبھی حکموں کی پابندی کی خواہش .

جوانو ! تم جوان ہو . سو ہاتھی کی طاقت رکھنے والی کام واسنا کو تمہیں روکتے آئے ہو، تمہیں روک سکتے ہو اور تمہیں اس کو اگر چاہو تو بچے پیدا کرنے کی جگہ اپنے جسم کو چمکانے کے کام میں لگا سکتے ہو اور اس سے سوچنے کی طاقت بڑھا کر دنیا کی تکلیفوں کا حل نکالنے کے کام میں اسے جوت سکتے ہو . یہ کام نہ ادھیڑ ہاتھ میں لے سکتے ہیں نہ بوڑھے . اور تم ان کے ہاتھ میں یہ کام سونپنا اپنی شان کے خلاف سمجھوگے . جوانو ! غصے جیسے طاقتور بھاؤ کو تمہارے سوا کون قابو میں رکھ سکتا ہے . کیا بوڑھا بدھ راج پاٹ کو لات مار سکتا تھا ؟ کیا بوڑھا بدھ جوان عورت اور پہلے بچے کو چھوڑنے کی ہمت کر سکتا تھا ؟ بدھ کا باپ سچ مچ بوڑھا تھا اور رام کا باپ تو اتنا بوڑھا تھا کہ بیٹے کی علیحدگی بھی نہ سہہ سکا . کیا بوڑھا رام تلک کے وقت راج چھوڑنے کی بات سوچ سکتا تھا ؟ کیا بوڑھے رام کو جنگل میں سیتا کو رکھنے کی بات سوجھ سکتی تھی ؟ تیاگ بوڑھوں کا کام نہیں، جوان ہی کر سکتا ہے . گاندھی نے جن کے بل پر ہندستان کو آزاد کیا ان میں ۳۰ برس سے اوپر کے بہت ہی کم تھے . اور اگر کچھ بوڑھے تھے تو ان میں سے بہت سے ایسے تھے جو اپنے بیٹے بیٹیوں کے موہ کے کارن گاندھی کے ساتھ لگ لئے تھے . اگر انکے بیٹے بیٹی گاندھی کے اثر میں نہ آتے تو کیا وہ کبھی ہندستان کی آزادی کی بات سوچتے ؟ جوان اروند ہی، بوڑھا اروند نہیں، جوانوں کو ہتھیلی پر سر رکھنا سکھا سکا . اسکے ساتھی جوان ہنسا کے قائل ہوتے ہوئے بھی ہنسک نہیں تھے، نہ ہنسا ان کا پیشہ تھا، نہ من بہلاؤ نہ کچھ اور . انکی لگن تھی ہندستان کی آزادی . اس

आज़ादी की धुन में उन्हें यह पता ही न था कि उनका सरदार उनसे क्या काम ले रहा है. किसी की जान बचाने के लिये भागने वाला जवान यह जान ही नहीं पाता कि उसके पाँव से कितने कीड़े मर गए हैं और उसकी भाग दौड़ की झपेट में आकर कौन बच्चा नदी में जा पड़ा. और उन अरविंद के साथी हिंसक जवानों की सचाई और त्याग का इससे ज़्यादा क्या सबूत हो सकता है कि जैसे ही गाँधी मैदान में आया वह क़रीब क़रीब सब के सब उसके साथ हो लिये और उनमें से कुछ तो ऐसे अहिंसावादी बने कि जैनों और वैश्नवों को भी बहुत पीछे छोड़ दिया. जवान कभी भटकता ही नहीं. जिन जवानों ने अरविंद के साथ बम फेंके थे वे भटके हुए जवान नहीं थे, विदेसी हकूमत के पत्थर के नीचे दबे हुए जवान थे. वे आज़ाद कहाँ थे? हकूमत के पत्थर को चूर चूर किये बिना वह उठ भी कैसे सकते थे. और हकूमत का पत्थर उनके लिये था बिदेसी सरकार का अंगरेज़ी अमला. इसलिये उसी पर टूट पड़े. गुलामी के बोझ से दबा जवान कमर झुके बूढ़े से भी कमज़ोर हो जाता है. 'कमज़ोर ग़ुस्सा ज़्यादा' यह कहावत कौन नहीं जानता. ग़ुस्सा और हिंसा माँ जाए हैं. यों दोनों कमज़ोर के साथ रहते हैं. कमज़ोरी और जवान का क्या साथ?

जवानो! शेर नक़ल करने को चीज़ नहीं. जंगल में पत्तों की खड़खड़ाहट उसको चौकन्ना करने के लिये काफ़ी है. बन्दूक़ की आवाज़ तो भागने के लिये उसमें पंख लगा देती है. वह तो बहुत भूक में या राह न मिलने पर ढीट बन कर मुक़ाबला कर जाता है. इस ढीटता को न जाने क्यों आदमी ने बहादुरी का नाम दे दिया है. हमारा अपना उमर में तीन बार जंगलों में शेर से सामना हो चुका है. हमारा तजरबा हमें यह बताता है कि शेर आदमी से ज़्यादा बहादुर नहीं होते. वह आदमी को बहादुरी का सबक़ नहीं

آزادی کی دھن میں اُنہیں یہ پتہ ہی نہ تھا کہ اُن کا سردار اُن سے کیا کام لے رہا ہے ۔ کسی کی جان بچانے کے لئے بھاگنے والا جوان یہ جان ہی نہیں پاتا کہ اسکے پاؤں سے کتنے کیڑے مر گئے ہیں اور اس کی بھاگ دوڑ کی جھپیٹ میں آکر کون بچہ ندی میں جا پڑا ۔ اُن اروند کے ساتھی ہنسک جوانوں کی سچائی اور تیاگ کا اس سے زیادہ کیا ثبوت ہو سکتا ہے کہ جیسے ہی گاندھی میدان میں آیا وہ قریب قریب سب کے سب اُس کے ساتھ ہولئے اور اُن میں سے کچھ تو ایسے اہنسا وادی بنے کہ جینوں اور ویشنووں کو بھی بہت پیچھے چھوڑ دیا ۔ جوان کبھی بھٹکتا ہی نہیں ۔ جن جوانوں نے اروند کے ساتھ بم پھینکے تھے وہ بھٹکے ہوئے جوان نہیں تھے' بدیسی حکومت کے پتھر کے نیچے دبے ہوئے جوان تھے ۔ وہ آزاد کہاں تھے؟ حکومت کے پتھر کو چور چور کئے بنا وہ اُٹھ بھی کیسے سکتے تھے ۔ اور حکومت کا پتھر اُنکے لئے تھا بدیسی سرکار کا انگریزی عملہ ۔ اِس لئے اُسی پر ٹوٹ پڑے ۔ غلامی کے بوجھ سے دبا جوان کمر جھکے بوڑھے سے بھی کمزور ہو جاتا ہے ۔ 'کمزور غصہ زیادہ' یہ کہاوت کون نہیں جانتا ۔ غصہ اور ہنسا ماں جائے ہیں ۔ یوں دونوں کمزور کے ساتھ رہتے ہیں ۔ کمزوری اور جوان کا کیا ساتھ؟

جوانو! شیر نقل کرنے کی چیز نہیں ۔ جنگل میں پتوں کی کھڑکھڑاہٹ اس کو چوکنا کرنے کے لئے کافی ہے ۔ بندوق کی آواز تو بھاگنے کے لئے اس میں پنکھ لگا دیتی ہے ۔ وہ تو بہت بھوک میں یا راہ نہ ملنے پر ڈھیٹ بنکر مقابلہ کر جاتا ہے ۔ اِس ڈھیٹتا کو نہ جانے کیوں آدمی نے بہادری کا نام دے دیا ہے ۔ ہمارا اپنی عمر میں تین بار جنگلوں میں شیر سے سامنا ہو چکا ہے ۔ ہمارا تجربہ ہمیں یہ بتاتا ہے کہ شیر آدمی سے زیادہ بہادر نہیں ہوتے ۔ وہ آدمی کو بہادری کا سبق نہیں دے سکتے ۔

भिड़ जाता है तो शेर को ही हार मानकर पीछे क़दम हटाना पड़ता है. पर सुअर कहाँ मन बहलाव के लिये या पेट की ख़ातिर जानवरों को मारता फिरता हैं. जानवर जानवर होता है, इसलिये अपने बचाव की ख़ातिर सुअर दूसरे की जान ले लेता है, पर जान ही लेता है. मुर्दार को मुर्दार ही समझता है. आज़ाद जवानी को और फिर आदमी की आज़ाद जवानी को हमें न अहिंसा का सबक़ पढ़ाना पड़ेगा, न इख़लाक़ का पाठ. हम तो समझते हैं कि हमें उसको अदब आदाब की तालीम भी नहीं देना होगी. फलदार दरख़्तों को झुकना कौन सिखाता है ? आज़ादी के फलों से लदे हुए जवान को क्या हम अदब आदाब का पाठ पढ़ायेंगे ? उससे तो हम सबक़ सीखेंगे. आज़ाद जवान बेअदबी की सोच ही नहीं सकता. बेअदबी ख़ुद कमज़ोरी की निशानी है. बेअदबी बूढ़ों को खुजलाती और बच्चों को गुदगुदाती रहती है. बूढ़े बेअदबी से चिढ़ते भी हैं जैसे कोई खुजली की खुजलाहट से. बूढ़े बेअदबी में आनन्द भी मानते है. और वह आनन्द ऐसा ही होता है जैसा खुजली की खुजलाहट. दूसरों के सलाम न करने पर खीज बैठना और दूसरों को सलाम न करके यह समझना कि कुछ बड़ा काम किया बूढ़ों का काम है, न कि जवानों का.

किसी जवान लड़के या लड़की के बारे में ही कभी कभी यह सुनने को मिल जाता है कि उसने अपने बाप को रिशवत लेने से रोक दिया या अपने बड़े भाई और चचा को चोर बाज़ारी न करने दी. असल में आज़ादी ऐसी चीज़ नहीं जिसे बूढ़े हज़म कर सकें. इसके हज़म करने के लिये जवान मेदा ही चाहिये. और यह कि कोई आज़ादी को हज़म कर गया कैसे पहचाना जाय ? आज़ादी हज़म कर जाने वाला आदमी दूसरों की आज़ादी में रुकावट नहीं डालता. दूसरों को आज़ाद करके ख़ुश होता है. दूसरों को आज़ाद होते हुए देखकर आनन्द मानता है. आज़ाद होने की बातें सुनकर उसके मन

بھڑ جاتا ھے تو شیر کو ھی ھار مان کر پیچھے قدم ھٹانا پڑتا ھے . پر سور کہاں من بہلاؤ کے لئے یا پیٹ کی خاطر جانوروں کو مارتا پھرتا ھے . جانور جانور ھوتا ھے' اِس لئے اپنے بچاؤ کی خاطر سور دوسرے کی جان لے لیتا ھے' پر جان ھی لیتا ھے . مردار کو مردار ھی سمجھتا ھے . آزاد جوانی کو اور پھر آدمی کی آزاد جوانی کو ھمیں نہ اھنسا کا سبق پڑھانا پڑیگا' نہ اخلاق کا پاٹھ . ھم تو سمجھتے ھیں کہ ھمیں اُسکو ادب آداب کی تعلیم بھی نہیں دینا ھوگی . پھلدار درختوں کو جھکنا کون سکھاتا ھے ؟ آزادی کے پھلوں سے لدے ھوئے جوان کو کیا ھم ادب آداب کا پاٹھ پڑھائینگے ؟ اُس سے تو ھم سبق سیکھینگے . آزاد جوان بے ادبی کی سوچ ھی نہیں سکتا . بے ادبی خود کمزوری کی نشانی ھے . بے ادبی بوڑھوں کو کھجلاتی اور بچوں کو گدگداتی رھتی ھے . بوڑھے بے ادبی سے چڑھتے بھی ھیں جیسے کوئی کھجلی کی کھجلاھٹ سے . بوڑھے بے ادبی میں آنند بھی مانتے ھیں . اور وہ آنند ایسا ھی ھوتا ھے جیسا کھجلی کی کھجلاھٹ . دوسروں کے سلام نہ کرنے پر کھیج بیٹھنا اور دوسروں کو سلام نہ کر کے یہ سمجھنا کہ کچھ بڑا کام کیا بوڑھوں کا کام ھے' نہ کہ جوانوں کا .

کسی جوان لڑکے یا لڑکی کے بارے میں ھی کبھی کبھی یہ سننے کو مل جاتا ھے کہ اُس نے اپنے باپ کو رشوت لینے سے روک دیا یا اپنے بڑے بھائی اور چچا کو چور بازاری نہ کرنے دی . اصل میں آزادی ایسی چیز نہیں جسے بوڑھے ھضم کر سکیں . اس کے ھضم کرنے کے لئے جوان معدہ ھی چاھئے . اور یہ کہ کوئی آزادی کو ھضم کر گیا کیسے پہچانا جائے ؟ آزادی ھضم کر جانے والا آدمی دوسروں کی آزادی میں رکاوٹ نہیں ڈالتا . دوسروں کو آزاد کر کے خوش ھوتا ھے . دوسروں کو آزاد ھوتے ھوئے دیکھکر آنند مانتا ھے . آزاد ھونے کی باتیں سنکر اُس کے من

में उमंगें उठती हैं. हिन्दुस्तान में आजादी हजम मेदे वाले जवानों के रहते क्या कभी मुमकिन था कि रिशवतखोरी और चोर बाजारी यहाँ जड़ पकड़ पाती ? और क्या यह मुमकिन था कि उनके रहते बच्चों को दूध के लिये और माओं को नमक के लिये और बीमारों को दवा के लिये और बूढ़े-दिल जवानों को आटे दाल के लिये तरसना पड़ता और बेचने वाले और खरीदारों के बीच आए दिन हर चीज के लिये लुका छिपी का खेल हुआ करता. आजाद जवानों के रहते क्या यह मुमकिन था कि भारत के मुसलमान पाकिस्तान भागने की सोचते और पाकिस्तान के हिन्दू भारत आने के लिये हर दम रकाब में पाँव डाले हुए दिखाई देते. आजाद जवानों के रहते क्या यह मुमकिन था कि अँगरेजी ही नहीं अँगरेजियत हम सबके सिरों पर सवार रहती. आजाद जवानों के रहते भारत का क्या का क्या होगया होता इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता. जापान से हम बड़े हैं तो चीन से हम छोटे हैं. छोटे जापान और बड़े चीन के जवान जब इतनी जल्दी अपने न-कुछ मुल्क को सब कुछ बना सकते हैं तो भारत के जवान ही ऐसे कठबधे क्यों ? सिर्फ इस वजह से कि वह धर्म और जात के रस्म रिवाजों से इतने जकड़े हुए हैं कि आजाद होते हुए भी गुलाम से बदतर हैं. बाहरी आजादी से कब क्या हुआ है ? जो कुछ हुआ है भीतरी आजादी से. जो जवान सोचने के लिये आजाद नहीं वह करने के लिये कैसे आजाद हो सकता है. और बग़ैर कुछ किये तो भारत ऊँचा उठता नहीं. और जब तक भारत ऊँचा न उठे आम आदमी को आजादी का पता लगता नहीं. और आम आदमी को आजादी का मजा आए बिना भारत की आजादी सुरक्षित नहीं. और अरक्षित आजादी गुलामी से कहीं ज्यादा खतरनाक. क्योंकि वह फूट की जड़ है. और मुल्क के लिये फूट तो दूसरे मुल्क को अपने ऊपर हकूमत करने के लिये न्योता देना है. तो क्या भारत के जवान यह सब बैठे बैठे देखते रहेंगे ? जवान-दिल गांधी बूढ़ा रहते

میں اُمنگیں اُٹھتی ھیں . ھندستان میں آزادی ھضم معدے والے جوانوں کے رھتے کیا کبھی ممکن تھا کہ رشوت خوری اور چور بازاری یہاں جڑ پکڑ پاتی ؟ اور کیا یہ ممکن تھا کہ اُنکے رھتے بچوں کو دودھ کے لئے اور ماؤں کو نمک کے لئے اور بیماروں کو دوا کے لئے اور بوڑھے-دل جوانوں کو آٹے دال کے لئے ترسنا پڑتا اور بیچنے والے اور خریداروں کے بیچ آئے دن ھر چیز کے لئے لوکاچھپی کا کھیل ھوا کرتا . آزاد جوانوں کے رھتے کیا یہ ممکن تھا کہ بھارت کے مسلمان پاکستان بھاگنے کی سوچتے اور پاکستان کے ھندو بھارت آنے کے لئے ھر دم رکاب میں پاؤں ڈالے ھوئے دکھائی دیتے . آزاد جوانوں کے رھتے کیا یہ ممکن تھا کہ انگریزی ھی نہیں انگریزیت ھم سب کے سروں پر سوار رھتی . آزاد جوانوں کے رھتے بھارت کا کیا کا کیا ھو گیا ھوتا اُس کا اندازہ نہیں لگایا جا سکتا . جاپان سے ھم بڑے ھیں تو چین سے ھم چھوٹے ھیں . چھوٹے جاپان اور بڑے چین کے جوان جب اتنی جلدی اپنے نہ کچھ ملک کو سب کچھ بنا سکتے ھیں تو بھارت کے جوان ھی ایسے کٹھ بگھے کیوں ؟ صرف اس وجہ سے کہ وہ دھرم اور جات کے رسم و رواجوں سے اتنے جکڑے ھوئے ھیں کہ آزاد ھوتے ھوئے بھی غلام سے بدتر ھیں . باھری آزادی سے کب کیا ھوا ھے ؟ جو کچھ ھوا ھے بھیتری آزادی سے . جو جوان سوچنے کے لئے آزاد نہیں وہ کرنے کے لئے کیسے آزاد ھو سکتا ھے . اور بغیر کچھ کئے تو بھارت اُونچا اُٹھتا نہیں . اور جب تک بھارت اُونچا نہ اُٹھے عام آدمی کو آزادی کا پتہ لگتا نہیں . اور عام آدمی کو آزادی کا مزہ آئے بنا بھارت کی آزادی سورکشت نہیں . اور اَرکشت آزادی غلامی سے کہیں زیادہ خطرناک . کیونکہ وہ پھوٹ کی جڑ ھے . اور ملک کے لئے پھوٹ تو دوسرے ملک کو اپنے اوپر حکومت کرنے کے لئے نیوتہ دینا ھے . تو کیا بھارت کے جوان یہ سب بیٹھے بیٹھے دیکھتے رھیں گے ؟ جوان-دل گاندھی بوڑھا رھتے

क्योंकि वह फूट की जड़ है. और मुल्क के लिये फूट तो दूसरे मुल्क को अपने ऊपर हकूमत करने के लिये न्योता देना है. तो क्या भारत के जवान यह सब बैठे बैठे देखते रहेंगे ? जवान-दिल गांधी बूढ़ा रहते

کرنے کے لئے نیوتہ دینا ہے . تو کیا بھارت کے جوان یہ سب بیٹھے بیٹھے دیکھتے رہیں گے ؟ جوان-دل گاندھی بوڑھا رہتے

भी गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ गया. क्या भारत के जवान-दिल जवान धर्म और जात के बंधनों से ऊँचे नहीं उठ सकते ? और इन भीतर की बेड़ियों को तोड़ कर क्या दुनिया को यह नहीं बता सकते कि वह दुनिया पर शान्ति का राज क़ायम करने में किसी से पीछे नहीं रहेंगे ? और उनके रहते क्या यह न हो सकेगा कि एक मुल्क दूसरे पर न छाया रहे, न छा सके या एक महाद्वीप दूसरे महाद्वीप को धमकी न दे सके ?

जवानो ! हम चाहते हैं कि तुम आज़ादी के दीवाने हो जाओ. कोरे दीवाने नहीं, समझदार दीवाने. समझदारी से भरा तुम्हारा दीवानापन रंग लाए बग़ैर न रहेगा. अन्दर की आज़ादी बड़ी चीज़ होती है. वह करोड़ों बिजली के बल्ब से भी कहीं ज़्यादा तेज़ रोशनी फेंकती है. और उस रोशनी में यह हो ही नहीं सकता कि तुम्हारे आसपास के लोग और तुम्हारे पड़ोसी मुल्क सच्ची आज़ादी के दर्शन न कर लें और उस पर फ़रेफ़्ता होकर वह सच्चे मानी में आज़ाद न हो जायँ और औरों को आज़ाद देखकर ख़ुश न हों. आज़ादी की ऐसी ख़ुशी ही सारी दुनिया की शान्ति की गारंटी हो सकती है.

—भगवानदीन

بھی غلامی کی بیڑیاں توڑ گیا . کیا بھارت کے جوان-دل جوان دھرم اور ذات کے بندھنوں سے اونچے نہیں اُٹھ سکتے ؟ اور ان بھیتر کی بیڑیوں کو توڑ کر کیا دنیا کو یہ نہیں بتا سکتے کہ وہ دنیا پر شانتی کا راج قائم کرنے میں کسی سے پیچھے نہیں رہیں گے ؟ اور اُنکے رہتے کیا یہ نہ ہو سکے گا کہ ایک ملک دوسرے پر نہ چھایا رہے، نہ چھا سکے یا ایک مہادیپ دوسرے مہا دیپ کو دھمکی نہ دے سکے ؟

جوانو ! ہم چاہتے ہیں کہ تم آزادی کے دیوانے ہو جاؤ . کورے دیوانے نہیں، سمجھدار دیوانے . سمجھداری سے بھرا تمہارا دیوانہ‌پن رنگ لائے بغیر نہ رہیگا . اندر کی آزادی بڑی چیز ہوتی ہے . وہ کروڑوں بجلی کے بلب سے بھی کہیں زیادہ تیز روشنی پھینکتی ہے . اور اُس روشنی میں یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ تمہارے آس پاس کے لوگ اور تمہارے پڑوسی ملک سچی آزادی کے درشن نہ کر لیں اور اُس پر فریفتہ ہو کر وہ سچے معنوں میں آزاد نہ ہو جائیں اور اوروں کو آزاد دیکھکر خوش نہ ہوں . آزادی کی ایسی خوشی ہی ساری دنیا کی شانتی کی گارنٹی ہو سکتی ہے .

—بھگوان دین

"जिस तरह हिन्सा की लड़ाई में कुछ क़ानून क़ायदे होते हैं उसी तरह अहिन्सा की लड़ाई में भी होते हैं. दुनिया आज केवल हिन्सा की लड़ाई के क़ायदों को जानती है. हिन्सा बुराई करने वाले को सज़ा देती है, अहिन्सा बुराई करने वाले को, शराबी और चोर को प्रेम से समझा कर सुधारती है."

— महात्मा गांधी

"جسطرح ہنسا کی لڑائی میں کچھ قانون قاعدے ہوتے ہیں اُسی طرح اہنسا کی لڑائی میں بھی ہوتے ہیں . دنیا آج کیول ہنسا کی لڑائی کے قاعدوں کو جانتی ہے . ہنسا برائی کرنے والے کو سزا دیتی ہے، اہنسا برائی کرنے والے کو، شرابی اور چور کو پریم سے سمجھا کر سدھارتی ہے ."

—مہاتما گاندھی

जंग की जड़ें

(भाई आशाराम)

पत्र पत्रिकाओं में आए दिन जंग की चरचा रहती है. छोट मोटी लड़ाइयाँ बहुत जगह चल भी रही हैं. मलाया, वियतनाम, बरमा, कोरिया वग़ैरा की लड़ाई शान्त नहीं हुई और निकट भविश्य में शान्त होते दिखाई भी नहीं देती. डर है कि लड़ाई फैल न जाए और अन्तरक़ौमी रूप न लेले. संसार के हर शहरी का फ़र्ज़ है कि वह अपनी शक्ति भर जंग को रोके. पर जंग को रोकने के पहले उसे जंग के रूप, उसके कारनों और रोकने के उपायों को समझ लेना चाहिये.

कुछ विचारक जंग को ज़रूरी समझते हैं. उन का कहना है कि आदमी जंगजू यानी युद्ध प्रेमी प्रानी है. हथियार न होने पर भी वह ईंट पत्थर से सर फोड़ लेता है. एक सज्जन ने 'हथियार छोड़ो कानफ़रेन्स' में यही बात कही थी.

लेकिन अगर आदमी ऐसा ही ख़ूँख़ार जानवर है तो मानव जाति आपस में लड़कर ख़तम क्यों नहीं हो गई? सच यह है कि जन-गिनती बढ़ती जाती है. आदमी समाजप्रेमी प्रानी है. वह समाज और सहयोग के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकता.

फ़ासिस्ट विचारक भी जंग को जरूरी समझते हैं. उनका कहना है कि राज भी व्यक्ति की तरह आगे बढ़ते और पीछे हटते हैं. इसलिये जरमनी और इटली ने जंग करके अपने साम्राज की नींव डालनी चाही. पर संसार की जनता ने इस घातक असूल को नहीं अपनाया और जरमनी, जापान, और इटली अपने असूलों

جنگ کی جڑیں

(بھائی آشا رام)

پتر پتریکاؤں میں آئے دن جنگ کی چرچا رہتی ہے ۔ چھوٹی موٹی لڑائیاں بہت جگہ چل بھی رہی ہیں ۔ ملایا، ویت نام، برما، کوریا وغیرہ کی لڑائی شانت نہیں ہوئی اور نکٹ بھوشیہ میں شانت ہوتے دکھائی بھی نہیں دیتی ۔ ڈر ہے کہ لڑائی پھیل نہ جائے اور انتر قومی روپ نہ لے لے ۔ سنسار کے ہر شہری کا فرض ہے کہ وہ اپنی شکتی بھر جنگ کو روکے ۔ پر جنگ کو روکنے کے پہلے اُسے جنگ کے روپ اُس کے کارنوں اور روکنے کے اُپایوں کو سمجھ لینا چاہئیے ۔

کچھ وچارک جنگ کو ضروری سمجھتے ہیں ۔ اُن کا کہنا ہے کہ آدمی جنگجو یعنی یدھ پریمی پرانی ہے ۔ ہتھیار نہ ہونے پر بھی وہ اینٹ پتھر سے سر پھوڑ لیتا ہے ۔ ایک سجن نے 'ہتھیار چھوڑو کانفرنس' میں یہی بات کہی تھی ۔

لیکن اگر آدمی ایسا ہی خونخوار جانور ہے تو مانوجاتی آپس میں لڑکر ختم کیوں نہیں ہو گئی؟ سچ یہ ہے کہ جن گنتی بڑھتی جاتی ہے ۔ آدمی سماج پریمی پرانی ہے ۔ وہ سماج اور سہیوگ کے بنا زندہ نہیں رہ سکتا ۔

فاسسٹ وچارک بھی جنگ کو ضروری سمجھتے ہیں ۔ اُن کا کہنا ہے کہ راج بھی ویکتی کی طرح آگے بڑھتے اور پیچھے ہٹتے ہیں ۔ اس لئے جرمنی اور اٹلی نے جنگ کر کے اپنے سامراج کی نیو ڈالنی چاہی ۔ پر سنسار کی جنتا نے اِس گھاتک اصول کو نہیں اپنایا اور جرمنی، جاپان اور اٹلی اپنے اصولوں

इसलिये जरमनी और इटली ने जंग करके अपने साम्राज की नींव डालनी चाही. पर संसार की जनता ने इस घातक असूल को नहीं अपनाया और जरमनी, जापान, और इटली अपने असूलों के ख़ुद ही शिकार हो गए. संसार साम्राजवादियों की ग़ुलामी करने को तैयार न था.

इसी तरह के असूलों को लेकर योरपी जातियों ने पिछड़े हुए देसों—एशिया, अफ़रीक़ा, बीच और दक्खिन अमरीका में क़दम रक्खा था. उनका कहना था कि गोरी जातियाँ अधिक सभ्य हैं. दूसरी जातियाँ असभ्य हैं. इन देसों में सभ्यता फैलाना, ईसाई धर्म और उसके असूलों का प्रचार करना हमारा धर्म है. वह योरपी सभ्यता का बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए अफ़रीक़ा, एशिया जैसे देसों में आए. पर इसके पीछे असलियत क्या थी? योरपी जातियों ने अफ़रीक़ा के हबशी, अमरीका के रेड इन्डियन, आस्ट्रेलिया के आदिम बासियों को मिटाना और उनका देस छीनना शुरू किया. दुनिया के कई हिस्सों में उनको सफलता भी मिली. एशिया के अनेक देसों को ग़ुलाम बना लिया गया और वहाँ जोंकपन (शोशन) शुरू हो गया. तीन सौ बरस तक अफ़रीक़ा के हबशियों को ग़ुलाम बनाकर अमरीका में बेचा गया, बरसों तक हिन्दुस्तानी, चीनी और दूसरी एशियाई जातियों को लगभग ग़ुलाम बनाकर अफ़रीक़ा और अमरीका के खेतों पर काम करने के लिये रक्खा गया. सभ्यता के प्रचारक गोरे साम्राजवादियों ने चीन में अफ़ीम का प्रचार किया और जब चीनी सरकार ने चूंचरा की तो डंडे के ज़ोर से उसको अफ़ीम ख़रीदने पर मजबूर किया. पन्द्रहवीं सदी से आज तक बहुत सी लड़ाइयाँ सभ्यता के प्रचार के नाम पर लड़ी गई हैं. और आज भी पच्छिमी रहन सहन की रच्छा का सवाल उठाया जाता है. पुर्तगाल और फ़्रांस भारत के कुछ इलाक़ों पर जमे हुए हैं. उनका कहना है कि इन इलाक़ों में उन्होंने अपनी सभ्यता का प्रचार किया है और इस से वहाँ पर उनके कुछ अधिकार हो गए हैं. पुराने साम्राजवादी क़ौमी आज़ादी के आन्दोलनों के ख़िलाफ़ ऐसी ही

ہیں۔ اس لئے جرمنی اور اٹلی نے جنگ کر کے اپنے سامراج کی نیو ڈالنی چاہی۔ پر سنسار کی جنتا نے اس گھاتک اصول کو نہیں اپنایا اور جرمنی، جاپان اور اٹلی اپنے اصولوں کے خود ہی شکار ہو گئے۔ سنسار سامراج وادیوں کی غلامی کرنے کو تیار نہ تھا۔

اسی طرح کے اصولوں کو لیکر یورپی جاتیوں نے پچھڑے ہوئے دیشوں — ایشیا، افریقہ، بیچ اور دکھن امریکہ میں قدم رکھا تھا۔ اُن کا کہنا تھا کہ گوری جاتیاں ادھک سبھیہ ہیں۔ دوسری جاتیاں اسبھیہ ہیں۔ اِن دیسوں میں سبھیتا پھیلانا، عیسائی دھرم اور اُس کے اصولوں کا پرچار کرنا ہمارا دھرم ہے۔ وہ یورپی سبھیتا کا بوجھ اپنی پیٹھ پر لادے ہوئے افریقہ، ایشیا جیسے دیسوں میں آئے۔ پر اس کے پیچھے اصلیت کیا تھی؟ یورپی جاتیوں نے افریقہ کے حبشی، امریکہ کے ریڈ انڈین، آسٹریلیا کے آدم واسیوں کو مٹانا اور اُن کا دیس چھیننا شروع کیا۔ دنیا کے کئی حصوں میں اُنکو سپھلتا بھی ملی۔ ایشیا کے انیک دیسوں کو غلام بنا لیا گیا اور وہاں جونک پن شوشن شروع ہو گیا۔ تین سو برس تک افریقہ کے حبشیوں کو غلام بنا کر امریکہ میں بیچا گیا، برسوں تک ہندستانی، چینی اور دوسری ایشیائی جاتیوں کو لگ بھگ غلام بناکر افریقہ اور امریکہ کے کھیتوں پر کام کرنے کے لئے رکھا گیا۔ سبھیتا کے پرچارک گورے سامراج وادیوں نے چین میں افیم کا پرچار کیا، اور جب چینی سرکار نے چوں چرا کی تو ڈنڈے کے زور سے اُسکو افیم خریدنے پر مجبور کیا۔ پندرھویں صدی سے آج تک بہت سی جنگ سبھیتا کے پرچار کے نام پر لڑی گئی ہیں اور آج بھی پچھمی رہن سہن کی رکشا کا سوال اُٹھایا جاتا ہے۔ پرتگال اور فرانس بھارت کے کچھ علاقوں پر جمے ہوئے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ ان علاقوں میں اُنھوں نے اپنی سبھیتا کا پرچار کیا ہے اور اس سے وہاں پر اُن کے کچھ ادھیکار ہو گئے ہیں۔ پرانے سامراج وادی [illegible] قومی آزادی کے آندولنوں کے خلاف ایسی ہی

दलीलें देते हैं. हम हिन्दुस्तानी इस दलील के शिकार रह चुके हैं और आज़ादी का आन्दोलन खड़ा कर के इस का जवाब दे चुके हैं.

काले गोरे की दलील इसी से मिलती जुलती है. हमारे अफ़रीक़ी भाई इसी दलील के शिकार हैं. लगभग तीन लाख भारती जनता को दक्खिन अफ़रीक़ा के गोरे मालिक क़ुली कहकर पुकारते हैं. उनके रास्ते में तरह तरह की माली बाधाएँ खड़ी करते हैं. ज़मीन या दूसरी तरह की जायदाद रखने के अधिकार बहुत कम कर दिए गए हैं. भारती जनता को दक्खिन अफ़रीक़ा में राजकाजी अधिकार जैसे असेम्बली वग़ैरा में अपने प्रतिनिधि भेजने के अधिकार नहीं. अफ़रीक़ी जनता के साथ योरपी मालिकों का बरताव और भी बुरा है. अमरीका में लगभग सौ पीछे दस जनता हबशी है. इनको तरह तरह की माली, समाजी और राजकाजी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है. आर्थिक संकट के समय इनको सबसे पहिले काम से अलग कर के बेकार बना दिया जाता है. इनको सबसे कठिन काम दिया जाता है. यह सफ़ेद चमड़ी वाले विद्यार्थियों के साथ बैठकर तालीम नहीं पा सकते, पर इनकी अपनी तालीम का कोई ख़ास प्रबन्ध नहीं. वोट का अधिकार कहने भर को है. अगर कोई हबशी वोट देने का जतन करे तो दक्खिन की अफ़रीक़ी रियासतों में मार भी दिया जाता है. वह दुकान से जूता ख़रीद सकता है पर पैर में डालकर नहीं देख सकता. भला उसके पैर से छुआ जूता गोरी चमड़ी वाला किस तरह छू सकता है! एक बार हबशियों के वोट से एक हबशी अमरीकी काँगरेस का मेम्बर हो गया. परन्तु वह दूसरे गोरे मेम्बरों के साथ रेल में कैसे जा सकता था? उसके लिये अलग से गाड़ी के डिब्बे का इन्तज़ाम किया गया.

पहली जंग के बाद जापानी मेम्बर ने सुझाव रक्खा था कि रंग की ... काले गोरे की बराबरी के ... मान लिया जाए. पर

دلیلیں دیتے ہیں . ہم ہندستانی اِس دلیل کے شکار رہ چکے ہیں اور آزادی کا آندولن کھڑا کر کے اِس کا جواب دے چکے ہیں .

کالے گورے کی دلیل اسی سے ملتی جلتی ہے . ہمارے افریقی بھائی اسی دلیل کے شکار ہیں . لگ بھگ تین لاکھ بھارتی جنتا کو دکھن افریقہ کے گورے مالک قلی کہکر پکارتے ہیں . اُن کے راستے میں طرح طرح کی مالی بادھائیں کھڑی کرتے ہیں . زمین یا دوسری طرح کی جائداد رکھنے کے ادھیکار بہت کم کر دئے گئے ہیں . بھارتی جنتا کو دکھن افریقہ میں راج کاجی ادھیکار جیسے اسمبلی وغیرہ میں اپنے پرتیندھی بھیجنے کے ادھیکار نہیں . افریقی جنتا کے ساتھ یورپی مالکوں کا برتاؤ اور بھی برا ہے . امریکہ میں لگ بھگ سو پیچھے دس جنتا حبشی ہے . اِنکو طرح طرح کی مالی، سماجی اور راج کاجی کٹھنائیوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے . آرتھک سنکٹ کے سمے اِن کو سب سے پہلے کام سے الگ کر کے بیکار بنا دیا جاتا ہے . اِنکو سب سے کٹھن کام دیا جاتا ہے . یہ سفید چمڑی والے ودیارتھیوں کے ساتھ بیٹھکر تعلیم نہیں پاسکتے، پر ان کی اپنی تعلیم کا کوئی خاص پربندھ نہیں . ووٹ کا ادھیکار کہنے بھر کو ہے . اگر کوئی حبشی ووٹ دینے کا جتن کرے تو دکھن کی امریکی ریاستوں میں مار بھی دیا جاتا ہے . وہ دوکان سے جوتا خرید سکتا ہے پر پیر میں ڈال کر نہیں دیکھ سکتا . بھلا اُسکے پیر سے چھوا جوتا گوری چمڑی والا کس طرح چھو سکتا ہے ! ایک بار حبشیوں کے ووٹ سے ایک حبشی امریکی کانگریس کا ممبر ہو گیا پر وہ دوسرے گورے ممبروں کے ساتھ ریل میں کیسے جا سکتا تھا ؟ اسکے لئے الگ سے گاڑی کے ڈبے کا انتظام کیا گیا .

پہلی جنگ کے بعد جاپانی ممبر نے سجھاؤ رکھا تھا کہ رنگ ...

मेम्बरों के साथ रेल में कैसे जा सकता था? उसके लिये अलग से गाड़ी के डिब्बे का इन्तजाम किया गया.

पहली जंग के बाद जापानी मेम्बर ने सुझाव रक्खा था कि रंग

ڈبے کا انتظام کیا گیا .

ब्रिटेन और अमरीका जैसे देसों ने इसको न माना! अबकी बार भी अफ़रीकावासी भारती जनता की बराबरी की मांग के सबसे बड़े विरोधी अमरीका, ब्रिटेन आस्ट्रेलिया जैसे गोरी चमड़ी वाले देस हैं.

जंग छेड़ने के लिये साम्राजवादियों ने अकसर आर्थिक कठिनाइयों का बहाना लिया है. पहली जंग में हारने के बाद जरमनी ने सन १९२७ से कच्चे माल के बटवारे और मंडियों का सवाल उठाया था. इंगलैन्ड में कई राजनेता ऐसे थे जो जरमनी की इस मांग से हमदर्दी रखते थे, और इसी आधार पर उन्होंने जरमनी को आस्ट्रिया और चैकोस्लोवेकिया हड़पने या बलक़ान रियासतों में पढ़ने से नहीं रोका. जापान का कहना था कि उसके लिये मन्चूरिया के सोयाबीन और लोहा, चीन की कपास और कोयला, न्यूगिनी वग़ैरा का मिट्टी का तेल जरूरी है. उनका यह भी कहना था कि हमारी बढ़ती हुई जन-गिनती के लिये रहने की जगह भी चाहिये. इस समय भी ऐसी दलीलें दी जाती हैं. कहा जाता है कि बीच-एशिया का मिट्टी का तेल और दक्खिन पूरबी एशिया की धातें इंगलैन्ड और अमरीका के लिये जरूरी हैं और इसलिये इनके ऊपर असर रखना या इनको अपने साथ रखना जरूरी है. अमरीका जैसे देसों में यह भी भावना है कि बढ़ती हुई जन-गिनती के लिये इलाक़ों की जरूरत है. यह दलीलें भी लचर हैं. नारवे, स्वीडन स्विटजरलैन्ड वग़ैरा कई देस हैं जो बिना उपनिवेशों (नई आबादियों) के कच्चा माल हासिल कर लेते हैं और ज़िन्दा हैं. और अगर जन गिनती बढ़ी है तो चीन, भारत, जावा जैसे एशियाई देसों की बढ़ी है जहाँ योरपी और अमरीकी साम्राजवादी अपने लोगों को बसाना चाहते हैं.

कहा जाता है कि मनोविज्ञानी (नफ़सियाती) कारनों से भी जंग हो जाती है. डर के कारन देस जंग की तैयारियाँ करने लगते

برٹین اور امریکہ جیسے دیسوں نے اس کو نہ مانا ! اب کی بار بھی افریقہ واسی بھارتی جنتا کی برابری کی مانگ کے سب سے بڑے وِرودھی امریکہ، برٹین، آسٹریلیا جیسے گوری چمڑی والے دیس ہیں .

جنگ چھیڑنے کے لئے سامراج وادیوں نے اکثر آرتھک کٹھنائیوں کا بہانہ لیا ہے . پہلی جنگ میں ہارنے کے بعد جرمنی نے سن ۱۹۲۷ سے کچے مال کے بٹوارے اور منڈیوں کا سوال اُٹھایا تھا . انگلینڈ میں کئی راج نیتا ایسے تھے جو جرمنی کی اس مانگ سے ہمدردی رکھتے تھے اور اِسی آدھار پر اُنہوں نے جرمنی کو آسٹریا اور چیکوسلویکیہ ہڑپنے یا بلقان ریاستوں میں بڑھنے سے نہیں روکا . جاپان کا کہنا تھا کہ اسکے لئے منچوریا کے سویا بین اور لوہا، چین کی کپاس اور کوئلہ، نیوگنی وغیرہ کا مٹی کا تیل ضروری ہے . اُن کا یہ بھی کہنا تھا کہ ہماری بڑھتی ہوئی جن گنتی کے لئے رہنے کی جگہ بھی چاہئے . اس سمے بھی ایسی دلیلیں دی جاتی ہیں . کہا جاتا ہے کہ بیچ ایشیا کا مٹی کا تیل اور دکھن پوربی ایشیا کی دھاتیں انگلینڈ اور امریکہ کے لئے ضروری ہیں اور اس لئے اِنکے اوپر اثر رکھنا یا اِنکو اپنے ساتھ رکھنا ضروری ہے . امریکہ جیسے دیسوں میں یہ بھی بھاونا ہے کہ بڑھتی ہوئی جن گنتی کے لئے علاقوں کی ضرورت ہے . یہ دلیلیں بھی لچر ہیں . ناروے، سوئڈن، سوئٹزرلینڈ وغیرہ کئی دیس ہیں جو بنا اُپ نویشوں (نئی آبادیوں) کے کچا مال حاصل کر لیتے ہیں اور زندہ ہیں . اور اگر جن گنتی بڑھی ہے تو چین، بھارت، جاوا جیسے ایشیائی دیسوں کی بڑھی ہے جہاں یورپ اور امریکی سامراج وادی اپنے لوگوں کو بسانا چاہتے ہیں .

کہا جاتا ہے کہ منوویگیانی (نفسیاتی) کارنوں سے بھی جنگ ہو جاتی ہے . ڈر کے کارن دیس جنگ کی تیاریاں کرنے لگتے

हैं. जंग की तैयारियों के साथ ही जंग की भावनाएँ और दुशमन के ख़िलाफ़ चेतना जाग जाती है और इस चेतना के बढ़ने के साथ किसी भी समय जंग अचानक ही छिड़ जाती है. जंग से देस को लाभ नहीं होता. किसी को लाभ नहीं होता. पर सुरक्षा और आज़ादी के लिये जंग छिड़ जाती है. उनका कहना है कि अगर अन्तरक़ौमी पैमाने पर सुरक्षा का प्रबन्ध हो जाए तो जंग नामुमकिन हो जाएगी. पर जंग को केवल मनोविज्ञानी कारनों से जोड़ना असलियत से मुँह मोड़ना है. १९३१ में चीन से जापान को क्या डर हो सकता था? सन् १९१४ में ब्रिटेन को जर्मनी से डर था. लेकिन इसलिये कि वह मंडियों की मांग कर रहा था.

आज भी मलाया, वीयतनाम, मिस्र और ईरान में आज़ादी या लोकशाही की रक्षा या कम्युनिस्टों के दमन का सवाल नहीं हैं. सवाल है इन देसों में साम्राजवादी हितों की रक्षा का. अंगरेज़ राजनेता कहते हैं कि मलाया की रबर, टीन, लकड़ी वग़ैरा से डालर कमाए जाते हैं. इसलिये इस इलाक़े को छोड़ने का सवाल नहीं उठता. अगर ईरान के तेल के कारख़ाने वहाँ की सरकार को मिल जाएँ तो वहाँ हर आदमी को लगभग दो टन मिट्टी का तेल हर साल मिल सकता है और उनका खाने का काम चल सकता है. लेकिन साथ ही ब्रिटिश सेठों का दिवाला भी निकल जाएगा. मिस्र को छोड़ने के साथ ही ब्रिटिश साम्राज का प्रभाव बीच-एशिया के मुस्लिम देसों से मिट जाएगा और उसका एशिया का रास्ता बन्द हो जाएगा जिसके फल रूप उसको हिन्द महासागर और दक्खिन पूरबी एशिया से भी हाथ धोना पड़ेगा. अपनी मंडियों और अपनी पूँजी की रक्षा के लिये साम्राजवाद दूसरे देसों पर राजकाजी दबाव रखना ज़रूरी समझता है और राजकाजी दबाव बिना फ़ौजी अड्डों के नामुमकिन है. इसीलिये ब्रिटेन मिस्र में जमा रहना चाहता है और [illegible] फ़ौजें [illegible] तो उनको [illegible]

هیں . جنگ کی تیاریوں کے ساتھ هی جنگ کی بھاونائیں اور دشمن کے خلاف چیتنا جاگ جاتی هے اور اس چیتنا کے بڑھنے کے ساتھ کسی بھی سمے جنگ اچانک هی چھڑ جاتی هے . جنگ سے دیس کو لابھ نہیں هوتا' کسی کو لابھ نہیں هوتا . پر سورکشا اور آزادی کے لئے جنگ چھڑ جاتی هے . اُن کا کہنا هے کہ اگر انتر قومی پیمانے پر سورکشا کا پربندھ هو جائے تو جنگ ناممکن هو جائے گی . پر جنگ کو کیول منووگیانی کارنوں سے جوڑنا اصلیت سے منھ موڑنا هے . ١٩٣١ میں چین سے جاپان کو کیا ڈر هو سکتا تھا ؟ سن ١٩١٤ میں برٹین کو جرمنی سے ڈر تھا . لیکن اِس لئے کہ وہ منڈیوں کی مانگ کر رہا تھا .

آج بھی ملایا' ویت نام' مصر اور ایران میں آزادی یا لوک شاهی کی رکشا یا کمیونسٹوں کے دمن کا سوال نہیں هے . سوال هے اِن دیسوں میں سامراج وادی هتوں کی رکشا کا . انگریز راج نیتا کہتے هیں کہ ملایا کی ربر' ٹین' لکڑی وغیرہ سے ڈالر کمائے جاتے هیں . اِس لئے اس علاقے کو چھوڑنے کا سوال نہیں اُٹھتا . اگر ایران کے تیل کے کارخانے وهاں کی سرکار کو مل جائیں تو وهاں هر آدمی کو لگ بھگ دو ٹن مٹی کا تیل هر سال مل سکتا هے اور اُن کا کھانے کا کام چل سکتا هے . لیکن ساتھ هی برٹش سیٹھوں کا دیوالہ بھی نکل جائیگا . مصر کو چھوڑنے کے ساتھ هی برٹش سامراج کا پربھاؤ بیچ ایشیا کے مسلم دیسوں سے مٹ جائیگا اور اُسکا ایشیا کا راستہ بند هو جائیگا جسکے پھل روپ اُسکو هند مہاساگر اور دکھن پوربی ایشیا سے بھی هاتھ دھونا پڑیگا . اپنی منڈیوں اور اپنی پونجی کی رکشا کے لئے سامراج واد دوسرے دیسوں پر راج کاجی دباؤ رکھنا ضروری سمجھتا هے اور راج کاجی دباؤ بنا فوجی اڈوں کے ناممکن هے . اس لئے برٹین مصر میں جما رهنا چاهتا هے اور [illegible]

पूँजी की रक्षा के लिये साम्राजवाद दूसरे देसों पर राजकाजी दबाव रखना ज़रूरी समझता है और राजकाजी दबाव बिना फ़ौजी अड्डों के नामुमकिन है. इसीलिये ब्रिटेन मिस्र में जमा रहना चाहता है और [illegible]

में ईरान की सरहद पर डाल देता है. इसी तरह अमरीका दुनिया भर में पाँच सौ फ़ौजी अड्डे हासिल कर चुका है. पर यह ऐसी प्यास है कि बुझ नहीं सकती.

श्री नेहरू जब पिछली बार अमरीका गए थे, तब उन्हों ने कुछ ऐसी बातें भी कही थीं. अमरीकियों को यह बातें अच्छी नहीं लगीं. अच्छी लगती भी क्यों? उन्होंने कहा था कि काले गोरे में फ़रक़ करना, साम्राजवाद और पिछड़े देसों की गिरी हुई माली हालत जंग को दावत देती है. इस कहने में सच्चाई है. योरपी जातियाँ एशिया और अफ़रीक़ा के देसों पर सैकड़ों बरस से राज कर रही हैं. पर उन देसों की समाजी, आर्थिक, राजकाजी और कलचरी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ, उल्टे बिगाड़ हुआ है. पर आज भी गोरे मालिकों को समझ नहीं आई. उनके सामने एशिया के सुधार का सवाल नहीं. सवाल है क़ौमी आज़ादी की शक्तियों को कुचलने, उनको दबाने का. नहीं तो अमरीका, ब्रेज़ील, आस्ट्रेलिया जैसे देसों में गेहूँ और आलू बरबाद न किये जाते. वह सस्ते दामों पर या बिना मोल एशिया की भूखी जनता को दिये जासकते थे. पर दिया क्या जाता है? अपने एजेन्टों, च्यांग, बाओदाई और सिंघमरी को अपने देसबासियों से लड़ने के लिये हथियार. जनता की भूक को गोली से शान्त किया जाता है. इन देसों के उद्योगों या कल कारख़ानों को कोई सहायता नहीं दी जाती. कोशिश यह है कि इन देसों के उद्योग धन्दे, कल कारख़ाने, बैंक-व्यवसाय, खेतीबारी, खुद उनके हाथ लग जाए.

जंग से किसको लाभ होता है? कहा जाता है जंग से जनता भी फ़ायदा उठाती है. और कुछ नहीं तो बेकारी दूर हो जाती है, नौकरी मिल जाती है. इस समाज की अजीब हालत है. काम भी मिलता है तो मरने के लिये. बिना लड़ाई के काम नहीं. लेकिन बहुत

پونجی کی رکشا کے لئے سامراج واد دوسرے دیسوں پر راج کاجی دباؤ رکھنا ضروری سمجھتا ہے اور راج کاجی دباؤ بنا فوجی اڈوں کے ناممکن ہے ۔ اس لئے برٹین مصر میں جما رہنا [illegible]

میں ایران کی سرحد پر ڈال دیتا ہے ۔ اسی طرح امریکہ دنیا بھر میں پانچ سو فوجی اڈے حاصل کر چکا ہے ۔ پر یہ ایسی پیاس ہے کہ بجھ نہیں سکتی ۔

شری نہرو جب پچھلی بار امریکہ گئے تھے تب اُنھوں نے کچھ ایسی باتیں بھی کہی تھیں ۔ امریکیوں کو یہ باتیں اچھی نہیں لگیں ۔ اچھی لگتیں بھی کیوں ؟ اُنھوں نے کہا تھا کہ کالے گوروں میں فرق کرنا، سامراج واد اور پچھڑے دیسوں کی گری ہوئی مالی حالت جنگ کو دعوت دیتی ہے ۔ اِس کہنے میں سچائی ہے ۔ یورپی جاتیاں ایشیا اور افریقہ کے دیسوں پر سیکڑوں برس سے راج کر رہی ہیں ۔ پر اُن دیسوں کی سماجی، آرتھک، راج کاجی اور کلچری حالت میں کوئی سدھار نہیں ہوا، اُلٹے بگاڑ ہوا ہے ۔ پر آج بھی گورے مالکوں کو سمجھ نہیں آئی ۔ اُن کے سامنے ایشیا کے سدھار کا سوال نہیں ۔ سوال ہے قومی آزادی کی شکتیوں کو کچلنے اُن کو دبانے کا ۔ نہیں تو امریکہ، برازیل، آسٹریلیا جیسے دیسوں میں گیہوں اور آلو برباد نہ کئے جاتے ۔ وہ سستے داموں پر یا بنا مول ایشیا کی بھوکی جنتا کو دیئے جاسکتے تھے ۔ پر دیا کیا جاتا ہے ؟ اپنے ایجنٹوں چیانگ، باؤدائی اور سنگھمن ری کو اپنے دیس باسیوں سے لڑنے کے لئے ہتھیار ۔ جنتا کی بھوک کو گولی سے شانت کیا جاتا ہے ۔ اِن دیسوں کے اُدیوگوں یا کل کارخانوں کو کوئی سہایتا نہیں دی جاتی ۔ کوشش یہ ہے کہ اِن دیسوں کے اُدیوگ دھندے، کل کارخانے، بینک ویوسائے، کھیتی باڑی خود اُنکے ہاتھ لگ جائے ۔

جنگ سے کس کو لابھ ہوتا ہے ؟ کہا جاتا ہے جنگ سے جنتا بھی فائدہ اُٹھاتی ہے ۔ اور کچھ نہیں تو بیکاری دور ہوجاتی ہے، نوکری مل جاتی ہے ۔ اِس سماج کی عجیب حالت ہے ۔ کام بھی ملتا ہے تو مرنے کے لئے ۔ بنا لڑائی کے کام نہیں ۔ لیکن بہت

५

से देसों में लड़ाई के बावजूद भी बेकारी रह सकती है. आजकल की लड़ाई में लाखों आदमियों को फ़ौज में भरती करना पड़ता है, लाखों और करोड़ों घर बरबाद और तबाह हो जाते हैं, बच्चे अनाथ और स्त्रियाँ विधवा हो जाती हैं. देस की पैदावार लड़ाई में काम आती है, अधिकतर दौलत गोला बारूद बनाने में ख़र्च हो जाती है जिसके फल रूप जनता के लिये खाने पीने और कपड़ों की कमी हो जाती है. चीज़ों का दाम बढ़ जाता है. पर जंग से साम्राजवादियों और मुनाफ़ा ख़ोरों को बड़ा लाभ होता है. मलाया की जंग से बर्तानिया की जनता को करोड़ों रुपए की हानि हो रही है. उसको टैक्स देना पड़ता है. लेकिन मलाया के टीन और रबर के मालिक और हथियार बेचने वाले ब्रिटिश पूँजीपतियों को लाभ होता है. हिन्दचीन की जंग के कारन हर फ्राँसीसी शहरी को लगभग दो सौ रुपया हर साल टैक्स देना पड़ता है. लेकिन हिन्दचीन के चावल, कच्चे माल और धातों से फ्राँसीसी ब्योपारी और फ्राँस के गोला बारूद बनाने वाले पूँजी-पति करोड़ों का लाभ उठाते हैं. अमरीका ७५ अरब रुपया हर साल जंग के लिये ख़र्च करता है और १५० अरब रुपया ख़र्च करना चाहता है. इसके लिये हर अमरीकी को (चाहे वह बच्चा, बूढ़ा, नाबालिग़ या स्त्री क्यों न हो) एक हज़ार रुपया हर साल टैक्स देना होगा. अगर इस रुपए को बचाया जा सके तो देस की ग़रीबी और बेकारी दूर हो सकती है. लेकिन यह रुपया जनता की जेब से निकल कर हवाई जहाज़, जहाज़ी बेड़ा, बम वग़ैरा बनाने वालों की जेबों में चला जाता है.

जंग का ब्योपार बड़ा भयानक ब्योपार है. इस ब्योपार को बन्द करने की भरसक कोशिश करनी चाहिये. अभी तक संसार में देसों और जातियों के भाग्य का निपटारा करने वाले इने गिने व्यक्ति [illegible]

سے دیسوں میں لڑائی کے باوجود بھی بیکاری رہ سکتی ھے . آج کل کی لڑائی میں لاکھوں آدمیوں کو فوج میں بھرتی کرنا پڑتا ھے، لاکھوں اور کروڑوں گھر برباد اور تباہ ھوجاتے ھیں، بچے اناتھ اور استریاں ودھوا ھوجاتی ھیں . دیس کی پیداوار لڑائی میں کام آتی ھے . ادھک تر دولت گولہ بارود بنانے میں خرچ ھوجاتی ھے جسکے پھل روپ جنتا کیلئے کھانے پینے اور کپڑوں کی کمی ھوجاتی ھے . چیزوں کا دام بڑھ جاتا ھے . پر جنگ سے سامراج وادیوں اور منافع خوروں کو بڑا لابھ ھوتا ھے . ملایا کی جنگ سے برطانیہ کی جنتا کو کروڑوں روپے کی ھانی ھو رھی ھے . اُسکو ٹیکس دینا پڑتا ھے . لیکن ملایا کے ٹین اور ربر کے مالک اور ھتھیار بیچنے والے برٹش پونجی پتیوں کو لابھ ھوتا ھے . ھند چین کی جنگ کے کارن ھر فرانسیسی شہری کو لگ بھگ دو سو روپے ھر سال ٹیکس دینا پڑتا ھے . لیکن ھند چین کے چاول کچے مال اور دھاتوں سے فرانسیسی بیوپاری اور فرانس کے گولہ بارود بنانے والے پونجی پتی کروڑوں کا لابھ اُٹھاتے ھیں . امریکہ ۷۵ ارب روپے ھر سال جنگ کیلئے خرچ کرتا ھے اور ۱۵۰ ارب روپے خرچ کرنا چاھتا ھے . اِس کیلئے ھر امریکی کو (چاھے وہ بچہ، بوڑھا، نابالغ یا استری کیوں نہ ھو) ایک ھزار روپے ھر سال ٹیکس دینا ھوگا . اگر اِس روپے کو بچایا جا سکے تو دیس کی غریبی اور بیکاری دور ھو سکتی ھے . لیکن یہ روپیہ جنتا کی جیب سے نکلکر ھوائی جہاز، جہازی بیڑہ، بم وغیرہ بنانے والوں کی جیبوں میں چلا جاتا ھے .

جنگ کا بیوپار بڑا بھیانک بیوپار ھے . اس بیوپار کو بند کرنے کی بھرسک کوشش کرنی چاھئے . ابھی تک سنسار میں دیسوں اور جاتیوں کے بھاگیہ کا نپٹارا کرنے والے اِنے گنے ویکتی ھوتے تھے . [illegible]

जंग का व्योपार बड़ा भयानक व्योपार है. इस व्योपार को बन्द करने की भरसक कोशिश करनी चाहिये. अभी तक संसार में देसों और जातियों के भाग्य का निपटारा करने वाले इने गिने व्यक्ति

जन-जागरन के इस युग में जनता सचेत हो गई है और वह शासक जमात के ऊपर अपने फ़ैसले लादने की शक्ति रखती है. इसीलिये हर शहरी का फ़र्ज़ है कि वह जंग और शान्ति के सवाल पर गहराई से सोचे और जन आन्दोलन के ज़रिए जंग को रोके.

लड़ाई के लिये दो की ज़रूरत होती है, ताली दो हाथ से बजती है, मगर दोस्ती एक तरफ़ से भी हो सकती है : दोस्ती सौदा नहीं है. यह दोस्ती जिसका दूसरा नाम अहिंसा या मुहब्बत है, बुज़दिलों का काम नहीं, बल्कि बहादुरों और दूरन्देश लोगों का काम है.

—महात्मा गांधी

'नया हिन्द' की छमाही बँधी हुई बढ़िया जिल्दें

जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९५० तक की .

क़ीमत हर जिल्द की सिर्फ़ छै रुपया .

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दें ख़रीदने पर डाक ख़र्च माफ़ .

—मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठीगंज,
इलाहाबाद.

کی بھرسک کوشش کرنی چاھئے . ابھی تک سنسار میں دیسوں اور جاتیوں کے بھاگیہ کا نپٹارا کرنے والے اِنے گنے ویکتی ہوتے تھے

جن جاگرن کے اس یگ میں جنتا سچیت ہوگئی ھے اور وہ شاسک جماعت کے اوپر اپنے فیصلے لادنے کی شکتی رکھتی ھے . اِسی لئے ہر شہری کا فرض ھے کہ وہ جنگ اور شانتی کے سوال پر گہرائی سے سوچے اور جن آندولن کے ذریعے جنگ کو روکے .

لڑائی کے لئے دو کی ضرورت ہوتی ھے' تالی دو ھاتھ سے بجتی ھے' مگر دوستی ایک طرف سے بھی ہوسکتی ھے . دوستی سودا نہیں ھے . یہ دوستی جسکا دوسرا نام اھنسا یا محبت ھے' بزدلوں کا کام نہیں' بلکہ بہادروں اور دوراندیش لوگوں کا کام ھے .

—مہاتما گاندھی

'نیا ھند' کی چھماھی بندھی ہوئی بڑھیا جلدیں

جولائی سن ۱۹۴۶ سے دسمبر سن ۱۹۵۰ تک کی .

قیمت ہر جلد کی صرف چھ روپیہ .

نوٹ—شروع سے آج تک کی کل جلدیں خریدنے پر ڈاک خرچ معاف .

—مینیجر 'نیا ھند'
۱۴۵ ' مٹھی گنج'
الہ آباد .

अहमदाबाद की कॉंगरेस बैठक

(भाई सुरेश राम भाई)

सन् १९२३ की बात है. महात्मा गांधी जेल में थे. सर्दी का मौसम था. सेठ जमनालाल जी के कालबा देवी रोड, बम्बई वाले बंगले पर कुछ लोग जमा थे. सिकुड़ सिकुड़ा कर, चादर ओढ़े बैठे हुए थे और बहुत ही संगीन चरचा चल रही थी. इत्तफ़ाक़ से एक अजनबी आदमी आ पहुँचा. उसकी हैरत का कोई ठिकाना नहीं था. पूछना चाहता था कि कौन हैं यह सब और क्या कर रहे हैं मगर हिम्मत नहीं होती थी. उसकी तक़दीर से हिन्दुस्तान की कोयल उसके पास से गुज़रीं. अजनबी ने उनसे धीरे से एक सवाल किया—"यह सब कौन हैं ?" झट से सरोजिनी देवी ने जवाब दिया—"महात्मा गांधी की राँडें !" और बड़े ज़ोर से क़हक़हा लगाया. फिर क्या था, सभी खिलखिला कर हँस पड़े.

अहमदाबाद में हँसने की कोई बात नहीं थी. लेकिन २९-३०-३१ जनवरी को कुल-हिन्द कॉंगरेस कमेटी की बैठक का इजलास जो वहाँ हुआ उसको देखकर यह अच्छी तरह महसूस होता था कि हम सब के सब यतीम या अनाथ हो गए हैं और हमें ऐसी मुसीबतों ने आ घेरा है जिनसे निकलना नामुमकिन है. फिर भी ईमान और हिम्मत के साथ कोई भी मौक़े का मुक़ाबला करने को तैयार नहीं था. सभी जैसे डाक्टर थे जिनके पास हिन्दुस्तान के रोग की दवा थी लेकिन ख़ुद पीने से इनकार, दूसरों को ही पिलाना चाहते थे. धरती सब के पाँव तले से खसकी जा रही थी.

कॉंगरेस की यह बैठक बुलाने के मक़सद दो थे—पहला था कॉंगरेस का नया विधान मंज़ूर कराना. यह [illegible] विधान नासिक

احمدآباد کي کانگريس بيتھک

(بھائی سریش رام بھائي)

سن ۱۹۲۳ کی بات ہے ۔ مہاتما گاندھی جیل میں تھے ۔ سردی کا موسم تھا ۔ سیٹھ جمنا لال جی کے کالبا دیوی روڈ، بمبئی والے بنگلے پر کچھ لوگ جمع تھے ۔ سکڑ سکڑا کر، چادر اوڑھے بیٹھے ہوئے تھے اور بہت ہی سنگین چرچا چل رہی تھی ۔ اتفاق سے ایک اجنبی آدمي آپہنچا ۔ اُس کی حیرت کا کوئی ٹھکانہ نہیں تھا ۔ پوچھنا چاہتا تھا کہ کون ہیں یہ سب اور کیا کر رہے ہیں مگر ہمت نہیں ہوتی تھی ۔ اُس کی تقدیر سے ہندستان کی کوئل اُسکے پاس سے گزریں ۔ اجنبی نے اُن سے دھیرے سے ایک سوال کیا—''یہ سب کون ہیں ؟'' جھٹ سے سروجنی دیوی نے جواب دیا—''مہاتما گاندھی کی رانڈیں !'' اور بڑے زور سے قہقہہ لگایا ۔ پھر کیا تھا، سبھی کھل کھلا کر ہنس پڑے ۔

احمدآباد میں ہنسنے کی کوئي بات نہیں تھی ۔ لیکن ۲۹-۳۰-۳۱ جنوري کو کل ہند کانگریس کمیٹی کی بیٹھک کا اجلاس جو وہاں ہوا اُسکو دیکھکر یہ اچھی طرح محسوس ہوتا تھا کہ ہم سب کے سب یتیم یا اناتھ ہو گئے ہیں اور ہمیں ایسی مصیبتوں نے آ گھیرا ہے جن سے نکلنا ناممکن ہے ۔ پھر بھی ایمان اور ہمت کے ساتھ کوئی بھی موقعہ کا مقابلہ کرنے کو تیار نہیں تھا ۔ سبھی جیسے ڈاکٹر تھے جن کے پاس ہندستان کے روگ کی دوا تھی لیکن خود پینے سے انکار، دوسروں کو ہی پلانا چاہتے تھے ۔ دھرتی سب کے پاؤں تلے سے کھسکی جا رہی تھی ۔

کانگریس کی یہ بیٹھک بلانے کے مقصد دو تھے—پہلا تھا کانگریس کا نیا ودھان منظور کرانا ۔ یہ نیا ودھان ناسک کانگریس

थी लेकिन ख़ुद पीने से इनकार, दूसरों को ही पिलाना चाहते थे. धरती सब के पाँव तले से खसकी जा रही थी.

काँग्रेस की यह बैठक बुलाने के मक़सद दो थे—पहला था ...

काँग्रेस के एक ठहराव के मुताबिक़ एक सब-कमेटी ने बनाया था ताकि काँग्रेस का कारोबार ज़ोर शोर के साथ चल सके. दूसरा मक़सद था एक ठहराव को, जिसे एकता ठहराव कहा जाता है, पास कराकर काँग्रेस के ढहते हुए क़िले को बनाये रखने की कोशिश करना. इसके अलावा चार घंटों का वक़्त ग़ैर सरकारी ठहरावों के लिये था, यानी उन ठहरावों के लिये जो मेम्बर अपनी तरफ़ से पेश करना चाहते थे और जिन्हें कारबारी (वर्किंग) कमेटी अपनी तरफ़ से नहीं रखना चाहती थी.

आगे कुछ भी कहने के पहले हम एक चीज़ बहुत ही एहसान के साथ क़बूल करना चाहते हैं. वह है मेहमानों की ख़ातिर. गुजरात सूबा काँगरेस कमेटी का मन पसन्द, घर जैसा और लाजवाब इन्तज़ाम. काँगरेस कमेटी के मेम्बरों की क्या, प्रेस वालों की क्या, हर आने वाले की ऐसी ख़ातिर की गई, उसको सहूलियत और आराम का इतना ख़याल रखा गया है कि वहाँ जाने वाले लोग हमेशा याद रक्खेंगे. उड़ीसा के नामवर नेता श्री बिश्वनाथ दास जी ने कहा कि पिछले बीस बरस से तो उन्होंने ऐसा बेहतरीन इन्तज़ाम कहीं नहीं पाया. मेरा निजी ख़याल तो यह है कि गुजरात काँगरेस के सदर श्री कन्हैया लाल देसाई हर चीज़ पर इतने ग़ौर और ध्यान से निगाह डालते थे मानो उनकी बेटी का ब्याह हो. स्वयं सेवक सच्चे मानों में स्वयं-सेवक थे. काम इस तरह करते थे जैसे आपके मुलाज़िम हों.

कमेटी का इजलास 'नवजीवन' इमारत के हाते में हुआ. मेम्बर लोग गुजरात विद्यापीठ की हद के अन्दर आरज़ी सायों में ठहराए गए थे. कुछ ख़ास लोग विद्यापीठ के कमरों में थे और कुछ बहुत बड़े बड़े लोग अपने दोस्तों के साथ अहमदाबाद की बस्ती में ठहरे थे. नवजीवन की यह इमारत दस लाख के ख़र्चे से अभी हाल में ही बनकर तैयार हुई है जिसको सरदार बल्लभभाई पटेल ने दो माह पहले ही खोला था. इसी नवजीवन में 'हरिजन' अख़बार छपता है.

کے ایک ٹھہراؤ کے مطابق ایک سب۔کمیٹی نے بنایا تھا تاکہ کانگریس کا کاروبار زور شور کے ساتھ چل سکے۔ دوسرا مقصد تھا ایک ٹھہراو کو، جسے ایکتا ٹھہراو کہا جاتا ہے، پاس کرا کر کانگریس کے ڈھتے ہوئے قلعے کو بنائے رکھنے کی کوشش کرنا۔ اسکے علاوہ چار گھنٹوں کا وقت غیر سرکاری ٹھہراؤں کے لئے تھا، یعنی اُن ٹھہراؤں کے لئے جو ممبر اپنی طرف سے پیش کرنا چاہتے تھے اور جنھیں کاروباری (ورکنگ) کمیٹی اپنی طرف سے نہیں رکھنا چاہتی تھی۔

آگے کچھ بھی کہنے کے پہلے ہم ایک چیز بہت ہی احسان کے ساتھ قبول کرنا چاہتے ہیں۔ وہ ہے مہمانوں کی خاطر۔ گجرات صوبہ کانگریس کمیٹی کا من پسند، گھر جیسا اور لاجواب انتظام۔ کانگریس کمیٹی کے ممبروں کی کیا، پریس والوں کی کیا، ہر آنے والے کی ایسی خاطر کی گئی، اسکی سہولیت اور آرام کا اتنا خیال رکھا گیا کہ وہاں جانے والے لوگ ہمیشہ یاد رکھیں گے۔ اُڑیسہ کے نامور نیتا شری وشوناتھ داس جی نے کہا کہ پچھلے بیس برس سے تو انہوں نے ایسا بہترین انتظام کہیں نہیں پایا۔ میرا نجی خیال تو یہ ہے کہ گجرات کانگریس کے صدر شری کنھیا لال دیسائی ہر چیز پر اتنے غور اور دھیان سے نگاہ ڈالتے تھے مانو اُن کی بیٹی کا بیاہ ہو۔ سویم سیوک سچے معنوں میں سویم سیوک تھے۔ ہر کام اِس طرح کرتے تھے جیسے آپ کے ملازم ہوں۔

کمیٹی کا اجلاس 'نوجیون' عمارت کے احاطے میں ہوا۔ ممبر لوگ گجرات ودیاپیٹھ کی حد کے اندر عارضی سایوں میں ٹھہرائے گئے تھے۔ کچھ خاص لوگ ودیاپیٹھ کے کمروں میں تھے اور کچھ بہت بڑے بڑے لوگ اپنے دوستوں کے ساتھ احمدآباد کی بستی میں ٹھہرے تھے۔ نوجیون کی یہ عمارت دس لاکھ کے خرچے سے ابھی حال میں ہی بن کر تیار ہوئی ہے جسکو سردار ولبھ بھائی پٹیل نے دو ماہ پہلے ہی کھولا تھا۔ اسی نوجیون میں 'ہریجن' اخبار چھپتا ہے۔

अब हम बैठक की कारवाई पर आयें. काँग्रेस के विधान पर तफ़सील के साथ कुछ कहना इस लेख की हद के बाहर की बात है. हम तो सिर्फ़ कुछ खास बातों पर रोशनी डालकर सब्र करेंगे.

पहले हम विधान को लेंगे. शुरू की चीज़ है काँग्रेस का उद्देश्य या मक़सद जो अब यह रखा गया है—एक "सहकारी कामनवैल्थ" को पाना (अटेनमेन्ट आफ़ ए कोआपरेटिव कामनवेल्थ) क्या चुन चुन कर लफ़्ज़ों को रखा है जिनके माने चुनने वालों को भले मालूम हों लेकिन और तो किसी को नहीं. जहाँ तक जनता का सवाल है वह तो इन लफ़्ज़ों से रत्ती भर भी कुछ नहीं समझ सकती. हमें डर है कि आगे का इतिहास लिखने वाला यही कहेगा कि सन् १९५१ में जन काँग्रेस के पास पूरी ताक़त थी तो उसे यही नहीं पता था कि अब उसके ज़िन्दा रहने का कोई मक़सद भी है या नहीं.

काँग्रेस के नये विधान की सबसे खास चीज़ है इस वक़्त बिना पैसे की मेम्बरी की जगह एक रुपये की मेम्बरी फ़ीस रखना. एक ज़माना था जब चार आने फ़ीस थी. फिर उसे बिलकुल हटा दिया गया और अप्रैल १९४८ में बम्बई की बैठक में बड़े जोश खरोश के साथ काँग्रेस का दरवाज़ा सबके लिये खोल दिया गया. मगर अंगूर खट्टे निकले और मेम्बरी फ़ीस के बिना काँग्रेस के ज़िन्दा रहने में भी अब शुबा हो गया. इसलिये यह एक रुपया! हम यहाँ यह बता दें कि कारबारी कमेटी में इस मसले पर ज़बरदस्त बहस हुई कि फ़ीस अठन्नी हो या रुपया. वोट लिये गये और सिर्फ़ एक वोट से अठन्नी को हटाकर रुपया जीता. काँग्रेस बैठक में भी इस सवाल पर करारी बहसें हुईं. चवन्नी का झंडा उठाया गया, अठन्नी का भी, रुपये का भी. रुपये की हिमायत में श्री जवाहर लाल नेहरू को खुद उठना पड़ा और बड़े तैश के साथ

اب ہم بیٹھک کی کاروائی پر آئیں۔ کانگریس کے ودھان پر تفصیل کے ساتھ کچھ کہنا اِس لیکھ کی حد کے باہر کی بات ہے۔ ہم تو صرف کچھ خاص باتوں پر روشنی ڈال کر صبر کرینگے۔

پہلے ہم ودھان کو لینگے۔ شروع کی چیز ہے کانگریس کا اُدیش یا مقصد جو اب یہ رکھا گیا ہے—ایک ''سہکاری کامن ویلتھ'' کو پانا۔ (اٹینمنٹ آف اے کوآپریٹو کامن ویلتھ)۔ کیا چن چن کر لفظوں کو رکھا ہے جنکے معنے چننے والوں کو بھلے معلوم ہوں لیکن اور تو کسی کو نہیں۔ جہاں تک جنتا کا سوال ہے وہ تو ان لفظوں سے رتی بھر بھی کچھ نہیں سمجھ سکتی۔ ہمیں ڈر ہے کہ آگے کا اِتہاس لکھنے والا یہی کہیگا کہ سن ١٩٥١ میں جب کانگریس کے پاس پوری طاقت تھی تو اُسے یہی نہیں پتہ تھا کہ اب اُسکے زندہ رہنے کا کوئی مقصد بھی ہے یا نہیں۔

کانگریس کے نئے ودھان کی سب سے خاص چیز ہے اِس وقت بنا پیسے کی ممبری کی جگہ ایک روپے کی ممبری فیس رکھنا۔ ایک زمانہ تھا جب چار آنے فیس تھی۔ پھر اُسے بالکل ہٹا دیا گیا اور اپریل ١٩٤٨ میں بمبئی کی بیٹھک میں بڑے جوش خروش کے ساتھ کانگریس کا دروازہ سب کے لئے کھول دیا گیا۔ مگر انگور کٹھے نکلے اور ممبری فیس کے بنا کانگریس کے زندہ رہنے میں بھی اب شبہہ ہو گیا۔ اِس لئے یہ ایک روپیہ! ہم یہاں یہ بتادیں کہ کاربادی کمیٹی میں اِس مسئلے پر زبردست بحث ہوئی کہ فیس اٹھنی ہو یا روپیہ۔ ووٹ لئے گئے اور صرف ایک ووٹ سے اٹھنی کو ہٹا کر روپیہ جیتا۔ کانگریس بیٹھک میں بھی اِس سوال پر کراری بحثیں ہوئیں۔ چونی کا جھنڈا اُٹھایا گیا، اٹھنی کا بھی، روپے کا بھی۔ روپے کی حمایت میں شری جواہرلال نہرو کو خود اٹھنا پڑا اور بڑے طیش کے ساتھ

नया हिन्द अहमदाबाद की काँग्रेस बैठक मई सन् '५१

में भी इस सवाल पर करारी बहसें हुईं. चवन्नी का झंडा उठाया गया, अठन्नी का भी, रुपये का भी. रुपये की हिमायत में श्री जवाहर लाल नेहरू को खुद उठना पड़ा और बड़े तैश के साथ

اِس سوال پر کراری بحثیں ہوئیں ۔ چونی کا جھنڈا اُٹھایا گیا، اُٹھنی کا بھی، روپے کا بھی ۔ روپے کی حمایت میں شری جواہرلال نہرو کو خود اُٹھنا پڑا اور بڑے طیش کے ساتھ

उन्होंने काँगरेस को यह चेतावनी दी कि यह कोई सब्ज़ी मंडी नहीं है जहाँ चवन्नी अठन्नी की चख चख चल रही है. इसी स्पीच का नतीजा हुआ कि रुपए का झंडा बुलन्द रहा क्योंकि अठन्नी या चवन्नी पर वोट दे कर मेम्बर श्री जवाहर लाल की नाराज़ी नहीं मोल लेना चाहते थे. लेकिन मेम्बरों को यह ख़बर ही नहीं थी कि उन लाखों करोड़ों के दिलों पर क्या बीत रही है जिनकी बदौलत उन्हें यह रुतबा मिला है.

जो रुपया दे वह मेम्बर. लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी. वह छूआछूत न मानता हो, नशा न लेता हो, खादी पहनता हो, वग़ैरा. बड़े दुख की बात यह है कि पहले जहाँ यह लाज़मी था कि "प्रमानित" (सरटीफ़ाइड) खादी हो, अब महज़ खादी शब्द रखा गया है. मुबारक हो गादी वालों को. उन्हें मनमानी चीज़ मिल गई. आज़ादी के पहले जहाँ काँगरेसी वर्दी खादी थी, आज़ादी के बाद गादी उसकी वर्दी होगी!

छोटी मोटी धाराओं के बाद हम उस धारा पर आते हैं जिसमें कहा गया है कि काँगरेस की अलग अलग कमेटियाँ दो साल तक काम करेंगी, मगर सालाना जलसा हर साल होगा. इसका मतलब यह हुआ कि काँगरेस का एक ही सदर दो बरस लगातार गद्दी पर जमा रहेगा. ज़ाहिर है कि यह मौजूदा दस्तूर के ख़िलाफ़ है. नया साल नया ख़ून वाले 'ख़याल का ख़ून करके काँगरेस अपना दिवालियापन ज़ाहिर कर रही है.

अहमदाबाद बैठक की एक चीज़ ऐसी अजीब है जिसे सुनकर हर कोई दाँतों तले उंगली दबा लेगा. वह यह कि सदर साहब का यह हुकम करना कि काँगरेस के "केन्द्री चुनाव बोर्ड" में ग़ैर काँगरेसी लोग तक मेम्बर चुने जा सकते हैं! इसको कहते हैं

اُنہوں نے کانگریس کو یہ چیتاونی دی کہ یہ کوئی سبزی منڈی نہیں ہے جہاں چونی اٹھنی کی چخ چخ چل رہی ہے ۔ اِسی اسپیچ کا نتیجہ ہوا کہ روپے کا جھنڈا بلند رہا کیونکہ اٹھنی یا چونی پر ووٹ دیکر ممبر شری جواہر لال کی ناراضی نہیں مول لینا چاہتے تھے ۔ لیکن ممبروں کو یہ خبر ہی نہیں تھی کہ اُن لاکھوں کروڑوں کے دلوں پر کیا بیت رہی ہے جنکی بدولت اُنہیں یہ رتبہ ملا ہے ۔

جو روپیہ دے وہ ممبر ۔ لیکن جو "سکریہ" (ایکٹو) ممبر ہو اُسے کئی شرطیں پوری کرنی ہونگی ۔ وہ چھوا چھوت نہ مانتا ہو، نشہ نہ لیتا ہو، کھادی پہنتا ہو، وغیرہ ۔ بڑے دکھ کی بات یہ ہے کہ پہلے جہاں یہ لازمی تھا کہ "پرمانت" (سرٹی فائڈ) کھادی ہو، اب محض کھادی شبد رکھا گیا ہے ۔ مبارک ہو گادی والوں کو اُنہیں من مانی چیز مل گئی ۔ آزادی کے پہلے جہاں کانگریسی وردی کھادی تھی، آزادی کے بعد گادی اُس کی وردی ہوگی !

چھوٹی موٹی دھاراؤں کے بعد ہم اُس دھارا پر آتے ہیں جس میں کہا گیا ہے کہ کانگریس کی الگ الگ کمیٹیاں دو سال تک کام کرینگی، مگر سالانہ جلسہ ہر سال ہوگا ۔ اِسکا مطلب یہ ہوا کہ کانگریس کا ایک ہی صدر دو برس لگاتار گدی پر جما رہے گا ۔ ظاہر ہے کہ یہ موجودہ دستور کے خلاف ہے ۔ نیا سال نیا خون والے خیال کا خون کر کے کانگریس اپنا دیوالیہ‌پن ظاہر کر رہی ہے ۔

احمدآباد بیٹھک کی ایک چیز ایسی عجیب ہے جسے سنکر ہر کوئی دانتوں تلے اُنگلی دبا لے گا ۔ وہ یہ کہ صدر صاحب کا یہ حکم کرنا کہ کانگریس کے "کیندریہ چناؤ بورڈ" میں غیر کانگریسی لوگ تک ممبر چنے جا سکتے ہیں ! اسکو کہتے ہیں

बाल की खाल निकालना. हमें दुख है कि नासिक काँगरेस का सदर बनने के बाद टंडन जी ने जो वादा किया था कि वह काँगरेस की परम्परा (ट्रैडिशन) की पाबन्दी करेंगे, उसे वह नजरअन्दाज कर गए.

धाराओं पर बहुतेरी तरमीमें मेम्बरों ने पेश कीं. एक आध को छोड़ कर सभी कारबारी कमेटी को मंजूर नहीं थीं और उन सब का बुरा हाल ही हुआ. उन में से कुछ तो ग़ौर तलब और अच्छी थीं मगर अपनी शान में डूबी कारबारी कमेटी उन्हें कैसे मान लेती ? हम यह भी जानते हैं कि काँगरेस वाले सभी अपनेपन में इतने मस्त थे कि उनको इस में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि विधान कैसा बनता है. उन्हें तो आप उनकी "सीट" दे दीजिये फिर जो कहिये उन्हें मंजूर.

कहने की जरूरत नहीं कि अहमदाबाद बेठक के एकता ठहराव की बड़ी धूम है. इसे पेश किया श्री जवाहरलाल नेहरु ने और इसका समर्थन किया मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने. इस सलसिले में भी श्री जवाहरलाल नेहरू ने एक बहुत गरजती हुई तक़रीर की और काँगरेस के लोगों की अक़्ल को ठिकाने पर लाने की कोशिश की. मगर बड़े अदब के साथ हम कहना चाहते हैं कि महज़ बातों से काम नहीं चल सकता. यह तो साफ़ था कि कोई चीज ऐसी गायब है जिस ने सारी काँगरेस को बेहाल कर दिया है लेकिन उसे कोई खोज नहीं पाता है. मैं श्री जवाहरलाल जी के एक जुमले की तरफ़ पढ़ने वालों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ जिसे आम तौर से अखबारों ने नहीं छापा है. वह यह है—"अगर काँगरेस की हालत आज की जैसी बनी रही तो मैं सोचता हूँ कि हमें गांधी जी की उस सलाह पर असल करना होगा जिस में उन्हों ने कहा था कि काँगरेस अपनी सियासी और प्रोपेगेन्डा की कारवाइयों को

بال کی کھال نکالنا ۔ ہمیں دکھ ہے کہ ناسک کانگریس کا صدر بننے کے بعد ٹنڈن جی نے جو وعدہ کیا تھا کہ وہ کانگریس کی پرمپرا (ٹریڈیشن) کی پابندی کرینگے، اُسے وہ نظر انداز کر گئے ۔

دھاراؤں پر بہتیری ترمیمیں ممبروں نے پیش کیں ۔ ایک آدھ کو چھوڑ کر سبھی کاربادی کمیٹی کو منظور نہیں تھیں اور اُن سب کا برا حال ہی ہوا ۔ اُن میں سے کچھ تو غور طلب اور اچھی تھیں مگر اپنی شان میں ڈوبی کاربادی کمیٹی اُنھیں کیسے مان لیتی ؟ ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ کانگریس والے سبھی اپنے پن میں اتنے مست تھے کہ اُن کو اس میں کوئی دلچسپی نہیں تھی کہ ودھان کیسا بنتا ہے ۔ اُنہیں تو آپ اُنکی سیٹ دے دیجئے، پھر جو کہئے اُنہیں منظور ۔

کہنے کی ضرورت نہیں کہ احمد آباد بیٹھک کے ایکتا ٹھہراؤ کی بڑی دھوم ہے ۔ اِسے پیش کیا شری جواہر لال نہرو نے اور اِسکا سمرتھن کیا مولانا ابوالکلام آزاد نے ۔ اِس سلسلے میں بھی شری جواہر لال نہرو نے ایک بہت گرجتی ہوئی تقریر کی اور کانگریس کے لوگوں کی عقل کو ٹھکانے پر لانے کی کوشش کی ۔ مگر بڑے ادب کے ساتھ ہم کہنا چاہتے ہیں کہ محض باتوں سے کام نہیں چل سکتا ۔ یہ تو صاف تھا کہ کوئی چیز ایسی غائب ہے جس نے ساری کانگریس کو بے حال کر دیا ہے لیکن اُسے کوئی کھوج نہیں پاتا ہے ۔ میں شری جواہر لال جی کے ایک جملے کی طرف پڑھنے والوں کا دھیان دلانا چاہتا ہوں جسے عام طور سے اخباروں نے نہیں چھاپا ہے ۔ وہ یہ ہے — "اگر کانگریس کی حالت آج کی جیسی بنی رہی تو میں سوچتا ہوں کہ ہمیں گاندھی جی کی اِس صلاح پر عمل کرنا ہوگا جس میں اُنھوں نے کہا تھا کہ کانگریس اپنی سیاسی اور پروپیگنڈا کی کاروائیوں کو

खतम करदे —यह वह सलाह है जिसे अब तक तो हमने ठुकराया ही है." मेरा अपना खयाल है कि इस जुमले के अन्दर काँगरेस के पिछले तीन बरसों का इतिहास छिपा है.

मौलाना साहब नासिक काँगरेस के मौक़े पर एक दम ख़ामोश रहे थे. इसलिये अहमदाबाद में जब वह माइक पर आए तो लोगों ने एक ताज़गी महसूस की. उनकी तक़रीर की तारीफ़ करना सूरज को रोशनी दिखाना है. उन्होंने बताया कि यह ठहराव कारबारी कमेटी की तरफ़ से आख़िरी कोशिश है काँगरेस को एक ठोस जानदार जमात बनाने की. लेकिन इसकी सच्चाई तो आने वाले वक़्त की गोद में छिपी है.

इस ठहराव पर जो तक़रीरें मेम्बरों ने कीं वह मानो काँगरेस का आईना हैं. उन्होंने अपना दिल ही चीर कर रख दिया. एक भाई ने कहा—"अगर खुलकर बातें करनी हैं तो फिर जरा इतमीनान से हमें बैठना होगा. प्रेस को हटाकर एक बंद बैठक हम करें और तब अपनी दास्तान कहें." कुछ मेम्बरों के कुछ जुमले हम नीचे देते हैं—

'आप कहते हैं कि काँगरेस वरकर कुछ नहीं करता. मैं पूछता हूँ, वह क्या करे? क्या कोई प्रोग्राम, कोई मक़सद आपने उसके आगे रखा है जिसकी उसे पाबन्दी करनी हो. और फिर आप उसका इतमीनान या यक़ीन कितना करते हैं?'

'यह कहा जाता है कि हम अपनी क़ुरबानी की क़ीमत वसूल कर रहे हैं. मैं पूछता हूँ क्यों चाहिये राजेन्द्र बाबू के लिये वह वाइसरीगल लाज? क्यों चाहिये पंडित जी को इतनी बड़ी तनख़ा? अगर आप को पाँच हज़ार की ज़रूरत है तो सौ-पचास की ज़रूरत हमें भी है.'

ختم کر دے—یہ وہ صلاح ہے جسے اب تک تو ہم نے ٹھکرایا ہی ہے." میرا اپنا خیال ہے کہ اِس جملے کے اندر کانگریس کے پچھلے تین برسوں کا اِتہاس چھپا ہے.

مولانا صاحب ناسک کانگریس کے موقعہ پر ایک دم خاموش رہے تھے. اِس لئے احمدآباد میں جب وہ مائک پر آئے تو لوگوں نے ایک تازگی محسوس کی. اُن کی تقریر کی تعریف کرنا سورج کو روشنی دکھانا ہے. اُنھوں نے بتایا کہ یہ ٹھہراؤ کاروباری کمیٹی کی طرف سے آخری کوشش ہے کانگریس کو ایک ٹھوس جاندار جماعت بنانے کی. لیکن اسکی سچائی تو آنے والے وقت کی گود میں چھپی ہے.

اِس ٹھہراؤ پر جو تقریریں ممبروں نے کیں وہ مانو کانگریس کا آئینہ ہیں. اُنھوں نے اپنا دل ہی چیر کر رکھدیا. ایک بھائی نے کہا—"اگر کھلکر باتیں کرنی ہوں تو پھر ذرا اطمینان سے ہمیں بیٹھنا ہوگا. پریس کو ہٹا کر ایک بند بیٹھک ہم کریں اور تب اپنی داستان کہیں." کچھ ممبروں کے کچھ جملے ہم نیچے دیتے ہیں—

'آپ کہتے ہیں کہ کانگریس ورکر کچھ نہیں کرتا. میں پوچھتا ہوں وہ کیا کرے؟ کیا کوئی پروگرام، کوئی مقصد آپنے اُسکے آگے رکھا ہے جسکی اُسے پابندی کرنی ہو. اور پھر آپ اُسکا اطمینان یا یقین کتنا کرتے ہیں؟'

'یہ کہا جاتا ہے کہ ہم اپنی قربانی کی قیمت وصول کر رہے ہیں میں پوچھتا ہوں کیوں چاہئے راجندر بابو کے لئے وہ وائسریگل لاج؟ کیوں چاہئے پنڈت جی کو اِتنی بڑی تنخواہ؟ اگر آپ کو پانچ ہزار کی ضرورت ہے تو سو پچاس کی ضرورت ہمیں بھی ہے.'

६

'हम से अपील की जाती है कि आपसी मतभेद और गुटबंदियाँ दूर करो. मैं बड़े अदब से (मंच पर बैठे लोगों) आप से अर्ज़ करना चाहता हूँ कि आप अपने फ़रक़ दूर कर लीजिये, हमारे भेद भी एक दम काफ़ूर हो जाएँगे.'

'आज जनता की सुनवाई कहाँ है ? अगर हुकूमत सिर्फ़ इतना भर कर दे कि हर शिकायत पर एक माह के अन्दर अमल हो जायेगा तो आपके और जनता के बीच की खाई सहज ही दूर होजायेगी.'

इसी दौरान में आचार्य जीवतराम भगवानदास कृपलानी का भाशन हुआ. यह तो एक चुनौती थी जो रह रह कर पूछती थी कि इस तरह कब तक काम चलेगा ? आप ने कहा— "मैं सिपाही हूँ, जान देने के लिये हमेशा तैयार. अपने प्रधान मंत्री के लिये जान दे सकता हूँ. मगर वह क्या चीज़ है, कहाँ है, जिसकी ख़ातिर मैं ऐसा करूँ ?............आप एकता चाहते हैं लेकिन किस तरह की एकता ? क्या पाकिस्तान में है वैसी ? क्या हिटलर के जरमनी की जैसी ? क्या क़बरिस्तान जैसी ?"

इन सवालों का जवाब कहीं नहीं था. मगर मेम्बरों को लगा कि उनका जवाब ख़ुद आचार्य जी के पास भी क्या था—वह क्या चाहते थे कि जिस पर देस चले. सवाल सबका एक है—मगर जवाब नदारद.

अब हम ग़ैर सरकारी ठहरावों को लें. कोई बीस की पेशी थी. मगर बारह के क़रीब पेश हो सके. श्री जवाहरलाल जी या मौलाना साहब के कहने पर सिवा एक के सब ही वापस ले लिये गये. यह एक था दरभंगा (बिहार) के श्री हृदय नरायन चौधरी का ठहराव जो नीचे दिया जाता है—

"कुल हिन्द काँगरेस कमेटी का यह जलसा केन्द्री सरकार से विनती करता है कि बनसपती व जमाए हुए तेल की पैदावार और

'ہم سے اپیل کی جاتی ھے کہ آپسی مت بھید اور گٹ بندیاں دور کرو . میں بڑے ادب سے (منچ پر بیٹھے لوگوں) آپ سے عرض کرنا چاھتا ھوں کہ آپ اپنے فرق دور کر لیجئے ھمارے بھید بھی ایک دم کافور ھوجائینگے . '

' آج جنتا کی سنوائی کہاں ھے ؟ اگر حکومت صرف اتنا بھر کر دے کہ ھر شکایت پر ایک ماہ کے اندر عمل ھوجائیگا تو آپکے اور جنتا کے بیچ کی کھائی سہج ھی دور ھوجائے گی . '

اسی دوران میں آچاریہ جیوت رام بھگوان داس کرپلانی کا بھاشن ھوا . یہ تو ایک چنوتی تھی جو رہ رھکر پوچھتی تھی کہ اسطرح کب تک کام چلے گا ؟ آپ نے کہا— " میں سپاھی ھوں ' جان دینے کے لئے ھمیشہ تیار . اپنے پردھان منتری کے لئے جان دے سکتا ھوں . مگر وہ کیا چیز ھے ' کہاں ھے ' جسکی خاطر میں ایسا کروں ؟........ آپ ایکتا چاھتے ھیں لیکن کسطرح کی ایکتا ؟ کیا پاکستان میں ھے ویسی ؟ کیا ھٹلر کے جرمنی کی جیسی ؟ کیا قبرستان جیسی ؟ "

ان سوالوں کا جواب کہیں نہیں تھا . مگر ممبروں کو لگا کہ اُن کا جواب خود آچاریہ جی کے پاس بھی کیا تھا . وہ کیا چاھتے تھے کہ جس پر دیس چلے . سوال سب کا ایک ھے—مگر جواب ندارد .

اب ھم غیر سرکاری ٹھہراوں کو لیں . کوئی بیس کی پیشی تھی مگر بارہ کے قریب پیش ھو سکے . شری جواھر لال جی یا مولانا صاحب کے کہنے پر سوا ایک کے سب ھی واپس لے لئے گئے . یہ ایک تھا دربھنگہ (بہار) کے شری ھردے نرائن چودھری کا ٹھہراو جو نیچے دیا جاتا ھے—

" کل ھند کانگریس کمیٹی کا یہ جلسہ کیندری سرکار سے ونتی کرتا ھے کہ بنسپتی و جمائے ھوئے تیل کی پیداوار اور

बिक्री पर वह पाबन्दी लगादे क्योंकि इस से जनता का नैतिक पतन होता है और तन्दुरुस्ती को भी नुक़सान पहुँचता है.

"बनसपती की वजह से असली खालिस घी अब बाजार में क़तई मिलता ही नहीं और इसका नतीजा यह है कि हमारे देस के पशुधन का नुक़सान हो रहा है."

यह ठीक ही हुआ कि करोड़ों इनसानों की जिन्दगी से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा बड़ा ठहराव, वापिस नहीं लिया गया. इस पर रायें ली गईं, हाथ उठे, १११ पक्ष में और ५६ खिलाफ़. इन छप्पन में ही थे हमारे केन्द्री प्रधान मंत्री. कारबारी कमेटी के एक मेम्बर ने भी ठहराव के माफ़िक वोट नहीं दिया, खिलाफ़ तो कई एक रहे. इससे पता चलता है कि देस में हवा कैसी बह रही है. हुकूमत को चाहिये कि काँगरेस के इस फ़ैसले पर अमल करे. नहीं तो, फिर भगवान ही मालिक है.

यह बैठक अचानक ही खत्म हो पड़ी. कारन यह हुआ कि मौलाना साहब ने अपील की कि केन्द्री चुनाव बोर्ड के मेम्बरों का चुनाव आज न करके फिर किया जाए. इस पर एक मेम्बर ने कहा कि ग़ैर सरकारी ठहराव भी फिर लिये जायें. इस पर सदर साहब ने हाउस की राय टटोल कर कहा कि अब यह ठहराव न लिये जायें और क्योंकि एजेन्डा पर दूसरी कोई चीज़ है नहीं इसलिये कारवाई खत्म. इस तरह एक बजे यह बैठक उठ गई. उठने के पहले गुजरात काँगरेस के सदर ने एक लाख रुपये का चेक काँगरेस सदर टंडन जी को काँगरेस के खर्च की खातिर दिया. इस रक़म का सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कारबारी कमेटी से वादा भी किया था.

इकतीस की रात और पहली तारीख को मेम्बर लोग अपने घर वापिस चल दिये. २ फ़रवरी को सभी रवाना हो चुके थे और स्वागत कमेटी ने डेरे वग़ैरा बहुत सफ़ाई के साथ उखाड़ लिये थे.

بکری پر وہ پابندی لگا دے کیونکہ اِس سے جنتا کا نیتک پتن ہوتا ہے اور تندرستی کو بھی نقصان پہنچتا ہے ۔

" بنسپتی کی وجہ سے اصلی خالص گھی اب بازار میں قطعی ملتا ہی نہیں اور اِس کا نتیجہ یہ ہے کہ ہمارے دیس کے پشودھن کا نقصان ہو رہا ہے ۔ "

یہ ٹھیک ہی ہوا کہ کروڑوں انسانوں کی زندگی سے سمبندھ رکھنے والا ایسا بڑا ٹھہراؤ واپس نہیں لیا گیا ۔ اس پر رائیں لی گئیں، ہاتھ اُٹھے ۔ ۱۱۱ پکش میں اور ۵۶ خلاف ۔ اِن ۵۶ میں ہی تھے ہمارے کیندری پردھان منتری ۔ کاروباری کمیٹی کے ایک ممبر نے بھی ٹھہراؤ کے موافق ووٹ نہیں دیا، خلاف تو کئی ایک رہے ۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ دیس میں ہوا کیسی بہہ رہی ہے ۔ حکومت کو چاہیئے کہ کانگریس کے اس فیصلے پر عمل کرے ۔ نہیں تو، پھر بھگوان ہی مالک ہے ۔

یہ بیٹھک اچانک ہی ختم ہو پڑی ۔ کارن یہ ہوا کہ مولانا صاحب نے اپیل کی کہ کیندری چناؤ بورڈ کے ممبروں کا چناؤ آج نہ کر کے پھر کیا جائے ۔ اِس پر ایک ممبر نے کہا کہ غیر سرکاری ٹھہراؤ بھی پھر لئے جائیں ۔ اِس پر صدر صاحب نے ہاؤس کی رائے ٹٹول کر کہا کہ اب یہ ٹھہراؤ نہ لئے جائیں اور کیونکہ ایجنڈا پر دوسری کوئی چیز ہے نہیں اِس لئے کاروائی ختم ۔ اِس طرح ایک بجے یہ بیٹھک اُٹھ گئی ۔ اُٹھنے کے پہلے گجرات کانگریس کے صدر نے ایک لاکھ روپے کا چیک کانگریس صدر ٹنڈن جی کو کانگریس کے خرچ کی خاطر دیا ۔ اِس رقم کا سردار ولبھ بھائی پٹیل نے کاروباری کمیٹی سے وعدہ بھی کیا تھا ۔

اکتیس کی رات اور پہلی تاریخ کو ممبر لوگ اپنے گھر واپس چل دیئے ۔ ۲ فروری کو سبھی روانہ ہوچکے تھے اور سواگت کمیٹی نے ڈیرے وغیرہ بہت صفائی کے ساتھ اُکھاڑ لئے تھے ۔

सब चीजें एहतियात के साथ बाँध कर हटाई जा रही थीं. मुझे ख़याल हो आया कि ठीक इसी तरह काँगरेस के संगठन को ही क्यों न बाँध लिया जाये. बहुत शान के साथ काँगरेस ने अपना मक़सद पूरा किया है. सारा आलम इसके कारनामों से रौशन है. लेकिन हर चीज जो आती है, जाती भी है. यह क़ुदरत का क़ानून है. ख़ूबी इसी में है कि जैसे सूरज ख़ुद ही किरनें समेट लेता है, काँगरेस भी अपने को समेट ले और दूसरे रोज ताजी शक्ल में—लोक सेवक संघ का फूल बन कर—फूले फले. मगर जो जमात या आदमी ऐसा नहीं करते उनका ख़ात्मा ज़बरदस्ती हो जाता है और ऐसी घड़ी पर उनकी मत भी मारी जाती है.

मुझे लगा कि काँगरेस की वह घड़ी आ गई. अहमदाबाद की बैठक से काँगरस का पतन और अन्त शुरू हो गया. अनाथों का यह झुंड अब अपने को शायद ही सँभाल सके. लेकिन अभी वक़्त है. श्री जवाहरलाल नेहरू ख़ुद ऊपर के अपने एक जुमले पर ग़ौर करें, काँगरेस से उस पर ग़ौर करायें, उसको अमल में लायें. तभी हम सब कह सकेंगे—

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी."

किसी भी अखबार का पहला काम है लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना; दूसरा काम है लोगों में जिन भावनाओं की जरूरत हो उन्हें जगाना; और तीसरा काम है लोगों में अगर कोई ऐब हो तो उन्हें किसी भी मुसीबत की परवाह न कर बेधड़क सब के सामने रख देना.

—महात्मा गाँधी

سب چیزیں احتیاط کے ساتھ باندھکر ہٹائی جارہی تھیں. مجھے خیال ہوآیا کہ ٹھیک اِسی طرح کانگریس کے سنگٹھن کو ہی کیوں نہ باندھ لیا جائے. بہت شان کے ساتھ کانگریس نے اپنا مقصد پورا کیا ہے. سارا عالم اُسکے کارناموں سے روشن ہے. لیکن ہر چیز جو آتی ہے، جاتی بھی ہے یہ قدرت کا قانون ہے. خوبی اِسی میں ہے کہ جیسے سورج خود ہی کرنیں سمیٹ لیتا ہے، کانگریس بھی اپنے کو سمیٹ لے اور دوسرے روز تازی شکل میں—لوک سیوک سنگھ کا پھول بنکر—پھولے پھلے. مگر جو جماعت یا آدمی ایسا نہیں کرتے اُن کا خاتمہ زبردستی ہو جاتا ہے اور ایسی گھڑی پر اُنکی مت بھی ماری جاتی ہے.

مجھے لگا کہ کانگریس کی وہ گھڑی آگئی. احمدآباد کی بیٹھک سے کانگریس کا پتن اور انت شروع ہوگیا. اناتھوں کا یہ جھنڈ اب اپنے کو شاید ہی سنبھال سکے. لیکن ابھی وقت ہے. شری جواہر لال نہرو خود اوپر کے اپنے ایک جملے پر غور کریں، کانگریس سے اُسپر غور کرائیں، اُسکو عمل میں لائیں. تبھی ہم سب کہہ سکیں گے—

"کچھ بات ہے کہ ہستی مٹتی نہیں ہماری"

کسی بھی اخبار کا پہلا کام ہے لوگوں کے بھاؤں کو سمجھ کر پرکٹ کرنا؛ دوسرا کام ہے لوگوں میں جن بھاوناؤں کی ضرورت ہو اُنھیں جگانا؛ اور تیسرا کام ہے لوگوں میں اگر کوئی عیب ہو تو اُنھیں کسی بھی مصیبت کی پرواہ نہ کر بے دھوک سب کے سامنے رکھ دینا.

—مہاتما گاندھی

बेधड़क सब के सामने रख देना.

—महात्मा गाँधी

سامنے رکھ دینا .

—مہاتما گاندھی

लाल चीन

[मशहूर अंगरेज़ी पत्रकार सर आर्थर मूर जो स्टेटसमैन, के एडीटर रह चुके हैं, हाल में चीन गए थे. वहाँ का जो आँखों देखा हाल उन्होंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में बयान किया है उसकी कुछ बातें हम नीचे देते हैं. —एडीटर]

सर आर्थर जहाज़ में बैठे फ़ारमूसा के पास चीन की तरफ़ बढ़ रहे थे कि समन्दर में ही बहुत सवेरे और फिर दोबारा शाम को कुछ अमरीकी हवाई जहाज़ इनके पानी के जहाज़ की तरफ़ उतरे. अमरीकी जहाज़ों ने इनके जहाज़ का चक्कर लगाया और इनके जहाज़ के बिलकुल बराबर में आकर जब यह तसल्ली करली कि यह जहाज़ इंगलिस्तान का जहाज़ है किसी ग़ैर का नहीं तो फिर हवा में ऊपर उड़ गए.

सर आर्थर पूरा एक महीना चीन में रहे. वह कोरिया और जापान भी हो आए.

चीन के नए जनराज (रिपबलिक) के काम और मंसूबों को वह ठोस और अमली बताते हैं और लिखते हैं कि उनमें रूखा समाजवाद (सोशलिज़्म) या साम्यावाद (कम्युनिज़्म) नहीं है.

फ़ारमूसा की बाबत वह लिखते हैं कि अमरीका, इंगलैन्ड और दूसरी मित्र शक्तियाँ हाल में इस पर अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर कर चुकी हैं कि फ़ारमूसा चीन को वापिस देदिया जाए चाहे चीन में कैसी भी हुकूमत क्यों न हो. इसलिये सर आर्थर की राय है कि फ़ारमूसा चीन ही को मिलना चाहिये.

لال چین

[مشہور انگریزی پتر کار سر آرتھر مور جو اسٹیٹسمین' کے ایڈیٹر رہ چکے ہیں' حال میں چین گئے تھے وہاں کا جو آنکھوں دیکھا حال اُنہوں نے ' ہندستان ٹائمس ' میں بیان کیا ہے اُسکی کچھ باتیں ہم نیچے دیتے ہیں . —ایڈیٹر]

سر آرتھر جہاز میں بیٹھے فارموسا کے پاس سے چین کی طرف بڑھ رہے تھے کہ سمندر میں ہی بہت سویرے اور پھر دوبارہ شام کو کچھ امریکی ہوائی جہاز اِنکے پانی کے جہاز کی طرف اُترے. امریکی جہازوں نے اُنکے جہاز کا چکر لگایا اور اِنکے جہاز کے بالکل برابر میں آکر جب یہ تسلی کرلی کہ یہ جہاز انگلستان کا جہاز ہے کسی غیر کا نہیں تو پھر ہوا میں اُوپر اُڑ گئے .

سر آرتھر پورا ایک مہینہ چین میں رہے . وہ کوریا اور جاپان بھی ہو آئے .

چین کے نئے جن راج (ریپبلک) کے کام اور منصوبوں کو وہ ٹھوس اور عملی بتاتے ہیں اور لکھتے ہیں کہ اُن میں روکھا سماج واد (سوشلزم) یا سامیہ واد (کمیونزم) نہیں ہے .

فارموسا کی بابت وہ لکھتے ہیں کہ امریکہ' انگلینڈ اور دوسری متر شکتیاں حال میں اِس پر اپنی رضامندی ظاہر کر چکی ہیں کہ فارموسا چین کو واپس دے دیا جائے چاہے چین میں کیسی بھی حکومت کیوں نہ ہو . اِسلئے سر آرتھر کی رائے ہے کہ فارموسا چین ہی کو ملنا چاہیئے .

उन्होंने लिखा है कि चीनियों का बरताव उनके साथ बहुत ही प्रेम और ख़ातिरदारी का था. रेल से सफ़र करते हुए उन्होंने देखा कि उस रेल पर सब अफ़सर और पुलिस वाले औरतें थीं. रेलों में उधर से इधर तक सिर्फ़ एक ही दरजा था. भारत की तरह अलग अलग दरजे नहीं थे. रेलों में लाउड इस्पीकर लगे हुए थे जो बारी बारी कभी गाना सुनाते रहते थे और कभी राजकाजी और दूसरी तरह के लेकचर. इन लेकचरों में इस तरह की बातें बताई जाती थीं कि आदमी को अपने पड़ोसियों के साथ कैसा बरताव करना चाहिये, रेलों में कैसे बैठना चाहिये, अपनी और दूसरों की तन्दुरुस्ती का कैसे ख़याल रखना चाहिये वग़ैरा.

वह लिखते हैं कि चीनी सब बाहर वालों के साथ और एक दूसरे के साथ बहुत ही मिठास और प्रेम का बरताव करते हैं.

वहाँ उन्हें बहुत सी फ़्राँसीसी, रूसी और दूसरी विदेशी औरतें और विदेशी मर्द मिले जो सब चीनियों के बरताव से बहुत ख़ुश थे. लिखते हैं कि—"मुझे एक भी ग़ैर चीनी ऐसा नहीं मिला जिसने ज़ोरों के साथ यह न कहा हो कि इससे पहले की कोमिंटाँग सरकार के मुक़ाबले में या किसी भी सरकार के मुक़ाबले में जो लोगों को याद है आजकल का जनराज इतना बढ़कर है कि दोनों में कोई मुक़ाबला ही नहीं किया जा सकता."

पिछले तीस या अधिक बरसों में पहली बार चीज़ों की क़ीमतें ढंग पर आकर टिकी हैं, मँहगाई रुकी है और काग़ज़ी सिक्कों की तादाद कम हुई है. इन बातों से सारी जनता बहुत ख़ुश है. चीन में पहली बार फ़ौज के सिपाही यह बात जान गए हैं कि वह जनता के रक्षक और सेवक हैं मालिक नहीं.

सर आर्थर लिखते हैं—"जब मेरा जहाज़ टीनसिन पहुंचा तो केवल वह सरकारी अफ़सर जहाज़ पर आए जिन्हें कुछ काम था.

اُنھوں نے لکھا ھے کہ چینیوں کا برتاؤ اُنکے ساتھ بہت ھی پریم اور خاطرداری کا تھا . ریل سے سفر کرتے ھوئے اُنھوں نے دیکھا کہ اُس ریل پر سب افسر اور پولس والے عورتیں تھیں . ریلوں میں اُدھر سے اِدھر تک صرف ایک ھی درجہ تھا . بھارت کی طرح الگ الگ درجے نہیں تھے . ریلوں میں لاؤڈ اسپیکر لگے ھوئے تھے جو باری باری کبھی گانا سناتے رھتے تھے اور کبھی راج‌کاجی اور دوسری طرح کے لیکچر . اِن لیکچروں میں اِسطرح کی باتیں بتائی جاتی تھیں کہ آدمی کو اپنے پڑوسیوں کے ساتھ کیسا برتاؤ کرنا چاھیئے' ریلوں میں کیسے بیٹھنا چاھیئے' اپنی اور دوسروں کی تندرستی کا کیسے خیال رکھنا چاھیئے وغیرہ .

وہ لکھتے ھیں کہ چینی سب باھر والوں کے ساتھ اور ایک دوسرے کے ساتھ بہت ھی مٹھاس اور پریم کا برتاؤ کرتے ھیں .

وھاں اُنھیں بہت سی فرانسیسی' روسی اور دوسری بدیشی عورتیں اور بدیشی مرد ملے جو سب چینیوں کے برتاؤ سے بہت خوش تھے . لکھتے ھیں کہ— "مجھے ایک بھی غیر چینی ایسا نہیں ملا جس نے زوروں کے ساتھ یہ نہ کہا ھو کہ اُس سے پہلے کی کومنتانگ سرکار کے مقابلے میں یا کسی بھی سرکار کے مقابلے میں جو لوگوں کو یاد ھے آج کل کا جن راج اِتنا بڑھکر ھے کہ دونوں میں کوئی مقابلہ ھی نہیں کیا جا سکتا ."

پچھلے تیس یا ادھک برسوں میں پہلی بار چیزوں کی قیمتیں ڈھنگ پر آکر ٹکی ھیں' مہنگائی رکی ھے اور کاغذی سکوں کی تعداد کم ھوئی ھے . اِن باتوں سے ساری جنتا بہت خوش ھے . چین میں پہلی بار فوج کے سپاھی یہ بات جان گئے ھیں کہ وہ جنتا کے رکشک اور سیوک ھیں مالک نہیں .

سر آرتھر لکھتے ھیں— "جب میرا جہاز ٹینسن پہونچا تو کیول وہ سرکاری افسر جہاز پر آئے جنھیں کچھ کام تھا .

में पहली बार फ़ौज के सिपाही यह बात ... के रक्षक और सेवक हैं मालिक नहीं.

सर आर्थर लिखते हैं—"जब मेरा जहाज़ टीनसिन पहुँचा तो केवल वह सरकारी अफ़सर जहाज़ पर आए जिन्हें कुछ काम था.

उन्होंने अपना काम बहुत ही मिठास और ईमानदारी के साथ किया और जब उन्हें सिगरेट या चाय का एक प्याला पेश किया गया तो उन्होंने लेने से साफ़ इनकार कर दिया. जहाज़ के अफ़सरों ने मुझसे कहा कि इससे पहले किसी जहाज़ के चीनी बन्दरगाह में पहुंचते ही चीनी सरकारी अफ़सर टिड्डी दल की तरह जहाज़ पर चढ़ आते थे और खुले मुफ़्त का खाना और मुफ़्त की शराबें मांगते थे जब तक कि जहाज़ वहां से चल न दे. हमारे जहाज़ के सब अफ़सर और आदमी एक जगह बुलाए गए जहाँ पर किसी ने नए चीन के ऊपर उन्हें बड़े जोश के साथ लेकचर दिया."

यू० एन० ओ० में उन दिनों इस बात पर बहस चल रही थी कि चीन को हमलावर (एग्रेसर) ठहराया जाए या न ठहराया जाए. जो खबरें चीन पहुँचती थीं उनसे वहाँ के लोगों में भी आशा और निराशा की लहरें दौड़ती रहती थीं. जब चीन की सरकार ने अपनी तरफ़ से लड़ाई बन्द कर देने का इरादा ज़ाहिर किया तो चीन में एक उम्मीद की लहर दौड़ गई. यह वादा इस शर्त पर था कि सात बड़ी बड़ी हुकूमतों की कॉनफ़रेंस कर के उनके सामने सारा मामला रक्खा जायगा. पर जब आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, फ़्रान्स, कनैडा और इंगलैंड तक ने यह मान लिया कि कोरिया में चीन हमलावर है तो फिर चीनियों में निराशा छा गई.

वह लिखते हैं—"नए चीन के नेताओं की ईमानदारी और सचाई पर कोई उंगली नहीं उठा सकता. उन्होंने बरसों कभी छिप छिप कर और कभी खुले मैदान में आकर अपने देस के शत्रुओं के साथ जंग की है और अन्त में ग़ज़ब की सफलता हासिल की है. वह इस बात को पूरी तरह समझते हैं कि देस की असली रचना का इतना बड़ा काम अभी उन्हें पूरा करना है. वह समझते हैं कि अभी उन्हें दूसरी पार्टियों को साथ लेकर सरकारें बनानी होंगी और अभी बहुत दिनों तक लोगों को अलग अलग निजी धंदों और निजी सम्पत्ति रखने

جنتا کے رکشک اور سیوک ہیں مالک نہیں ۔

سر آرتھر لکھتے ہیں —"جب میرا جہاز تینسن پہونچا تو کیول وہ سرکاری افسر جہاز پر آئے جنہیں کچھ کام تھا ۔

اُنہوں نے اپنا کام بہت ہی مٹھاس اور ایمانداری کے ساتھ کیا اور جب اُنہیں سگریٹ یا چائے کا ایک پیالہ پیش کیا گیا تو اُنہوں نے لینے سے صاف انکار کر دیا ۔ جہاز کے افسروں نے مجھ سے کہا کہ اِس سے پہلے کسی جہاز کے چینی بندرگاہ میں پہونچتے ہی چینی سرکاری افسر ٹڈی دل کی طرح جہاز پر چڑھ آتے تھے اور کھلے مفت کا کھانا اور مفت کی شرابیں مانگتے تھے ۔ جب تک کہ جہاز وہاں سے چل نہ دے ۔ ہمارے جہاز کے سب افسر اور آدمی ایک جگہ بلائے گئے جہاں پر کسی نے نئے چین کے اوپر اُنہیں بڑے جوش کے ساتھ لکچر دیا ۔"

یو ۔ این ۔ او ۔ میں اُن دنوں اِس بات پر بحث چل رہی تھی کہ چین کو حملہ ور (ایگریسر) ٹھہرایا جائے یا نہ ٹھہرایا جائے ۔ جو خبریں چین پہونچتی تھیں اُن سے وہاں کے لوگوں میں بھی آشا اور نراشا کی لہریں دوڑتی رہتی تھیں ۔ جب چین کی سرکار نے اپنی طرف سے لڑائی بند کر دینے کا اِرادہ ظاہر کیا تو چین میں ایک اُمید کی لہر دوڑ گئی ۔ یہ وعدہ اِس شرط پر تھا کہ سات بڑی بڑی حکومتوں کی کانفرنس کر کے اُنکے سامنے سارا معاملہ رکھا جائیگا ۔ پر جب آسٹریلیا، نیوزیلینڈ، فرانس، کنیڈا اور انگلینڈ تک نے یہ مان لیا کہ کوریا میں چین حملہ ور ہے تو پھر چینیوں میں نراشا چھا گئی ۔

وہ لکھتے ہیں—"نئے چین کے نیتاؤں کی ایمانداری اور سچائی پر کوئی انگلی نہیں اُٹھا سکتا ۔ اُنہوں نے برسوں کبھی چھپ چھپ کر اور کبھی کھلے میدان میں آکر اپنے دیس کے شترووں کے ساتھ جنگ کی ہے اور انت میں غضب کی سپھلتا حاصل کی ہے ۔ وہ اِس بات کو پوری طرح سمجھتے ہیں کہ دیس کی اصلی رچنا کا اِتنا بڑا کام ابھی اُنہیں پورا کرنا ہے ۔ وہ سمجھتے ہیں کہ ابھی اُنہیں دوسری پارٹیوں کو ساتھ لیکر سرکاریں بنانی ہوں گی اور ابھی بہت دنوں تک لوگوں کو الگ الگ نجی دھندوں اور نجی سمپتی رکھنے

की इजाज़त देनी होगी. वह यह भी समझते हैं कि अपने विरोधियों को मिटाकर या कश्ट पहुंचा कर नहीं बल्कि उनके दिल बदल कर उन्हें अपनी क़ौम के घावों को भरना और चंगा करना है. इन नेताओं की सच्चाई साबित हो चुकी है, देस की जनता इनके पीछे है. यह बात कि इस तरह के नेता कोरिया के लिये यू० एन० ओ० से जंग करने में अपना सब कुछ क़ुरबान कर देने को तैयार हो जाँय एक ध्यान देने की चीज़ है."

चीन वालों को अपनी सच्चाई और अपनी विजय में पूरा विश्वास है. उन्हें रूस के साथ अपनी मित्रता में भी पूरा विश्वास है. उन्हें और उनके सब से बड़े नेता माओ-तसे-तुंग को इस बात का भी विश्वास है कि अमरीका की नियत अच्छी नहीं. उन्हें यक़ीन है कि अमरीका की तिजारत और अमरीका का ब्योपार उन सब बुराइयों से भरा पड़ा है जिन से चीन ने अपने को कड़ाई के साथ पाक कर लिया है. वह भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनका चीनी जनराज अमरीकी 'लोक शाही' (डेमोक्रेसी) की बदबू से बचा रहे. अमरीकी सरकार और वहाँ के ब्योपारियों के रवैये से वह इसकी बहुत सी मिसालें देते हैं. वह मानते हैं कि अमरीकी नेता अपनी जेबें भरने की फ़िकर में रहते हैं, जनता के भले की नहीं. यू. एन. ओ. के ब्योहार से भी वह बहुत असंतुश्ट हैं. वह किसी तरह गवारा नहीं कर सकते कि चीन के किसी मामले में या किसी ऐसे मामले में जिस में चीन एक फ़रीक़ है अमरीका कोई दख़ल दे. उनकी निगाह में अमरीका की बदमाशी का सब से बड़ा सबूत यह है कि चाँग काई शेक और सिंगमनरी जैसे दोनों 'समन्दरी खुर्रांट' (ओल्ड मैन आफ़ दी सी) जरनल मेकआर्थर की गरदन से चिपटे हुए हैं.

کی اجازت دینی ہوگی . وہ یہ بھی سمجھتے ہیں کہ اپنے وِرودھیوں کو مٹا کر یا کشٹ پہونچا کر نہیں بلکہ اُنکے دل بدلکر اُنھیں اپنی قوم کے گھاؤں کو بھرنا اور چنگا کرنا ہے . اِن نیتاؤں کی سچائی ثابت ہو چکی ہے ، دیس کی جنتا اِنکے پیچھے ہے . یہ بات کہ اِس طرح کے نیتا کوریا کے لئے یو . این . او . سے جنگ کرنے میں اپنا سب کچھ قربان کر دینے کو تیار ہو جائیں ایک دھیان دینے کی چیز ہے ."

چین والوں کو اپنی سچائی اور اپنی وِجے میں پورا وشواس ہے . اُنھیں روس کے ساتھ اپنی مترتا میں بھی پورا وشواس ہے . اُنھیں اور اُنکے سب سے بڑے نیتا ماؤتسے تنگ کو اِس بات کا بھی وشواس ہے کہ امریکہ کی نیت اچھی نہیں . اُنھیں یقین ہے کہ امریکہ کی تجارت اور امریکہ کا بیوہار اُن سب برائیوں سے بھرا پڑا ہے جن سے چین نے اپنے کو کڑائی کے ساتھ پاک کر لیا ہے . وہ بھگوان سے پرارتھنا کرتے ہیں کہ اُن کا چینی جن‌راج امریکی 'لوک شاہی' (ڈیموکریسی) کی بدبو سے بچا رہے . امریکی سرکار اور وہاں کے بیوپاریوں کے رویے سے وہ اِسکی بہت سی مثالیں دیتے ہیں . وہ مانتے ہیں کہ امریکی نیتا اپنی جیبیں بھرنے کی فکر میں رہتے ہیں جنتا کے بھلے کی نہیں . یو . این . او . کے بیوہار سے بھی وہ بہت اسنتشٹ ہیں . وہ کسی طرح گوارا نہیں کر سکتے کہ چین کے کسی معاملے میں یا کسی ایسے معاملے میں جس میں چین ایک فریق ہے امریکہ کوئی دخل دے . اُنکی نگاہ میں امریکہ کی بدمعاشی کا سب سے بڑا ثبوت یہ ہے کہ چانگ کائی شیک اور سنگ مین ری جیسے دونوں 'سمندری خرانٹ' (اولڈ مین آف دی سی) جرنل میک‌آرتھر کی گردن سے چپٹے ہوئے ہیں .

मैन श्राफ़ दी सी) जरनल मेकआर्थर की गरदन से चिपटे हुए हैं.

'सर्वोदय' से

बटवारे के खंडहरों का फिर-बनाव ❀

(भाई सत्यानंद सरस्वती)

आँधी के वह दिन

सन '४७ के अगस्त में पाकिस्तान–हिन्दुस्तान का जो बटवारा राजकाजी नेताओं ने मान लिया था, उसका भयंकर परिनाम पंजाब के हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों को फ़ौरन भोगना पड़ा. पच्छिमी पंजाब से हिन्दुओं और सिक्खों को भागना पड़ा. इसी तरह पूरबी पंजाब यानी जालंधर और अम्बाला कमिश्नरी और पटियाला, कपूरथला वग़ैरा रियासतों से मुसलमानों को अपना घर बार छोड़ कर पच्छिमी पंजाब जाना पड़ा. कहा जाता है कि इस सिलसिले में कुल मिला कर पाँच लाख हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख मारे गए और लगभग एक लाख आदमियों को धर्म परिवर्तन करना पड़ा. इसी तरह लगभग एक अरब की सम्पत्ति बरबाद हुई. ऐसे साम्प्रदायिक उथल पुथल की आँधी के समय में भी कुछ लोगों की बुद्धि और विवेक से धर्म-अधर्म का फ़रक़ हो सकता है, इसका भी अनुभव हुआ.

यहाँ पूरबी पंजाब के जिला अंबाला की तहसील जगाधरी के फिर-बसाव काम का थोड़े से में जिकर किया जा रहा है.

इस तहसील में हिन्दुओं का काफ़ी बड़ा बहुमत हमेशा से रहता आया है, इसलिये यहाँ के मुसलमानों पर भी वैसे ही भयानक

❀ भाशा कहीं कहीं आसान कर दी गई है— एडीटर.

'سرودے' سے

❀ بٹوارے کے کھنڈھروں کا پھر-بناؤ

(بھائی ستیانند سرسوتی)

آندھی کے وہ دن

سن '۴۷ کے اگست میں پاکستان-ھندستان کا جو بٹوارہ راج‌کاجی نیتاؤں نے مان لیا تھا، اُسکا بھیانکر پریڻام پنجاب کے ھندو، مسلمان اور سکھوں کو فوراً بھوگنا پڑا . پچھمی پنجاب سے ھندوؤں اور سکھوں کو بھاگنا پڑا . اِسی طرح پوربی پنجاب یعنی جالندھر اور امبالہ کمشنری اور پٹیالہ، کپورتھلہ وغیرہ ریاستوں سے مسلمانوں کو اپنا گھر بار چھوڑ کر پچھمی پنجاب جانا پڑا . کہا جاتا ھے کہ اِس سلسلے میں کل ملا کر پانچ لاکھ ھندو، مسلمان اور سکھ مارے گئے اور لگ بھگ ایک لاکھ آدمیوں کو دھرم پریورتن کرنا پڑا . اِسی طرح لگ بھگ ایک ارب کی سمپتی برباد ھوئی . ایسے سامپردایک اُتھل پتھل کی آندھی کے سمے میں بھی کچھ لوگوں کی بدھی اور ویویک سے دھرم ادھرم کا فرق ھو سکتا ھے، اِسکا بھی انوبھو ھوا .

یہاں پوربی پنجاب کے ضلع انبالہ کی تحصیل جگادھری کے پھر-بساؤ کام کا تھوڑے سے میں ذکر کیا جا رھا ھے .

اِس تحصیل میں ھندوؤں کا کافی بڑا بہومت ھمیشہ سے رھتا آیا ھے، اِسلئے یہاں کے مسلمانوں پر بھی ویسے ھی بھیانک

❀ بھاشا کہیں کہیں آسان کر دی گئی ھے — اڈیٹر .

अत्याचार हुए जैसे रावलपिन्डी और मुलतान की मुसलिम-बहुमत-कमिश्नरियों में हिन्दुओं पर हुए थे. सहारनपुर ज़िले (उत्तर प्रदेश) की सीमा पर जगाधरी तहसील है. बीच में केवल जमना नदी पड़ती है. इसलिये बुरी तरह भगदड़ के समय बहुत से मुसलमान अपने घरों को छोड़ कर उत्तर प्रदेश में आ गए थे. पच्छिमी पंजाब से आए हुए हिन्दुओं ने उनके घरों पर अधिकार कर लिया. बड़ी बड़ी अलीशान मसजिदें या तो सूनी पड़ गईं या उनमें हिन्दू शरनार्थी टिक गए.

फिर-बनाव का काम

शरनार्थियों और उखड़े हुए लोगों को फिर से बसाने और सहायता देने के लिये भारत सरकार ने 'संयुक्त सहायता और कल्यानकारी कौन्सिल' क़ायम की, जिसकी तरफ़ से जगह जगह पर कैम्प क़ायम किये गए और शरनार्थियों को उनमें टहराया गया. बाद में भारत सरकार ने असाम्प्रदायिक प्रजातंत्र राज का ऐलान करके हर तरह से दुखी हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों को एकसी हमदर्दी और इनसाफ़ करने का विश्वास दिलाया. जगाधरी तहसील के लगभग बीस हज़ार मुसलमान उत्तर प्रदेश के पच्छिमी ज़िलों में पनाह ले रहे थे. भारत सरकार के ऊपर बताए ऐलान को सुन कर उनकी जान में जान आ गई और वह अपने घरों को वापस जाने के लिये बेचैन होने लगे. लेकिन डर और आतंक से वातावरन इतना ज़हरीला हो चुका था कि मुसलमान का रेलों में सफ़र करना या किसी जगह में चले जाना उन दिनों ख़तरे से खाली नहीं था.

इनसानियत सो नहीं गई थी

ज़बरदस्ती भगाई गई औरतों के उद्धार के लिये श्रीमती मृदुला बहन साराभाई संयुक्त सहायता समिति की तरफ़ से काम कर रही थीं. उन्हीं की प्रेरना से जगाधरी तहसील के उजड़े ए

اتیاچار ہوئے جیسے راولپنڈی اور ملتان کی مسلم بہومت کمشنریوں میں ہندؤوں پر ہوئے تھے ۔ سہارن پور ضلع (اُتر پردیش) کی سیما پر جگادھری تحصیل ہے ۔ بیچ میں کیول جمنا ندی پڑتی ہے ۔ اِس لئے بری طرح بھگدڑ کے سمے بہت سے مسلمان اپنے گھروں کو چھوڑ کر اُتر پردیش میں آگئے تھے ۔ پچھمی پنجاب سے آئے ہوئے ہندؤوں نے اُنکے گھروں پر ادھیکار کر لیا ۔ بڑی بڑی عالیشان مسجدیں یا تو سونی پڑ گئیں یا اُن میں ہندو شرنارتھی ٹک گئے ۔

پھر-بناؤ کا کام

شرنارتھیوں اور اُکھڑے ہوئے لوگوں کو پھر سے بسانے اور سہایتا دینے کے لئے بھارت سرکار نے 'سنیکت سہایتا اور کلیان کاری کونسل' قائم کی، جسکی طرف سے جگہ جگہ پر کیمپ قائم کئے گئے اور شرنارتھیوں کو اُن میں ٹھہرایا گیا ۔ بعد میں بھارت سرکار نے اسامپردایک پرجا تنتر راج کا اعلان کر کے ہر طرح سے دکھی ہندو مسلمان اور سکھوں کو ایک سی ہمدردی اور انصاف کرنے کا وشواس دلایا ۔ جگادھری تحصیل کے لگ بھگ بیس ہزار مسلمان اُتر پردیش کے پچھمی ضلعوں میں پناہ لے رہے تھے ۔ بھارت سرکار کے اُوپر بتائے اعلان کو سن کر اُن کی جان میں جان آگئی اور وہ اپنے گھروں کو واپس جانے کے لئے بیچین ہونے لگے ۔ لیکن ڈر اور آتنک سے واتاورن اِتنا زہریلا ہو چکا تھا کہ مسلمان کا ریلوں میں سفر کرنا یا کسی جگہ میں چلے جانا اُن دنوں خطرے سے خالی نہیں تھا ۔

انسانیت سو نہیں گئی تھی

زبردستی بھگائی گئی عورتوں کے اُددھار کے لئے شریمتی مردلا بہن سارا بھائی سنیکت سہایتا سمیتی کی طرف سے کام کر رہی تھیں ۔ انھیں کی پریرنا سے جگادھری تحصیل کے اُجڑے ہوئے

नया हिन्द   बटवारे के खंडहरों का फिर-बनाव   मई सन् '५१

نیا هند   بٹوارے کے کھنڈھروں کا پھر-بناؤ   مئی سن '٥١

जबरदस्ती भगाई गई औरतों के उद्धार के लिये श्रीमती मृदुला बहन साराभाई संयुक्त सहायता समिति की तरफ़ से काम कर रही थीं. उन्हीं की प्रेरणा से जगाधरी तहसील के इलाके म

मुसलमानों को राहत पहुँचाने और फिर से बसाने के लिये एक सद्भावना (गुड विल) मिशन क़ायम किया गया. इस मिशन में पंजाब प्रान्त के कुछ ऐसे हिन्दू और सिक्ख काँगरेस काजकर्ता शामिल हुए, जिन पर फ़िरक़ापरस्ती और साम्प्रदायिकता का प्रभाव बिलकुल नहीं पड़ा था. इन काँगरेस सेवकों में श्री मुँशीराम मल्लिक, हरिवंश सिंह 'बाग़ी' और सरदार दयाल सिंह ख़ास थे. इस सद्भावना मिशन का सदर दफ़्तर जगाधरी तहसील के पास बुड़िया नाम के इतिहासी क़स्बे में रक्खा गया. बुड़िया के रहने वाले रईस सरदार रतन अनमोल सिंह के पूरे परिवार ने सद्भावना मिशन के कामों में दिल से सहायता पहुँचाई और काजकर्ताओं को हर तरह से सहयोग दिया. घोर उथल पुथल के दिनों में भी इस सिक्ख कुटुम्ब ने मुसलमानों की हिफ़ाजत के लिये बहादुरी के साथ काफ़ी कोशिश की थी. घबराए हुए मुसलमानों के डर को छुड़ाने के लिये भारती सेना की एक टुकड़ी भी रखी गई. गाँवों में दौरा कर के पच्छिमी पंजाब से आए हुए मुसलमान-हिन्दू शरनार्थियों को भारत सरकार की नीत बताई गई और आपस में मिलजुल कर रहने और डर छोड़ देने की बात अच्छी तरह समझा दी गई. बाद में मुसलमान शरनार्थियों को ख़ास तरह से राहत देने के लिये बुड़िया में पूरबी पंजाब की सरकार ने एक कैम्प चलाया, जिसमें लगभग तीन हज़ार मुसलमान औरत, मर्द और बच्चे दाख़िल हुए. यह कैम्प जनवरी १९४९ से जनवरी '५० तक चालू रहा. कैम्प में शरनार्थियों के रहने के लिये जगह दी गई थी और सभी को खाना और जलपान रोज़ मिलता था. मुसलमान शरनार्थी अपने घरों को वापस जाने के लिये काफ़ी परेशान और बेचैन थे. इसलिये सद्भावना मिशन के काजकर्ताओं को सरकारी कर्मचारियों की सहायता से गाँव में मुसलमानों को फिर से बसाने के लिये मकान लेने का इन्तज़ाम किया गया. धीरे धीरे मुसलमानों

زبردستی بھگائی گئی عورتوں کے اُدھار کے لئے شریمتی مردلا بہن سارا بھائی سنیکت سہایتا سمیتی کی طرف سے کام کر رہی تھیں . انہیں کی پریرنا سے جگادھری تحصیل کے علاقے

مسلمانوں کو راحت پہنچانے اور پھر سے بسانے کے لئے ایک سدبھاونا (گڈ ول) مشن قائم کیا گیا . اِس مشن میں پنجاب پرانت کے کچھ ایسے ہندو اور سکھ کانگریس کاج کرتا شامل ہوئے، جن پر فرقہ پرستی اور سامپردائیکتا کا پربھاؤ بالکل نہیں پڑا تھا . اِن کانگریس سیوکوں میں شری منشی رام ملک، ہرونش سنگھ 'باغی' اور سردار دیال سنگھ خاص تھے . اِس سدبھاونا مشن کا صدر دفتر جگادھری تحصیل کے پاس بڑیا نام کے اِتہاسی قصبے میں رکھا گیا . بڑیا کے رہنے والے رئیس سردار رتن انمول سنگھ کے پورے پریوار نے سدبھاونا مشن کے کاموں میں دل سے سہایتا پہنچائی اور کاج کرتاؤں کو ہر طرح سے سہیوگ دیا . گھور اُتھل پتھل کے دنوں میں بھی اِس سکھ کٹمب نے مسلمانوں کی حفاظت کے لئے بہادری کے ساتھ کافی کوشش کی تھی . گھبرائے ہوئے مسلمانوں کے ڈر کو چھڑانے کے لئے بھارتی سینا کی ایک ٹکڑی بھی رکھی گئی . گاؤں میں دورہ کر کے پچھمی پنجاب سے آئے ہوئے مسلمان ہندو شرنارتھیوں کو بھارت سرکار کی نیت بتائی گئی اور آپس میں مل جلکر رہنے اور ڈر چھوڑ دینے کی بات اچھی طرح سمجھا دی گئی . بعد میں مسلمان شرنارتھیوں کو خاص طرح سے راحت دینے کے لئے بڑیا میں پوربی پنجاب کی سرکار نے ایک کیمپ چلایا جس میں لگ بھگ تین ہزار مسلمان عورت، مرد اور بچے داخل ہوئے . یہ کیمپ جنوری ١٩٤٩ سے جنوری '٥٠ تک چالو رہا . کیمپ میں شرنارتھیوں کے رہنے کے لئے جگہ دی گئی تھی اور سبھی کو کھانا اور جلپان روز ملتا تھا . مسلمان شرنارتھی اپنے گھروں کو واپس جانے کے لئے کافی پریشان اور بےچین تھے . اِسلئے سدبھاونا مشن کے کاج کرتاؤں کو سرکاری کرمچاریوں کی سہایتا سے گاؤں میں مسلمانوں کو پھر سے بسانے کے لئے مکان لینے کا انتظام کیا گیا . دھیرے دھیرے مسلمانوں

को उनके गाँवों में पहुँचाया गया और वह इधर उधर के खंडहरों में और झोपड़ियों में बड़ी मुसीबत के साथ अपने दिन काटने लगे.

रचनात्मक काम

पं० सुन्दरलाल की प्रेरना से मैं भी बुड़िया के सद्भावना मिशन में शामिल हुआ और समय समय पर मिशन के काजकर्ताओं के साथ गाँवों में दौरा करके नज़दीक से और असली रूप में हालत को देखा. सन १९४९ के शुरू में गाँव-सेवा की योजना माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू के सामने रक्खी गई. उस योजना के मुताबिक़ गाँवों में खादीकाम, सफ़ाई और बच्चों को बुनियादी तालीम देने का काम रक्खा गया था. नेहरू जी ने बड़े प्रेम के साथ इन कामों के लिये खास सहायता प्रधान-मंत्री-कोश से दिलवाई. आज़मगढ़, जिला उत्तर प्रदेश के सात ट्रेनिंग पाए हुए नौजवान काजकर्ताओं को सद्भावना मिशन में शामिल करके गाँवों में रचनात्मक काम शुरू किया गया. ये नौजवान खादी काजकर्ता की ट्रेनिंग ले चुके थे और सभी होनहार और साहसी थे. उन्होंने १९४९ की गर्मियों में चार राष्ट्री स्कूलों को अलग अलग केन्द्रों में चालू किया, जिससे शरनार्थियों के साथ उनका गहरा नाता हो गया. कताई का काम भी चालू किया गया. कुल भारत चरखा संघ की पंजाब शाखा ने भी खादी काम में सहायता दी.

फिर पुराने सुखी दिन

श्रीमती मृदुला बहन की देख रेख में धीरे धीरे बुड़िया का सेवा-काम अपना असर जमाने लगा. १९५० के अप्रैल में नेहरू-लियाक़त-अली समझौता हुआ, जिसका असर हिन्दू मुसलमानों और प्रादेशिक सरकारों पर पड़ा. पूरबी पंजाब में उस समय एक मज़बूत मंत्री मंडल माननीय डा० गोपीचंद भार्गव ने बना लिया था. उनकी प्रेरना से कमिश्नर महाशय ने तहसील का दौरा किया और उनके

کو اُنکے گاؤں میں پہنچایا گیا اور وہ اِدھر اُدھر کے کھنڈھروں میں اور جھونپڑیوں میں بڑی مصیبت کے ساتھ اپنے دن کاٹنے لگے .

رچناتمک کام

پنڈت سندر لال کی پریرنا سے میں بھی بڑیا کے سدبھاونا مشن میں شامل ہوا اور سمے سمے پر مشن کے کاج کرتاؤں کے ساتھ گاؤں میں دورہ کرکے نزدیک سے اور اصلی روپ میں حالت کو دیکھا . سن ۱۹۴۹ کے شروع میں گاؤں سیوا کی یوجنا مانیہ پنڈت جواہر لال نہرو کے سامنے رکھی گئی . اس یوجنا کے مطابق گاؤوں میں کھادی کام، صفائی اور بچوں کو بنیادی تعلیم دینے کا کام رکھا گیا تھا . نہرو جی نے بڑے پریم کے ساتھ اِن کاموں کیلئے خاص سہایتا پردھان منتری کوش سے دلوائی . اعظم گڈھ، ضلع اُتر پردیش کے سات ٹریننگ پائے ہوئے نوجوان کاج کرتاؤں کو سدبھاونا مشن میں شامل کر کے گاؤں میں رچناتمک کام شروع کیا گیا . یہ نوجوان کھادی کاج کرتا کی ٹریننگ لے چکے تھے اور سبھی ہونہار اور ساہسی تھے . اُنھوں نے ۱۹۴۹ کی گرمیوں میں چار راشٹری اسکولوں کو الگ الگ کیندروں میں چالو کیا، جس سے شرناتھیوں کے ساتھ اُن کا گہرا ناتہ ہوگیا . کتائی کا کام بھی چالو کیا گیا . کل بھارت چرخہ سنگھ کی پنجاب شاکھا نے بھی کھادی کام میں سہایتا دی .

پھر پرانے سکھی دن

شری متی مردولا بہن کی دیکھ ریکھ میں دھیرے دھیرے بڑیا کا سیوا- کام اپنا اثر جمانے لگا . ۱۹۵۰ کے اپریل میں نہرو-لیاقت علی سمجھوتہ ہوا، جس کا اثر ہندو مسلمانوں اور پرادیشک سرکاروں پر پڑا . پوربی پنجاب میں اس سمے ایک مضبوط منتری منڈل مان نیہ ڈاکٹر گوپی چند بھارگو نے بنا لیا تھا . ان کی پریرنا سے کمشنر مہاشے نے تحصیل کا دورہ کیا اور اُنکے

मुसलमानों की हालत अपनी आँखों देखी, कानों सुनी और नायब तहसीलदार 'भारत रतन' को मुक़र्रर किया जिन्होंने बड़ी ईमानदारी और मेहनत से काम किया. अम्बाला जिले के और जगाधरी के सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों ने बड़ी मेहनत के साथ उजड़े हुए और बेदख़ल मुसलमानों को उनके घर, जमीन और बाग़ बगीचों को दिलवाया. सद्भावना मिशन के काजकर्ताओं ने सरकारी कर्मचारियों की मदद से जगाधरी तहसील के गाँवों में मुसलमानों के लिये इतना अच्छा वातावरन पैदा कर दिया कि अब हिन्दू मुसलमान और सिक्ख पिछली कटुता को भुला कर प्रेम के साथ रहने लगे. इन गाँवों में ज़िला गुजरात और गुजरानवाला और जिला सरगोधा के रहने वाले हिन्दू और मुसलमान शरनार्थियों को ज़मीन और मकान दिये गए हैं. मुसलमानों की हर एक मसजिद, ईदगाह और कबरिस्तान और मज़ार वापस दे दिये गए हैं और वह बेखटके मसजिदों में अज़ान देते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं. वह अपनी खेती बाड़ी कर रहें हैं. उन्हें पंजाब सरकार बैल, बीज और घर के लिये तक़ावी दे रही है. लगभग १२५ उजड़े मुसलमानों को फिर से बसाया गया है.

तालीम और खादी-काम

गाँव में जो तीन बुनियादी स्कूल और खादी केन्द्र चालू किये गए थे वह अब बंद हो चुके हैं, पर बुड़िया के गाँधी राष्ट्री स्कूल और खादी-केन्द्र अभी तक चालू हैं. इस स्कूल में २८ लड़कियाँ और ४८ लड़के हैं. बुनियादी तरीक़े के अनुसार वह तालीम पा रहे हैं. इन बच्चों को हिन्दी भाषा, प्रार्थना, सफ़ाई और सूत कातने और हिसाब, भूगोल और समाज सेवा की तालीम मुफ़्त दी जाती है. बच्चों को जलपान भी दिया जाता है. हर एक त्योहार को राष्ट्री ढँग पर मनाया जाता है. स्कूल के लिये जमीन तलाश की जा रही है. आश

مسلمانوں کی حالت اپنی انکھوں دیکھی، کانوں سنی اور نائب تحصیلدار 'بھارت رتن' کو مقرر کیا جنھوں نے بڑی ایمانداری اور محنت سے کام کیا۔ امبالہ ضلع کے اور جگادھری کے سرکاری ادھکاریوں اور کرمچاریوں نے بڑی محنت کے ساتھ اجڑے ہوئے اور بے دخل مسلمانوں کو انکے گھر، زمین اور باغ بغیچوں کو دلوایا۔ سدبھاونا مشن کے کاج کرتاؤں نے سرکاری کرمچاریوں کی مدد سے جگادھری تحصیل کے گاؤں میں مسلمانوں کیلئے اتنا اچھا واتاورن پیدا کر دیا کہ اب ہندو مسلمان اور سکھ پچھلی کٹوتا کو بھلا کر پریم کے ساتھ رہنے لگے۔ ان گاؤں میں ضلع گجرات اور گجرانوالہ اور ضلع سرگودھا کے رہنے والے ہندو اور مسلمان شرنارتھیوں کو زمین اور مکان دیئے گئے ہیں۔ مسلمانوں کی ہر ایک مسجد، عیدگاہ اور قبرستان اور مزار واپس دے دیئے گئے ہیں اور وہ بے کھٹکے مسجدوں میں اذان دیتے ہیں اور نماز پڑھتے ہیں۔ وے اپنی کھیتی باڑی کر رہے ہیں۔ انھیں پنجاب سرکار بیل، بیج اور گھر کیلئے تقاوی دے رہی ہے۔ لگ بھگ ۱۲۵ اجڑے مسلمانوں کو پھر سے بسایا گیا ہے۔

تعلیم اور کھادی-کام

گاؤں میں جو تین بنیادی اسکول اور کھادی کیندر چالو کئے گئے تھے وہ اب بند ہو چکے ہیں، پر بڑیا کے گاندھی راشٹری اسکول اور کھادی کیندر ابھی تک چالو ہیں۔ اس اسکول میں ۲۸ لڑکیاں اور ۴۸ لڑکے ہیں۔ بنیادی طریقے کے انوسار وہ تعلیم پا رہے ہیں۔ ان بچوں کو ہندی بھاشا، پرارتھنا، صفائی اور سوت کاتنے اور حساب بھوگول اور سماج سیوا کی تعلیم مفت دی جاتی ہے۔ بچوں کو جل پان بھی دیا جاتا ہے۔ ہر ایک تیوہار کو راشٹری ڈھنگ پر منایا جاتا ہے۔ اسکول کے لئے زمین تلاش کی جا رہی ہے۔ آشا

है कि यह स्कूल पूरबी पंजाब में बुनियादी तालीम के तरीक़े को फ़ैलाने का एक अच्छा केन्द्र बन जायगा.

मई १९४९ से अब तक जो खादी काम हुआ है वह बहुत उत्साह बढ़ाने वाला है. कुल ६० बहनें बाक़ायदा रोज़ चर्ख़ा चलाती हैं. कताई की मज़दूरी खादी और नक़द के रूप में दी जाती है. मिशन की तरफ़ से कत्तिनों को चरख़े दिये गए हैं. अब तक के कामों का ब्योरा नीचे दिया जाता है—

रूई दी गई—१० मन, ९ सेर

सूत ख़रीदा गया—१२ मन, १९ सेर ५ $\frac{३}{४}$ छटाँक

खादी बनवाई गई—१८३ गज़

गांधी राष्ट्री स्कूल के लड़कों ने सूत काता—१० सेर ७ $\frac{३}{१०}$ छटाँक

———

ھے کہ یہ اسکول پوربی پنجاب میں بنیادی تعلیم کے طریقے کو پھیلانے کا ایک اچھا کیندر بن جائیگا.

مئی ۱۹۴۹ سے اب تک جو کھادی کام ہوا ھے وہ بہت اُتساہ بڑھانے والا ھے. کل ٦٠ بہنیں باقاعدہ روز چرخا چلاتی ھیں. کتائی کی مزدوری کھادی اور نقد کے روپ میں دی جاتی ھے. مشن کی طرف سے کتنوں کو چرخے دئے گئے ھیں. ابتک کے کاموں کا بیورا نیچے دیا جاتا ھے.

روئی دی گئی—۱۰ من، ۹ سیر

سوت خریدا گیا—۱۲ من، ۱۹ سیر ۵ $\frac{۳}{۴}$ چھٹانک

کھادی بنوائی گئی—۱۸۳ گز

گاندھی راشٹری اسکول کے لڑکوں نے سوت کاتا—۱۰ سیر ۷ $\frac{۳}{۱۰}$ چھٹانک

———

'हरिजन सेवक' से

शुद्ध व्योहार आन्दोलन ❀

(भाई किशोर लाल मशरूवाला)

जीवन के हर क्षेत्र में और सार्वजनिक संस्थाओं में भी बेईमानी घुस गई है. मुनाफ़ाख़ोरी, कालाबाजार, मिलावट, भ्रष्टाचार, सार्वजनिक और ट्रस्ट के पैसों की गड़बड़ी (ग़बन), जालसाज़ी वग़ैरा ख़ूब बढ़ गए हैं. मानना चाहिये कि ग़रीब लोगों को या आम जनता को बेहद तकलीफ़ न हो, इस इरादे से सरकारों ने हमेशा काम में आने वाली कुछ ख़ास चीज़ों के दाम कन्ट्रोल का और बँधी मिक़दार में बँटवारे का तरीक़ा चालू किया है; लेकिन आम तौर से जनता का मत यह है कि कन्ट्रोल की विचारधारा और उसे लागू करने और अमल में लाने के ढंग का आर्थिक और बदनियती फैलने का नतीजा उससे कम बुरा नहीं हुआ है, जितना कि कन्ट्रोल और बँधी मिक़दार से बँटवारा न रहने से होता. हम इतने नीचे गिर गए हैं जितना इसके पहले कभी न गिरे थे.

फिर भी देस में जहाँ तहाँ ईमानदार लोग पाए जाते हैं और वह अपना जीवन ईमानदारी से बिताना चाहते हैं, पर आज की आर्थिक व्यवस्था में और हालत में ऐसा करना उनके लिये बहुत मुशकिल हो जाती है. ऐसे लोग समाज के हर वर्ग में—किसानों, माल पैदा करने वालों, बेचने वालों, माल का उपयोग करने वालों, सरकारी नौकरों वग़ैरा सब में हैं. वह अपने को एक जंजाल में

❀ भाषा कहीं कहीं आसान करदी गई है—एडीटर.

'ہریجن سیوک' سے

شدھ بیوھار آندولن *

(بھائی کشور لال مشرو والا)

جیون کے ہر چھیتر میں اور سارو جنک سنستھاؤں میں بھی بے ایمانی گھس گئی ہے . منافع خوری' کالا بازار' ملاوٹ' بھرشٹاچار' سارو جنک اور ٹرسٹ کے پیسوں کی گڑبڑی (غبن) جعل سازی وغیرہ خوب بڑھ گئے ہیں . ماننا چاہئے کہ غریب لوگوں کو یا عام جنتا کو بیحد تکلیف نہ ہو' اِس اِرادے سے سرکاروں نے ہمیشہ کام میں آنے والی کچھ خاص چیزوں کے دام کنٹرول کا اور بندھی مقدار میں بٹوارے کا طریقہ چالو کیا ہے؛ لیکن عام طور سے جنتا کا مت یہ ہے کہ کنٹرول کی وچار دھارا اور اُسے لاگو کرنے اور عمل میں لانے کے ڈھنگ کا آرتھک اور بدنیتی پھیلنے کا نتیجہ اُس سے کم برا نہیں ہوا ہے' جتنا کہ کنٹرول اور بندھی مقدار سے بٹوارہ نہ رہنے سے ہوتا . ہم اتنے نیچے گر گئے ہیں جتنا اِس کے پہلے کبھی نہ گرے تھے .

پھر بھی دیس میں جہاں تہاں ایماندار لوگ پائے جاتے ہیں اور وہ اپنا جیون ایمانداری سے بتانا چاہتے ہیں' پر آج کی آرتھک ویوستھا میں اور حالت میں ایسا کرنا اُنکے لئے بہت مشکل ہو جاتا ہے . ایسے لوگ سماج کے ہر ورگ میں—کسانوں' مال پیدا کرنے والوں' بیچنے والوں' مال کا اُپیوگ کرنے والوں' سرکاری نوکروں وغیرہ سب میں ہیں . وہ اپنے کو ایک جنجال میں

* بھاشا کہیں کہیں آسان کر دی گئی ہے — اڈیٹر

फँसे हुए पाते हैं. अगर वह अपनी खेती की फ़सल और माल वग़ैरा न छिपाएं, बिना कुछ बख्शिश पाए कोई काम न करने वाले रेलवे और दूसरे सरकारी अधिकारियों को (जिनका फ़र्ज़ है कि अपना अपना काम बराबर करें) रिश्वत न दें, कन्ट्रोल दर से माल बेचने के लिये और खरीदने के लिये अगर वह डटे रहें और बँटवारे के अपने हिस्से से ज्यादा लेने की कोशिश न करें और अपने नीचे या ऊपर के कर्मचारियों के ज़रिये की हुई बेईमानी या गड़बड़ी में साथ न दें, तो वह पाते हैं कि उनका निभना नामुमकिन है. ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने पिछले कुछ बरसों में एक पीछे एक अपने कई धन्दे इसलिये छोड़ दिये कि कन्ट्रोल नीत के कारन उन्हें ईमानदारी और मुनाफ़े से चलाना नामुमकिन होगया. मुनाफ़े से मतलब यहाँ इतना ही है कि जो उनको गुज़र के लिये वाजिब बचत दे सके.

वह ईमानदार रहना चाहते हैं, लेकिन इसकी ज़रूरत महसूस करते हैं कि उनकी कोशिश में उनको कोई मदद दे और किसी के सहयोग का बल मिले ताकि एक दूसरे की मदद से काम निभ सके.

इसलिये हमें ऐसा कोई उपाय करना चाहिये जिससे ऐसे लोग नज़दीक आएँ और एक दूसरे को जानें. उसके बाद वह आपस में व्योहार का सम्बन्ध क़ायम कर सकेंगे. यानी वह आपस में माल बेचेंगे और खरीदेंगे और अधिकारियों के ज़रिये होने वाली बुराई को मिटाने में एक दूसरे की मदद करेंगे ताकि भ्रश्टाचार और टालमटोल को स्थान न मिले. कन्ट्रोल वाली चीज़ों के बारे में उन्हें पहले तो सरकारी कन्ट्रोल के भावों के अनुसार ही लेन देन करने की भरसक कोशिश करनी चाहिये. लेकिन जब वह देखें कि ऐसा करना नामुमकिन है, तो उनको इकट्ठे मिल कर विचार करके इसके कारनों की जाँच करनी चाहिये और दोशों को सुधारने के और

پھنسے ہوئے پاتے ھیں . اگر وہ اپنی کھیتی کی فصل اور مال وغیرہ نہ چھپائیں' بنا کچھ بخشش پائے کوئی کام نہ کرنے والے ریلوے اور دوسرے سرکاری ادھیکاریوں کو (جنکا فرض ھے کہ اپنا اپنا کام برابر کریں) رشوت نہ دیں' کنٹرول در سے مال بیچنے کے لئے اور خریدنے کے لئے اگر وہ ڈٹے رھیں اور بٹوارے کے اپنے حصے سے زیادہ لینے کی کوشش نہ کریں اور اپنے نیچے یا اوپر کے کرمچاریوں کے ذریعے کی ہوئی بے ایمانی یا گڑبڑی میں ساتھ نہ دیں' تو وہ پاتے ھیں کہ اُن کا نبھنا ناممکن ھے . ایسے کئی لوگ ھیں جنھوں نے پچھلے کچھ برسوں میں ایک پیچھے ایک اپنے کئی دھندے اِس لئے چھوڑ دئے کہ کنٹرول نیتی کے کارن اُنھیں ایمانداری اور منافع سے چلانا ناممکن ھو گیا . منافع سے مطلب یہاں اتنا ھی ھے کہ جو اُنکو گزر کے لئے واجب بچت دے سکے .

وہ ایماندار رھنا چاھتے ھیں' لیکن اس کی ضرورت محسوس کرتے ھیں کہ اُن کي کوشش میں اُن کو کوئی مدد دے اور کسی کے سہیوگ کا بل ملے تاکہ ایک دوسرے کی مدد سے کام نبھ سکے .

اِس لئے ھمیں ایسا کوئی اُپائے کرنا چاھئے جس سے ایسے لوگ نزدیک آئیں اور ایک دوسرے کو جانیں . اُسکے بعد وہ آپس میں بیوھار کا سمبندھ قائم کر سکیں گے . یعنی وہ آپس میں مال بیچیں گے اور خریدیں گے اور ادھیکاریوں کے ذریعے ہونے والی برائی کو مٹانے میں ایک دوسرے کی مدد کرینگے تاکہ بھرشٹاچار اور ٹال مٹول کو استھان نہ ملے . کنٹرول والی چیزوں کے بارے میں اُنھیں پہلے تو سرکاری کنٹرول کے بھاؤں کے انوسار ھی لین دین کرنے کی بھرسک کوشش کرنی چاھئے . لیکن جب وہ دیکھیں کہ ایسا کرنا ناممکن ھے' تو اُنکو اکٹھے مل کر وچار کر کے اِسکے کارنوں کی جانچ کرنی چاھئے اور دوشوں کو سدھارنے کے اور

की भरसक कोशिश करनी चाहिये. लेकिन जब वह देखें कि ऐसा
करना नामुमकिन है, तो उनको इकट्ठे मिल कर विचार करके इसके
कारनों की जाँच करनी चाहिये और दोशों को सुधारने के और

भ्रश्टाचार का मुक़ाबला करने के साधन सोचने चाहियें. उनको यह जानना चाहिये कि सरकार और समाज के नियम और रीत सुधारने के लिये उन पर दबाव लाने के लिये सबसे पहले यह ज़रूरी है कि वह ब्योहार शुद्धि में और ईमानदारी में अपने ख़ुद की ऊँचे दरजे की मिसाल पेश करके अपनी इज़्ज़त जमावें. किसी भी अधिकारी या समाज के लिये भले और ईमानदार लोगों की माँग को टालना मुमकिन नहीं होता, ख़ासकर जब कि वह मिलकर काम करते हैं.

हवा में कुछ न कुछ सत्याग्रह करने की बात सुनाई देती है. सत्याग्रह अपने सच्चे मानी में सत्य और अहिंसा के ब्योहार का लगातार अभ्यास ही है. जान माल को नुक़सान न पहुंचाते हुए सिर्फ़ जेल जाने की तैयारी रखने से ही क़ानून तोड़ने का कोई आन्दोलन सत्याग्रह नहीं बनता. रोकथामी हथियार के रूप में बेईमानी और भ्रश्टाचार के ख़िलाफ़ सत्याग्रह वह ही कर सकते हैं जो ख़ुद अपने साथियों सहित शुद्ध ब्योहार में लगे हैं और पक्की प्रतिज्ञा किये हुए हैं. इसलिये सत्याग्रह की किसी तरह की कल्पना करने के पहले शुद्ध ब्योहार का आन्दोलन होना चाहिये.

आज की गिरी हुई हालत और भ्रश्टाचार का सबसे बड़ा कारन जीवन मे पैसे को दी हुई बेहद अहमियत है. अगर हम ईमानदारी से जीने का पक्का इरादा करलें, तो ऐसे उपाय सूझ जायँगे जिनसे हमारी मामूली ख़रीद-बिक्री में पैसे का बहुत सा इस्तेमाल हम ख़ारिज कर सकेंगे या कम कर सकेंगे. जैसे कि ख़ास ख़ास मुनासिब चीज़ों के ज़रिये से या मेहनत के साधनों से चीज़ों का अदल बदल करना. इस तरह पैसे को बेहद अहमियत देने के कारन जो काला बाज़ार, मुनाफ़ाख़ोरी, भ्रश्टाचार वग़ैरा रुकावटें खड़ी होती हैं उन्हें हम पार कर सकेंगे.

ایسا کرنا ناممکن ہے، تو انکو اکٹھے مل کر وچار کر کے اِسکے
کارنوں کی جانچ کرنی چاہئے اور دوشوں کو سدھارنے کے اور

بھرشٹاچار کا مقابلہ کرنے کے سادھن سوچنے چاھئیں. اُن کو یہ جاننا چاھیئے کہ سرکار اور سماج کے نیم اور ریت سدھارنے کے لئے اُن پر دباؤ لانے کے لئے سب سے پہلے یہ ضروری ہے کہ وہ بیوھار شدھی میں اور ایمانداری میں اپنے خود کی اونچے درجے کی مثال پیش کر کے اپنی عزت جماویں. کسی بھی ادھیکاری یا سماج کے لئے بھلے اور ایماندار لوگوں کی مانگ کو ٹالنا ممکن نہیں ہوتا، خاص کر جبکہ وہ مل کر کام کرتے ہیں.

ہوا میں کچھ نہ کچھ ستیاگرہ کرنے کی بات سنائی دیتی ہے. ستیاگرہ اپنے سچے معنی میں ستیہ اور اہنسا کے بیوہار کا لگاتار ابھیاس ہی ہے. جان مال کو نقصان نہ پہنچاتے ہوئے صرف جیل جانے کی تیاری رکھنے سے ہی قانون توڑنے کا کوئی آندولن ستیاگرہ نہیں بنتا. روک تھامی ہتھیار کے روپ میں بےایمانی اور بھرشٹاچار کے خلاف ستیاگرہ وہ ہی کر سکتے ہیں، جو خود اپنے ساتھیوں سہت شدھ بیوھار میں لگے ہیں اور پکی پرتگیا کئے ہوئے ہیں. اِس لئے ستیاگرہ کی کسی طرح کی کلپنا کرنے کے پہلے شدھ بیوھار کا آندولن ہونا چاھئے.

آج کی گری ہوئی حالت اور بھرشٹاچار کا سب سے بڑا کارن جیون میں پیسے کو دی ہوئی بیحد اہمیت ہے. اگر ہم ایمانداری سے جینے کا پکا ارادہ کر لیں تو ایسے اُپائے سوجھ جائینگے جن سے ہماری معمولی خرید بکری میں پیسے کا بہت سا استعمال، ہم خارج کر سکینگے یا کم کر سکینگے. جیسے کہ خاص خاص مناسب چیزوں کے ذریعے سے یا محنت سے سادھنوں کے چیزوں کا ادل بدل کرنا. جس طرح پیسے کو بیحد اہمیت دینے کے کارن جو کالا بازار، منافع خوری، بھرشٹاچار وغیرہ رکاوٹیں کھڑی ہوتی ہیں، اُنہیں ہم پار کر سکینگے.

कुछ समय से बम्बई में श्री केदारनाथ जी शुद्ध ब्योहार आन्दोलन चला रहे हैं. मेरा यह सुझाव वैसे ही काम को आगे बढ़ाने का है. यह काम ज्यादा जोश से किया जाना चाहिये, पर साथ ही बड़ी सावधानी से, ताकि कोई अपने स्वार्थ के लिये उसका बेजा इस्तेमाल न कर सके.

अब सवाल यह है कि यह काम शुरू कैसे किया जाय. यह तो साफ़ ही है कि वैसा आन्दोलन मुक़ामी प्रेरना से और मुक़ामी लोगों के बल पर चलाया जाना चाहिये. कोई एक आदमी या संस्था, जिसका मुक़ामी लोगों से सम्बन्ध है और जिसे यह काम करने की बेहद इच्छा है, वह बाहर के किसी नेता की राह न देखते हुए अपने यहाँ जल्दी से जल्दी काम शुरू कर दे. उनको इस काम में ऐसे ही लोगों को दाखिल होने को कहना चाहिये और शामिल करना चाहिये, जिनपर उनका पूरा विश्वास हो कि वह अपने वचन का पालन करेंगे. अगर कोई बनी बनाई मुनासिब मुक़ामी संस्था न हो, तो इस योजना में शामिल होने वाले करीब १० आदमी मिलने पर नई संस्था बनानी पड़ेगी. यह संस्था बनाने के पहले कौन भाई बहन इस काम में शामिल होना चाहते हैं, इसकी जानकारी पाने के लिये शुरू में नीचे लिखी जैसी एक अरज़ी दे दें. जहाँ कोई मुक़ामी आदमी या संस्था यह काम उठाने को तैयार न हो, वहाँ भी जो ब्योहार शुद्धि में शामिल होना चाहते हैं, वह इसके आख़ीर में लिखे पते पर अपनी मंशा इसी तरह लिख भेजें. अगर यह पाया जाय कि किसी इलाक़े में इस काम में शामिल होने लायक़ कुछ आदमी मिल सकते हैं, तो उनको एक दूसरे की जानकारी नीचे लिखे दफ़्तर से दी जायगी.

शुरू की अरज़ी

"मैं ... ब्योहारी होना चाहता हूँ. मैं ... ती खरीद-बिकरी में

کچھ سمے سے بمبئی میں شری کیدار ناتھ جی شدھ بیوہار آندولن چلا رہے ہیں ۔ میرا یہ سمجھاو ویسے ہی کام کو آگے بڑھانے کا ہے ۔ یہ کام زیادہ جوش سے کیا جانا چاہئیے ، پر ساتھ ہی بڑی ساودھانی سے ، تاکہ کوئی اپنے سوارتھ کے لئے اُس کا بیجا استعمال نہ کر سکے ۔

اب سوال یہ ہے کہ یہ کام شروع کیسے کیا جائے ۔ یہ تو صاف ہی ہے کہ ویسا آندولن مقامی پریرنا سے اور مقامی لوگوں کے بل پر چلایا جانا چاہئیے ۔ کوئی ایک آدمی یا سنستھا ، جس کا مقامی لوگوں سے سمبندھ ہے اور جسے یہ کام کرنے کی بے حد اچھا ہے ، وہ باہر کے کسی نیتا کی راہ نہ دیکھتے ہوئے اپنے یہاں جلدی سے جلدی کام شروع کر دے ۔ اُنکو اِس کام میں ایسے ہی لوگوں کو داخل ہونے کو کہنا چاہئیے اور شامل کرنا چاہئیے جن پر اُن کا پورا وشواس ہو کہ وہ اپنے وچن کا پالن کرینگے ۔ اگر کوئی بنی بنائی مناسب مقامی سنستھا نہ ہو تو اِس یوجنا میں شامل ہونے والے قریب دس آدمی ملنے پر نئی سنستھا بنانی پڑیگی ۔ یہ سنستھا بنانے کے پہلے کون بھائی بہن اِس کام میں شامل ہونا چاہتے ہیں ، اِسکی جانکاری پانے کیلئے شروع میں نیچے لکھی جیسی ایک عرضی دیدیں ۔ جہاں کوئی مقامی آدمی یا سنستھا یہ کام اُٹھانے کو تیار نہ ہو وہاں بھی جو بیوہار شدھی میں شامل ہونا چاہتے ہیں وہ اسکے آخر میں لکھے پتے پر اپنی منشا اِسی طرح لکھ بھیجیں ۔ اگر یہ پایا جائے کہ کسی علاقے میں اِس کام میں شامل ہونے لائق کچھ آدمی مل سکتے ہیں تو اُنکو ایک دوسرے کی جانکاری نیچے لکھے دفتر سے دی جائے گی ۔

شروع کی عرضی

''میں شدھ بیوہاری ہونا چاہتا ہوں ۔ میں اپنی خرید بکری میں

कारी नीचे लिखे दफ़्तर से दी जायगी.

शुरू की अरज़ी

"मैं ... ब्योपारी होना चाहता हूँ. मैं ... अपनी ख़रीद-बिक्री में

या जीवन की दूसरी बातों में मुनाफ़ाख़ोरी, रिश्वतख़ोरी, भ्रष्टाचार, काला बाज़ार, संग्रहख़ोरी (छिपा चोरी) जैसे काम नहीं करना चाहता. लेकिन कई दफ़ा ऐसे पेंच में पड़ जाता हूँ कि ऐसे काम नहीं टाल सकता. मैं समाज के सब वर्गों में से ऐसी इच्छा रखने वाले आदमियों का साथ और सहयोग चाहता हूँ. अगर ऐसे बेचने वाले, गाहक, सरकारी और दूसरे कर्मचारी वग़ैरा मिलें तो उनका जिन जिन चीज़ों से सम्बन्ध आता है, उन्हें लेने देने में मैं उनसे ही सम्बन्ध रखूँगा."

ऐसे दस शुद्ध ब्योहारी मिलने पर अगर नई संस्था बनाने की ज़रूरत हो तो उनका एक मुक़ामी मंडल बनाना चाहिये. उस मंडल को अधिकार रहेगा कि वह अपने लिये क़ायदे बनावे और ऐसी नीत तय करे कि जिससे मंडल के मेम्बरों की आपस की मदद से उनकी अड़चनें दूर हो सकें, समाज का नैतिक स्तर (इख़लाक़ी तह) ऊँचा उठे, बेईमानी और बुराइयों का मुक़ाबला हो सके और एक दूसरे को मदद पहुंचा कर ब्योहार शुद्धि हो सके.

मंडल बनने पर, मंडल के हर एक मेम्बर को अपनी अपनी हालत के मुताबिक़ एक प्रतिज्ञा (अहद) लेनी चाहिये, और उसके अनुसार चलने में पक्का इरादा होना चाहिये. मंडल के मेम्बर सोच विचार कर अपने मंडल के लिये मुनासिब प्रतिज्ञापत्र (अहदनामा) का मसौदा बनावेंगे.

मै यहाँ ऐसे एक प्रतिज्ञापत्र का नमूना देता हूँ. :

"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि—(१) ब्योपारी के नाते मैं (क) माल की संग्रहख़ोरी नहीं करूँगा, जिससे बाज़ार में उसकी बनावटी कमी पैदा हो जाय. (ख) बाज़ार में बनावटी माँग बढ़ने के कारन बेजा मुनाफ़ा करने के लिये अपने माल के भाव नहीं बढ़ाऊँगा. (ग) किसी की अजानकारी या ज़रूरत का लाभ उठाने के लिये ज़्यादा क़ीमत नहीं मागूँगा या

شروع کی عرضی

"میں شدھ بیوپاری ہونا چاہتا ہوں. میں اپنی خرید بکری میں

یا جیون کی دوسری باتوں میں منافع خوری، رشوت خوری، بھرشٹاچار، کالا بازار، سنگرہ خوری (چھپا چوری) جیسے کام نہیں کرنا چاہتا لیکن کئی دفعہ ایسے پیچ میں پڑ جاتا ہوں کہ ایسے کام نہیں ٹال سکتا. میں سماج کے سب ورگوں میں سے ایسی اچھا رکھنے والے آدمیوں کا ساتھ اور سہیوگ چاہتا ہوں. اگر ایسے بیچنے والے گاہک، سرکاری اور دوسرے کرمچاری وغیرہ ملے تو اُن کا جن جن چیزوں سے سمبندھ آتا ہے، انہیں لینے دینے میں میں اُن سے ہی سمبندھ رکھوں گا."

ایسے دس شدھ بیوپاری ملنے پر اگر نئی سنستھا بنانے کی ضرورت ہو تو اُن کا ایک مقامی منڈل بنانا چاہیئے. اُس منڈل کو ادھیکار رہے گا کہ وہ اپنے لئے قاعدے بناوے اور ایسی نیت طے کرے کہ جس سے منڈل کے ممبروں کی آپس کی مدد سے اُنکی اڑچنیں دور ہو سکیں، سماج کا نیتک ستر (اخلاقی تہہ) اُونچا اُٹھے، بےایمانی اور برائیوں کا مقابلہ ہوسکے اور ایک دوسرے کو مدد پہنچاکر بیوہار شدھی ہوسکے.

منڈل بننے پر، منڈل کے ہر ایک ممبر کو اپنی اپنی حالت کے مطابق ایک پرتگیا (عہد) لینی چاہئے اور اُسکے انوسار چلنے میں پکا ارادہ ہونا چاہئے. منڈل کے ممبر سوچ بچار کر اپنے منڈل کیلئے مناسب پرتگیا پتر (عہد نامہ) کا مسودہ بنا وینگے.

میں یہاں ایسے ایک پرتگیا پتر کا نمونہ دیتا ہوں :

"میں پرتگیا کرتا ہوں کہ— (۱) بیوپاری کے ناتے میں (الف) مال کی سنگرہ خوری نہیں کروں گا، جس سے بازار میں اُسکی بناوٹی کمی پیدا ہوجائے. (ب) بازار میں بناوٹی مانگ بڑھنے کے کارن بیجا منافع کرنے کیلئے اپنے مال کے بھاؤ نہیں بڑھاؤں گا. (ج) کسی کی اجانکاری یا ضرورت کا لابھ اُٹھانے کے لئے زیادہ قیمت نہیں مانگوں گا، یا

नाप तोल में कपट नहीं करूँगा. (घ) कभी आगे अचानक कारनों से भाव बढ़ जायगा, इस इरादे से मैं चीज़ें बेचने से इनकार नहीं करूँगा. पर अगर कोई बेजा लाभ उठाने के ख़याल से मेरा माल ख़रीदना चाहेंगे तो मैं उन्हें माल नहीं दूँगा. इस हालत में मेरे ज़रिये ख़रीदारों को फ़ुटकर बिकरी से और एक बँधी मिक़दार में ही माल बेचने का अधिकार मैं रक्खूँगा. (च) मैं अपने माल की बिकरी-क़ीमत सही सही खुले आम बताऊँगा. (छ) मैं अपने माल में किसी तरह की मिलावट नहीं करूँगा और जानकारी होने पर ऐसी चीज़ अपनी दुकान पर नहीं रक्खूंगा.

"(२) ख़रीदार के नाते (क) जिस चीज की बाज़ार में कमी हो, उसे जरूरत से ज्यादा नहीं ख़रीदूँगा और बनावटी कमी पैदा करने वाले कामों में मदद नहीं दूँगा. (ख) जिन चीज़ों के भाव कन्ट्रोल किये गए हों, उन्हें कन्ट्रोल भाव से ही ख़रीदने की मेरी कोशिश रहेगी. पर वह ऐसे न मिलें तो मैं, जहाँ तक हो सकेगा, उनके बिना ही निभाने की कोशिश करूँगा. (ग) सुभीते, आराम या समाजी कामों के लिये क़ानून को टाल कर या चुपचाप चीज़ें नहीं ख़रीदूँगा. (घ) मैं किसी को रिश्वत नहीं दूँगा और दूसरों के बजाय ख़ुद के लिये बेजा फ़ायदा उठाने के इरादे से न किसी से सिफ़ारिश-पत्र ही लूँगा.

"(३) सरकारी कर्मचारी या सार्वजनिक काजकर्ता के नाते मैं किसी से रिश्वत या बख़्शिश नहीं लूँगा और न अधिकारी या बड़े आदमियों के असर में आकर अपना फ़र्ज़ अदा करने में कोई कमी करूँगा.

"मैं ज्यादा से ज्यादा लोगों को शुद्ध ब्योहारी बनाने की कोशिश करूँगा.

"अपनी इस सच्ची ख़ाहिश के निशान के तौर पर बीमारी या दूसरे न टलने वाले कारनों की हालत को छोड़कर, मैं रोज़ाना अपने

ناپ تول میں کپٹ نہیں کرونگا . (د) کبھي آگے اچانک کارنوں سے بھاؤ بڑھ جائے گا' اِس اِرادے سے میں چیزیں بیچنے سے اِنکار نہیں کرونگا . پر اگر کوئی بیجا لابھ اُٹھانے کے خیال سے میرا مال خریدنا چاهیں گے تو میں اُنھیں مال نہیں دونگا . اِس حالت میں میرے ذریعے خریداروں کو پھٹکر بکری سے اور ایک بندھی مقدار میں ھی مال بیچنے کا ادھیکار میں رکھوں گا . (ﮦ) میں اپنے مال کی بکری-قیمت صحیح صحیح کھلے عام بتاؤں گا . (و) میں اپنے مال میں کسي طرح کی ملاوٹ نہیں کروں گا اور جان کاری ھونے پر ایسی چیز اپني دوکان پر نہیں رکھونگا .

"(۲) خریدار کے ناتے (الف) جس چیز کی بازار میں کمی هو' اُسے ضرورت سے زیادہ نہیں خریدوں گا اور بناوٹی کمی پیدا کرنے والے کاموں میں مدد نہیں دوں گا . (ب) جن چیزوں کے بھاؤ کنٹرول کئے گئے هوں' اُنھیں کنٹرول بھاو سے ھی خریدنے کی میری کوشش رهے گی . پر وہ ایسے نہ ملیں تو میں جہاں تک هوسکے گا اُن کے بنا ھی نبھانے کی کوشش کروں گا . (ج) سبھیتے' آرام یا سماجي کاموں کے لئے قانون کو ٹال کر یا چپ چاپ چیزیں نہیں خریدوں گا . (د) میں کسي کو رشوت نہیں دونگا اور دوسروں کے بجائے خود کے لئے بیجا فائدہ اُٹھانے کے ارادے سے نہ کسی سے سفارش پتر ھي لوں گا .

"(۳) سرکاری کرمچاري یا ساروجنک کاج کرتا کے ناتے میں کسی سے رشوت یا بخشش نہیں لوں گا اور نہ ادھیکاري یا بڑے آدمیوں کے اثر میں آکر اپنا فرض ادا کرنے میں کوئی کمی کرونگا .

"میں زیادہ سے زیادہ لوگوں کو شدھ بیوهاری بنانے کی کوشش کروں گا .

"اپنی اِس سچی خواهش کے نشان کے طور پر بیماری یا دوسرے نہ ٹلنے والے کارنوں کی حالت کو چھوڑ کر میں روزآنہ اپنے

कहूँगा.

"अपनी इस सच्ची ख़ाहिश के निशान के तौर पर बीमारी या दूसरे न टलने वाले कारनों की हालत को छोड़कर, मैं रोज़ाना अपने

"اپنی اس سچی خواهش کے نشان کے طور پر بیماری یا دوسرے نہ ٹلنے والے کارنوں کی حالت کو چھوڑ کر میں روزانہ اپنے

मकान या आसपास के हिस्सों या कपड़े, बरतन जैसी चीज़ों की सफ़ाई ख़ुद करूँगा और ऐसा करते हुए ऐसा सोचूँगा कि इस बाहरी सफ़ाई से मुझे अपने दिल की सफ़ाई में और नेकनियती में आगे बढ़ना है."

نوٹ — سرو سیوا سمیتی، وردھا نے اپنے چھیتر میں اس کام کو فوراً شروع کرنا طے کیا، شری شری کرشن داس جاجو اس کا راستہ دکھائیں گے. دوسری جگہ کے لوگ بھی زیادہ جانکاری، اطلاع وغیرہ حاصل کرنے کے لئے اس بارے میں فی الحال سارا پتر بیوهار نیچے کے پتے پر کریں. کرپا کرکے پتر پر "شدھ بیوهار سمبندھی" ایسا صاف لکھیں.

नोट— सर्व सेवा समिति, वर्धा ने अपने क्षेत्र में इस काम को फ़ौरन शुरू करना तय किया, श्री श्रीकृश्नदास जाजू उसका रास्ता दिखायेंगे. दूसरी जगह के लोग भी ज़्यादा जानकारी, इत्तला वग़ैरा हासिल करने के लिये इस बारे में फ़िलहाल सारा पत्र व्योहार नीचे के पते पर करें. कृपा करके पत्र पर "शुद्ध व्योहार सम्बन्धी" ऐसा साफ़ लिखें.

पता—

मंत्री, सर्व-सेवा-समिति

मारफ़त—श्री श्रीकृश्नदास जी जाजू

बजाजवाड़ी, वर्धा (म० प्र०)

پتہ —

منتری، سرو سیوا سمتی

معرفت— شری شری کرشن داس جی جاجو

بجاج واڑی، وردھا (ایم-پی)

सबेरे मज़ेदार कलेवा करके बढ़िया भोजन के इन्तज़ार में बैठे हुए हम-जैसे लोगों के लिये ईश्वर के बारे में बातचीत करना आसान है, लेकिन जिन्हें दोनों जून भूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वर की चरचा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटी के ही रूप में प्रकट हो सकते हैं.

—महात्मा गाँधी

سویرے مزیدار کلیوا کرکے بڑھیا بھوجن کے انتظار میں بیٹھے ہوئے ہم جیسے لوگوں کے لئے ایشور کے بارے میں بات چیت کرنا آسان ہے، لیکن جنہیں دونوں جون بھوکے رہنا پڑتا ہے اُن سے میں ایشور کی چرچا کیسے کروں؟ اُن کے سامنے تو پرماتما کیول دال، روٹی کے ہی روپ میں پرکٹ ہوسکتے ہیں.

— مہاتما گاندھی

बच्चों की दुनिया



بچوں کی دنیا

एडीटर—प्रेम भाई

ایڈیٹر—پریم بھائی

रामू, राजू, दीन मोहम्मद

(भाई अजीज़ "क़ैसी")

तुम कोमल कोमल उजियारे,
झगड़ा, बैर, लड़ाई, टंटा,
मेल, मिलाप, और भाईचारा,
इनसाँ इनसाँ भाई भाई,
प्रेम ही सबसे बड़ी है नेकी,
केवल जो लड़ना सिखलाएँ,
उस दुशमन से कभी न डरना,
जो निर्धन को तड़पाता है,
मेहनत लेकर मजदूरों से,
रामू, राजू, दीन मोहम्मद,

तुम हो देस की आँख के तारे
यह सब बातें धनवानों की
यह पहचान है इनसानों की
खोट रहे दिल में न जरा भी
इस नेकी को भूल न जाना
उनके तुम दुशमन बनजाना
साहस रखना हिम्मत रखना
भूकों को जो तरसाता है
रुपया पैसा खा जाता है
आपस में मिल जुल कर खेलो

तुम नन्हे नन्हे सूरज हो
मिलकर धरती पर छा जाओ

("तारे" हैदराबाद से)

رامو' راجو' دین محمد

(بھائی عزیز '' قیسی '')

تم کومل کومل اُجیارے'
جھگڑا' بیر' لڑائی' ٹنٹا'
میل' ملاپ' اور بھائی چارہ'
انساں انساں بھائی بھائی'
پریم ہی سب سے بڑی ہے نیکی'
کیول جو لڑنا سکھلائیں'
اُس دشمن سے کبھی نہ ڈرنا'
جو نردھن کو تڑپاتا ہے'
محنت لیکر مزدوروں سے'
رامو' راجو' دین محمد'

تم ہو دیس کی آنکھ کے تارے
یہ سب باتیں دھنوانوں کی
یہ پہچان ہے انسانوں کی
کھوٹ رہے دل میں نہ ذرا بھی
اِس نیکی کو بھول نہ جانا
اُنکے تم دشمن بن جانا
ساھس رکھنا ھمت رکھنا
بھوکوں کو جو ترساتا ہے
روپیہ پیسہ کھاجاتا ہے
آپس میں مل جل کر کھیلو

تم ننھے ننھے سورج ہو
ملکر دھرتی پر چھا جاؤ

('' تارے '' حیدرآباد سے)

निडरता का रूप

(भाई वी० के० पाठक, नागपूर)

किसी गाँव में एक ग्वाला रहता था. उसका एक बेटा प्रेम लाल सुन्दरता का पुतला था. उसके जैसा तनदुरुस्त, सुन्दर और नेक आदमी गाँव भर में कोई न था. कुछ दिनों बाद प्रेम लाल के पिता का देहान्त हो गया और वह नदी किनारे एक कुटिया में अपनी चार पाँच गायों समेत रहने लगा. गाँव भर में कोई उसकी बिरादरी के लोग न थे. इसी कारन वह अपनी गायों से बहुत प्रेम करता था. सवेरा होते ही उन्हें चराने ले जाता, और सूरज डूबते समय घर लाता. वह गायों के दूध, मक्खन और मलाई पर अपना जीवन बिताता था. गाँव के मनचलों ने इस बात की बहुत कोशिश की कि उसको बहकाया जाय और डरा धमका कर ठीक किया जाय. पर बहादुर प्रेम लाल उनके जाल में न फँसा.

जिस राज में प्रेम लाल रहता था उस राज का मंत्री बड़ा ज़ालिम था, सारे राज पर उसका आतंक छाया हुआ था और दुखी जनता बिलक बिलक कर जान दे रही थी. न उसे कपड़ा मिलता, न खाने को रोटी. राजनगर के इस अंधेर के ख़िलाफ़ अगर कोई कुछ कहता तो ततकाल ही उसका सर कुचला जाता.

प्रेम लाल था तो बालक, पर यह अंधेर नगरी उससे देखी न गई. जनता की तड़प और सरकार की चुप ने उसके मन में खलबली मचा दी और उसने एक ऐसी सभा बनाई जिसमें सरकार के ख़िलाफ़ प्रस्ताव पास किये गए. प्रेम लाल साथियों में बैठा एक प्रस्ताव पर विचार कर रहा था कि ऐसे में कुछ लठबंद घुड़सवार वहाँ आए और हल्ला बोल दिया. सभा में खलबली मच गई और दुखी जनता घबराई हुई, जिस ओर क़दम बढ़े भाग निकली. पर प्रेम लाल ज्यों का त्यों अपनी जगह पर खड़ा रहा. सेना ने उस पर हमला किया और

ندرتا کا روپ

(بھائی وی، کے، پاتھک، ناگپور)

کسی گاؤں میں ایک گوالا رھتا تھا . اُسکا ایک بیٹا پریم لال سندرتا کا پتلا تھا . اُسکے جیسا تندرست، سندر اور نیک آدمی گاؤں بھر میں کوئی نہ تھا . کچھ دنوں بعد پریم لال کے پتا کا دیہانت ھو گیا اور وہ ندی کنارے ایک کٹیا میں اپنی چار پانچ گایوں سمیت رھنے لگا . گاؤں بھر میں کوئی اُسکی برادری کے لوگ نہ تھے . اِسی کارن وہ اپنی گایوں سے بہت پریم کرتا تھا . سویرا ھوتے ھی اُنھیں چرانے لے جاتا، اور سورج ڈوبتے سمے گھر لاتا . وہ گایوں کے دودھ، مکھن اور ملائی پر اپنا جیون بتاتا تھا . گاؤں کے منچلوں نے اِس بات کی بہت کوشش کی کہ اُس کو بہکایا جائے اور ڈرا دھمکا کر ٹھیک کیا جائے . پر بہادر پریم لال اُنکے جال میں نہ پھنسا .

جس راج میں پریم لال رھتا تھا اُس راج کا منتری بڑا ظالم تھا، سارے راج پر اُس کا آتنک چھایا ھوا تھا اور دکھی جنتا بلک بلک کر جان دے رھی تھی . نہ اُسے کپڑا ملتا نہ کھانے کو روٹی . راج نگر کے اِس اندھیر کے خلاف اگر کوئی کچھ کہتا تو تتکال ھی اُسکا سر کچلا جاتا .

پریم لال تھا تو بالک، پر یہ اندھیر نگری اُس سے دیکھی نہ گئی . جنتا کی تڑپ اور سرکار کی چپ نے اسکے من میں کھلبلی مچادی اور اس نے ایک ایسی سبھا بنائی جس میں سرکار کے خلاف پرستاؤ پاس کئے گئے . پریم لال ساتھیوں میں بیٹھا ایک پرستاؤ پر وچار کر رھا تھا کہ ایسے میں کچھ لٹھبند گھوڑ سوار وھاں آئے اور ھلہ بول دیا . سبھا میں کھلبلی مچ گئی اور دکھی جنتا گھبرائی ھوئی، جس اُور قدم بڑھے بھاگ نکلی . پر پریم لال جیوں کا تیوں اپنی جگہ پر کھڑا رھا . سینا نے اُس پر حملہ کیا اور

वह धम से जमीन पर गिर पड़ा. फिर उसे मरा जान कर सेना आगे बढ़ी और इधर कुछ समय बाद वीर प्रेम लाल उठ बैठा. उसे बहुत घाव लगे थे और खून में सारे कपड़े लथपथ हो गए थे.

इस घटना ने उसके इरादों को और पक्का कर दिया. वह निडरता और वीरता के साथ खुल्लम खुल्ला राज के खिलाफ़ हो गया.

प्रेम लाल एक दिन गाँव से दूर जंगल में बैठा विचार कर रहा था कि इतने में बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ और एक भयानक आकृति ने जन्म लिया. प्रेम लाल उसे देख ज़रा भी न घबराया. उस ने पूछा —"तुम कौन हो ?"

भयानक आकृति ने कहा—"मैं तेरी इच्छा पूरन करने आया हूँ, बोल क्या चाहता है ?"

प्रेम लाल बोला—"मेरे पास सब कुछ है. केवल मुझ से राज मंत्री के जनता पर अत्याचार सहे नहीं जाते."

आकृति ने पूछा—"अच्छा, अगर तू यहाँ का मंत्री बन जाए तो क्या करेगा ?"

प्रेम लाल बोला—"मैं मंत्री बन जाऊँ तो ... हर एक को सुख और आनन्द मिलेगा. किसी को दुखी न रहने दूँगा. उनके लिये रोटी कपड़े का बन्दोबस्त करूँगा. उन की सेवा का पारितोशिक इतना दूँगा कि वह खुश हो जाएँ और आनन्द के साथ अपना काम कर सकें. मेरे राज में जिसकी मेहनत उसकी दौलत रहेगी, निकम्मों और निखट्टुओं को काम करना सिखाऊँगा."

आकृति—"अच्छा बच्चा, तेरे बड़े अच्छे विचार हैं, मैं तुझे मंत्री बनाऊँगा. इसके लिये तुझे एक बात माननी पड़ेगी, वह यह कि तुझे इस गहरे कुएँ में छलाँग लगा कर अन्दर से एक अंगूठी लानी होगी जिसे मैं तेरे सामने फेंक दूंगा. फिर तू इस राज का मंत्री बन जायगा."

وہ دھم سے زمین پر گر پڑا . پھر اُسے مرا جان کر سینا آگے بڑھی اور اِدھر کچھ سمے بعد ویر پریم لال اُٹھ بیٹھا . اِسے بہت گھاؤ لگے تھے اور خون میں سارے کپڑے لتھ پتھ ہو گئے تھے .

اِس گھٹنا نے اُسکے ارادوں کو اور پکا کر دیا . وہ نڈرتا اور ویرتا کے ساتھ کھلم کھلا راج کے خلاف ہو گیا .

پریم لال ایک دن گاؤں سے دور جنگل میں بیٹھا وچار کر رہا تھا کہ اتنے میں بڑے زور کا دھماکا ہوا اور ایک بھیانک آکرتی نے جنم لیا . پریم لال اُسے دیکھ ذرا بھی نہ گھبرایا . اُس نے پوچھا —"تم کون ہو ؟"

بھیانک آکرتی نے کہا—"میں تیری اِچھا پورن کرنے آیا ہوں' بول کیا چاھتا ھے ؟"

پریم لال بولا—"میرے پاس سب کچھ ھے . کیول مجھ سے راج منتری کے جنتا پر اتیاچار سہے نہیں جاتے ."

آکرتی نے پوچھا—"اچھا' اگر تو یہاں کا منتری بن جائے تو کیا کریگا ؟"

پریم لال بولا—"میں منتری بن جاؤں تو......ہر ایک کو سکھ اور آنند ملے گا . کسی کو دکھی نہ رہنے دوں گا . اُنکے لئے روٹی کپڑے کا بندوبست کرونگا . اُنکی سیوا کا پارتوشک اتنا دونگا کہ وہ خوش ہو جائیں اور آنند کے ساتھ اپنا کام کر سکیں . میرے راج میں جسکی محنت اُسکی دولت رھےگی' نکموں اور نکھٹوؤں کو کام کرنا سکھاؤنگا ."

آکرتی—"اچھا بچہ' تیرے بڑے اچھے وچار ھیں' میں تجھے منتری بناؤں گا . اِسکے لئے تجھے ایک بات ماننی پڑے گی' وہ یہ کہ تجھے اِس گہرے کنوئیں میں چھلانگ لگاکر اندر سے ایک انگوٹھی لانی ہوگی جسے میں تیرے سامنے پھینک دونگا . پھر تو اِس راج کا منتری بن جائیگا ."

कि तुझे इस गहरे कुएँ में छलाँग लगा कर अन्दर से एक अँगूठी लानी होगी जिसे मैं तेरे सामने फेंक दूंगा. फिर तू इस राज का मंत्री बन जायगा.''

प्रेम लाल ने कहा—"अच्छा, मैं इस कुएँ में छलाँग लगाऊँगा और अँगूठी ले आऊँगा. मेरा विश्वास है कि हिम्मत करने से हर काम हो सकता है. दुनिया में कोई काम नामुमकिन नहीं."

आकृति बोली—"ऐ सुन्दर बालक, अच्छा कूद तो सही, पर एक बात सुन ले, इस कुएँ में भाँति भाँति के डसने वाले जानवर हैं, तेरी जान खतरे में पड़ सकती है."

लेकिन प्रेम लाल डरा नहीं और भगवान का नाम लेकर कुएं में कूद पड़ा, न तो पानी ही था और न मगर मच्छ, बल्कि वह एक सुन्दर महल में खड़ा इधर उधर देख रहा था कि ऐसे में हँसते हुए आकृति ने उससे कहा—

"शाबाश मेरे बच्चे, तू बड़ा बहादुर है, भगवान तेरी हर इच्छा पूरी करे. एक दिन तू देस का बड़ा आदमी बन कर देस की आन को और बापू के नाम को ऊँचा उठाएगा. सुन, तेरे देस को तुझ सा ही एक वीर बालक मिला था. उसका नाम गाँधी था. वह अपने इरादों पर डटा रहा. उसके रास्ते में बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ आईं पर वह पक्का और निडर बालक आगे बढ़ता ही गया और वह दिन भी आया कि उसका काम पूरा हो गया. सच की जीत और झूट की हार हो गई. फिर उसने आज़ाद भारत वासियों को प्रेम सन्देश सुनाया और "हिन्दू मुसलिम" एकता पर अपने को भेंट चढ़ा दिया. वह मर कर भी अमर है."

प्रेम लाल आकृति की बातें सुनता रहा और फिर एक दम उसने चाहा कि उछल कर कुएँ के बाहर आजाय. पर इतने ही में उसकी आँख खुल गई. वह जंगल में एक पेड़ की टेक लगाकर बैठा था और तभी उसे नींद आगई थी. होश आते ही प्रेम लाल को अपनी गायों की याद आई. उसने सोचा कि गायों को चारा देना है. वह उठ खड़ा हुआ और गाँव की तरफ़ चल पड़ा. पर अब उसके

[illegible] لانی ہوگی جسے میں تیرے سامنے پھینک دونگا . پھر تو اس راج کا منتری بن جائیگا

پریم لال نے کہا—''اچھا' میں اِس کنوئیں میں چھلانگ لگاؤں گا اور انگوٹھی لے آؤں گا . میرا وشواس ھے کہ ھمت کرنے سے ہر کام ھو سکتا ھے . دنیا میں کوئی کام ناممکن نہیں .

آکرتی بولی—''اے سندر بالک' اچھا کود تو سہی' پر ایک بات سن لے' اِس کنوئیں میں بھانت بھانت کے ڈسنے والے جانور ھیں' تیری جان خطرے میں پڑ سکتی ھے .''

لیکن پریم لال ڈرا نہیں اور بھگوان کا نام لیکر کنوئیں میں کود پڑا' نہ تو پانی ھی تھا اور نہ مگر مچھ' بلکہ وہ ایک سندر محل میں کھڑا اِدھر اُدھر دیکھ رہا تھا کہ ایسے میں ھنستے ھوئے آکرتی نے اُس سے کہا—

''شاباش میرے بچے' تو بڑا بہادر ھے' بھگوان تیری ہر اِچھا پوری کرے . ایک دن تو دیس کا بڑا آدمی بنکر دیس کی آن کو اور باپو کے نام کو اُونچا اُٹھائیگا . سن تیرے دیس کو تجھ سا ھی ایک ویر بالک ملا تھا . اُس کا نام گاندھی تھا . وہ اپنے ارادوں پر ڈٹا رھا . اُسکے راستے میں بڑی بڑی کٹھنائیاں آئیں پر وہ پکا اور نڈر بالک آگے بڑھتا ھی گیا اور وہ دن بھی آیا کہ اُس کا کام پورا ھو گیا . سچ کی جیت اور جھوٹ کی ھار ھو گئی . پھر اُس نے آزاد بھارت واسیوں کو پریم سندیش سنایا اور ''ھندو مسلم'' ایکتا پر اپنے کو بھینٹ چڑھا دیا . وہ مر کر بھی امر ھے .

پریم لال آکرتی کی باتیں سنتا رھا اور پھر ایک دم اُسنے چاھا کہ اُچھل کر کنوئیں کے باھر آجائے . پر اتنے ھی میں اس کی آنکھ کھل گئی . وہ جنگل میں ایک پیڑ کی ٹیک لگا کر بیٹھا تھا اور تبھی اُسے نیند آگئی تھی . ھوش آتے ھی پریم لال کو اپنی گیوں کی یاد آئی . اُس نے سوچا کہ گیوں کو چارہ دینا ھے . وہ اُٹھ کھڑا ھوا اور گاؤں کی طرف چل پڑا . پر اب اُسکے

٦

मन में अपनी गायों के साथ एक और भी ख़याल था. वह सोच रहा था कि अपने राज की ग़रीब जनता के दुख दूर करने के लिये अब उसे केवल महात्मा गाँधी के बताए रास्तों को अपनाना होगा. उसके मन में यह विश्वास और भी पक्का हो गया कि गाँधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का रास्ता ही ज़ालिमों का मुक़ाबला करने के लिये सब से अच्छा रास्ता है. फिर उसे ऐसा मालूम हुआ मानों दूर 'आकाश में गाँधी जी खड़े हुए उसे हाथ उठा कर आशीर्वाद दे रहे हैं. घर पहुंचते पहुंचते प्रेम लाल ने अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया कि वह जल्दी से जल्दी अपने साथियों को लेकर राज के ख़िलाफ़ सत्याग्रह की लड़ाई छेड़ देगा.

साइकिल की कहानी

(भाई विक़ार ख़लील)

साइकिल को बने क़रीब १३५ साल होते हैं. फ़्रान्स और बरतानिया में जब बहुत सी नई सड़कें बन रही थीं और वह लोग जो थोड़े समय में बहुत दूर तक पहुँचना चाहते थे लेकिन ग़रीबी के कारन मोटर, गाड़ी और घोड़ा भी नहीं ख़रीद सकते थे वह एक ऐसी सस्ती सवारी की तलाश करने लगे जिसमें न पेटरोल का ख़र्च हो और न कोचवान रखना पड़े. तभी आदमी के दिमाग़ में साइकिल बनाने का ख़याल पैदा हुआ.

इस काम में सब से ज़्यादा सफलता एक फ़्रान्सीसी "जान ड्रेस" को हुई. पहले पहल इसने लकड़ी के एक टुकड़े पर दो पहियों को आगे पीछे जोड़ा. और लकड़ी पर एक गद्दी लगादी जिस पर

من میں اپنی گایوں کے ساتھ ایک اور بھی خیال تھا ۔ وہ سوچ رہا تھا کہ اپنے راج کی غریب جنتا کے دکھ دور کرنے کے لئے اب اُسے کیول مہاتما گاندھی کے بتائے راستوں کو اپنانا ہوگا ۔ اُسکے من میں یہ وشواس اور بھی پکا ہو گیا کہ گاندھی جی کا اہنسا اور ستیاگرہ کا راستہ ہی ظالموں کا مقابلہ کرنے کے لئے سب سے اچھا راستہ ہے ۔ پھر اُسے ایسا معلوم ہوا مانو دور آکاش میں گاندھی جی کھڑے ہوئے اُسے ہاتھ اُٹھا کر آشیرواد دے رہے ہیں ۔ گھر پہنچتے پہنچتے پریم لال نے اپنے من میں پکا نشچے کر لیا کہ وہ جلدی سے جلدی اپنے ساتھیوں کو لے کر راج کے خلاف ستیاگرہ کی لڑائی چھیڑ دے گا ۔

سائیکل کی کہانی

(بھائی وقار خلیل)

سائیکل کو بنے قریب ۱۳۵ سال ہوتے ہیں ۔ فرانس اور برطانیہ میں جب بہت سی نئی سڑکیں بن رہی تھیں اور وہ لوگ جو تھوڑے سمے میں بہت دور تک پہنچنا چاہتے تھے لیکن غریبی کے کارن موٹر گاڑی اور گھوڑا بھی نہیں خرید سکتے تھے وہ ایک ایسی سستی سواری کی تلاش کرنے لگے جس میں نہ پٹرول کا خرچ ہو نہ کوچوان رکھنا پڑے ۔ تبھی آدمی کے دماغ میں سائیکل بنانے کا خیال پیدا ہوا ۔

اِس کام میں سب سے زیادہ سپھلتا ایک فرانسیسی " جان ڈریس " کو ہوئی ۔ پہلے پہل اِس نے لکڑی کے ایک ٹکڑے پر دو پہیوں کو آگے پیچھے جوڑا اور لکڑی پر ایک گدی لگا دی جس پر

इस काम में सब से ज़्यादा सफलता एक फ्रान्सीसी "जान
डे स" को हुई. पहले पहल इसने लकड़ी के एक टुकड़े पर दो पहियों
को आगे पीछे जोड़ा. और लकड़ी पर एक गद्दी लगादी जिस पर

ڈریس " کو ہوئی . پہلے پہل اِس نے لکڑی کے ایک ٹکڑے پر دو
پہیوں کو آگے پیچھے جوڑا اور لکڑی پر ایک گدی لگا دی جس پر

सवार बैठ जाता था. अगले पहिये के ऊपर एक तरह का हैंडिल लगा दिया. सवार पाँव को जमीन पर टेकता हुआ मशीन को घुमाता था. जब साइकिल चल पड़ती तो सवार अपने पाँव ऊपर उठा लेता. फिर साइकिल को कुछ देर तक जोर से दौड़ाता रहता. इस साइकिल का नाम "बाँका घोड़ा" रखा गया.

सन १८४५ में "मैक मिलन" ने एक ऐसी साइकिल बनाई जिसमें पैडिल लगे हुए थे और छै साल के बाद एक देसवासी ने "लकड़ी का घोड़ा" नाम से एक नए प्रकार की साइकिल की नीव रखी. इसके दो पहिये थे जिनमें पैडिल लगे हुग थे, जो पाँव के बल आगे और पीछे चल पड़ते थे जिसके साथ चक्कर भी घूमने लगते थे.

पैडिल को अगले पहिये के साथ जोड़ने और उन्हें गोलाई में घुमाने का काम कुछ बरस बाद हुआ. इस नई क़िस्म की साइकिल के पहिये लकड़ी के थे जिस पर लोहा चढ़ाया गया था. इसमें इसप्रिंग वग़ैरा नहीं थी और इसका नाम "हड्डी तोड़" पड़ गया. पर इसे लोगों ने बहुत पसन्द किया और बड़े लोग भी इसे चलाने लगे.

अब क्या था जल्दी ही और साइकिलें निकल पड़ीं, जिनमें एक ऐसी साइकिल भी थी जिसका अगला पहिया बहुत बड़ा और पिछला पहिया बहुत छोटा था. इस की गद्दी जमीन से कोई पाँच फ़ुट ऊँची थी और चलाने वाला छोटे पहिये के ऊपर से फुदक कर इस पर सवार होता था. इस तरह की साइकिल पर सवारी करने वालों की सभाएँ बन गईं. यह लोग एक ख़ास क़िस्म का लिबास और एक नए ढंग की टोपी पहन कर सवारी को निकलते थे. इनके साथ एक बिगुल बजाने वाला होता था. जब साइकिल उतार की तरफ़ दौड़ती तो सवार अपने पाँव हैंडिल पर रख

سوار بیٹھ جاتا تھا . اگلے پہیئے کے اُوپر ایک طرح کا ھینڈل لگا دیا . سوار پاؤں کو زمین پر ٹیکتا ہوا مشین کو گھماتا تھا . جب سائیکل چل پڑتی تو سوار اپنے پاؤں اُوپر اُٹھا لیتا . پھر سائیکل کو کچھ دیر زور سے دوڑاتا رہتا . اس سائیکل کا نام " بانکا گھوڑا " رکھا گیا .

سن ١٨٤٥ میں " میک ملن " نے ایک ایسی سائیکل بنائی جسمیں پیڈل لگے ہوئے تھے اور چھ سال کے بعد ایک دیس واسی نے " لکڑی کا گھوڑا " نام سے ایک نئے پرکار کی سائیکل کی نیو رکھی . اِسکے دو پہیئے تھے جن میں پیڈل لگے ہوئے تھے' جو پاؤں کے بل آگے اور پیچھے چل پڑتے تھے جسکے ساتھ چکر بھی گھومنے لگتے تھے .

پیڈل کو اگلے پہیئے کے ساتھ جوڑنے اور اُنھیں گولائی میں گھمانے کا کام کچھ برس بعد ہوا . اِس نئی قسم کی سائیکل کے پہیے لکڑی کے تھے جس پر لوہا چڑھایا گیا تھا . اِس میں اسپرنگ وغیرہ نہیں تھا اور اِس کا نام " ھڈی توڑ " پڑ گیا . پر اِسے لوگوں نے بہت پسند کیا اور بڑے لوگ بھی اِسے چلانے لگے .

اب کیا تھا . جلدی ھی اور سائیکلیں نکل پڑیں جن میں ایک ایسی سائیکل بھی تھی جس کا اگلا پہیا بہت بڑا اور پچھلا پہیا بہت چھوٹا تھا . اِسکی گدی زمین سے کوئی پانچ فٹ اونچی تھی . اور چلانے والا چھوٹے پہیئے کے اوپر سے پھدک کر اس پر سوار ہوتا تھا . اِس طرح کی سائیکل پر سواری کرنے والوں کی سبھائیں بن گئیں . یہ لوگ ایک خاص قسم کا لباس اور ایک نئے ڈھنگ کی ٹوپی پہن کر سواری کو نکلتے تھے . اِنکے ساتھ ایک بگل بجانے والا ہوتا تھا . جب سائیکل اُتار کی طرف دوڑتی تو سوار اپنے پاؤں ھینڈل پر رکھ

लेता था. यह तेज़ दौड़ने वाली साइकिल थी, जो एक घंटे में २० मील जाती थी.

दिन बीतते गए और साइकिल की ईजाद में तरक़्क़ी होती गई. कोई साठ साल की बात है कि पहली ऐसी साइकिल बनाई गई जिसमें हवा भरने के टायर लगे हुए थे. यह साइकिल दुनिया भर में मशहूर होगई. "जे. बी. डनलप" ने यह टायर ईजाद किये. उसके मन में यह विचार पैदा हुआ कि टायर में रबड़ का टुकड़ा देने की जगह हवा भर देनी चाहिये. उसने कई एक तजुरबे भी किये. एक दिन उसने हवा से भरी हुई रबड़ की ट्यूब एक लकड़ी के पहिये में लगादी फिर उसने इस पहिये को घुमाया और देखा की यह बार बार उछलता है. तब उसने अपने लड़के से कहा "बेटे ! फिर तो हम अपने काम में पास होगए और हमारा काम ठीक रहा."

कुछ दिनों बाद उसका लड़का अपने स्कूल में होने वाली साइकिल की दौड़ में हिस्सा लेने वाला था. डनलप ने दो ट्यूब बनाए और बच्चे की साइकिल पर लगा दिये. लोगों ने इस अजीब चीज़ को देखकर मज़ाक़ उड़ाया पर यह साइकिल बहुत तेज़ दौड़ने लगी जिसके कारन लड़का दौड़ में जीत गया. इसके बाद से यह टायर साइकिलों में लगाए जाने लगे और फिर धीरे धीरे उसमें नयापन आने लगा. आज यही साइकिल एक हलकी फुलकी, सुन्दर और सस्ती सवारी है जिस पर बैठ कर तुम स्कूल जाते हो और दुनिया भर में क्या बड़े, क्या बच्चे सभी इसको चलाते हैं.

(अनुवाद किया गया)

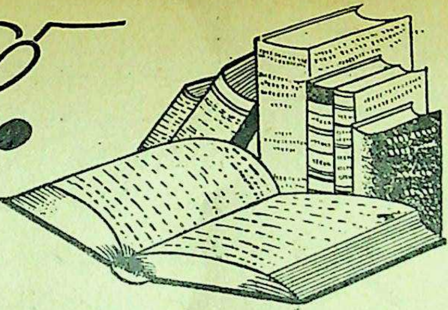
رکھ لیتا تھا . یہ تیز دوڑنے والی سائیکل تھی، جو ایک گھنٹے میں ۲۰ میل جاتی تھی .

دن بیتتے گئے اور سائیکل کی ایجاد میں ترقی ہوتی گئی . کوئی ساٹھ سال کی بات ہے کہ پہلی ایسی سائیکل بنائی گئی جس میں ہوا بھرنے کے ٹائر لگے ہوئے تھے . یہ سائیکل دنیا بھر میں مشہور ہوگئی . '' جے . بی . ڈنلپ '' نے یہ ٹائر ایجاد کئے . اُسکے من میں یہ وچار پیدا ہوا کہ ٹائر میں ربر کا ٹکڑا دینے کی جگہ ہوا بھر دینی چاہئے . اُس نے کئی ایک تجربے بھی کئے . ایک دن اُس نے ہوا سے بھری ہوئی ربر کی ٹیوب ایک لکڑی کے پہیے میں لگا دی . پھر اُس نے اِس پہیے کو گھمایا اور دیکھا کہ یہ بار بار اُچھلتا ہے . تب اُس نے اپنے لڑکے سے کہا '' بیٹے ! پھر تو ہم اپنے کام میں پاس ہوگئے . اور ہمارا کام ٹھیک رہا .''

کچھ دنوں بعد اُس کا لڑکا اپنے اسکول میں ہونے والی سائیکل کی دوڑ میں حصہ لینے والا تھا . ڈنلپ نے دو ٹیوب بنائے اور بچے کی سائیکل پر لگا دئے . لوگوں نے اِس عجیب چیز کو دیکھکر مذاق اُڑایا . پر یہ سائیکل بہت تیز دوڑنے لگی جس کے کارن لڑکا دوڑ میں جیت گیا . اِسکے بعد سے یہ ٹائر سائیکلوں میں لگائے جانے لگے اور پھر دھیرے دھیرے اُس میں نیا پن آنے لگا . آج یہی سائیکل ایک ہلکی پھلکی، سندر اور سستی سواری ہے جس پر بیٹھکر تم اسکول جاتے ہو اور دنیا بھر میں کیا بڑے کیا بچے سبھی اس کو چلاتے ہیں .

(انوواد کیا گیا)

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

नया साहित्य

महावारी हिन्दी रिसाला

पता—प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद-२

सफ़ा छियानबे, साइज डिमाई अठपेजी, सालाना चन्दा आठ रुपया, छमाही चार रुपया आठ आना, एक कापी का दाम बारह आना.

हिन्दी में इने गिने रिसाले ही हैं जो 'प्रगतिशील लेखक संघ' के मक़सद को पूरा करते हैं. 'नया साहित्य' उन में से एक है और संघ ही का परचा है. हिन्दी के महूशर आलोचक डाक्टर रामबिलास शर्मा, प्रोफ़ेसर प्रकाश चन्द्र गुप्त और हिन्दी के मशहूर कहानीकार 'पहाड़ी' जी इस के सम्पादक मंडल में हैं. इसमें कहानी भी हैं और कविता भी, आलोचना भी है और अन्तर्राष्ट्री समस्याओं पर सूझी बूझी रायें भी. लेखों में देसी लेखकों के विचार भी इस रिसाले में मिलते हैं और विदेशों के मशहूर प्रगतिशील लेखकों के लेख भी. चीन और रूस ऐसे बड़े देसों की रचनाओं और लेखकों से भी परिचय होता है. नरुदा ऐसे जग के महान कवि की कविताएँ भी नया साहित्य के पन्नों पर दिखाई पड़ती हैं. रामकुमार जी पैरिस में चक्कर काटते हैं लेकिन अपने अनुभव नया साहित्य के पढ़ने वालों तक सुन्दर ढंग

نیا ساھتیہ

ماھواری ھندی رسالہ

پتہ—پرکاش گرہ، نیا کٹرہ، الہ آباد—۲

صفحے چھیانوے، سائز ڈمائی اٹھ پیجی، سالانہ چندہ آٹھ روپیہ، چھماھی چار روپیہ آٹھ آنہ، ایک کاپی کا دام بارہ آنہ۔

ھندی میں انے گنے رسالے ھی ھیں جو 'پرگتی شیل لیکھک سنگھ' کے مقصد کو پورا کرتے ھیں۔ 'نیا ساھتیہ' اُن میں سے ایک ھے اور سنگھ ھی کا پرچہ ھے۔ ھندی کے مشہور آلوچک ڈاکٹر رام بلاس شرما، پروفیسر پرکاش چندر گپت اور ھندی کے مشہور کہانی کار 'پہاڑی' جی اسکے سمپادک منڈل میں ھیں۔ اس میں کہانی بھی ھیں اور کویتا بھی، آلوچنا بھی اور انتر راشٹری سمسیاؤں پر سوجھی بوجھی رائیں بھی۔ لیکھوں میں دیسی لیکھکوں کے وچار بھی اِس رسالے میں ملتے ھیں اور ودیسوں کے مشہور پرگتی شیل لیکھکوں کے لیکھ بھی۔ چین اور روس ایسے بڑے دیسوں کی رچناؤں اور لیکھکوں سے بھی پریچے ھوتا ھے۔ نرودا ایسے جگ کے مہان کوی کی کویتائیں بھی نیا ساھتیہ کے پنوں پر دکھائی پڑتی ھیں۔ رام کمار جی پیرس میں چکر کاٹتے ھیں لیکن اپنے انوبھو نیا ساھتیہ کے پڑھنے والوں تک سندر ڈھنگ

से पहुँचाते रहते हैं. केवल हिन्दी ही जानने वालों के लिये 'फ़्राँस का परिचय' नया साहित्य की अमूल देन है. क्रिशन चन्दर और यशपाल की रचनाएं भी इस पत्र में छपती रहती हैं. लगभग सभी अच्छे कलाकारों का सहयोग इस रिसाले को हासिल है क्योंकि यह उन्हीं की चीज़ है. पर न यह अश्लील और बेतुकी कहानियाँ छापता है और न फ़िल्म की नंगी तसवीरों से पेट अप बढ़ाता है. शायद यही कारन है इस की माली हालत अच्छी न होन का. साहित्यकों का फ़र्ज़ है कि नया साहित्य की भरसक सहायता करें और जनता से भी हमारी अपील है कि वह इस को जिन्दा रखने के लिये अपना पूरा सहयोग दे.

—मुजीब रिज़वी

नई बीमारी

लिखने वाले—महेन्द्र नाथ

निकालनेवाले—मकतबा जामिश्रा लिमिटेड, जामिश्रा नगर, देहली

लिखावट उर्दू, सफ़ा १८८, क़ीमत दो रुपया आठ आना

"नई बीमारी' महेन्द्र नाथ की कहानियों के संग्रह का दूसरा एडीशन है. बीमारियाँ तो इस किताब में सारी पुरानी ही हैं लेकिन कहीं कहीं उनकी तरफ़ संकेत अलबत्ता नए ढंग से किया गया है. महेन्द्र नाथ ने बीच के तबक़े की लगभग सभी समस्याओं पर क़लम उठाया है लेकिन जिन्स (सेक्स) के बारे में वह अधिक बदनाम हो गए हैं. इस संग्रह में भी 'नई बीमारी' 'बर्फ़' और 'दहलीज़' कहानियों का विशय जिन्स ही है. पर महेन्द्र नाथ जिन्सी भाव तेज़ करने की जान बूझ कर कोशिश नहीं करते, वह जिन्सी समस्याओं को सुधारने

سے پہونچاتے رھتے ھیں. کیول ھندی ھی جاننے والوں کے لئے 'فرانس کا پریچے' نیاساھتیہ کی اَمول دین ھے. کرشن چندر اور یشپال کی رچنائیں بھی اس پتر میں چھپتی رھتی ھیں. لگ بھگ سبھی اچھے کلاکاروں کا سہیوگ اِس رسالے کو حاصل ھے کیونکہ یہ اُنھیں کی چیز ھے. پر نہ یہ اشلیل اور بے تکی کہانیاں چھاپتا ھے اور نہ فلم کی ننگی تصویروں سے گہت اپ بڑھاتا ھے. شاید یہی کارن ھے اسکی مالی حالت اچھی نہ ھونے کا. ساھتیکوں کا فرض ھے کہ نیا ساھتیہ کی بھرسک سہائتا کریں اور جنتا سے بھی ھماری اپیل ھے کہ وہ اِس کو زندہ رکھنے کے لئے اپنا پورا سہیوگ دے.

—مجیب رضوی

نئی بیماری

لکھنے والے—مہندر ناتھ

نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لیمیٹڈ' جامعہ نگر دھلی

لکھاوٹ اُردو' صفحہ ۱۸۸' قیمت ۲ روپیہ آٹھ آنہ

'نئی بیماری' مہندر ناتھ کی کہانیوں کے سنگرہ کا دوسرا ایڈیشن ھے. بیماریاں تو اِس کتاب میں ساری پرانی ھی ھیں لیکن کہیں کہیں اُن کی طرف سنکیت البتہ نئے ڈھنگ سے کہا گیا ھے. مہندر ناتھ نے بیچ کے طبقے کی لگ بھگ سبھی سمسیاؤں پر قلم اُٹھایا ھے لیکن جنس (سکس) کے بارے میں وہ ادھک بدنام ھوگئے ھیں. اِس سنگرہ میں بھی 'نئی بیماری' 'برف' اور 'دھلیز' کہانیوں کا وشے جنس ھی ھے. پر مہندر ناتھ جنسی بھاؤ تیز کرنے کی جان بوجھ کر کوشش نہیں کرتے' وہ جنسی سمسیاؤں کو سدھارنے

उठाया है लेकिन जिन्स (सेक्स) ...
हैं. इस संग्रह में भी 'नई बीमारी' 'बर्फ़' और 'दहलीज़' कहानियों का विशय जिन्स ही है. पर महेन्द्र नाथ जिन्सी भाव तेज करने की जान बूझ कर कोशिश नहीं करते, वह जिन्सी समस्याओं को सुधारने के लिये इस विशय पर क़लम उठाते हैं. अपने मतलब को पूरा करने में कहीं कहीं नंगा चित्रन करना भी पड़ जाय तो वह मुँह नहीं मोड़ते. नौकरों के साथ हम लोग किस तरह ब्योहार करते हैं और किस तरह नफ़रत और मुहब्बत के भाव एक ही वक़्त में हमारे दिमाग़ में हथौड़े चलाया करते हैं, इसका चित्रन "वहशी" कहानी में लेखक ने बहुत सुन्दर किया है. 'हिमालय की चोटी' में महेन्द्र नाथ ने देस में पढ़े लिखे लोगों को नौकरी न मिलने की समस्या का कटीले ढंग से मज़ाक़ उड़ाया है. "शादी के बाद" तो हिन्दुस्तान के दो चार साल पुराने ब्याहे लगभग हर जोड़े की कहानी है. "दीवार" का भी विशय मनोविज्ञानिक है. "मेरी आवाज़" में भी बीच के तबक़े की आर्थिक और मानसिक समस्या का चित्रन किया गया है. इस संग्रह की आख़िरी कहानी "काश वह बेवक़ूफ़ होता" है. मेरे ख़याल में सब से अच्छी कहानी यही है. इसमें समाज में फैले तरह तरह के विचारों और तरह तरह के लोगों से परिचय लेखक ने कराया है.

—मुजीब रिज़वी

पुराने ख़ुदा

लिखने वाले—क्रुश्नचन्द्र

निकालने वाले—मक़तबा जामिआ लिमिटेड, जामिआ नगर, देहली

लिखावट उर्दू—सफ़ा दो सौ बारह—क़ीमत ढ़ाई रुपया.

यह क्रुश्न चन्दर की कहानियों का संग्रह है. आज के क्रुश्न चन्दर के अनगिनत पाठक हैं और नए लेखक उसके निशान पर चलने की कोशिश करते हैं. इस संग्रह की सारी कहानियाँ उस समय की हैं जब क्रुश्न चन्दर आज का क्रुश्न चन्दर बन रहा था. कैसे वह उठा, कैसे चला, ख़यालों की किन ऊँचाइयों से उसने

ہوگئے ھیں . اِس سنگرہ میں بھی 'نئی بیماری' 'برف' اور 'دھلیز' کہانیوں کا وشے جنس ھی ھے . پر مہندر ناتھ جنسی بھاؤ تیز کرنے کی جان بوجھ کر کوشش نہیں کرتے' وہ جنسی سمسیاؤں کو سدھارنے کے لئے اِس وشے پر قلم اُٹھاتے ھیں . اپنے مطلب کو پورا کرنے میں کہیں کہیں ننگا چترن کرنا بھی پڑ جائے تو وہ منھ نہیں موڑتے . نوکروں کے ساتھ ہم لوگ کس طرح بیوہار کرتے ھیں اور کس طرح نفرت اور محبت کے بھاؤ ایک ھی وقت میں ھمارے دماغ میں ھتھوڑے چلایا کرتے ھیں' اِس کا چترن 'وحشی' کہانی میں لیکھک نے بہت سندر کیا ھے . 'ھمالیہ کی چوٹی' میں مہندر ناتھ نے دیس میں پڑھے لکھے لوگوں کو نوکری نہ ملنے کی سمسیا کا کٹیلے ڈھنگ سے مزاق اُڑایا ھے . ''شادی کے بعد'' تو ھندستان کے دو چار سال پرانے بیاھے لگ بھگ ھر جوڑے کی کہانی ھے . ''دیوار'' کا بھی وشے منووگیانک ھے . ''میری آواز'' میں بھی بیچ کے طبقے کی آرتھک اور مانسک سمسیا کا چترن کیا گیا ھے . اس سنگرہ کی آخری کہانی ''کاش وہ بیوقوف ھوتا'' ھے . میرے خیال میں سب سے اچھی کہانی یہی ھے . اِس میں سماج میں پھیلے طرح طرح کے وچاروں اور طرح طرح کے لوگوں سے پرچے لیکھک نے کرایا ھے .

—مجیب رضوی

پرانے خدا

لکھنے والے—کرشن چندر

نکالنے والے—مکتبۂ جامعہ لمیٹیڈ' جامعہ نگر' دھلی

لکھاوٹ اُردو—صفحہ دو سو بارہ—قیمت ڈھائی روپیہ .

یہ کرشن چندر کی کہانیوں سنگرہ ھے . آجکے کرشن چندر کے ان گنت پاٹھک ھیں اور نئے لیکھک اُسکے نشان پر چلنے کی کوشش کرتے ھیں . اِس سنگرہ کی ساری کہانیاں اُس سمے کی ھیں جب کرشن چندر آج کا کرشن چندر بن رھا تھا . کیسے وہ اُٹھا' کیسے چلا' خیالوں کی کن اُونچائیوں سے اُس نے

उड़ान भरी थी और अब कहाँ तक वह पहुंचा है, इन सब बातों को जानने के लिये कृश्न चन्दर की पिछली रचनाओं का सामने आते रहना जरूरी है. इसलिये कृश्न चन्दर की शुरू की कहानियों के संग्रह का यह दूसरा एडीशन बहुत महत्व का है. इस संग्रह में दस कहानियाँ हैं. पहली कहानी "पुराने ख़ुदा" है. इस में लेखक ने मथुरा की आर्थिक, समाजी, और नेचरी हालतों का चित्र खींचा है. कृश्न चन्दर ने इस कहानी में यू. पी. में पंजाबियों के ख़िलाफ़ लड़कियाँ भगाने के आरोप को धोते हुए लोगों का ध्यान उस समस्या की तरफ़ दिलाया है जो कभी कभी पंजाबियों को उनके ख़याल में यह हरकत करने पर मजबूर करती है. कृश्न चन्दर पत्थर के भगवान या आसमान के राजा को 'पुराना ख़ुदा' नहीं कहते. इस कहानी में उन्होंने बताया है कि धर्म, समाज, राज सभी पर शुरू से पूंजी का असर रहा है और पूंजीपति ही 'पुराने ख़ुदा' हैं. दूसरी कहानी "चिड़िया का ग़ुलाम" अनोखी टेकनीक में है. लेखक ने मज़ाक़ ही मज़ाक़ में यह बताया है कि दुनिया में सारे झगड़े महज़ बेमतलब शुरू होते हैं और कभी कभी भयानक रूप अख़तियार कर लेते हैं. तीसरी कहानी "मुसबित मनफ़ी" है. इसमें कहानी की टेकनीक और सुन्दर शब्द चित्रों के ज़रिए तरह तरह की मिसालें देकर लेखक ने बताया है कि किसी चीज का कहीं अधिक होना बताता है कि वह चीज कहीं नापैद है. चौथी कहानी "झील से पहले, झील के बाद" है. कृश्न चन्दर मानते हैं कि ज़मीन का हर कोना उसके असली मालिक मेहनतकश समाज को मिल जाय. लेकिन न जाने क्यों इस कहानी में झिल्ला कर कह गए हैं कि अगर इस सुन्दर घाटी का कोई सुख मेहनत मज़दूरी करने वालों के हिस्से में नहीं है तो यह फिर जल ही जल होजाय. पाँचवी कहानी "हादसे" में कृश्न चन्दर जिन्सी भूक की बुराइयों पर उतर आए हैं और ज़बरदस्त सबक़ देते हैं. अपनी छटी कहानी "ग़लाज़त"

اُڑان بھری تھی اور اب کہاں تک وہ پہونچا ھے، اِن سب باتوں کو جاننے کےلئے کرشن چندر کی پچھلی رچناؤں کا سامنے آتے رھنا ضروری ھے . اِسلئے کرشن چندر کی شروع کی کہانیوں کے سنگرہ کا یہ دوسرا ایڈیشن بہت مہتو کا ھے . اس سنگرہ میں دس کہانیاں ھیں . پہلی کہانی " پرانے خدا " ھے . اِسمیں لیکھک نے متھرا کی آرتھک، سماجی اور نیچری حالتوں کا چتر کھینچا ھے . کرشن چندر نے اِس کہانی میں یوپی میں پنجابیوں کے خلاف لڑکیاں بھگانے کے آروپ کو دھوتے ھوئے لوگوں کا دھیان اُس سمسیا کی طرف دلایا ھے جو کبھی کبھی پنجابیوں کو اُنکے خیال میں یہ حرکت کرنے پر مجبور کرتی ھے . کرشن چندر پتھر کے بھگوان یا آسمان کے راجہ کو ' پرانا خدا ' نہیں کہتے . اِس کہانی میں اُنھوں نے بتایا ھے کہ دھرم، سماج، راج سبھی پر شروع سے پونجی کا اثر رھا ھے اور پونجی پتی ھی ' پرانے خدا ' ھیں . دوسری کہانی " چڑیا کا غلام " انوکھی تکنیک میں ھے . لیکھک نے مذاق ھی مذاق میں یہ بتایا ھے کہ دنیا میں سارے جھگڑے محض بے مطلب شروع ھوتے ھیں اور کبھی کبھی بھیانک روپ اختیار کر لیتے ھیں . تیسری کہانی " مثبت منفی " ھے . اِس میں کہانی کی تکنیک اور شبد چتروں کے ذریعے طرح طرح کی مثالیں دے کر لیکھک نے بتایا ھے کہ کسی چیز کا کہیں ادھک ھونا بتاتا ھے کہ وہ چیز کہیں ناپید ھے . چوتھی کہانی " جھیل سے پہلے، جھیل کے بعد " ھے . کرشن چندر مانتے ھیں کہ زمین کا ھر کونا اُسکے اصلی مالک محنت کش سماج کو مل جائے . لیکن نہ جانے کیوں اس کہانی میں جھلا کر کہہ گئے ھیں کہ اگر اِس سندر گھاٹی کا کوئی سکھ محنت مزدوری کرنے والوں کے حصے میں نہیں ھے تو یہ پھر جل ھی جل ھوجائے . پانچویں کہانی " حادثے " میں کرشن چندر جنسی بھوک کی برائیوں پر اُتر آئے ھیں اور زبردست سبق دیتے ھیں . اپنی چھٹی کہانی " غلاظت "

के हिस्से में नहीं है तो यह फिर जल ही जल होजाय. पाँचवी कहानी "हादसे" में कृश्न चन्दर जिन्सी भूक की बुराइयों पर उतर आए हैं और ज़बरदस्त सबक़ देते हैं. अपनी छटी कहानी "ग़लाज़त"

में कृश्न चन्दर ने एक छोटी सी लारी में अपने समाज की लगभग सारी 'ग़लाज़त' को इकट्ठा कर दिया है और अपना संदेश बहुत कटीले शब्दों में लोगों तक पहुँचाया है. वह लिखते हैं—"लेकिन अब आदमी आदमी न था, एक भैंस भी न था बल्कि एक बैरा, एक साहब बहादुर, एक क़ैदी, एक सारजेन्ट. नतीजा यह कि जिन्दगी की लारी भागी जारही है और हम सब लोग अपनी अपनी जगह पर बेचैन और ग़ैर मुतमइन हैं." सातवीं कहानी "मुक़द्दस" है. एक क्लर्क इस कहानी में जिन्सी ख़ाहिशों को रोक नहीं पाता और बीवी के प्यार की क़सम हर क़दम पर खाता हुआ दूसरी औरतों की गोद में बेक़ायदा चैन ढूंढता है. आठवीं कहानी "उड़ान" में एक ग़रीब लड़के को जिन्दगी की उड़ान भरते दिखाया गया है जो भिच्छा की रोटी खाकर और सेठों का ऐश देखकर अपनी उड़ान भूल जाता है. इसी कहानी में कशमीर की ग़रीबी और उस से दबी हुई ग़रीब औरतों का शाहों के हाथ छोटी मोटी खाने पीने की चीज़ें हासिल करने के लिये अपनी इज्ज़त बेचने का भी चित्रन किया गया है. नवीं कहानी "एक सुरइली तसवीर" है. इसमें ग़रीबी, नाज़ियों के ज़ुल्म, अमीरों की बेपरवाही और मानवता का चित्र लेखक ने अपने ख़ास ढंग से खींचा है. दसवीं कहानी "आता है याद मुझको" में बचपन के करतूत दुहराए गए हैं. विशय मनोविज्ञानिक है और इसी निगाह से पढ़ने में मज़ा आता है.

कृश्न चन्दर अपनी कहानियों में उपदेशक नहीं बनते. वह बात इस ढंग से कहते हैं कि दिल में जाकर बैठ जाय. चुटकियाँ लेना उनका ख़ास हिस्सा है. कभी कभी ऐसी चुटकियाँ लेते हैं कि समाज तिलमिला उठता है. आज के कृश्न चन्दर को समझने के लिये यह कहानियाँ अच्छा साधन हैं.

—मुजीब रिज़वी

ہوجاتے۔ پانچویں کہانی ''حادثے'' میں کرشن چندر جنسی بھوک کی برائیوں پر اتر آئے ہیں اور زبردست سبق دیتے ہیں۔ اپنی چھٹی کہانی ''غلاظت''

میں کرشن چندر نے ایک چھوٹی سی لاری میں اپنے سماج کی لگ بھگ ساری 'غلاظت' کو اکٹھا کر دیا ہے اور اپنا سندیش بہت کٹیلے شبدوں میں لوگوں تک پہونچایا ہے۔ وہ لکھتے ہیں—''لیکن اب آدمی آدمی نہ تھا' ایک بھینس بھی نہ تھا بلکہ ایک بیرہ' ایک صاحب بہادر' ایک قیدی' ایک سارجنٹ. نتیجہ یہ کہ زندگی کی لاری بھاگی جارہی ہے اور ہم سب لوگ اپنی اپنی جگہ پر بےچین اور غیر مطمئن ہیں۔'' ساتویں کہانی ''مقدس'' ہے۔ ایک کلرک اِس کہانی میں جنسی خواہشوں کو روک نہیں پاتا اور بیوی کے پیار کی قسم ہر قدم پر کھاتا ہوا دوسری عورتوں کی گود میں بے قاعدہ چین ڈھونڈھتا ہے۔ آٹھویں کہانی ''اُڑان'' میں ایک غریب لڑکے کو زندگی کی اُڑان بھرتے دکھایا گیا ہے جو بھکشا کی روٹی کھا کر اور سیٹھوں کا عیش دیکھکر اپنی اُڑان بھول جاتا ہے۔ اسی کہانی میں کشمیر کی غریبی اور اُس سے دبی ہوئی غریب عورتوں کا شاہوں کے ہاتھ چھوٹی موٹی کھانے پینے کی چیزیں حاصل کرنے کے لئے اپنی عزت بیچنے کا بھی چترن کیا گیا ہے۔ نویں کہانی ''ایک سورئیلی تصویر'' ہے۔ اِسمیں غریبی' نازیوں کے ظلم' امیروں کی بے پرواہی اور مانوتا کا چتر لیکھک نے اپنے خاص ڈھنگ سے کھینچا ہے۔ دسویں کہانی ''آتا ہے یاد مجھکو'' میں بچپن کے کرتوت دہرائے گئے ہیں۔ وشے منووگیانک ہے اور اسی نگاہ سے پڑھنے میں مزا آتا ہے۔

کرشن چندر اپنی کہانیوں میں اُپدیشک نہیں بنتے۔ وہ بات اِس ڈھنگ سے کہتے ہیں کہ دل میں جاکر بیٹھ جائے۔ چٹکیاں لینا اُن کا خاص حصہ ہے۔ کبھی کبھی ایسی چٹکیاں لیتے ہیں کہ سماج تلملا اُٹھتا ہے۔ آج کے کرشن چندر کو سمجھنے کے لئے یہ کہانیاں اچھا سادھن ہیں۔

—مجیب رضوی

हमारी राय

ہماری رائے

वर्धा का नया आन्दोलन–

'नया हिन्द' के इसी नम्बर में हम "शुद्ध ब्योहार आन्दोलन" की एक योजना छाप रहे हैं जो वर्धा में तैयार हुई है और जो भाई किशोरलाल मशरूवाला के दसख़त से ३१ मार्च सन् '५१ के 'हरिजन' में निकली है. यह योजना कई समझदार और नेकनियत भाइयों के काफ़ी सोच विचार का नतीजा है. इस योजना की मोटी मोटी बातों और उसके आम असूलों से, हम समझते हैं, बहुत कम लोगों को मतभेद होगा. हम चाहते हैं कि 'नया हिन्द' के पढ़ने वाले उसे ध्यान से पढ़ें, उस पर विचार करें और उससे लाभ उठाने और उसके ज़रिये देस को लाभ पहुँचाने की कोशिश करें.

देस की गिरावट और उसकी मुसीबतों का जो बयान उस योजना में किया गया है वह हरगिज़ बढ़ा चढ़ा कर नहीं किया गया. यहाँ हम थोड़े से शब्दों में इस गिरावट के कारनों पर नज़र डालना चाहते हैं. आज़ादी मिलते ही देस की बाग क़ुदरती तौर पर काँग्रेस वालों के हाथों में आई. किसी भी इस तरह के लोगों का हकूमत पाकर कम या ज्यादा अपने पहले के आदर्शों से गिरना दुनिया के

وردھا کا نیا آندولن––

'نیا هند' کے اِسی نمبر میں ہم ''شدھ بیوہار آندولن'' کی ایک یوجنا چھاپ رہے ہیں جو وردھا میں تیار ہوئی ہے اور جو بھائی کشورلال مشروالا کے دستخط سے ۳۱ مارچ سن ۵۱ کے 'ہریجن' میں نکلی ہے. یہ یوجنا کئی سمجھدار اور نیک نیت بھائیوں کے کافی سوچ بچار کا نتیجہ ہے. اِس یوجنا کی موٹی موٹی باتوں اور اُس کے عام اُصولوں سے ہم سمجھتے ہیں بہت کم لوگوں کو مت بھید ہوگا. ہم چاہتے ہیں کہ 'نیا هند' کے پڑھنے والے اُسے دھیان سے پڑھیں، اُس پر بچار کریں اور اُس سے لابھ اُٹھانے اور اُسکے ذریعے دیس کو لابھ پہونچانے کی کوشش کریں.

دیس کی گراوٹ اور اُس کی مصیبتوں کا جو بیان اُس یوجنا میں کیا گیا ہے وہ ہرگز بڑھا چڑھا کر نہیں کیا گیا. یہاں ہم تھوڑے سے شبدوں میں اِس گراوٹ کے کارنوں پر نظر ڈالنا چاہتے ہیں. آزادی ملتے ہی دیس کی باگ قدرتی طور پر کانگریس والوں کے ہاتھوں میں آئی. کسی بھی اِسطرح کے لوگوں کا حکومت پاکر کم یا زیادہ اپنے پہلے کے آدرشوں سے گرنا دنیا کے

चाहते हैं. आज़ादी मिलते ही देस की बाग क़ुदरती तौर पर काँगरेस वालों के हाथों में आई. किसी भी इस तरह के लोगों का हुकूमत पाकर कम या ज्यादा अपने पहले के आदर्शों से गिरना दुनिया के

इतिहास में कोई नई या अनहोनी बात नहीं है. तब से राज और राज से नरक जैसी कहावतें सब मुल्कों और सब ज़बानों के अन्दर मिल सकती हैं. काँगरेस और काँगरेस वालों की गिरावट का बाक़ी मुल्क के ऊपर और सरकारी और ग़ैर-सरकारी लोगों पर असर पड़ना भी उतना ही क़ुदरती था. यथा राजा तथा प्रजा की कहावत भी एक पुरानी कहावत है.

हो सकता है कि अगर काँगरेस महात्मा गांधी के असूलों को ज्यादा सच्चाई से मानती होती या उन पर ज़रा कड़ाई के साथ अमल करती तो हम देस को इस गिरावट और इन मुसीबतों से बचा ले जाते. गाँधी जी ने एक समय काँगरेसी वज़ीरों के सामने उस ख़लीफ़ा उमर का आदर्श रक्खा था जो अपने समय में उस समय के सबसे बड़े राज का मालिक होते हुए भी अपने हाथ से अपना कुरता और अपनी तहमद धोता था, रोज़ सुबह मशक कंधे पर डाल कर मदीना की अनेक बेवाओं के घरों में पानी भर आता था, लम्बे रेगिस्तानी सफ़रों में आधी दूर ख़ुद ऊँट के ऊपर बैठ कर ऊँट वाले को ऊँट की नकेल पकड़ कर पैदल चलने देता था, और बाकी आधे रास्ते ऊँट वाले को ऊपर बैठाकर ख़ुद नकेल पकड़ कर पैदल चलता था, रात को किसी नए आने वाले से बात करते वक़्त यह जानकर कि बातचीत किसी निजी मामले की बाबत है सरकारी मामले की बाबत नहीं, अपने हाथ से दिया बुझा देता था—इसलिये क्योंकि सरकारी तेल जिसमें बेवाओं का पैसा लगा है निजी कामों में ख़र्च नहीं किया जा सकता और जो अरबों के येरूजेलम फ़तेह करने के बाद वहाँ के ईसाई पैट्रियार्क के आग्रह करने पर भी अपना पुराना पेवन्द लगा हुआ कुरता फेंककर नया सिला कुरता पहनने के लिये राज़ी नहीं हुआ—यह कह कर कि ऐसा करना ग़रीब जनता के पैसे का ग़लत इस्तेमाल होगा. हम ख़लीफ़ा उमर की ज़िन्दगी से इन मिसालों को बढ़ाना नहीं चाहते.

والوں کے ہاتھوں میں آئی۔ کسی بھی اِسطرح کے لوگوں کا حکومت پاکر کم یا زیادہ اپنے پہلے کے آدرشوں سے گرنا دنیا کے

اِتہاس میں کوئی نئی یا ان ہونی بات نہیں ہے۔ تب سے راج اور راج سے نرک جیسی کہاوتیں سب ملکوں اور سب زبانوں کے اندر مل سکتی ہیں۔ کانگریس اور کانگریس والوں کی گراوٹ کا باقی ملک کے اُوپر اور سرکاری اور غیر سرکاری لوگوں پر اثر پڑنا بھی اُتنا ہی قدرتی تھا۔ یتھا راجا تتھا پرجا کی کہاوت بھی ایک پرانی کہاوت ہے۔

ہو سکتا ہے کہ اگر کانگریس مہاتما گاندھی کے اُصولوں کو زیادہ سچائی سے مانتی ہوتی یا اُن پر ذرا کڑائی کے ساتھ عمل کرتی تو ہم دیس کو اِس گراوٹ اور اِن مصیبتوں سے بچا لے جاتے۔ گاندھی جی نے ایک سمے کانگریسی وزیروں کے سامنے اُس خلیفہ عمر کا آدرش رکھا تھا جو اپنے سمے میں اس سمے کے سب سے بڑے راج کا مالک ہوتے ہوئے بھی اپنے ہاتھ سے اپنا کرتا اور اپنی تہمد دھوتا تھا، روز صبح مشک کندھے پر ڈال کر مدینہ کی انیک بیواؤں کے گھروں میں پانی بھر آتا تھا، لمبے ریگستانی سفروں میں آدھی دور خود اُونٹ کے اوپر بیٹھکر اونٹ والےکو اونٹ کی نکیل پکڑ کر پیدل چلنے دیتا تھا اور باقی آدھے راستے اُونٹ والےکو اُوپر بیٹھاکر خود نکیل پکڑکر پیدل چلتا تھا، رات کو کسی نئے آنیوالے سے بات کرتے وقت یہ جان کرکہ بات چیت کسی نجی معاملےکی بابت ہے سرکاری معاملے کی بابت نہیں، اپنے ہاتھ سے دیا بجھا دیتا تھا—اس لئے کیونکہ سرکاری تیل جس میں بیواؤں کا پیسہ لگا ہے نجی کاموں میں خرچ نہیں کیا جا سکتا اور جو عربوں کے یروزلم فتح کرنے کے بعد وہاں کے عیسائی پیٹری آرک کے آگرہ کرنے پر بھی اپنا پرانا پیوند لگا ہوا کرتہ پھینک کر نیا سلا کرتہ پہننے کے لئے راضی نہیں ہوا یہ کہکر کہ ایسا کرنا غریب جنتا کے پیسے کا غلط استعمال ہوگا۔ ہم خلیفہ عمر کی زندگی سے ان مثالوں کو بڑھانا نہیں چاہتے۔

गाँधी जी ने ख़लीफ़ा उमर की जीवनी पढ़ी थी. इसीलिये उन्होंने ख़लीफ़ा उमर का आदर्श काँगरेसी वज़ीरों के सामने रक्खा था.

साम्प्रदायिक मामले में भी ख़लीफ़ा उमर का आदर्श इस मुल्क के नेताओं के लिये 'रोशनी घर' का काम दे सकता था. उसके ज़माने में अरब फ़ौजें जहाँ जाती थीं पहले सबके लिये पूरी मज़हबी आज़ादी का ऐलान होता था और फिर दूसरी कोई बात. और यह उन मुल्कों में जहाँ उस ज़माने के रोम और ईरान के शहंशाहों के मातहत मज़हबी आज़ादी नाम को भी न रह गई थी. येरूजेलम के बड़े गिरजाघर की सीढ़ियों पर पैट्रियार्क के प्रार्थना करने पर भी ख़लीफ़ा उमर ने इसलिये नमाज़ पढ़ने से इनकार कर दिया था कि कहीं उनके बाद इसे मिसाल बना कर मुसलमान दूसरे के पूजाघर पर क़ब्ज़ा न जमा बैठें. यह सब इतिहास की जानी बूझी चीज़ें हैं.

पर ख़लीफ़ा उमर की मिसाल तो दूर रही हमारे काँगरेसी वज़ीरों ने अगर गाँधी जी की इस छोटी सी बात पर भी अमल और सच्चाई के साथ अमल कर लिया होता कि कोई वज़ीर अपने और अपने घर वालों के गुज़ारे के लिये पाँच सौ रुपए से ज़्यादा माहवारी तनखा न ले तो हमें यक़ीन है कि आज काँगरेस और देस का रंग बिल्कुल दूसरा ही होता. ऊपर वालों का असर नीचे वालों पर और सरकारी लोगों का असर ग़ैर-सरकारी लोगों पर पड़ना एक क़ुदरती चीज़ थी.

पर यह न हुआ या न हो सका. जो कुछ हुआ उसके होते हुए हम छोटे छोटे सरकारी नौकरों को या रिआया के मामूली लोगों को बुरा किस मुँह से कह सकते हैं. वह किसकी तरफ़ देखें ? किसे देख कर ऊपर उठें ? किस की मिसाल उनमें त्याग की हिम्मत पैदा करे ? इस लोभ मोह की दुनिया में गिरना आसान और उठना

گاندھی جی نے خلیفہ عمر کی جیونی پڑھی تھی . اِسی لئے اُنھوں نے خلیفہ عمر کا آدرش کانگریسی وزیروں کے سامنے رکھا تھا .

سامپردایک معاملے میں بھی خلیفہ عمر کا آدرش اِس ملک کے نیتاؤں کے لئے 'روشنی گھر' کا کام دے سکتا تھا . اُسکے زمانے میں عرب فوجیں جہاں جاتی تھیں پہلے سب کے لئے پوری مذھبی آزادی کا اعلان ھوتا تھا اور پھر دوسری کوئی بات . اور یہ اُن ملکوں میں جہاں اُس زمانے کے روم اور ایران کے شہنشاھوں کے ماتحت مذھبی آزادی نام کو بھی نہ رہ گئی تھی . یروزلم کے بڑے گرجا گھر کی سیڑھیوں پر پیٹری آرک کے پرارتھنا کرنے پر بھی خلیفہ عمر نے اس لئے نماز پڑھنے سے انکار کر دیا تھا کہ کہیں اُنکے بعد اِسے مثال بنا کر مسلمان دوسرے کے پوجا گھر پر قبضہ نہ جما بیٹھیں . یہ سب اِتہاس کی جانی بوجھی چیزیں ھیں .

پر خلیفہ عمر کی مثال تو دور رھی ھمارے کانگریسی وزیروں نے اگر گاندھی جی کی اِس چھوٹی سی بات پر بھی عمل اور سچائی کے ساتھ عمل کر لیا ھوتا کہ کوئی وزیر اپنے اور اپنے گھر والوں کے گذارے کے لئے پانچ سو روپئے سے زیادہ ماھواری تنخواہ نہ لے تو ھمیں یقین ھے کہ آج کانگریس اور دیس کا رنگ بالکل دوسرا ھی ھوتا . اوپر والوں کا اثر نیچے والوں پر اور سرکاری لوگوں کا اثر غیر سرکاری لوگوں پر پڑنا ایک قدرتی چیز تھی .

پر یہ نہ ھوا یا نہ ھو سکا . جو کچھ ھوا اُسکے ھوتے ھوئے ھم چھوٹے چھوٹے سرکاری نوکروں کو یا رعایا کے معمولی لوگوں کو برا کس منہ سے کہہ سکتے ھیں . وہ کس کی طرف دیکھیں ؟ کسے دیکھکر اوپر اُٹھیں ؟ کس کی مثال ان میں تیاگ کی ھمت پیدا کرے ؟ اس لوبھ موہ کی دنیا میں گرنا آسان اور اُٹھنا

को बुरा किस मुँह से कह सकते हैं. वह किसकी तरफ़ देखें ? किसे देख कर ऊपर उठें ? किस की मिसाल उनमें त्याग की हिम्मत पैदा

बहुत मुशकिल है. सच यह है कि ऐन संकट के समय हम तौले गए और हलके उतरे. कमज़ोरी हमारी सबकी कमज़ोरी है. गाँधी जी जानते थे कि जो उन्होंने चाहा था वह न हुआ और न हो सकेगा. इसीलिये उन्होंने मरने से पहले सलाह दी थी कि काँगरेस संगठन तोड़ दिया जावे, काँगरेस वाले सब हकूमत से बाहर निकल आवें और पुरानी काँगरेस की जगह मुल्क के सच्चे ख़ादिमों का एक नया 'लोक सेवक संघ' बनाया जावे, जो गाँव गाँव जाकर जनता की निस्वार्थ सेवा करने और उसे ऊपर उठाने में लग जावे. गाँधी जी की इस तजवीज़ की चरचा 'नया हिन्द' में हो चुकी है. यह भी होना न था और न हो सका.

हम कई बार कह चुके हैं कि देस में इस समय जनता का राज नहीं है. सच यह है कि जनता में अभी तक वह समझ, वह कैरेक्टर, वह बल, वह संगठन और वह योग्यता भी नहीं है कि जिसके बिरते पर जनता हकूमत की बाग अपने हाथों में ले सके. राज है उन पढ़े लिखे लोगों का जो आज़ादी की कोशिशों में सबसे आगे रहे हैं और जो अब जहाँ तक उनकी समझ, उनकी योग्यता और उनके चरित्र की कमज़ोरियाँ इजाज़त देती हैं वहाँ तक जनता का भला और उसकी सेवा करने की कोशिश करते हैं.

काँगरेस अब जनता नहीं है. जनता में और उसमें अलगाव भी दिनों दिन बढ़ता जा रहा है. पर इसमें शक नहीं कि इस गिरी हुई हालत में भी जो अच्छे से अच्छे आदमी काँगरेस में मौजूद हैं उससे अच्छे देस के किसी दूसरे दल, पार्टी या संस्था में आसानी से नहीं मिल सकते. हम नाम लेना नहीं चाहते थे पर इस समय यह कहे बिना नहीं रह सकते और यह बहुत दरजे तक मुल्क के और लोगों की आवाज़ है कि जिन मुशकिलों और ख़तरों का सामना करते हुए जिस लगन, जिस मेहनत और जिस होशियारी के साथ

بہت مشکل ھے. سچ یہ ھے کہ عین سنکٹ کے سمے ھم تولے گئے اور ھلکے اُترے. کمزوری ھماری سب کی کمزوری ھے. گاندھی جی جانتے تھے کہ جو اُنھوں نے چاھا تھا وہ نہ ھوا اور نہ ھو سکیگا. اسی لئے انھوں نے مرنے سے پہلے صلاح دی تھی کہ کانگریس سنگٹھن توڑ دیا جاوے، کانگریس والے سب حکومت سے باھر نکل آویں اور پرانی کانگریس کی جگہ ملک کے سچے خادموں کا ایک نیا 'لوک سیوک سنگھ' بنایا جاوے، جو گاؤں گاؤں جاکر جنتا کی نسوارتھ سیوا کرنے اور اُسے اوپر اُٹھانے میں لگ جاوے. گاندھی جی کی اس تجویز کی چرچا 'نیا ھند' میں ھو چکی ھے. یہ بھی ھونا نہ تھا اور نہ ھو سکا.

ھم کئی بار کہہ چکے ھیں کہ دیس میں اِس سمے جنتا کا راج نہیں ھے. سچ یہ ھے کہ جنتا میں ابھی تک وہ سمجھ، وہ کیریکٹر، وہ بل، وہ سنگٹھن اور وہ یوگیتا بھی نہیں ھے کہ جس کے برتے پر جنتا حکومت کی باگ اپنے ھاتھوں میں لے سکے. راج ھے اُن پڑھے لکھے لوگوں کا جو آزادی کی کوششوں میں سب سے آگے رھے ھیں اور جو اب جہاں تک اُن کی سمجھ، اُن کی یوگیتا اور اُن کے چرتر کی کمزوریاں اجازت دیتی ھیں وھاں تک جنتا کا بھلا اور اُس کی سیوا کرنے کی کوشش کرتے ھیں.

کانگریس اب جنتا نہیں ھے. جنتا میں اور اُس میں الگاؤ بھی دنوں دن بڑھتا جا رھا ھے. پر اِس میں شک نہیں کہ اِس گری ھوئی حالت میں بھی جو اچھے سے اچھے آدمی کانگریس میں موجود ھیں اُس سے اچھے دیس کے کسی دوسرے دل، پارٹی یا سنستھا میں آسانی سے نہیں مل سکتے. ھم نام لینا نہیں چاھتے تھے پر اس سمے یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے اور یہ بہت درجہ تک ملک کے عام لوگوں کی آواز ھے کہ جن مشکلوں اور خطروں کا سامنا کرتے ھوئے جس لگن، جس محنت اور جس ھوشیاری کے ساتھ

जवाहरलाल जी ने इस तूफ़ान के अन्दर देस की नैया को सँभाले रक्खा है उस लगन, उस होशियारी और उस योग्यता का दूसरा आदमी देस में दिखाई नहीं देता. यह दूसरी बात है कि हम उनके सब कामों और उनकी सब रायों को ठीक नहीं मानते. पर उनकी कमज़ोरी देस की कमज़ोरी है. काँगरेस की भी गिरावट बच्चे बच्चे की आँखों के सामने है. पर काँगरेस के मुक़ाबले की कोई दूसरी संस्था या पार्टी भी अभी मुल्क में नज़र नहीं आती जिससे थोड़ी बहुत भी यह आशा की जा सके कि वह इससे ज़्यादा अच्छी तरह और ज़्यादा कामयाबी के साथ मुल्क की बाग को सँभाल सकेगी. काँगरेस की कमज़ोरियाँ भी मुल्क की कमज़ोरियाँ हैं और काँगरेस की गिरावट मुल्क की गिरावट है. एक बात यह भी हमें ध्यान में रखनी चाहिये कि मुल्क का जो तबक़ा या जो गिरोह जितना ज़्यादा अँगरेज़ों, अँगरेज़ी तालीम और अँगरेज़ी राज के असर में रहा उतना ही वह चरित्र, इनसानियत और नेकी से ज़्यादा गिरा हुआ निकला. ऐसा भी होना हमारी राय में क़ुदरती बात थी.

ऐसी हालत में हमें धीरज नहीं खोना चाहिये. क़ौमें या मुल्क एक दिन में नहीं बनते. हमें इन आज़माइशों में से निकलना ही होगा. ज़रूरत है जनता को जगाने की, उसमें बल पैदा करने की, उसे संगठित करने की, उसके चरित्र को ऊँचा ले जाने की. बल्कि हमें कहना चाहिये था ज़रूरत है जनता के जागने की, उसे अपने अन्दर बल संचार करने की, उसे संगठित होने की और उसे अपने चरित्र को ऊँचा और मज़बूत करने की. अंगरेज़ चले गए पर हमारी सदियों की बीमारियाँ, हमारी ख़ुदग़र्ज़ियाँ, हमारी फूट, हमारे अंधविश्वास और हमारी तंगनज़रियाँ जिन्हें वह जगा गए थे और जिनके सहारे ही वह नब्बे बरस तक राज करते रहे अभी पूरे ज़ोरों के साथ चमक रही हैं. हमें इन सबको पहचानना और जीतना होगा.

جواہر لال جی نے اس طوفان کے اندر دیس کی نیا کو سنبھالے رکھا ہے اس لگن، اس ہوشیاری اور اس یوگیتا کا دوسرا آدمی دیس میں دکھائی نہیں دیتا . یہ دوسری بات ہے کہ ہم انکے سب کاموں اور انکی سب رایوں کو ٹھیک نہیں مانتے پر انکی کمزوری دیس کی کمزوری ہے . کانگریس کی بھی گراوٹ بچے بچے کی آنکھوں کے سامنے ہے . پر کانگریس کے مقابلے کی کوئی دوسری سنستھا یا پارٹی بھی ابھی ملک میں نظر نہیں آتی جس سے تھوڑی بہت بھی یہ آشا کی جا سکے کہ وہ اس سے زیادہ اچھی طرح اور زیادہ کامیابی کے ساتھ ملک کی باگ کو سنبھال سکے گی . کانگریس کی کمزوریاں بھی ملک کی کمزوریاں ہیں اور کانگریس کی گراوٹ ملک کی گراوٹ ہے . ایک بات یہ بھی ہمیں دھیان میں رکھنی چاہیئے کہ ملک کا جو طبقہ یا جو گروہ جتنا زیادہ انگریزوں، انگریزی تعلیم اور انگریزی راج کے اثر میں رہا اتنا ہی وہ چرتر، انسانیت اور نیکی سے زیادہ گرا ہوا نکلا . ایسا بھی ہونا ہماری رائے میں قدرتی بات تھی .

ایسی حالت میں ہمیں دھیرج نہیں کھونا چاہئے . قومیں یا ملک ایک دن میں نہیں بنتے . ہمیں ان آزمائشوں میں سے نکلنا ہی ہوگا . ضرورت ہے جنتا کو جگانے کی، اسمیں بل پیدا کرنے کی، اسے سنگٹھت کرنے کی، اسکے چرتر کو اونچا لے جانے کی . بلکہ ہمیں کہنا چاہئے تھا ضرورت ہے جنتا کے جاگنے کی، اسے اپنے اندر بل سنچار کرنے کی، اسے سنگٹھت ہونے کی اور اسے اپنے چرتر کو اونچا اور مضبوط کرنے کی . انگریز چلے گئے پر ہماری صدیوں کی بیماریاں، ہماری خود غرضیاں، ہماری پھوٹ، ہمارے اندھ وشواس اور ہماری تنگ نظریاں جنہیں وہ جگا گئے تھے اور جن کے سہارے ہی وہ نوے برس تک راج کرتے رہے ابھی پورے زوروں کے ساتھ چمک رہی ہیں . ہمیں ان سب کو پہچاننا اور جیتنا ہوگا .

और जिनके सहारे ही वह नब्बे बरस तक राज करते रहे अभी पूरे जोरों के साथ चमक रही हैं. हमें इन सबको पहचानना और जीतना होगा.

थोड़े से शब्दों में हमें नीचे से अपने चरित्र और अपने व्योहार को ऊँचा और शुद्ध करना होगा. इस निगाह से हम वर्धा की इस योजना का स्वागत करते हैं.

पर दूसरी तरफ़ हमें इस योजना से कोई बड़ी उम्मीद भी दिखाई नहीं देती. हमें यह योजना एक बड़े दरजे तक फीकी और बेजान योजना दिखाई देती है. हम यह फ़िक़रे बड़े दर्द के साथ लिख रहे हैं. हमारी अपनी कमज़ोरी इस समय भूत बन कर हमारे सामने नाच रही है और हमें धिक्कार रही है. हम गाँधी जी का नाम लेते हैं, अपने को उनके चेले या उनके वारिस मानते हैं. पर हममें न वह सूझ है और न वह दिल.

इस योजना में सत्याग्रह की भी बात कही गई है. जाहिर है कि सत्याग्रह के चरचे इस समय हवा में हैं. हमें इसमें भी शक नहीं कि हर जनता को यह पैदाइशी हक़ है कि अगर उसकी कठिनाइयाँ और मुसीबतें कहने सुनने और अरज़ मारूज़ से दूर न हो सकें तो वह अपनी सरकार के ख़िलाफ़ चाहे वह देसी हो या विदेशी या जिस किसी को वह अपनी मुसीबतों के लिये ज़िम्मेवार समझती हो उसके ख़िलाफ़ अहिन्सात्मक रह कर सत्याग्रह से काम ले. यह भी ठीक है कि कोई सत्याग्रही जिस बात के लिये सत्याग्रह करे उस बात के लिये उसका दिल व दिमाग़ साफ़ और उसकी आत्मा शुद्ध होनी चाहिये. पर वर्धा के बयान में जो सत्याग्रह का बीज है वह हमें ऐसा बीज दिखाई नहीं देता जिसमें से कभी अकुआ फूट सके. यह ठीक है कि सत्याग्रह के लिये हर सत्याग्रही चरित्र की शुद्धता के एक माप तक पहुँचता हो. पर यह ठीक नहीं है कि हर मामले में सत्याग्रह करने के लिये सत्याग्रही को हर पहलू से आदर्श चरित्र ही होना चाहिये. और फिर आदर्श चरित्र है भी क्या चीज ? गांधी जी ने अपनी ज़िन्दगी भर जितने सत्याग्रह किये और कराए वह सब हमारी

ہی وہ نوے برس تک راج کرتے رہے ابھی پورے زوروں کے ساتھ چمک رہی ہیں ۔ ہمیں ان سب کو پہچاننا اور جیتنا ہوگا ۔

تھوڑے سے شبدوں میں ہمیں نیچے سے اپنے چرتر اور اپنے بیوہار کو اونچا اور شدھ کرنا ہوگا ۔ اس نگاہ سے ہم وردھا کی اس یوجنا کا سواگت کرتے ہیں ۔

پر دوسری طرف ہمیں اِس یوجنا سے کوئی بڑی اُمید بھی دکھائی نہیں دیتی ۔ ہمیں یہ یوجنا ایک بڑے درجے تک پھیکی اور بے جان یوجنا دکھائی دیتی ہے ۔ ہم یہ فقرے بڑے درد کے ساتھ لکھ رہے ہیں ۔ ہماری اپنی کمزوری اِس سمے بھوت بنکر ہمارے سامنے ناچ رہی ہے اور ہمیں دھکار رہی ہے ۔ ہم گاندھی جی کا نام لیتے ہیں، اپنے کو اُن کے چیلے یا اُنکے وارث مانتے ہیں ۔ پر ہم میں نہ وہ سوجھ ہے اور نہ وہ دل ۔

اِس یوجنا میں ستیاگرہ کی بھی بات کہی گئی ہے ۔ ظاہر ہے کہ ستیاگرہ کے چرچے اِس سمے ہوا میں ہیں ۔ ہمیں اِسمیں بھی شک نہیں کہ ہر جنتا کو یہ پیدائشی حق ہے کہ اگر اُسکی کٹھنائیاں اور مصیبتیں کہنے سننے اور عرض معروض سے دور نہ ہوسکیں تو وہ اپنی سرکار کے خلاف چاہے وہ دیسی ہو یا ودیشی یا جس کسی کو وہ اپنی مصیبتوں کے لئے ذمہ وار سمجھتی ہو اُسکے خلاف اہنساتمک رہ کر ستیاگرہ سے کام لے ۔ یہ بھی ٹھیک ہے کہ کوئی ستیاگرہی جس بات کے لئے ستیاگرہ کرے اُس بات کے لئے اُسکا دل و دماغ صاف اور اُسکی آتما شدھ ہونی چاہئے ۔ پر وردھا کے بیان میں جو ستیاگرہ کا بیج ہے وہ ہمیں ایسا بیج دکھائی نہیں دیتا جسمیں سے کبھی اکوا پھوٹ سکے ۔ یہ ٹھیک ہے کہ ستیاگرہ کے لئے ہر ستیاگرہی چرتر کی شدھتا کے ایک ماپ تک پہنچتا ہو ۔ پر یہ ٹھیک نہیں ہے کہ ہر معاملے میں ستیاگرہ کرنے کے لئے ستیاگرہی کو ہر پہلو سے آدرش چرتر ہی ہونا چاہئے ۔ اور پھر آدرش چرتر ہے بھی کیا چیز ؟ گاندھی جی نے اپنی زندگی بھر جتنے ستیاگرہ کئے اور کرائے وہ سب ہماری

इस तरह की ग़लतफ़हमियों को दूर करने के लिये काफ़ी हैं. अमली तौर पर भी कोई अपना माल बेचने वाला या ख़रीदने वाला इस योजना के ज़रिये कैसे हर मौक़े पर ऐसा आदमी पा सकेगा जिसके हाथ, शुद्ध रहते हुए, वह अपना माल बेच या ख़रीद सके. यह हमारी समझ से बाहर की चीज़ है. हमारी छोटी समझ से तो यह भी बाहर की चीज़ है कि इन मामलों में कौन सा व्योहार शुद्ध है और कौन सा अशुद्ध. हम मानते हैं कि आमतौर पर इसका तय करना इतना कठिन नहीं होता लेकिन बाज़ वक़्त लगभग नामुमकिन भी हो जाता है. कभी कभी हमें यह भी शक होने लगता है कि जिस कन्ट्रोल की दुकान के तौर तरीक़ों से और वहाँ के सरकारी मुलाज़िमों के कारनामों से जनता अच्छी तरह वाक़िफ़ है वहाँ उस दुकान से ख़रीदा हुआ अनाज ज़्यादा शुद्ध समझा जाय या पास की किसी ऐसी दुकान से ख़रीदा हुआ जिसे चोर बाज़ार की दुकान समझा जाता है. हल केवल एक रह जाता है और वह है भगवान की दी हुई रोशनी में अपने को साफ़ और अपने दिल को शुद्ध रखते हुए अपनी आत्मा की आवाज़ पर चले चलना. देस को हल सुझाने में अक्सर हमारी अपनी कमज़ोरियाँ हमारे रास्ते में रुकावटें बन कर आने लगती हैं. हमें कोई अमली क़दम नहीं सूझता या अमली क़दम उठाने की हिम्मत नहीं होती तो हम दूसरों को रूखे सदाचार के उपदेश देकर या अपने ऊपर निजी तौर पर कष्ट झेल कर, अपने हाथ सुखाकर, पेट काट कर या पैर थका कर अपनी आत्मा को तसल्ली दे लेते हैं. गवरमेन्ट और गवरमेन्ट के अन्दर अपने साथियों के मोह को भी हम नहीं जीत पा रहे हैं. चाहते हुए भी हम राज-काज की भूल भुलैयाँ से बाहर नहीं हो पा रहे हैं. हमारे यह फ़िक़रे कड़ुवे हो सकते हैं और हैं. लेकिन हम ख़ुद अपनी हालत को देख कर लिख रहे हैं. गाँधी जी के बाद किसी एक दो अपवादों को छोड़कर हम सब लँगड़ी बतख़ें हैं. आगे का हल हमारे बूते से बाहर मालूम होता है.

اِسطرح کی غلط فہمیوں کو دور کرنے کے لئے کافی ہیں. عملی طور پر بھی کوئی اپنا مال بیچنے والا یا خریدنے والا اِس یوجنا کے ذریعے کیسے ہر موقعے پر ایسا آدمی پاسکے گا جسکے ہاتھ، شدھ رہتے ہوئے، وہ اپنا مال بیچ یا خرید سکے. یہ ہماری سمجھ سے باہر کی چیز ہے. ہماری چھوٹی سمجھ سے تو یہ بھی باہر کی چیز ہے کہ اِن معاملوں میں کون سا بیوہار شدھ ہے اور کونسا اَشدھ. ہم مانتے ہیں کہ عام طور پر اس کا طے کرنا اتنا کٹھن نہیں ہوتا لیکن بعض وقت لگ بھگ ناممکن بھی ہوجاتا ہے. کبھی کبھی ہمیں یہ بھی شک ہونے لگتا ہے کہ جس کنٹرول کی دوکان کے طور طریقوں سے اور وہاں کے سرکاری ملازموں کے کارناموں سے جنتا اچھی طرح واقف ہے وہاں اُس دوکان سے خریدا ہوا ناج زیادہ شدھ سمجھا جائے یا پاس کی کسی ایسی دوکان سے خریدا ہوا جسے چور بازار کی دوکان سمجھا جاتا ہے حل کیول ایک رہ جاتا ہے اور وہ ہے بھگوان کی دی ہوئی روشنی میں اپنے کو صاف اور اپنے دل کو شدھ رکھتے ہوئے اپنی آتما کی آواز پر چلے چلنا. دیس کو حل سجھانے میں اکثر ہماری اپنی کمزوریاں ہمارے راستے میں رکاوٹیں بنکر آنے لگتی ہیں. ہمیں کوئی عملی قدم نہیں سوجھتا یا عملی قدم اُٹھانے کی ہمت نہیں ہوتی تو ہم دوسروں کو روکھے سدچار کے اُپدیش دے کر یا اپنے اوپر نجی طور پر کشٹ جھیل کر، اپنے ہاتھ سکھا کر، پیٹ کاٹ کر یا پیر تھکا کر اپنی آتما کو تسلی دے لیتے ہیں. گورنمنٹ اور گورنمنٹ کے اندر اپنے ساتھیوں کے موہ کو بھی ہم نہیں جیت پا رہے ہیں. چاہتے ہوئے بھی ہم راج کاج کی بھول بھلیاں سے باہر نہیں ہو پا رہے ہیں. ہمارے یہ فقرے کڑوے ہوسکتے ہیں اور ہیں. لیکن ہم خود اپنی حالت کو دیکھکر لکھ رہے ہیں. گاندھی جی کے بعد کسی ایک دو اپوادوں کو چھوڑ کر ہم سب لنگڑی بطخیں ہیں. آگے کا حل ہمارے بوتے سے باہر معلوم ہوتا ہے.

हो सकते हैं और हैं. लेकिन हम ख़ुद अपनी हालत को देख कर लिख रहे हैं. गाँधी जी के बाद किसी एक दो अपवादों को छोड़कर हम सब बग़ली बतखें हैं. आगे का हल हमारे बूते से बाहर मालूम होता है.

ایوادوں کو چھوڑ کر ہم سب بغلی بطخیں ہیں . آگے کا حل ہمارے بوتے سے باہر معلوم ہوتا ہے .

हमारे ऊपर के फ़िक़रों से यह ग़लत अन्दाज़ा न लिया जाए कि हम अपने देस की तरफ़ से निराश हैं. हम अपने अन्दर देख भाल कर कह रहे हैं कि हमारा दिल आशा से लबरेज़ है. हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं कि दो चार दस बरस के अन्दर ही—और दस बरस क़ौमों की ज़िन्दगी में कोई अधिक नहीं होते—यह मुल्क अपनी आजकल की सारी मुसीबतों को हल कर लेगा. हमें इसमें भी शक नहीं कि वह हल आख़ीर में गाँधी जी के बताए हुए रास्ते से ही निकलेगा. तीसरी जंग के डरावने बादल हमारी नज़रों में अगर कोई क़ीमत रखते हैं तो वह यही कि एक निहायत कड़ुवे तजरबे के बाद दुनिया के ऊपर हिन्सा की निरर्थकता अच्छी तरह साबित हो जावे. हमें यक़ीन है कि बेचैन और घबराई हुई दुनिया बहुत जल्दी इस सचाई को समझ लेगी कि जो चीज़ तलवार या हिन्सा से हासिल की जाती है वह हिन्सा से ही छिन जाती है. यह सच है कि गाँधी जी अब हमारे बीच में नहीं हैं. पर देस की वह मिट्टी जिसने गाँधी जी को पैदा किया था अपनी शक्ति खो नहीं बैठी. नए राह दिखाने वाले जनता की उस पाक और साफ़ मिट्टी में से निकलेंगे जो अभी तक अछूती पड़ी हुई है. वह दिन दूर नहीं है जब हमारी कमज़ोरियों, नासमझियों और मुसीबतों के सारे बादल छट चुके होंगे, इस देस की जनता आसपास के दूसरे देसों की जनता के साथ मिलकर और उनसे कंधे से कंधा मिलाए हुए अपने देस को और दुनिया को ऊँचा उठावेगी. उस दिन के आने के आसार बाहर हवा में और भीतर हमारे दिलों में दिखाई दे रहे हैं. तभी नई ज़मीन होगी, नया आसमान और नया हिन्दुस्तान !

१६. ४. ५१.　　—सुन्दरलाल

ہمارے اوپر کے فقروں سے یہ غلط اندازہ نہ لیا جائے کہ ہم اپنے دیس کی طرف سے نراش ہیں . ہم اپنے اندر دیکھ بھال کر کہہ رہے ہیں کہ ہمارا دل آشا سے لبریز ہے . ہمیں اسمیں ذرا بھی شک نہیں کہ دو چار دس برس کے اندر ہی — اور دس برس قوموں کی زندگی میں کوئی ادھک نہیں ہوتے — یہ ملک اپنی آجکل کی ساری مصیبتوں کو حل کر لیگا . ہمیں اسمیں بھی شک نہیں کہ وہ حل آخیر میں گاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے سے ہی نکلے گا . تیسری جنگ کے ڈراونے بادل ہماری نظروں میں اگر کوئی قیمت رکھتے ہیں تو وہ یہی کہ ایک نہایت کڑوے تجربے کے بعد دنیا کے اوپر ہنسا کی نرتھکتا اچھی طرح ثابت ہوجاوے — ہمیں یقین ہے کہ بے چین اور گھبرائی ہوئی دنیا بہت جلدی اِس سچائی کو سمجھ لے گی کہ جو چیز تلوار یا ہنسا سے حاصل کی جاتی ہے وہ ہنسا سے ہی چھن جاتی ہے . یہ سچ ہے کہ گاندھی جی اب ہمارے بیچ میں نہیں ہیں . پر دیس کی وہ مٹی جس نے گاندھی جی کو پیدا کیا تھا اپنی شکتی کھو نہیں بیٹھی . نئے راہ دکھانے والے جنتا کی اُس پاک اور صاف مٹی میں سے نکلیں گے جو ابھی تک اچھوتی پڑی ہوئی ہے . وہ دن دور نہیں ہے جب ہماری کمزوریوں ، ناسمجھیوں اور مصیبتوں کے سارے بادل چھٹ چکے ہوں گے ، اِس دیس کی جنتا آس پاس کے دوسرے دیسوں کی جنتا کے ساتھ ملکر اور اُن سے کندھے سے کندھا ملائے ہوئے اپنے دیس کو اور دنیا کو اونچا اُٹھاوے گی . اُس دن کے آنے کے آثار باہر ہوا میں اور بھیتر ہمارے دلوں میں دکھائی دے رہے ہیں . تب ہی نئی زمین ہوگی ، نیا آسمان اور نیا ہندستان !

١٦-٤-٥١　　— سندر لال

सोमनाथ का फिर से उद्धार—

ख़बर है कि ११ मई सन '५१ को सोमनाथ के मशहूर मन्दिर में शिव लिंग की फिर से स्थापना की जा रही है जिसके सिलसिले में वहाँ एक बहुत बड़ा जशन और मेला होगा.

बम्बई के बड़े बड़े ज्योतिशियों ने सुबह के नौ बजकर ठीक सैंतालीस मिनट पर इस काम के लिये महूरत तय किया है.

सारे मेले के लिये एक असरदार कमेटी बनी है जिसके सदर हिन्द सरकार के मंत्री श्री के. एम. मुँशी हैं.

पूजा पाठ नौ मई से शुरू होकर पाँच दिन तक जारी रहेगा. इनमें एक महारुद्र का पाठ भी होगा.

अख़बारों से मालूम होता है कि बहुत से भारत भर के धर्माचार्यों, राजप्रमुखों, मिनिस्टरों और पंडितों के अलावा हमारे जन-राज के सदर डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद भी इन जशनों और पूजा पाठ में भारत के राष्ट्रपति की हैसियत से हिस्सा लेंगे.

कहा जाता है कि श्री के. एम मुँशी ने नए मन्दिर की योजना तैयार की है जिसमें समन्दर के किनारे तीन हज़ार एकड़ ज़मीन के अन्दर छप्पन खम्बों पर जिनमें जवाहिरात जड़े होंगे, तेरह मंज़िल का यह नया मन्दिर जिसके ऊपर चौदह सोने के कलश वाले मीनार होंगे और जिसमें सोने की ज़ंजीरों से बजनेवाले बड़े बड़े घंटे घड़ियाल लगेंगे एक करोड़ रुपये की लागत से तैयार होगा.

महात्मा गाँधी की ज़िन्दगी में भारत के आज़ाद होते ही सोमनाथ के इस नए उद्धार की आवाज़ उठी थी. उस समय यह भी कहा गया था कि सोमनाथ के वह चन्दन के किवाड़, जो आगरा के क़िले में रखे हुए हैं और जिनकी बाबत कहा जाता है कि महमूद ग़ज़नवी उन्हें सोमनाथ से उखड़वाकर ग़ज़नी लेगया था और

سومناتھ کا پھر سے اُدّھار—

خبر ہے کہ ۱۱ مئی سن ٥١ کو سومناتھ کے مشہور مندر میں شولنگ کی پھر سے استھاپنا کی جا رہی ہے جسکے سلسلے میں وہاں ایک بہت بڑا جشن اور میلہ ہوگا۔

بمبئی کے بڑے بڑے جیوتشیوں نے صبح کے نو بجکر ٹھیک سینتالیس منٹ پر اس کام کے لئے مہورت طے کیا ہے۔

سارے میلے کے لئے ایک اثردار کمیٹی بنی ہے جسکے صدر ہند سرکار کے منتری شری کے. ایم. منشی ہیں۔

پوجا پاٹھ نو مئی سے شروع ہو کر پانچ دن تک جاری رہیگا۔ اِن میں ایک مہارودر کا پاٹھ بھی ہوگا۔

اخباروں سے معلوم ہوتا ہے کہ بہت سے بھارت بھر کے دھرما چاریوں، راج پرمکھوں، منسٹروں اور پنڈتوں کے علاوہ ہمارے جن‌راج کے صدر ڈاکٹر راجندر پرساد بھی اِن جشنوں اور پوجا پاٹھ میں بھارت کے راشٹر پتی کی حیثیت سے حصہ لینگے۔

کہا جاتا ہے کہ شری کے. ایم. منشی نے نئے مندر کی یوجنا تیار کی ہے جس میں سمندر کے کنارے تین ہزار ایکڑ زمین کے اندر چھپن کھمبوں پر، جن میں جواہرات جڑے ہوں گے، تیرہ منزل کا یہ نیا مندر جسکے اوپر چودہ سونے کے کلش والے مینار ہوں گے اور جس میں سونے کی زنجیروں سے بجنے والے بڑے بڑے گھنٹے گھڑیال لگینگے ایک کروڑ روپئے کی لاگت سے تیار ہوگا۔

مہاتما گاندھی کی زندگی میں بھارت کے آزاد ہوتے ہی سومناتھ کے اِس نئے اُدّھار کی آواز اُٹھی تھی۔ اُس سمے یہ بھی کہا گیا تھا کہ سومناتھ کے وہ چندن کے کواڑ، جو آگرہ کے قلعے میں رکھے ہوئے ہیں اور جن کی بابت کہا جاتا ہے کہ محمود غزنوی انہیں سومناتھ سے اکھڑواکر غزنی لے گیا تھا اور

भी कहा गया था कि सोमनाथ के वह चन्दन के किवाड़, जो आगरा के क़िले में रखे हुए हैं और जिनकी बाबत कहा जाता है कि महमूद ग़ज़नवी उन्हें सोमनाथ से उखड़वाकर ग़ज़नी लेगया था और

पहली अफ़ग़ान जंग के बाद गवरनर जनरल लार्ड एलनब्रू के हुकुम से वह ग़ज़नी से हिन्दुस्तान लाए गये, अब फिर से सोमनाथ के मन्दिर में ले जाकर लगाए जाएँगे. गाँधी जी के हुकुम से इन किवाड़ों की बाबत हमने एक छोटा सा लेख लिखकर गाँधी जी को दिया, जिसमें यह बताया गया है कि यह किवाड़ों की सारी कहानी झूटी और जाली है और जो किवाड़ आगरे में रक्खे हुए हैं वह सोमनाथ के किवाड़ न होकर लार्ड एलनब्रू के हुकुम से जलालाबाद में बनवाए गए थे, और यह सारा क़िस्सा उस कूटनीति का एक नमूना है जिसके ज़रिये हिन्दू और मुसलमानों को अंगरेज़ एक दूसर के ख़िलाफ़ भड़काते रहते थे. हमारा वह लेख 'हरिजन सेवक' (२८ दिसम्बर १९४७) में छप चुका है और गाँधी जी ने अपने एक ख़ास नोट में चन्द सतरों के अन्दर 'हरिजन' (२८ दिसम्बर १९४७) के पाठकों का ध्यान उस लेख की तरफ़ दिलाया है घटनाओं और दलीलों में हम यहाँ जाना नहीं चाहते.

किसी तरह राम राम करके उन जाली किवाड़ों को फिर से ले जाकर लगाने का पागलपन तो ख़त्म हुआ लेकिन सोमनाथ के नए उद्धार का क़िस्सा बराबर चलता रहा और अब कमाल को पहुँच रहा है.

यह भी कहा जाता है कि सोमनाथ का इस तरह का फिर से उद्धार पिछले एक हज़ार बरस में आठ बार हो चुका है.

हम मूर्ति पूजक नहीं हैं. हम एक निराकार ईश्वर अल्लाह के मानने वाले हैं. पर जो लोग मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं उनके इस विश्वास का हमारे दिल में आदर है. हम इस असूल के मानने वाले हैं कि हर सभ्य देस में और हर सभ्य राज में हर आदमी को अपने ढंग से अपने इष्ट देव की पूजा करने की पूरी आज़ादी होनी चाहिये जब तक कि उसकी यह आज़ादी किसी दूसरे की उसी तरह की आज़ादी से न टकराती हो, या उसमें कोई ख़ास

قلعے میں رکھے ہوئے ہیں اور جن کی بابت کہا جاتا ہے کہ محمود غزنوی انہیں سومناتھ سے اکھڑواکر غزنی لے گیا تھا اور

پہلی افغان جنگ کے بعد گورنر جنرل لارڈ ایلن برو کے حکم سے وہ غزنی سے ہندستان لائے گئے، اب پھر سے سومناتھ کے مندر میں لے جاکر لگائے جائینگے. گاندھی جی کے حکم سے ان کواڑوں کی بابت ہم نے ایک چھوٹا سا لیکھ لکھکر گاندھی جی کو دیا، جسمیں یہ بتایا گیا ہے کہ یہ کواڑوں کی ساری کہانی جھوٹی اور جعلی ہے اور جو کواڑ آگرہ میں رکھے ہوئے ہیں وہ سومناتھ کے کواڑ نہ ہوکر لارڈ ایلن برو کے حکم سے جلالاباد میں بنوائے گئے تھے. اور یہ سارا قصہ اس کوٹ نیت کا ایک نمونہ ہے جسکے ذریعے ہندو اور مسلمانوں کو انگریز ایک دوسرے کے خلاف بھڑکاتے رہتے تھے. ہمارا وہ لیکھ 'ہریجن سیوک' (۲۸ دسمبر ۱۹۴۷) میں چھپ چکا ہے اور گاندھی جی نے اپنے ایک خاص نوٹ میں چند سطروں کے اندر 'ہریجن' ۲۸ دسمبر ۱۹۴۷). کے پاٹھکوں کا دھیان اس لیکھ کی طرف دلایا ہے. گھٹناؤں اور دلیلوں میں ہم یہاں جانا نہیں چاہتے.

کسی طرح رام رام کرکے اُن جعلی کواڑوں کو پھر سے لے جا کر لگانے کا پاگل پن تو ختم ہوا. لیکن سومناتھ کے نئے اُددھار کا قصہ برابر چلتا رہا اور اب کمال کو پہونچ رہا ہے.

یہ بھی کہا جاتا ہے کہ سومناتھ کا اس طرح کا پھر سے اُددھار پچھلے ایک ہزار برس میں آٹھ بار ہو چکا ہے.

ہم مورتی پوجک نہیں ہیں. ہم ایک نراکار ایشور اللہ کے ماننے والے ہیں. پر جو لوگ مورتی پوجا میں وشواس رکھتے ہیں انکے اس وشواس کا ہمارے دل میں آدر ہے. ہم اس اصول کے ماننے والے ہیں کہ ہر سبھیہ دیس میں اور ہر سبھیہ راج میں ہر آدمی کو اپنے ڈھنگ سے اپنے اِشٹ دیو کی پوجا کرنے کی پوری آزادی ہونی چاہیئے جب تک کہ اُس کی یہ آزادی کسی دوسرے کی اُسی طرح کی آزادی سے نہ ٹکراتی ہو یا اُس میں کوئی خاص

बात आम सदाचार के ख़िलाफ़ न हो. भारत हो या पाकिस्तान, रूस हो या जापान, किसी भी देस में किसी भी मूर्ति पूजक को अपने देवी देवता को अपने ढंग से पूजने की पूरी आज़ादी होनी चाहिये. सोमनाथ के इस मामले के सम्बन्ध में हमें केवल तीन बातें कहनी हैं—

(१) यह कि जो लोग इस आन्दोलन के कर्ताधर्ता बने हुए हैं उनमें से कई की बाबत हम दावे के साथ अपनी जानकारी की बिना पर यह कह सकते हैं कि वह ख़ुद मूर्ति पूजा में विश्वासी नहीं है. हिन्दुओं और मुसलमानों, महासभा और लीग, दोनों में हम यह लज्जाजनक तमाशा देख चुके हैं और देख रहे हैं कि जो पढ़े लिखे लोग इन धर्मों के मामूली असूलों में भी विश्वास नहीं रखते वह अपना राजकाजी मक़सद पूरा करने के लिये हिन्दू और मुसलिम जनता को उन ही बातों के नाम पर भड़काते और उनसे अपनी ग़रज़ पूरी करते हैं. ईस्ट इंडिया कम्पनी के ज़माने से लेकर आज तक हमारे देस की राजकाजी हालत का यह एक बड़ा शर्मनाक पहलू रहा है और है. भोली जनता को इस तरह भड़का कर उसकी गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपए इन तमाशों में ख़र्च करवाना और करना हमें देस और मानवता दोनों के साथ अन्याय दिखाई देता है. बड़े दर्द के साथ हमारे अन्दर से यह सवाल उठ रहा है कि आख़िर यह तमाशे कबतक होते रहेंगे ?

(२) यह कि भारत की सरकार सेकुलर यानी ग़ैर जानिबदार ब्योहारी सरकार मानी जाती है और हम मानते हैं कि एक बड़े दर्जे तक है. एक ऐसी ब्योहारी सरकार के वज़ीरों और उसके सदर का इस तरह की चीज़ों में खुले आम हिस्सा लेना थोड़ी देर के लिये भोली धार्मिक जनता से या साम्प्रदायिकता के ज़हर में डूबे हुए पढ़े लिखे लोगों से उन्हें वाह-वाही लूटने का मौक़ा भले

بات عام سداچار کے خلاف نہ ھو . بھارت ھو یا پاکستان، روس ھو یا جاپان، کسی بھی دیس میں کسی بھی مورتی پوجک کو اپنے دیوی دیوتا کو اپنے ڈھنگ سے پوجنے کی پوری آزادی ھونی چاھیئے . سومناتھ کے اس معاملے کے سمبندھ میں ھمیں کیول تین باتیں کہنی ھیں —

(۱) یہ کہ جو لوگ اس آندولن کے کرتا دھرتا بنے ھوئے ھیں اُن میں سے کئی کی بابت ھم دعوے کے ساتھ اپنی جان کاری کی بنا پر یہ کہہ سکتے ھیں کہ وہ خود مورتی پوجا میں وشواسی نہیں ھیں . ھندوؤں اور مسلمانوں، مہا سبھا اور لیگ، دونوں میں ھم یہ لجا جنک تماشہ دیکھ چکے ھیں اور دیکھ رھے ھیں کہ جو پڑھے لکھے لوگ اِن دھرموں کے معمولی اصولوں میں بھی وشواس نہیں رکھتے وہ اپنا راج کاجی مقصد پورا کرنے کے لئے ھندو اور مسلم جنتا کو اُن ھی باتوں کے نام پر بھڑکاتے اور اُن سے اپنی غرض پوری کرتے ھیں . ایسٹ انڈیا کمپنی کے زمانے سے لے کر آج تک ھمارے دیس کی راج کاجی حالت کا یہ ایک بڑا شرمناک پہلو رھا ھے اور ھے . بھولی جنتا کو اِسطرح بھڑکا کر اُسکی گاڑھی کمائی کے کروڑوں روپے اِن تماشوں میں خرچ کروانا اور کرنا ھمیں دیس اور مانوتا دونوں کے ساتھ انیائے دکھائی دیتا ھے . بڑے درد کے ساتھ ھمارے اندر سے یہ سوال اُٹھ رھا ھے کہ آخر یہ تماشے کب تک ھوتے رھینگے ؟

(۲) یہ کہ بھارت کی سرکار سیکولر یعنی غیر جانب دار بیوھاری سرکار مانی جاتی ھے اور ھم مانتے ھیں کہ ایک بڑے درجے تک ھے . ایک ایسی بیوھاری سرکار کے وزیروں اور اُسکے صدر کا اِس طرح کی چیزوں میں کھلے عام حصہ لینا تھوڑی دیر کے لئے بھولی دھارمک جنتا سے یا سامپردایکتا کے زھر میں ڈوبے ھوئے پڑھے لکھے لوگوں سے اُنھیں واہ واھی لوٹنے کا موقعہ بھلے

सदर का इस तरह की चीज़ों में खुले आम हिस्सा लेना थोड़ी देर के लिये भोली धार्मिक जनता से या साम्प्रदायिकता के ज़हर में डूबे हुए पढ़े लिखे लोगों से उन्हें वाह-वाही लूटने का मौक़ा भले

ही दे, उनका ऐसा करना न हक़ूमत के सेकुलरपने को मज़बूत करता है और न उनकी सच्ची शान को बढ़ाता है. भारत की ब्योहारी सरकार के एक शहरी की हैसियत से हमें शर्म आती है कि हमारे राज के ज़िम्मेदार पदाधिकारी इस तरह के कामों में हिस्सा लेने के लिये अपने को आज़ाद समझते हैं. सोमनाथ के इस उद्धार के और भी इस तरह के पहलू हैं, जैसे विदेशों में हमारे सरकारी नौकरों का उसे एक क़ौमी आन्दोलन का रूप देना जिन्हें हम किसी तरह भी एक सेकुलर राज के लिये जायज़ नहीं ठहरा सकते.

(३) हमने इस सम्बन्ध के 'हरिजन सेवक' (११ जनवरी १९४८) के अपने लेखों में विद्वान महाराष्ट्र इतिहासकार चिन्तामनि विनायक वैद्य की इस राय को नक़ल किया है कि सोमनाथ के सम्बन्ध में या सोमनाथ और महमूद ग़ज़नवी के हमले के सम्बन्ध में जितने क़िस्से इतिहास में मिलते हैं उनमें से बहुत से फ़रज़ी और मनगढ़न्त हैं. यह तो रही लिखे हुए इतिहास की बात. अब हमने सुना है कि सोमनाथ में जो जो चीज़ें हो रही हैं और फैलाई जारही हैं वह श्री के. एम. मुँशी के लिखे हुए एक निहायत दिलचस्प गुजराती नावेल "जय सोमनाथ" के आधार पर हो रही हैं.

यही सारी घटना भारत को दुनिया की नज़रों में गिरानेवाली घटना है, ऊँचा करनेवाली नहीं. धर्म बड़ी ऊँची चीज़ है पर राजकाजियों के हाथ में खेलनेवाला धर्म, धर्म नहीं, धर्म का उपहास है. इलाज केवल एक है और वह है जनता का अपने सदियों के अन्धविश्वासों, कुरीतियों, तंगनज़रियों और मानसिक जंजालों से बाहर निकल कर एक मानव धर्म को साक्षात करना. अपने सच्चे नफ़ा नुक़सान को समझना और इस नए ज्ञान और नई मानसिक आज़ादी की रोशनी में राज और समाज दोनों की बागें अपने हाथ में लेना.

१५. ४. ५१. —सुन्दरलाल

بھولی دھارمک جنتا سے یا سامپردایکتا کے زہر میں ڈوبے ہوئے پڑھے لکھے لوگوں سے انہیں واہ واہی لوٹنے کا موقعہ بھلے

ہی دے، اُن کا ایسا کرنا نہ حکومت کے سیکولرپنے کو مضبوط کرتا ہے اور نہ اُنکی سچی شان کو بڑھاتا ہے. بھارت کی بیوہاری سرکار کے ایک شہری کی حیثیت سے ہمیں شرم آتی ہے کہ ہمارے راج کے ذمہ دار پداَدھیکاری اِسطرح کے کاموں میں حصہ لینے کے لئے اپنے کو آزاد سمجھتے ہیں. سومناتھ کے اس اُدھار کے اور بھی اسطرح کے پہلو ہیں، جیسے ودیشوں میں ہمارے سرکاری نوکروں کا اسے ایک قومی آندولن کا روپ دینا جنھیں ہم کسی طرح بھی ایک سیکولر راج کے لئے جائز نہیں ٹھہرا سکتے.

(۳) ہم نے اس سمبندھ کے 'ہریجن سیوک' (۱۱ جنوری ۱۹۴۸) کے اپنے لیکھوں میں ودوان مہا راشٹر اتہاس کار چنتامنی ونائک ویدھ کی اس رائے کو نقل کیا ہے کہ سومناتھ کے سمبندھ میں یا سومناتھ اور محمود غزنوی کے حملے کے سمبندھ میں جتنے قصے اِتہاس میں ملتے ہیں اُن میں سے بہت سے فرضی اور من گھڑنت ہیں. یہ تو رہی لکھے ہوئے اِتہاس کی بات. اب ہم نے سنا ہے کہ سومناتھ میں جو جو چیزیں ہو رہی ہیں اور پھیلائی جا رہی ہیں وہ شری کے. ایم. منشی کے لکھے ہوئے ایک نہایت دلچسپ گجراتی ناول "جے سومناتھ" کے آدھار پر ہورہی ہیں.

یہ ساری گھٹنا بھارت کو دنیا کی نظروں میں گرانے والی گھٹنا ہے، اُونچا کرنے والی نہیں. دھرم بڑی اُونچی چیز ہے پر راج کاجیوں کے ہاتھ میں کھیلنے والا دھرم دھرم نہیں، دھرم کا اُپہاس ہے. علاج کیول ایک ہے اور وہ ہے جنتا کا اپنے صدیوں کے اندھ وشواسوں، کریتیوں، تنگ نظریوں اور مانسک جنجالوں سے باہر نکلکر ایک مانو دھرم کو ساکشات کرنا، اپنے سچے نفع نقصان کو سمجھنا اور اس نئے گیان اور نئی مانسک آزادی کی روشنی میں راج اور سماج دونوں کی باگیں اپنے ہاتھ میں لینا.

۱۶-۴-۵۱ —سندر لال

कोरिया में नई चाल–

जब से हवा पर यह ख़बर बखेरी गई है कि जनरल मैकआर्थर यू. एन. ओ. के सेनापति की हैसियत से अलग कर दिये गए तब से तरह तरह के विचार, तरह तरह के लोगों में, तरह तरह से तरंगें मार रहे हैं. हमें यह ख़बर सुनकर ज़रा भी ऐसा न मालूम हुआ कि कोरिया की लड़ाई के मामले में कोई अनोखी या मार्के की बात हो रही है. जनरल मैकआर्थर सेनापति रहते या न रहते, अगर यू. एन. ओ. की फ़ौजों को अड़तीस पड़ी रेखा के उत्तर से वापिस बुला लिया गया होता तो हम यह समझते कि ज़रूर अमरीका की नियत बदली और वह सचमुच कोरिया और एशिया का भला चाहता है.

जनरल मैकआर्थर की बरख़ास्तगी के बारे में कम से कम हम यह समझ लें कि मैकआर्थर साहब असल में हैं क्या. लड़ाई में जापान से घुटने टिकवादेने के बाद से जनरल मैकआर्थर अमरीका की रिपब्लिकन पार्टी के देवता बन गए हैं और उस देवता की इज़्ज़त को किसी तरह का बट्टा लगे ऐसा काम इस वक़्त अमरीका में कोई भी करने की हिम्मत नहीं कर सकता. ट्रूमैन साहब ने उन्हें अलहदा करते वक़्त जो यह बात कही है कि जनरल मैकआर्थर उस नीत से एक राय नहीं थे जो अमरीका की है और उन हिदायतों पर अमल नहीं करते थे जो उन्हें दी जाती थीं, हमें इस में कुछ सार दिखाई नहीं देता. अमरीका की नीत से एक राय न होने की जो बात ट्रूमैन साहब कह रहे हैं वह जनरल मैकआर्थर की बरख़ास्तगी के बाद की उन हालतों से मेल नहीं खाती जो अमरीका में हो रही हैं. अगर एक राय न होने में कोई सच्चाई होती तो अमरीका में आज साफ़ दो दल न देख पड़ते. ट्रूमैन जैसे समझदार आदमी से यह उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती कि वह क़ौमी एकता के बदले में

کوریا میں نئی چال–

جب سے ھوا پر یہ خبر بکھیری گئی ھے کہ جنرل میک آرتھر یو . این . او . کے سینا پتی کی حیثیت سے الگ کر دئے گئے تب سے طرح طرح کے وچار، طرح طرح کے لوگوں میں، طرح طرح سے ترنگیں مار رھے ھیں . ھمیں یہ خبر سنکر ذرا بھی ایسا نہ معلوم ھوا کہ کوریا کی لڑائی کے معاملے میں کوئی انوکھی یا معرکے کی بات ھو رھی ھے . جنرل میک آرتھر سینا پتی رھتے یا نہ رھتے، اگر یو . این . او . کی فوجوں کو اڑتیس پڑی ریکھا کے اُتر سے واپس بلا لیا گیا ھوتا تو ھم یہ سمجھتے کہ ضرور امریکہ کی نیت بدلی اور وہ سچ مچ کوریا اور ایشیا کا بھلا چاھتا ھے .

جنرل میک آرتھر کی برخاستگی کے بارے میں کم سے کم ھم یہ سمجھ لیں کہ میک آرتھر صاحب اصل میں ھیں کیا . لڑائی میں جاپان سے گھٹنے ٹکوا دینے کے بعد سے جنرل میک آرتھر امریکہ کی ری پبلکن پارٹی کے دیوتا بن گئے ھیں اور اُس دیوتا کی عزت کو کسی طرح کا بٹہ لگے ایسا کام اسوقت امریکہ میں کوئی بھی کرنے کی ھمت نہیں کر سکتا . ترومین صاحب نے اُنھیں علیحدہ کرتے وقت جو یہ بات کہی ھے کہ جنرل میک آرتھر اُس نیتی سے ایک رائے نہیں تھے جو امریکہ کی ھے اور اُن ھدایتوں پر عمل نہیں کرتے تھے جو اُنھیں دی جاتی تھیں، ھمیں اِس میں کچھ سار دکھائی نہیں دیتا . امریکہ کی نیتی سے ایک رائے نہ ھونے کی جو بات ترومین صاحب کہہ رھے ھیں وہ جنرل میک آرتھر کی برخاستگی کے بعد کی اُن حالتوں سے میل نہیں کھاتی جو امریکہ میں ھو رھی ھیں . اگر ایک رائے نہ ھونے میں کوئی سچائی ھوتی تو امریکہ میں آج صاف دو دل نہ دیکھ پڑتے . ترومین جیسے سمجھدار آدمی سے یہ اُمید ھرگز نہیں کی جا سکتی کہ وہ قومی ایکتا کے بدلے میں

अगर एक राय न होने में कोई सच्चाई होती तो अमरीका में आज साफ़ दो दल न देख पड़ते. ट्रूमैन जैसे समझदार आदमी से यह उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती कि वह क़ौमी एकता के बदले में

अन्तरक़ौमी एकता हासिल करने की बात सोचेंगे. अमरीका की नेशन को नाराज़ करके या उसमें फूट डाल कर वह यूनाइटेड नेशन्स की एकता की बात कभी नहीं सोच सकते.

कोरिया की लड़ाई जिस वक़्त शुरू हुई थी तब रूसी राज-नेताओं का यह कहना था कि यह लड़ाई अमरीका ने अपना मतलब पूरा करने के लिये उठाई है और जनरल मैकआर्थर की उस वक़्त की जल्दबाज़ी इस बात का सबूत भी है. यह किसी से छिपा हुआ नहीं है कि यू. एन. ओ. की इजाज़त मिलने से पहले ही जनरल मैकआर्थर उत्तर कोरिया की फ़ौजों का सामना करने के लिये चल पड़े थे. उस वक़्त किसी तरह से अमरीका ने यू. एन. ओ. की मदद से कोरिया को एग्रेसर साबित करके अपनी सब बेजा कारवाइयों को जा यानी ठीक साबित करा लिया था और कुछ को छिपा दिया था. पर भूत वह जो सर पर चढ़ कर बोले. आज वह रिपबलिकन पार्टी जो जनरल मैकआर्थर को देवता मानती है खुल्लम खुल्ला चिल्ला कर कह रही है कि "क्या जनरल मैकआर्थर को बरख़ास्त करके ट्रूमैन साहब कोई नया और बड़ा 'म्यूनिच' खड़ा करना चाहते हैं? (म्यूनिच उसी जगह का नाम है जहाँ अंगरेज़ों ने हिटलर से सुलह करके हिटलर की ताक़त बढ़ा दी थी). क्या अब अमरीका को फ़ारमूसा से अपना घेरा हटाना पड़ेगा? क्या अब लाल चीन को यूनाइटेड नेशन्स में जगह देनी पड़ेगी और क्या जापान के साथ सुलहनामे में लाल चीन भी हमारे साथ बैठेगा? और क्या अब जापान को लाल घेरे में शामिल होने के लिये छोड़ दिया जायगा?

रिपबलिकन पार्टी के लोगों की यह बातें साफ़ साबित करती हैं कि अमरीका ने जान बूझ कर कोरिया की लड़ाई छेड़ी थी और इस नाते उसने फ़ारमूसा का घेरा डाल दिया था और जापान में अपने फ़ौजी अड्डे बनाने की स्कीम तैयार करली थी. यह सब बातें हमें

نہ ہونے میں کوئی سچائی ہوتی تو امریکہ میں آج صاف دو دل نہ دیکھ پڑتے. ٹرومین جیسے سمجھدار آدمی سے یہ اُمید ہرگز نہیں کی جا سکتی کہ وہ قومی ایکتا کے بدلے میں

انتر قومی ایکتا حاصل کرنے کی بات سوچینگے. امریکہ کی نیشن کو ناراض کرکے یا اُس میں پھوٹ ڈال کر وہ یونائٹیڈ نیشنس کی ایکتا کی بات کبھی نہیں سوچ سکتے.

کوریا کی لڑائی جسوقت شروع ہوئی تھی تب روسی راج نیتاؤں کا یہ کہنا تھا کہ یہ لڑائی امریکہ نے اپنا مطلب پورا کرنے کے لئے اُٹھائی ہے اور جنرل میک آرتھر کی اُسوقت کی جلدبازی اس بات کا ثبوت بھی ہے. یہ کسی سے چھپا ہوا نہیں ہے کہ یو. این. او. کی اجازت ملنے سے پہلے ہی جنرل میک آرتھر اُتر کوریا کی فوجوں کا سامنا کرنے کے لئے چل پڑے تھے. اُسوقت کسی طرح سے امریکہ نے یو. این. او. کی مدد سے کوریا کو ایگریسر ثابت کرکے اپنی سب بیجا کاروائیوں کو جا یعنی ٹھیک ثابت کرا لیا تھا اور کچھ کو چھپا دیا تھا. پر بھوت وہ جو سر چڑھ کر بولے. آج وہ ری پبلکن پارٹی جو جنرل میک آرتھر کو دیوتا مانتی ہے کھلم کھلا چلا کر کہہ رہی ہے کہ "کیا جنرل میک آرتھر کو برخاست کر کے ٹرومین صاحب کوئی نیا اور بڑا 'میونچ' کھڑا کرنا چاہتے ہیں؟ (میونچ اُسی جگہ کا نام ہے جہاں انگریزوں نے ہٹلر سے صلح کر کے ہٹلر کی طاقت بڑھا دی تھی) کیا اب امریکہ کو فارموسا سے اپنا گھیرا ہٹانا پڑیگا؟ کیا اب لال چین کو یونائٹیڈ نیشنس میں جگہ دینی پڑیگی اور کیا اب جاپان کے ساتھ صلحنامہ میں لال چین بھی ہمارے ساتھ بیٹھیگا؟ اور کیا اب جاپان کو لال گھیرے میں شامل ہونے کے لئے چھوڑ دیا جائیگا؟"

ری پبلکن پارٹی کے لوگوں کی یہ باتیں صاف ثابت کرتی ہیں کہ امریکہ نے جان بوجھ کر کوریا کی لڑائی چھیڑی تھی اور اِس ناتے اُس نے فارموسا کا گھیرا ڈال دیا تھا اور جاپان میں اپنے فوجی اڈے بنانے کی اِسکیم تیار کر لی تھی. یہ سب باتیں ہمیں

मजबूर करती हैं कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी में कोई नेकनियती या भलाई है इस बात को मानने से हम इनकार करदें.

रिपबलिकन पार्टी तो यहाँ तक बढ़ गई है कि अगर वह यह नहीं चाहती कि ट्रूमैन साहब पर कोई इलज़ाम लगाया जाय तो खुले खुले यह तो कह ही रही है कि ट्रूमैन साहब को स्तीफ़ा दे देना चाहिये और उन लोगों को भी स्तीफ़ा दे देना चाहिये जो जनरल मैकआर्थर को अलग करने में ट्रूमैन साहब के साथ थे यानी एचेसन और मार्शल साहब. यह मार्शल साहब वही हैं जिन्होंने सन् १९४५ में चीन छोड़ देने की आवाज़ उठाई थी. अमरीकी सरकार की जो दूर पूरब की नीत थी उससे रिपबलिकन पार्टी हमेशा एक राय रही है. तभी तो इस पार्टी के एक नेता जान फ़ास्टर डल, विदेश मंत्री एचेसन के आज तक सलाहकार हैं. उन ही की मदद से जापानी सुलहनामा तैयार किया गया है और अभी खबर मिली थी कि वह बहुत जल्दी टोकियो पहुंच रहे हैं.

रिपबलिकन पार्टी की भी यही नीत है कि दूर पूरब में लड़ाई ज़ोरों के साथ चलाई जाय और यही काम जनरल मैकआर्थर कर रहे थे. रिपबलिकन पार्टी की तरफ़ से कहा तो यह जाता है कि जनरल मैकआर्थर ने कभी ऐसा नहीं किया कि यू. एन. ओ. की हिदायतें न मानी हों लेकिन इनकी खुली बातों से यह पता चलता है कि कोरिया की लड़ाई हमारी यानी अमरीकियों की है. इसे यू. एन. ओ. से क्या मतलब ? और अगर यू. एन. ओ. कुछ करना चाहती है तो इस तरह करे जिससे अमरीका का उल्लू सीधा हो.

इनमें से कुछ लोग तो ट्रूमैन पर यह भी इलज़ाम लगाते हैं कि वह अब कोरिया के बारे में अपनी समझ से काम नहीं लेते, जो कुछ करते हैं अंगरेजों की सलाह से या और मुल्कों की सलाह से करते हैं. कुछ अमरीकी तो यहाँ तक बढ़ गए हैं कि क्या अब उन जनरैलों को चुप्पी साधना पड़ेगी जो योरप में काम कर रहे हैं.

مجبور کرتی ھیں کہ جنرل میک آرتھر کی علیحدگی میں کوئی نیک نیتی یا بھلائی ھے اس بات کو ماننے سے ھم انکار کر دیں ۔

ری پبلکن پارٹی تو یہاں تک بڑھ گئی ھے کہ اگر وہ یہ نہیں چاھتی کہ ترومین صاحب پر کوئی الزام لگایا جائے تو کھلے کھلے یہ تو کہہ ھی رھی ھے کہ ترومین صاحب کو استعفیٰ دے دینا چاھیئے اور اُن لوگوں کو بھی استعفیٰ دے دینا چاھئے جو جنرل میک آرتھر کو الگ کرنے میں ترومین صاحب کے ساتھ تھے یعنی ایچےسن اور مارشل صاحب ۔ یہ مارشل صاحب وھی ھیں جنھوں نے سن ١٩٤٥ میں چین چھوڑ دینے کی آواز اُٹھائی تھی ۔ امریکی سرکار کی جو دور پورب کی نیتی تھی اُس سے ری پبلکن پارٹی ھمیشہ ایک رائے رھی ھے ۔ تبھی تو اِس پارٹی کے ایک نیتا جان فاسٹرڈل، ودیش منتری ایچےسن کے آج تک صلاح کار ھیں ۔ اُن ھی کی مدد سے جاپانی صلحنامہ تیار کیا گیا ھے اور ابھی خبر ملی تھی کہ وہ بہت جلدی توکیو پہونچ رہے ھیں ۔

ری پبلکن پارٹی کی بھی یہی نیت ھے کہ دور پورب میں لڑائی زوروں کے ساتھ چلائی جائے اور یہی کام جنرل میک آرتھر کر رھے تھے ۔ ری پبلکن پارٹی کی طرف سے کہا تو یہ جاتا ھے کہ جنرل میک آرتھر نے کبھی ایسا نہیں کیا کہ یو ۔ این ۔ او ۔ کی ھدائتیں نہ مانی ھوں لیکن اِنکی کھلی باتوں سے یہ پتہ چلتا ھے کہ کوریا کی لڑائی ھماری یعنی امریکیوں کی ھے ۔ اسے یو ۔ این ۔ او ۔ سے کیا مطلب ؟ اور اگر یو ۔ این ۔ او ۔ کچھ کرنا چاھتی ھے تو اِس طرح کرے جس سے امریکہ کا الو سیدھا ھو ۔

اِن میں سے کچھ لوگ تو ترومین پر یہ بھی الزام لگاتے ھیں کہ وہ اب کوریا کے بارے میں اپنی سمجھ سے کام نہیں لیتے، جو کچھ کرتے ھیں انگریزوں کی صلاح سے یا اور ملکوں کی صلاح سے کرتے ھیں ۔ کچھ امریکی تو یہاں تک بڑھ گئے ھیں کہ کیا اب اُن جنریلوں کو چپ سادھنا پڑیگی جو یورپ میں کام کر رھے ھیں ۔

नया हिन्द हमारी राय मई सन् '५१ '٥١ مئی سن ھماری راے نیا ھند

करते हैं अंगरेज़ों की सलाह से या और मुल्कों की सलाह से करते हैं. कुछ अमरीकी तो यहाँ तक बढ़ गए हैं कि क्या अब उन जनरैलों को चुप्पी साधना पड़ेगी जो योरप में काम कर रहे हैं.

ہیں انگریزوں کی صلاح سے یا اور ملکوں کی صلاح سے کرتے ہیں . کچھ امریکی تو یہاں تک بڑھ گئے ہیں کہ کیا اب اُن جنرلوں کو چپّی سادھنا پڑیگی جو یورپ میں کام کر رہے ہیں .

यह तो हम नहीं मानते कि ट्रूमैन साहब को इस बात का पता न हो कि जनरल मैकआर्थर के अलहदा करने का अमरीका के रहने वालों पर क्या असर पड़ेगा और यह भी हम नहीं मानते कि वह यह पहले से नहीं जानते थे कि रिपबलिकन पार्टी इस बरख़ास्तगी को कैसा समझेगी. फिर यह समझना कि ट्रूमैन साहब ने कोई ऐसा मार्के का काम किया है जिसके लिये उन्हें बड़ा बहादुर या भला-मानस माना जाय हमें तो निरा भोलापन मालूम होता है. सवाल यह नहीं है कि कौन गया और कौन आया. सवाल तो यह है कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी से अमरीका की दूर पूरब की नीत में क्या फ़रक़ आया. अमरीका तो पहले की तरह से उन ही तीन बातों पर अड़ा हुआ है और ट्रूमैन साहब उन ही तीन बातों को बार बार दोहराते हैं और नए जनरल रिजवे उन ही की हाँ में हाँ मिलाते हैं. वह तीन बातें यही तो हैं—(१) यह कि लड़ाई रुकना चाहिये (२) यह कि जंग फिर न होने पाए (३) यह कि एग्रेशन ख़त्म होजाय. पर सवाल यह है कि लड़ाई कौन रोके और कैसे रुके और जंग फिर क्यों न हो और कौन न करे और एग्रेशन किसका माना जाय?

अफ़्रीक़ा के एक अख़बार ने जनरल मैकआर्थर को बहुत ख़तरनाक आदमी बतलाया था. पर ट्रूमैन साहब तो उसे अलहदा करते वक़्त "बड़े से बड़े सेनापतियों में से एक" होने की सनद देते हैं.

जनरल मैकआर्थर की अलहदगी में एक और भूल होगई है. जनरल मैकआर्थर यू. एन. ओ. के जनरल थे न कि अमरीका के. अमरीका उन्हें अपनी सेना के सेनापति के पद से हटाने तक का अख़्तियार नहीं रखता क्योंकि अमरीका की तमाम सेनाएँ जो कोरिया में लड़ रही हैं वह क़ायदे से यू. एन. ओ. के मातहत लड़रही हैं न कि अमरीका के. इसलिये जनरल मैकआर्थर की अलहदगी का काम.

یہ تو ہم نہیں مانتے کہ ٹرومین صاحب کو اس بات کا پتہ نہ ہو کہ جنرل میک آرتھر کے علیحدہ کرنے کا امریکہ کے رہنے والوں پر کیا اثر پڑیگا اور یہ بھی ہم نہیں مانتے کہ وہ یہ پہلے سے نہیں جانتے تھے کہ ری پبلکن پارٹی اِس برخاستگی کو کیسا سمجھے گی. پھر یہ سمجھنا کہ ٹرومین صاحب نے کوئی ایسا معرکے کا کام کیا ہے جسکے لئے اُنھیں بڑا بہادر یا بھلا مانس مانا جائے ہمیں تو نرا بھولاپن معلوم ہوتا ہے . سوال یہ نہیں ہے کہ کون گیا اور کون آیا . سوال تو یہ ہے کہ جنرل میک آرتھر کی علیحدگی سے امریکہ کی دور پورب کی نیت میں کیا فرق آیا . امریکہ تو پہلے کی طرح سے اُن ہی تین باتوں پر اڑا ہوا ہے اور ٹرومین صاحب اُن ہی تین باتوں کو بار بار دہراتے ہیں اور نئے جنرل رجوے اُن ہی کی ہاں میں ہاں ملاتے ہیں . وہ تین باتیں یہی تو ہیں — (۱) یہ کہ لڑائی رکنا چاہئے (۲) یہ کہ جنگ پھر نہ ہونے پاوے . (۳) یہ کہ اگریشن ختم ہوجائے . پر سوال یہ ہے کہ لڑائی کون روکے اور کیسے رکے اور جنگ پھر کیوں نہ ہو اور کون نہ کرے اور اگریشن کس کا مانا جائے ؟

افریقہ کے ایک اخبار نے جنرل میک آرتھر کو بہت خطرناک آدمی بتایا تھا . پر ٹرومین صاحب تو اُسے علیحدہ کرتے وقت " بڑے سے بڑے سینا پتیوں میں سے ایک " ہونے کی سند دیتے ہیں .

جنرل میک آرتھر کی علیحدگی میں ایک اور بھول ہو گئی ہے . جنرل میک آرتھر یو . این . او . کے جنرل تھے نہ کہ امریکہ کے . امریکہ اُنھیں اپنی سینا کے سیناپتی کے پد سے ہٹانے تک کا اختیار نہیں رکھتا کیونکہ امریکہ کی تمام سینائیں جو کوریا میں لڑ رہی ہیں وہ قاعدے سے یو . این . او . کے ماتحت لڑ رہی ہیں نہ کہ امریکہ کے . اس لئے جنرل میک آرتھر کی علیحدگی کا کام

१२

सुरक्षा कौंसिल के हाथ से होना चाहिये था न कि ट्रूमैन साहब के. पर हम एक से ज्यादा बार लिख चुके हैं कि आजकल ट्रूमैन साहब मानी यू. एन. ओ. और यू. एन. ओ. मानी ट्रूमैन साहब. फिर हम नहीं समझते कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी को क्यों इतना तूल दिया जा रहा है.

अगर हम अन्दाजा लगाने में भूल नहीं करते तो ईरान में छिड़ा तेल का झगड़ा जनरल मैकआर्थर की अलहदगी का कहीं बड़ा कारन है बनिस्बत इसके कि जनरल साहब यू. एन. ओ. की हिदायतों पर पूरा पूरा अमल नहीं करते थे. अगर हम झूटे भविश्य वक्ता (पेशीन-गो) नहीं हैं तो बहुत जल्दी ही जनरल मैकआर्थर फिर कहीं इस से ज्यादा मार्के की कमान्ड सँभालते हुए दिखलाई पड़ेंगे.

कोरिया की लड़ाई के सिलसिले में यह एक नई चाल चली गई है. यह दूसरी बात है कि उसे रूस किसी और निगाह से देखेगा, बरतानिया और हिन्दुस्तान किसी और निगाह से और अमरीका के रहनेवाले किसी और निगाह से.

क्या इस अलहदगी का यह मतलब समझा जाय कि अब चीन और रूस खड़े खड़े तमाशा देखेंगे क्योंकि शायद अब मंचूरिया या रूस की हद में बम नहीं गिराए जायेंगे और कोरिया को नई नई फ़ौजें भेज कर बिलकुल पीस डाला जायगा. क्या अमरीका की डिक्शनरी में आजादी के यही मानी बताए गए हैं ? क्या यू. एन. ओ. और सुरक्षा समिति एक मुल्क की बरबादी को ही आजादी का नाम देती हैं ? अगर उनकी डिक्शनरी सचमुच ऐसे मानों से भरी है तो वह दिन दूर नहीं जब मिट्टी के तेल की वजह से ईरान अपने आप को भड़के हुए ज्वाला मुखी के मुँह पर पाएगा.

यह चाल नहीं तो और क्या है ?

२५. ४. ५१. —भगवानदीन

سورکشا کونسل کے ہاتھ سے ہونا چاہیئے تھا نہ کہ ٹرومین صاحب کے. پر ہم ایک سے زیادہ بار لکھ چکے ہیں کہ آجکل ٹرومین صاحب معنی یو. این. او. اور یو. این. او. معنی ٹرومین صاحب. پھر ہم نہیں سمجھتے کہ جنرل میک آرتھر کی علیحدگی کو کیوں اتنا طول دیا جا رہا ہے.

اگر ہم اندازہ لگانے میں بھول نہیں کرتے تو ایران میں چھڑا تیل کا جھگڑا جنرل میک آرتھر کی علیحدگی کا کہیں بڑا کارن ہے بہ نسبت اسکے کہ جنرل صاحب یو. این. او. کی ہدائتوں پر پورا پورا عمل نہیں کرتے تھے. اگر ہم جھوٹے بھوشیہ وکتا (پیشین گو) نہیں ہیں تو بہت جلدی ہی جنرل میک آرتھر پھر کہیں اس سے زیادہ معرکے کی کمانڈ سنبھالتے ہوئے دکھلائی پڑیں گے.

کوریا کی لڑائی کے سلسلے میں یہ ایک نئی چال چلی گئی ہے. یہ دوسری بات ہے کہ اُسے روس کسی اور نگاہ سے دیکھیگا، برطانیہ اور ہندستان کسی اور نگاہ سے اور امریکہ کے رہنے والے کسی اور نگاہ سے.

کیا اس علیحدگی کا یہ مطلب سمجھا جائے کہ اب چین اور روس کھڑے کھڑے تماشہ دیکھینگے کیونکہ شاید اب منچوریا یا روس کی حد میں بم نہیں گرائے جائینگے اور کوریا کو نئی نئی فوجیں بھیجکر بالکل پیس ڈالا جائیگا. کیا امریکہ کی ڈکشنری میں آزادی کے یہی معنی بتائے گئے ہیں ؟ کیا یو. این. او. اور سورکشا سمیتی ایک ملک کی بربادی کو ہی آزادی کا نام دیتی ہیں ؟ اگر اُنکی ڈکشنری سچ مچ ایسے معنوں سے بھری ہے تو وہ دن دور نہیں جب مٹی کے تیل کی وجہ سے ایران اپنے آپ کو بھڑکے ہوئے جوالا مکھی کے منہ پر پائیگا.

یہ چال نہیں تو اور کیا ہے ؟

۵۱-۴-۲۵ —بھگوان دین

यह चाल नहीं तो और क्या है ?

१५. ४. ५१.

—भगवानदीन

یہ چال نہیں تو اور کیا ہے ؟

۱۵-۴-۵۱

—بھگوان دین

शिस्त बनाम लोकशाही —

काँगरेस की वरकिंग कमेटी ने हाल में काँगरेसवालों के अन्दर शिस्त यानी डिसिप्लिन की कमी पर दुख प्रकट करते हुए एक ठहराव पास किया है जिसका निचोड़ यह है कि कोई काँगरेस वाला काँगरेस की या किसी काँगरेस सरकार की किसी पालिसी को सिवा अपनी पार्टी की मीटिंग में या काँगरेस कमेटी की मीटिंग में और कहीं न बुरा कहे और न उस पर नुकताचीनी करे. पार्लीमेन्ट के और सूबाई एसेम्बलियों के काँगरेसी मेम्बरों को भी आगाह कर दिया गया है कि वह अगर इसके ख़िलाफ़ अमल करेंगे तो उन्हें सज़ा दी जा सकेगी, जिसका मतलब यह है कि पार्लीमेंट या एसेम्बलियों के अन्दर भी काँगरेसी मेम्बरों को यह आज़ादी नहीं रही.

शिस्त यानी डिसिप्लिन के नाम पर अब तक दुनिया में क्या क्या ज़ुल्म हुए हैं उनकी तरफ़ शायद ही किसी का ध्यान गया हो. हमारी राय में सच्ची लोकशाही जैसी चीज़ किसी मुल्क में नहीं है और हिन्दुस्तान में तो अभी वह क़दम रखने क्या, झाँकने की भी कोशिश नहीं कर सकती. काँगरेस की वरकिंग कमेटी ने डिसिप्लिन के नाम पर जो अंधाधुन्द आज़ादी ली है वह इस बात का सबूत नहीं है कि काँगरेस एक बड़ी ताक़तवर संस्था है. ताक़तवर संस्था तो वही कहलाती है और वही होती है जिस पर शिस्त लादी नहीं जाती. शिस्त जब किसी संस्था के मेम्बरों पर सवार होती है तो वह कमर तोड़ देती है और मेम्बरों को नामर्द बना देती है. लेकिन शिस्त पर सवार संस्था उतनी ही मज़बूत होती है जितनी शेर पर सवार काली. शिस्त इसे कहते हैं कि कोई बुरे से बुरा आदमी किसी जंगल में खड़े मन्दिर में अकेले रहते हुए

شست بنام لوک شاہی —

کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے حال میں کانگریس والوں کے اندر شست یعنی ڈسپلن کی کمی پر دکھ پرکٹ کرتے ہوئے ایک ٹھہراؤ پاس کیا ہے جسکا نچوڑ یہ ہے کہ کوئی کانگریس والا کانگریس کی یا کسی کانگریس سرکار کی کسی پالیسی کو سوا اپنی پارٹی کی میٹنگ میں یا کانگریس کمیٹی کی میٹنگ میں اور کہیں نہ برا کہے اور نہ اُس پر نکتہ چینی کرے. پارلیمنٹ کے اور صوبائی اسمبلیوں کے کانگریسی ممبروں کو بھی آگاہ کر دیا گیا ہے کہ وہ اگر اِسکے خلاف عمل کرینگے تو اُنہیں سزا دی جا سکیگی، جس کا مطلب یہ ہے کہ پارلیمنٹ یا اسمبلیوں کے اندر بھی کانگریسی ممبروں کو یہ آزادی نہیں رہی.

شست یعنی ڈسپلن کے نام پر اب تک دنیا میں کیا کیا ظلم ہوئے ہیں اُن کی طرف شاید ہی کسی کا دھیان گیا ہو. ہماری رائے میں سچی لوک شاہی جیسی چیز کسی ملک میں نہیں ہے اور ہندستان میں تو ابھی وہ قدم رکھنے کیا، جھانکنے کی بھی کوشش نہیں کر سکتی. کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے ڈسپلن کے نام پر جو اندھا دھند آزادی لی ہے وہ اس بات کا ثبوت نہیں ہے کہ کانگریس ایک بڑی طاقتور سنستھا ہے. طاقتور سنستھا تو وہی کہلاتی ہے اور وہی ہوتی ہے جس پر شست لادی نہیں جاتی. شست جب کسی سنستھا کے ممبروں پر سوار ہوتی ہے تو وہ کمر توڑ دیتی ہے اور ممبروں کو نامرد بنا دیتی ہے. لیکن شست پر سوار سنستھا اُتنی ہی مضبوط ہوتی ہے جتنی شیر پر سوار کالی. شست اِسے کہتے ہیں کہ کوئی برے سے برا آدمی کسی جنگل میں کھڑے مندر میں اکیلے رہتے ہوئے

भी थूकने या इसी तरह के और कोई काम करने की हिम्मत नहीं कर सकता. पर वही आदमी डिसिप्लिन का बोझा कंधे पर लादकर रेल के डिब्बे में थूकने से कभी नहीं हिचकता. अगर हम भूलते नहीं हैं तो काँगरेस में शिस्त पर न चलने की सज़ा दिये जाने का रिवाज गाँधी जी ने शुरू किया. और शायद बोस बाबू या और किसी ऐसे ही नेता के सज़ा देने पर किसी मनचले ने गाँधी जी से सवाल पूछा था कि फिर काँगरेस में और नाज़ी और बोलशेविक पार्टी में क्या फ़रक़ रह गया. तब गाँधी जी ने जवाब में यह कहा था कि नाज़ी और बोलशेविक पार्टी तो शिस्त न मानने पर सर उड़ा देती हैं, काँगरेस तो सिर्फ़ काँगरेस से बाहर ही करती है. उस वक़्त हम अपने मन में यह कह कर ही रह गए थे कि अगर काँगरेस में सर उड़ाने की ताक़त होती तो शायद वह भी सर उड़ाने से बाज़ न आती. और क्या आज अहिंसक काँगरेस की सरकार डंडे नहीं चलाती और गोली नहीं चलाती?

हमारी राय में वरकिंग कमेटी शिस्त यानी डिसिप्लिन को इस नए सुझाव के ज़रिये यहाँ तक खींच ले गई है कि उसने अपने एक एक प्रस्ताव को रद्दी ही नहीं किया है बल्कि एक एक की कमर ही तोड़दी है.

शिस्त खिंच कर 'लोकशाही' नहीं रह जाती, 'शिस्त शाही' बन जाती है. राशन की दूकान पर घंटों ठंडी हवा, लू या बरसात में खड़े रहने में शिस्त भले ही हो लोकशाही नहीं. राशन ही की दूकान से सड़ा या कूड़ा मिला नाज लेने में शिस्त भले ही हो पर लोकशाही नहीं है. हम मिसालें बढ़ाना नहीं चाहते क्योंकि हम लोकशाही पर लेख नहीं लिख रहे. पर हम कहना यह चाहते हैं कि इस तरह की सैकड़ों शिस्त पहले से ही लोकशाही को खाए जा रही थीं फिर वरकिंग कमेटी ने एक नई शिस्त की बाधिन

بھی تھوکنے یا اِسی طرح کے اور کوئی کام کرنے کی ھمت نہیں کر سکتا . پر وھی آدمی ڈسپلن کا بوجھا کندھے پر لاد کر ریل کے ڈبے میں تھوکنے سے کبھی نہیں ھچکتا . اگر ھم بھولتے نہیں ھیں تو کانگریس میں شست پر نہ چلنے کی سزا دئے جانے کا رواج گاندھی جی نے شروع کیا . اور شاید بوس بابو یا اور کسی ایسے ھی نیتا کے سزا دینے پر کسی منچلے نے گاندھی جی سے سوال پوچھا تھا کہ پھر کانگریس میں اور نازی اور بولشیوک پارٹی میں کیا فرق رہ گیا . تب گاندھی جی نے جواب میں یہ کہا تھا کہ نازی اور بولشیوک پارٹی تو شست نہ ماننے پر سر اُڑا دیتی ھیں، کانگریس تو صرف کانگریس سے باھر ھی کرتی ھے . اُس وقت ھم اپنے من میں یہ کہکر ھی رہ گئے تھے کہ اگر کانگریس میں سر اُڑانے کی طاقت ھوتی تو شاید وہ بھی سر اُڑانے سے باز نہ آتی . اور کیا آج اھنسک کانگریس کی سرکار ڈنڈے نہیں چلاتی اور گولی نہیں چلاتی ؟

ھماری رائے میں ورکنگ کمیٹی شست یعنی ڈسپلن کو اس نئے سجھاؤ کے ذریعے یہاں تک کھینچ لے گئی ھے کہ اُس نے اپنے ایک ایک پرستاؤ کو ردی ھی نہیں کیا ھے بلکہ ایک ایک کی کمر ھی توڑ دی ھے .

شست کھنچ کر ' لوک شاھی ' نہیں رہ جاتی ' شست شاھی ' بن جاتی ھے . راشن کی دوکان پر گھنٹوں ٹھنڈی ھوا ' لو یا برسات میں کھڑے رھنے میں شست بھلے ھی ھو لوک شاھی نہیں . راشن ھی کی دوکان سے سڑا یا کوڑا ملا ناج لینے میں شست بھلے ھی ھو پر لوک شاھی نہیں ھے . ھم مثالیں بڑھانا نہیں چاھتے کیونکہ ھم لوک شاھی پر لیکھ نہیں لکھ رھے . پر ھم کہنا یہ چاھتے ھیں کہ اِسطرح کی سیکڑوں شست پہلے سے ھی لوک شاھی کو کھائے جا رھی تھیں پھر ورکنگ کمیٹی نے ایک نئی شست کی باگھن

नया हिन्द हमारी राय मई सन् '५१ مئی سن ۵۱' ھماری رائے نیا ھند

लोकशाही पर लेख नहीं लिख रहे. पर हम कहना यह चाहते हैं कि इस तरह की सैकड़ों शिस्त पहले से ही लोकशाही को खाए जा रही थीं फिर वरकिंग कमेटी ने एक नई शिस्त की बाधिन

खड़ी करके काँगरेस को भी उसके मुँह में ठूँस कर इतनी समझदारी का काम किस लिये किया !

अधिक समझदार दुनिया नहीं बदला करते, वह अपने को बदलते हैं. यह कम समझ ही होते हैं जो दुनिया को बदल जाते हैं, पर वह लादी हुई शिस्त को नहीं मानते. गाँधी जी अगर अंगरेज़ी राज की शिस्त को अधिक समझदार बन कर अपने कंधे पर लाद लेते तो न हिन्दुस्तान आज़ाद होता और न काँगरेसी सरकार दिखाई देती, और न काँगरेस की वरकिंग कमेटी दूसरों पर शिस्त लादने के लिये इतनी उतावली पाई जाती.

१५. ४. ५१. —भगवानदीन

सोवियत रूस में धर्म की आज़ादी—

रूस की धर्म सम्बन्धी बातों को लेकर दुनिया भर में तरह तरह की ग़लतफ़हमियाँ प्रचलित हैं. हम यहाँ 'सोवियत यूनियन के विचार और समाचार' नाम के दिल्ली से निकलने वाले एक हफ़्तेवार अख़बार से एक मज़मून दे रहे हैं जिससे इस विशय पर ख़ासी रोशनी पड़ती है—एडीटर.

सोवियत रूस का विधान सब नागरिकों के लिये धार्मिक रीत-रिवाज की आज़ादी का ऐलान करता है.

सोवियत संघ के हर नागरिक को किसी भी धर्म के मानने या न मानने की आज़ादी है. यह मामला उसके अपने विश्वास और उसकी इच्छा से सम्बन्ध रखता है.

सोवियत संघ में चर्च (संगठित धर्म) को हकूमत से अलग कर दिया गया है. राज के राजकाजी कामों में दख़ल देने का चर्च को कोई अधिकार नहीं है. न ही राज चर्च के मामलों में दख़ल देता है.

اِسطرح کی سیکڑوں شست پہلے سے ہی لوک شاہی کو کھائے جا رہی تھیں پھر ورکنگ کمیٹی نے ایک نئی شست کی باگھن

کھڑی کرکے کانگریس کو بھی اُسکے منہ میں ٹھونس کر اتنی سمجھداری کا کام کس لئے کیا !

ادھک سمجھدار دنیا نہیں بدلا کرتے' وہ اپنےکو بدلتےھیں. یہ کم سمجھ هي هوتے هیں جو دنیا کو بدل جاتے هیں پر وہ لادی هوئی شست کو نہیں مانتے . گاندھی جي اگر انگریزی راج کی شست کو ادھک سمجھدار بن کر اپنے کندھے پر لاد لیتے تو نہ هندستان آزاد ہوتا اور نہ کانگریسی سرکار دکھائی دیتی' اور نہ کانگریس کی ورکنگ کمیٹی دوسروں پر شست لادنے کے لئے اتنی اُتاولی پائی جاتی.

۱٥-٤-٥١ —بھگوان دین

سوویت روس میں دھرم کي آزادی—

روس کي دھرم سمبندھی باتوں کو لے کر دنیا بھر میں طرح طرح کي غلط فہمیاں پر چلت هیں . هم یہاں ' سویت یونین کے وچار اور سماچار ' نام کے دلی سے نکلنے والے ایک هفتہ وار خبار سے ایک مضمون دے رهے هیں جس سے اس وشے پر خاصی اروشنی پڑتی ھے—اڈیٹر

سوویت روس کا ودھان سب ناگرکوں کے لئے دھارمک ریت رواج کی آزادی کا اعلان کرتا ھے .

سوویت سنگھ کے هر ناگرک کو کسی بھي دھرم کے ماننے یا نہ ماننے کی آزادی ھے . یہ معاملہ اسکے اپنے وشواس اور اُسکی اِچھا سے سمبندھ رکھتا ھے .

سوویت سنگھ میں چرچ (سنگٹھت دھرم) کو حکومت سے الگ کر دیا گیا ھے. راج کے راج کاجی کاموں میں دخل دینے کا چرچ کو کوئی ادھیکار نہیں ھے . نہ ھی راج چرچ کے معاملوں میں دخل دیتا ھے .

किसी भी चर्च को राज की तरफ़ से माली सहायता नहीं दी जाती. राज की नज़र में सब चर्च बराबर हैं—किसी भी चर्च या पंथ को सरकार से ख़ास रिआयतें हासिल नहीं हैं. धर्म के आधार पर राज किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं करता. सरकारी दस्तावेज़ों में (पासपोर्ट, विवाह के लाइसेंस, पैदायश के सर्टीफ़िकेट वग़ैरा में) नागरिक का धर्म दर्ज नहीं किया जाता.

आम तालीम को राज ने चर्च के हाथों से पूरी तरह ले लिया है और स्कूलों को चर्च से अलग कर दिया है. सोवियत सरकारी स्कूलों में किसी भी तरह की किसी धर्म की तालीम नहीं दी जाती.

चर्च को राज से अलग करने का यह मतलब नहीं है कि पादरियों और चर्च को मानने वालों को नागरिक अधिकारों से अलग कर दिया जाता है. सब चर्चों और धार्मिक मत मतान्तरों के पादरियों को दूसरे सब नागरिकों के बराबर चुनाव सम्बन्धी और दूसरे अधिकार हासिल हैं.

सोवियत विधान सब नागरिकों के, चाहे वह जिस धर्म को भी मानते हों, धार्मिक सभा सोसाइटियों और संस्थाओं के रूप में संगठित होने और इन संस्थाओं की मरकज़ी इन्तज़ामी संस्थाएं बनाने तक के अधिकार की गारंटी करता है. इस तरह की मरकज़ी संस्थाएं अपने धर्म वालों की कानफ़रेन्सों और पादरियों की काँगरेसों का इन्तज़ाम करती हैं, अपने अख़बार और किताबें निकालती हैं, धार्मिक स्कूलों को चलाती हैं. हर चर्च की संस्थाओं का ख़र्च उस धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी मरज़ी से दिए दान से चलता है.

सोवियत क़ानून हर धर्म के मानने वाले लोगों को आज़ादी के साथ मिलकर खुले उपासना या पूजा बन्दगी का इन्तज़ाम करने, बच्चों और बड़ों को बपतिस्मा दिलाने, चर्च में जाने और दूसरे धार्मिक

کسی بھی چرچ کو راج کی طرف سے مالی سہایتا نہیں دی جاتی ۔ راج کی نظر میں سب چرچ برابر ہیں—کسی بھی چرچ یا پنتھ کو سرکار سے خاص رعائتیں حاصل نہیں ہیں ۔ دھرم کے آدھار پر راج کسی ناگرک کے ساتھ بھید بھاؤ نہیں کرتا ۔ سرکاری دستاویزوں میں (پاسپورٹ، وواہ کے لائسنس، پیدائش کے سرٹیفکیٹ وغیرہ میں) ناگرک کا دھرم درج نہیں کیا جاتا ۔

عام تعلیم کو راج نے چرچ کے ہاتھوں سے پوری طرح لے لیا ہے اور اسکولوں کو چرچ سے الگ کر دیا ہے ۔ سوویت سرکاری اسکولوں میں کسی بھی طرح کی کسی دھرم کی تعلیم نہیں دی جاتی ۔

چرچ کو راج سے الگ کرنے کا یہ مطلب نہیں ہے کہ پادریوں اور چرچ کو ماننے والوں کو ناگرک ادھیکاروں سے الگ کر دیا جاتا ہے ۔ سب چرچوں اور دھارمک مت متانتروں کے پادریوں کو دوسرے سب ناگرکوں کے برابر چناؤ سمبندھی اور دوسرے ادھیکار حاصل ہیں ۔

سوویت ودھان سب ناگرکوں کے، چاہے وہ جس دھرم کو بھی مانتے ہوں، دھارمک سبھا سوسائٹیوں اور سنستھاؤں کے روپ میں سنگٹھت ہونے اور ان سنستھاؤں کی مرکزی انتظامی سنستھائیں بنانے تک کے ادھیکار کی گارنٹی کرتا ہے ۔ اس طرح کی مرکزی سنستھائیں اپنے دھرم والوں کی کانفرنسوں اور پادریوں کی کانگریسوں کا انتظام کرتی ہیں، اپنے اخبار اور کتابیں نکالتی ہیں، دھارمک اسکولوں کو چلاتی ہیں ۔ ہر چرچ کی سنستھاؤں کا خرچ اس دھرم کے ماننے والے لوگوں کی اپنی مرضی سے دیئے دان سے چلتا ہے ۔

سوویت قانون ہر دھرم کے ماننے والے لوگوں کو آزادی کے ساتھ ملکر کھلے اپاسنا یا پوجا بندگی کا انتظام کرنے، بچوں اور بڑوں کو بپتسمہ دلانے، چرچ میں جانے اور دوسرے دھارمک

साथ मिलकर खुले उपासना या पूजा बन्दगी का इन्तज़ाम करने, बच्चों और बड़ों को बपतिस्मा दिलाने, चर्च में जाने और दूसरे धार्मिक

ملکر کھلے اُپاسنا یا پوجا بندگی کا انتظام کرنے، بچوں اور بڑوں کو بپتسمہ دلانے، چرچ میں جانے اور دوسرے دھارمک

रीत रिवाजों को पालने के अधिकार की रक्षा करता है. सोवियत राज धार्मिक सभा सोसाइटियों के लिये प्रार्थना घरों (गिरजों, सिनेगागों, मसजिदों वग़ैरा) के मुफ़्त इस्तेमाल और अपने धर्म के नाम का बोर्ड लगाने की सुविधा देता है. धार्मिक संस्थाएं ख़ुद अपने पूजाघर बना सकती हैं. धार्मिक स्कूलों के लिये मरकज़ी और मुक़ामी सरकारी अधिकारी जगहों का प्रबन्ध करते हैं और धार्मिक किताबों और अख़बारों के निकालने के लिये काग़ज़ और छापाख़ानों की सुविधा देते हैं.

आजकल सोवियत रूस में नीचे लिखी धार्मिक जमात मौजूद हैं—

(१) रूसी आर्थोडाक्स चर्च : मास्को और सारे रूस के सत्तर बरस के बूढ़े धर्मपिता अलेक्सी इसके सदर हैं. १९०२ में आपने दीक्षा ली थी. एक सलाहकार मंडल—पवित्र सिनोद —के साथ आप काम करते हैं. इस चर्च के मानने वालों की गिनती सबसे ज्यादा है.

(२) मुसलमानों का धर्म, इसलाम : मुसलमानों के अपने मज़हबी मामले उनके चार सूबाई धार्मिक मरकज़ों से चलते हैं. सोवियत संघ के अधिकतर मुसलमान सुन्नी हैं. मुसलमानों की यही बड़ी जमात है. शिया मुसलमानों की तादाद काफ़ी कम है. वह ख़ासकर काकेशिया-पार के इलाक़े में रहते हैं.

(३) रोमन कैथोलिक चर्च : यह तीन पंथों में बटा है जो एक दूसरे से अलग रहते हैं. एक कहलाता है बेलोक्रीनितज्की पंथ, दूसरा पंथ वह जो पादरियों को नहीं मानता, तीसरा वह जो रूसी आर्थोडाक्स चर्च के पहले के पादरियों को रखता और मानता है.

(४) ज्यारजियों का आर्थोडाक्स चर्च : धर्म-पिता कैथोलिकोस इसके सदर हैं.

ریت رواجوں کو پالنے کے ادھیکار کی رکشا کرتا ہے. سوویت-راج دھارمک سبھا سوسائٹیوں کے لئے پرارتھنا گھروں (گرجوں سنیگاگوں، مسجدوں وغیرہ) کے مفت استعمال اور اپنے دھرم کے نام کا بورڈ لگانے کی سودھا دیتا ہے . دھارمک سنستھائیں خود اپنے پوجا گھر بنا سکتی ہیں . دھارمک اسکولوں کے لئے مرکزی اور مقامی سرکاری ادھیکاری جگہوں کا پربندھ کرتے ہیں اور دھارمک کتابوں اور اخباروں کے نکالنے کے لئے کاغذ اور چھاپا خانوں کی سودھا دیتے ہیں .

آج کل سوویت روس میں نیچے لکھی دھارمک جماعتیں موجود ہیں—

(۱) روسی آرتھوڈاکس چرچ : ماسکو اور سارے روس کے ستر برس کے بوڑھے دھرم پتا الیکسی اِس کے صدر ہیں . ۱۹۰۲ میں آپ نے دیکشا لی تھی . ایک صلاح کار منڈل—پوتر سنود—کے ساتھ آپ کام کرتے ہیں . اِس چرچ کے ماننے والوں کی گنتی سب سے زیادہ ہے .

(۲) مسلمانوں کا دھرم، اسلام : مسلمانوں کے اپنے مذہبی معاملے اُن کے چار صوبائی دھارمک مرکزوں سے چلتے ہیں. سوویت سنگھ کے ادھک تر مسلمان سنی ہیں . مسلمانوں کی یہی بڑی جماعت ہے . شیعہ مسلمانوں کی تعداد کافی کم ہے . وہ خاص کر کاکیشیا پار کے علاقے میں رہتے ہیں .

(۳) رومن کیتھولک چرچ : یہ تین پنتھوں میں بٹا ہے جو ایک دوسرے سے الگ رہتے ہیں . ایک کہلاتا ہے بیلو کری نتجکی پنتھ، دوسرا پنتھ وہ جو پادریوں کو نہیں مانتا، تیسرا وہ جو روسی آرتھوڈاکس چرچ کے پہلے کے پادریوں کو رکھتا اور مانتا ہے .

(۴) جارجیوں کا آرتھوڈاکس چرچ : دھرم پتا کیتھو لیکوس اسکے صدر ہیں .

(५) आरमीनिया का (ग्रेगोरियन) चर्च : बड़े धर्म-पिता और सब आरमीनियनों के कैथोलीको इसके सदर हैं.

(६) ईवेंजलीकल क्रिश्चियन बैपटिस्ट चर्च : इसमें ईवेंजलीकल क्रिश्चियनों, बैपटिस्टों और पेंटेकोस्टल चर्च के मानने वालों की पहले की स्वतन्त्र संस्थाएं शामिल हैं.

(७) लूथर के मानने वालों का चर्च : ख़ासकर लाटविया और एस्तोनिया की सोशलिस्ट रिपबलिक में है.

(८) बौद्ध धर्म के मानने वाले.

(९) यहूदी धर्म : इसका कोई संगठित मरकज़ नहीं है.

सोवियत संघ के वज़ीर मंडल के नीचे रूसी आर्थोडाक्स चर्च और दूसरे धार्मिक पंथों के मंडल क़ायम हैं. इन मंडलों को धार्मिक संस्थाओं और सरकारी अधिकारियों और संस्थाओं के बीच सम्बन्ध क़ायम करने के लिये बनाया गया है. इसके अलावा यह मंडल इस बात की भी देख भाल रखते हैं कि धार्मिक पूजा बन्दगी और रीत-रिवाज की आज़ादी के क़ानून पर ठीक तरह से अमल किया जा रहा है या नहीं. धार्मिक संस्थाओं के पेश किये हुए सवालों के बारे में क़ानूनों और क़ायदों का मसौदा तैयार करने का काम भी इन मंडलों के ज़िम्मे है.

धार्मिक आज़ादी की रक्षा करने के साथ साथ सोवियत संघ का विधान सब नागरिकों के धर्म के ख़िलाफ़ प्रचार करने के अधिकार को भी मानता है. धर्म के ख़िलाफ़ प्रचार का मतलब लोगों में दुनिया को साइन्सी निगाह से देखने की आदत का प्रचार करना है. धर्म के ख़िलाफ़ प्रचार के दौरान में धर्म को मानने वाले लोगों की भावनाओं, जज़्बों को चोट पहुंचाना सोवियत विधान में मना है.

———

(٥) آرمینیا کا (گریگورین) چرچ : بڑے دھرم پتا اور سب آرمینینوں کے کیتھو لیکو اِس کے صدر هیں ۔

(٦) ایوینجلیکل کرشچین بیپٹسٹ چرچ : اِس میں ایوینجلیکل کرشچینوں، بیپٹسٹوں اور پینٹے کوسٹل چرچ کے ماننے والوں کی پہلے کی سوتنتر سنستھائیں شامل هیں ۔

(٧) لوتھر کے ماننے والوں کا چرچ : خاص کر لاٹویا اور ایستونیا کی سوشلسٹ ریپبلک میں هیں ۔

(٨) بودھ دھرم کے ماننے والے ۔

(٩) یہودی دھرم : اِس کا کوئی سنگٹھت مرکز نہیں ھے ۔

سوویت سنگھ کے وزیر منڈل کے نیچے روسی آرتھوڈاکس چرچ اور دوسرے دھارمک پنتھوں کے منڈل قائم هیں ۔ اِن منڈلوں کو دھارمک سنستھاؤں اور سرکاری ادھیکاریوں اور سنستھاؤں کے بیچ سمبندھ قائم کرنے کے لئے بنایا گیا ھے ۔ اِسکے علاوہ یہ منڈل اِس بات کی بھی دیکھ بھال رکھتے هیں کہ دھارمک پوجا بندگی اور ریت رواج کی آزادی کے قانون پر ٹھیک طرح سے عمل کیا جا رہا ھے یا نہیں ۔ دھارمک سنستھاؤں کے پیش کئے هوئے سوالوں کے بارے میں قانونوں اور قاعدوں کا مسودا تیار کرنے کا کام بھی اِن منڈلوں کے ذمے ھے ۔

دھارمک آزادی کی رکشا کرنے کے ساتھ ساتھ سوویت سنگھ کا ودھان سب ناگرکوں کے دھرم کے خلاف پرچار کرنے کے ادھیکار کو بھی مانتا ھے ۔ دھرم کے خلاف پرچار کا مطلب لوگوں میں دنیا کو سائنسی نگاہ سے دیکھنے کی عادت کا پرچار کرنا ھے ۔ دھرم کے خلاف پرچار کے دوران میں دھرم کو ماننے والے لوگوں کی بھاوناؤں، جذبوں کو چوٹ پہونچانا سوویت ودھان میں منع ھے ۔

———

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में

नाओं, जज़बों को चोट पहुंचाना सोवियत विधान में मना है.

جذبوں کو چوٹ پہونچانا سوویت ودھان میں منع ہے .

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

२९ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बना कर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफ़ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देस के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا .

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا . اِس ودھان میں اُنھوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں .

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اُسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں . یہ چھوٹا سا ودھان دیس کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیس کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देस की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اس میں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپے.

ملنے کا پتہ—مینیجر 'نیا ھند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد.

पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :—

सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد.

पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :—

हिन्दू मुसलिम एकता— इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़—साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है— महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १६४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़— इस छोटी सी किताब में सन १६४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रौशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

پنڈت سندرلال کی اور کتابیں :—

ہندو مسلم ایکتا— اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق— سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے— مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق— اس چھوٹی سی کتاب میں ۱۹۴۹-۵۰ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

हिन्द के विधान की अंगरेज़ी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेज़ी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास ज़रूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त— लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद— सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार— लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہند کے ودھان کی انگریزی ہندی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے. قیمت دو روپئے.

مسلم دیش بھکت—لیکھک—شری رتن لال بنسل.

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے.

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے.

آج کے شہید— سمپادک — شری رتن لال بنسل.

اِس کتاب میں ان ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی.

ان بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے.

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب.

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ.

کسان کی پکار— لیکھک — شری آر. وینکٹ راؤ.

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں، اُن لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں، اور بھارت کے اَنّ سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں. قیمت پانچ آنے.

ملنے کا پتہ—مینیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد.

बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और ...
के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.
मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

... اَن سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں. قیمت پانچ آنے .
ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(३) पढ़ाई घरों. किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दामकी किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی . جی . کھیر، مسٹر ایس . کے . رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی نے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

Registered No. A—210.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १६५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आज़ाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता :—

मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठी गंज,
इलाहाबाद.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو ۲۶ جنوری سن ۱۹۵۰ سے سارے بھارت میں لاگو ہوا .

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھ لے .

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں، جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے، سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں .

آسانی کے لئے کتاب کے آخر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنے کی شبد مالا دے دی گئی ہے .

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنے . کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

ملنے کا پتہ :—

منیجر 'نیا ہند'
۱۴۵ ' مٹھی گنج'
الہ آباد .

... at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.